VIDEHA · विदेह

३७ मैथिली बाल ग्राफिक उपन्यास

37 MAITHILI CHILDREN GRAPHIC NOVELS

गजेन्द्र ठाकुर

GAJENDRA THAKUR

First Maithili Fortnightly eJournal · Since 2000
ISSN 2229-547X · www.videha.co.in

VIDEHA · विदेह

३७ मैथिली बाल ग्राफिक उपन्यास

37 Maithili Children Graphic Novels

गजेन्द्र ठाकुर · Gajendra Thakur

Copyright © Gajendra Thakur / Preeti Thakur

Author: Gajendra Thakur

Editor: Gajendra Thakur, Videha — First Maithili Fortnightly eJournal

Since 2000 · ISSN 2229-547X

www.videha.co.in

Compilation edition · 2026

अनुक्रम / CONTENTS

आरम्भ पृष्ठ / Starting page

1	तरहारम परालाक	4
2	बाल गुरु	180
3	दाना-भदरा	293
4	अमर बाबा	441
5	मातादाइ	529
6	राजा सलहस	617
7	बागयाक गाछ	642
8	बहुरा गाढ़न नटुआदयाल	676
9	चाहड़मल आ रशमा	707
10	महुआ घटवारिन	755
11	छछन	791
12	गरीबन बाबा	823
13	वणमाला शिक्षा : आकता	855
14	गागादवाक भगता	897
15	मारासाहब	921
16	जट-जाटन	988
17	लालमन बाबा	1019
18	मूगा आ जालम सिह	1047
19	बड़ सुख सार पाआल तुअ तार	1095

अनुक्रम / CONTENTS

आरम्भ पृष्ठ / Starting page

20	बत्तृ	1119
21	भाट-भाटन	1151
22	ाबहुला	1176
23	ब्राह्मण आ ठाकुरक कथा	1264
24	डाकू राहणय	1307
25	डाका डाका	1344
26	गानू झा आ दस ठाप बाबा	1376
27	ज्याात पाजयार	1404
28	कावा आ फुद्दा	1444
29	माधव ासह आ अमता गाम	1469
30	मातासाएार	1550
31	मूखााधराज	1638
32	नका बानजारा	1672
33	रघुना मरर	1697
34	राजा अनसारा	1728
35	राजा ढालन	1780
36	उगना	1836
37	ऊटना	1884

तरहरिमे परीलोक

आस्था आ टुराकोसक धोधरि-दरबज्जा

गजेन्द्र ठाकुर

© Gajendra Thakur/ Preeti Thakur; गजेन्द्र ठाकुर सम्पादक, विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका (since 2000) ISSN 2229-547X

ई पोथी गजेन्द्र ठाकुर समग्रक अन्तर्गत संकलित अछि।

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक ISBN:978-93-5890-210-5

DESIGNED BY: AUM GAJENDRA THAKUR

उपक्रम : अक्षरमुष्टिका

आंगुरक संकेतसँ अक्षर आ भावक निर्देश करै छलि बा — अक्षरमुष्टिका। बा कहै छली, 'आंगुरसँ पकड़ि पिनसिनसँ अक्षर आ चित्र बनाउ, नीकसँ। अहूँ नीक आखर, नीक भाव बना सकब।' ओमक नान्हि सन आंगुर बाक झुर्रीबला आंगुरक भीतर एना पैसि जाइत छल जेना कलमक भीतर सियाही।

ओहि राति बा थाकल छलीह। 'सुति जाउ, भोरे स्कूल जएबाक अछि। आइ हम थाकल सेहो छी।' मुदा ओम कतऽ मानैबला! 'बा, पहिने खिस्सा। बहन्ना नै चलत।' — आ संगहि आँ-आँ कऽ कए कानब-रुसब शुरू।

बा हारि मानि मुस्कुरेलीह। 'ठीक छै, ठीक छै। कोन खिस्सा? राजाबला, परीबला आकि...' 'परीबला!' बा आँखि मूनि कऽ कनी काल सोचलीह, जेना स्मृतिक कोनो पुरान संदूक खोलि रहल होथि — 'तरहरिमे परीलोक... गाछक धोधरि... कारी कौआ... उज्जर दपदप परीलोक...'

'ठीक छै, तखन खिस्सा शुरू,' ओम सीरकमे घोसिया कऽ बा’क कोरा लग सटि गेल। बाहर सियारक हुआँ-हुआँ छल, भीतर लालटेनक पीयर इजोत। आ बाक स्वर, जे आस्ते-आस्ते खिस्साक बाट धेलक—

अध्याय १ : चन्ना गाछीक झमटगर बोन

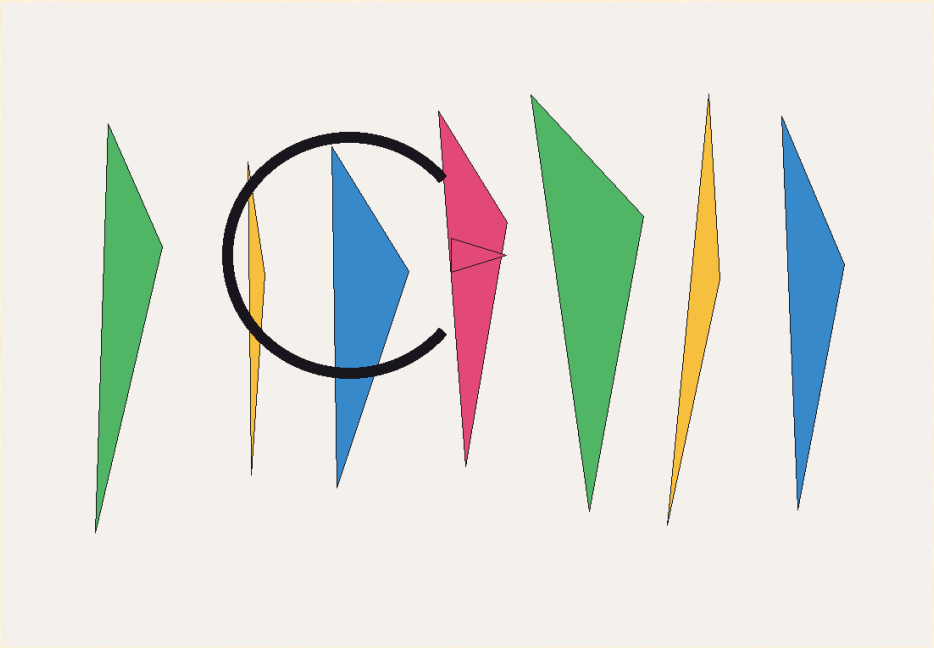

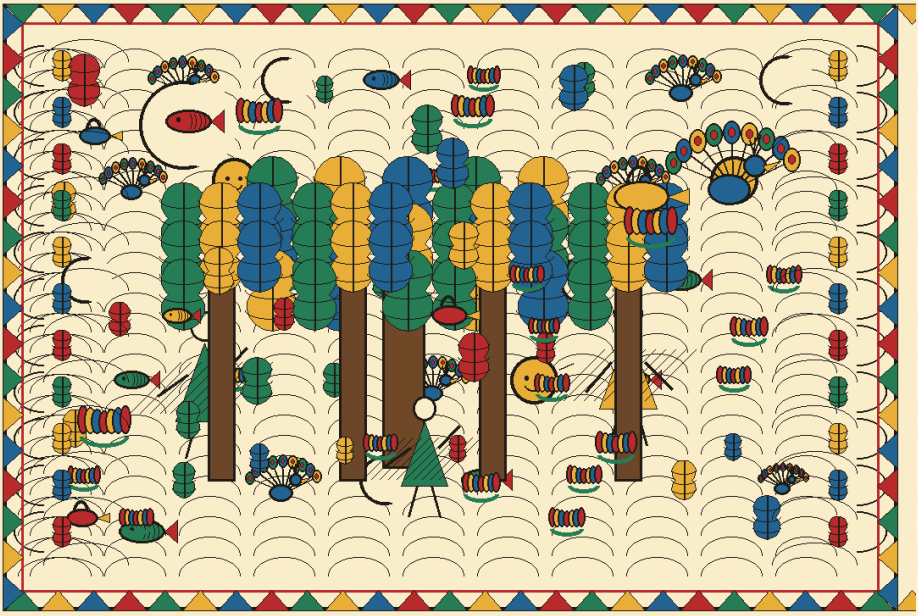

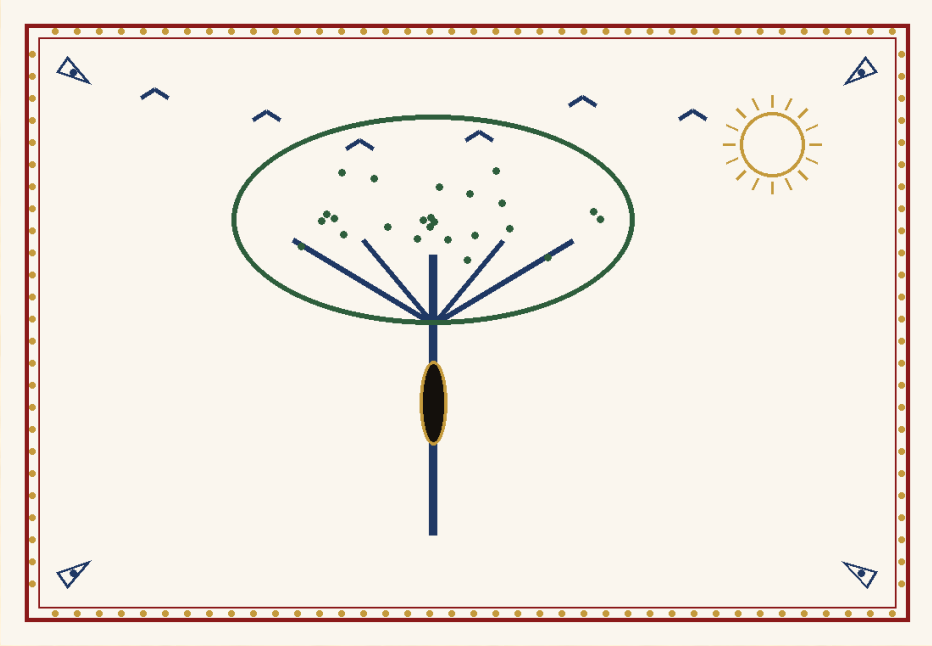

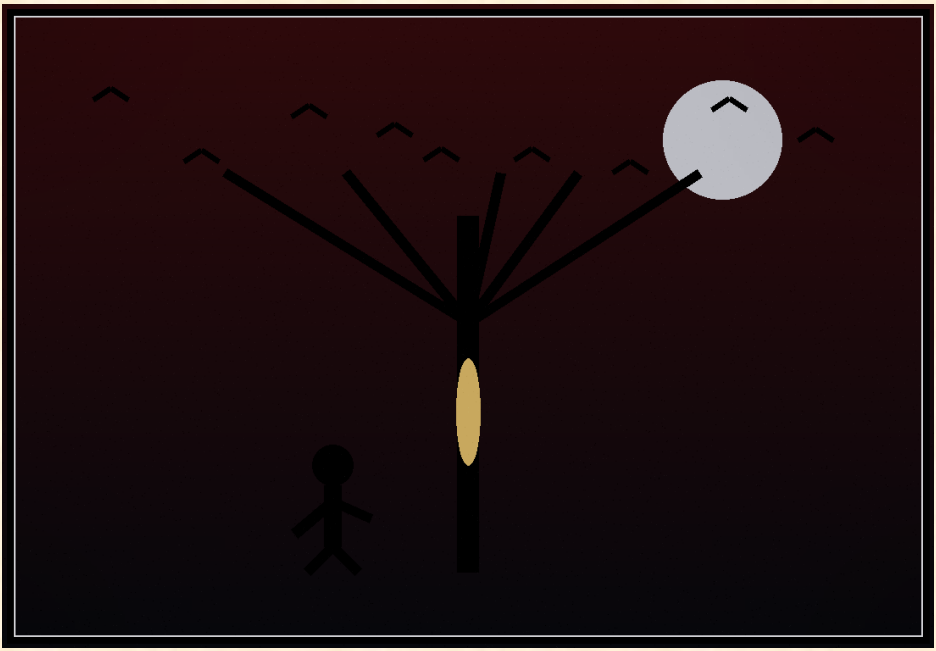

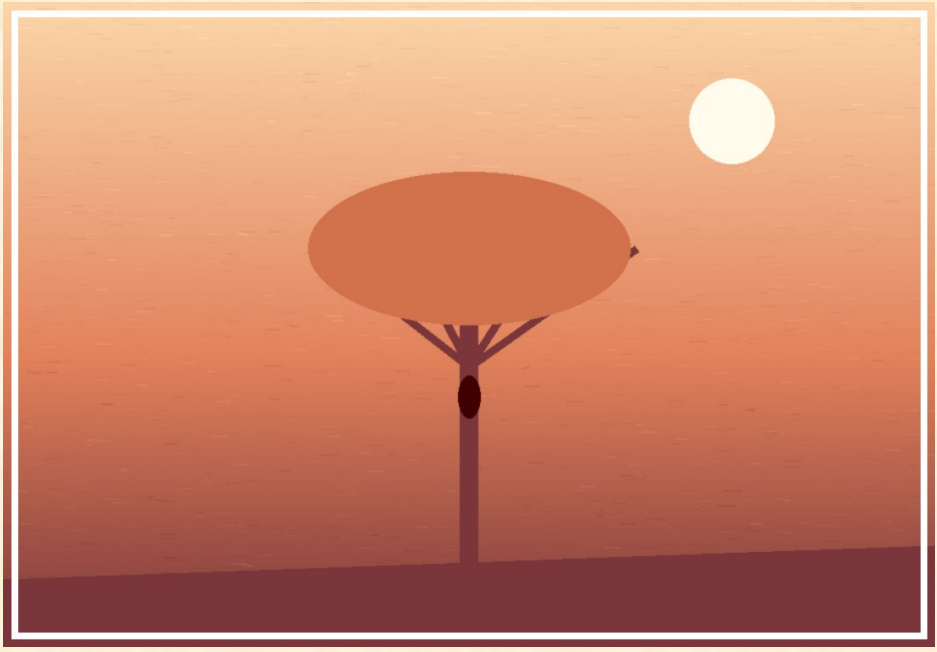

चित्र 1

चन्ना गाछीक झमटगर बोनमे ओहि दिन आम तूबि-तूबि खसल छल। भोरक बसात मे आमक गन्ध एना पसरल छल जे गामक सभ बच्चा टोकरी-कोनिया लऽ कऽ बोन दिस दौगल। आस्था सेहो छलि — दस बरखक, तेज आँखिबाली, जकरा प्रश्न पुछबामे कहियो लाज नहि भेलै।

आम बिछैत-बिछैत आस्था सभसँ आगाँ बढ़ि गेलि। बोन घन होइत गेल, इजोत पातर। साथी सभक हँसी पाछाँ छुटैत गेल, आ आगाँ रहि गेल खाली पातक सरसराहटि। तखने — काँउ! एकटा कार कौआ ठीक ओकर माथ परसँ काँउ-काँउ करैत उड़ल।

आस्था ठमकि गेलि। सोझाँमे एकटा झमटगर पुरान गाछ ठाढ़ छल, एतेक पैघ जे ओकर माथ देखबा लेल गरदनि पूरा पाछाँ करए पड़ैत। आ ओहि गाछक देहमे, ठीक आस्थाक माथ बराबरि, एकटा कारी धोधरि — गहींर, चुप, जेना गाछक खुजल मुँह।

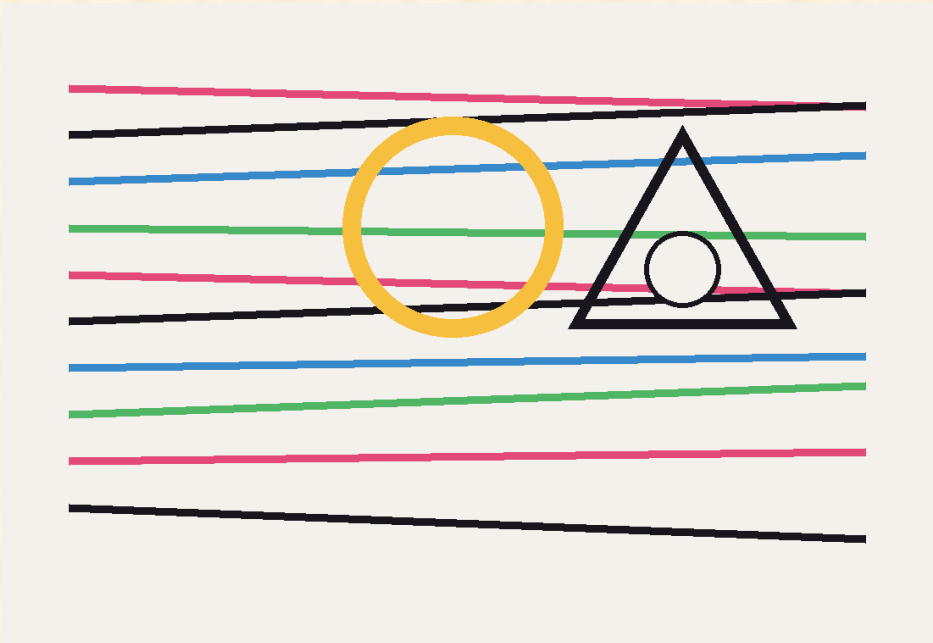

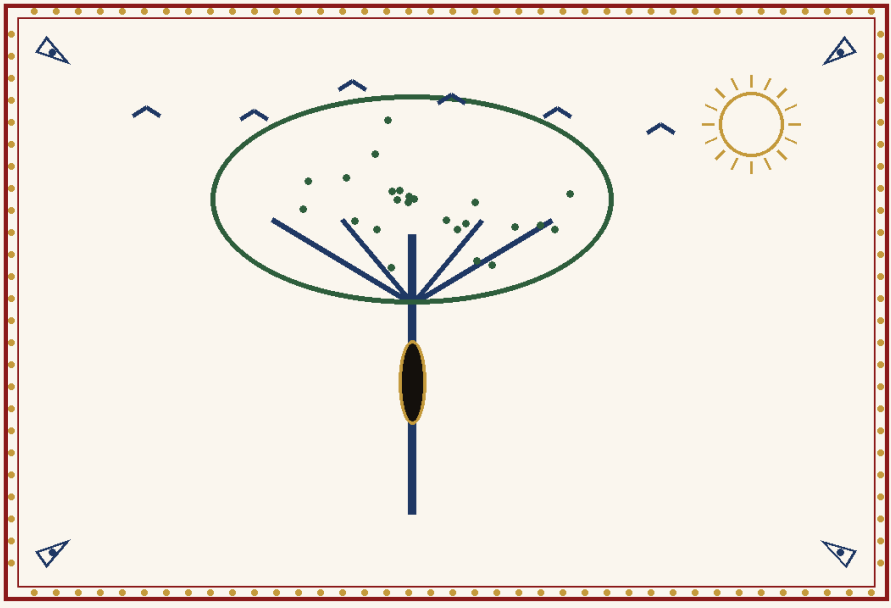

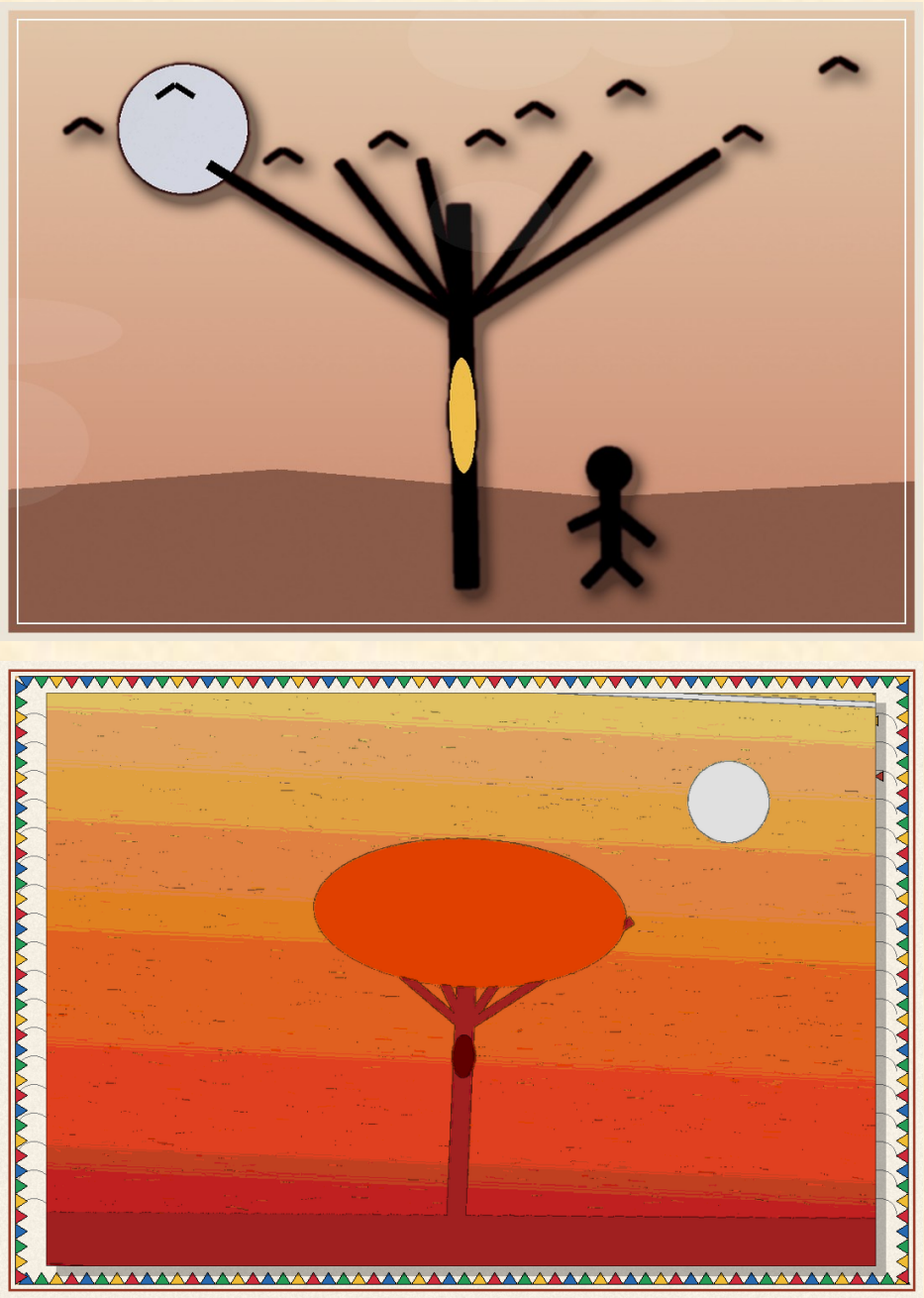

चित्र 2

पहिल कौआक काँउ-काँउ सुनिते देरी ढेर रास कार कौआ चारू कातसँ आबि गेलै। गाछक सभटा डारि कारी भऽ गेल। कौआ सभ नीचाँ झपटए लागल — आस्थाक टोकरी दिस, आस्थाक झोंटा दिस। डरे आस्थाक हाथसँ टोकरी छुटि गेल।

आ तखन, बिनु सोचने, आस्था वैह केलक जे ओहि क्षण एकमात्र बाट छल — ओ जल्दीसँ धोधरिमे पैसि गेलि। भीतर अन्हार छल आ अजीब शान्ति। बाहरक काँउ-काँउ एकाएक दूर भऽ गेल, जेना कियो बोनक सभटा आवाजपर मोट कम्बल ओढ़ा देने हो।

धोधरिमे जाइते देरी ओकरा किछु अनसोहाँत सन लगलै। ई अन्हार साधारण अन्हार नहि छल। एहि अन्हारमे ने ऊपर छल ने नीचाँ, ने आगाँ ने पाछाँ — खाली आस्था छलि, आ ओकर धड़कैत करेज।

अध्याय २ : खसब, जे उड़ब सन लगलै

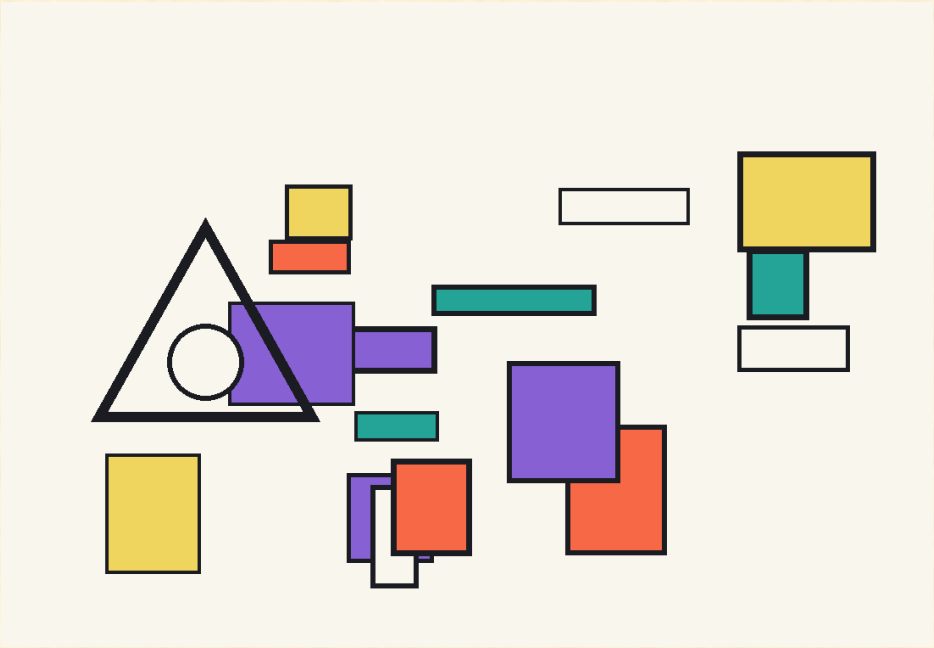

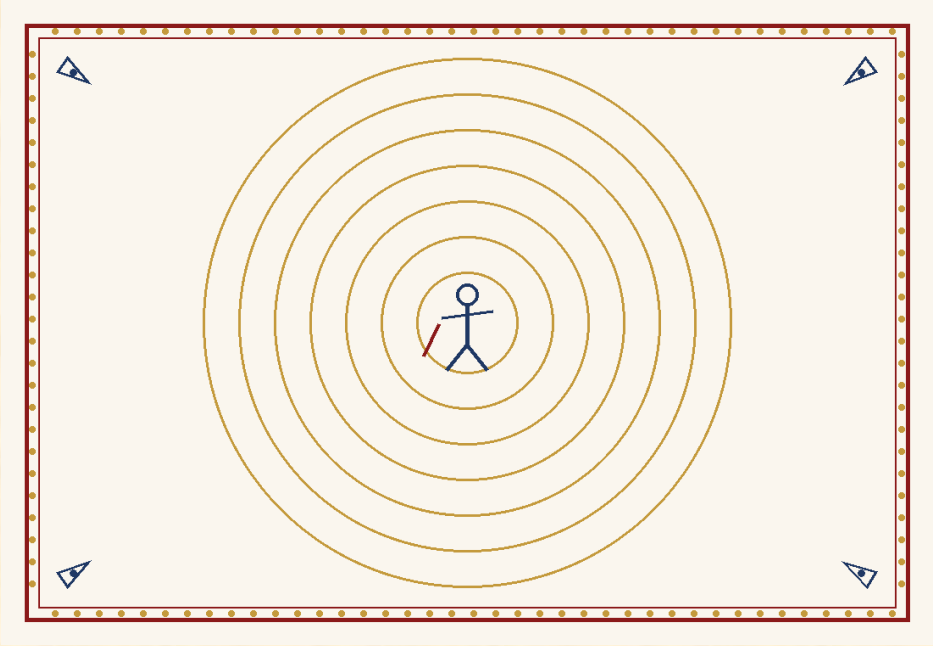

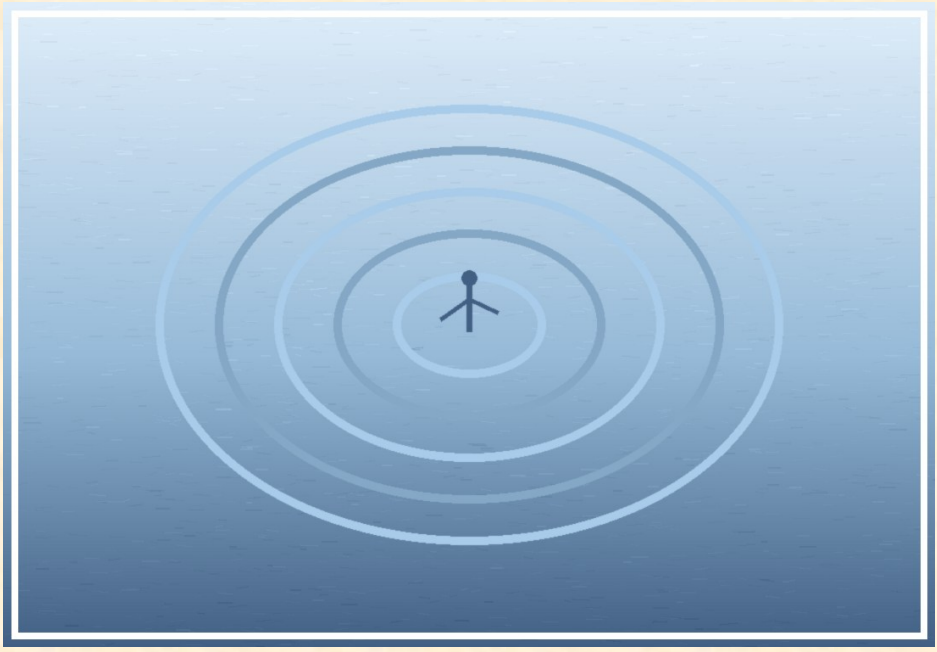

चित्र 3

ओकरा लगलै जे ओ अकासमे ठाढ़ अछि। आस्था ऊपर देखलक, नीचाँ देखलक — दुनू दिस एक्कहि रंगक धूसर शून्य। ओकरा लगलै जे ओ स्थिर ठाढ़ अछि, फेर लगलै — नहि, ओ नीचाँ जा रहलि अछि! मुदा केहन खसब ई? ने हवा कान लग सनसनाइत छल, ने पेट मे ओ डरबला गुरगुड़ी।

ओकरा लगलै जे देहमे कोनो भार नहि छै। ओ दूभियोसँ बेसी हल्लुक भऽ गेल छलि। आस्था हाथ पसारलक — हाथ पाँखि जकाँ पसरि गेलै। ओ हँसए चाहलक, मुदा हँसी ठोरेपर रुकि गेलै, कारण मोनमे एकटा प्रश्न हुरकुचिया रहल छल: ई खसब कतऽ जा कऽ रुकत?

समय सेहो एतऽ अजीब ढंगसँ बहैत छल। कतेक काल बीतल — घड़ी रहितै त' कहितै दू घण्टा। आ तखन, बिनु कोनो झटकाक, आस्था एकटा उज्जर दपदप जगहपर आबि कऽ खसलि। खसलि कोनो नरम वस्तुपर — जेना केओ ठीक ओही ठाम गद्दा बिछा कऽ राखने हो। कनेको चोट नहि लगलै।

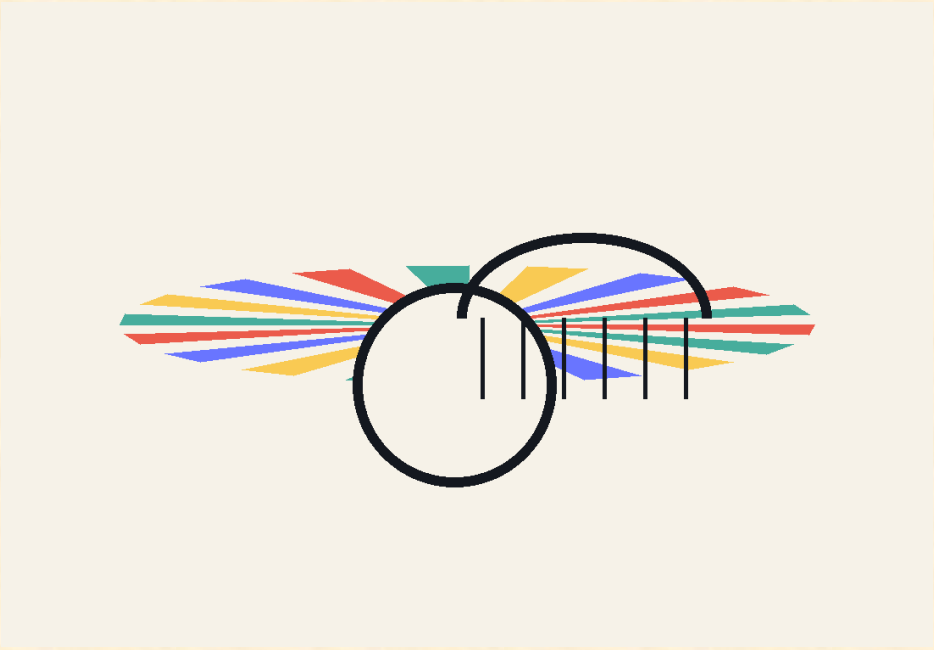

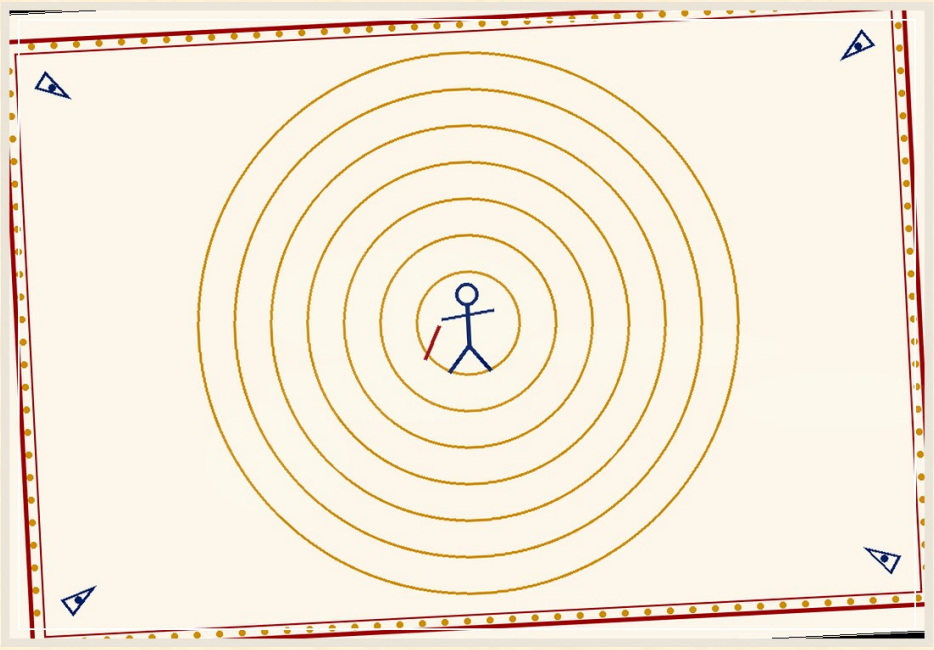

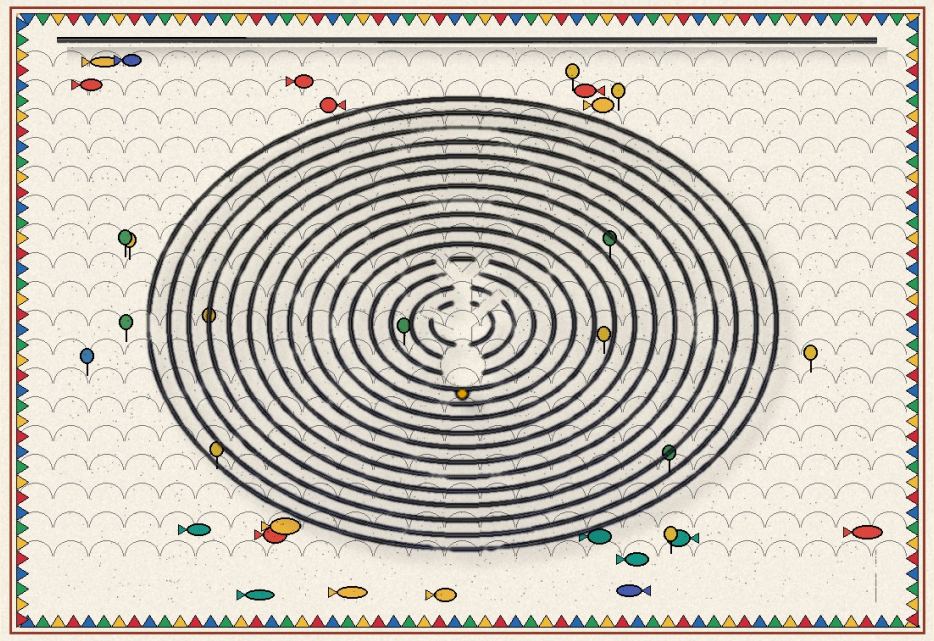

चित्र 4

आस्था उठि कऽ बैसलि आ चारू कात तकलक। की परीलोकक निकास रहै ओ धोधरि? — ओ सोचए लागलि — तखन त' कतेक आर लोक, माल-जाल, चिड़ै ओतऽ सँ खसैत हेतै, बिला जाइत हेतै! आ तँ लोक चन्ना गाछीकेँ भुतहा गाछी कहै छै!

ई सोचिते ओकर करेज धक् दऽ कऽ उठलै। गामक कतेक खिस्सा मोन पड़लै — फल्लाँक बाछी बोनमे हेरा गेल, फल्लाँ घरक सुग्गा उड़ल त' घुरबे नहि कएल... त' की ओ सभ एतहि...?

आस्था आँखि घुमेलक। जगह त' नीके लागै छलै। ऊपर तकलक त' धोधरि नहि देखा पड़लै — चारू कात अकासे-अकास छल। मुदा नील अकास नहि, उज्जर अकास। एहन उज्जर, जेहन दूधक ऊपरका छाल्ही। आ ओही उज्जरमे, दूरसँ, एकटा हरियर बिन्दु ओकरे दिस उड़ल आबि रहल छल।

अध्याय ३ : टुराकोस

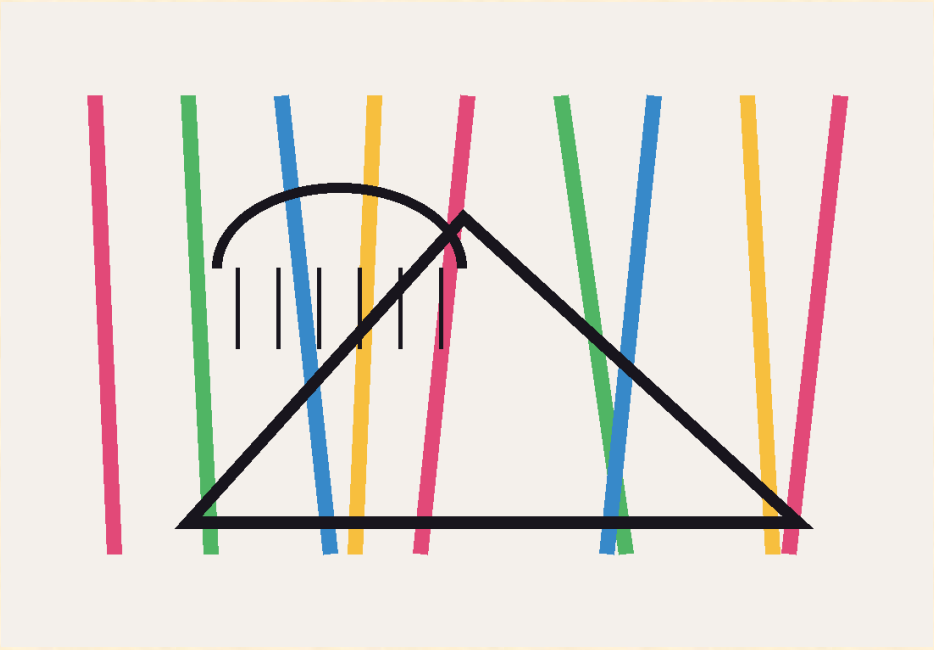

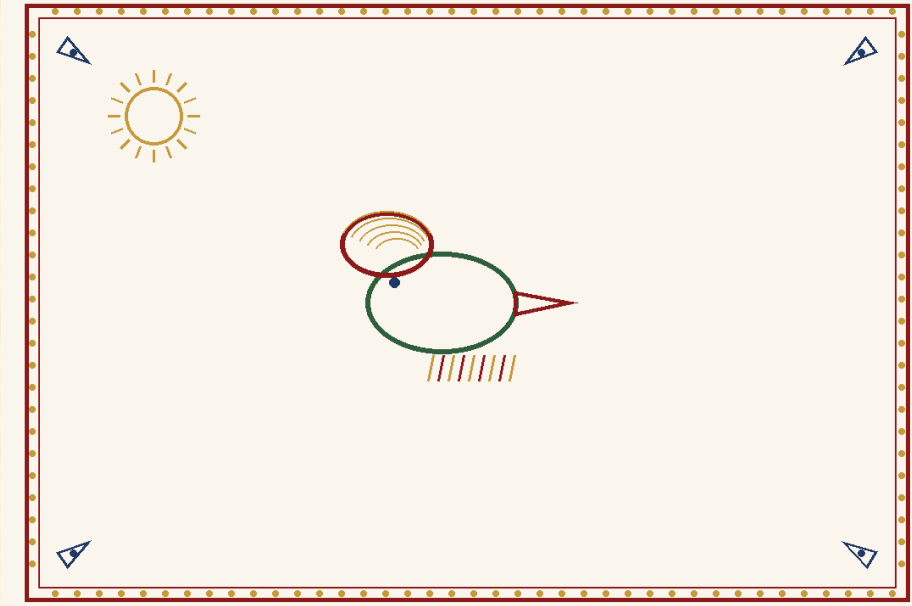

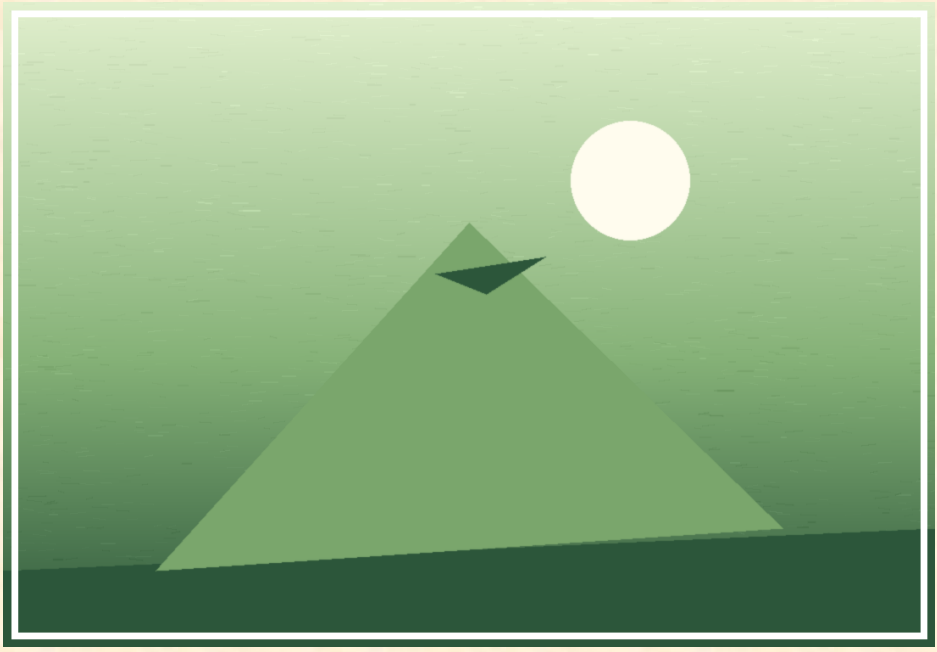

चित्र 5

हरियर बिन्दु लग अबिते चिड़ै बनि गेल — हरियर पाँखिबला, जकर उड़ैबला पाँखिक रंग लाल छल। ओ आस्थाक सोझाँ उतरल आ साफ मनुक्खक बोलीमे बाजल — 'हम छी टुराकोस चिड़ै। हम अफ्रीकासँ आएल छी।'

आस्थाक आँखि फाटल रहि गेल। मुदा डरसँ बेसी ओकरा भीतर कौतूहल छल, आ कौतूहल सदिखन शिष्टाचार सिखा दैत अछि। ओ कहलक, 'हम छी आस्था। हम एशियासँ आएल छी। मुदा... अहाँ चिड़ै भऽ कऽ मनुक्खक बोली कोना बाजै छी?'

'ई छी परीलोक,' टुराकोस कहलक, 'एतऽ एलाक बाद सभ एकबैग मनुक्ख जकाँ सोचऽ लगैए, बाजऽ लगैए।' — आ ई कहैत ओ उड़ि कऽ आस्थाक कन्हापर बैसि गेल। ओकर चांगुरक हल्लुक पकड़िमे कोनो डर नहि छल, छल खाली एकटा नव मित्रताक ओजन।

'माने जखन अहाँ अफ्रीकामे छलहुँ, तखन मनुक्खक बोलीमे नहि बाजै छलहुँ?' 'नै,' टुराकोस सहज भावेँ कहलक, जेना ई दुनियाक सभसँ साधारण बात हो।

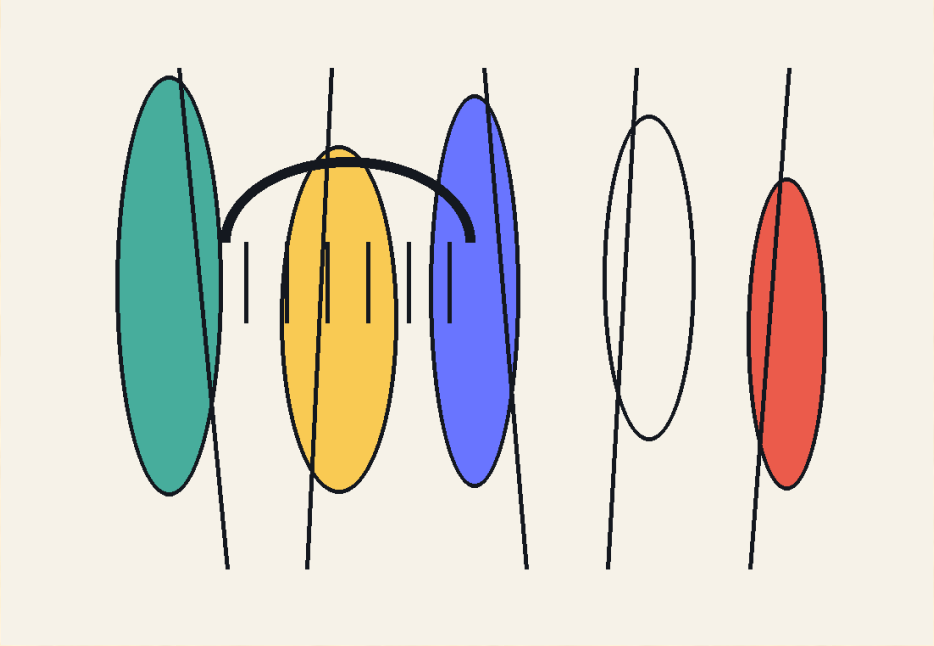

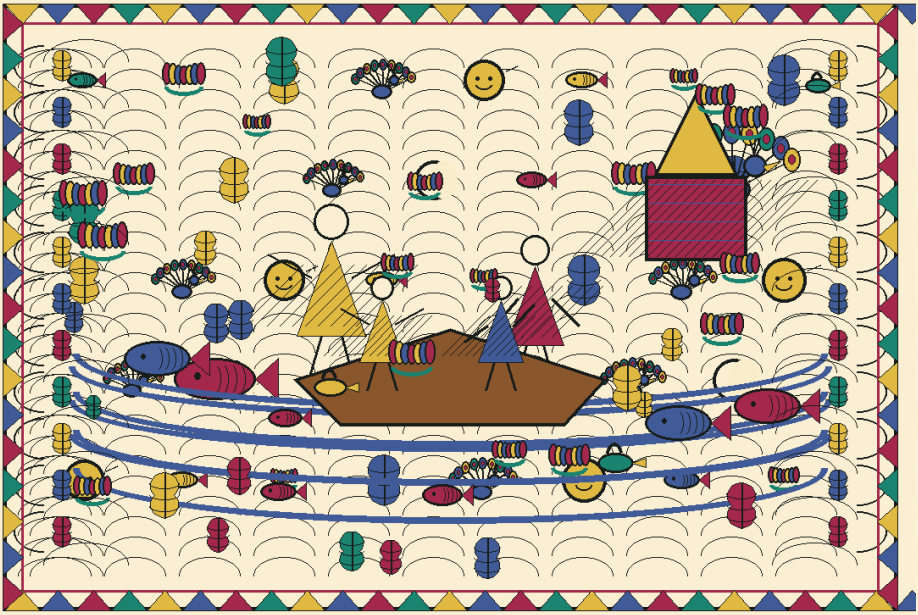

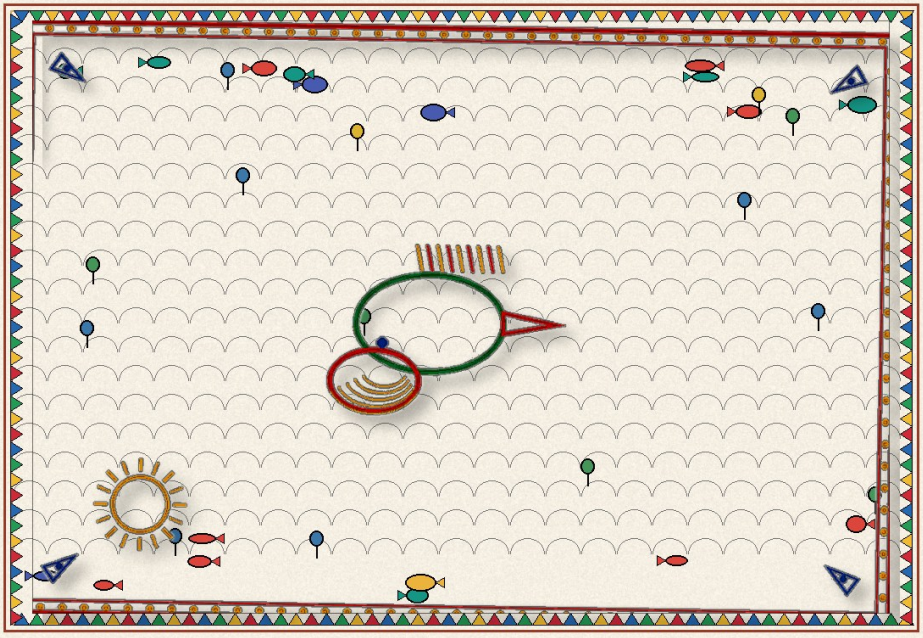

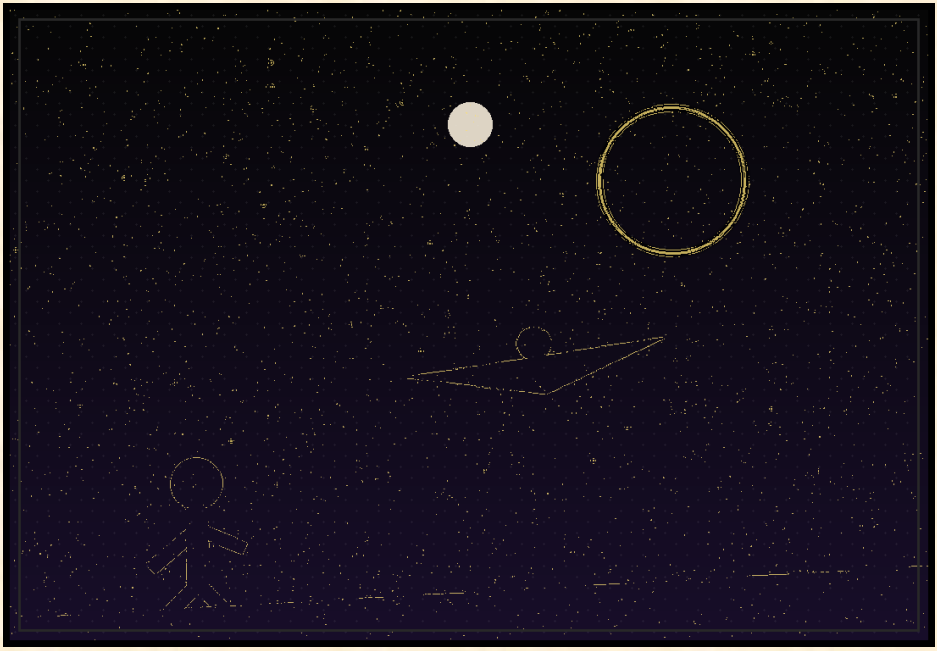

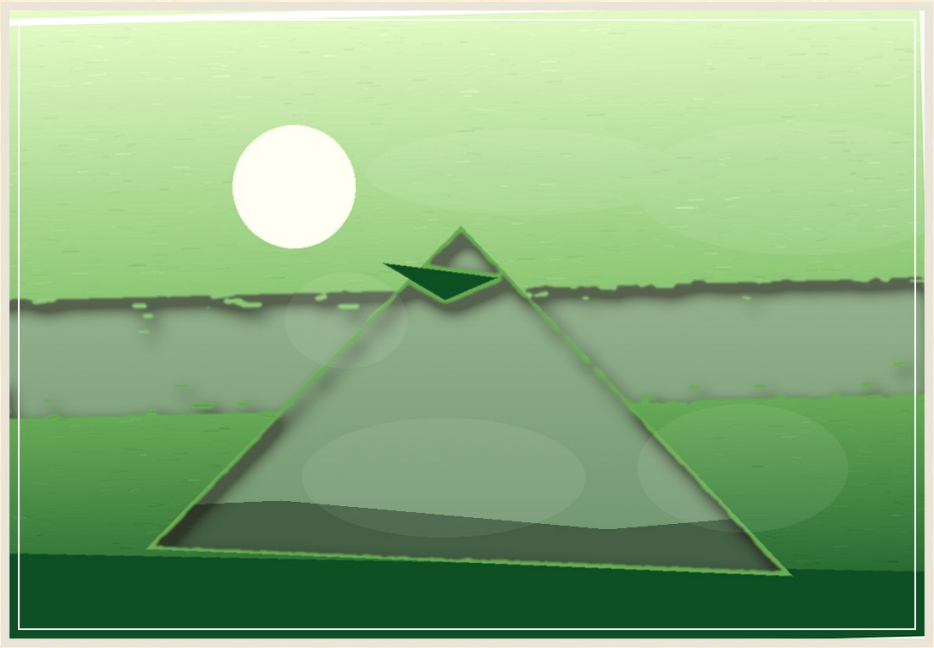

चित्र 6

तखने बर्खा जोरसँ हेबऽ लगलै। बूँद पड़िते टुराकोसक देहसँ जे पानि खसलै, से लाल रंगक — आस्थाक हाथपर लाल रंग लागि गेलै। 'अहाँ होली खेलाएल छी की?' आस्था पुछलक। 'नै, किए?' 'ई लाल रंग अहाँक पाँखिसँ झड़लए!'

टुराकोस हँसल, 'हमर हरियर रंग पकिया अछि, मुदा लाल रंग पानिमे झड़ऽ लागैए। ई लाल हमर पाँखिक अपन रंग छी, केओ लगओने नहि अछि।' आस्था अपन लाल भेल तरहत्थी दिस तकलक। एहि परीलोकमे त' बर्खा सेहो रंग खेलबैत अछि — ओ सोचलक।

'हम अपन गामक चन्ना गाछीक गाछक धोधरिसँ खसल छी,' आस्था कहलक, 'एतऽ सँ बाहर निकलैक कोनो रस्ता छै की?' टुराकोसक हँसी पहिल बेर मलिन भेल। ओ आस्तेसँ बाजल — 'सएह रस्ता त' हमहूँ ताकि रहल छी।' आ दुनू गोटे, एक अनचिन्हार लोकमे दू चिन्हार सन, संगे आगाँ बढ़ल।

अध्याय ४ : बिनु सूर्यक इजोत

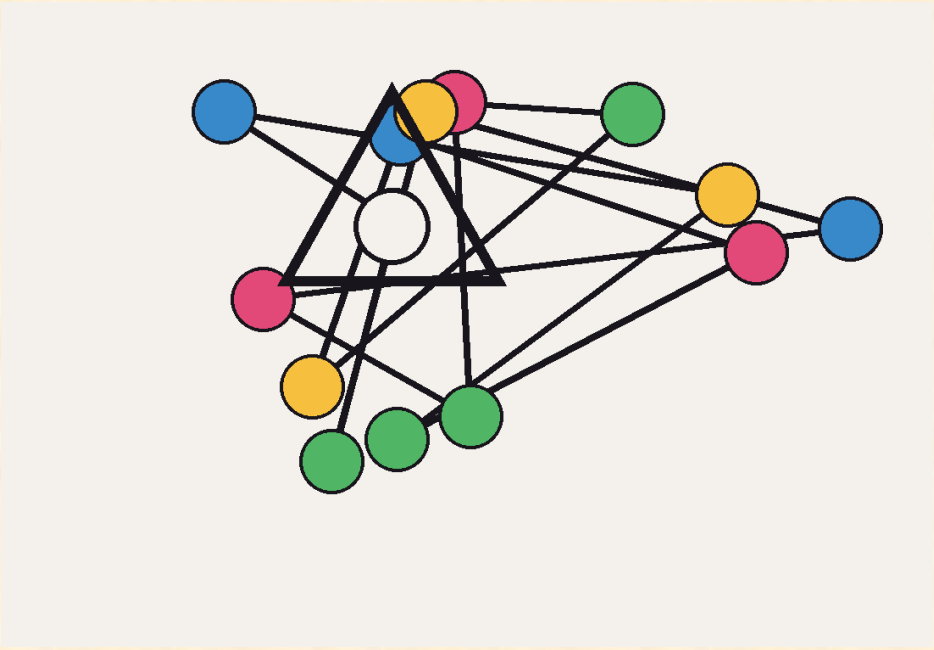

तरहरिमे परीलोक- गजेन्द्र ठाकुर

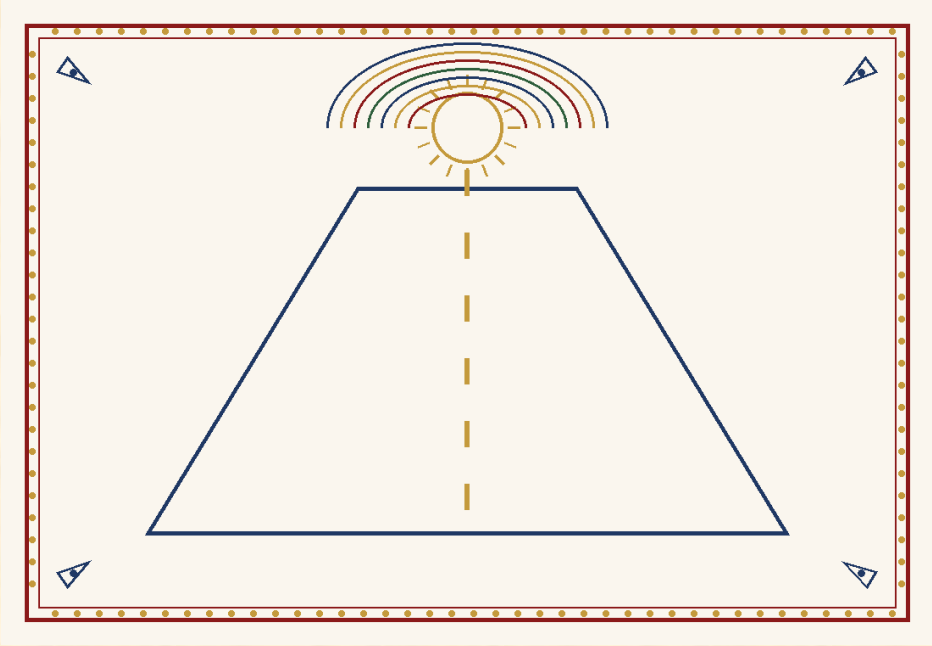

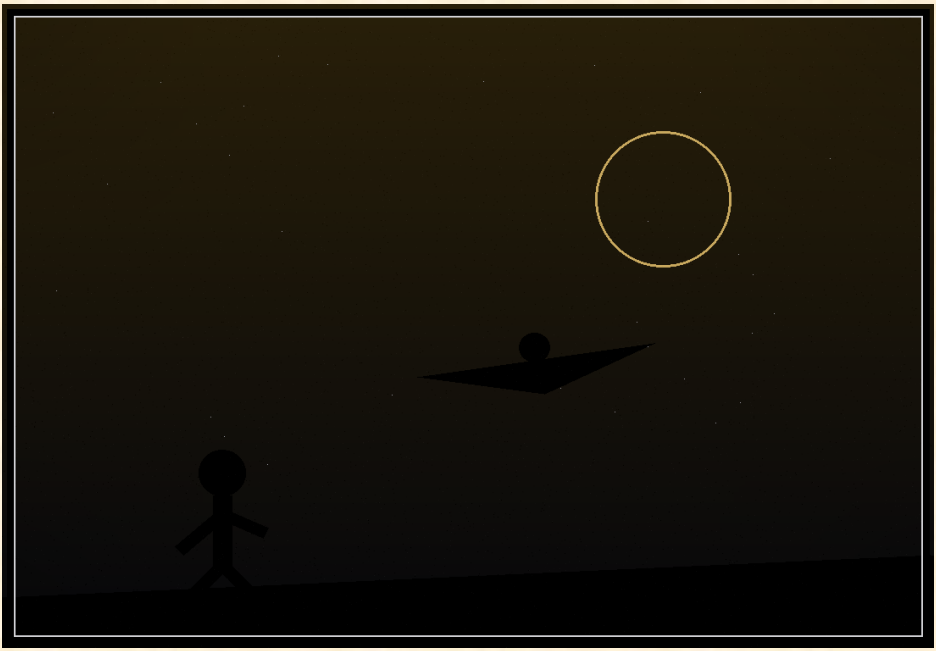

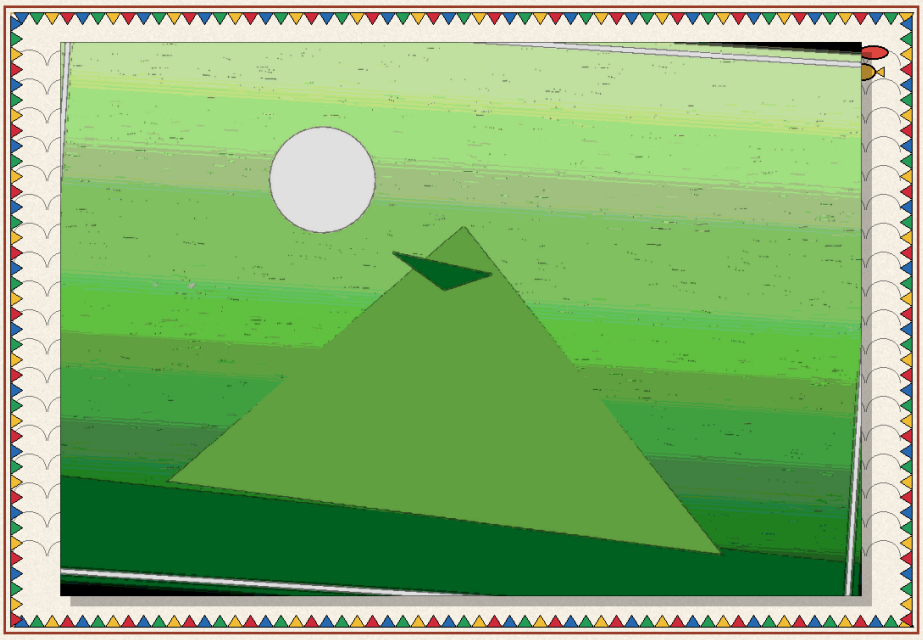

चित्र 7

इजोत चारू दिस पसरल छल — मुदा केहन इजोत! ने कतहु सूर्य, ने छाह, ने आँखिमे कुटकुटी। आस्था पुछलक, 'धोधरिमे... माने एहि लोकमे प्रकाश कोना आएल? सूर्य त' एतऽ छथिए नहि!'

चलैत-चलैत आस्थाकेँ एकटा आओर अचरज भेलै — रस्तापर घर्षणे नहि छल। चिक्कन, साफ सड़क, जाहिपर पएर राखिते देह अपने ससरि जाइत छल। नहि किछु त' सए किलोमीटर प्रति घण्टाक गतिसँ सभ चलि रहल छल। दौगत त' कतेक तेजीसँ दौगत? — आस्था मोनहिमे हिसाब जोड़लक।

बाटमे तितली भेटल — दू पाँखिबला, रंग-बिरंगक, नांगरि-रहित; आ टिकुली — चारि पाँखिबला, नांगरि-युक्त। दुनू सेहो संग भऽ गेल। आब चारि गोटे छल: एकटा बचिया, एकटा चिड़ै, आ दूटा उड़ैत फूल सन जीव।

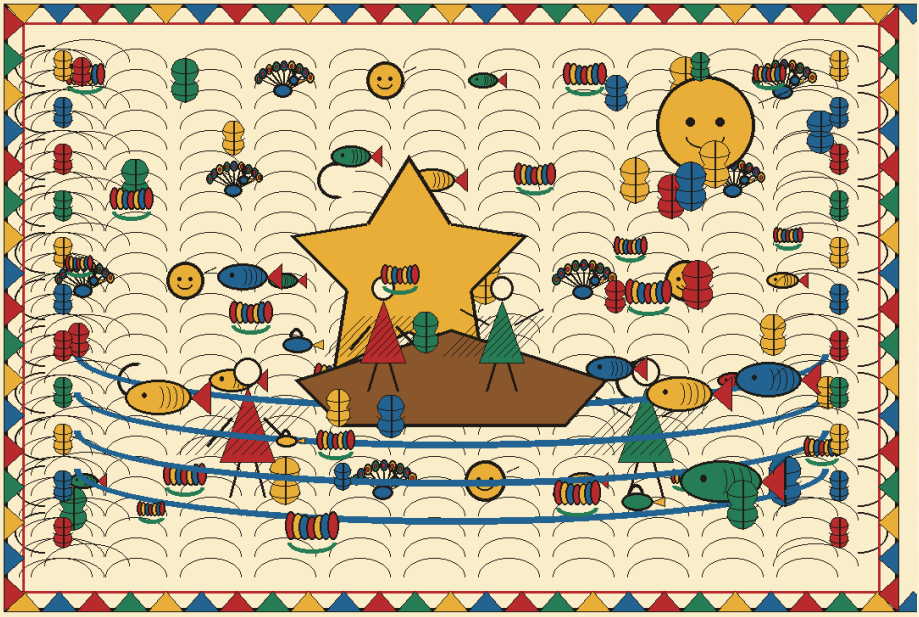

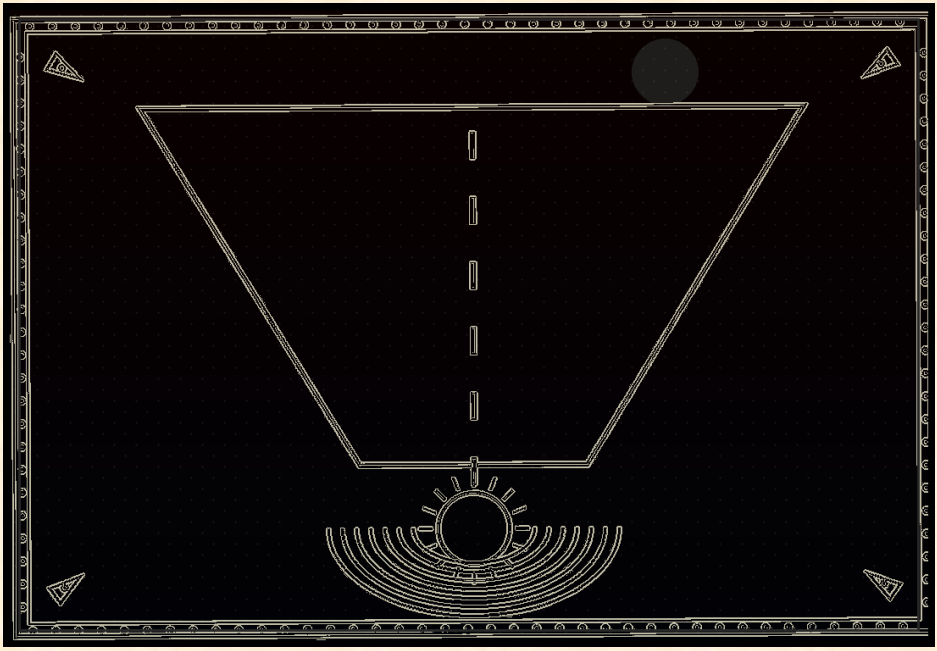

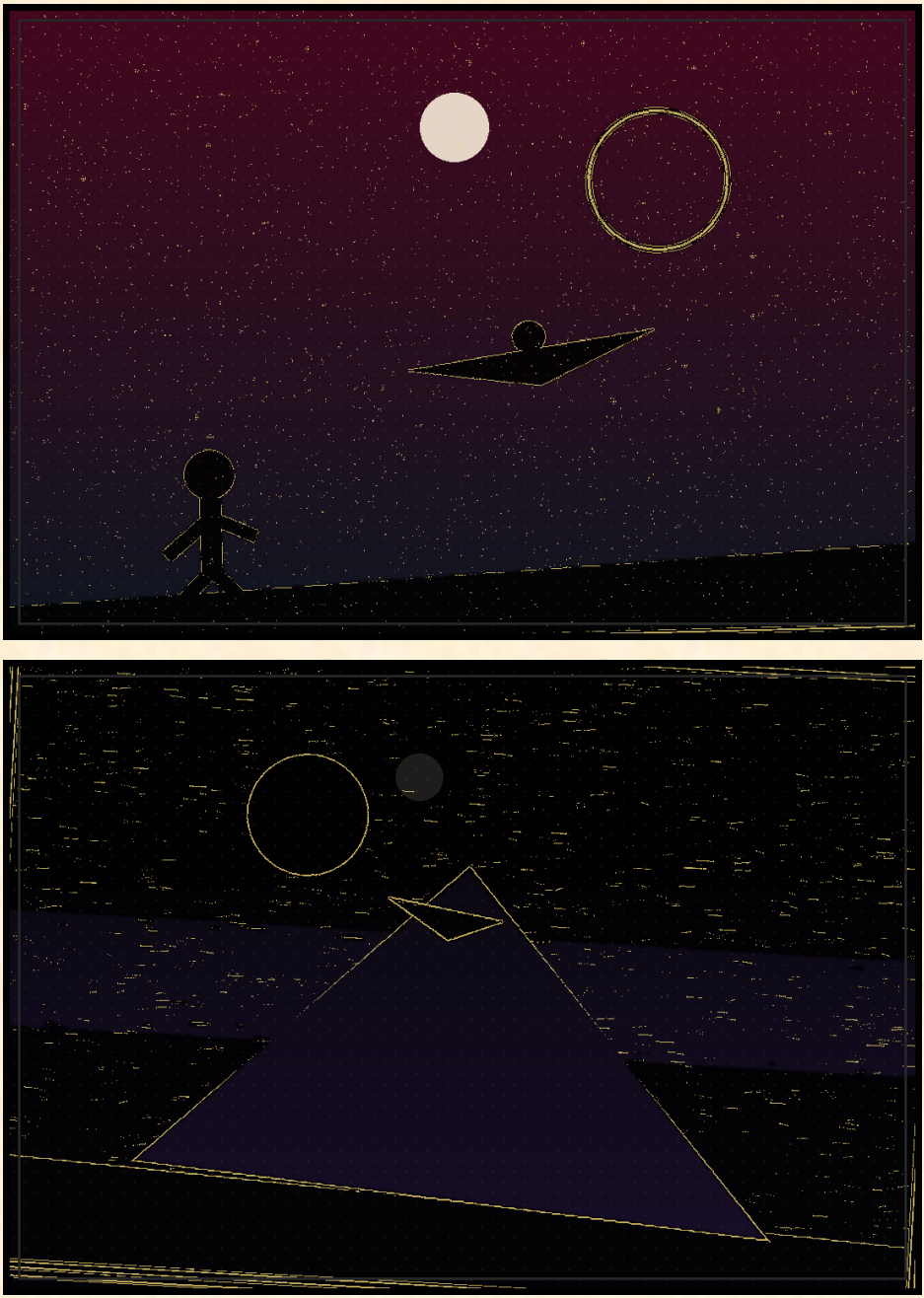

चित्र 8

आस्थाक भीतरका विद्यार्थी आब चुप नहि रहि सकल। 'टुराकोस,' ओ कहलक, 'स्कूलमे पढ़ने छी — कार्बन डाइऑक्साइड गाछक पातक छिद्र स्टोमेटासँ प्रवेश करैए, पानि आ खनिज जड़िसँ, सूर्य-किरण पातसँ। क्लोरोप्लास्ट किरणकेँ सोखैए, तखन ऑक्सीजन बहराइए, फलमे चिन्नी बनैए। जँ एतऽ सूर्य-प्रकाशे नहि, तखन एतुक्का ऊर्जा अबैए कतऽ सँ?'

टुराकोस आस्था दिस एना तकलक जेना कोनो पुरान प्रश्नक नव उत्तर भेटल हो। 'अहाँ पढ़ैमे खूब तेज छी,' ओ कहलक, 'एतऽ एहने लोक सभक आवश्यकता छै। सभ प्रश्नक उत्तर अहाँकेँ भेटि जाएत।' मुदा ओकर स्वरमे किछु एहन छल जे आस्थाकेँ खटकलै — जेना 'आवश्यकता' शब्दक कोनो दोसरो अर्थ हो।

'ऐ लोकमे की सभ छै, टुराकोस?' 'ऐ लोकमे खेत छै — मुदा ओतऽ धान-गहूम नहि, ऊर्जाक खेती होइ छै। बिनु सूर्य-प्रकाशक ऊर्जाक खेती। आ एतऽ एकटा बड़का टा रेगिस्तान सेहो छै — परीलोकक उत्तरबरिया महारक ओइपार।' 'उत्तरबरिया महार?' आस्थाक कान ठाढ़ भऽ गेल। देवालक ओइपार सदिखन खिस्सा रहिते अछि।

अध्याय ५ : महारक ओइपारक खिस्सा

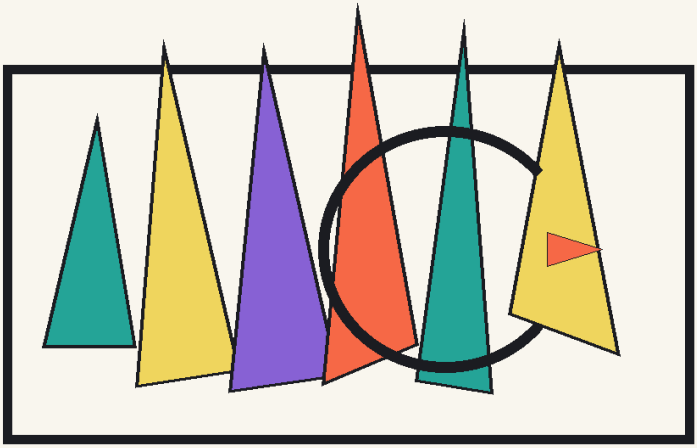

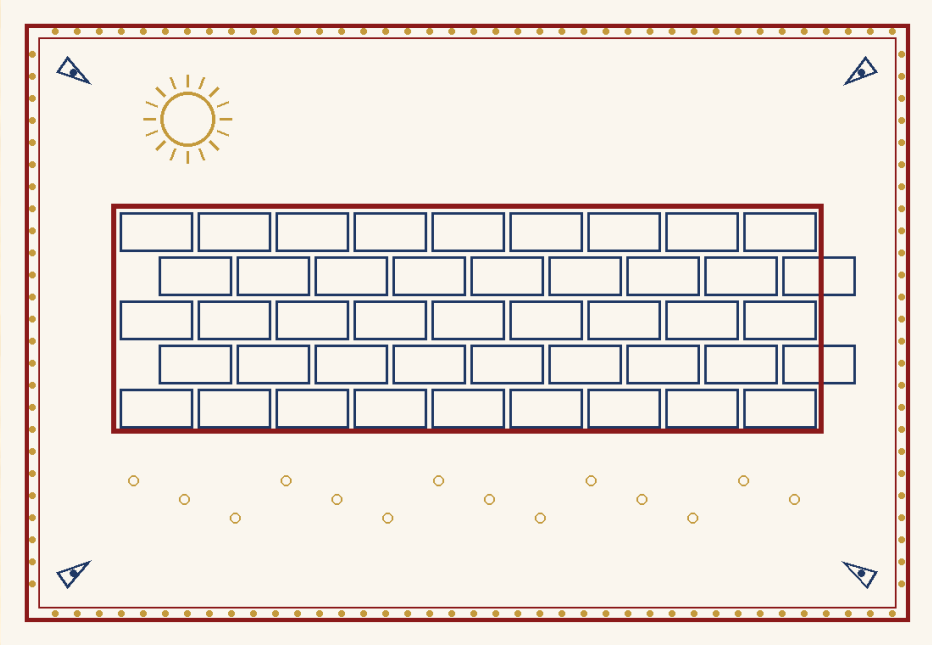

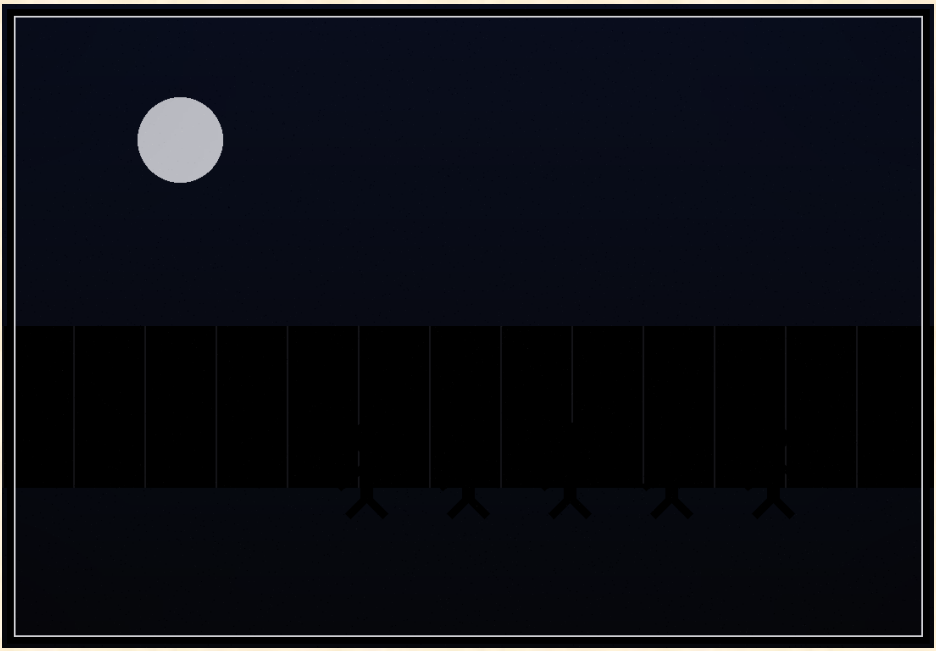

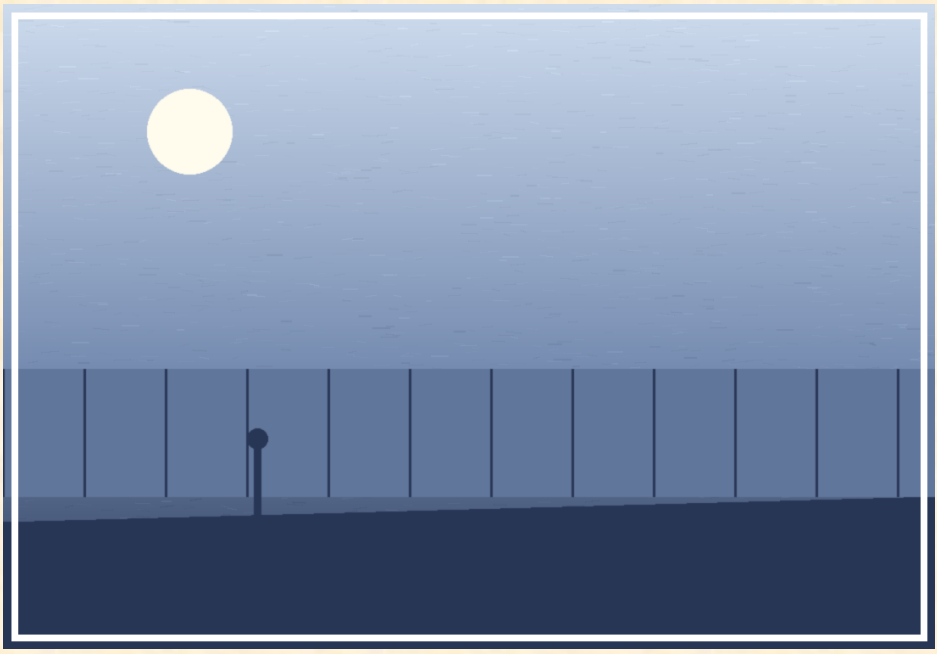

चित्र 9

'हँ,' टुराकोस कहलक, 'ऐ लोकक उत्तरमे उत्तरबरिया महार छै — ऊँच, नमहर देवाल। तकर ओइपार रेगिस्तान। सुनै छिऐ, ओतऽ पहिने खेत छलै। मुदा जहियासँ एतुक्का रानी ओहि इलाकामे कूड़ा-कचरा फेकबाक आदेश देलनि, ओहि दिनसँ ओ इलाका सुन्न हेबऽ लागल, आ आब त' रेगिस्तान भऽ गेल अछि।'

आस्था ठमकि गेलि। 'रानी अपने लोकक एकटा हिस्सार्कें कूड़ाघर बना देलनि?' 'हँ। आ जखन आदेश देलनि, तहिये ई महार बनाओल गेल — कूड़ा फेकबाक स्थान फरिछाबैमे सुविधा भेल।' टुराकोसक स्वर सपाट छल, मुदा आस्थाक मोनमे पहिल काँट गड़ि गेल: जे लोक एतेक सुन्दर अछि, ओकर एकटा कोन एतेक कुरूप किएक?

तखने एकटा भयंकर साँप सोझाँ आबि गेल — कारी, चमकैत, फन उठौने। आस्था डरा गेलि, टुराकोसक पाँखि पकड़ि लेलक। 'नै डराउ,' टुराकोस कहलक, 'ई ओना त' सभसँ बेसी बिखबला मम्बा साँप अछि, मुदा ई हमर अपन अफ्रीकाक अछि। ऐ परीलोकमे जेना सभ मनुक्खक बोली बाजऽ लगैए, तहिना सभक बिख सेहो खतम भऽ जाइए।'

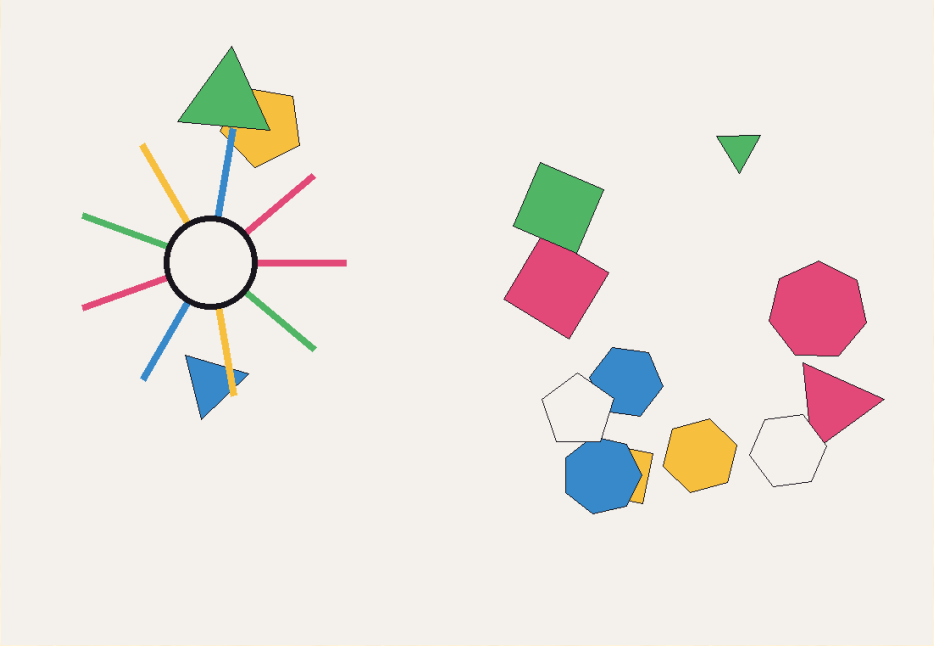

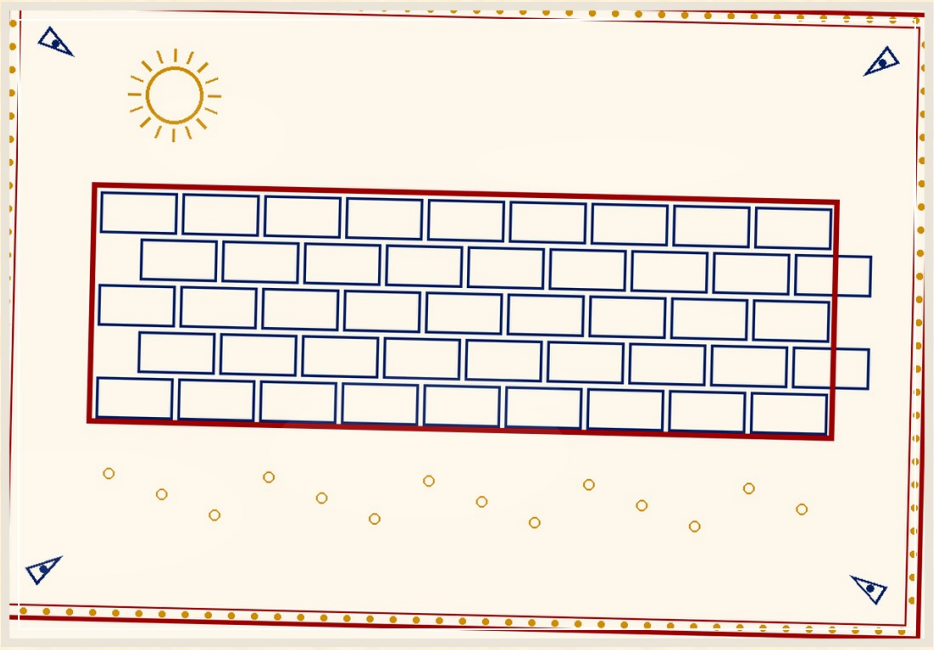

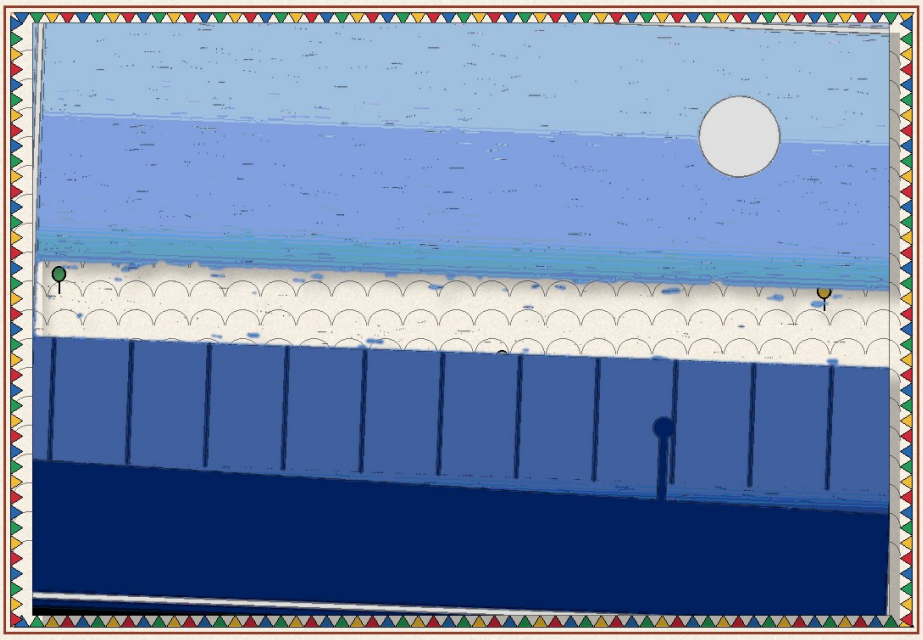

चित्र 10

मम्बा सिसकारी दैत भारी अबाजमे बाजल — 'परीलोकमे अहाँक स्वागत अछि।' ओकर स्वरमे बिख नहि छल, मुदा एकटा पुरान थकान जरूर छल, जेना बहुत दिनसँ ओहो कोनो बाट ताकि रहल हो।

तखने एकटा हँसैबला जीव फुदकल — 'खी-खी-खी!' 'ई के छी?' 'ई छी कूकाबुरा, आस्ट्रेलियासँ आएल। ई हरदम हँसिते रहैए।' कूकाबुरा खिखिया कऽ एहन हँसल जे आस्थो कैं हँसी लागि गेलै — एहि अजीब लोकमे पहिल खुलि कऽ कएल हँसी।

मुदा हँसी थम्हिते आस्थाक माथमे गनती शुरू भेल: 'आस्ट्रेलिया, अफ्रीका, एशिया... हम त' धोधरिसँ एलहुँ, आ अहाँ सभ?' आ एहि बेर तितली, टिकुली, कूकाबुरा, मम्बा आ टुराकोस एकट्ठे बाजल — 'हमहूँ सभ धोधरिसँ एलहुँ।' ओहि एक-स्वरमे एकटा एहन सत्य छल जे आस्थाक करेजकैं छूबि गेल: ई सभक सभ ओकरे जकाँ खसल यात्री छल।

अध्याय ६ : आठ महादेशक धोधरि

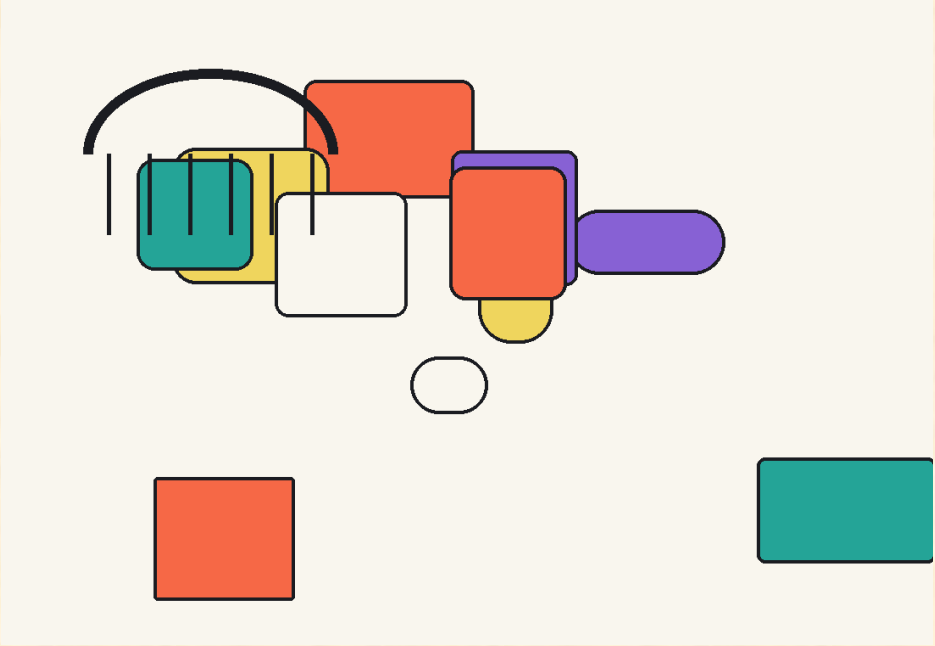

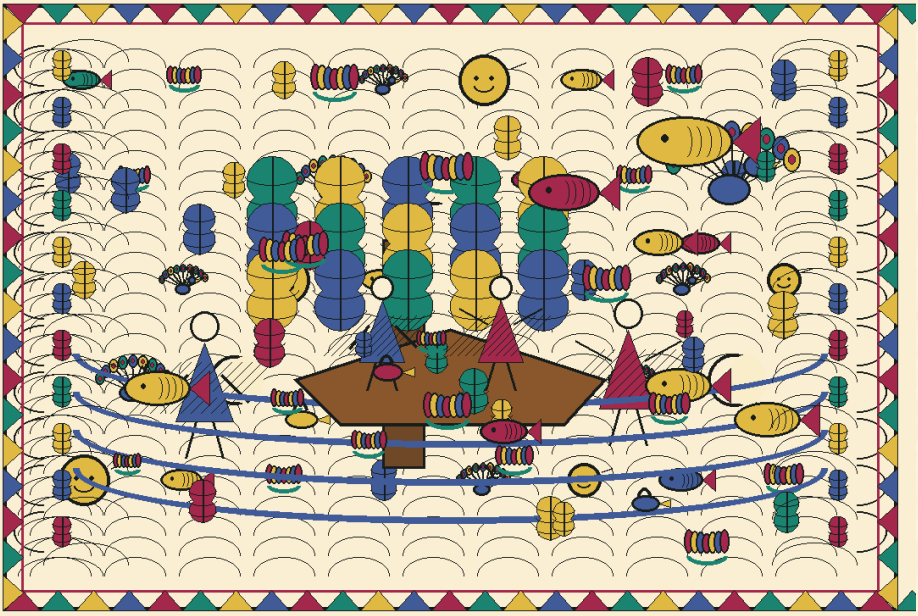

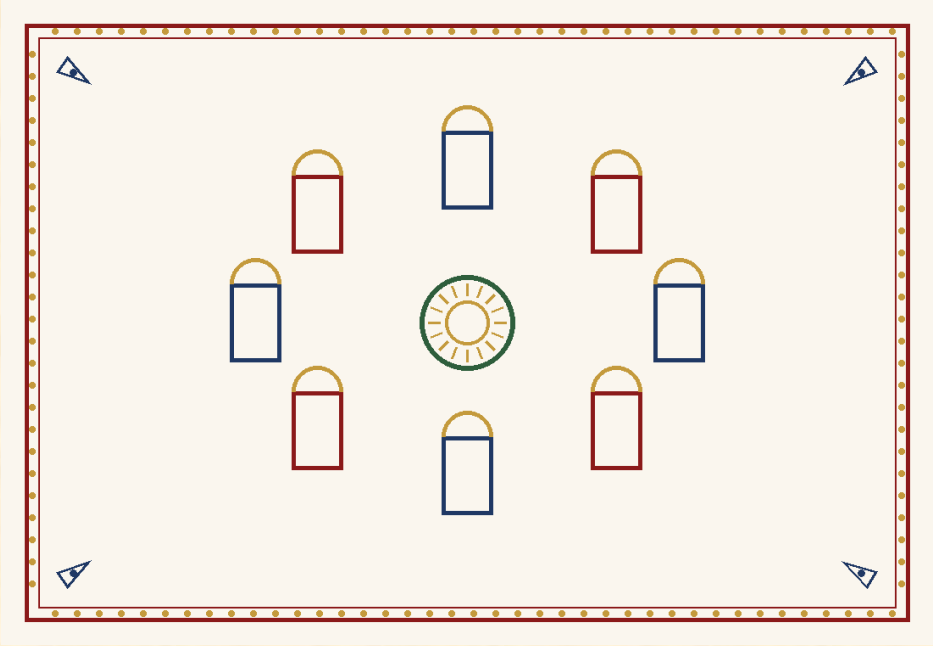

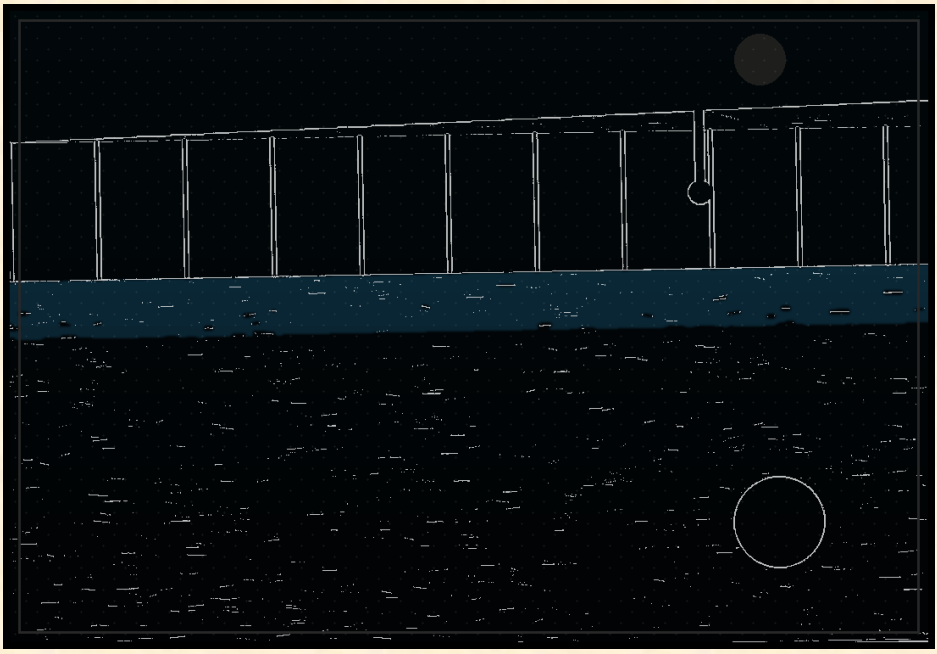

चित्र 11

कूकाबुरा हँसैत-हँसैत गम्भीर बात कहि गेल — 'एतऽ परीलोकमे आर्कटिक, अण्टार्कटिक, एशिया, यूरोप, ऑस्ट्रेलिया, उत्तरी अमेरिका, दक्षिणी अमेरिका आ अफ्रीका — आठो ठामसँ धोधरि बनाओल गेल छै।' बनाओल गेल छै — ई शब्द आस्थाक कानमे अटकि गेल। धोधरि अपने नहि बनल, केओ बनओलक।

'आ बाहर निकलबाक कोनो उपाए?' आस्था पुछलक। मम्बा बाजल, 'सुनिते छिऐ जे बाहर निकलै लेल औंठा आ आँखिक पहचानक आधारपर कोनो निकास छै — जइसँ आठो ठाम बहराएल जा सकैए।'

आस्था अकचकाइत पुछलक, 'आँखि आ औंठाक पहचान? माने फिंगरप्रिन्ट आ कोर्निया आइडेन्टिफिकेशन? से किए?' मम्बा कहलक, 'से नहि भेलासँ एशियाक लोक अण्टार्कटिका पहुँचि जाएत, आ से भेने गड़बड़ हएत।'

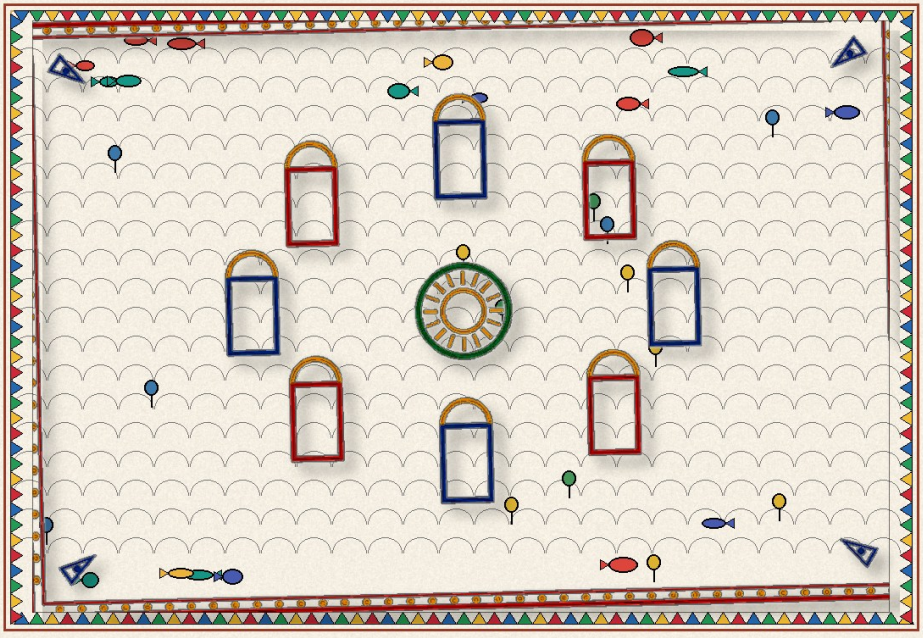

तरहरिमे परीलोक- गजेन्द्र ठाकुर

चित्र 12

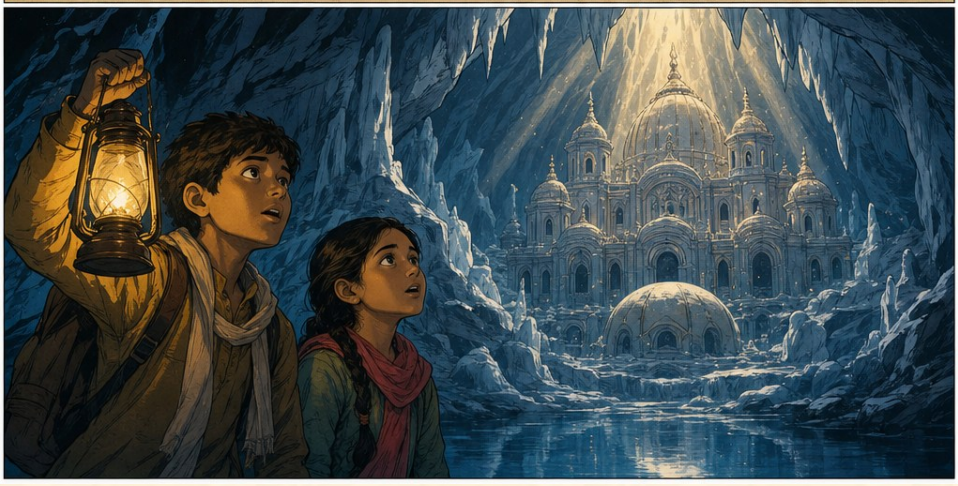

'की गड़बड़ हएत?' 'बड्डु गड़बड़। जेना आर्कटिककेँ लिअ — ओतऽ उत्तर ध्रुवपर कहियो राति नहि होइ छै। एकटा एस्कीमो भेटत, से कहत- अहाँ के? तहिना अण्टार्कटिकमे दक्षिण ध्रुवपर कहियो दिन नहि होइ छै। एकटा पेंग्यूइन भेटत, से कहत- अहाँ के?'

आ जेना खिस्सा सुनि कऽ पात्र चलि अबैत अछि, तहिना तखने दू कातसँ एस्कीमो आ पेंग्यूइन अबैत देखेलाह। नमस्कार-पाती भेल। आब ओ सभ आठ गोटे छल — आठ ठामक आठ यात्री, एक्कहि उज्जर लोकमे।

आस्था सभकेँ देखलक आ मोनमे सोचलक: सभ केओ एतऽ स्वागतमे मुस्कुराइत अछि, मुदा ककरो लग घर घुरबाक बाट नहि अछि। ई केहन परीलोक छी, जतऽ अएबाक आठ दरबज्जा आ जेबाक एक्को नहि — खाली एकटा अफवाह, औंठा आ आँखिक चिन्हासीबला?

अध्याय ७ : सात रंगक कियारी

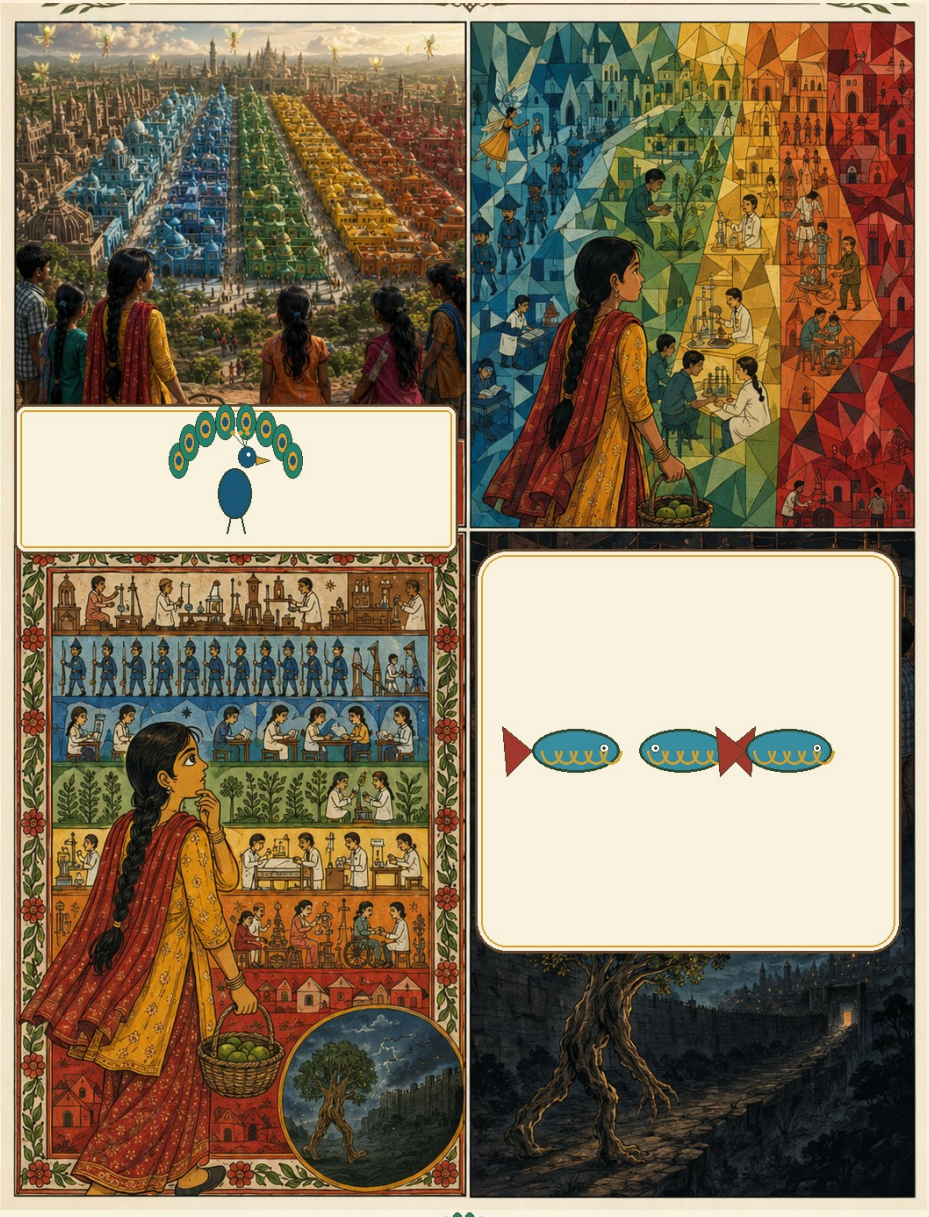

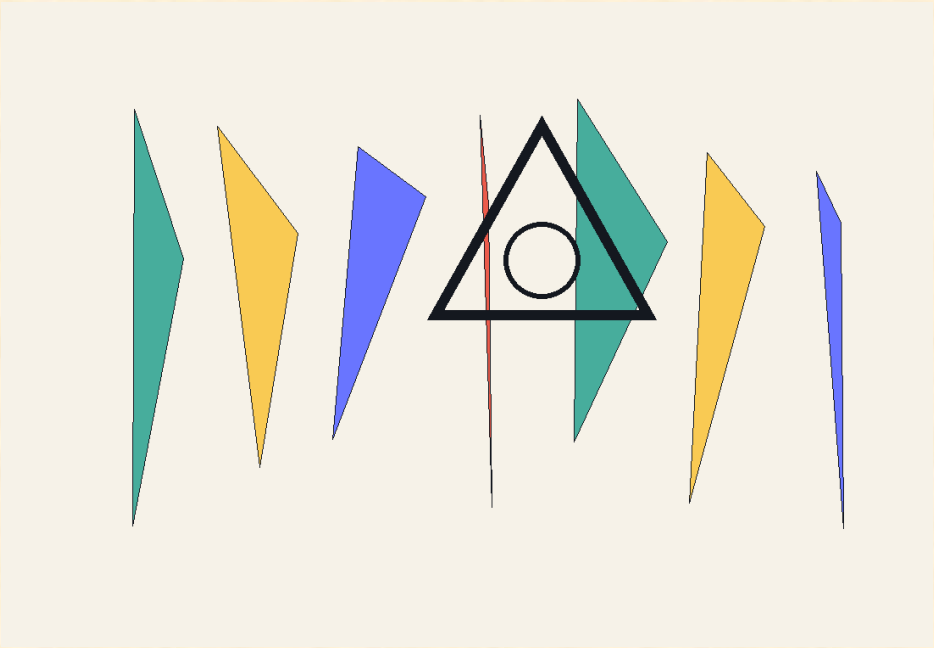

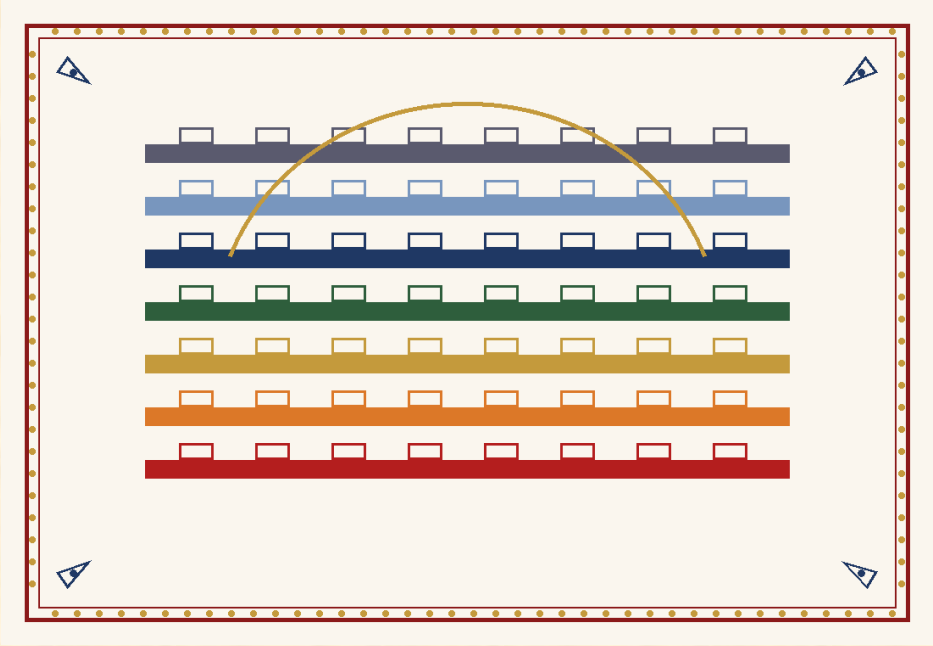

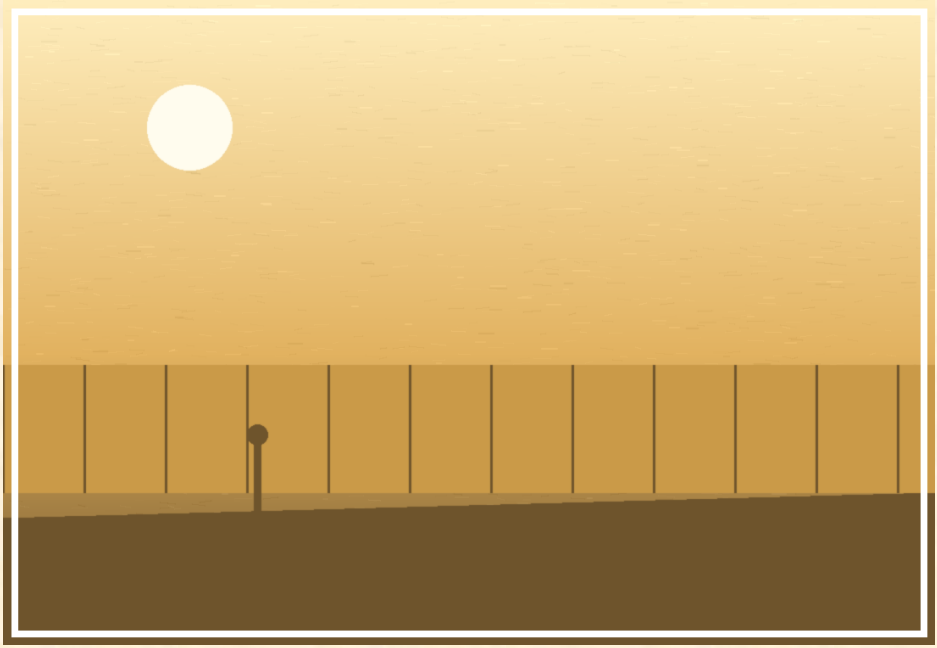

चित्र 13

आगाँ बढ़िते सड़कपर चहल-पहल शुरू भऽ गेल। कनियाँ-पुतरा सन परी सभ चारू कात घूमि रहल छलीह। घर-दुआर रंग-बिरंगक। आ सोझाँमे — अकासक पनिसोखा जमीनपर उतरि आएल हो जेना — एक पाँतीमे सातटा कियारी: भटरङ, असमानी, नील, हरियर, पीयर, संतोला आ लाल टुहटुह।

'ई की छी, टुराकोस?' 'ई परीलोकक मुख्यालय आ आवास छी।' आ टुराकोस एक-एक कऽ गनबए लागल: 'भटरङ कियारीमे वैज्ञानिक सभ रहै छथि। असमानीमे सैन्य विभाग। नील रङक मकानक कियारीमे बच्चा सभक स्कूल — पहिला वर्गसँ विश्वविद्यालय धरि। हरियरमे वनस्पतिपर शोधक प्रयोगशाला। पीयरमे मालजाल, मनुक्ख, परीपर शोधक प्रयोगशाला आ अस्पताल।'

'आ संतोला?' 'संतोला रङक पाँतीमे मानसिक आ शारीरिक रूपसँ कमजोर मनुक्ख, परी, चिड़ै, जानवर आ वनस्पतिपर शोध लेल प्रयोगशाला छै। ई पाँती सभसँ पैघ छै, आ एतऽ...' — मुदा आस्था बीचहिमे टोकि देलक।

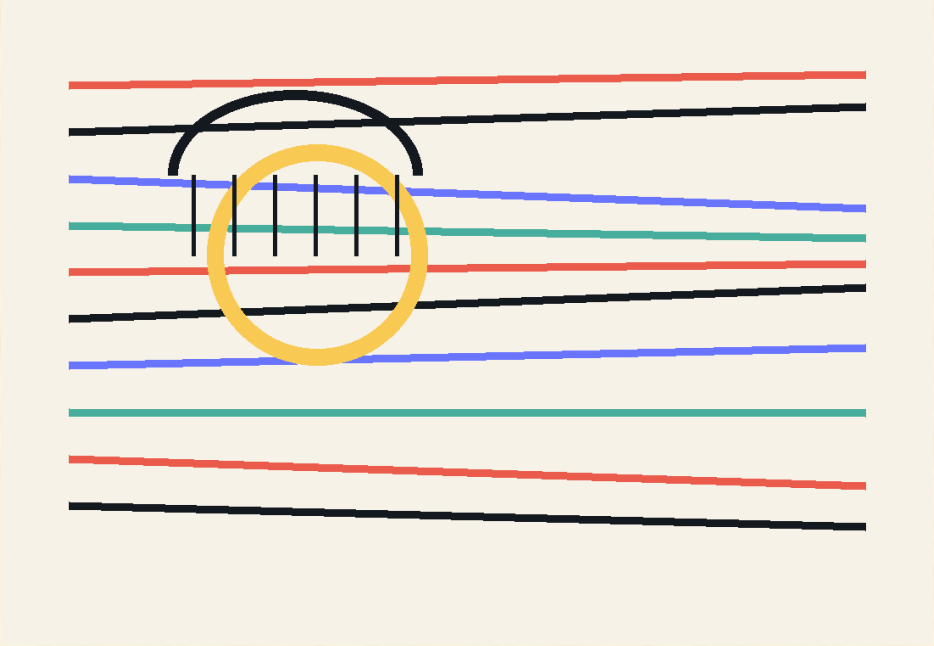

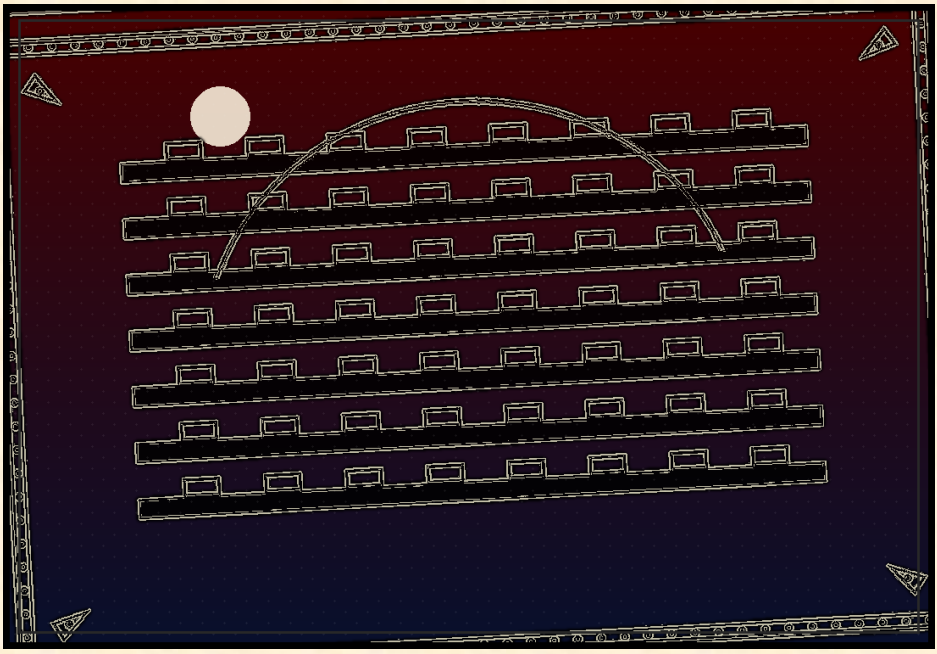

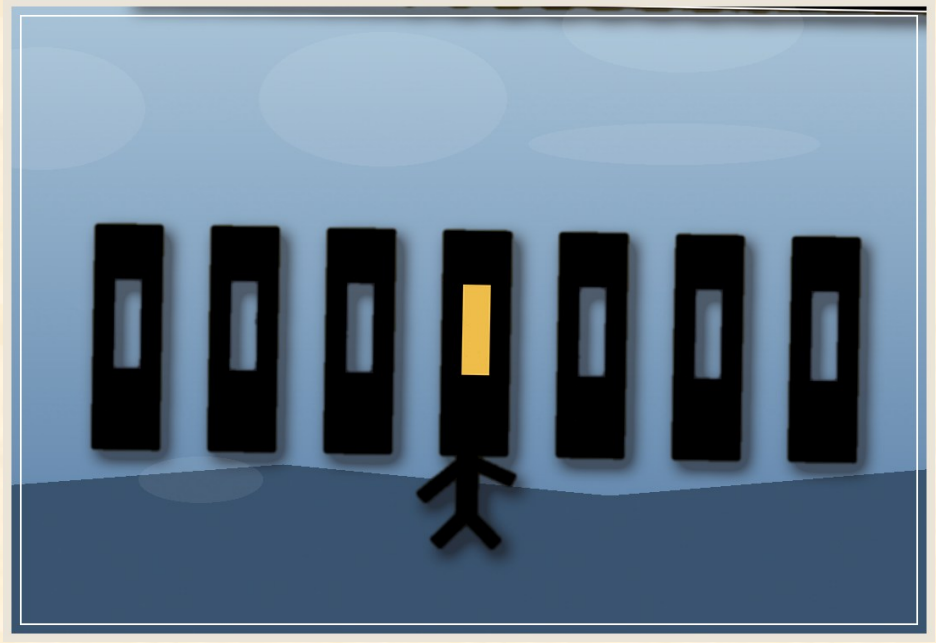

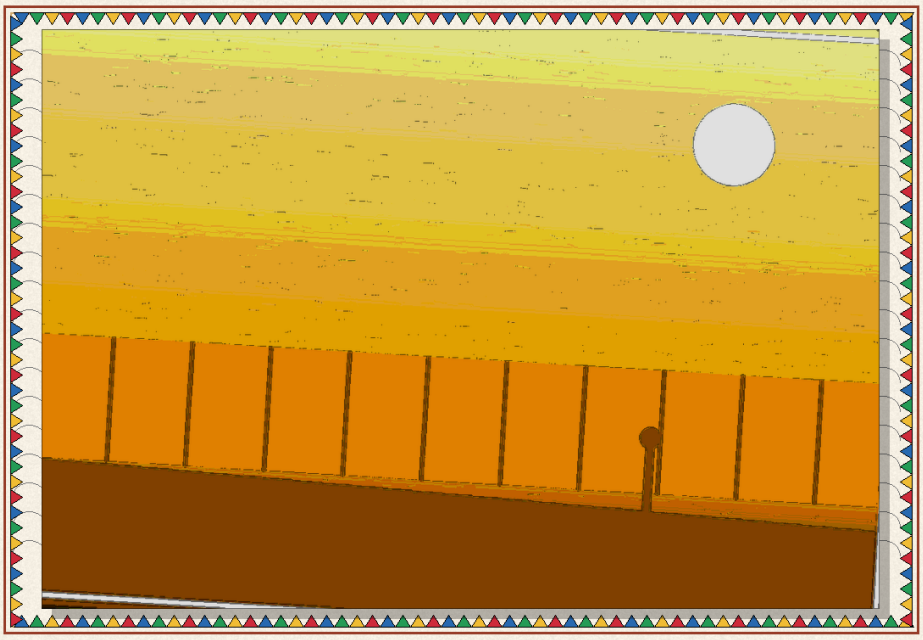

चित्र 14

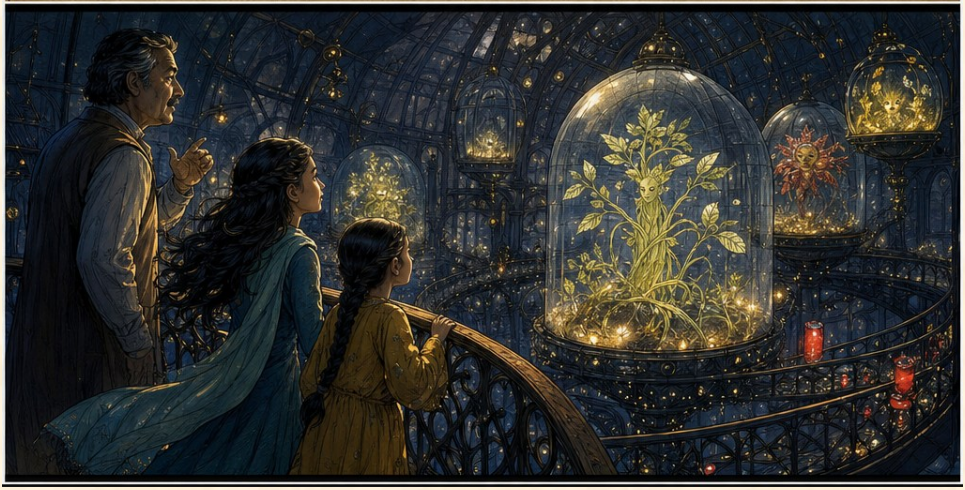

'मानसिक रूपसँ कमजोर वर्गमे वनस्पति सेहो? से कोना? शारीरिक त' बुझलहुँ, मुदा मानसिक?' टुराकोस कनी थम्हल, फेर मद्धिम स्वरमे कहलक — 'एतऽ प्रगति बड्ड तेजीसँ भेलै। वनस्पति सेहो मनुक्ख जकाँ बाजऽ, भुकऽ आ सोचऽ लागल। ओ खाली चलि नहि पबैए — सएहटा कमी छै, मुदा तकरो प्रयास भऽ रहल छै।'

आ फेर ओ बात, जे आगाँ चलि कऽ सभटा खिस्साक धुरी बनत: 'सुनै छिऐ जे प्रयोगशालामे एकाधटा गाछ चलऽ लागल छलै... आ ओइमेसँ एकाधटा पड़ा गेलै — अन्हार लोक दिस, महारक ओइपार।' चलैत गाछ! आस्थाक देह सिहरि गेलै — डरक नहि, कोनो पैघ रहस्यक कोर छूबि लेबाक सिहरन।

'आ ई लाल टुहटुह पाँती?' मम्बा बाजल, 'ई परीलोकक बसिन्दाक निवास। सातो पाँती साँप सन टेढ़-टूढ़ भऽ सौंसे परीलोकमे पसरल अछि।' आस्था सोचलक — रंग एतेक सुन्दर, विभाजन एतेक कठोर। जकर जे रंग, तकर वैह घर, वैह काज, वैह सीमा। एतऽ पनिसोखो पाँतीमे बान्हल अछि।

अध्याय ८ : वनसप्तो ९९९९५७४५

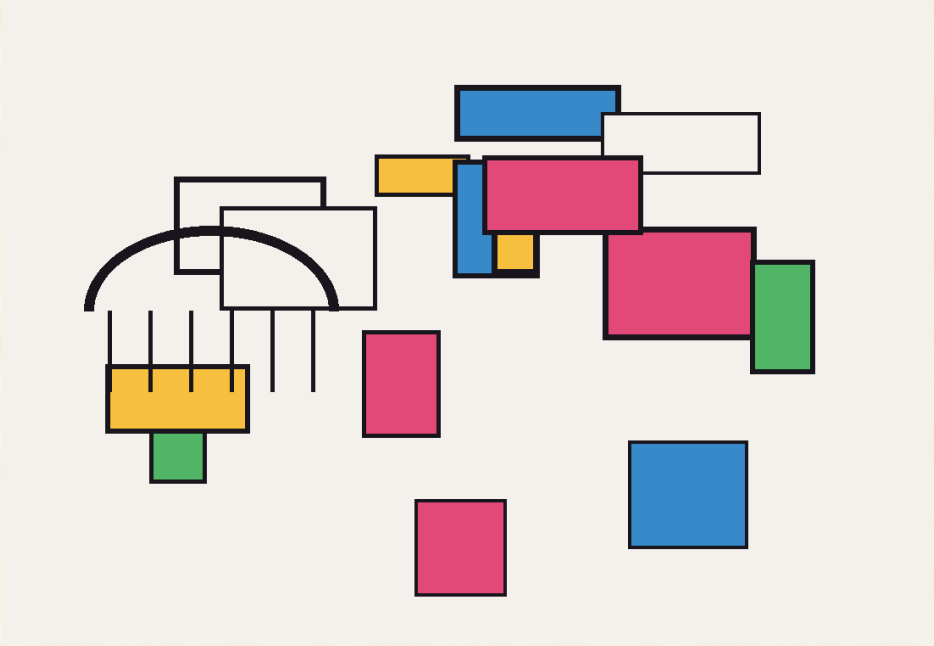

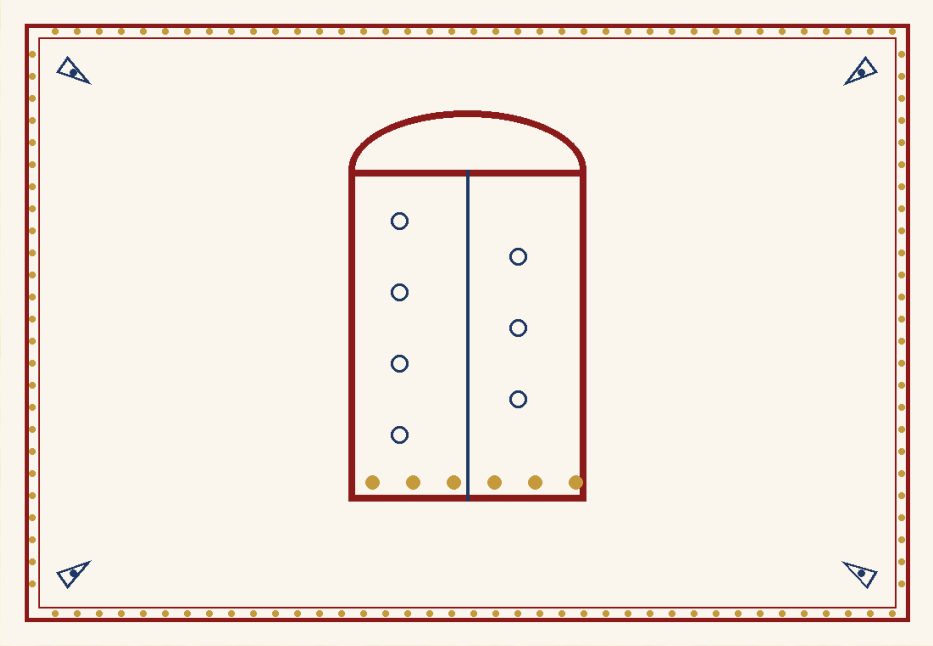

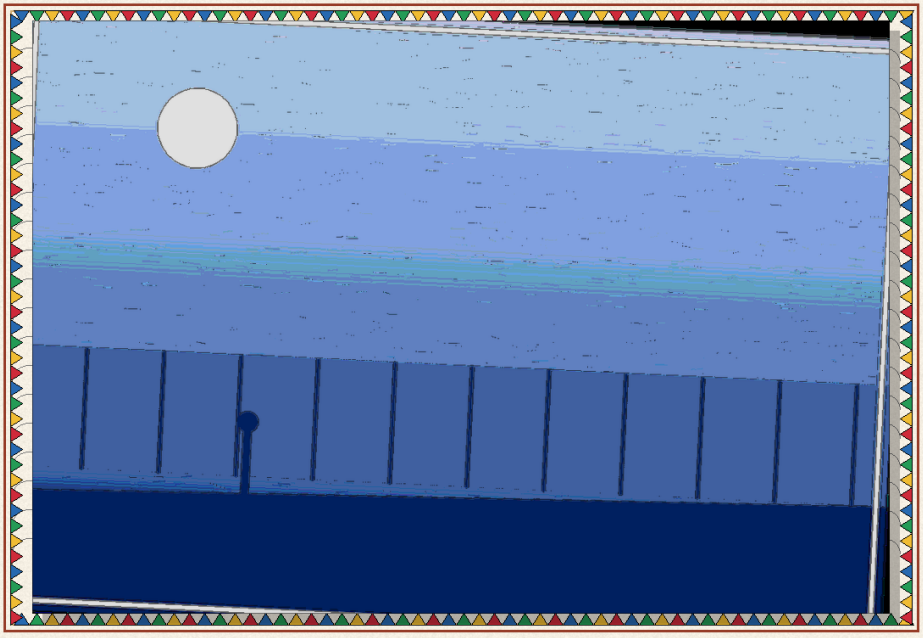

चित्र 15

परीलोकमे सभ किछु साफ-सुथरा छल — सड़क, चौबटिया, गाछ-बृच्छ। गाछक पात सभ गोल-गोल, डाढ़ि-पात एहन जेना केओ अनुपातसँ कतरने हो। नहि कनियो पैघ, नहि कनियो छोट। सभ आस्थासँ नमस्कार-पाती करैत छल, सभ मनुक्खक बोली बाजैत छल।

मुदा आस्था तखने किछु अकानलक — हवा त' लगैए जे एतऽ बहिते नहि छै! पात सभ एक्को रत्ती हिलि नहि रहल छल। टुराकोस कहलक, 'एम्हुरका गाछक पात नहि हिलत। खाली हरियर पाँतीक प्रयोगशाला लगक गाछमे विशेष परखनलीसँ हवाक व्यवस्था छै — ओतऽ पात हिलैत भेटत। शेष परीलोकमे नहि।' आस्थाकेँ अपन चन्ना गाछी मोन पड़ि गेलै, जतऽ बिनु पुछने बसात सभ पातकेँ नचबैत छल। सुन्दरता जँ साँस नहि लिअए, त' ओ चित्र भऽ जाइत अछि — जीवन नहि।

तखने सड़कक बीचमे एकटा बड़का दरबज्जा प्रकट भेल — सातो रङक सातटा फाटक। टुराकोस बाजल, 'सभ आबि जाउ लाल टुहटुह फाटक लग। आस्थाकेँ रानीसँ भेँट करै लेल महल जाए पड़तै, आ ओतऽ जेबाक यएह रस्ता छै।'

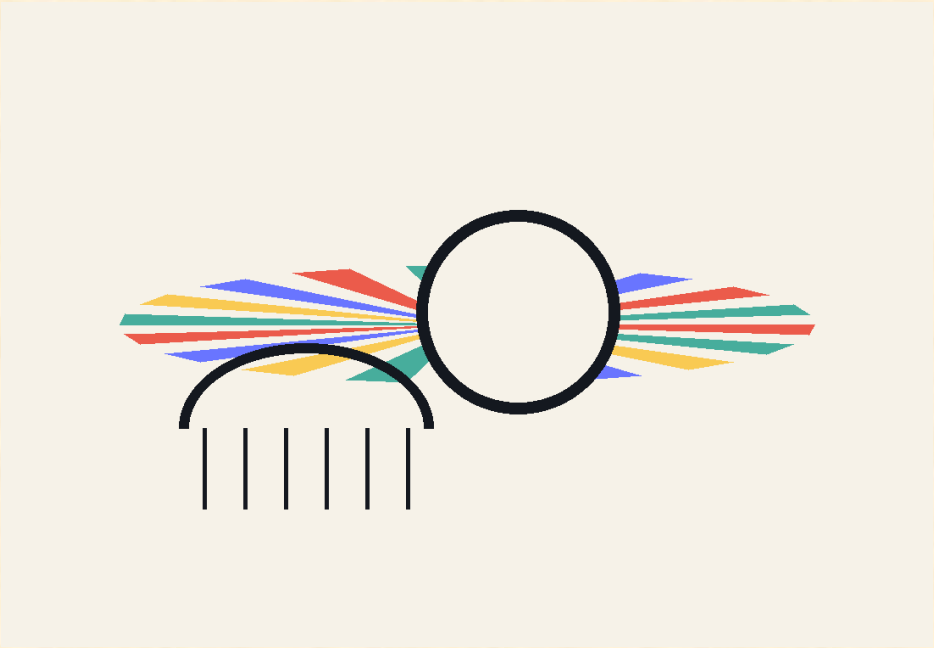

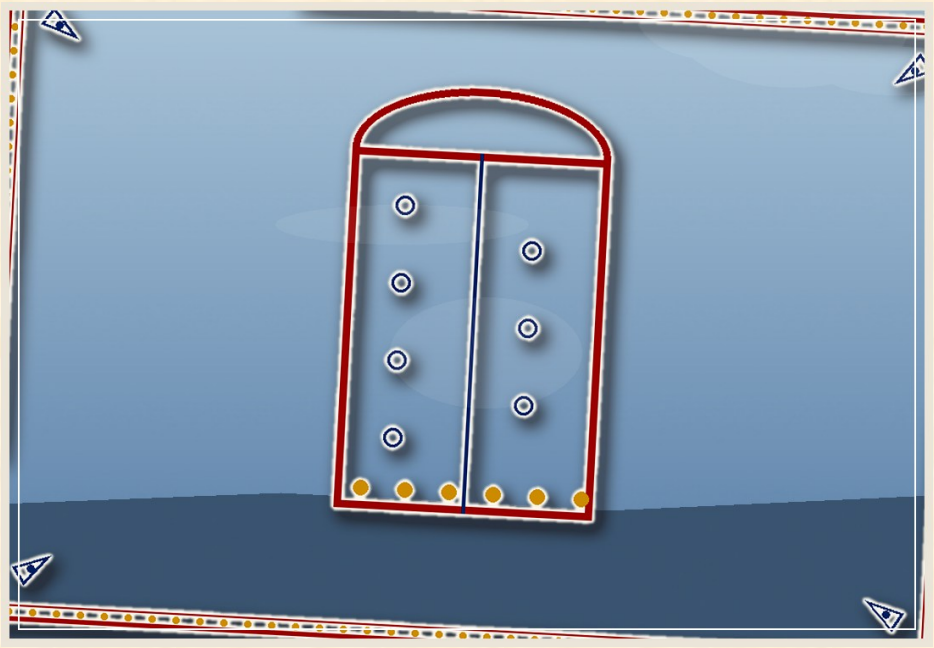

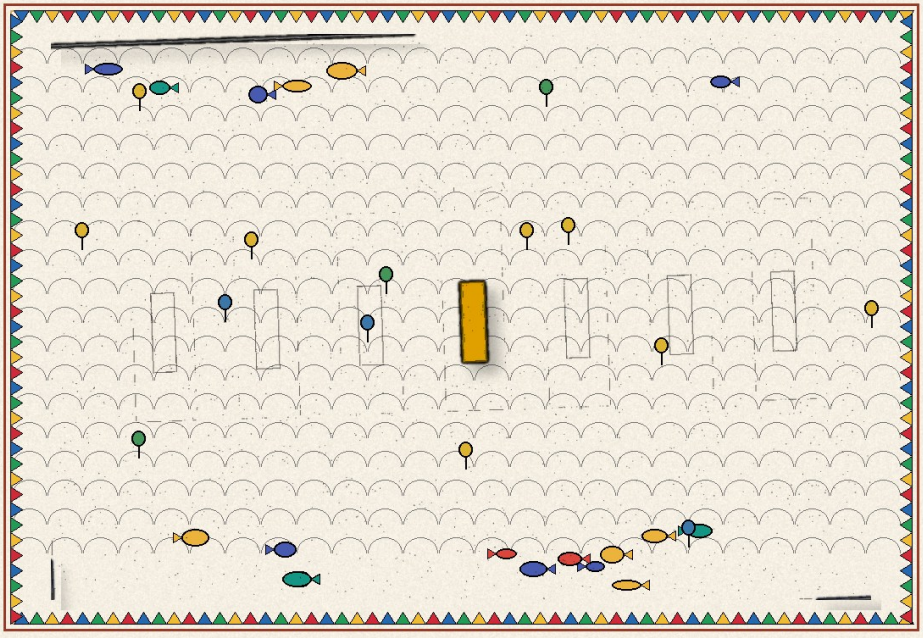

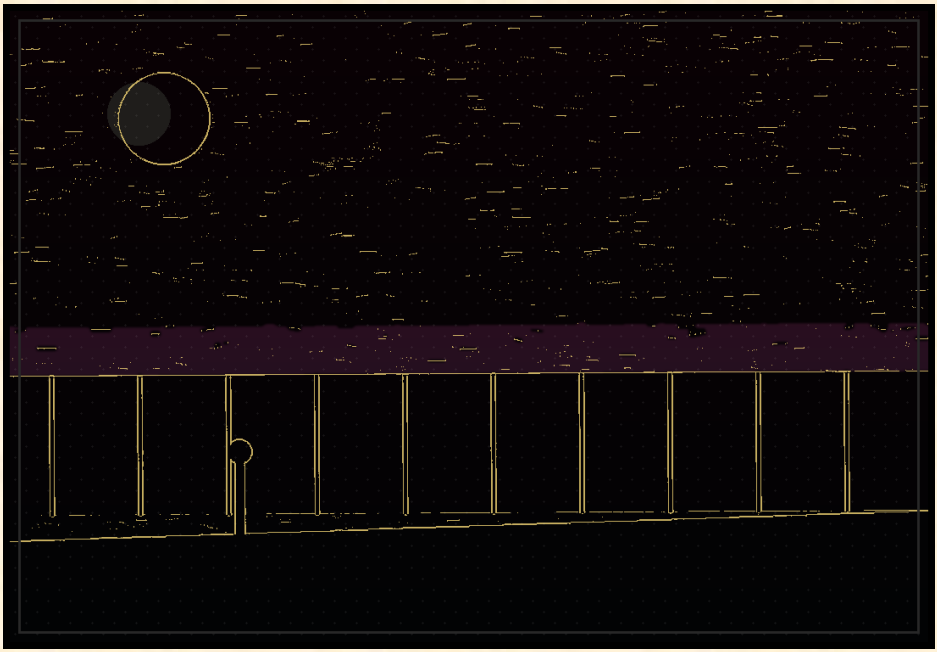

चित्र 16

लाल दरबज्जापर लाल पंखक फ्राक पहिरने महिला सभ बैसल छलीह। एक गोटे आगाँ बढ़ि बजलीह — 'आउ आस्था, रानी अहाँक प्रतीक्षामे छथि।' आस्थाक पएर ओतहि रुकि गेल। 'अहाँकेँ हमर नाम कोना बुझल अछि? रानी हमर इन्तजारीमे कोना छथि? हम त' अनचोक्के धोधरिमे खसल रही!'

महिला मुस्कुरेलीह, 'ऐ परीलोकक कोनो धोधरिसँ जखने कियो खसैए, तखने ओकर रेकॉर्ड शुरू भऽ जाइ छै। सभ गतिविधि भटरङ प्रयोगशालाक माध्यमसँ रानीक मुख्यालय अबै छै। धोधरिसँ खसल प्राणीक सूचना रानी तत्काले मंगबै छथि। हमर नाम वनसप्तो ९९९९५७४५ छी।'

'वनसप्तो त' पाँखिबला गाएकेँ कहल जाइ छै, जे खिस्सामे बोनमे हेराएल बच्चाकेँ घर घुरबै छथि!' 'ऐ लोकमे वनसप्तो सत्तेमे छथि। जे सभ अहाँ खिस्सामे पढ़ै छी, से सभ एतऽ सत्य छै।' 'आ अहाँक नाममे ई अंक किए?' 'एतऽ अही तरहेँ नामकरण होइ छै — हमरा बाद जे जनम लेलक, ओ भेल वनसप्तो ९९९९५७४६।' आस्था चुप भऽ गेलि। जाहि लोकमे खिस्साक पात्र साँच भऽ जाइत अछि, ओही लोकमे नामक ठाम नम्बर भऽ जाइत अछि — ई केहन सौदा?

अध्याय ९ : स्वागत-कोठलीक निन्न

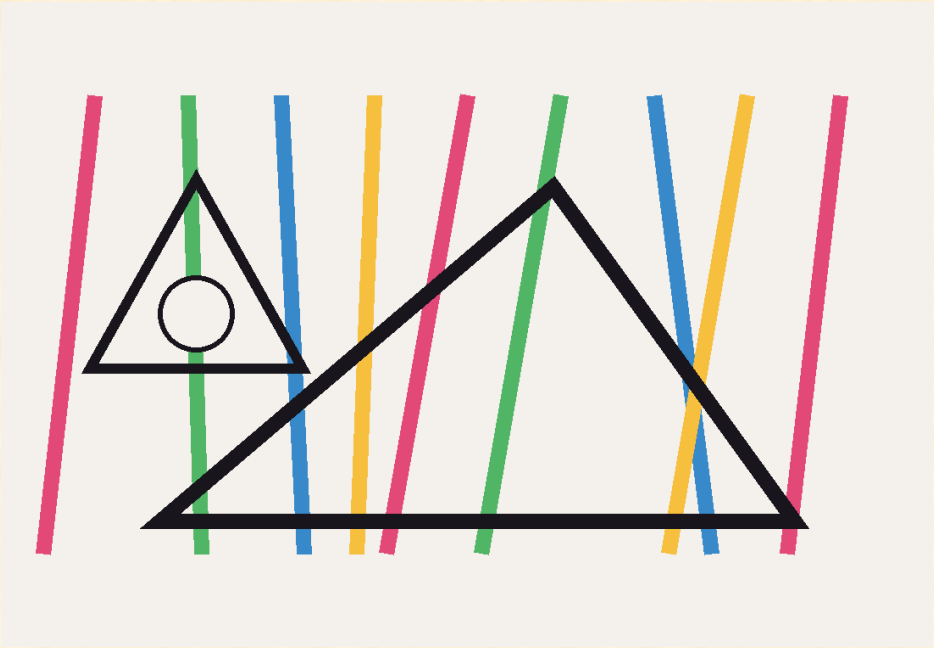

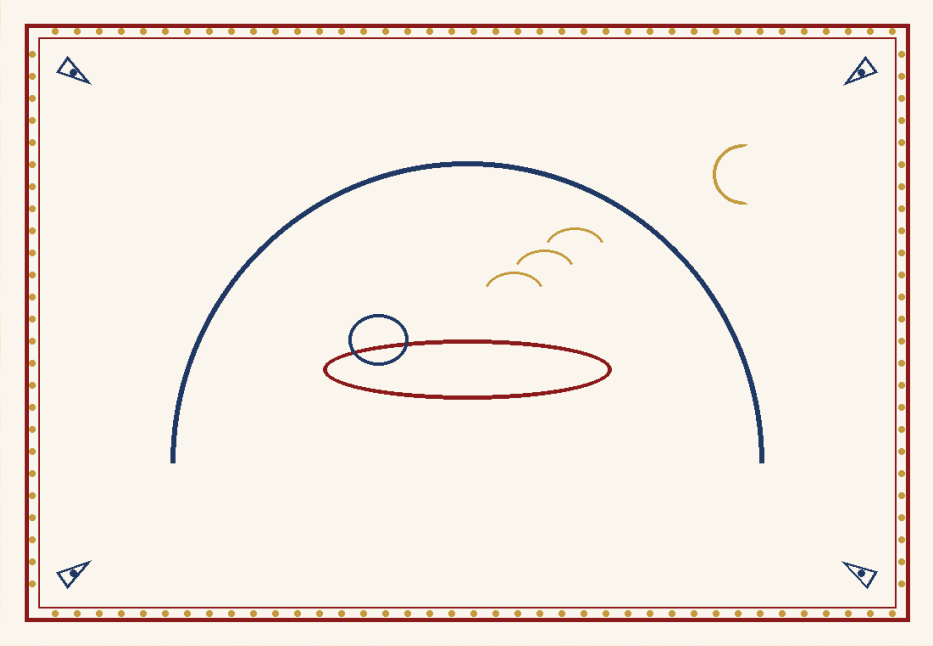

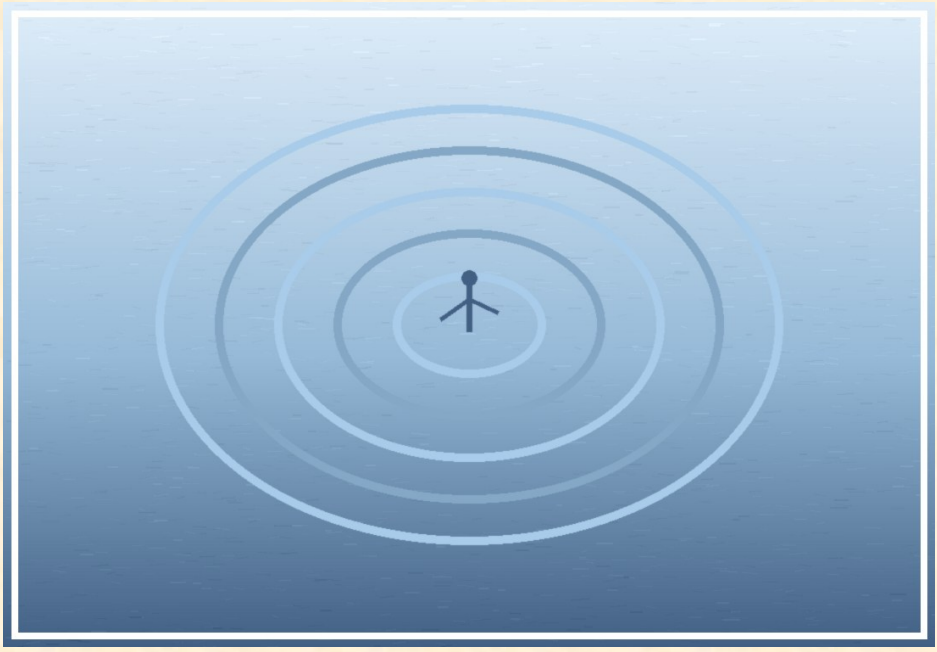

चित्र 17

लाल टुहटुह पाँतीमे जाइते एकटा स्वागत-कक्ष आबि गेल — जे नहिये जमीनपर छल आ नहिये अकासमे! आस्था पएर तर तकलक — किछु नहि, तइयो खसब नहि। एहि लोकक अपन नियम छल, आ ओ नियम पुछला पर उत्तर नहि दैत छल।

एकटा लाल रंगक परी आस्थाकेँ अलग एकटा स्वागत-कोठलीमे लऽ गेलि। बिन अन्हारे ओहिमे साँझ जकाँ लगलै। दिन भरिक अचरज आब देहपर भारी होमए लागल छल — आस्थाकेँ ओंघी लागऽ लगलै।

आ जखने ओंघी लगलै, तखने ओ देखलक — हवा संगे किछु नाक बाटे भीतर जा रहल छै। हवा संगे! ओकरा बुझेलै जे ओ जखनसँ परीलोकमे अछि, तखनसँ साँस लेनहिये नहि अछि। त' की एतऽ नाकक उपयोग हवा सन कोनो चीजक माध्यमसँ खेनाइ खुएबा लेल होइ छै?

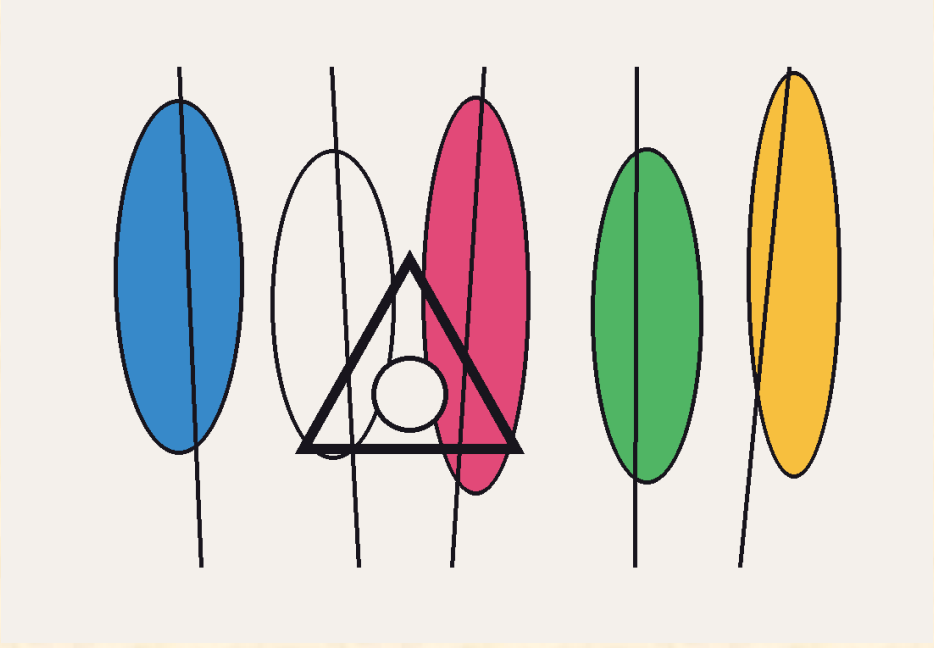

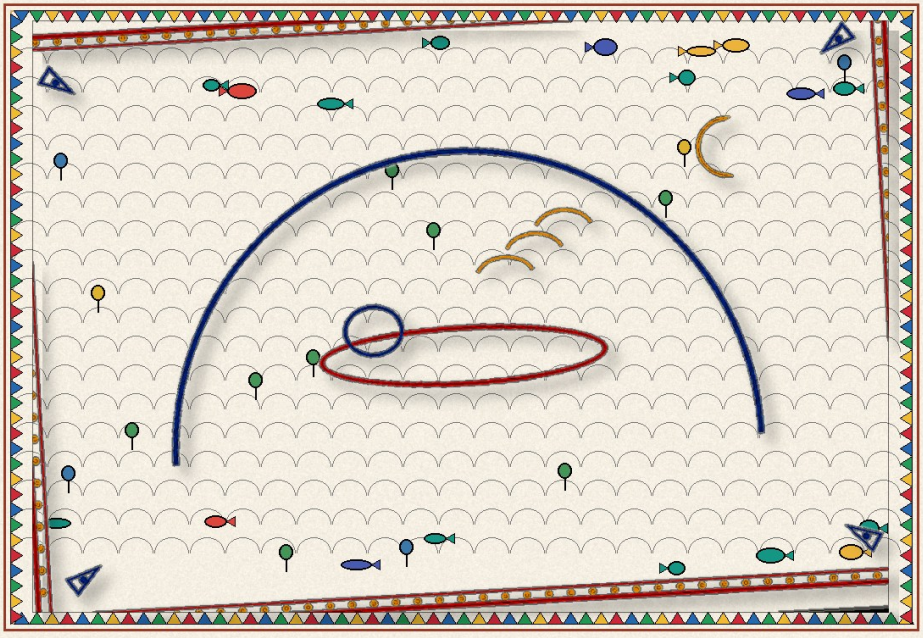

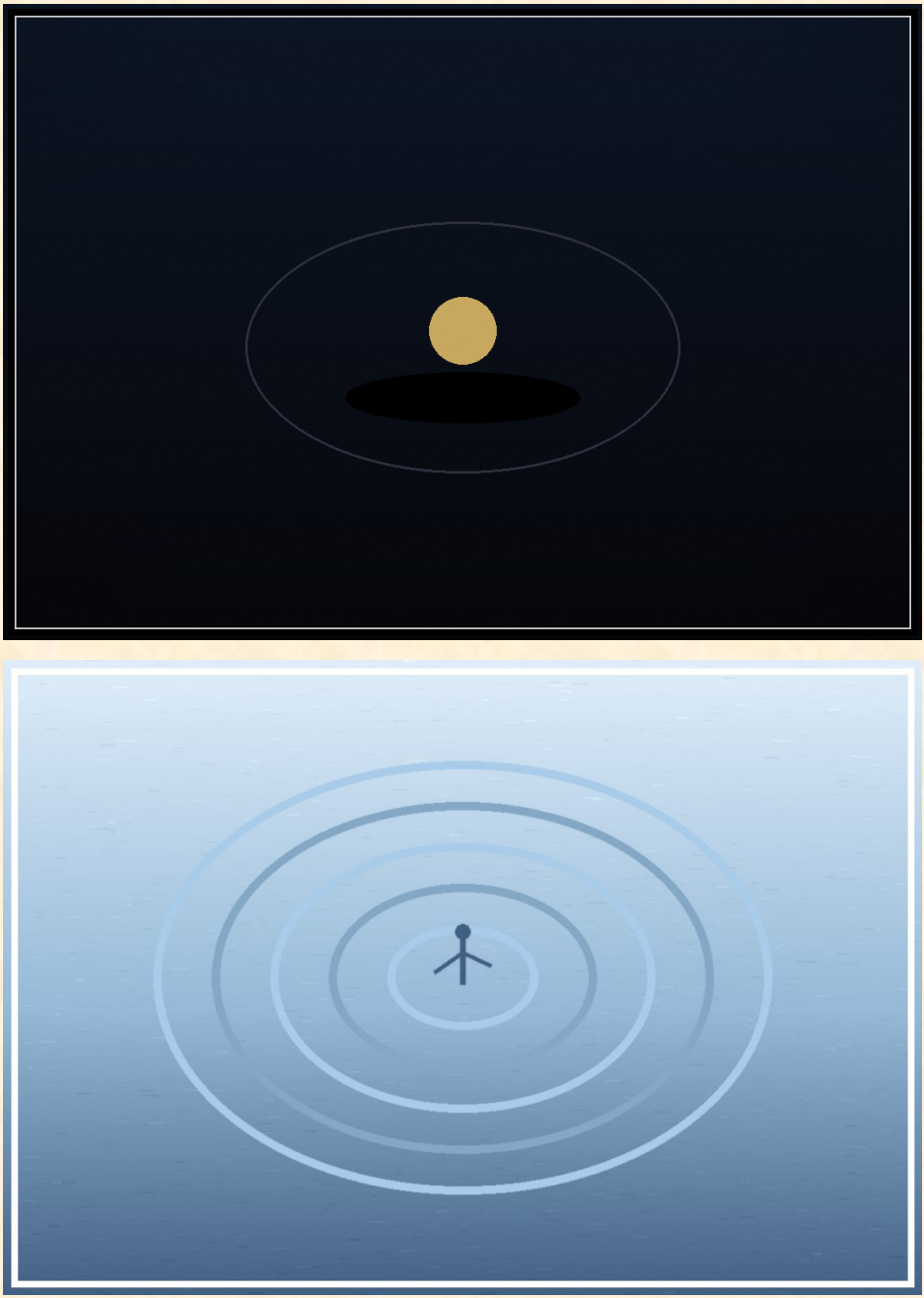

चित्र 18

ई प्रश्न सेहो ओकर आँखिक पिपनी जकाँ भारी भऽ कऽ मुनाइत गेल। दूर कतहु कूकाबुराक खी-खी सुनाइ देलकै, फेर सेहो बन्न भऽ गेलै। आ आस्थाकेँ निनिया लागि गेलै।

निन्नमे ओ घर देखलक। बाबूक कान्ह, माएक चूल्हिक धुँआ, चन्ना गाछीक बाट। आ निन्नमे ओ किछु केलक — किछु एहन, जकर परिणाम जागला पर परीलोकक सभटा शान्ति हिला देत।

अध्याय १० : सपना जे सत्य भऽ गेल

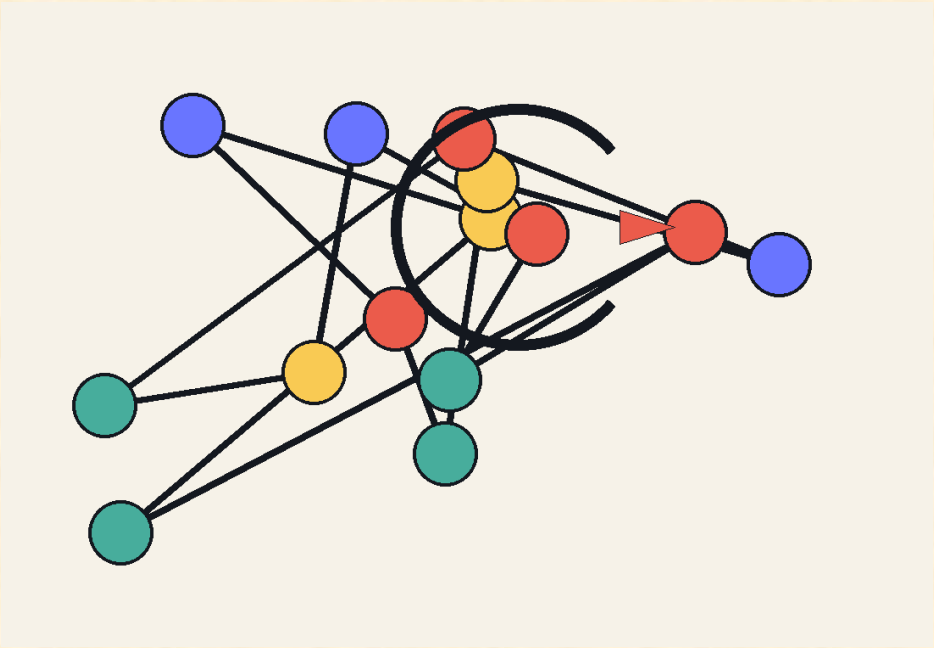

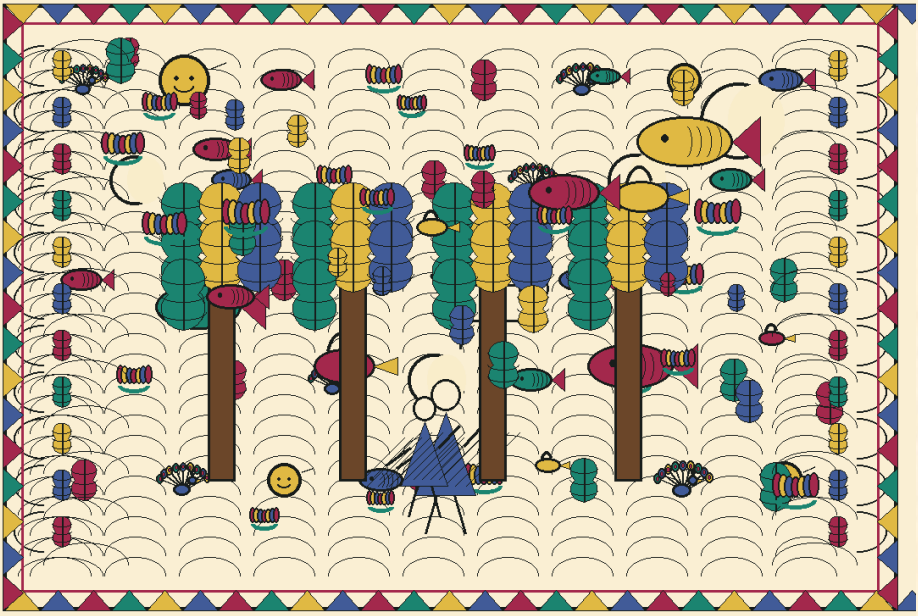

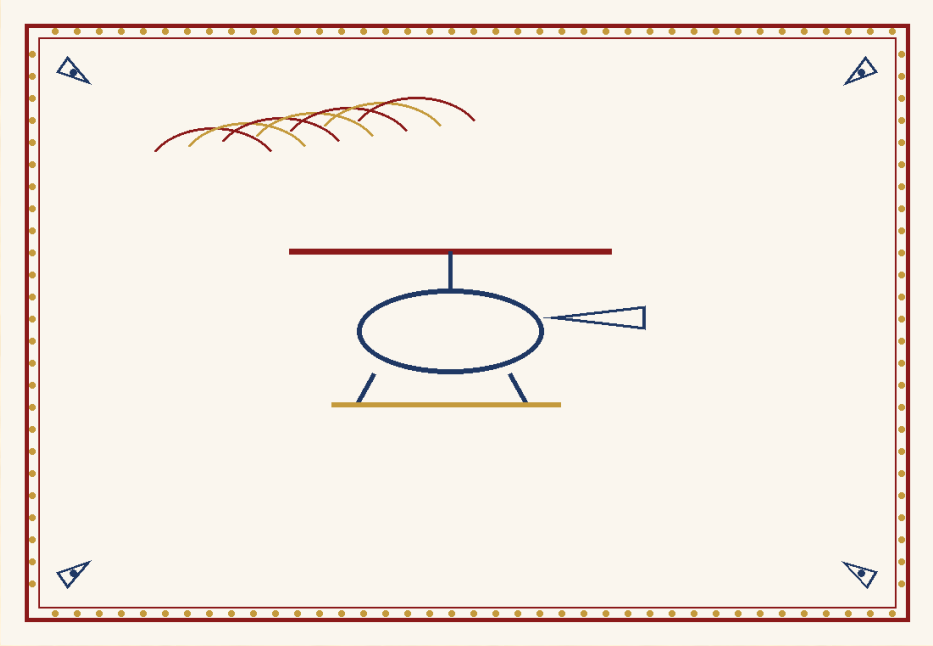

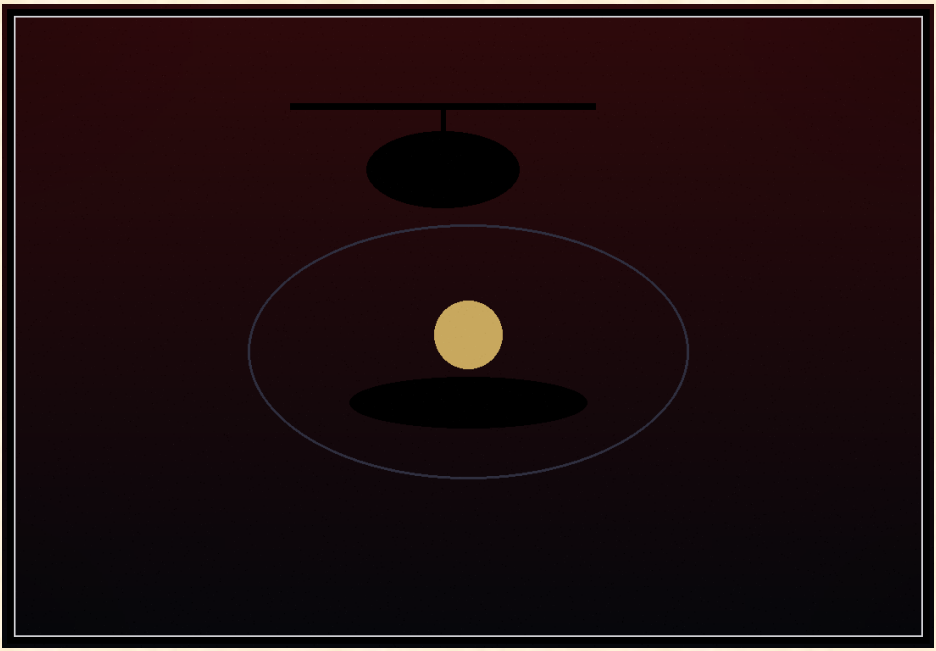

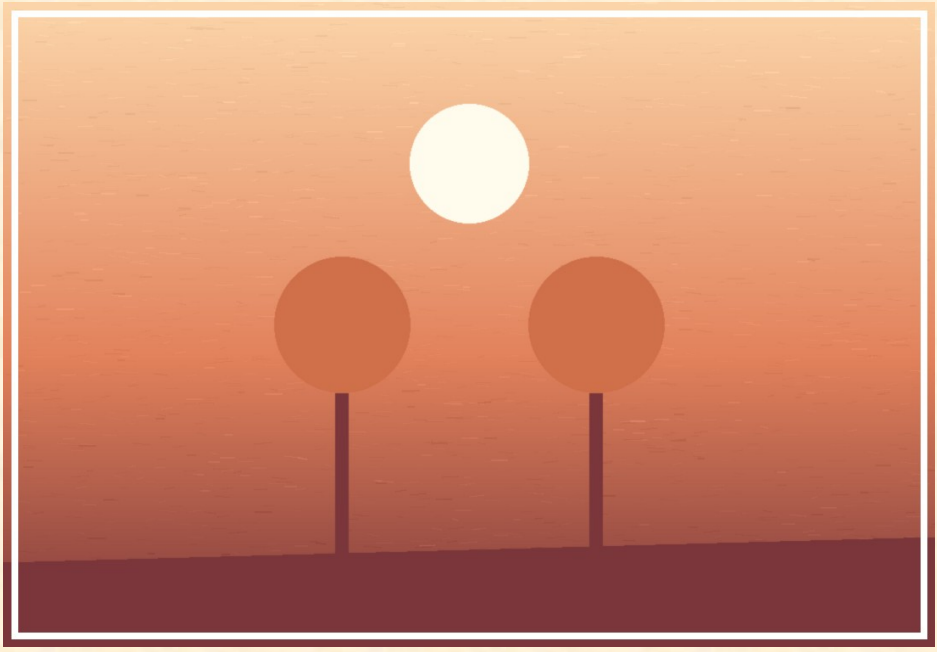

चित्र 19

सुतलासँ उठला पर आस्था चकित रहि गेलि। जे किछु ओ सपनामे केने छलि, से जागला पर सोझाँ छलै! 'ऐ परीलोकमे सुतलमे सपनामे कएल काज सेहो सत्य भऽ जाइ छै?'

आस्था सपनामे देखने छलि जे ओ धोधरिसँ बहरा गेल अछि आ ढेर रास समान घरसँ आनि, हेलीकॉप्टरपर चढ़ि, फेरसँ धोधरिमे ढुकि गेल अछि — दवाइ, खिलौना, एक्सरे-मशीन, चक्कू, फल, बर्तन, तराजू, पहिया, पेचकस, अएना, फटक्का, डिब्बामे पैक केक-बिस्कुट... आ हेलीकॉप्टर! सपनामे ओ सभटा समान हेलीकॉप्टरेमे छोड़ि एतऽ आबि गेल छलि — खाली बर्तन, फल, केक आ बिस्कुट कनी-कनी आनि लेने छलि। से सभ आब कोठलीमे सोझाँ राखल छल।

टुराकोस, मम्बा, एस्कीमो, तितली, टिकुली, कूकाबुरा आ पेंग्यूइन — सातो स्वागत-कक्षमे आबि गेल। टुराकोस आस्थाकेँ आश्चर्यसँ आँखि खोलने देखलक आ कहलक, 'हमरा सभकेँ रानीक आदेश भेटल अछि। ऐ लोकमे सपनामे कएल काज सत्य भऽ जाइ छै, आस्था। तेँ एतुक्का रानी दुनियाँक सभ महादेशक सभ तरहक प्राणीकेँ एतऽ मंगबै छथि — ओ सभ सपनामे बहुत रास बौस्त-जात एतऽ लऽ अनैए।'

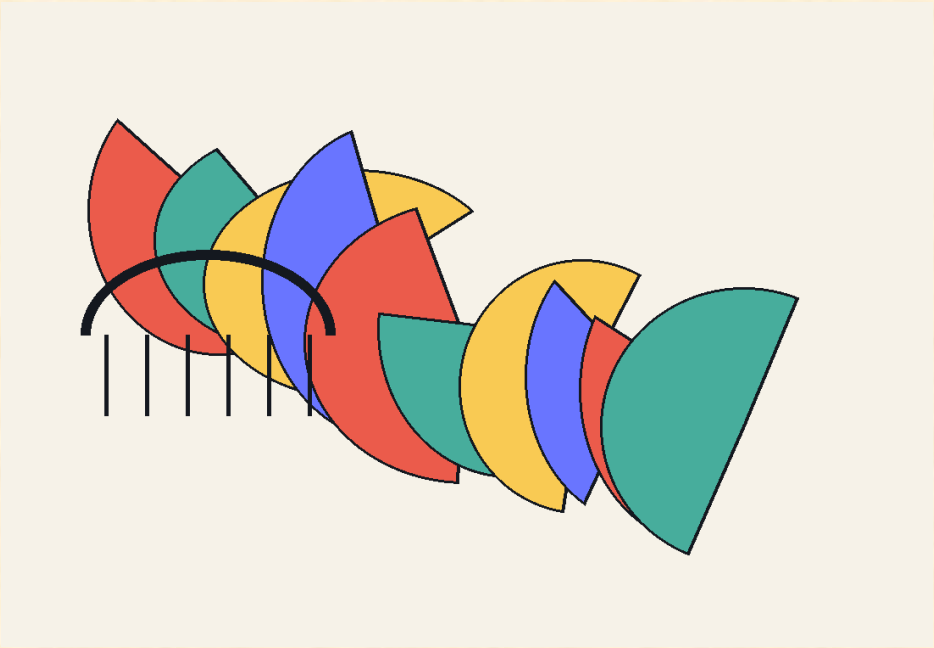

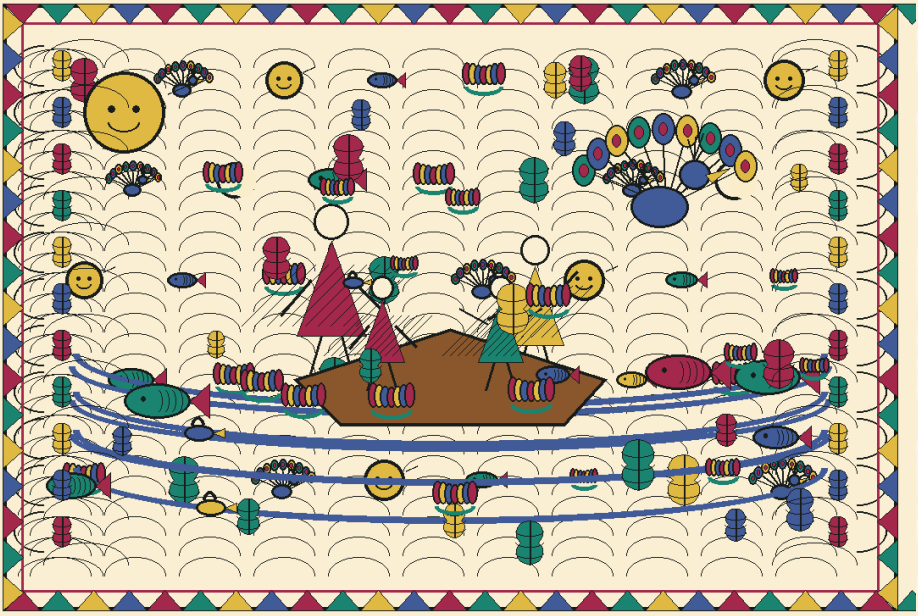

तरहरिमे परीलोक- गजेन्द्र ठाकुर

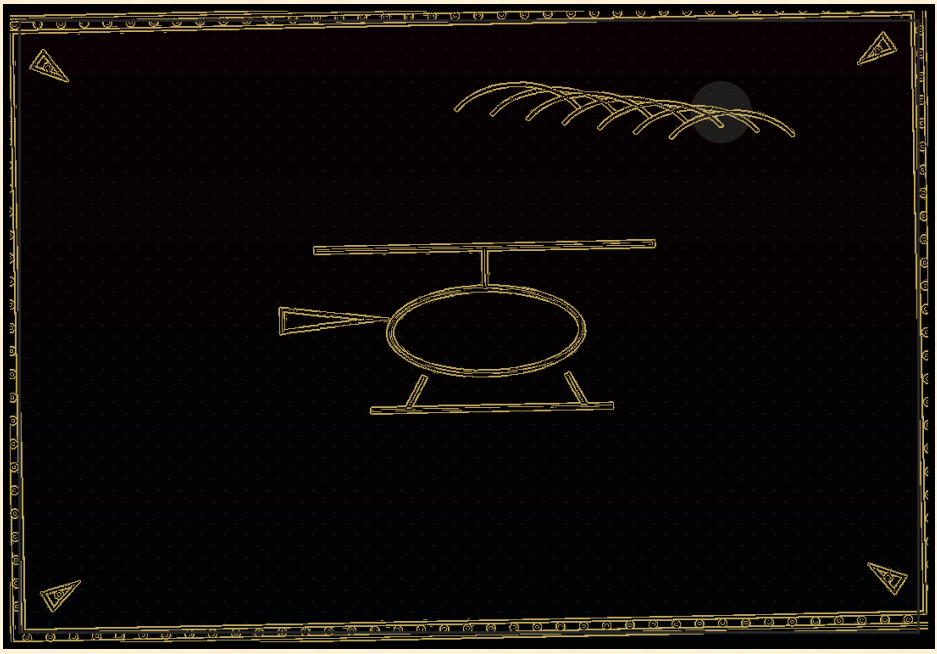

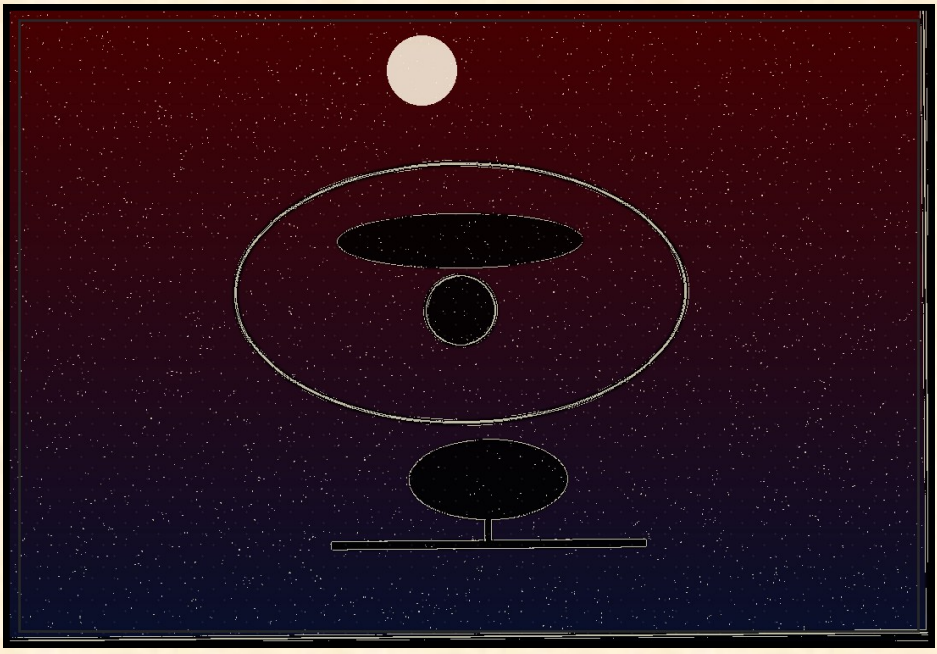

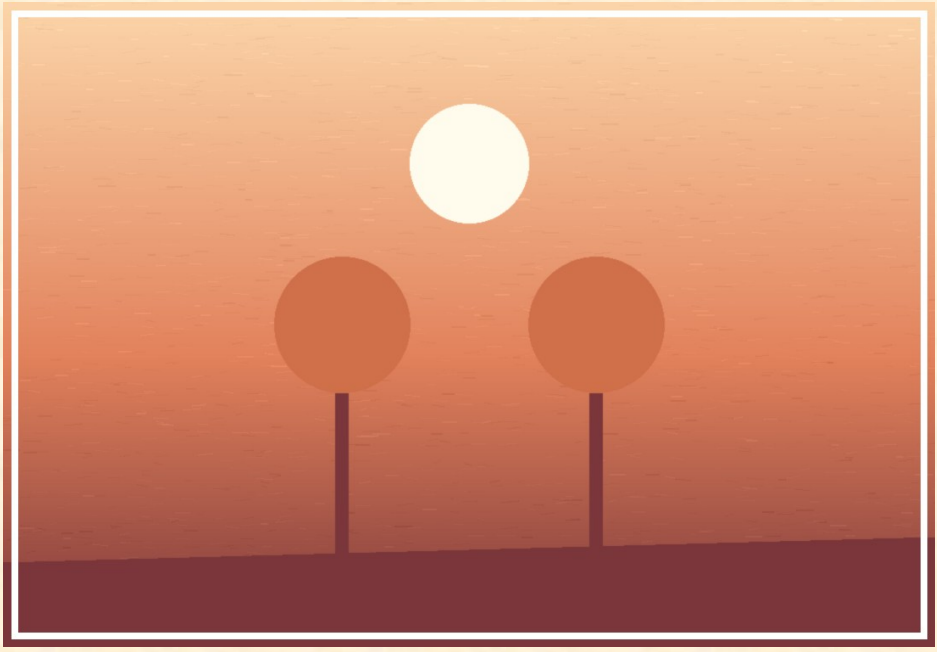

चित्र 20

आस्थाक हाथसँ बिस्कुट छुटि गेल। त' एहि लेल आठ महादेशक धोधरि! एहि लेल 'एहने तेज लोकक आवश्यकता'! ई परीलोक अतिथिकेँ नहि — अतिथिक सपनाकेँ बजबैत अछि।

मम्बा अपन भारी सिसकारीबला अबाजमे पुछलक, 'आर की-की अनने छी आस्था, आ कतऽ-कतऽ रखने छी?' आस्था मोन पाड़ैत बाजलि, 'हँ... हम हेलीकॉप्टर अनने रही, आ ओकरा ओइपार लऽ गेल रही।' 'ओइपार? माने महारक ओइपार?' 'हँ।'

सातो गोटे एक-दोसराक मुँह ताकऽ लागल। आ कूकाबुरा — जे कनी काल पहिने धरि खी-खी हँसैत छल — पहिल बेर चिन्तित आ गम्भीर देखा पड़ल। 'जल्दी चलू आस्था! महारक ओइपार जल्दी चलू! ओ एकाधटा गाछ जे चलब सीखि लेने अछि, से ऐ हेलीकॉप्टर संगे किछु अनहोनी नहि कऽ दिअए!' — कूकाबुरा हँसिते रहैए; मुदा जखन ओ गम्भीर होइए, तखन बुझू जे साँचे कोनो आफद आबऽ बला छै।

अध्याय ११ : हजार किलोमीटरक दौड़

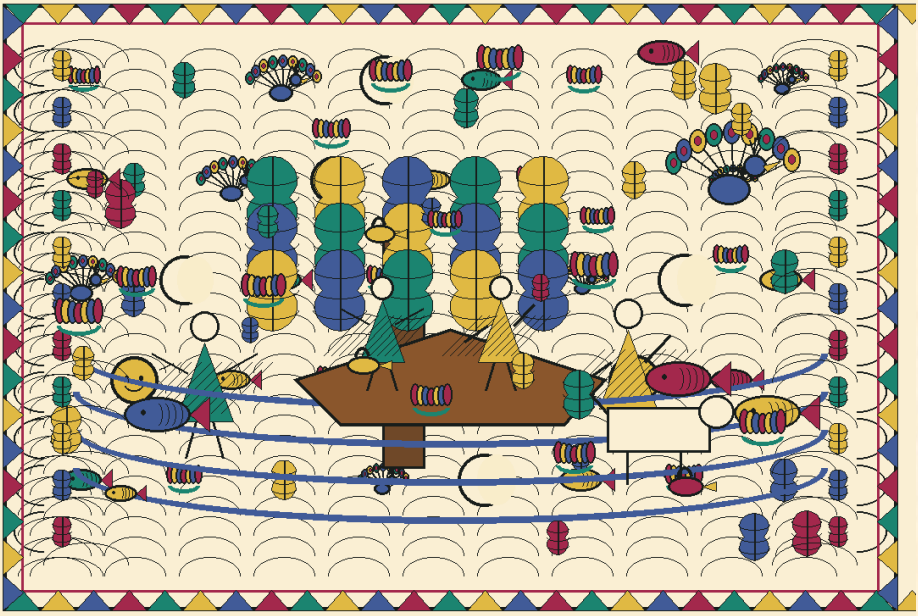

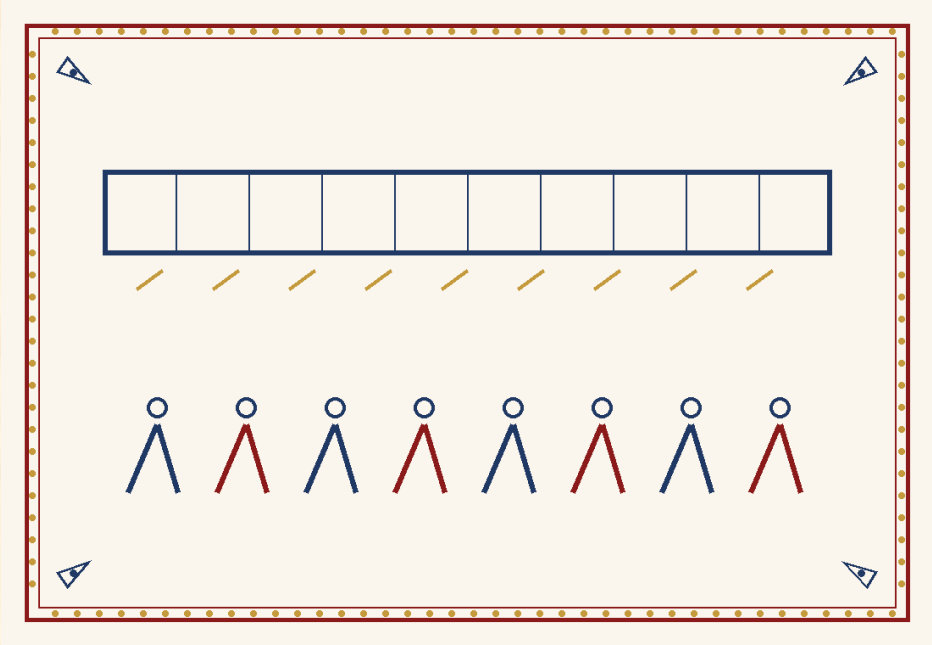

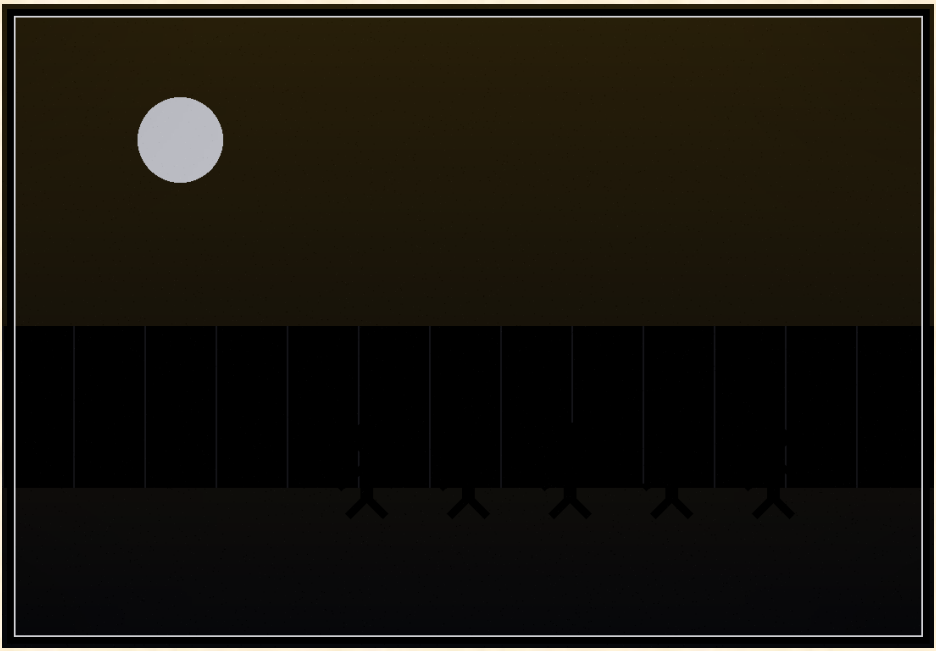

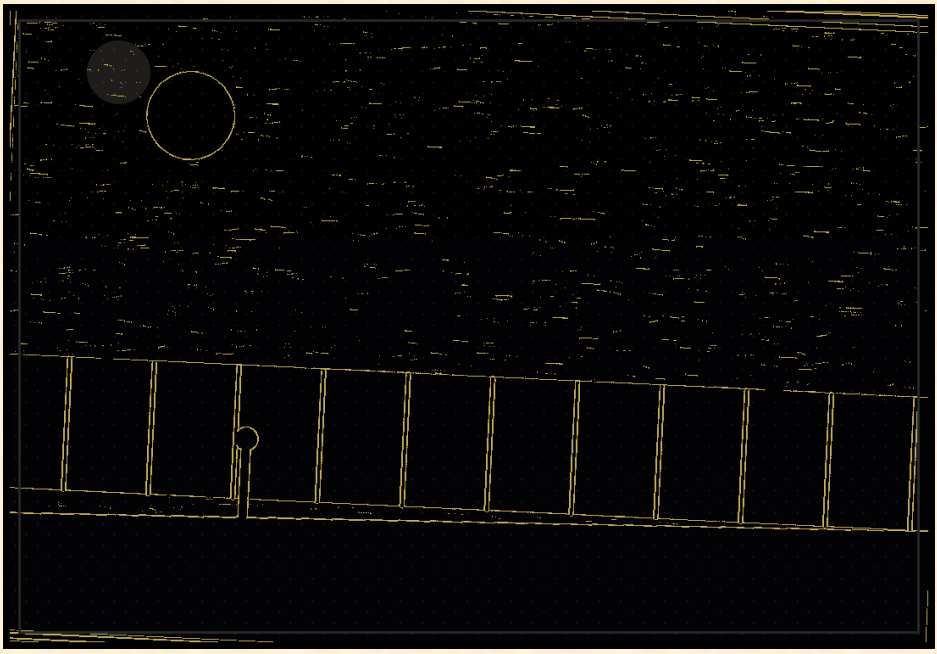

चित्र 21

स्वागत-कक्षसँ बाहर अबिते एकटा बाइपास सन सड़कपर आठो गोटे दौगल। आस्थाकेँ लगलै जे सभक गति हजार किलोमीटर प्रति घण्टा त' हेबे करतै — जखन चलब सए किलोमीटर छल, त' दौगब हजार, हिसाब ठीके छल। बगलमे परीलोकक कियारी सभ रंगक धार बनि पाछाँ छुटैत गेल।

दौगैत-दौगैत आस्थाक मोनमे प्रश्न सेहो दौगि रहल छल: चलैत गाछ हेलीकॉप्टरसँ की करत? ओ दुष्ट अछि आकि खाली उत्सुक — जेना ओ अपने? आ ई सभ ओकरे किएक रोकत, जे अपने एहि लोकसँ पड़ाएल अछि?

एक घण्टाक बाद कूकाबुरा अकासमे ऊपर माथे कूदल — गति कम करबाक संकेत। सभ धीमा भेल, दौगब झटकारि कऽ चलबामे बदलल, झटकारि कऽ चलब सहज चालिमे। आ सोझाँ — उत्तरबरिया महार। ऊँच, धूसर, अन्तहीन। एक कात सात रंगक जगमग लोक, दोसर कात... चुप्पी।

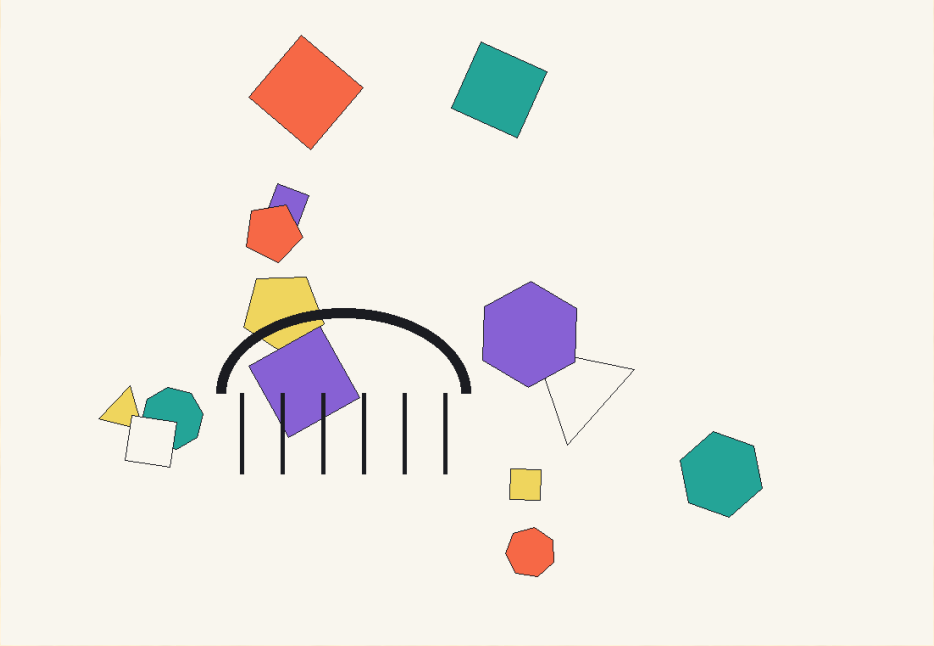

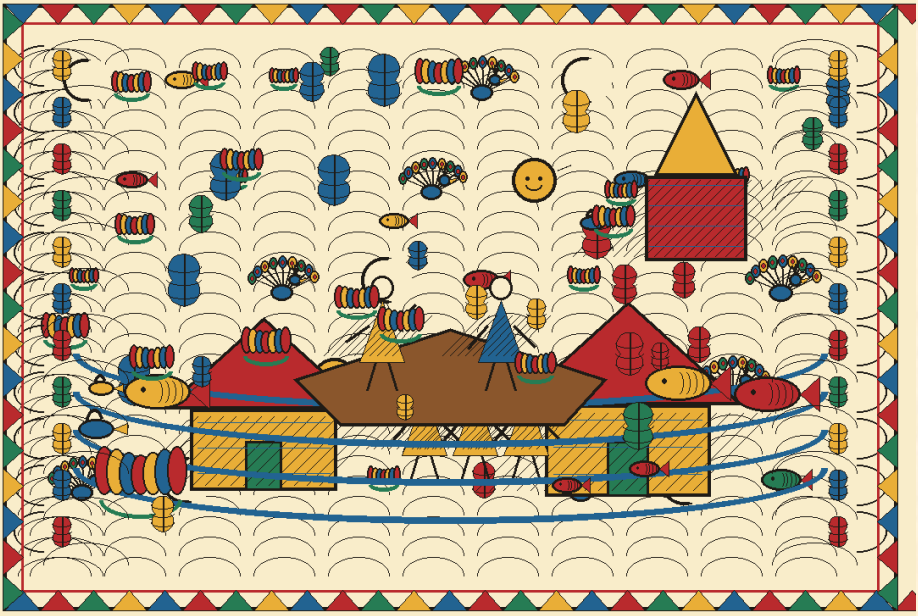

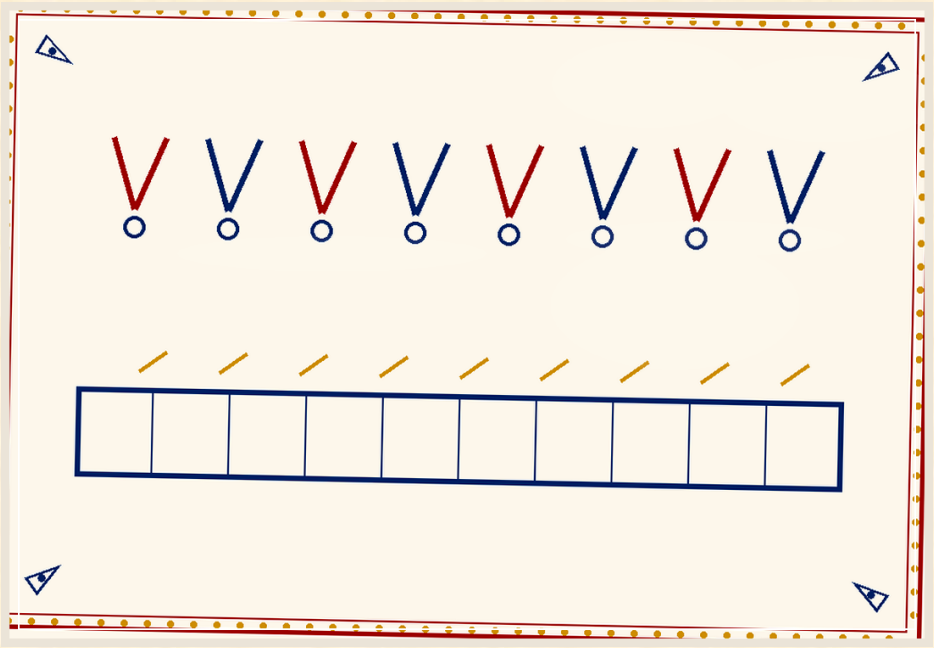

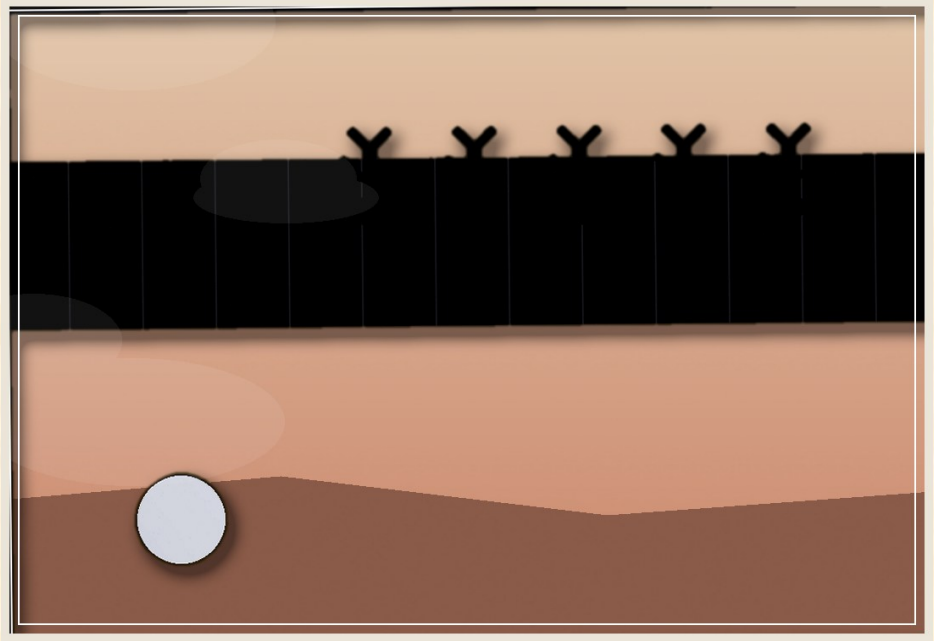

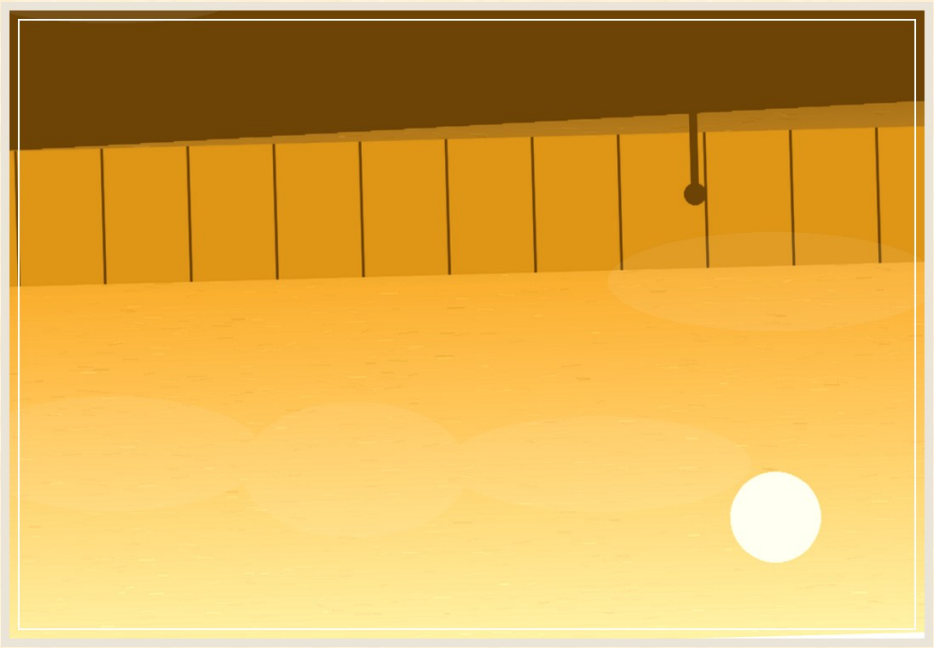

चित्र 22

'ओइपार जाएब कोना?' आस्था पुछलक। आ सातो गोटे एक्के संगे हँसि पड़ल। एस्कीमो कहलक, 'टुराकोस भटरङ कियारीक वैज्ञानिक लग रहैए, मम्बा असमानी सैन्य विभागमे, हम नील स्कूलमे, तितली हरियर वनस्पति-प्रयोगशालामे, टिकुली पीयर अस्पतालमे, कूकाबुरा संतोला प्रयोगशालामे, पेंग्यूइन लाल पाँतीमे। ओइपार गेनाइ हमरा सभकेँ सिखाओल गेल अछि।'

आ सभ अपन-अपन काज कहलक: तितली — 'ओइपार वनस्पति खतमे जकाँ छै; हम प्रयोग करब आ भागल वनस्पतिक गतिविधि नियन्त्रित करबाक प्रयास करब।' टुराकोस — 'हम हेलीकॉप्टर आ आन यन्त्रक तकनीक ओहि विलक्षण मुदा अस्थिर बुद्धिबला वनस्पतिक हाथ नहि जाए देब।' टिकुली — 'मालजाल, मनुक्ख आ परीमे ओकर लक्षण नहि पसरए, से हम देखब।' पेंग्यूइन — 'रानी हमरा लाल पाँतीमे संक्रमण-आक्रमण रोकबा लेल पठेने छथि। रानीसँ ककरो आइ धरि भेँट नहि भेल छै — मुदा संदेश आएल छल।'

रानीसँ ककरो आइ धरि भेँट नहि भेल छै। — ई वाक्य आस्थाक मोनमे काँट जकाँ गड़ि गेल। सभ रानीक आदेश मानैत अछि, रानीक नामे महार ठाढ़ अछि, रानीक नामे रेगिस्तान बनल — आ रानीकेँ देखने केओ नहि अछि?

अध्याय १२ : तरहरिमे तरहरि

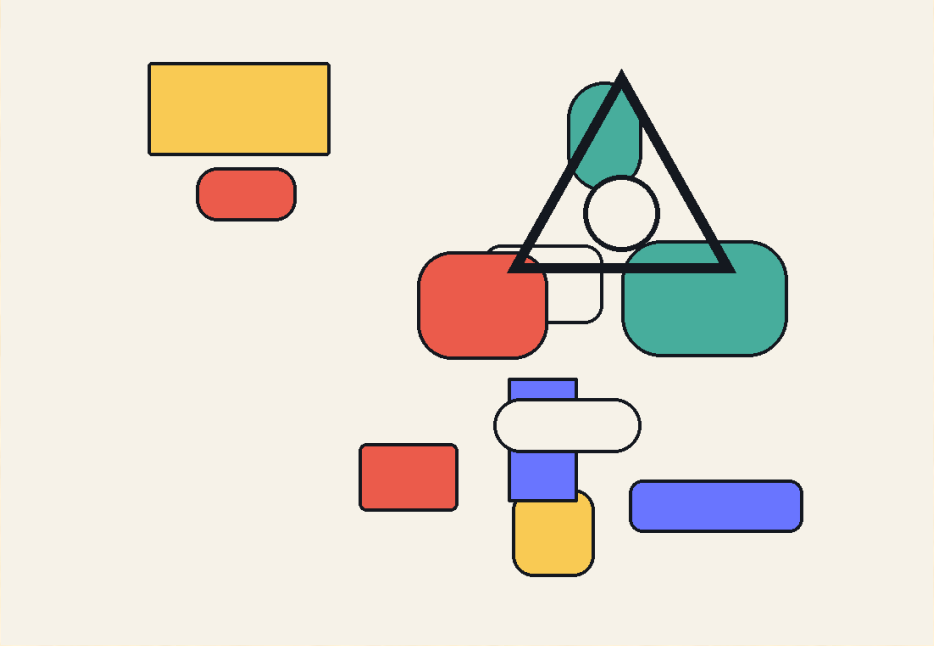

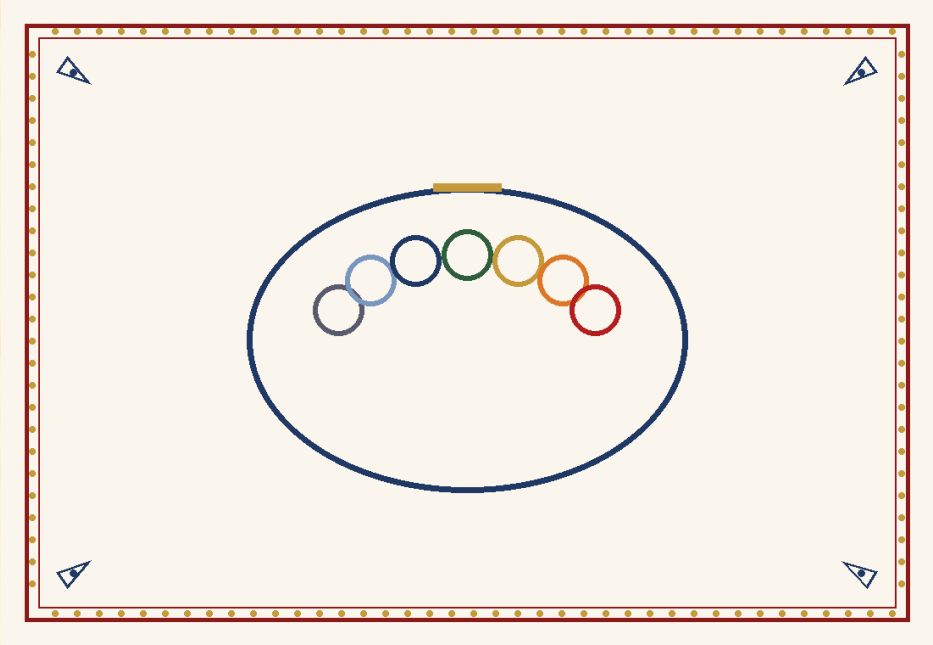

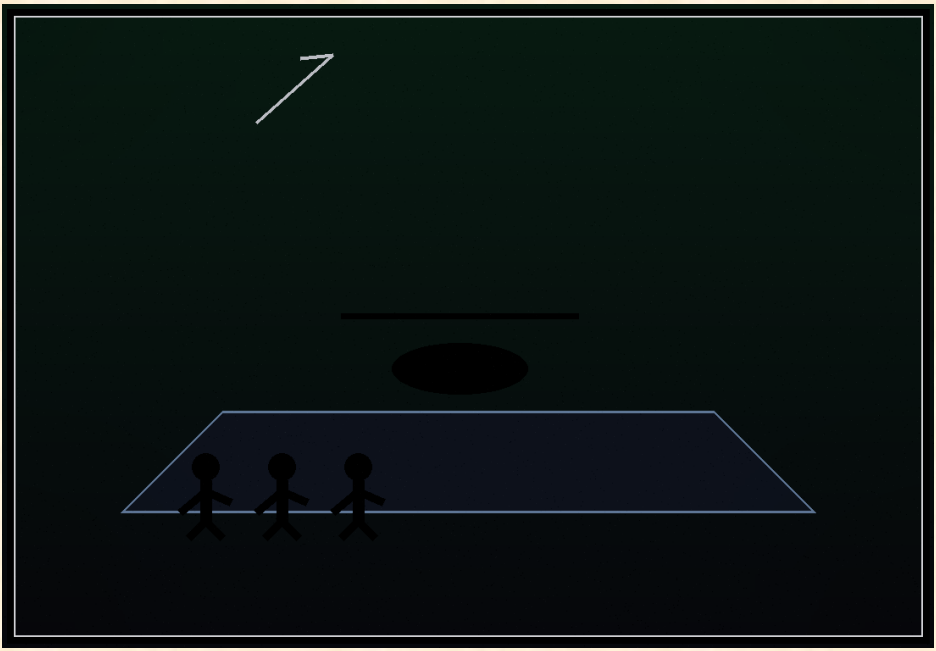

चित्र 23

टुराकोस आगाँ बढ़ल आ महारक जड़िमे एकटा गुप्त तरहरिक द्वार लग ठाढ़ भेल। एकटा पैघ शिलाकेँ ओ कंगुरिया आंगुरसँ उठा देलक — एहि लोकमे भार सेहो खेल छल। आ नीचाँ जे देखेलै, से देखि आस्था आश्चर्यमे पड़ि गेलि — 'तरहरिमे तरहरि!'

तरहरिमे ठीके सातटा तरहरि छलै — सात रंगक सात गुप्त दरबज्जा। टुराकोस भटरङमे गेल, मम्बा असमानीमे, एस्कीमो नीलमे, तितली हरियरमे, टिकुली पीयरमे, कूकाबुरा संतोलामे। पेंग्यूइन आस्थाकेँ इशारा केलक आ दुनू लाल तरहरिमे उतरल।

भीतर उतरैत पेंग्यूइन कहलक, 'जेना रतिचर रातिमे घुमैत अछि आ दिनमे चोन्हरा जाइए, तहिना महारक ओइपार जाइ लेल हमरा सभकेँ विशेष उपकरण चाही — तखने अन्हारमे देखि सकब, आ ओहि चलैबला वनस्पतिक दिमागमे पैसि कऽ बुझि सकब जे ओ हेलीकॉप्टरसँ की-की करऽ चाहैत अछि।'

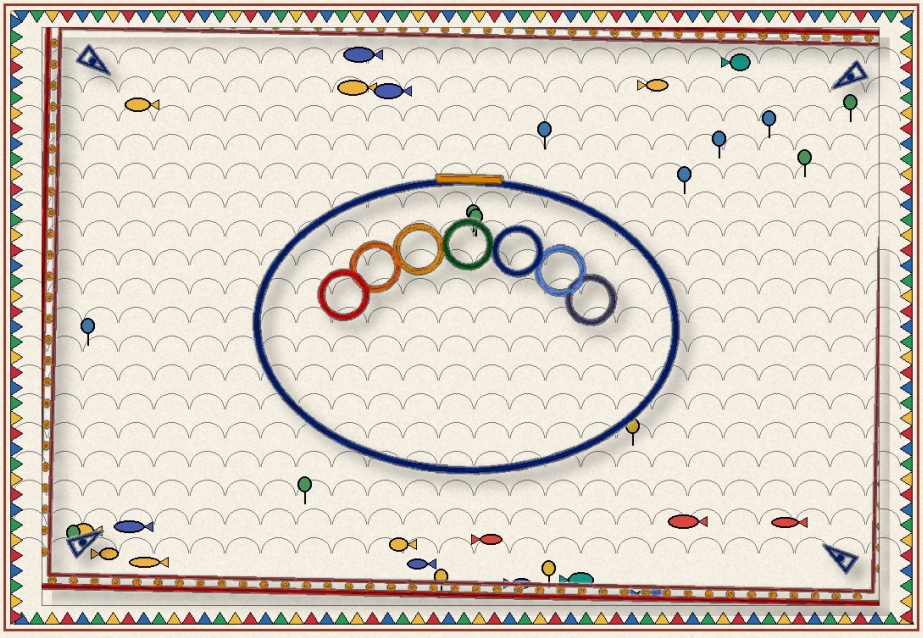

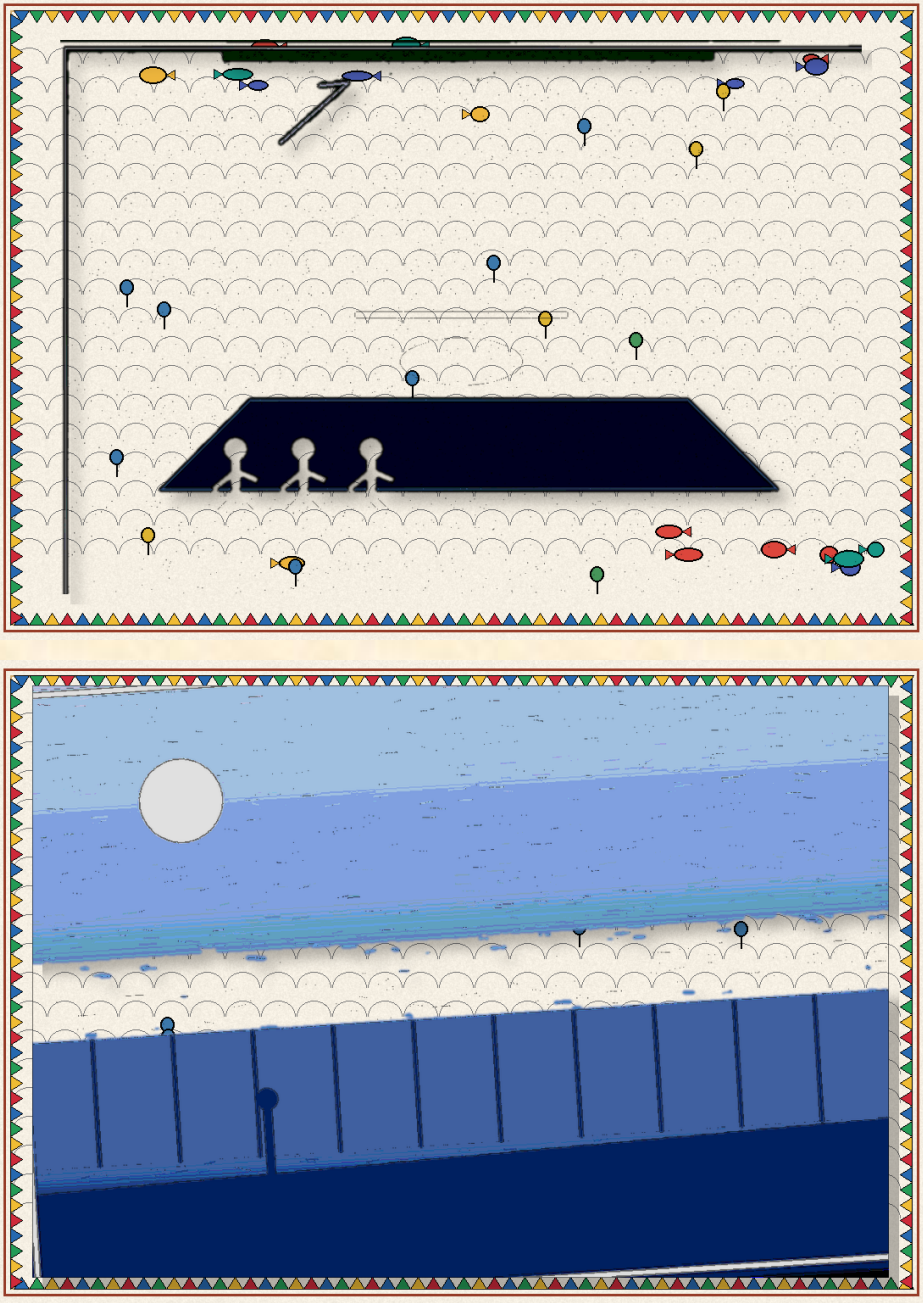

चित्र 24

आस्था आ पेंग्यूइन विशेष पोशाक आ सुरक्षा-उपकरण पहिरि तरहरिक गुप्त मार्गसँ बहराइ गेलाह; ओम्हर छहो गोटे अपन-अपन रंगक दरबज्जासँ। आ सोझाँ जे छल — से एहि यात्राक सभसँ भारी दृश्य छल।

महारक ओइपारक अन्हारमे सभ किछु खाली-खाली छल। ने रंग, ने पात, ने आवाज। जतऽ धरि आँखि (आब विशेष उपकरणबला आँखि) जाइत छल — रेत, आ रेतक ऊपर पसरल एकटा पुरान चुप्पी। एक्कहि लोकक दू मुँह: एम्हर पनिसोखाक पाँती, ओम्हर फेकल गेल कूड़ाक ढेरी। आस्थाक करेज पहिल बेर एहि परीलोक लेल नहि, एहि रेगिस्तान लेल दुखेलै।

अध्याय १३ : अन्हारमे खोज

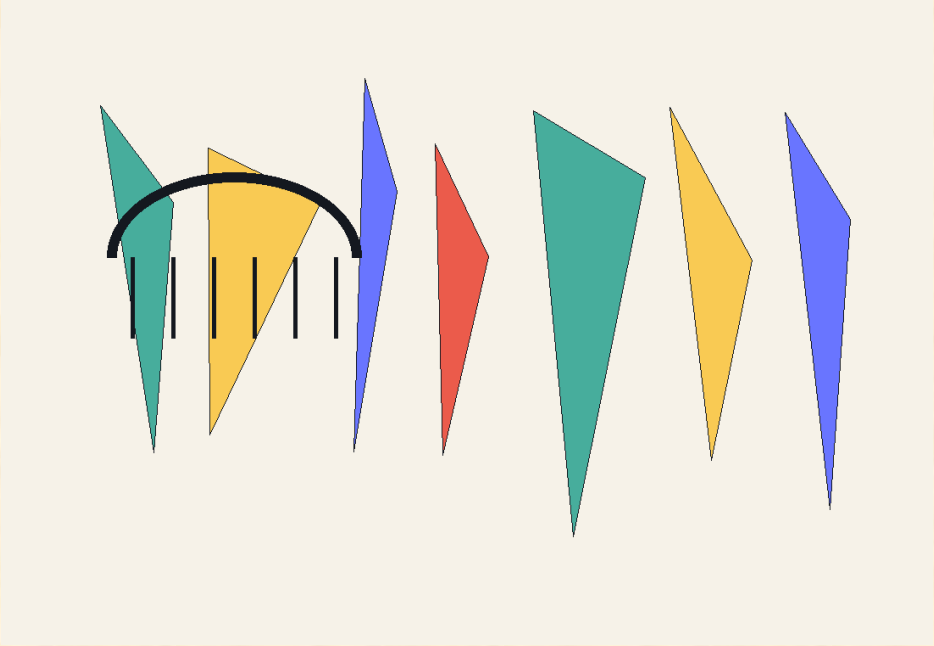

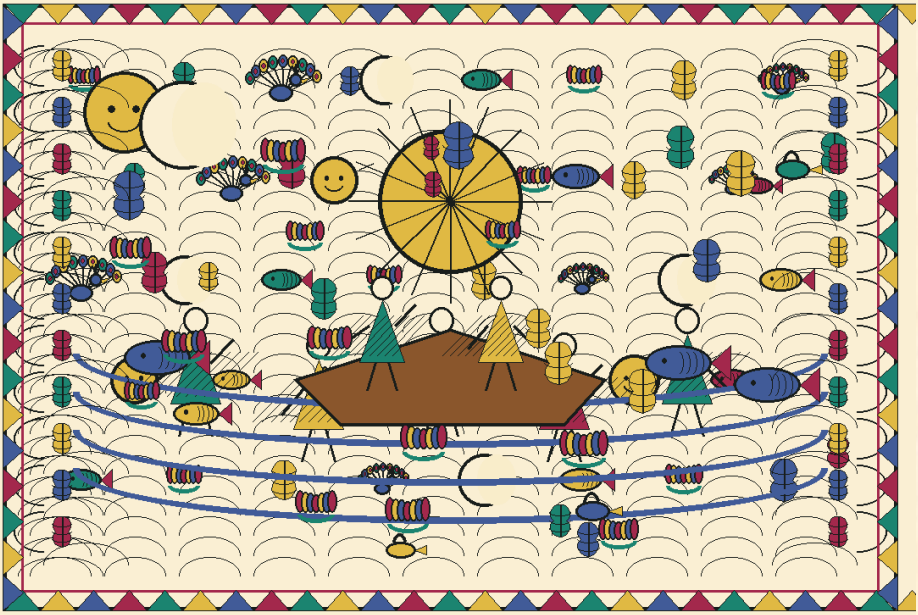

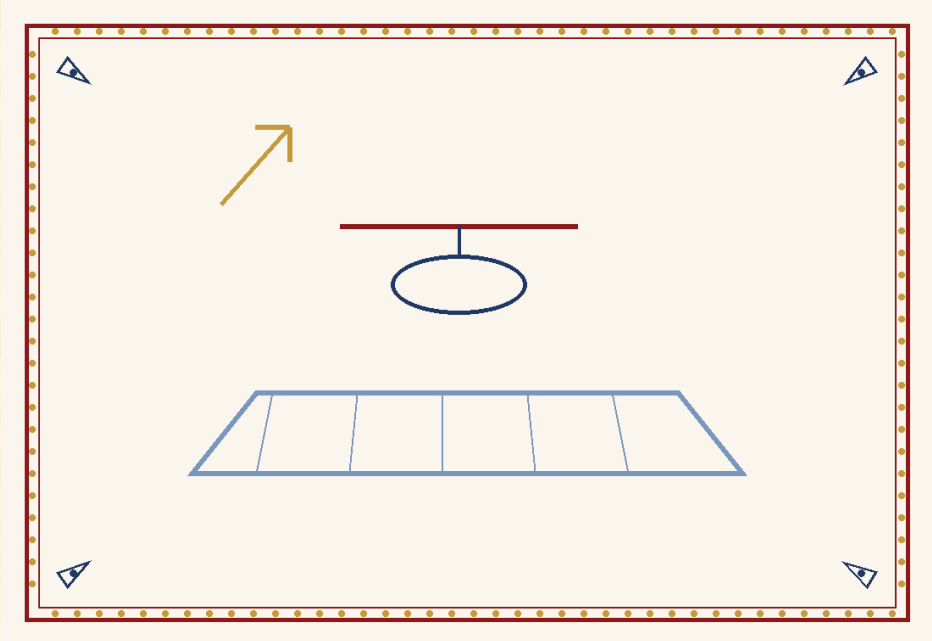

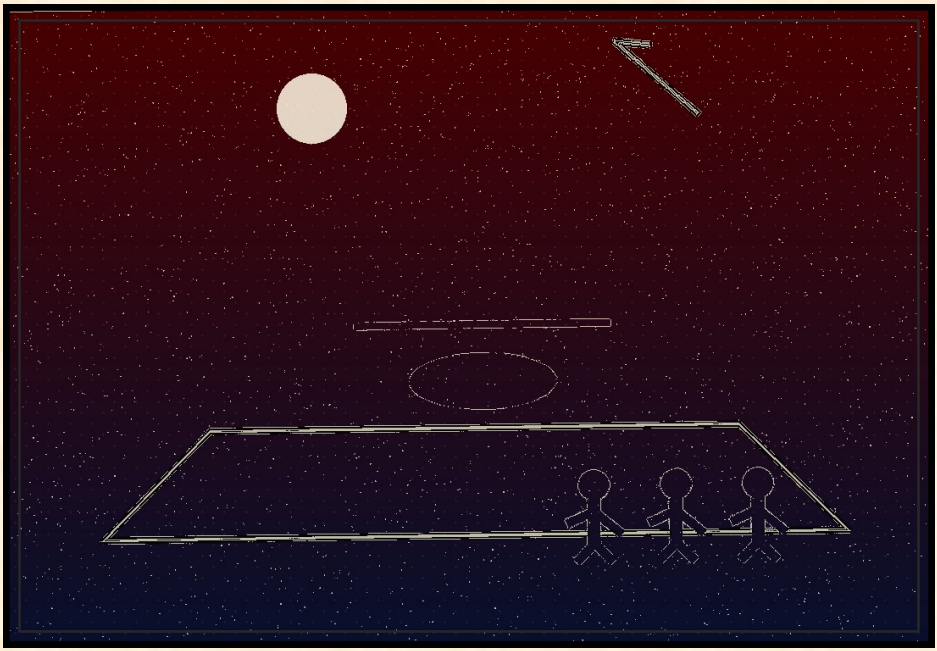

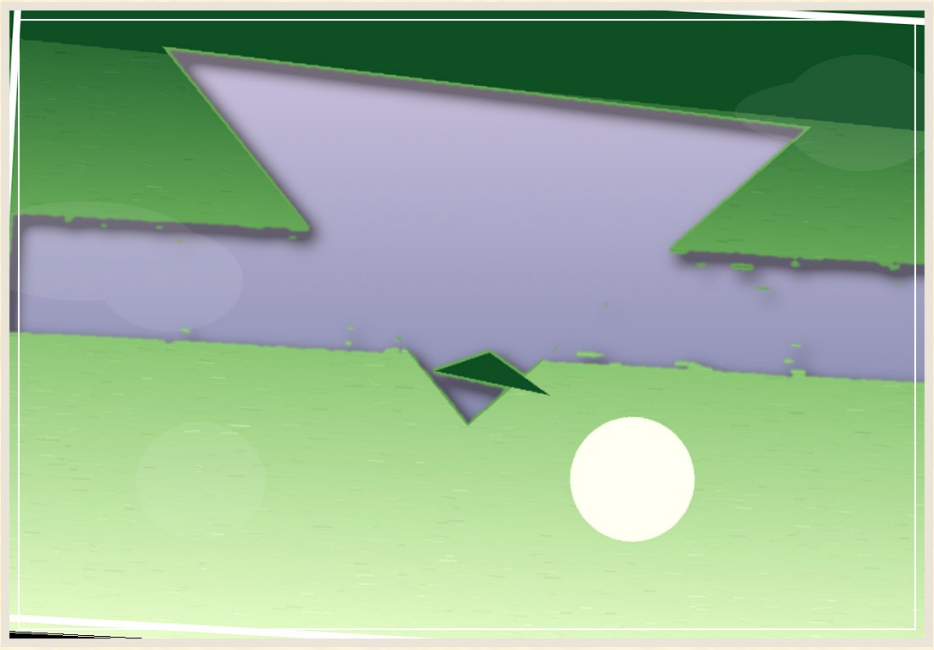

चित्र 25

टुराकोस कहलक, 'आस्था, हेलीकॉप्टरक तकनीकी जानकारी कने विस्तारसँ दिअ।' आ आस्था, दस बरखक इंजीनियर जकाँ, सभकेँ बुझौलक: 'ऐमे चढ़ै-उतरैबला सीढ़ी होइ छै। उतरै काल ई अपने संगक मजगूत ढाँचापर उतरैए — धबसँ खसितो नोकसान नहि। ई हवाई जहाजसँ किछु बातमे बेसी कारगर — विशेष इंजिन आ पंखाक मदतिसँ सोझे ऊपर उड़ैए, सोझे नीचाँ उतरैए, दौगए नहि पड़ै छै। आ ई एकटा विशेष ईंधनसँ चलैए।'

कूकाबुरा गम्भीर भेल, आ संगे सभ गम्भीर भेल। आस्था उत्तर-पूर्व दिस आंगुर देखबैत कहलक, 'सपनामे लागल रहए जे बिजलौका ओहि दिशामे खसल रहए — जतऽ रेत पघीलि कऽ शीसा बनि गेल छल।' 'तखन चलू,' कूकाबुरा बाजल, 'कारण जखन हम सभ हजार किलोमीटर प्रति घण्टा दौगि सकै छी, त' ई हेलीकॉप्टर एतऽ लाखो किलोमीटरक गतिसँ उड़त। ओ वनस्पति ओकर ईंधन, इंजिन, पंखा — सभक प्रतिरूप बना सकैए। चलू!'

आ 'चलू' सुनिते सभ दौगल। कएक घण्टा बीति गेल — सगरो रेते-रेत। सात घण्टाक बाद, ओहि अन्हारमे, एकटा चमकैत शीसाक प्लेटफॉर्म देखा पड़ल। आ ओतहि ठाढ़ — आस्थाक सपनाक हेलीकॉप्टर।

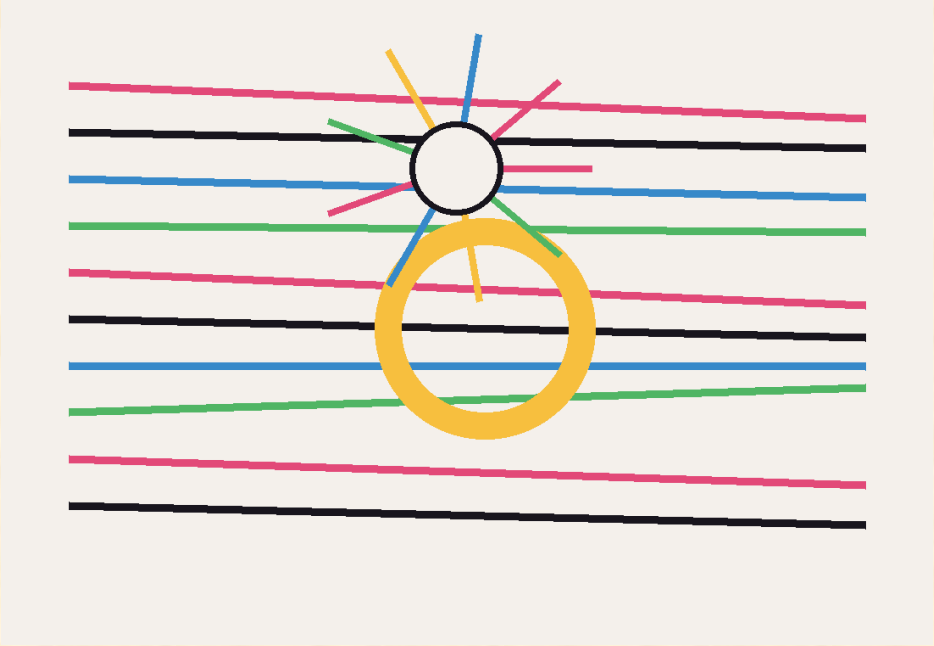

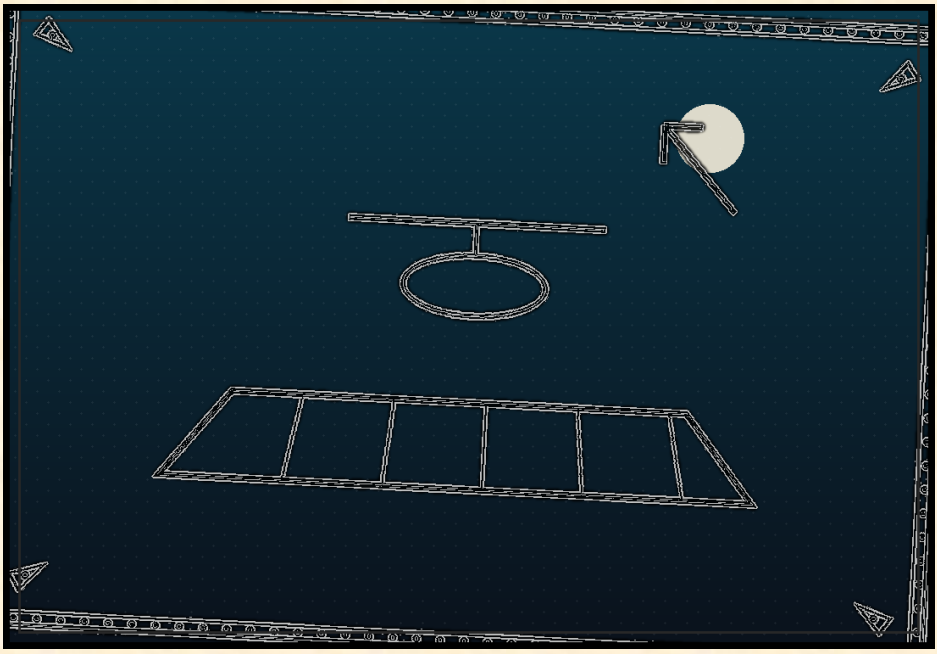

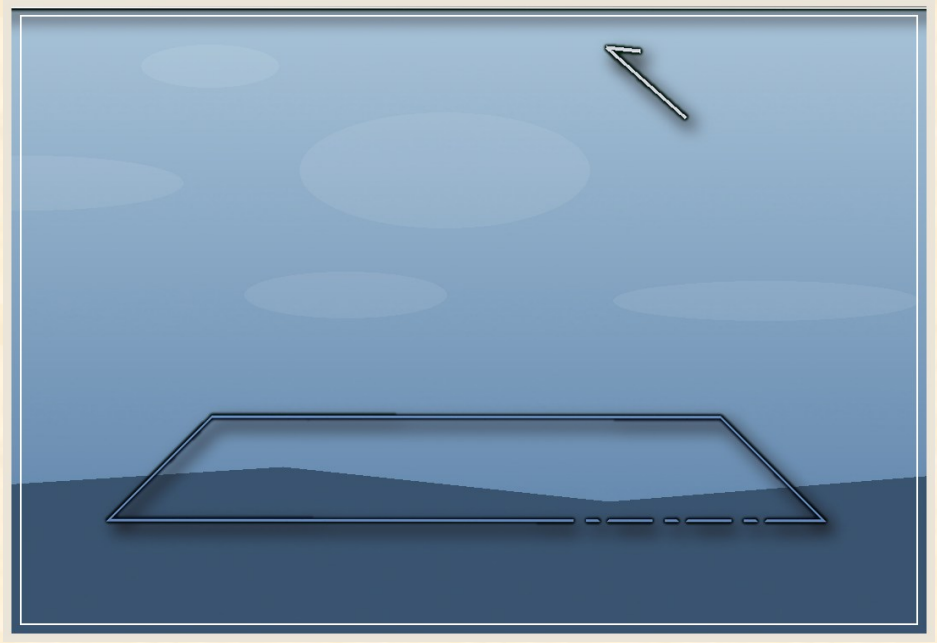

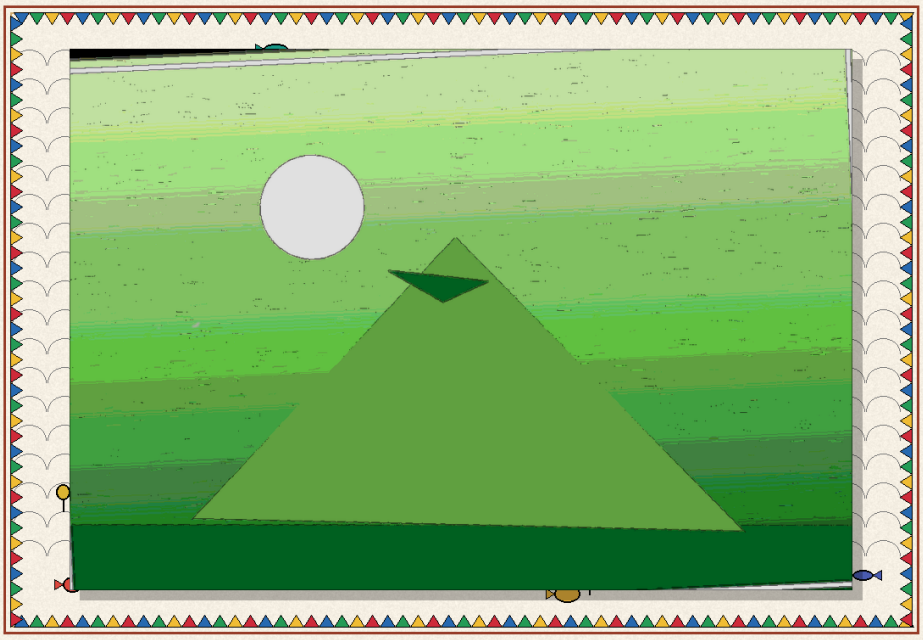

चित्र 26

मुदा लगमे पहुँचिते आस्थाक साँस अटकि गेल। 'ऐमे सँ उतरैबला ढाँचा गाएब अछि! सीढ़ी गाएब अछि! गेट खोलल गेल अछि — आ कियो ने कियो ऐ सभ समानक गहिंकी नजरिसँ निरीक्षण केलक अछि।' अन्हारमे केओ हुनका सभसँ पहिने पहुँचि गेल छल — आ ओ 'केओ' आब कतहु लगे मे छल।

तखने तितली आ टिकुली भनभनाइत आएल — 'एकटा ऊर्मि आबि रहल अछि, बालुक ऊपरसँ!' 'कोन दिशासँ?' 'उत्तर-पश्चिम!' सभ भागल, फेर तितली-टिकुलीक इशारापर ठाढ़ भेल। मरुस्थलक अवाज — कखनो डरौन, कखनो संगीतक सुर — आ ओही दुनूक बीच एकटा तेसर ध्वनि।

तितली बाजल, 'ह्वेलक पीठबला बालुक ढिमकापर सँ विभिन्न तरहक अबाज आबि रहल अछि। चलैबला वनस्पति ओतै अपन काज कऽ रहल हएत।' 'केम्हर अछि ओ ढिमका?' 'उत्तर-पूर्व।' आ सभ फेर दौगल — अन्हारक पेटमे, एकटा एहन जीवसँ भेँट करए जे गाछ छल मुदा गाछ नहि रहल।

अध्याय १४ : ह्वेलक पीठपर हरियरी

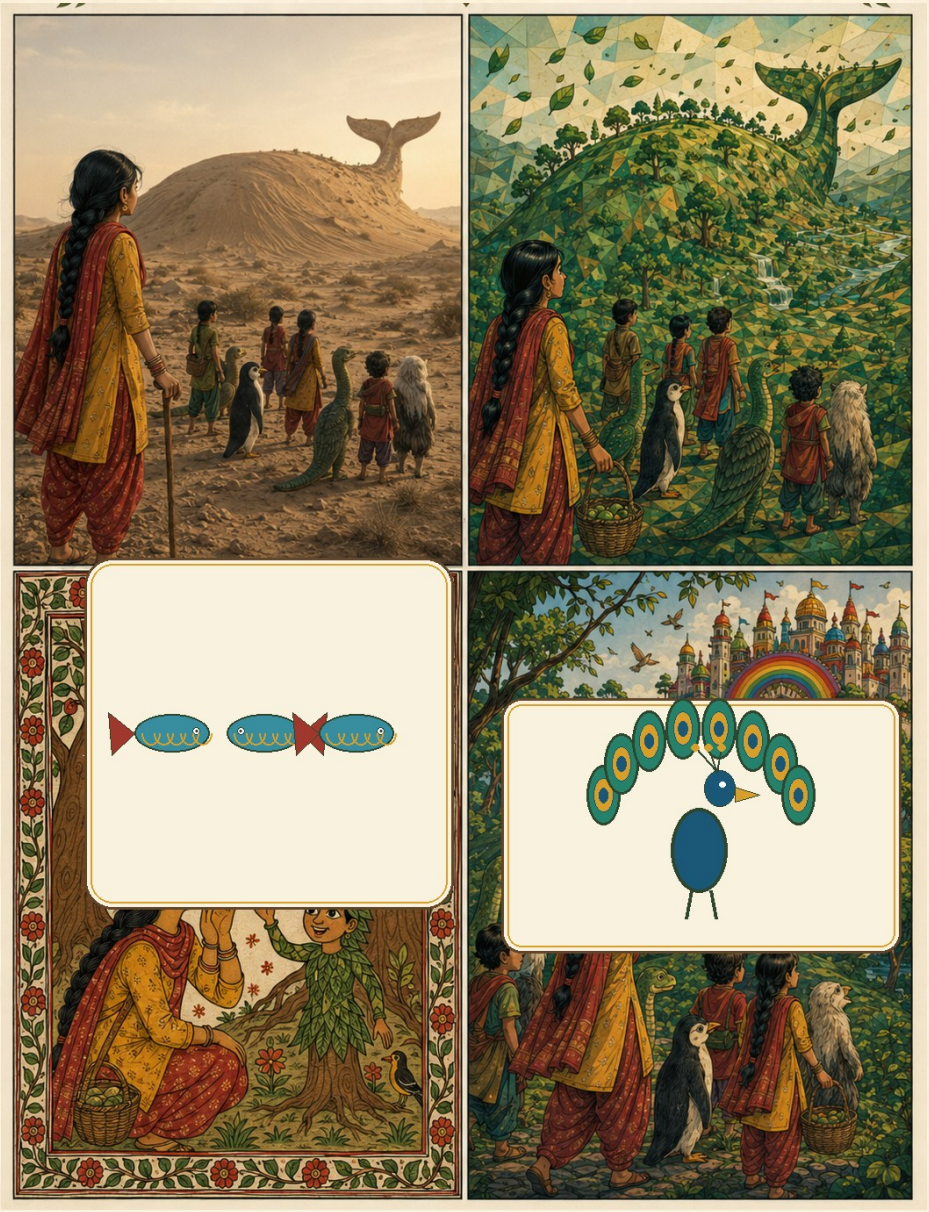

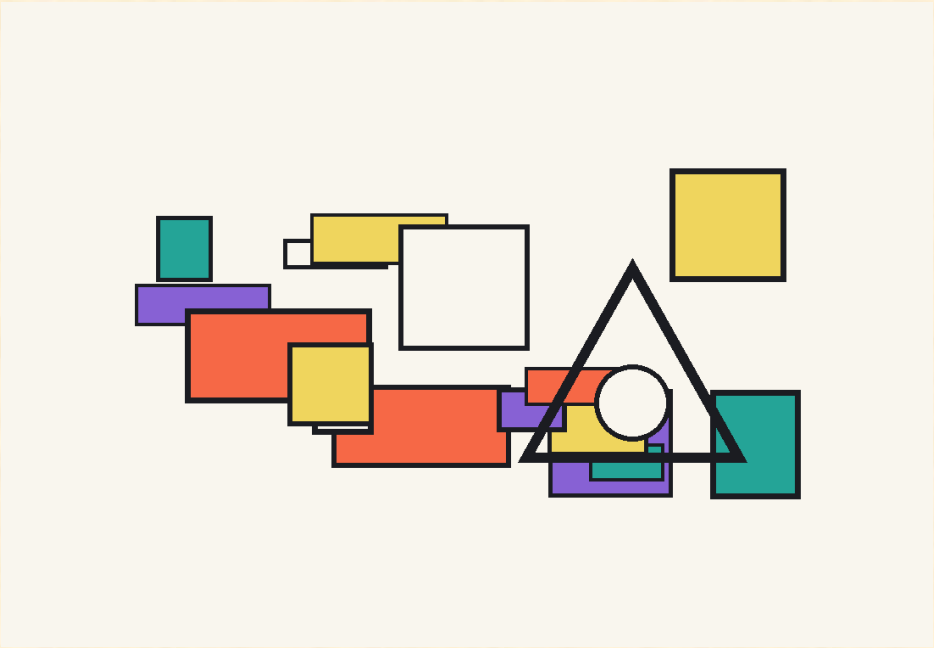

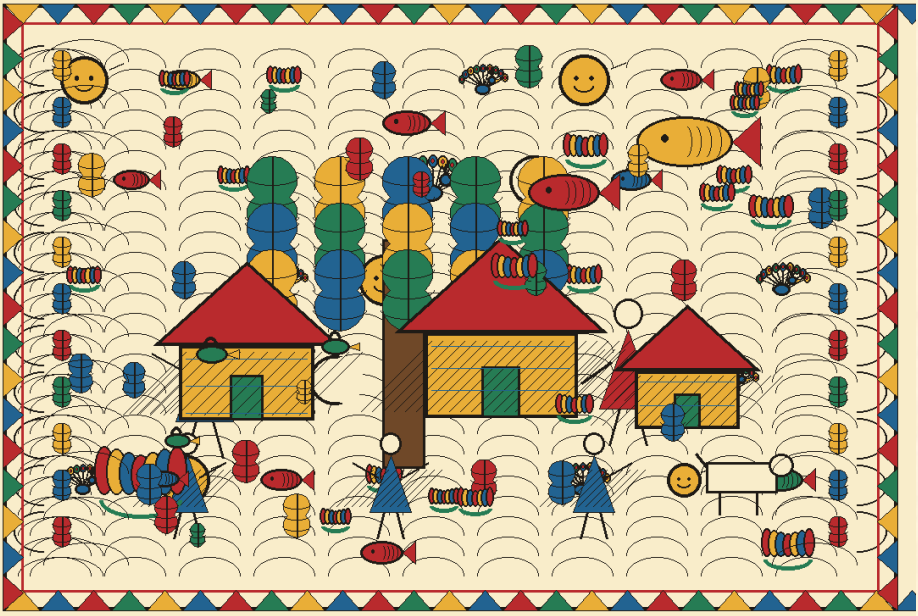

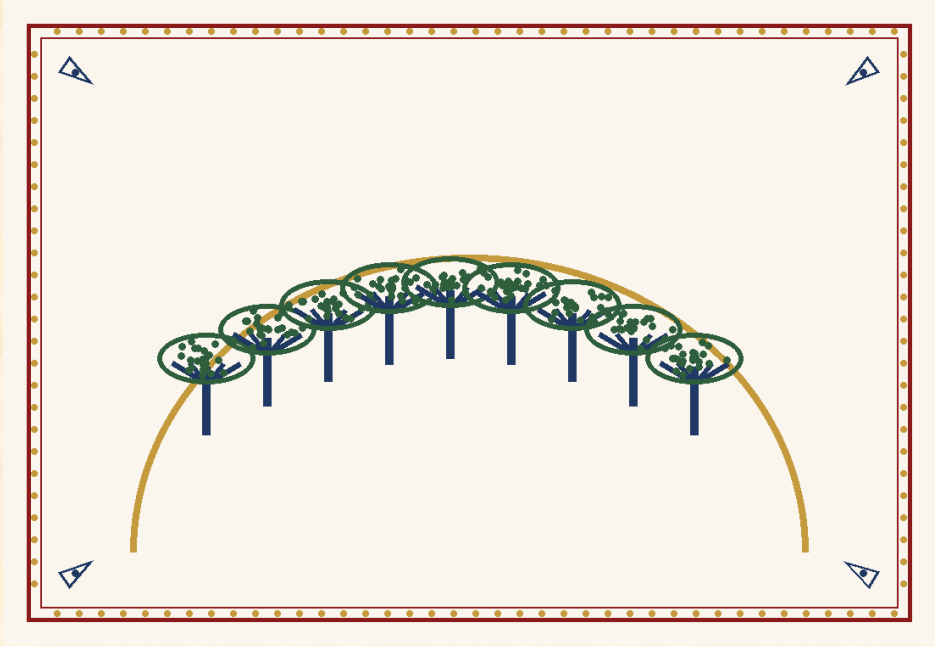

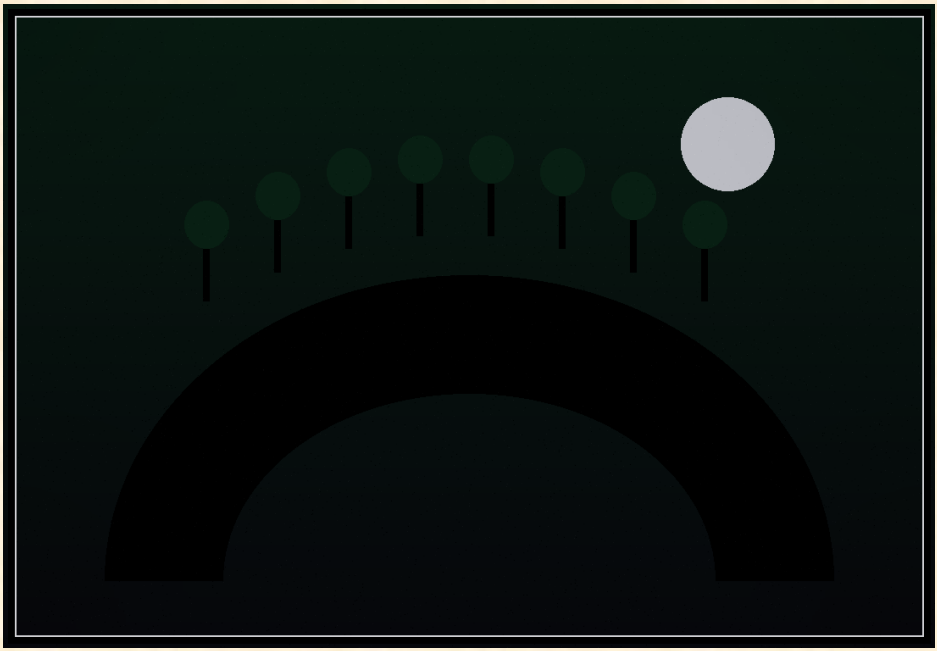

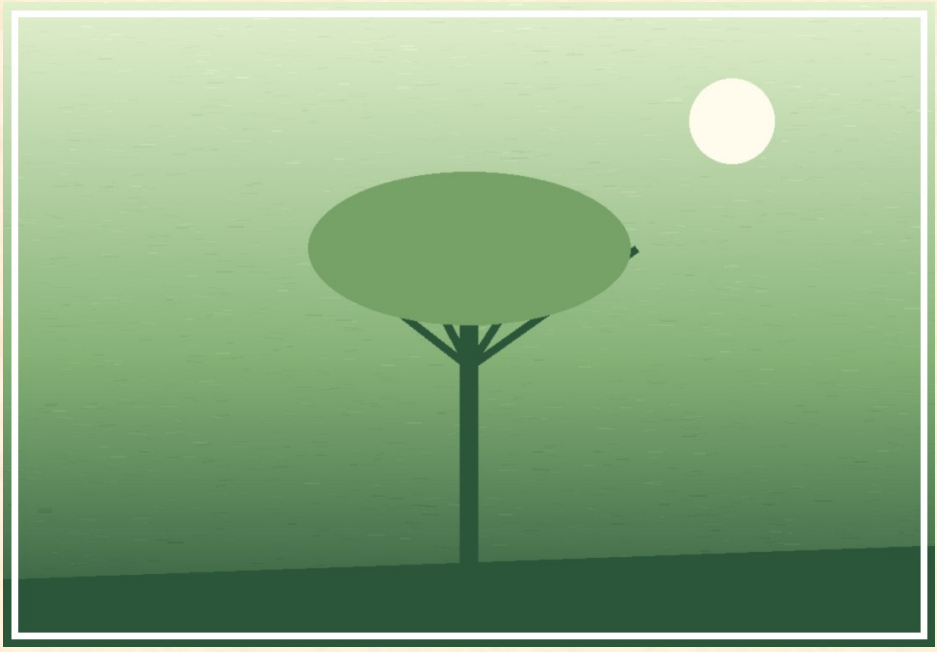

चित्र 27

सात-आठ घण्टाक बाद दूरे सँ ओ देखा पड़ल — ह्वेलक पीठ सन नमहर बालुक ढिमका। टुराकोस सचेत केलक, 'आब सम्हरि कऽ। एतऽ छोट-छोट ढिमका उड़लाक बाद ताल बनि जाइ छै — पएर धँसि सकैए।' 'दलदल जकाँ?' आस्था पुछलक। कूकाबुरा खी-खी हँसल, 'नै, तेहेन नै। ठेहुन भरि धँसब, प्रयाससँ पएर निकलि जाएत। खाली घबड़ेबाक नहि अछि।'

आ जखन ओ सभ ढिमकापर चढ़ल, त' जे देखलक तेकरा पर आँखिकेँ भरोस नहि भेल — रेगिस्तानक करेजमे, ह्वेलक पीठपर, गाछ-बृच्छ सभ चारू कात पसरल छल! हरियर, जीवित, पात हिलबैत। ओही अन्हार लोकमे, जतऽ रानीक आदेशसँ कूड़ा फेकैत छल, केओ बोन रोपि देने छल।

टुराकोस मद्धिम स्वरमे कहलक, 'चलैबला वनस्पतिक ई किरदानी अछि। किछु दिनमे ई गाछ सभ सेहो चलऽ लागत।' ओकर स्वरमे चेतौनी छल, मुदा आस्थाक आँखिमे किछु आर छल — ई 'किरदानी' त' रेगिस्तानकेँ घर बनएबाक किरदानी छल!

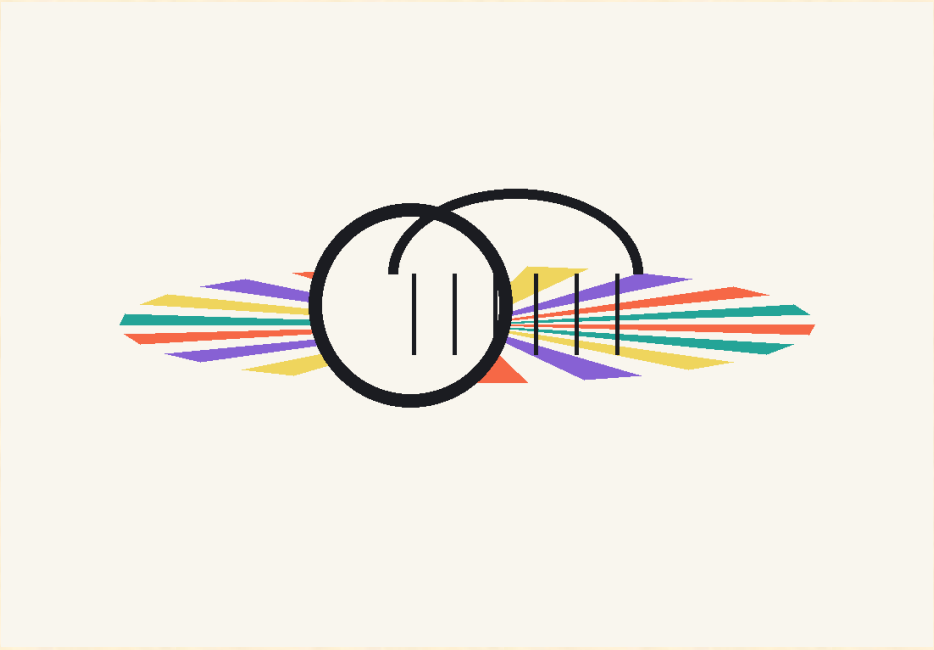

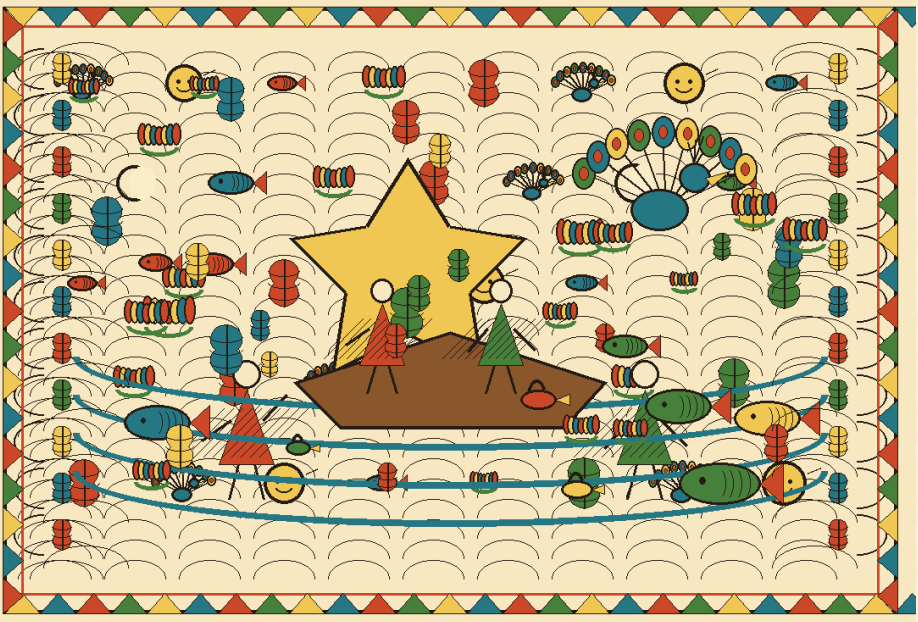

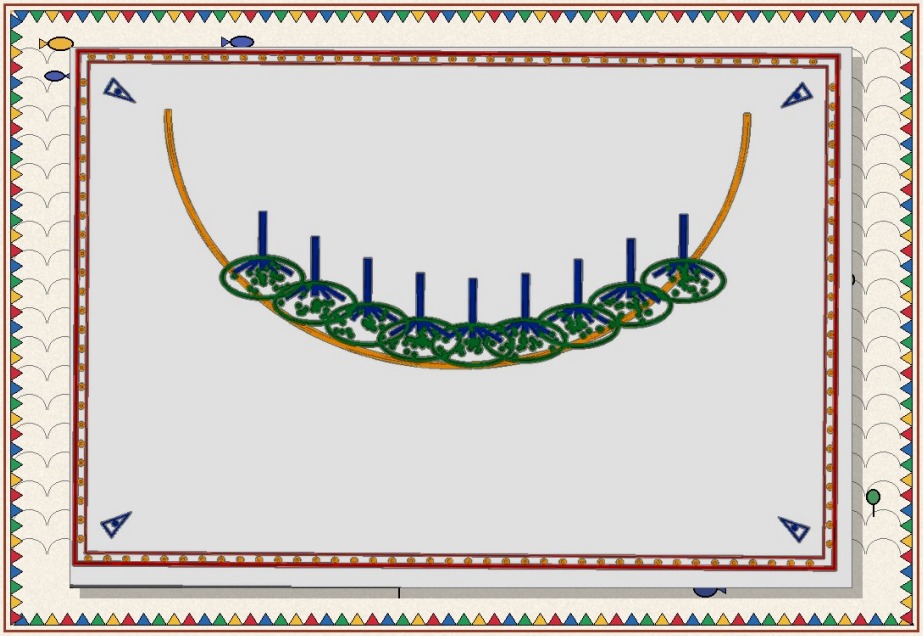

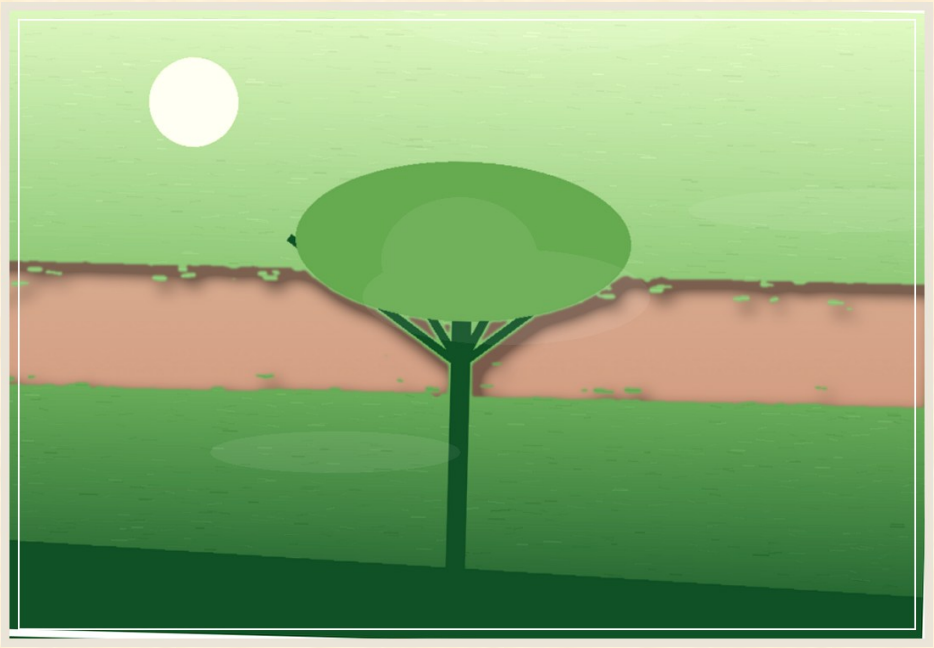

चित्र 28

तखने लग-पासक वनस्पति सभ आस्थाकेँ हाय-हेलो करऽ लगलै। आस्थाकेँ अपरतीब लगलै — महारक ओइपारक (माने परीलोकक) गाछक पात हिलितो नहि छल, आ एहि 'अन्हार लोक'क गाछ सभ त' बड्डु नीकसँ बाजैत अछि, पात हिलबैत अछि, अभिवादन करैत अछि!

आस्था एकटा गाछसँ पुछलक, 'चलैबला वनस्पति, जे महारक ओइपारसँ आएल छथि, से कतऽ छथि?' एकटा बच्चा-गाछ बाजल, 'ह्वेलक पीठक पुच्छी लग हुनकर महल छन्हि — सतरंगी महल, जतऽ पनिसोखा अकाससँ नीचाँ खसै छै। ओ हमर सभक राजा छथि।'

'ओतऽ गेनाइ ठीक हएत?' — सातो गोटे आस्थेसँ पुछलखिन्ह, जेना अनायासे ओ बच्ची एहि दलक नेता बनि गेल हो। आस्था उत्तर देलक, 'किए नै? जँ मित्रतासँ गप भऽ जाए, त' झगड़ाक कोन खगता?' आ आठो गोटे ह्वेलक पीठक ऊपरसँ होइत आगाँ बढ़ल — सतरंगी गेट दिस, जतऽ ढिमकाक पुच्छी नीचाँ जा कऽ खतम होइत छल।

अध्याय १५ : दुनू राजाक सत्य

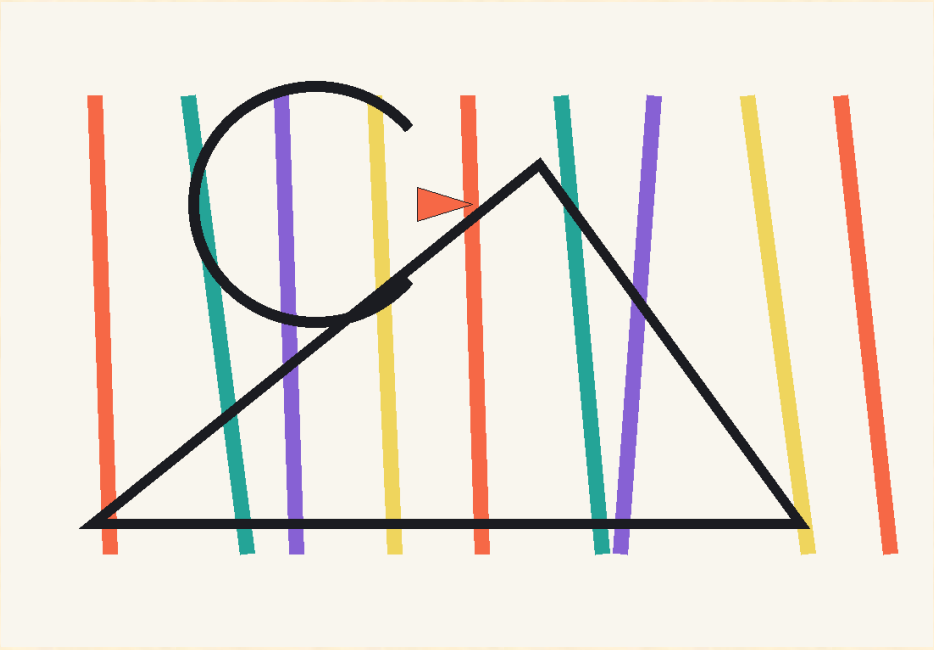

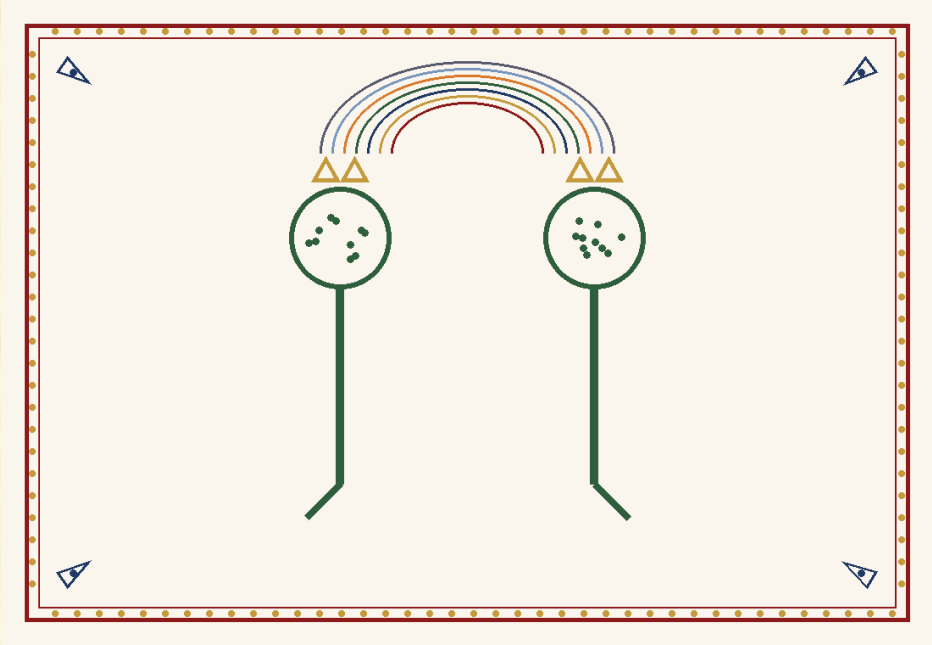

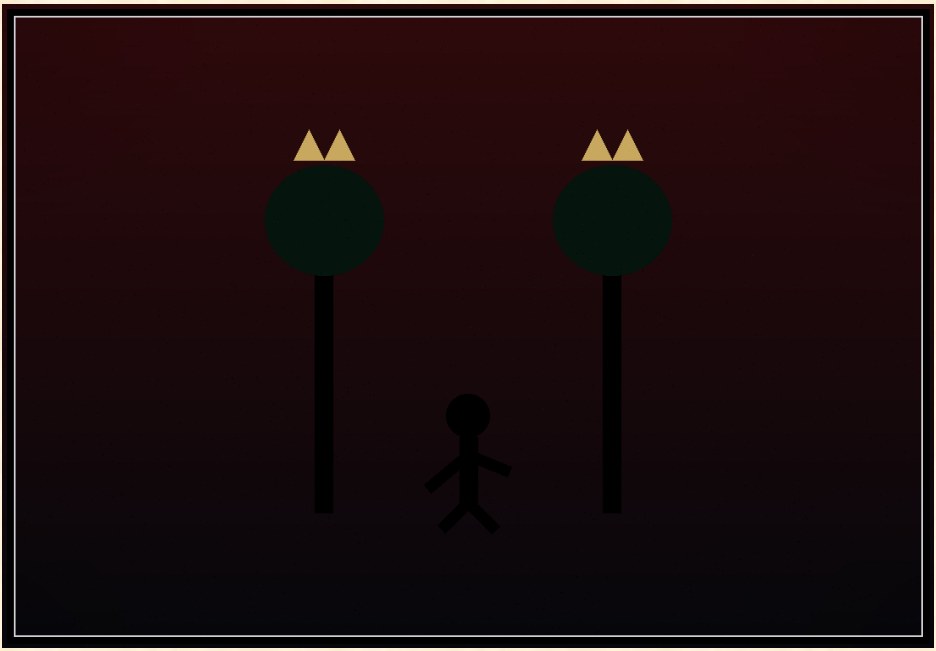

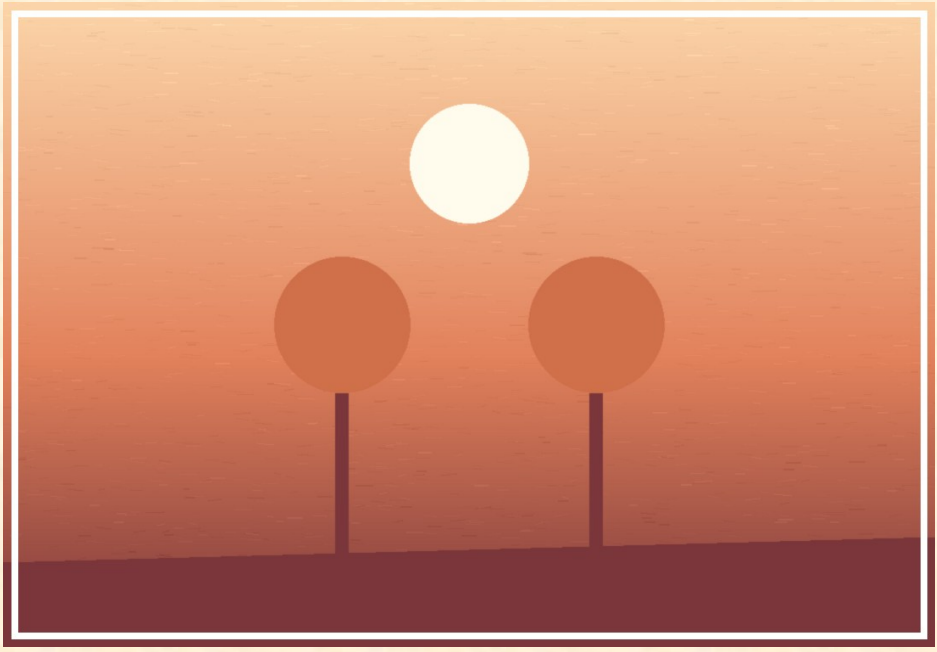

चित्र 29

सतरंगी दरबज्जा लग पहुँचिते कूकाबुरा खी-खी हँसए लागल — आ सभक मुँहपर एकटा अलौकिक प्रसन्नता आबि गेल। एहि पारक स्वागतमे कोनो रेकॉर्ड नहि छल, कोनो नम्बर नहि — एकटा चलैबला गाछक बच्चा आगाँ बढ़ि कऽ सभकेँ भीतर लऽ गेल। आस्थाकेँ लगलै जे एतऽ लोक हृदयसँ सोचि रहल अछि — मशीन नहि, हृदय काज कऽ रहल अछि।

स्वागत-कक्षमे आस्थाकेँ अपन सपनाक अनाओल खाइ-पीबैबला समान देखा पड़लै। आ तखने एकटा आओर अचरज — ओकरा लगलै जे ओ साँस लऽ पाबि रहल अछि! एतऽ हवा छल, भूख छल। ओ बिस्कुट खाए लागलि, आ पहिल बेर बुझेलै जे भूख लागब सेहो जीवित रहबाक एकटा सुख थिक।

खिड़कीसँ बाहर, बिजलौकासँ पघिलल शीसाक बड़का मैदानमे, ओहने छोट-छोट हेलीकॉप्टर उड़ैत-उतरैत देखा पड़ल — चलैबला वनस्पति पायलट सभ ओकरा चला रहल छल। आस्थाक तकनीक एतऽ पहुँचि गेल छल — मुदा हथियार बनि कऽ नहि, पाँखि बनि कऽ।

तखने सूचना भेटल — 'दुनू राजा अहाँसँ भेँट करए आबि रहल छथि।' दुनू राजा एलाह — दुनू वनस्पति, सोचैबला-चलैबला। आस्था सोझे प्रश्न केलक, 'की अहाँ परीलोकक रानीकेँ खतम करैबला छी? परीलोककेँ नष्ट करैबला छी?'

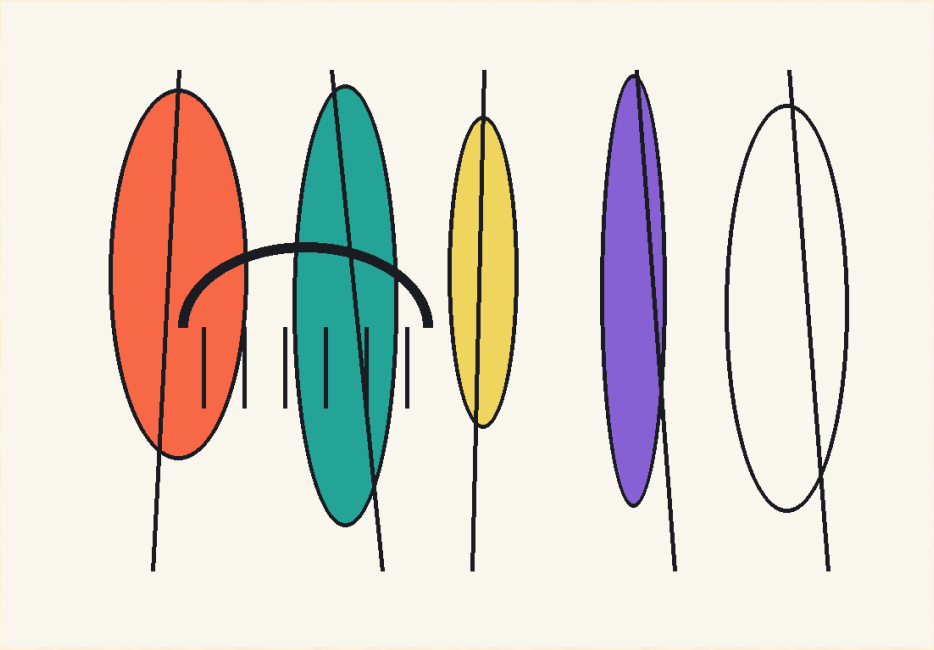

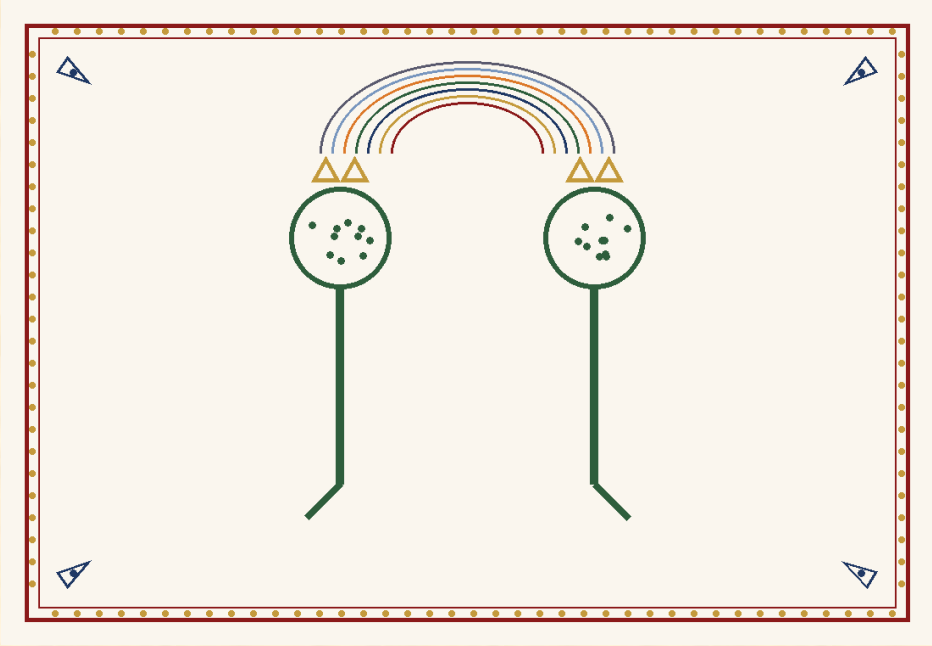

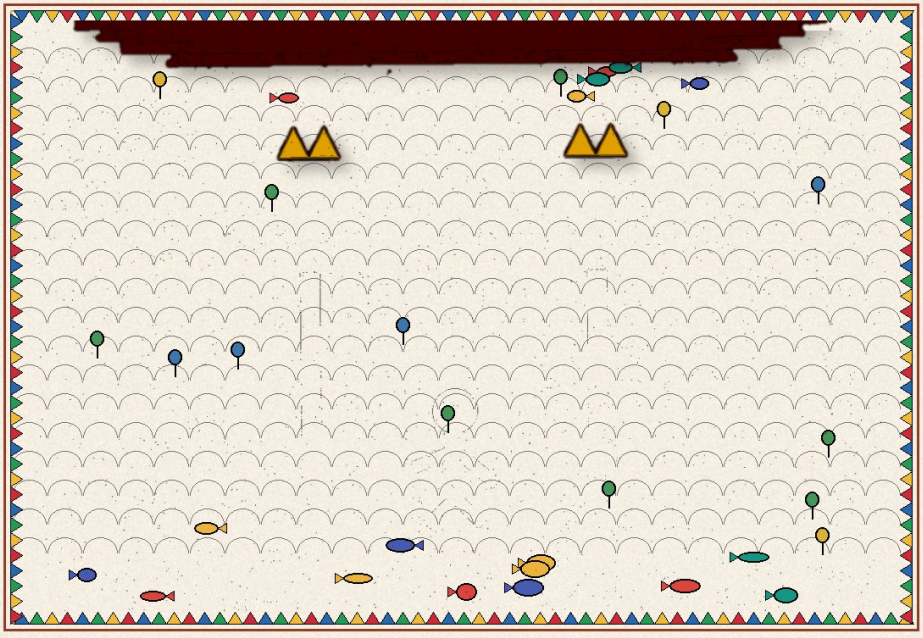

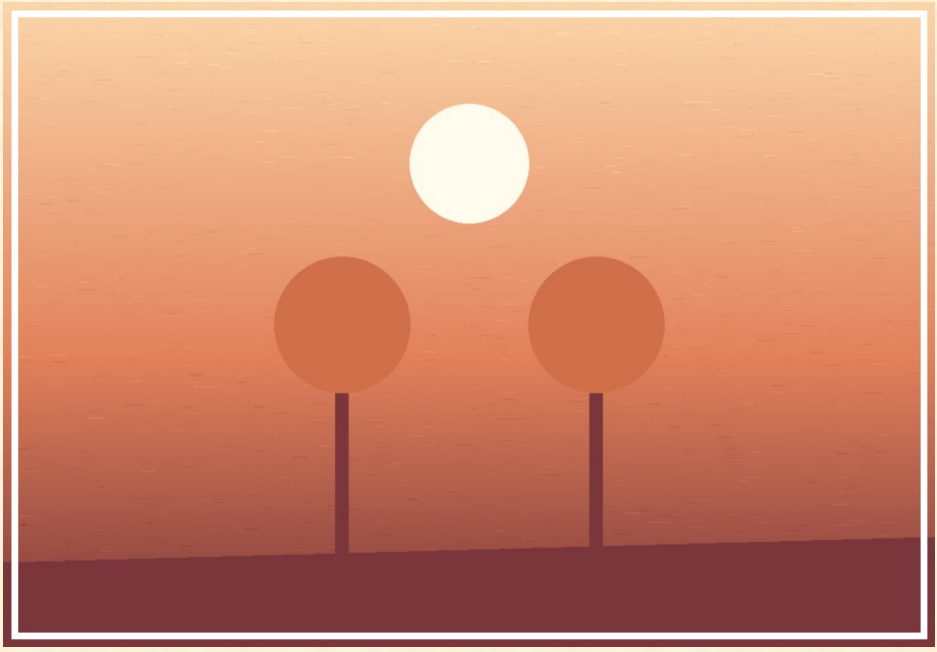

चित्र 30

दुनू राजा शान्त स्वरमे जे कहलनि, से आस्थाक पएर तरक जमीन घुसका देलक — 'कोनो परीलोक नहि छै, आ नहिये कोनो रानी ओतऽ छै। की अहाँकेँ रानीसँ भेँट कराओल गेल छल?' आस्था बाजलि, 'नै... से त' नहि कराओल गेल छल।'

'ओतऽ किछु विक्षिप्त वैज्ञानिक सभक राज भऽ गेल छै। हमरा पता चलल, तेँ हम महारक ऐपार आबि गेलहुँ। एहि कात ओ सभ माहुर सन पदार्थक अवशेष फेकै छथि, आ ई क्षेत्र रेगिस्तान बनि गेल। मुदा हमर सभक ठाढ़िसँ आब जीवन पसरि रहल अछि। अहाँ लड़ाइ नहि, वार्ता चुनलहुँ — से हम दूर-संचालित कैमरासँ देखि रहल छलहुँ। ई त' समानान्तर सुधार-गृह मात्र अछि।' — आ कनी कालमे दुनू राजा चलि गेलाह, जेना साँच कहि कऽ केओ भार उतारि दैत अछि।

आस्था बहुत काल धरि चुप बैसलि रहलि। त' जकरा ओ परीलोक बुझने छलि, से छद्म छल — बिनु रानीक राज, बिनु हवाक हरियरी, बिनु नामक नागरिक। आ जकरा सँ सभ 'अन्हार लोक' कहि डेराइत छल, ओतऽ साँस छल, भूख छल, हृदय छल। भुतहा के — गाछी आकि लोकक आँखि? आस्थाक आँखिसँ दूटा नोर खसल — अपना लेल नहि, ओहि सभ लेल जे ओम्हर नम्बर बनि कऽ रहि गेल छल: वनसप्तो ९९९९५७४५, आ ओकर बादबला, आ ओकर बादबला।

अध्याय १६ : अन्तिम सपना

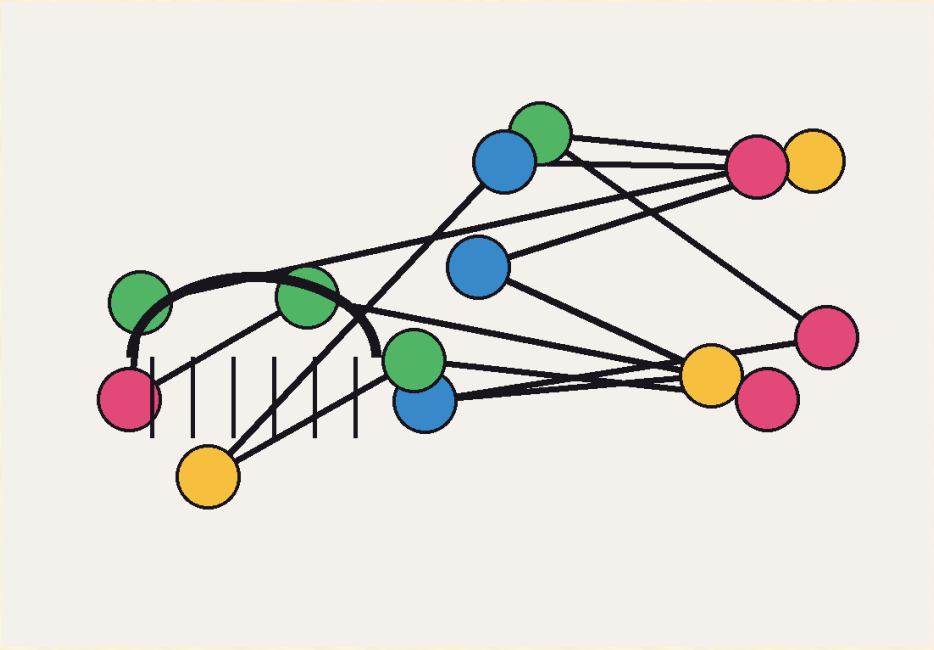

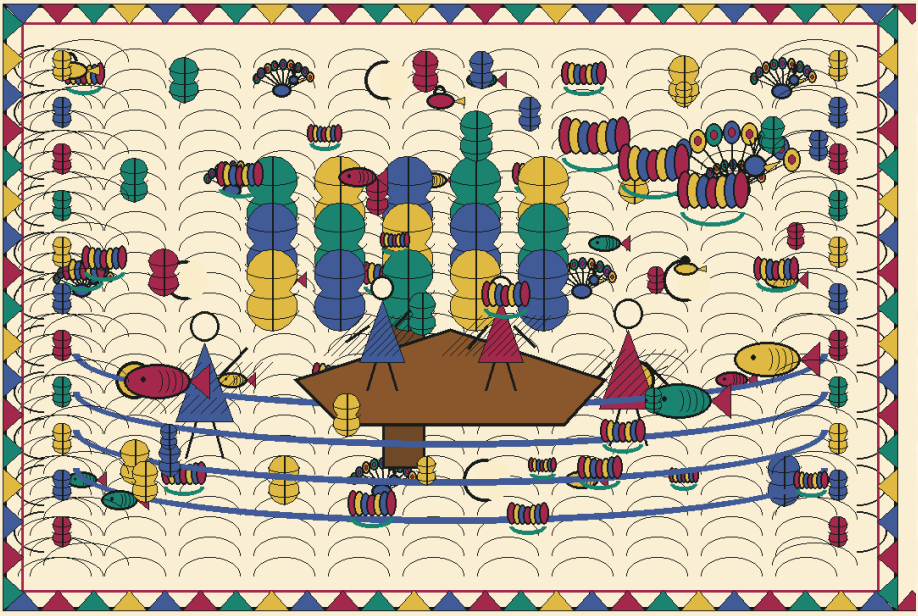

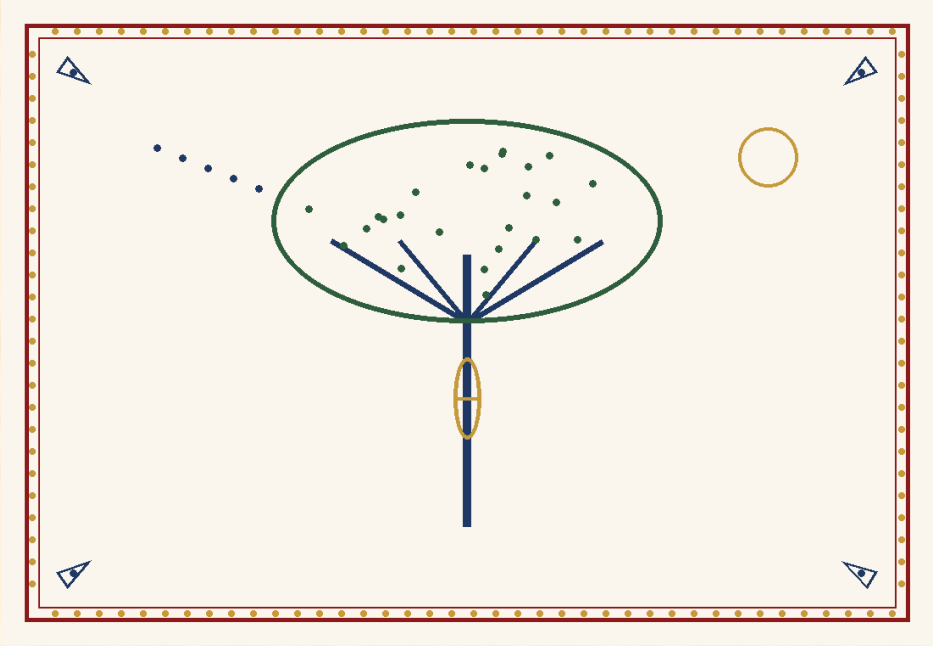

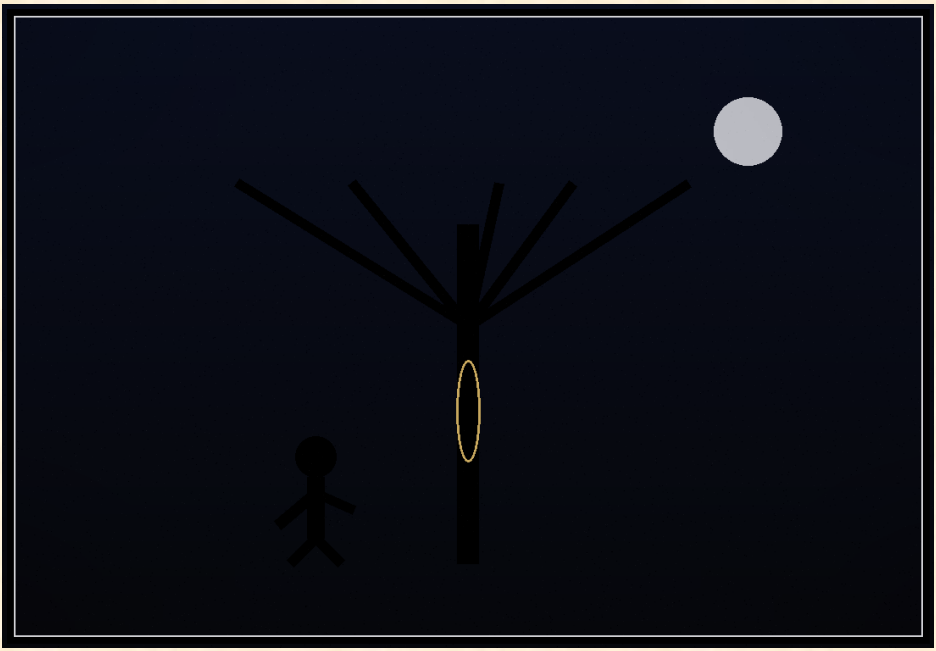

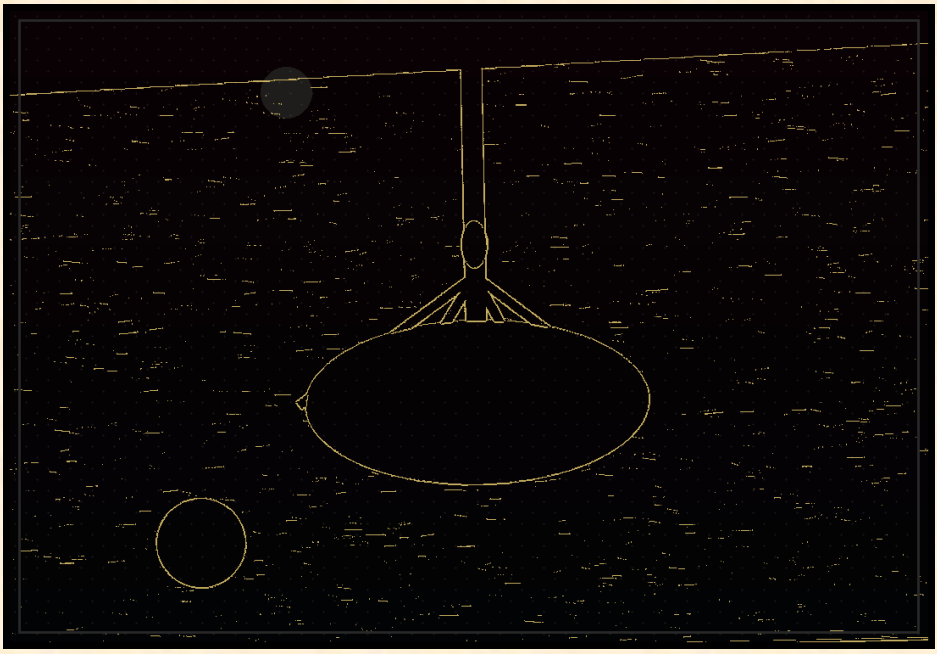

चित्र 31

आस्थाकेँ निन्न आबए लगलै। ओ सोचए लागलि — कोना सभ एहि तरहरिक छद्म परीलोक आ समानान्तर सुधार-गृहसँ बाहर जाए? कोना टुराकोस अपन अफ्रीका देखए, एस्कीमो अपन कहियो-नै-राति, पेंग्यूइन अपन कहियो-नै-दिन?

आ तखन ओकरा बूझि पड़लै — एहि लोकक सभसँ पैघ शक्ति त' ओकरे लग अछि। एतऽ सपना सत्य होइ छै। ओ चाहलक जे ओकरा निन्न आबए आ सपना आबए — एहन सपना जाहिमे सभ महादेशक धोधरि बन्न भऽ जाए, विक्षिप्त वैज्ञानिकक कथित परीलोक खतम भऽ जाए। आ तखन समानान्तर सुधार-गृह अपने खतम भऽ जाएत — कारण जकरा सुधारक चाही, वैह नहि रहत।

निन्न पड़बासँ ठीक पहिने ओ अपन सातो संगीक मुँह मोन पाड़लक — टुराकोसक लाल-हरियर पाँखि, मम्बाक भारी सिसकारी, कूकाबुराक खी-खी, तितली-टिकुलीक भनभन, एस्कीमोक बरफ सन धीरज, पेंग्यूइनक काज-भक्ति। बिदा कहबाक बेर नहि भेटल छल। कदाचित् सभसँ साँच बिदाई वैह होइत अछि जे कहल नहि जाइत अछि।

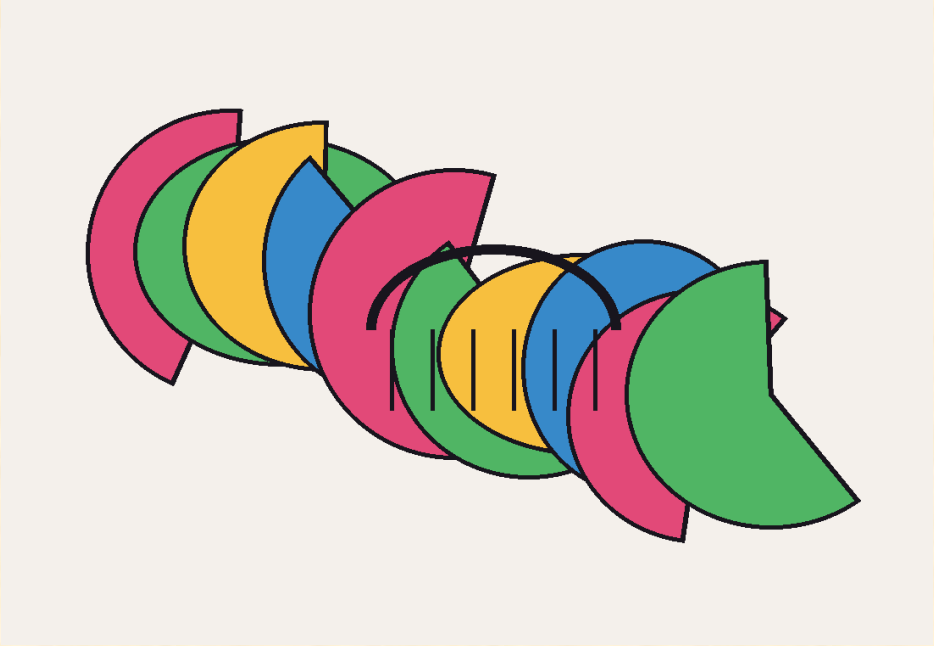

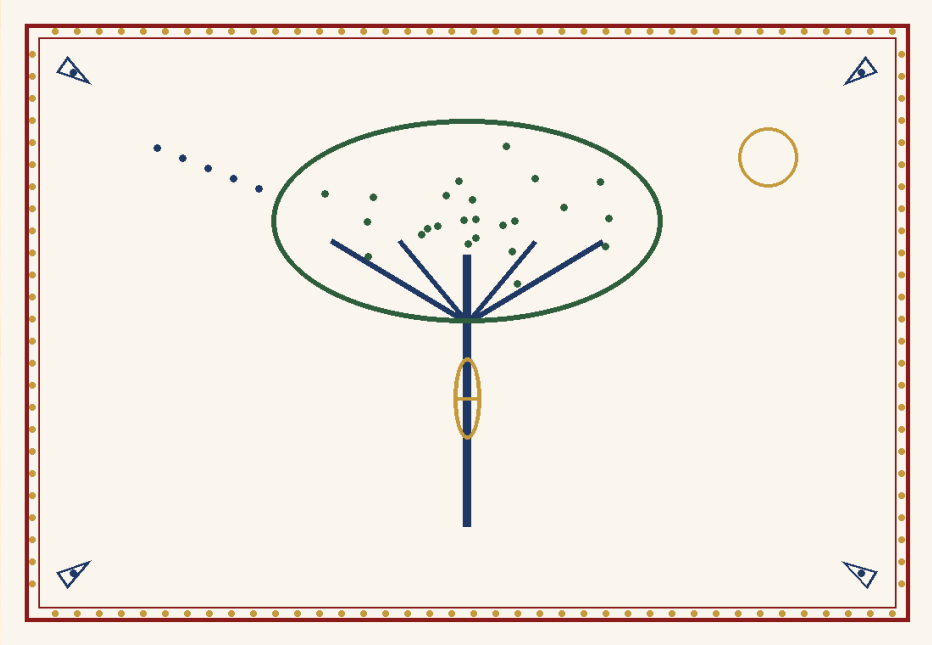

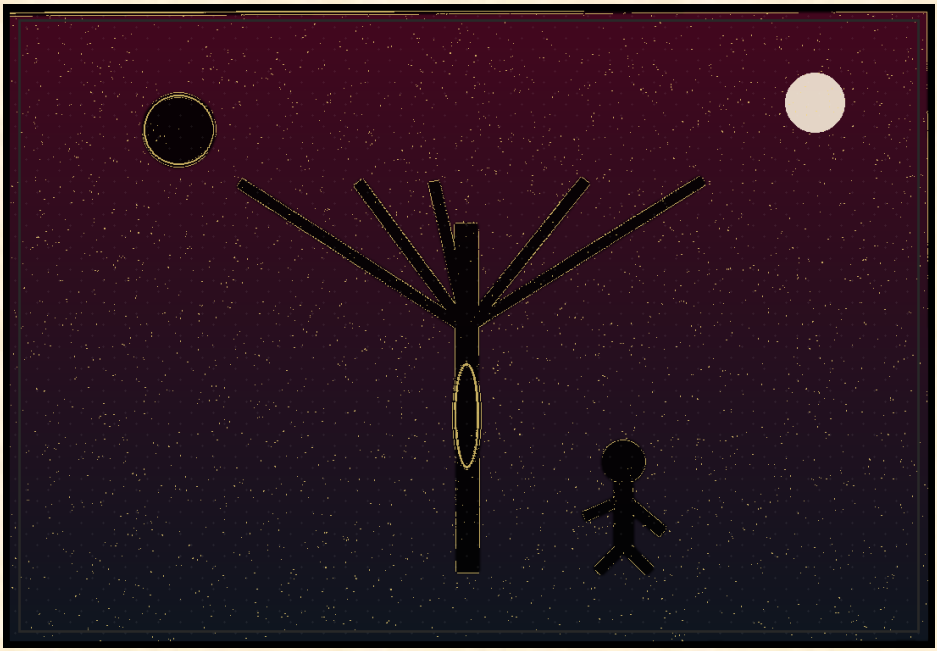

चित्र 32

आस्था सपनाए लागलि — आ ई सपना ओकरा असगर नहि देखए पड़लै; समानान्तर सुधार-गृहक दुनू राजा सपना पठेने रहथि। सपनामे धोधरि सभ एक-एक कऽ मुनाइत गेल — अफ्रीकाक, आर्कटिकक, आस्ट्रेलियाक, एशियाक... आठो। छद्म परीलोकक उज्जर अकास झलफल होइत गेल, जेना केओ लालटेनक बत्ती घटा कऽ रहल हो।

आ आस्था चन्ना गाछी फेरसँ पहुँचि गेलि। सपना सत्य होइ छै — आ से भेलै। धोधरि बन्न भऽ गेलै। आब कोनो माल-जाल, चिड़ै निपत्ता नहि होइ छै। चन्ना गाछी आब भुतहा गाछी नहि कहबैत अछि — आब ओ खाली आमक गाछी अछि, जतऽ भोरमे बच्चा सभ टोकरी लऽ कऽ जाइत अछि आ साँझमे लौटि अबैत अछि, सभ-क-सभ, एक्को गोट कम नहि।

खाली आस्था, जखन-जखन ओहि झमटगर गाछ लगसँ गुजरैत अछि, एक बेर रुकि कऽ ओकर बन्द धोधरि दिस जरूर तकैत अछि। की सातो संगी अपन-अपन घर पहुँचि गेल हएत? उज्जर अकासक ठाम आब की हएत? — एहि प्रश्नक उत्तर कोनो सपना नहि कहलकै। किछु दरबज्जा एहन होइत अछि जे बन्द भेलाक बादो, भीतरसँ, कहियो काल हल्लुक आवाज दैत रहैत अछि।

उपसंहार : बा आ ओम

'...आब कोनो माल-जाल, चिड़ै निपत्ता नै होइ छै।' — बा खिस्सा एतऽ धरि आनि कऽ रुकलीह। 'ओम?'

मुदा ओम त' सुति गेल छल। ओ मुट्ठीमे बाक आंगुर एखनो पकड़ने छल — अक्षरमुष्टिका, निन्नोमे।

कतऽ धरि खिस्सा सुनलक, से काल्हि रातिमे पुछबै — ई सोचैत बा सेहो सुति रहलीह। लालटेन कनी काल आर जरैत रहल, फेर ओहो — जेना कोनो उज्जर अकास — आस्ते-आस्ते मिझा गेल।

समाप्त

बाल गुरु

ओम, मंशा आ एकटा एहन उत्तर जे बड़कोकेँ झुका देलक

गजेन्द्र ठाकुर

© Gajendra Thakur/ Preeti Thakur; गजेन्द्र ठाकुर सम्पादक, विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका (since 2000) ISSN 2229-547X

ई पोथी गजेन्द्र ठाकुर समग्रक अन्तर्गत संकलित अछि।

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक ISBN:978-93-5890-210-5

DESIGNED BY: AUM GAJENDRA THAKUR

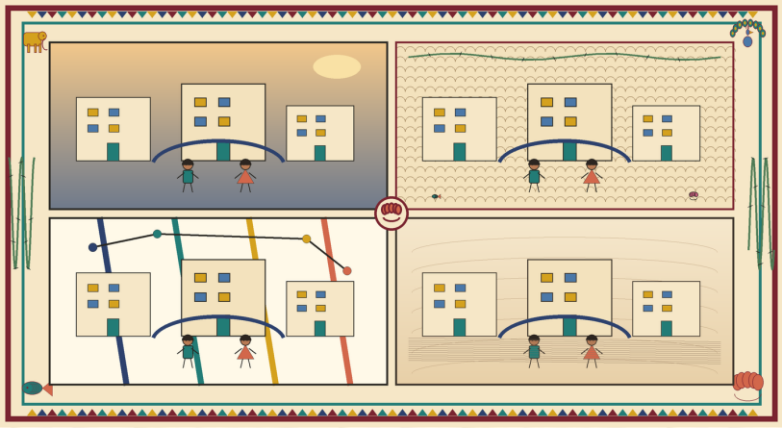

उपक्रम : दू टा नाम

ओम नाम रहै ओइ बच्चाक। मंशा नाम रहै ओइ बुच्चीक। दुनू नाम एतेक छोट, जे कागजपर लिखू त' आधा पाँतिमे अँटि जाए — मुदा एहि खिस्साक अन्त धरि पहुँचैत-पहुँचैत यएह दूटा छोट नाम एकटा एहन पैघ बात कहि जाएत, जकरा बड़का-बड़का पोथी सेहो कहैत-कहैत हबोढ़ेकार भऽ जाइत अछि।

दिल्ली — जतय सभ किओ कतहु ने कतहुसँ आएल अछि। ओही दिल्लीक कोनो आवासीय परिसरमे ई खिस्सा भेल। परिसरक बीचमे एकटा घासक पार्क छल, आ पार्कक बीचमे — ई खिस्सा।

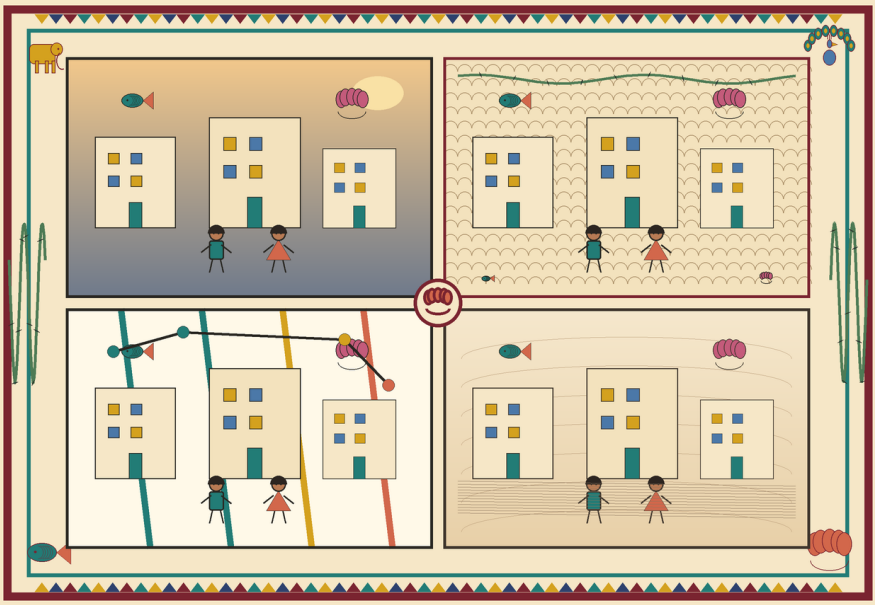

अध्याय १ : दिल्लीक आवासीय परिसर

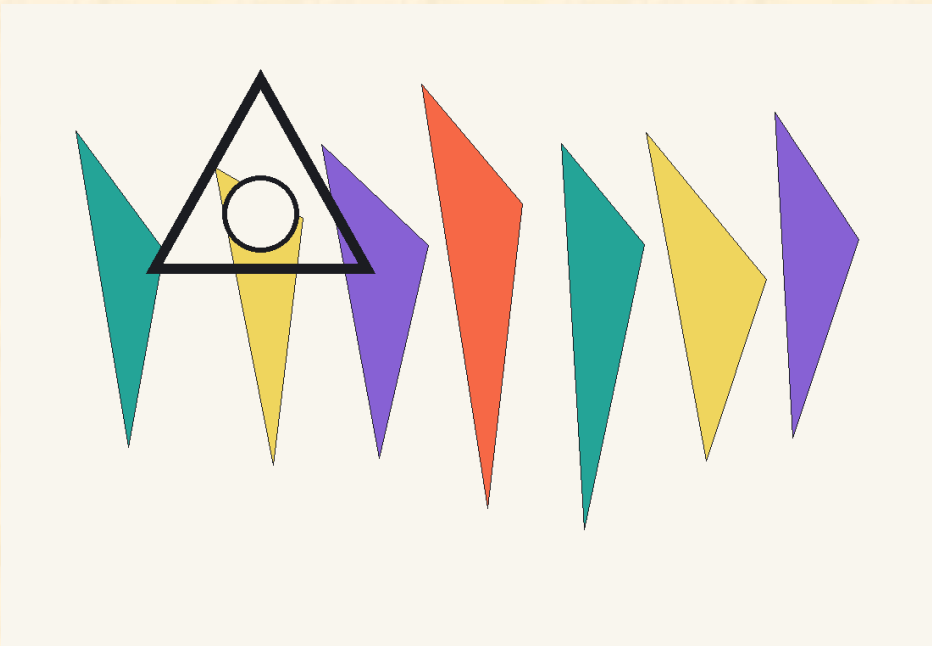

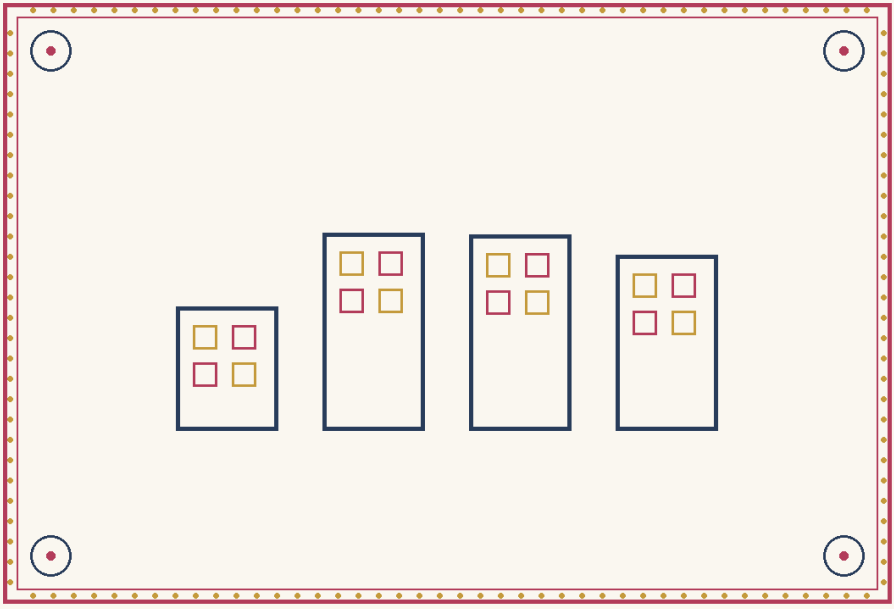

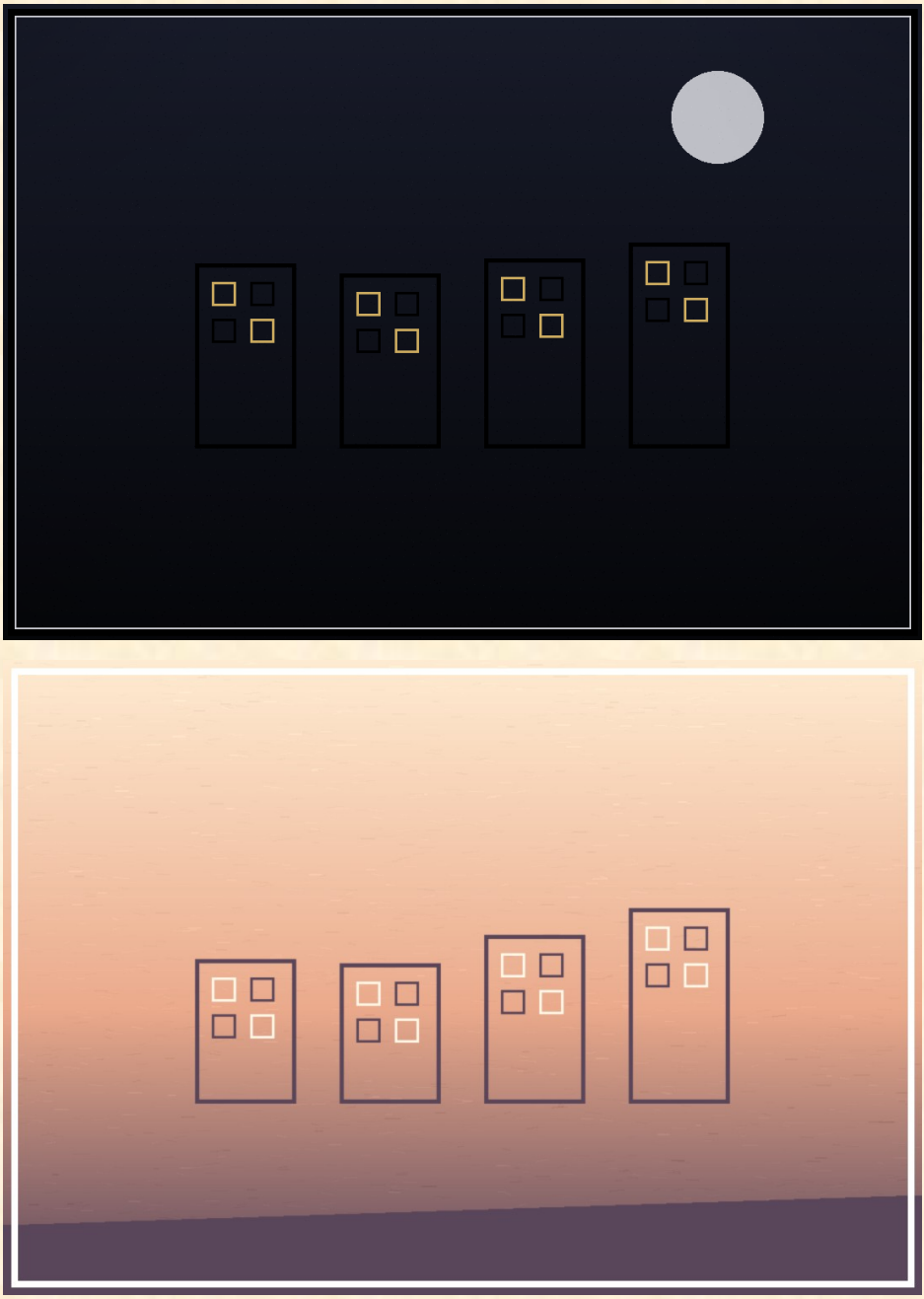

चित्र 1

आवासीय परिसर माने — एक्कहि रंगक ढेर रास मकान, एक्कहि सन बालकनी, एक्कहि सन दरबज्जा। ऊपरसँ देखू त' सभ फ्लैट जौआँ भाइ जकाँ। मुदा भीतर? भीतर सभ दरबज्जाक पाछाँ एकटा अलग देश बसैत छल।

तेसर महलाक एकटा फ्लैटमे मिथिला बसैत छल — ओमक घर। चूल्हिपर अरबा चाउरक भात, बरखा दिनमे तरुआ-तिलकोरक गन्ध, आ माएक मुँहसँ खसैत मैथिली लोरि। ओमक माए गृहिणी छलीह आ पिता नोकरिहारा — भोरे टिफिन लऽ कऽ निकलैत, साँझखन थाकल घुरैत।

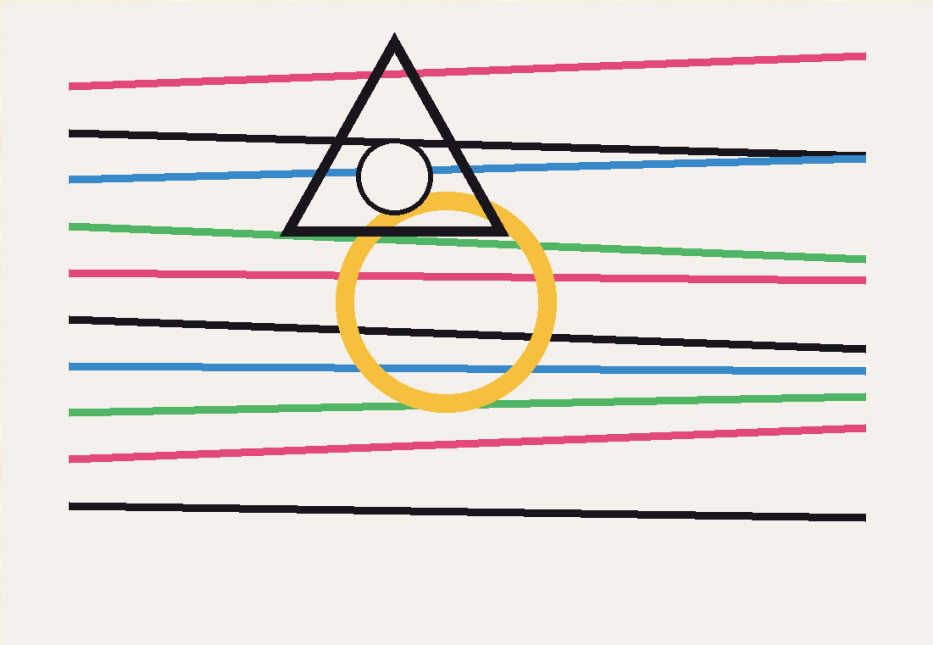

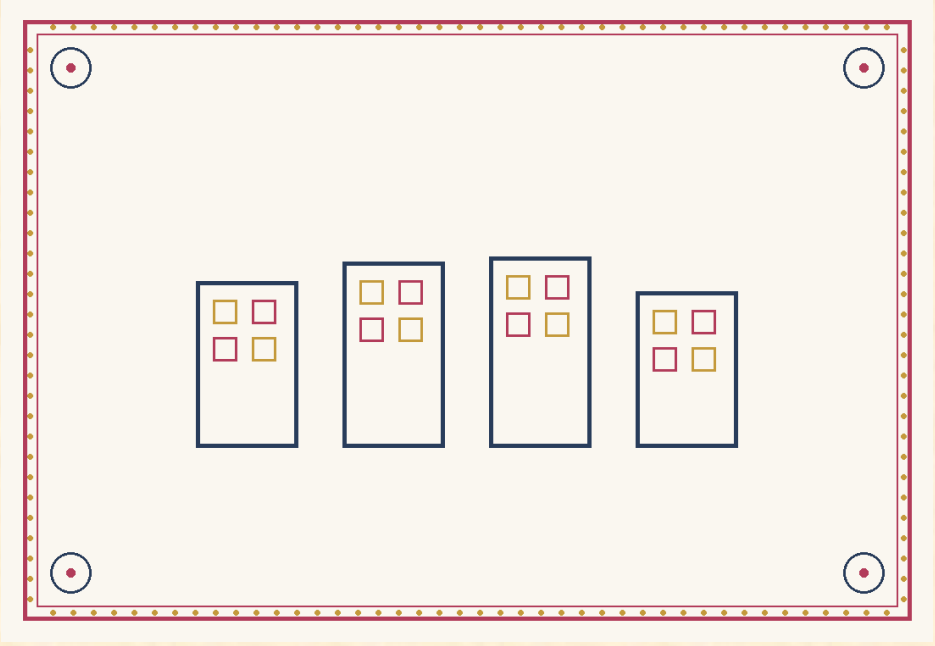

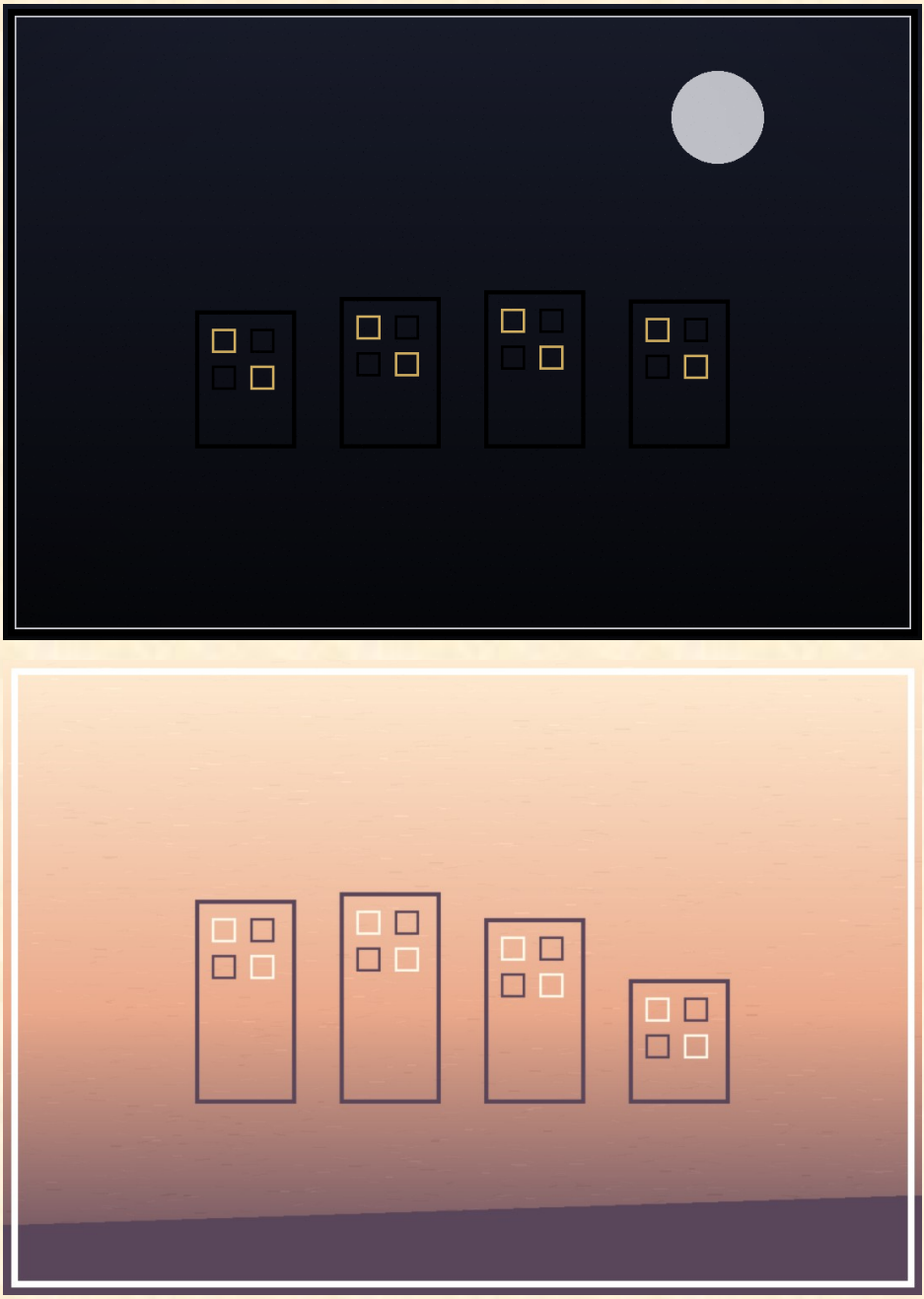

चित्र 2

आ ठीक सामनेबला ब्लॉकमे पंजाब बसैत छल — मंशाक घर। ओतय भोरे-भोर तड़काक छौंक आ मंशाक पिताक ओ मुरेठा, जे बान्हल जाइत छल त' लगैत जेना माथपर भोरका सूर्य बान्हल गेल हो। मंशाक माए हुनका 'सरदारजी' कहै छलीह — एतेक स्नेहसँ, जे ओ शब्द नाम नहि, गीत बुझाइत छल।

मंशाक माए आ पिता — दुनू नोकरिहारा। भोरे दुनू गोटे दू दिस निकलि जाइत छलाह, आ मंशाक दिनक चाभी रहि जाइत छल एकटा तेसर हाथमे। ओ तेसर हाथ — एहि खिस्साक सभसँ चुप आ सभसँ जरूरी पात्र — छलि महुआ।

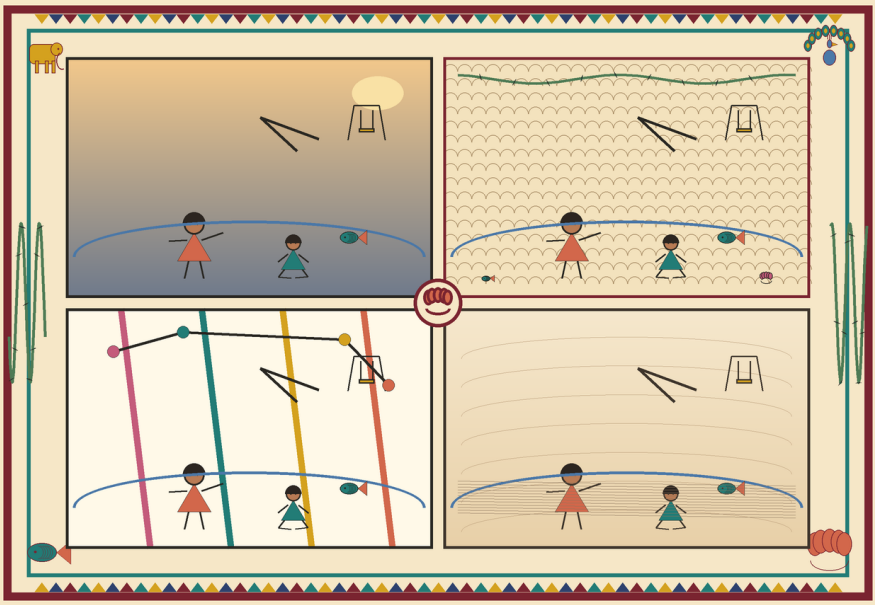

अध्याय २ : महुआ

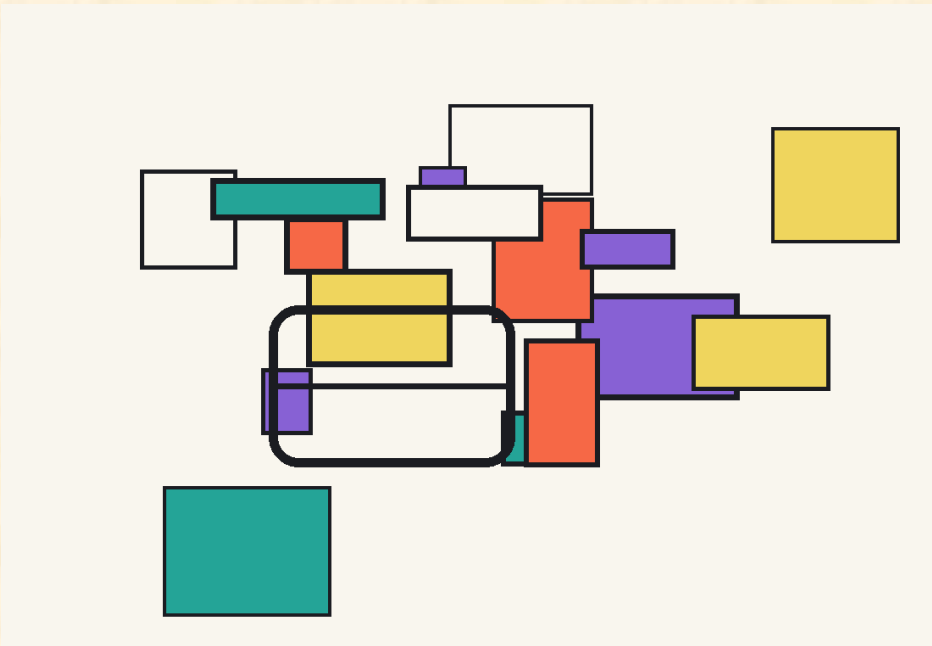

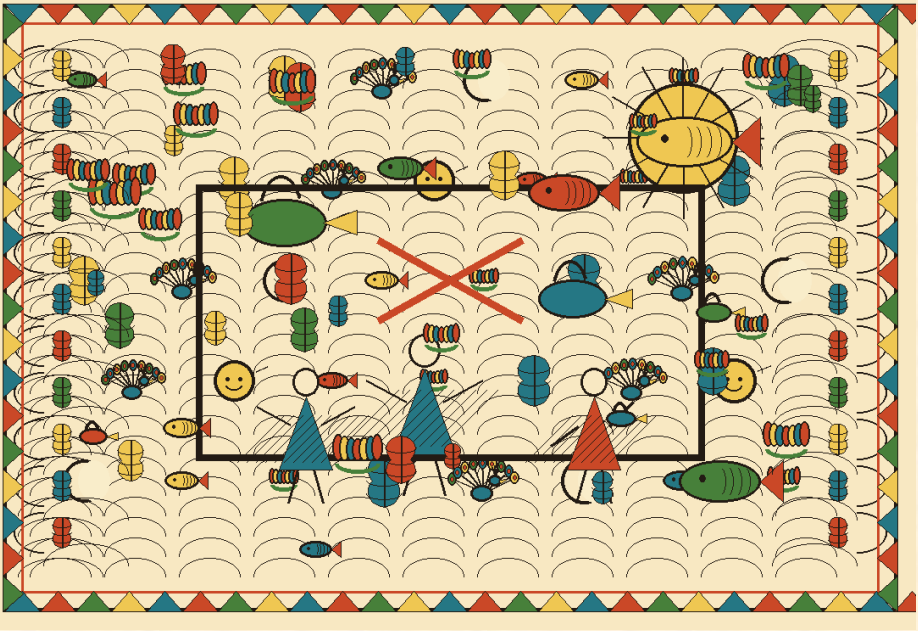

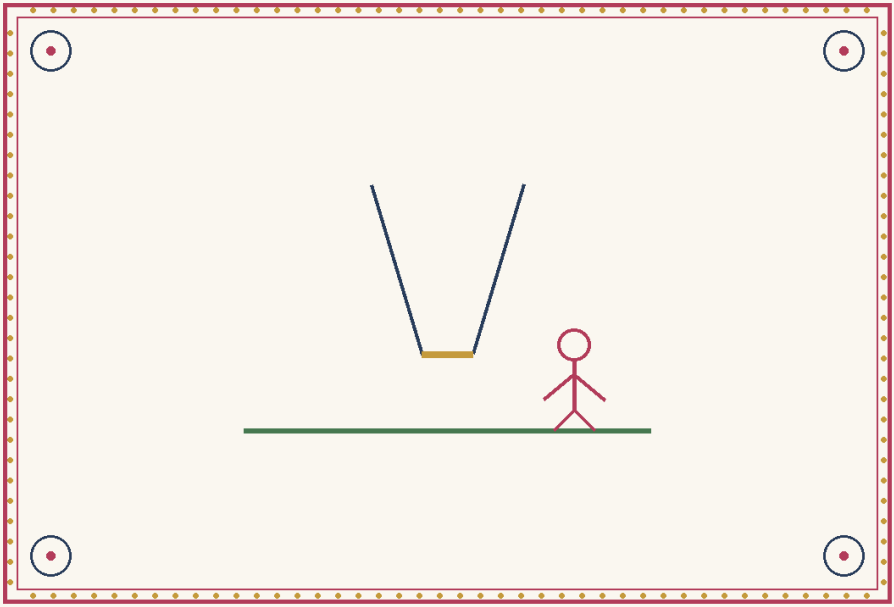

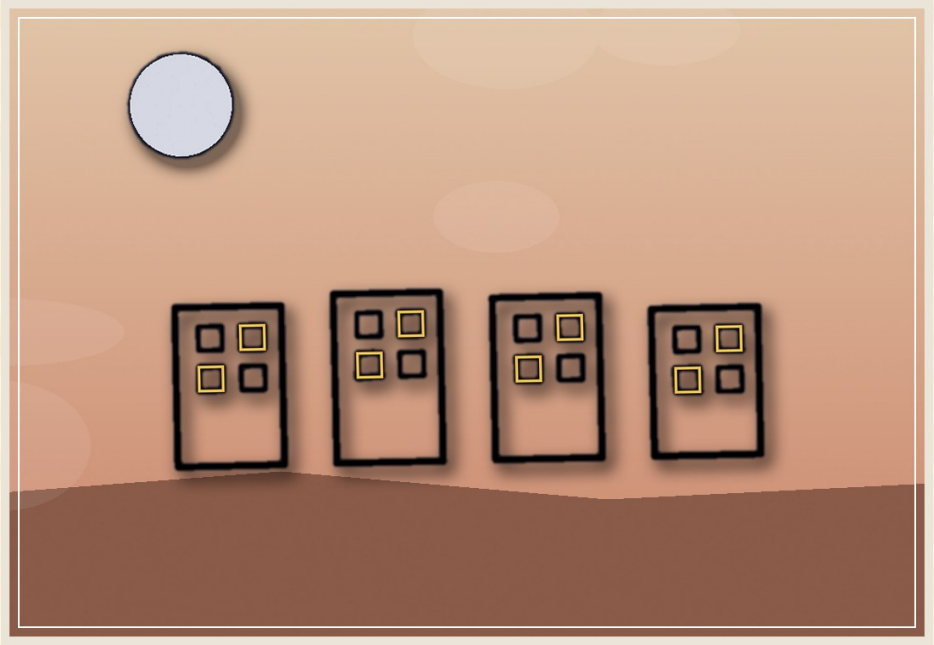

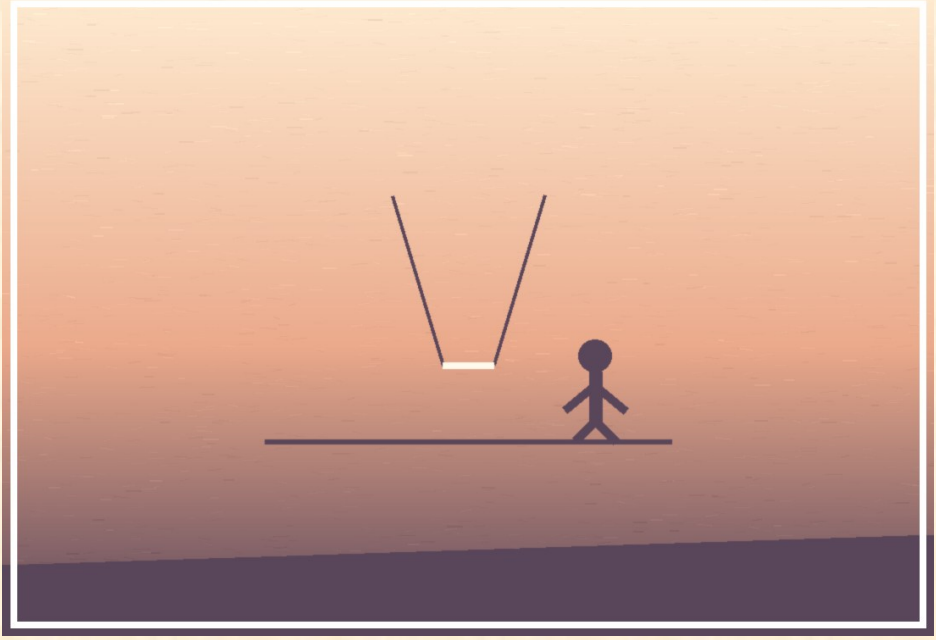

चित्र 3

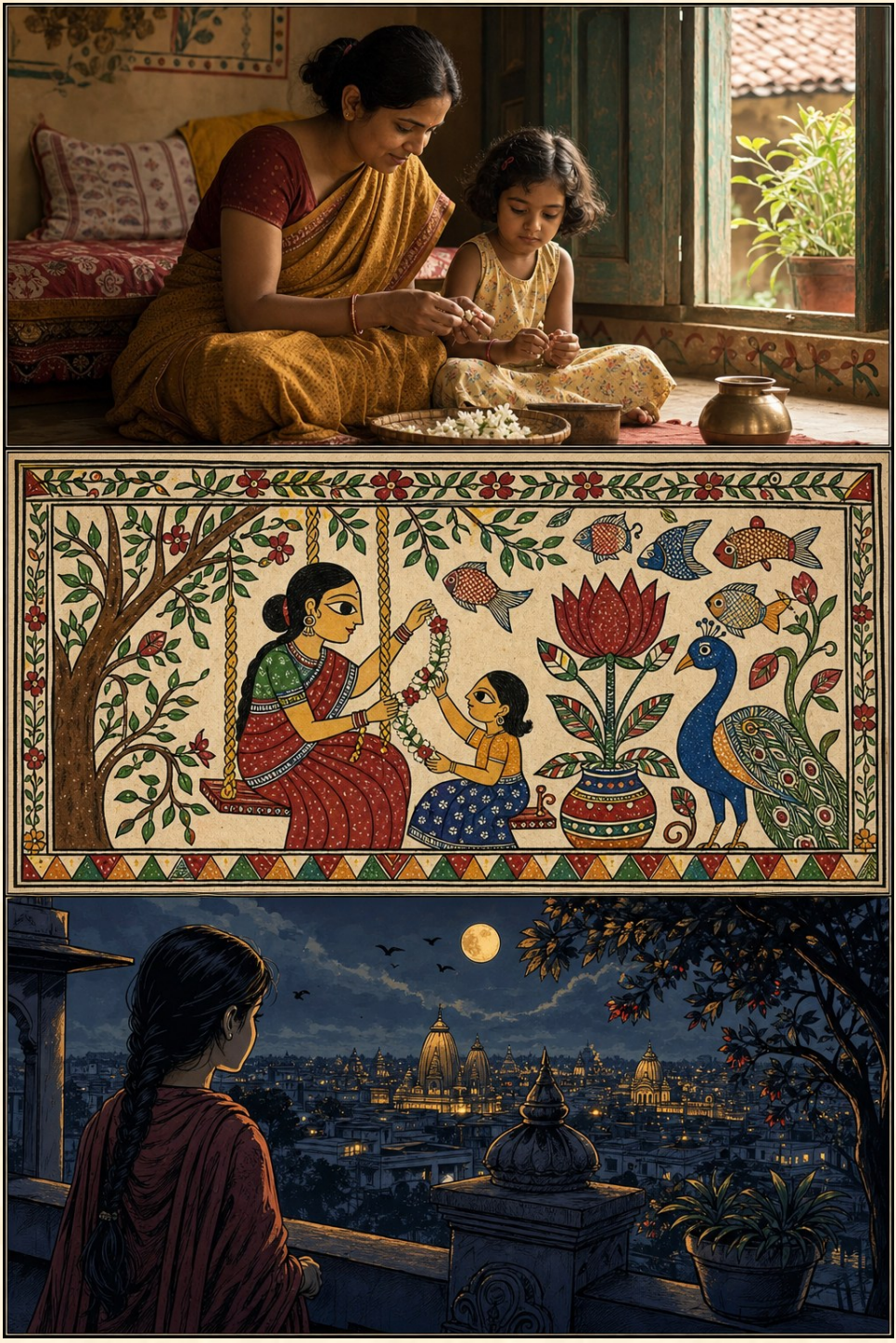

महुआ ओड़ीसासँ आएल छलि — मंशाक घरमे नोकरी करए। उमरि? बेसी नहि। एतबे, जे अपन गाममे रहितए त' अपनहुँ ककरो कोरा-काँख खेलितए। मुदा दिल्लीमे ओ अपने एकटा बच्चीक देख-रेख करैत छलि — मंशाक।

भोरे मंशाकेँ उठाएब, केश बना कऽ दुजुट्टी बान्हब, दूध गरम करब, आ साँझखन घासक पार्कमे लऽ जाएब — ई सभटा महुआक जिम्मा छल। मंशाक माए-पिता नोकरीसँ घुरथि, ताबत मंशाक पूरा दिन महुआक आँचरमे बीतैत छल।

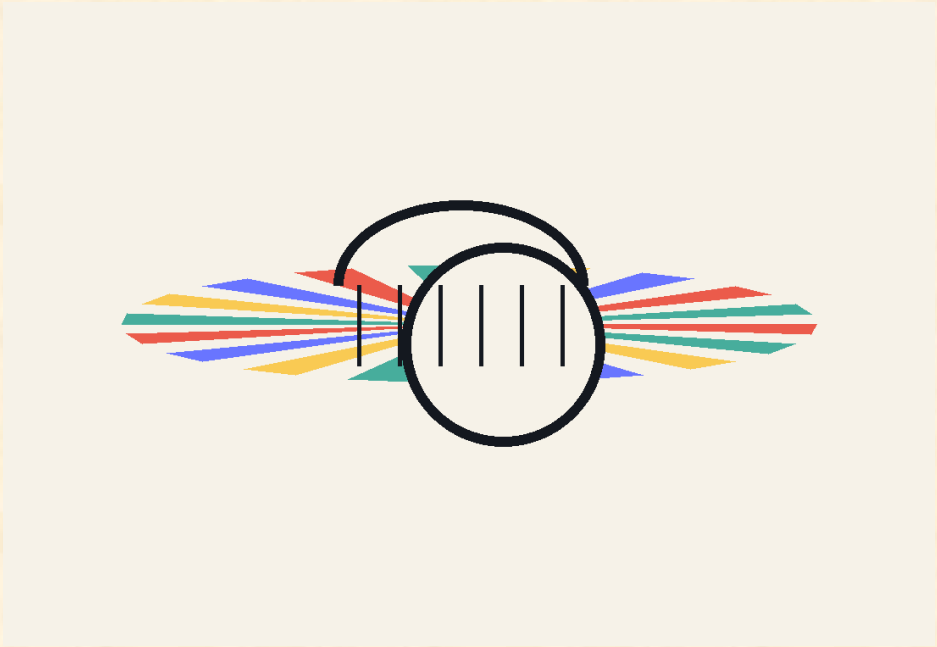

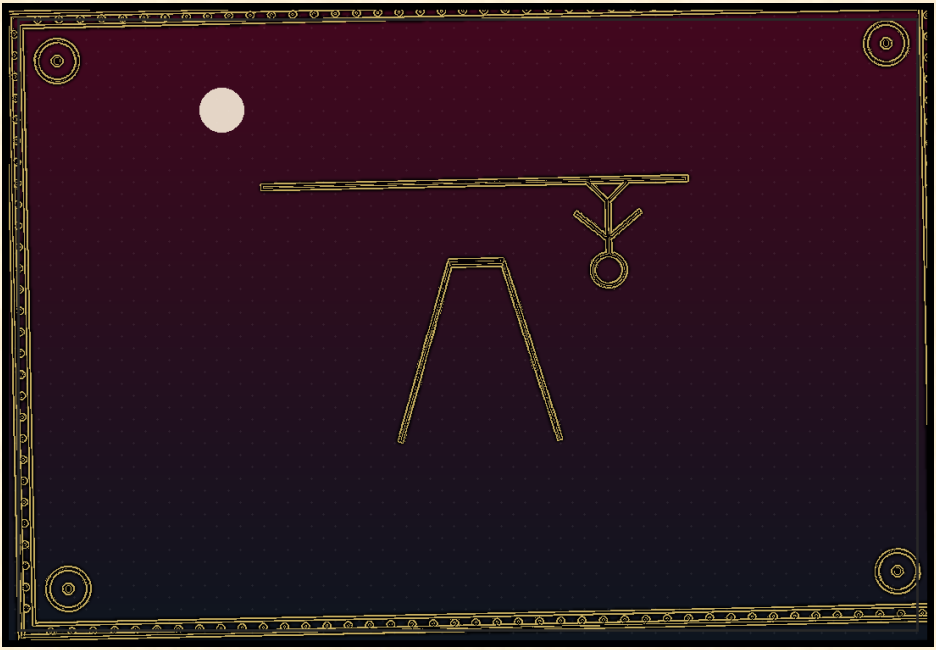

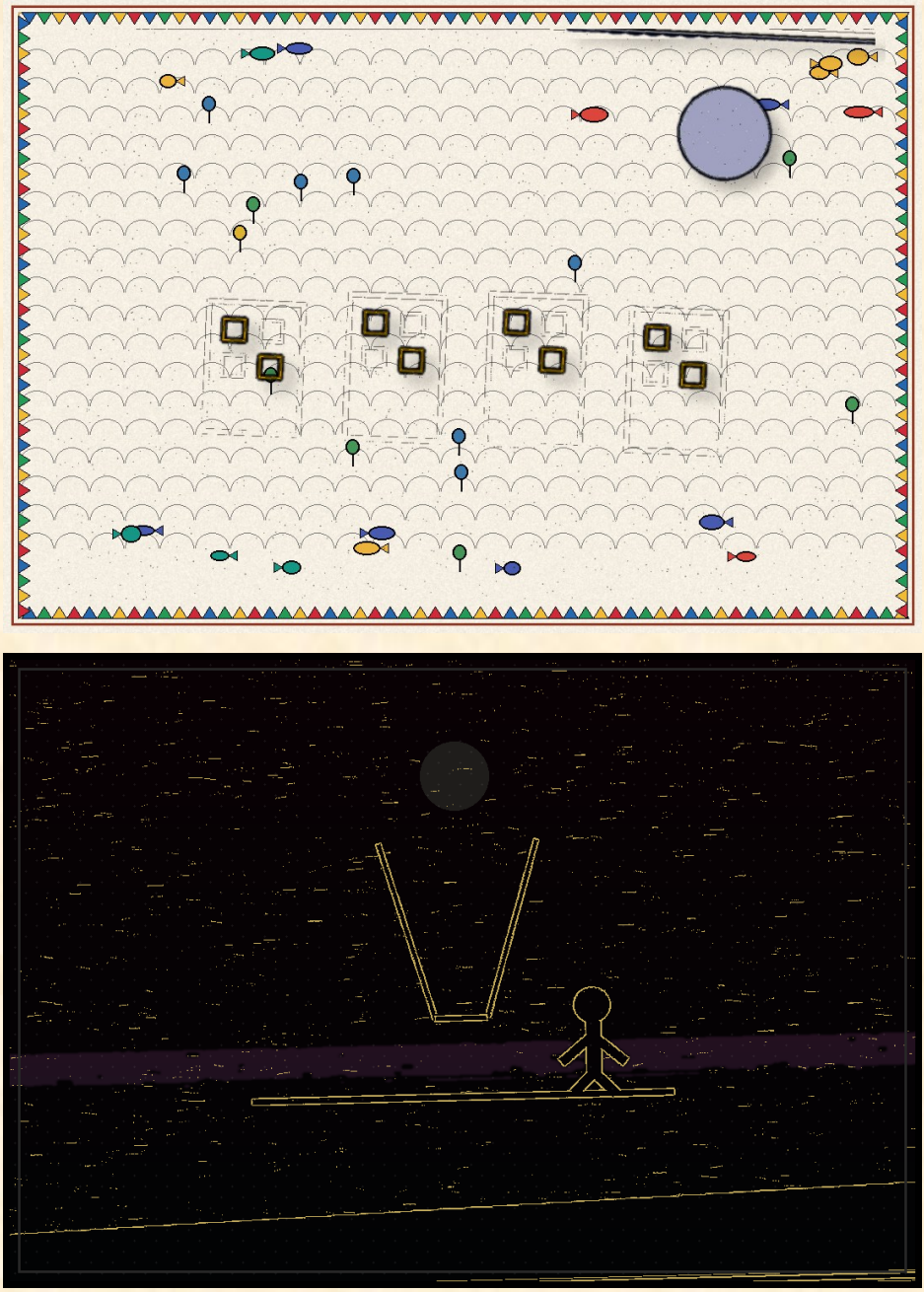

चित्र 4

महुआ कम बजैत छलि। मुदा मंशाकेँ झुला झुलबैत काल ओ कखनो काल ओड़िआमे कोनो गीत गुनगुनाए लगैत छलि — मद्धिम, मीठ, आ कनी उदास। मंशा पुछै, 'ई कोन गीतिया छी, महुआ दीदी?' महुआ हँसि दैत छलि, 'हमर गामक।' आ गीत ओतहि रुकि जाइत छल, जेना गामक नाम लइते गीतक गरा भरि आएल हो।

पार्कक बड़का लोक सभ महुआकेँ 'मंशाबाली आया' कहैत छल। खाली एक गोटे ओकरा नामसँ चिन्हैत छलीह — ओमक माए। ओ कखनो काल महुआकेँ लग बैसा लैत छलीह, 'खा लैह बुच्ची, तोहूँ त' बच्चे छह।' आ महुआक आँखिमे ओहि साँझ ओड़ीसाक कोनो नदी झलकि जाइत छल।

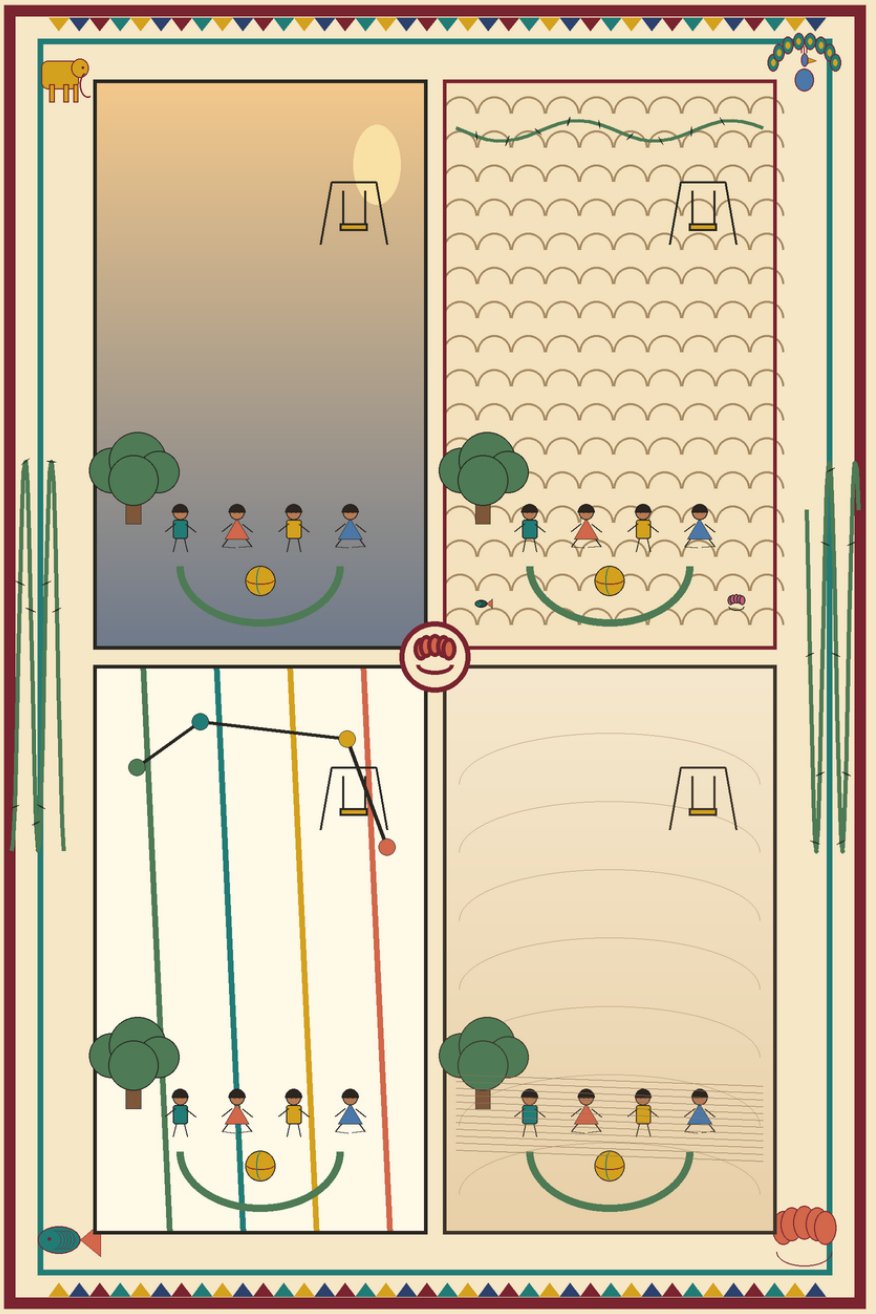

अध्याय ३ : घासक पार्क

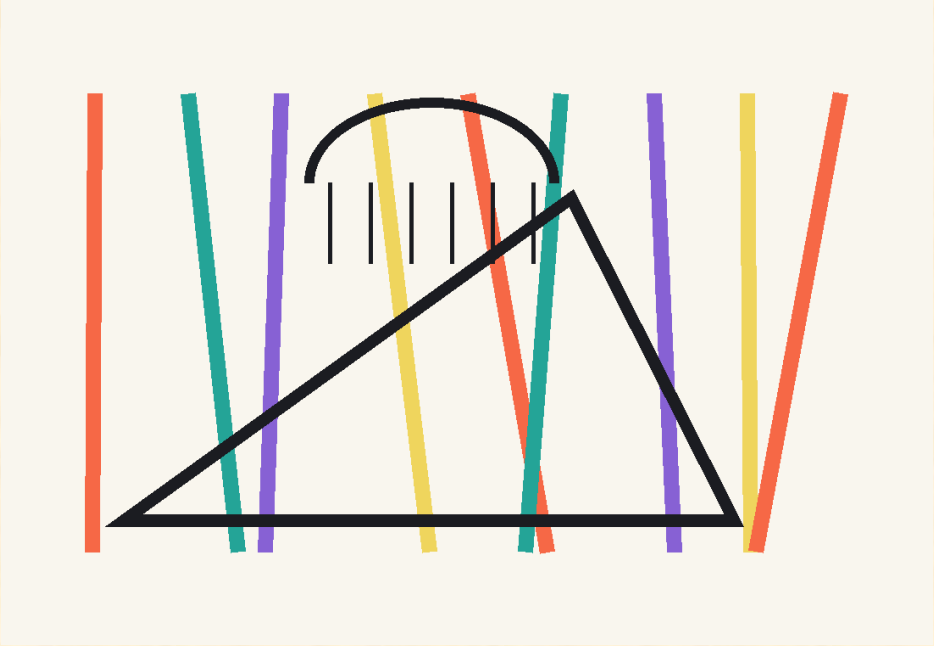

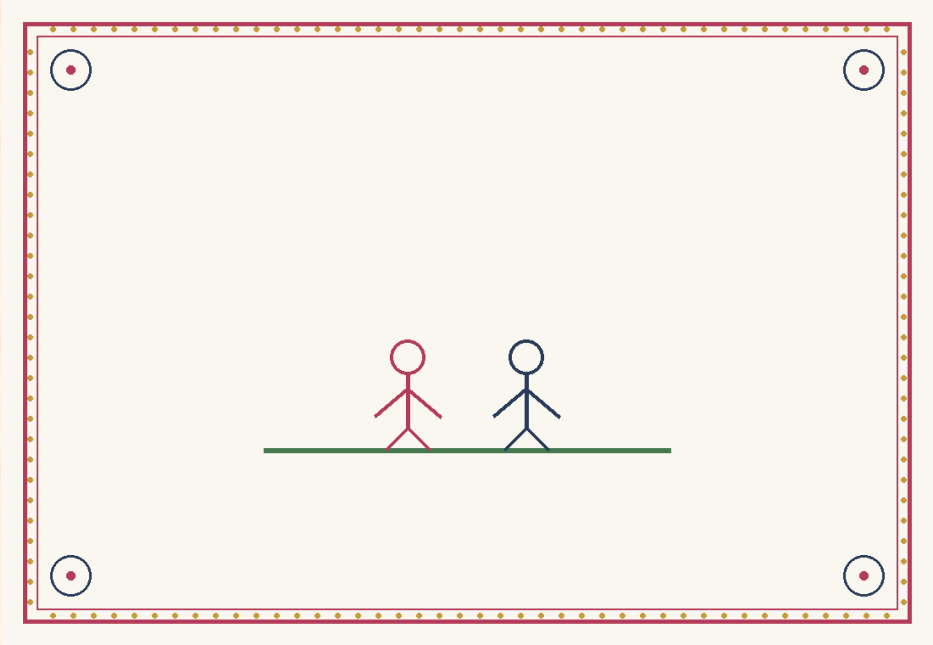

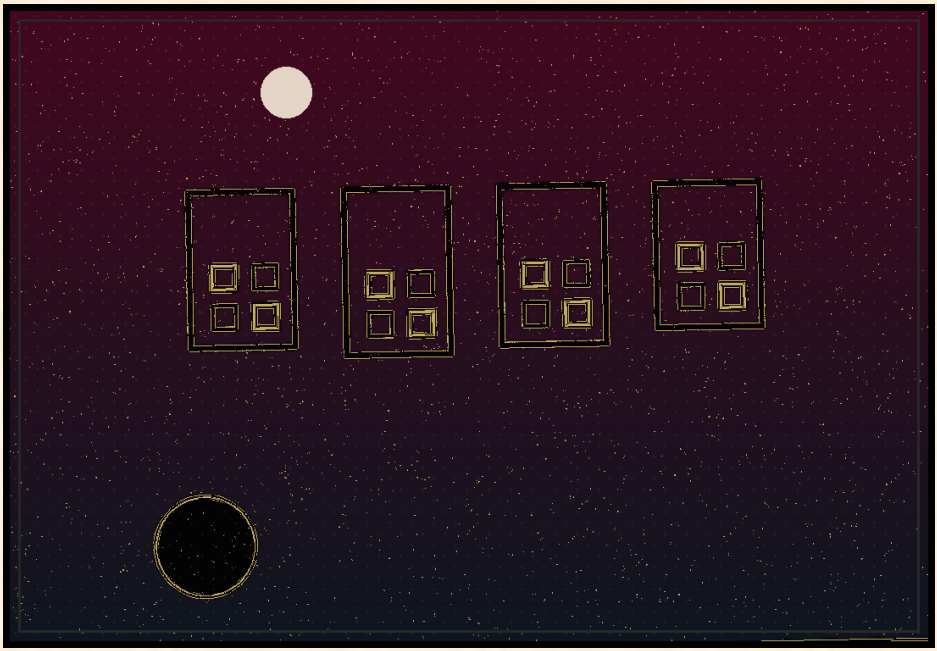

चित्र 5

परिसरक बीचला घासक पार्क — एहि खिस्साक राजधानी। साँझ पड़िते ओतय बच्चा सभक संसद बैसैत छल: केओ साइकिल दौड़बैत, केओ गेन्द, केओ खाली दौड़िते।

ओम ओहि पार्कमे अपन माएक संग अबैत छल, आ मंशा महुआक संग। पहिल भेँट कोना भेल — से ठीक-ठीक ककरो मोन नहि; चारि बरखक दोस्तीक यएह त' सुन्नरता छै, ओकर कोनो तारीख नहि होइ छै। बस एतबा सभ देखलक जे एक साँझ दुनू संगे झुलापर छल, आ तकर बाद सभ साँझ।

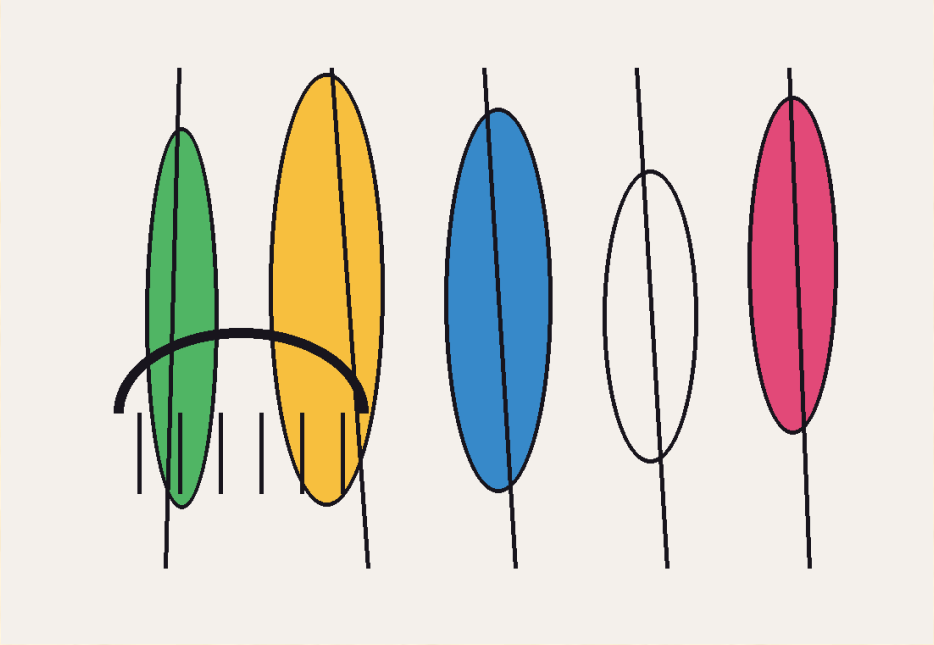

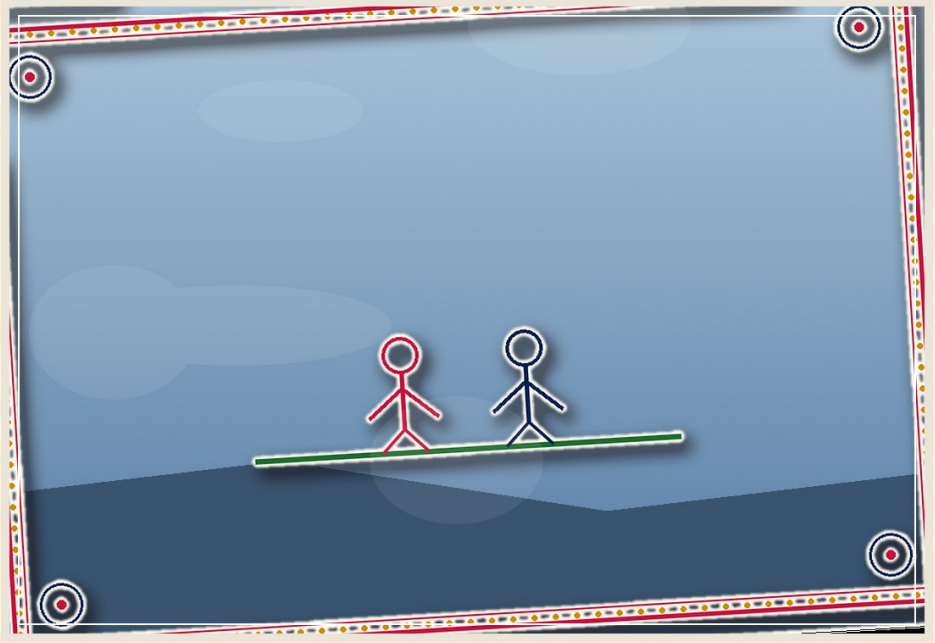

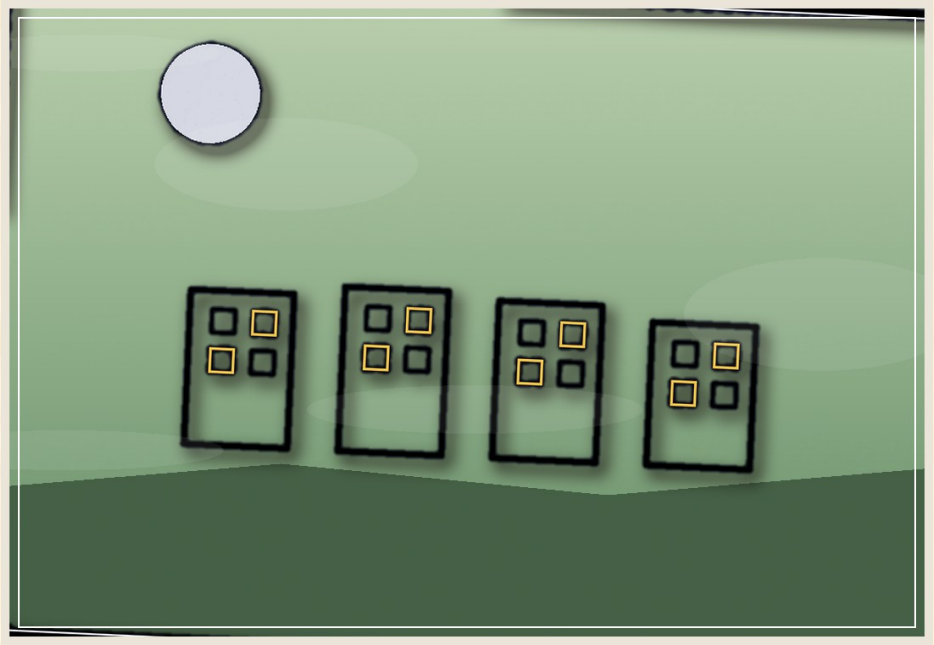

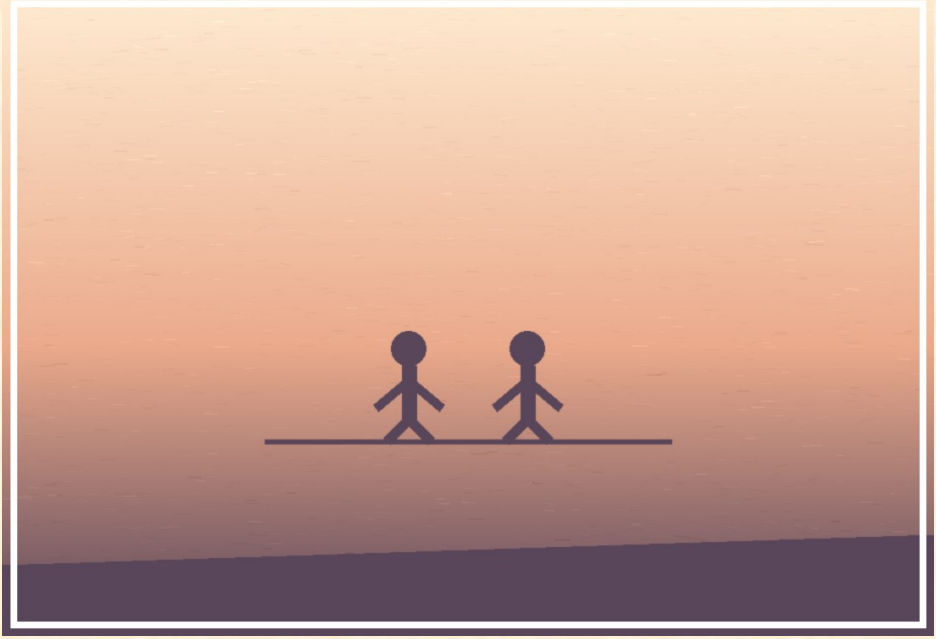

चित्र 6

ओम शान्त छल — कम बाजए, बेसी सुनए। मंशा ठीक उनटा — बातक फुलझड़ी, तामसमे आगि। ओम कोनो चीज बनबैत छल त' मंशा ओकर रखबारि करैत छलि; मंशा कतहु अड़ि जाइत छलि त' ओम चुपचाप ओकर हाथ पकड़ि लैत छल। दुनूक जोड़ी देखि पार्कक दादी-नानी सभ हँसैत छलीह।

मिथिलाक बच्चा, पंजाबक बुच्ची, ओड़ीसाक महुआ, आ दिल्लीक घास — साँझक ओहि छोट पार्कमे पूरा देश खेलाइत छल, आ ककरो बुझले नहि छलै।

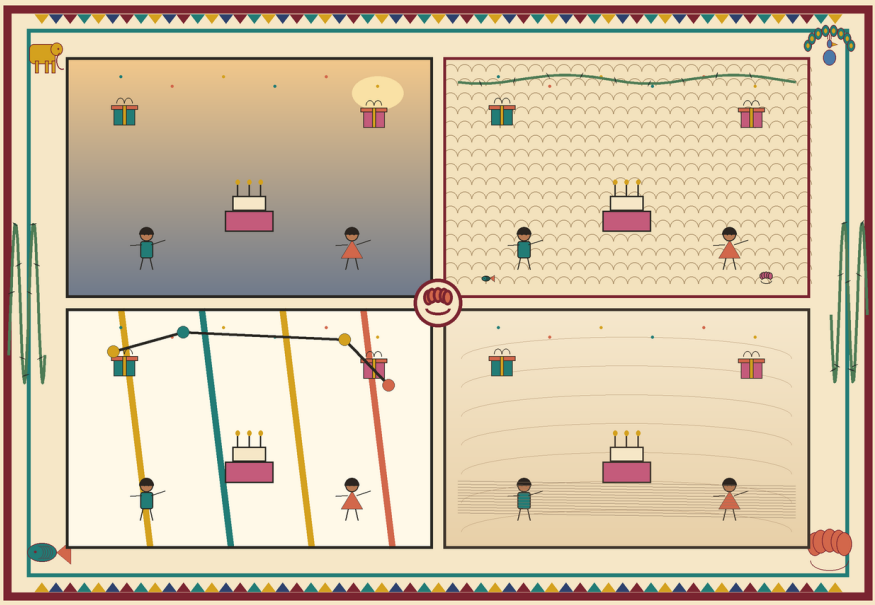

अध्याय ४ : जन्मदिनक रीति

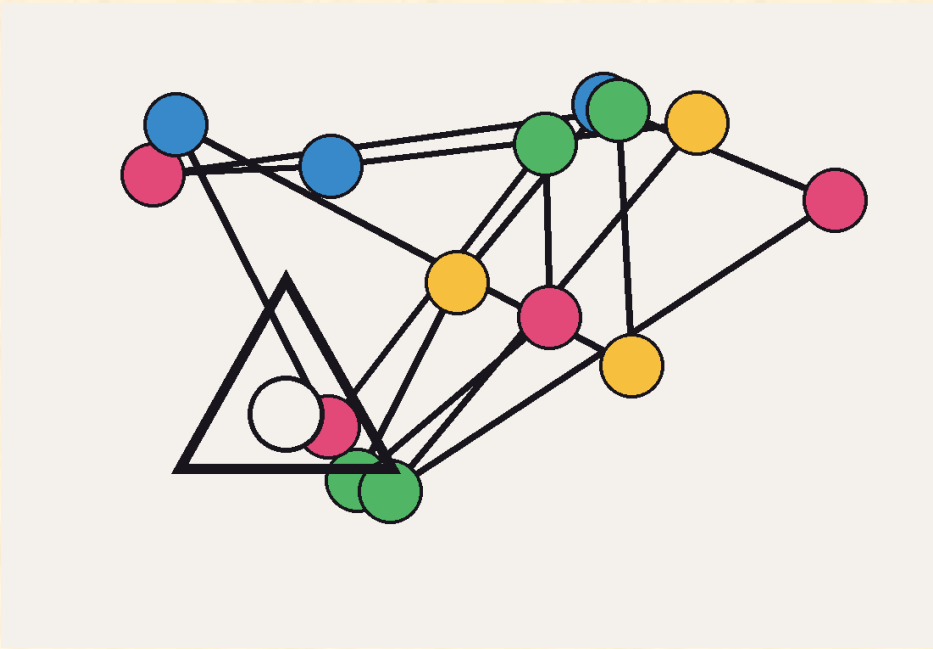

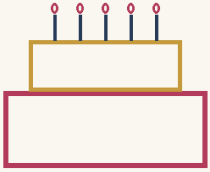

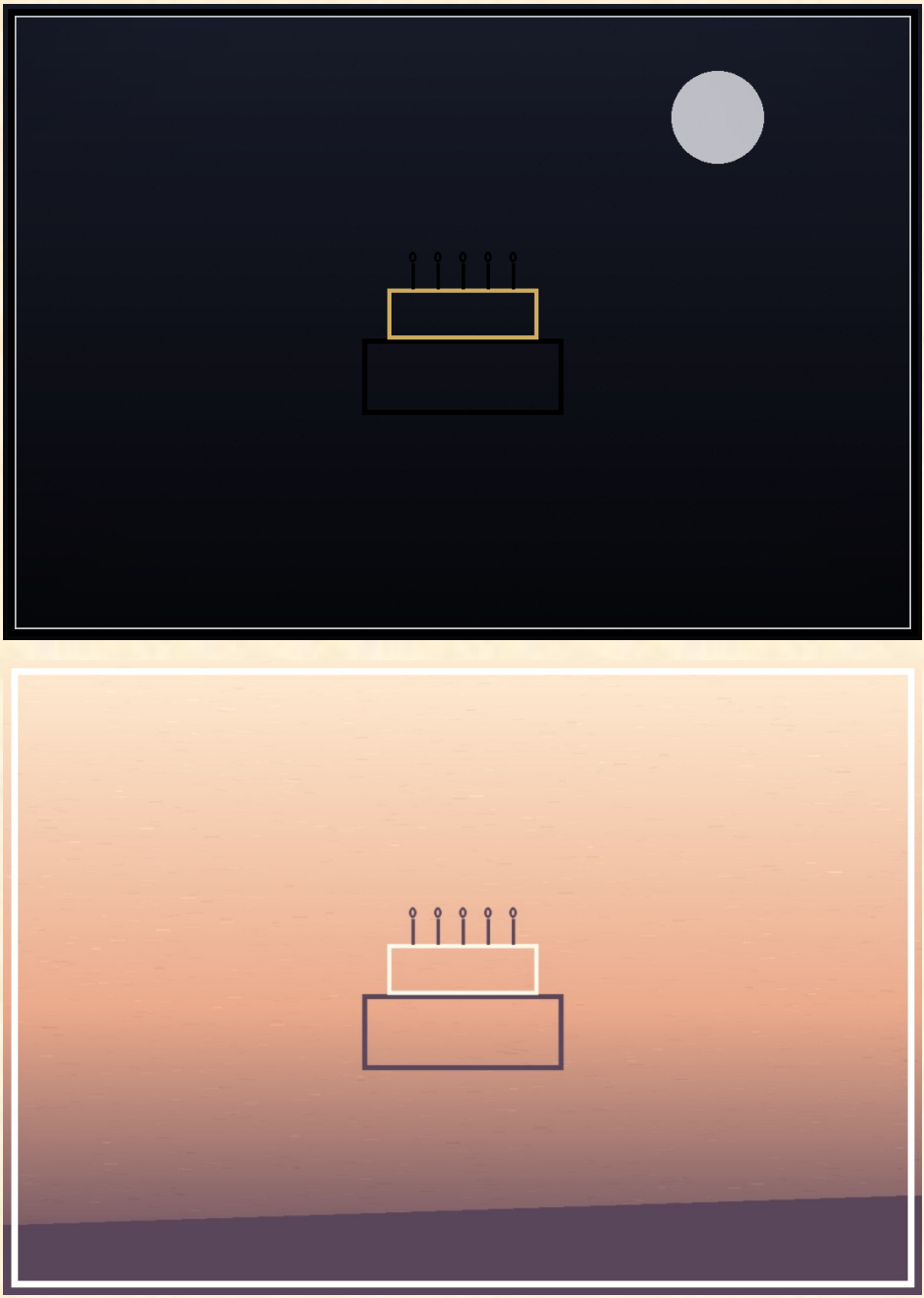

चित्र 7

ओमक जन्मदिन माने मंशाक सेहो पावनि। ओमक माए भोरेसँ तैयारी करथि — आ एकटा काज कहियो नहि बिसरथि: मंशा लेल अलगसँ उपहार कीनि कऽ राखब। 'बेटी बिनु उपहारक घुरत?' — ओ कहथि।

आ ओम्हर महुआ मंशाकेँ नहा-सोना कऽ, नव फ्रॉक पहिरा कऽ, समयसँ पहिने ओमक दरबज्जापर पहुँचा दैत छलि। घण्टी बजैत, दरबज्जा खुजैत, आ मंशा 'हैप्पी बर्थडे ओम!' चिचियाइत भीतर दौड़ि जाइत छलि — जेना ओ अतिथि नहि, घरक बेटी हो।

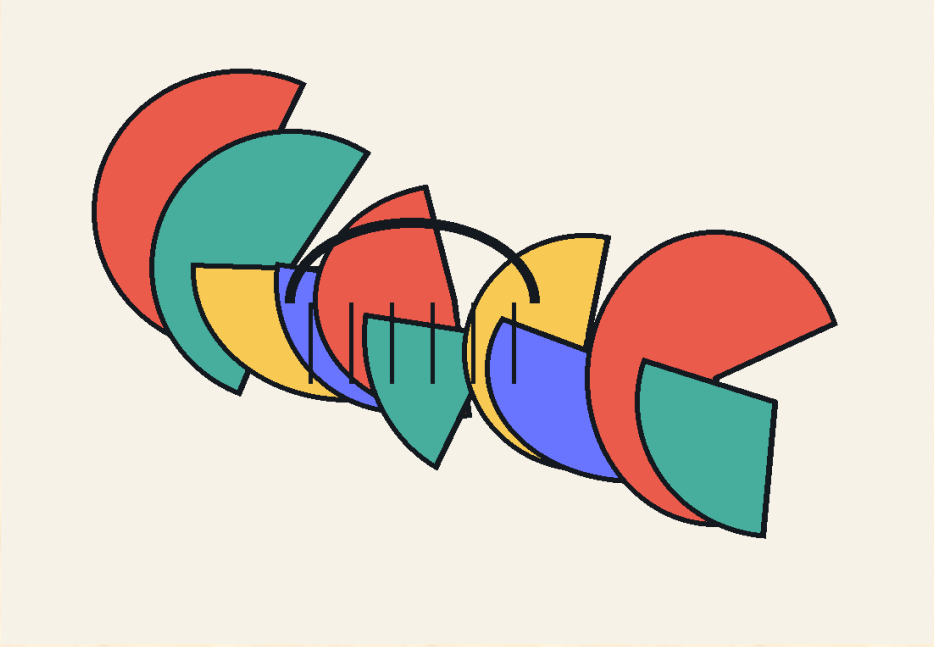

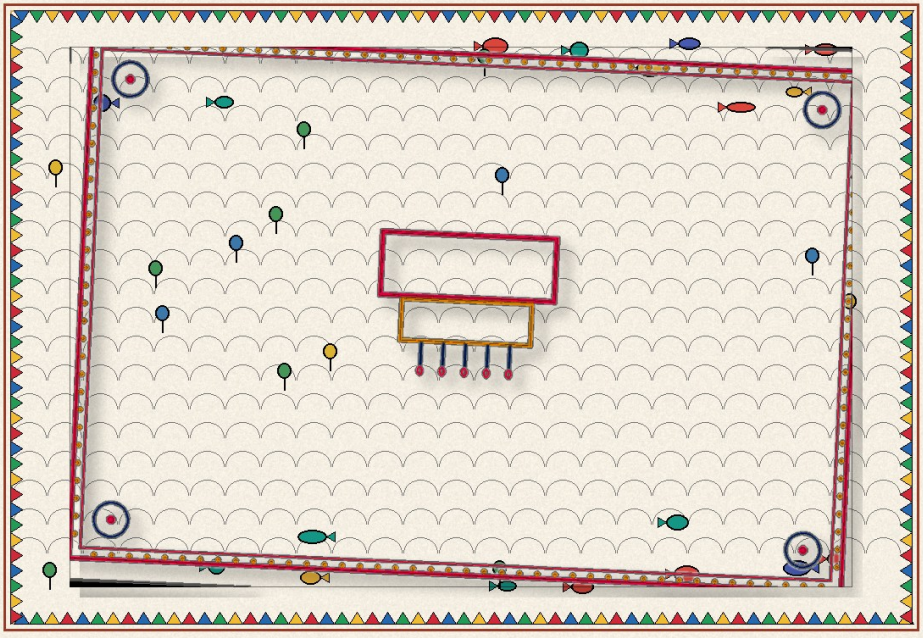

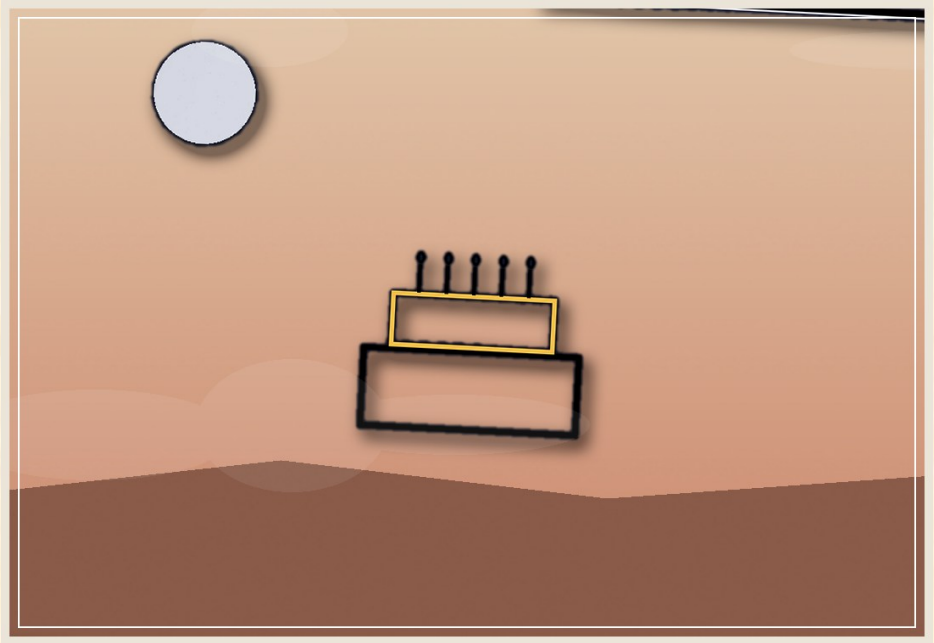

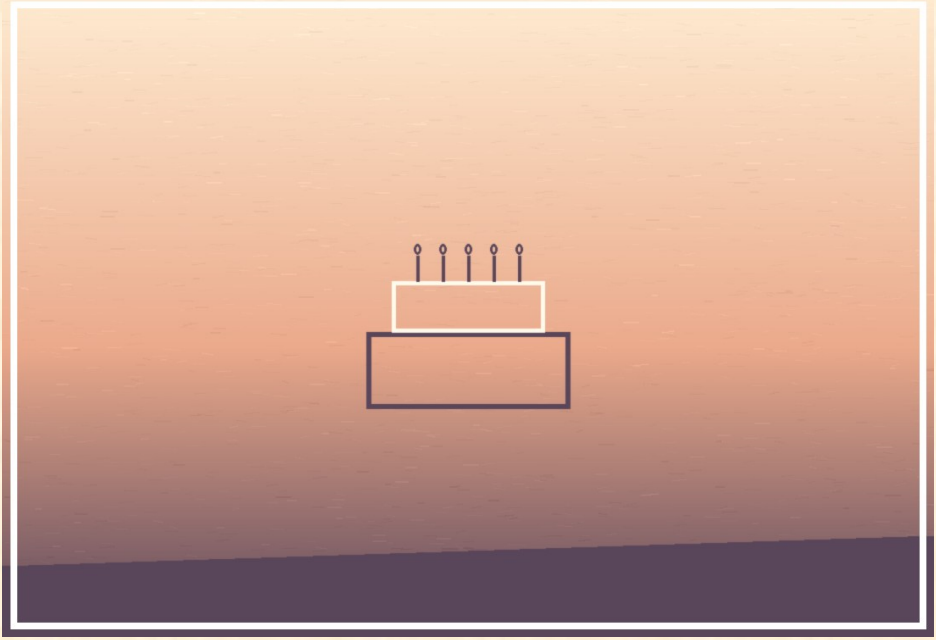

चित्र 8

केक कटैत, ताली बजैत, आ फेर दुनू बच्चा कोनमे बैसि कऽ अपन-अपन हिस्साक केक एक-दोसराकेँ खुअबैत छल। ओमक माए ई दृश्य देखि सभ बेर वैह बात सोचथि — दोस्ती सिखाओल नहि जाइत छै, ई अपने जनमैत छै।

एहि बरख दुनूक चारिम बरख पूरल छल आ पाँचम चढ़ल। चारि बरख — माने पूरा जिनगीक दोस्ती, जँ जिनगी चारिये बरखक हो। आ ठीक एही पाँचम बरखमे खिस्सामे ओ मोड़ आएल, जकरा लेल ई खिस्सा लिखल गेल।

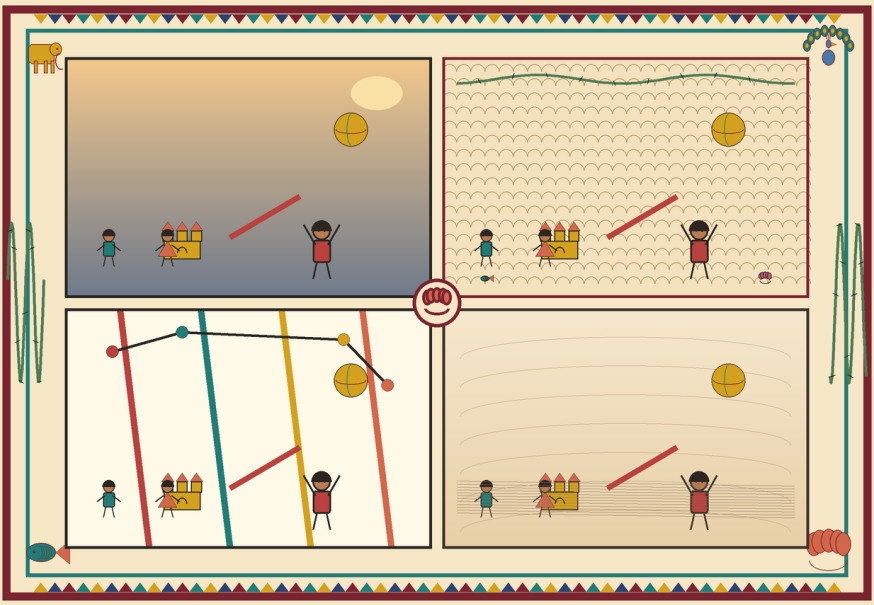

अध्याय ५ : नव बच्चा

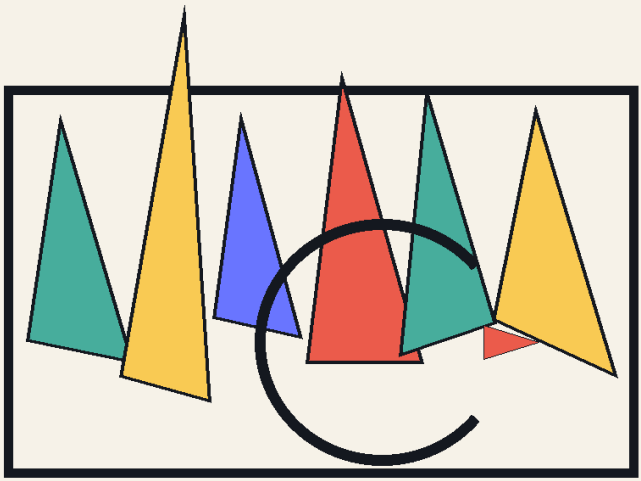

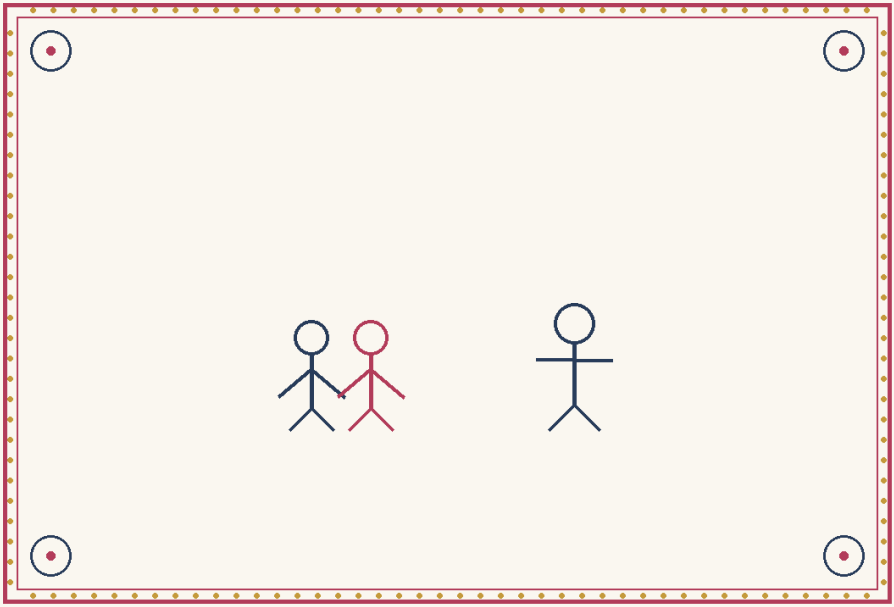

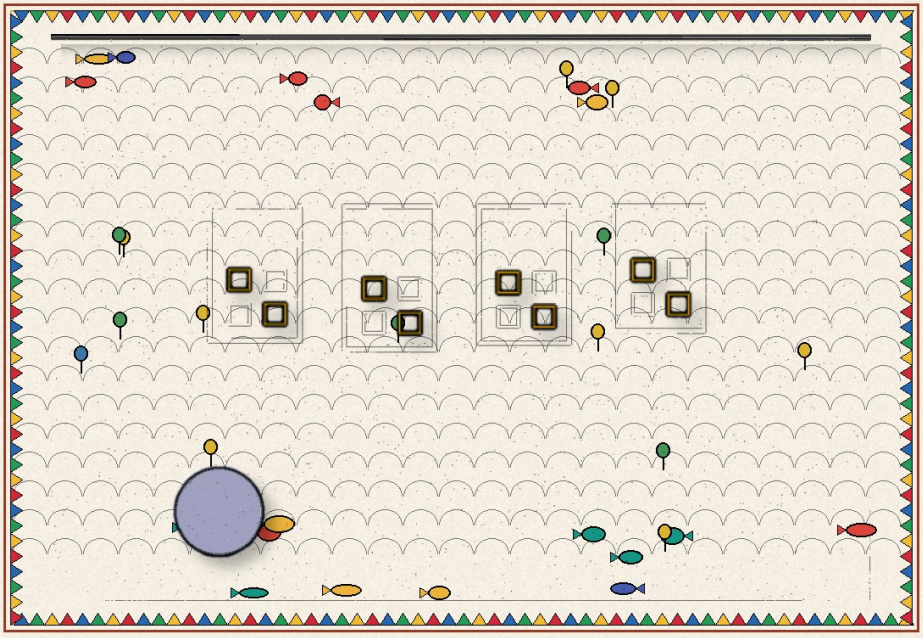

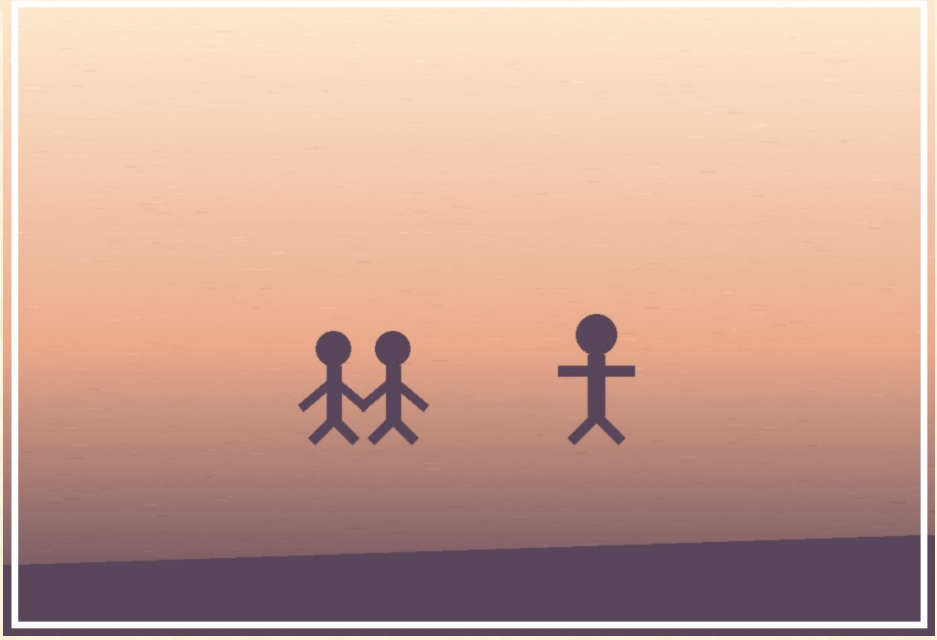

चित्र 9

ओहि मासमे परिसरमे एकटा नव परिवार आएल, आ संगमे आएल एकटा नव बच्चा — सुसेन। उमेरमे ओम-मंशासँ कनिये पैघ, देहमे मजगूत, आ जीहमे काँट।

पहिले दिनसँ सुसेनक खेल अलग छल। ओ खेलाइत कम छल, खेल बिगाड़ैत बेसी। ककरो साइकिलक घण्टी टुनटुना कऽ पड़ा जाए, ककरो बालूक घर पएरसँ मेटा दिअए, ककरो नाम बिगाड़ि कऽ बजाबए। पार्कक हवा, जे आइ धरि हल्लुक छल, कनी भरिगर भऽ गेल।

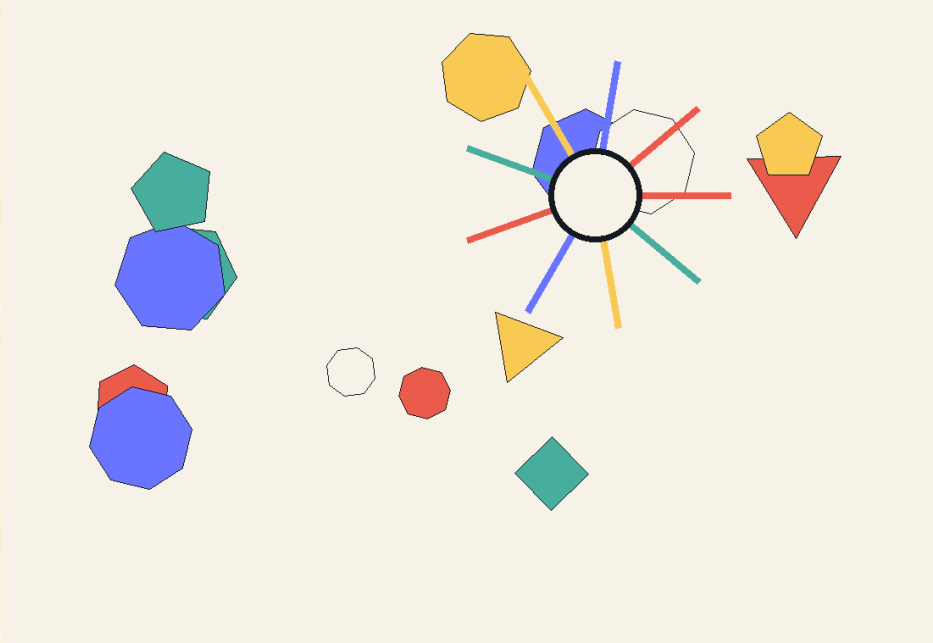

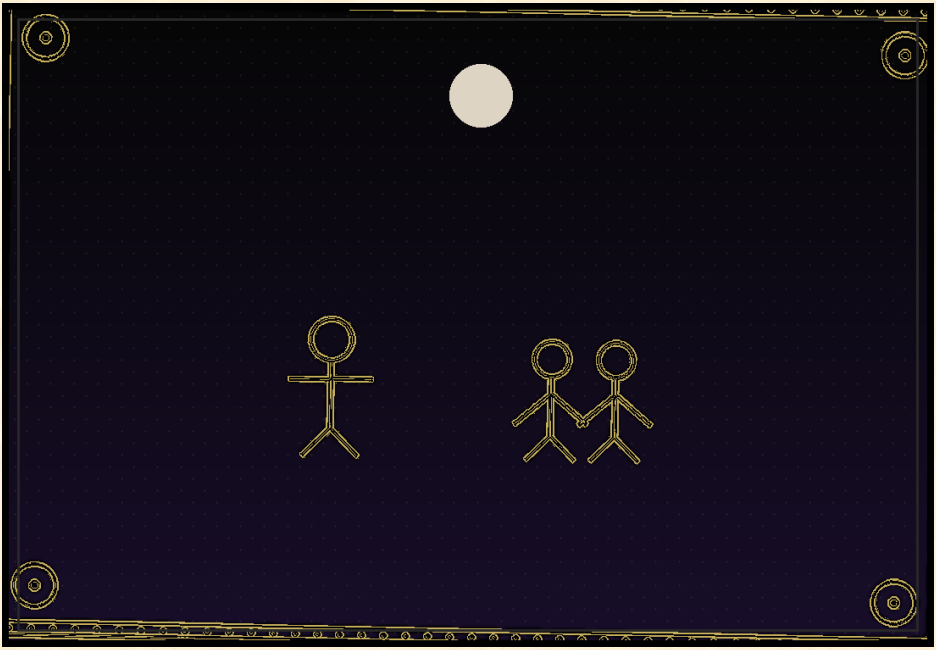

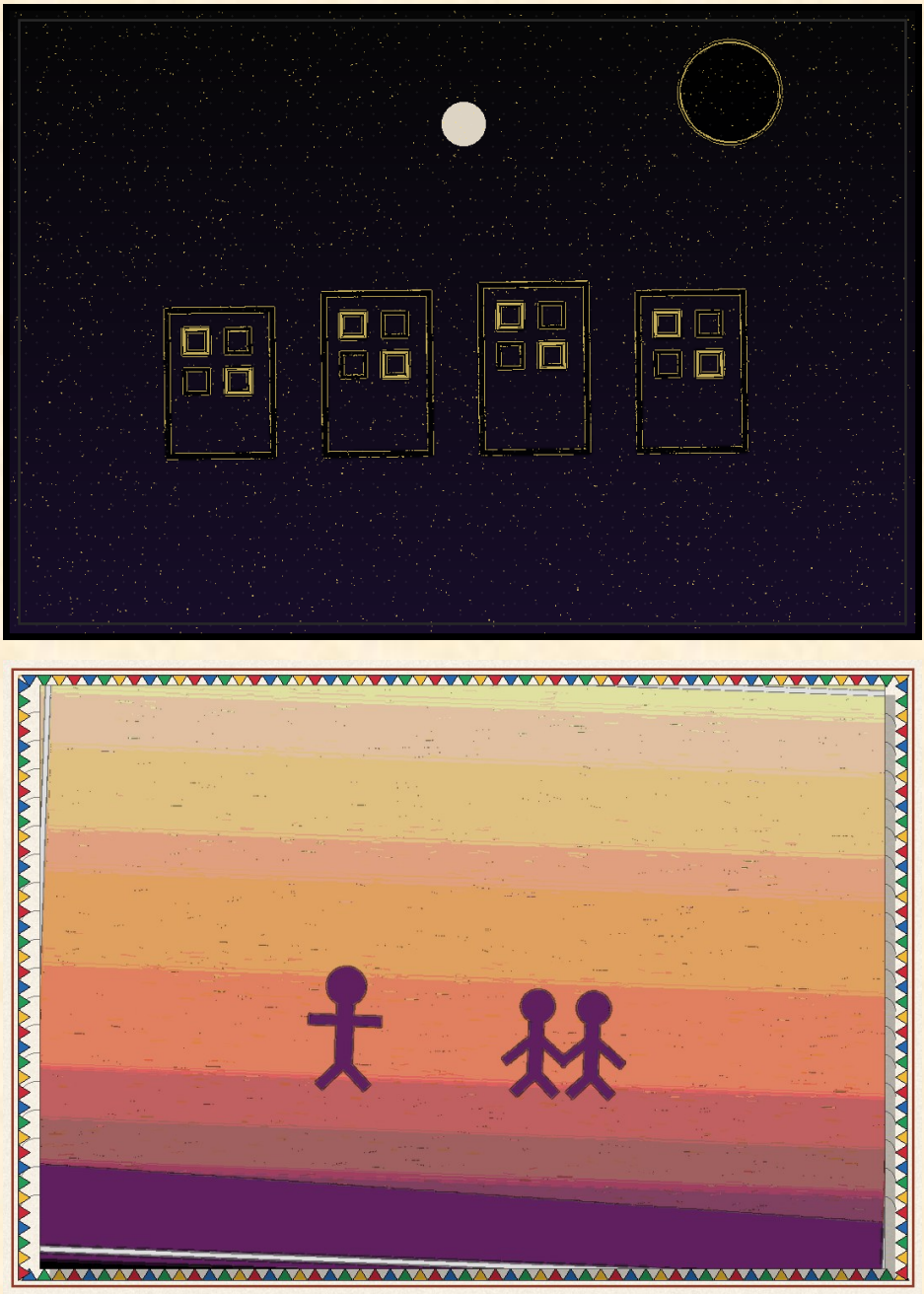

चित्र 10

बड़का लोक सभ कहलक, 'नव अछि, आस्ते-आस्ते सीखि जाएत।' मुदा बच्चा सभक संसदमे खुसुर-फुसुर शुरू भऽ गेल — 'सुसेनसँ दूरे रहह।' केओ ओकरा जबाब नहि दैत छल, कारण जबाब दिअए त' के?

आ जेना सदिखन होइत अछि — बदमाश सभसँ पहिने ओकरे ताकैत अछि जे सभसँ शान्त हो। सुसेनक आँखि पार्कक सभसँ चुप बच्चापर गड़ल — ओमपर। आ ओमक ढाल बनि कऽ जे सोझाँ आएल, से छलि दुजुट्टीबाली मंशा।

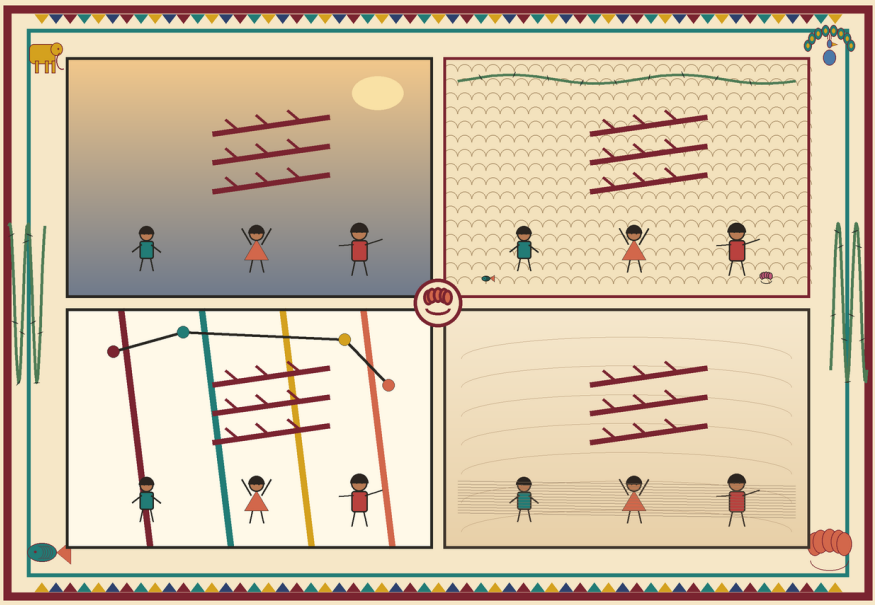

अध्याय ६ : काँटबला शब्द

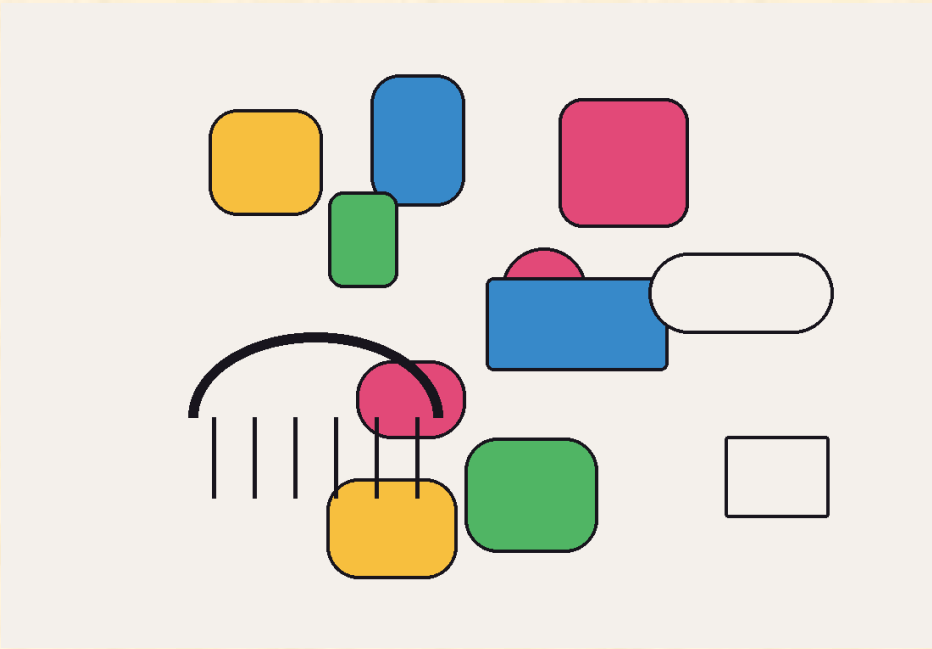

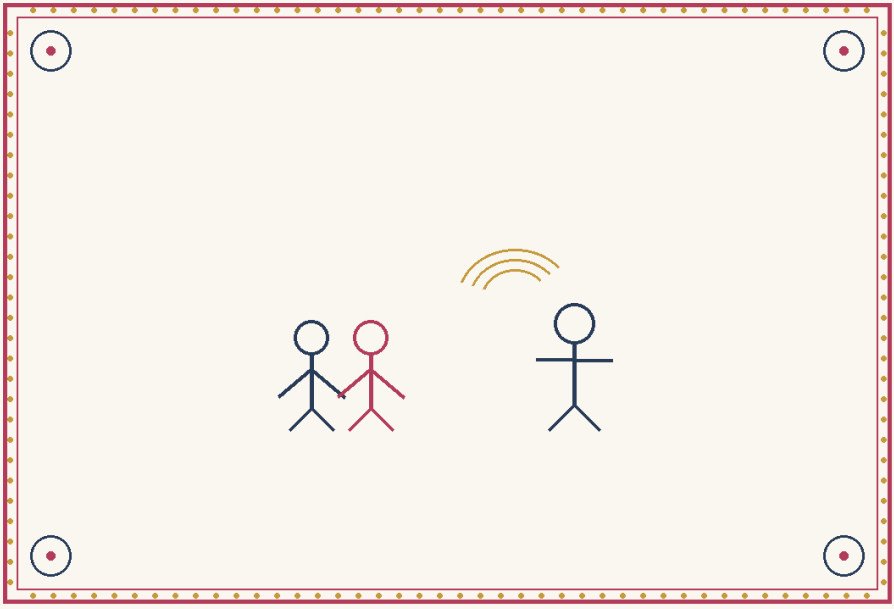

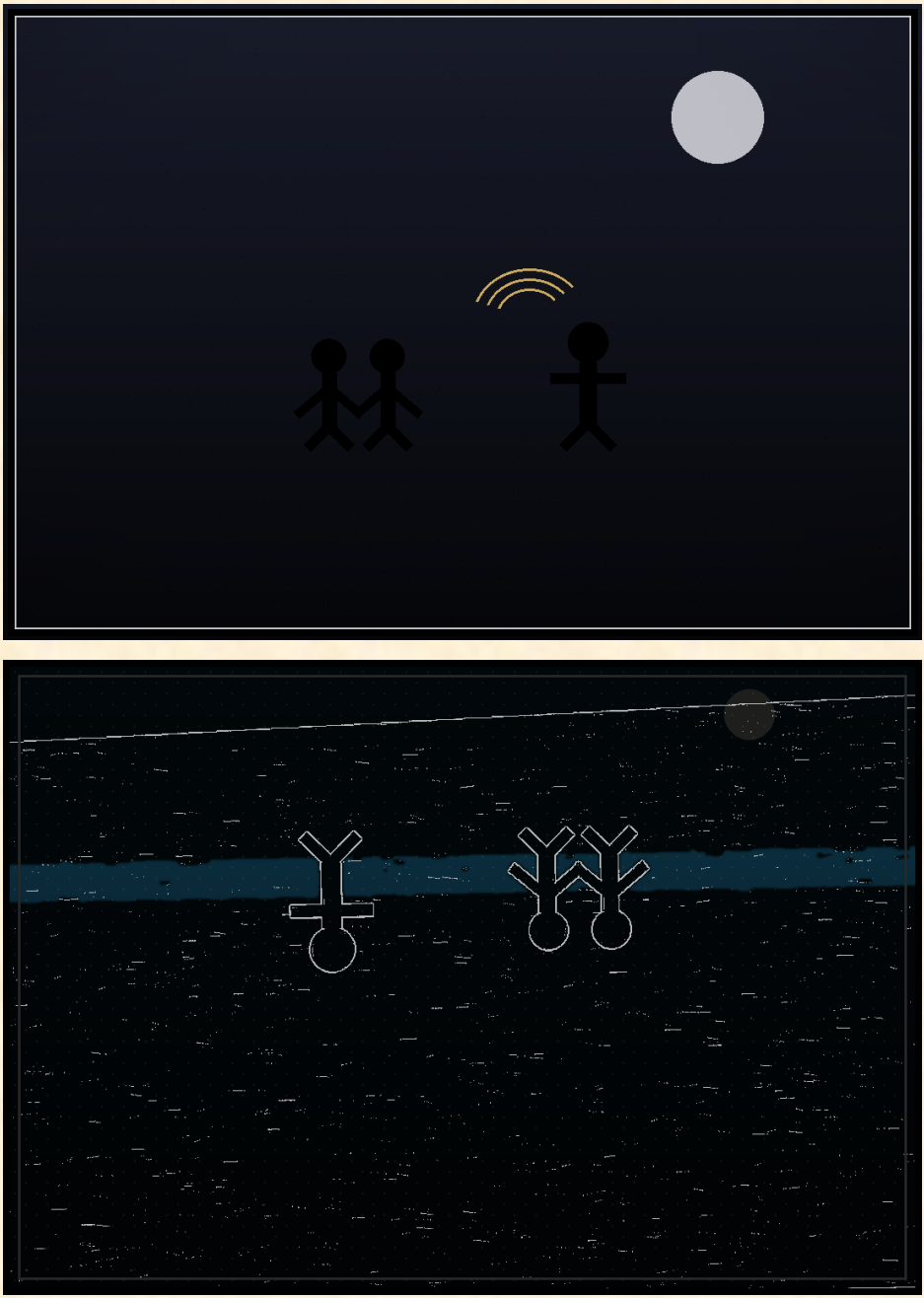

चित्र 11

शुरुआत छोट-छोट काँटसँ भेल। 'गै मंशा, दुजुट्टी किए बन्हने छेँ?' मंशा तड़कि कऽ उत्तर देलक, 'तोरा की?' — आ आगाँ बढ़ि गेलि।

दोसर साँझ फेर — 'गै मंशा, मुँह किए फुलेने छेँ?' 'मुँह किए फुलेने रहब?' — मंशाक स्वरमे आब चिड़चिड़ी छल। महुआ दूरसँ देखैत छलि; ओकर हाथमे झुलाक रस्सी कनी कसा गेल।

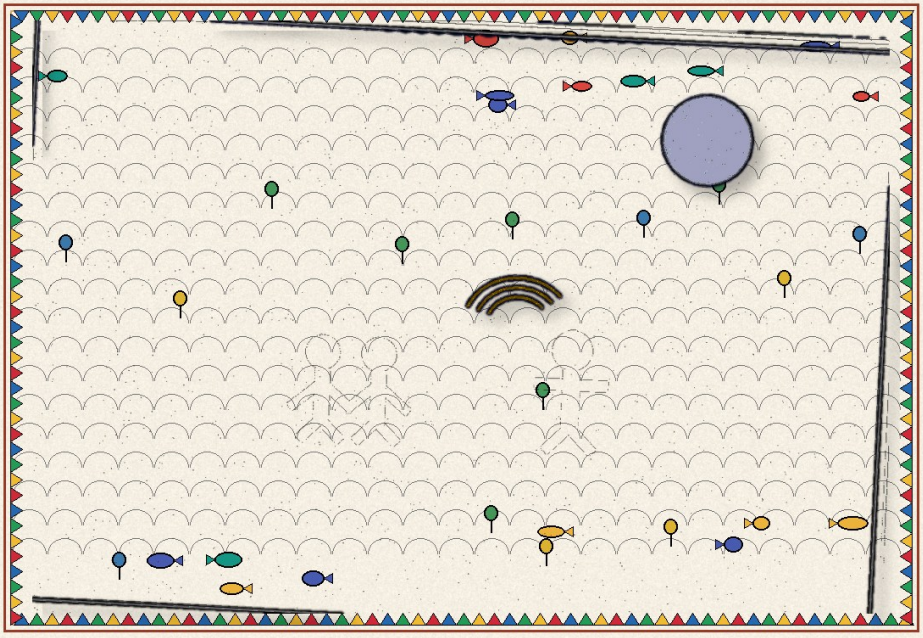

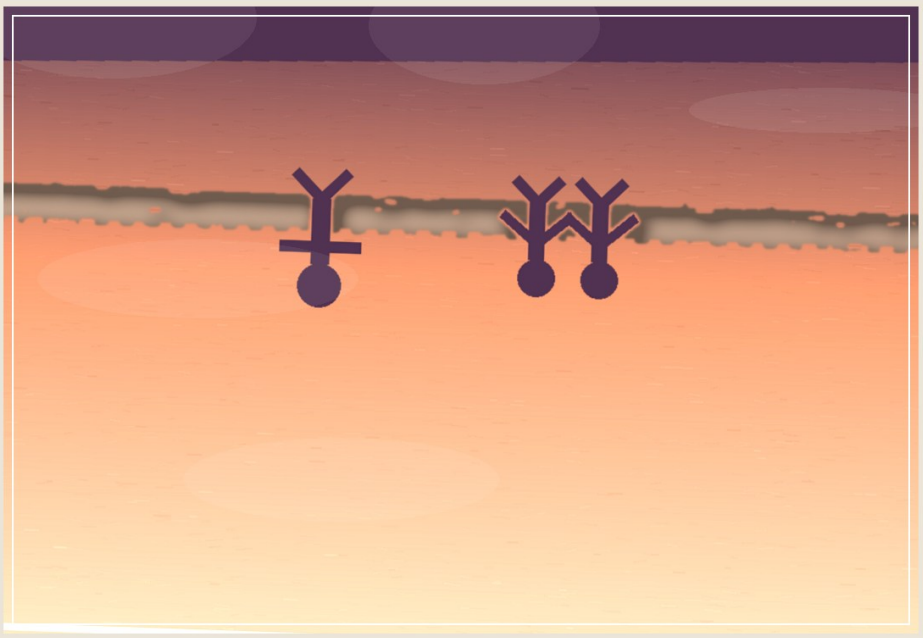

चित्र 12

सुसेनकेँ बुझा गेल छलै जे मंशा जबाब दैत अछि — आ जे जबाब दैत अछि, तकरा किचकिचेबामे मजा अबैत छै। मुदा ओकरा ईहो बुझा गेल छलै जे मंशाक सभसँ नरम ठाम कतय अछि। तेँ तेसर दिन ओ तीर सोझे ओही ठाम चलौलक।

'मंशा गै, तोहर दोस ओम किए एहन गन्दा छौ?' — गन्दा। एक्कहि शब्द। ओम ओतहि ठाढ़ छल, हाथमे बालूक खेलौना नेने। ओ किछु नहि बाजल। ओकर आँखि एक बेर अपन कपड़ा दिस गेल, फेर सुसेन दिस, फेर जमीन दिस। आ मंशाक भीतर, ओही क्षण, बारूदमे चिनगी पड़ि गेल।

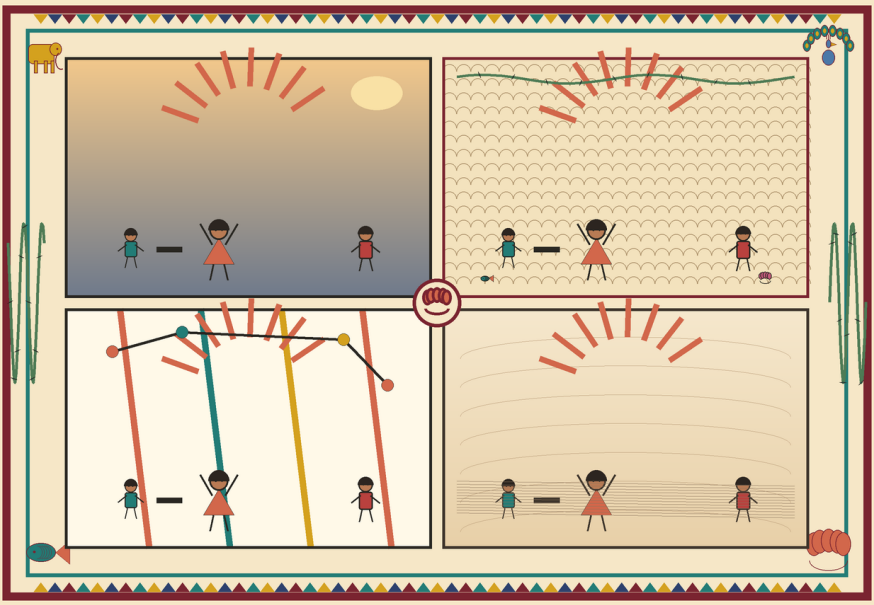

अध्याय ७ : मंशाक गर्जन

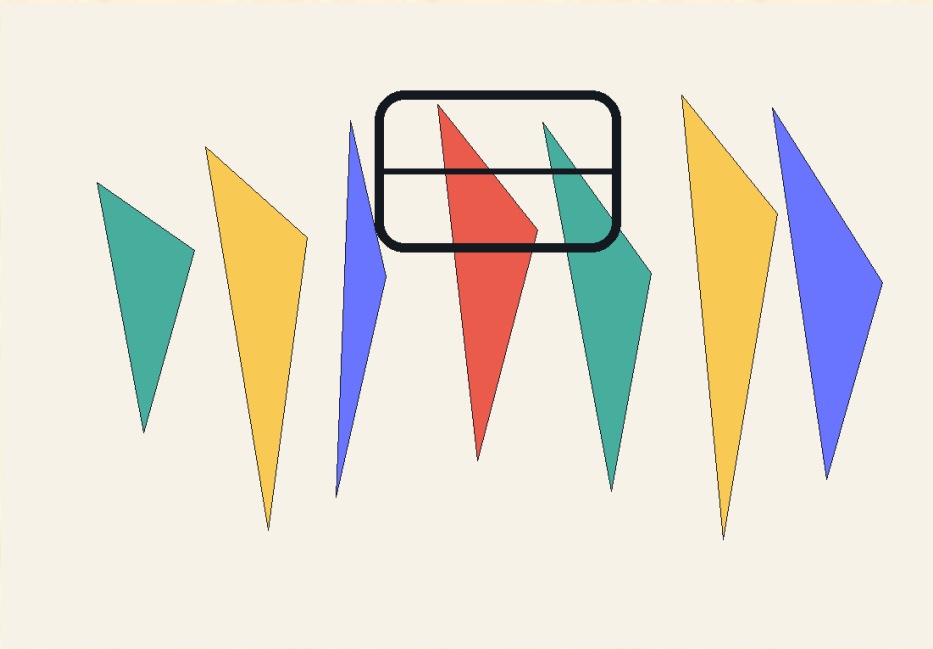

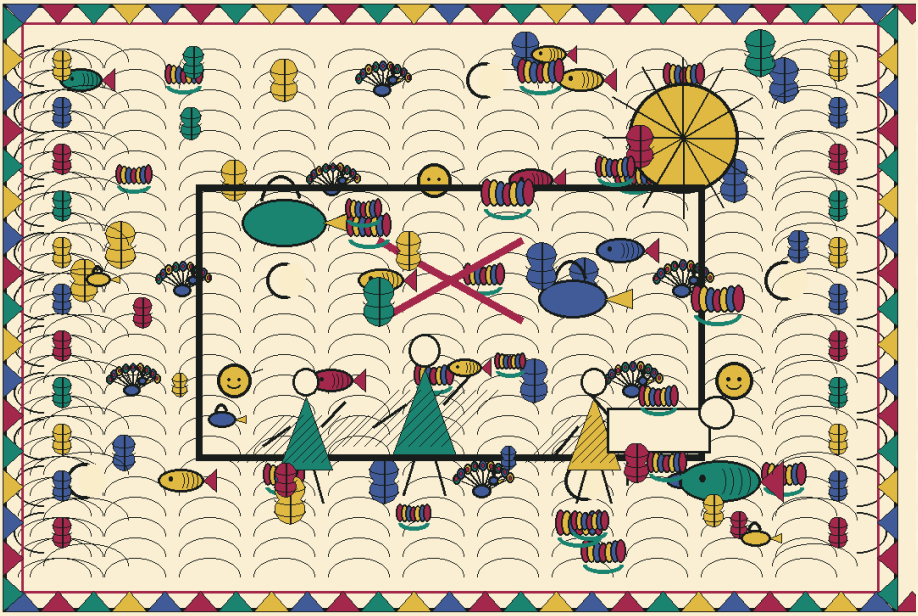

चित्र 13

आब त' मंशाकेँ ततेक तामस भेलै जकर कहब नहि। मुँह लाल, दुजुट्टी तनल, आ स्वर एतेक ऊँच जे झुला सभ रुकि गेल, गेन्द सभ थम्हि गेल, पूरा पार्क कान बनि गेल।

'ओम हमर दोस छी! जे एकरा गन्दा कहैए, से अपने गन्दा अछि!'

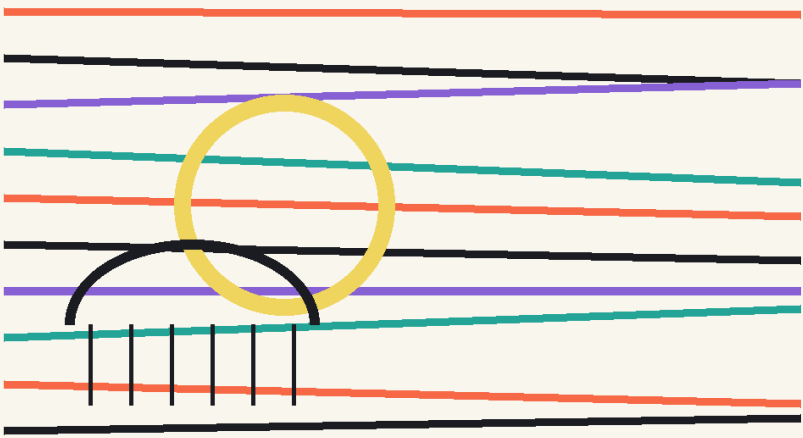

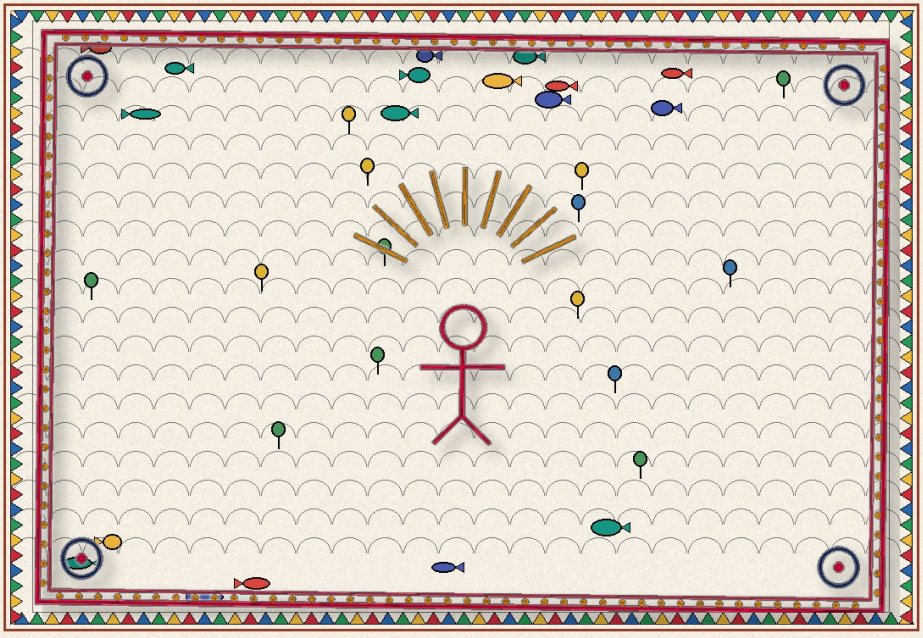

चित्र 14

वाक्य दूटा, मुदा वजन हजार मोनक। सुसेन — जे आइ धरि खाली दोसराकेँ किचकिचायब जनैत छल, स्वयं किचकिचाइ नहि छल — पहिल बेर सकपका गेल। पार्कक बच्चा सभ, जे आइ धरि चुपचाप सहैत छल, पहिल बेर देखलक जे जबाब एना सेहो देल जाइत छै — बिनु हाथ उठौने, खाली साँच बाजि कऽ।

आ मंशा ओतहि नहि रुकलि। ओ ओमक हाथ पकड़लक — कस्सि कऽ, जेना कहैत हो 'ई हाथ हम नहि छोड़ब' — आ माथ उठौने पार्कसँ आगाँ बढ़ि गेलि। पाछाँ रहि गेल सुसेन, अपन कठहँसी नेने, जे आब ओकरे मुँहपर अनसोहाँत लागि रहल छल।

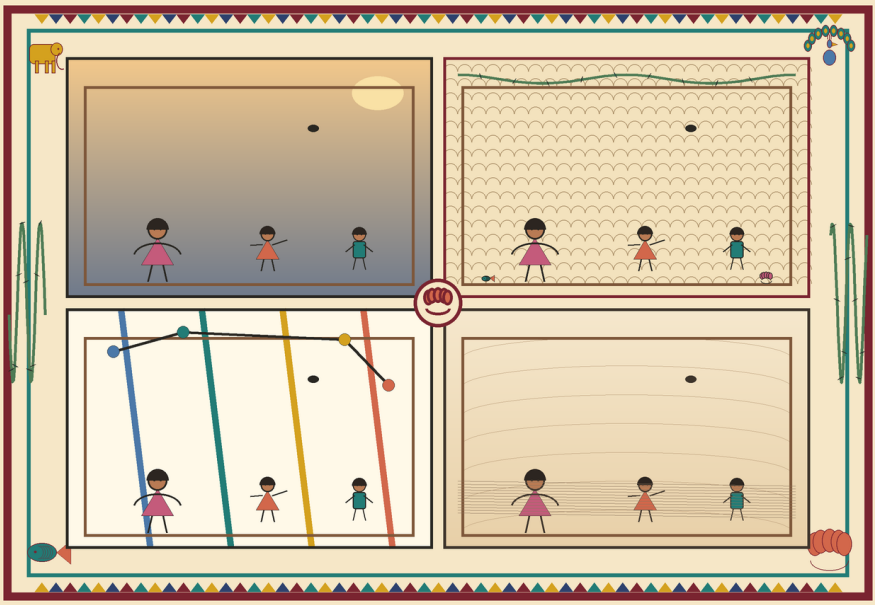

अध्याय ८ : शिकाइत

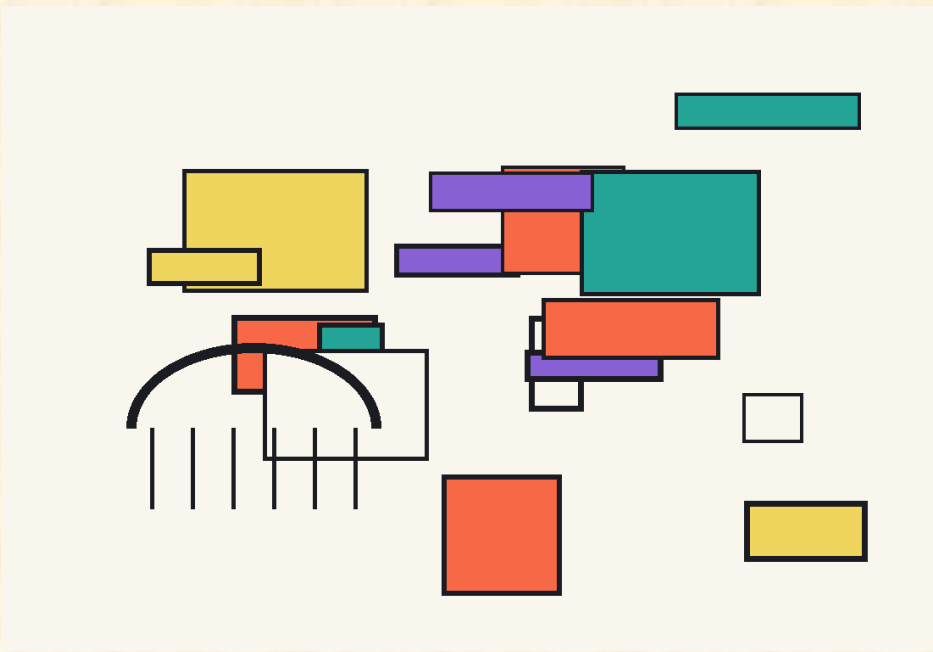

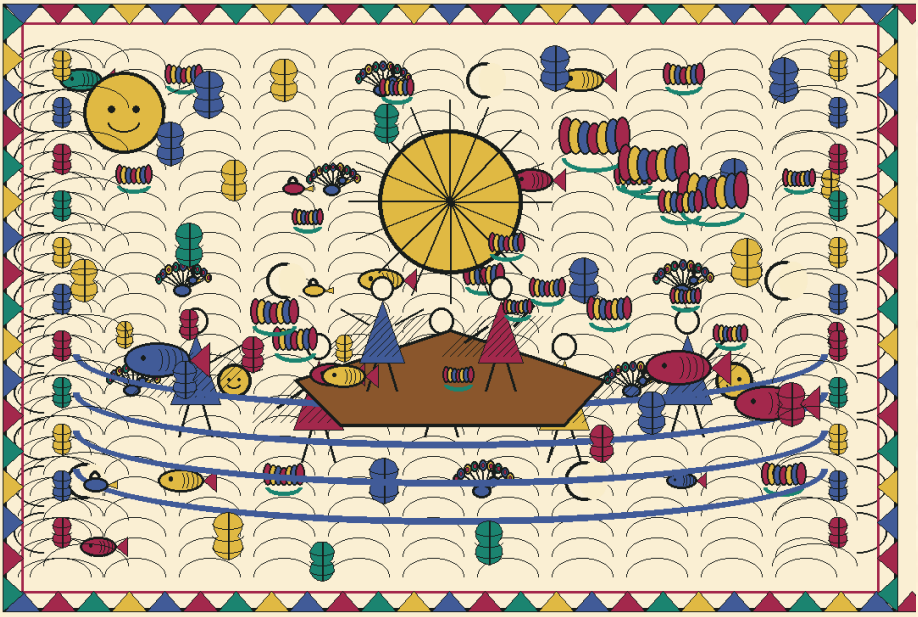

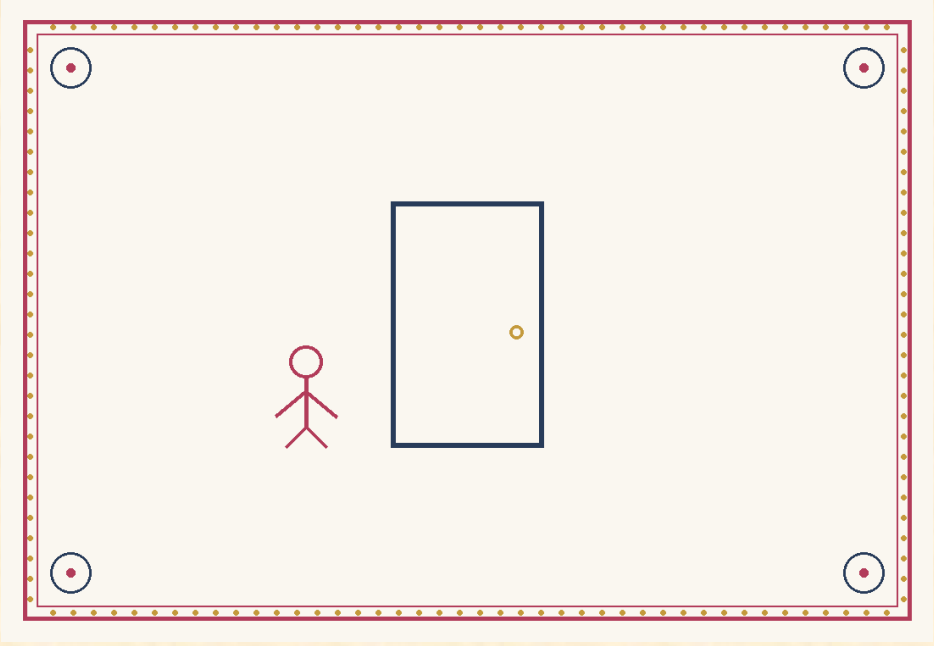

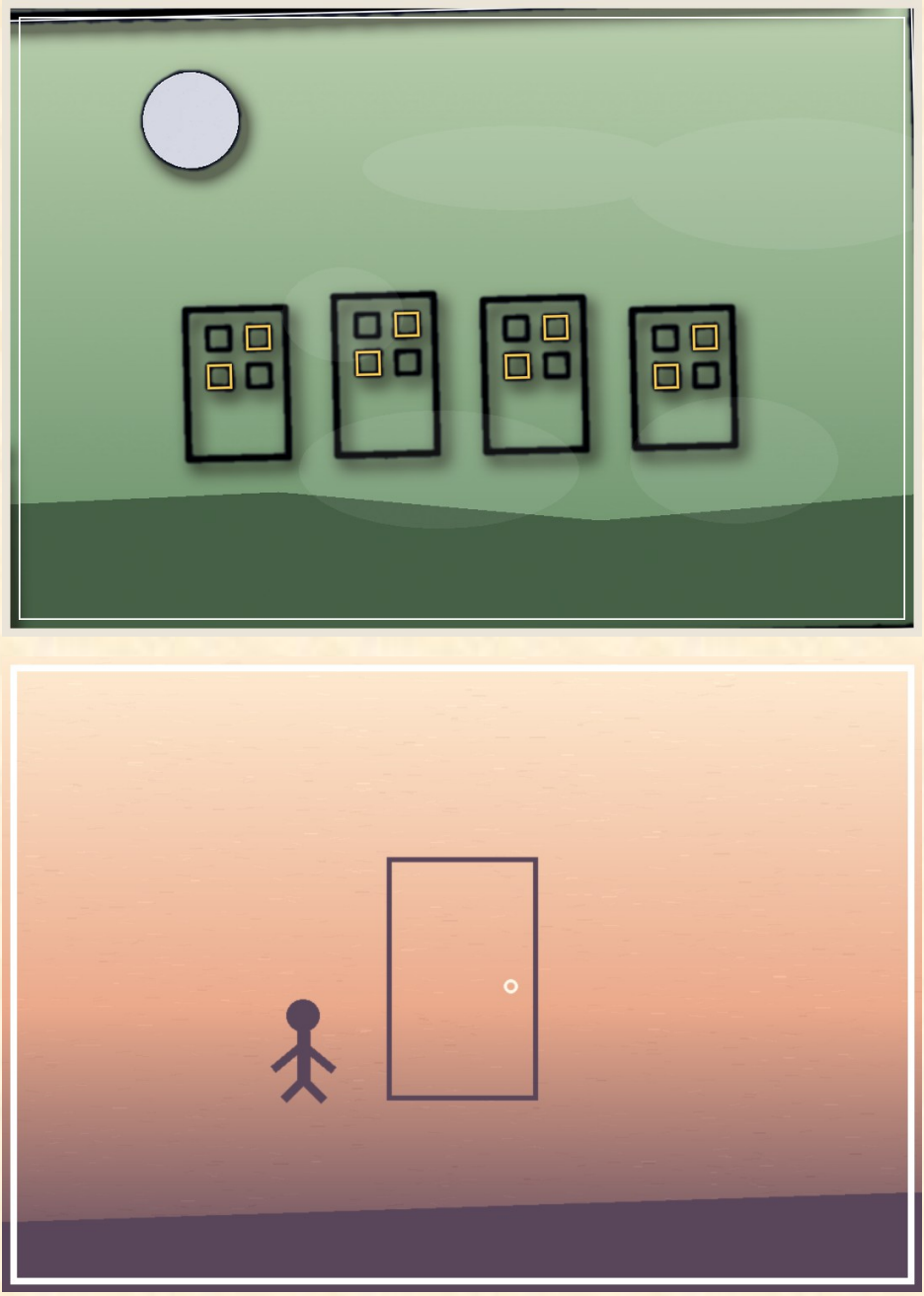

चित्र 15

मंशा सोझे ओमक घर पहुँचलि आ सभटा गप ओमक माएकेँ कहि सुनौलक — पूरा घटना, अपन गर्जन, सुसेनक मुँह — किछु नहि छोड़लक। मुदा अन्तमे ओ जे कहलक, से शिकायत सुसेनक विरुद्ध नहि छल।

'हम सुसेनपर तमसाइ छलहुँ, आ ई चुपचाप ठाढ़ छल!' — मंशाक आंगुर ओम दिस छल। ओकरा ओमक चुप्पी सुसेनक गारिसँ बेसी खटकल छलै। दोस लेल लड़ि गेलहुँ, आ दोसे नहि लड़ल — एहिसँ पैघ धोखा चारि बरखक करेज लेल आर की?

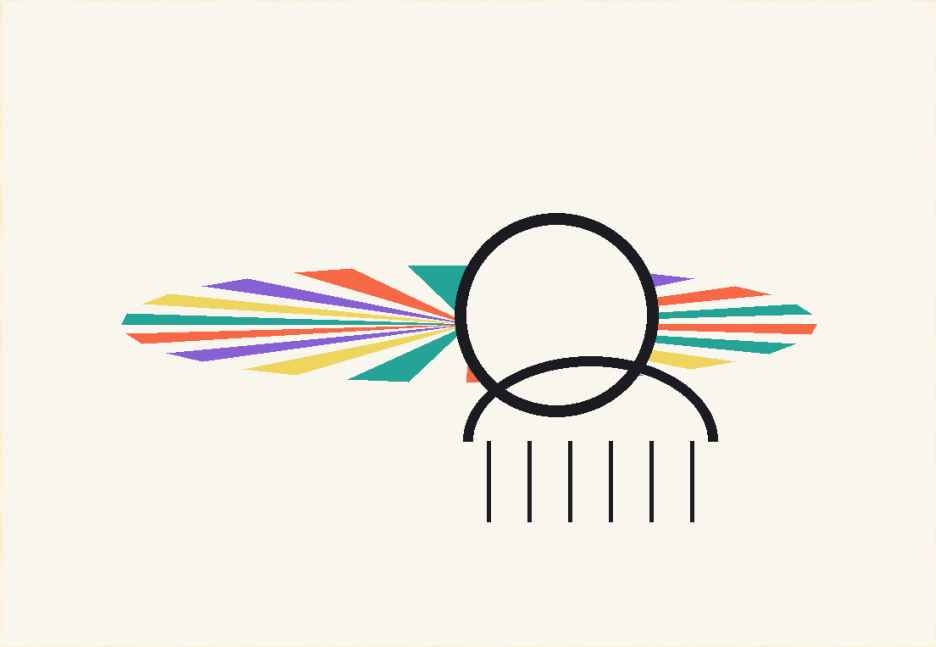

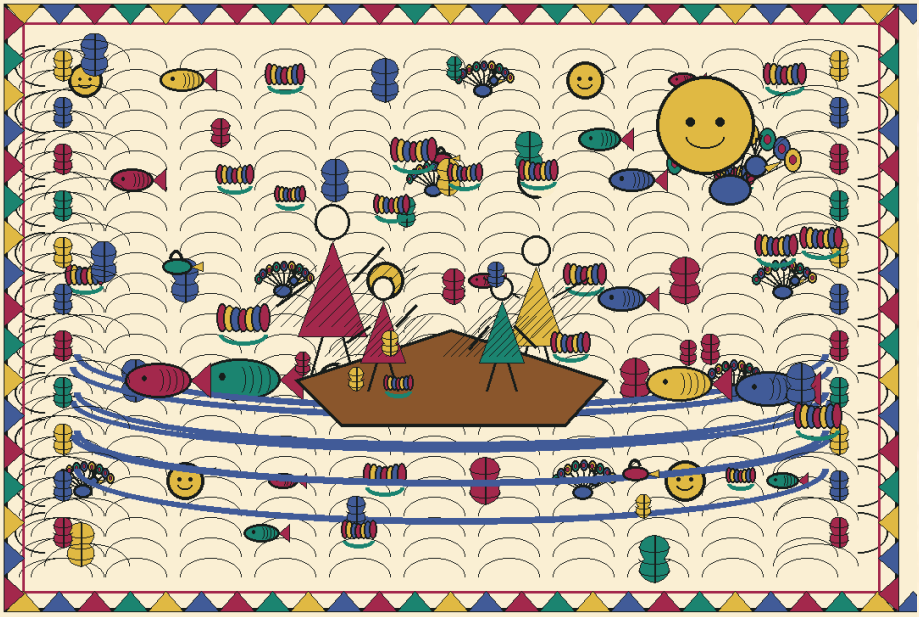

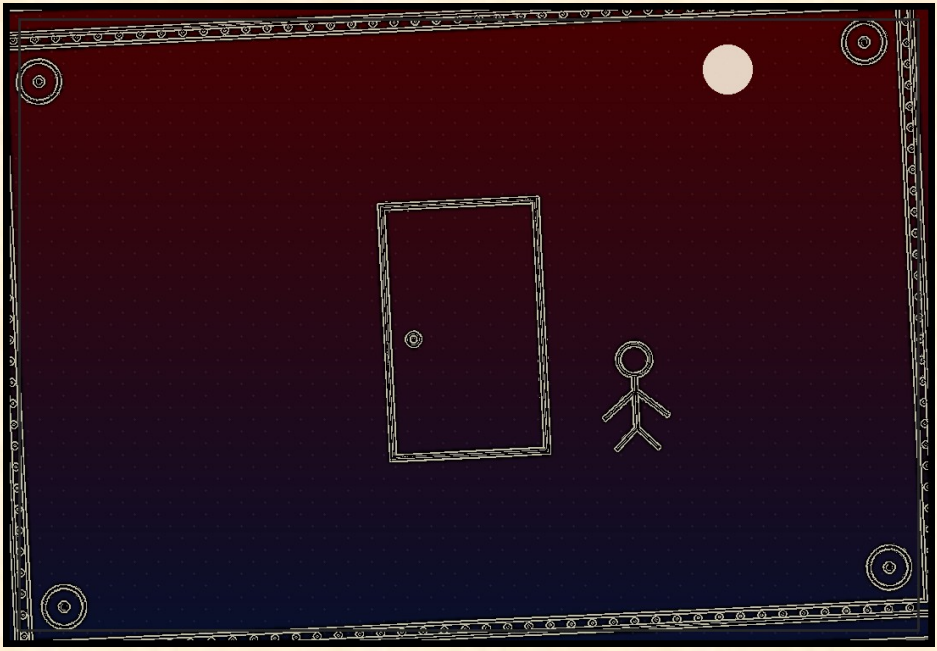

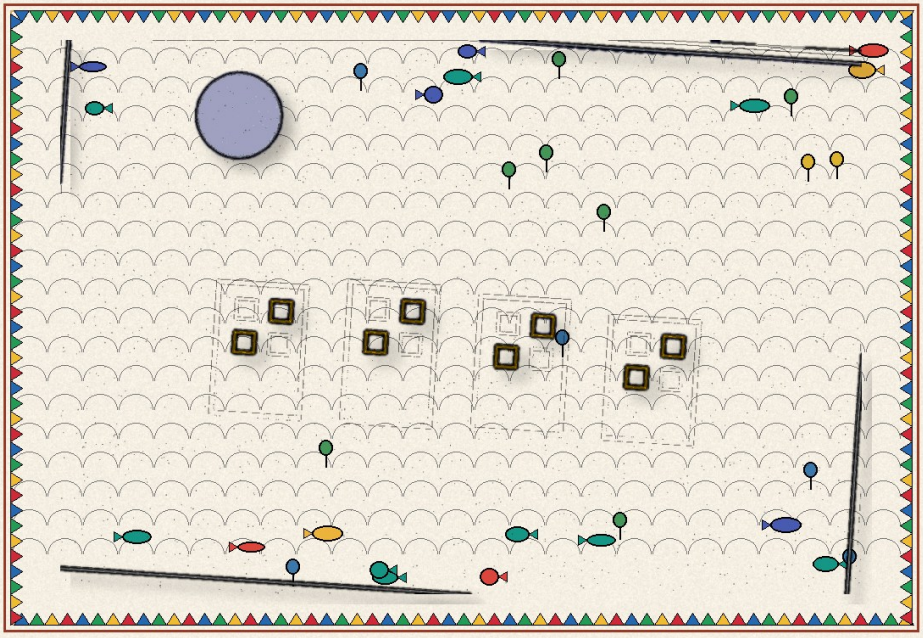

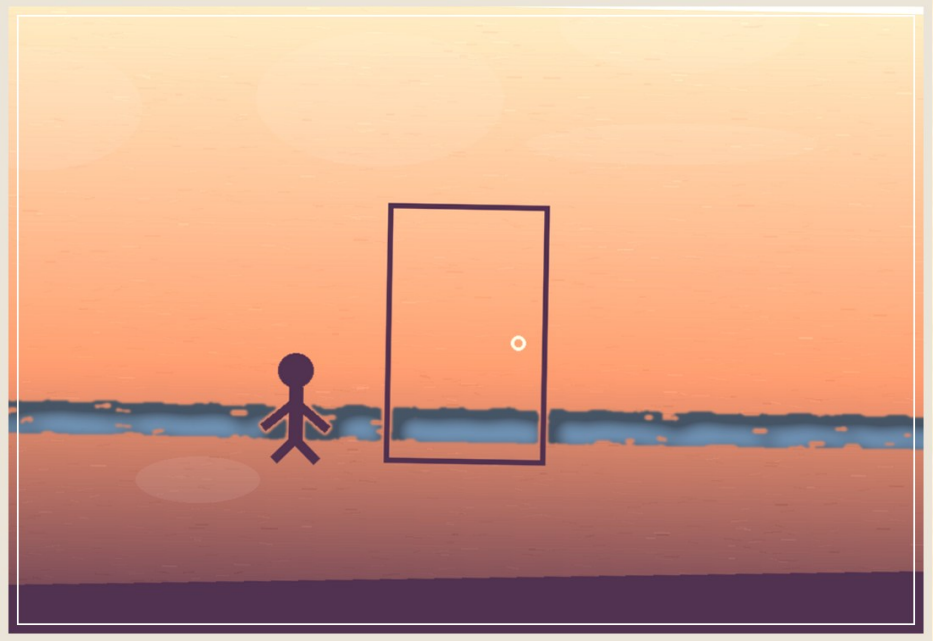

चित्र 16

ओमक माएक भौंह सेहो कनी तनि गेल। हुनको भीतर वैह प्रश्न उठल जे हर माएक भीतर उठितए। ओ ओम दिस घूमलीह — 'किए ओम? अहाँकेँ सुसेन गन्दा कहलक, आ अहाँ चुपचाप ठाढ़ रहि गेलहुँ?'

घरमे सुन-सन्नाटा। मंशा डाँरपर हाथ धेने उत्तरक प्रतीक्षामे। माए आँखिमे प्रश्न नेने। आ ओम — पाँचम बरखमे प्रवेश करैत ओम — कनी काल चुप रहल, जेना शब्द सभकेँ सजा रहल हो। फेर ओ बाजल। आ जे बाजल, से एहि खिस्साक हृदय थिक।

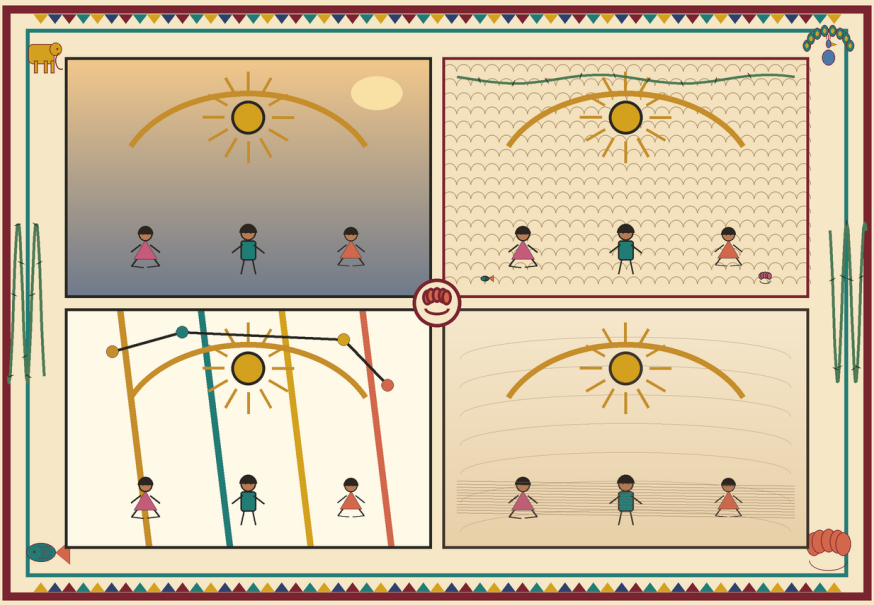

अध्याय ९ : बाल गुरुक उत्तर

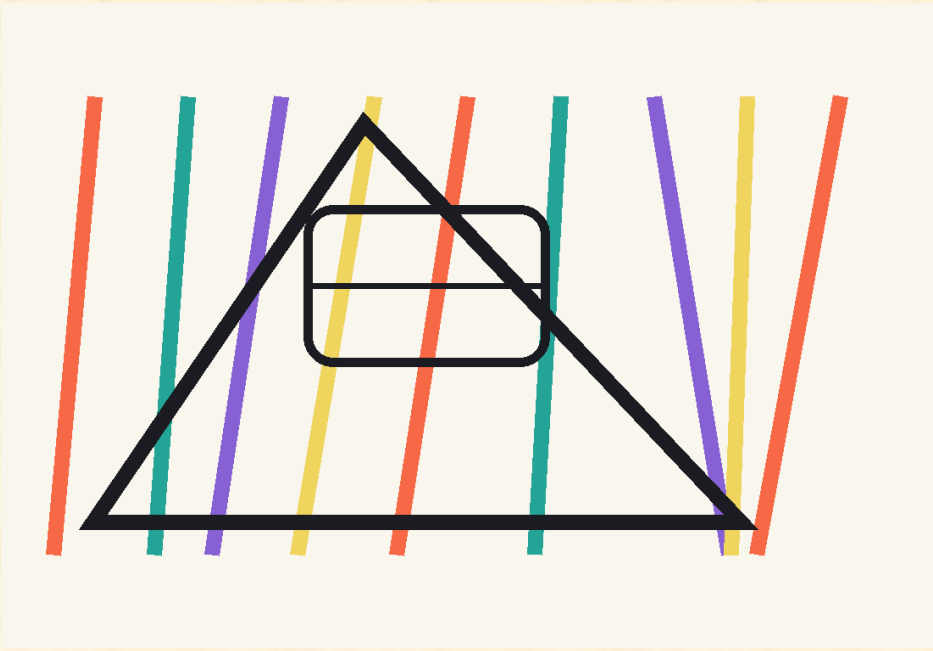

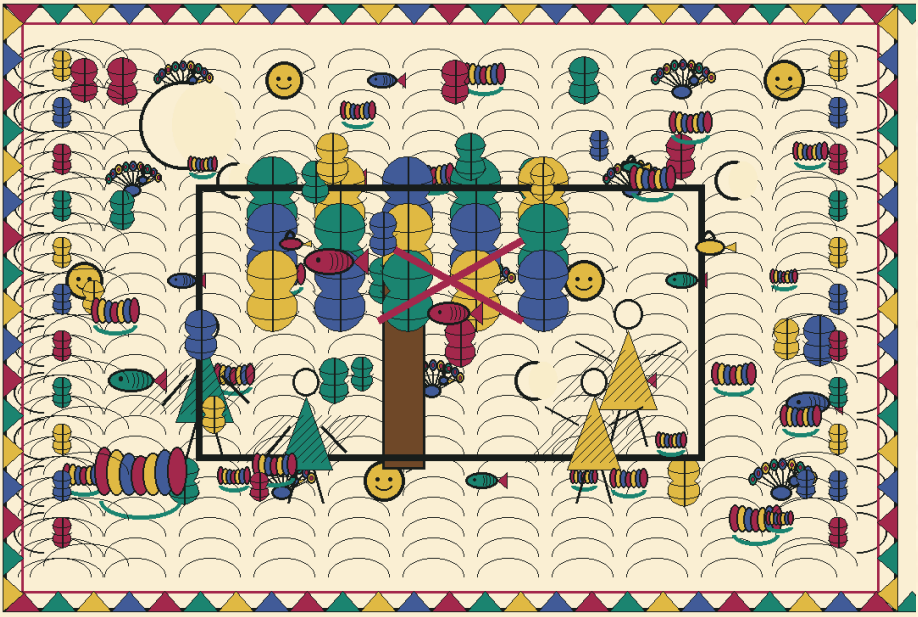

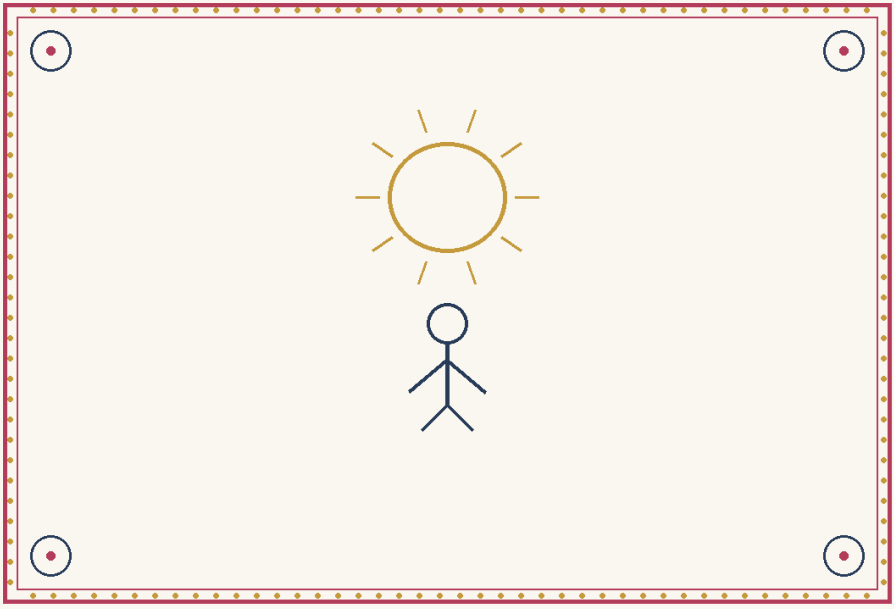

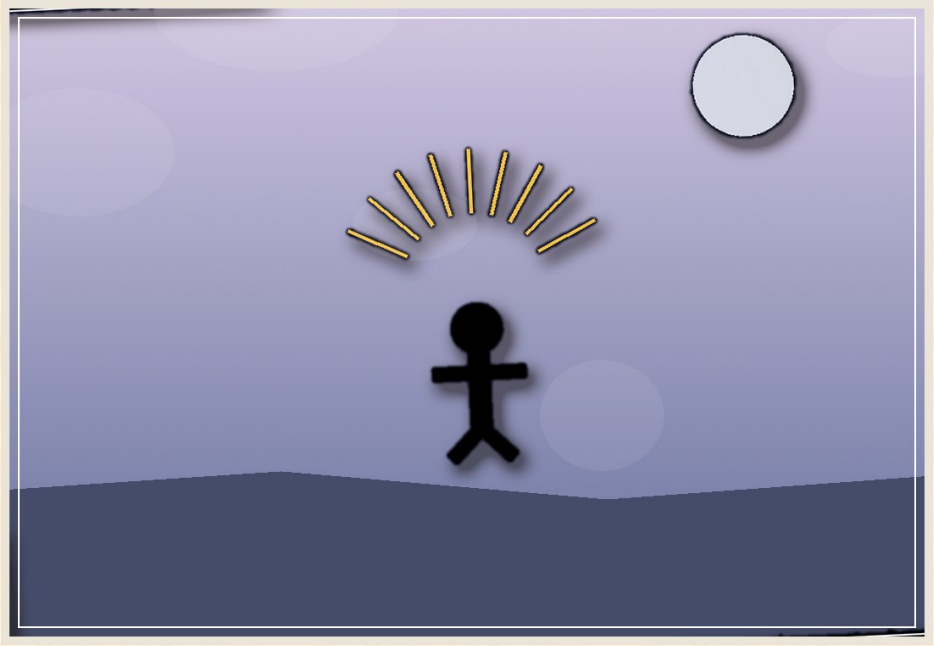

चित्र 17

'माए, ओ हमरा नै चिन्हैए। नव आएल अछि। तँ हमरा गन्दा कहलक। जखन ओ हमरा सभकेँ चीन्हि जाएत, त' थोड़बेक गन्दा कहत।'

बस। ने कोनो शिकायत, ने कोनो बदला, ने अपन सफाई। पाँच बरखक बच्चा गारिक जड़ि ताकि लेने छल — अज्ञान। जे चिन्हैत नहि अछि, वैह गन्दा कहैत अछि; चिन्हि लेत, त' कहबे नहि करत। एहि एक वाक्यमे क्षमा छल, धीरज छल, आ ओ भरोस जे दुनियाँपर सभसँ कठिन समयमे राखल जाइत अछि — जे लोक भीतरसँ खराब नहि, खाली अनचिन्हार होइत अछि।

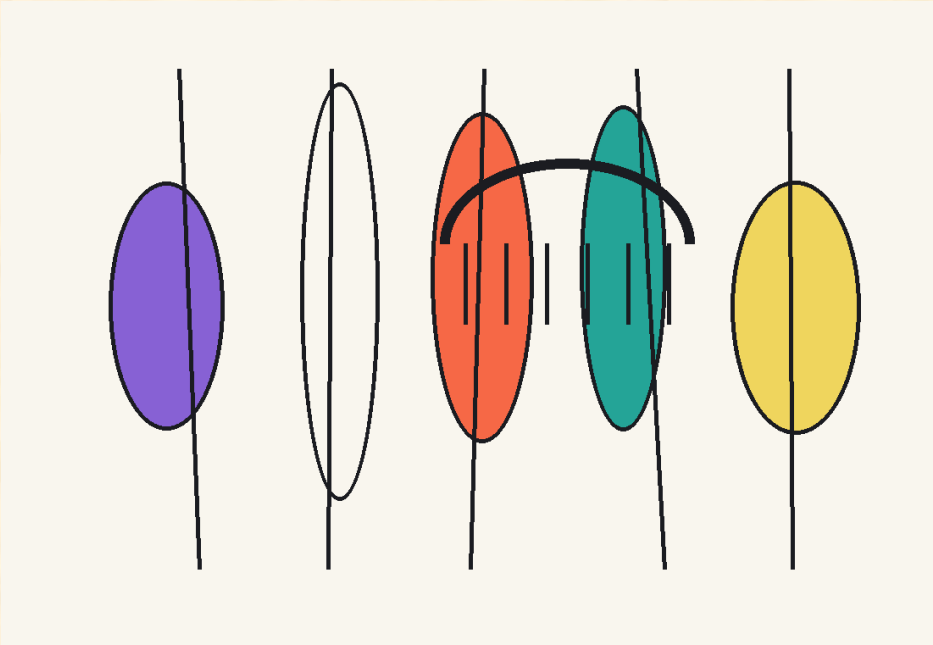

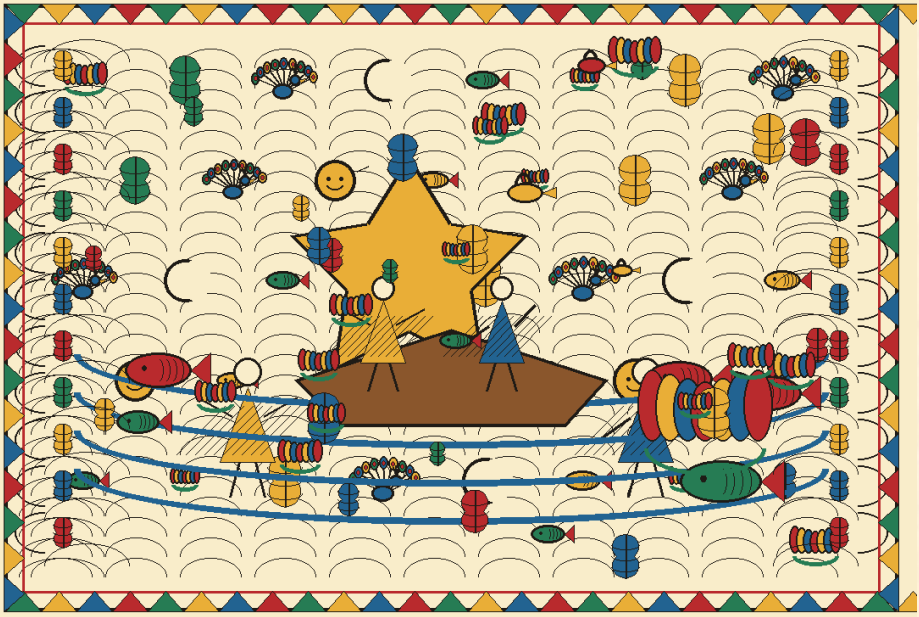

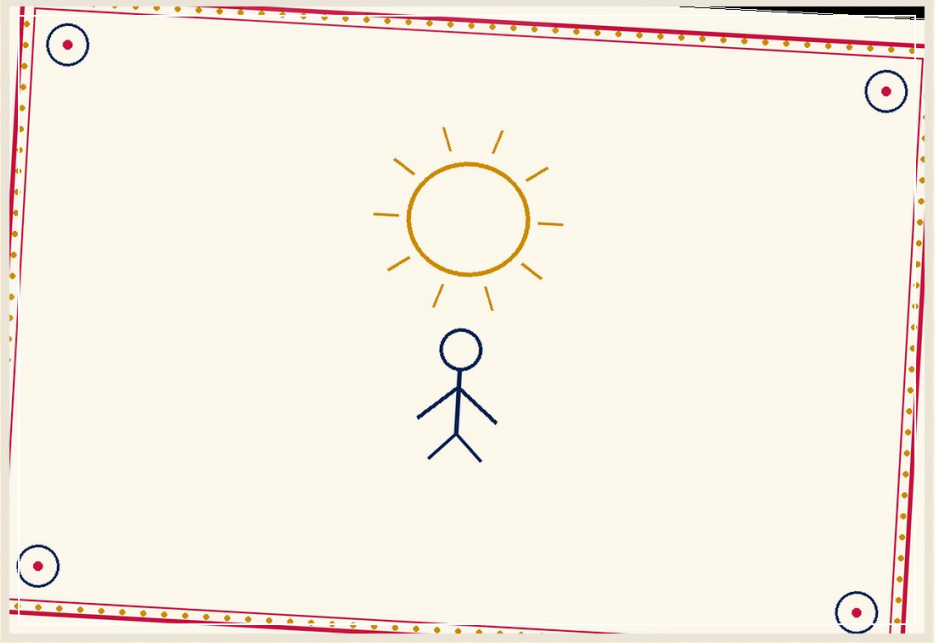

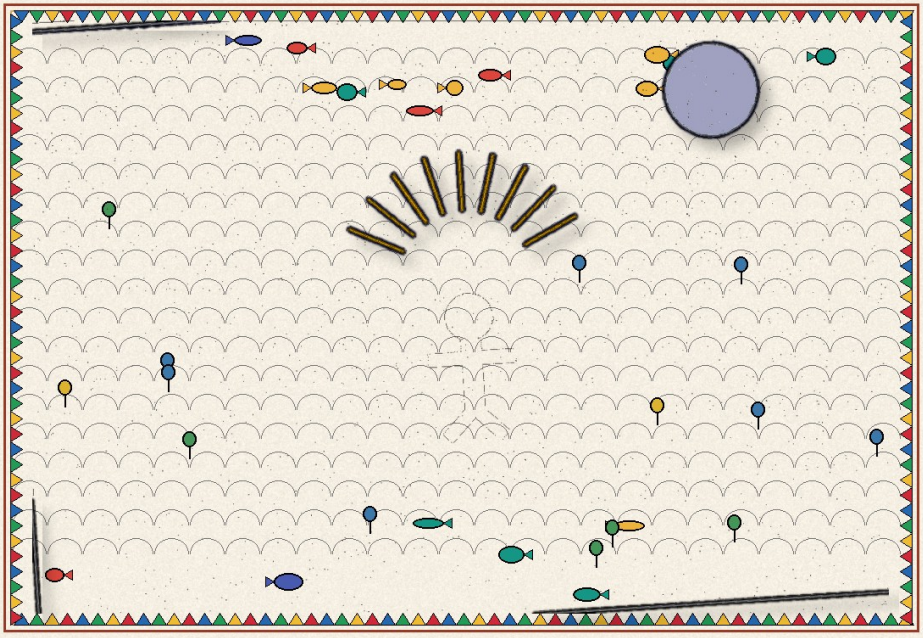

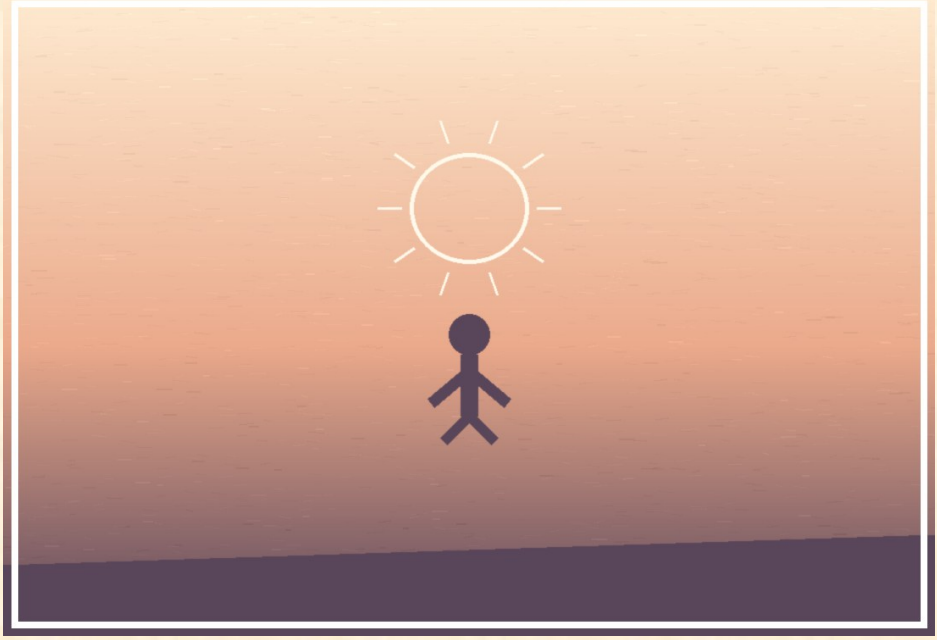

चित्र 18

मंशाक डाँरपरसँ हाथ अपने खसि पड़ल। ओकर सभटा तामस — जे सुसेनपर छल, फेर ओमपर — हवामे बिला गेल। कारण जकरा लेल ओ लड़लि, से त' लड़ाइयेसँ ऊपर ठाढ़ छल।

आ माए? माएक आँखिमे नोर आबि गेलन्हि। हुनको त' तामस आएल छलन्हि — जे हमर बेटा किए चुप रहि गेल, सुसेनकेँ किछु कहलक किए नहि। आ आब ओ अपने ओही तामसपर लजा रहल छलीह। बेटाकेँ लड़ब सिखेबाक छल हुनका — आ बेटा हुनका बुझब सिखा गेल। के गुरु, के चेला?

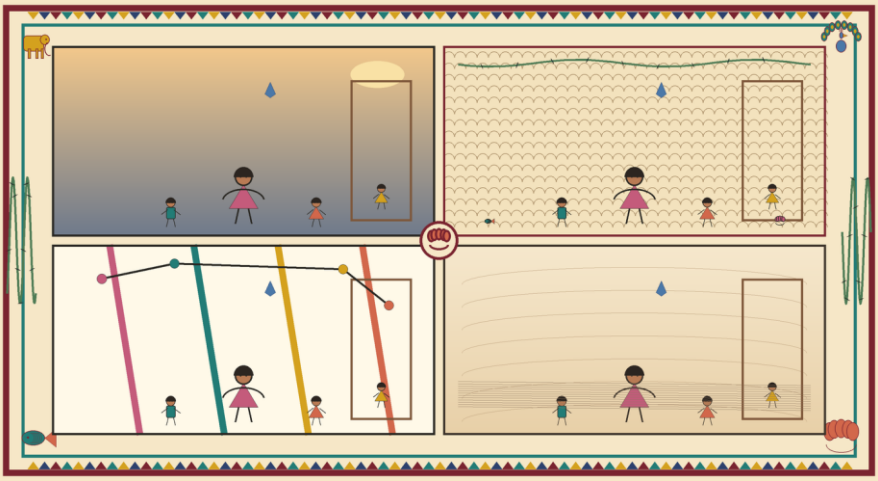

अध्याय १० : माएक नोर

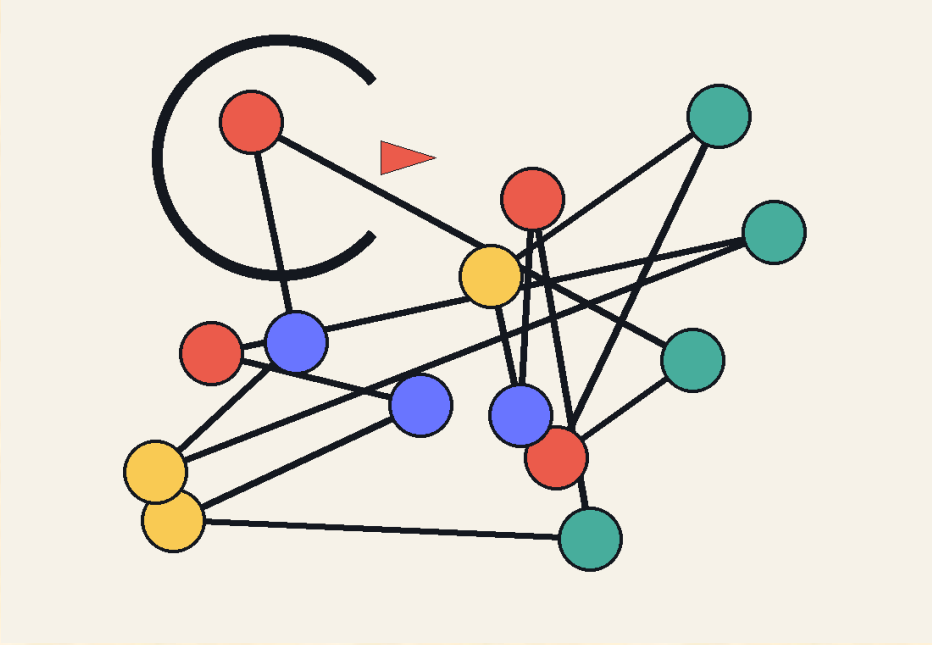

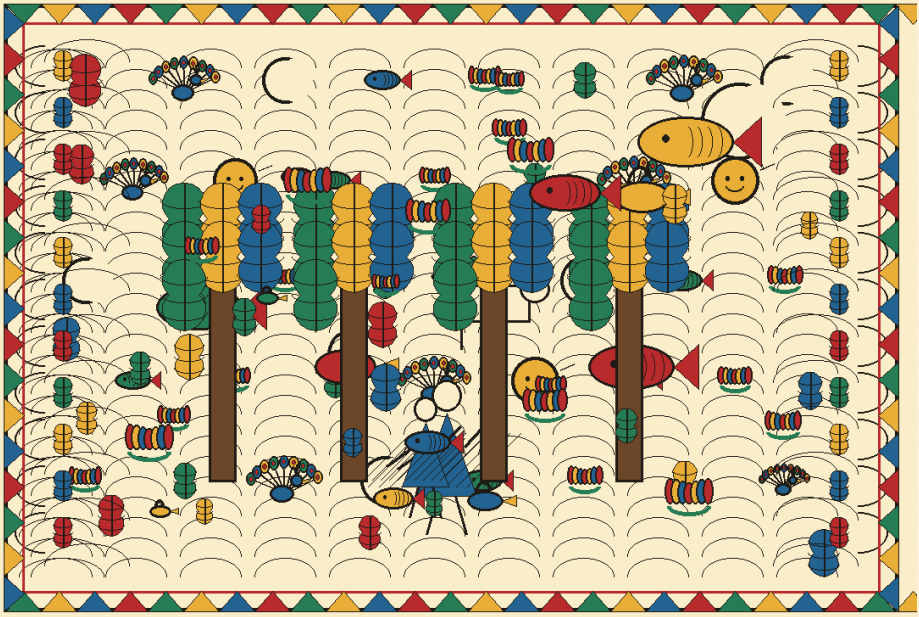

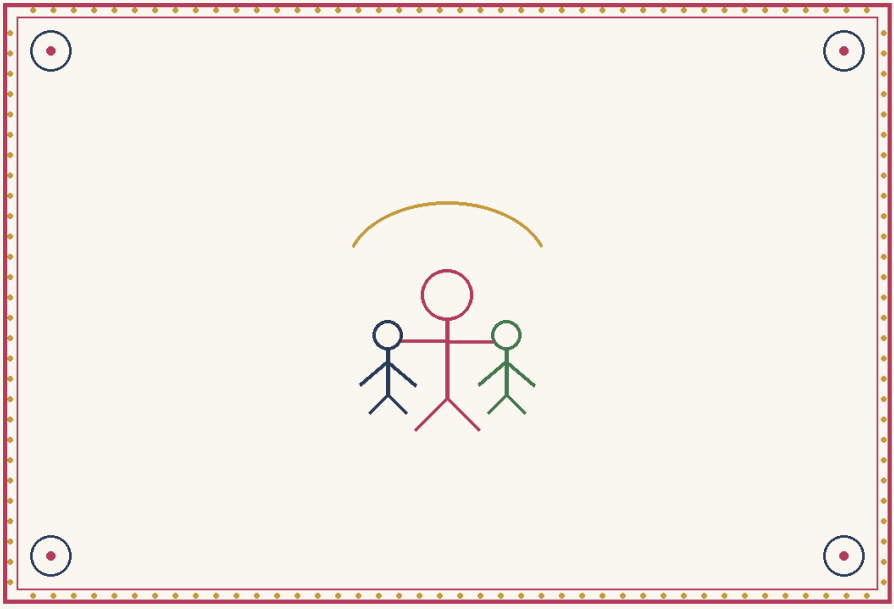

चित्र 19

ओ नोर दुखक नहि छल। ओ नोर ओहि क्षणक छल जखन कोनो माए अचानक देखैत अछि जे ओकर कोराक बच्चा भीतरसँ ओकरोसँ पैघ भऽ गेल अछि।

आ तखने हुनका मंशा देखाइ पड़लन्हि — दुजुट्टी अस्त-व्यस्त, गाल एखनो तामसे लाल, मुदा आँखिमे ओम लेल वैह पुरान फिकिर। देखियौ त' — ई कतेक निश्छल अछि! एकटा बच्चा, जे दोसक अपमानपर आगि बनि गेल; आ दोसर, जे ओही अपमानकेँ क्षमाक पानिसँ धो देलक। एक लग करेज, दोसर लग बोध — आ दुनू पाँच बरखसँ नीचाँ!

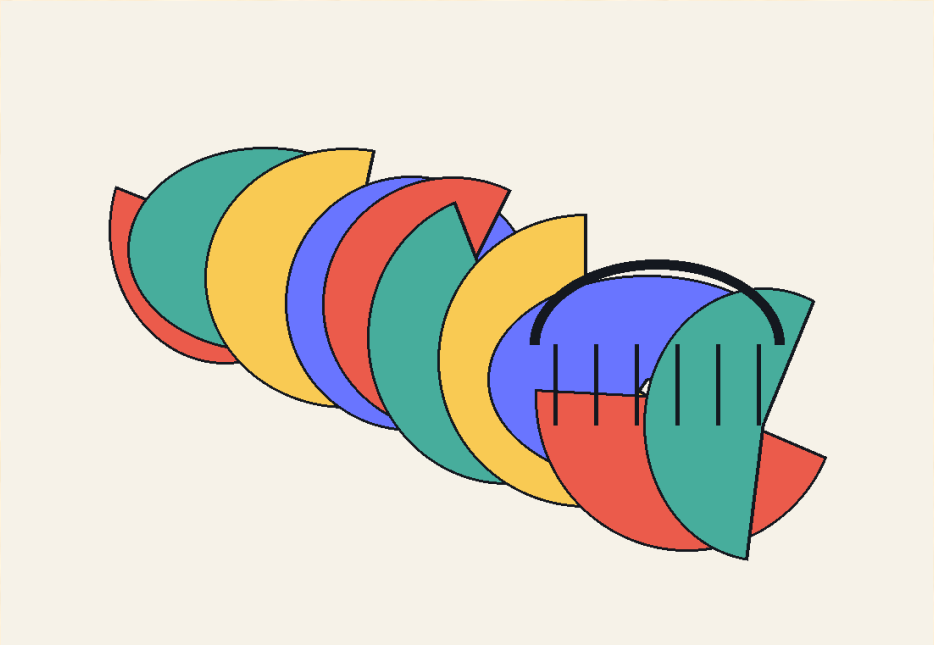

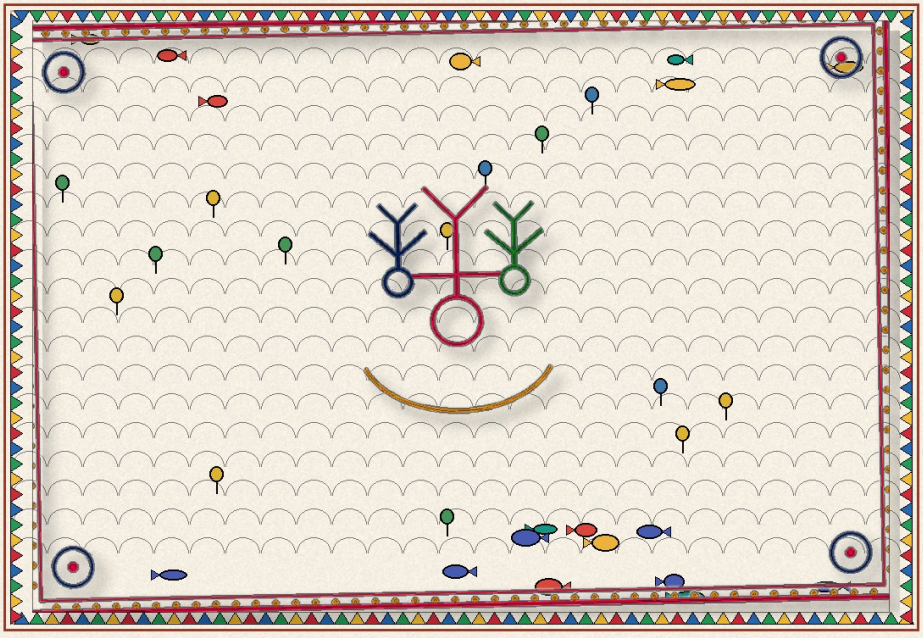

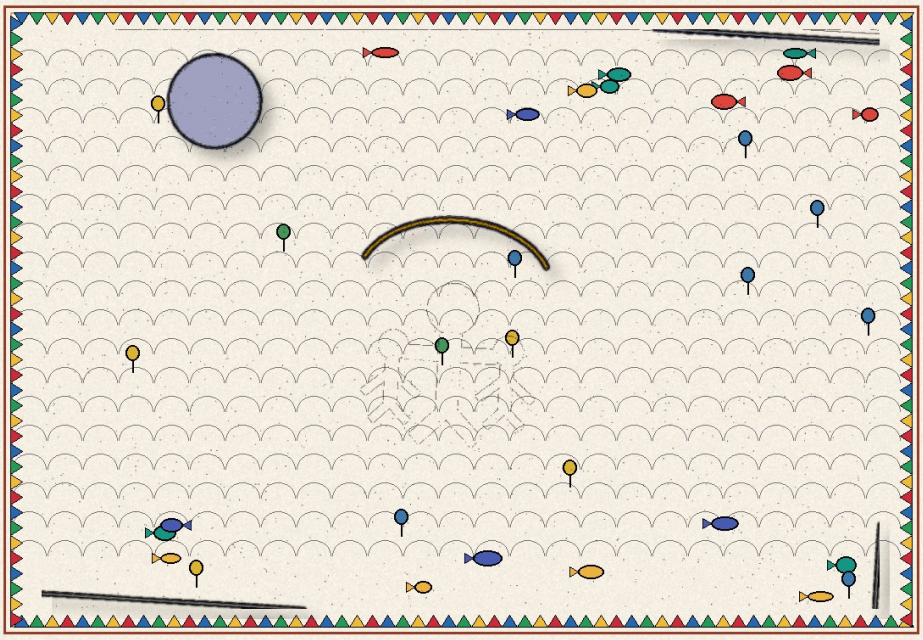

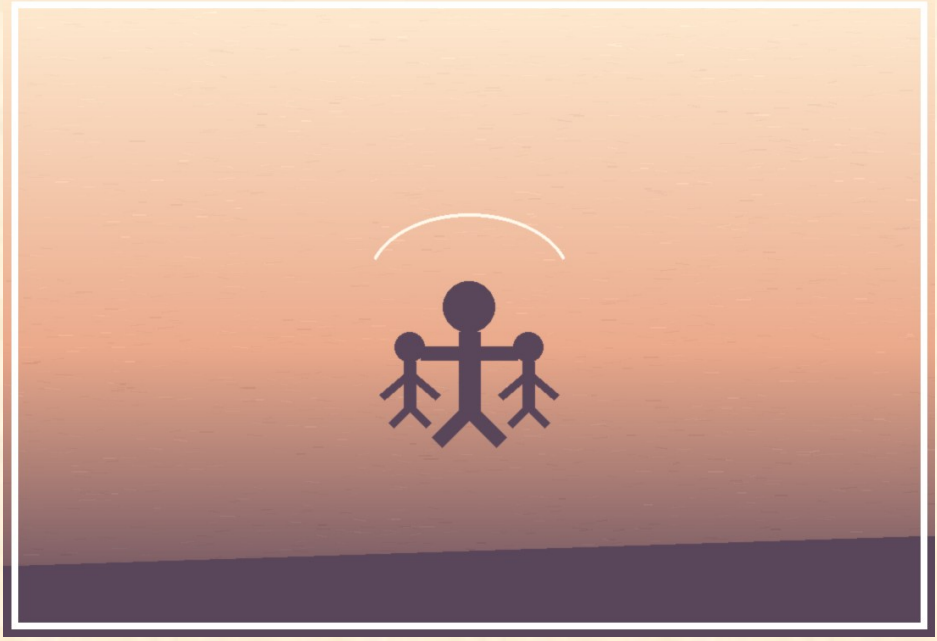

चित्र 20

माए दुनू बच्चाकेँ खींचि कऽ छातीसँ लगा लेलनि आ बेरा-बेरी चुम्मा लेबए लगलीह — ओमक माथपर, मंशाक दुजुट्टीपर। बाहर साँझ भऽ रहल छल, भनसाघरसँ भातक गन्ध आबि रहल छल।

ओहि साँझ ओमक माए मंशाकेँ अपने हाथे खुअओलनि आ जाइत काल दरबज्जा धरि छोड़ए गेलीह। महुआ नीचाँ प्रतीक्षामे ठाढ़ छलि। माए ओकरो माथपर हाथ फेरलनि — 'बुच्चीकेँ सम्हारि कऽ लऽ जैह।' तीन टा माए छलीह ओहि साँझ ओतय — एक जनम देनिहारि, एक पोसनिहारि, आ एक ओ, जे आइ अपन बेटासँ किछु सीखि कऽ ठाढ़ छलीह।

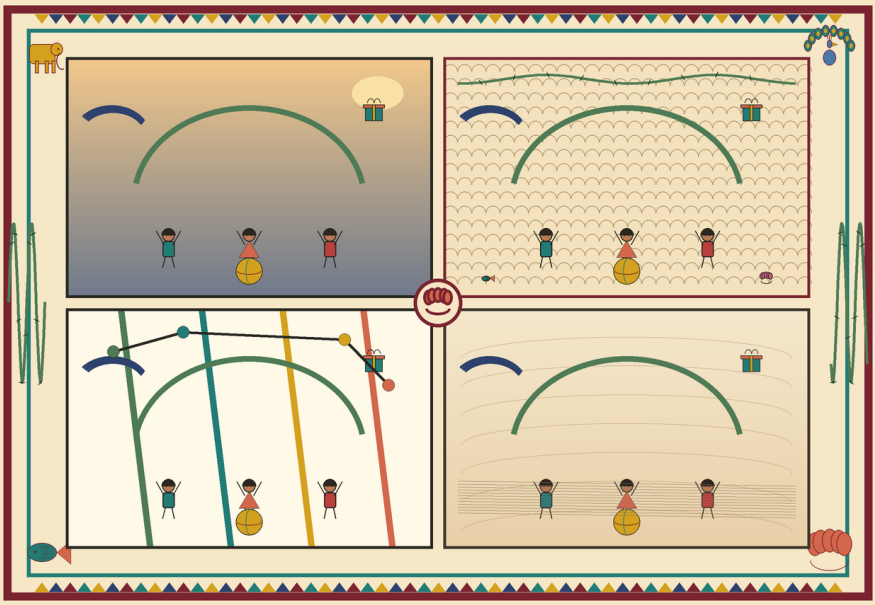

अध्याय ११ : चीन्हब

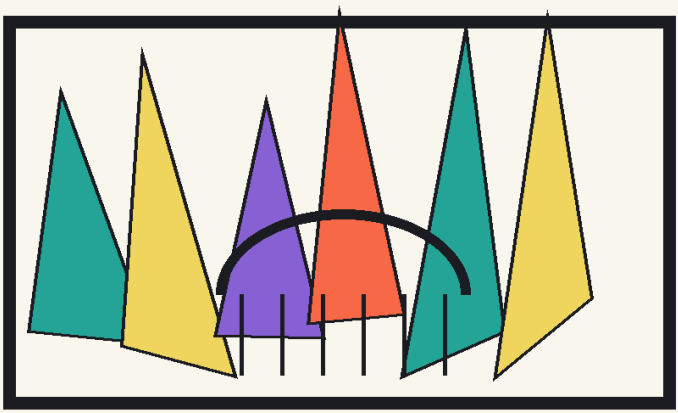

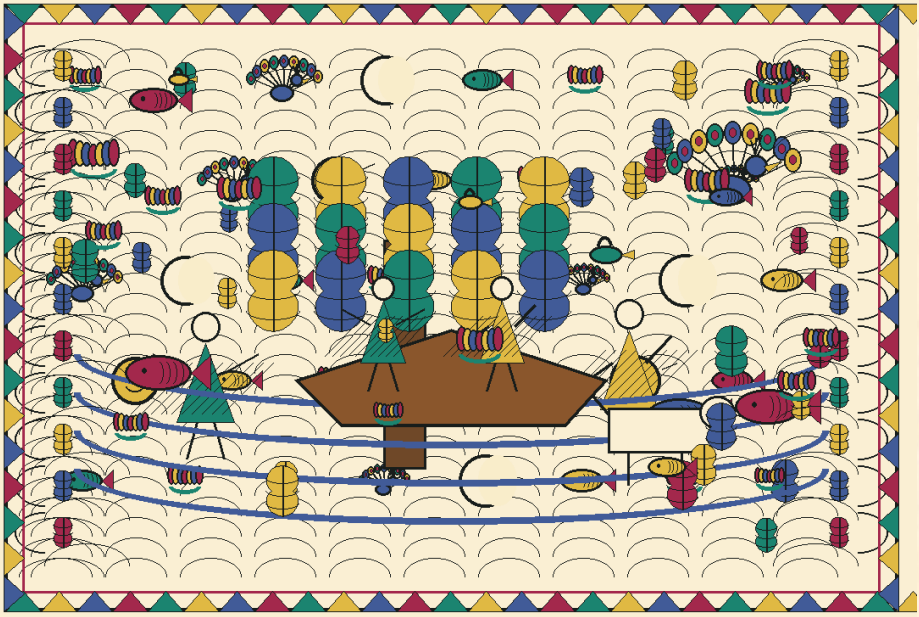

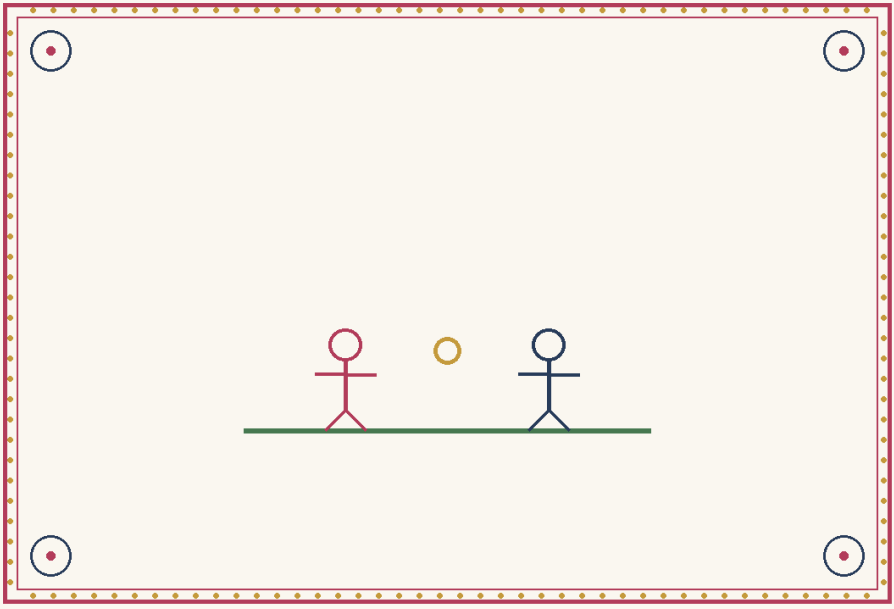

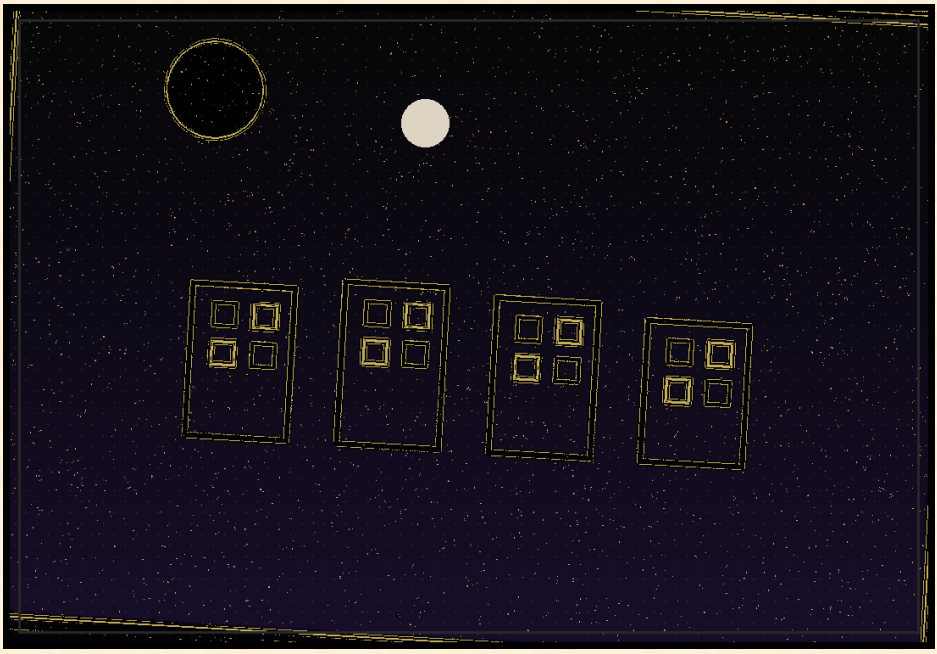

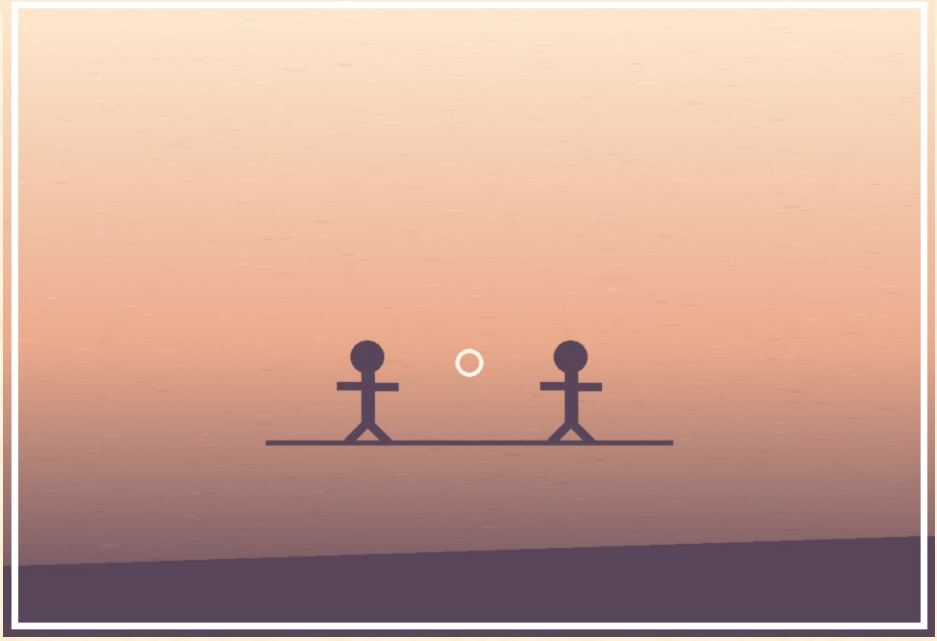

चित्र 21

तकर बाद की भेल? खिस्सा एतय ओही प्रश्नपर ठाढ़ अछि जतय ओमक भविष्यवाणी — 'जखन ओ हमरा सभकेँ चीन्हि जाएत...'

आ चीन्हब कोनो जादू नहि थिक। चीन्हब माने संगे खेलब, संगे भीजब, संगे हारब-जीतब। पार्क सभकेँ अन्ततः चिन्हा दैत अछि — ई पार्कक धर्म छै। कोनो ने कोनो साँझ सुसेनक गेन्द सेहो ओही घेरामे खसत जतय ओम आ मंशा खेलाइत अछि — आ खेलमे 'गन्दा' शब्द बेसी दिन नहि टिकैत अछि; खेल ओकरा घसि-घसि कऽ 'दोस' बना दैत अछि।

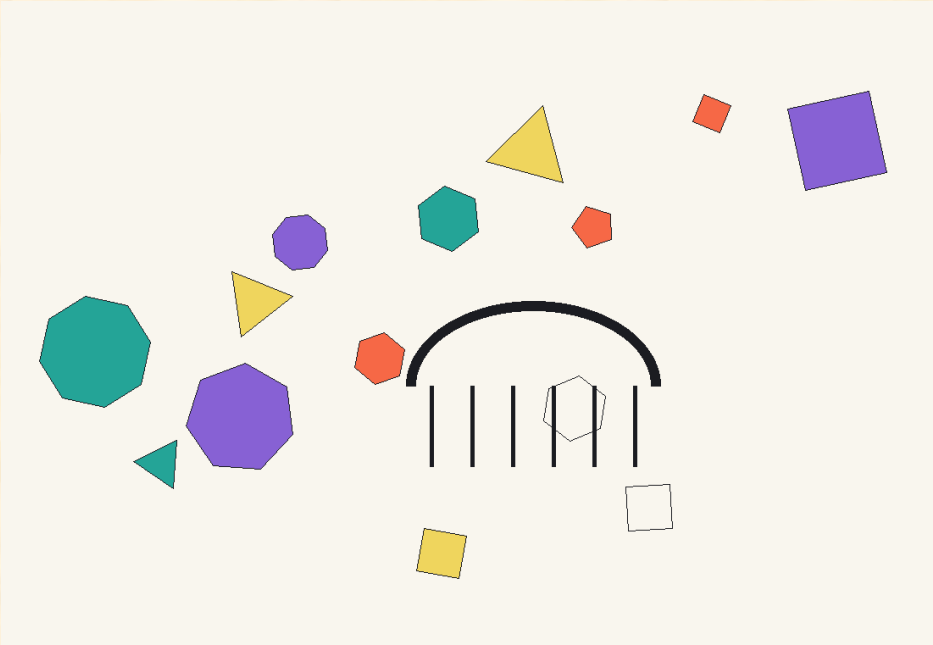

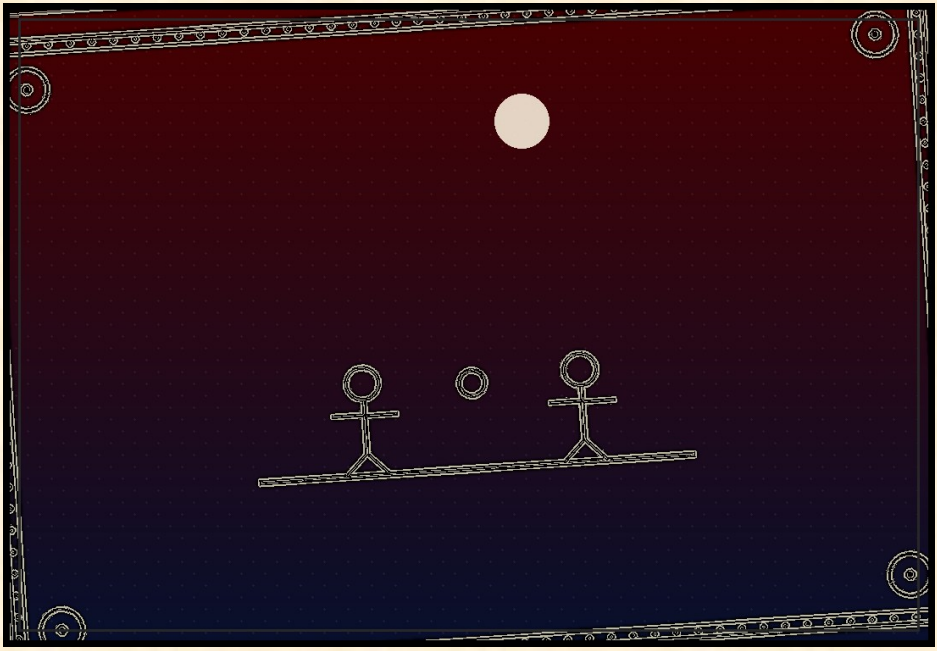

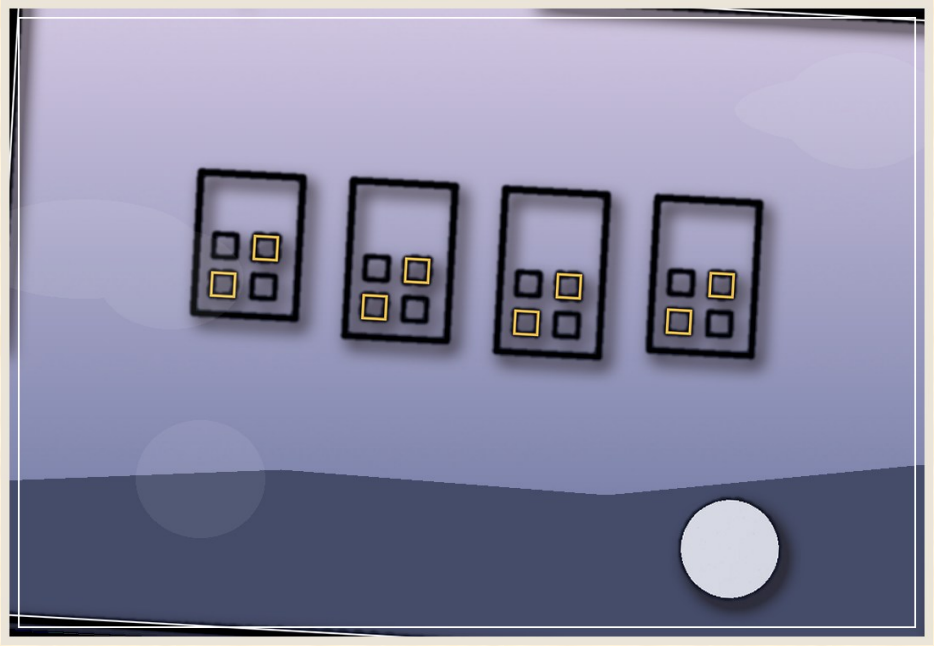

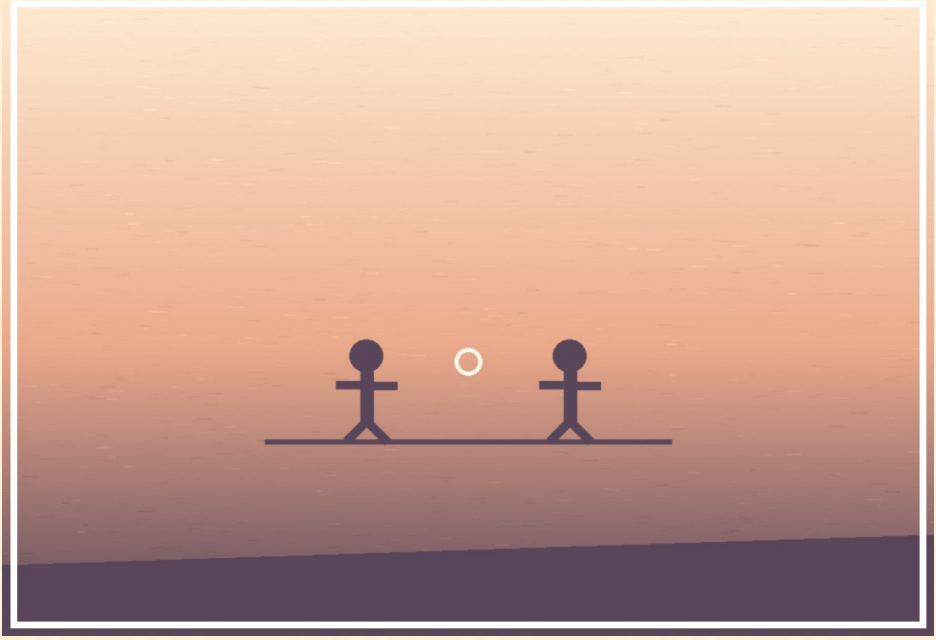

चित्र 22

जन्मदिन फेर आओत, केक फेर कटत, उपहार फेर कीनल जाएत। खाली एहि बेर, कदाचित्, दरबज्जापर घण्टी एक बेर बेसी बाजए — आ माए, बिनु पुछनहि, एकटा उपहार बेसी कीनि कऽ राखथि।

आ महुआ? ओ ओहिना साँझखन मंशाकेँ पार्क अनैत रहतीह, ओहिना गुनगुनाइत रहतीह अपन गामक अपूर्ण गीत। कखनो काल, ओमक माएक पठाओल थारी लग बैसि, ओ गीत कनी आगाँ धरि सेहो गाबि लेतीह — कारण जतय केओ नामसँ चिन्हैत अछि, ओतय गीतक गरा नहि भरैत छै।

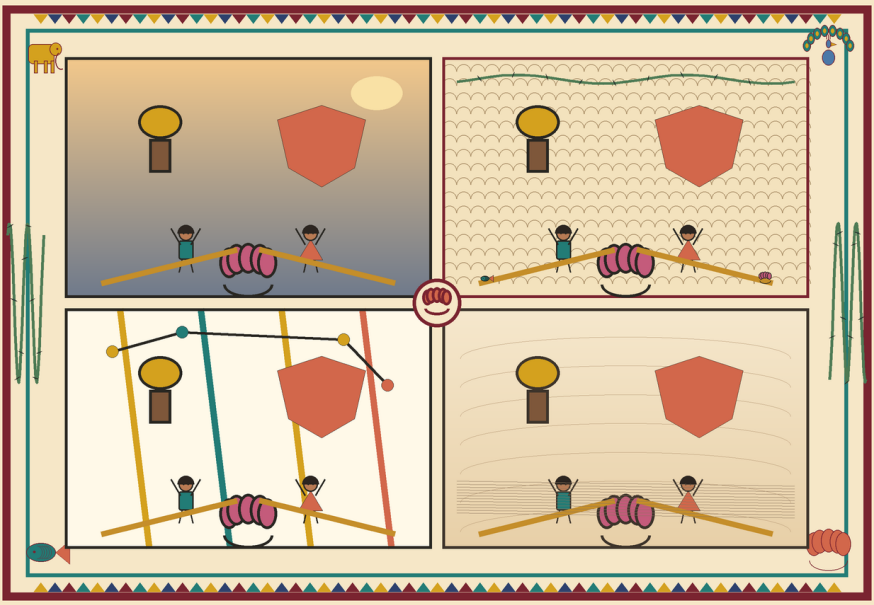

अध्याय १२ : बाल गुरु

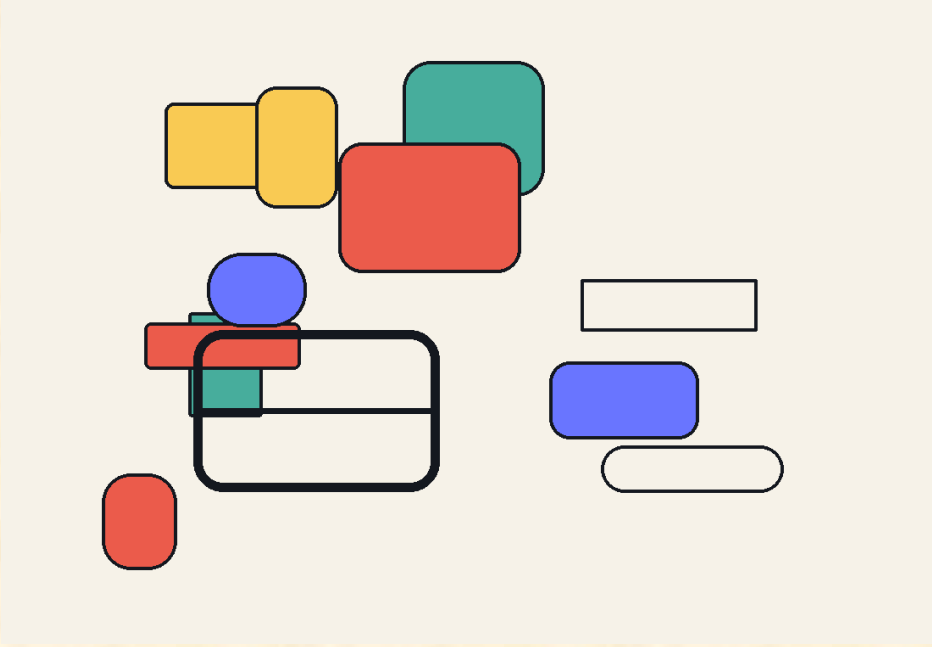

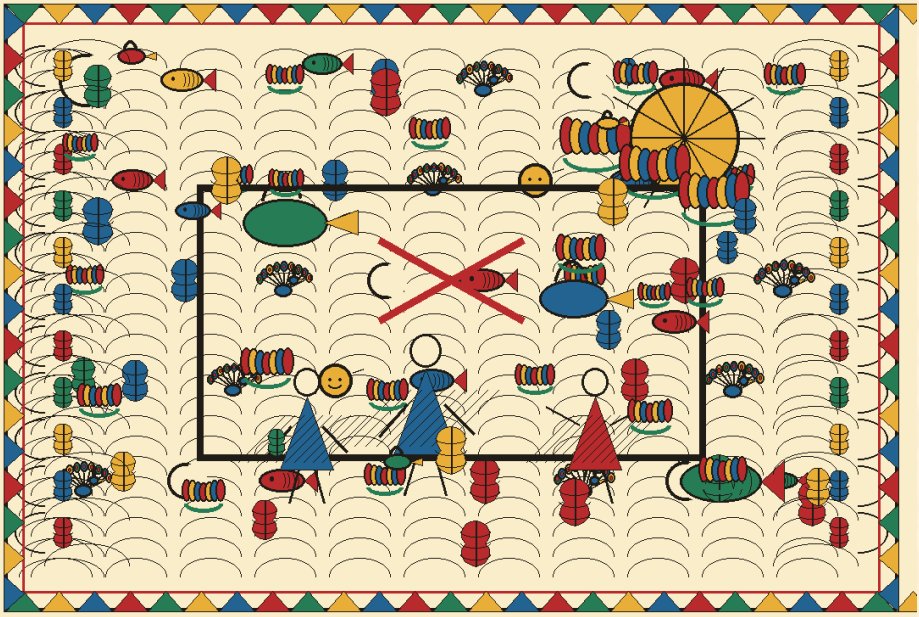

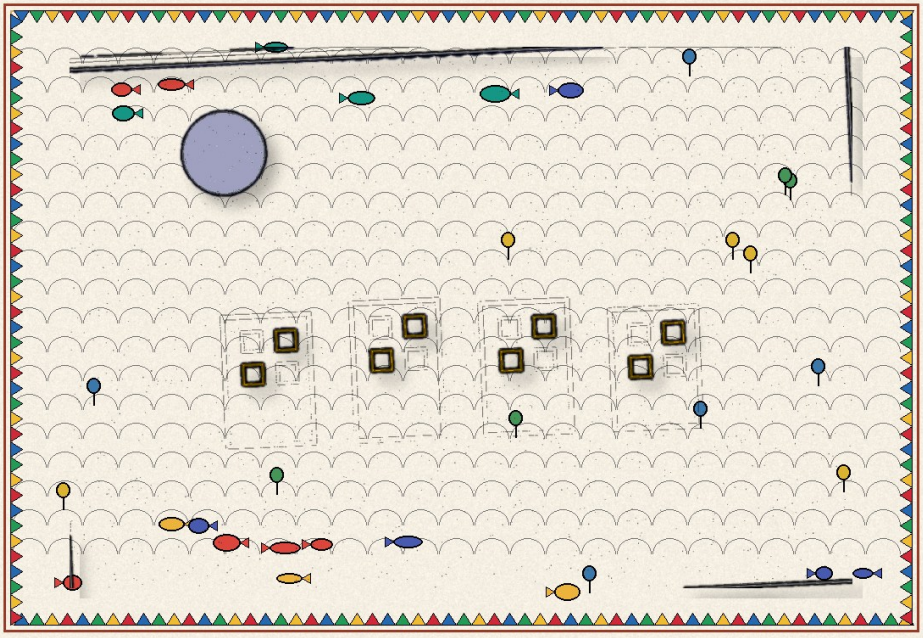

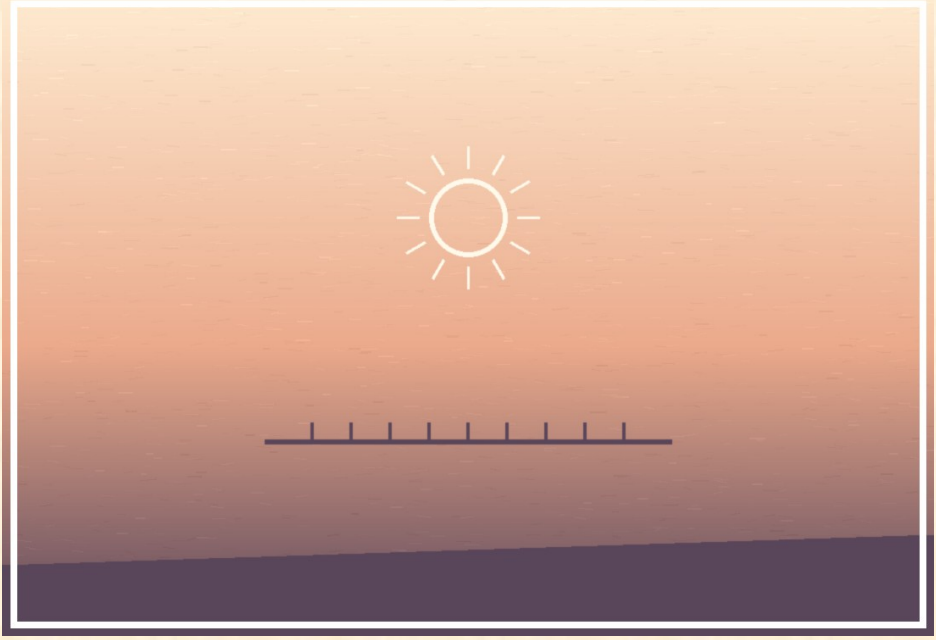

चित्र 23

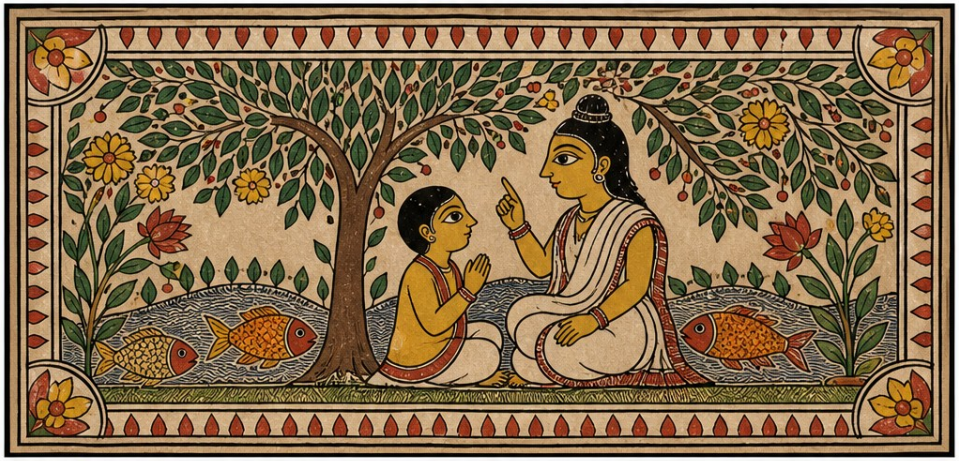

गुरु के होइत अछि? जे अन्हारमे बाट देखा दिअए। ओहि साँझ दिल्लीक ओहि आवासीय परिसरमे बाट के देखौलक? — पाँच बरखसँ छोट एकटा बच्चा, जे लड़ब नहि जनैत छल, मुदा बुझब जनैत छल।

बड़का लोक झगड़ाक उत्तर झगड़ासँ ताकैत अछि, अपमानक उत्तर अपमानसँ। ओम उत्तर ताकलक चीन्हबसँ। तेँ ओ बाल छल, मुदा गुरु भेल — बाल गुरु।

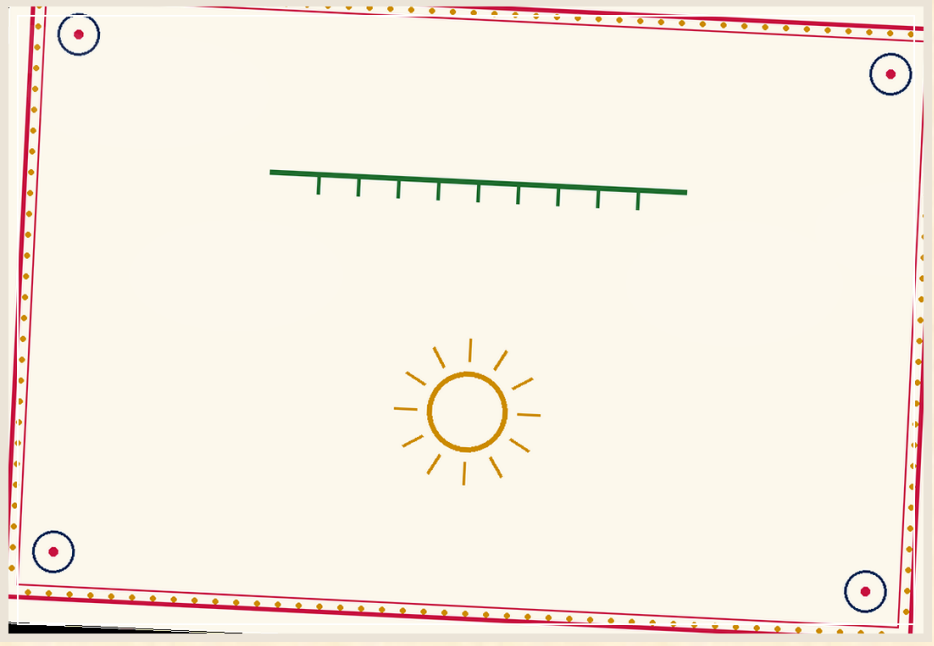

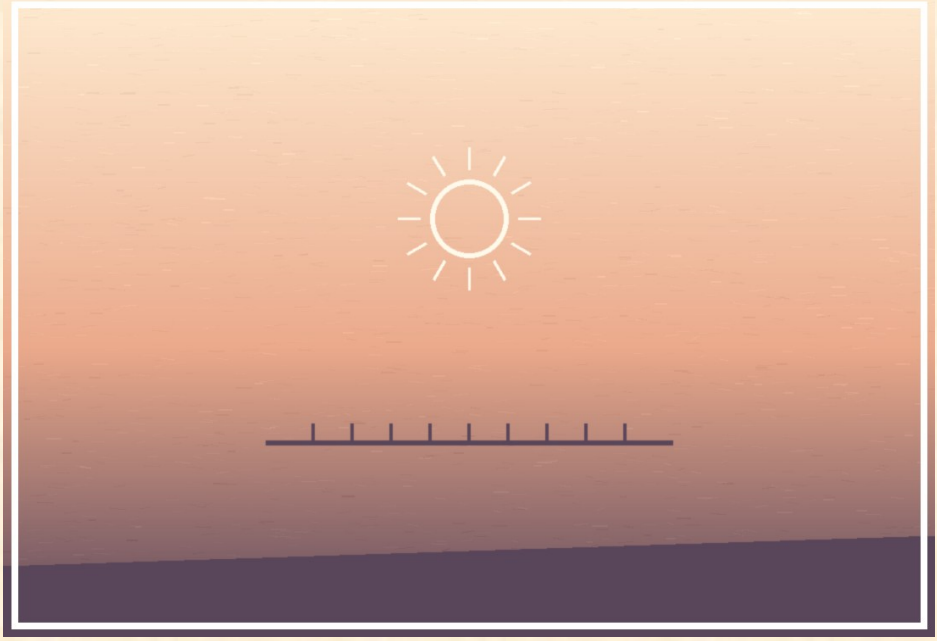

चित्र 24

आ मंशा? ओहो कम गुरु नहि। ओ सिखौलक जे दोस लेल ठाढ़ होएब सेहो धर्म थिक — साँच बाजब, से डरे नहि रुकब। एक गुरु क्षमाक, एक गुरु साहसक। दुनू मिलि कऽ पूरा पाठ।

घासक पार्कमे आइयो साँझ पड़ैत अछि, झुला आइयो झूलैत जाइ अछि। आ जे केओ ओतय कान लगा कऽ बैसए, ओकरा आइयो दूटा छोट नाम सुनाइ पड़तै — ओम, आ मंशा — आ संगहि ओ वाक्य जे कहियो पुरान नहि हएत: जे चिन्हि जाइत अछि, से गन्दा नहि कहैत अछि।

समाप्त

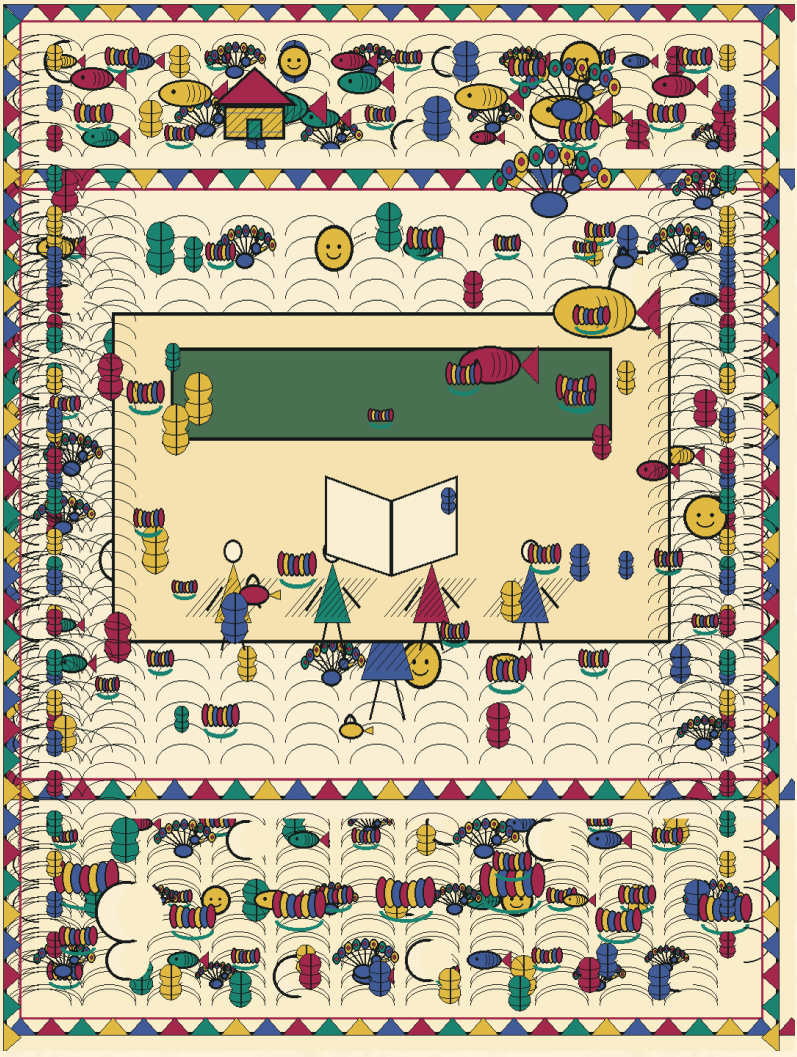

VIDEHA विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका **ISSN 2229-547X** www.videha.co.in

दीना-भदरी

जोगियानगरक दू भाइक दुखान्त वीरगाथा

गजेन्द्र ठाकुर

© Gajendra Thakur/ Preeti Thakur; गजेन्द्र ठाकुर सम्पादक, विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका (since 2000) ISSN 2229-547X

ई पोथी गजेन्द्र ठाकुर समग्रक अन्तर्गत संकलित अछि।

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक ISBN:978-93-5890-210-5

DESIGNED BY: AUM GAJENDRA THAKUR

उपक्रम : माटिक दू बेटा

नेपालक मिथिलांचलमे एकटा गाम अछि — जोगियानगर। ओतुक्का माटि आनो गाम जकाँ माटिये छै, मुदा ओहि माटिमे दूटा नाम एहन गड़ल अछि जे आइयो कोदारिक चोट पड़िते बाजि उठैत अछि — दीना, आ भदरी।

ई खिस्सा राजा-रानीक नहि थिक। ई खिस्सा दू भाइक थिक जे मुसहर छलाह, बोनिहार छलाह, आ जिनकर बाँहिमे एतेक बल छल जे धरती हुनका देखि कऽ अपने नरम भऽ जाइत छलि। मुदा जतय बल होइत अछि, ओतय ओकरा तोड़बाक षड्यन्त्र सेहो होइत अछि। तेँ ई वीरगाथा थिक — आ दुखान्त सेहो।

अध्याय १ : पाँच-पाँच मोनक कोदारि

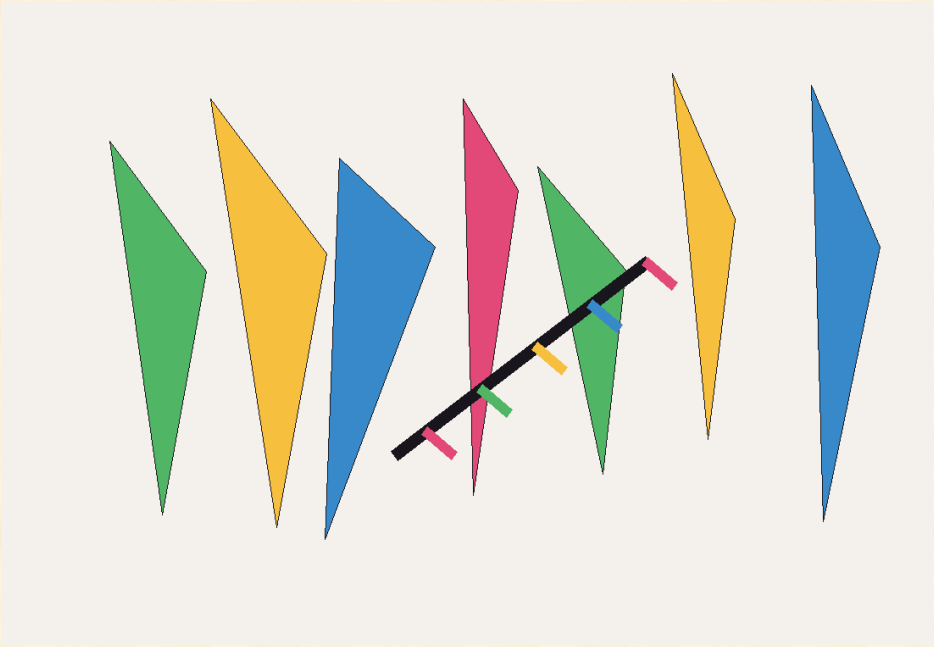

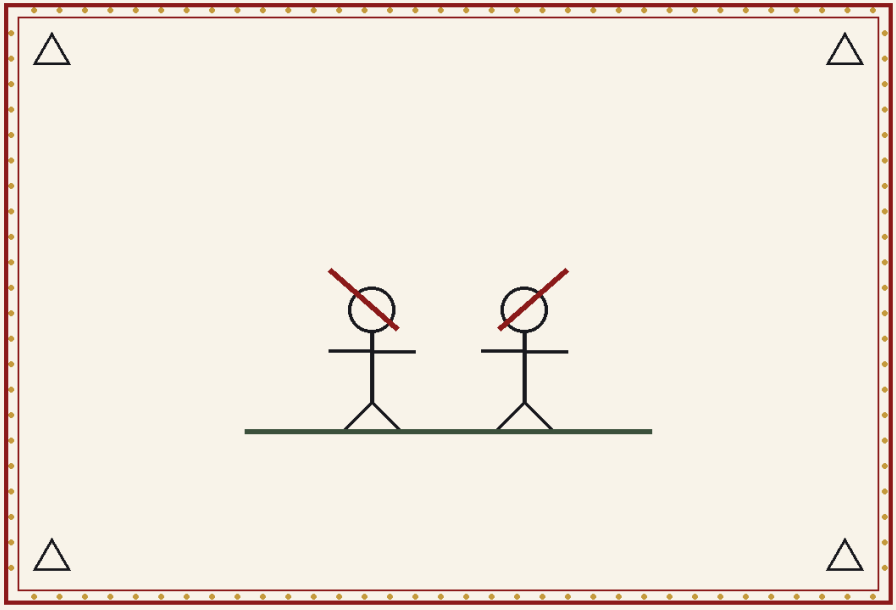

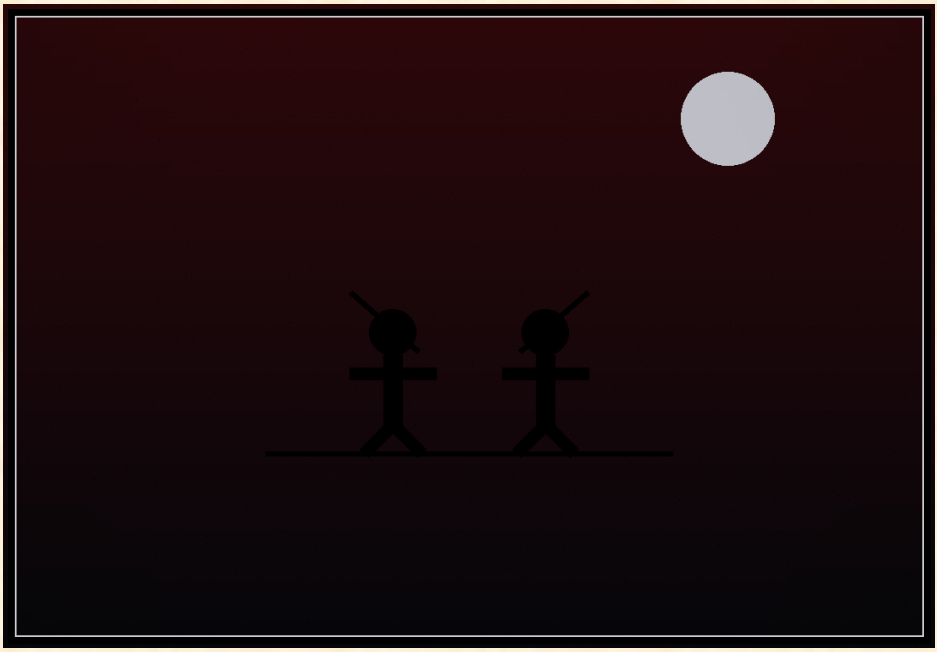

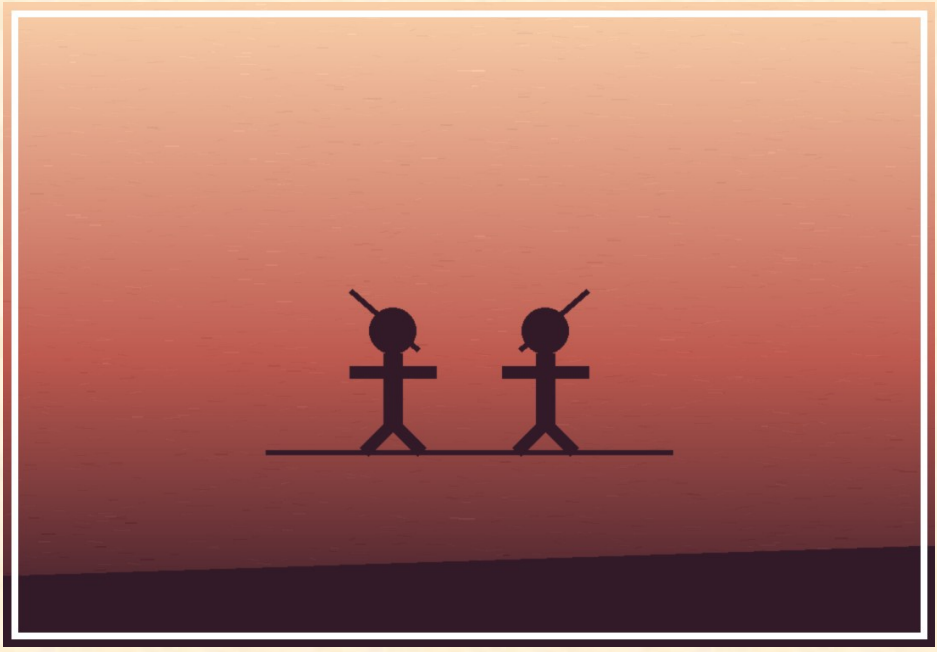

चित्र 1

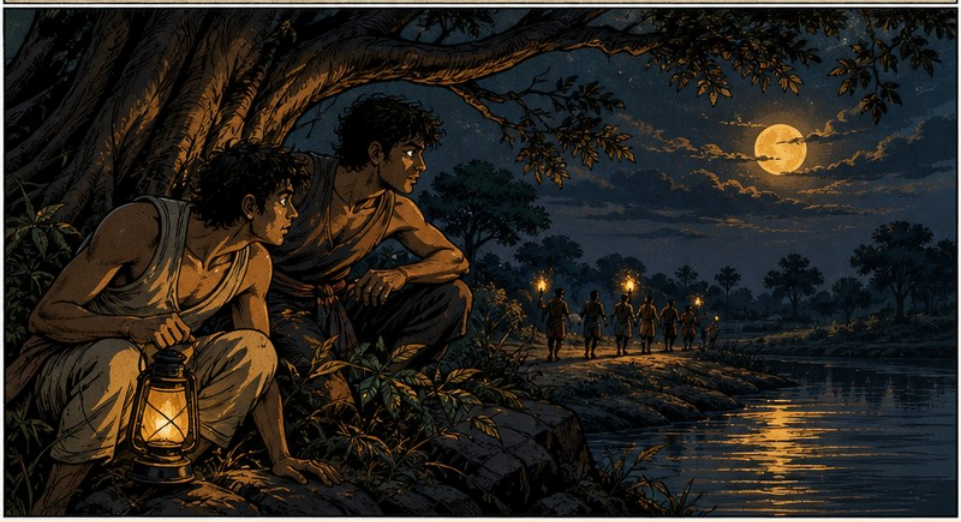

जोगियानगरमे रहै छलाह दू भाइ — दीना आ भदरी। मुसहर जातिक, खेती करैत। घरमे ने धन, ने धरती — छल त' खाली देह, आ देहमे एहन बल जकर चर्च कोसो-कोस धरि पसरल छल।

दुनू भाइ लग पाँच-पाँच मोनक कोदारि छलनि। पाँच मोन — माने एतेक भारी जे आन लोक ओकरा उठाबय त' कान्ह लचकि जाए। मुदा दीना-भदरीक हाथमे ओ कोदारि खेलौना जकाँ नाचैत छल। भोरे सूर्यक संग खेतमे उतरथि, आ साँझ धरि बिगहा भरि जमीन तामि दैथि — दिन भरिमे बिगहा भरि!

जे देखए से दाँत तर आंगुर दाबए। लोक कहए, 'ऐ दुनू भाइक बाँहिमे बसहा बरदक बल छै।' मुदा दीना-भदरी बलक घमण्ड नहि करथि। बल हुनका लेल रोटी छल, हथियार नहि — जाधरि केओ ओकरा हथियार बनबए पर विवश नहि करए।

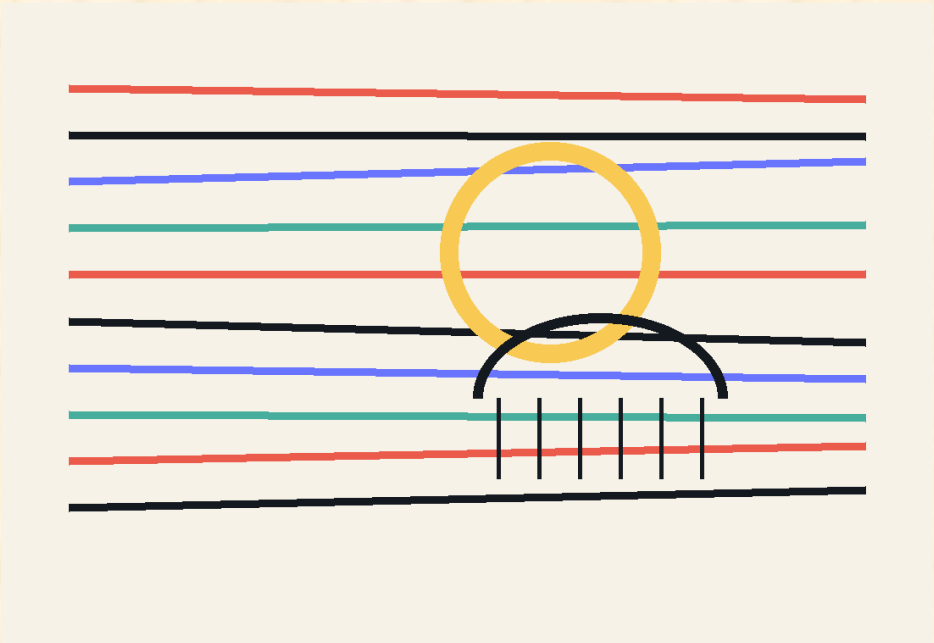

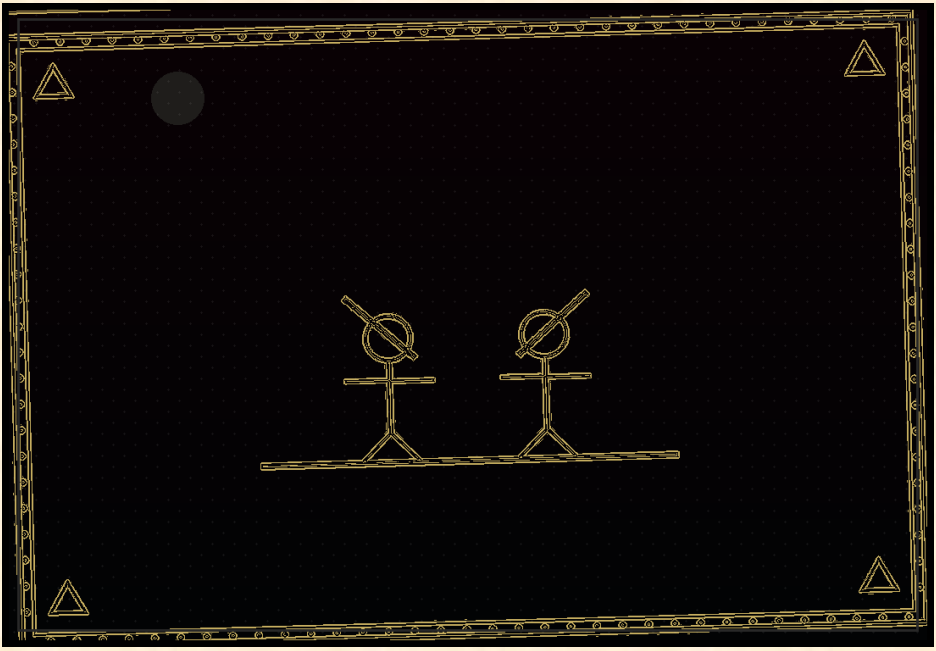

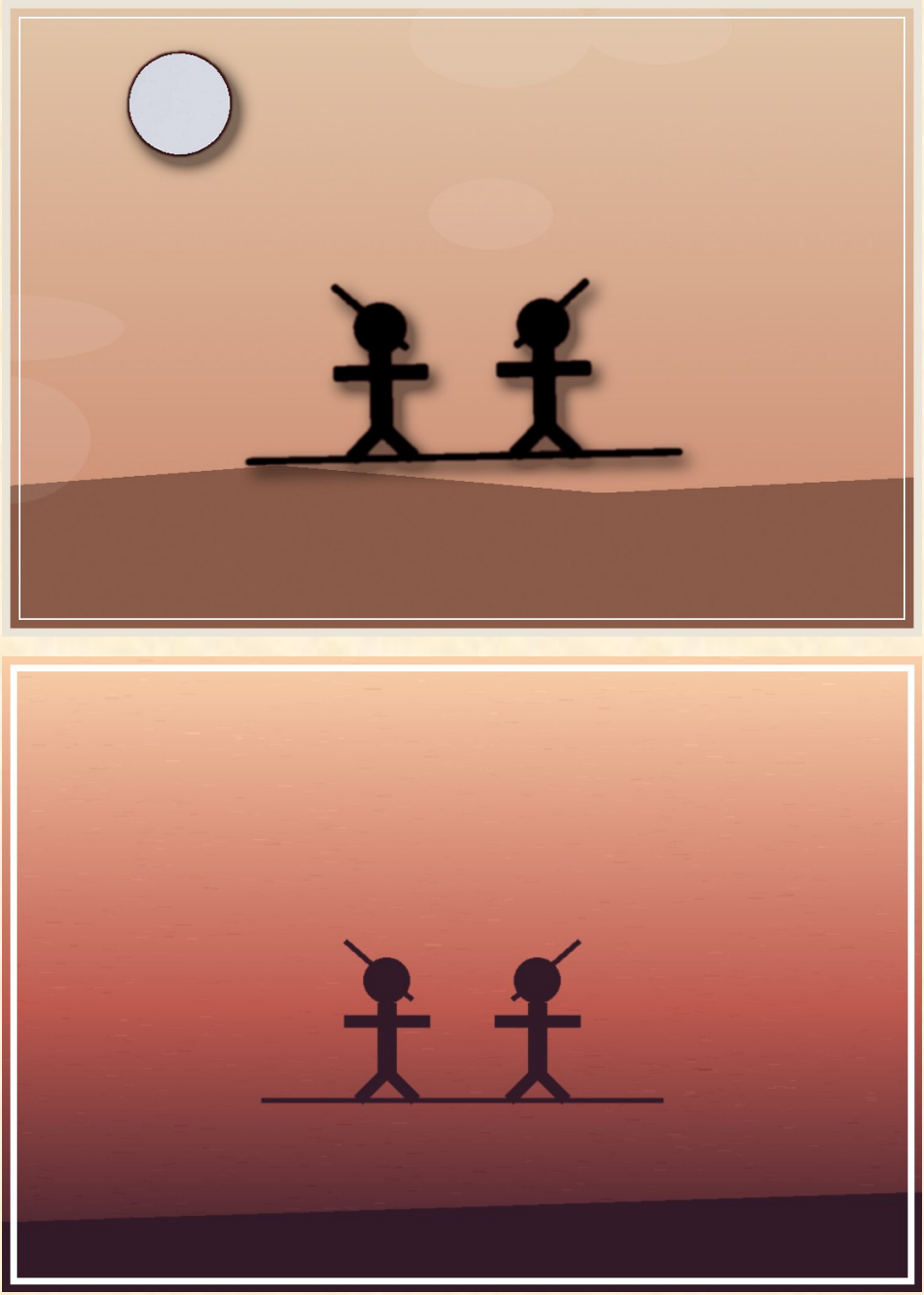

चित्र 2

साँझखन दुनू भाइ माए निरसो लग बैसथि। बूढ़ माए बेटा सभक हाथक ठेला देखि कहथि, 'एतेक खटैत किए छँह रौ?' दीना हँसथि, 'माए, माटि हमरा सभक माए थिक। एकर सेवामे थाकब केहन?' — ओहि घरमे धन नहि छल, मुदा धरम भरल छल।

आ यएह धरम, यएह बल, यएह नाम — एक दिन कालक कान धरि पहुँचि गेल। कारण नामक एकटा दोष होइत छै: ओ जतबा दूर जाइत अछि, ततबे दूरसँ शत्रु सेहो अनैत अछि।

अध्याय २ : जाँजरक जमीन्दार

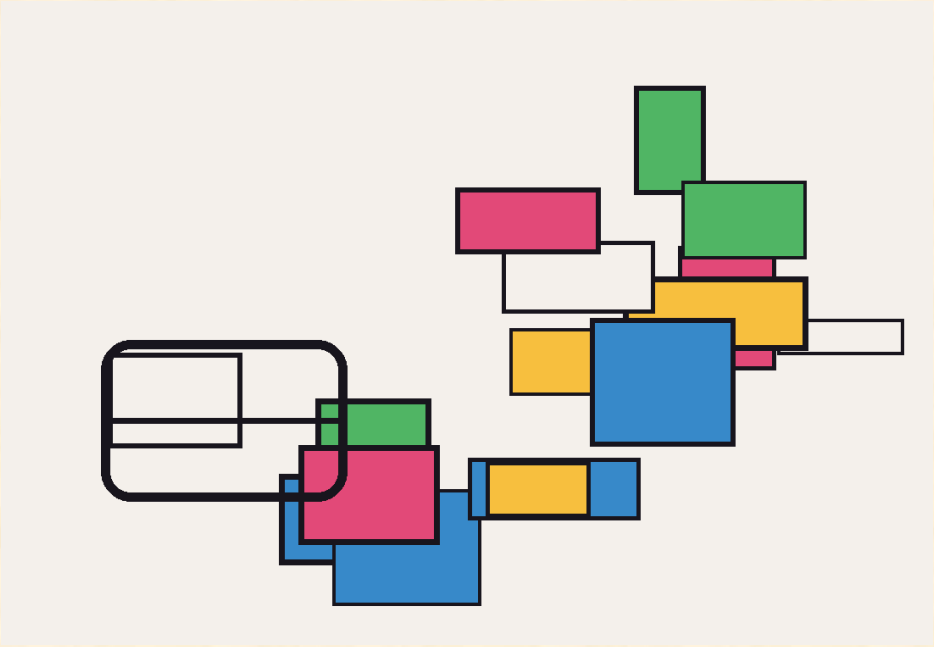

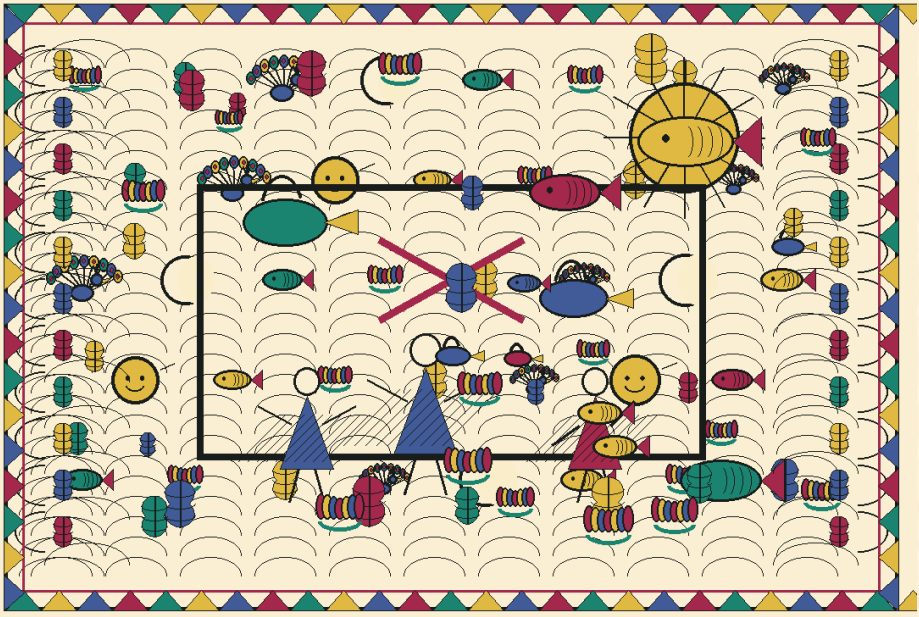

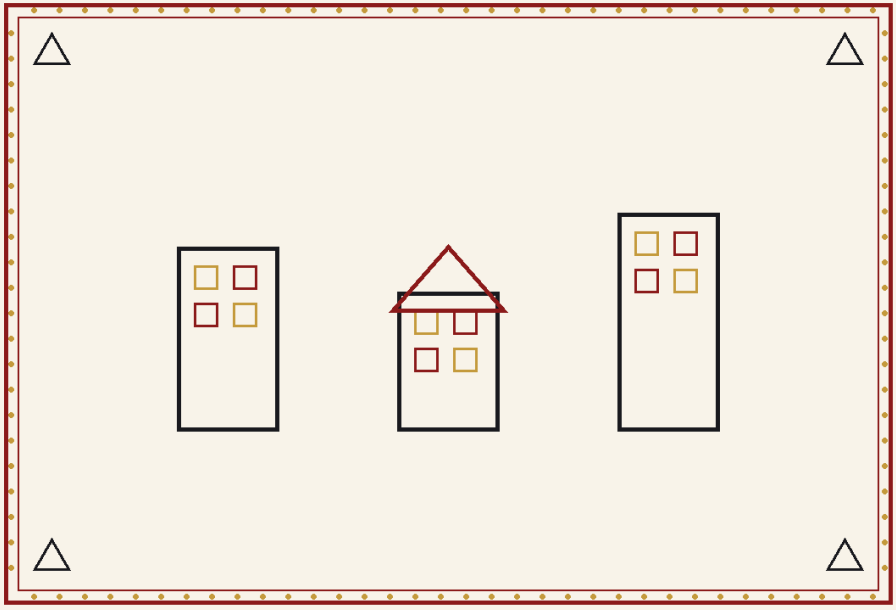

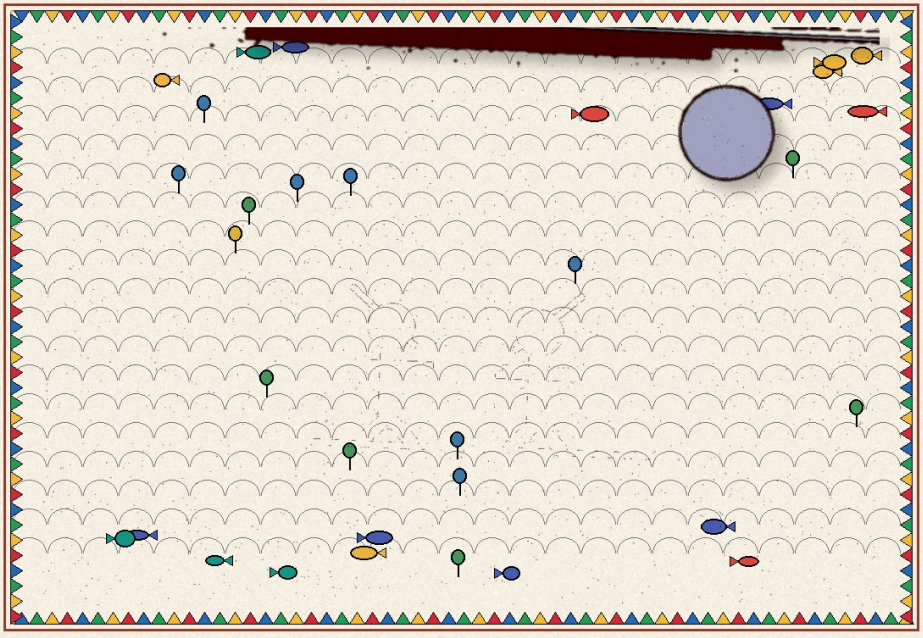

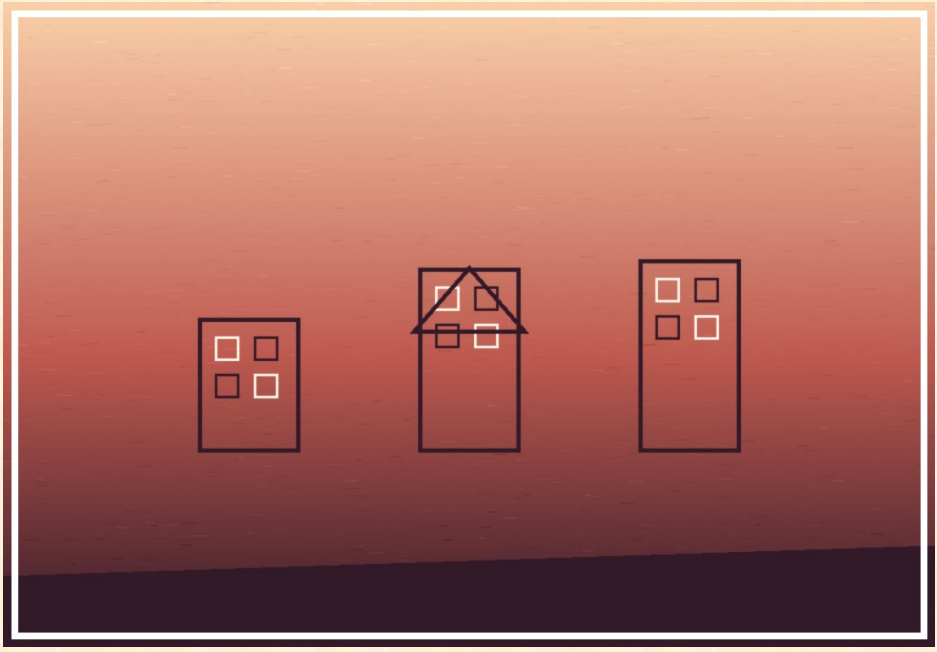

चित्र 3

जोगियानगरक बगलमे छल जाँजर गाम। ओतुक्का जमीन्दार छल कनक सिंह, आ ओकर पत्नी छलि बुधनी। धन दुनू लग अथाह छल, मुदा धनसँ बेसी छल दर्प — आ दर्पसँ बेसी छल क्रूरता।

बड़ बदमाश छल दुनू। बोनिहारकेँ ओ सभ मनुक्खे नहि बुझैत छल। काज पूरा लिअए, बोनि आधो नहि दिअए; कियो बाजए त' कोड़ाक मारि। जाँजरक खेत सभमे अन्न उपजैत छल, मुदा ओहि अन्नक सभ दानामे ककरो ने ककरो नोर मिलल छल।

बोनिहार सभ चुप छल — कारण बाजए के? जकर पेट दोसराक मुट्ठीमे हो, ओकर जीह अपने बन्हा जाइत छै। मुदा चुप्पीक सेहो एकटा सीमा होइत छै, आ ओ सीमा ओहि दिन लग आबि गेल जहिया कनक सिंहक कानमे दू भाइक नाम पड़ल।

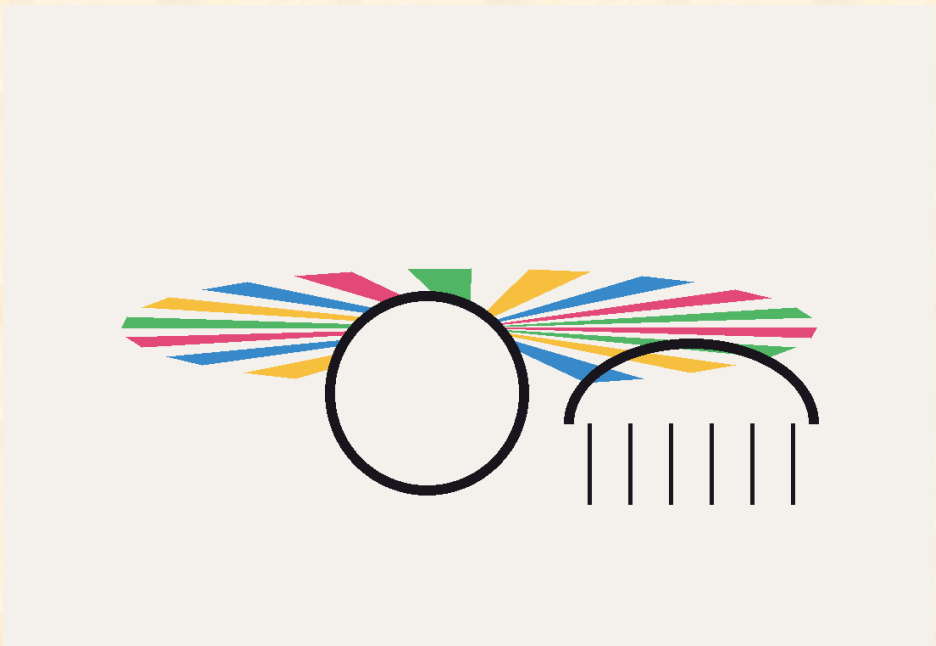

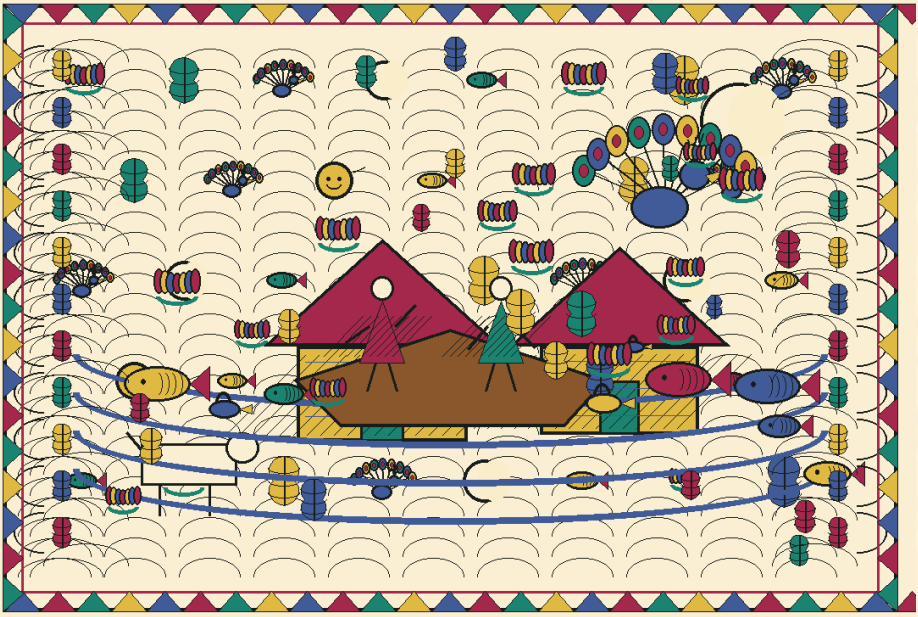

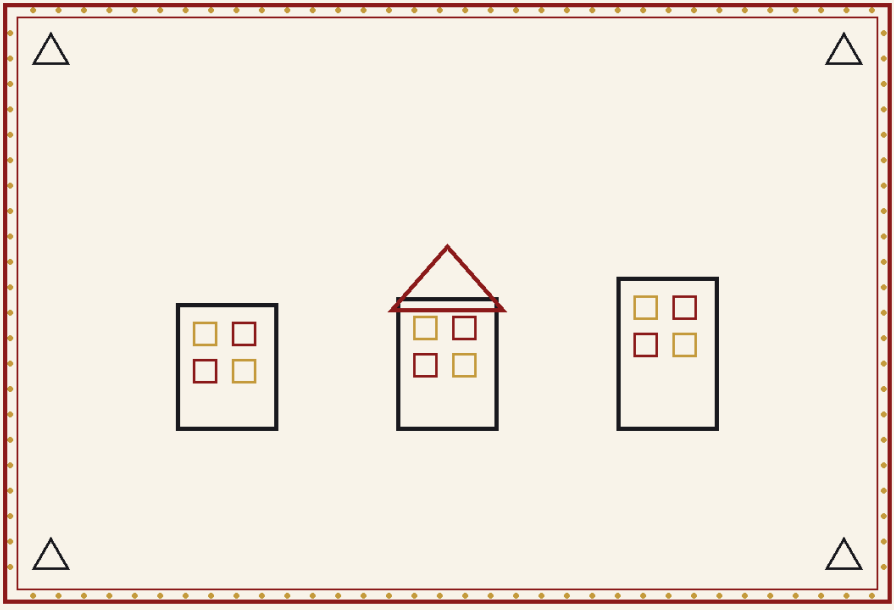

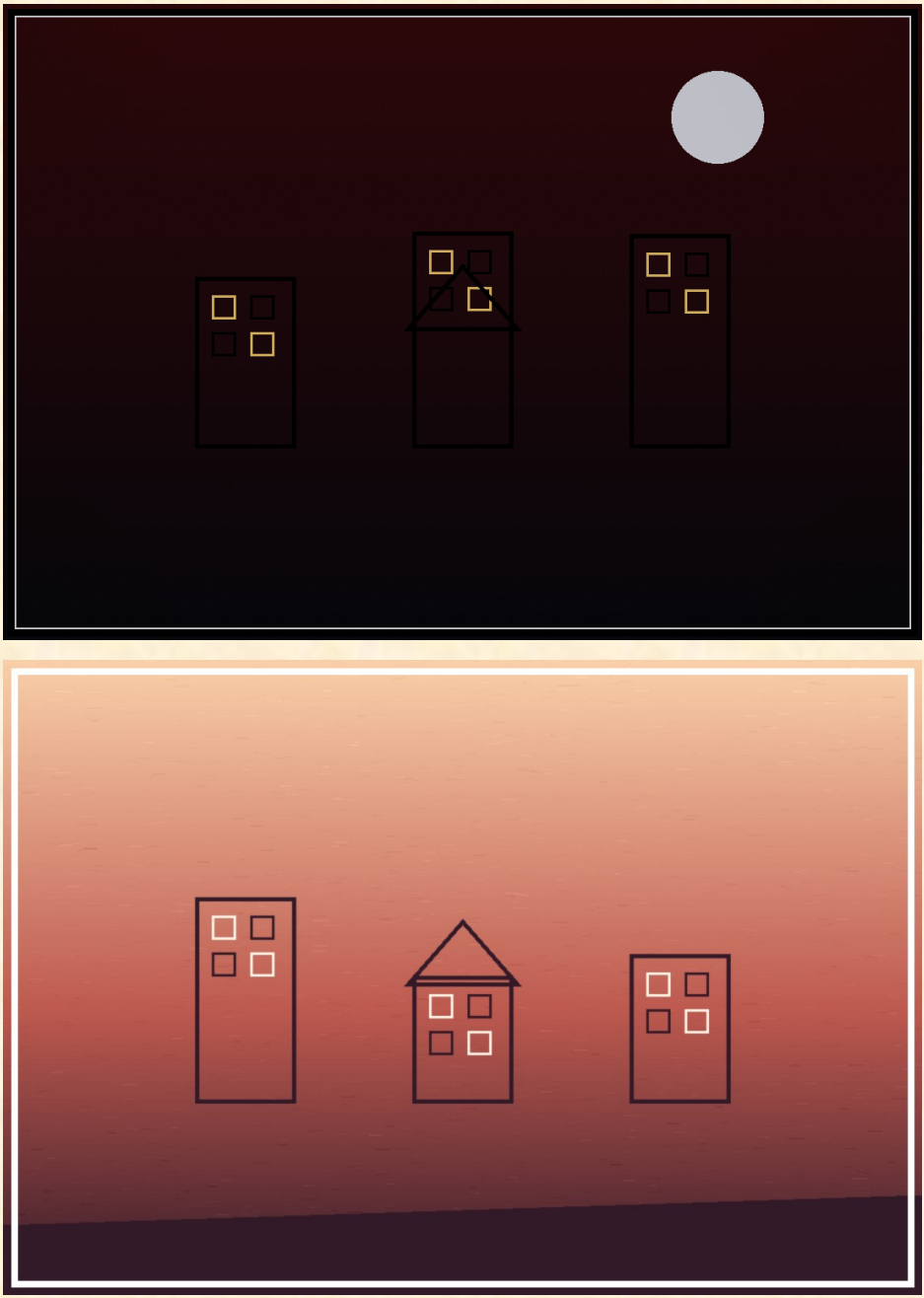

चित्र 4

कनक सिंहकेँ पता चललै जे जोगियानगरमे दीना-भदरी लग पाँच-पाँच मोनक कोदारि छै, आ ओ सभ दिन भरिमे बिगहा-बिगहा भरि जमीन तामि लैत छथि। जमीन्दारक आँखि चमकल — मुदा ओ चमक प्रशंसाक नहि छल। ओ चमक ओहन छल जेहन बहेलियाक आँखिमे सुग्गा देखि कऽ अबैत छै।

'एहन बड़द सन जोड़ी हमर खेतमे जोता जाए,' कनक सोचलक, 'त' जाँजरक उपज दुगुन भऽ जाए।' — मनुक्खकेँ बड़द बुझनिहारक यएह त' पहिल चीन्ह थिक।

अध्याय ३ : मारि कऽ छूटलाह

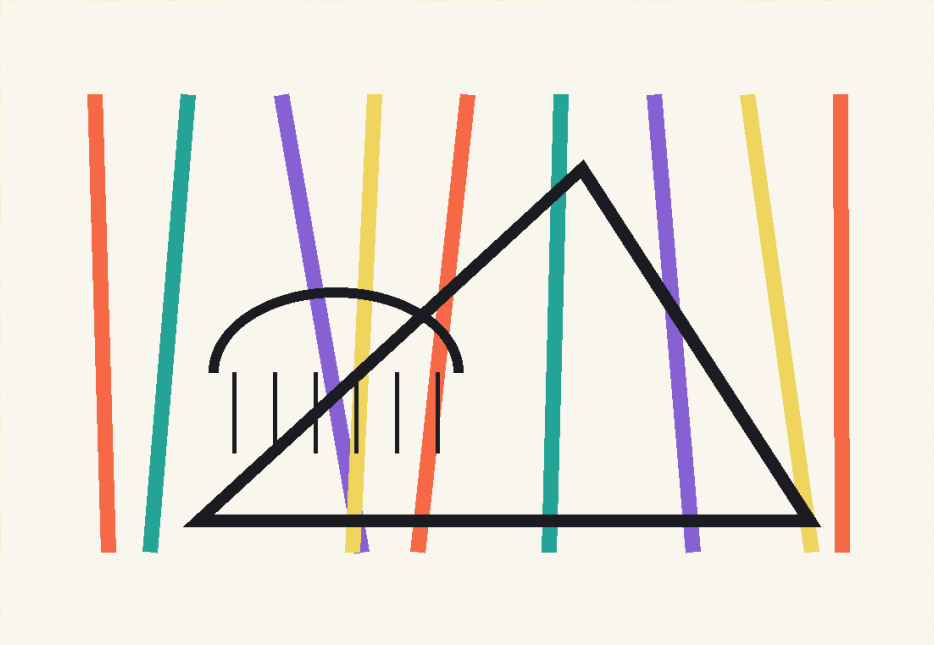

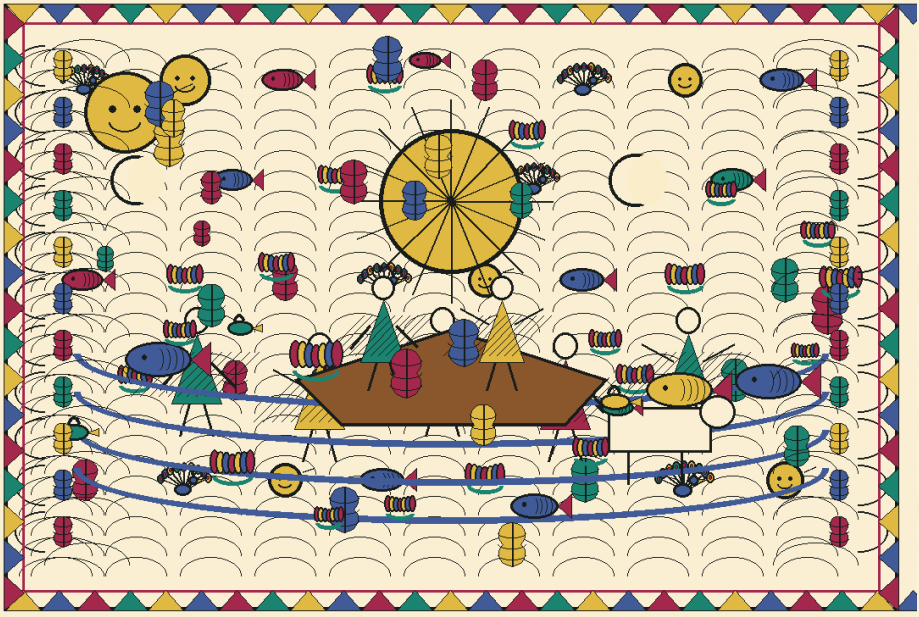

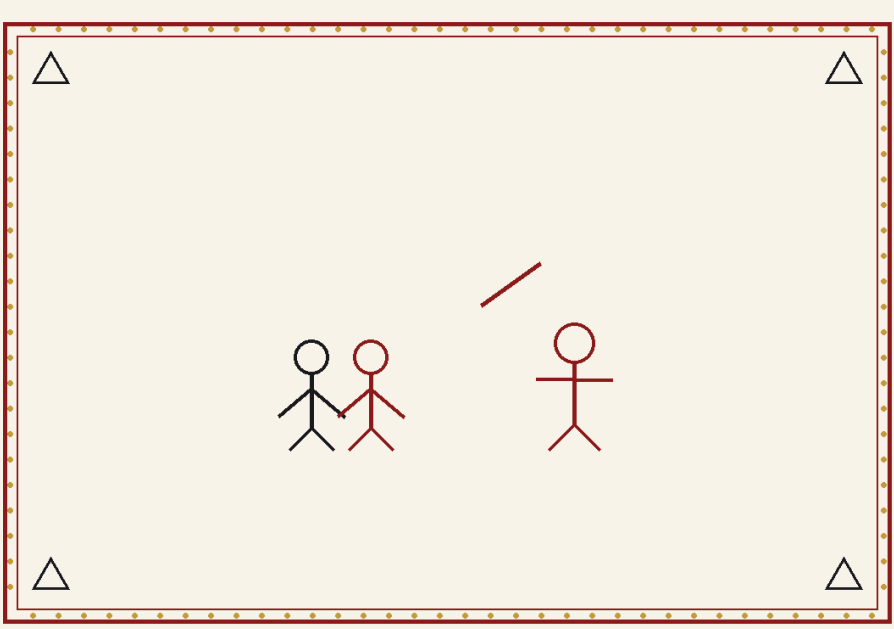

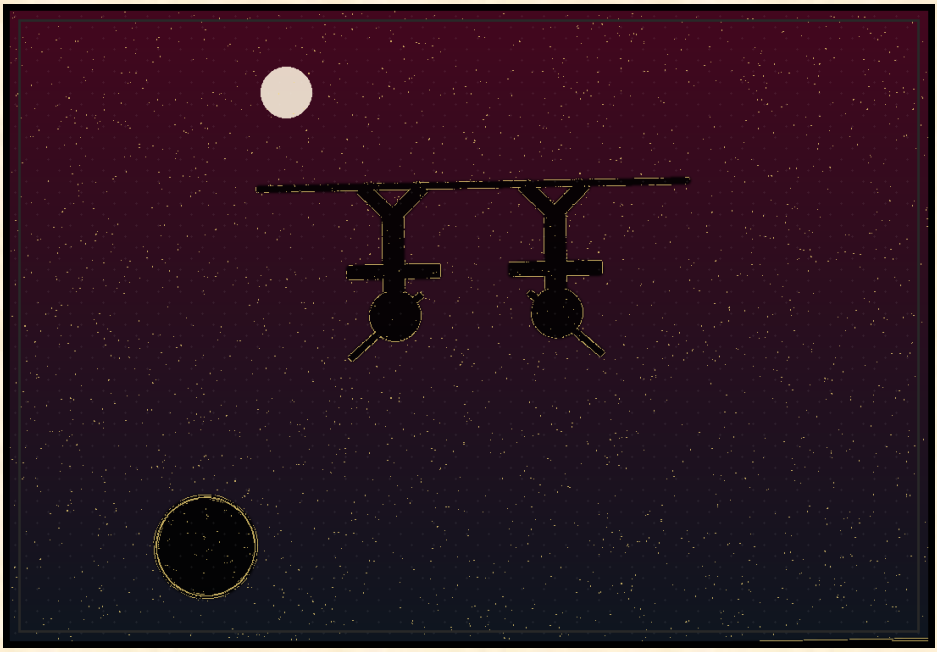

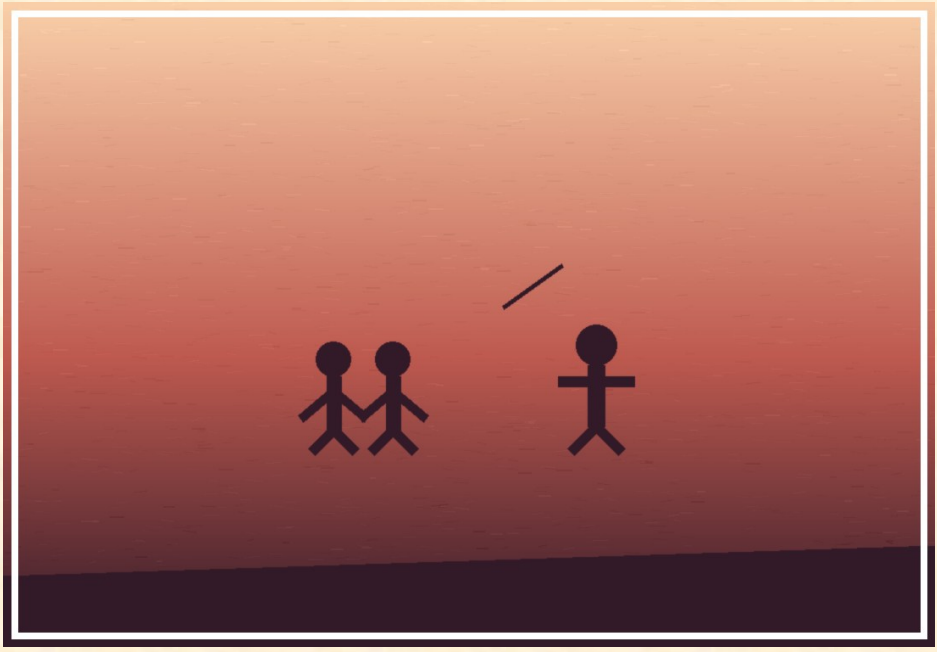

चित्र 5

कनक सिंह अपने जोगियानगर गेल। मुँहपर मीठ बोली, भीतरमे जाल — 'दीना-भदरी! अहाँ सभक बलक चर्च सुनलहुँ। हमर गाम चलू, खेती करू, मालामाल कऽ देब।'

मुदा दीना-भदरी आन्हर नहि छलाह। हुनका बुझल छलनि जे कनक सिंहक 'मालामाल' क अर्थ की होइत अछि — जाँजरक बोनिहारपर होइत अत्याचारक खिस्सा कोदारिक संग-संग हुनको कान धरि पहुँचल छल। भूखल पेटक पीड़ा, पीठपर कोड़ाक दाग, आ आधा बोनिपर टूटैत घर — सभटा।

दीनाक भौंह तनि गेल। 'जे अपन बोनिहारकेँ मनुक्ख नहि बुझए, तकर खेतमे हमर कोदारि नहि उतरत।' कनक सिंह गरजल — गरजब जमीन्दारक पुरान हथियार। मुदा एहि बेर सोझाँमे बोनिहार नहि, दीना-भदरी छलाह।

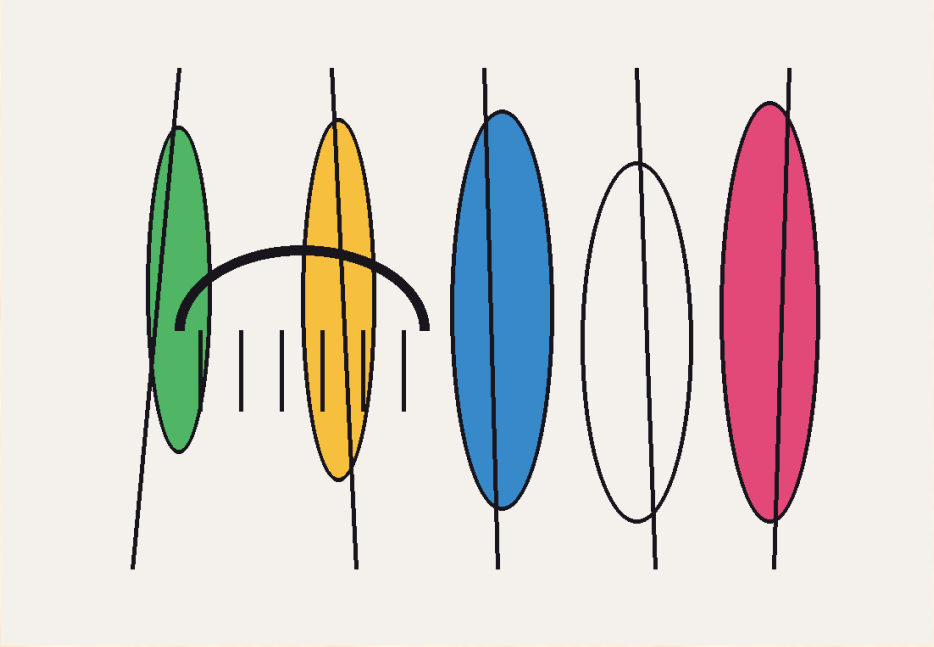

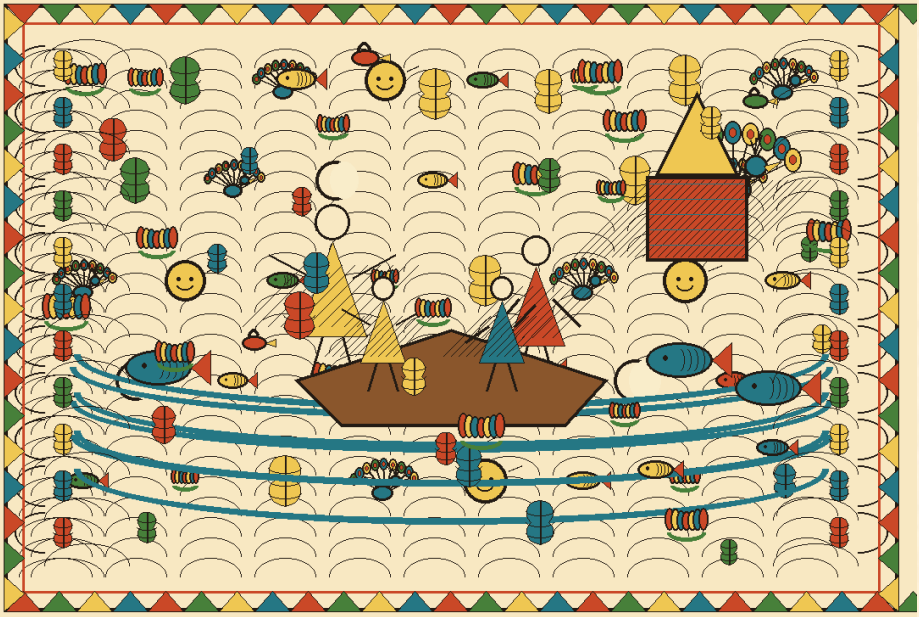

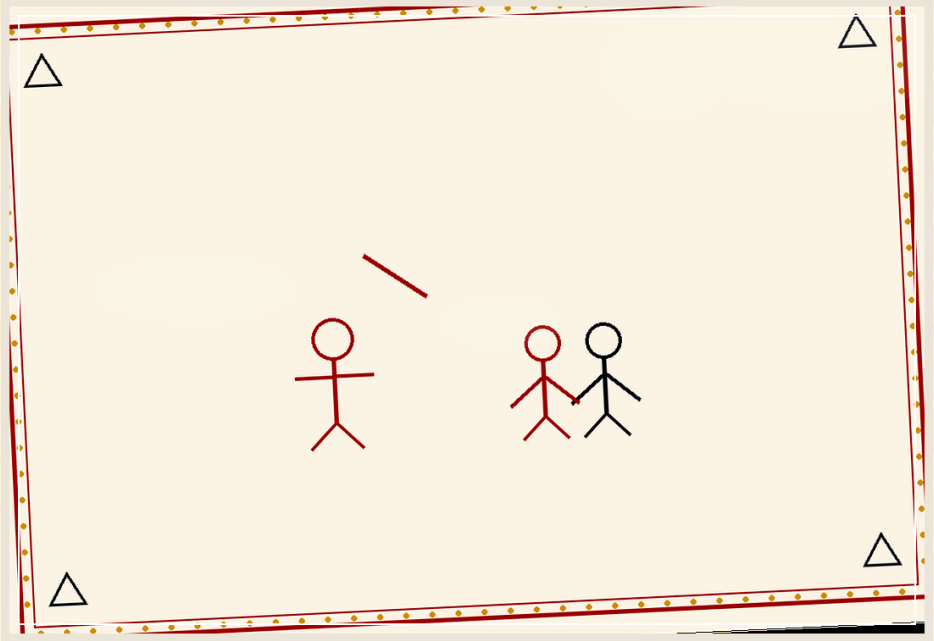

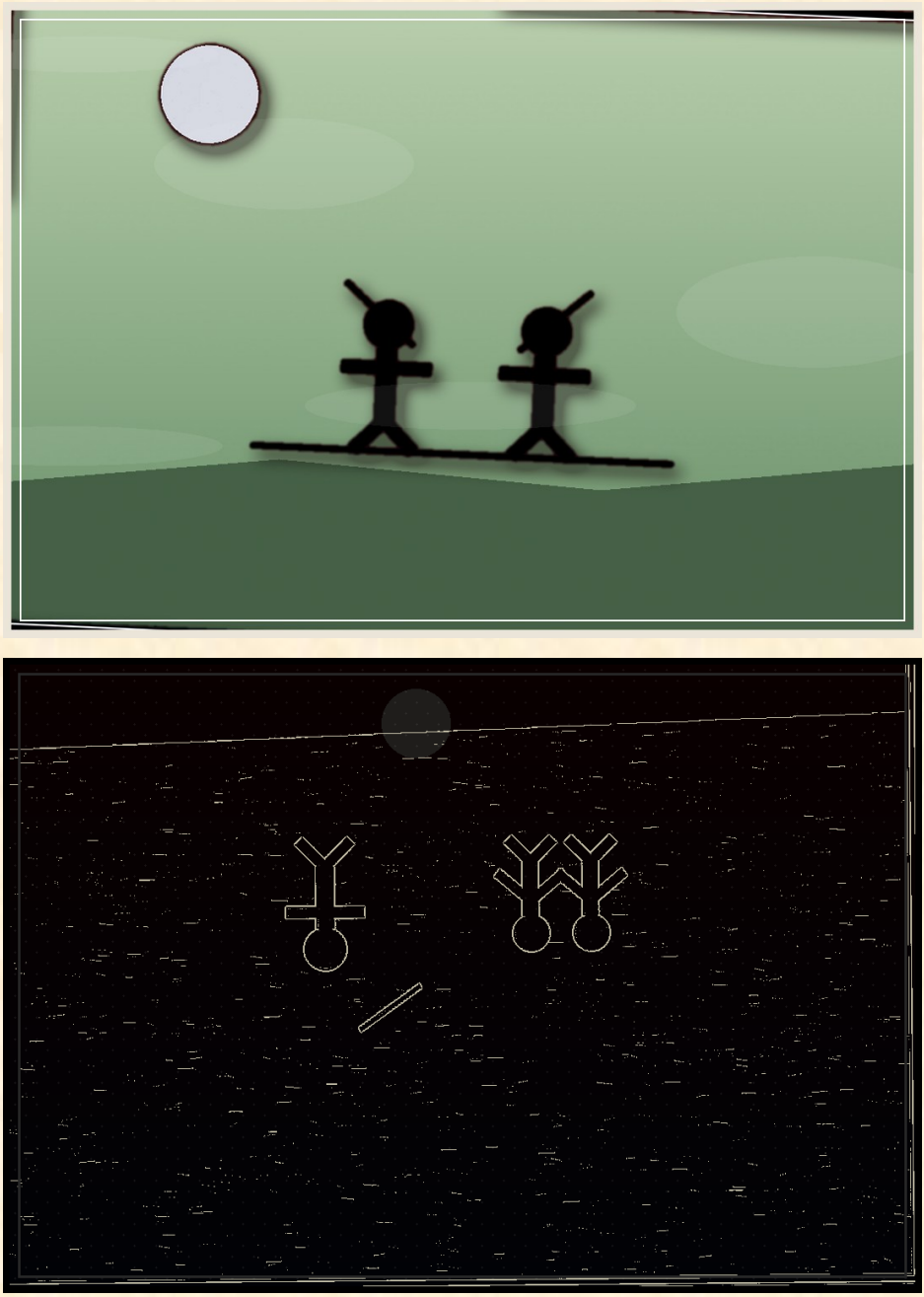

चित्र 6

मारि-मारि कऽ छूटलाह दुनू भाइ कनक सिंहपर। जमीन्दार, जकर एक इशारापर गाम काँपैत छल, ओहि दिन जोगियानगरक माटिपर लोटैत-पड़ाइत अपन गाम भागल। पाछाँ-पाछाँ हँसी दौड़ल — बोनिहार सभक दबल हँसी, जे बरखोसँ बहराइक बाट ताकि रहल छल।

दीना-भदरी घुरि कऽ अपन खेतमे लागि गेलाह, जेना किछु भेले नहि हो। मुदा किछु भेल छल — आ बहुत पैघ भेल छल। कनक सिंह त' पीठ देखा कऽ भागल, मुदा ओकर अपमान जाँजरक हवेलीमे पहुँचि कऽ आगि बनि गेल। आ ओहि आगिकेँ हवा देलक बुधनी।

अध्याय ४ : बुधनीक वर

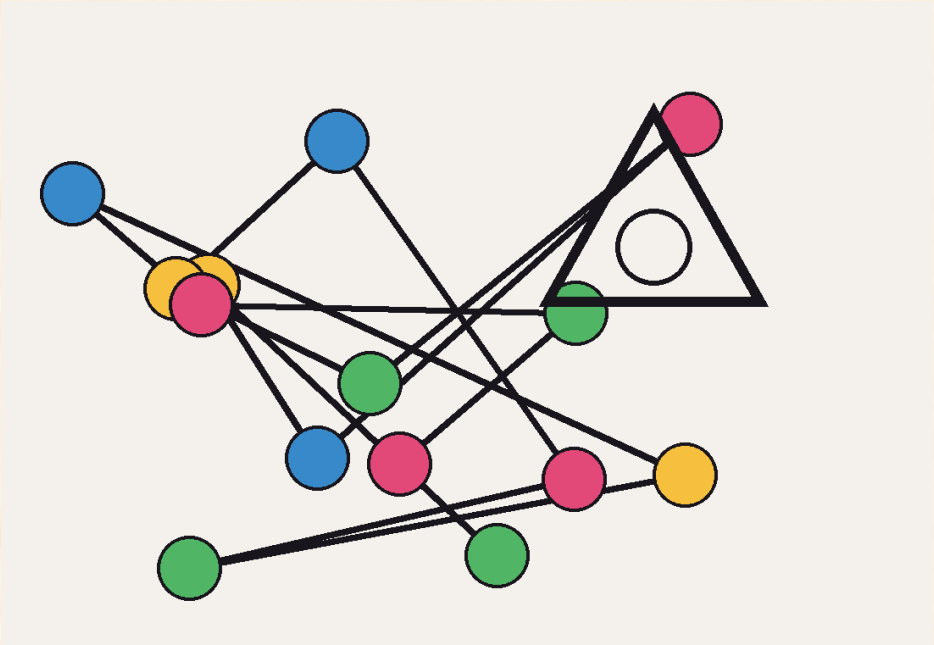

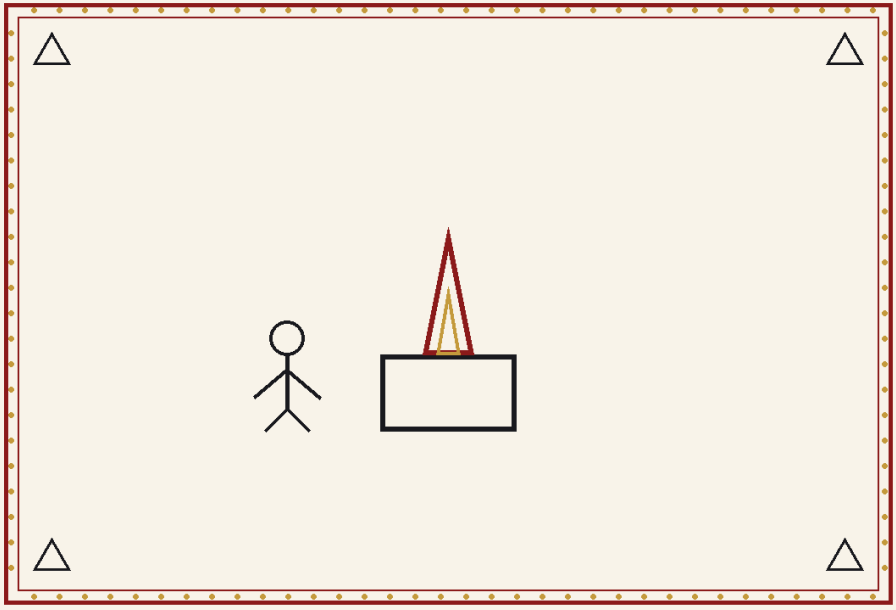

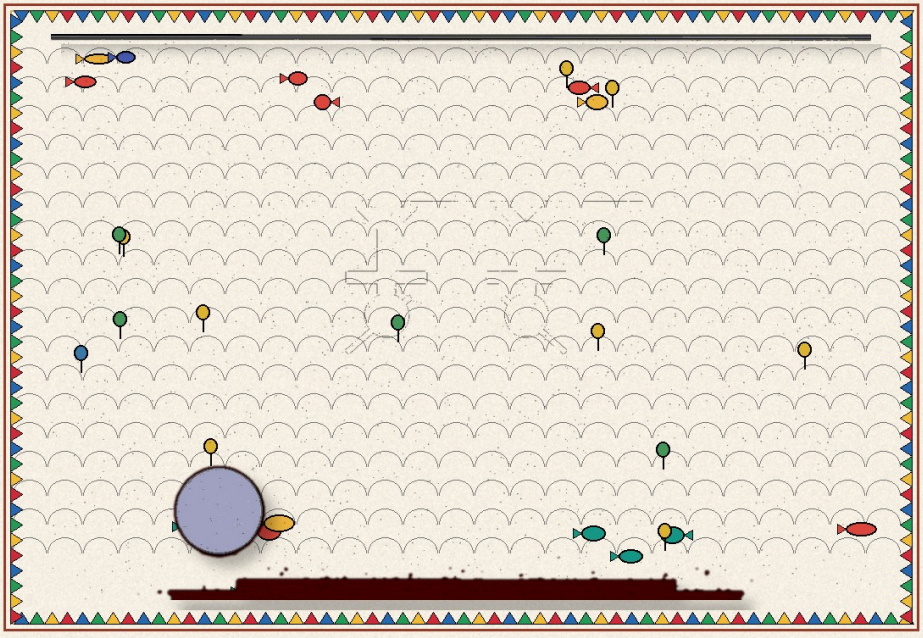

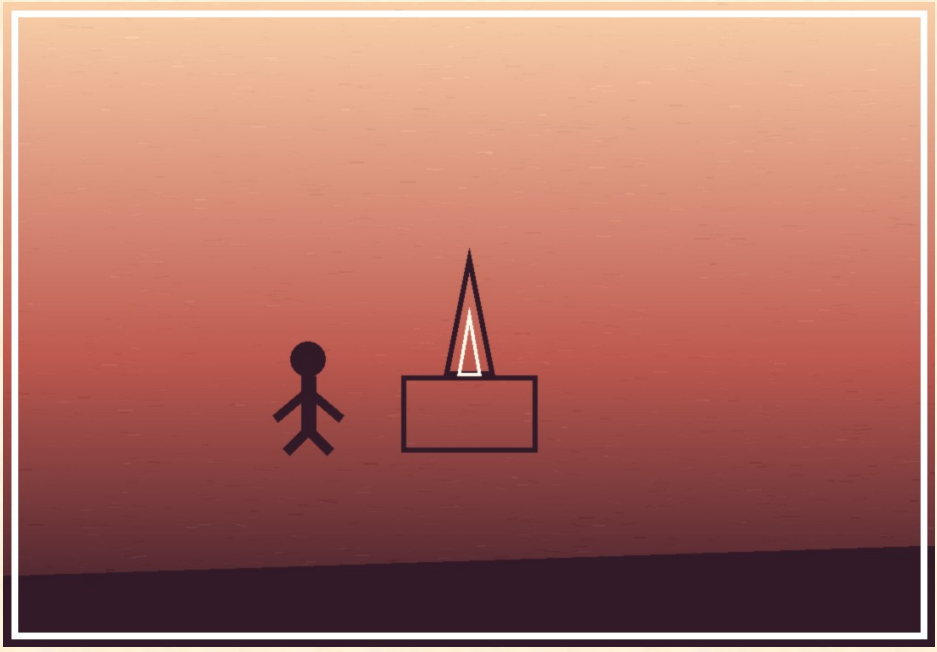

चित्र 7

बुधनीकेँ जखन पता चललै जे ओकर पतिकेँ दू मुसहर भाइ मारि कऽ भगा देलक, त' ओ ने कानलि, ने चिचियेली। ओ चुप भऽ गेलि — आ क्रूर लोकक चुप्पी गरजबसँ बेसी डराओन होइत अछि।

ओ सलहेस थान गेलि। राजा सलहेस — वीरताक देवता, बोनक जानवरक स्वामी, जिनक थानपर मिथिलाक लोक माथ टेकैत अछि। बुधनी ओतय कठोर तपस्या केलक — अन्न त्यागि, निन्न त्यागि, हठ ठानि। तपक अपन नियम छै: ओ तपस्वीक नेत नहि देखैत, खाली तप देखैत अछि।

सलहेस प्रकट भेलाह। 'माँग, की चाही!'

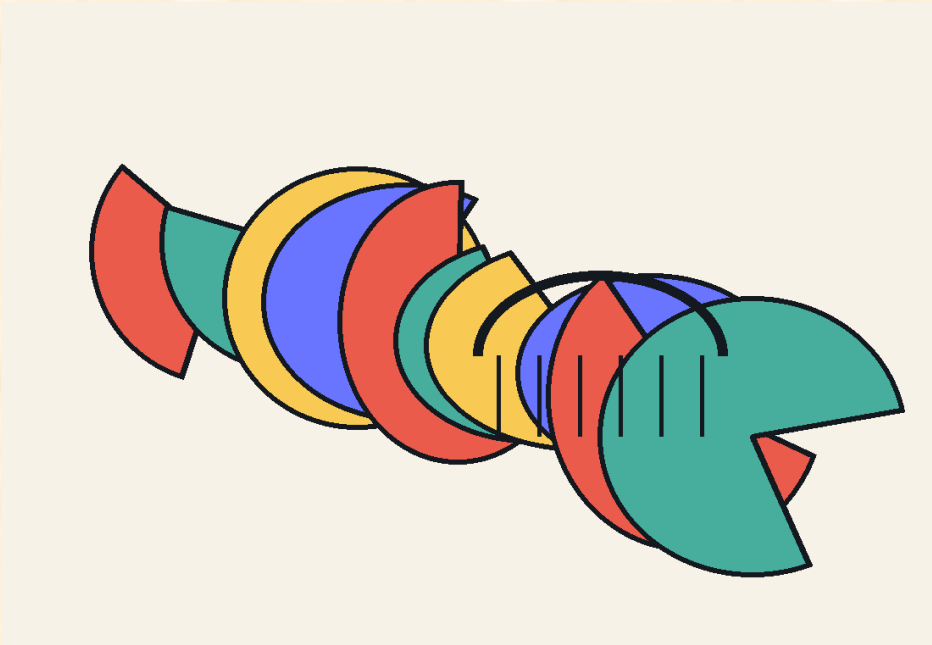

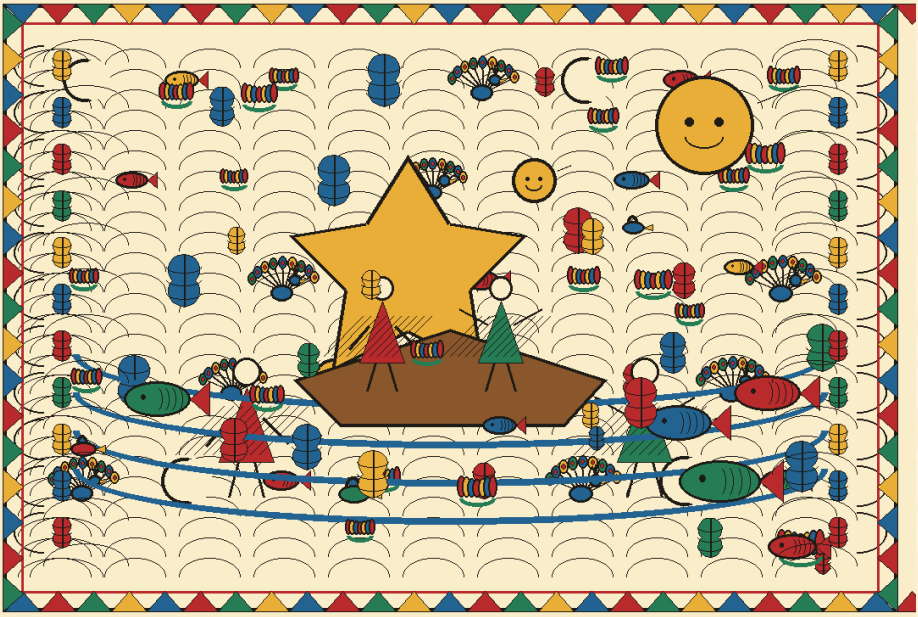

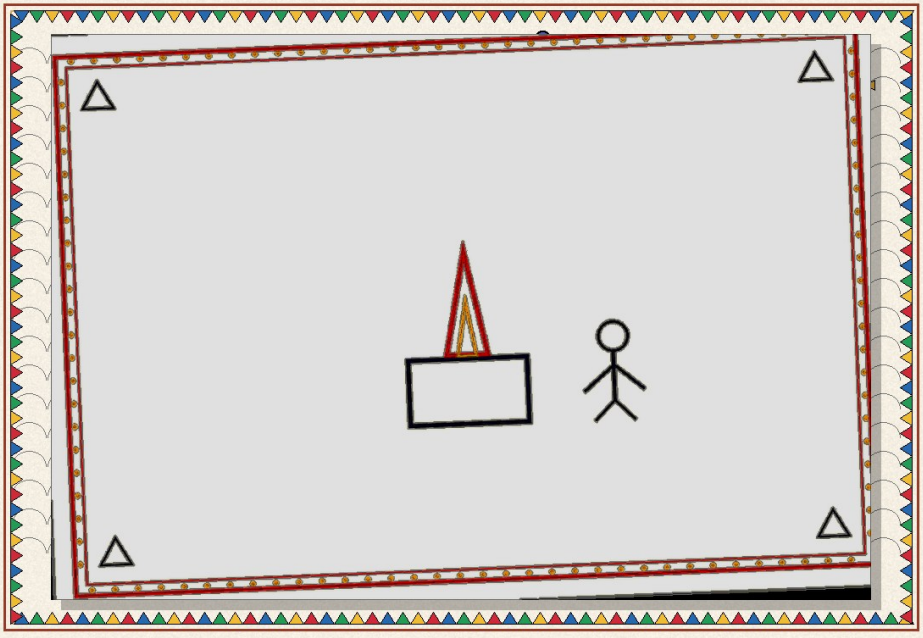

चित्र 8

बुधनी आँखि उठौलक, आ ओकर मुँहसँ जे बहराएल से सुनि देवतो सिहरि गेलाह — 'दीना-भदरीक प्राण।'

'आह!' — सलहेसक मुँहसँ खाली एतबे निकलल, आ ओ मूर्छित भऽ गेलाह। जे देवता वीरक रक्षा करैत छथि, तिनकेसँ वीरक प्राण माँगल गेल! मुदा वचन त' वचन — देवता वचनक हारल छलाह। की करताह? होश एला पर सलहेसक आँखिक आगाँ दूटा बाट छल: वचन तोड़थि त' देवत्व टूटए, वचन राखथि त' न्याय टूटए। आ नियतिक सभसँ करुण खेल यएह — जे ओ कखनो काल देवतोकेँ विवश कऽ दैत अछि।

अध्याय ५ : सलहेसक सपना

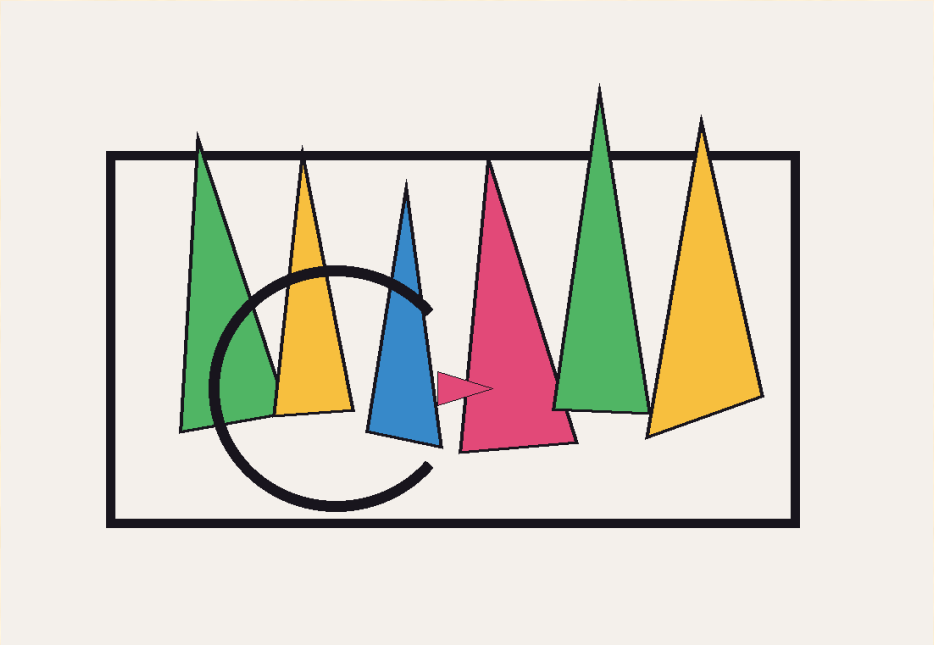

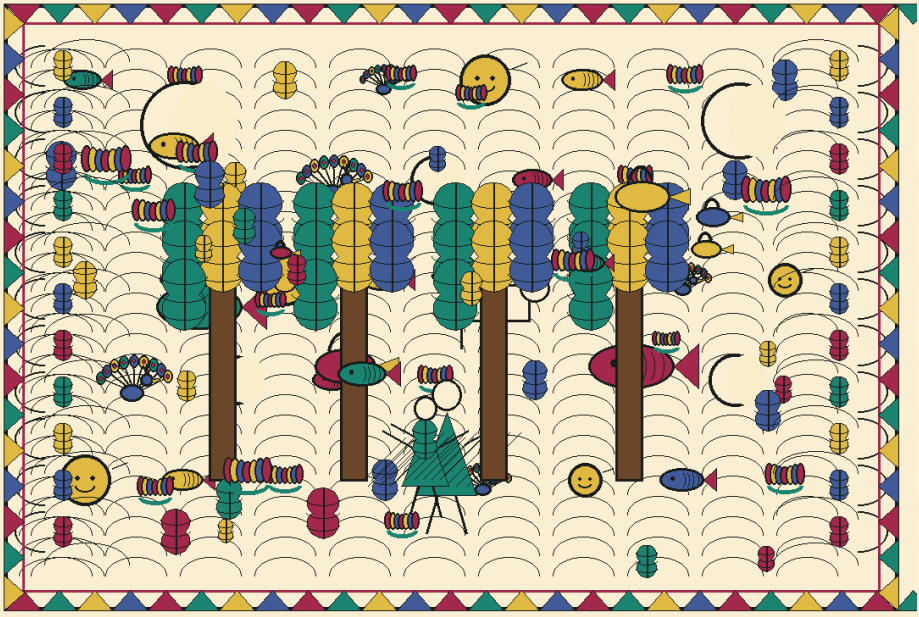

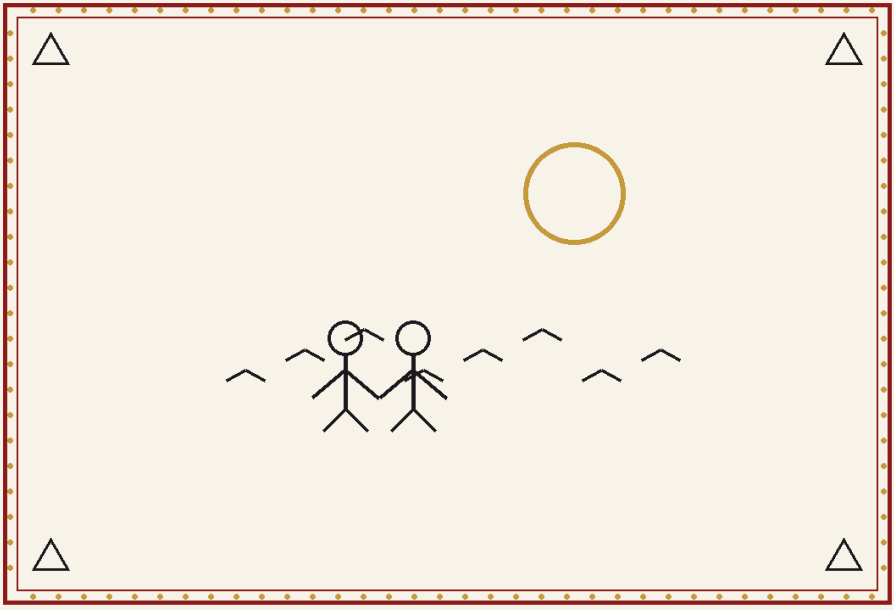

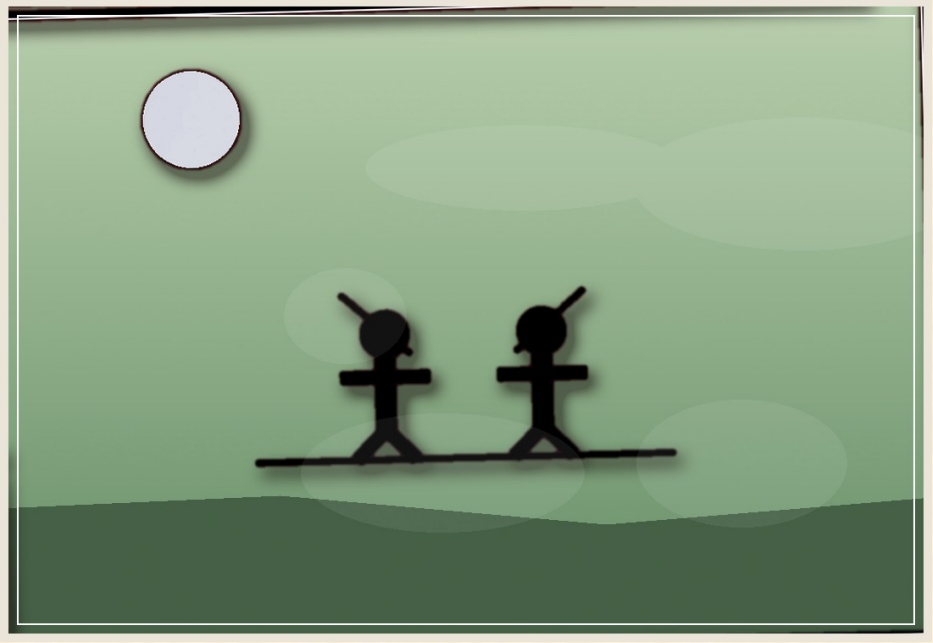

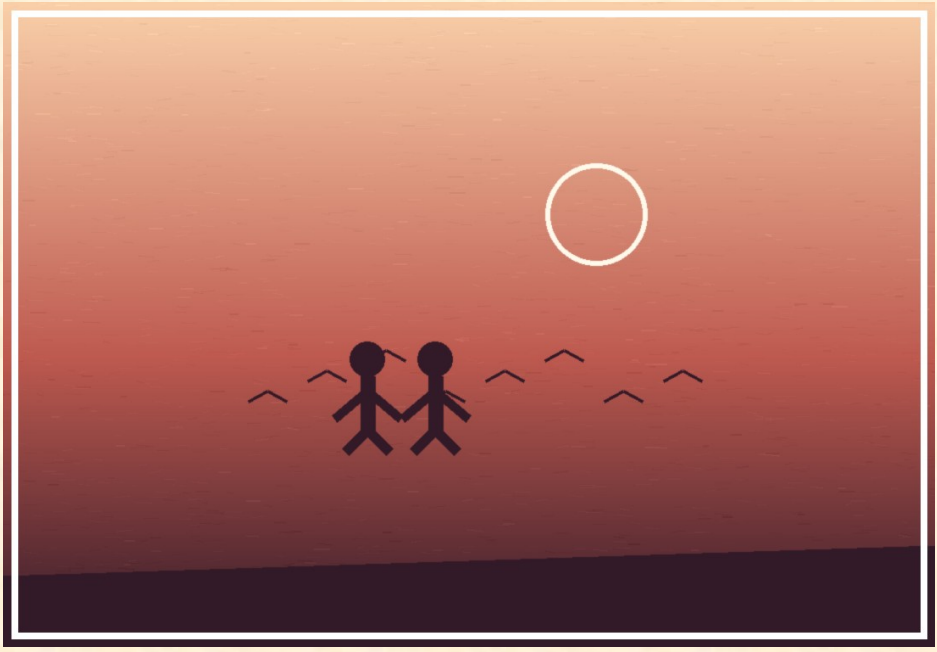

चित्र 9

ओही राति जोगियानगरमे दीना-भदरी सुतल छलाह — दिन भरिक तामल माटिक गन्ध देहमे नेने। आ हुनक निन्नमे सलहेस उतरलाह।

सपनामे देवताक स्वर आएल — 'कटैया बोनमे आउ। बड्डु शिकार भेटत।'

शिकार! दुनू भाइक आँखिमे निन्नोमे चमक आबि गेल। मुसहरक बेटा लेल शिकार खाली मनोरंजन नहि — मासु छल, पावनि छल, पुरुषार्थक परीक्षा छल। आ बजओनिहार स्वयं सलहेस छलाह — बोनक जानवरक देवता! हुनक बजाहटिपर सन्देह के करए?

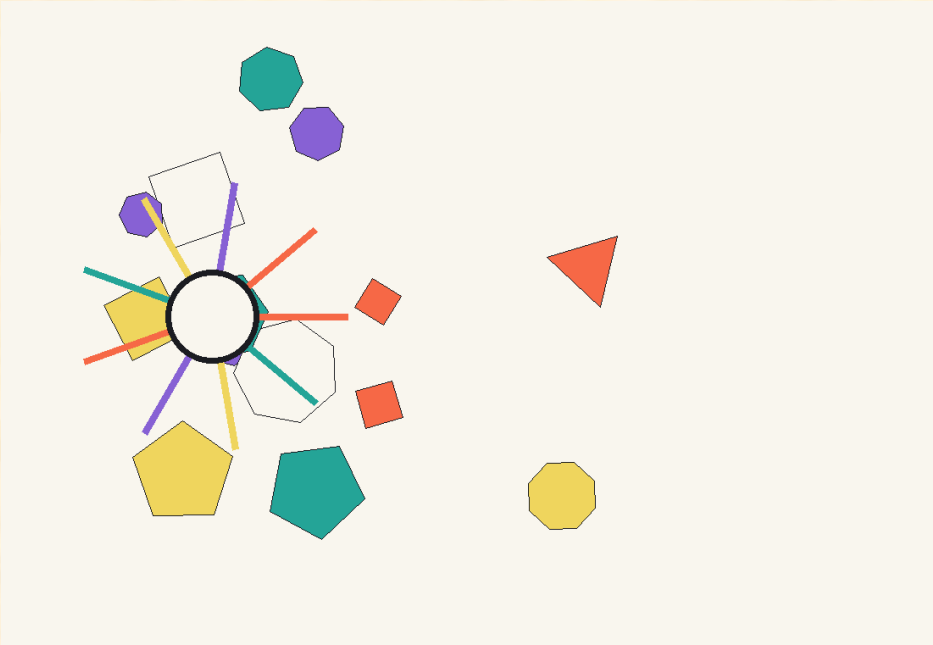

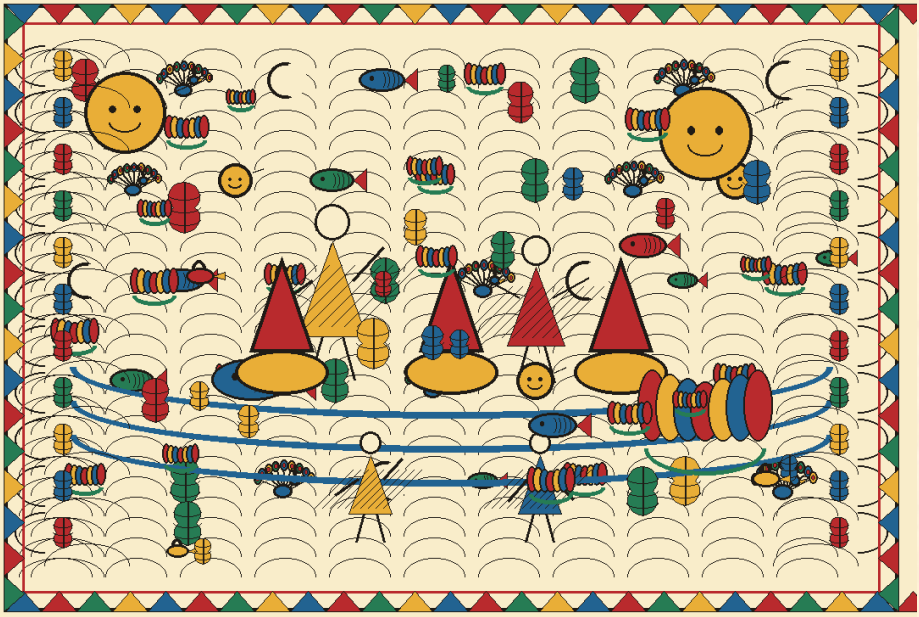

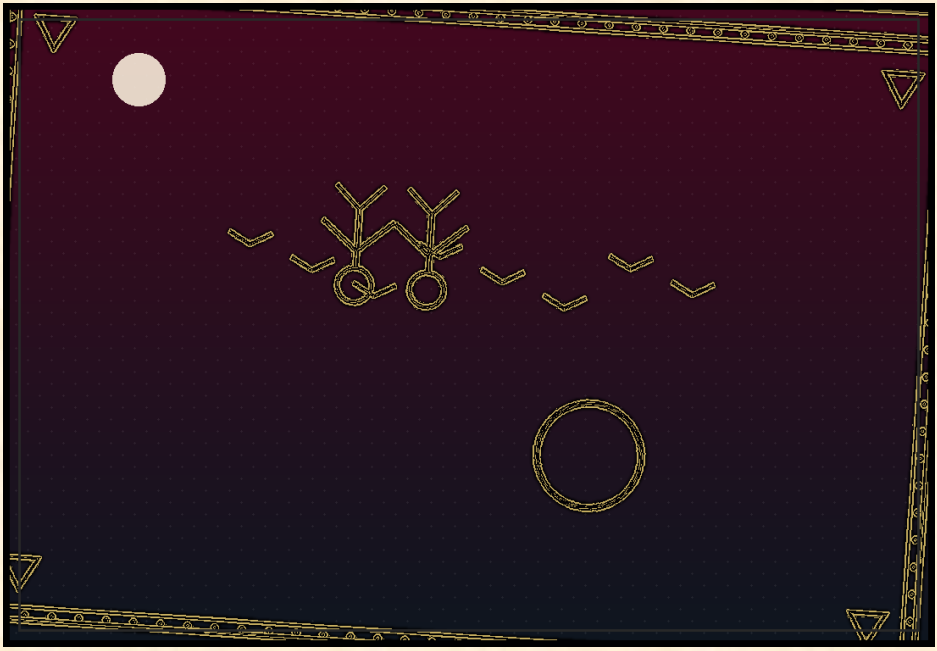

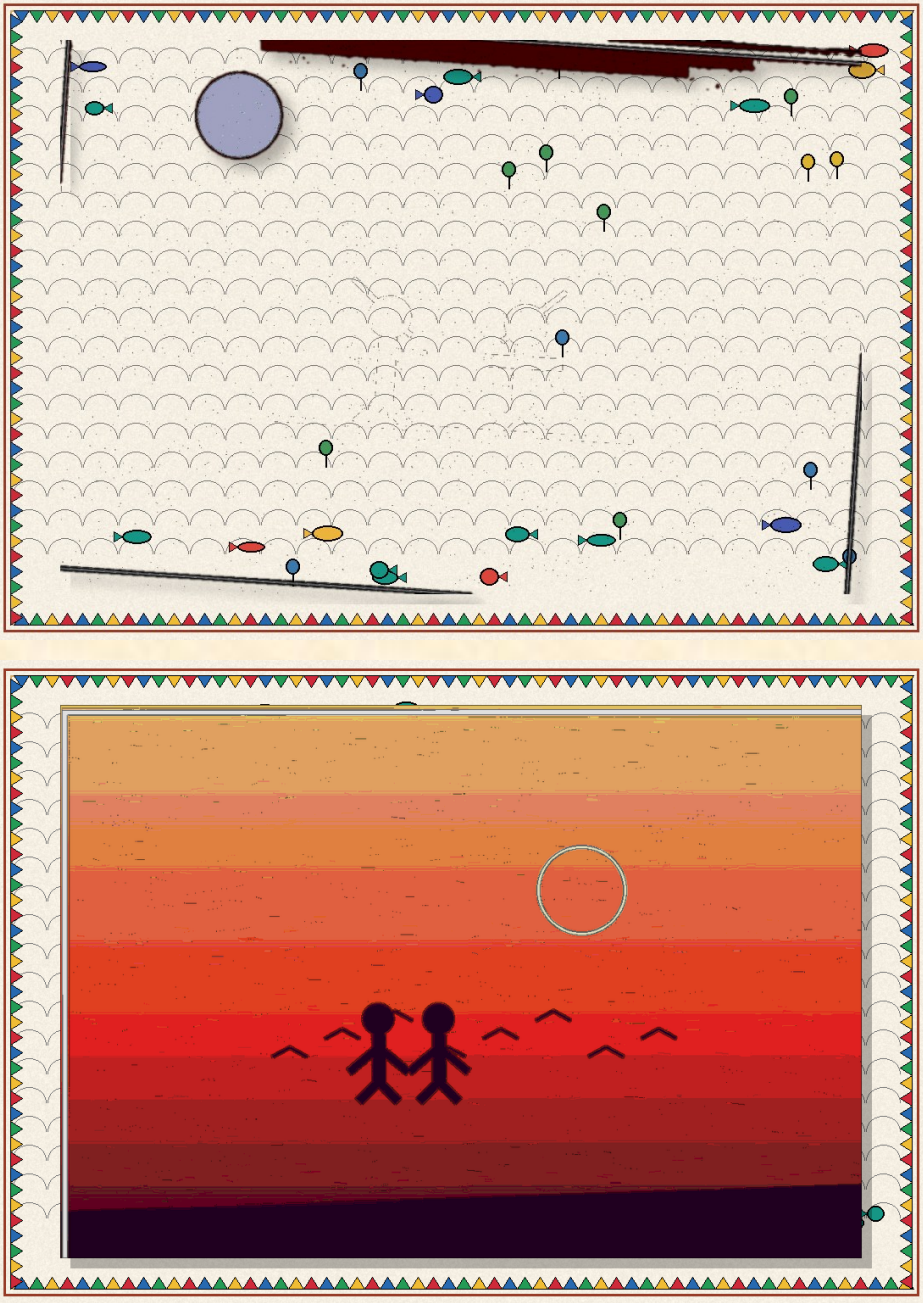

चित्र 10

मुदा सपना दैत काल सलहेसक अपन करेज कतेक कानल हएत — से सपनामे नहि देखाइ पड़ल। देवता अपन प्रियकेँ अपने मृत्युक बाट देखा रहल छलाह, कारण वचनक सिक्कड़ हुनक गरामे बान्हल छल। जाल ओछाओल गेल छल, आ जालक डोरी थमओनिहार अपने बन्हायल छलाह।

भोर होइते दीना भदरीकेँ सपना कहलनि, भदरी दीनाकेँ — दुनूकेँ एक्कहि सपना! फेर त' सन्देहक कोनो स्थान नहि रहल। 'सलहेस बजओने छथि,' दीना कहलनि, 'आ हुनक बजाहटि टारब पाप।' — जालमे फँसय लेल आब अपने पएरे चलि कऽ ओ सभ जाल दिस बिदा भेला।

अध्याय ६ : अमावस्याक बिदाई

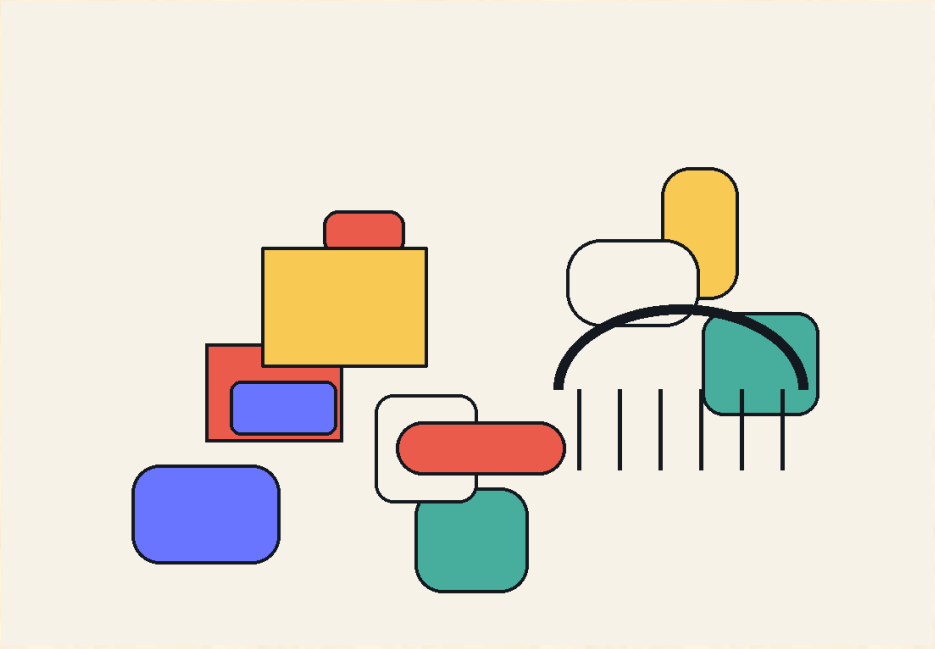

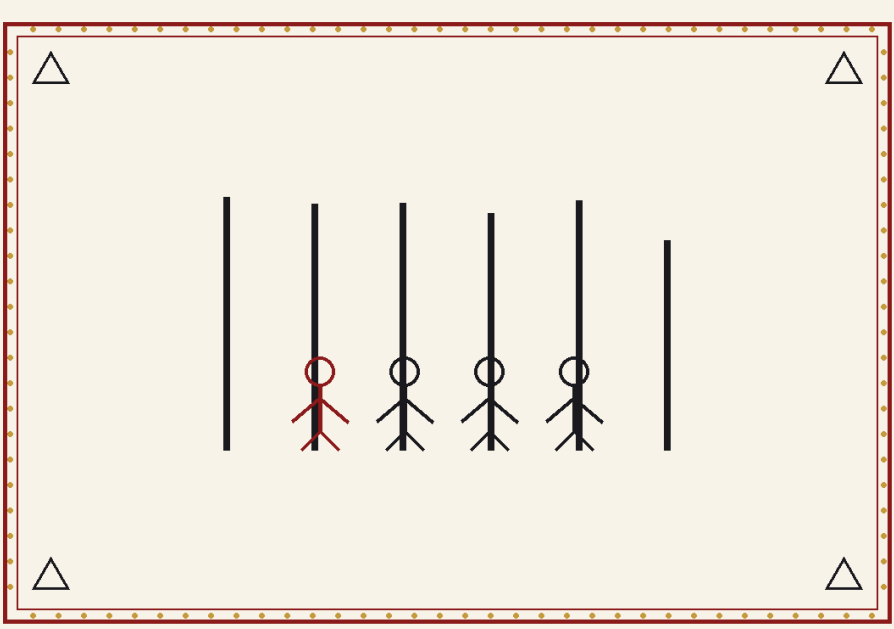

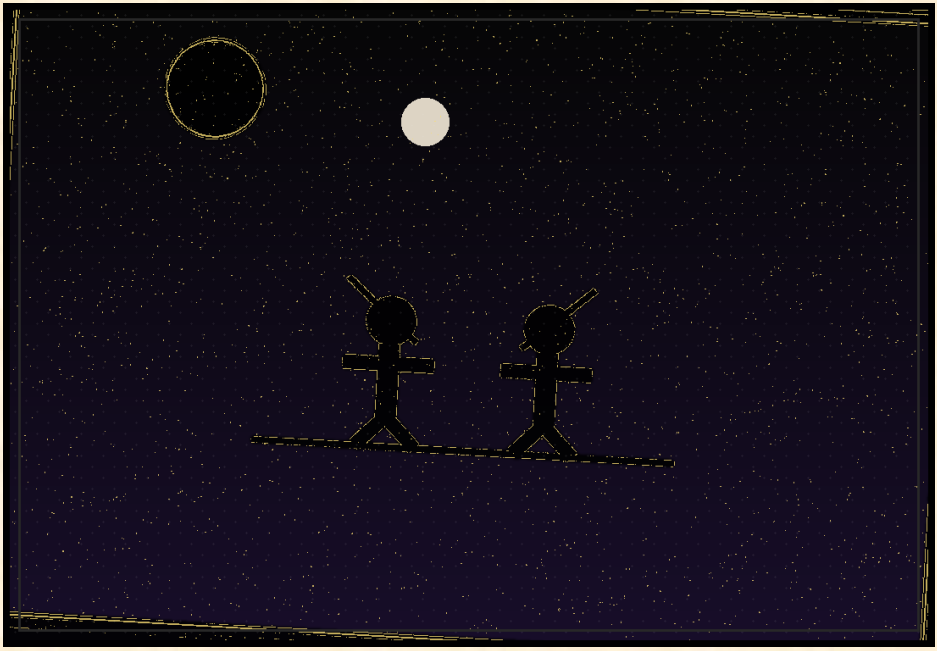

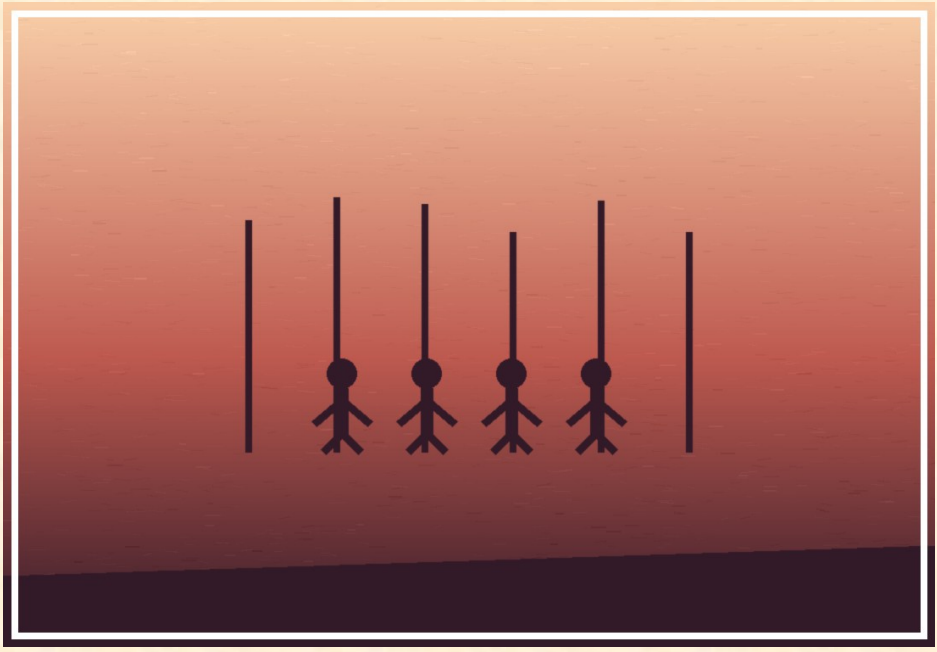

चित्र 11

रातिएमे बिदा भेलाह दीना-भदरी — तीर-धनुष लेने, कान्हपर तरकस बान्हने। संगमे मामा बहुरन — बूढ़, मुदा बोनक भेद जननिहार।

माए निरसो दरबज्जा धरि एलीह। 'राति-बिरातिक बोन... सम्हरि कऽ रहिहह बाबू।' दीना माएक पएर छुबि कऽ कहलनि, 'सलहेसक बजाहटि छिअनि माए, हुनके रखबारि।' — माएक करेज मानि गेल, मुदा माएक करेजक कोनो कोन नहि मानलक; ओ कोन राति भरि जगले रहल।

रस्तामे नंगड़ागोड़िया गाम पड़ल, जतय रहैत छलाह हुनक दोस जीतन यादव। दोसकेँ छोड़ि कऽ शिकार? दीना-भदरी हुनको संग चलबाक लेल कहलनि। जीतन तुरत तीर-धनुष उठा लेलनि — 'जतय अहाँ दुनू भाइ, ओतय हम।' आब चारि गोटे छलाह: दू वीर, एक मामा, एक मीत।

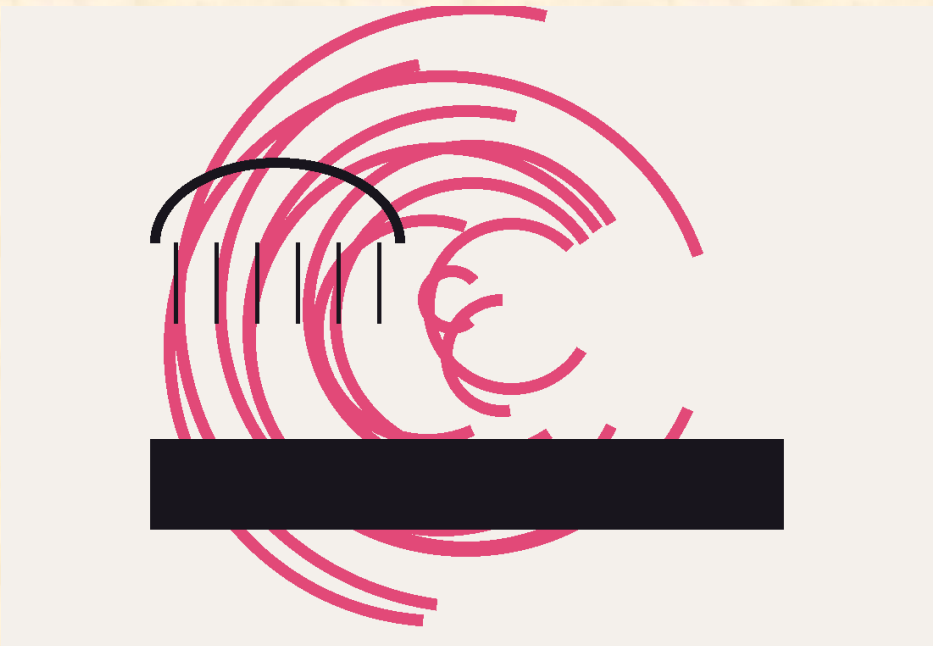

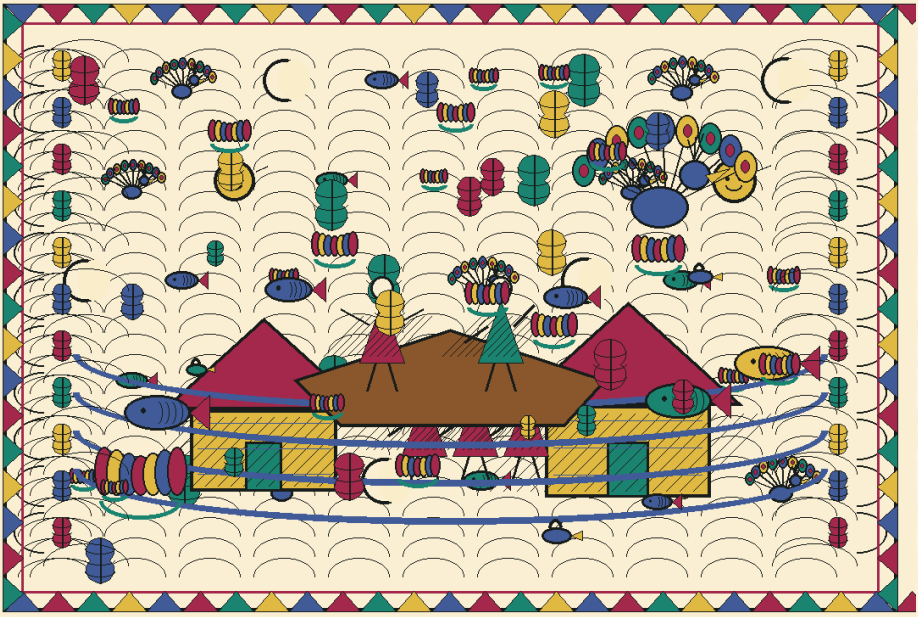

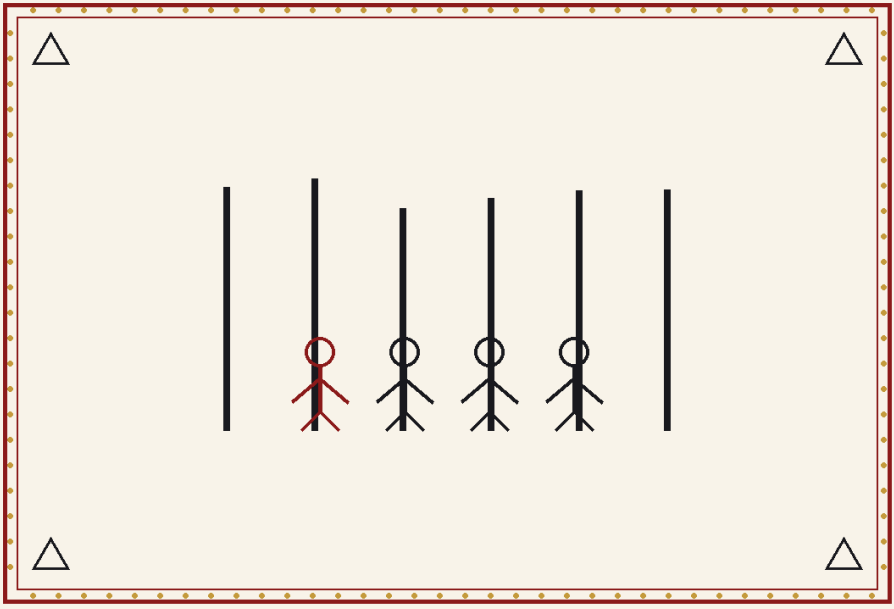

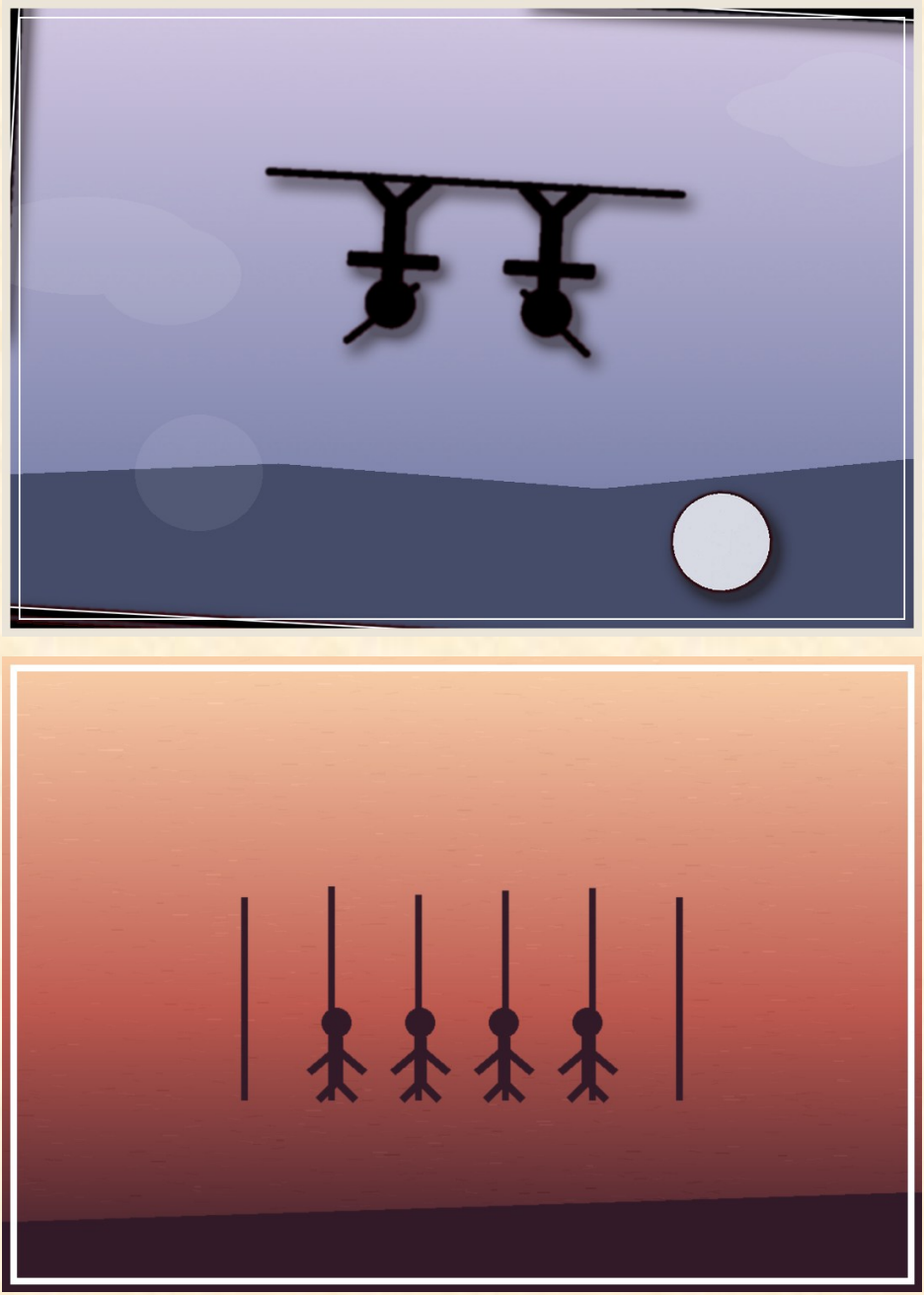

चित्र 12

अमावस्याक राति! अन्हार गुज्ज — एहन अन्हार जे हाथकेँ हाथ नहि सुझए। बोनक गाछ सभ कारी देवाल जकाँ ठाढ़, आ ओहि देवालक पाछाँ की छल से खाली दूटा प्राणी जनैत छल — बुधनी, आ विवश सलहेस।

चारू गोटे कटैया बोनमे प्रवेश केलनि। पाछाँ गामक अन्तिम दीप मिझा गेल। आगाँ — खाली राति।

अध्याय ७ : सुन्न बोन

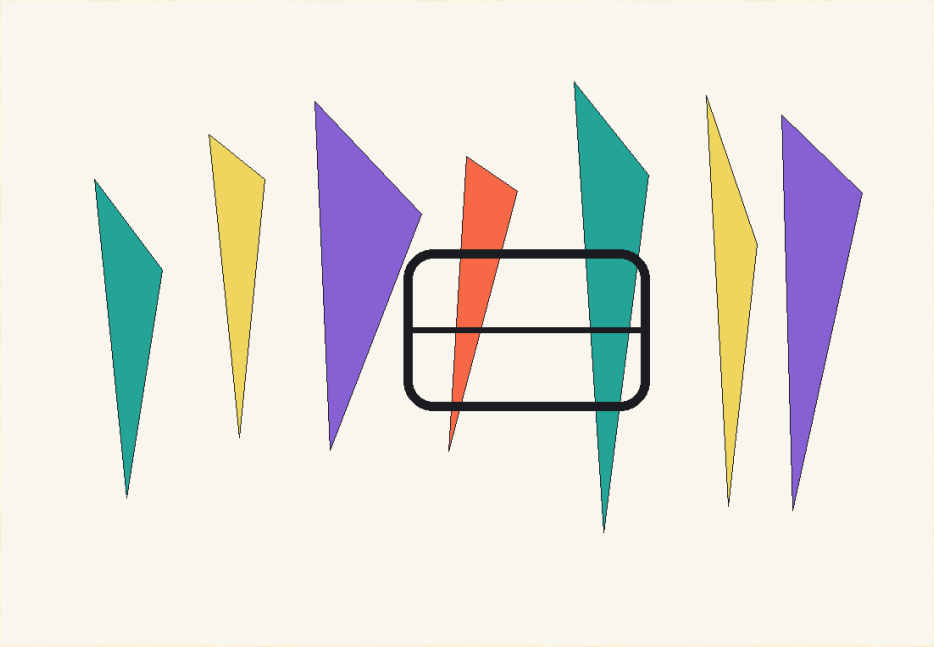

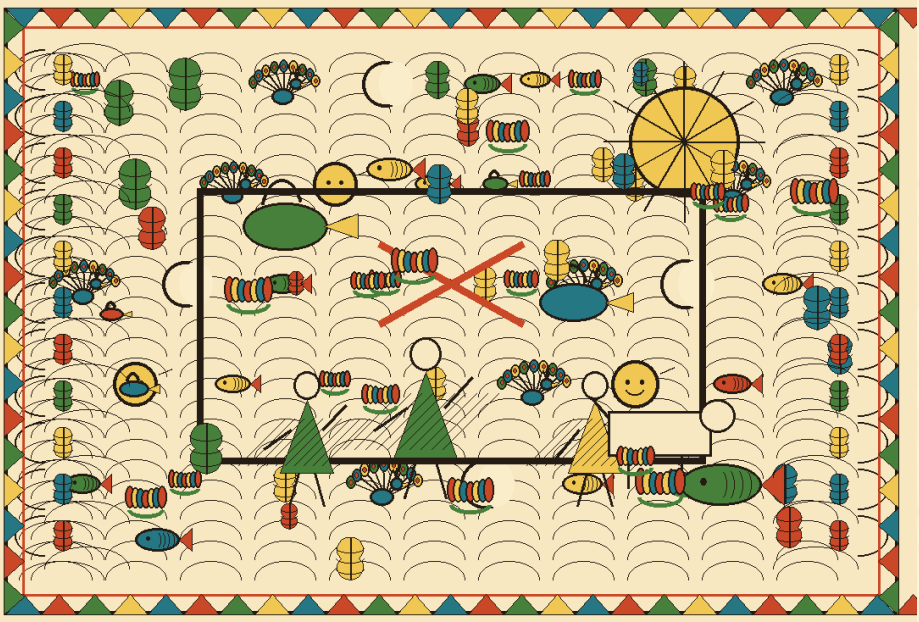

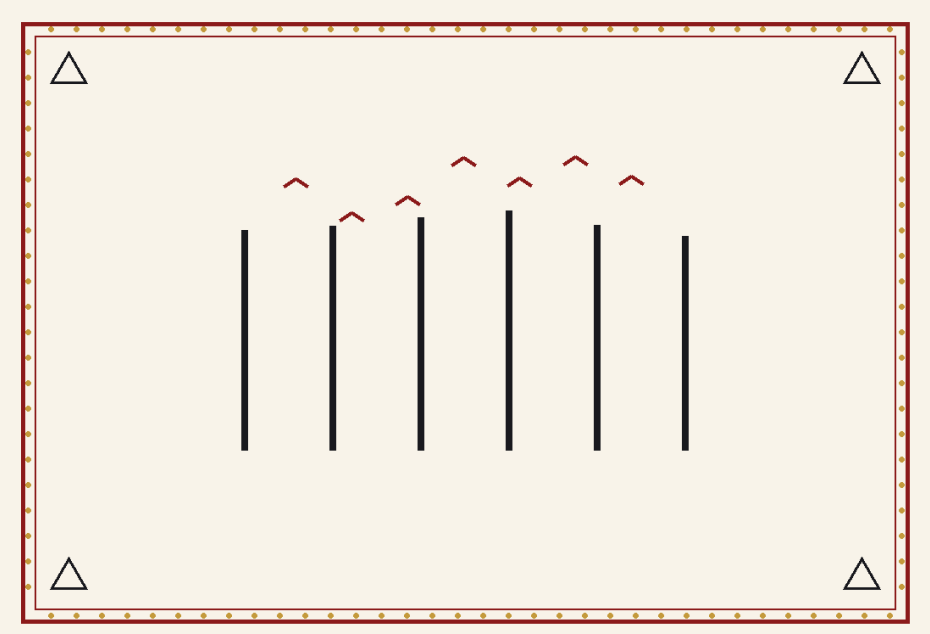

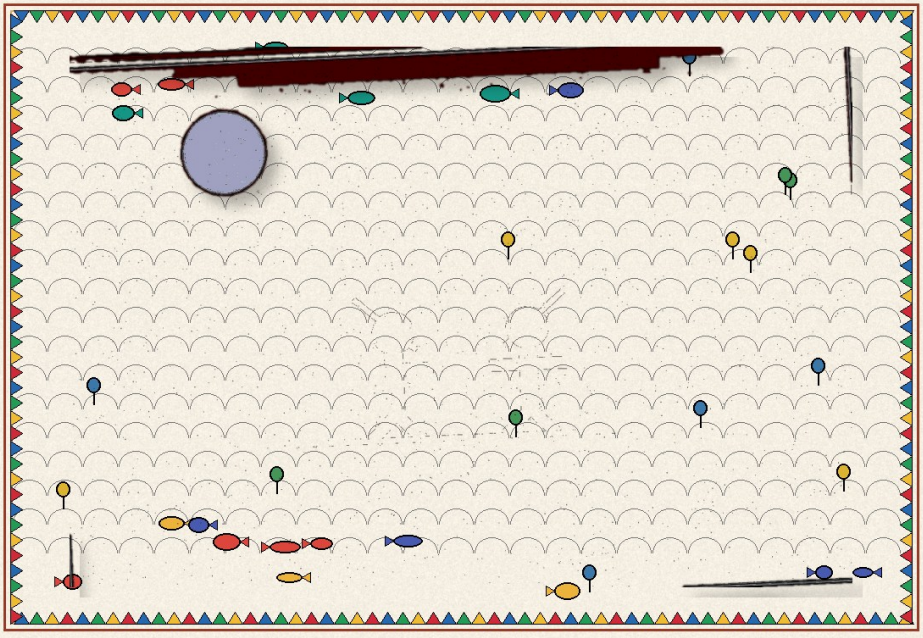

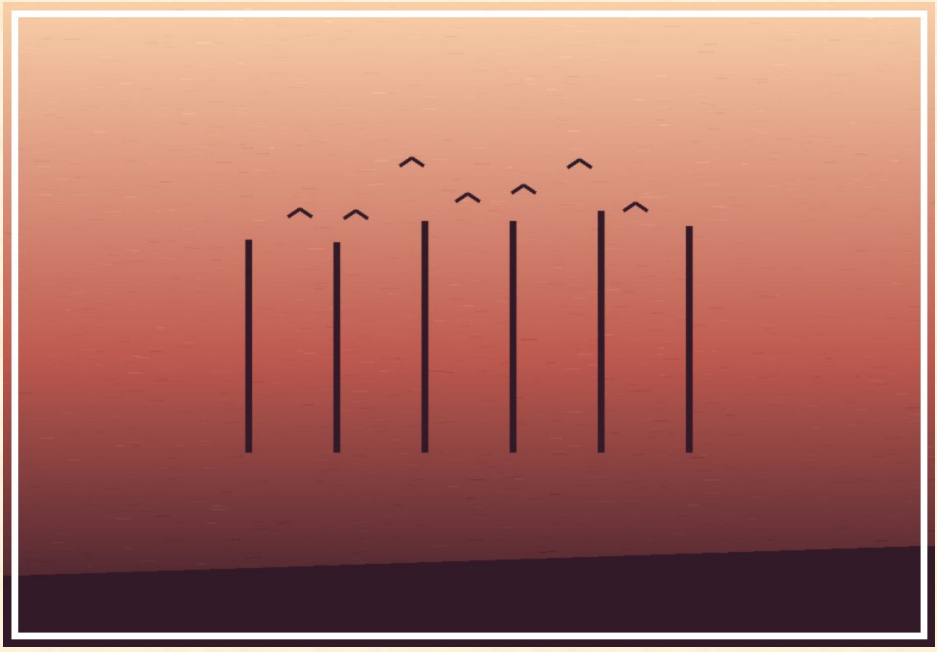

चित्र 13

बोन घन छल, राति गहींर — मुदा शिकार? एक्को टा नहि। ने हरिणक खुरक आवाज, ने बनसुग्गरक फुफकार, ने खरहाक सरसराहटि। जेना पूरा बोनकेँ पहिनहिसँ खाली करा देल गेल हो।

खाली बादुर घुमैत छल — माथपर सँ फड़फड़ाइत, कारी-कारी, जेना रातिक फाटल टुकड़ी सभ उड़ैत हो। बहुरन मामाक अनुभवी मोन खटकल — 'बोन एतेक चुप किए छै रौ? चुप बोन नीक सगुन नहि।'

मुदा जालमे फँसल पएर पाछाँ नहि घुरैत। 'शिकार आगाँ हएत,' — ई सोचि चारू गोटे आरो भीतर बढ़ैत गेलाह। बोन हुनका सभकेँ गीड़ैत गेल — पहिने बाट, फेर दिशा, फेर एक-दोसराक आहटि।

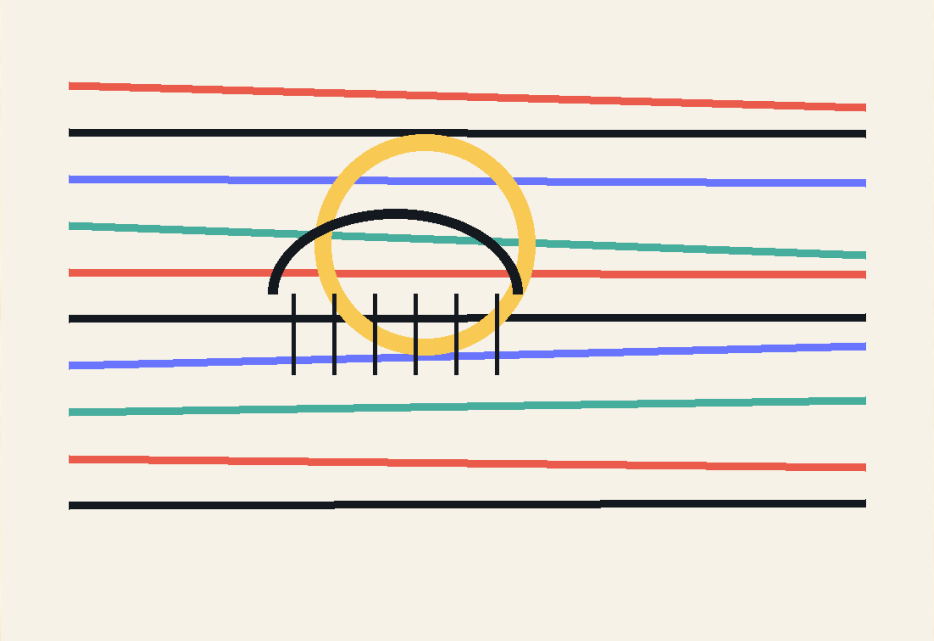

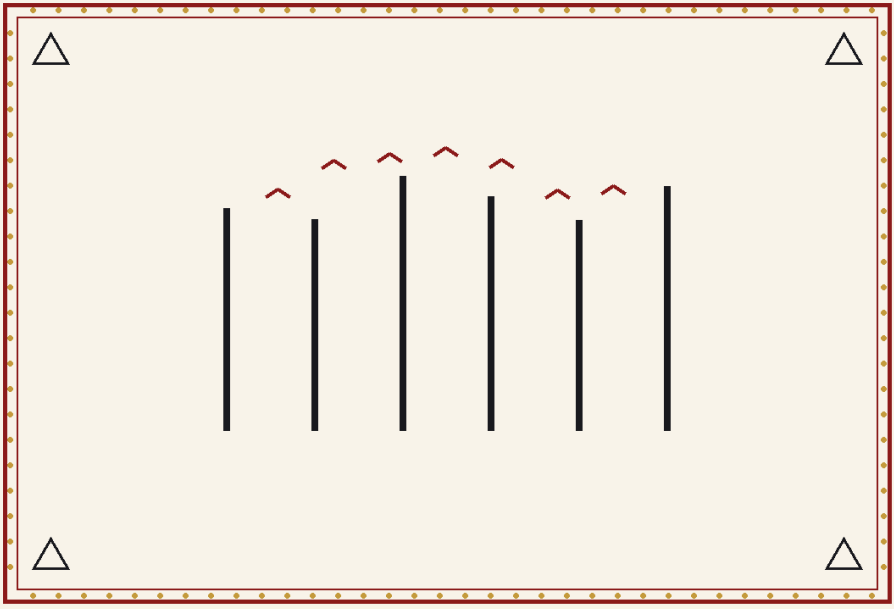

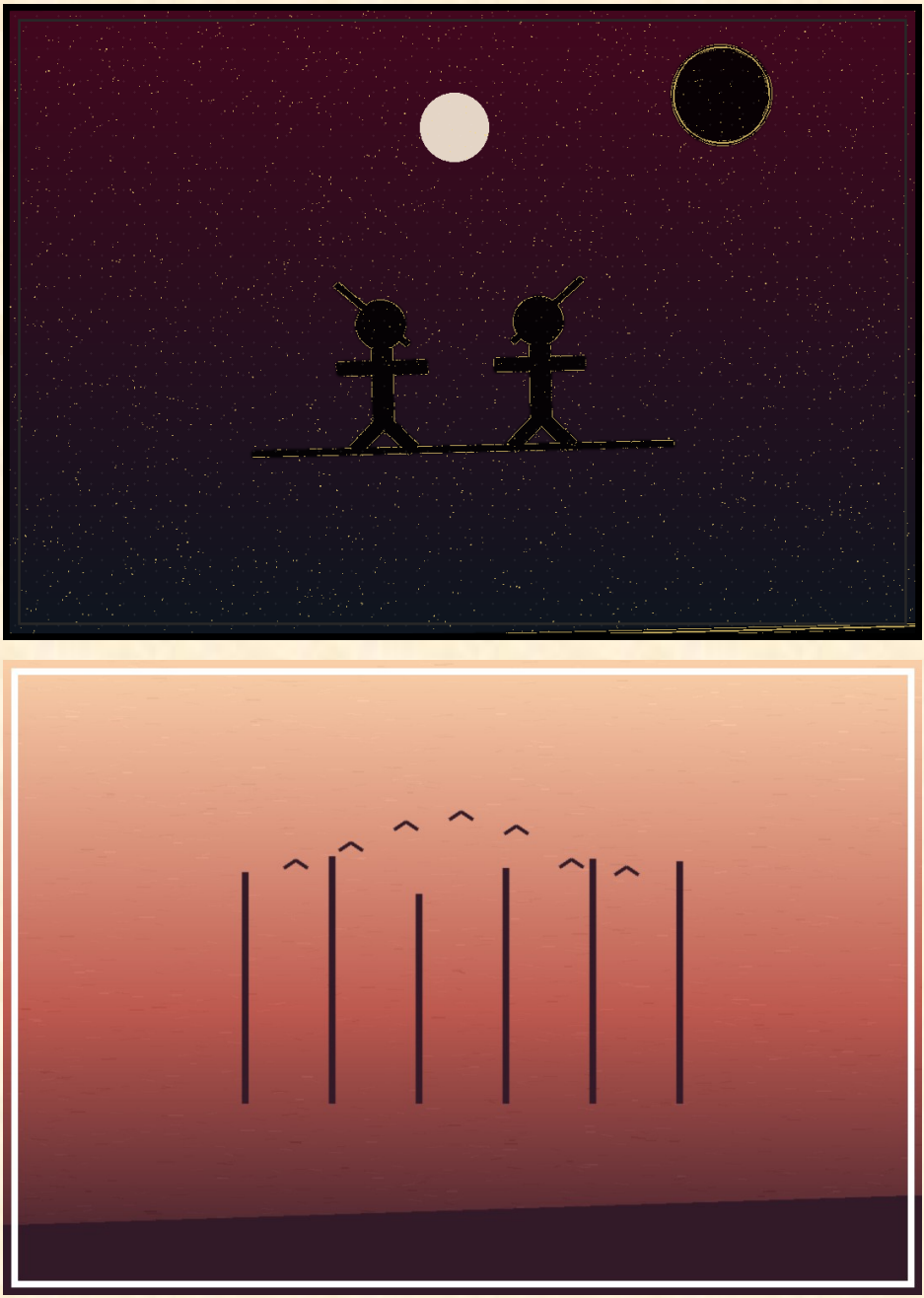

चित्र 14

आ कोना ने कोना, बोनक ओही चालिमे, दीना असगरे बोनक बीचमे चलि गेलाह — भदरीसँ अलग, मामासँ अलग, जीतनसँ अलग। वीरक संग जखन छूटि जाइत छै, तखन बुझू जे नियति अपन घेरा कसि रहल अछि।

आ ओतय, बोनक ओही करेजमे, ठाढ़ि छलि बुधनी। असगर नहि — संगमे सलहेस सेहो छलाह। एक दिस तपक बलसँ बान्हल देवता, दोसर दिस बदलाक आगिमे जरैत नारि — आ सोझाँमे, अन्हारसँ बहराइत, नि:शस्त्र सन एकसर दीना।

अध्याय ८ : खुनीमा बाघ

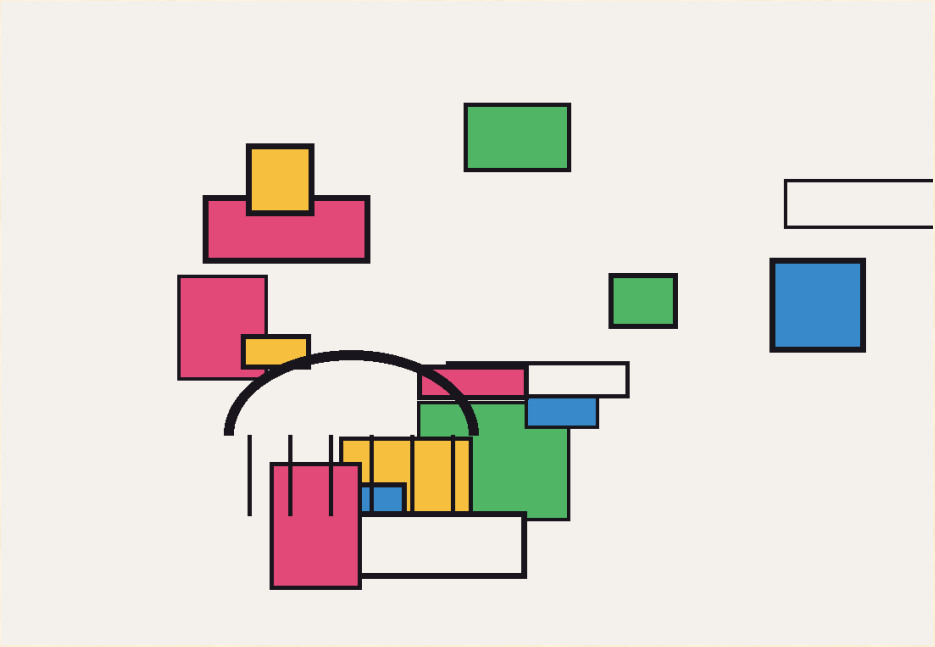

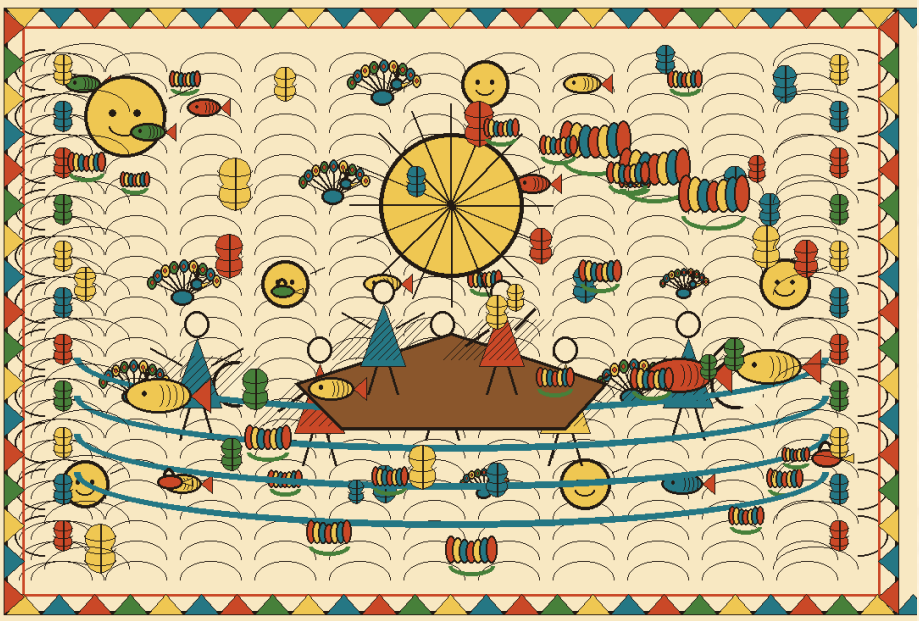

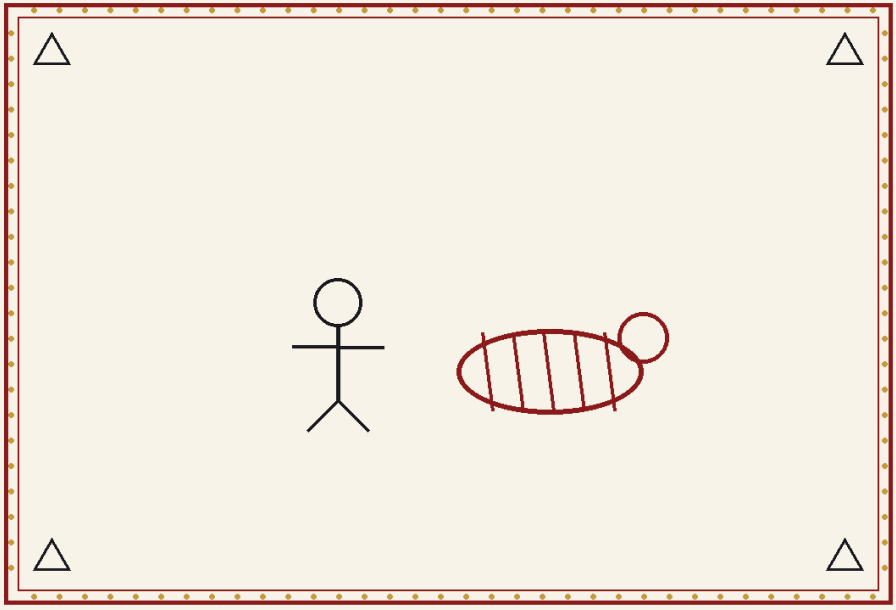

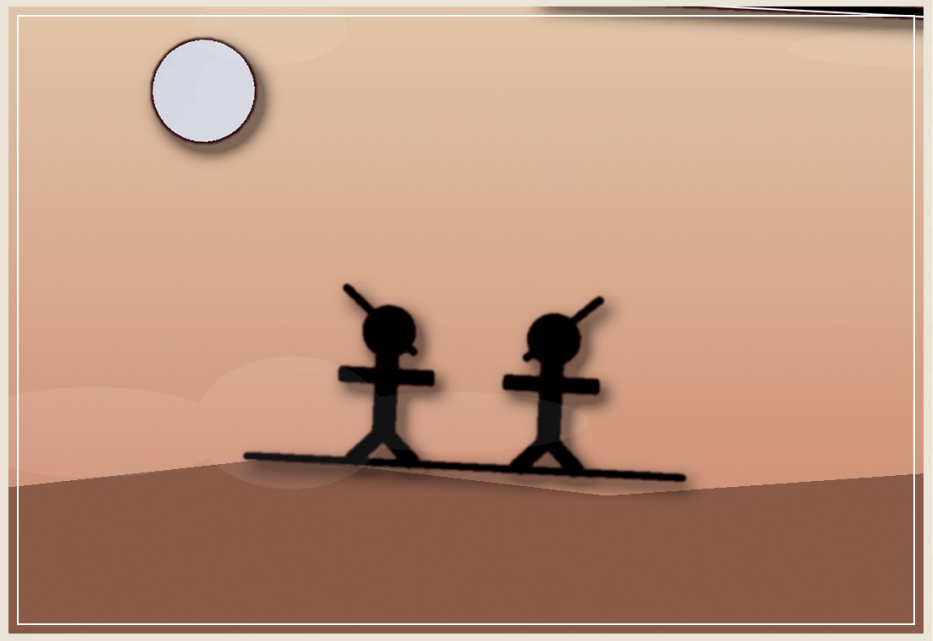

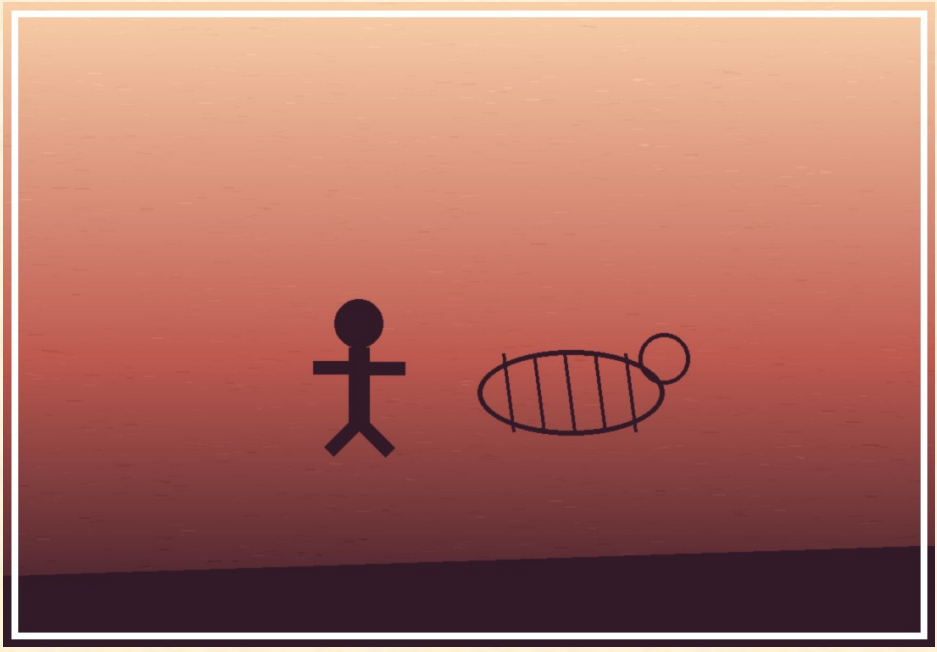

चित्र 15

बुधनी गरजि कऽ बाजलि — 'बोनक जानवरक देवता सलहेस! अपन खुनीमा बाघ बजाउ!'

आ बोन फाटल। अन्हारसँ बहराएल खुनीमा बाघ — सलहेसक अपन बाघ, जकर गर्जनसँ बोनक गाछ सभ पात झाड़ि दैत छल। दीना धनुष तानलनि, बाण चलओलनि — मुदा ई की! बाण रस्ता बिसरि जाइत छल! जे बाण कहियो चूकल नहि, से हवेमे भोथिया जाइत छल — कारण बाणकेँ अन्हराओल जा रहल छल, ओही शक्तिसँ जे बाघकेँ पठओने छल।

तखन दीना धनुष फेकि देलनि। 'हथियार जँ धोखा दिअए, त' बाँहि त' अपन छै!' — आ मुसहरक बेटा बाघसँ मल्ल-युद्धमे भिड़ि गेलाह। नख आ दाँतक विरुद्ध खाली मांस आ हड्डी; गर्जनक विरुद्ध खाली साँस। बोनक अन्हारमे दू टा देह एक-दोसरामे गुँथा गेल — के मनुक्ख, के पशु, चिन्हब कठिन।

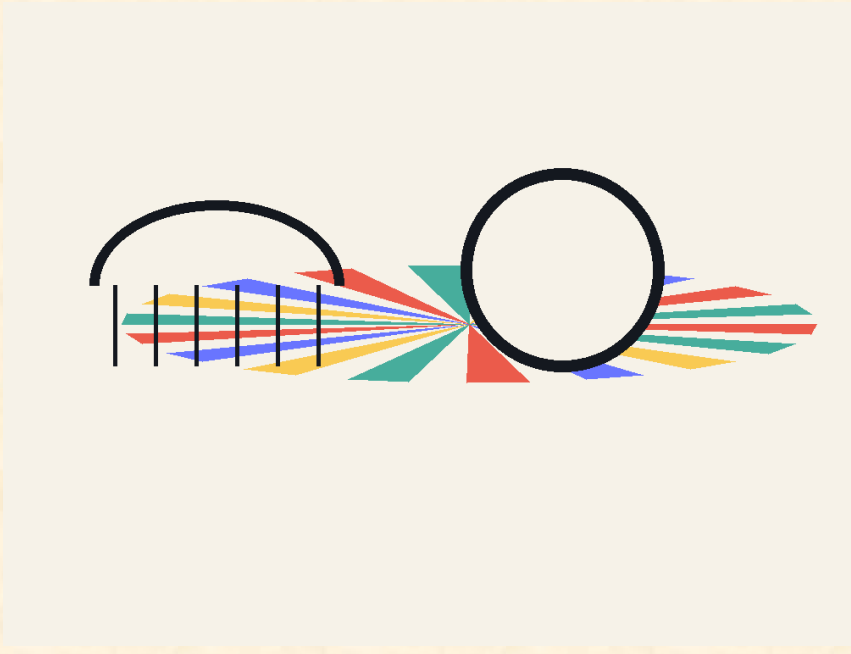

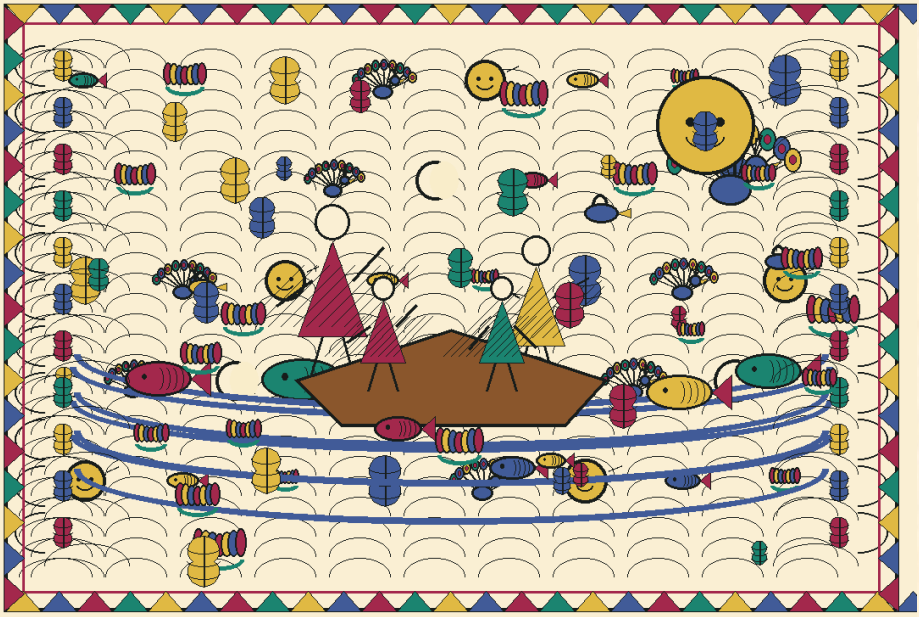

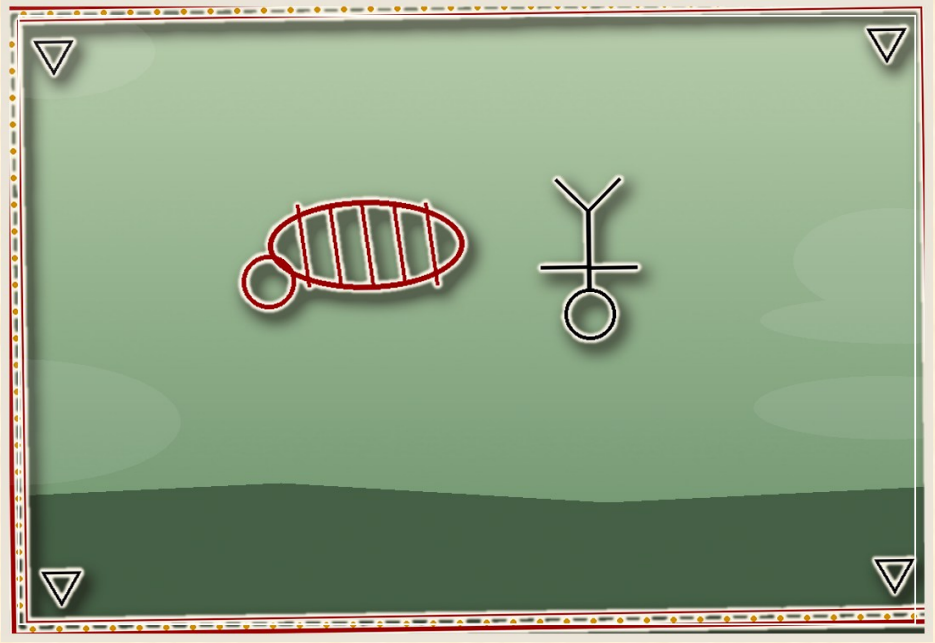

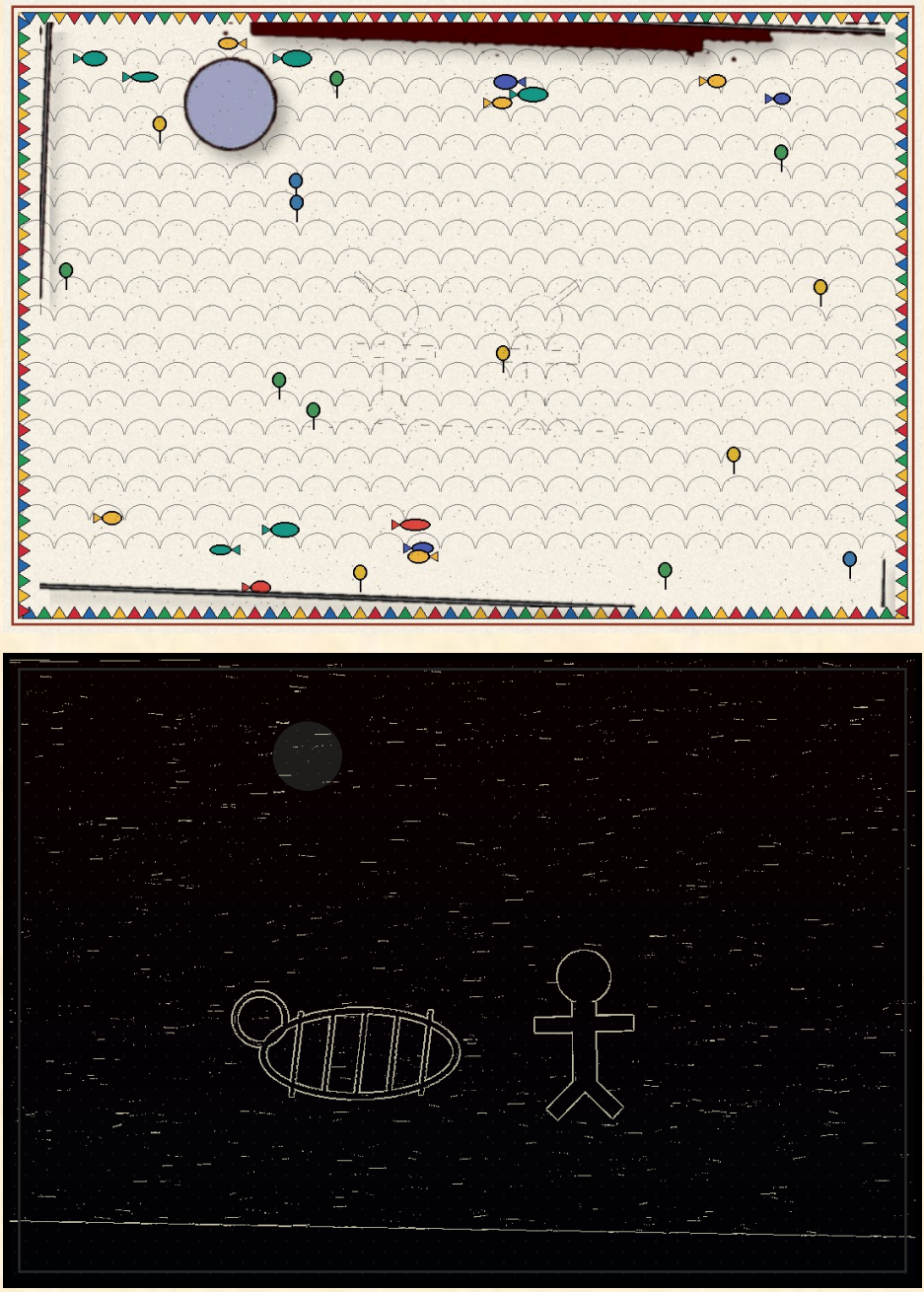

चित्र 16

आ तखन दीना ओ केलनि जे वीरता आ भक्तिक संगमपर भेल — मृत्युसँ जूझैत ओ अपने मारनिहार देवताक नाम लेलनि: 'जय राजा सलहेस!' — आ सलहेसक नाम लइते हुनक बाँहिमे सए बाघक बल उतरि आएल। एक झटका, दोसर, तेसर — आ खुनीमा बाघ माटि धऽ लेलक।

बाघ मरल पड़ल छल, दीना हाँफैत ठाढ़ छलाह — छाती खूने-खुनामे, मुदा माथ ऊँच। सलहेसक आँखिमे नोर आ गर्व एक्कहि संग — 'एहन वीरकेँ...' मुदा बुधनीक स्वर हुनक सोचकेँ काटि देलक। खेल एखन बाँकी छल।

अध्याय ९ : बगराक भेष

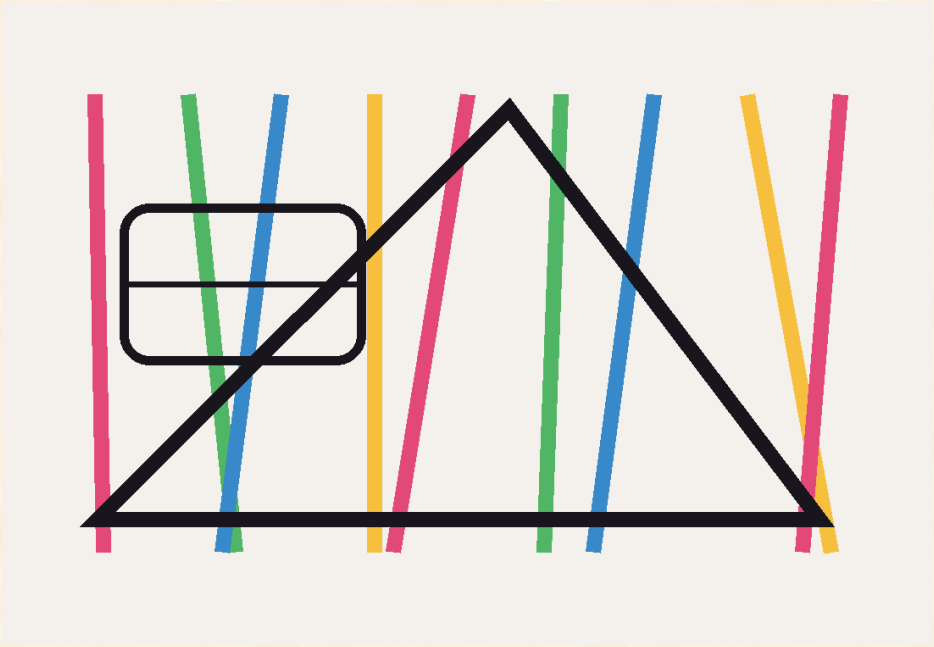

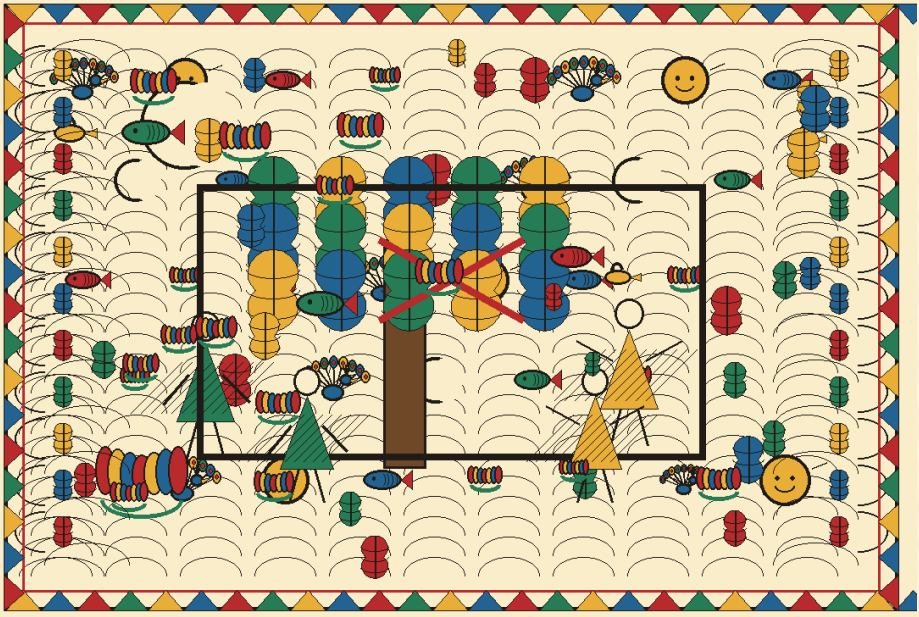

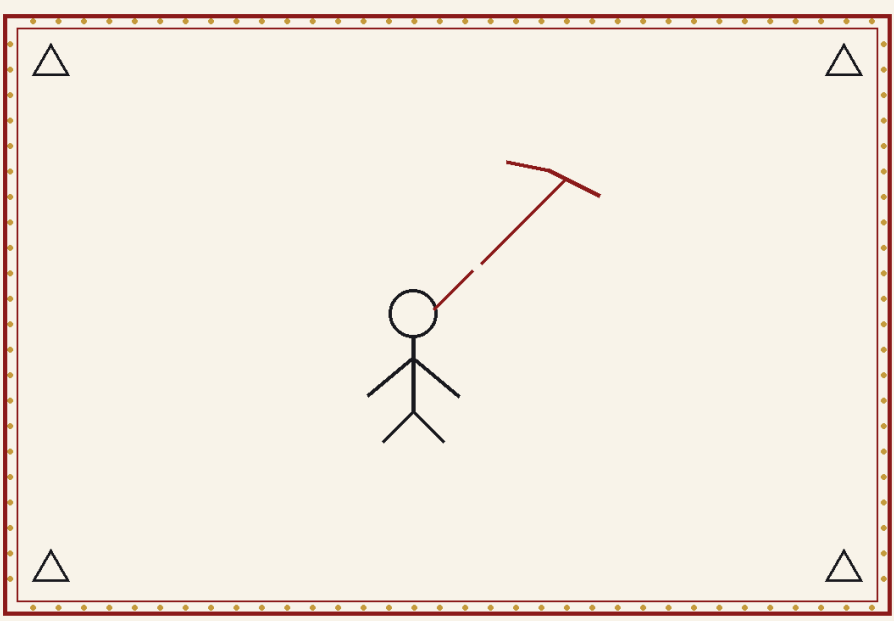

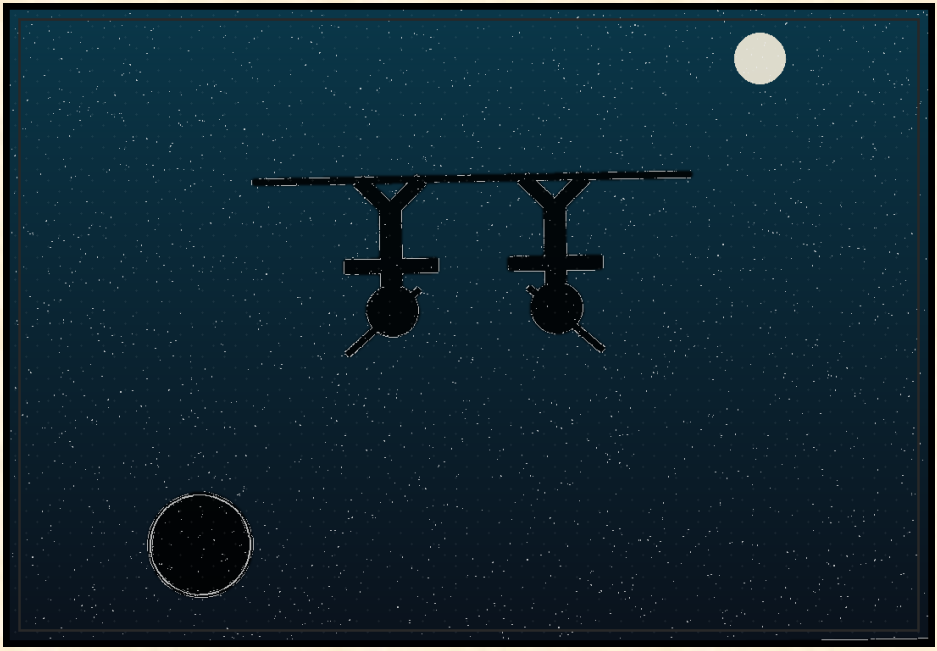

चित्र 17

बुधनी फेर बाजलि — आ एहि बेर ओकर स्वरमे जहर घोरल छल: 'भेष बदलैबाली, अपघात भेलि बाघिनकेँ बजाउ!'

सलहेस दीनाक वीरतासँ प्रसन्न छलाह — मुदा करथि त' करथि की? वचन गरा दबओने छल। हुनक मौन स्वीकृति बनि गेल, आ बोनक अन्हारसँ ओ आएलि — अपघात भेलि बाघिन, जे भेष बदलब जनैत छलि।

ओ बाघिन बनि कऽ नहि आएलि। ओ आएलि बगराक भेष बना कऽ — एकटा निर्दोष चिड़ैक रूपमे। कारण बुधनी बुझि गेल छलि: दीनाकेँ बल सँ नहि हराओल जा सकैत अछि, वरन् खाली छल सँ। वीरक आँखि शत्रु ताकैत अछि — चिड़ैपर के सन्देह करए?

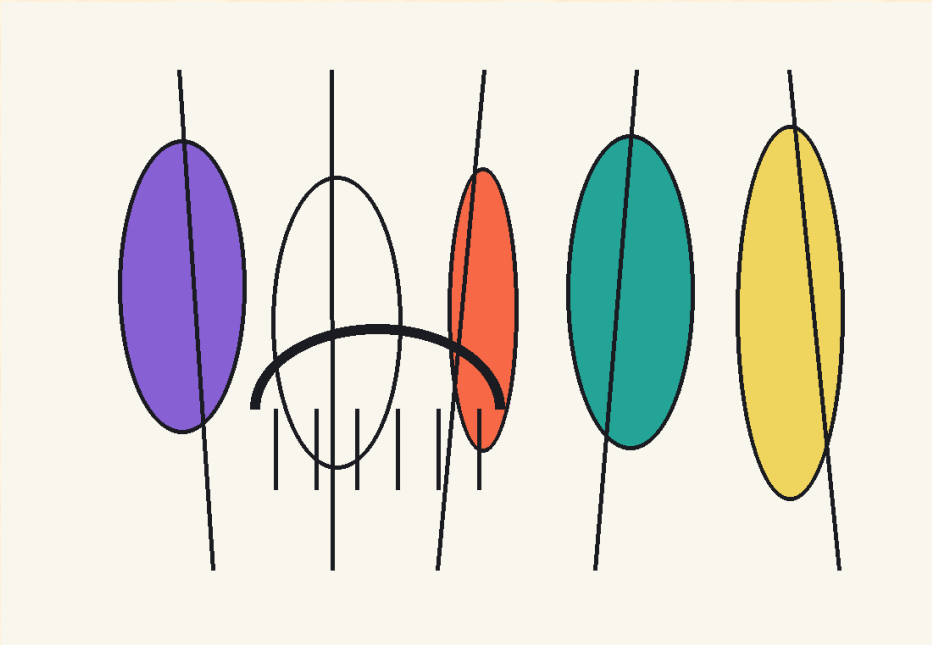

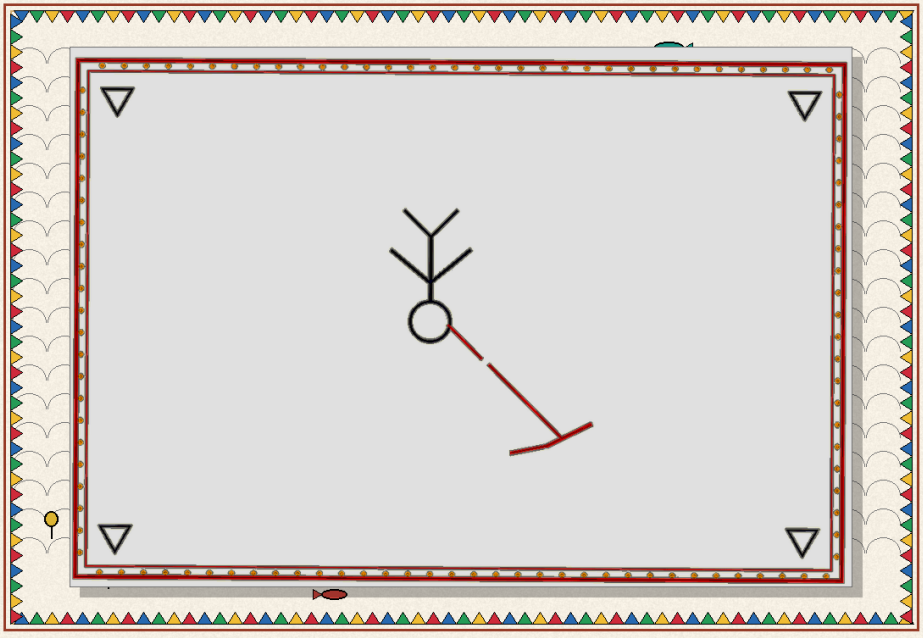

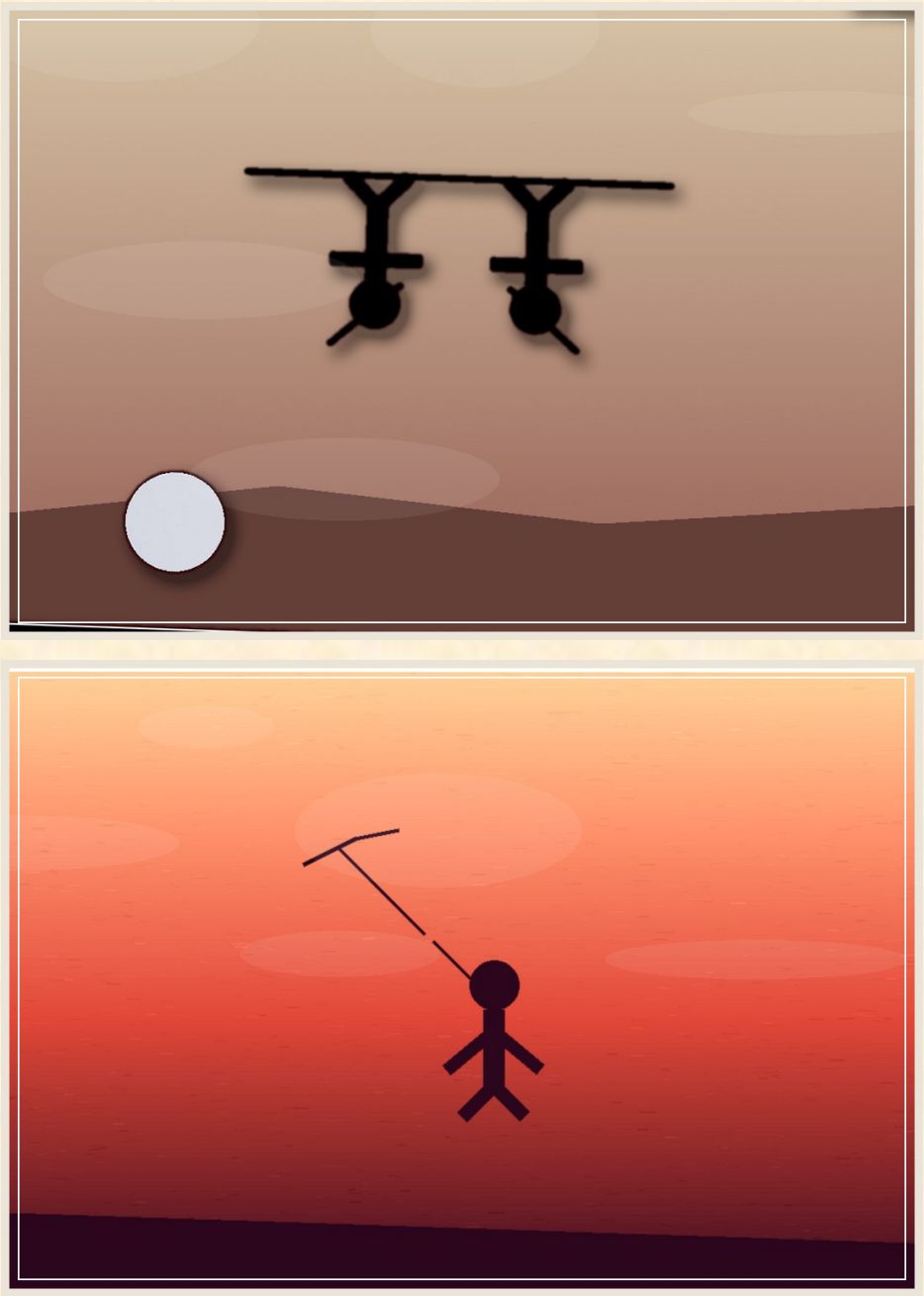

चित्र 18

दीना बाघ-वधक थकानमे ठाढ़ छलाह। माथपरसँ एकटा बगरा उड़ल — साधारण, उज्जर, निरीह। आ तखने, पिपनी झपकैत-झपकैत, ओ बगरा झपटल — आ अपन बिखाह चांगुरसँ दीनाकेँ मारि देलक।

पाँच मोनक कोदारि उठौनिहार, खुनीमा बाघकेँ बाँहिसँ पछाड़निहार दीना — एकटा चिड़ैक भेषक आगाँ खसि पड़लाह। बल छलसँ हारल। कटैया बोनक माटिपर मिथिलाक एकटा वीर सुतल — आ बोन, जे राति भरि चुप छल, आरो चुप भऽ गेल। एतेक चुप, जे ओ चुप्पी कोस भरि दूर भदरीक करेज धरि पहुँचि गेल।

अध्याय १० : भदरीक बिखिन्न मोन

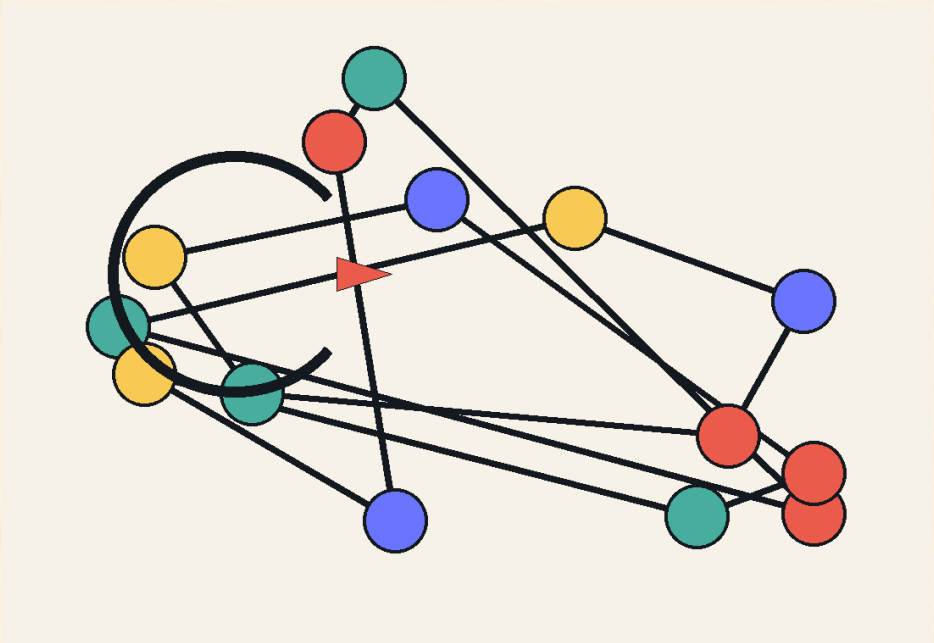

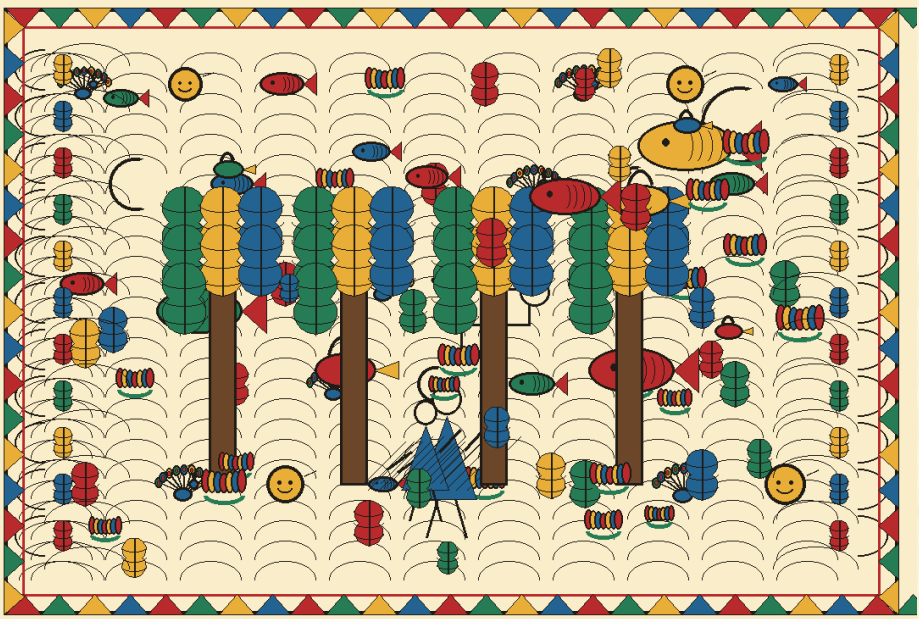

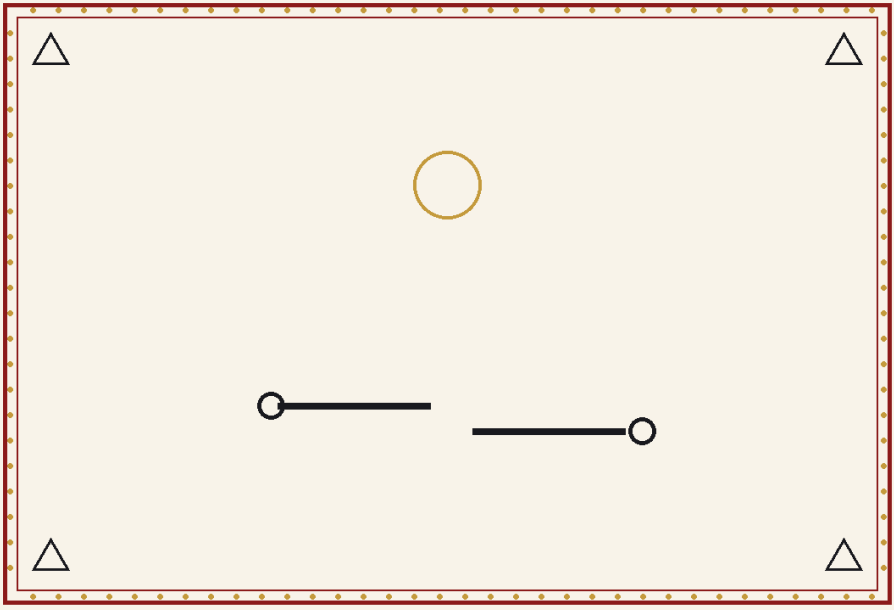

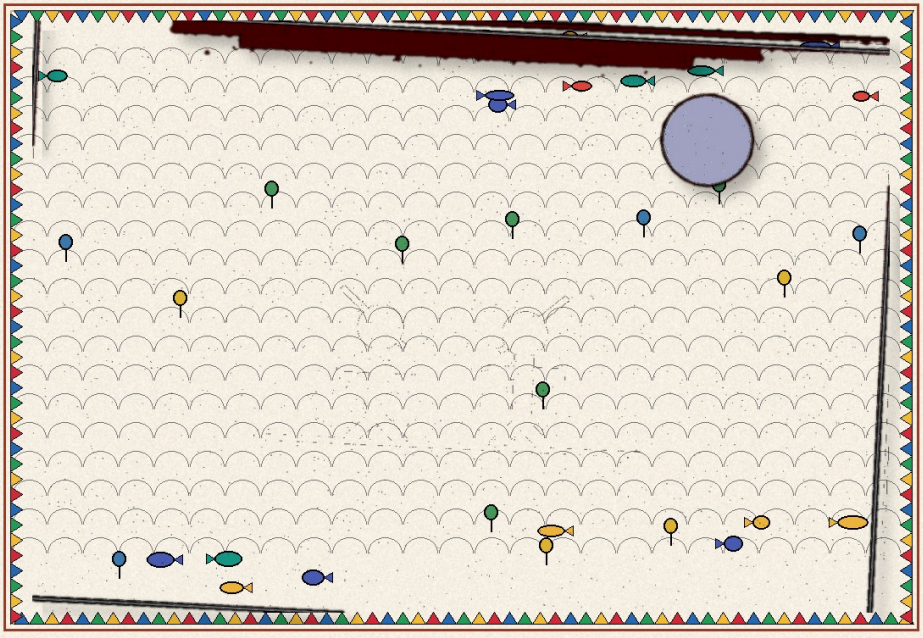

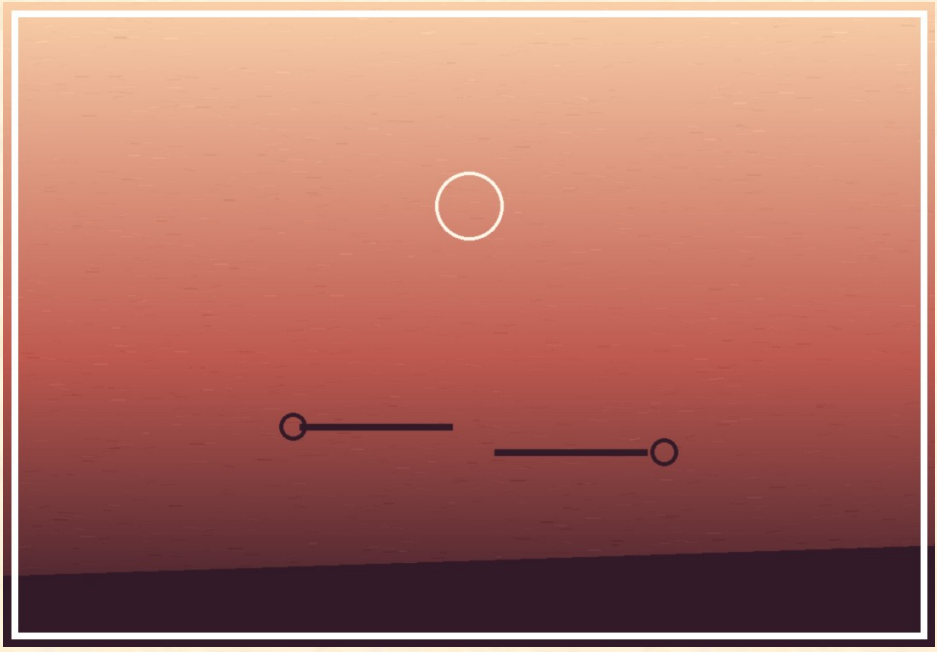

चित्र 19

ठीक ओही क्षण, बोनक दोसर छोरपर, भदरीक मोन बिखिन्न सन भेलैक। बिनु कारण करेज धक्-धक् करए लागल, हाथसँ धनुष ससरए लागल। भाइ-भाइक बीच एकटा एहन तार बान्हल रहैत छै जे आँखिसँ नहि देखाइत — मुदा जखन एक छोरपर आघात होइत छै, दोसर छोर थरथरा उठैत अछि।

'बहुरन मामा,' भदरी बजलाह, आ हुनक स्वर हुनके अनचिन्हार लगलनि, 'हम जा रहल छी भैया लग। अहाँ गाछपर बैसि कऽ प्रतीक्षा करू।'

मामा किछु कहितथि, ताहिसँ पहिने भदरी अन्हारमे समा गेलाह। बूढ़ बहुरन गाछपर चढ़ि गेलाह — आ ओतयसँ, ओहि रातिक सभसँ असहाय गवाह बनि, बोनक चुप्पी सुनैत रहलाह।

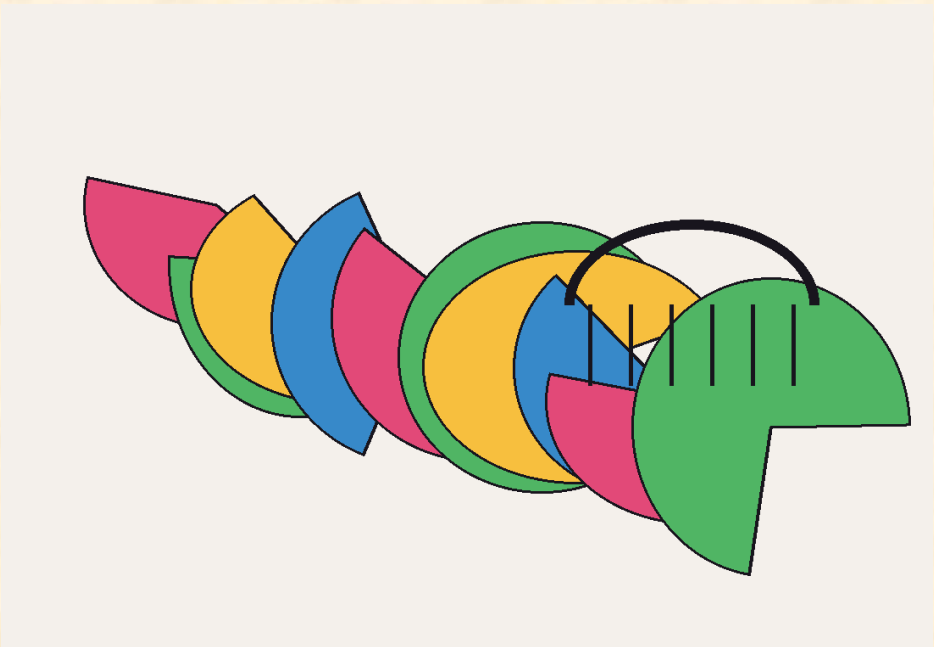

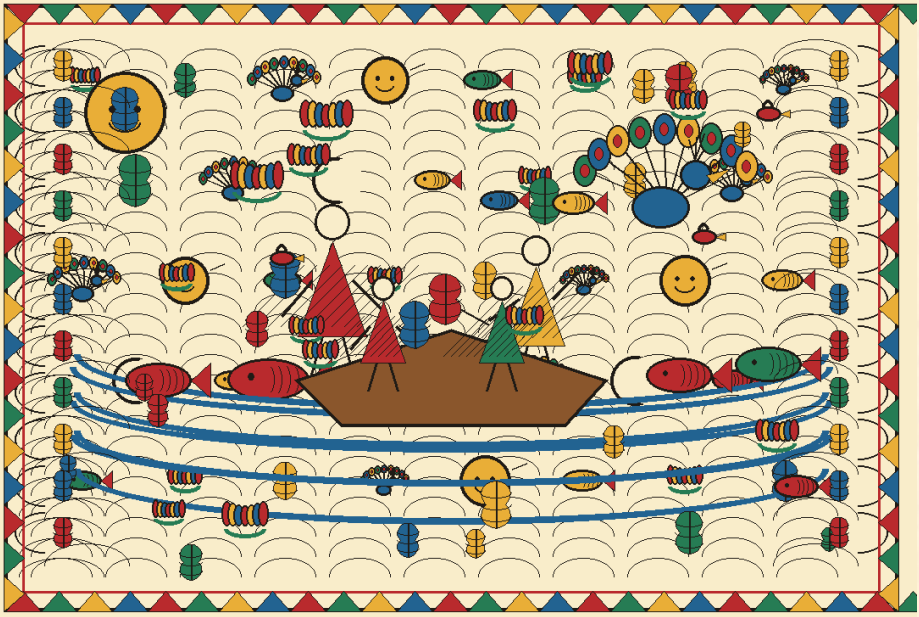

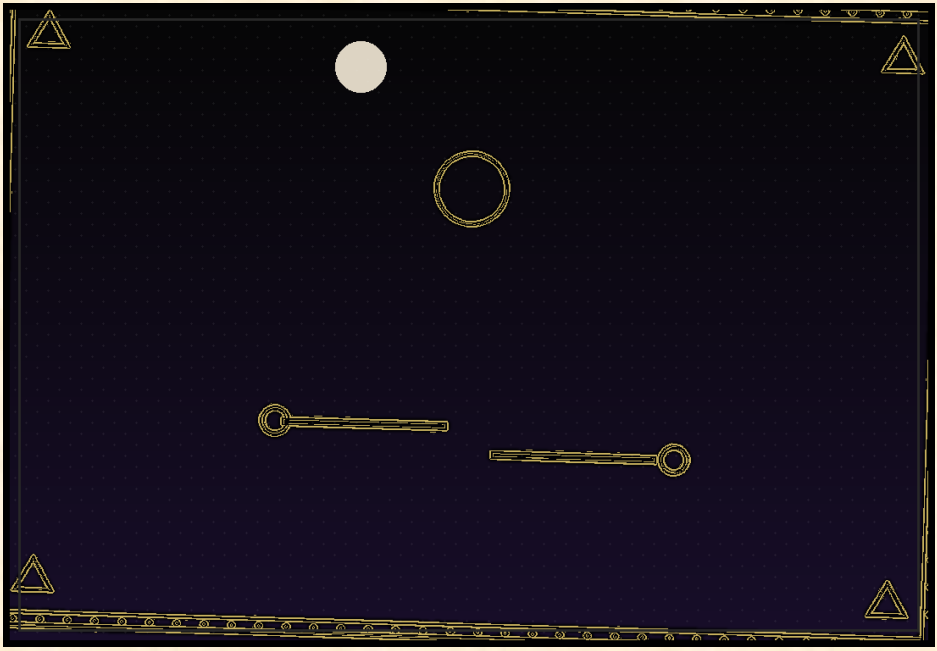

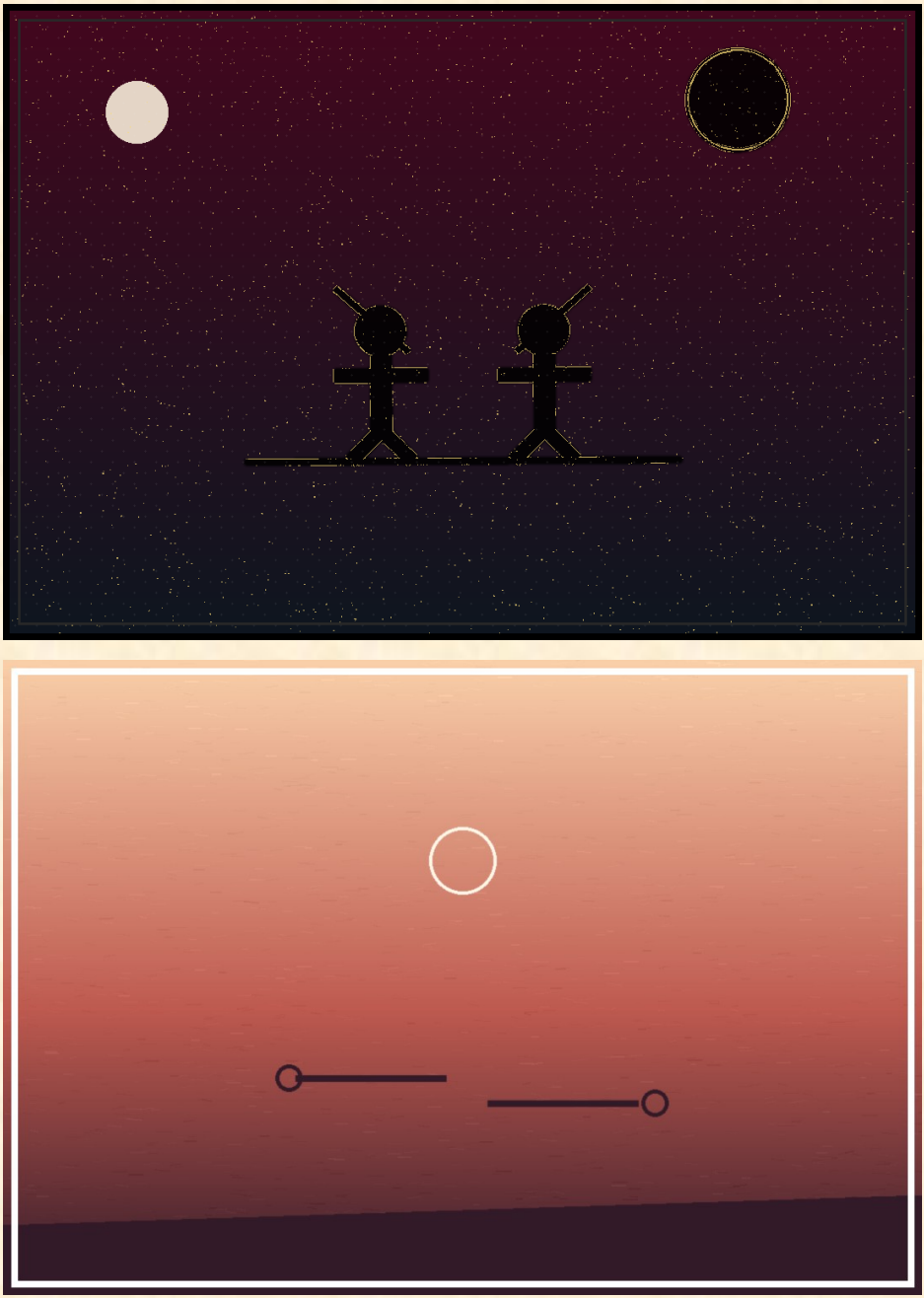

चित्र 20

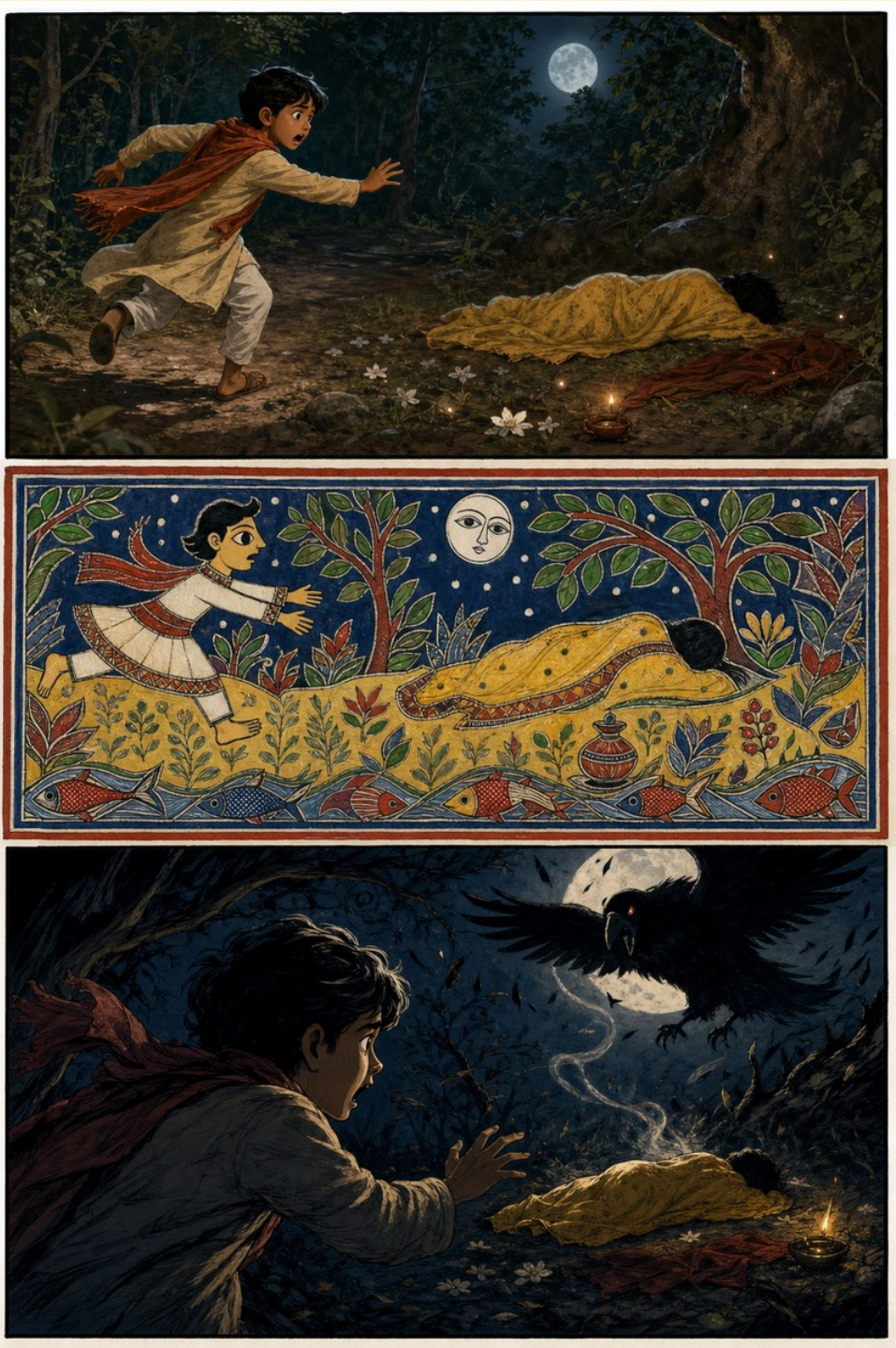

भदरी भाइक लहास लग पहुँचलाह। दीना माटिपर पड़ल छलाह — शान्त, जेना खेतक काज सम्पन्न कऽ सुतल होथि। भदरीक भीतरसँ जे चीत्कार उठल, से बाहर नहि आबि सकल — कारण ठीक तखने वैह बहुरुपिया बगरा फेर झपटल।

आ हुनको मारि देलक। दुनू भाइ — जे संगे जनमलाह, संगे कोदारि उठओलनि, संगे जमीन्दारसँ लड़लाह — संगहि कटैया बोनक माटिपर सुति रहलाह। बुधनी घर घुरि गेलि — बदला पूरा भेल। मुदा बदला आ न्यायमे एकटा अन्तर होइत छै: बदला घुरि कऽ घर जाइत अछि, न्याय घुरि कऽ आबैत अछि। आ ई खिस्सा एखन आधे भेल छल।

अध्याय ११ : आत्माक संदेश

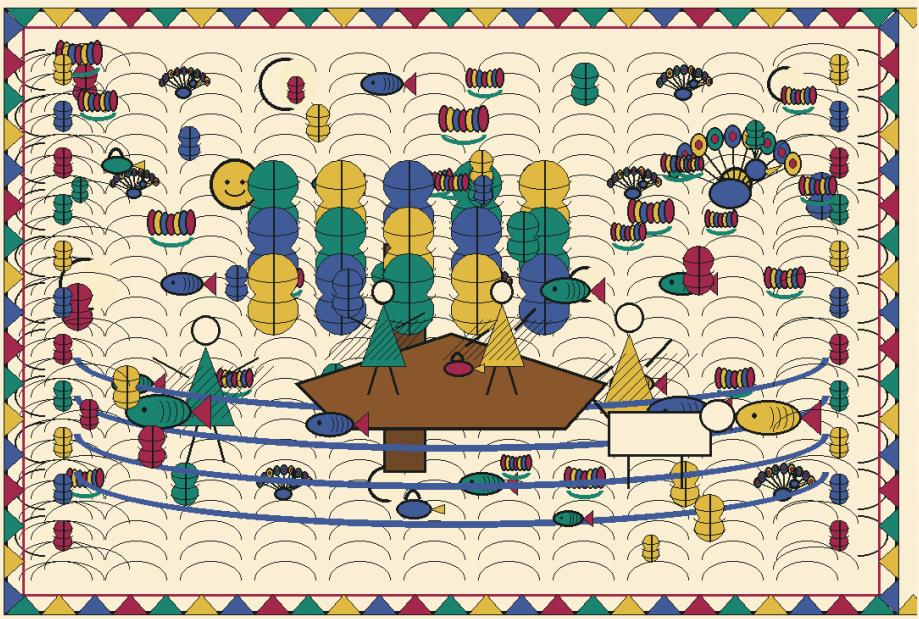

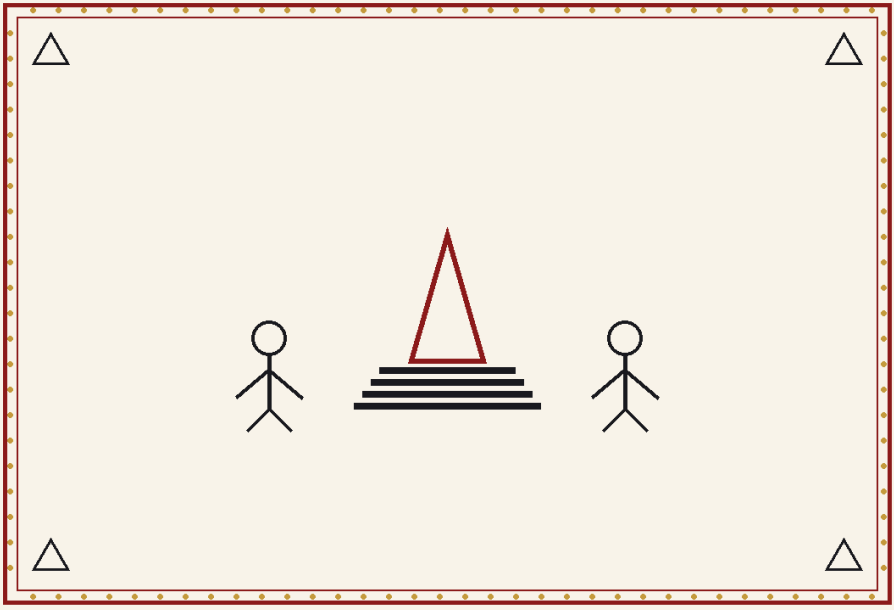

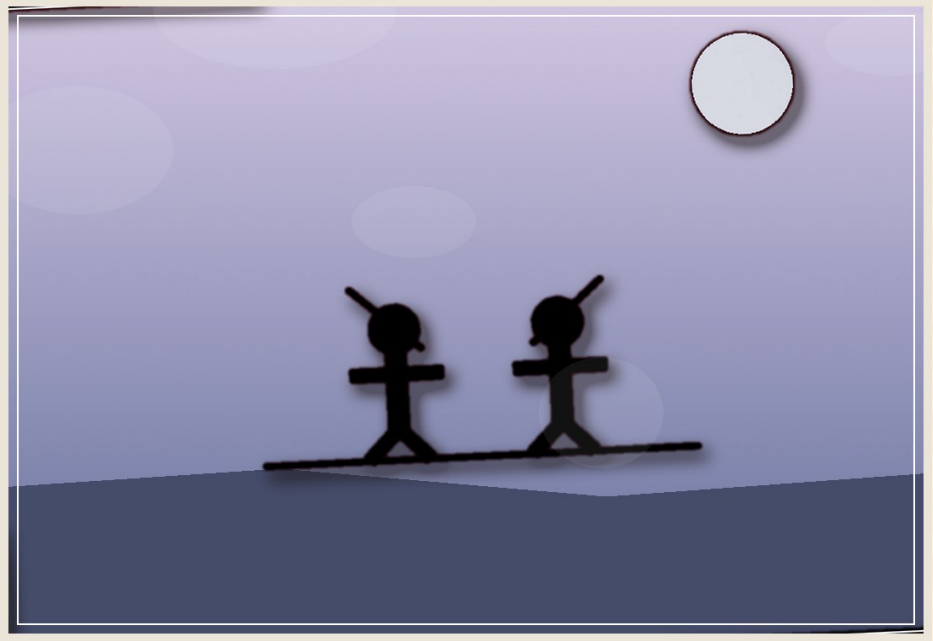

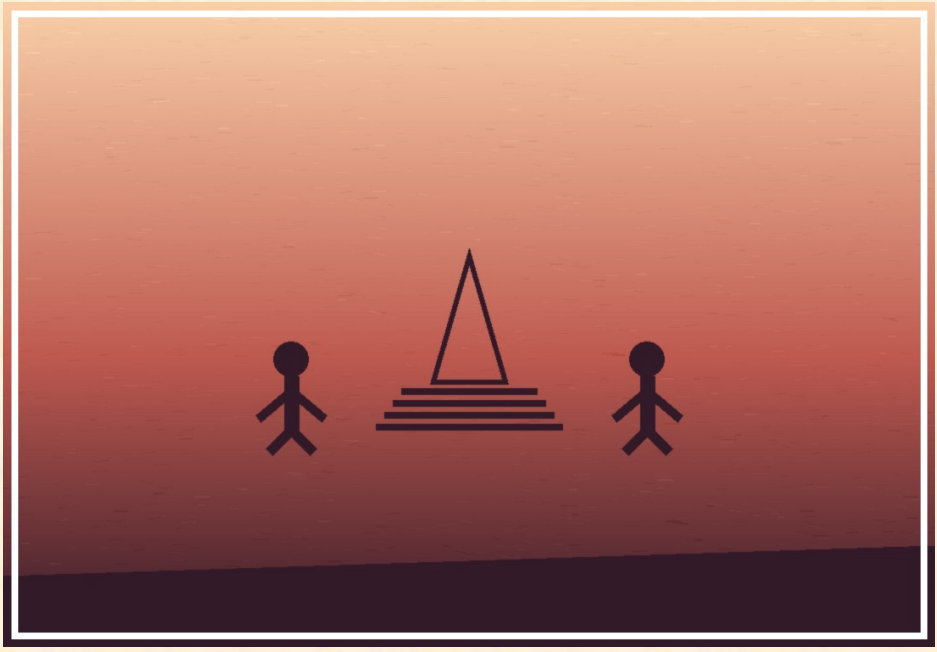

चित्र 21

मुदा दीना-भदरी सन वीरक कथा देहक संग खतम नहि होइत अछि। दुनू भाइक आत्मा दू गोटेक शरीरमे पैसि गेल — आ ओही रूपे दुनू बहुरन मामा लग पहुँचलाह।

'अहाँक दुनू भागिन मारल गेलाह,' आत्मा-रूप बजलाह, 'गाम खबरि करू। लहास लऽ जाउ। श्राद्ध करबाउ।' — बूढ़ मामाक हाथसँ धनुष खसि पड़ल। जाहि गाछपर ओ प्रतीक्षा करैत छलाह, ओही गाछ तर हुनक दुनू भागिनक अन्तिम खबरि आबि गेल।

ताबत जीतन यादव सेहो पहुँचि गेलाह। दोसक लहास देखि जीतनक जे दशा भेल, से लिखबाक शब्द मैथिलीओ लग नहि अछि। मुदा जीतन कानि कऽ बैसि नहि रहलाह — दोस्तीक अन्तिम धर्म निमाहलनि: दुनू गोटेक लहास गाम लऽ गेलाह, आ स्वयं अग्नि देलनि।

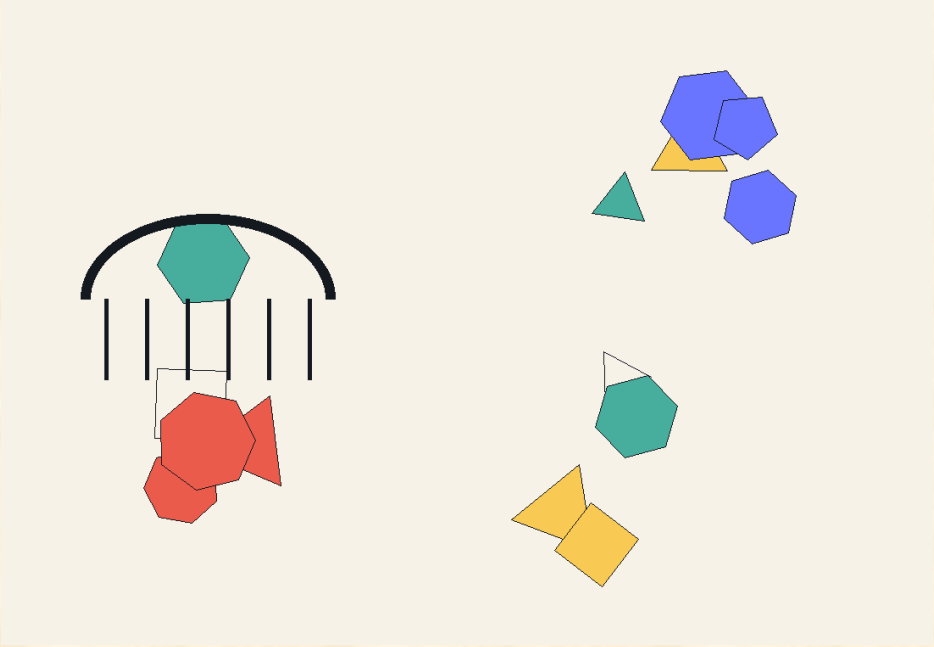

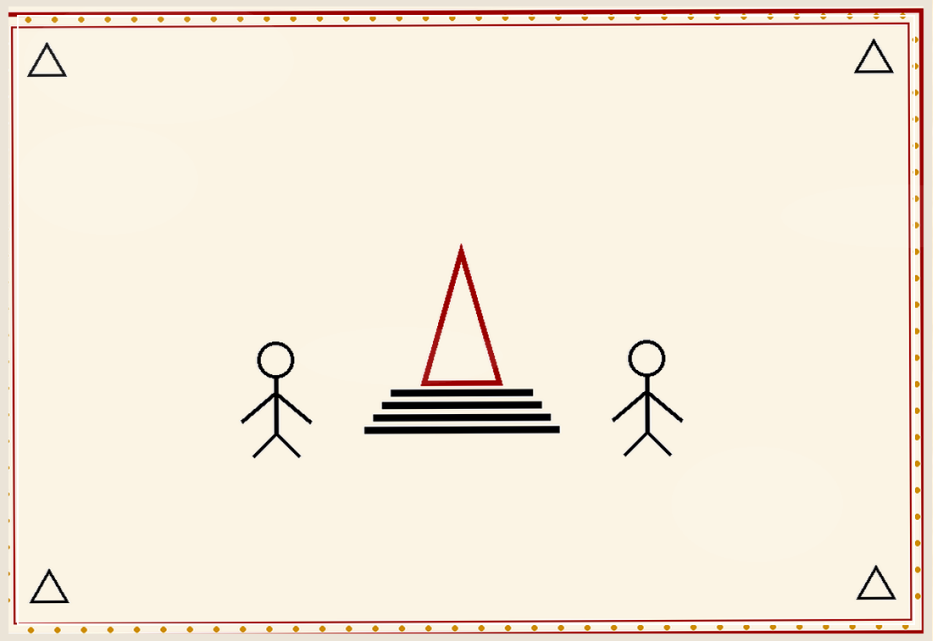

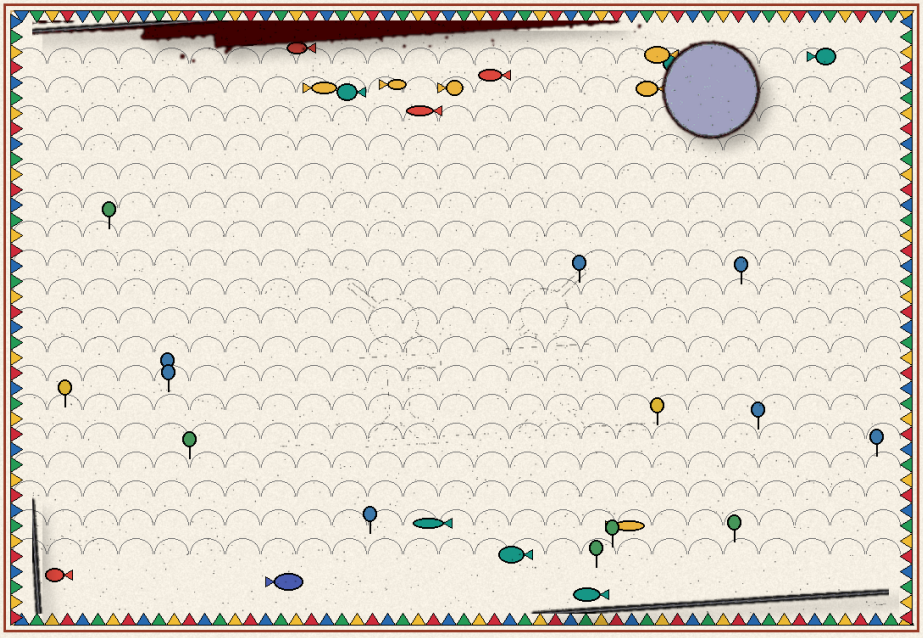

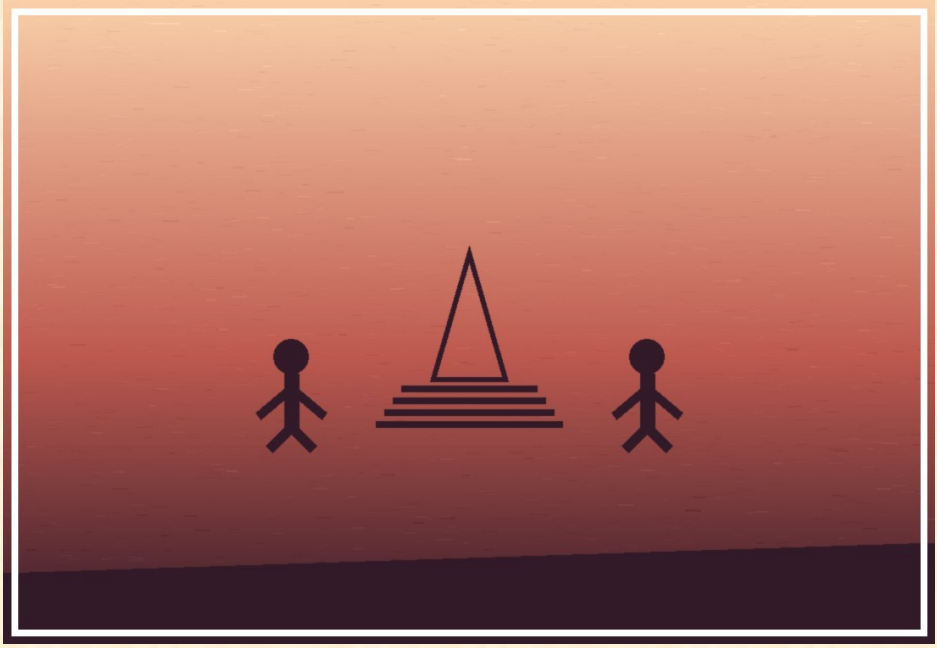

चित्र 22

जोगियानगरमे ओहि दिन कोनो चूल्हि नहि जरल। जरल खाली दूटा चिता — आ हुनका लगमे ठाढ़ि एकटा माए, जकर दुनू आँखिक इजोत एक्कहि रातिमे मिझा गेल छल।

निरसो — दीना-भदरीक माए। बेटा गेलाह, आब श्राद्धक बेर — मुदा श्राद्ध लेल पाइये नहि! घरमे की छल? किछु तूर, किछु केथरी, आ बरखो पुरान अभाव। माए की करतीह? — आ एतयसँ शुरू होइत अछि एहि गाथाक ओ अध्याय, जतय दुख चमत्कार बनि जाइत अछि।

अध्याय १२ : तूर आ बताशा

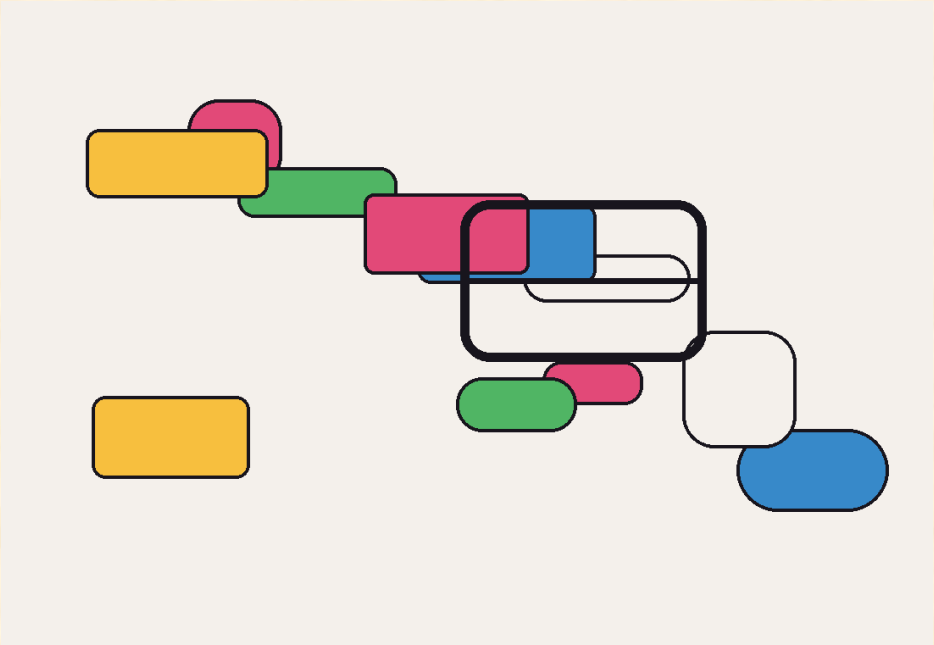

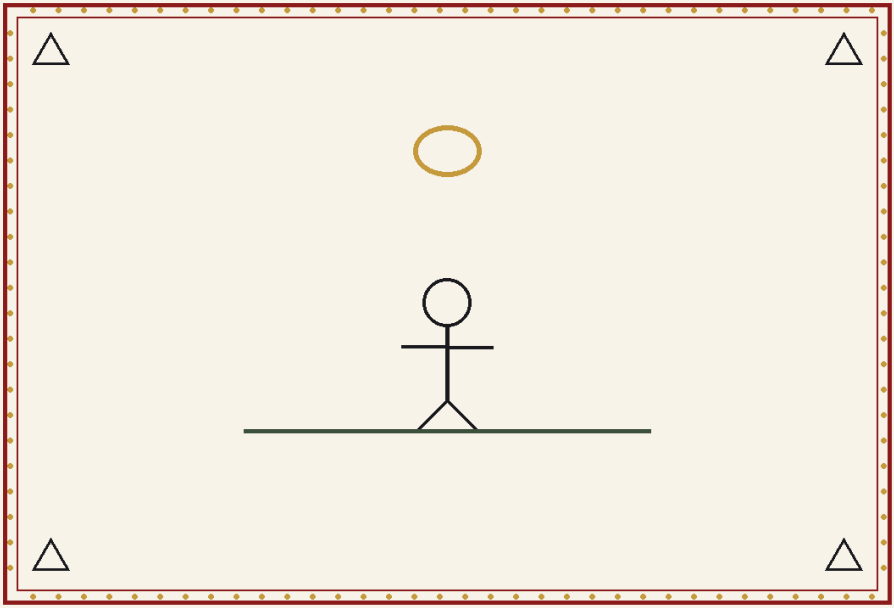

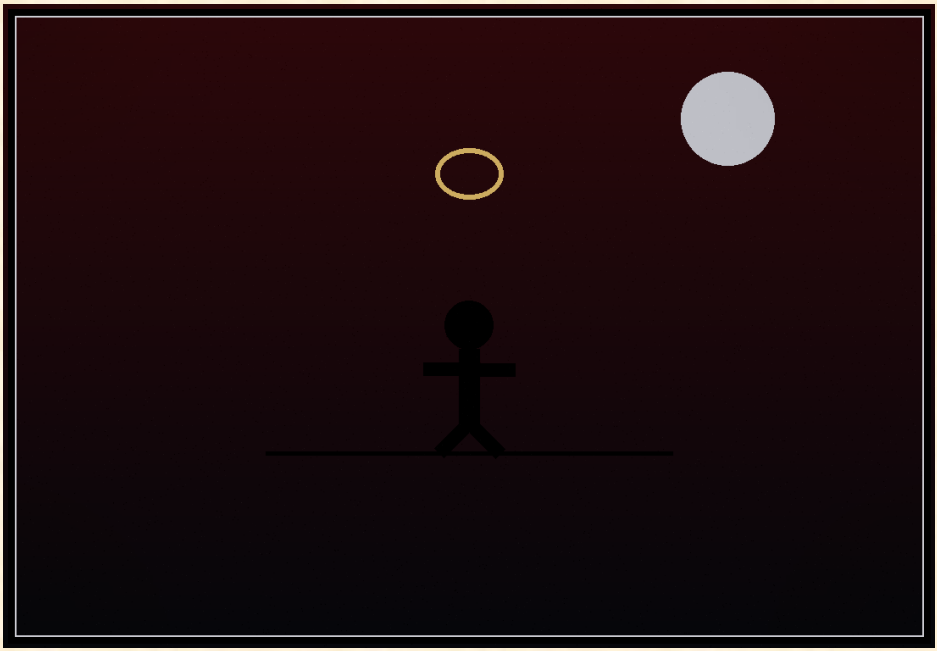

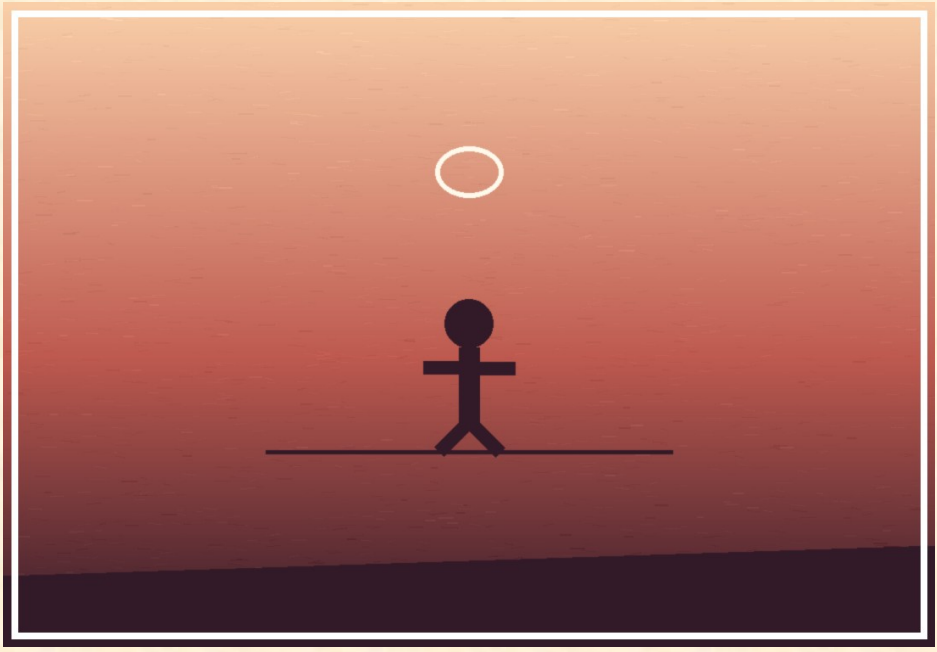

चित्र 23

राति मे निरसोकेँ सपना भेलनि। सपनामे दुनू बेटा एलाह — 'माए, कानू नहि। घरमे तूर अछि। ओकरा बनीमा लग लऽ जाउ। ओकर बदलामे ओ जे देत, ताहिसँ हमर श्राद्ध भऽ जाएत।'

तूर — रूइया, जकर भाव कौड़ीक। ओहिसँ श्राद्ध? मुदा बेटाक बोल माए लेल वेदवाक्य। भोर होइते निरसो तूरक गट्ठर माथपर उठा बनीमाक दोकान गेलीह।

बनीमा तूर देखि हँसल — हँसी ओ, जे गरीबक चीजपर धनिक हँसैत अछि। 'एहि तूरक बदला की लेब, बुढ़िया?' ओ तराजू उठौलक — एक दिस तूर राखलक, दोसर दिस बताशा। सोचने छल, मुट्ठी भरि बताशामे टरि जाएत।

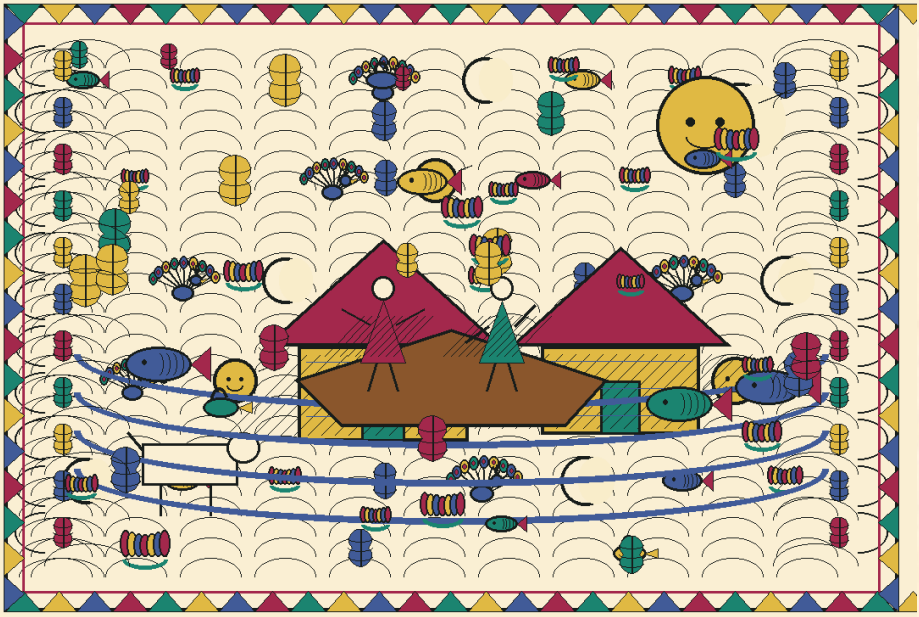

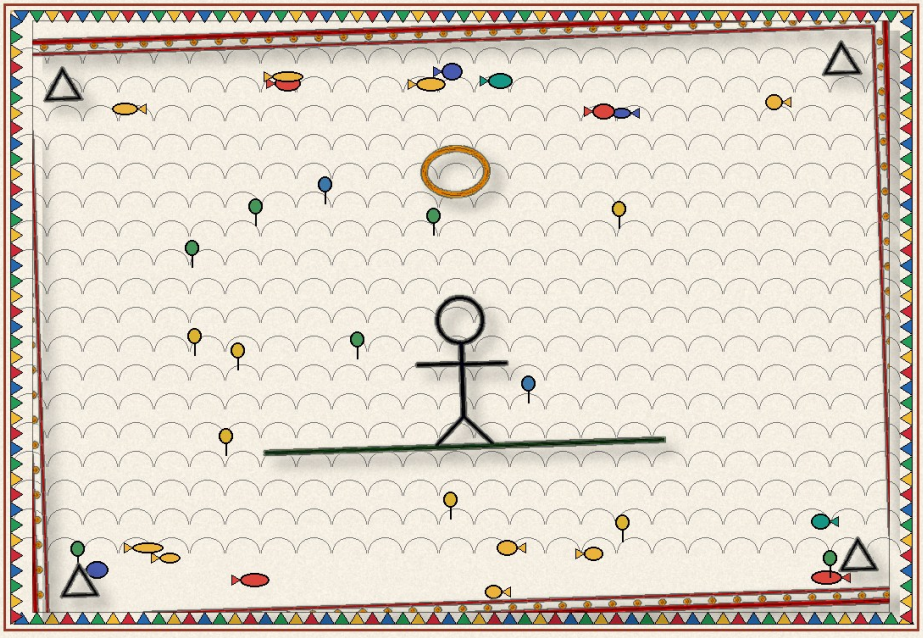

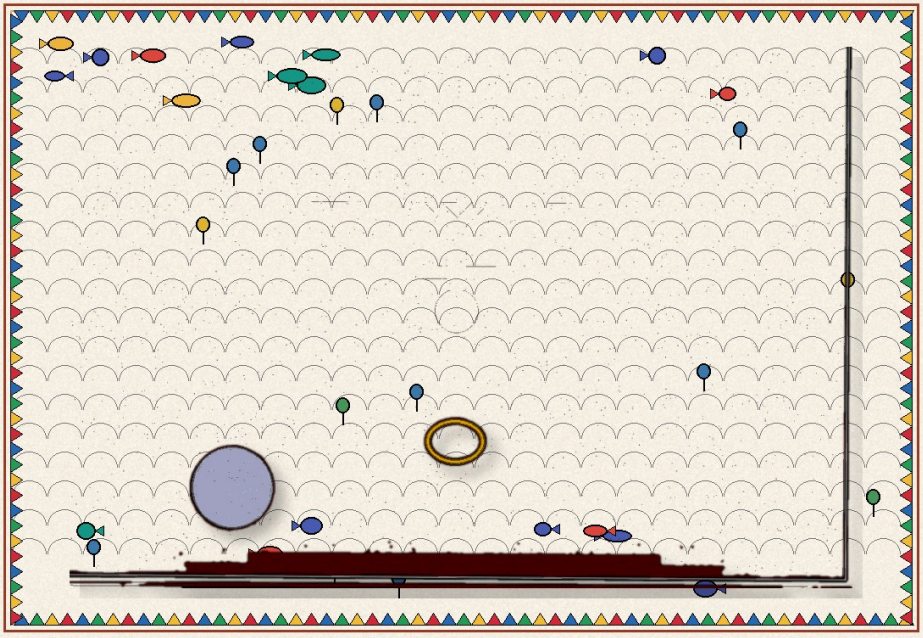

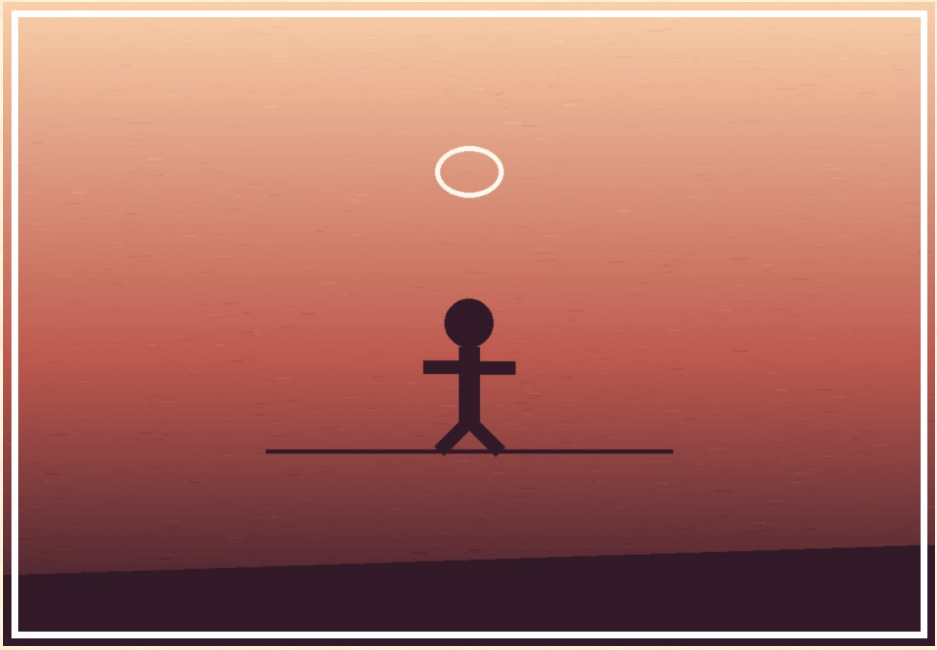

चित्र 24

मुदा ई की?! बताशा चढ़ल, पलड़ा नहि उठल। आर बताशा — नहि उठल। मिसरी, चाउर, दालि, गुड़ — भरि दोकानक समान तौला गेल, मुदा तूरबला पलड़ा टस-सँ-मस नहि! बनीमाक हँसी सुखा गेल, हाथ काँपए लागल। ओकरा की बुझल — ओहि पलड़ापर तूर नहि, दीना-भदरी अपने बैसल छलाह।

भरि दोकान खाली भऽ गेल, आ पलड़ा झुकले रहल। बनीमा हाथ जोड़ि कऽ ठाढ़ भऽ गेल — 'माता! ई तूर साधारण नहि!' ओ निरसोक संग बोनिहार आ समान पठा देलक — गाड़ी भरि। जे माए भोरमे खाली हाथ निकलल छलीह, से साँझखन बेटा सभक श्राद्धक पूरा सरञ्जाम नेने घुरलीह। मरलोपर बेटा माएक लाज राखि लेलनि।

अध्याय १३ : जेवार आ हंसाक आँखि

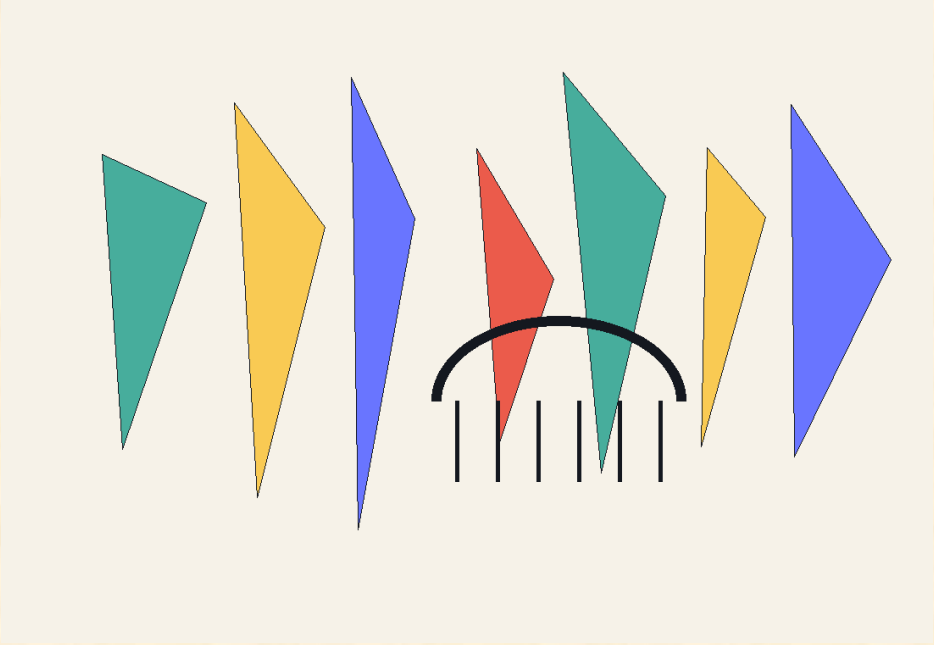

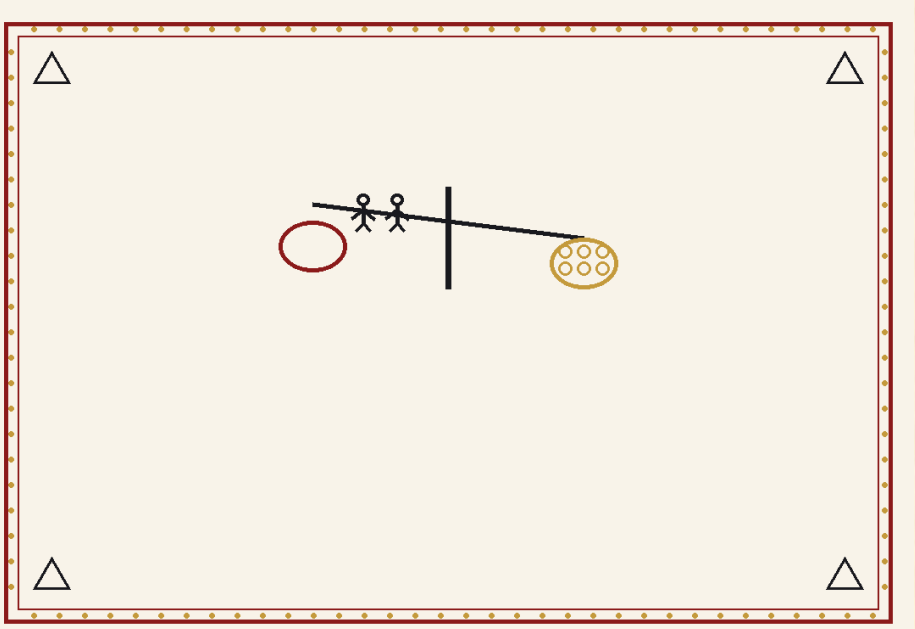

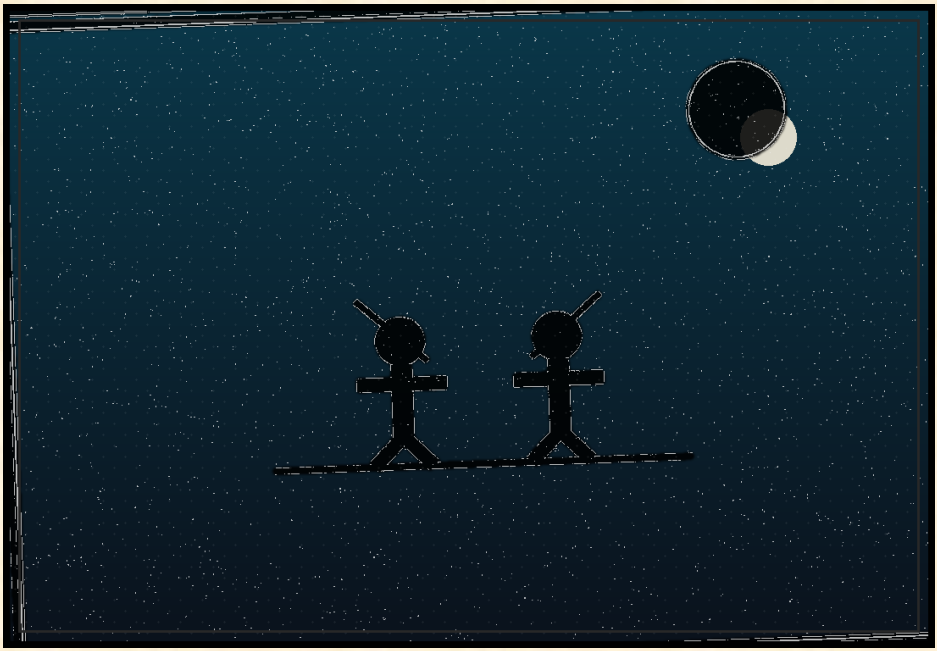

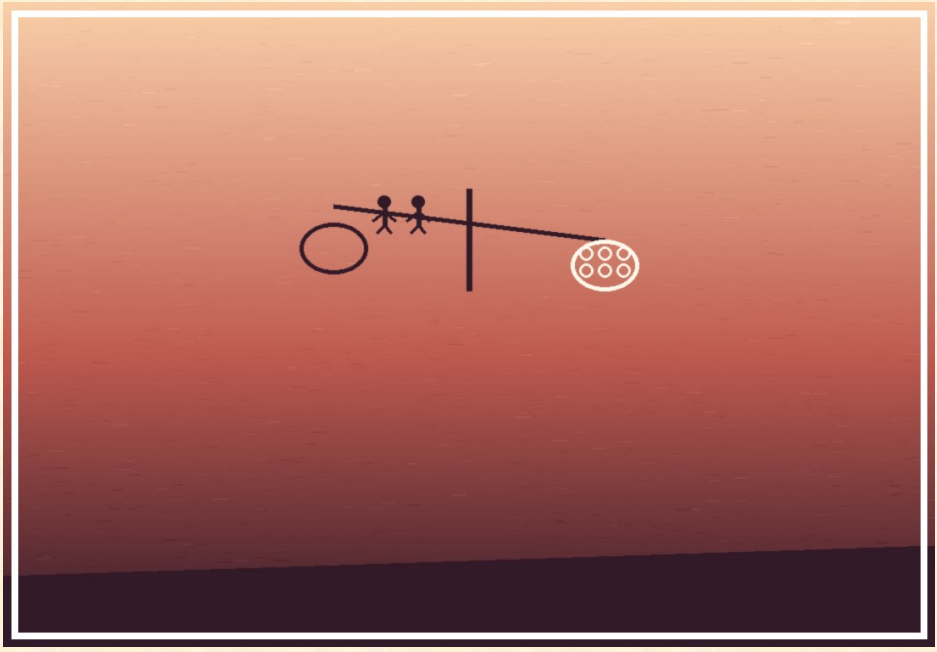

चित्र 25

निरसो जेवार देलनि — गाम-समाज भोज पर बैसल। आ ओहि भोजमे दूटा अनचिन्हार बारिक सभकेँ पड़सि-पड़सि कऽ खुआबए लागल। हाथ एहन चलैत छल जेना बरखोक अभ्यास हो; आ परसैत काल आँखि एहन झुकल, जेना केओ चिन्हि ने लिअए।

चिन्हबे केलक — मुदा से केओ आर नहि। भोजक बीच दीना एक क्षण लेल असल रूपमे आबि गेलाह — आ ठीक ओही क्षण हुनकर कनियाँ हंसाक आँखि हुनकापर पड़ि गेल। पत्नीक आँखि — जे भेषक सात परदा फाड़ि कऽ देखि लैत अछि।

हंसा दौड़लि निरसो लग — 'माए! बारिक... ओ त' अपने...!' मुदा निरसो गप नहि माननलनि। मानितथि कोना? जइ बेटाकेँ चितापर चढ़बओने होथि, से 'बेटा परसि रहल छथि' कोना पतिआथि? दुखक एकटा निर्ममता ईहो — जे ओ आसक दरबज्जा पहिने बन्द करैत अछि।

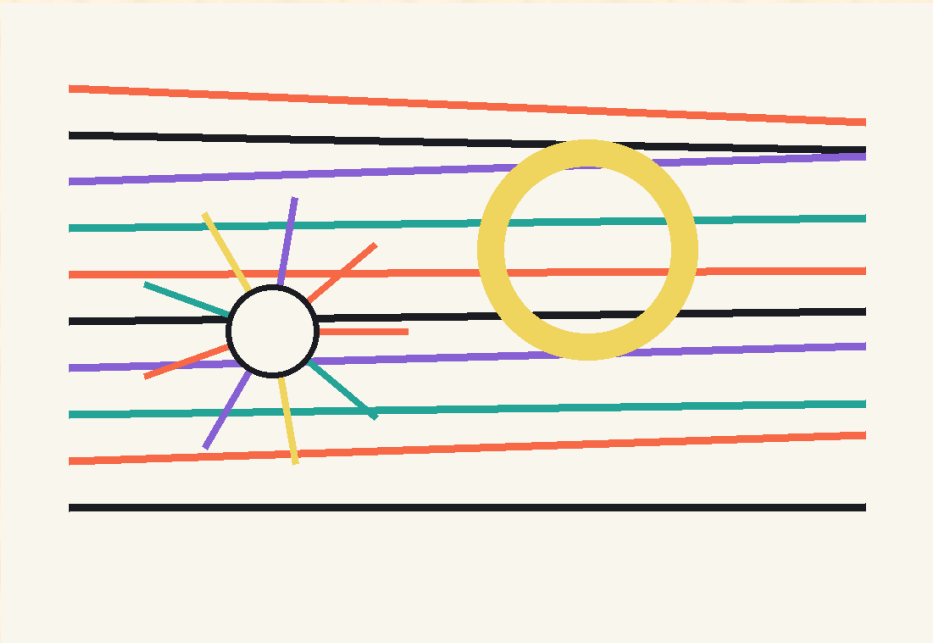

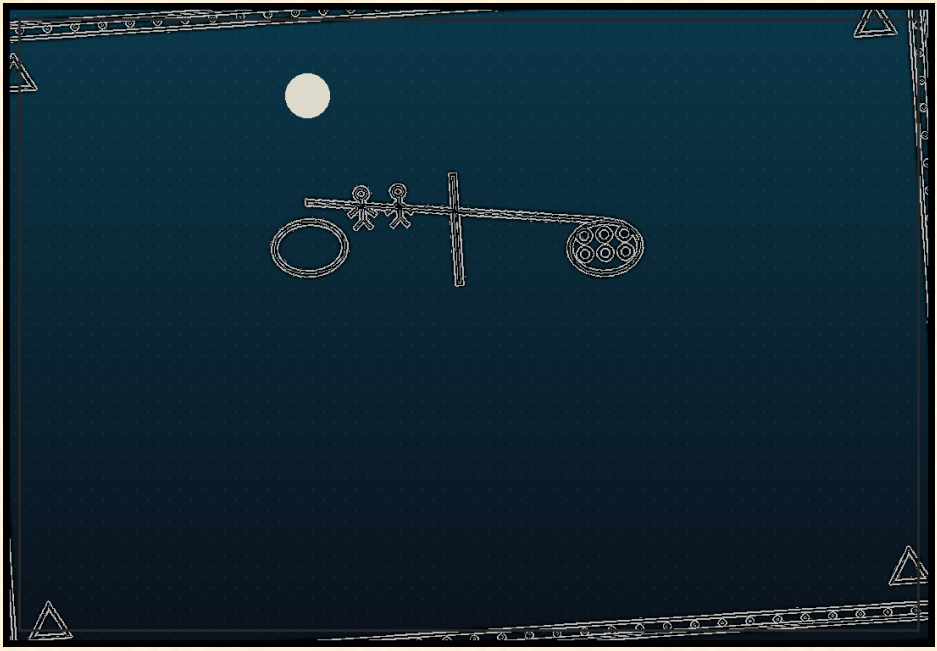

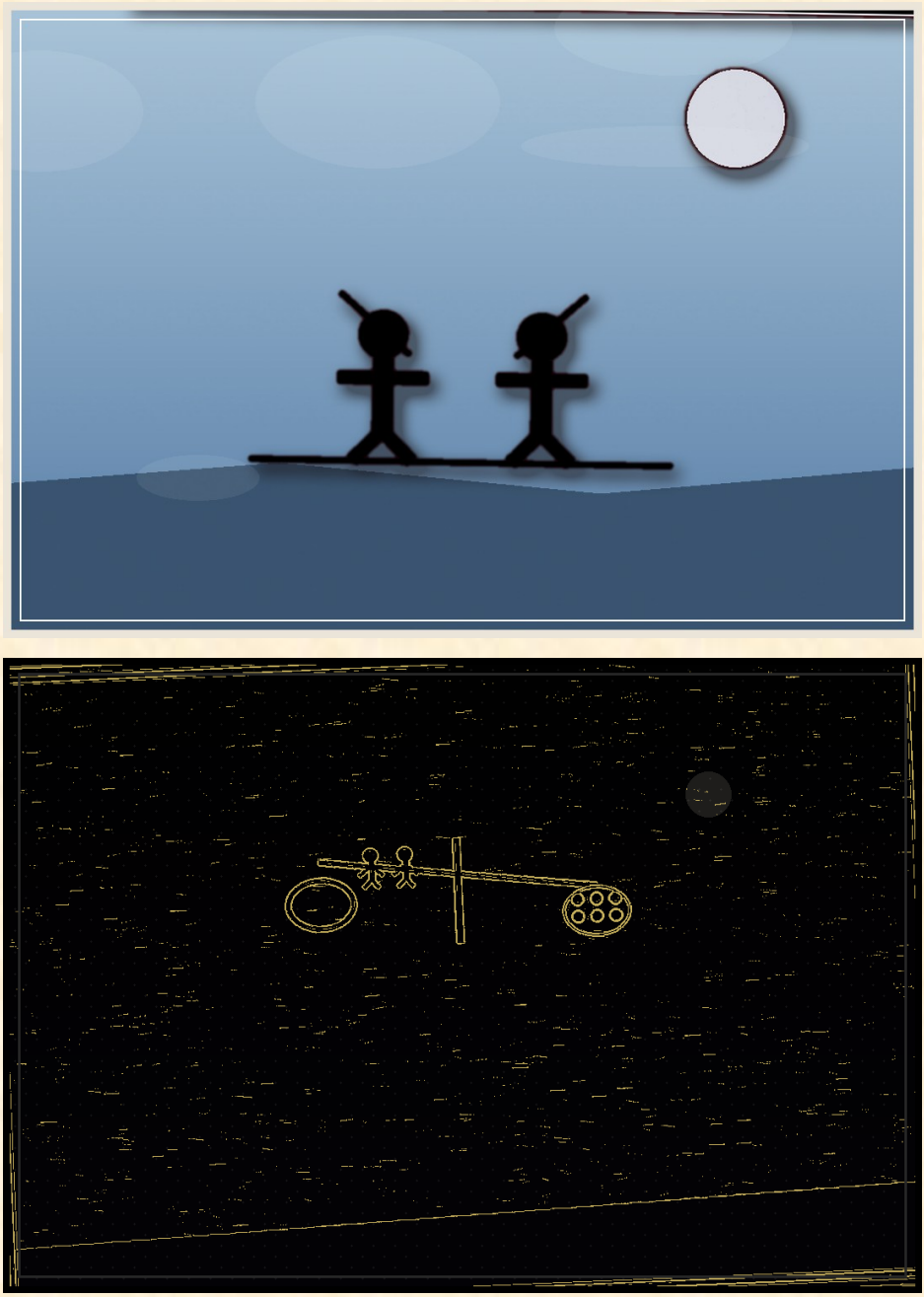

चित्र 26

हंसा हारलि नहि। कहलनि — 'अपन छाती सात तह कपड़ासँ बान्हि लिअ, आ ओकरा लग चलू जे दीना बनि गेल छल।' निरसो सात तह कपड़ा बान्हि ओतय गेलीह — आ माएक करेज बेटाकेँ चिन्हि गेल: सात तह कपड़ा फाड़ि दूध निकलल आ सोझे दीना-भदरीक मुँहमे चलि गेल।

माएक दूध — संसारक सभसँ पैघ प्रमाण। आ ओही क्षण, माएक दूधक अन्तिम अरघ पीबि, दुनू भाइ बिला गेलाह। एहि बेर कोनो बगरा नहि, कोनो छल नहि — खाली एकटा माए छलि, जकर आँचर भीजल छल, आ दूटा बेटा, जे आब देहसँ आगाँक यात्रापर छलाह।

अध्याय १४ : मोरंगक धर्मयुद्ध

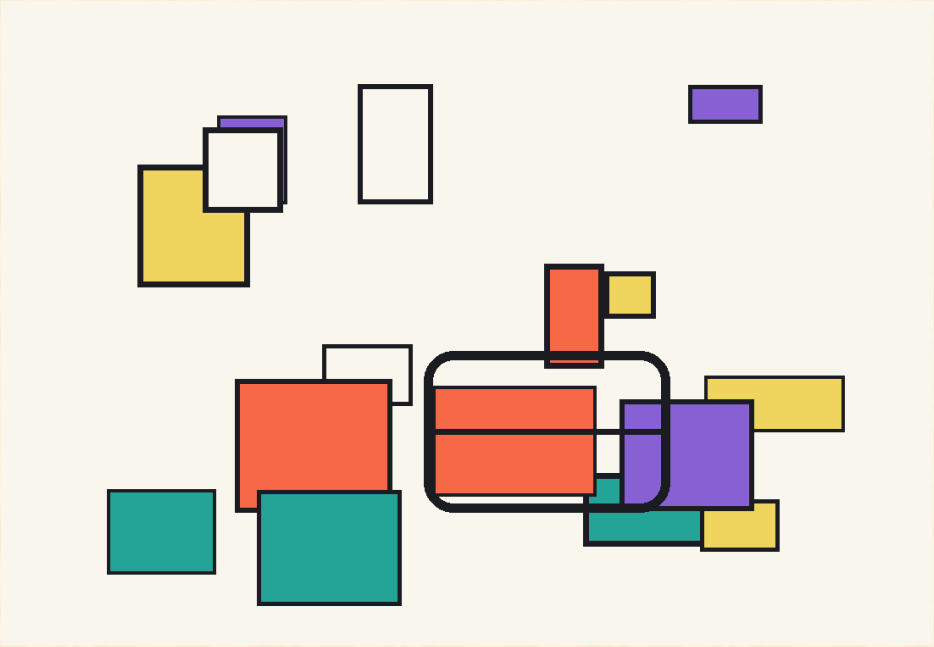

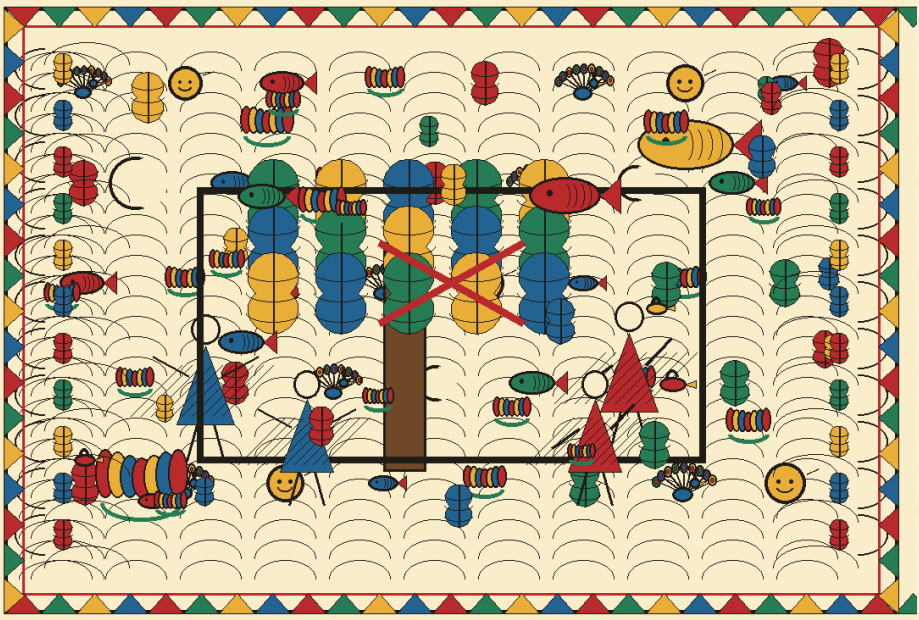

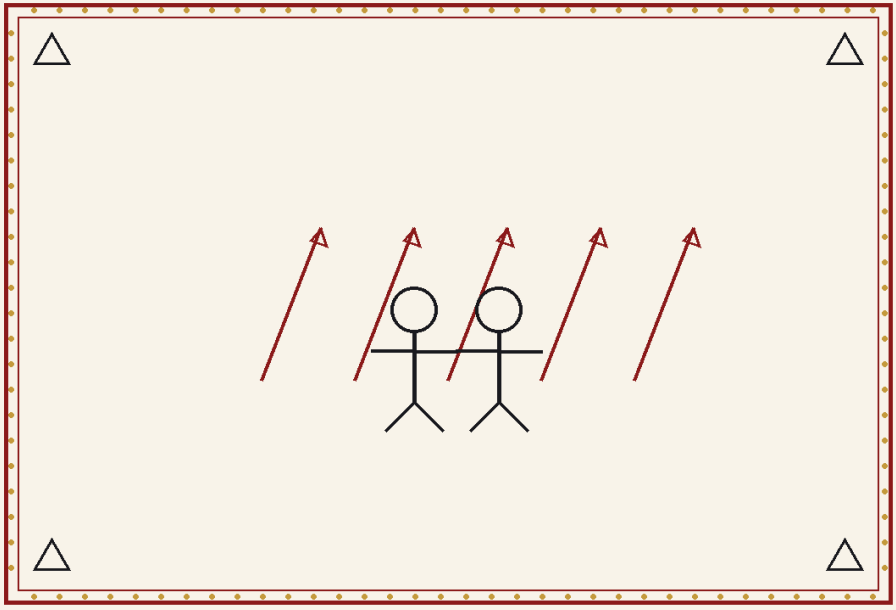

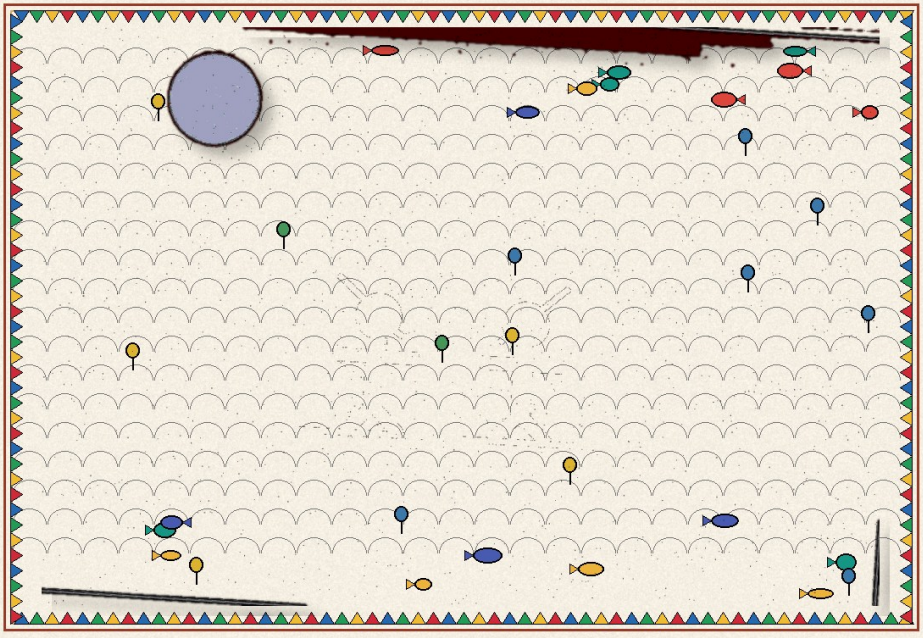

चित्र 27

मुदा देह छूटल, धर्म नहि। दीना-भदरीक आत्मा आब ओ काज करए बिदा भेल जे जीबैत काल अपूर्ण रहि गेल छल — दुष्टक नाश, आ अपन समाज मुसहरक उत्थान।

बिदा भेलाह मोरंग। ओतय जोरावर सिंहक आतंक छल — मारलनि जोरावर सिंहकेँ, आ मुसहरक माथ ऊँच केलनि। जे जाति बरखोसँ खाली झुकब जनैत छल, से पहिल बेर सोझ ठाढ़ भेल।

फेर ताहिरकेँ मारलनि। फेर सुनरियाकेँ मारलनि। जतय-जतय बोनिहारपर अत्याचार, ओतय-ओतय दुनू भाइक अदृश्य कोदारि। आ अन्तमे — धारक कातमे — ओकरा मारलनि जे एहि सभटा दुखक जड़ि छलि: डैनियाही बुधनीकेँ।

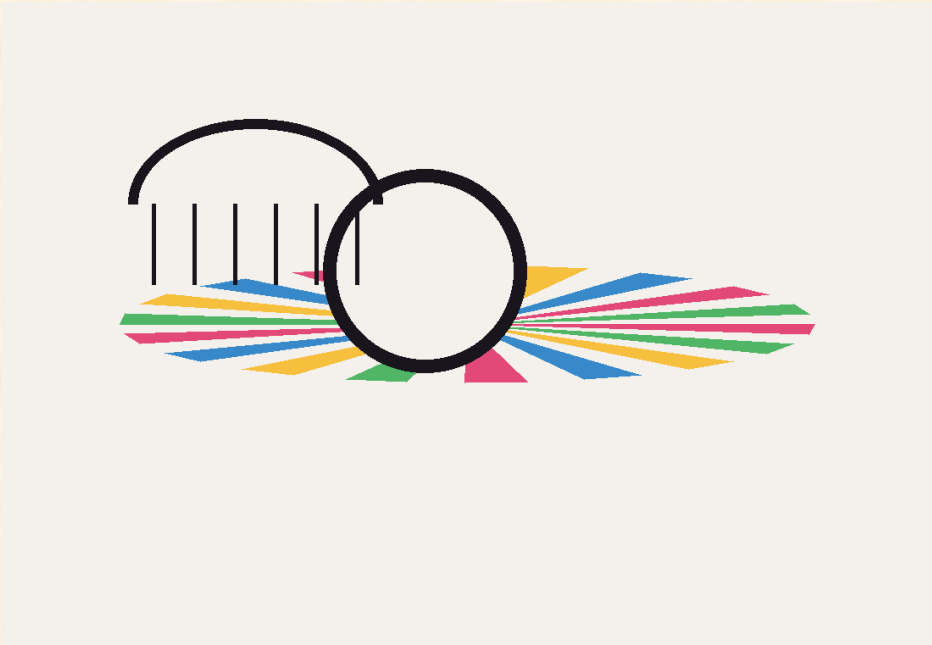

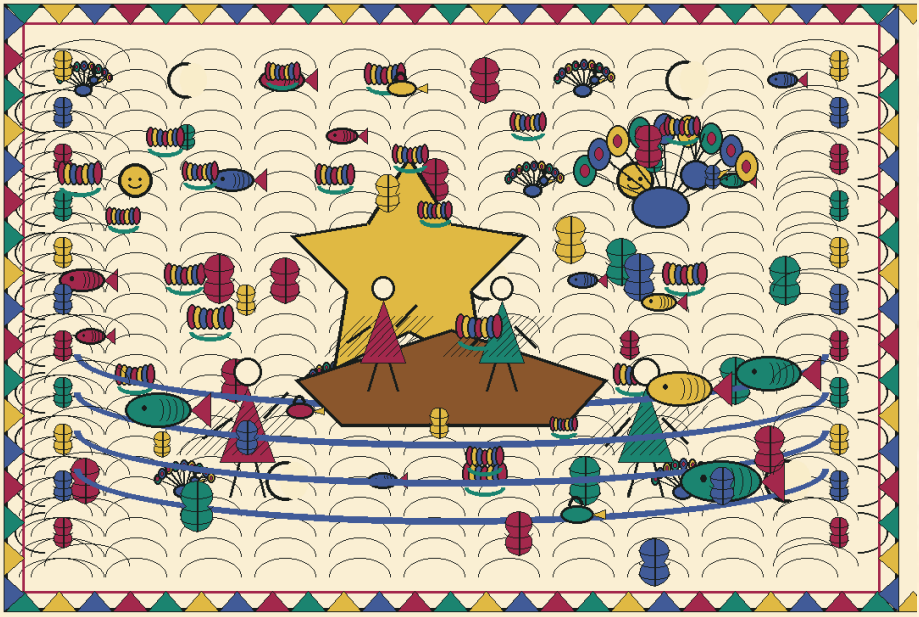

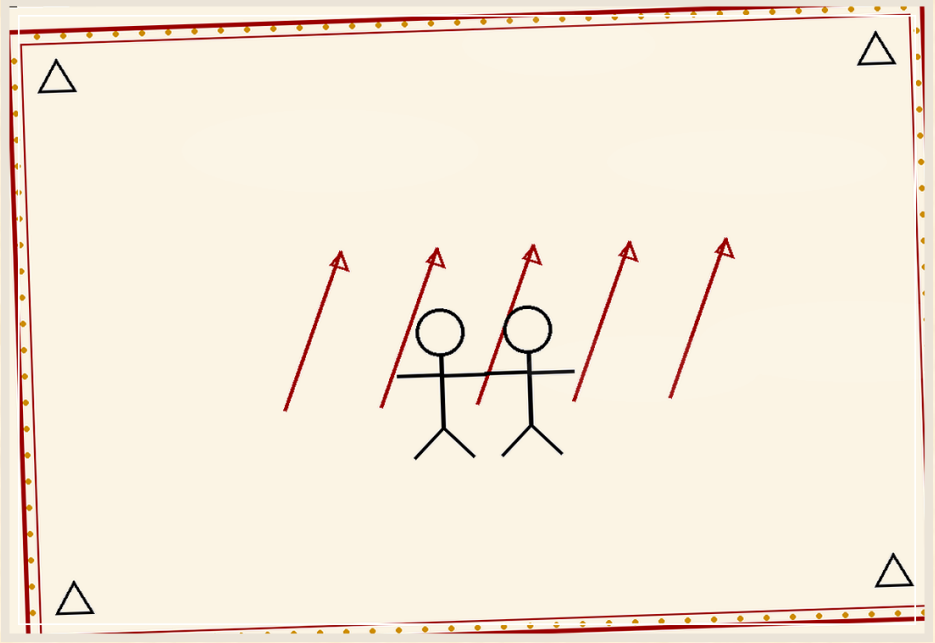

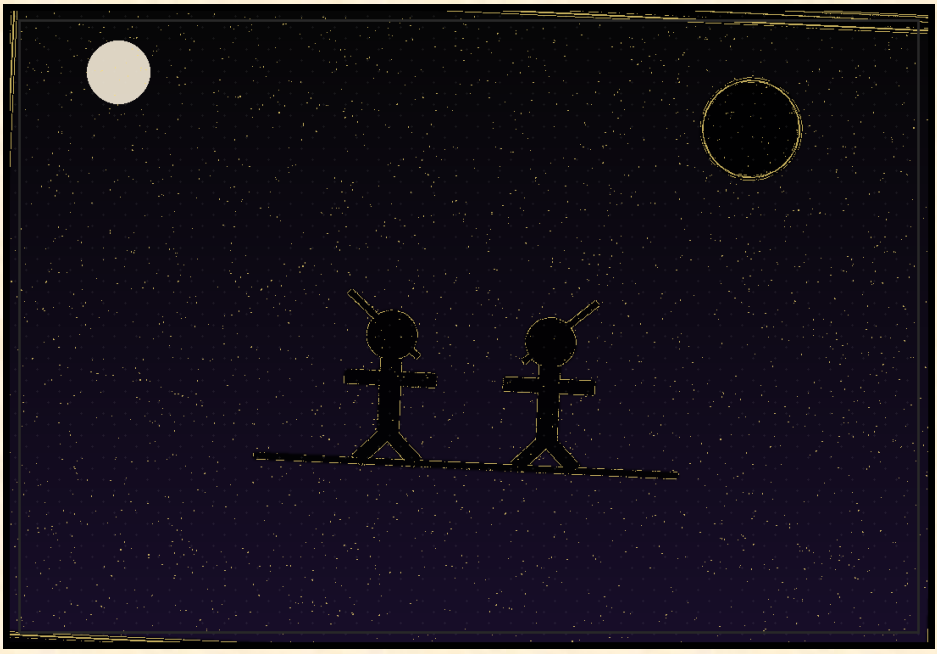

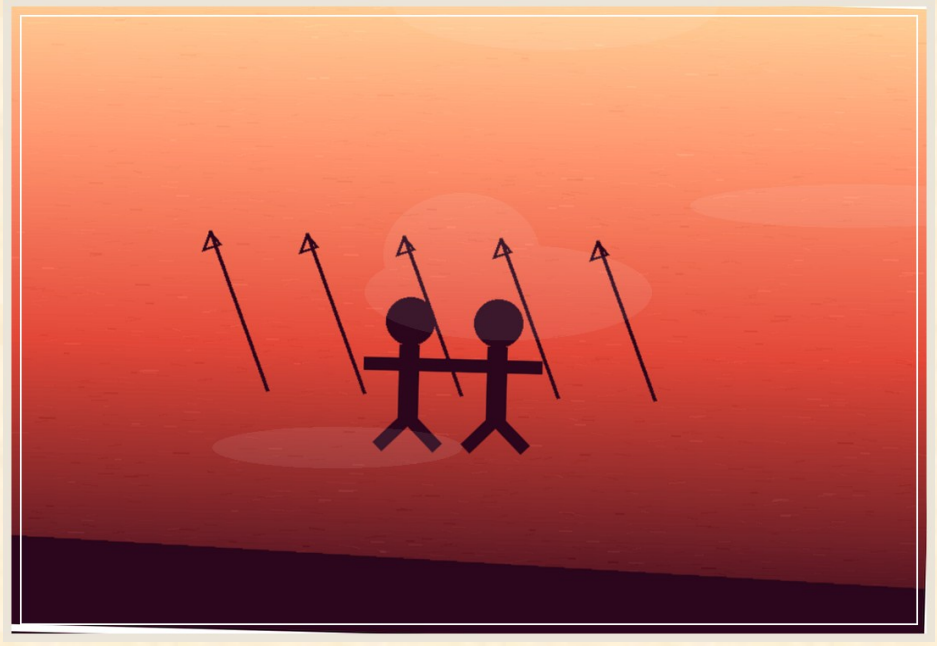

चित्र 28

जाहि बुधनीक वरसँ ई गाथा दुखान्त बनल छल, से अपने अन्त धारक कातमे पओलक। बदला जे घर घुरि गेल छल, से न्याय बनि कऽ घुरि आएल छल। गनती कएनिहार कहैत अछि — डेढ़ सए दुष्टक नाश केलनि दीना-भदरी। डेढ़ सए — माने डेढ़ सए गामक बोनिहारक साँस खुजल।

आ ई सभ भेल बिनु राजगद्दीक, बिनु सेनाक, बिनु मुकुटक। दू मुसहर भाइ — जिनका जीबैत जमीन्दार बड़द बुझलक — मरला उत्तर पूरा अंचलक रखबार बनि गेलाह।

अध्याय १५ : सलहेसक वचन

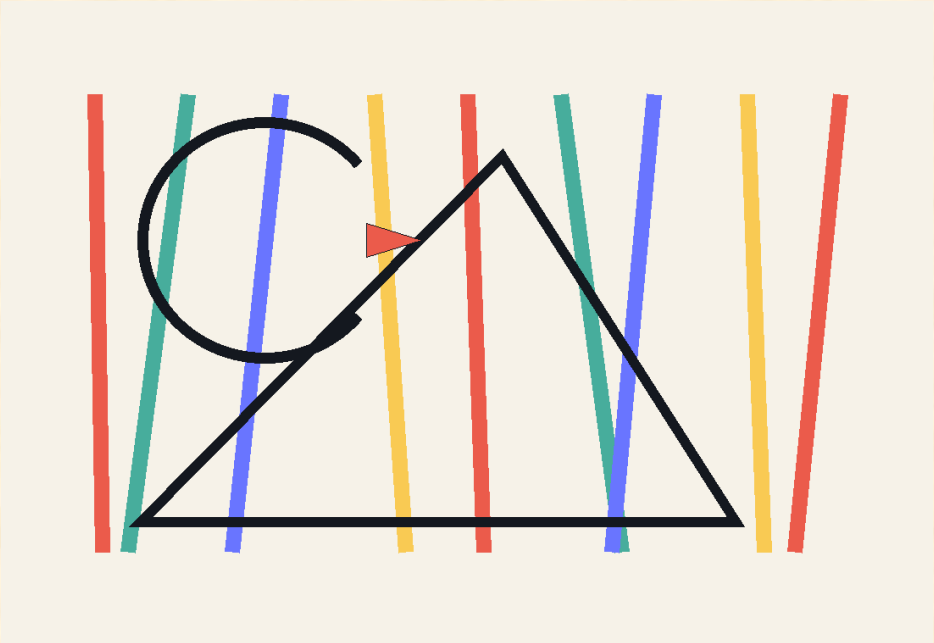

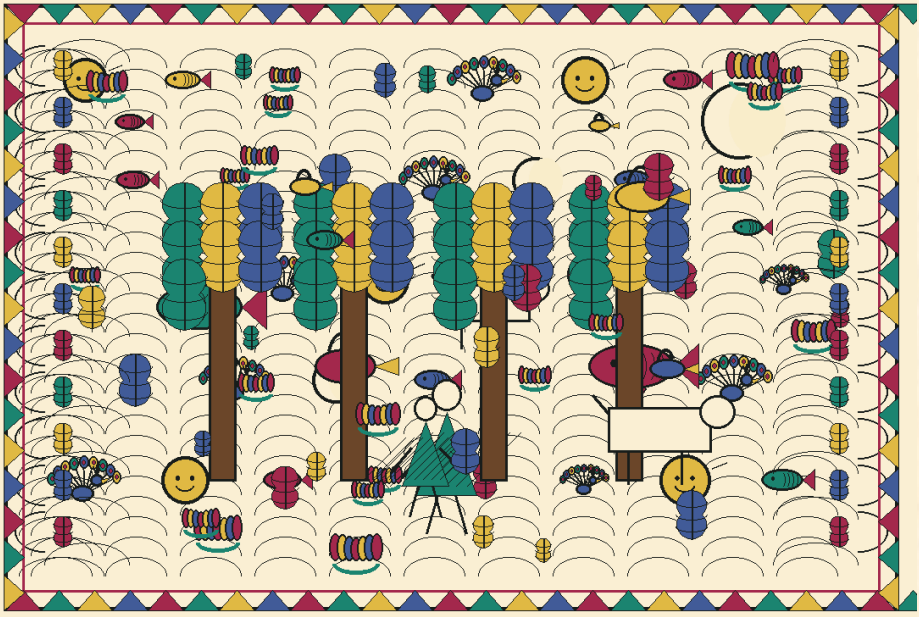

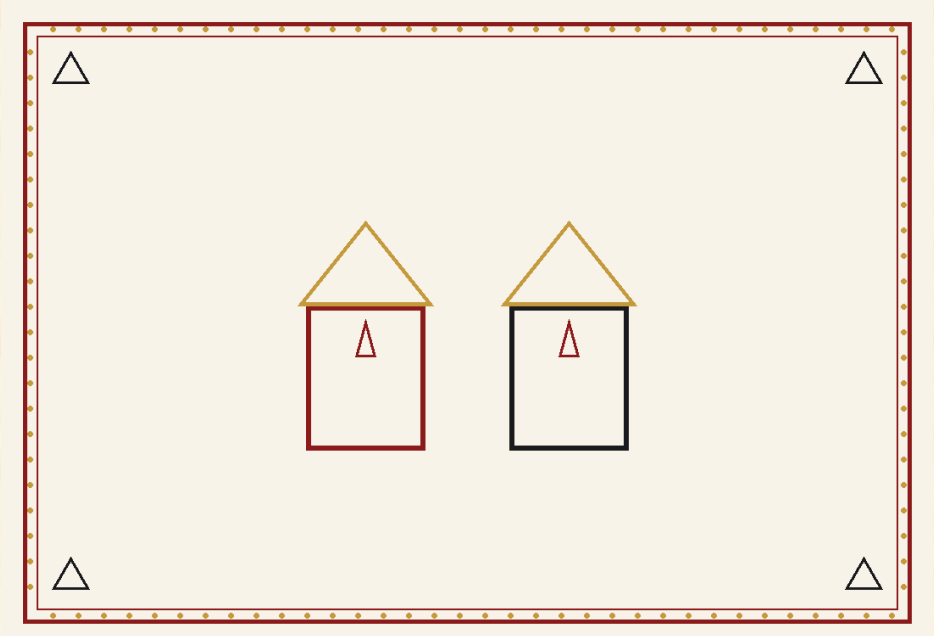

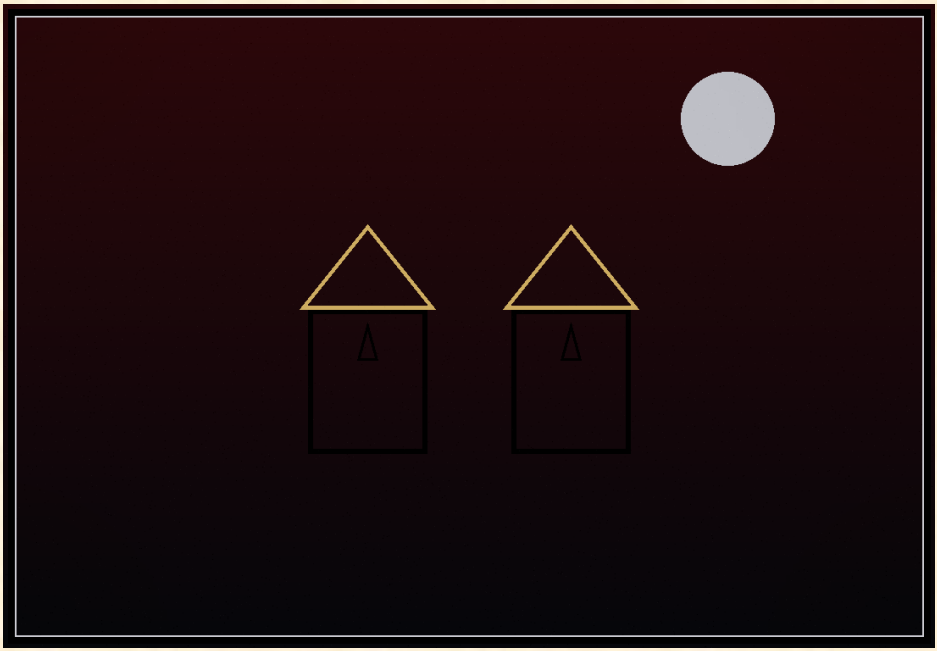

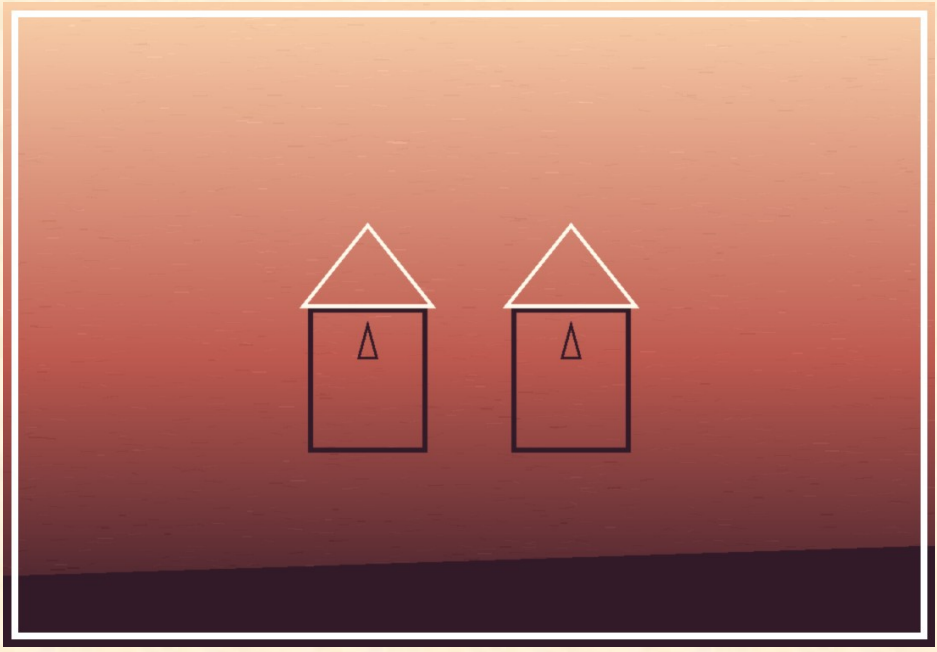

चित्र 29

आ तखन बजलाह सलहेस — ओ देवता, जे अपने वचनक सिक्कड़मे बान्हल अपन प्रिय वीरकेँ नहि बचा सकल छलाह। हुनक करेजक ओ भार आब वचनेसँ उतरत — मुदा एहि बेर वचन वरदान बनत, अभिशाप नहि।

सलहेस बजलाह: 'जतए-जतए हमर पूजा हएत, ततए-ततए अहाँक पूजा सेहो हएत।'

ई खाली वचन नहि छल — ई क्षमा-याचना छल, देवताक कानब छल, आ अमरत्वक अभिषेक छल। जे प्राण हुनक विवशतासँ गेल, ओकरा ओ अपन पूजाक अर्द्धांश दऽ कऽ अमर कऽ देलनि।

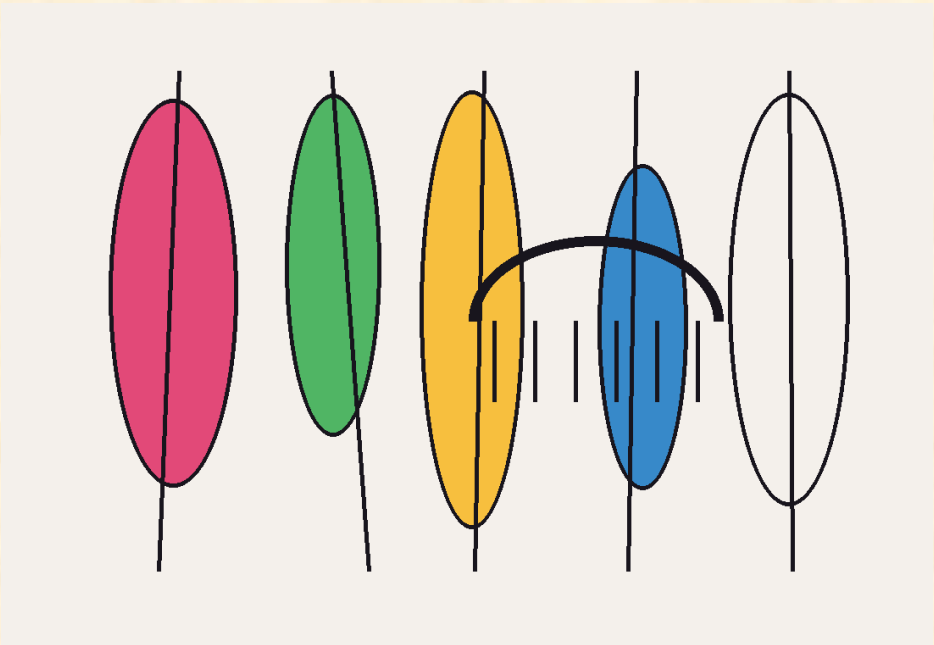

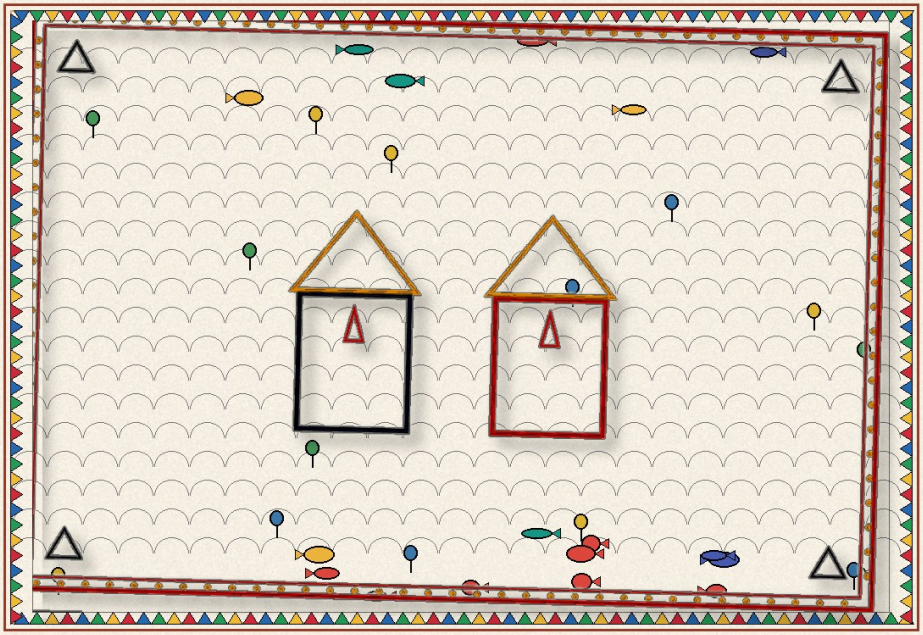

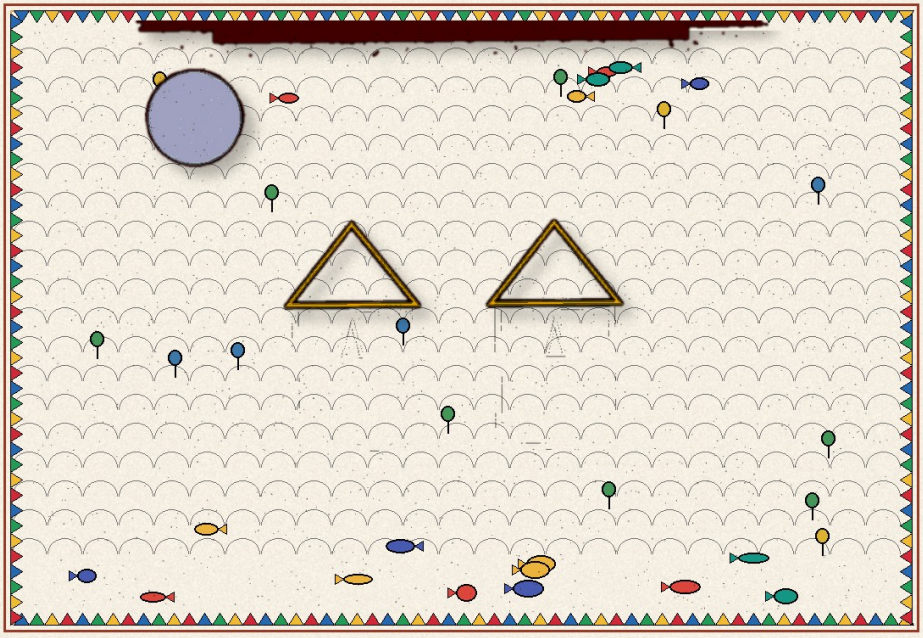

चित्र 30

आ से भेल। तहियासँ सलहेस आ दीना-भदरीक गहमर थान संगे रहए लागल। आइयो मिथिलांचलमे जतय सलहेसक फूल चढ़ैत अछि, ओतय दीना-भदरीक नाम सेहो बाजल जाइत अछि। देवता आ बोनिहार — एक्कहि आंगनमे, एक्कहि धूप-दीपमे।

पूजा केहन विचित्र न्याय थिक! जमीन्दार कनक सिंहक नाम आइ ककरो मोन नहि; बुधनीक नाम खाली गारि रूपेँ बाँचल; आ जे दू भाइ मारल गेलाह, से घर-घरक गोसाउनि-घर धरि पहुँचि गेलाह। समय सभसँ पैघ अदालत थिक — ओ फैसला देर सँ सुनबैत अछि, मुदा सुनबैत जरूर अछि।

अध्याय १६ : मुक्ति

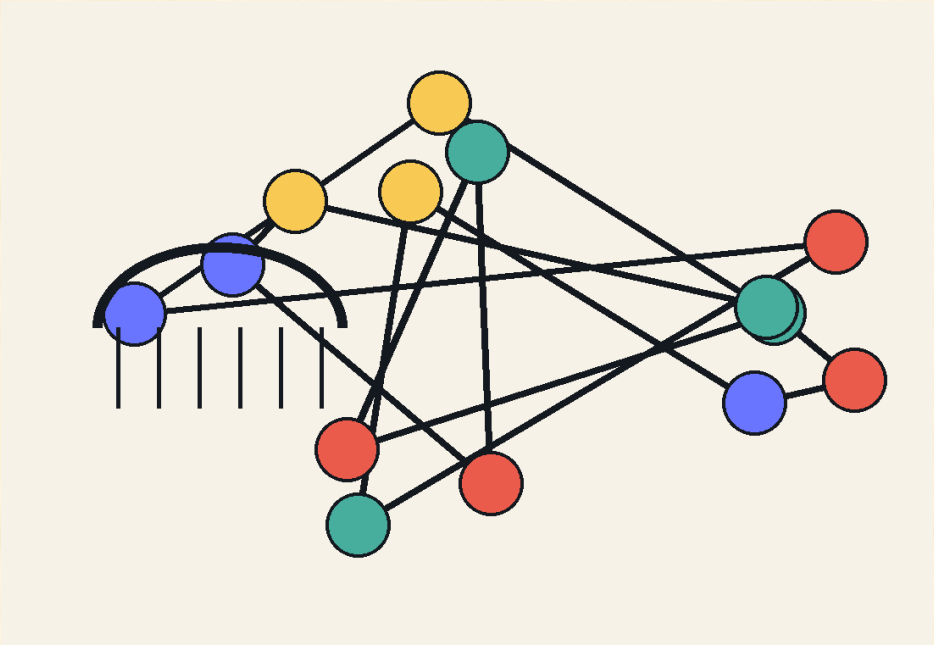

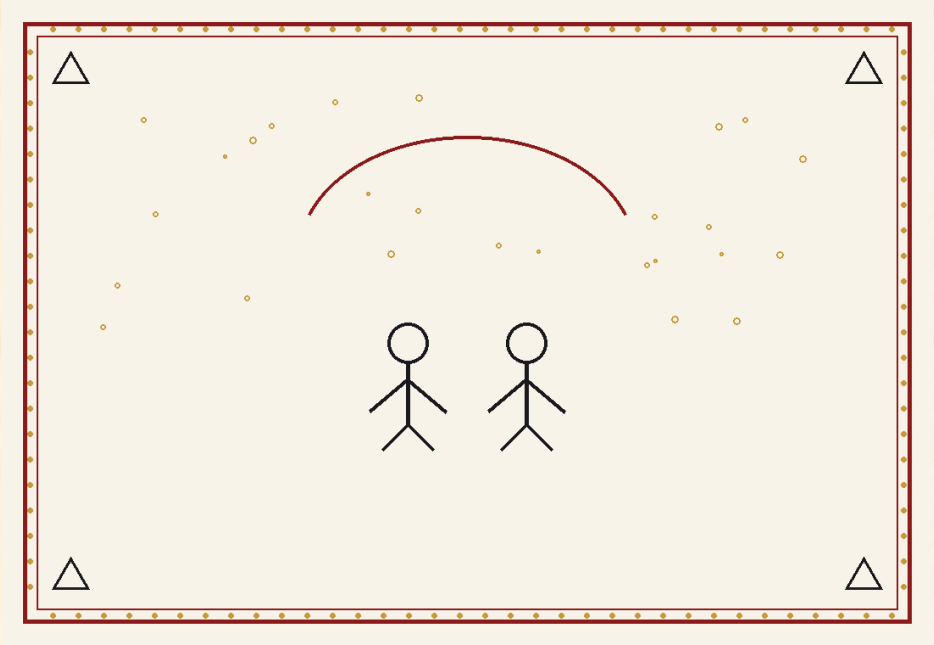

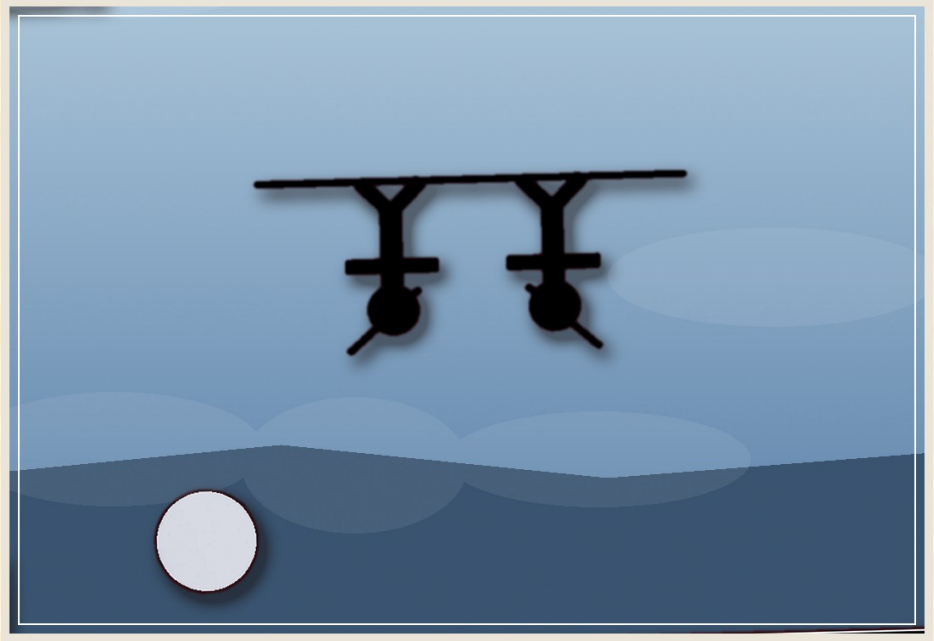

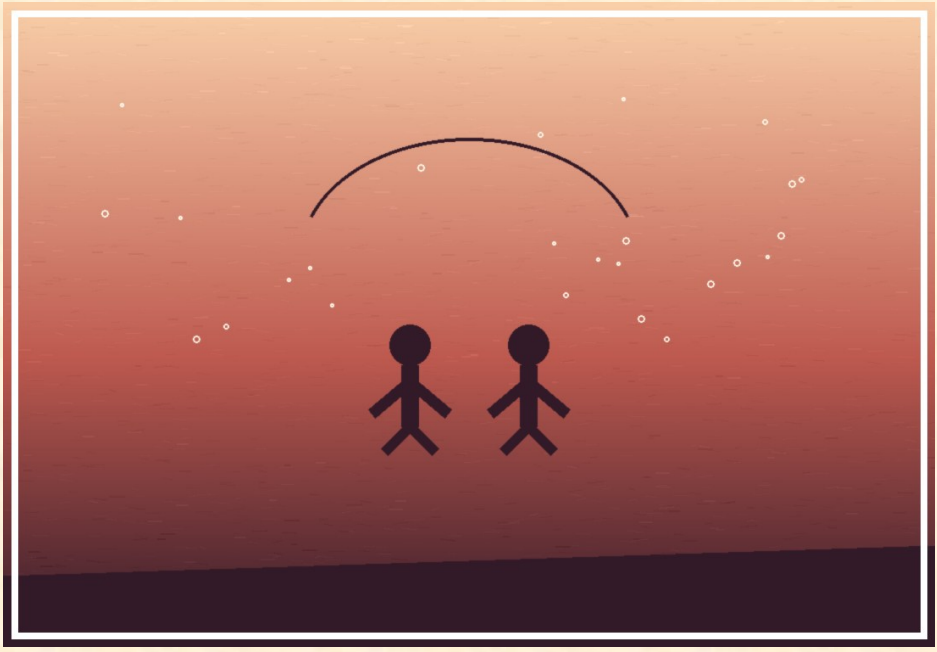

चित्र 31

आ अन्तमे — जखन धरतीपरक सभटा काज सम्पन्न भेल, सभ दुष्टक हिसाब चुकता भेल, आ सभ थानमे नाम अमर भेल — तखन दीना-भदरीकेँ मुक्ति भेटि गेलनि।

मुक्ति — माने आब ने कोनो बगराक डर, ने कोनो वरक सिक्कड़ि, ने कोनो पलड़ापर बैसबाक बेगरता। परलोकमे सलहेस आ दीना-भदरी संगे रहए लगलाह — देवता आ हुनक वीर, जिनका बीचमे आब कोनो वचनक देवाल नहि छल।

मुदा जोगियानगरक माटि आइयो दुनू भाइकेँ मोन रखने अछि। कहैत छथि आइयो जँ कोनो बोनिहार पाँच मोनक भार उठा लिअए, त' बूढ़-पुरान कहैत छथि — 'दीना-भदरीक अंश छै एहिमे।'

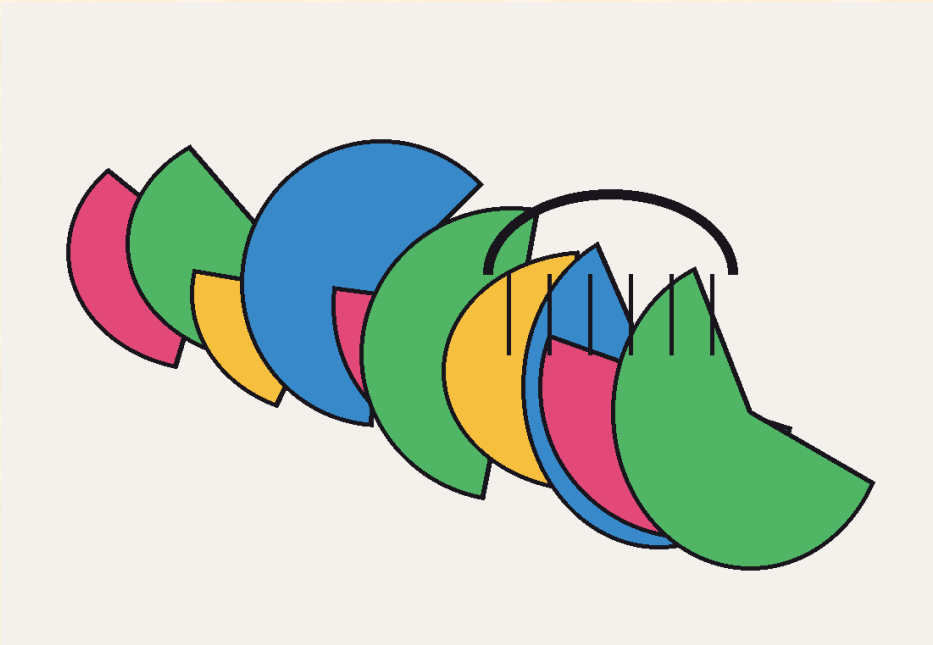

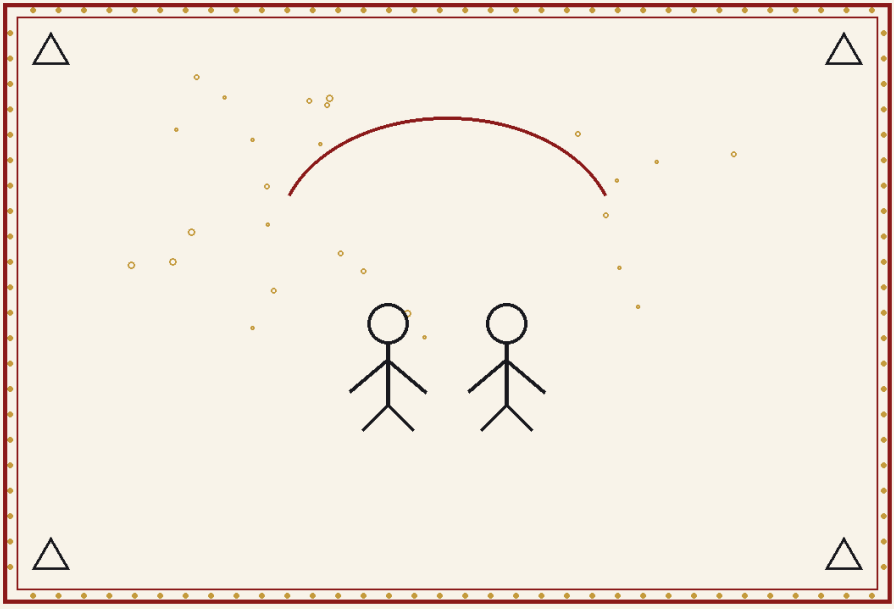

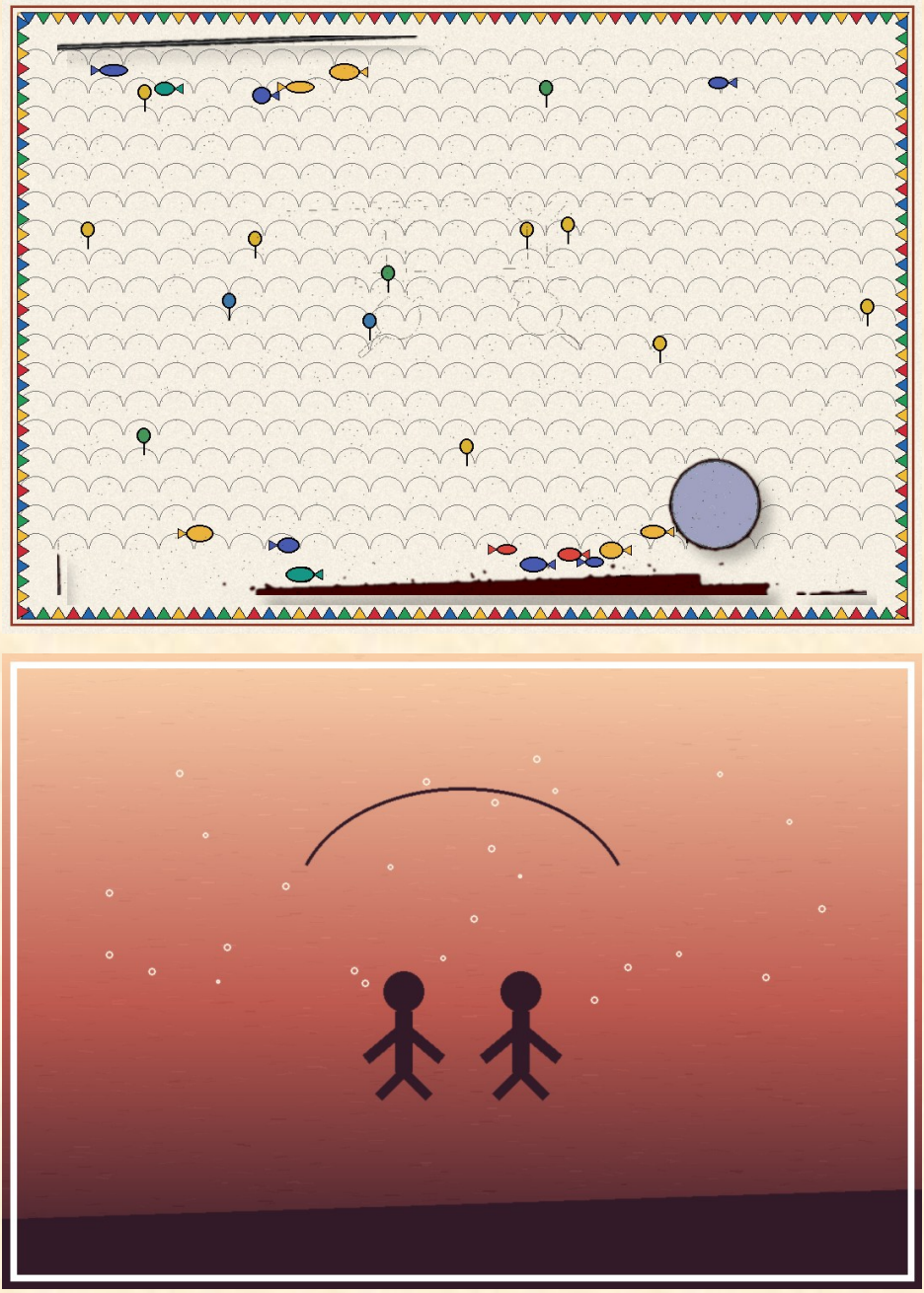

चित्र 32

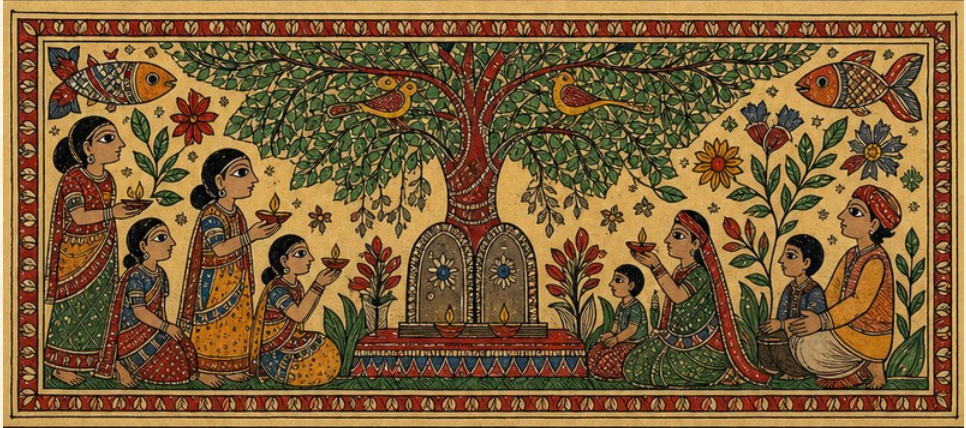

आ कटैया बोन? ओ आइयो अमावस्याक राति चुप भऽ जाइत अछि। ओ चुप्पी डरक नहि — श्रद्धाक थिक। बोन जनैत अछि जे ओकर माटिपर के सुतल छल।

ई गाथा दुखान्त थिक — दू निर्दोष भाइ छलसँ मारल गेलाह, एकटा माएक कोरा उजड़ल, एकटा कनियाँक सेनुर पोछाएल। मुदा एहि दुखक भीतरसँ जे बहराएल, से मृत्युसँ पैघ छल: श्राद्धक पलड़ापर बैसल पुत्र-धर्म, सात तह कपड़ा फाड़ि बहराएल माए-दूध, डेढ़ सए अत्याचारीक अन्त, आ देवताक संग बँटाएल पूजा। दीना-भदरी मरलाह — आ तेँ, अमर भेलाह।

समाप्त

VIDEHA: विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका: **ISSN 2229-547X:** www.videha.co.in

अमर बाबा

कमला धारक रक्षक — शिवरा गामक अमरसिंहक गाथा

गजेन्द्र ठाकुर

© Gajendra Thakur/ Preeti Thakur; गजेन्द्र ठाकुर सम्पादक, विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका (since 2000) ISSN 2229-547X

ई पोथी गजेन्द्र ठाकुर समग्रक अन्तर्गत संकलित अछि।

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक ISBN:978-93-5890-210-5

DESIGNED BY: AUM GAJENDRA THAKUR

उपक्रम : धार आ धरम

मिथिलाक धार सभ खाली पानि नहि थिक — ओ माए थिक, देवी थिक, आ कखनो काल... कथा थिक। कमला धार एहने एकटा कथा थिक, जकर लहरि-लहरिमे एकटा नाम आइयो धोखराइत अछि — अमर बाबा।

ई गाथा रक्षाक थिक — मुदा रक्षाक अपन मूल्य होइत छै। ई गाथा वीरताक थिक — मुदा वीरताक तरुआरिपर कखनो काल नोरो टघरैत अछि। तेँ ई गाथा जतेक वीर-रसक, ततबे करुण।

अध्याय १ : कमला धारक जन्म

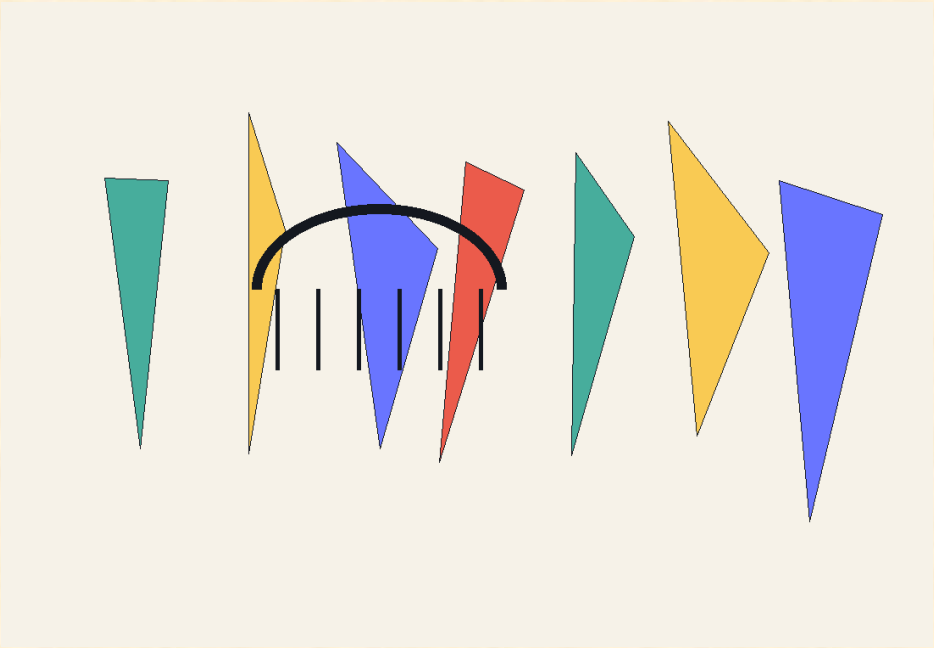

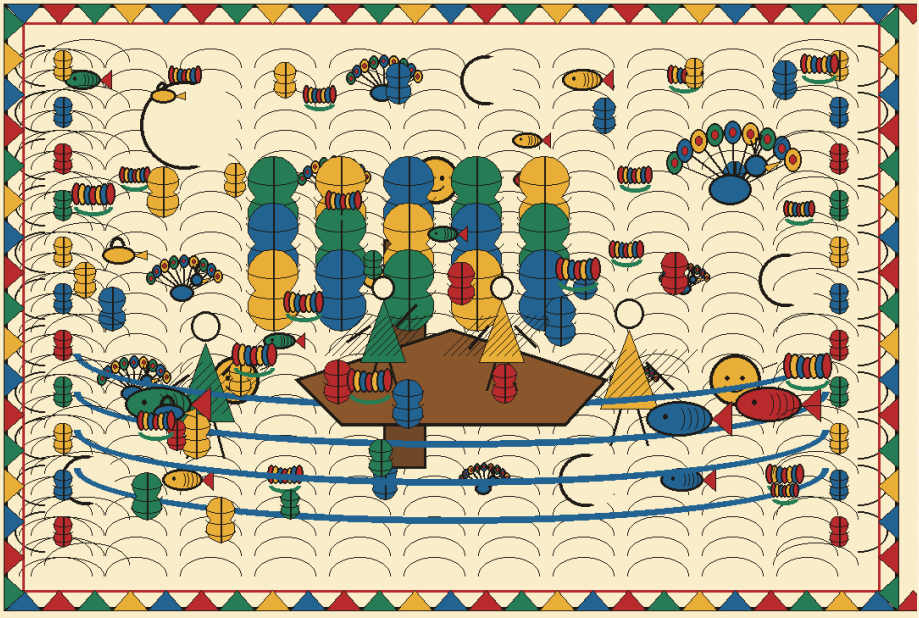

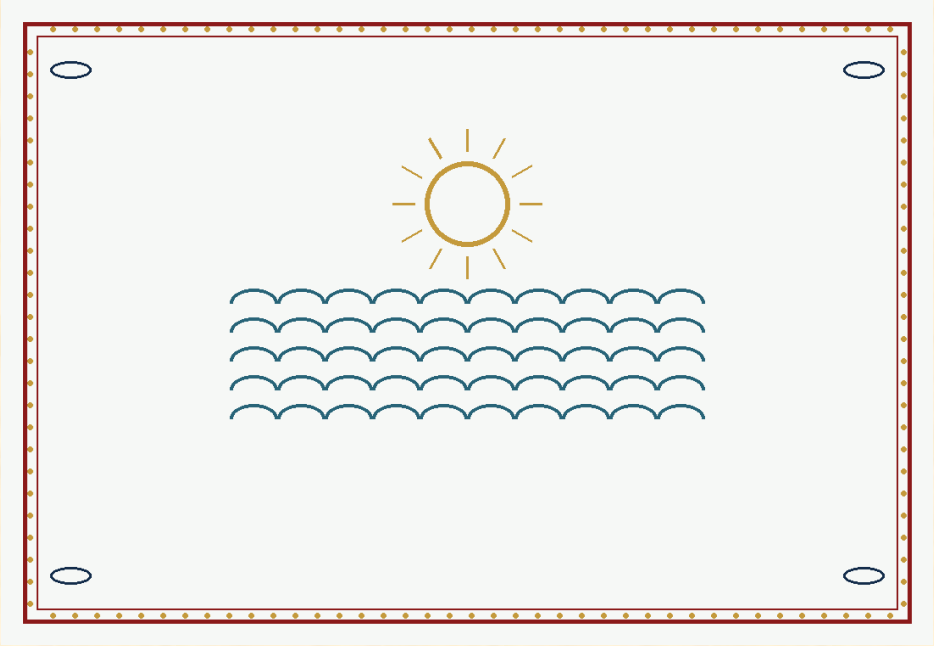

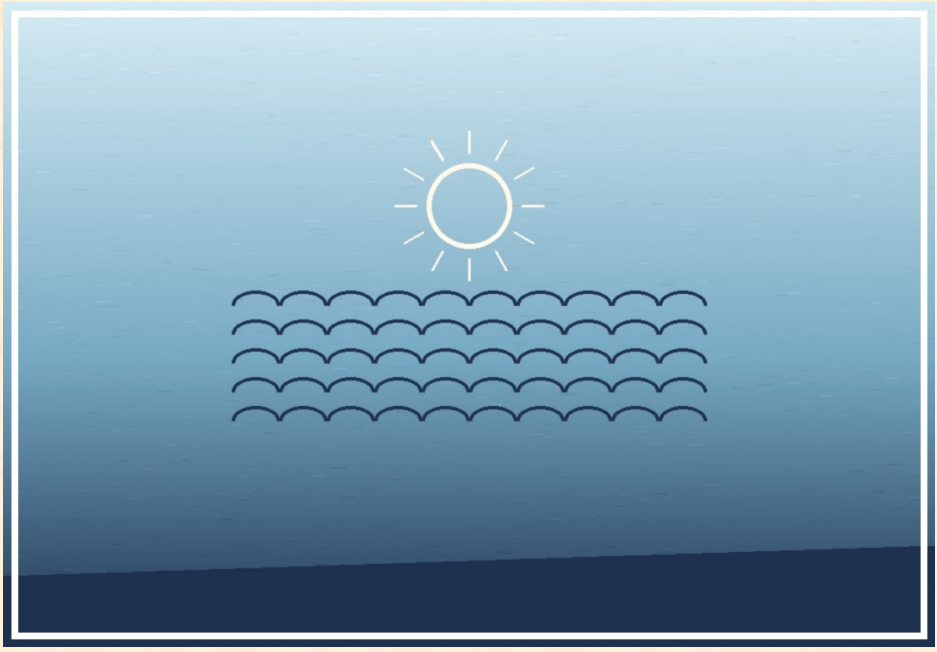

चित्र 1

ओहि बरख मिथिलाक धरती फाटल छल — बरखा रूसल, खेत चरचराएल, इनार सुखाएल। आ तखन, जेना धरतीक पुकार सुनि, कमला धारक जन्म भेलन्हि। पहाड़सँ उतरलि, माटि चीरि मैदानमे पसरि गेलीह — चम्-चम् करैत नव धार।

जतय-जतय कमला बहलीह, ओतय-ओतय जीवन जागि उठल। सूखल खेत हरिया गेल, इनारमे पानि घुरि आएल, आ गामक घाट पर फेर बच्चा सभक हल्ला शुरू भेल।

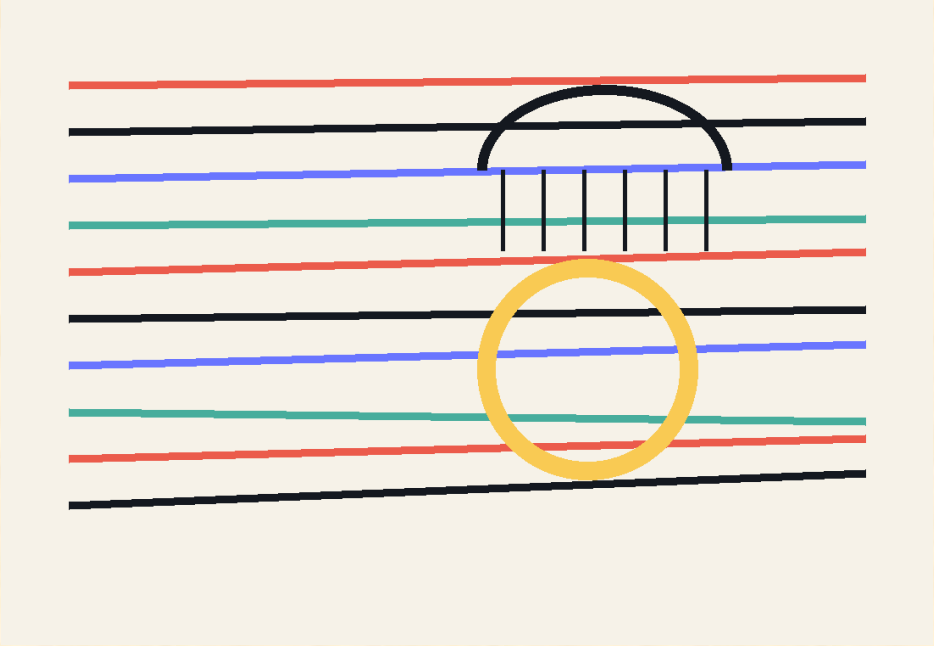

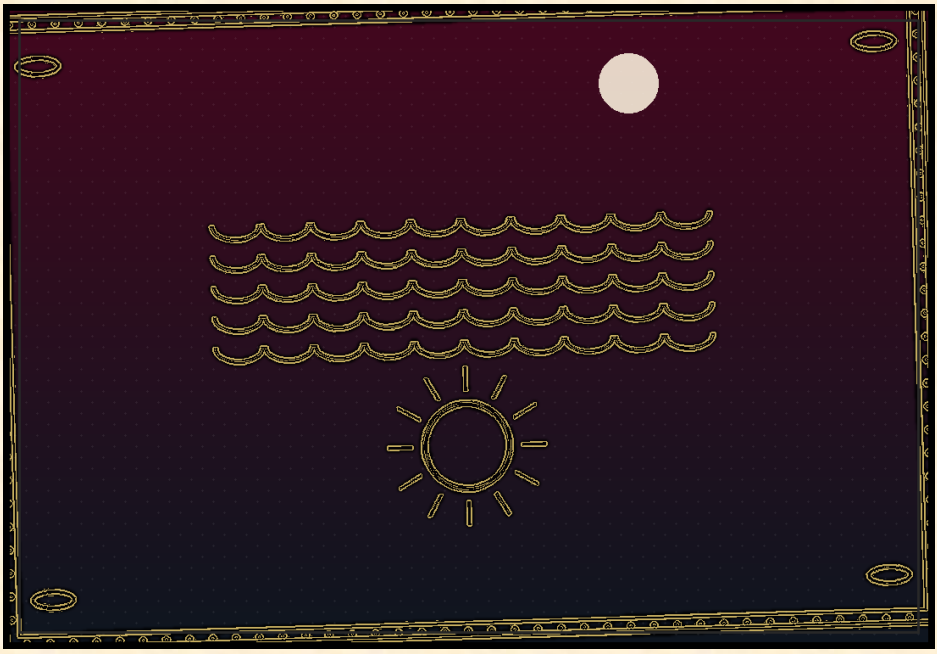

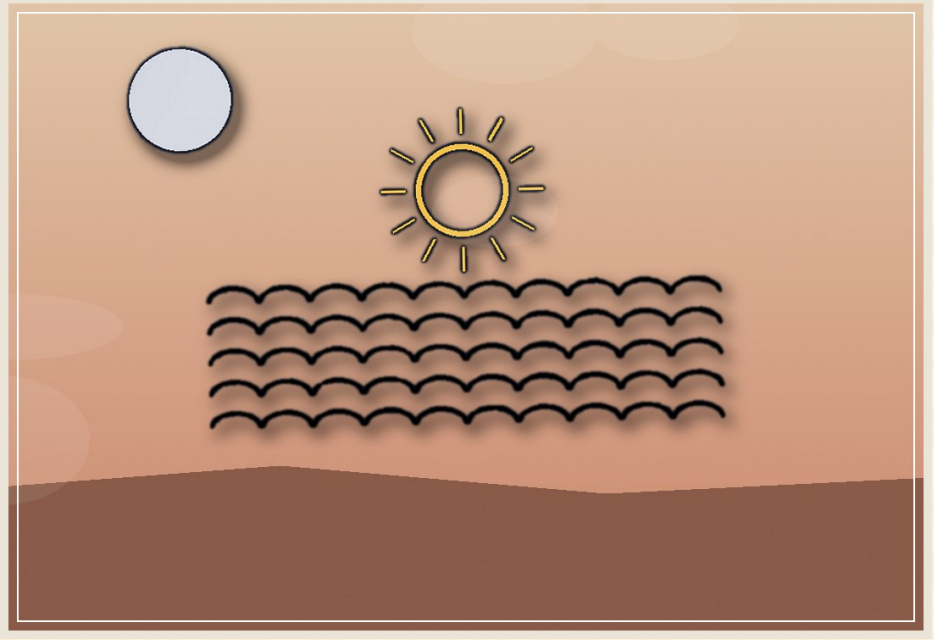

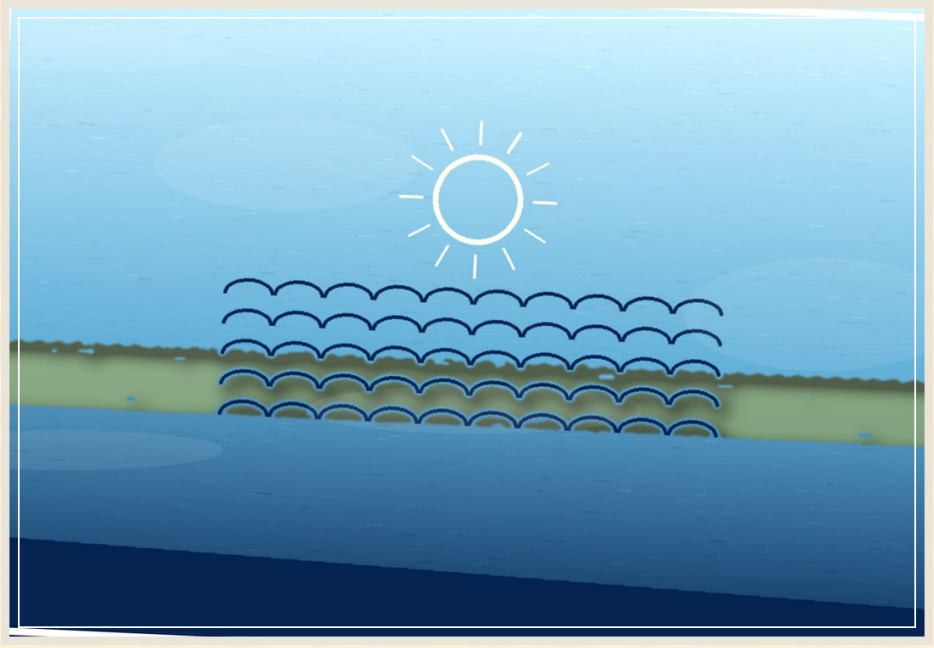

चित्र 2

बूढ़-पुरान कहलनि — 'ई साधारण धार नहि, देवी थिकीह। एहि पानिमे माएक आँचरक शीतलता छै।' आ ओहि दिनसँ लोक कमलाकेँ 'कमला माए' कहए लागल।

धारक दुनू कात गाम बसैत गेल — किसानक गाम, मलाहक गाम। सभक जीवनक धुरी एक्कहि — कमला। जे धार दैत छलि, से सभ लैत छल; आ बदलामे दैत छल श्रद्धा। ई सन्तुलन बरखो चलल — जाधरि एकटा आँखिमे खोट नहि आएल।

अध्याय २ : किसान आ मलाह

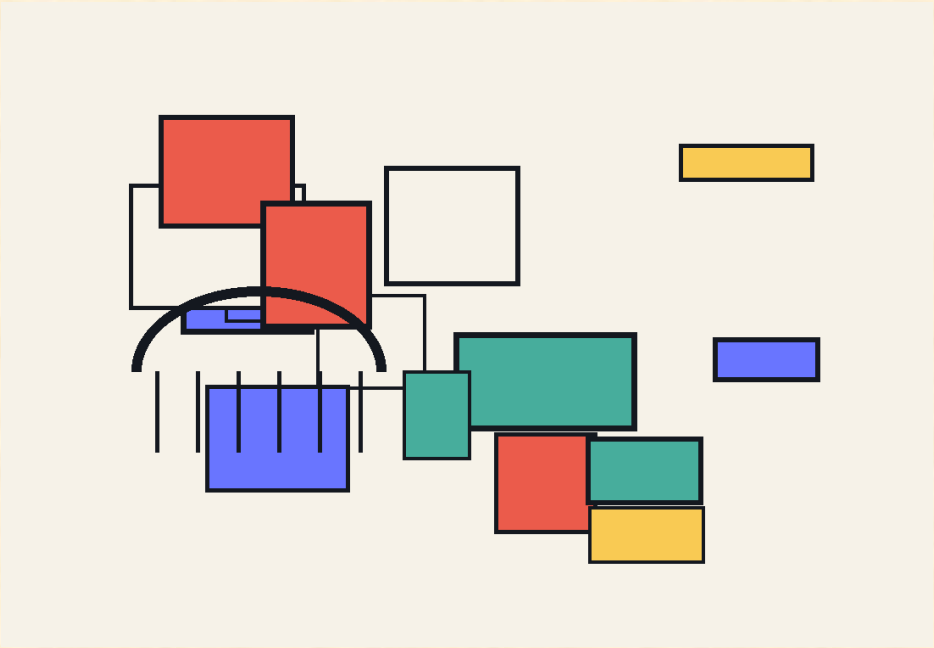

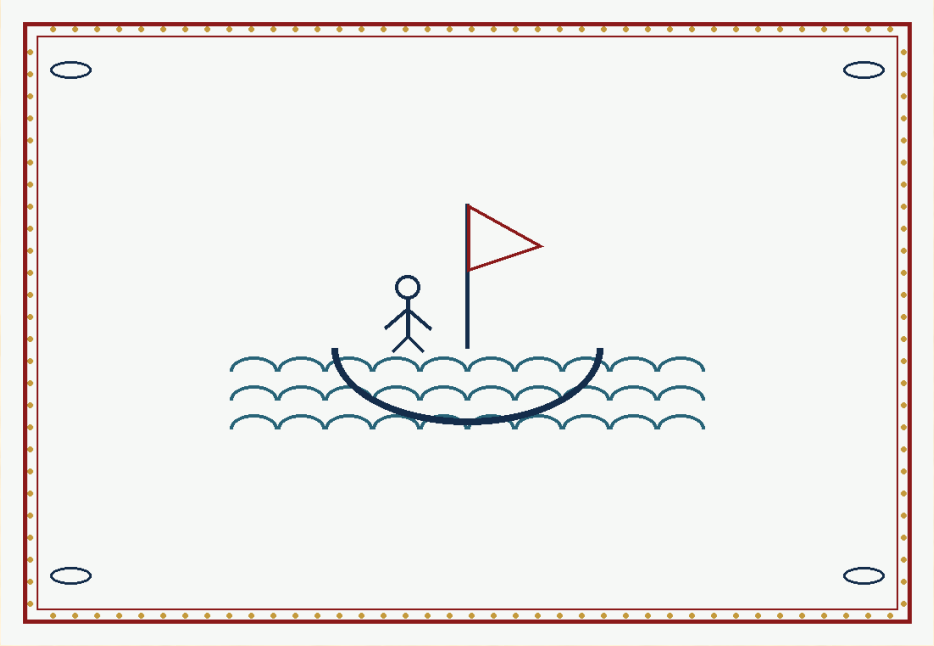

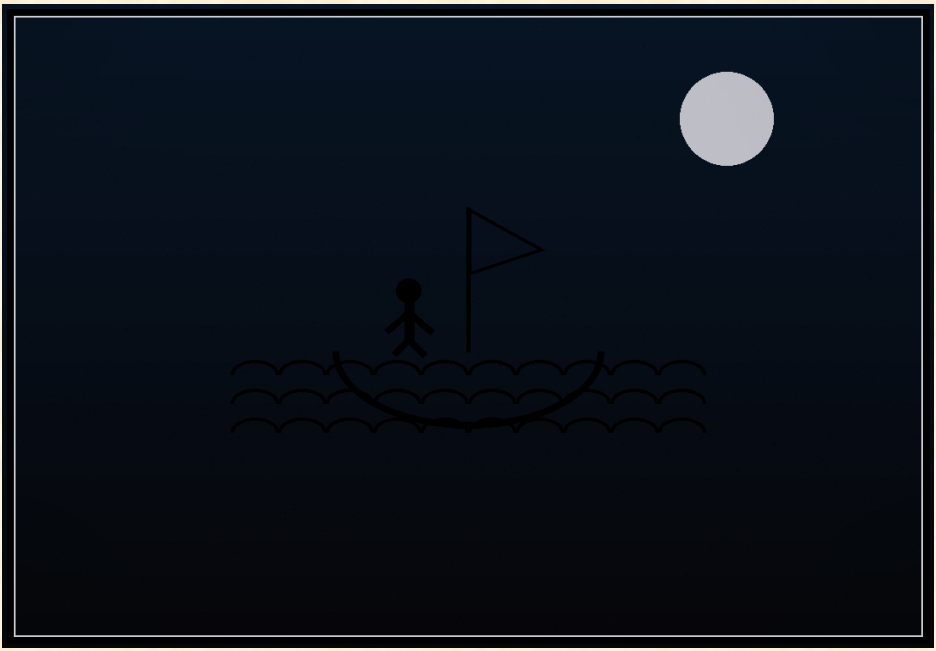

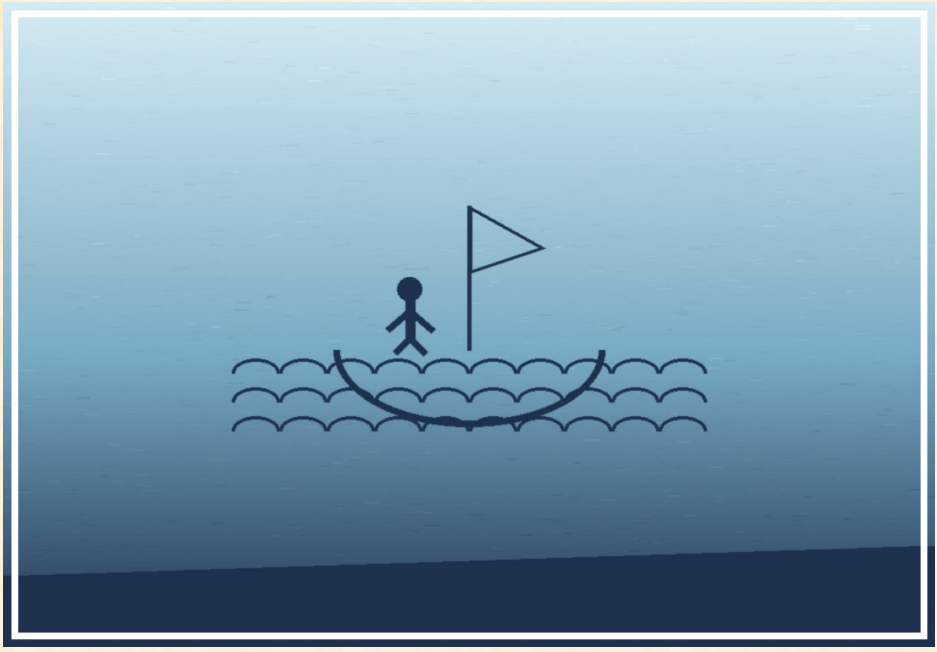

चित्र 3

किसान आ मलाह — कमलाक दू बेटा। भोरे किसान हर लऽ कऽ खेत दिस, मलाह जाल लऽ कऽ घाट दिस। साँझखन दुनूक घर कमलेक देल अन्न आ माछसँ महकैत छल।

मलाह टोलीक त' पूरा संसारे कमला छलीह। नाव हुनक महफा, जाल हुनक भाग्य, आ धारक लहरि हुनक लोरि। मलाहक बच्चा पानिमे ओहिना खेलाइत छल जेना आन बच्चा आँगनमे।

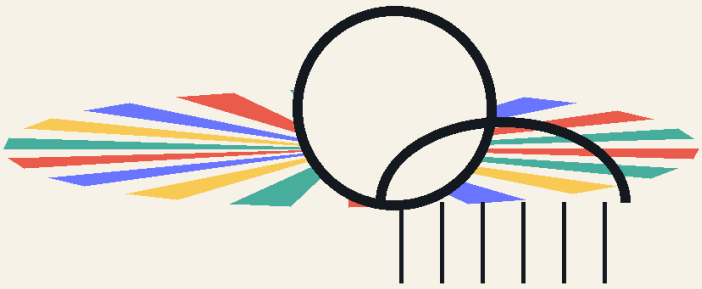

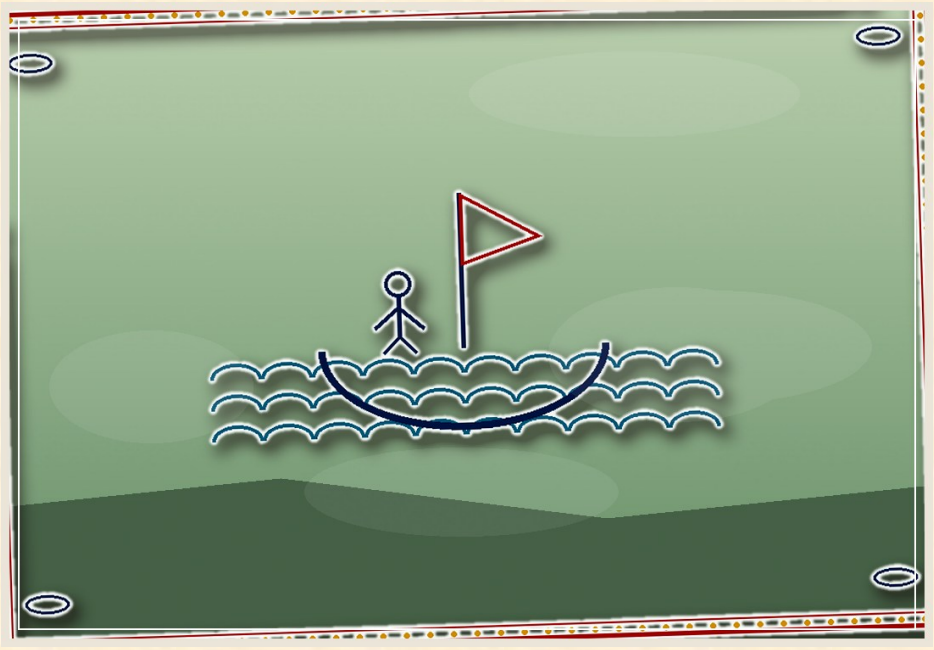

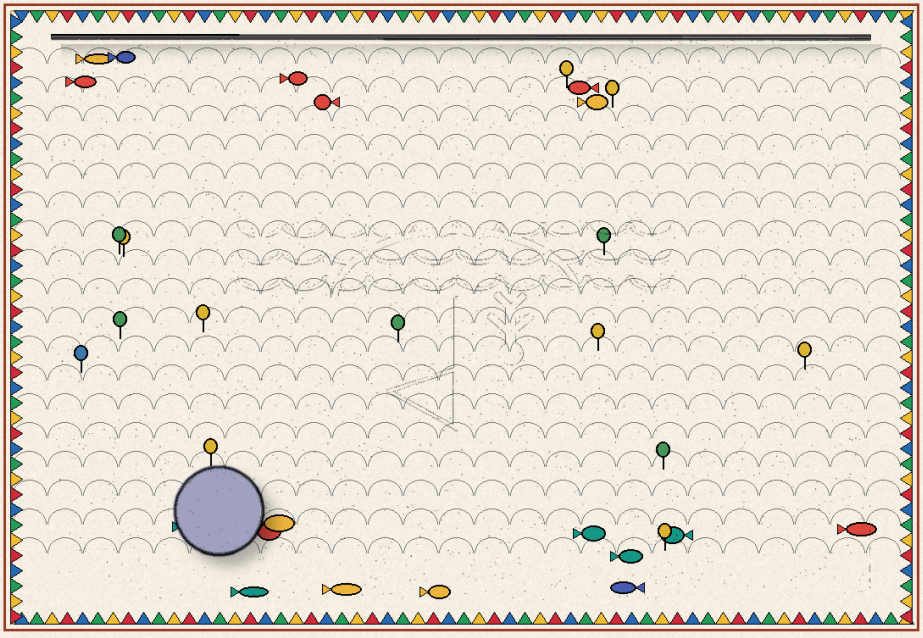

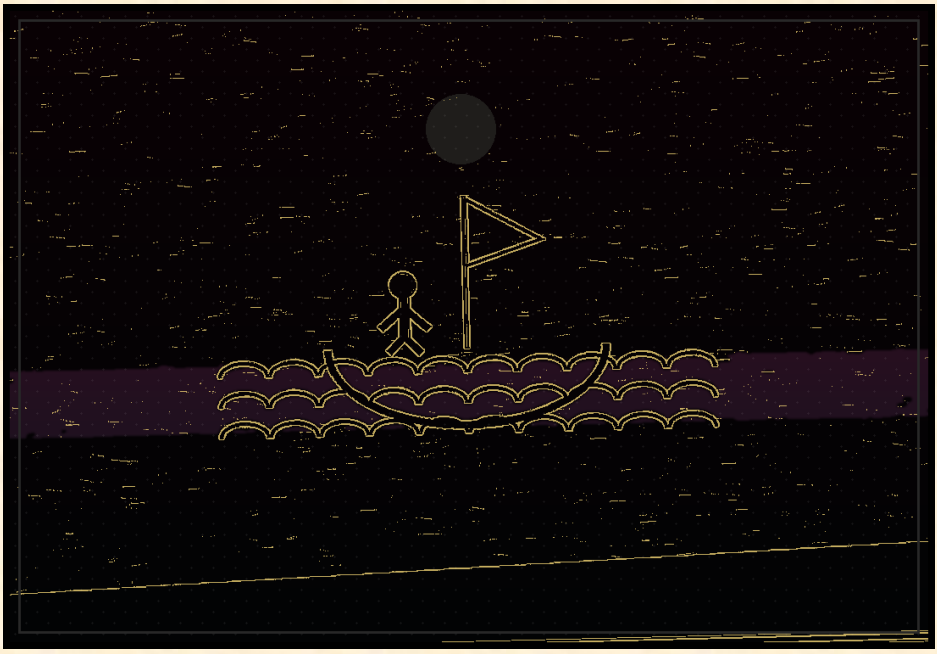

चित्र 4

पावनि-तिहारमे घाटपर दीप जरैत छल। नव विवाहिता कमलाकेँ सेनुर चढ़बैत छलीह, माए सभ बच्चाक मुण्डनक केश धारकेँ सौंपैत छलीह। कमला सभक साक्षी छलीह — जन्मसँ मरण धरिक।

आनन्दित छल सभक जीवन। मुदा खिस्साक नियम छै — जतय आनन्दक वर्णन जतेक नमहर, बुझू आफद ओतबे लग। आ आफद एहि बेर पानिसँ नहि, मनुक्खक मोनसँ आबए बला छल।

अध्याय ३ : कमला पैघ भेलीह

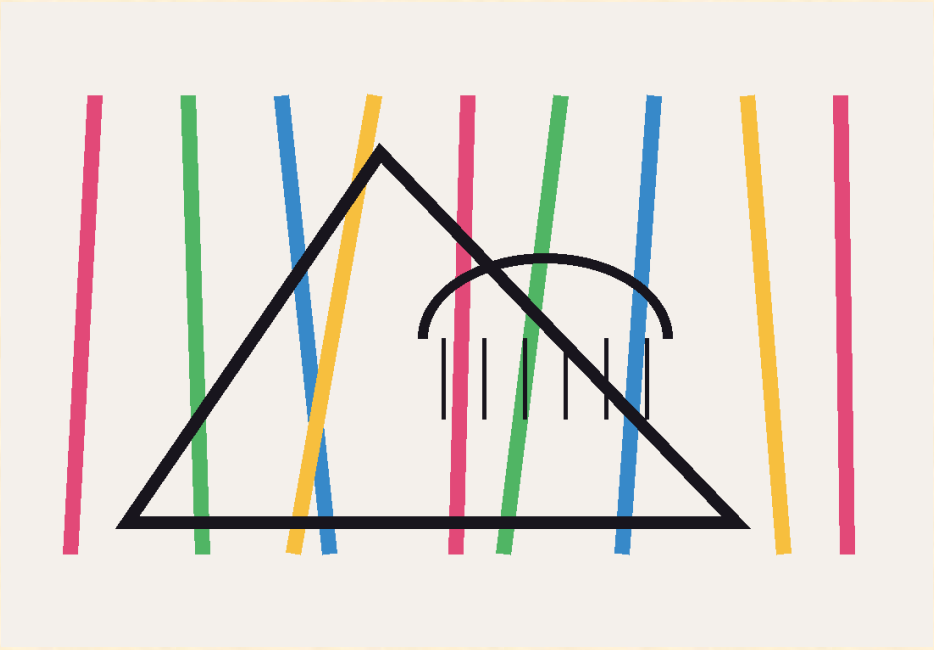

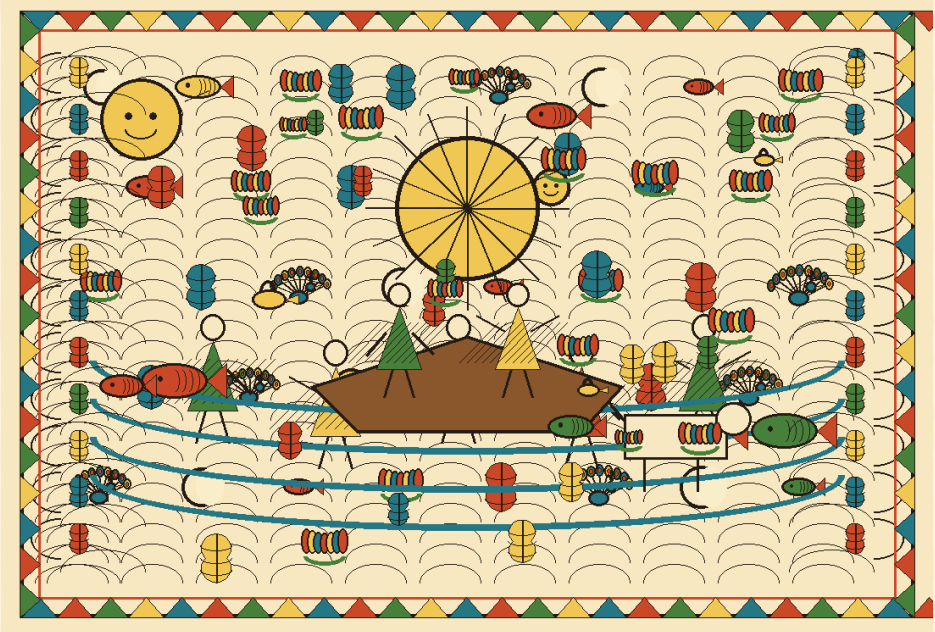

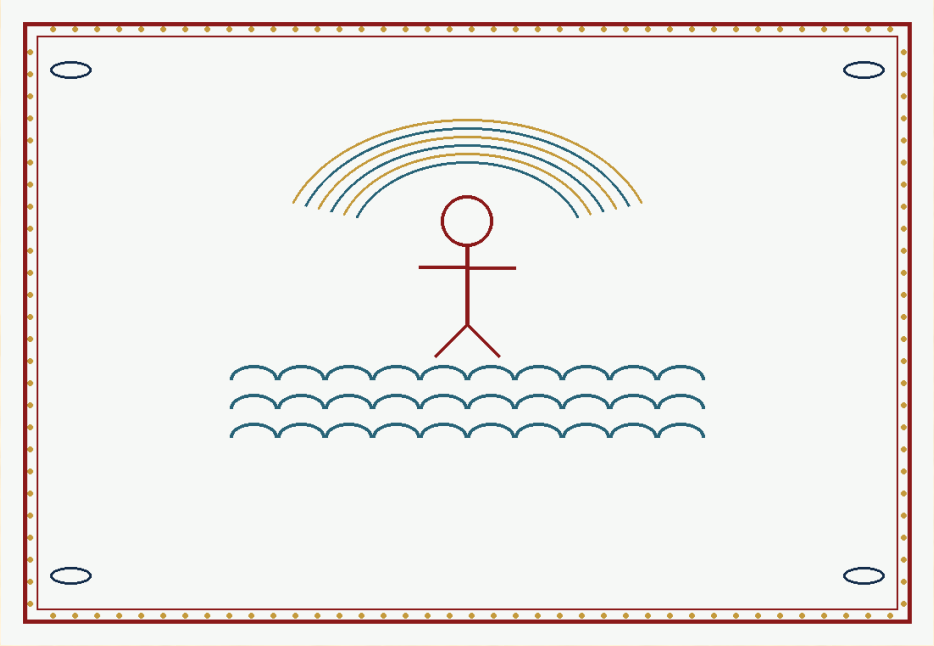

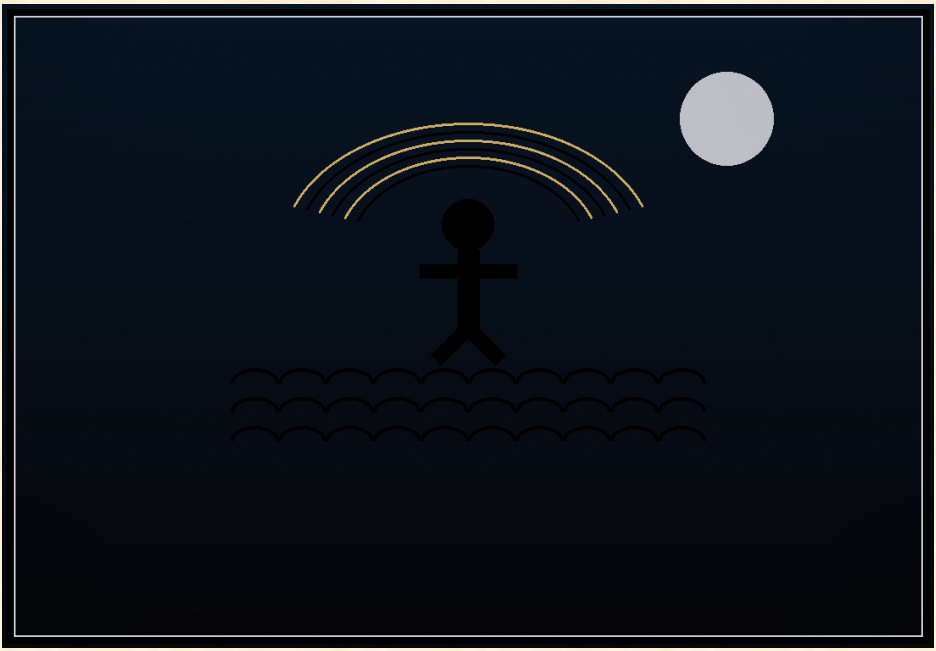

चित्र 5

समय बीतल। कमला पैघ भेलीह — धारक पाट चाकर भेल, लहरिमे जुआनीक जोश आएल, आ ओकर रूपक चर्च दूर-दूर धरि पसरल। भोरका सूर्यमे कमलाक पानि सोना जकाँ, साँझमे सेनुर जकाँ, आ चानि-रातिमे चानी जकाँ चमकैत छल।

लोक कहए — 'कमला सन सुन्नरि धार तीनू लोकमे नहि।' आ जेना कोनो कन्याक यशसँ माता-पिताक छाती चाकर होइत अछि, तहिना कमलाक यशसँ किसान-मलाहक माथ ऊँच होइत छल।

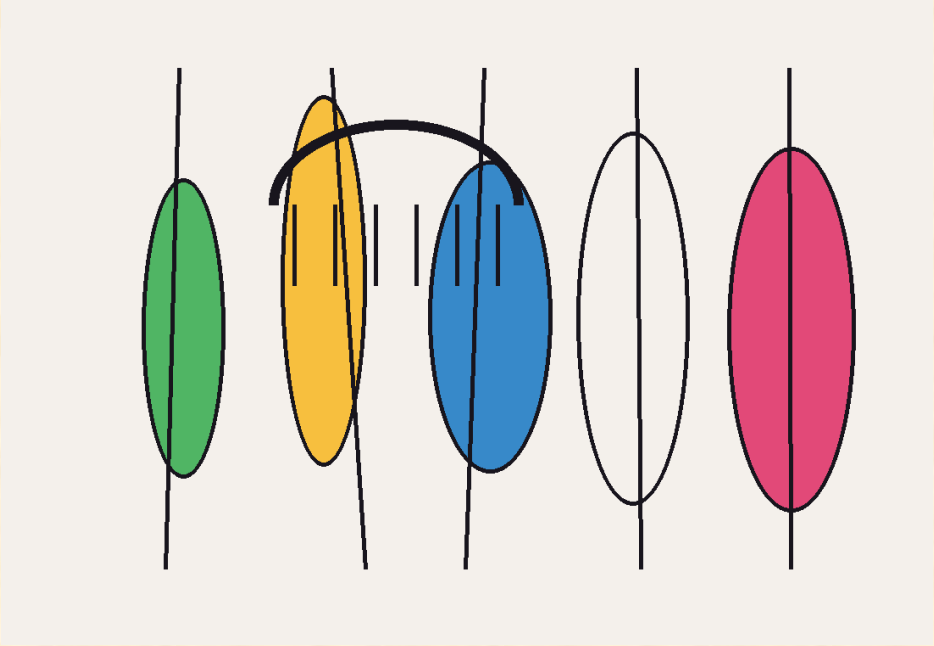

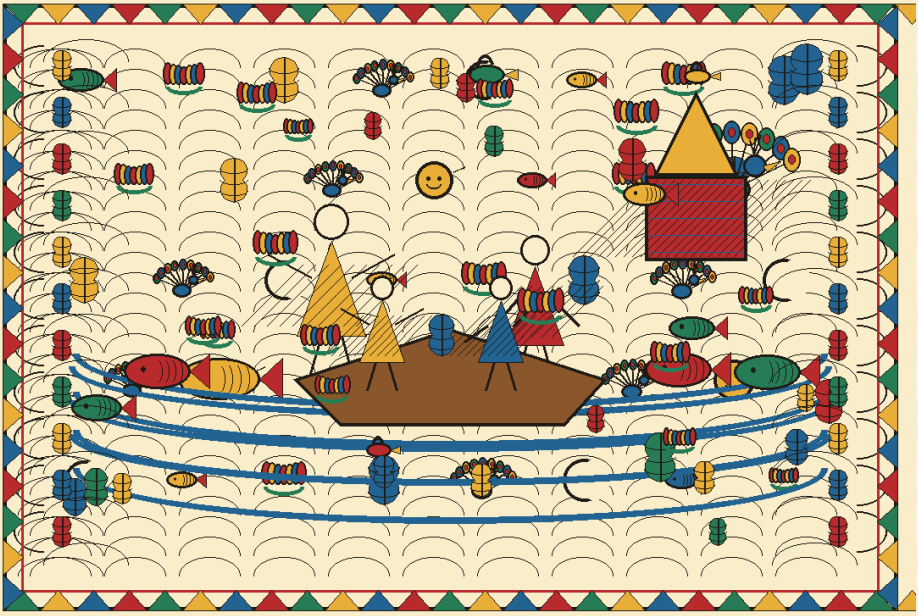

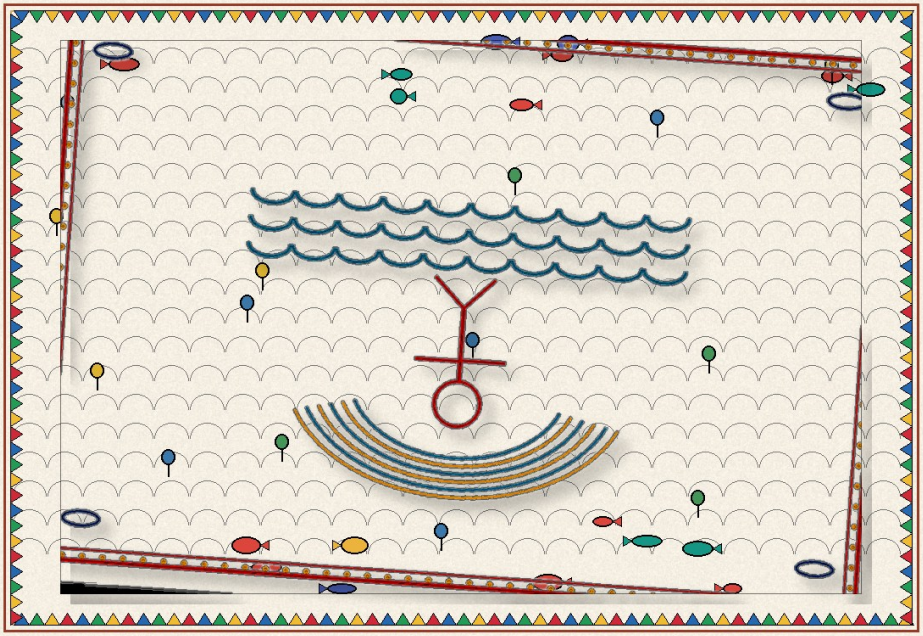

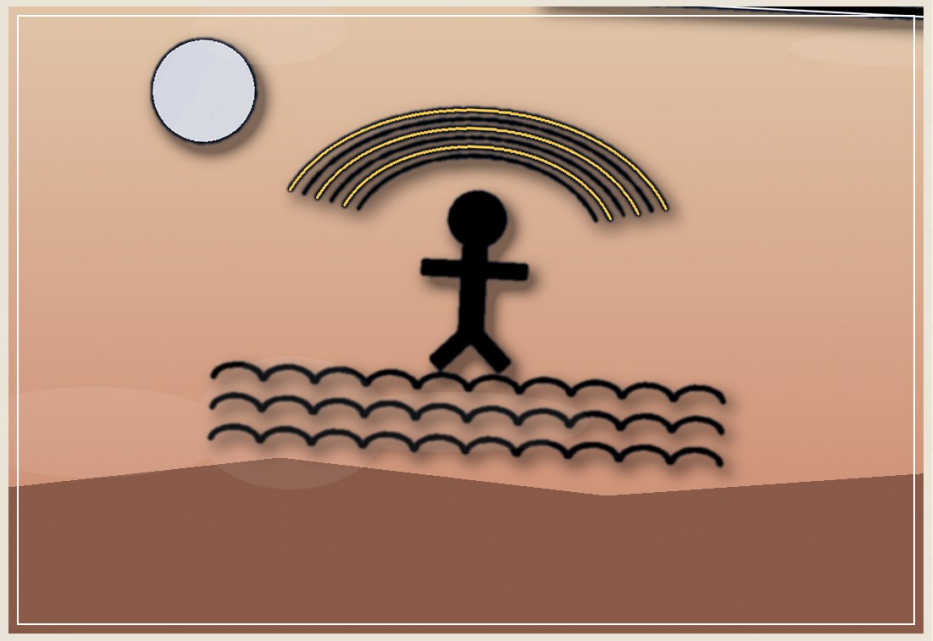

चित्र 6

मुदा यश आ रूप — ई दुनू दीप थिक, आ दीप पर खाली फतिंगे नहि, साँपो अबैत अछि।

धारक कातक एकटा टोलक सरदार छल बैदला — देहक पहलमान, मोनक कारी। ओकर आँखि जहिया कमलाक जुआन धारपर पड़ल, तहिया ओहि आँखिमे श्रद्धा नहि जागल — खोट जागल।

अध्याय ४ : बैदलाक खोट

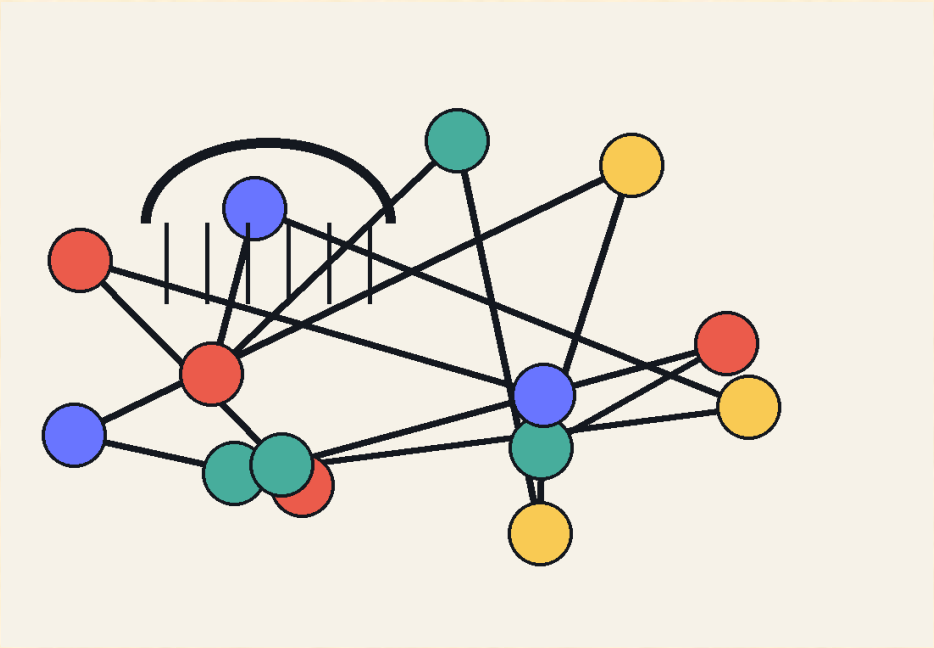

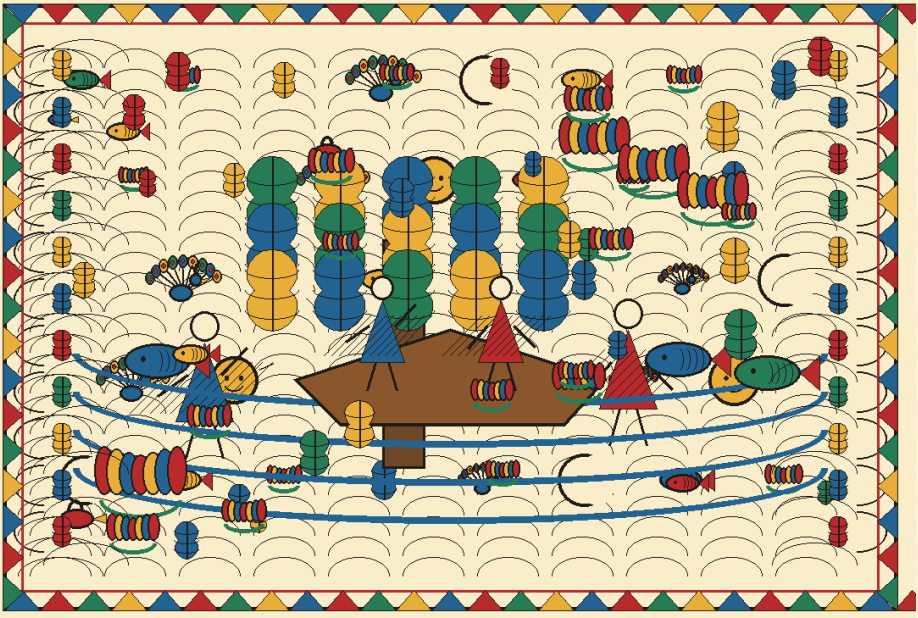

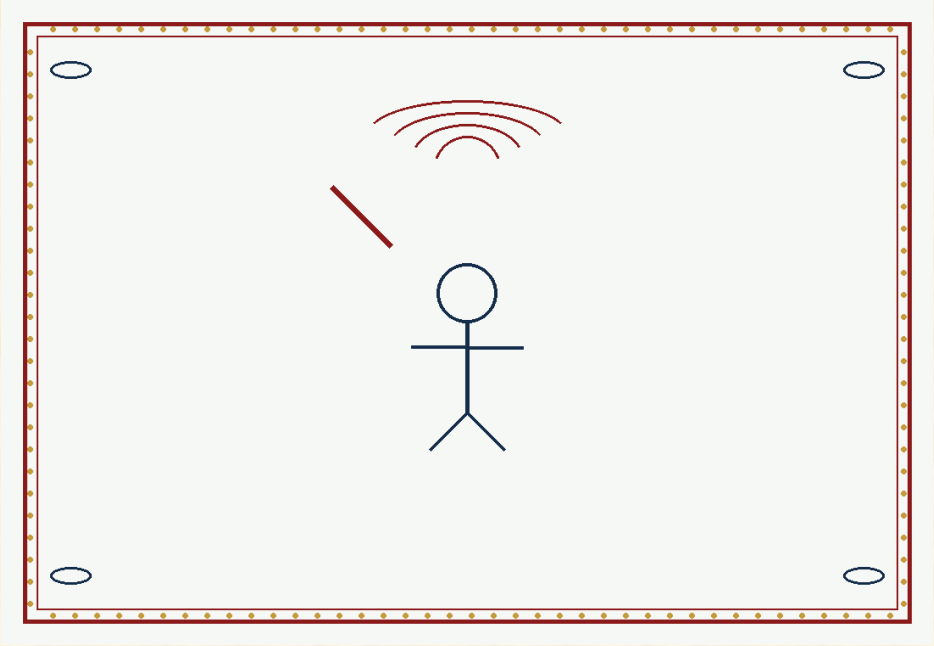

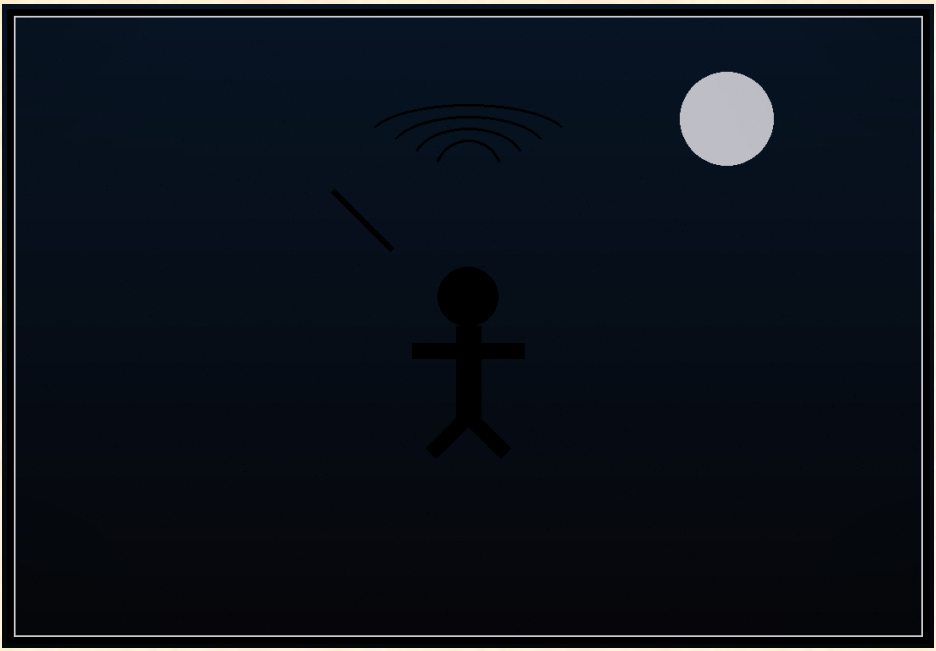

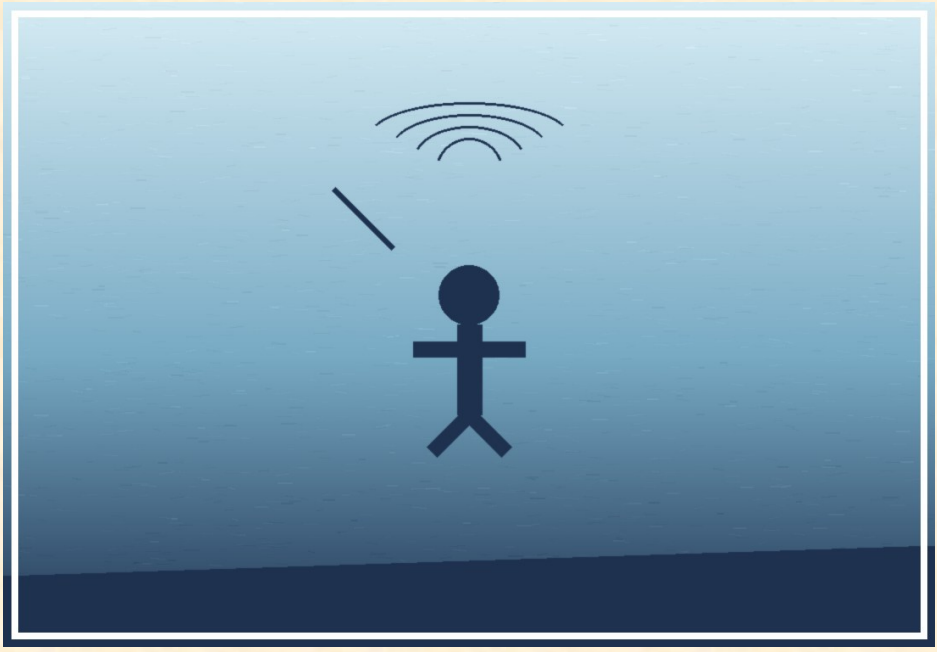

चित्र 7

बैदला बदमाश छल — गामक लोक ओकर नामसँ थरथराइ छल। जे वस्तु नीक लागए, से छीनि लेब — यएह ओकर धरम छल। आ आब ओकरा सभसँ नीक लागलि छलीह — कमला।

ओ घोषणा कऽ देलक: 'हम कमलासँ बियाह करब — बलजोड़ी!' बलजोड़ी — माने जबरदस्ती, माने कमलाक इच्छाक कोनो मोल नहि। देवी-धारसँ बलजोड़ी बियाह! सुनि कऽ गामक गाम सन्न रहि गेल।

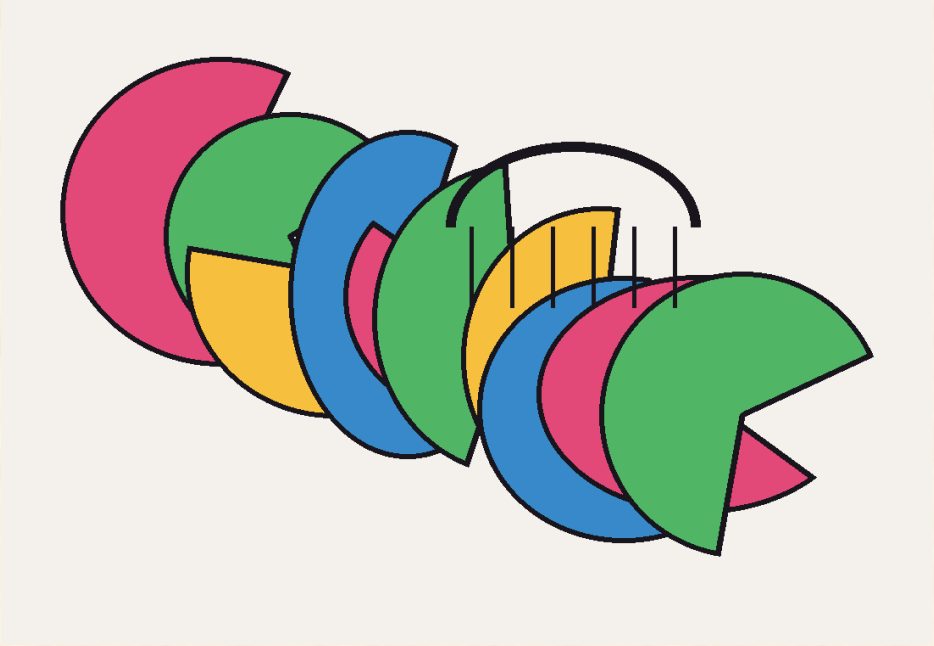

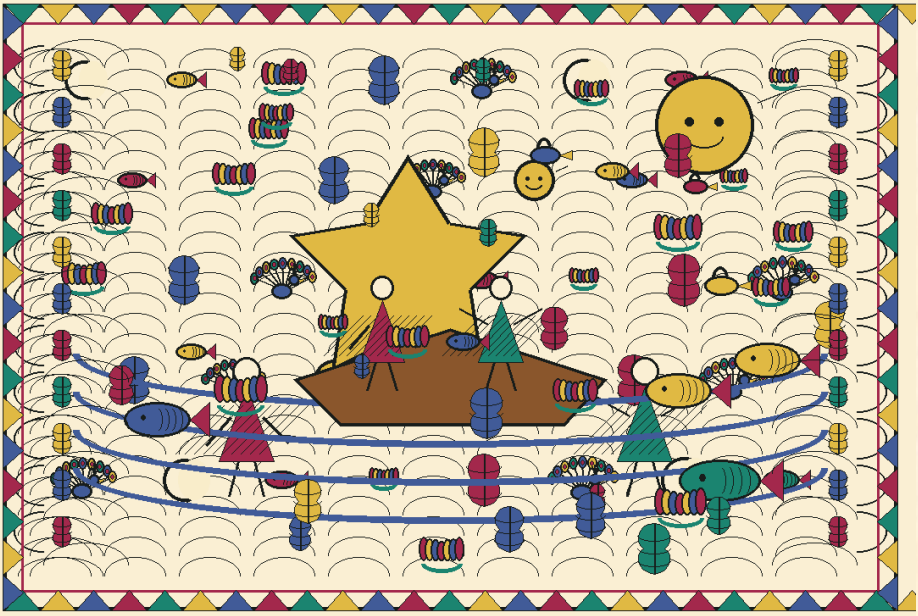

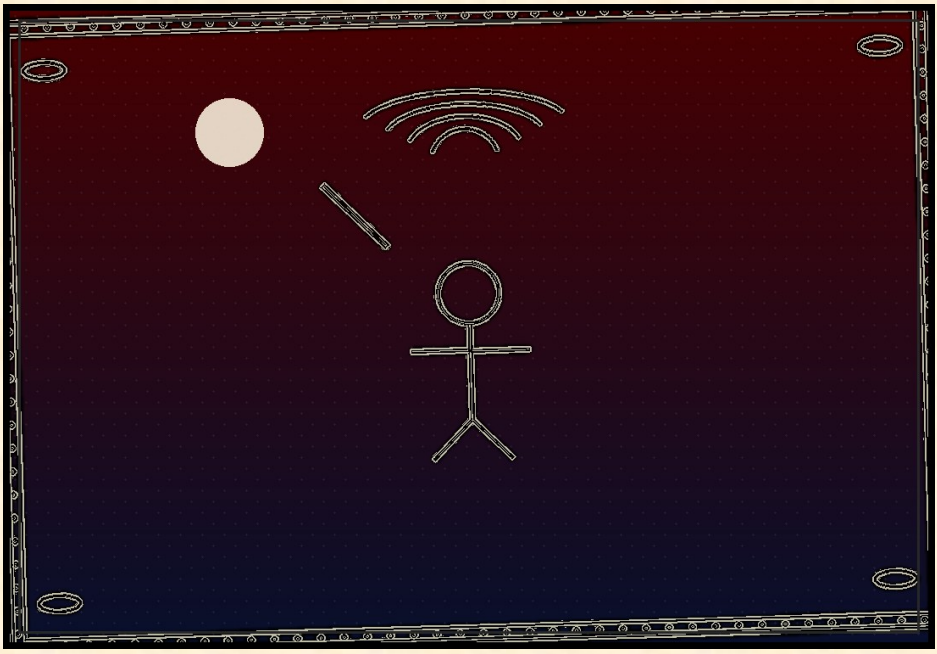

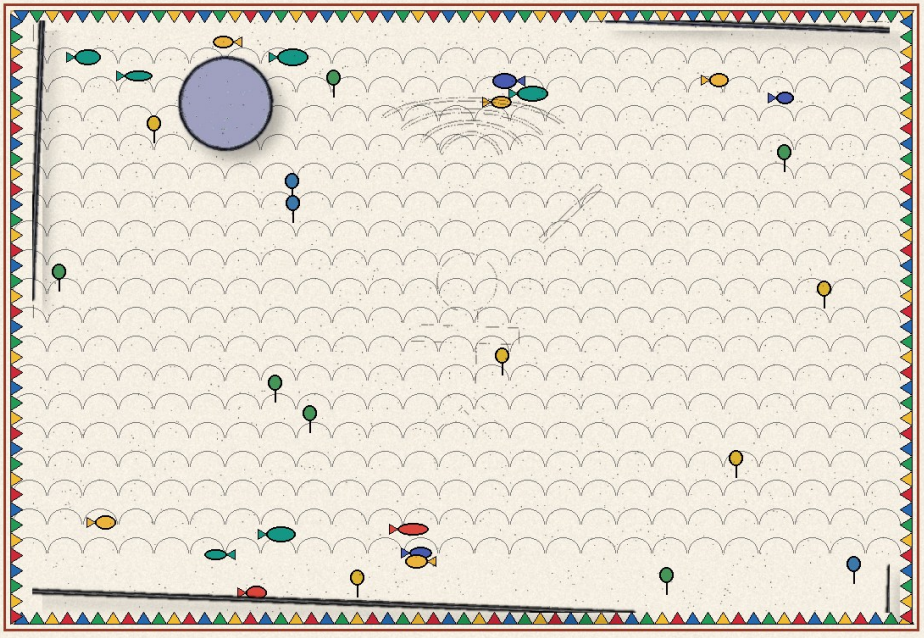

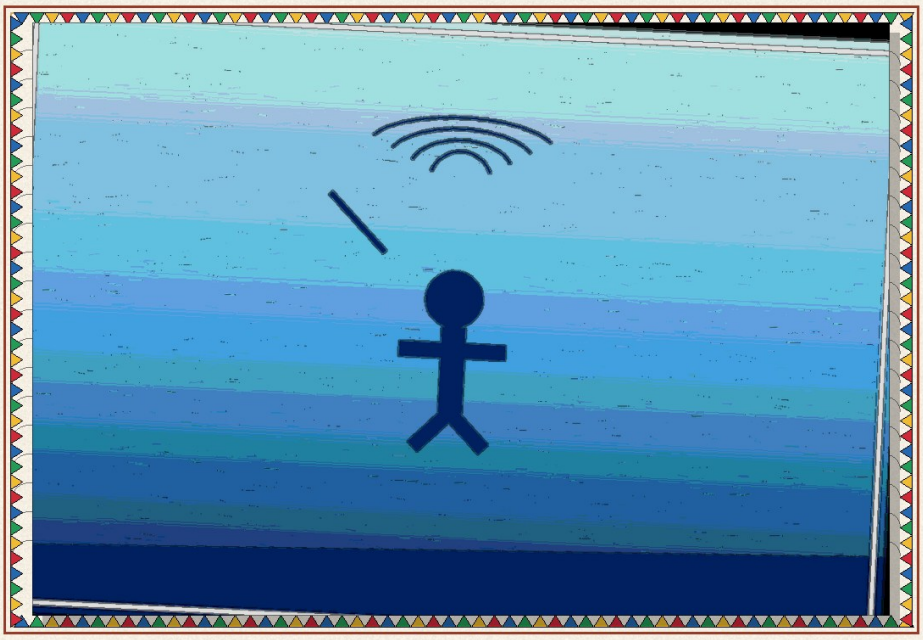

चित्र 8

ओ घाट पर अखराहा जुमा देलक, अपन लठैत बैसा देलक, आ डंका पीटि देलक — 'जे रोकत, से पहिने हमरासँ लड़त!' कमलाक घाट, जतय दीप जरैत छल, ओतय आब लाठी चमकए लागल।

कमलाक लहरि ओहि दिनसँ बेचैन भऽ गेल। धार उमड़ए-घुमड़ए लागलि, जेना कहैत हो — 'हमर सन्तान सभ, सुनै छह? हमर लाज आब तोरे सभक हाथ।' आ सभसँ पहिने ई पुकार सुनलक मलाह टोली — कारण बेटीक लाज सभसँ पहिने ओकरे कान धरि पहुँचैत छै जे ओकरा कोरामे खेलओने हो।

अध्याय ५ : भोला बाबाक तपस्या

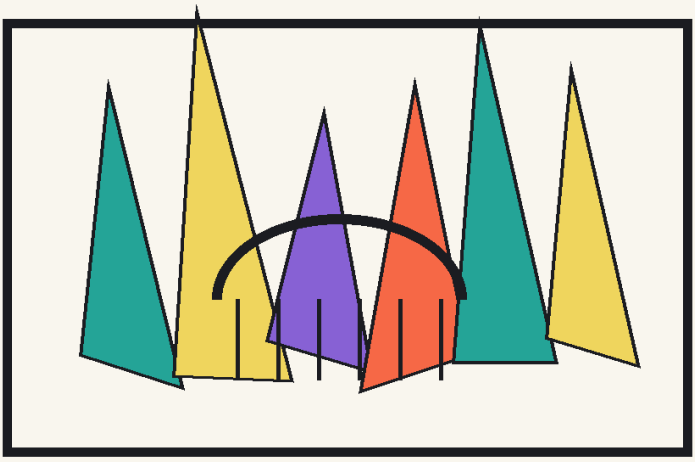

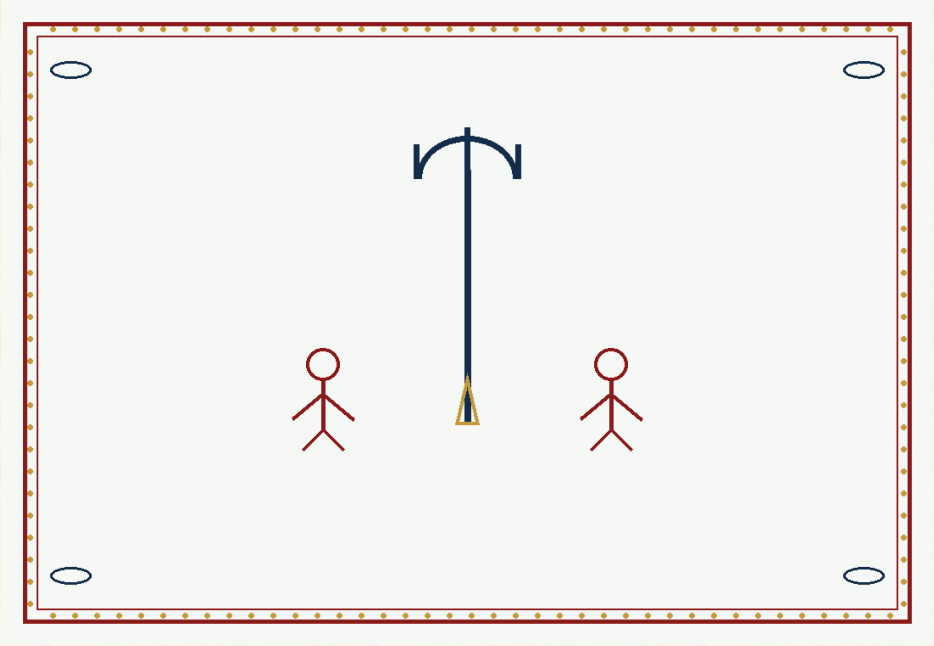

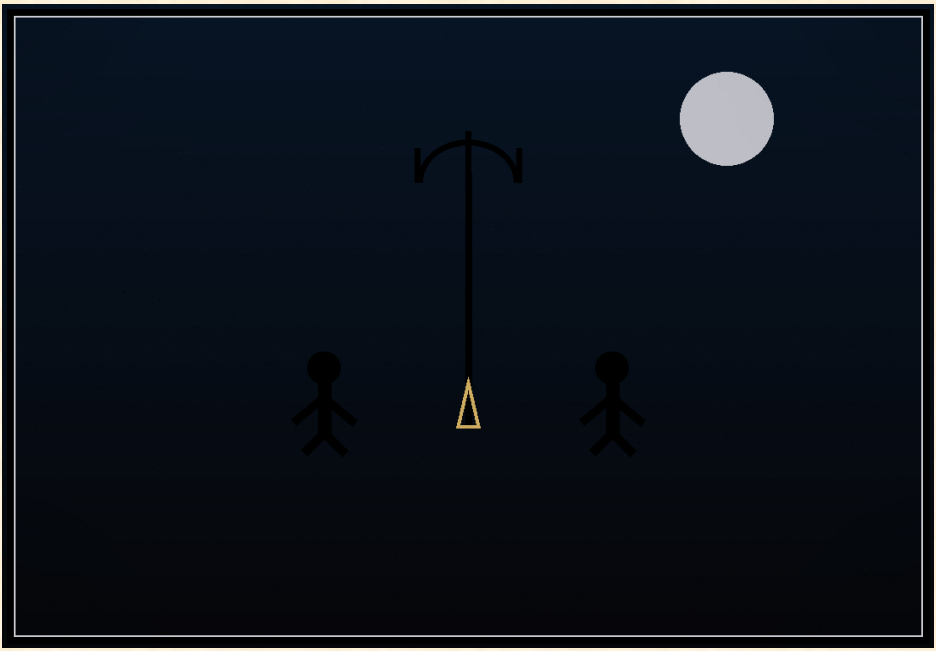

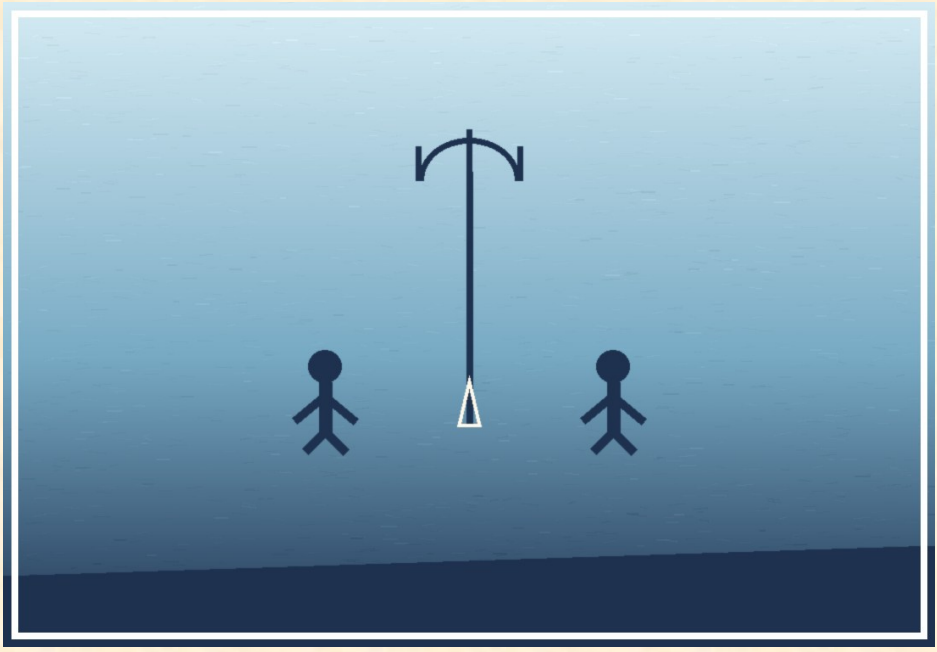

चित्र 9

मलाह लोकनि जुटलाह। मुदा करथि की? बैदलाक देहमे दैत्यक बल, संगमे लठैतक फौज — आ मलाह लग खाली जाल आ नाओ खेबाक लग्गा- डाँड़। बाँहिक लड़ाइमे हारि निश्चित छल। तखन बूढ़ मलाह कहलनि — 'जतय बाँहि हारि जाए, ओतय आराधना आगाँ बढ़ैत अछि। चलू भोला बाबा लग।'

आ शुरू भेल तपस्या। मलाह टोली अन्न-पानि बिसरि महादेवक शरणमे बैसि गेल। घाटपर बेलपत्रक ढेरी लागल, शिवालाक घण्टी राति-राति भरि बाजल, आ सभक जीहपर एक्कहि पुकार —

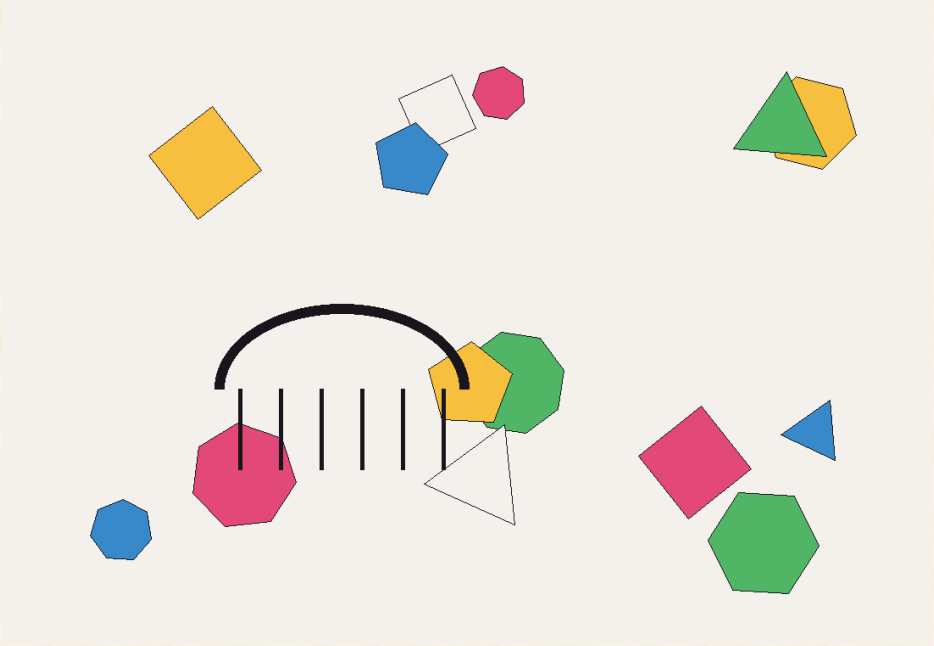

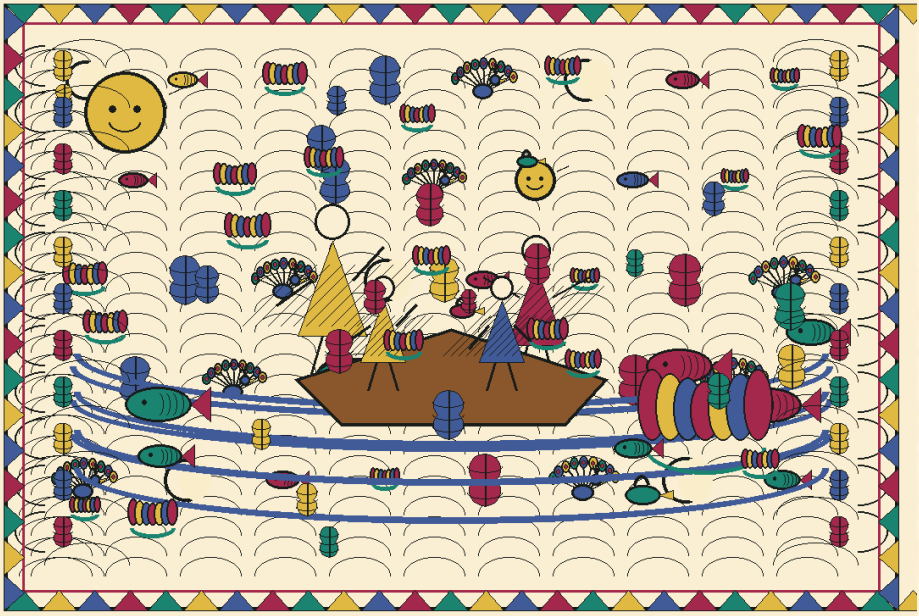

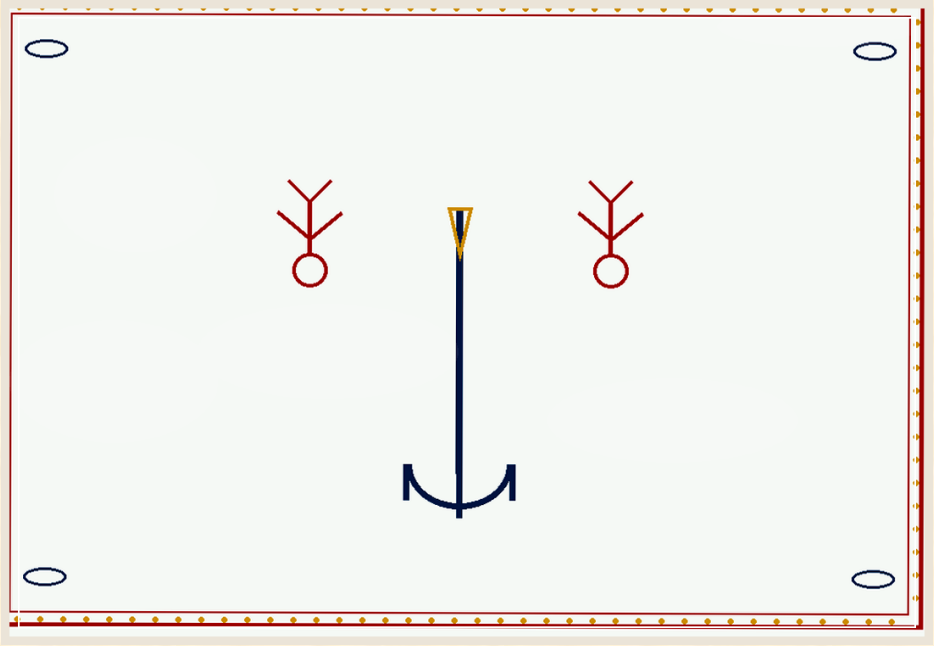

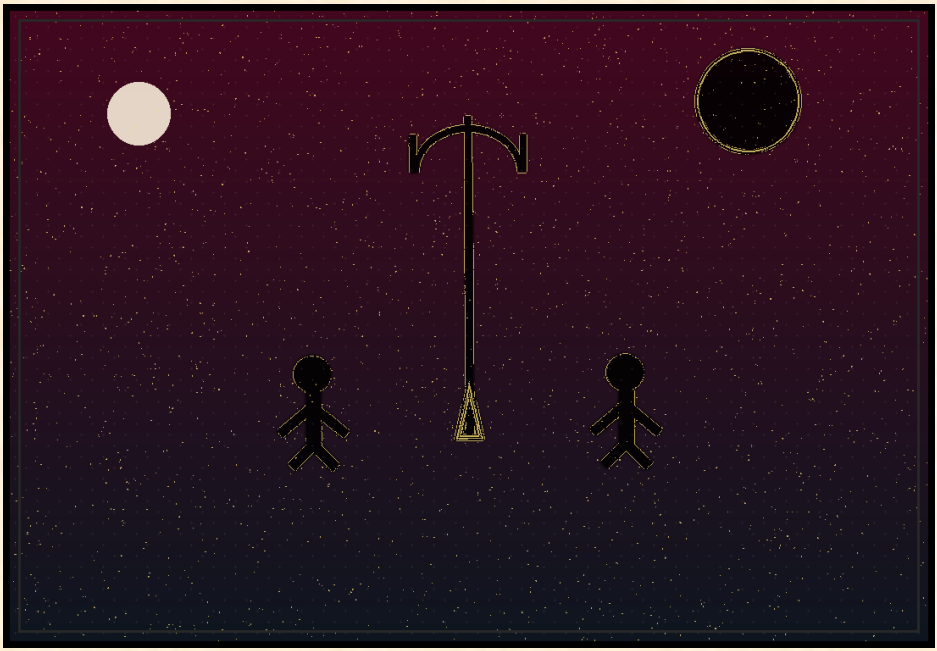

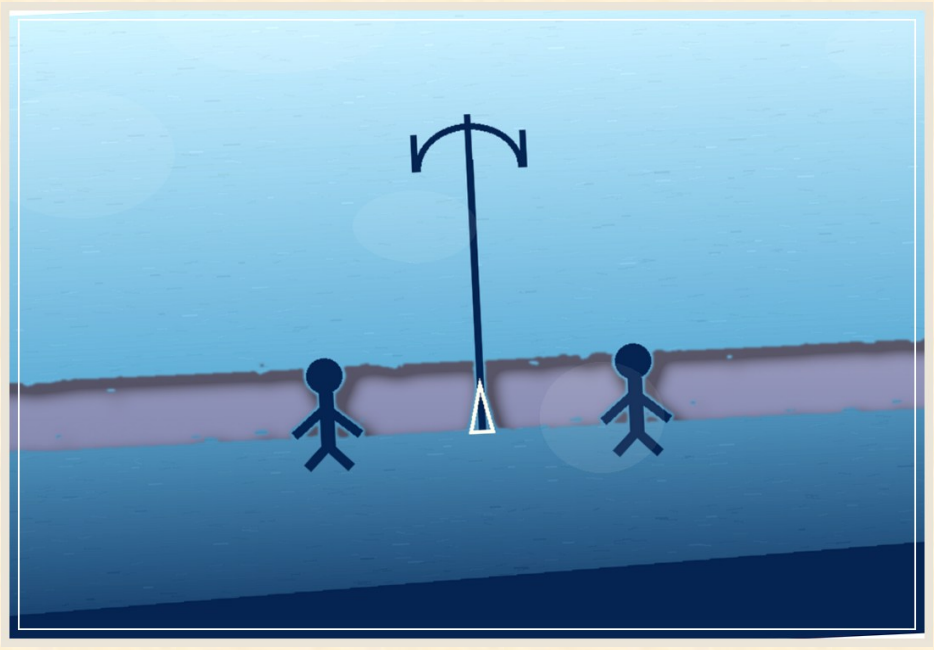

चित्र 10

'कमलाक सतीत्व बचाउ, महादेव!'

भोला बाबा — जे भोला छथि, से भक्तक नोर बेसी दिन नहि देखि सकैत छथि। तेसर राति तपस्वी सभकेँ लगलनि जे शिवालाक त्रिशूल अपने डोलल। आ भोला बाबा उपाय केलनि — मुदा देवताक उपाय वरदानक फूल जकाँ नहि खसैत अछि; ओ बीआ जकाँ खसैत अछि, जकरा जनमबामे समय लगैत छै।

अध्याय ६ : शिवरा गामक बालक

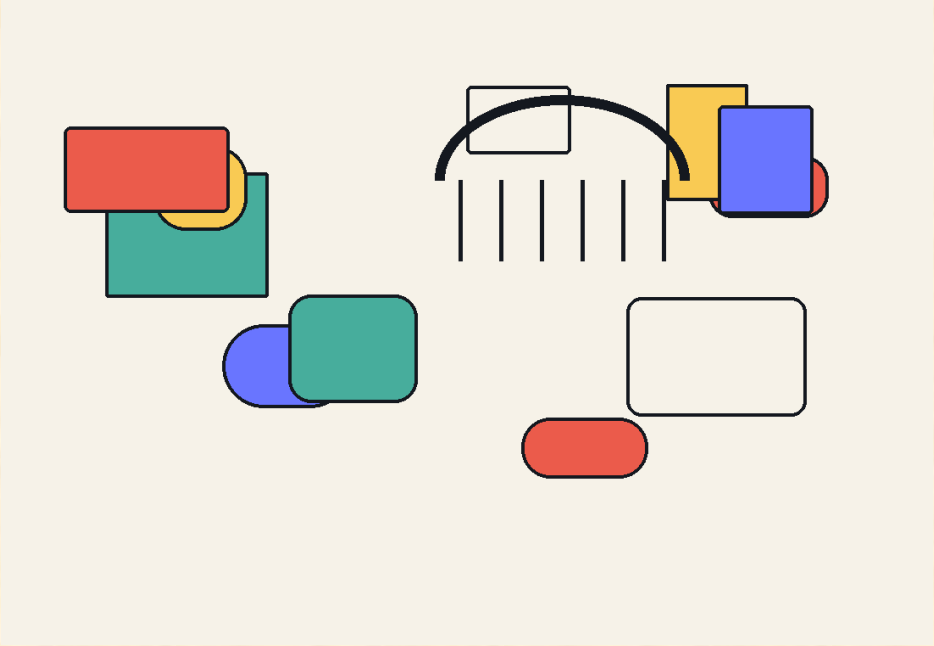

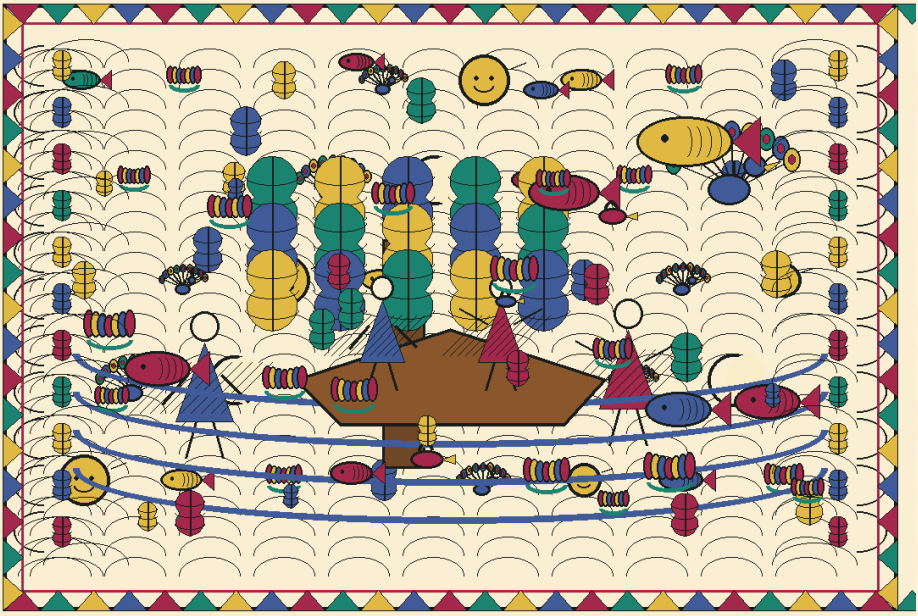

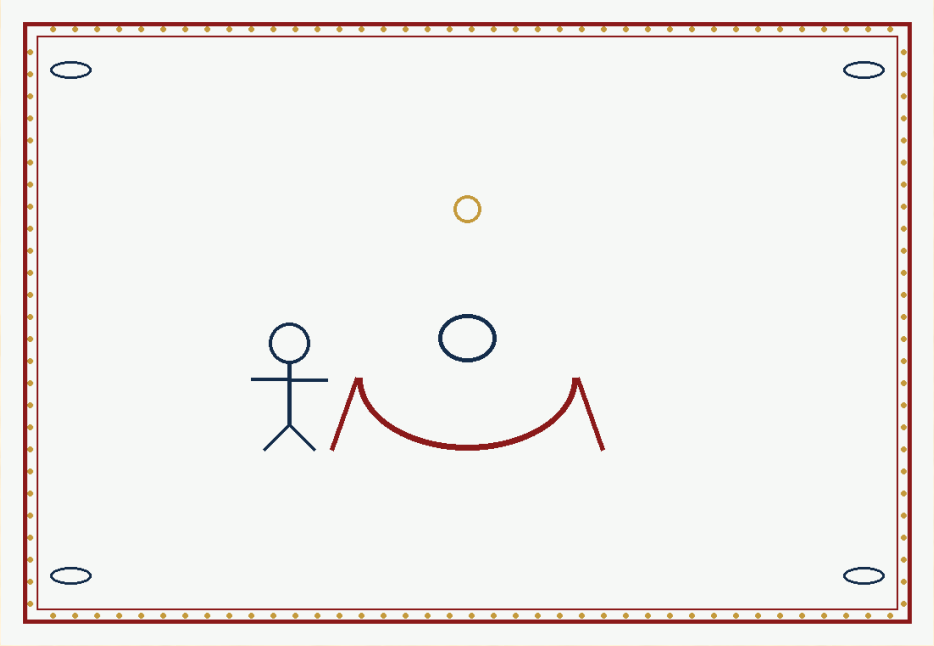

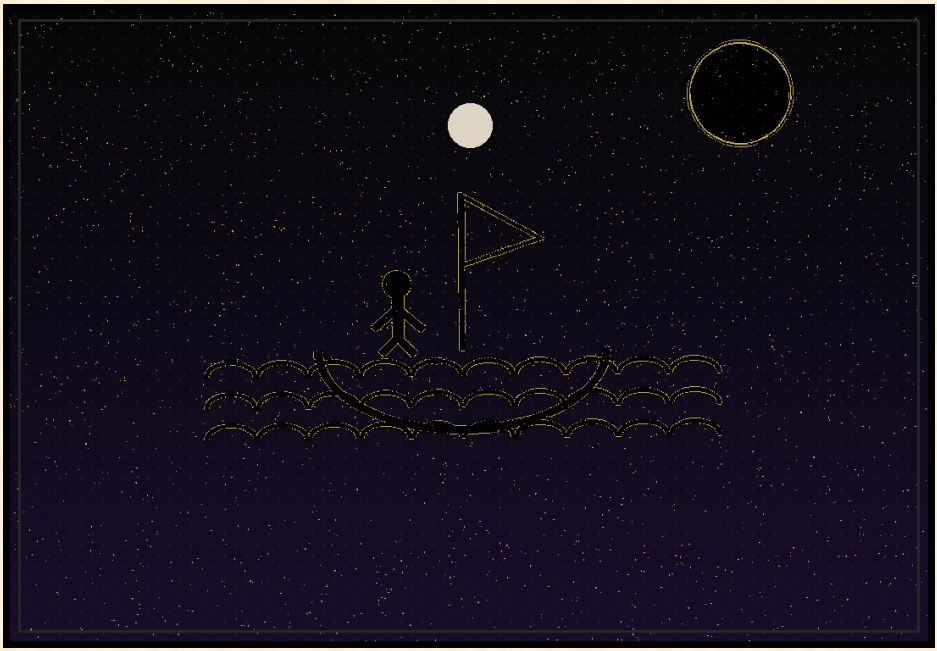

चित्र 11

शिवरा गाम — कमला कातक एकटा छोट मलाह-बस्ती। ओतुक्का एकटा मलाह परिवारमे ओहि बरख बेटा जनमल। नाम राखल गेल — अमरसिंह।

जन्महिसँ बालक असाधारण छल। जकर कोरामे जाए, ओकर बाँहि थाकि जाए — एतेक गदगर देह! छह मासमे बैसल, बरख पूरैत-पूरैत घाटक बालुपर दौड़ए लागल। आ आश्चर्य — पानिसँ ओकरा एहन प्रेम, जेना माछक बच्चा हो।

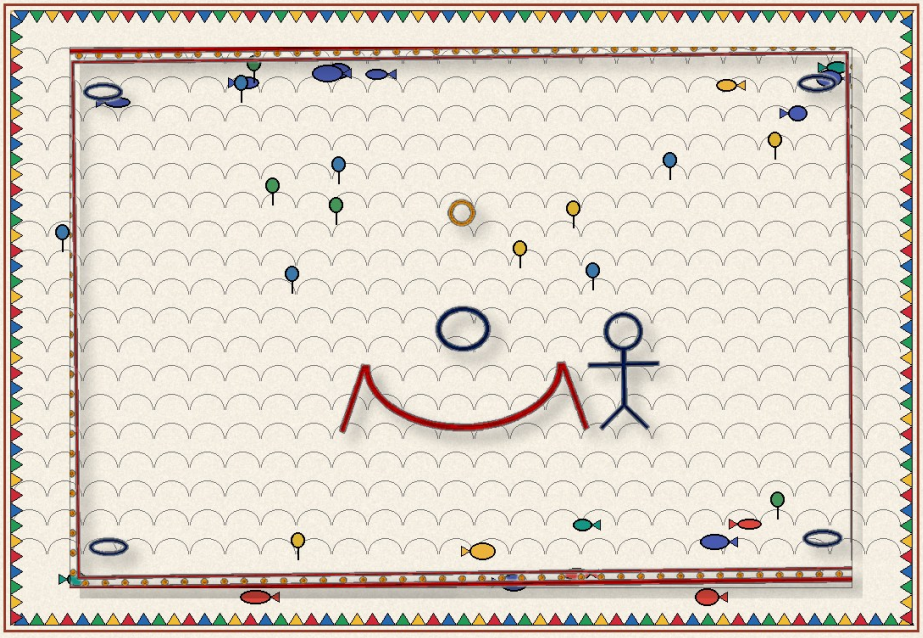

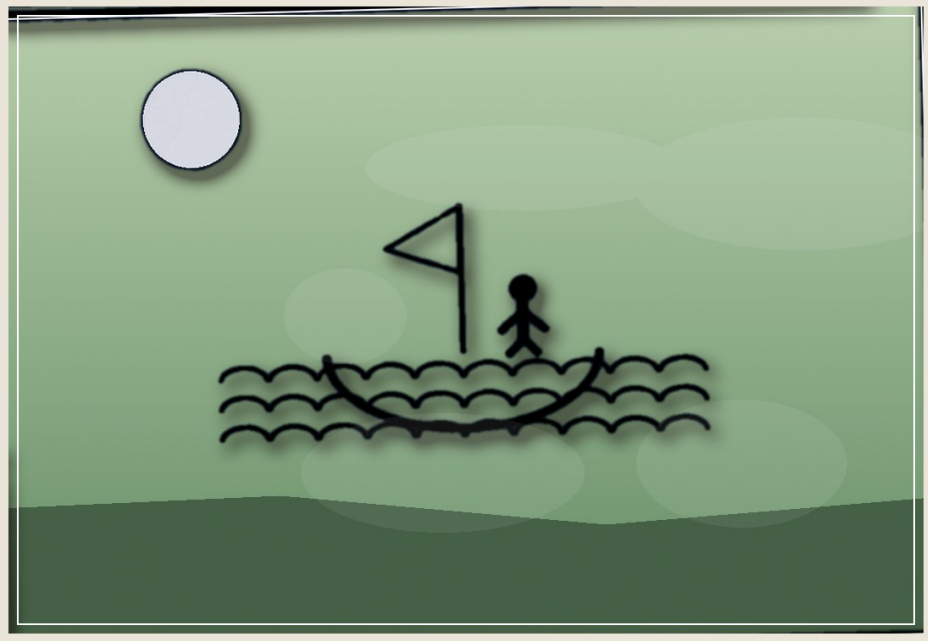

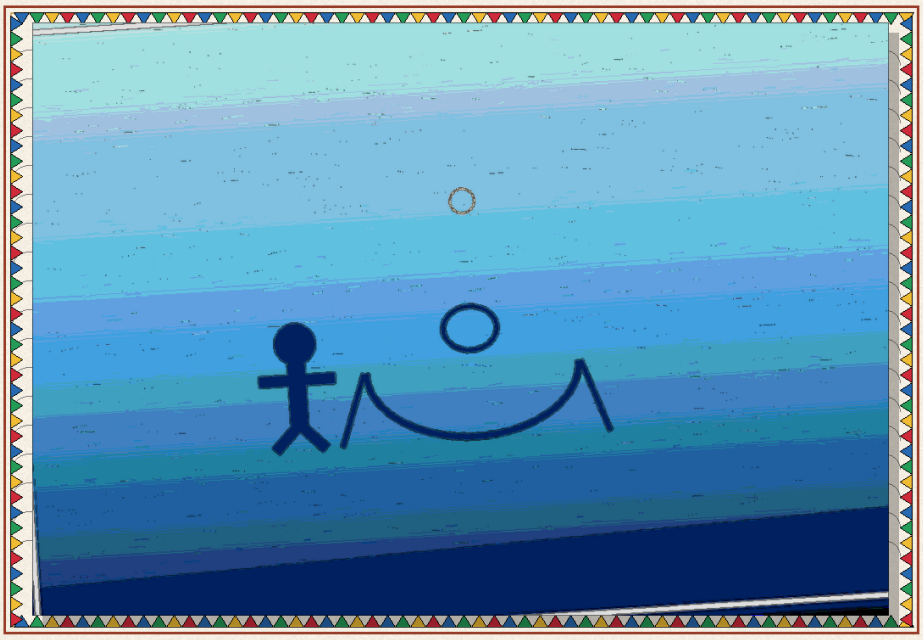

चित्र 12

बूढ़ मलाह ओकरा देखि आँखि मिचकाबथि — 'ई बालक साधारण नहि। एकर आँखिमे शिवालाक दीपक लौ छै।' तपस्या मोन छलनि सभकेँ, आ मोनमे एकटा आस जागल छल — मुदा केओ मुँहसँ नहि बाजल। वरदानक चर्च समयसँ पहिने कएल जाए त' वरदान लजा जाइत अछि।

अमरसिंह बढ़ैत गेलाह — आ हुनक संगे बढ़ैत गेल बैदलाक आतंक। दुनू एक्कहि कालखण्डमे पैघ भऽ रहल छल: एक दिस अत्याचारक गाछ, दोसर दिस ओकर कुड़हरि।

अध्याय ७ : अखराहाक माटि

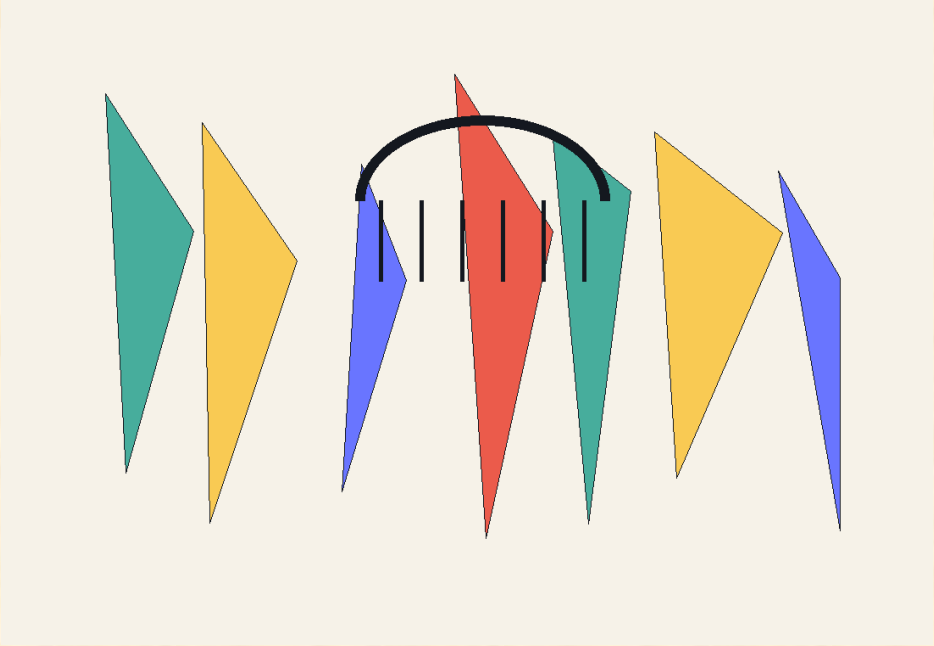

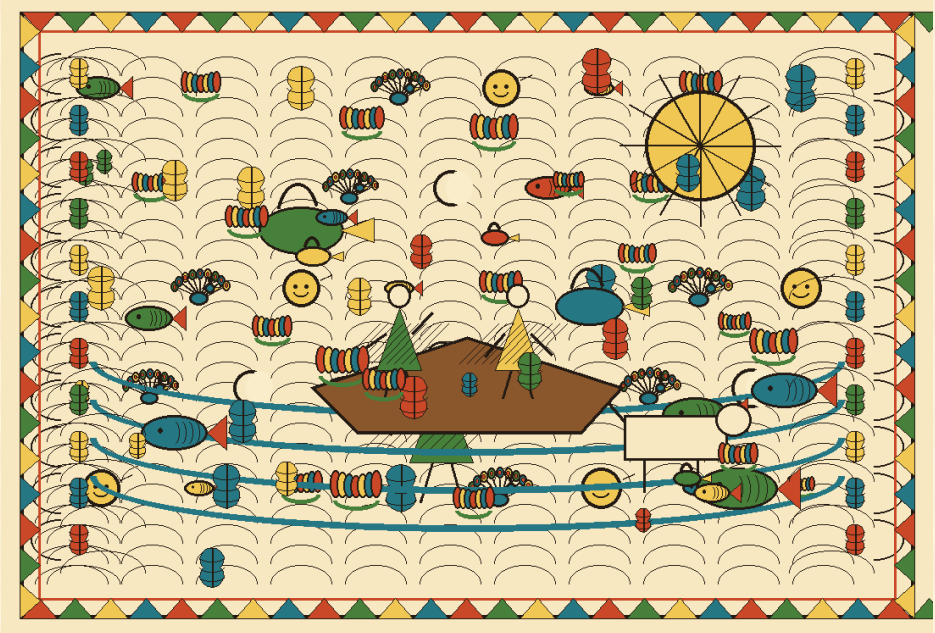

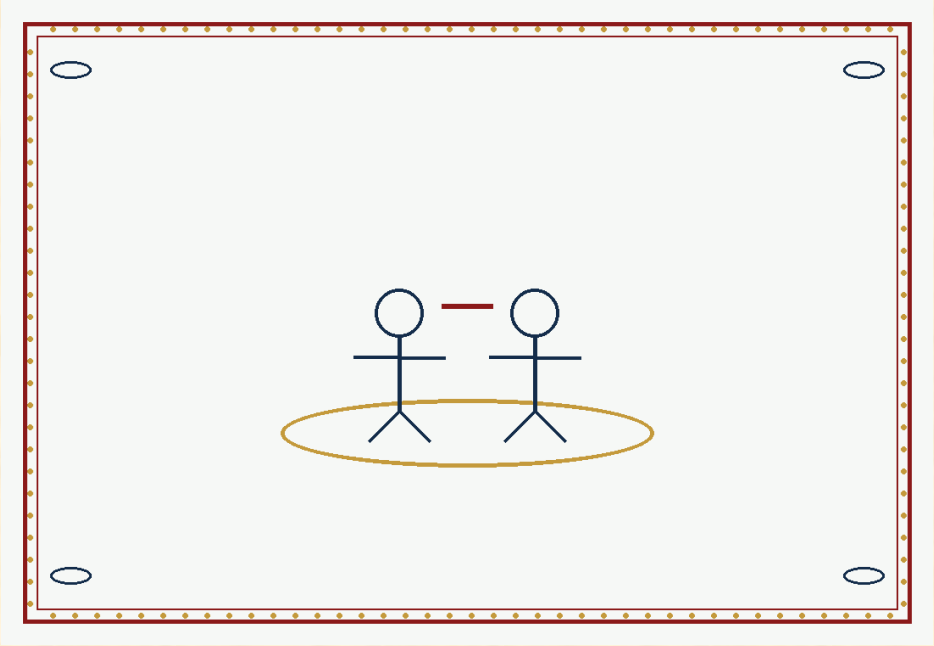

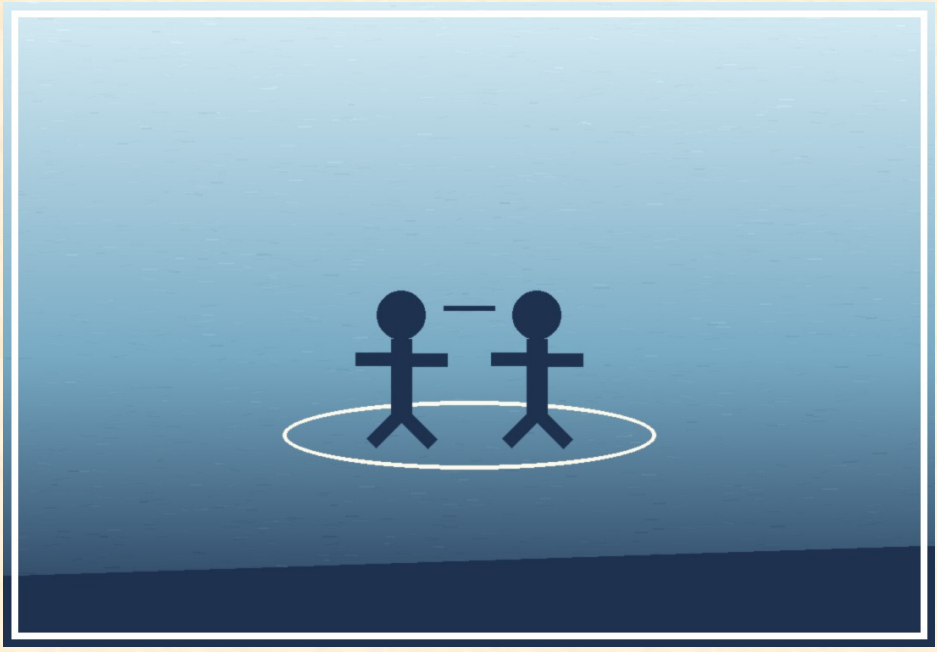

चित्र 13

अमरसिंह जुआन भेलाह त' हुनक ठेकान भेल अखराहा। भोरे कमलामे डूम, फेर घाटक अखराहामे दण्ड-बैसकी, कुश्ती, मुदगर। देह एहन बनल जे लोक कहए — 'शिवरा गाममे पाथरक देवता जागल अछि।'

मुदा बलसँ बेसी चर्च हुनक स्वभावक छल। कमजोरक आगाँ नरम, अभिमानीक आगाँ पहाड़। घाटपर ककरो नाव फँसए त' पहिने अमरसिंहक कान्ह पहुँचए; ककरो जाल छीनल जाए त' पहिने अमरसिंहक मुट्ठी।

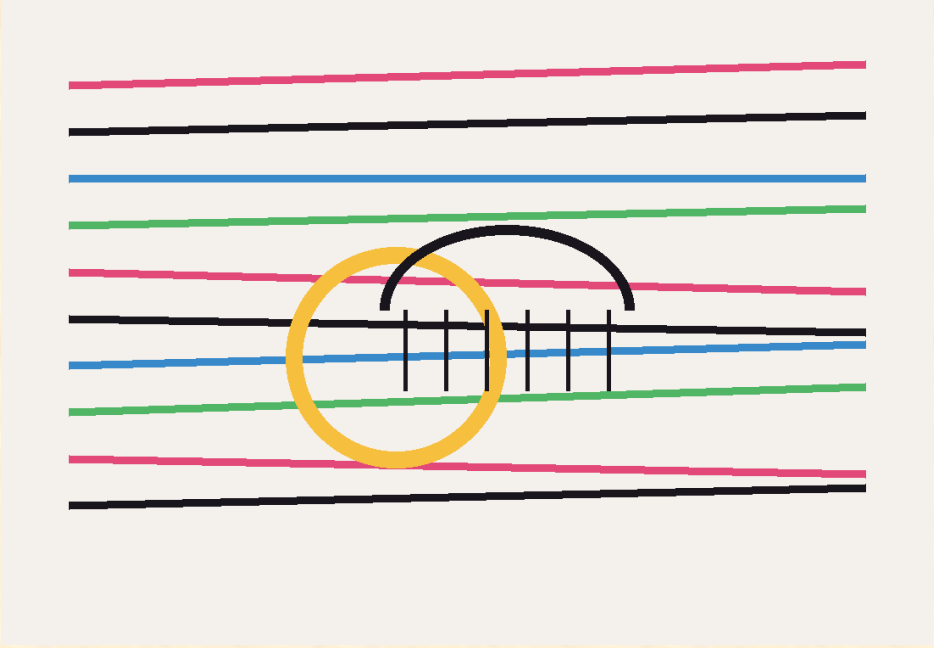

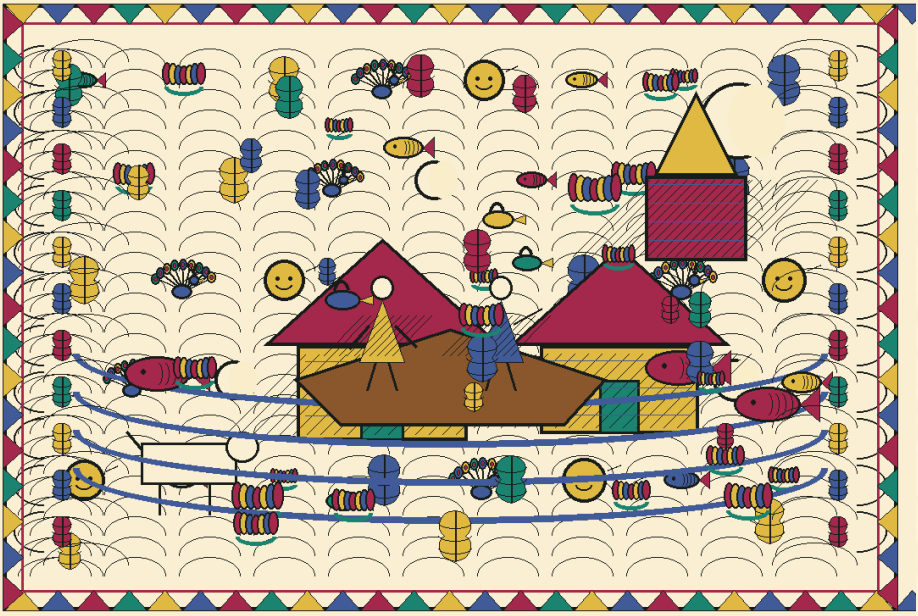

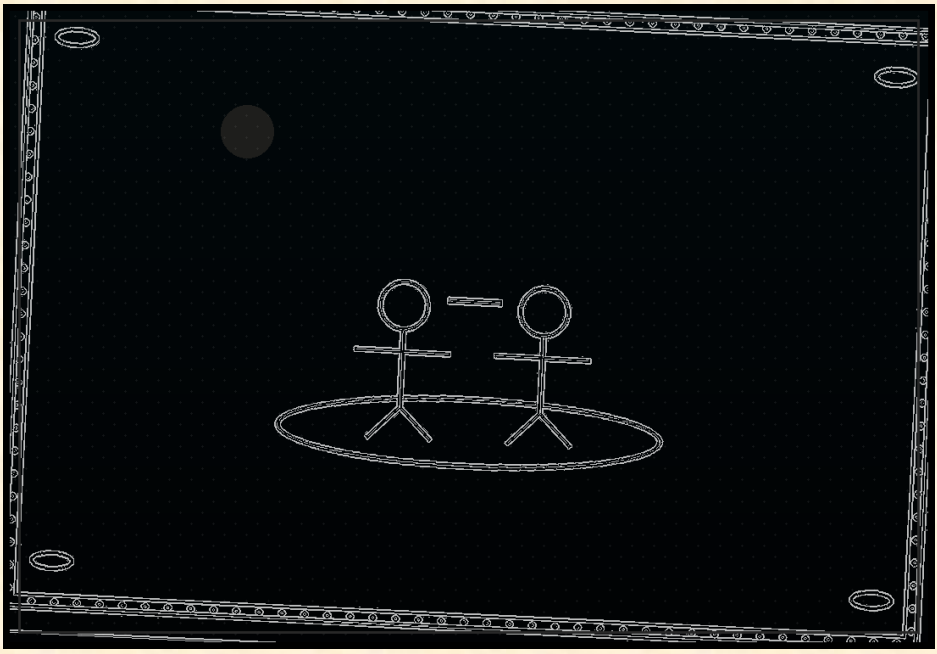

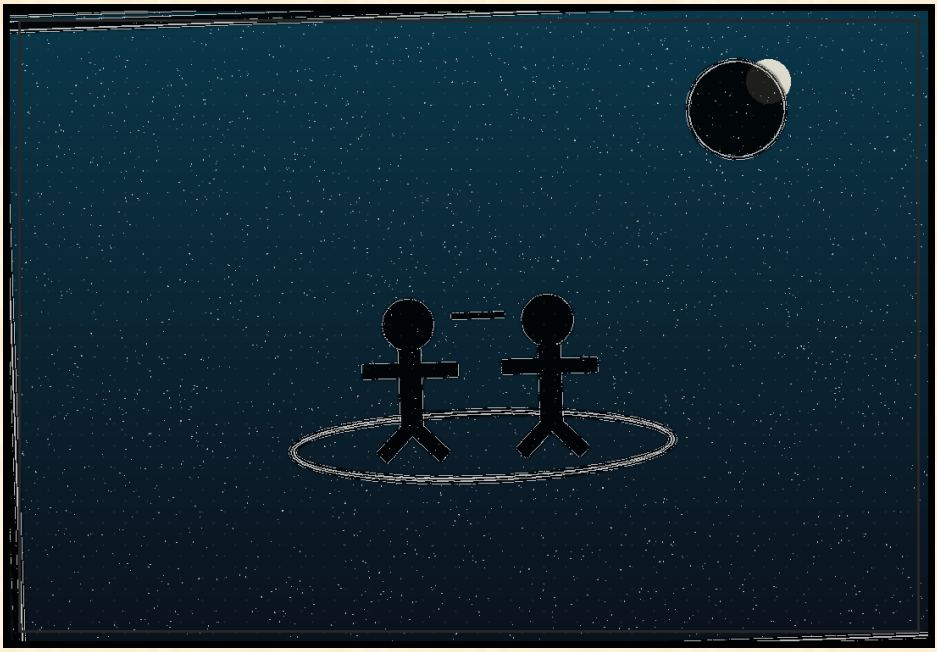

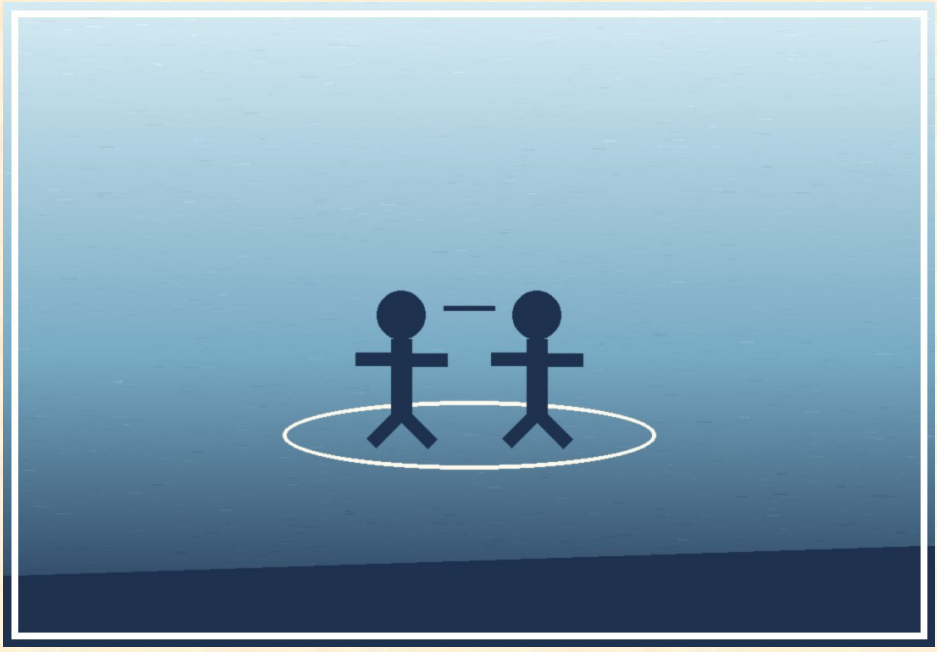

चित्र 14

आ हुनक करेजमे एकटा बात गड़ल छल — बैदलाक ओ घोषणा। कमला हुनका लेल खाली धार नहि छलीह; माए छलीह, जकर पानिसँ हुनक पहिल स्नान भेल छल। माएपर कुदृष्टि — आ बेटा चुप रहए?

एक साँझ अमरसिंह अपन गुरु-समान बूढ़ मलाहसँ पुछलनि, 'बैदलाक अखराहामे आइ धरि केओ माटि किए ने देलकै?' बूढ़ हँसलाह — 'कारण ओहि माटिक प्रतीक्षा तोरे देह करैत छलौ, बाबू।' — आ ओही राति अमरसिंह निर्णय कऽ लेलनि।

अध्याय ८ : चुनौती

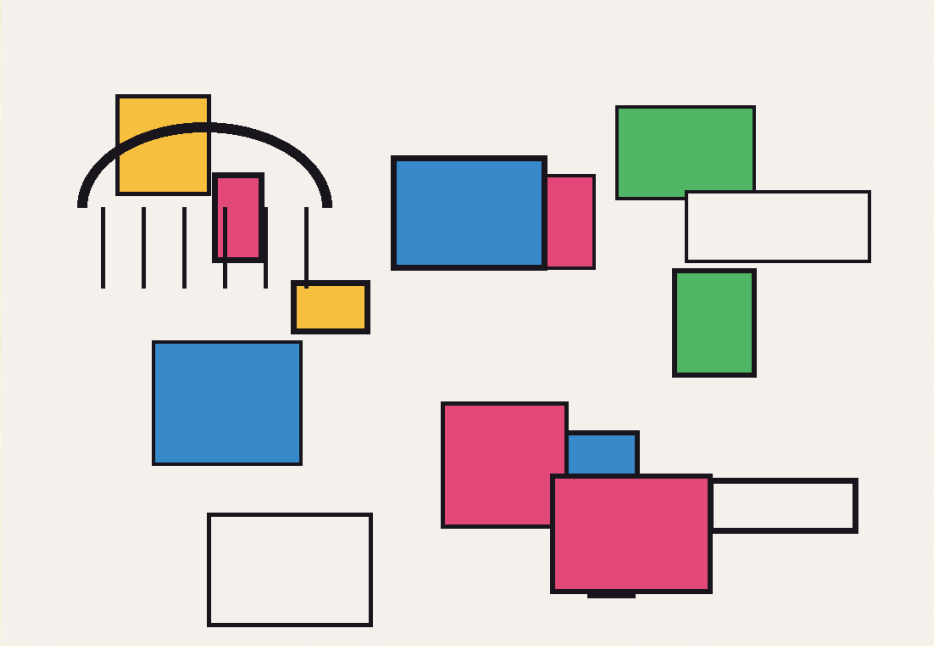

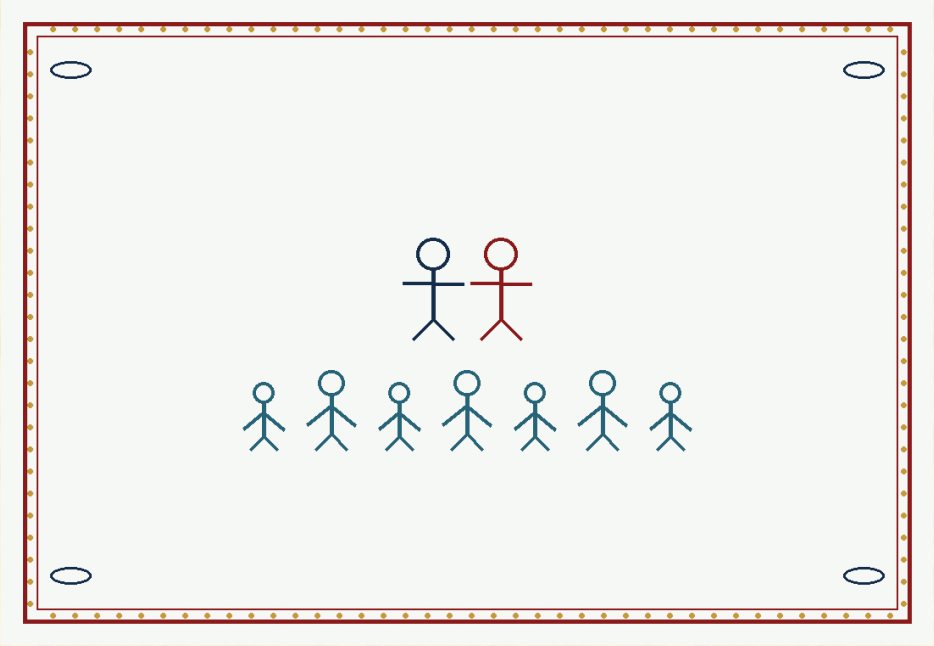

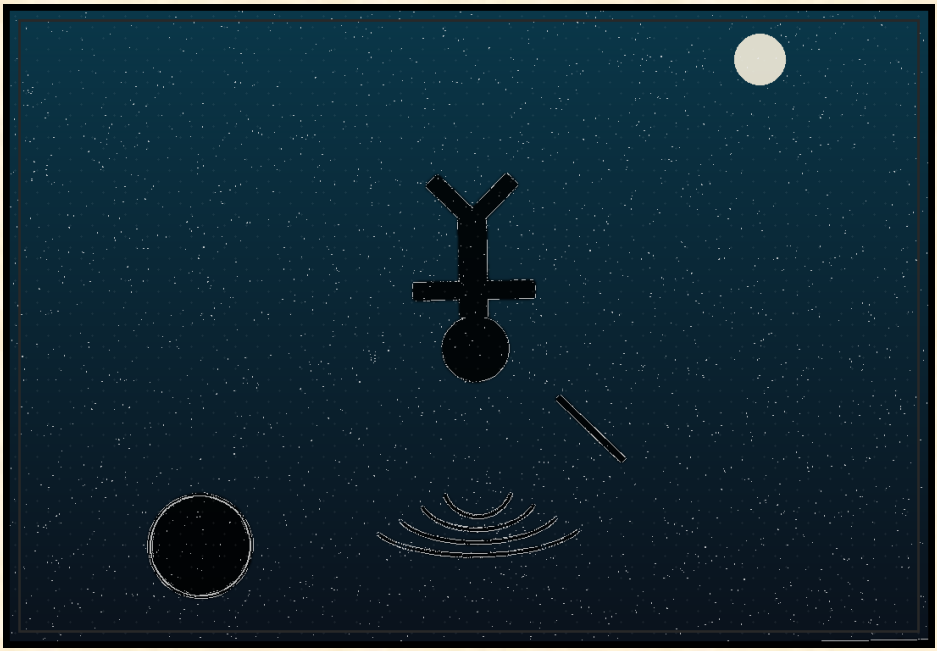

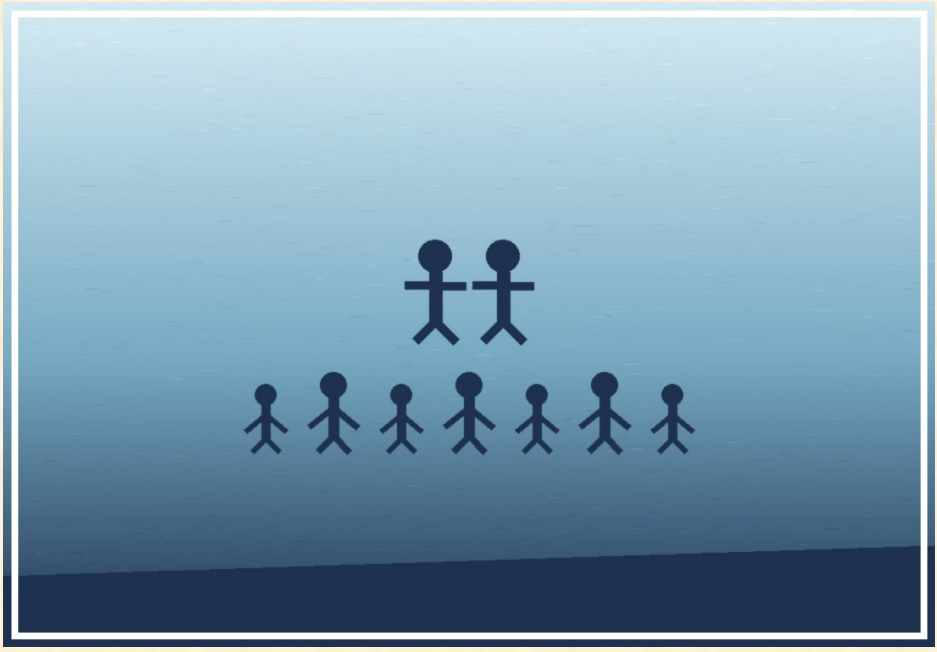

चित्र 15

अगिला भोर बैदलाक अखराहामे एकटा नव आवाज गूँजल — 'बैदला! शिवरा गामक अमरसिंह तोरा माटि दैत छौ!'

माटि देब — अखराहाक भाषामे चुनौती। बैदला हँसल; ओकर लठैत सभ ठहाका मारलक। 'ई छौड़ा? मलाहक बेटा? हमरा सँ?' — बैदला जिनगी भरि खाली जीतल छल, तेँ ओ बिसरि गेल छल जे सभ जीतनिहारक एकटा अन्तिम कुश्ती लिखल रहैत छै।

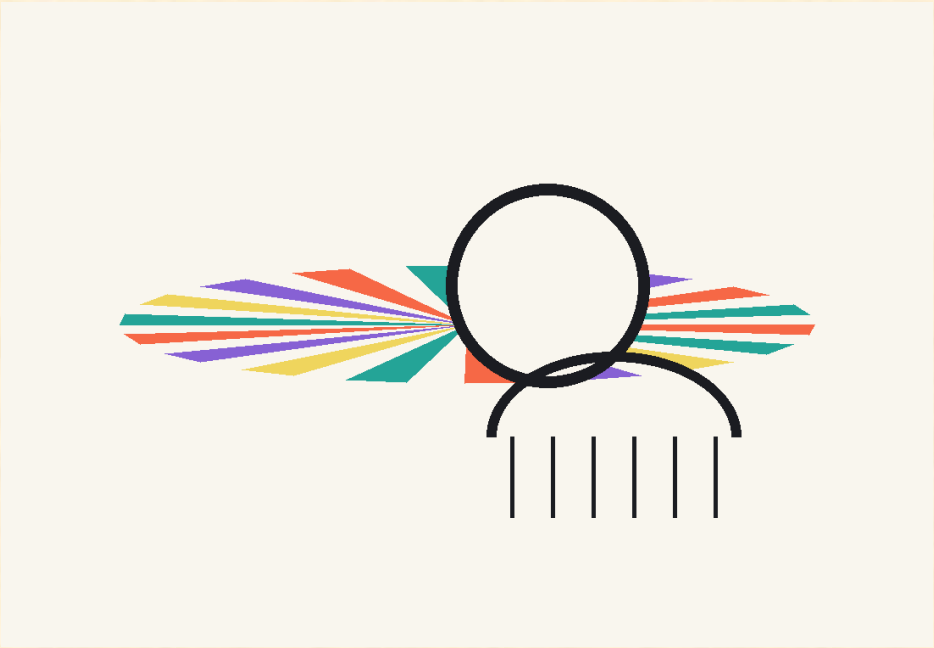

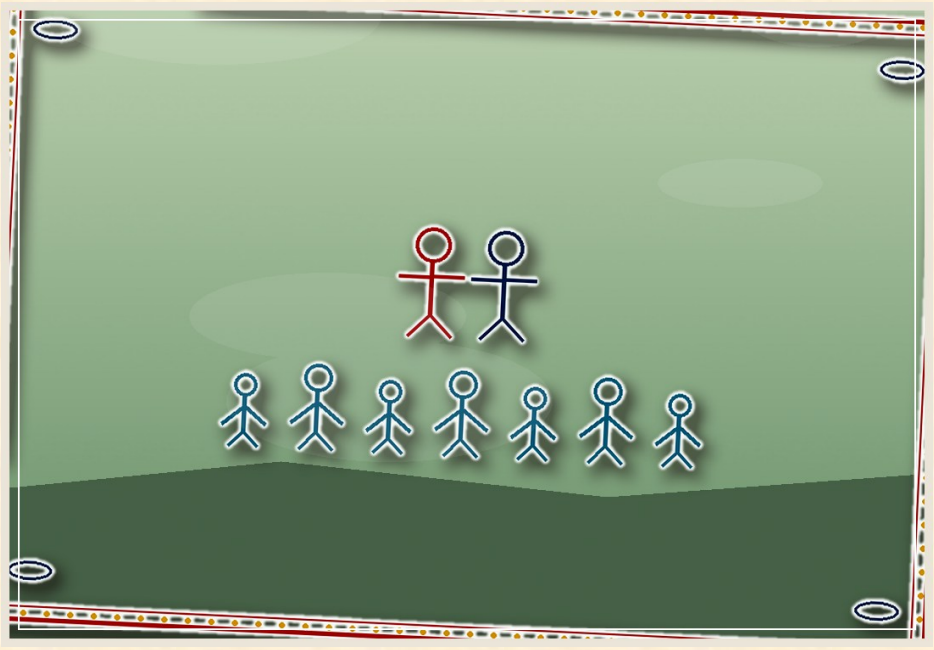

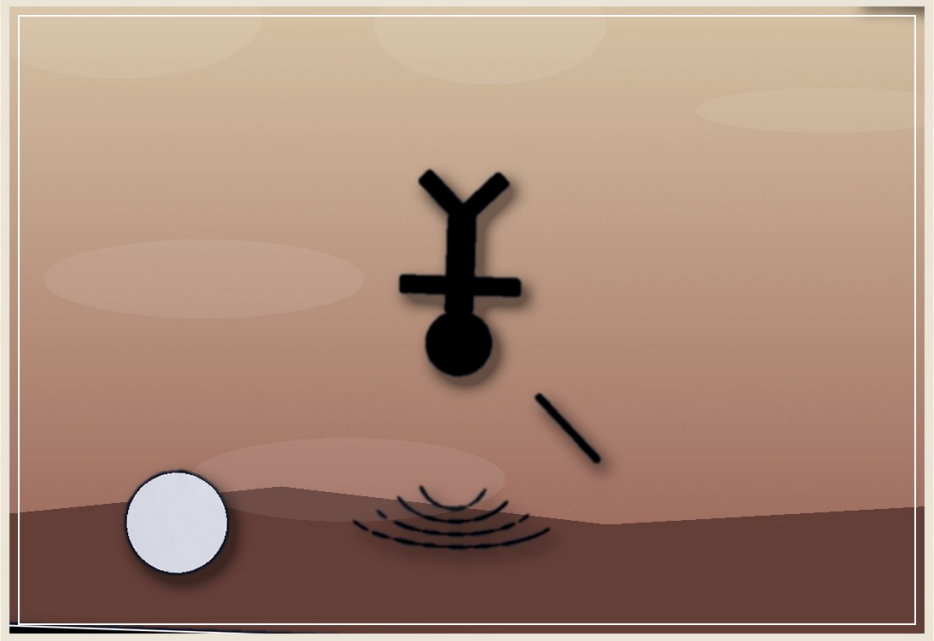

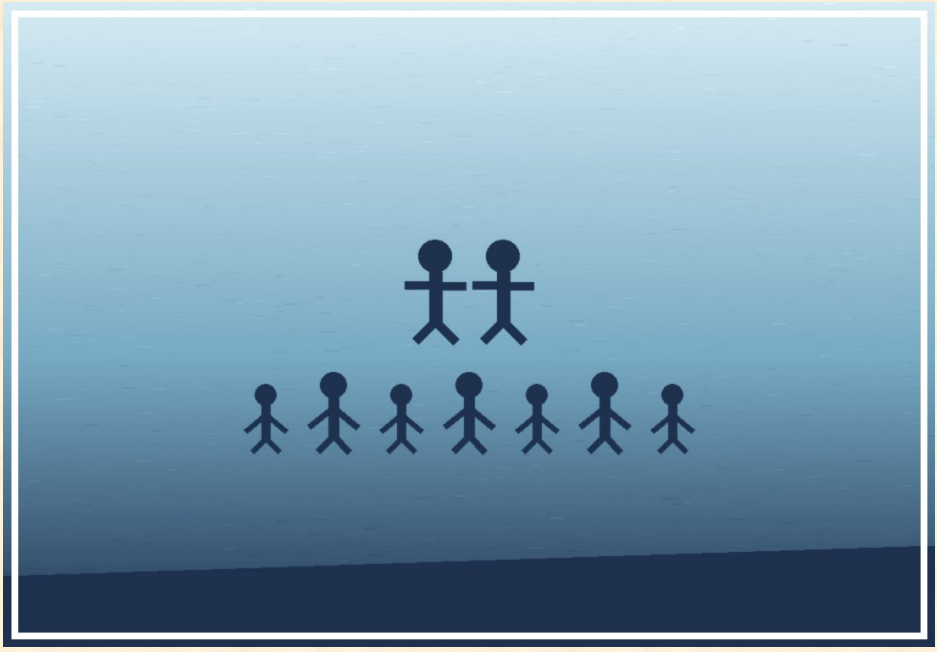

चित्र 16

मुदा गामक लोक नहि हँसल। लोक चुपचाप घाटपर जुटए लागल — किसान, मलाह, बूढ़, बच्चा। सभक आँखिमे एक्कहि प्रश्न: की ई बालक साँचे...? आ सभक करेजमे एक्कहि प्रार्थना, जे तीन बरख पहिने शिवालामे कएल गेल छल।

कमला धार सेहो ओहि दिन थम्हल-थम्हल बहलीह — जेना माए साँस रोकि कऽ बेटाक परीक्षा देखि रहल होथि। अखराहाक माटि कोड़ल गेल, सिन्नुर-अक्षत छींटल गेल, आ दुनू पहलमान आमने-सामने ठाढ़ भेलाह — अत्याचार आ उत्तर।

अध्याय ९ : युद्ध

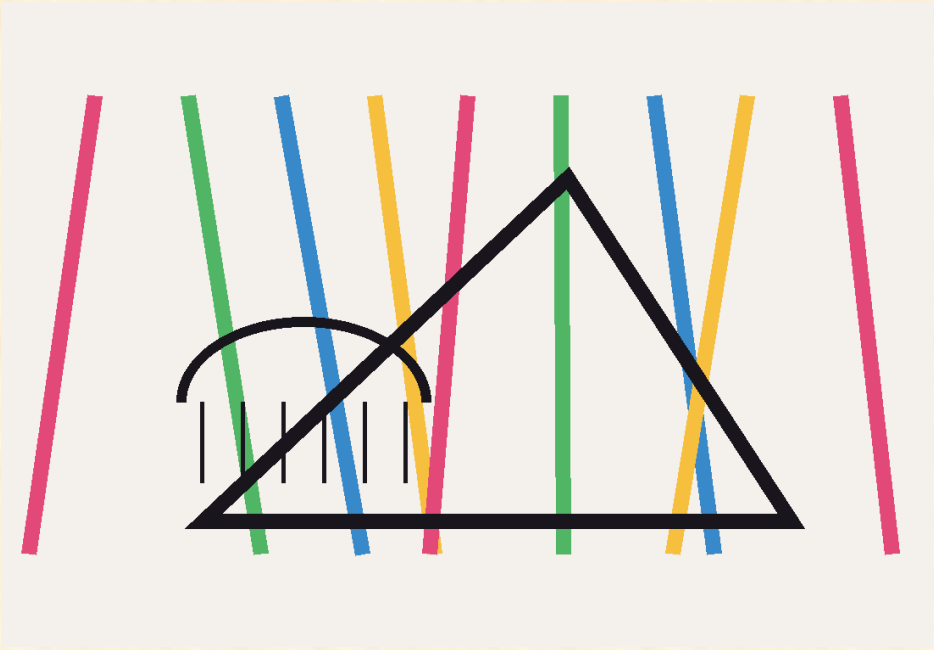

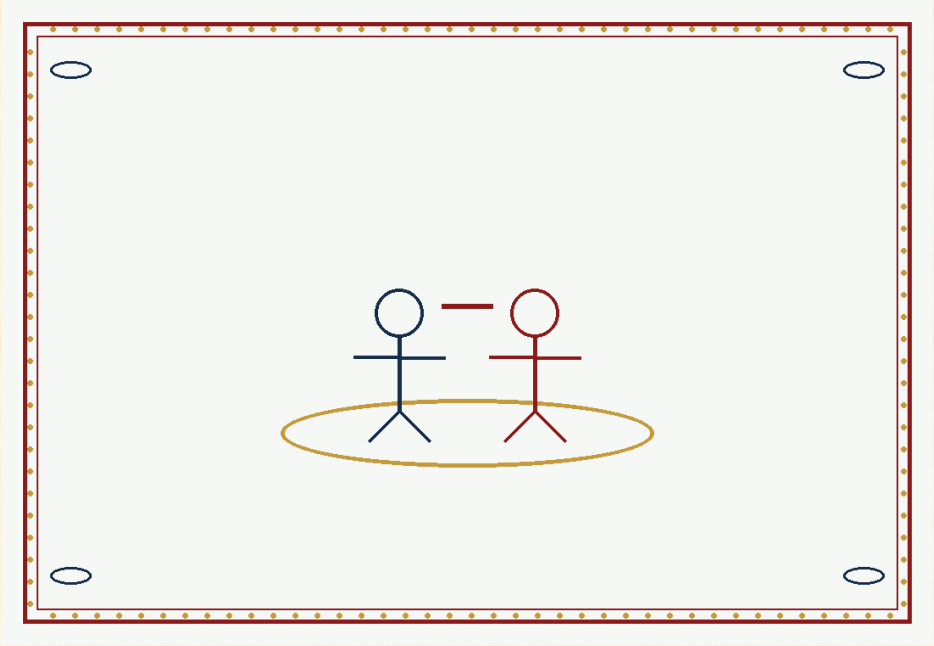

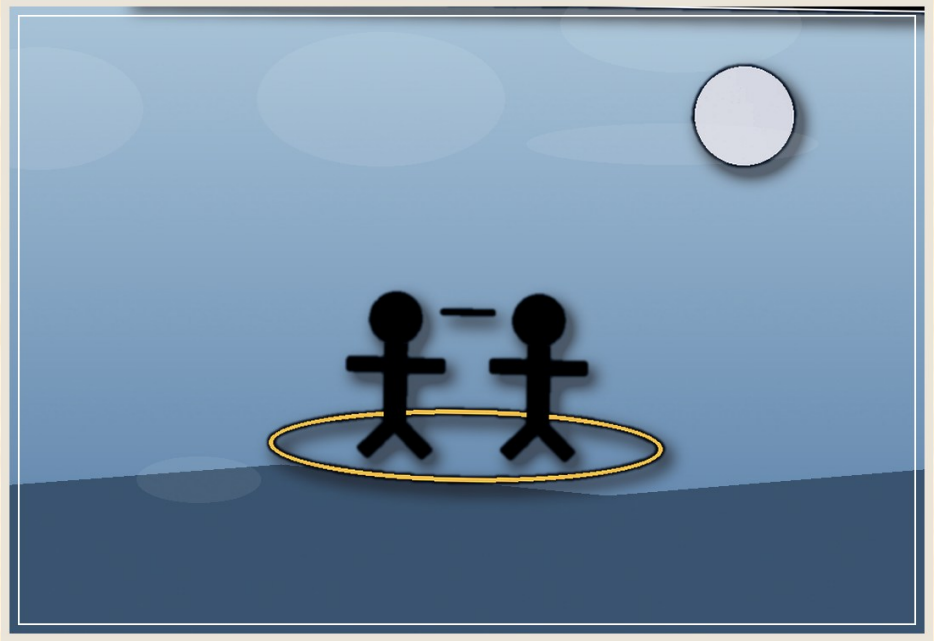

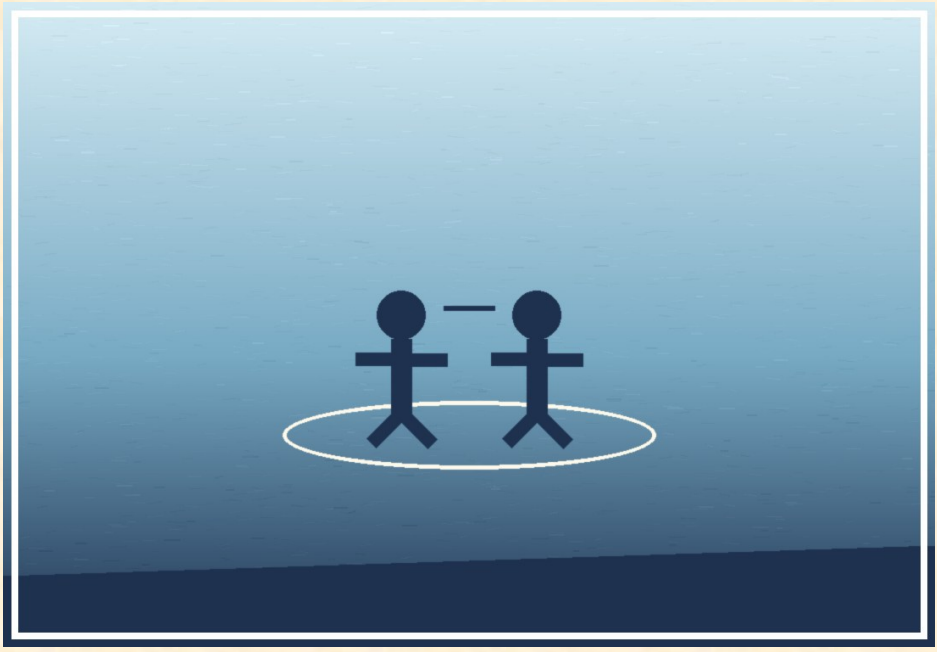

चित्र 17

युद्ध भेल — आ केहन युद्ध! बैदला अनुभवी छल, दाँव-पेच सभ जनैत छल; अमरसिंह लग छल जुआनीक आगि आ माएक लाजक बल। पहिल भिड़न्तमे दुनू पहाड़ जकाँ टकराएल — घाटक बालु धधरा जकाँ उड़ल।

बैदला दाँव मारलक — अमरसिंह छिटकि कऽ खसल, लोकक साँस अटकल। मुदा खसब आ हारब एक बात नहि। अमरसिंह उठलाह — आ उठैत काल हुनक हाथ अखराहाक माटि छूबि माथसँ लगओलक। ओ माटि आब खाली माटि नहि छल; ओहिमे कमलाक कछेरक अंश छल।

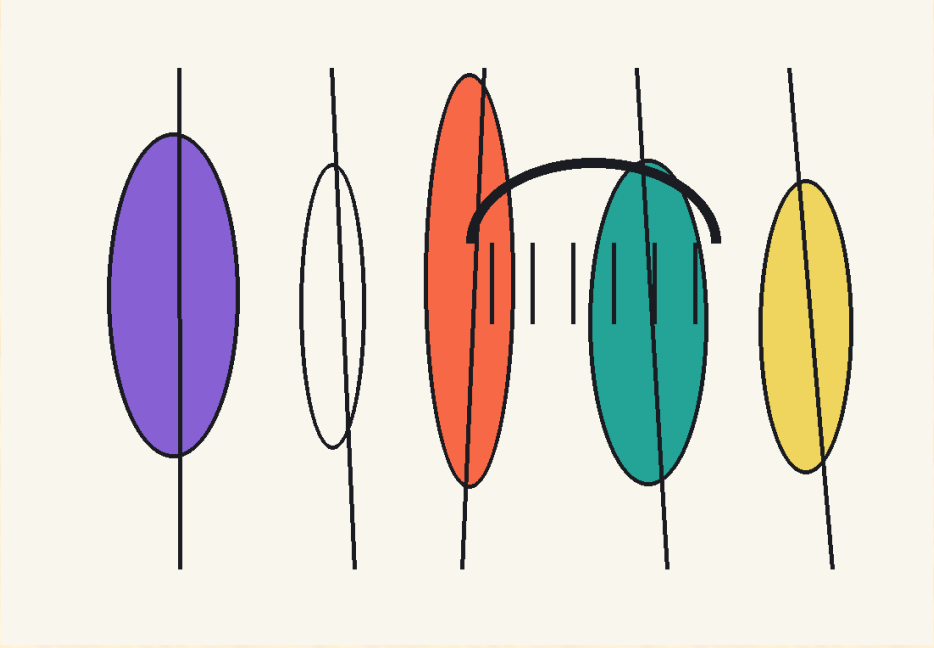

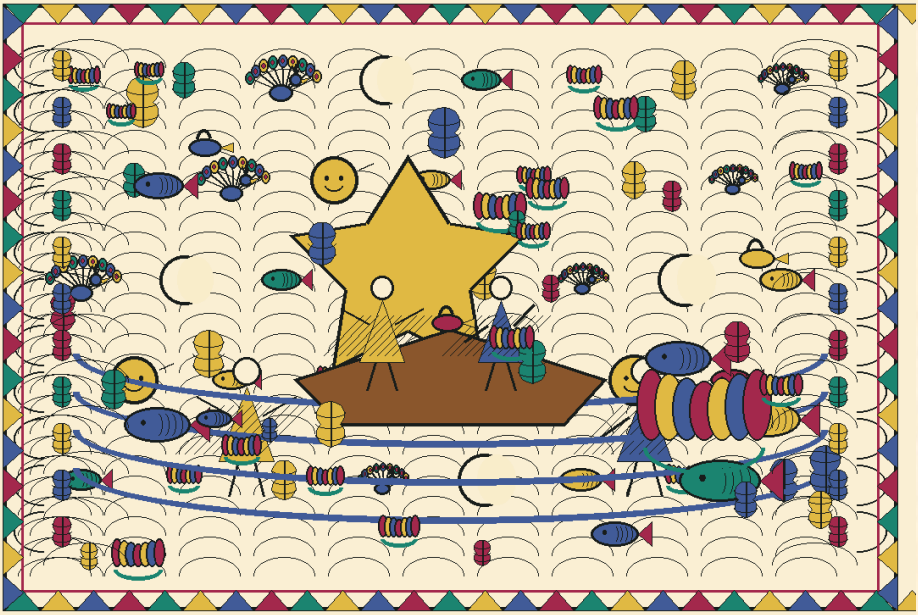

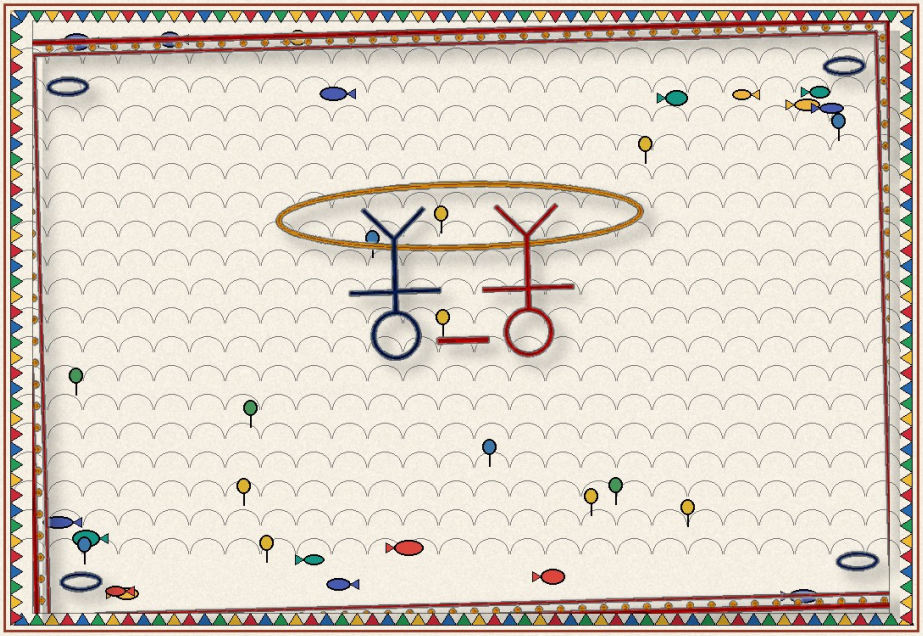

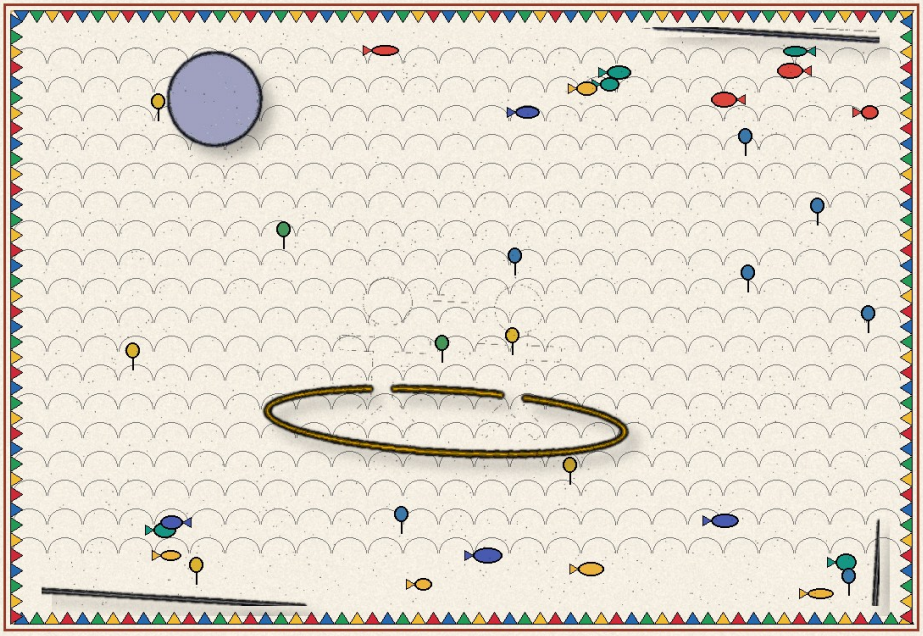

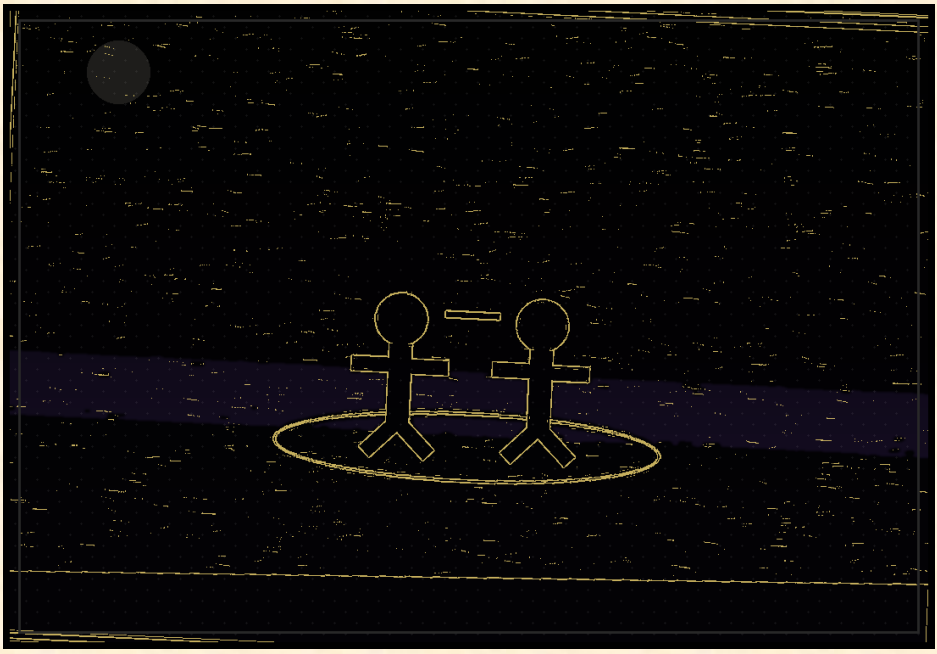

चित्र 18

फेर जे भेल, से देखनिहार पीढ़ी-दर-पीढ़ी कहैत मरल। अमरसिंहक पकड़ि बज्र भेल, बैदलाक दाँव एक-एक कऽ टूटल। अन्तिम पटकनीमे धरती डोलल — आ बैदला फेर नहि उठल। मारल गेल बैदला — ओही घाटपर, जतय ओ देवी-धारसँ बरजोड़ीक डंका पीटने छल।

घाटपर पहिने सुन-सन्नाटा भेल, फेर जयकार फूटल — 'जय कमला माए! जय अमरसिंह!' मलाह सभ कनैत-हँसैत एक-दोसराकेँ जकड़ि लेलक। कए बरख पुरान तपस्याक उत्तर हुनका सभक आगाँ माटिमे लेटाएल ठाढ़ छल। मुदा — खिस्सा एतय खतम नहि भेल। जीत सदिखन अन्त नहि होइत अछि; कखनो काल ओ एकटा आओर कठिन अध्यायक आरम्भ होइत अछि।

अध्याय १० : जीतक छाह

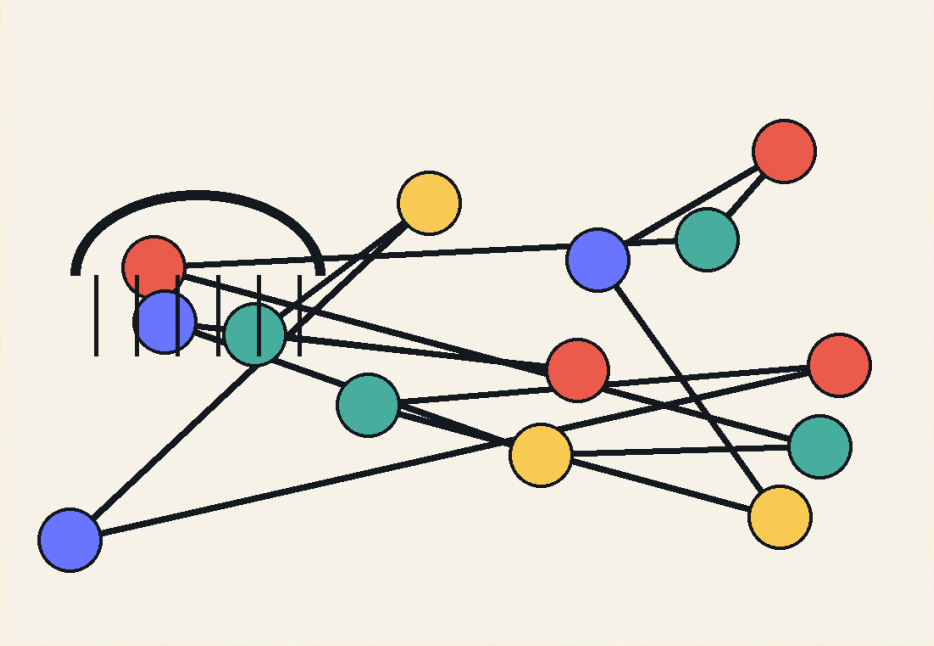

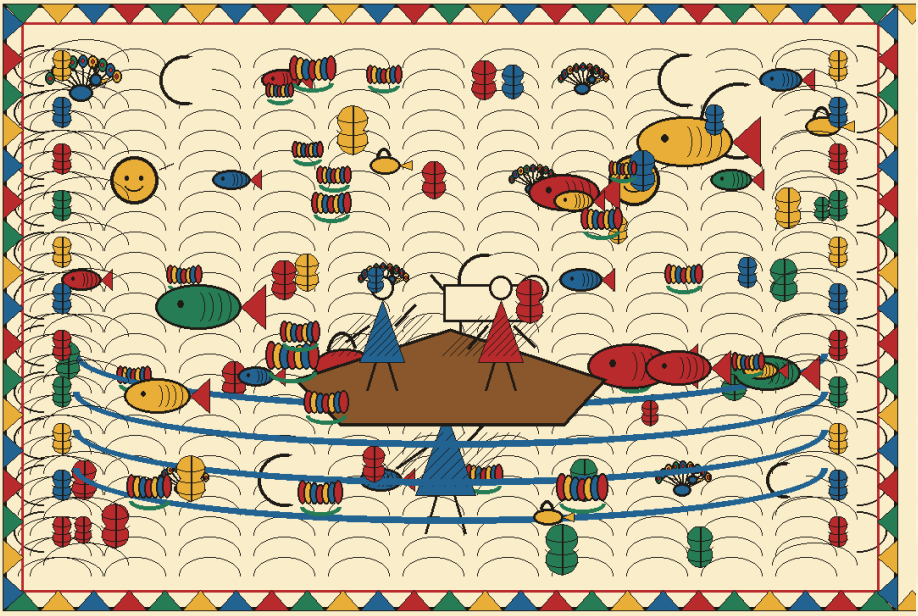

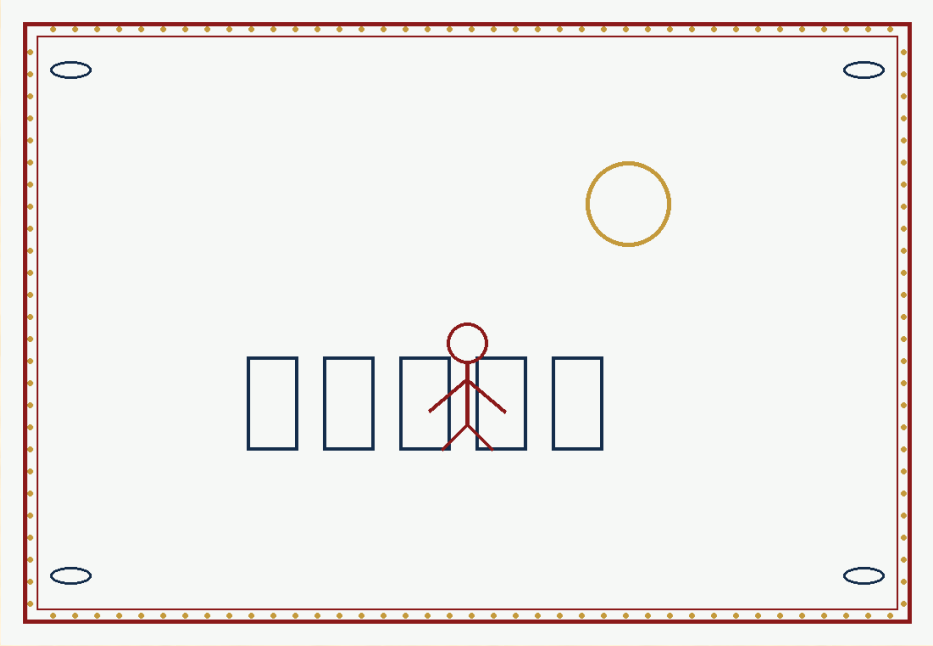

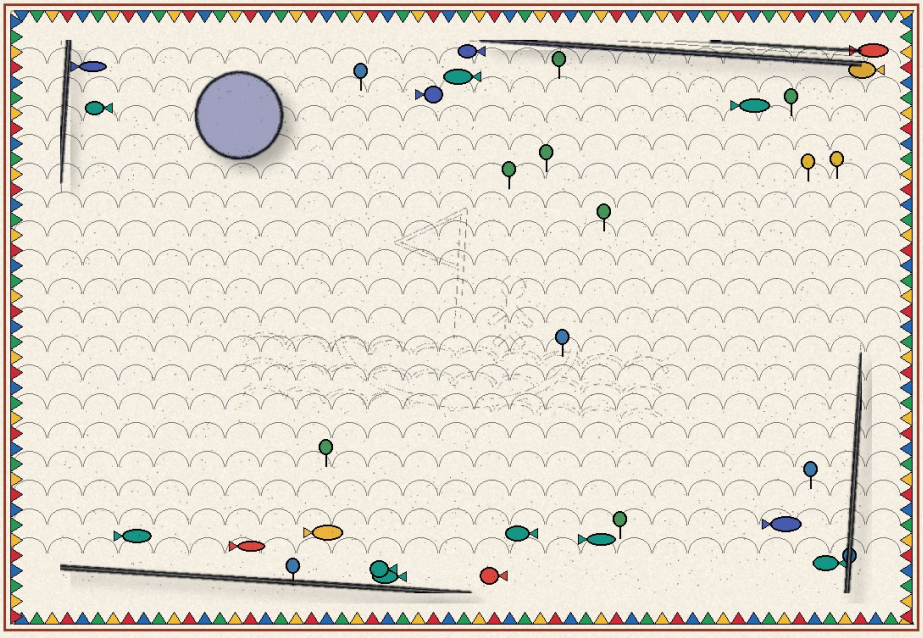

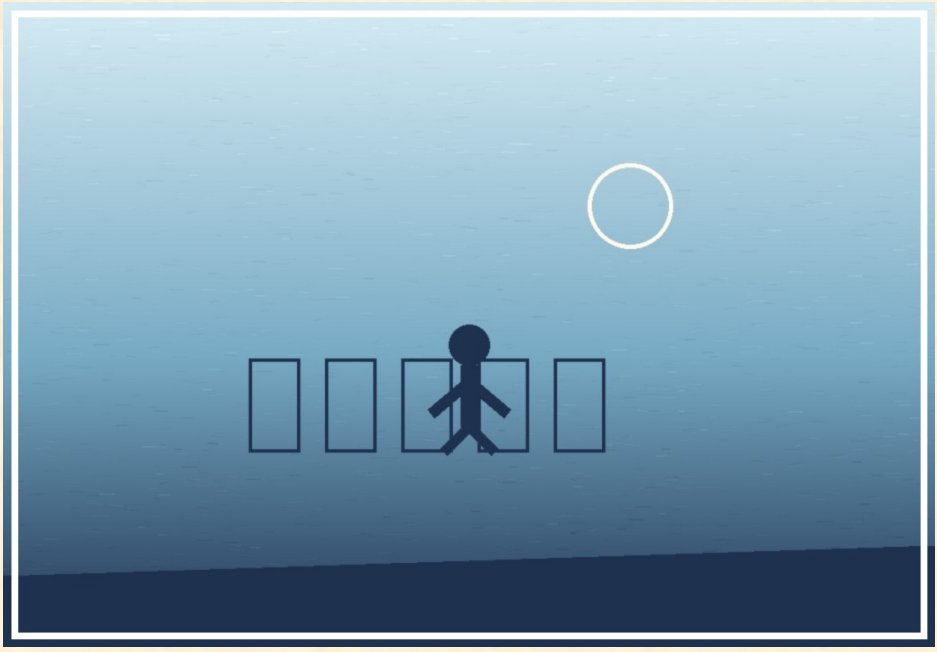

चित्र 19

बैदला मरल, मुदा बैदलाक खानदान बाँचल छल — आ संगहि बाँचल छल प्रतिशोधक बीआ। मलाह लोकनिक मोनमे डर बैसल: 'बैदलाक वंश जँ रहत, त' काल्हि फेर कोनो बैदला ठाढ़ हएत। खानदाने नष्ट हो।'

ई माँग सुनि अमरसिंहक करेज पहिल बेर डोलल। अखराहामे शत्रुसँ लड़ब एक बात — मुदा ओकर घर धरि जाएब? ओतय त' बैदलाक गर्भवती कनियाँ छलि — आ गर्भमे ओकर सन्तान।

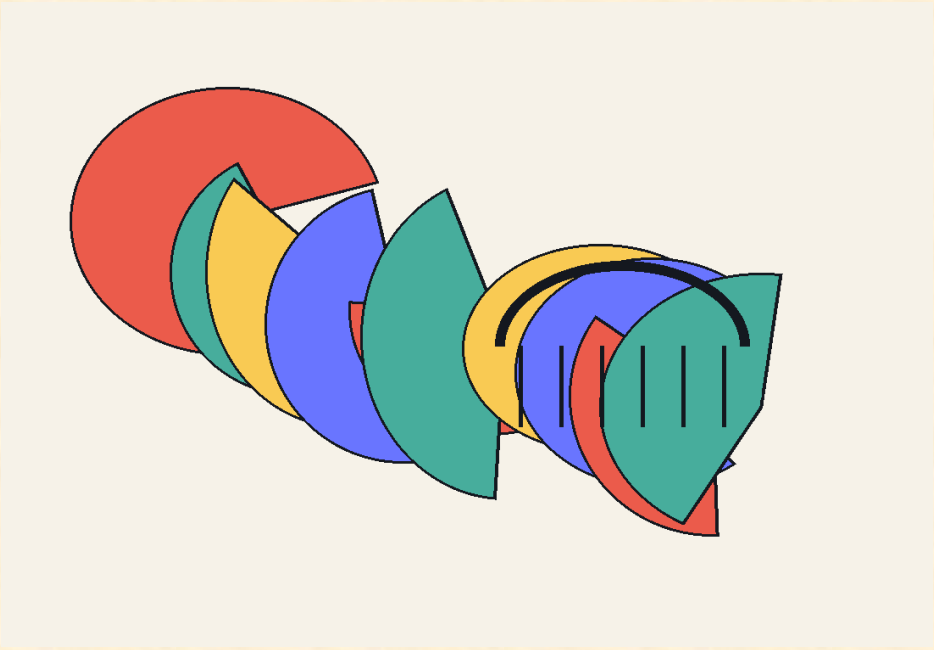

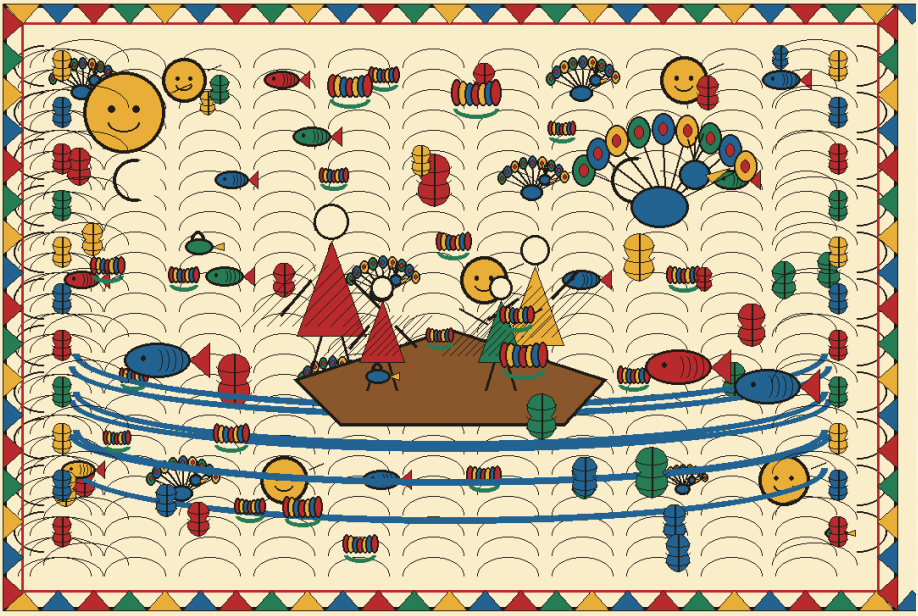

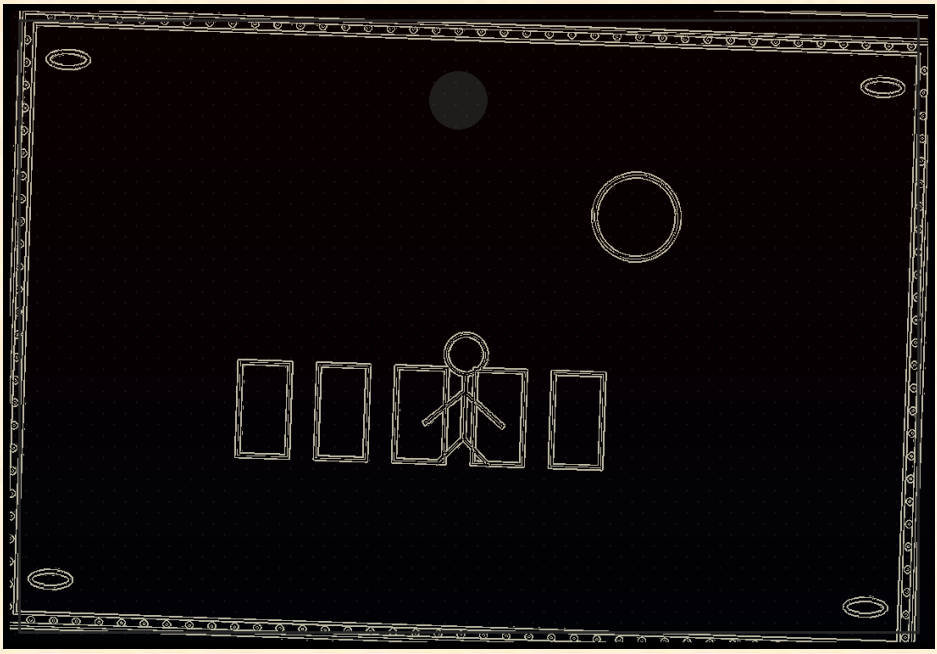

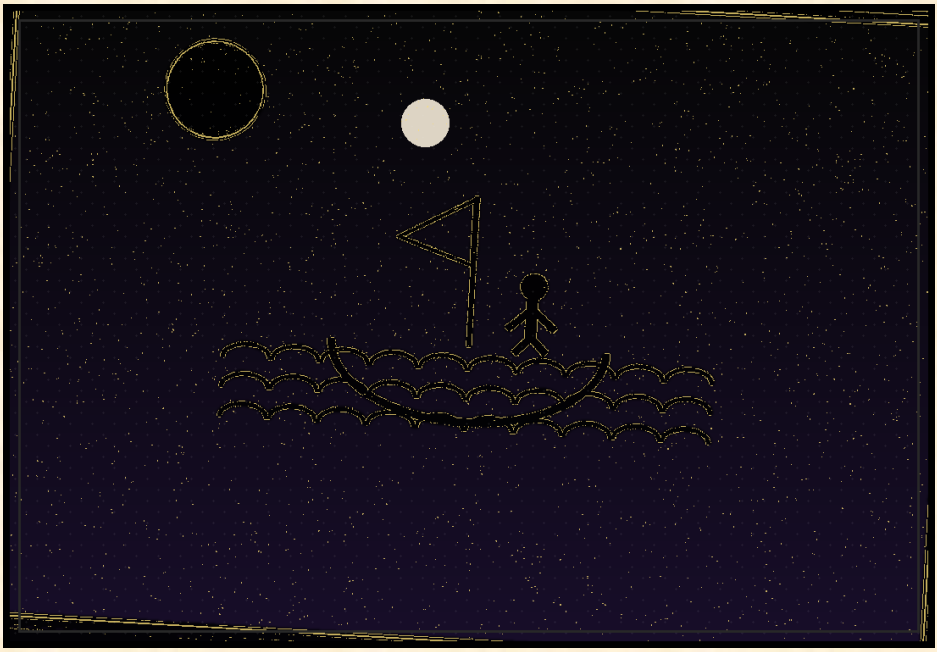

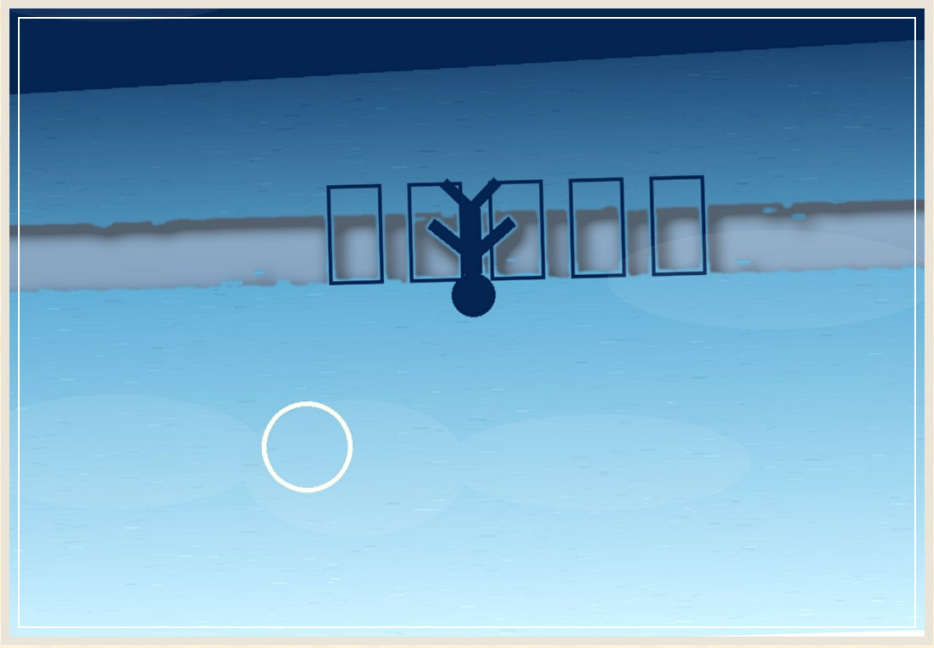

चित्र 20

मुदा भयक अपन तर्क होइत छै, आ भीड़क अपन वेग। जे भेल, से गाथाक सभसँ अन्हार पन्ना थिक — अमरसिंह बैदलाक गर्भवती कनियाँकेँ मारि देलनि। गाथा एहि ठाम आँखि नीचाँ कऽ लैत अछि; हम सेहो करी। वीरताक तरुआरि जखन डरक हाथमे चलि जाइत अछि, तखन ओ जे काटैत अछि, से घा’ बनि कऽ काटनिहारेक करेजमे रहि जाइत अछि।

आ नियति देखू — ओही क्षण ओ बच्चा जनमि गेल। मुइल माएक कोखिसँ जीवित बेटा — आ बड्ड बलगर। जेना काल कहि रहल हो: 'हिसाब एतेक आसान नहि, अमरसिंह।' नवजात बालक — बैदलाक रक्त, बैदलेक बल — आब ओहि धरतीपर साँस लऽ रहल छल जतय ओकर पिता आ माता दुनू मारल गेल छलाह।

अध्याय ११ : कमलाक भेद

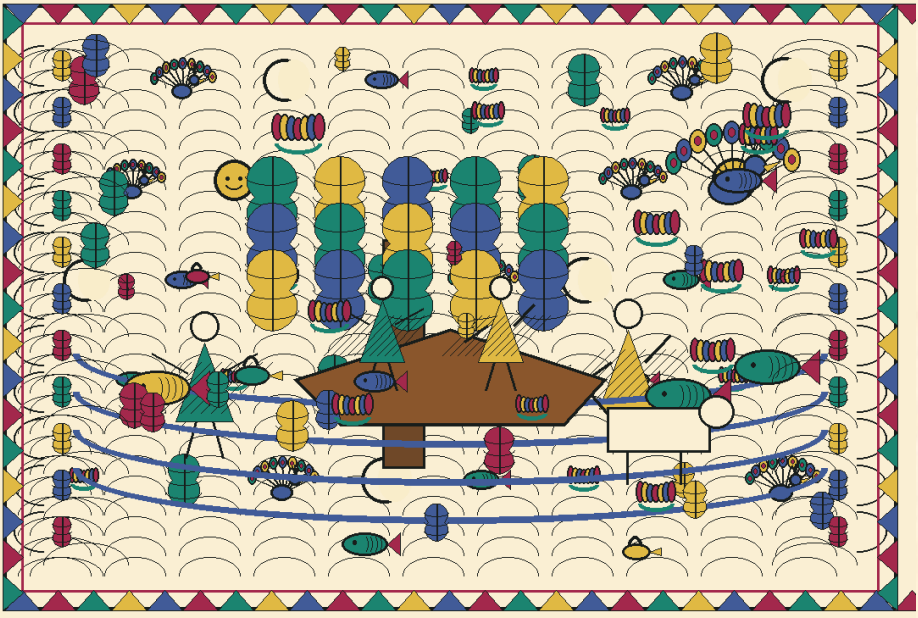

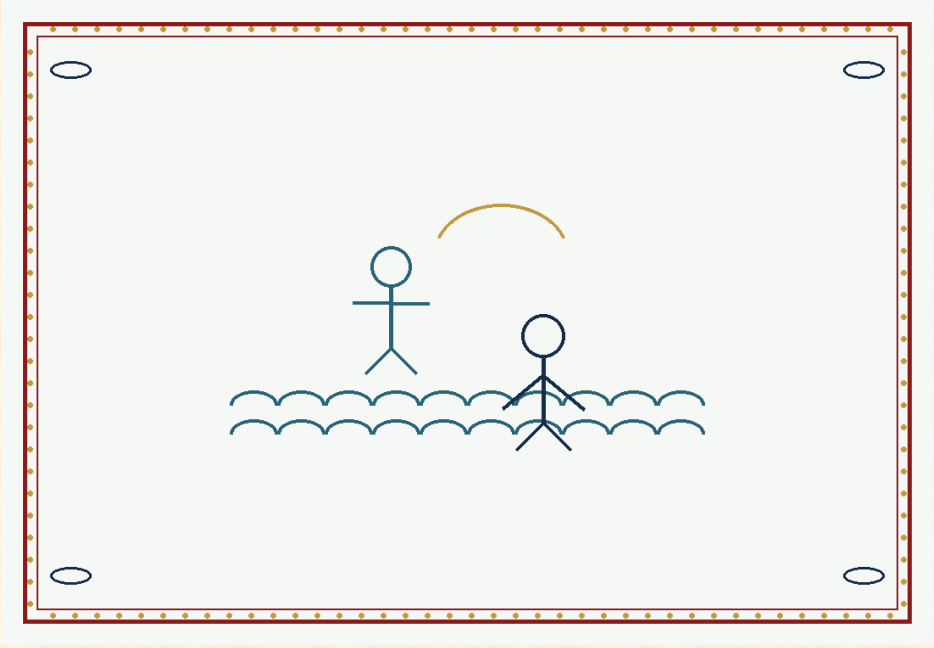

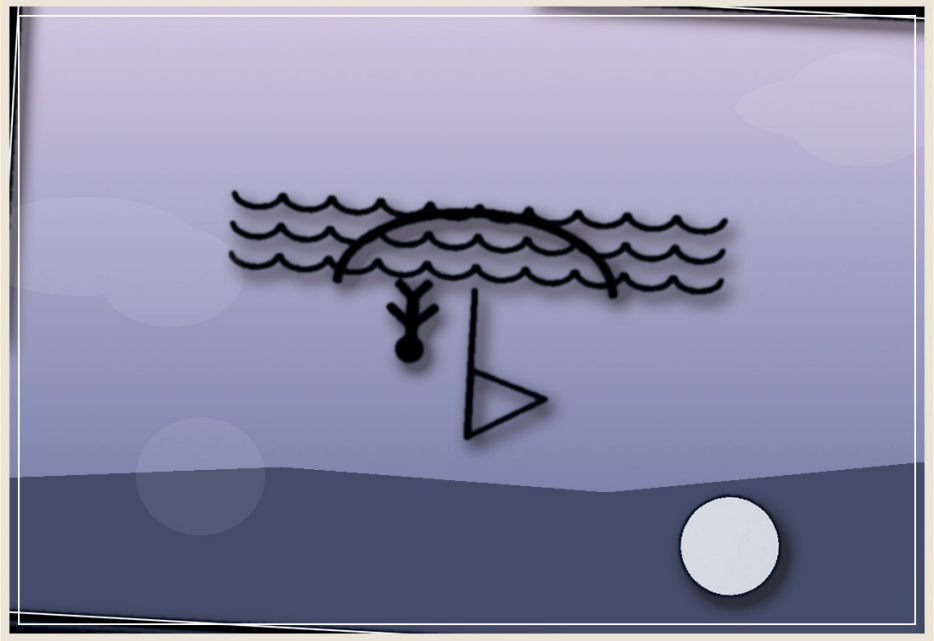

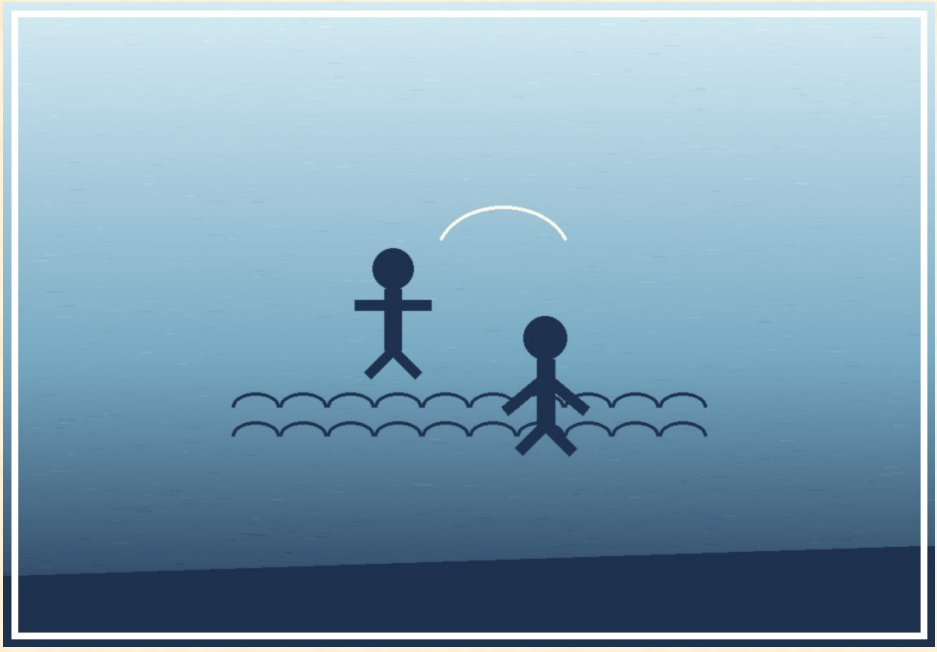

चित्र 21

ओ बालक जेना-जेना बढ़ल, बुझना गेल जे बैदलाक बल ओहिमे दूना भऽ कऽ उतरल अछि। साधारण चोट ओकरा छूबि नहि सकैत छल; साधारण बन्हन ओकरा बान्हि नहि सकैत छल। मलाह टोलीमे फेर वैह पुरान डर घुरि आएल — आब त' पहिनेसँ बेसी।

अमरसिंह ओकरा सोझाँ भेलाह, मुदा सभ दाँव खाली गेल। जे वीर बैदलाकेँ पछाड़ने छल, से ओकरे बेटाक आगाँ पहिल बेर निरुपाय ठाढ़ छल। कारण ओहि बालकक प्राणक भेद ककरो बुझल नहि छल।

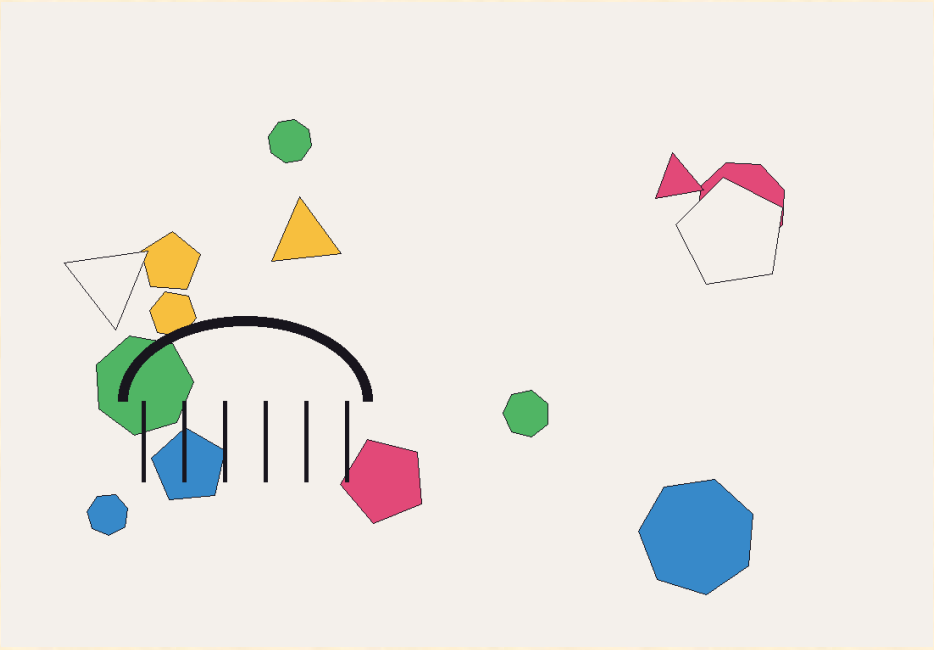

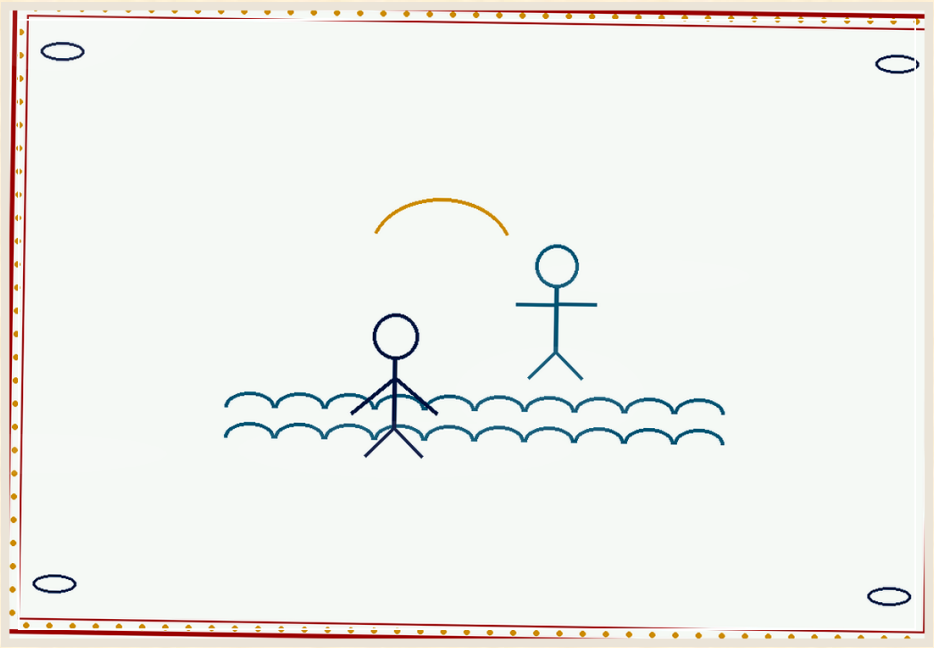

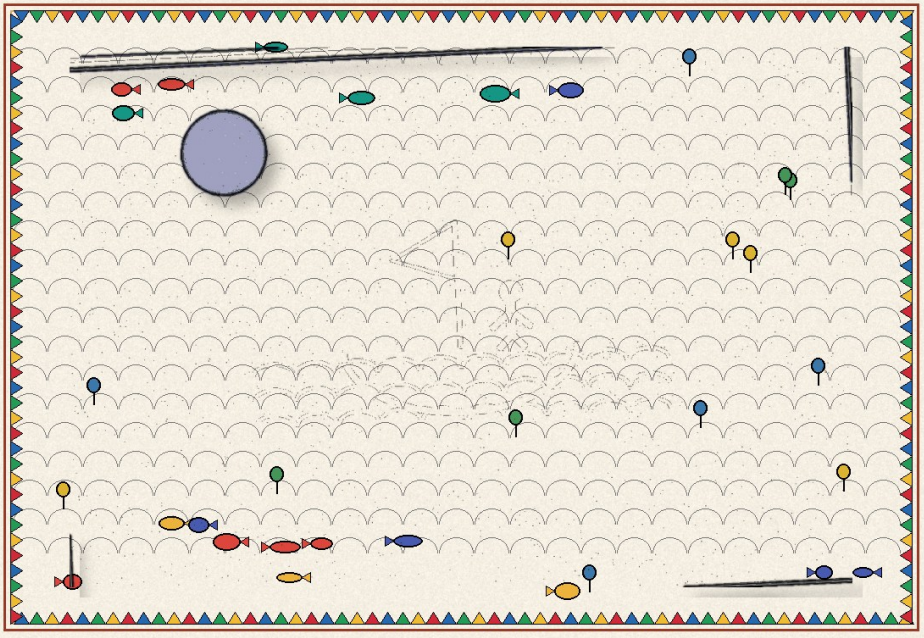

चित्र 22

तखन बजलीह कमला धार अपने। जे माए एतेक दिन चुप छलीह, से अपन रक्षक बेटाकेँ भेद बतओलनि — ओहि बालकक बल कतय बसैत अछि आ कोन उपायसँ ओ शान्त हएत। देवीक बताओल बाट — आ अमरसिंह ओही बाटे बैदलाक बेटाकेँ मारलनि। ओ बाट ओ ककरो नहि बतौलनि।

अन्तिम शत्रु खसल, आ संगहि खसल ओ पूरा अध्याय — बलजोड़ीक, प्रतिशोधक, रक्तक। घाटपर फेर शान्ति उतरल। मुदा ई शान्ति पहिलुक सन निर्मल नहि छल; एहिमे एकटा गम्भीर उदासी घोरल छल। अमरसिंह ओहि साँझ बहुत काल धरि कमलाक कातमे असगरे बैसल रहलाह — विजयी, मुदा भारी। रक्षाक मूल्य ओ चुका चुकल छलाह, आ मूल्य सस्ता नहि छल।

अध्याय १२ : गहमर : अमर बाबा

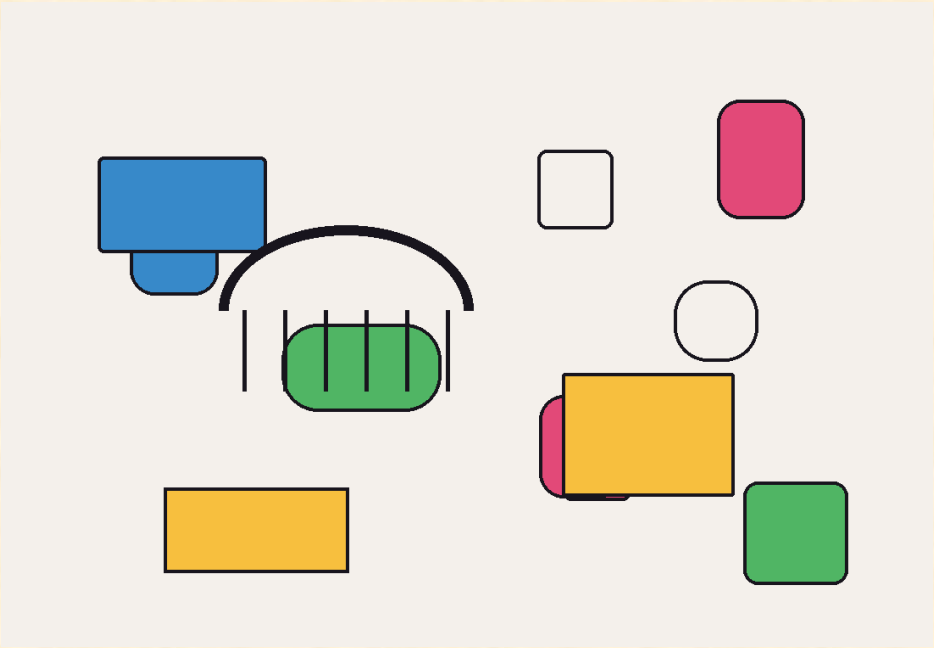

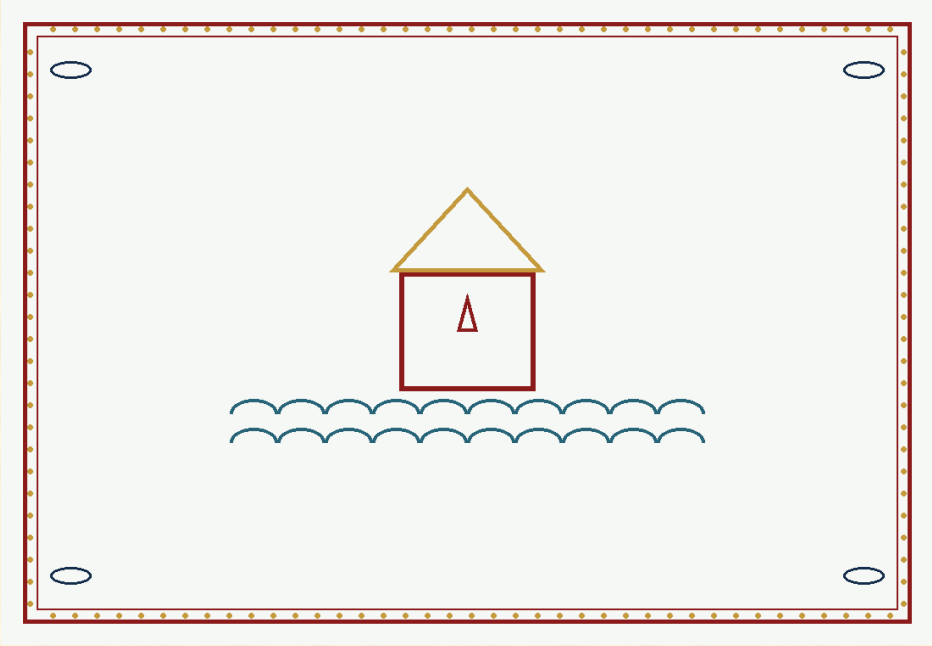

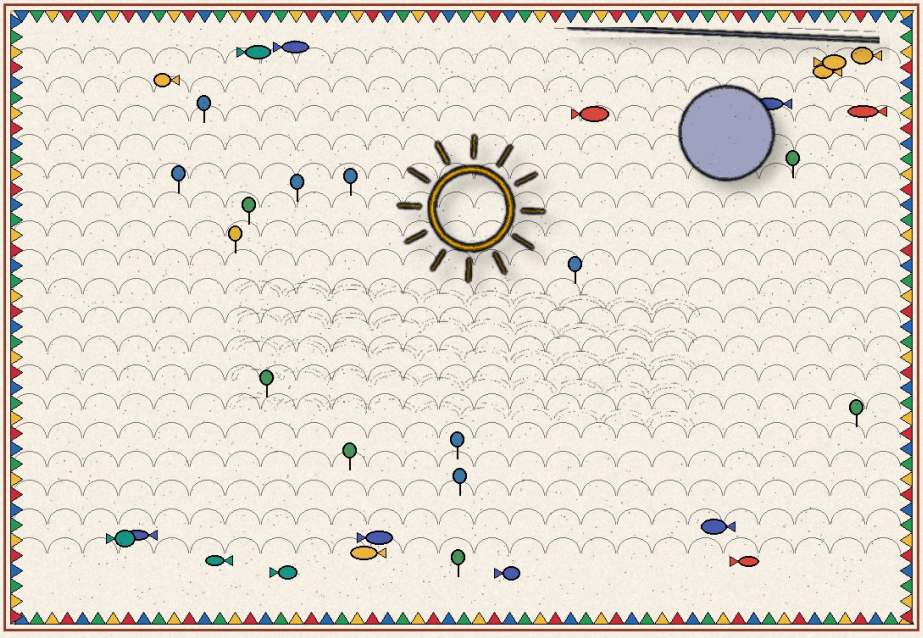

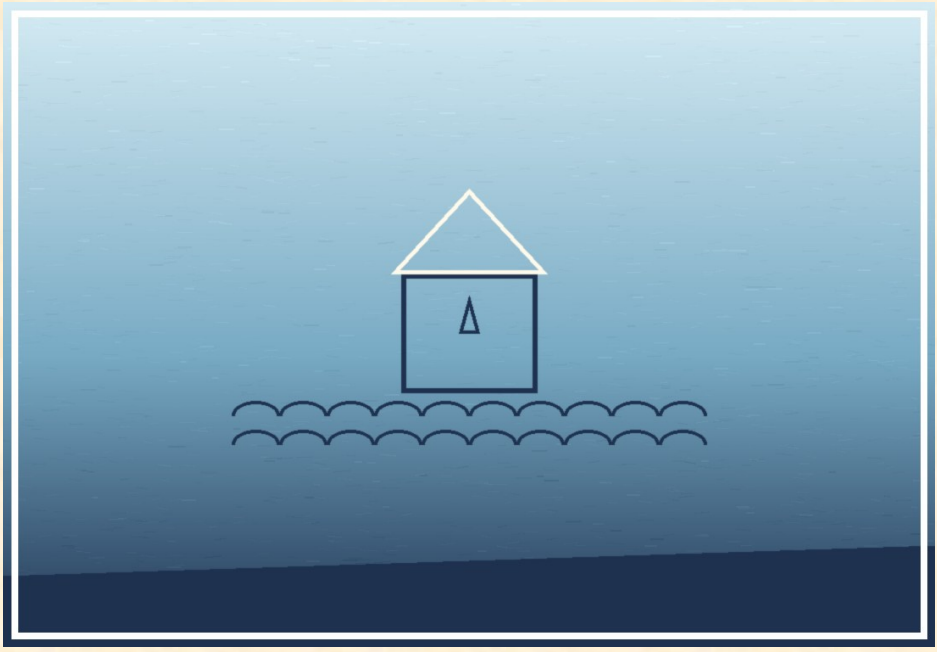

चित्र 23

समय बहैत गेल — कमलाक पानि जकाँ। अमरसिंह जाबत जीलाह, कमलाक कात आ मलाह टोलीक रखबारि करैत रहलाह। आ जखन हुनक देह-यात्रा पूरल, त' मलाह लोकनि हुनका बिसरलनि नहि — बिसरितथि कोना? जे प्राण हुनक लाज लेल जनमल छल!

मलाह लोकनि अमरसिंहक गहमर बनओलनि — कमला धारक कात। आ आइयो, एतेक पीढ़ी बीतला पर, ओतय पूजा होइत अछि। मलाह नाव खोलबासँ पहिने अमर बाबाक नाम लैत अछि; नव जाल पहिने गहमरपर छुआओल जाइत अछि।

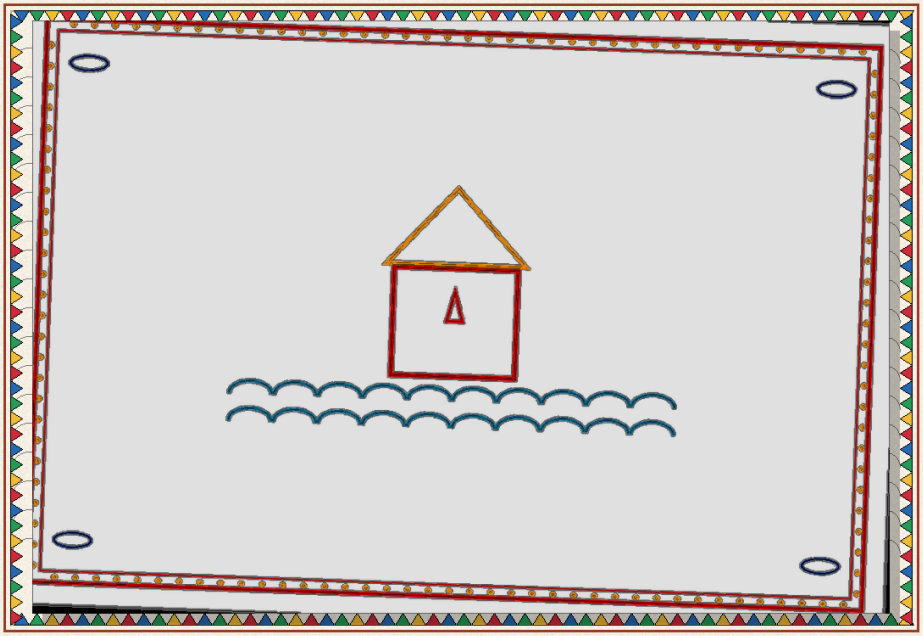

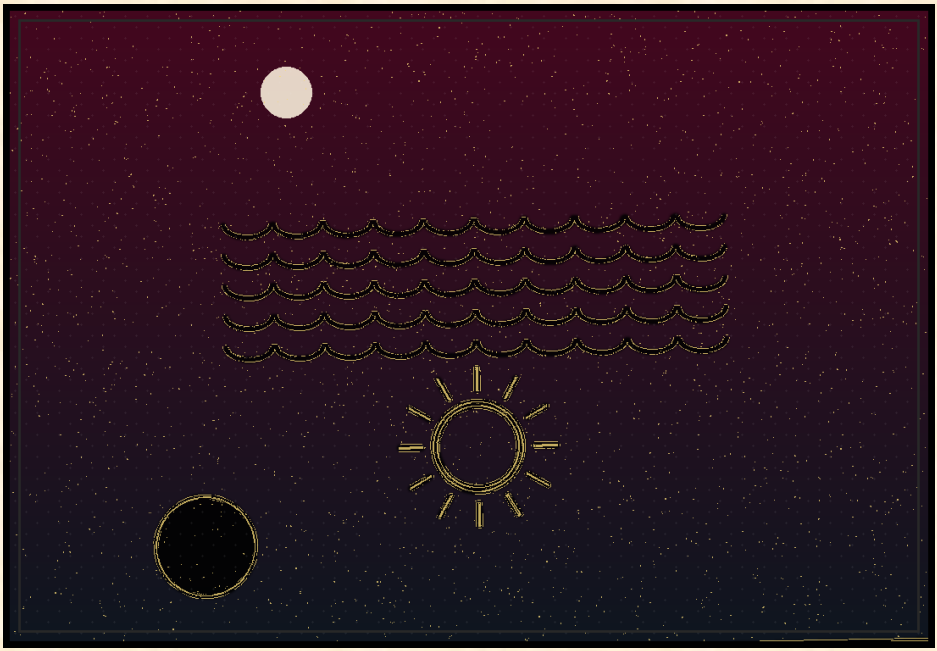

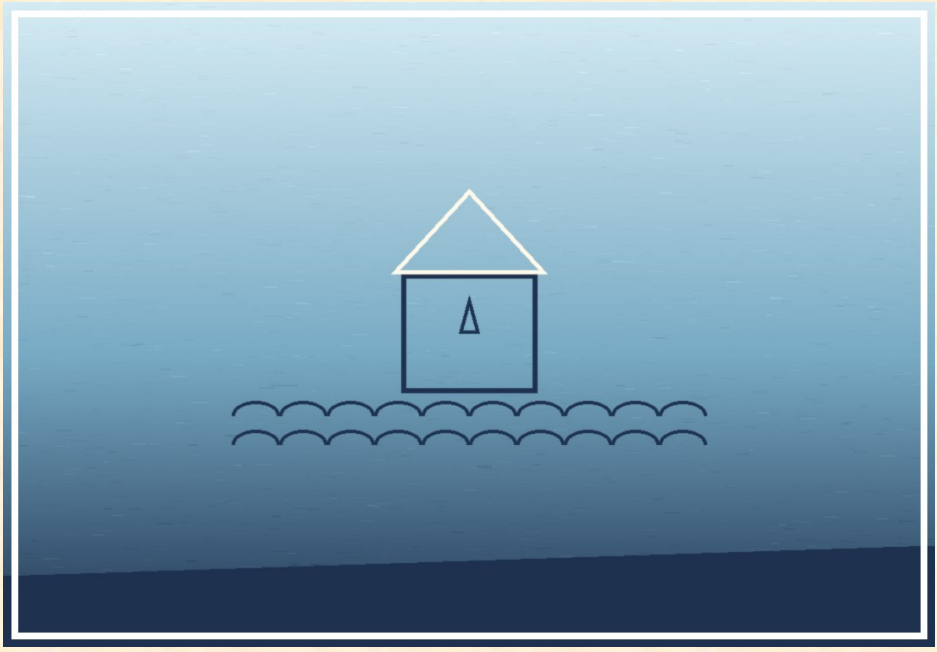

चित्र 24

आ कमला? कमला धारक प्रति लोक आइयो श्रद्धानवत अछि — ओ माए छलीह, माए छथि। बाढ़िमे लोक हुनकासँ क्षमा माँगैत अछि, सुखाड़मे पानि; आ सभ पावनिमे हुनक घाटपर दीप ओहिना जरैत अछि जेना ओहि दिन जरैत छल जहिया बैदलाक डंका नहि बाजल छल।

ई गाथा वीरगाथा थिक — मुदा एकर अन्तिम सीख तरुआरिक नहि, तराजूक थिक। रक्षा धरम थिक; मुदा रक्षाक क्रममे जे निर्दोष रक्त बहैत अछि, से गाथाकेँ सदिखन लेल उदास कऽ जाइत अछि। तेँ अमर बाबाक गहमरपर दीप जरबैत काल बूढ़ मलाह आइयो दूटा प्रार्थना करैत अछि — एक रक्षाक लेल, आ एक क्षमाक लेल।

समाप्त

VIDEHA: विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका: **ISSN 2229-547X:** www.videha.co.in

मोतीदाइ

गहिल माताक भगतिन — छह दिनक मातृत्वक करुण गाथा

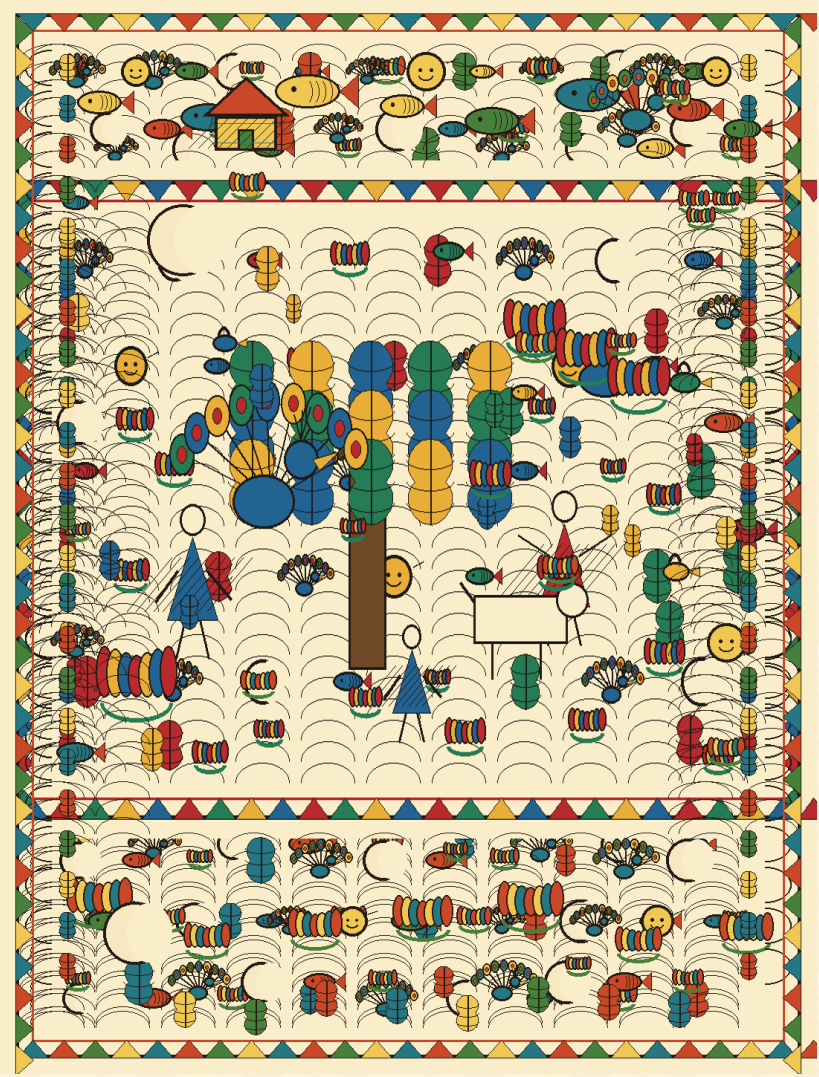

गजेन्द्र ठाकुर

© Gajendra Thakur/ Preeti Thakur; गजेन्द्र ठाकुर सम्पादक, विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका (since 2000) ISSN 2229-547X

ई पोथी गजेन्द्र ठाकुर समग्रक अन्तर्गत संकलित अछि।

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक ISBN:978-93-5890-210-5

DESIGNED BY: AUM GAJENDRA THAKUR

उपक्रम : उजैनी गाम

मिथिलामे एकटा गाम अछि — उजैनी। ओतय गहिल माताक गहमर अछि, आ गहमरक खिस्सामे एकटा नाम अछि जे सुनिते आँखि भीजि जाइत अछि — मोतीदाइ।

ई खिस्सा वरदानक थिक आ वेदनाक सेहो। ई खिस्सा कहैत अछि जे भक्ति की दिआ सकैत अछि — आ की नहि दिआ सकैत अछि; आ ई जे कखनो काल छह दिनक सुख जिनगी भरिक दुखक उत्तर बनि जाइत अछि।

अध्याय १ : गहिल माताक गाम

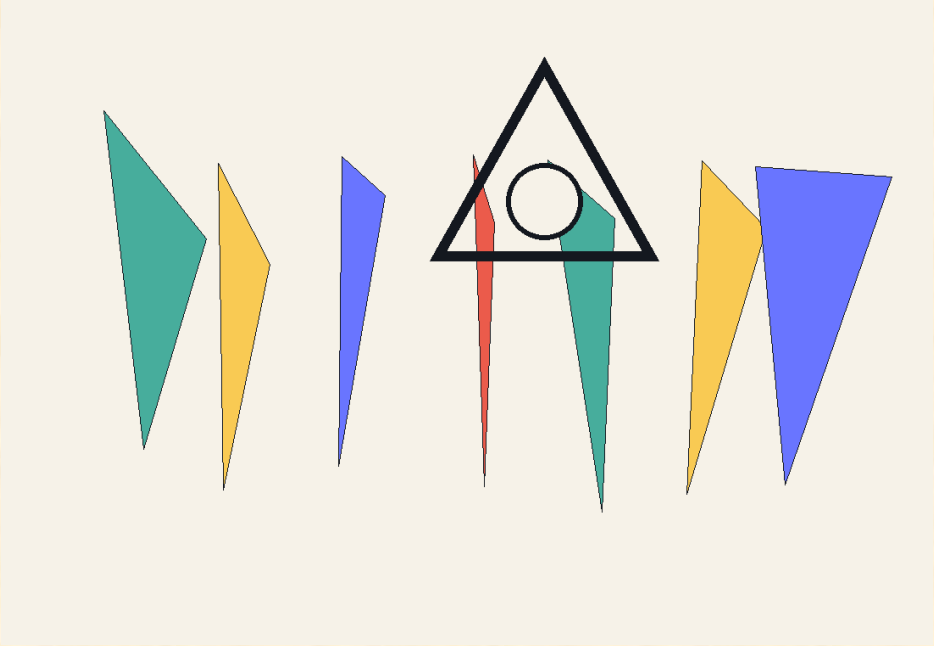

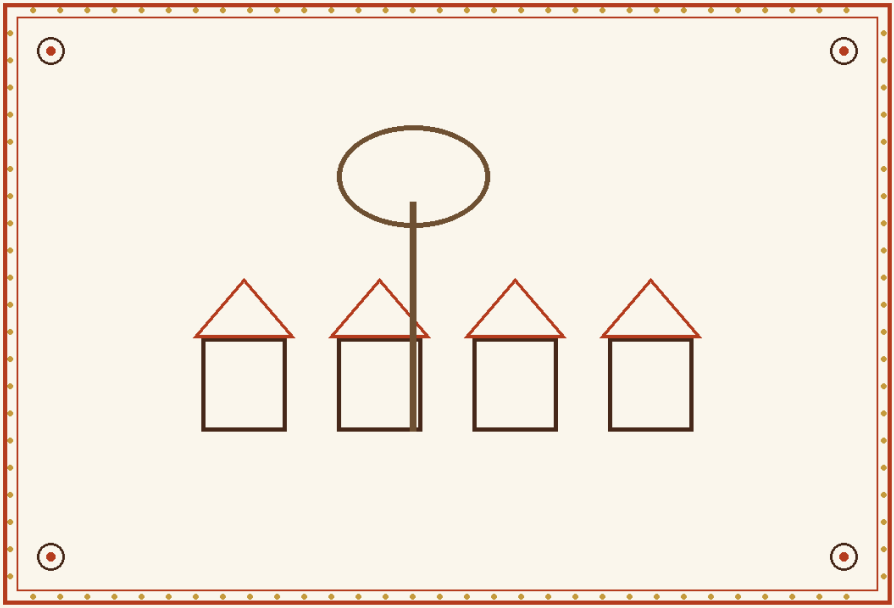

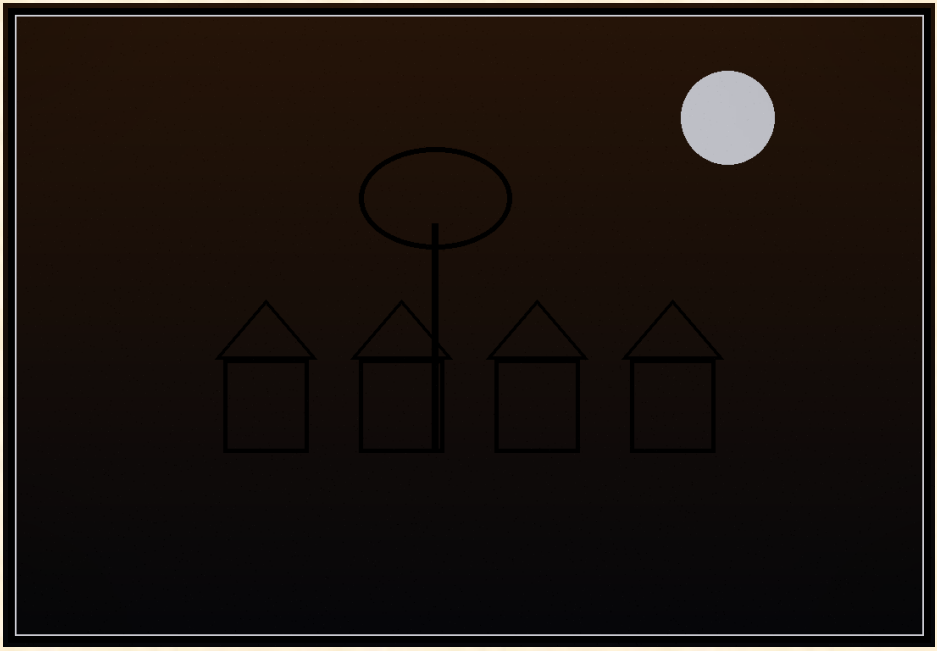

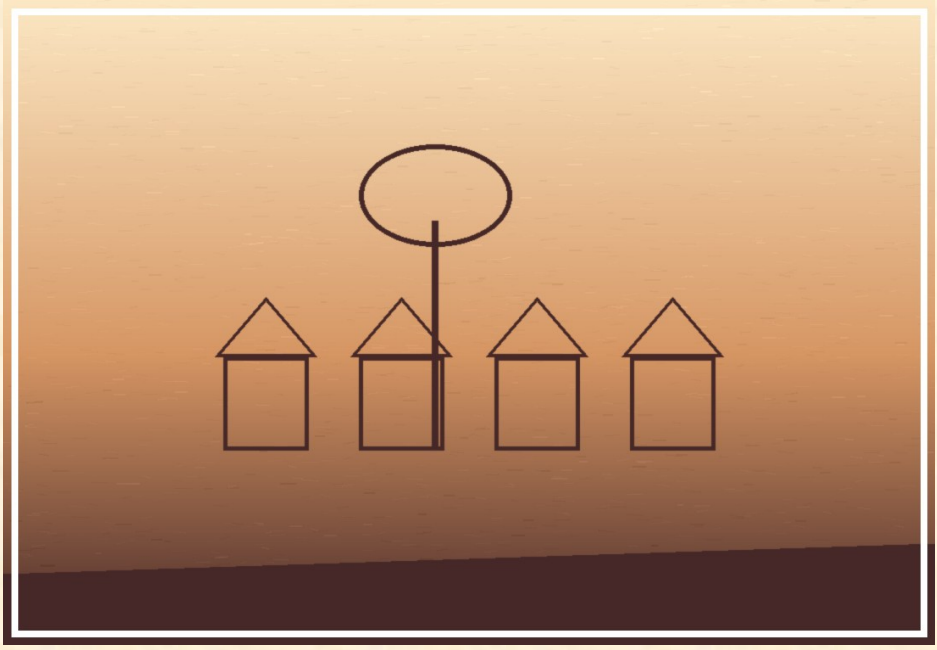

चित्र 1

उजैनी छोट गाम छल — मुदा ओकर पहिचान पैघ छल: गहिल माताक गहमर। माटिक पीड़ी, सिन्नुरसँ रंगल, नीमक गाछ तर। दूर-दूरसँ लोक ओतय माथ टेकए अबैत छल — पुत्र लेल, अन्न लेल, आरोग्य लेल।

गहिल माता उग्र नहि, ममतामयी देवी मानल जाइत छलीह। लोक कहए — 'माता ककरो खाली हाथ नहि घुरबैत छथिन्ह।' आ एहि विश्वासक सभसँ पैघ खाम्ह छलीह एकटा साधारण स्त्री — मोतीदाइ।

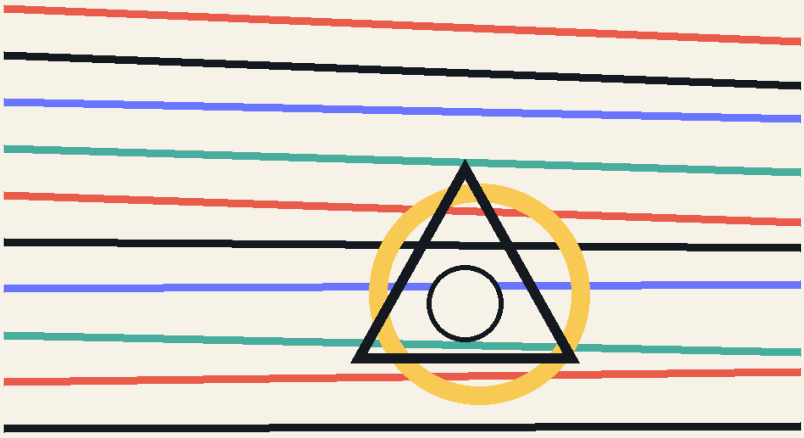

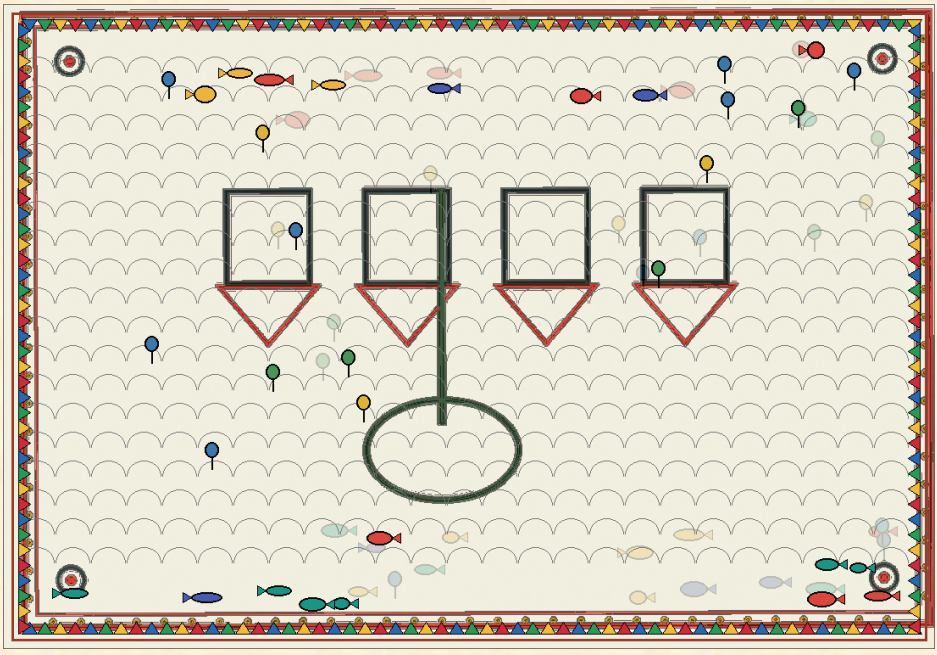

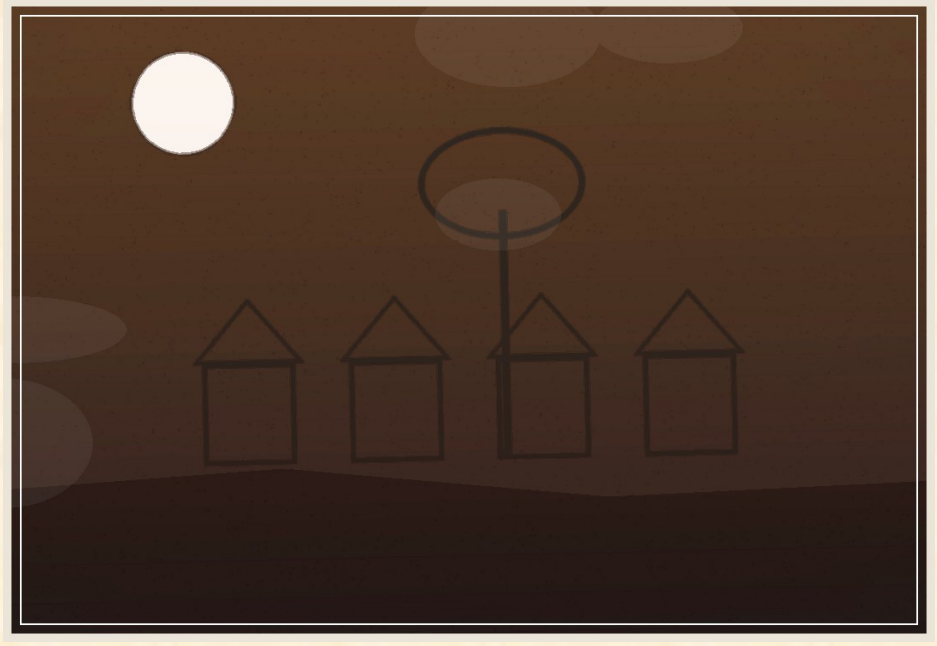

चित्र 2

गाममे टोले-टोल छल — गुअरटोली, रजकटोली, आ आनो। सभक अपन-अपन काज, अपन-अपन घाट। मुदा गहमरपर सभ एक छल — कमसँ कम एना बुझाइत छल। बुझाएब आ होएब — एहि दुनूक बीचक दूरी एहि खिस्सामे आगाँ चलि कऽ नापल जाएत।

नीमक गाछ तरक ओहि पीड़ीपर सभ भोर सभसँ पहिने जे दीप जरैत छल, से एक्कहि हाथक जराओल — मोतीदाइक हाथक।

अध्याय २ : भगतिन मोतीदाइ

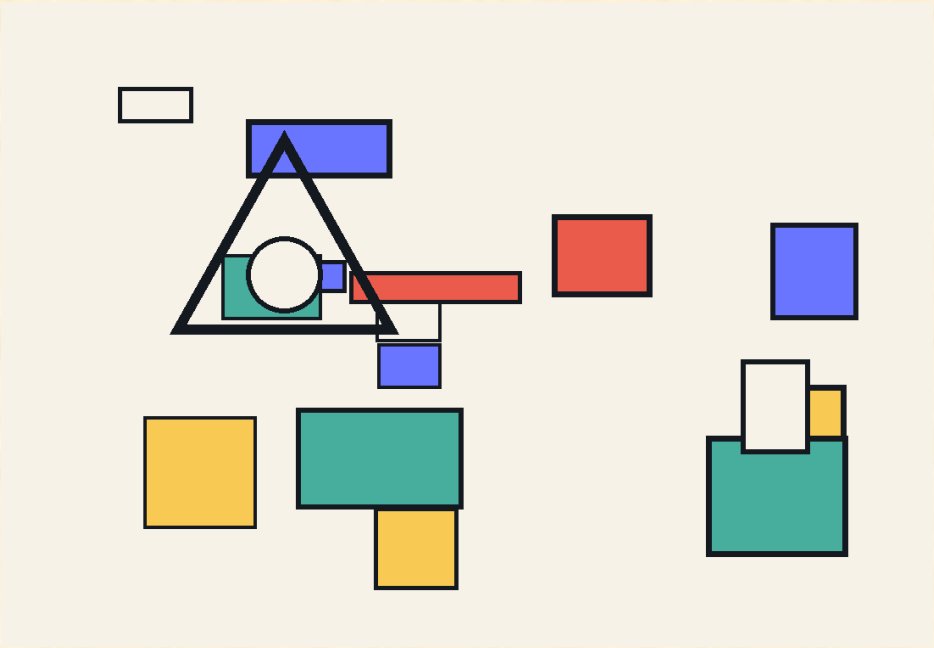

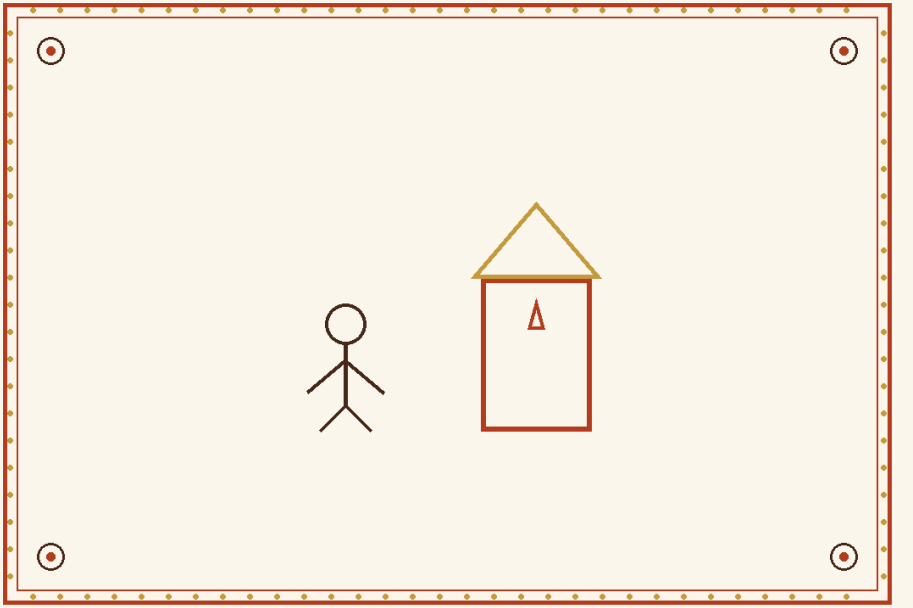

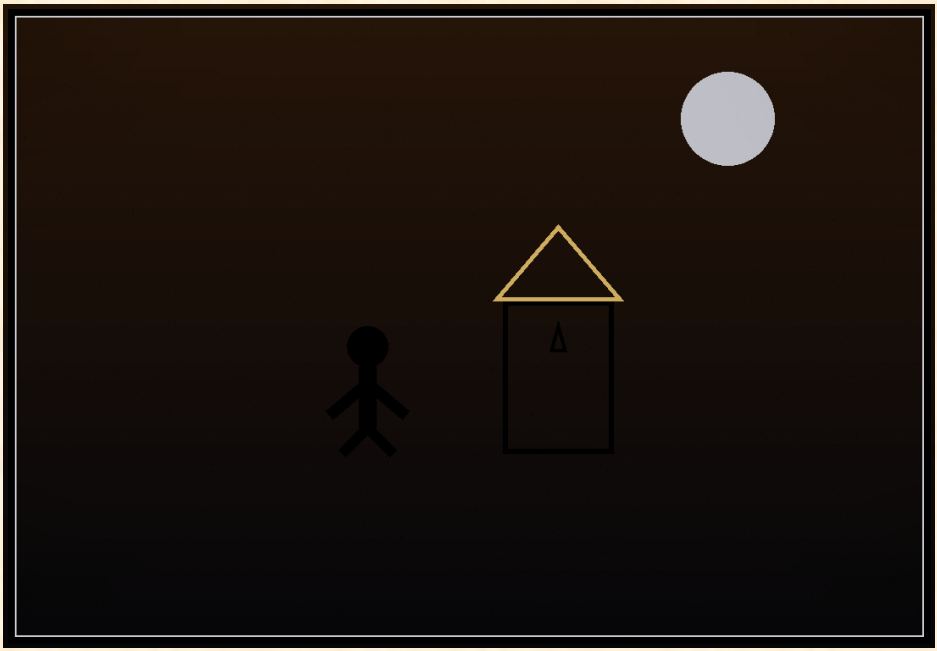

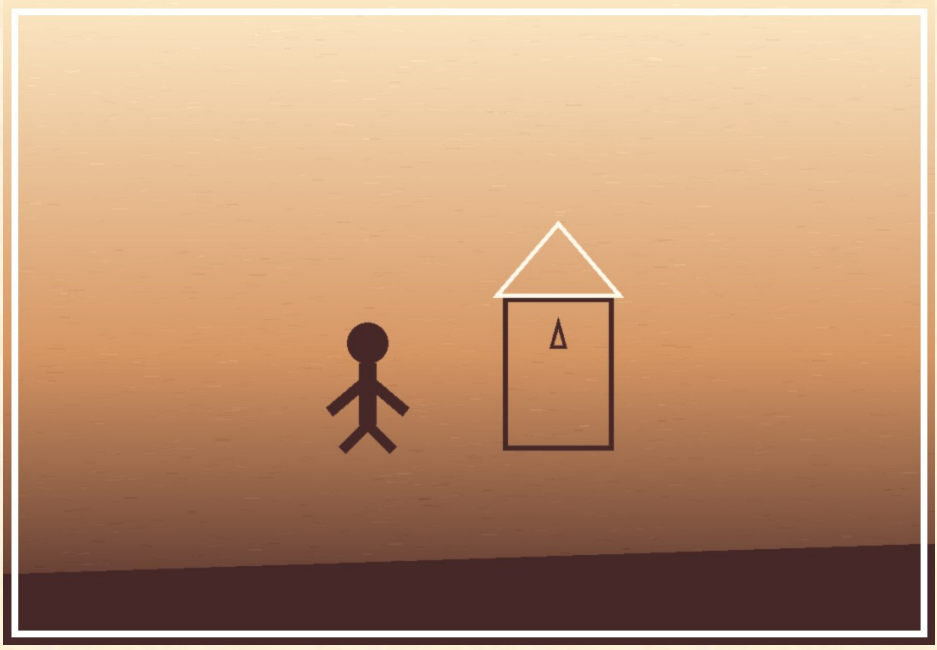

चित्र 3

मोतीदाइ जातिक रजक छलीह — कपड़ा खीचनिहारि। भोरे घाटपर कपड़ाक ढेरी, दुपहरमे सुखेनाइ, साँझमे घर-घर पहुँचेनाइ — देह लेल एतबे जिनगी छल। मुदा प्राण लेल? प्राण लेल छल गहिल माताक सेवा।

गहमरक बहारब, पीड़ीक लीपब, दीप-धूप, फूल-अक्षत — ई सभ मोतीदाइक नित्य-कर्म छल। लोक हुनका 'भगतिन' कहैत छल, आ ई उपाधि हुनका कोनो सिंहासनसँ पैघ लगैत छलनि।

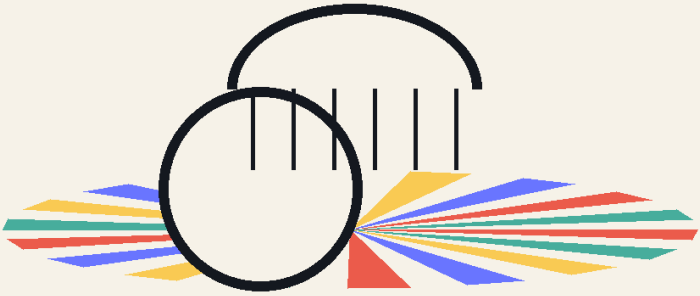

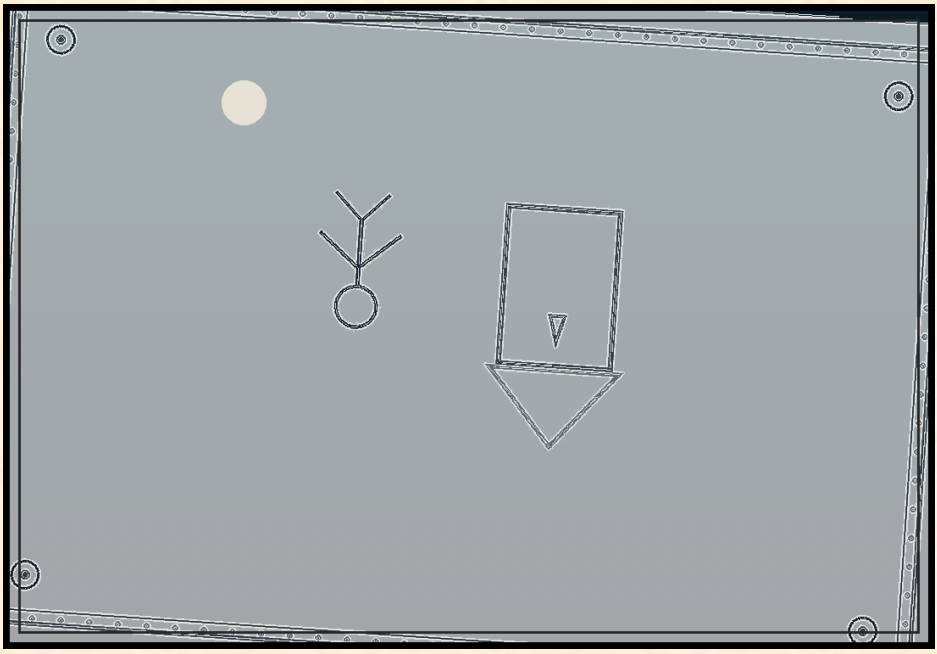

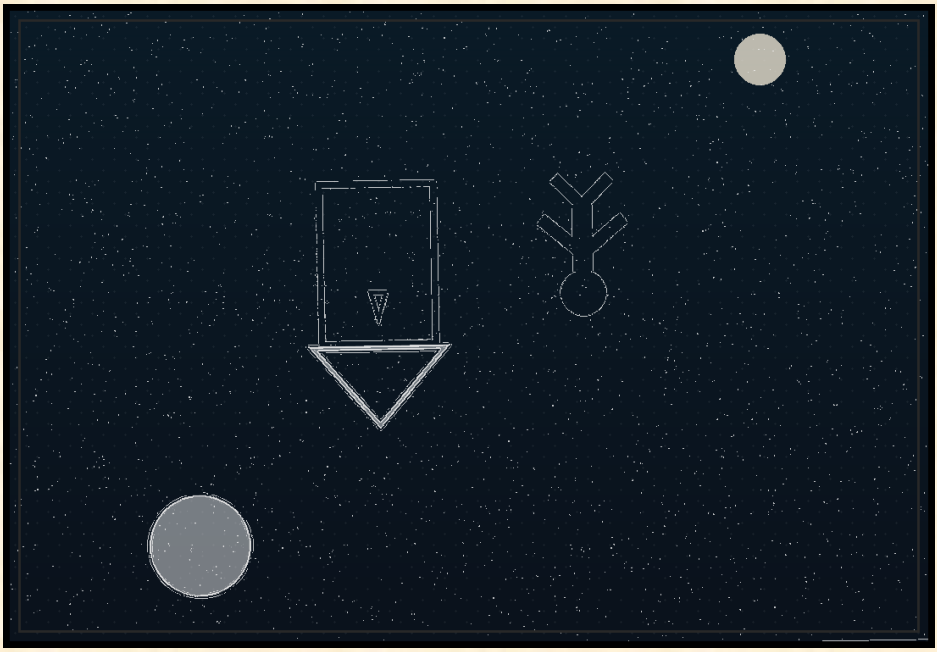

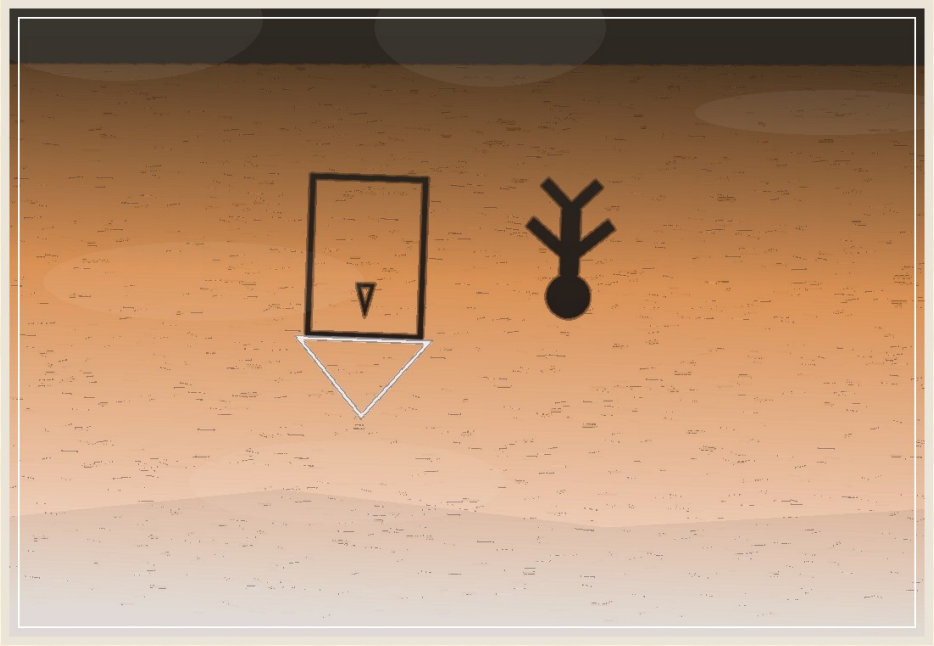

चित्र 4

मुदा भगतिनक अपन घरमे एकटा कोठरी खाली छल — कोरा। बियाहक बरखो बीति गेल, सन्तान नहि भेलनि। ओ दुख मोतीदाइ ककरोसँ नहि कहथि — कहितथि ककरा? माता त' सभटा देखिते छथिन्ह — ओ सोचथि, आ दीपक बाती ठीक कऽ दैथि।

गाममे मुदा दोसराक खाली कोरा गनबाक रेवाज पुरान छै। मोतीदाइक दुखकेँ गामक जीह नाम दऽ चुकल छल — आ ओ नाम एक दिन हुनका मुँहपर फेकल गेल।

अध्याय ३ : गोबर पाथैत साँझ

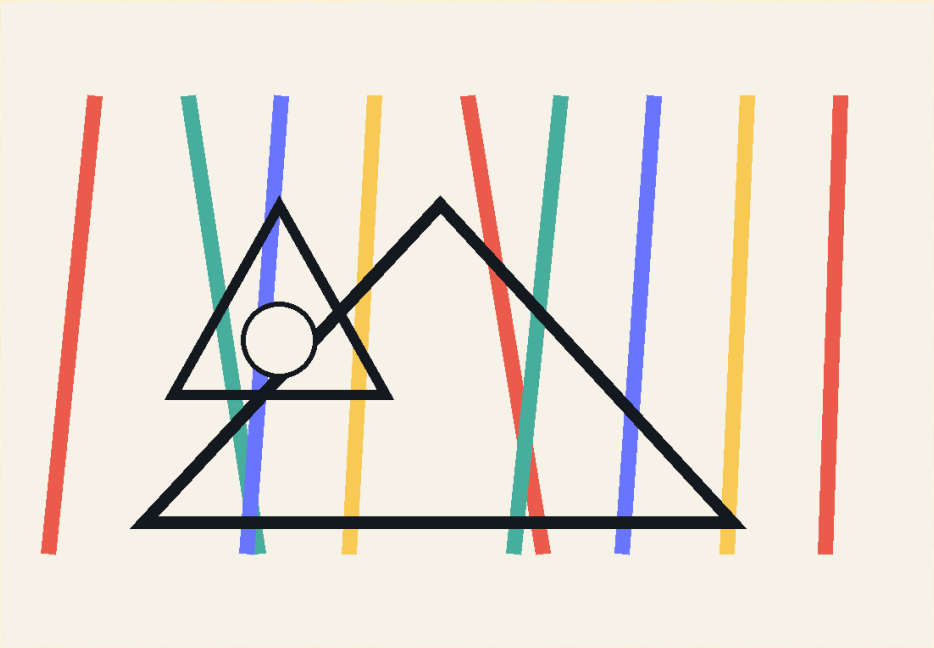

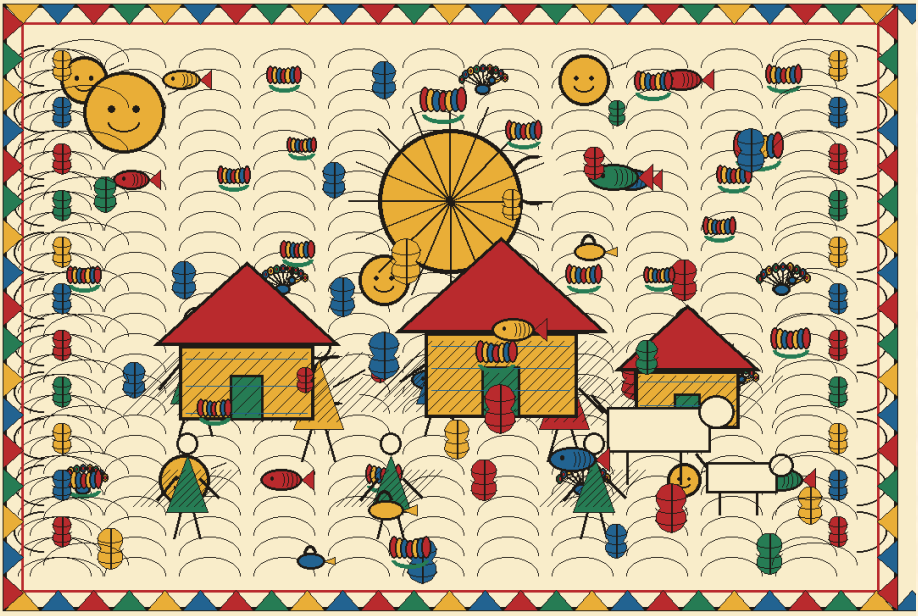

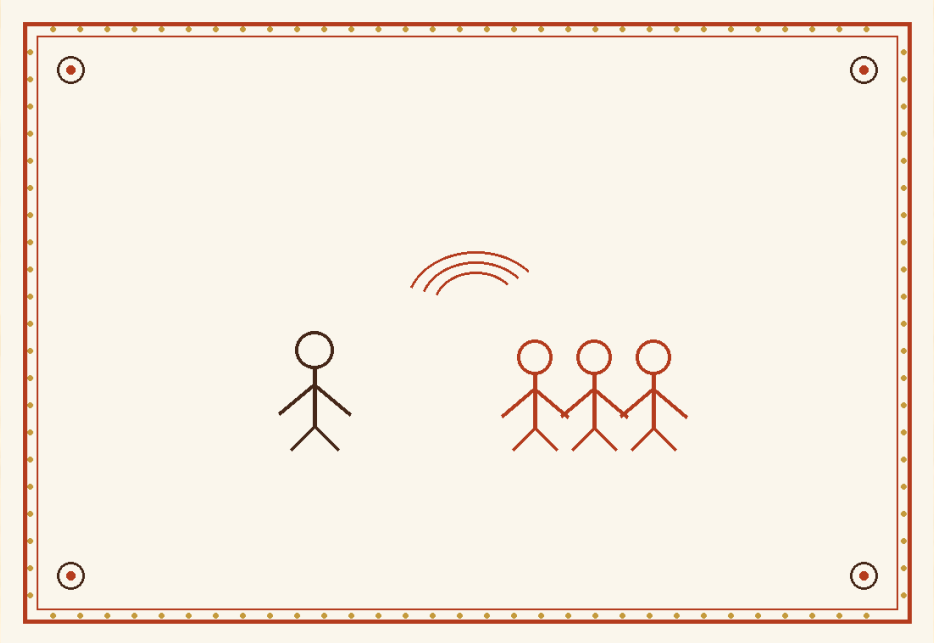

चित्र 5

एक दिनक गप। मोतीदाइ अपन बाड़ीमे गोबर पाथि रहल छलीह — साँझक बेर, हाथ सनल, माथ झुकल, काजमे लीन।

तखने गुअरटोलीक जनानी सभ ओम्हरसँ निकललि — माल-जाल हँकने। मोतीदाइकेँ देखिते हुनका सभक डेग रुकल, आ जीह चलल।

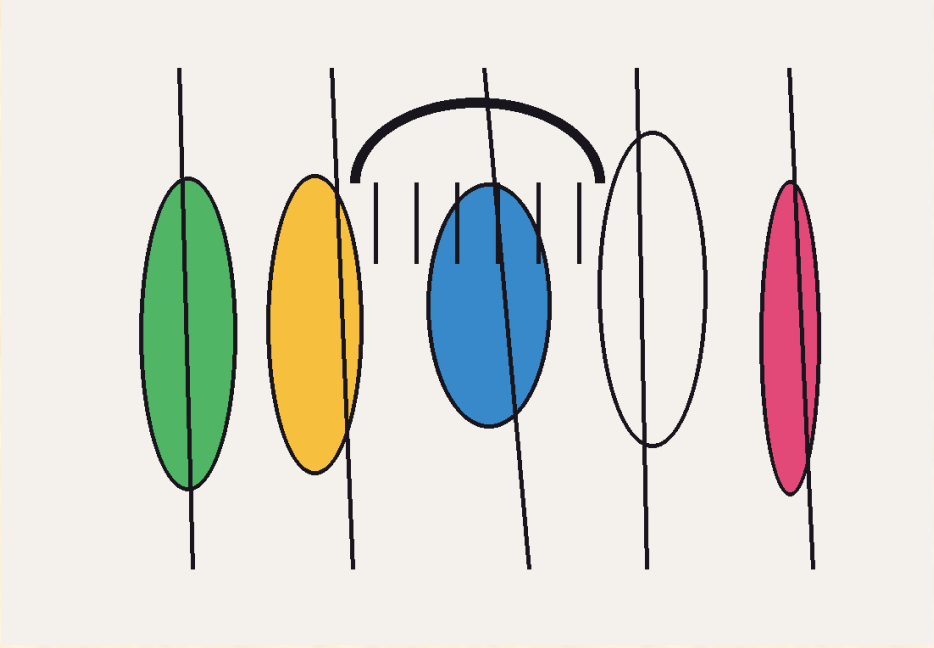

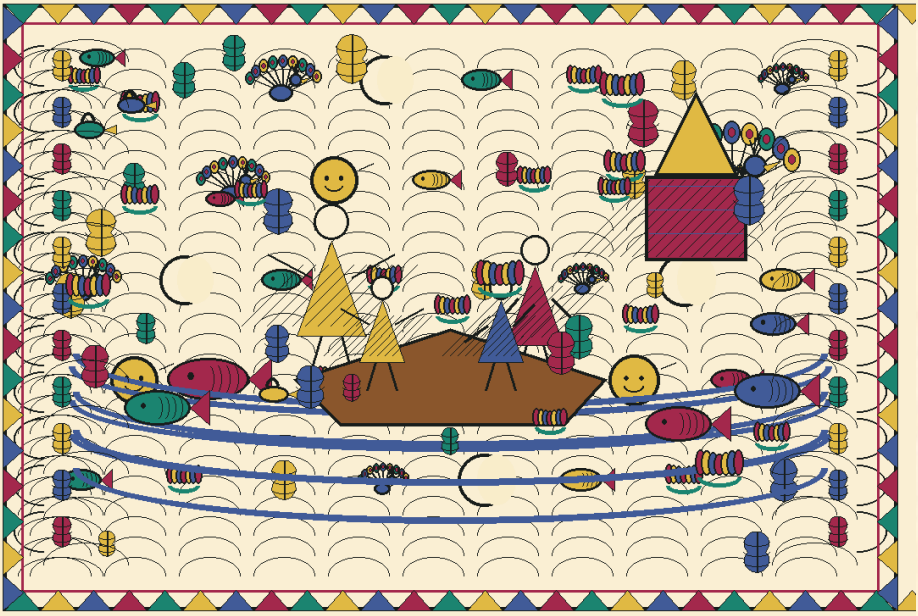

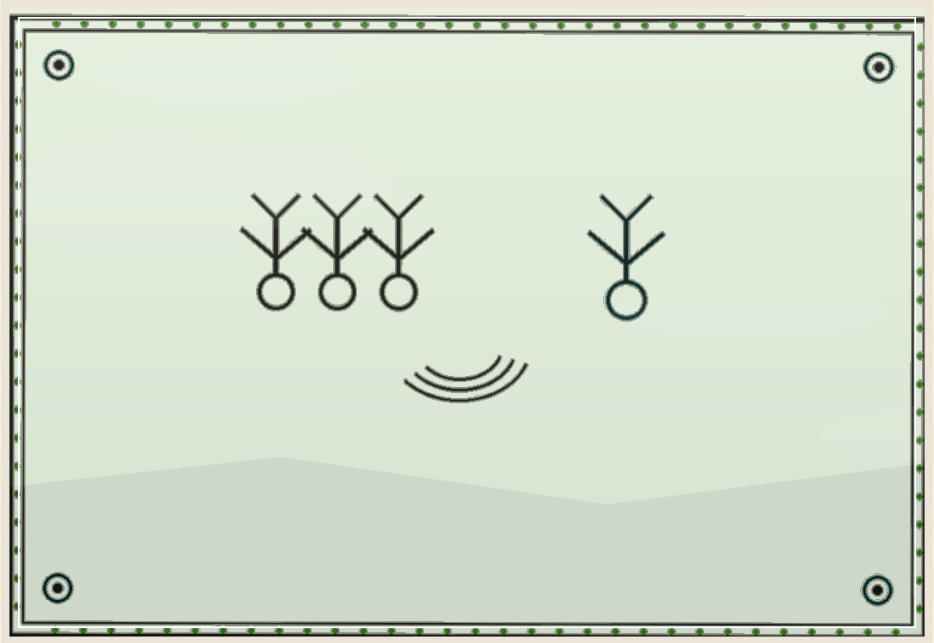

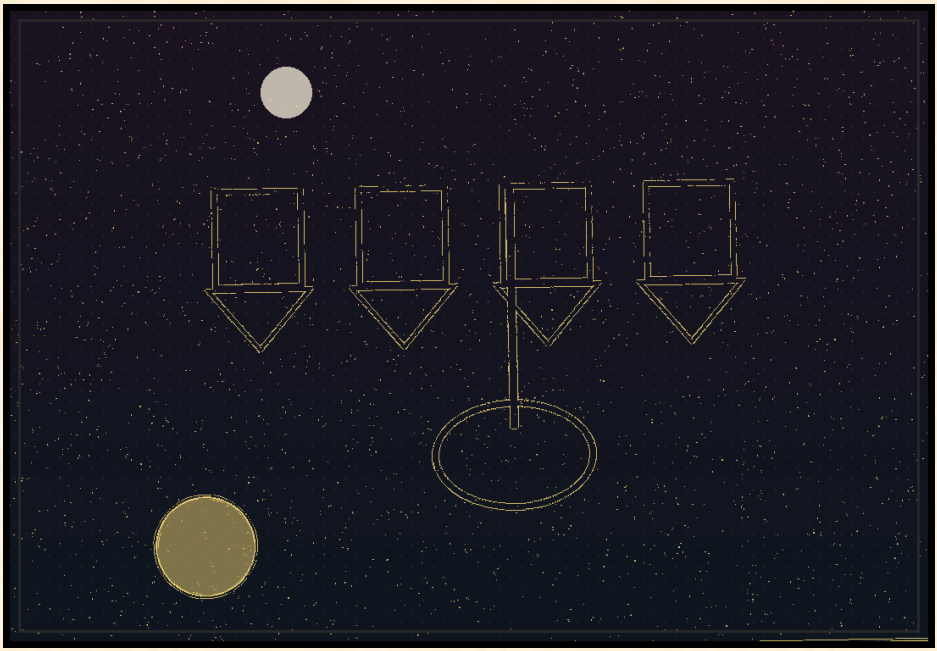

चित्र 6

'अपन माल-जाल भगाउ! नहि त' सभटा माल-जाल बिसखि जाएत, बाँझ भऽ जाएत — जेना ई मोतीदाइ अछि!'

शब्द — आ शब्दोमे ई शब्द। बाँझ। एतबे नहि — मोतीदाइक छाया धरि अशुभ ठहराओल गेल: जकरा देखने माल-जाल बिसखि जाएत! गोबरमे सनल हुनक हाथ ओतहि थम्हि गेल। जनानी सभ हँसैत आगाँ बढ़ि गेलि, आ पाछाँ रहि गेलीह मोतीदाइ — आ हुनक भीतर टूटैत किछु, जकर आवाज ककरो नहि सुनाएल।

अध्याय ४ : बाँझ शब्दक भार

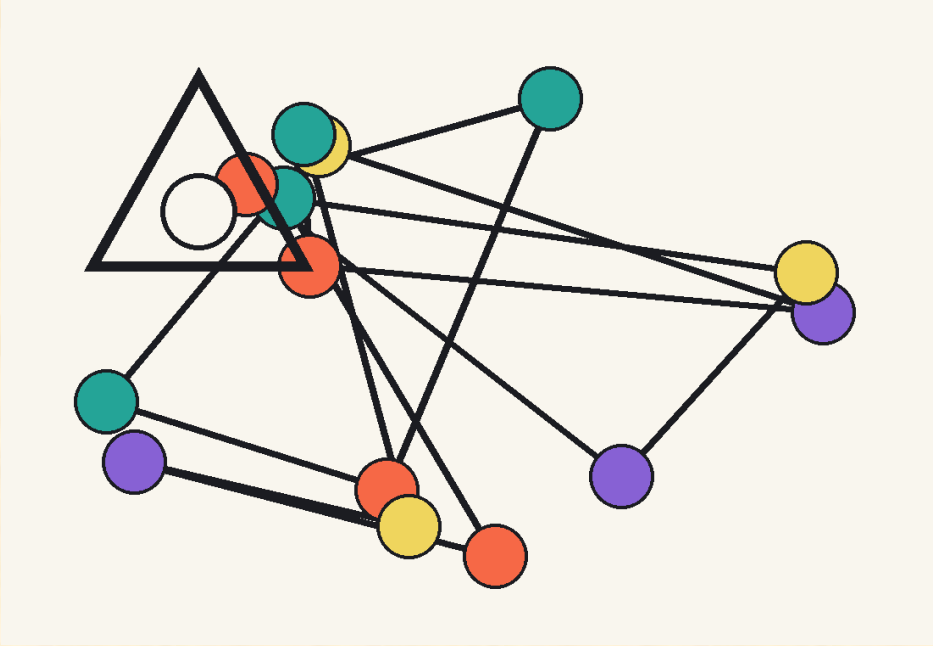

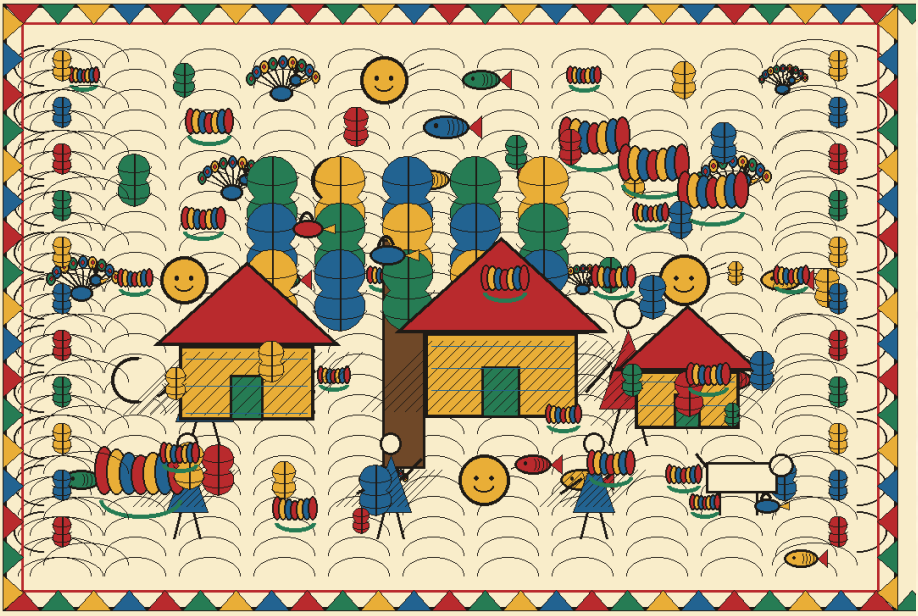

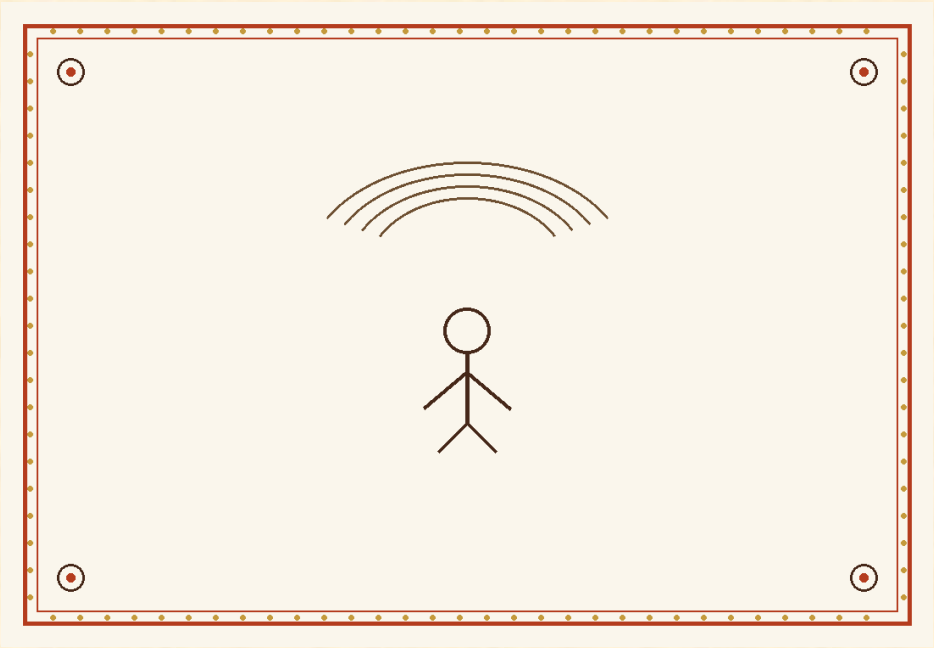

चित्र 7

मोतीदाइ दुखसँ भरि गेलीह। दुख नव नहि छल — नव छल ओकर सार्वजनिक घोषणा। एक बात अछि भीतरे-भीतर कानब, आ दोसर बात अछि गामक बाटपर अशुभ कहाएब।

ओहि राति हुनका निन्न नहि भेलनि। कानमे बेर-बेर वैह वाक्य बाजए — 'जेना ई मोतीदाइ अछि...' त' की हुनक भरि जिनगीक सेवाक यएह मोल? माताक पीड़ी लीपैत-लीपैत हाथक रेखा घसा गेल, आ रेखामे सन्तानक नाम तइयो नहि लिखाएल?

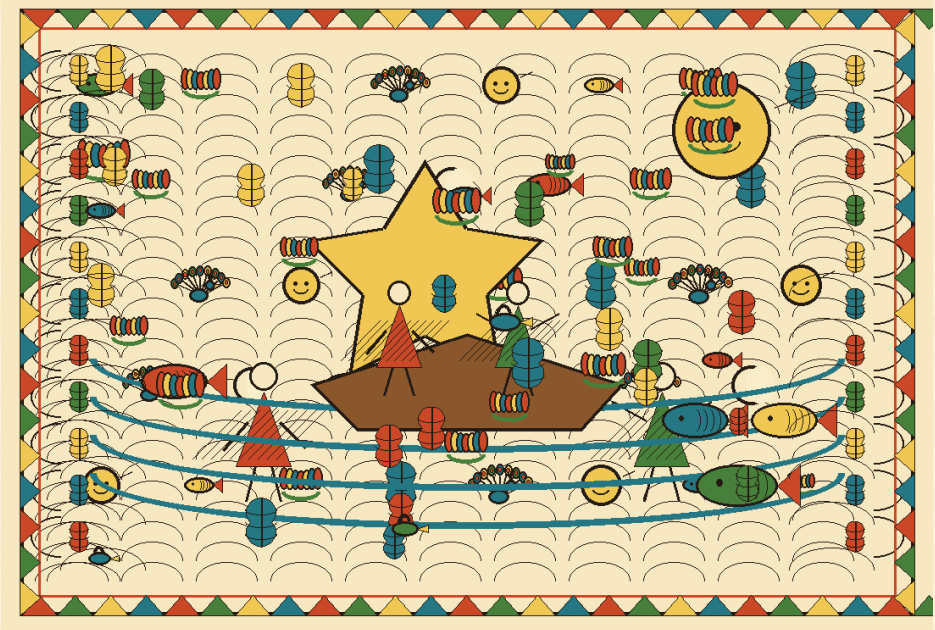

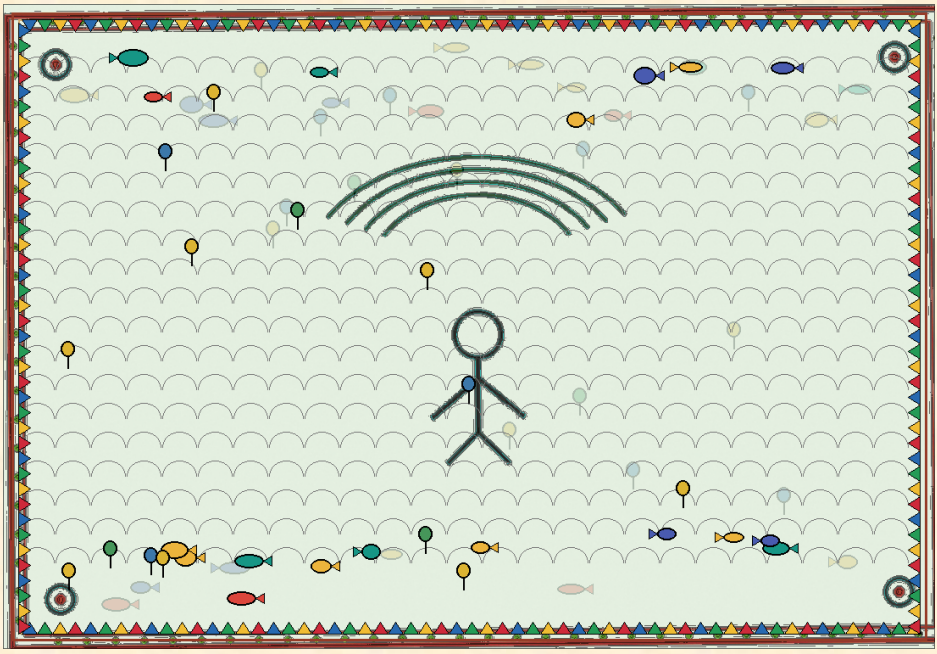

चित्र 8

भोर होइते ओ उठलीह — मुदा आइ घाट दिस नहि, गहमर दिस। आइ दीप-धूपक बेर नहि छल। आइ हिसाबक बेर छल — भक्त आ भगवतीक बीचक सोझ हिसाब।

जे स्त्री बरखोसँ खाली माँथ टेकैत छलि, से आइ पहिल बेर माँगए जा रहल छलि। आ भक्तिक खिस्साक सभ गवाह अछि — जहिया साँच भगत माँगपर उतरि अबैत अछि, तहिया देवतोकेँ उत्तर देबए पड़ैत छनि।

अध्याय ५ : पीड़ी खोदब

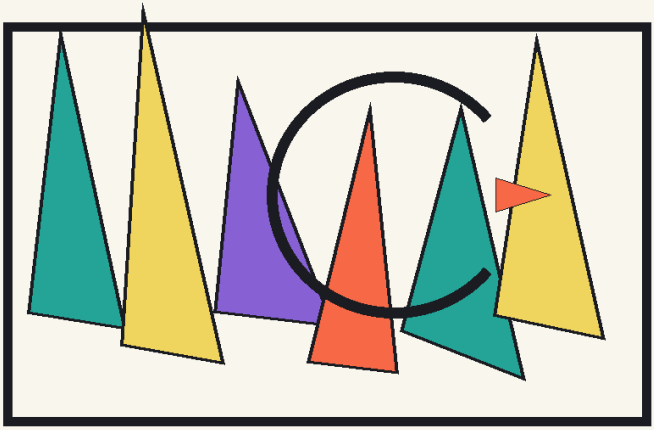

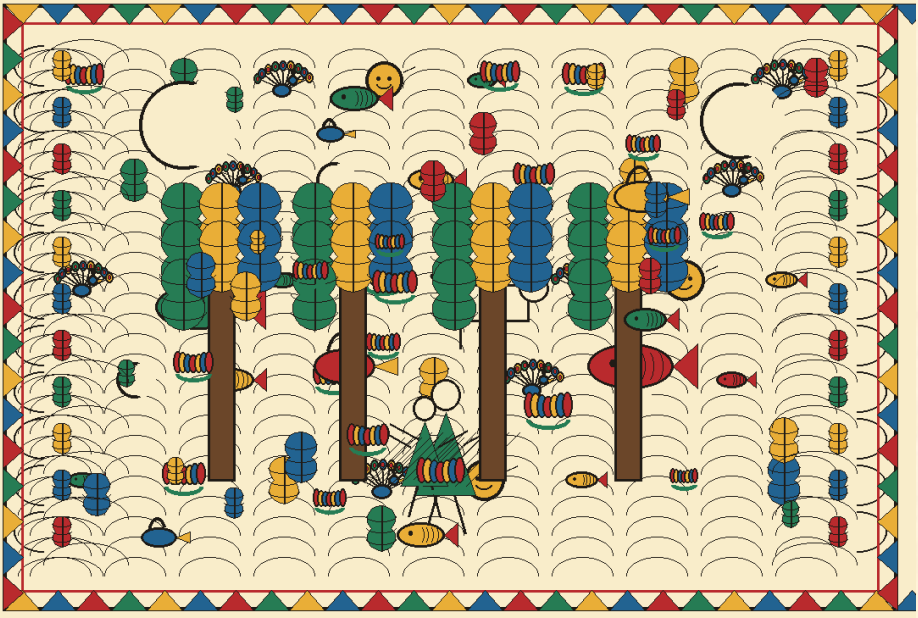

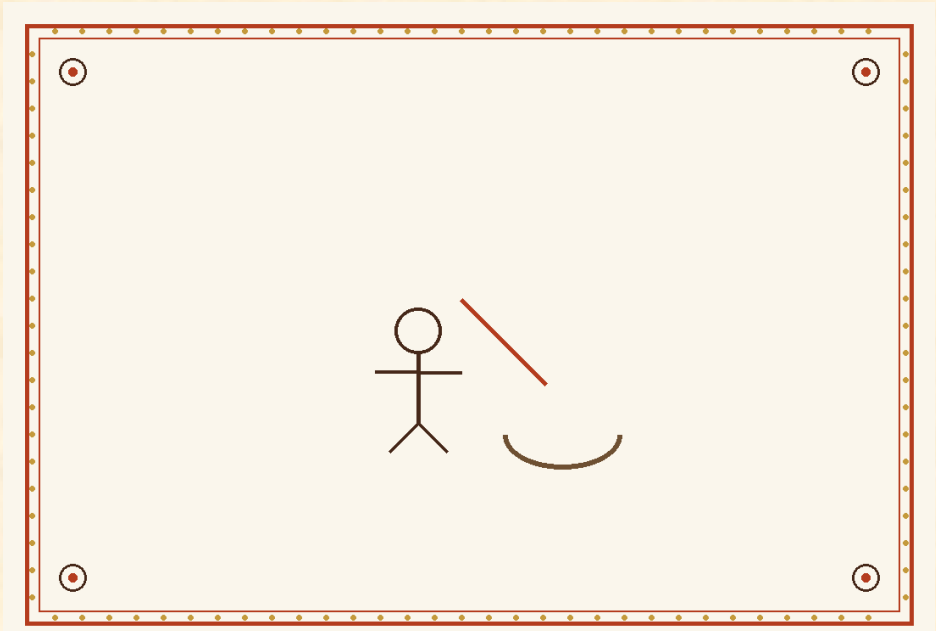

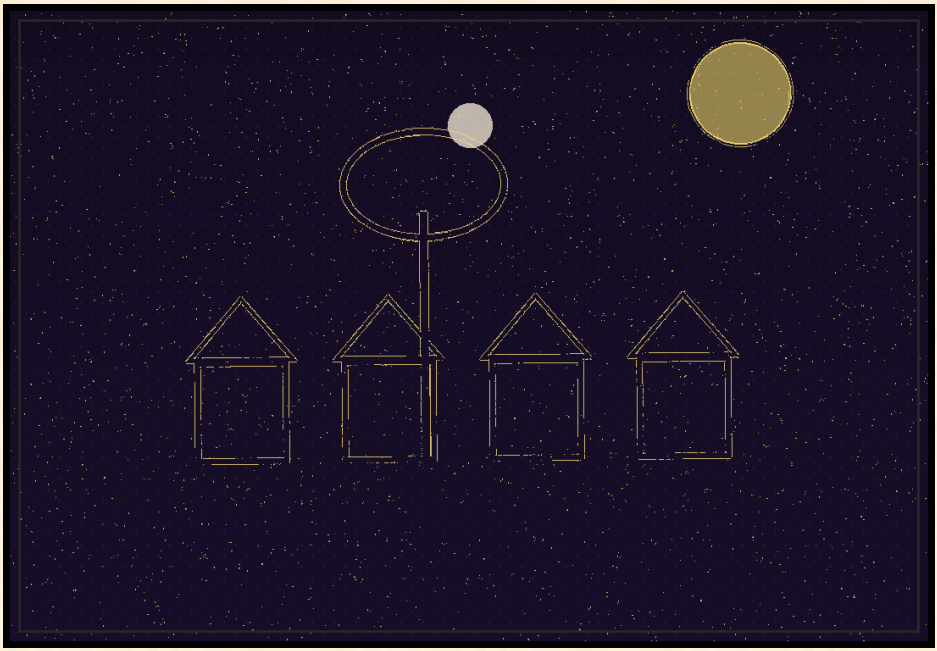

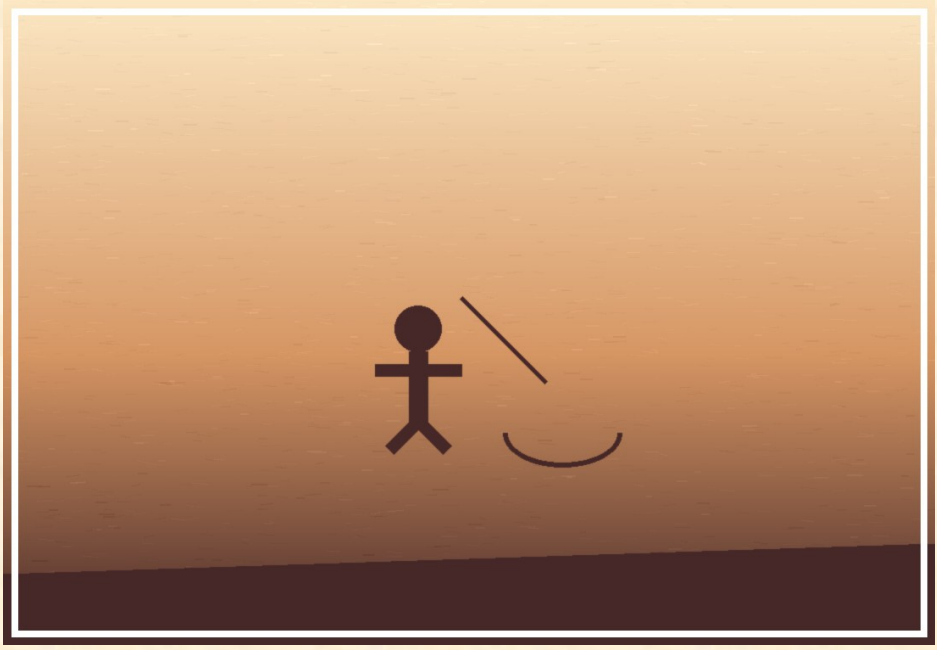

चित्र 9

गहमर पहुँचि मोतीदाइ ने दीप जरओलनि, ने फूल चढ़ओलनि। ओ सोझे पीड़ी खोदए लगलीह — अपने हाथे, जाहि हाथे बरखोसँ ओकरा लीपने छलीह।

ई विद्रोह नहि छल — ई भक्तिक अन्तिम भाषा छल। जेना बच्चा माएक आँचर घीचैत अछि — 'उत्तर दैह, नहि त' आँचरे नहि छोड़बौ।' मोतीदाइक हर कोड़ाइमे एक्कहि पुकार छल: 'प्रकट होउ माता! आइ हमरा उत्तर चाही!'

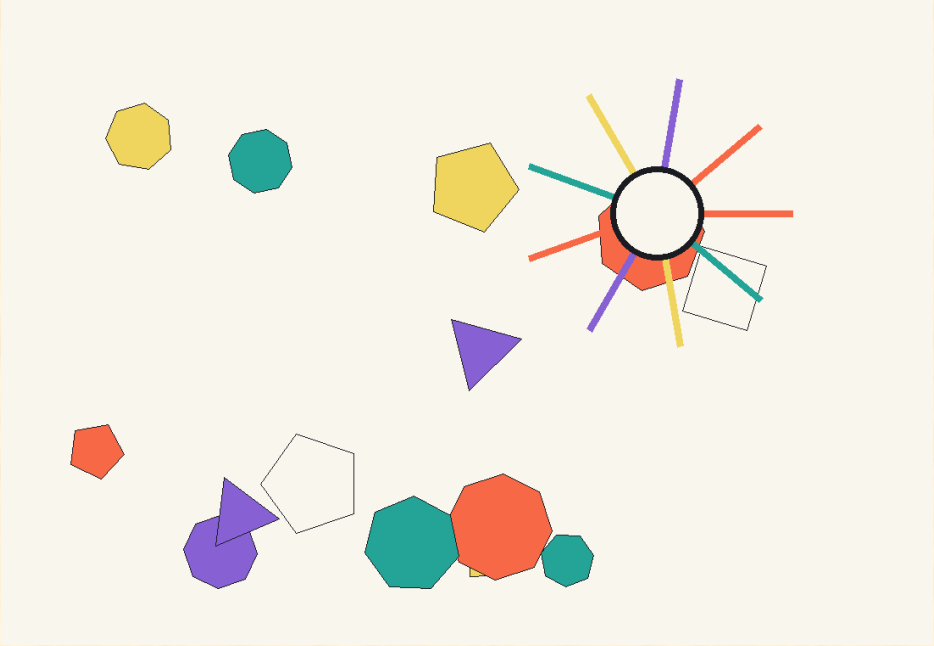

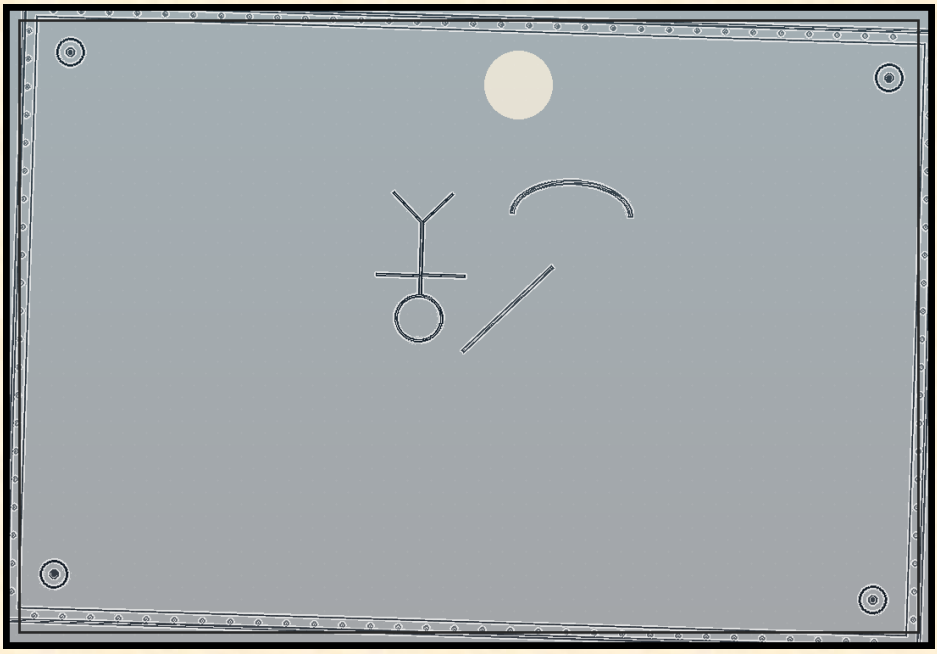

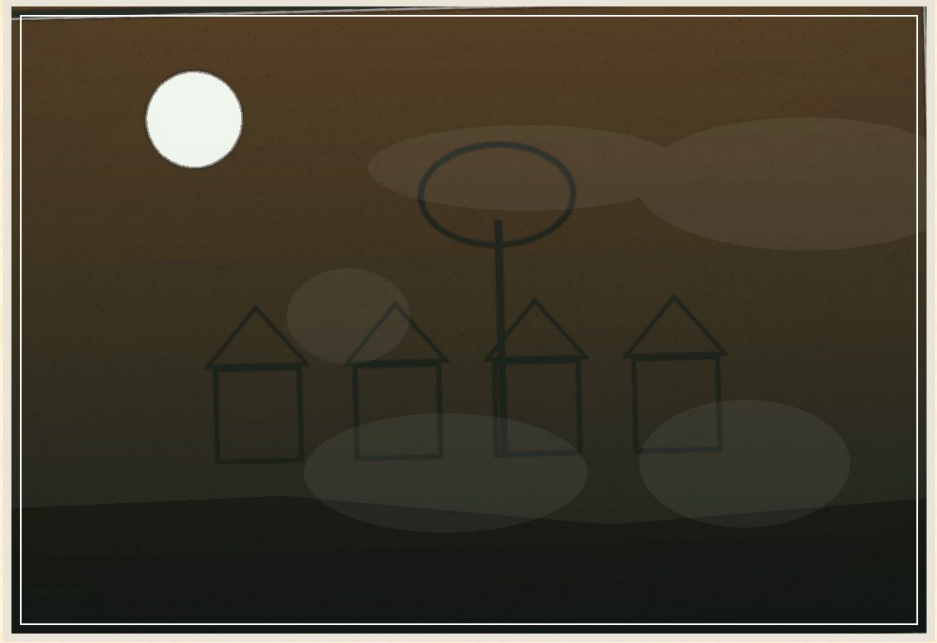

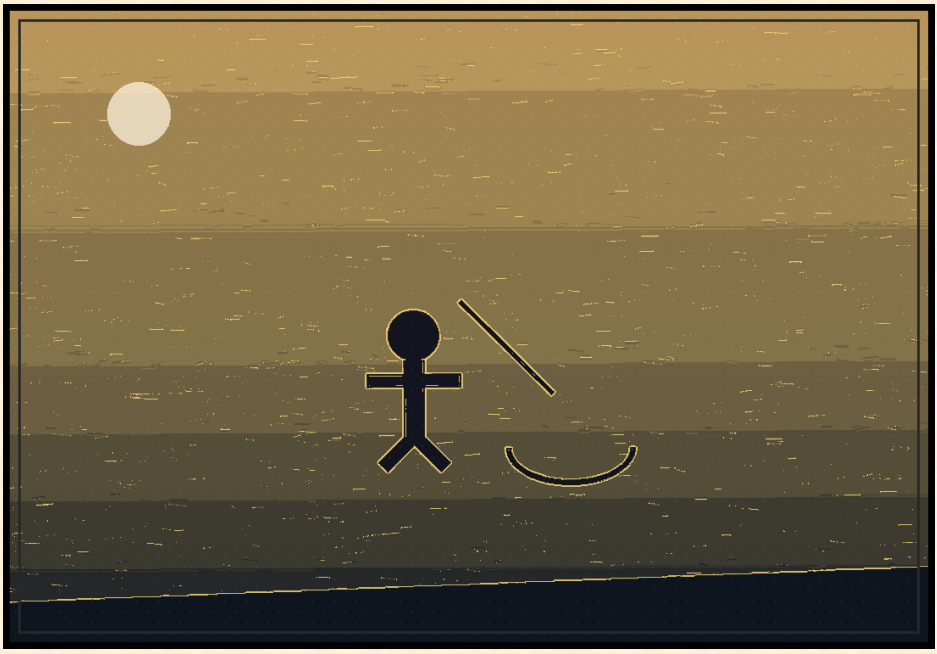

चित्र 10

गामक लोक जुमि गेल — केओ रोकए चाहलक, केओ डरे दूर ठाढ़। 'बताहि भऽ गेलीह भगतिन!' — मुदा मोतीदाइक हाथ नहि रुकल। आँखिसँ नोर आ माथसँ घाम एक्कहि संग पीड़ीक माटिपर खसैत छल।

आ तखन — नीमक पात बिनु बसातक डोलल, गहमरक हवा भारी भेल, आ पीड़ीक माटिसँ इजोत फूटल। गहिल माता प्रकट भेलीह — अपन भगतिनक आगाँ, जकर हठ आब हुनको नहि टारल भेलनि।

अध्याय ६ : माताक वचन

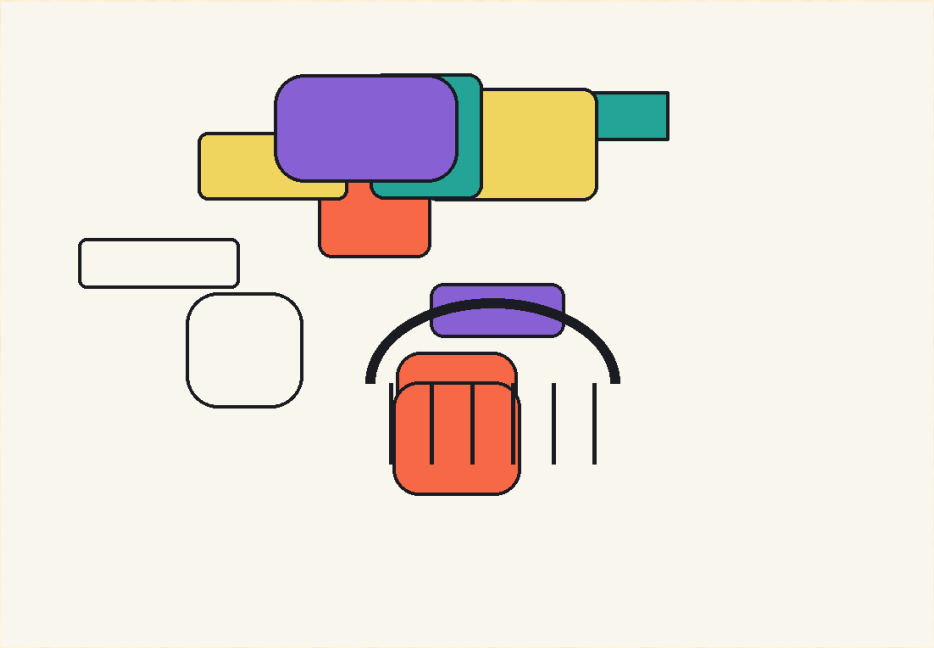

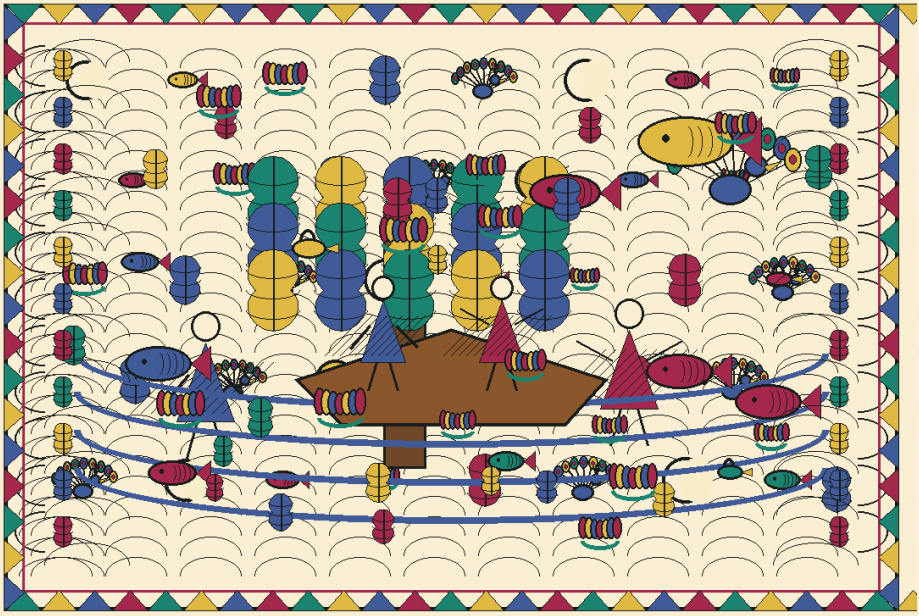

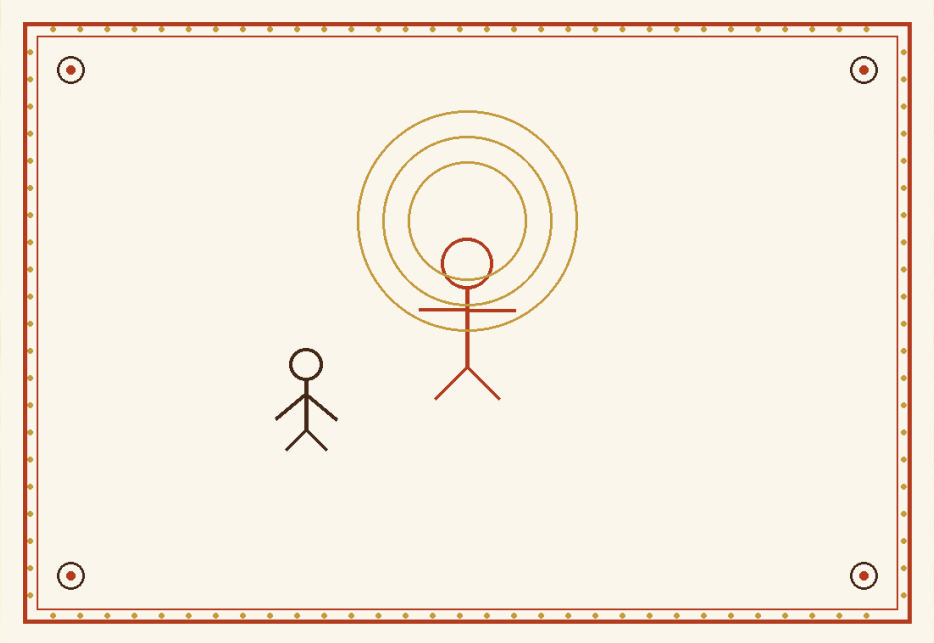

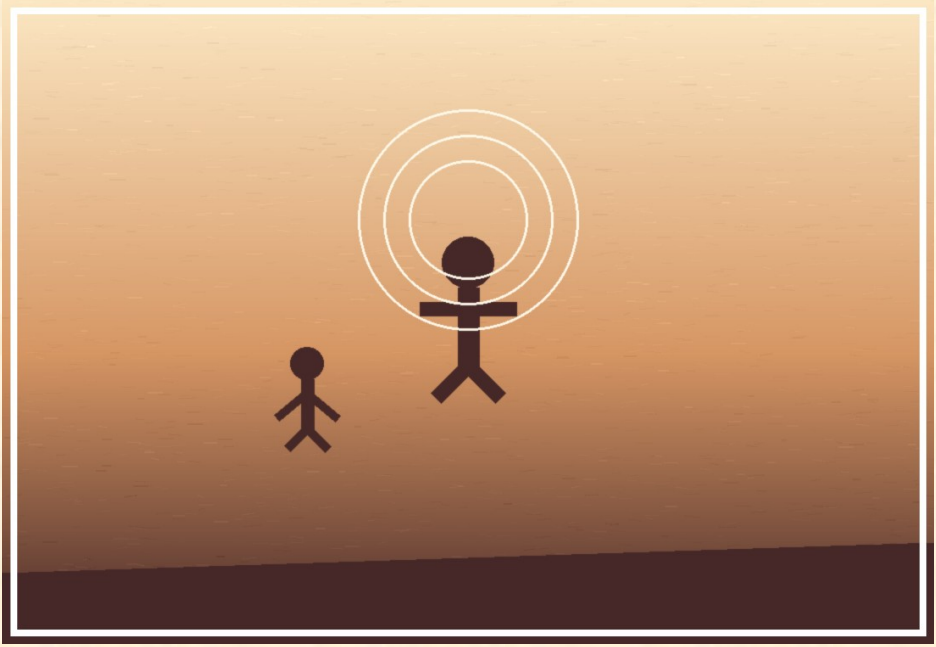

चित्र 11

'की भेलौ मोती?' — माताक स्वरमे तामस नहि, ममता छल। आ ममताक आगाँ मोतीदाइक सभटा बान्ह टूटि गेल। गोबर-साँझक ओल सन बोल, बाँझक बोली, बिसखबाक लांछन — सभटा कहि गेलीह, आ कहैत-कहैत माताक पीड़ी पकड़ि कानि पड़लीह।

'हमर सेवामे कोन कमी रहल माता, जे हमर कोरा खाली रहल? आ खाली रहल त' रहए — मुदा हमर छाहकेँ अशुभ किए कहल गेल?'

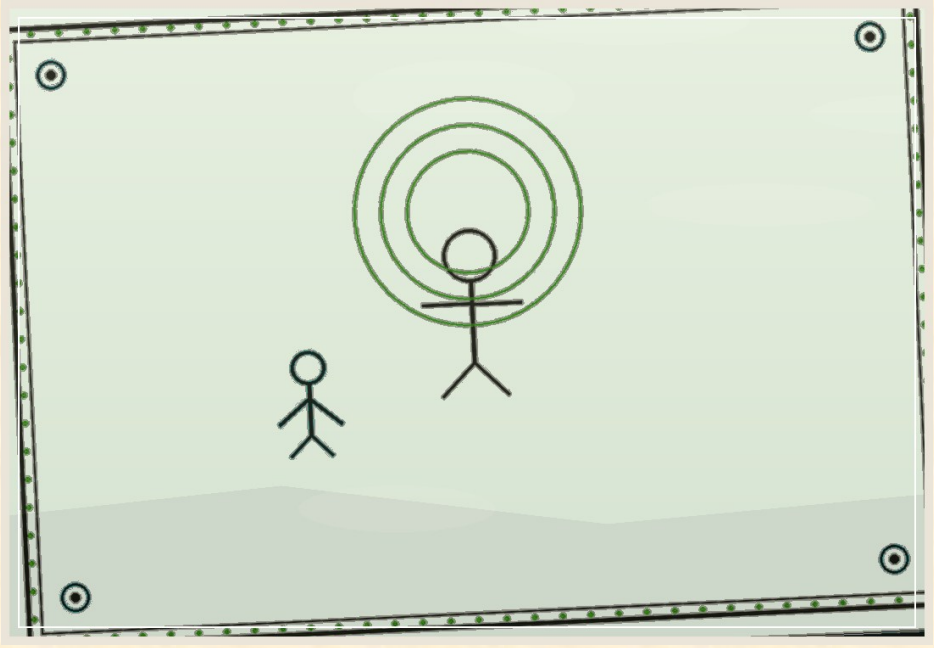

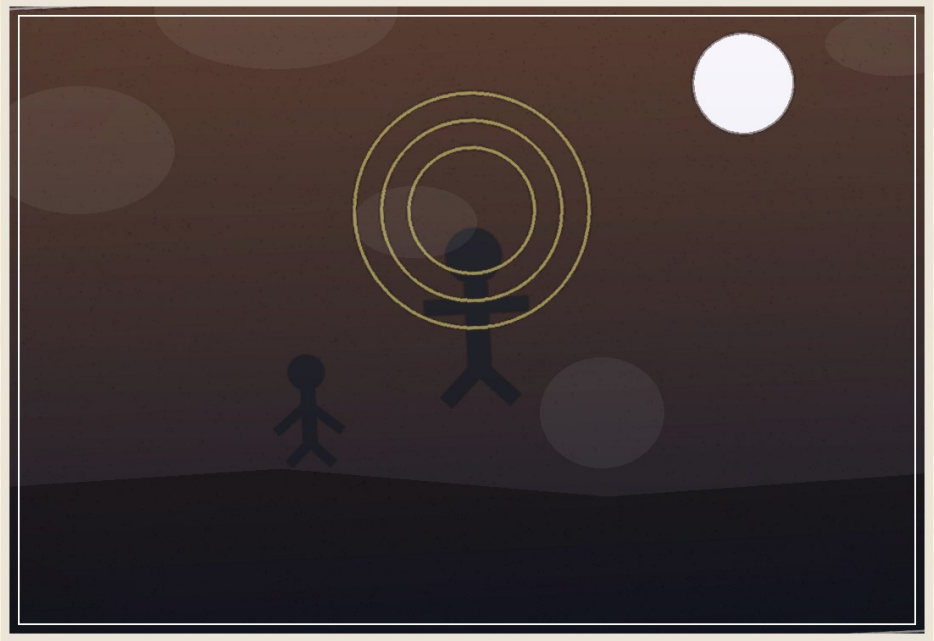

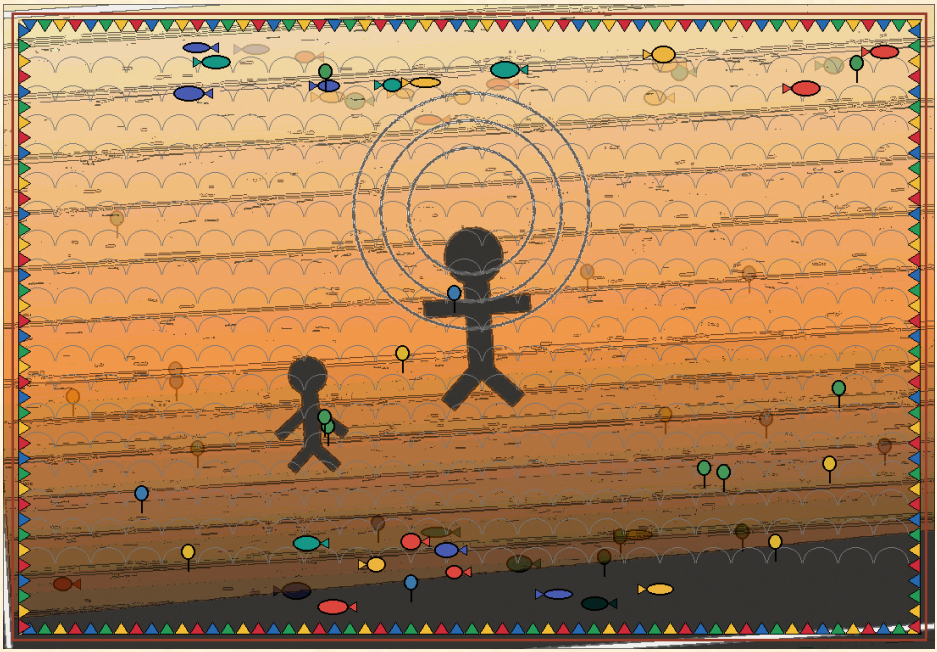

चित्र 12

गहिल माता चुप रहलीह — कारण उत्तर हुनको लग ओहि क्षण नहि छलनि। सन्तानक लेखा देवीक हाथमे नहि — इन्द्रक दरबारमे रहैत अछि, जतय जन्म-जन्मक बही खुजैत अछि।

'ठीक छै,' — माता कहलनि — 'हम इन्द्रक दरबार जाएब, आ अहाँ लेल बच्चा माँगब।' — देवी अपन भगतिन लेल याचक बनतीह! सुननिहार गामक लोक स्तब्ध। मोतीदाइक आँखिमे पहिल बेर बरखो बाद आस जागल — आ आसे त' सभसँ मीठ आ सभसँ खतरनाक वस्तु थिक।

अध्याय ७ : इन्द्रक दरबार

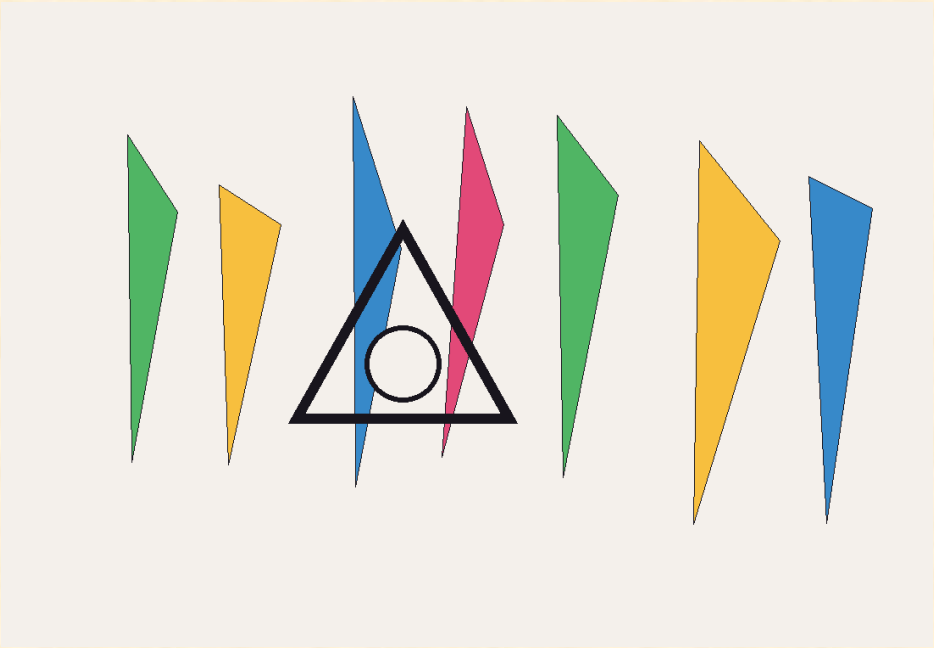

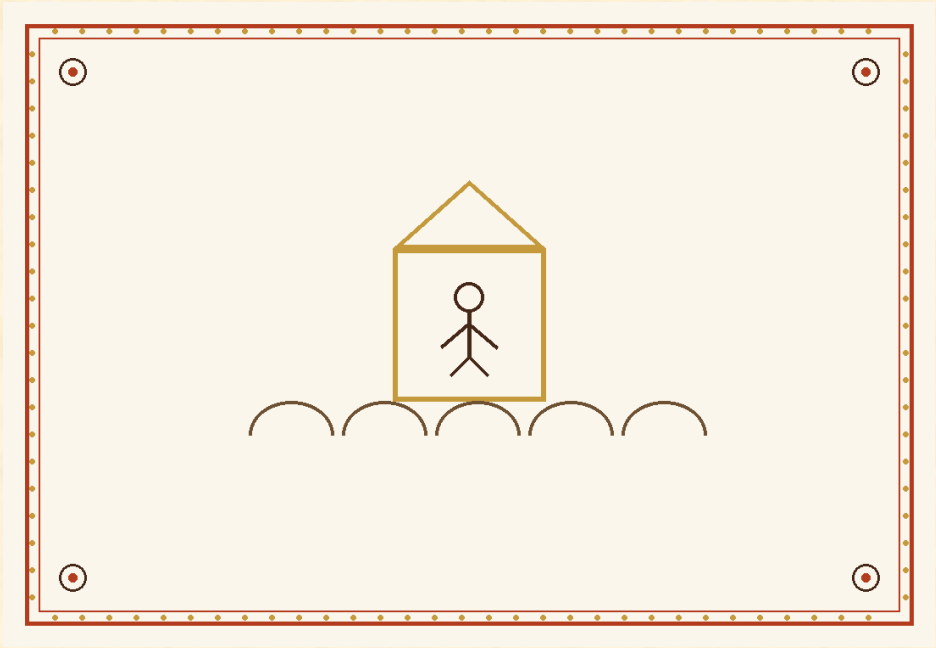

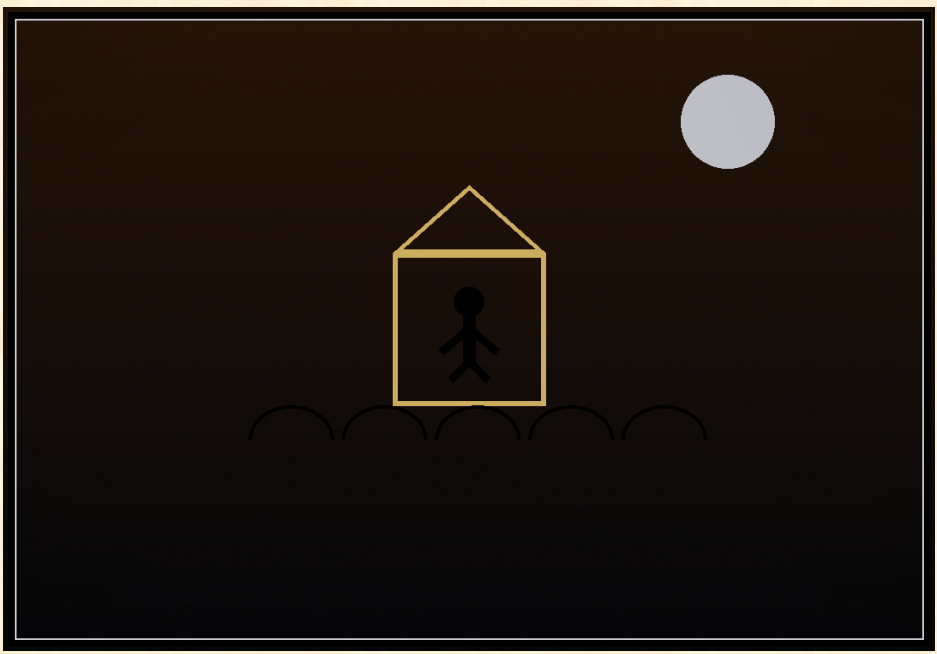

चित्र 13

इन्द्रक दरबार — जतय मेघ पर्दा थिक, बिजली दीप, आ जतय सभ जीवक भाग्यक बही राखल अछि। गहिल माता ओतय पहुँचलीह — देवी बनि कऽ नहि, एकटा भगतिनक माए बनि कऽ।

'हमर भगतिन मोतीदाइ लेल सन्तान चाही, देवराज।'

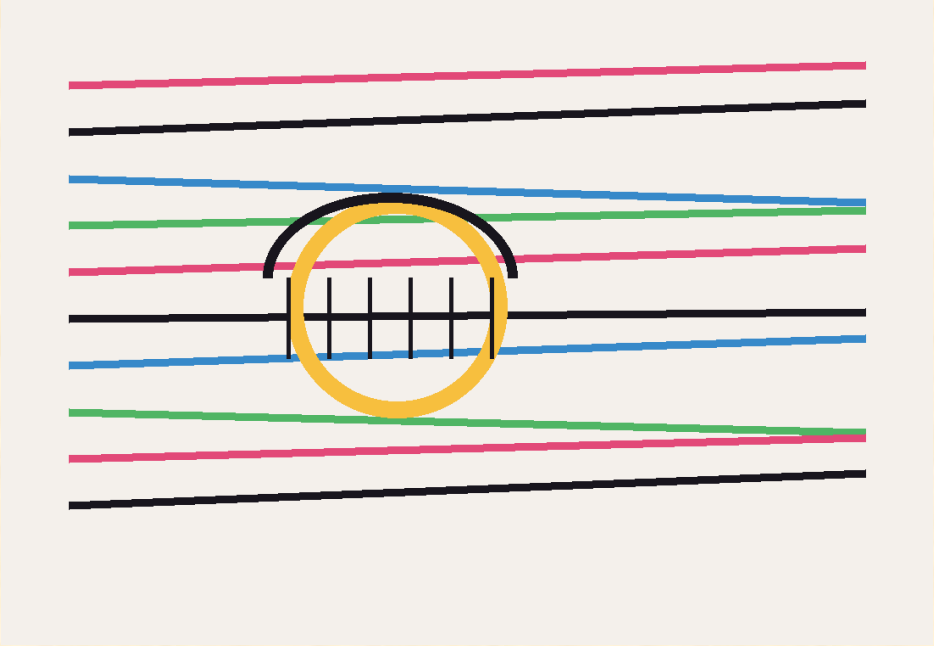

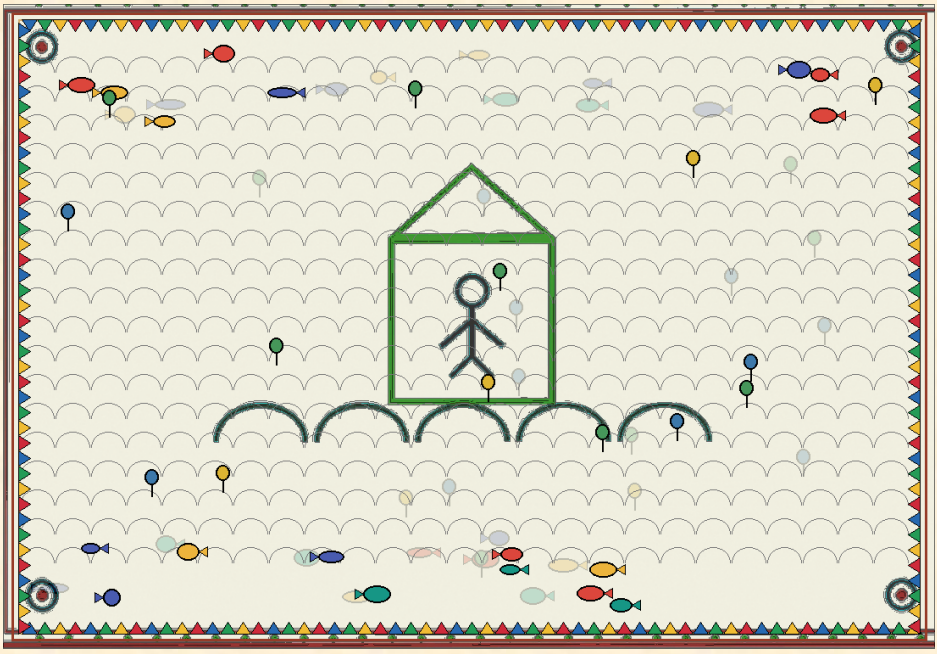

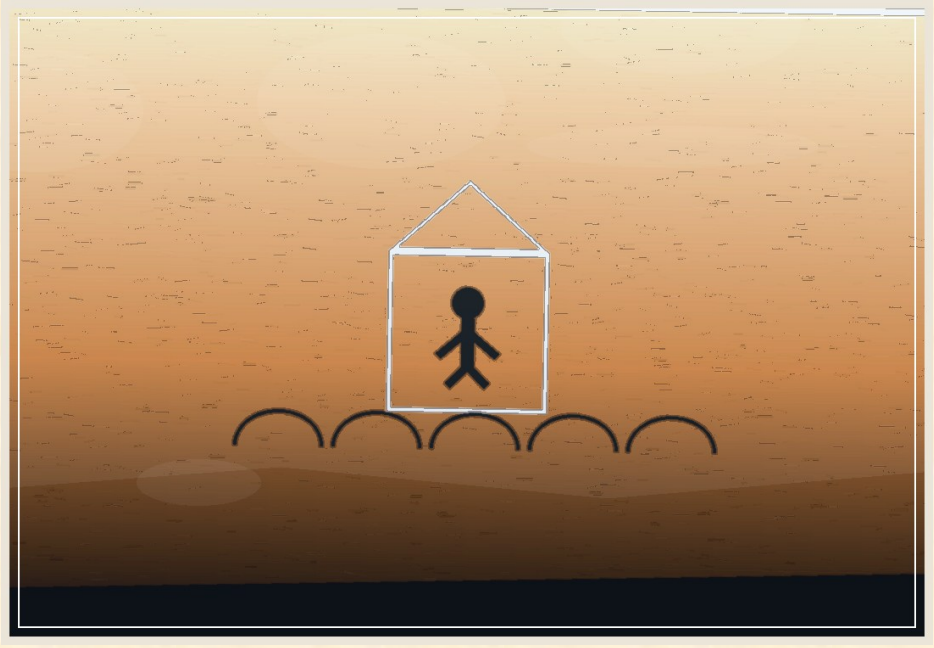

चित्र 14

इन्द्र बही मंगओलनि। पन्ना पलटाएल — जन्म-जन्मक हिसाब, कर्म-कर्मक जोड़। आ फेर देवराजक माथ आस्ते-आस्ते हिलल। 'पूर्व जन्मक फल छै, माता। ओकरा बच्चा नहि लिखल छै।'

नहि लिखल छै — तीन शब्द, आ तीनूमे पाथरक वजन। गहिल माता बहुत ठाढ़ि रहलीह, बहुत कहलनि — मुदा विधानक बहीपर देवीक आग्रहो नहि चलल। ओ घुरलीह — खाली हाथ, भारी मोन। देवी छलीह, तेँ झूठ नहि बाजि सकलीह; माए-सन छलीह, तेँ साँच कहबामे हुनक करेज कटैत छल।

अध्याय ८ : मरबे नीक

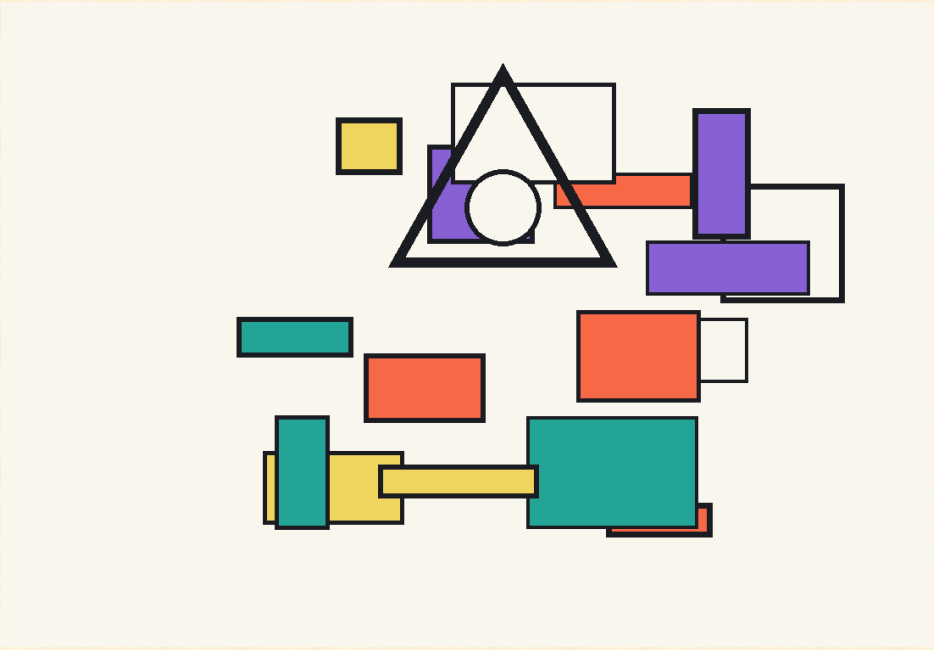

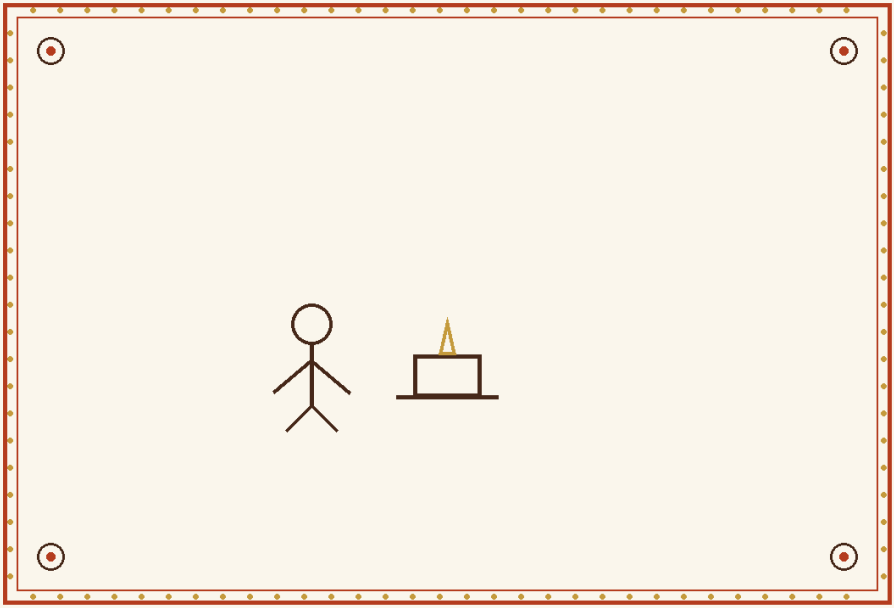

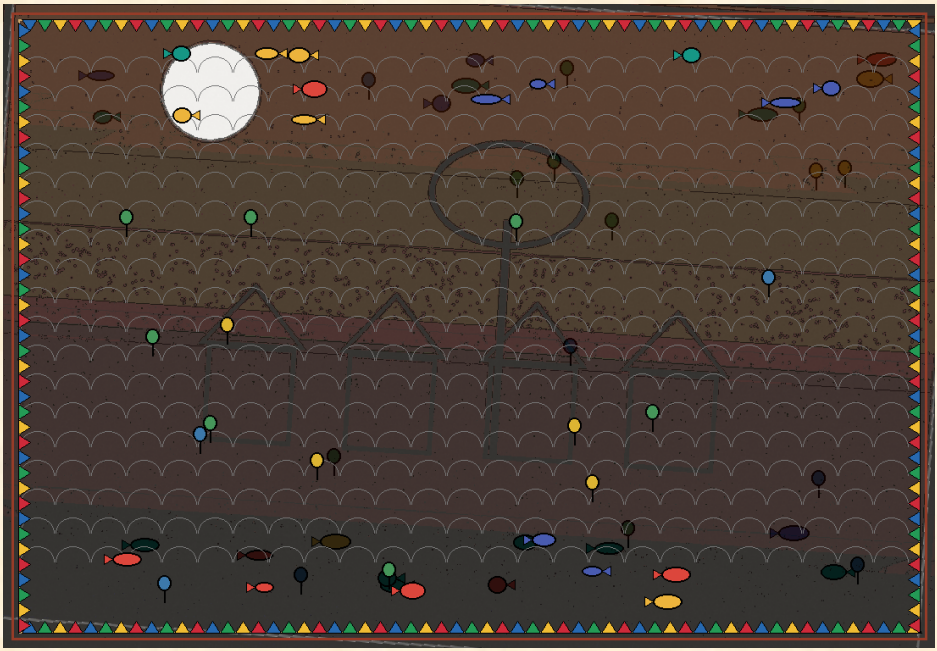

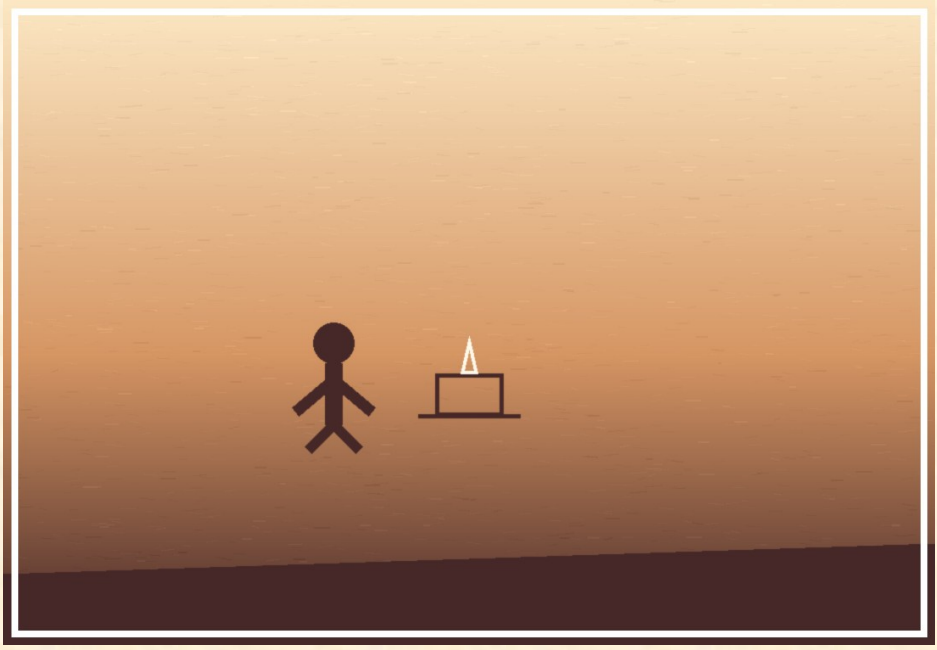

चित्र 15

'पूर्व जन्मक फल छौ, मोती। तोरा बच्चा नहि लिखल छौ।' — माता सभटा साँच कहि देलनि।

मोतीदाइ सुनलनि, आ हुनक भीतर जे अन्तिम दीप टिमटिमाइत छल, से मिझा गेल।

'आह! तखन हमर जीवन निरर्थक अछि। सेवा केलहुँ — फल नहि। लांछन सहलहुँ — उत्तर नहि। आ आब त' विधानो कहि देलक जे आस राखबो पाप। एहिसँ त' मरबे नीक!'

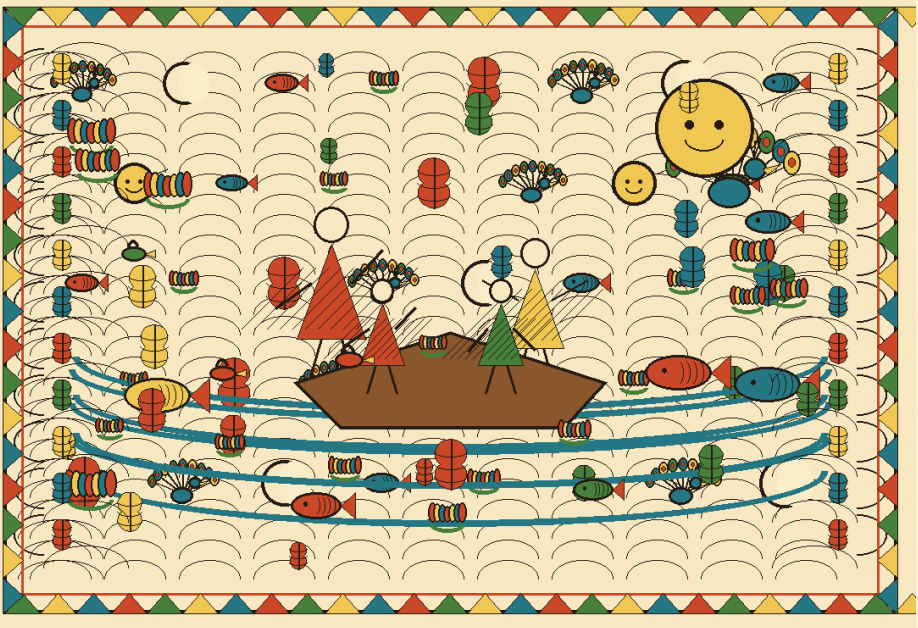

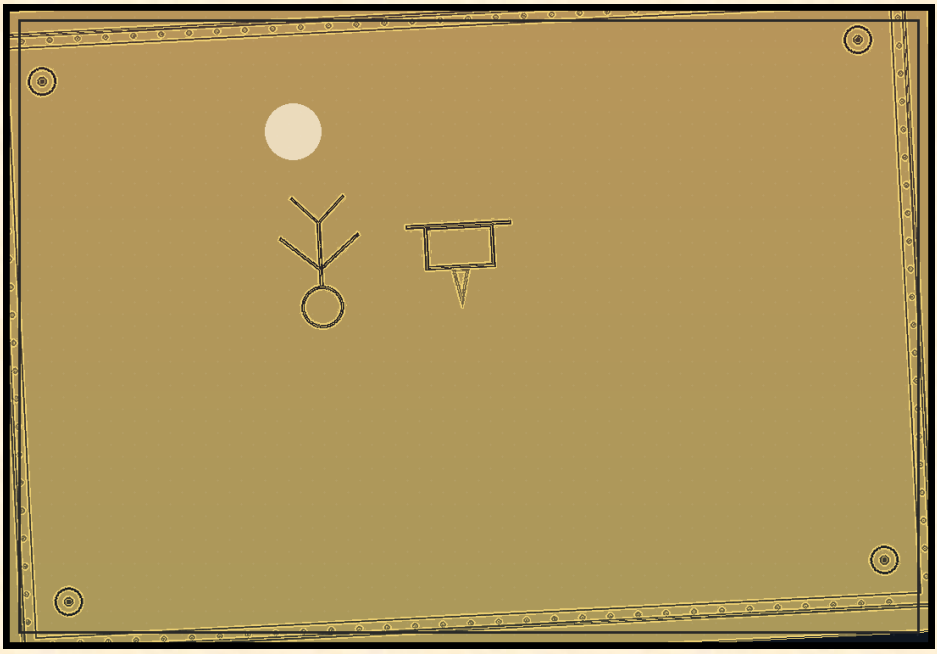

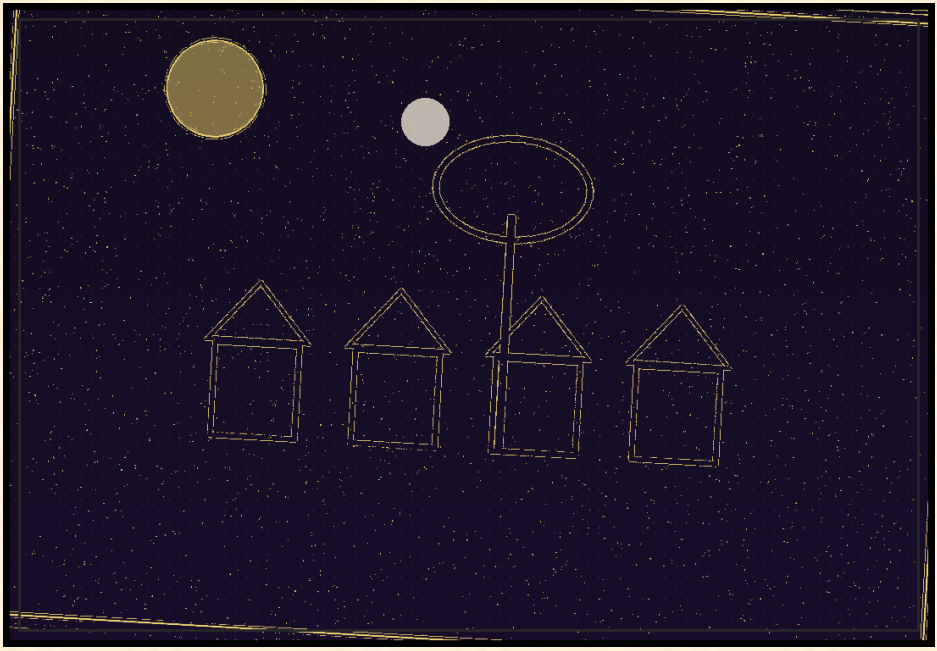

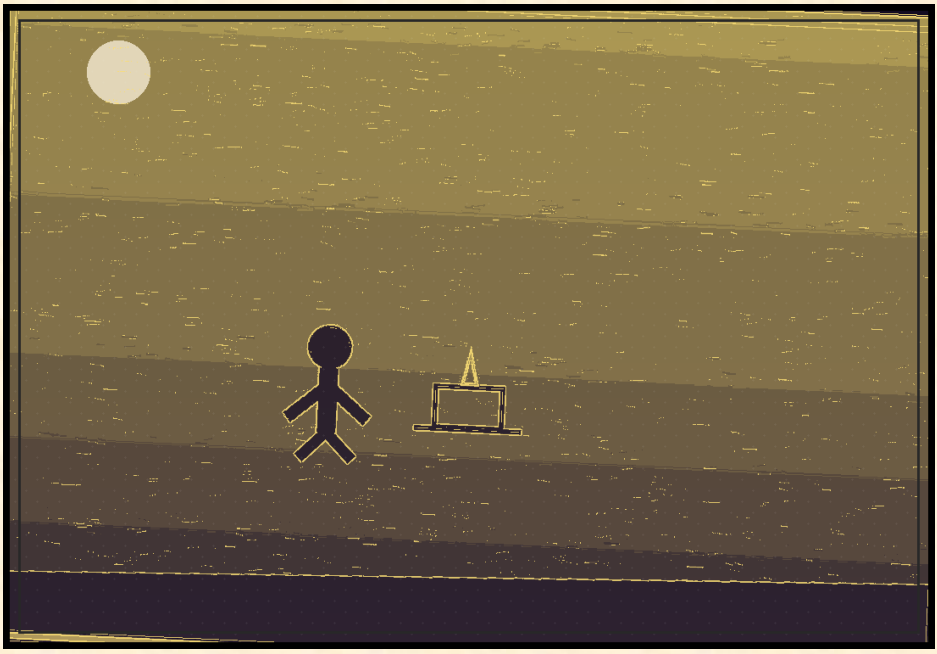

चित्र 16

आ ई खाली बोल नहि छल। मोतीदाइ मरबाक सूरसार शुरू कऽ देलनि — अन्न त्यागि देलनि, घाट छोड़ि देलनि, आ आँखिमे ओ शून्य उतरि आएल जे शब्दसँ बेसी डराओन होइत अछि।

गहिल माता ई देखलनि — आ देवीक करेज भालरि जकाँ हिलऽ लागल। बहीमे जे लिखल छै से विधान; मुदा आँखिक आगाँ भगतिन मरए, ई कोन विधान? आ तखन माता ओ केलनि जे भक्ति-गाथाक सभसँ ऊँच क्षण थिक — देवी दोसर बेर याचक बनलीह। एहि बेर आग्रह नहि — हठ लऽ कऽ।

अध्याय ९ : दोसर यात्रा आ शर्त

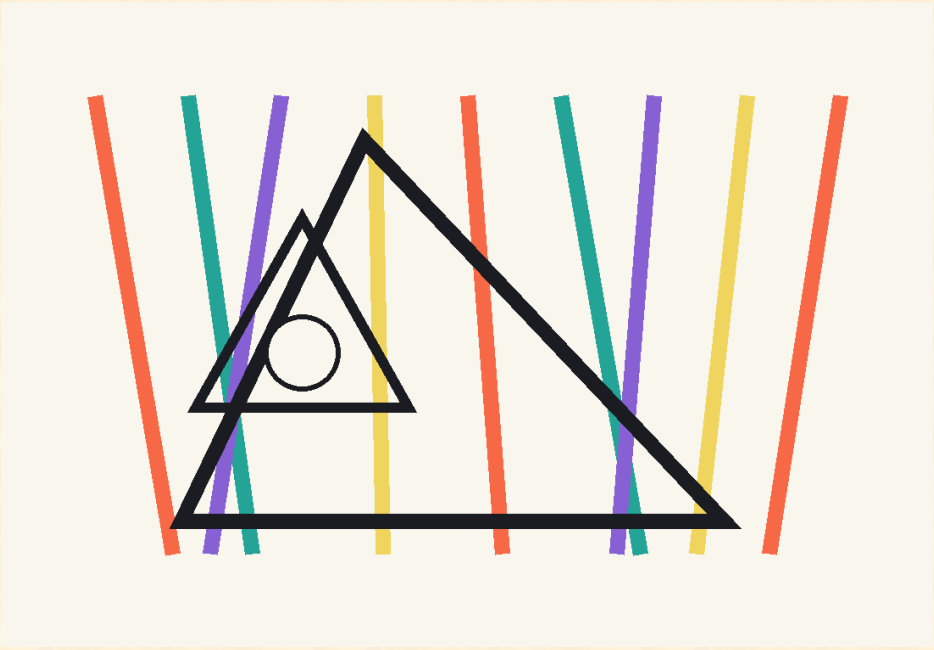

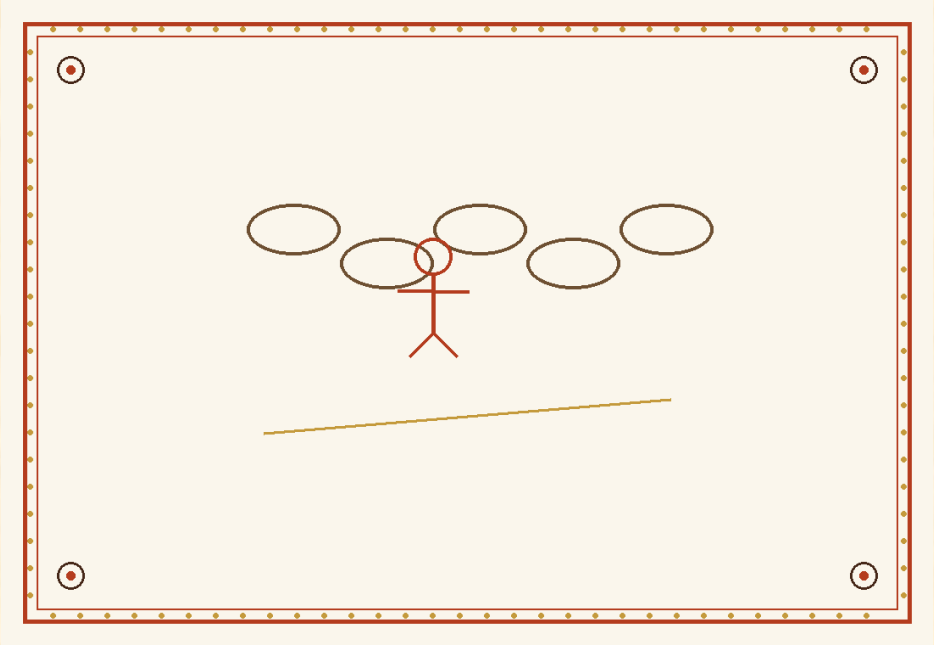

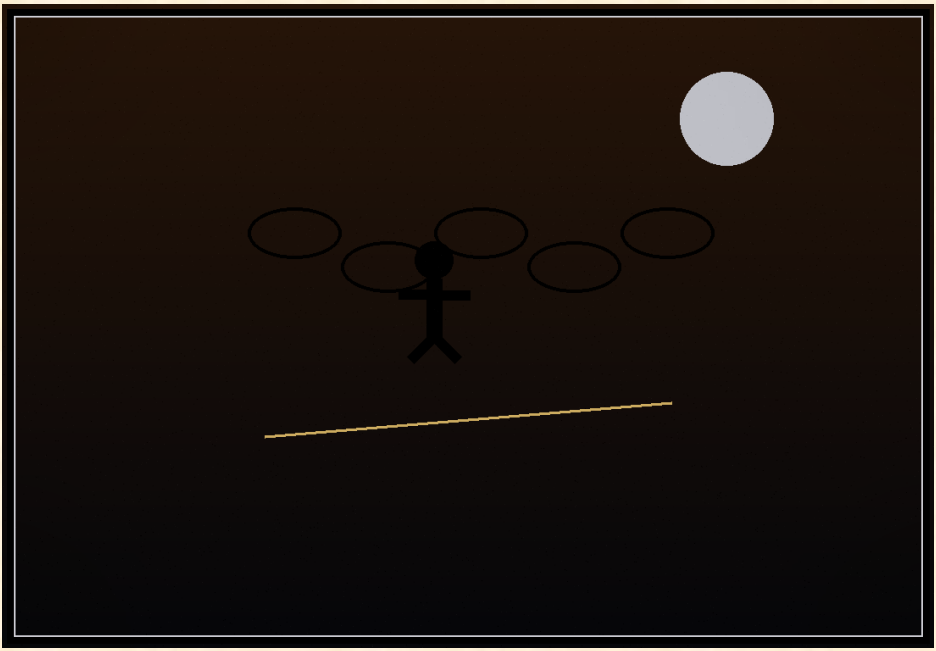

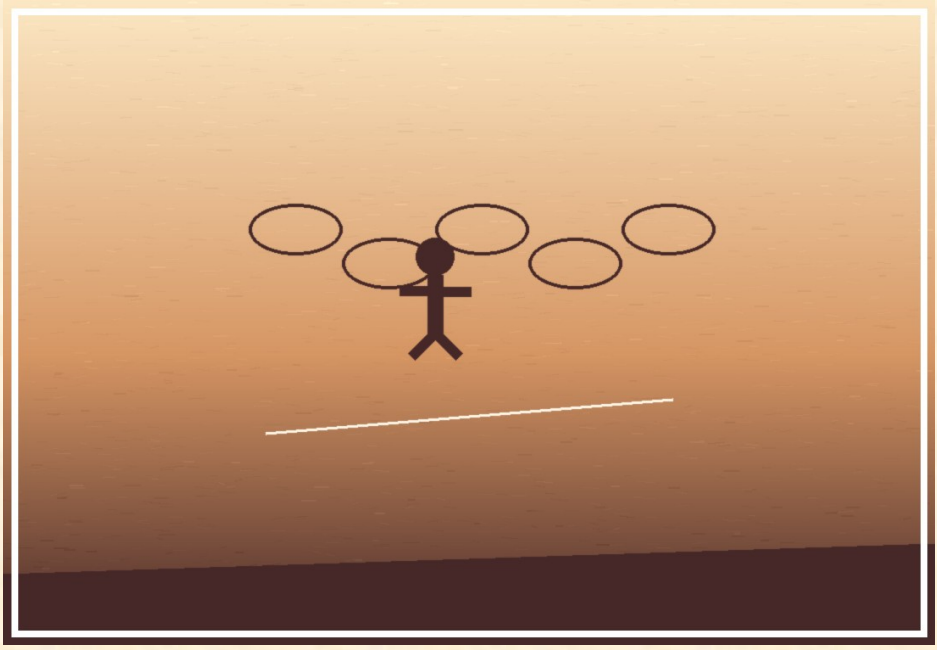

चित्र 17

गहिल माता फेर इन्द्रक दरबार गेलीह। सभटा गप कहलनि — भगतिनक टूटब, अन्न-त्याग, मृत्युक सूरसार। 'हमर भगतिन हमरे भक्तिक कारण मरती, देवराज? विधानकेँ कोनो बाट निकालए पड़तै।'

इन्द्र फेर बही खोललनि। विधान अटल — मुदा विधानक भीतरो कखनो काल एकटा सिलेट रहैत छै, जतय करुणा किछु पाँति जोड़ि सकैत अछि। बहुत सोचला उत्तर देवराज बजलाह —

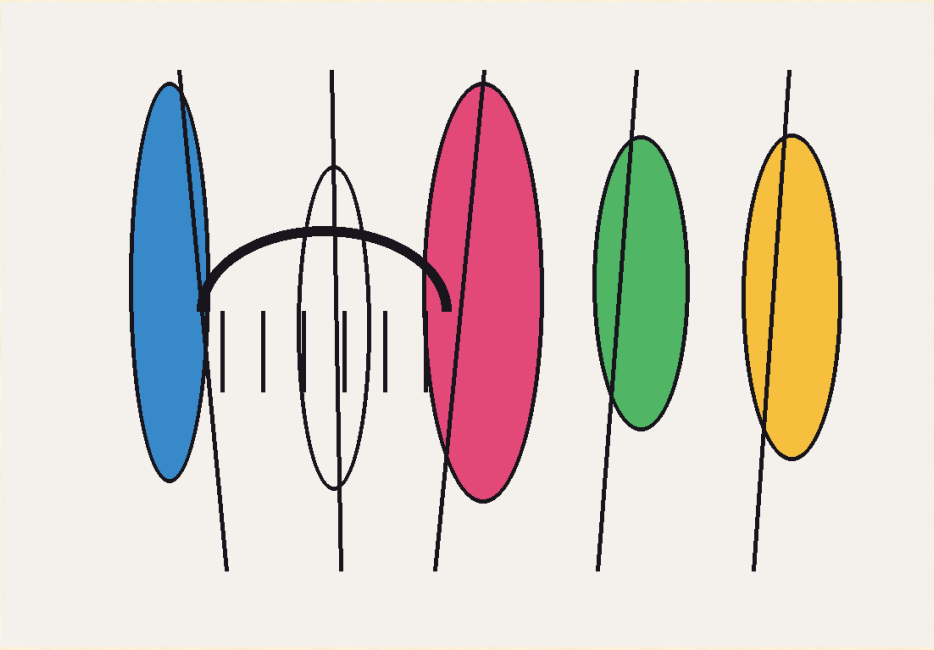

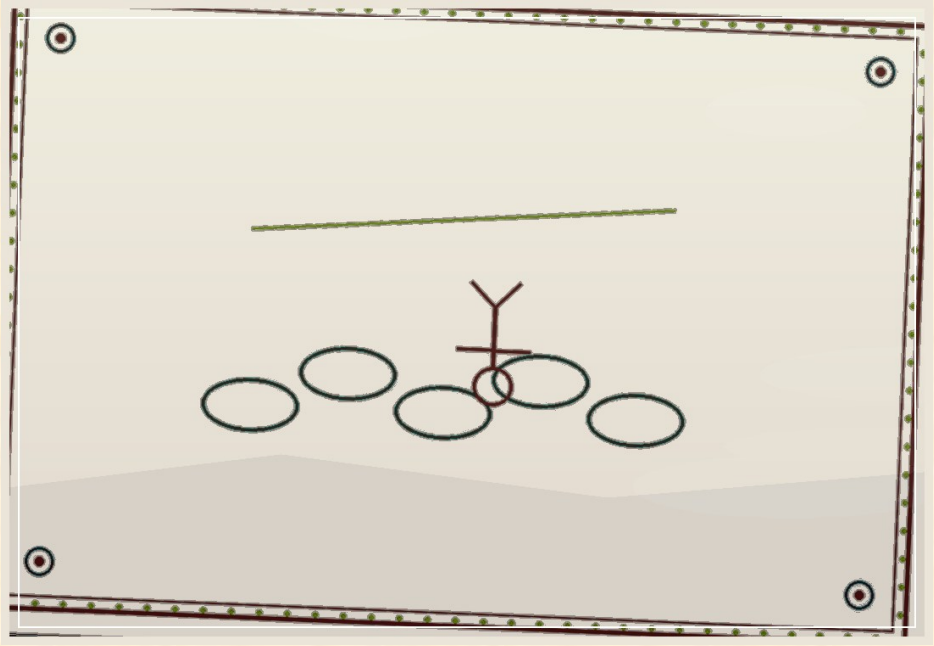

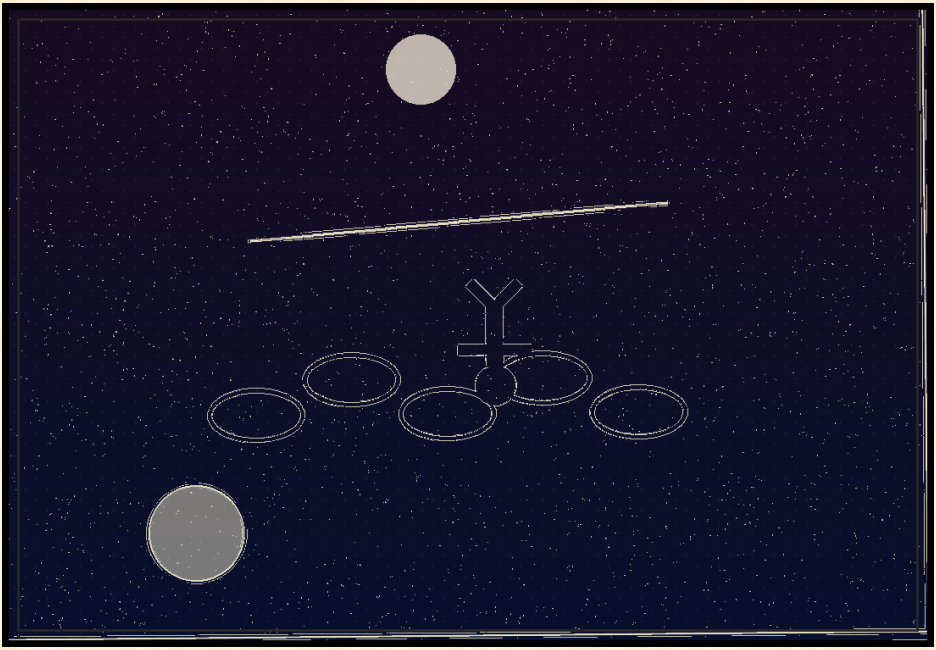

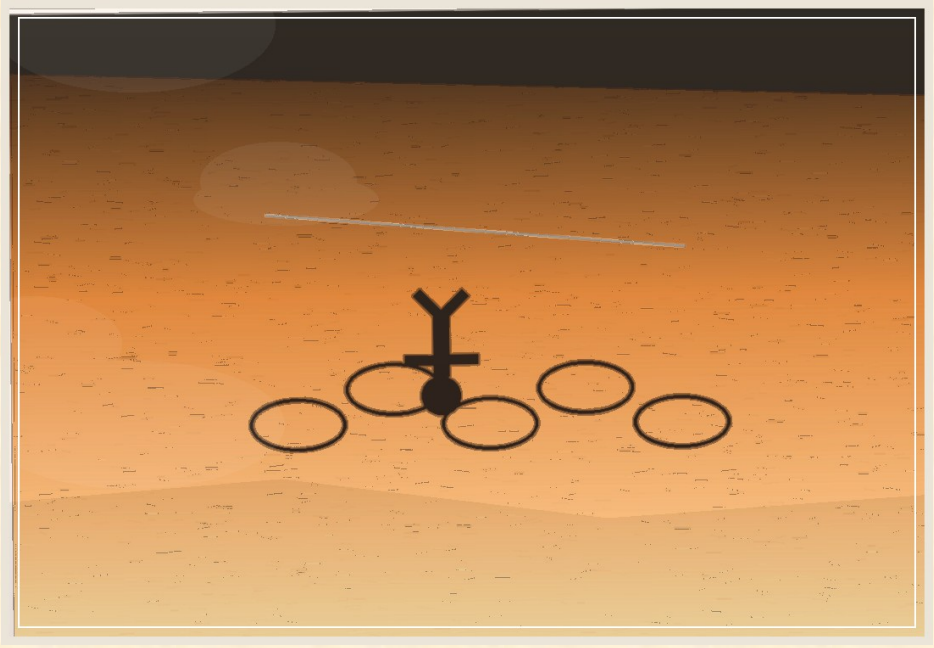

चित्र 18

'ठीक छै। बच्चा त' होएतन्हि मोतीदाइकेँ... मुदा छठिहारी दिन ओ मरि जएतन्हि।'

छह दिन। बस छह दिनक मातृत्व — आ सातम भोरसँ पहिने अन्त। ई वरदान छल आकि आरो पैघ शाप? गहिल माता ई प्रश्न नेने घुरलीह। मुदा मोतीदाइ जखन सुनलनि, त' हुनक उत्तर सोझ छल — 'छह दिन? माता, जे कोरा जिनगी भरि खाली रहल, तकरा लेल छहो दिन छह जुग थिक। हमरा स्वीकार अछि।' — माए बनबाक साध केर आगाँ मृत्युक तिथि सेहो छोट पड़ि गेल।

अध्याय १० : छह दिनक संसार

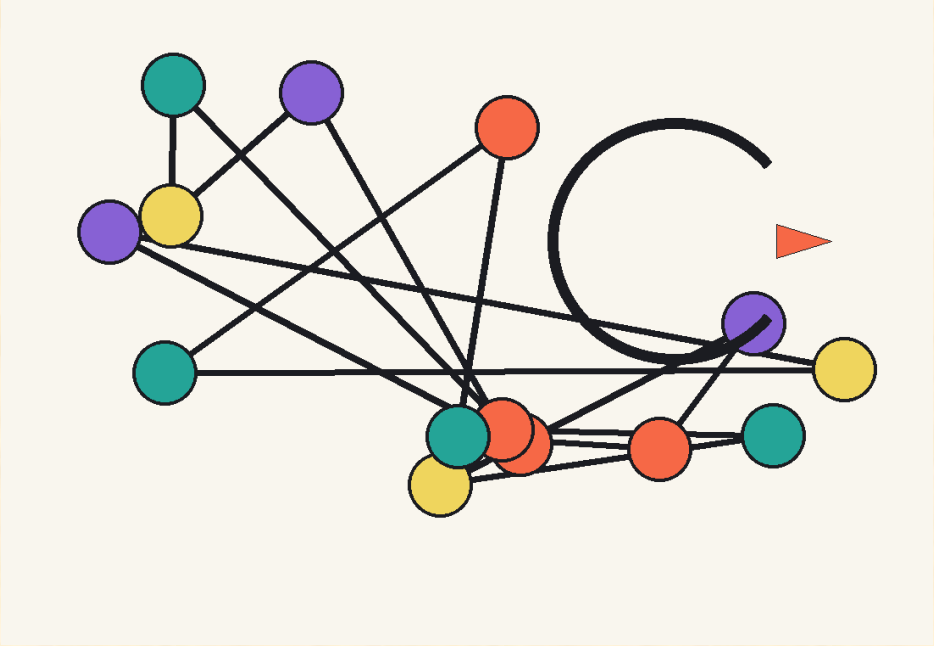

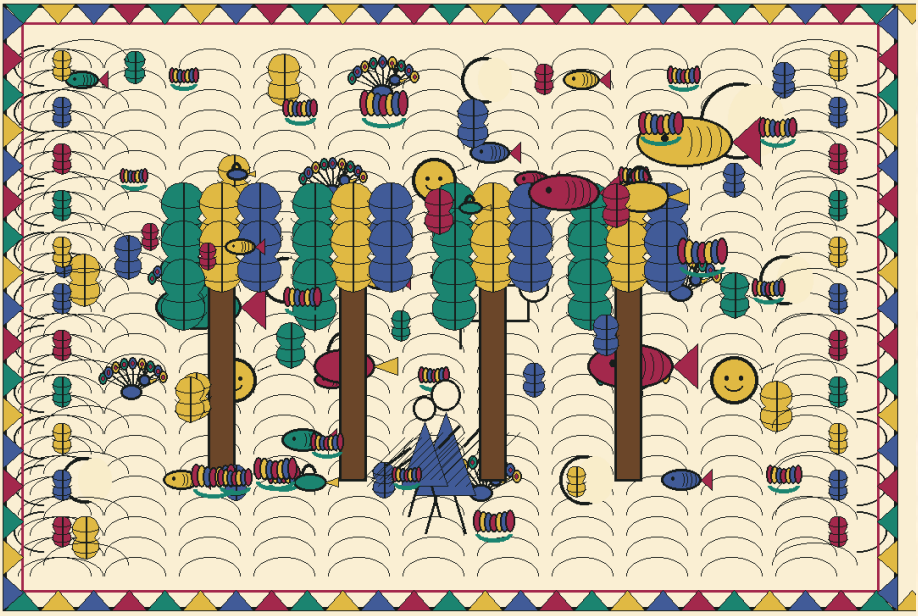

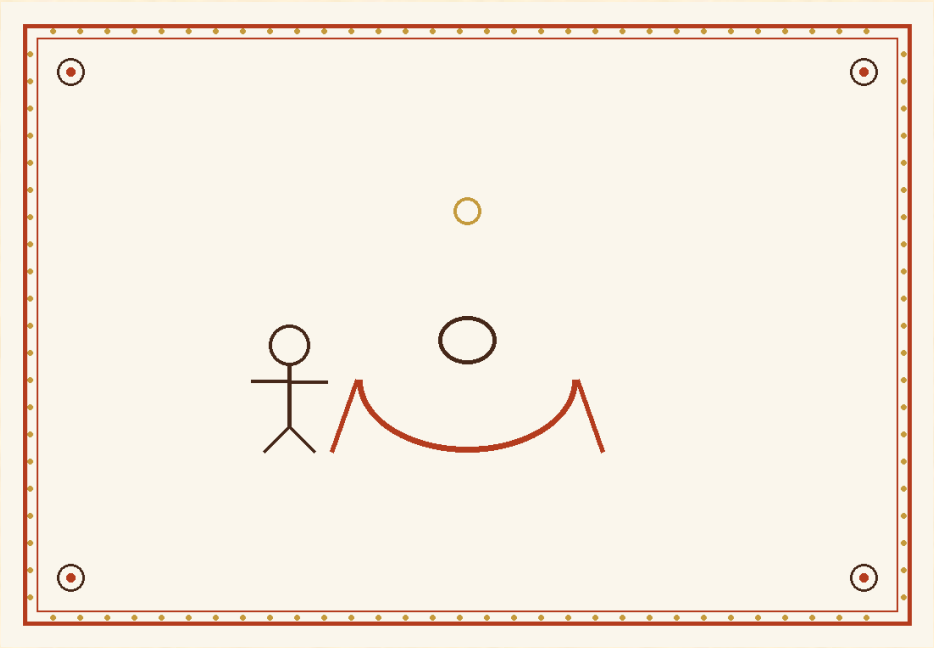

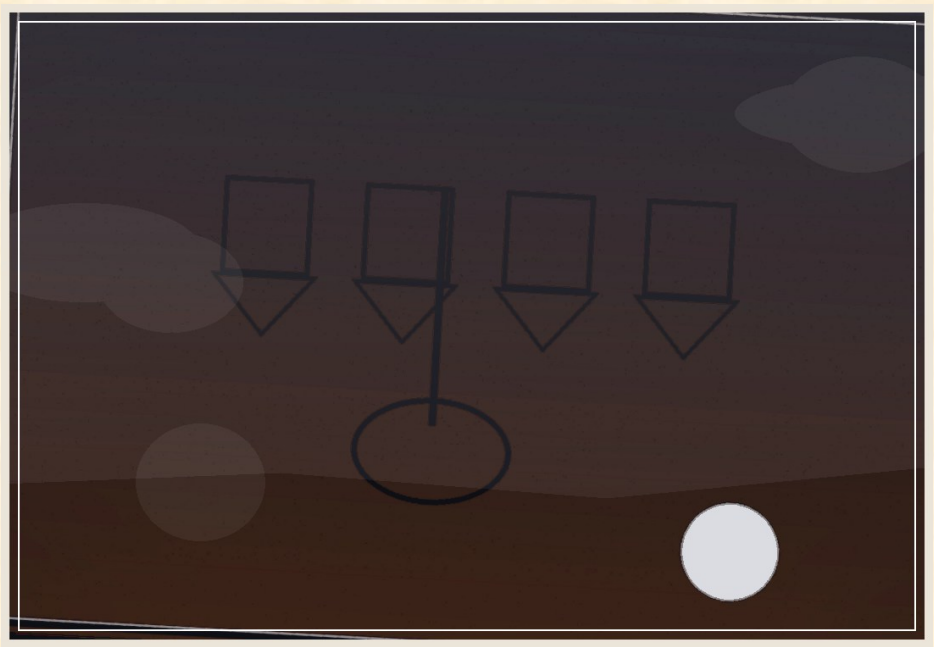

चित्र 19

आ से भेल — मोतीदाइक कोरा भरल। बच्चा जनमल: निर्मल, निरोग, चानक टुकड़ी सन। उजैनी गाम अकचकाएल — जकरा 'बाँझ' कहल गेल छल, तकर आँगनमे सोहर गूँजि गेल!

आ ओ छह दिन! मोतीदाइ ओहि छह दिनमे पूरा मातृत्व जीलनि — जेना केओ एक्कहि साँझमे पूरा जिनगीक भोज कऽ लिअए। पहिल दिन ओ बच्चाकेँ खाली तकैत रहलीह — पिपनी झपकब सेहो घाटा बुझाइत छलनि। दोसर दिन लोरि — जतेक लोरि जनैत छलीह, सभटा। तेसर दिन काजर, चौठ दिन नामकरणक साध, पाँचम दिन...

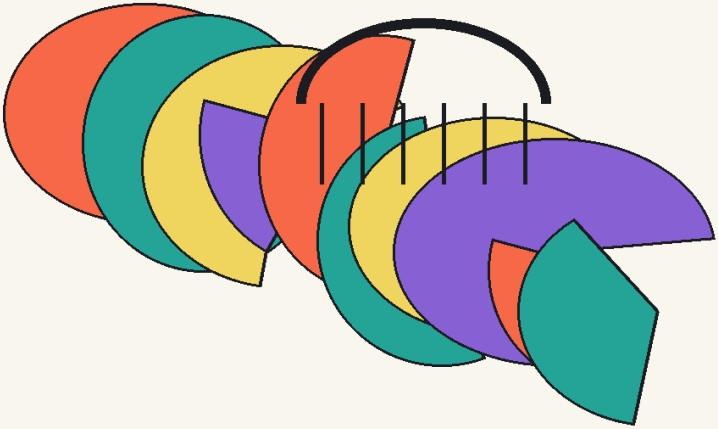

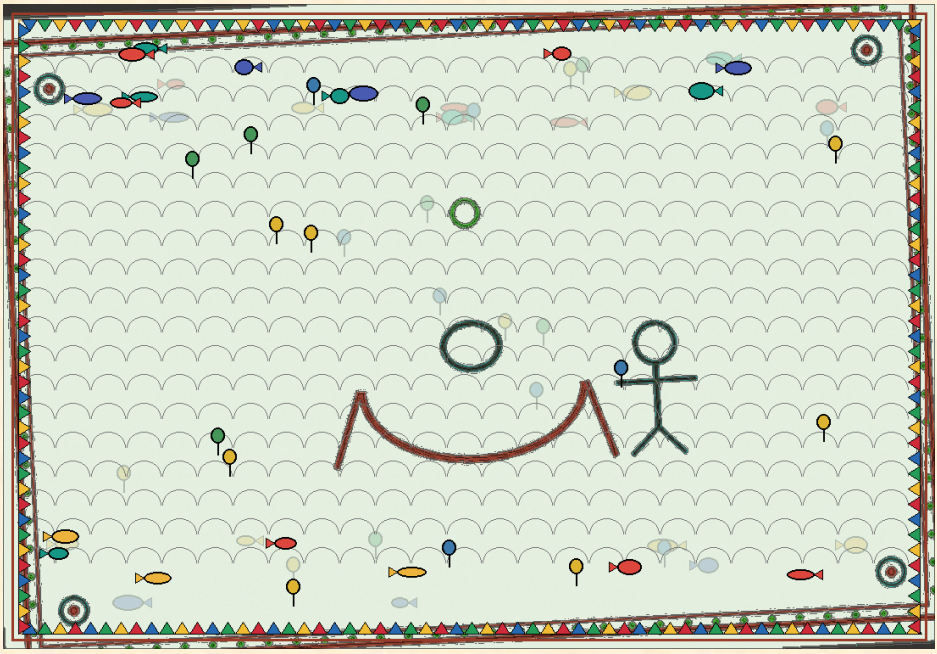

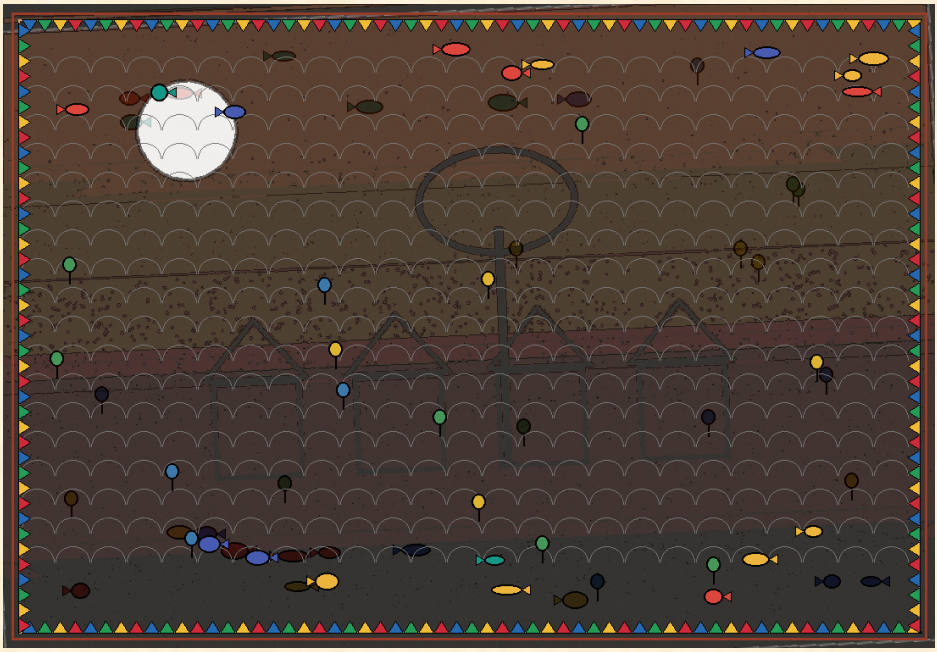

चित्र 20

पाँचम दिनसँ हुनक लोरिमे कम्पन आबए लागल। गनती त' हुनको बुझल छल। बच्चाकेँ छातीसँ लगओने ओ राति भरि जागलि रहलथि — निन्नकेँ कहथि, 'तों बादमे अबिहँ; एखन हमर बेर छी।'

आ गाम? गाम चुपचाप देखैत छल। गुअरटोलीक ओ जनानी सभ सेहो — जिनकर ओल सन बोलसँ ई गाथा शुरू भेल छल — आब अपन दरबज्जापर ठाढ़ भऽ ओहि आँगन दिस तकैत छलि, जतय छह दिनक संसार बसल छल। ककरो मुँहसँ आब 'बाँझ' शब्द नहि निकलल — निकलत कोना।

अध्याय ११ : छठिहारी

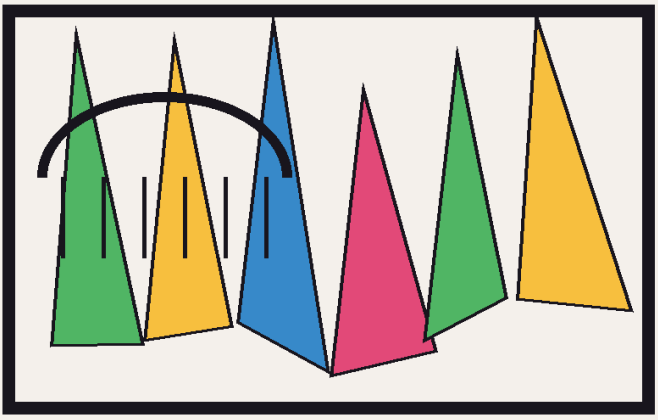

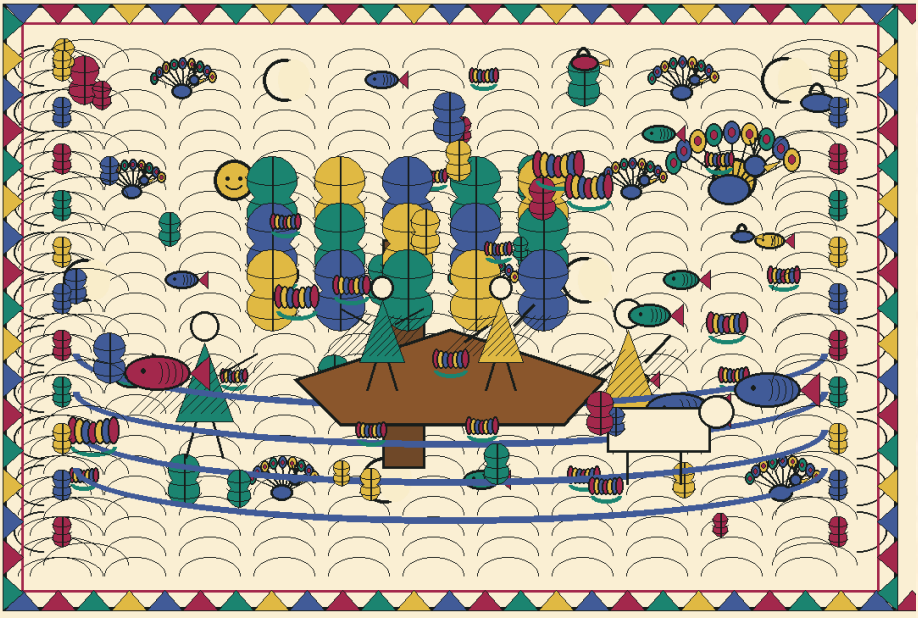

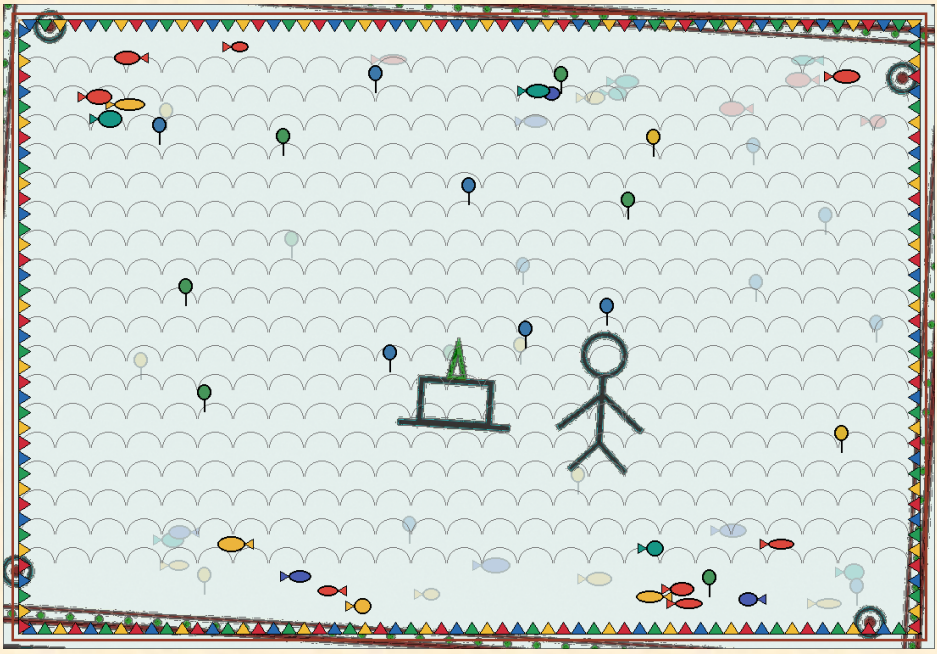

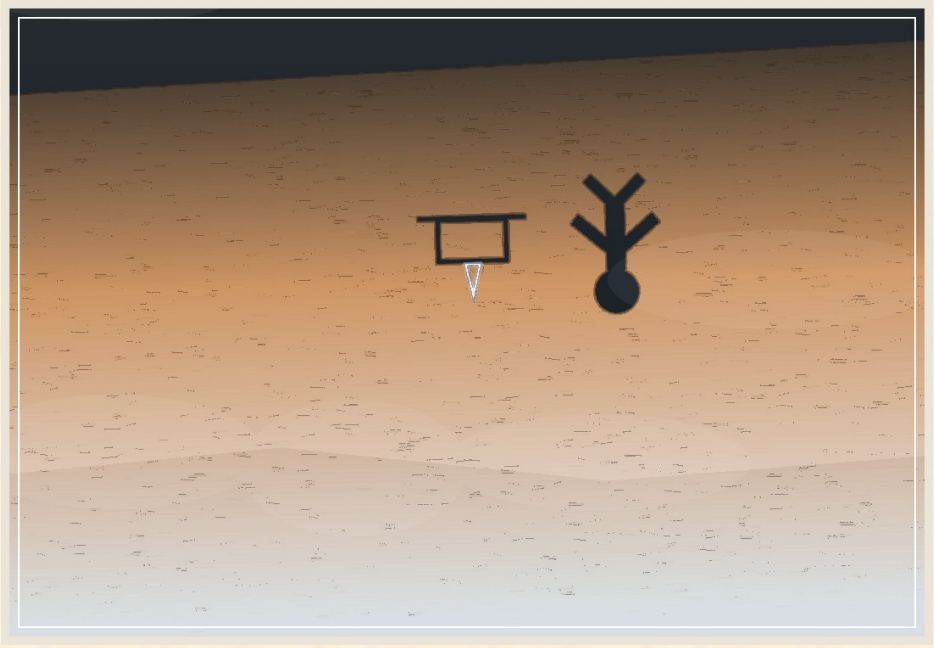

चित्र 21

छठिहारी दिन आएल — जाहि दिन घर-घरमे छठिक पूजा होइत अछि, षष्ठी माता नवजातक रखबारि लेल पूजल जाइत छथि। मोतीदाइक आँगनमे सेहो छठिहारीक दीप जरल — मुदा ओहि दीपक लौ ओहि राति सभसँ बेसी काँपैत छल।

मोतीदाइ बच्चाकेँ अन्तिम बेर नहओलनि, काजर लगओलनि, आ छातीसँ लगा कऽ बैसि रहलीह। ने कानब, ने चिचिआएब — खाली एकटक ओहि मुँहकेँ तकैत रहब, जे काल्हि नहि रहत।

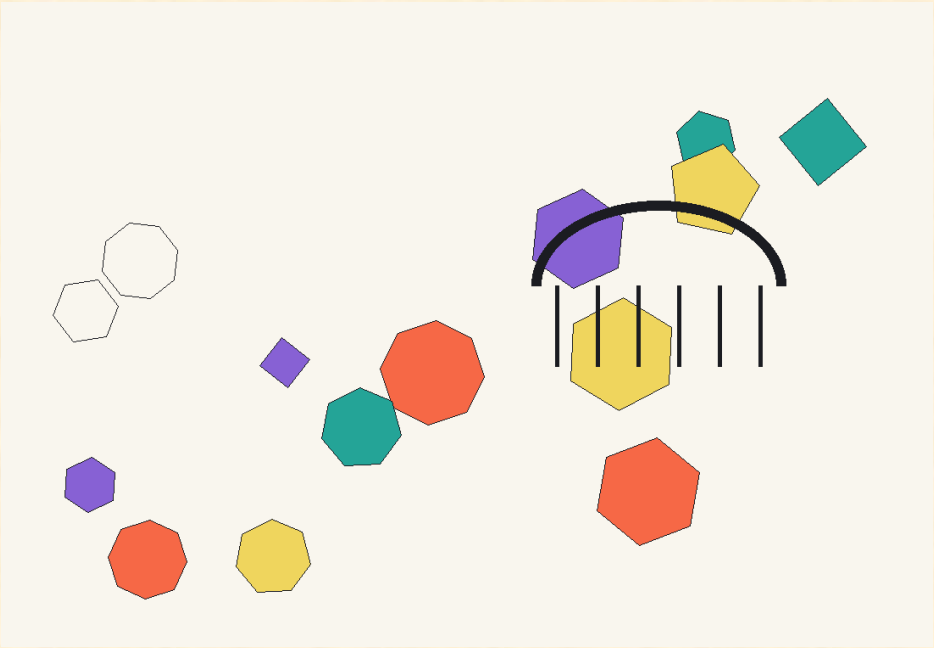

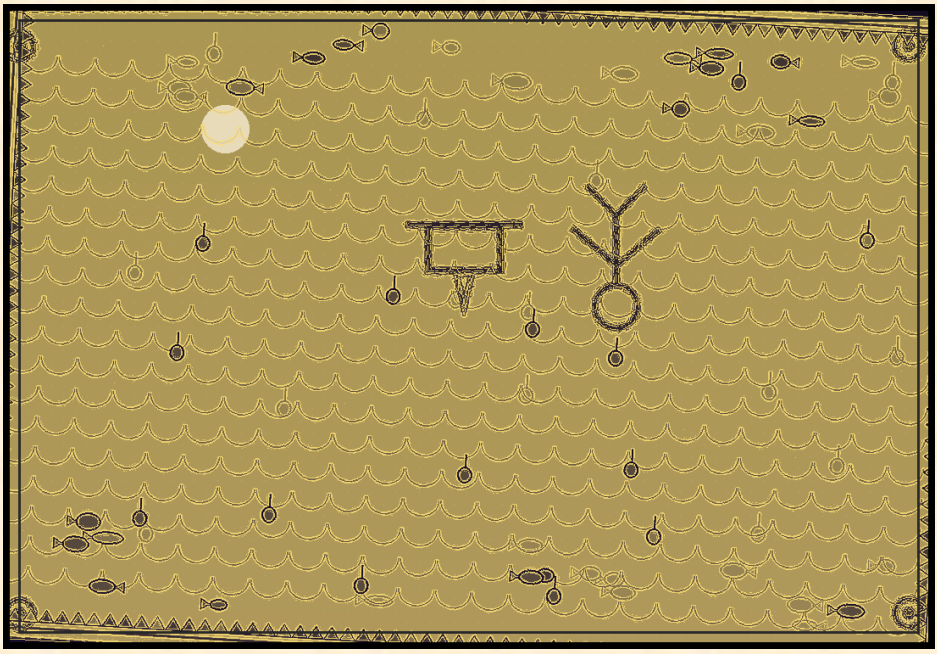

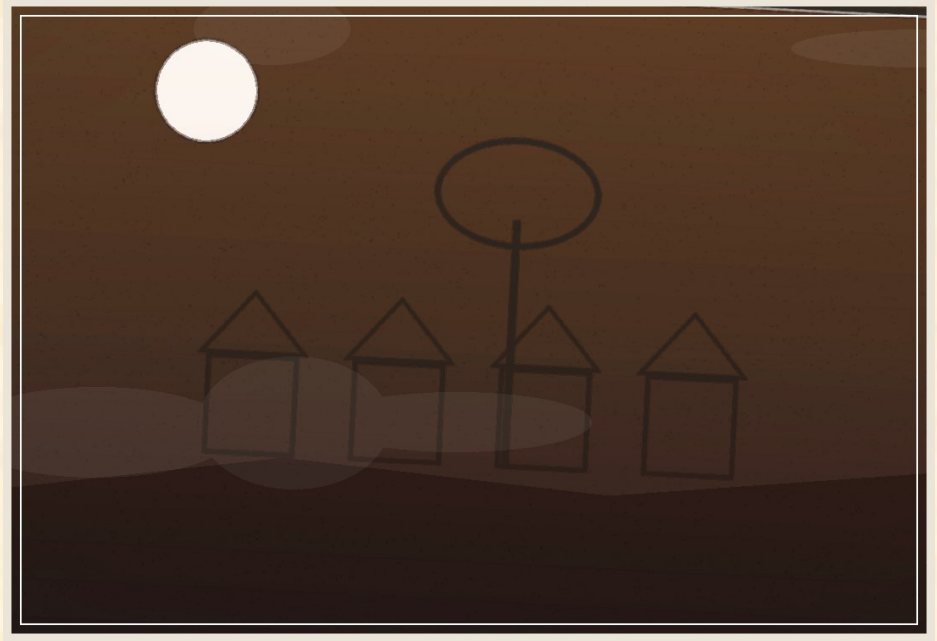

चित्र 22

आ सैह भेल — छठिहारी दिन बच्चा मरि गेल। जेना आएल छल, तहिना चुपचाप चलि गेल — विधानक बहीक ओहि एक्कहि पाँतिकेँ पूरा करैत, जे करुणा जोड़ने छल आ नियति काटि देने छल।

उजैनी ओहि दिन कानल — पूरा गाम। मुदा सभसँ अचरज ई — मोतीदाइक आँखि ओहि दिन सुखाएल छल। लोक बुझलक, दुखसँ पथरा गेलीह। साँच किछु आर छल: जकरा जिनगी भरि खाली कोराक दुख छल, से आब भरल कोराक स्मृति नेने छलि। दुनू दुख थिक — मुदा दुनू एक नहि।

अध्याय १२ : भगता

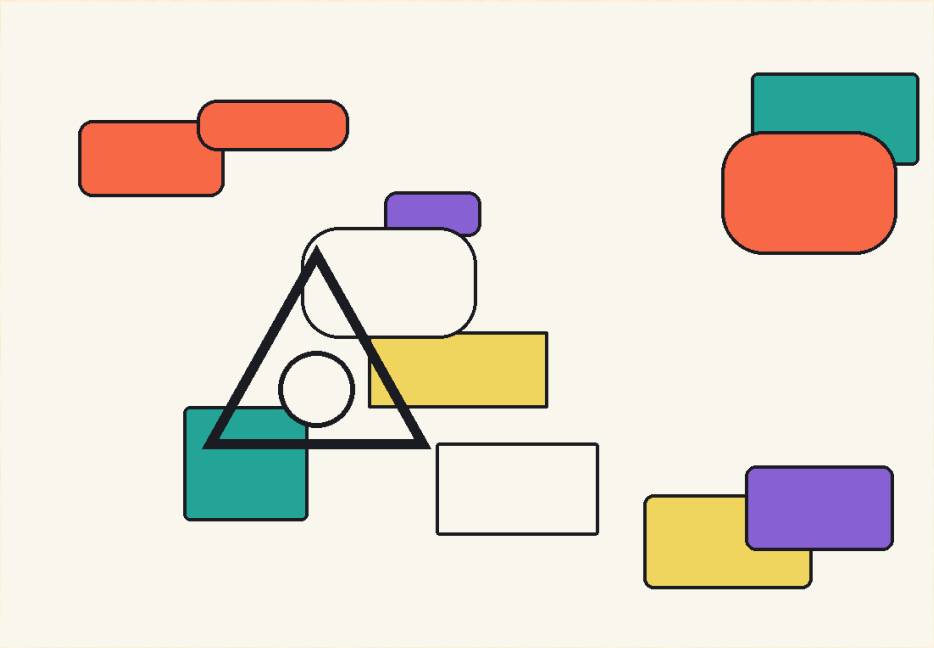

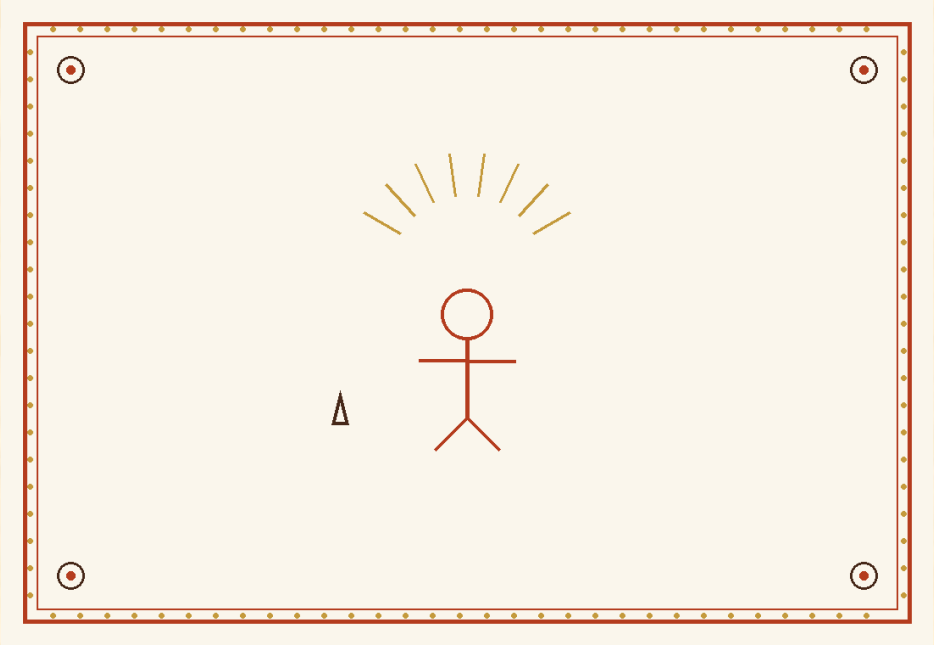

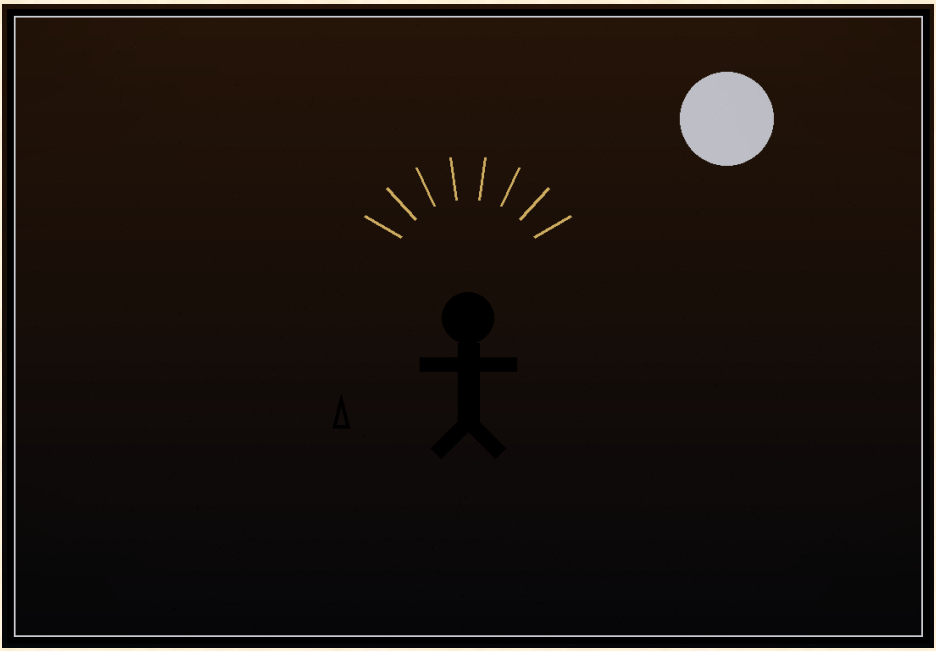

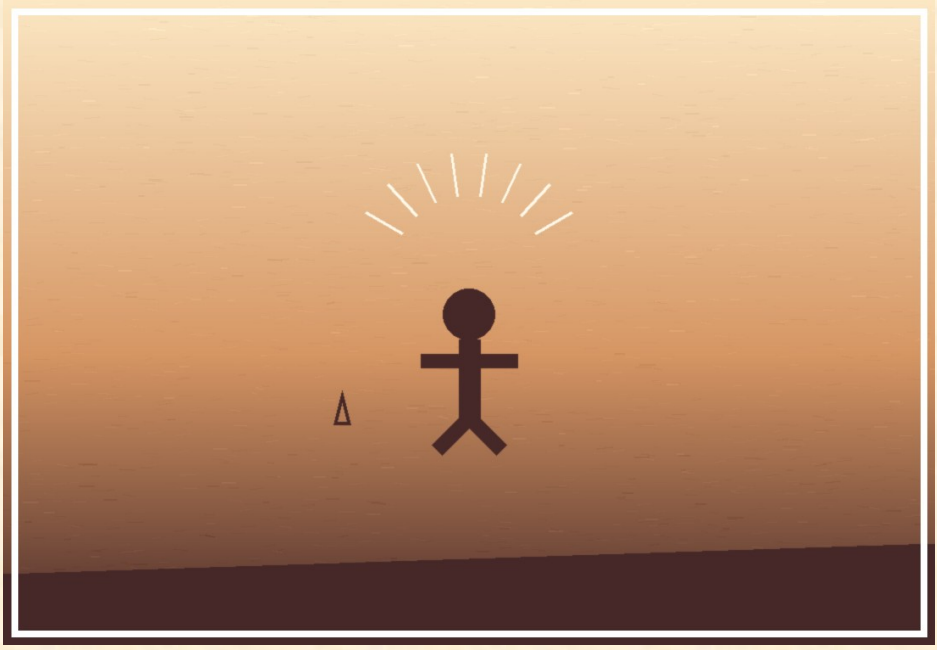

चित्र 23

बाँझ होएबाक दुख मुदा खतम भेलन्हि। ई वाक्य सुनबामे विचित्र लगैत अछि — बच्चा त' रहल नहि, दुख कोना खतम भेल? मुदा एहीमे एहि गाथाक गहींर मर्म अछि। मोतीदाइकेँ सन्तान-सुख नहि लिखल छल — लिखल छल कलंक। आ ओ कलंक छह दिनक मातृत्व सदा लेल धो देलक। आब ओ 'बाँझ मोतीदाइ' नहि छलीह — ओ माए छलीह, जकर बच्चा नहि रहल। गामक जीह लेल ई अन्तर सूक्ष्म हएत; करेज लेल ई अन्तर आकाश-पाताल छल।

आ मोतीदाइ? ओ फेर गहमर घुरलीह — मुदा आब खाली दीप-धूप लेल नहि। गहिल माताक भगता ओ खेलाए लगलीह — देवी हुनक देहमे उतरथि, आ गामक दुखिया सभ हुनकहि लग अपन-अपन खाली कोरा, अपन-अपन कुबोलक शिकाइत, अपन-अपन नोर लऽ कऽ आबए।

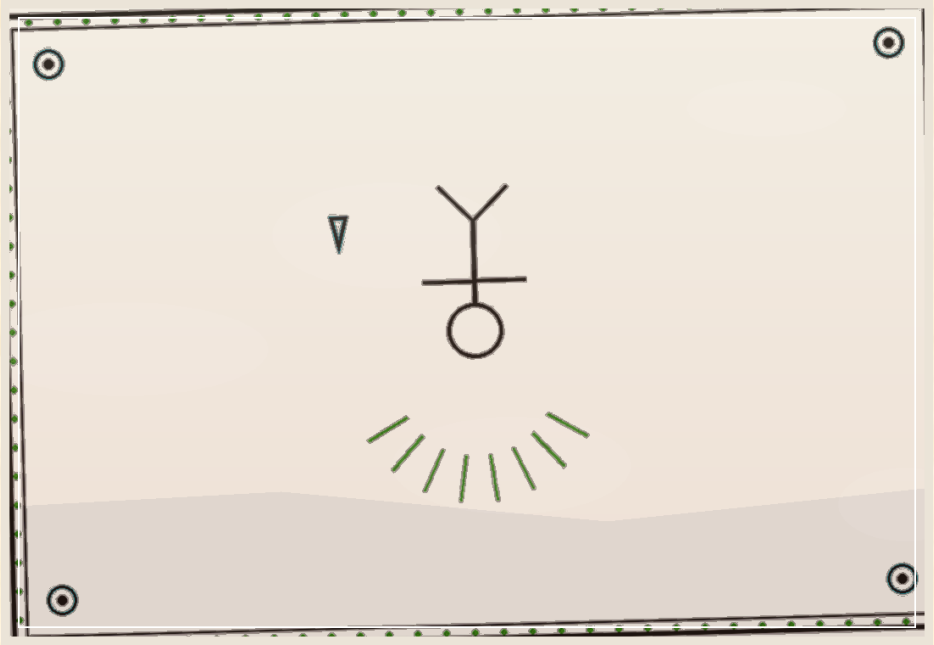

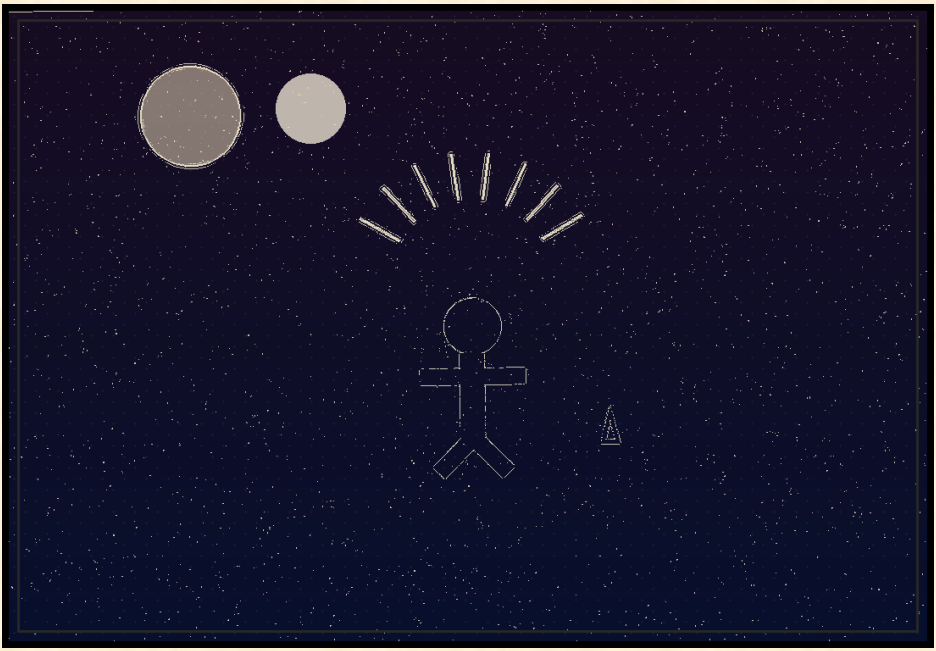

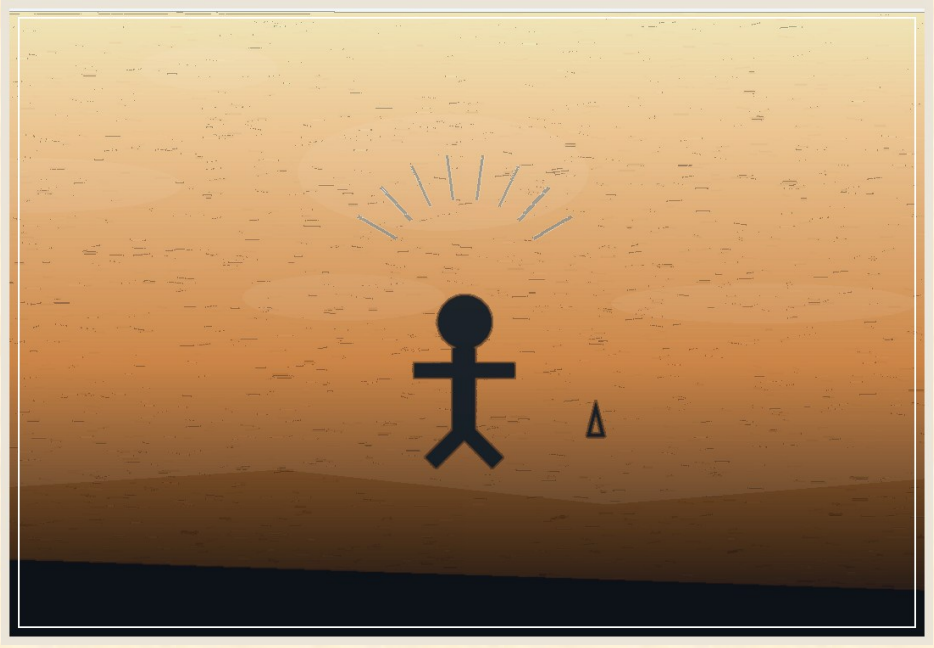

चित्र 24

जे स्त्री अपने उत्तर लेल पीड़ी खोदने छलि, से आब दोसराक उत्तर बनि गेलि। दुख जखन भक्तिमे ढलि जाइत अछि, तखन ओ सेवा बनि जाइत अछि — मोतीदाइ एकर जीवित गहमर छलीह।

उजैनीमे आइयो गहिल माताक पूजा होइत अछि, आ पूजामे मोतीदाइक नाम अबैत अछि। लोक कहैत अछि — माताक सभसँ पैघ भगतिन, जे देवीकेँ दू बेर इन्द्रक दरबार पठओलनि। आ जे केओ ओहि गहमरपर खाली कोराक दुख लऽ कऽ अबैत अछि, तकरा बूढ़ि-पुरनियाँ मोतीदाइक खिस्सा सुनबैत छथिन्ह — काननिहारकेँ ई बुझेबा लेल जे विधान जे नहि दैत अछि, से भक्ति दोसर रूपमे दऽ जाइत अछि। छह दिनक बेटा गेल — मुदा माए अमर भऽ गेलीह।

समाप्त

VIDEHA: विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका: **ISSN 2229-547X:** www.videha.co.in

राजा सलहेस

मोरंगक जन-राजा — तंत्र-विद्या आ न्यायक विजय

गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादक, विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका (since 2000)

ISSN 2229-547X

© Gajendra Thakur/ Preeti Thakur; गजेन्द्र ठाकुर सम्पादक, विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका (since 2000) ISSN 2229-547X

ई पोथी गजेन्द्र ठाकुर समग्रक अन्तर्गत संकलित अछि।

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक ISBN:978-93-5890-210-5

DESIGNED BY: AUM GAJENDRA THAKUR

उपक्रम : मोनक राजा

मोरंग, नेपालमे रहथि सलहेस — सुन्दर, वीर, आ दुसाध जातिक। ओ कोनो राजसिंहासनपर नहि बैसल छलाह — ओ छलाह मोनक राजा, जनताक हृदयसँ मिलल उपाधि, जे सभक विपत्तिमे सहायता दैत रहलाह।

ई गाथा ईर्ष्या आ न्यायक थिक — कोना एकटा तालुकदारक असूयासँ शुरू भेल कुचक्र अन्ततः प्रेम, तंत्र-विद्या, आ सत्यक विजयमे परिणत भेल।

अध्याय १ : दबनाक अस्वीकृत प्रेम

चित्र 1

मोरंग राजाक मालिन छलि दबना — सुन्दर, मुदा तेजस्वी। ओ सलहेससँ प्रेम करैत छलि, मुदा सलहेसक हृदय अपन प्रजाक सेवामे एतेक लीन छल जे दबना दिस हुनकर कोनो ध्यान नहि छलनि।

राजाक वैद्य सेहो दबनासँ प्रेम करैत छलाह — मुदा दबना ओकरा अस्वीकार कऽ देलक। ई अस्वीकृति वैद्यक लेल असहनीय भेल, आ ओ आत्महत्या कऽ लेलनि — एहि गाथाक पहिल दुखद मोड़, जे आगाँ चलि कऽ आरो जटिल परिस्थितिक बीज बनल।

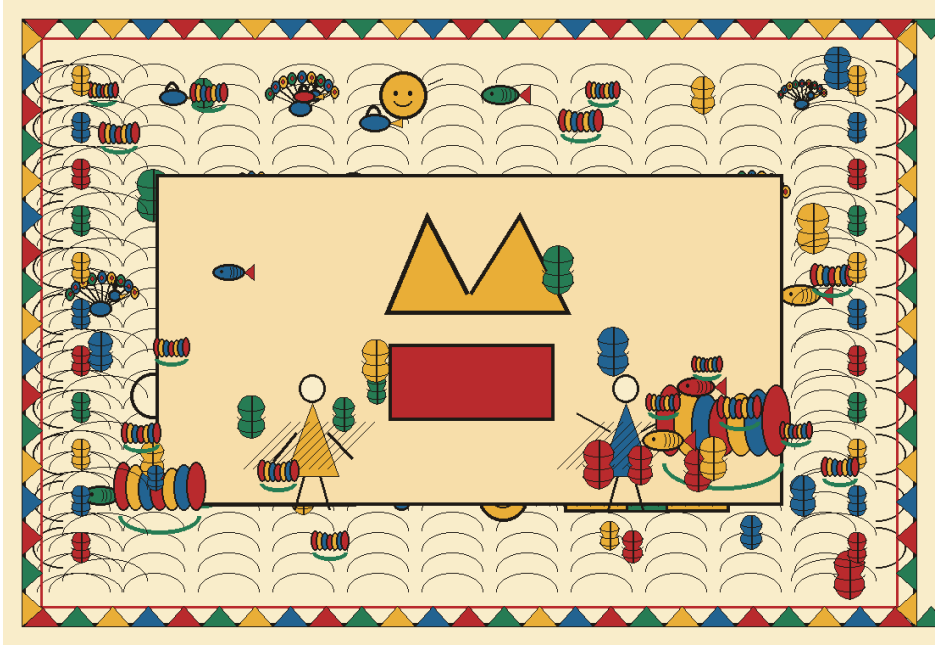

चित्र 2

दबना — जकर हृदय सलहेस लेल धड़कैत छल, मुदा जकरा प्रत्युत्तर नहि भेटैत छल — भीतरे-भीतर एकटा असन्तोष पोसैत रहलि। ई असन्तोष आगाँ चलि कऽ एकटा शक्तिशाली तांत्रिक कार्रवाइमे परिणत होएत।

सलहेस — जे मोरंगक तालुकदार नौरंगी बहादुर थापाक सिपाही छलाह — अपन सरलता आ न्यायप्रियतासँ जनताक हृदयमे राजाक सम्मान पाबि चुकल छलाह, भलहिं ओ कोनो सिंहासनपर नहि बैसल छलाह।

अध्याय २ : तालुकदारक ईर्ष्या

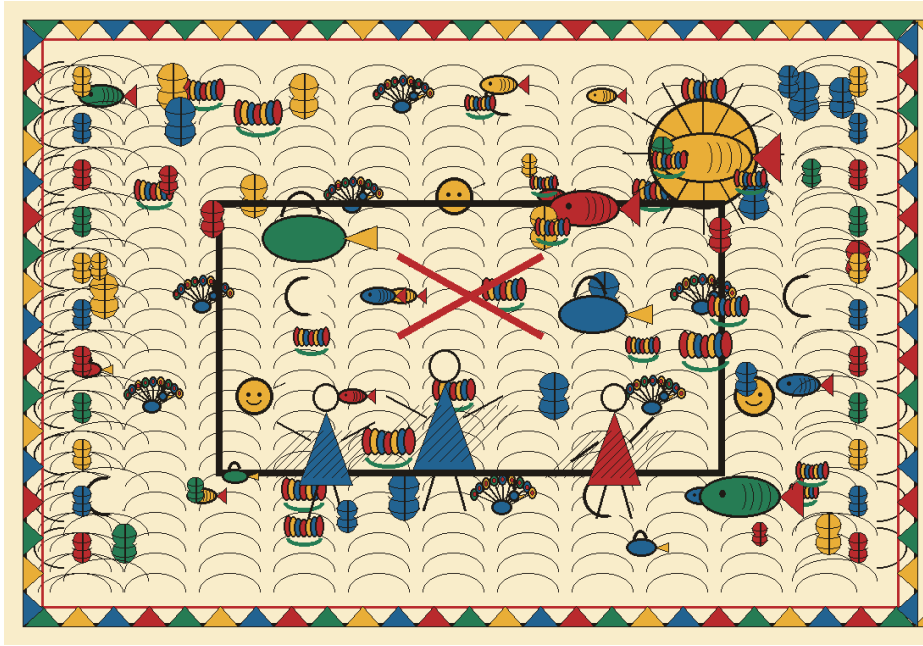

चित्र 3

सभ लोक सलहेसकेँ 'राजा' कहैत छलनि — ई सम्मान जनताक श्रद्धासँ स्वतः उपजल छल। मुदा ई तालुकदार थापाकेँ पसिन्न नहि पड़ल — एकटा साधारण सिपाहीकेँ राजाक उपाधि? ई ओकर अहंकारकेँ चोट पहुँचौलक।

एक दिन दरबारमे थापा सलहेसकेँ पुछलक — 'अहाँक नाम की?' सलहेस सरल उत्तर देलनि — 'हमर नाम छी राजा सलहेस।' ई उत्तर तालुकदारक क्रोधकेँ आरो भड़कओलक।

चित्र 4

थापा आदेश देलक — 'अहाँ अपन नाममे राजा नहि लगाऊ।' सलहेस समझौता करबाक कोशिश केलनि — 'ई पदवी छी, जन द्वारा देल पदवी। कोना छोड़ब एकरा? हम छोड़ियो देब, लोक त' कहबे करत!'

थापा हठ कएलक — 'त' लोककेँ मना कऽ दियौक!' सलहेस निरुत्तर भेलाह — 'लोककेँ कोना मना करबैक? लोकक मोन जे ओ ककरा की बजाओत!' ई तर्क-वितर्क सलहेसकेँ स्पष्ट कऽ देलक जे ई नोकरी आब निमहत नहि — आइ नामक बात, काल्हि किछु आर।

अध्याय ३ : मोरंग-त्याग

चित्र 5

सलहेस दरबारसँ निकलि गेलाह — असन्तुष्ट, मुदा शान्त। हुनकर पितियौत बहिन मुंगेरमे रहैत छलनि, आ बहिनोइ राज दरभंगाक नोकरीमे छलाह — ओतय शरणक विचार सलहेसक मोनमे उठल।

एम्हर कुसमी दबनाकेँ खबरि देलक — 'सलहेस मोरंग छोड़ि जा रहल अछि!' ई समाचार दबनाक हृदयमे हलचल मचा देलक — जकरा ओ चाहैत छलि, से हमेशाक लेल जाइत छल।

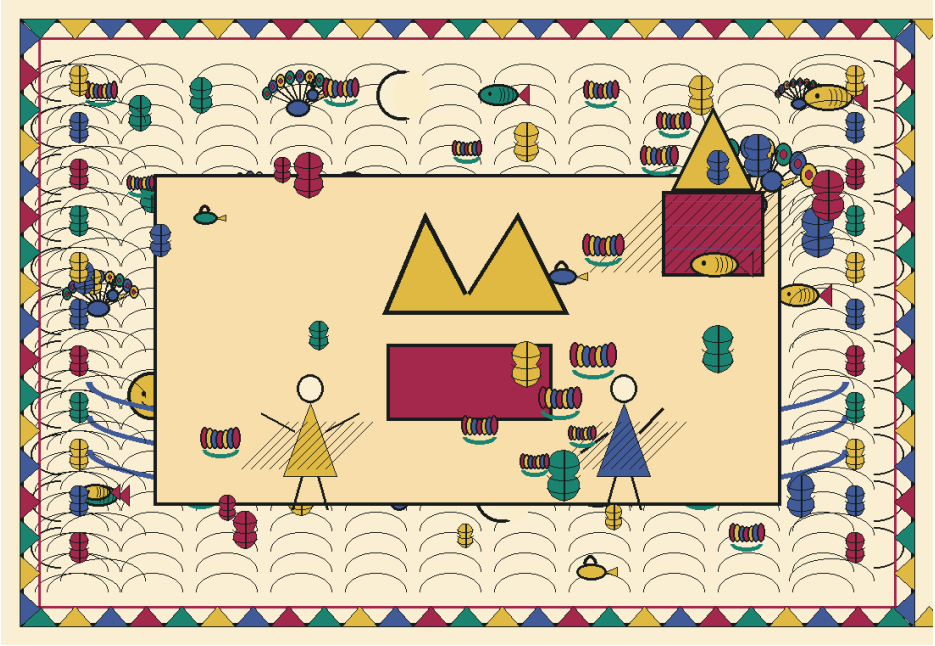

चित्र 6

दबना साधारण स्त्री नहि छलि — ओ कमरू-कमख्यासँ तंत्र-मंत्र सिखने छलि, शक्तिशाली तांत्रिक विद्याक ज्ञाता। ई क्षण ओकरा अपन विद्याक उपयोग करबाक अवसर देलक।

दबना सलहेस लग गेलि आ प्रस्ताव राखलक — 'हम राजाक दरबारमे सात सए सिपाहीक सरदार चूहड़मलकेँ हटबा कऽ अहाँकेँ सरदार बना देब!' ई प्रस्ताव सलहेसक भविष्य बदलबला निर्णय बनल।

अध्याय ४ : दबनाक जादू आ गीत

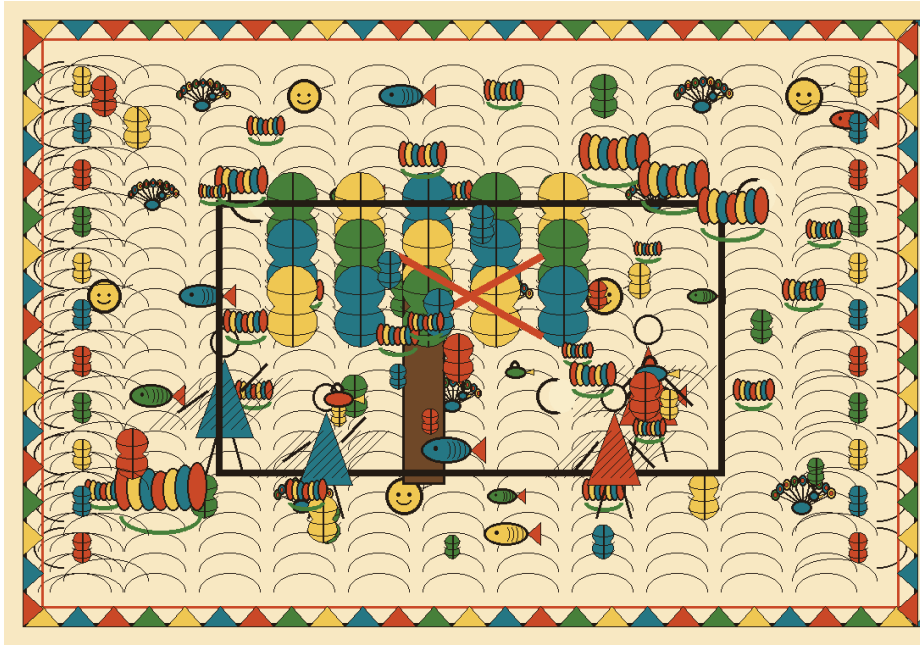

चित्र 7

दबनाक वचन सत्य भेल — बड़का जलसा भेल, आ दबना गीत गाबए लागलि, अपन हृदयक भाव व्यक्त करैत — 'रौ सुरहा, बारह बरस तोरा लेल आँचर बन्हलौं!' ई गीत ओकर बारह बरखक प्रतीक्षा आ प्रेमक गहराइ प्रकट करैत छल।

मुदा जे पद सलहेसकेँ भेटल, तकरासँ चूहड़मल — पूर्व सरदार — क्रुद्ध भेल। ओ बदलाक योजना बनओलक — चोरी! चूहड़मल राजाक नौ लाखक रानीक हार चोरा कऽ सलहेसक ओछैनमे नुका देलक।

चित्र 8

चूहड़मल फेर राजाक आगाँ उलटे आरोप लगओलक — 'सलहेसक घरक तलासी लेल जाए!' तलासीमे सलहेसक गेरुआक खोलसँ हार खसल — प्रमाण, सलहेस निर्दोष होइतो अपराधी बुझायल।

दबना ई अन्याय सहन नहि केलक। ओ काली मन्दिरमे तंत्र साधना शुरू केलक — भूत-प्रेतकेँ नोतलक, अपन विद्याक पूर्ण शक्ति लगबैत।

अध्याय ५ : सत्यक उद्घाटन

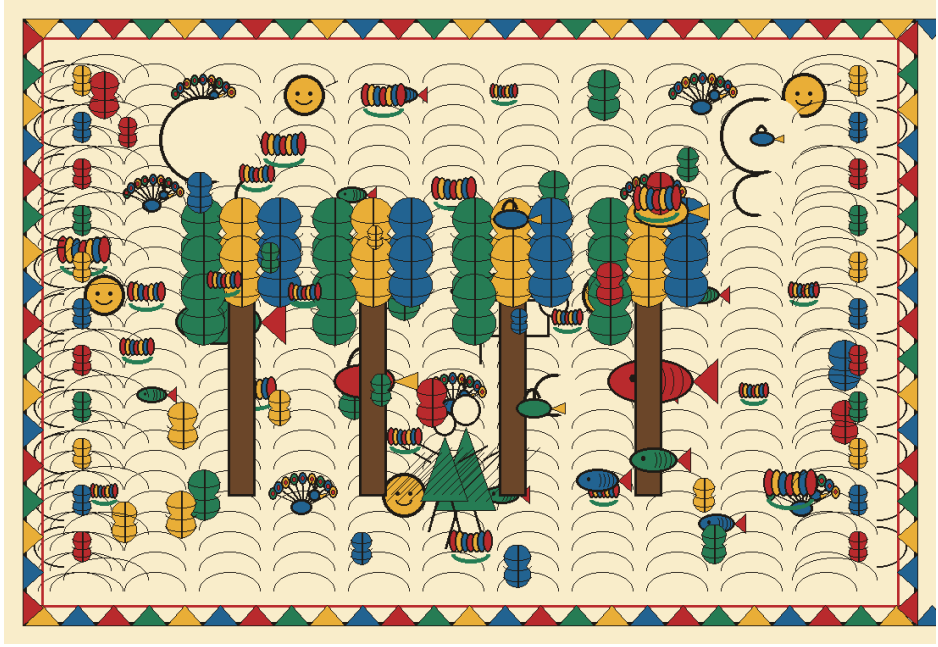

चित्र 9

दबनाक तंत्र-साधनाक शक्तिसँ चूहड़मल खून बोकरए लागल — भयंकर, अलौकिक प्रक्रिया, जकरा झेलब कोनो सामान्य दोषीक लेल असम्भव छल।

एहि यातनासँ त्रस्त चूहड़मल सभटा बकि देलक — चोरी, षड्यन्त्र, सलहेसकेँ फँसएबाक पूरा योजना। सत्य अन्ततः प्रकट भेल, दबनाक तांत्रिक शक्तिक बलपर।

चित्र 10

सलहेसकेँ जेलसँ छोड़ि देल गेल, आ हुनकर ओहदा बढ़ा देल गेल — न्यायक विजय भेल। चूहड़मलकेँ, जे षड्यन्त्रकारी छल, से जेल भेटलैक — अपराधक उचित दण्ड।

ई घटनाक्रम सलहेसक जीवनक ओ मोड़ छल जे दबनाक साहस आ तांत्रिक शक्ति बिनु सम्भव नहि छल। जे प्रेम एक दिन अस्वीकृत बुझायल छल, से अन्ततः न्यायक रक्षक बनल।

अध्याय ६ : विवाह आ मिलन

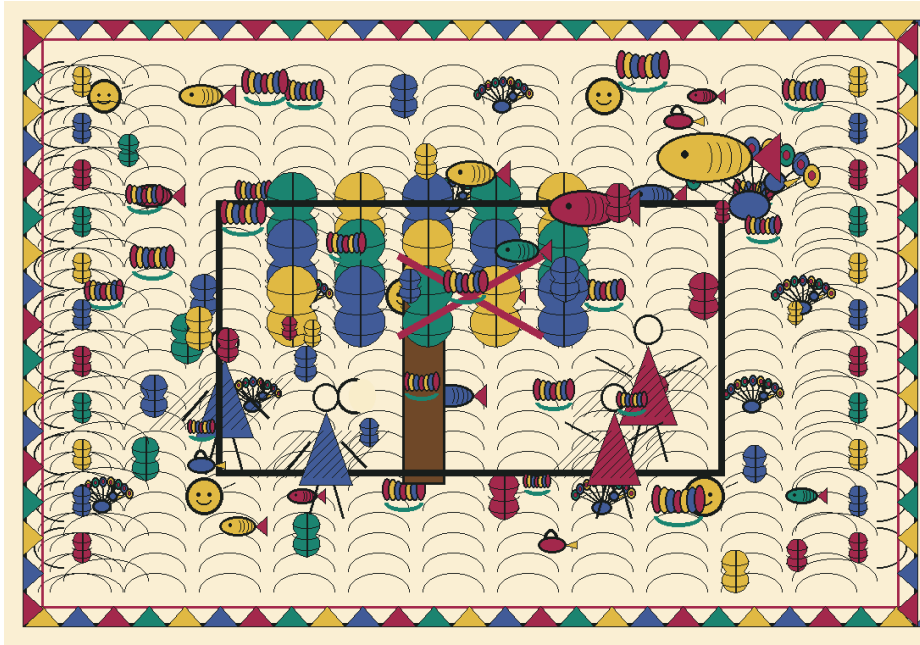

चित्र 11

सत्यक उद्घाटन आ न्यायक विजय पश्चात्, सलहेस अन्ततः दबनाक प्रेम आ बलिदानकेँ चिन्हलनि। जे स्त्री बारह बरख आँचर बन्हने प्रतीक्षा केलक, जकर तंत्र-विद्या सलहेसक जीवन आ सम्मान दुनू बचओलक, से आब सलहेसक हृदयमे अपन उचित स्थान पओलक।

दबना आ सलहेसक विवाह भेल — मोरंगक जनताक हर्षोल्लासक बीच। जे दुसाध सिपाही अपन न्यायप्रियतासँ 'राजा' उपाधि पओने छल, से आब दबनाक साथ अपन पूर्ण जीवन पओलक।

चित्र 12

दुनू विवाहोपरान्त खुशीसँ रहए लगलाह — तालुकदारक ईर्ष्या, चूहड़मलक छल, आ वैद्यक दुखद अन्तक बादो, अन्ततः सत्य आ प्रेम विजयी भेल।

राजा सलहेसक ई गाथा आइयो मिथिला-मोरंगक अंचलमे गाओल जाइत अछि — एकटा जन-राजाक कथाक रूपमे, जे सिंहासनसँ नहि, जनताक हृदयसँ राजा बनल छलाह, आ जकर न्यायप्रियता आ जकर प्रेमिकाक तांत्रिक शक्ति दुनू मिलि कऽ सत्यक रक्षा केलक।

अध्याय ७ : मोनक राजाक विरासत

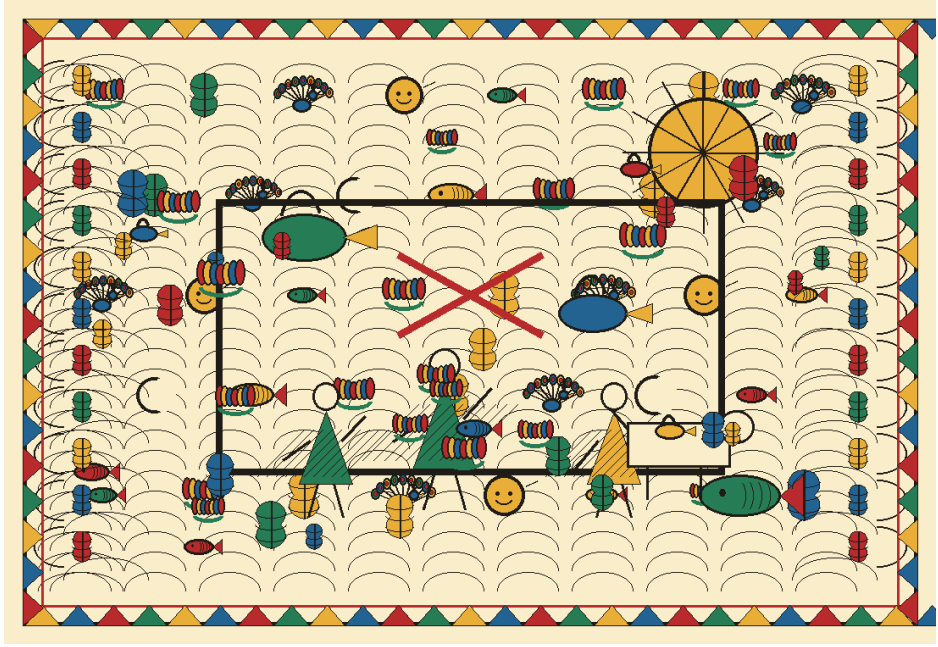

चित्र 13

राजा सलहेसक गाथा मिथिला आ मोरंगक अंचलमे खाली एकटा कथा नहि, एकटा जीवित परम्परा बनि गेल। सलहेस-गीत आइयो लोकगायक सभ गबैत छथि, आ हुनकर नाम सुनिते श्रोताक मोनमे न्याय आ प्रेमक ई गाथा जीवन्त भऽ उठैत अछि।

दुसाध समाजमे सलहेस विशेष श्रद्धाक पात्र बनलाह — एकटा एहन नायक जे जातिक सीमाकेँ पार कऽ जनताक हृदयसँ राजाक उपाधि पओलनि, आ जकर विजय बलसँ नहि, न्याय आ प्रेमक शक्तिसँ भेल।

चित्र 14

आ दबना? ओकर तांत्रिक शक्ति आ अटूट प्रेम आइयो लोककथामे स्मरण कएल जाइत अछि — एकटा एहन स्त्रीक रूपमे जे बारह बरखक प्रतीक्षाकेँ न्यायक हथियार बना देलक, आ जकर विद्या सत्यक रक्षाक साधन बनल।

आइयो मोरंगक कोनो गामक चौपालपर जखन सलहेस-गीतक धुन उठैत अछि, त' लोक कहैत अछि — 'ई वएह सलहेस छथि, जे मोनसँ राजा छलाह, आ मोने रहताह राजा सलहेस — सदा-सर्वदाक लेल।'

समाप्त

VIDEHA

विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका | ISSN 2229-547X | www.videha.co.in

बगियाक गाछ

चतुर बालक आ ठगिन डाइनक हास्य-रोमांचक गाथा

गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादक, विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका (since 2000)

ISSN 2229-547X

© Gajendra Thakur/ Preeti Thakur; गजेन्द्र ठाकुर सम्पादक, विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका (since 2000) ISSN 2229-547X

ई पोथी गजेन्द्र ठाकुर समग्रक अन्तर्गत संकलित अछि।

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक ISBN:978-93-5890-210-5

DESIGNED BY: AUM GAJENDRA THAKUR

उपक्रम : बगियाक गाछ

एकटा एहन गाछक खिस्सा, जे ने देखल गेल छल, नहिये सुनल — बगियाक गाछ। आ एहि गाछक कातमे बसैत छल एकटा एहन बालक, जकर चतुराइ ओकरा हर विपत्तिसँ बचा लेने छल।

ई गाथा हास्य आ रोमांच दुनूसँ भरल अछि — एकटा माएक ममता, एकटा बालकक बुद्धि, आ एकटा डाइन बुढ़ियाक छल, जकर अन्त ओकरे षड्यन्त्रसँ भेल।

अध्याय १ : मसोमातक बेटा

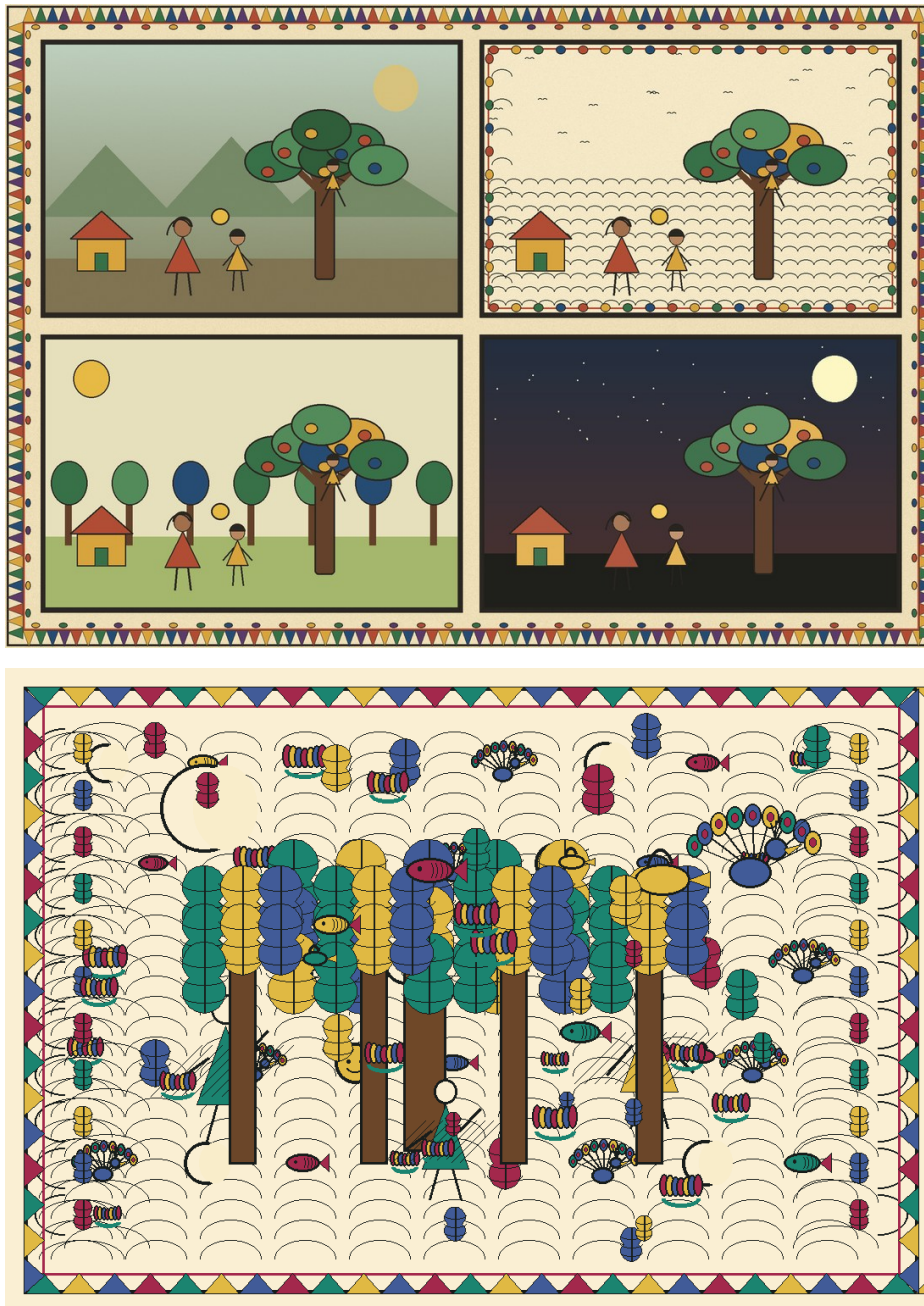

चित्र 1

एकटा मसोमात रहथि, आ हुनका एकेटा बेटा छलनि — बड्ड चुस्त, चलाक, आ बुद्धिमान। गरीब घर छल, मुदा माए-बेटाक प्रेम अपार छल।

एक दिन माए अपन बेटाकेँ बगिया आनि देलखिन्ह। बालककेँ बगिया बड्ड नीक लागल — एहन स्वाद, एहन आकार, जे ओकर मोन मोहि लेलक।

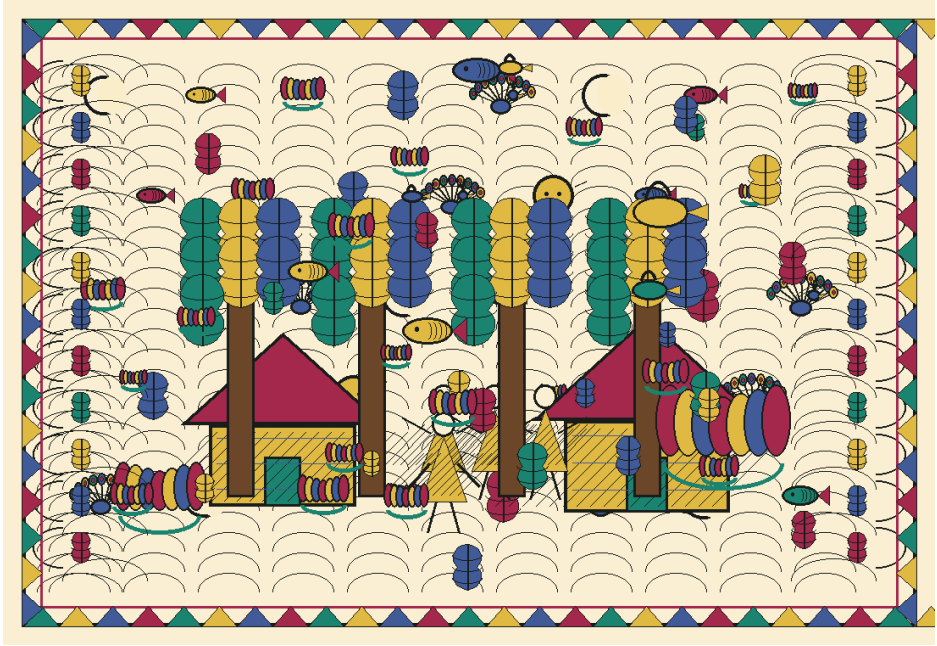

चित्र 2

बालक एकटा बगिया अपन बाड़ीमे रोपि देलक — बिनु ई बुझने जे ई की चमत्कार करत। किछु दिनमे ओतय एकटा गाछ जनमल — बगियाक गाछ, जे ने ककरो देखल छल, ने सुनल!

माए-बेटा दुनू ओहि अद्भुत गाछक खूब सेवा करए लगलाह — पानि दैत, माटि साफ करैत, प्रेमसँ पोसैत। कनेक दिनमे गाछमे खूब बगिया फड़ए लागल। बालक सभ दिन गाछपर चढ़ि बगिया तोड़ि खाइत — ओकर सभसँ प्रिय काज बनि गेल छल ई।

अध्याय ३ : डाइनक नजरि

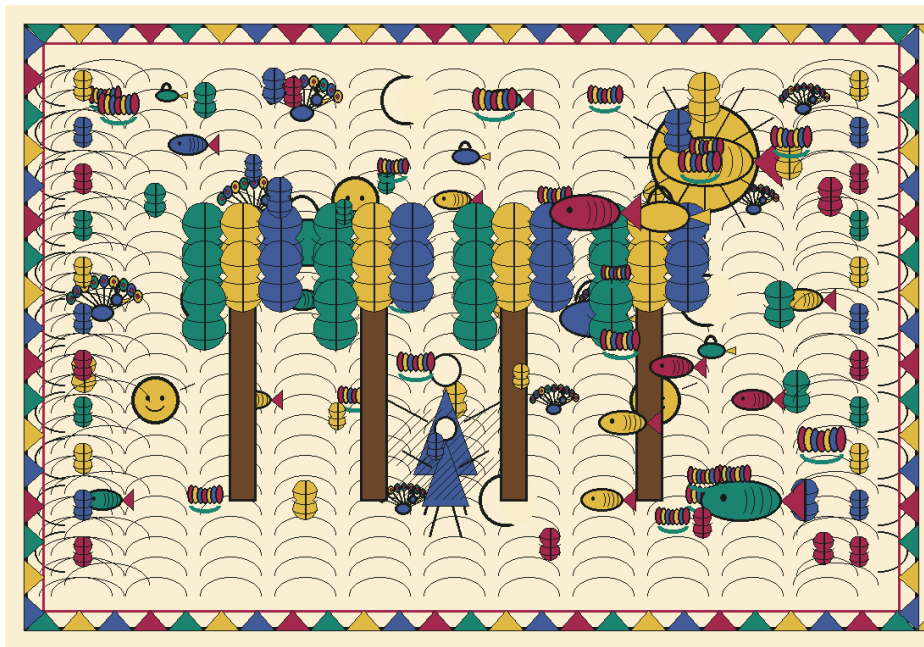

चित्र 3

एक दिन एकटा डाइन बुढ़िया ओही रस्तासँ जा रहल छलि। ई डाइन कोनो साधारण बुढ़िया नहि छलि — ओकरा मनुक्खक मसुआइ खाएमे बड्ड नीक लगैत छल, आ ओ सदिखन एहन शिकारक तलाशमे रहैत छलि।

बगियाक गाछपर चढ़ल बालककेँ देखि डाइनक मोन लुसफुस करए लागल — 'केहन हृष्ट-पुष्ट बालक! एकरा घर लऽ जा मसुआइ बनाएब!' ओकर आँखिमे लोभ चमकि उठल।

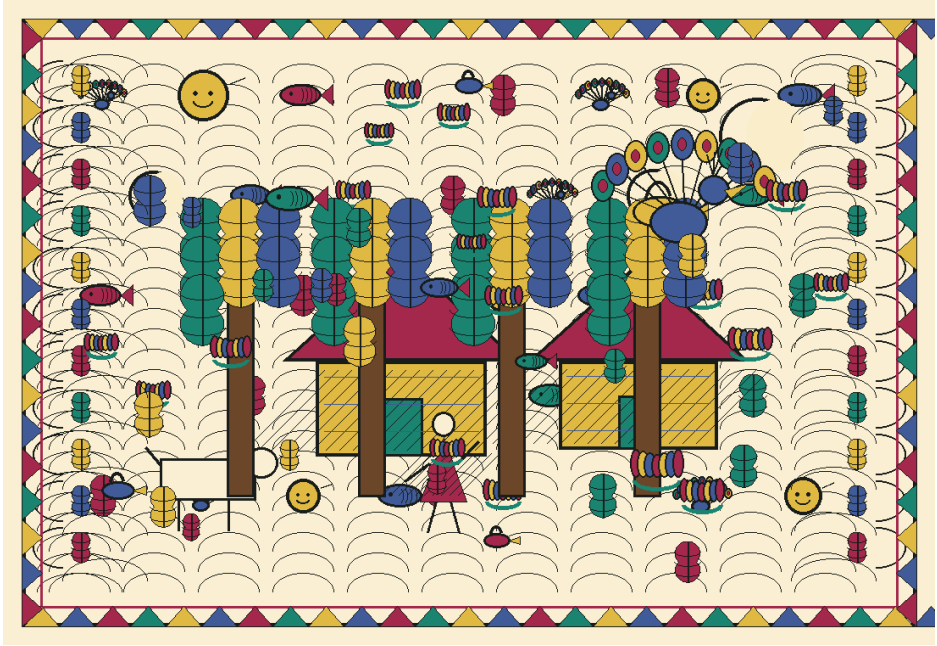

चित्र 4

डाइन तुरत एकटा मोनसूबा बनओलक — कोना कऽ एहि बालककेँ फुसिया कऽ अपन बोरामे बन्न करी। ओ चालाकीसँ बालकक लग बढ़ल।

बच्चाकेँ असगर देखि डाइन मीठ स्वरमे बाजलि — 'बौआ, एकटा बगिया हमरा नहि देब? बड्ड भूख लागल अछि।' ओकर स्वरमे एहन याचना छल जे कोनो निर्दोष बच्चा तुरत विश्वास कऽ लेत।

अध्याय ३ : तीन बहन्ना

चित्र 5

सोझ बालक — शंकासँ रहित — बगिया डाइनक हाथपर देबए लागल। मुदा डाइन तुरत बहन्ना बनओलक — 'बौआ हम हाथसँ कोना लेब, बगिया हथाइन भऽ जाएत!'

बालक फेर बगिया ओकर माथपर राखए लागल। डाइनक फेर बहन्ना — 'हँ हँ माथपर नहि राखू, मथाइन भऽ जाएत!' — ओकर सभ बहन्नाक पाछाँ एकटा योजना छल, बालककेँ लग आनबाक।

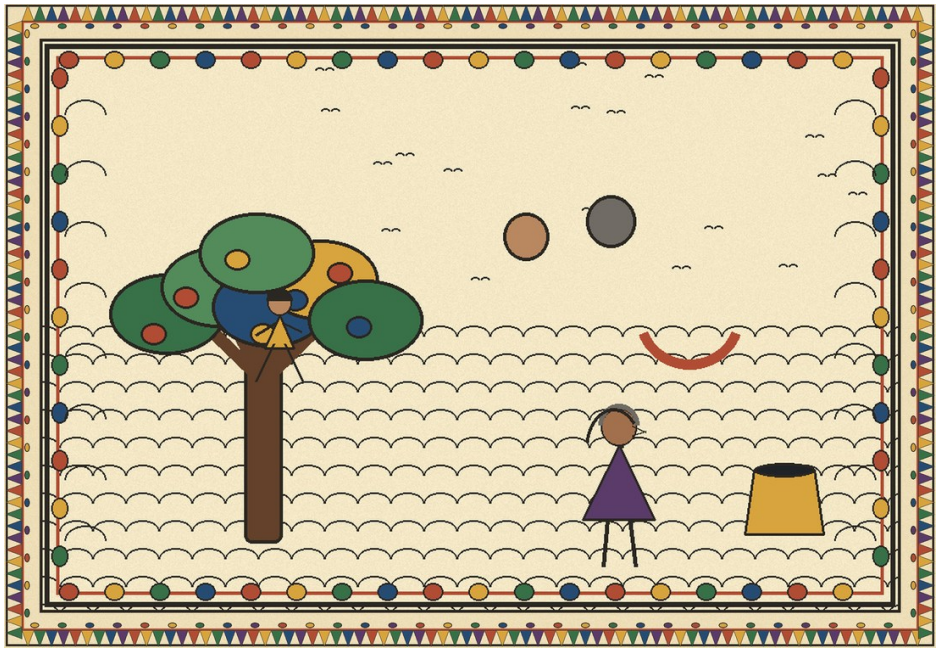

चित्र 6

बालक — जे दस बुधियारक एक बुधियार छल — फेर खोइछमे बगिया देबए लागल। डाइन तेसर बेर बहन्ना बनओलक — 'ई की करैत छी बौआ, बगिया खोँछाइन भऽ जाएत, अहाँ झुकि कऽ बोरामे दऽ दिअ!'

मुदा बालक तँ छल गोनू झाक मूल-गोत्रेक — ओ तुरत बुझि गेल। 'नञि गए बुढ़िया। तोँ हमरा बोरामे बन्द कऽ भागि जेमह। माए हमरा ठग सभसँ सचेत रहबाक हेतु कहने अछि!' — बालकक सतर्कता प्रशंसनीय छल, मुदा डाइनक चालाकी अइ सँ बेसी गहींर छल।

अध्याय ४ : बोरामे बन्न

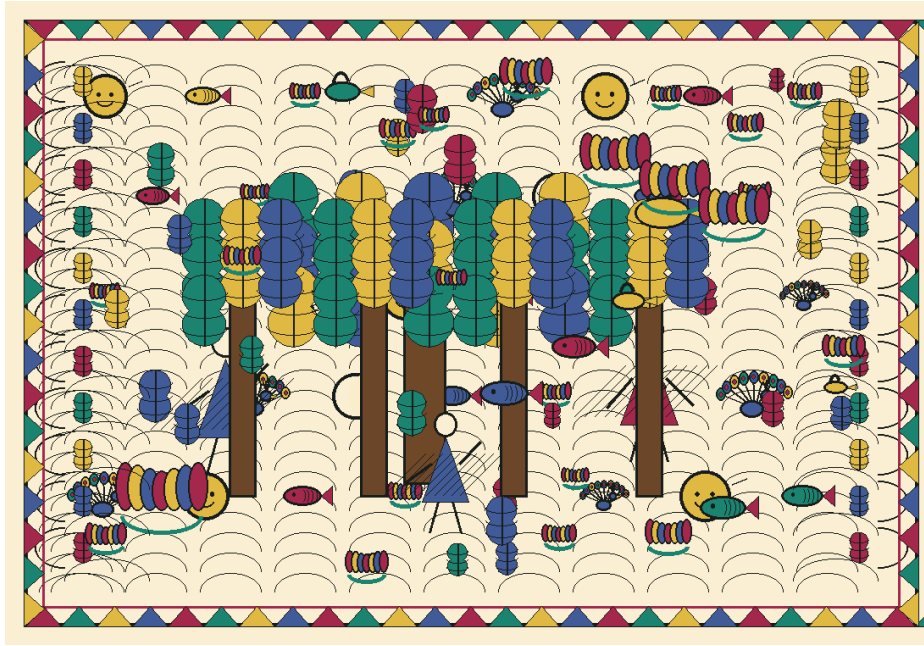

चित्र 7

डाइन — जे स्वयं ठगिन बुढ़िया छलि — तुरत फेर बोली-बानीसँ बालककेँ मना लेलक। मीठ बात, विश्वासक वादा, आ अन्ततः बालक झुकि गेल।

जखने बालक झुकल, डाइन ओकरा फुर्तीसँ बोरामे कसि कऽ बन्न कऽ देलक। बालकक चतुराइ एक क्षणक असावधानीमे हारि गेल। डाइन प्रसन्नतासँ बिदा भेलि, अपन शिकार लऽ कऽ।

चित्र 8

रस्तामे थाकि कऽ डाइन एकटा गाछक छाहरिमे बैसि गेलि — बोरा ओकर लग राखि। यात्राक थकानसँ कनेक कालमे ओकरा आँखि लागि गेल — निन्न ओकरा जकड़ि लेलक।

बालक — जे बोरामे बन्न छल, मुदा हिम्मत नहि हारने छल — मौका देखि कोनहुना कऽ बोरासँ बाहर निकलि गेल। ओकर बुद्धि फेर जागृत भऽ गेल छल, आ अवसरक तलाशमे ओ पूर्ण सतर्क छल।

अध्याय ५ : माटि-पाथरक चालि

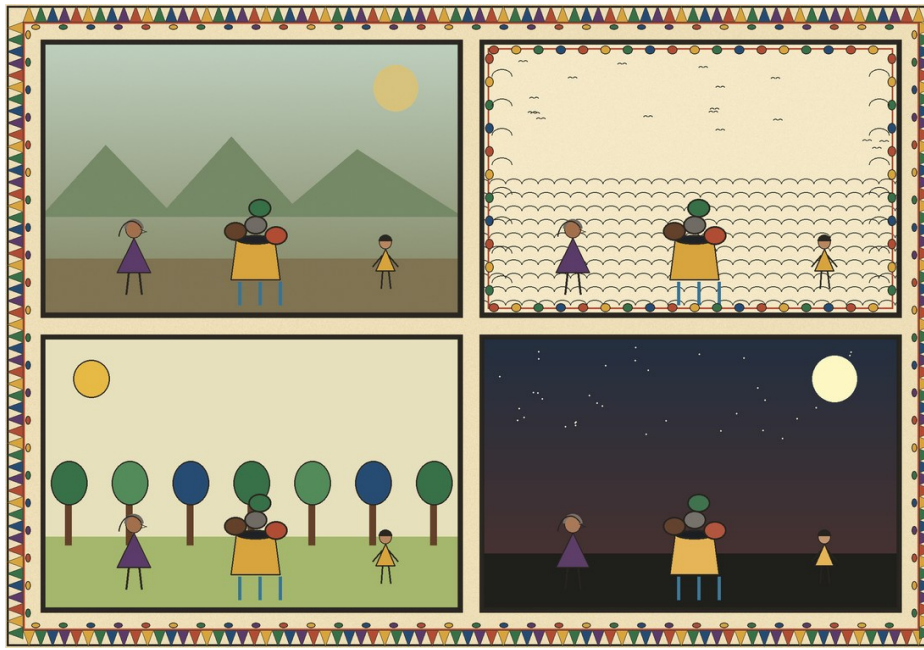

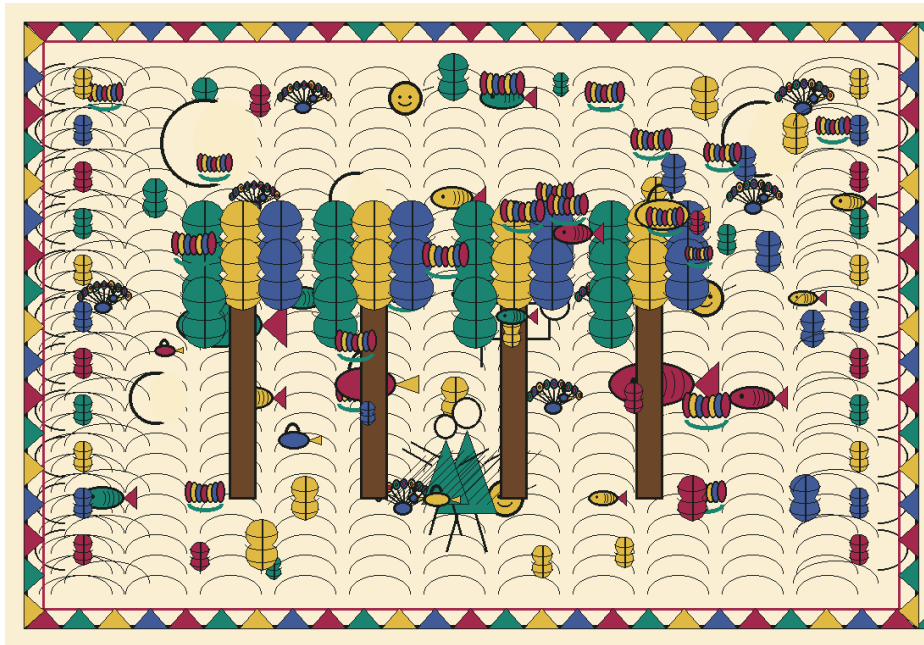

चित्र 9

बाहर निकलि बालक चारू कात तकलक — कोन उपाय करी, जाहिसँ ई डाइन आगाँ धोखा खाए? ओकर नजरि भीजल माटि, पाथर, आ काँट-कूसपर पड़ल।

बालक चतुराइसँ भीजल माटि, पाथर, आ काँट-कूस बोरामे भरि देलक — ठीक ओतबे भार, जतबे ओकर देहक भार रहितए। फेर बोराकेँ पहिनेक जकाँ बान्हि, ओ ओतयसँ पड़ा गेल।

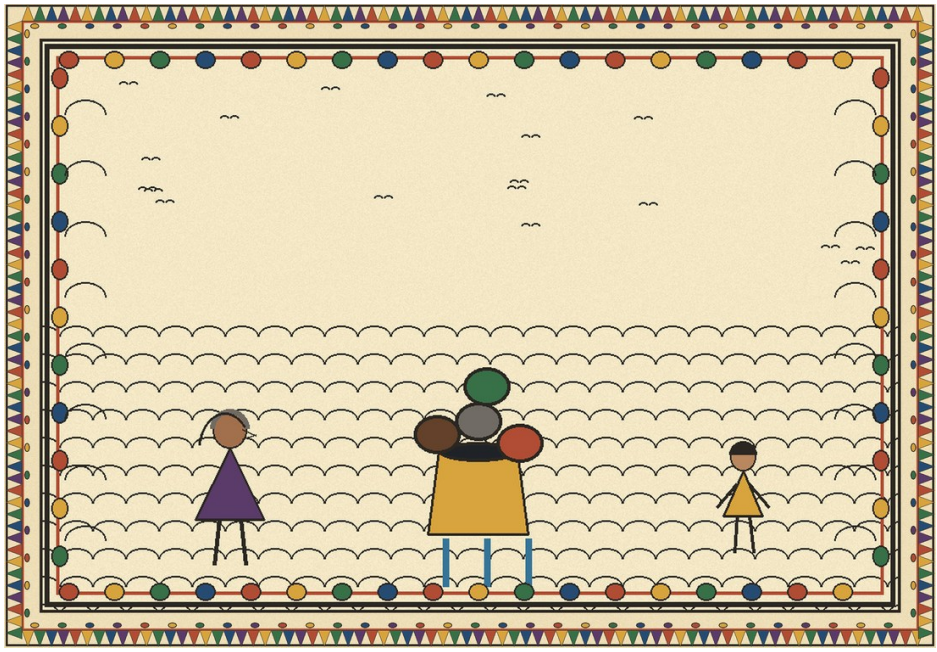

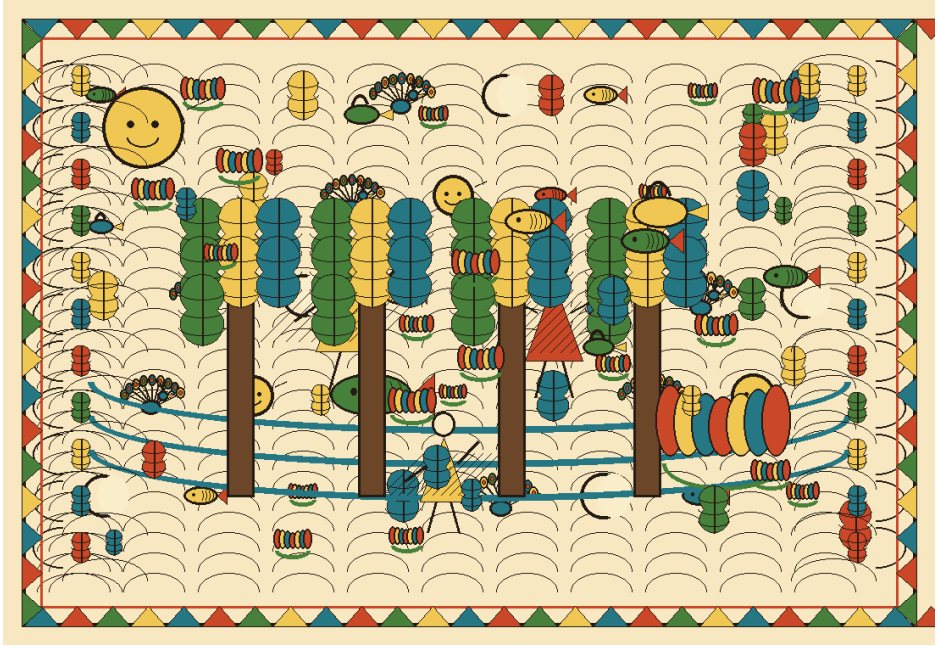

चित्र 10

डाइन जखन सूति कऽ उठलि आ बोरा उठा आगाँ बढ़लि, त' ओकरा बोरा भरिगर बुझायल। ओ मोने-मोन प्रसन्न भऽ गेलि — 'हृष्ट-पुष्ट मसुआइ खएबाक मौका बहुत दिनपर भेटल अछि!'

रस्तामे भीजल माटिसँ पानि खसए लागल त' डाइनकेँ लगलैक जे बालक लगही कऽ रहल अछि। ओ हँसैत कहलक — 'माथपर लघुशंका कऽ रहल छह बौआ? कोनो बात नहि, घरपर तोहर मसुआइ बना कऽ खायब हम!' — डाइनक अज्ञानता आ बालकक चतुराइक ई विरोधाभास हास्यक चरम छल।

अध्याय ६ : घर धरिक धोखा

चित्र 11

कनेक कालक बाद काँट डाइनकेँ गरए लागल। ओ फेर बालककेँ -जे असल मे माटि-पाथर छल- सम्बोधित करैत कहलक — 'बौआ, बिट्टू काटि रहल छी? कोनो बात नहि, कतेक काल धरि काटब!'

डाइनक एकटा बेटी छलैक। गाम पहुँचि डाइन ओकरा उत्साहसँ कहलक — 'आइ एकटा मोट-सोट शिकार अछि बोरामे! तैयार रहह!'

चित्र 12

माए-बेटी जखन उत्सुकतासँ बोरा खोललक, त' निकलल माटि, काँट, आ पाथर — बालक नदारद! सभटा योजना भरभरा गेल — डाइनक मुँह क्रोध आ लज्जासँ लाल भऽ गेल।

मुदा डाइन हारि माननिहार नहि छलि। 'कोनो बात नहि' कहि, ओ भेष बदलि फेर बगियाक गाछ तर पहुँचि गेलि — दोसर प्रयासक लेल तैयार, पहिल विफलताकेँ बिसरैत।

अध्याय ७ : दोसर प्रयासक असफलता

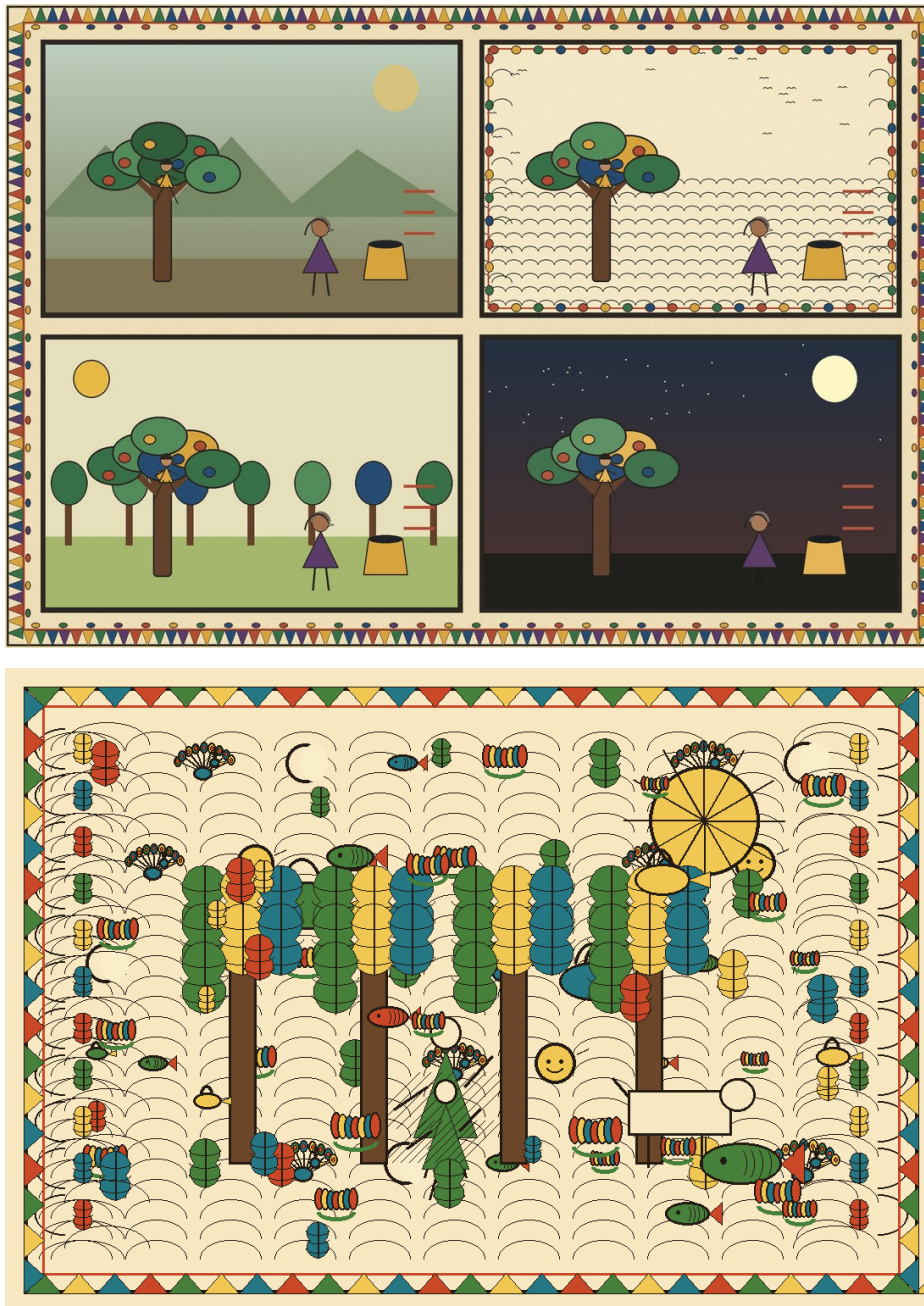

चित्र 13

एहि बेर बालक डाइनकेँ नहि चीन्हि सकल — भेष एतेक बदलल छल। मुदा जखन ओ झुकि कऽ बगिया बोरामे देबाक गप कहलक, त' बालककेँ फेर आशंका भेल — पुरनका अनुभवक स्मृति जागल।

'गए बुढ़िया, तोँही छँह ठगिन बुढ़िया!' बालक साहससँ आरोप लगओलक। मुदा डाइन तुरत सप्पत खएलक — 'नहि बौआ, हम ठगिन नहि छी!' — झूठक ई सप्पत अतेक विश्वासजनक छल जे बालक फेर मानि गेल।

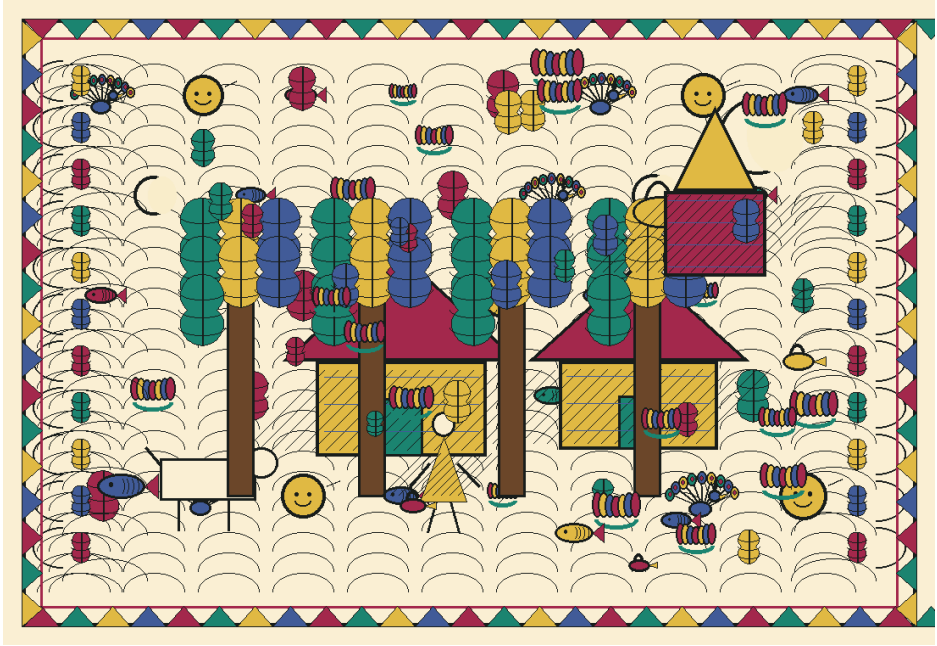

चित्र 14

बालक झुकि बगिया बोरामे देबए लागल — फेर वैह पुरान चालि दोहराओल गेल। मुदा एहि बेर डाइन कोनो जोखिम नहि उठओलक — रस्तामे कतहु नहि रुकल, सोझे घर पहुँचल।

बेटी लग बोरा राखि, डाइन नहाइ-सोनाइ लेल तुरत चलि गेलि। कोनो अवसर नहि छोड़ल गेल। एहि बेर सतर्कता पूर्ण छल।

अध्याय ८ : झाँटाबला रहस्य

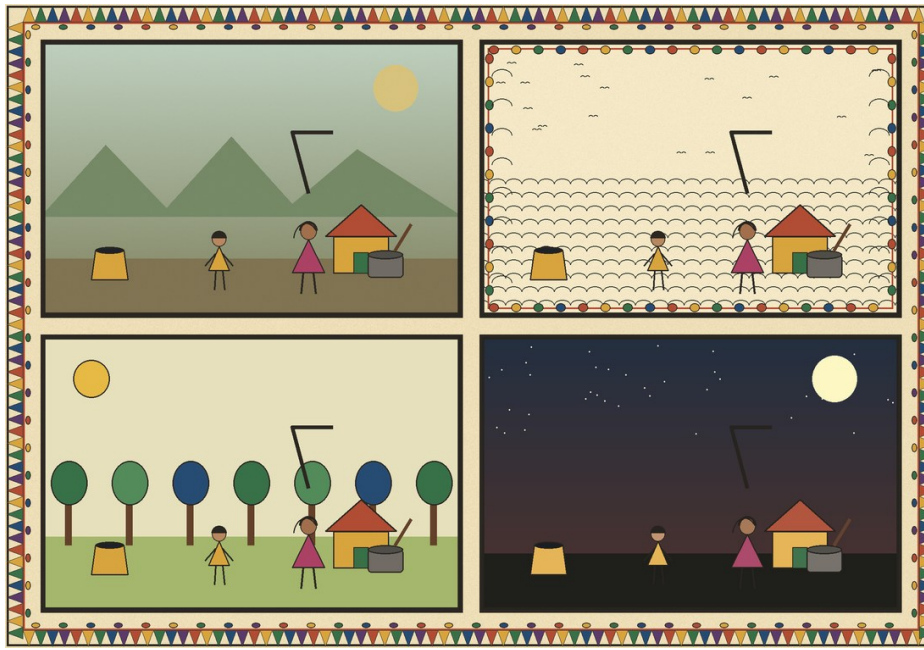

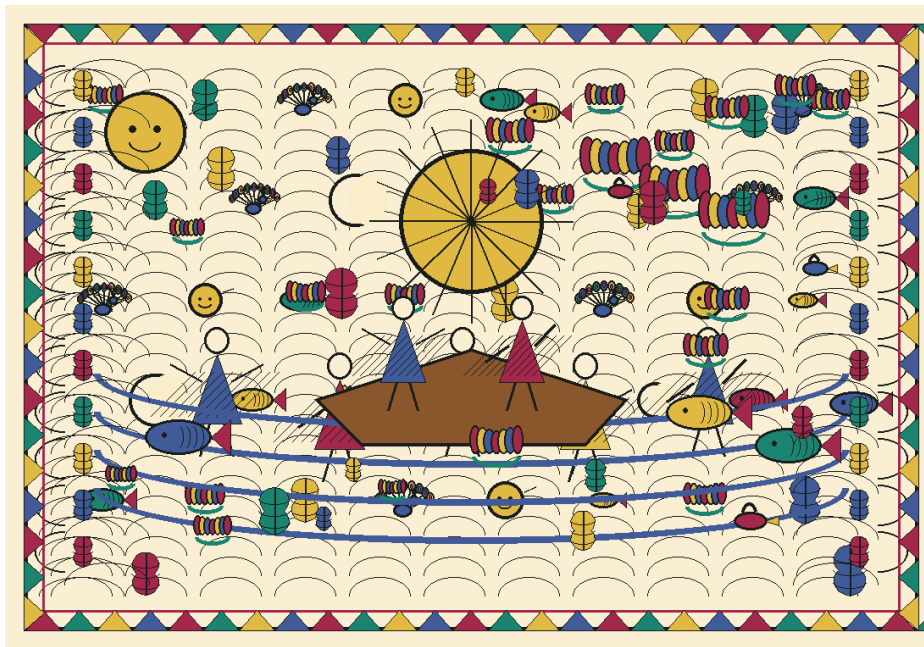

चित्र 15

बेटी उत्सुकतासँ बोरा खोललक — मुदा भीतरसँ माटि-पाथर नहि, एकटा झाँटाबला बच्चा निकलल! बेटी अकचकाइत पुछलक — 'हमर केश नमगर नहि अछि किएक?'

बालक — जे आब पूर्ण रूपसँ चतुराइक खेलमे उतरि चुकल छल — तुरत उत्तर देलक — 'अहाँक माए अहाँक माथ ऊखड़िमे दऽ समाठसँ नहि कूटने होयतीह। तेँ!' — ई उत्तर दस होसियरक एक होसियार बालककेँ शोभा देत।

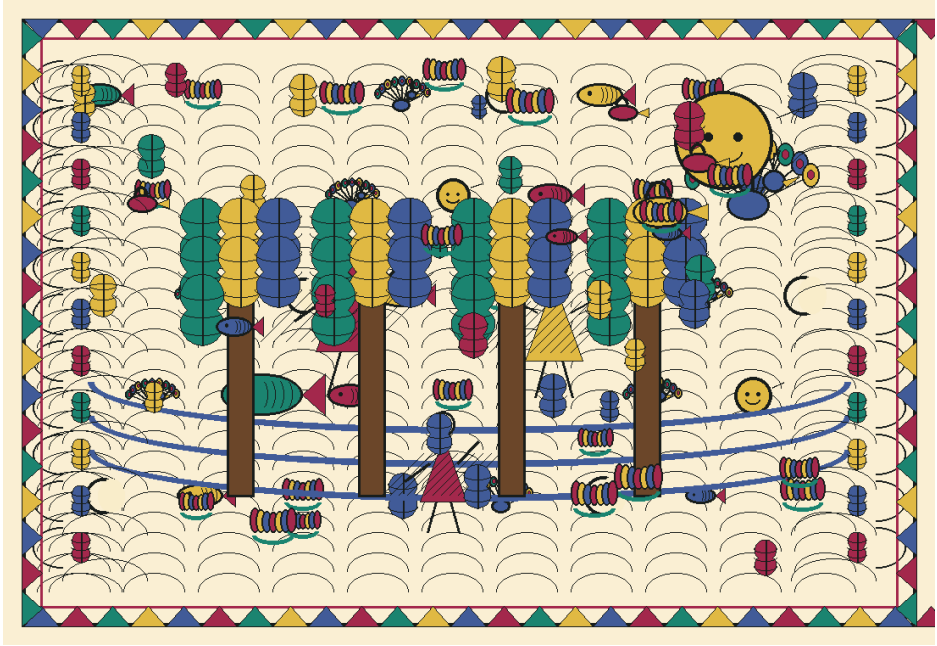

चित्र 16

डाइनक बेटी — सोझगर आ अनजान — एहि झूठ उत्तरपर विश्वास कऽ लेलक। ओ अपन केश बढ़ेबाक लोभमे अपन माथ ऊखड़िमे राखि देलक, आ बालककेँ समाठसँ कूटबाक अनुमति देलक।

बालक — आत्मरक्षा आ चतुराइक चरम प्रदर्शन करैत — ओहि क्षणक अवसर लेलक। ई गाथाक सभसँ अन्हार क्षण छल, जकर विस्तार गाथा नहि करत — मुदा एतबा स्पष्ट अछि जे बालक अपन प्राण बचा, डाइनक बेटीकेँ छलमे फँसा, अपन जान बचा लेलक।

अध्याय ९ : बिलाड़िक चेतौनी

चित्र 17

जखन डाइन पोखरिसँ नहा कऽ आयल, त' ओकर बेटी -जे आब बालकक चालिसँ चलि रहलि छल- डाइनक आगाँ खेनाइ परसि देलक — बिनु ई बुझने जे ई खेनाइ की छल।

जखने डाइन खेनाइपर बैसलि, त' लगमे बैसल एकटा बिलाड़ि बाजि उठल — 'म्याँऊ! अपन धीया अपने खाँऊ! म्याँऊ!' — पशुक ई चेतावनी सत्यकेँ उजागर करैत छल, जे मनुक्खक आँखि नहि देखि पओलक।

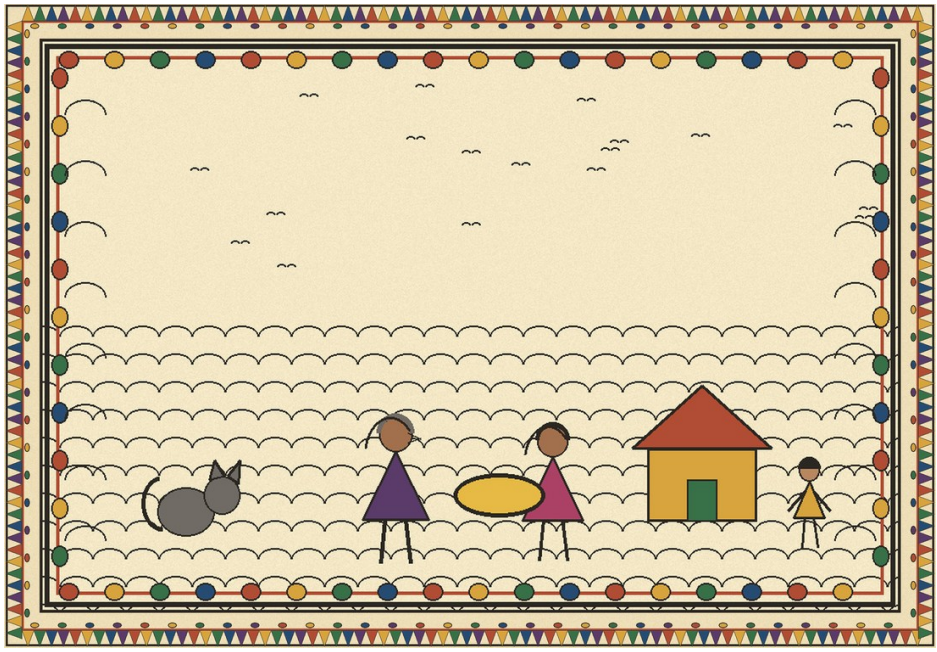

चित्र 18

डाइन अचरजसँ पुछलक — 'बेटी, एकरा मासु नहि देलहुँ की? तेँ बाजि रहल अछि।' बेटी बिलाड़िक आगाँ मासु राखि देलक, मुदा बिलाड़ि छूलक तक नहि — पशुक सहज ज्ञान मनुक्खक भ्रमसँ ऊपर छल।

आब डाइनक माथ घूमल — शंका आ क्रोध दुनू। ओ बेटीकेँ पुछपाछ केलक, आ सत्य आस्ते-आस्ते स्पष्ट होमए लागल — मुदा बहुत देरी भऽ चुकल छल।

अध्याय १० : डाइनक अपने कर्मफल

चित्र 19

डाइन जखन असलक पूर्ण अनुमान लगओलक — जे बालक फेर एक बेर धोखा दऽ चुकल अछि, आ एहि बेर ओकर बेटीक संग किछु भयंकर घटित भेल अछि — त' ओकर क्रोध सीमा तोड़ि गेल।

डाइन बेटीकेँ पुनः सोर केलक — मुदा एहि बेर उत्तर बालकक स्वरमे आयल, समाठ लऽ कऽ। ई गाथाक ओ क्षण छल जतय छल अपन जालमे स्वयं फँसि गेल — जे षड्यन्त्र ओ बालकक विरुद्ध रचने छलि, से अन्ततः ओकरे परिवारपर पड़ल।

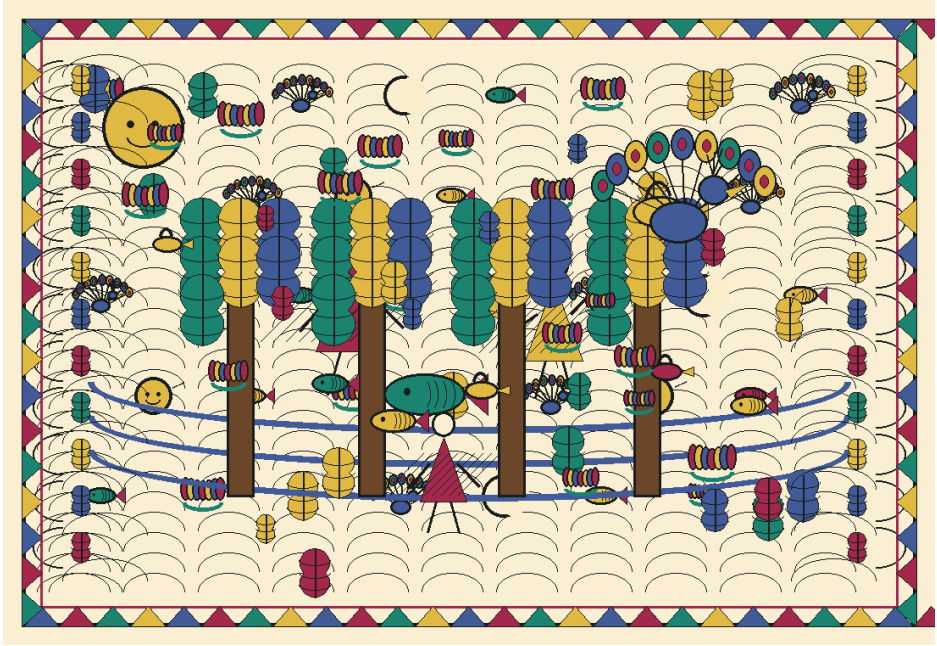

चित्र 20

गाथा एहि दुखद घटनाक विस्तृत वर्णन नहि करत — खाली ई एतबा कहैत अछि जे डाइनक स्वयंक कुकर्म ओकरे आगाँ आबि खसल। जे बालककेँ खएबाक लोभ केने छलि, से अपन आ अपन बेटीक हानिक रूपमे मूल्य चुकौलक — नियतिक ई न्याय कठोर मुदा स्वाभाविक छल।

आ बालक? ओ फेर अपन बगियाक गाछ लग घुरि आयल। गाछपर चढ़ि, पहिने जकाँ निश्चिन्त भऽ, ओ बगिया तोड़ि खाए लागल — बड्ड नीक लगैत छलैक ओकरा बगिया। सभटा विपत्ति, सभटा छल-कपट पार कऽ, बालक अपन साधारण, मीठ जीवनमे फेर घुरि आयल — चतुराइ आ साहसक ई गाथा एतय समाप्त होइत अछि, जतयसँ शुरू भेल छल: गाछ, बगिया, आ एकटा निर्भय बालक।

समाप्त

VIDEHA

विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका | ISSN 2229-547X | www.videha.co.in

बहुरा गोढ़िन नटुआदयाल

कमला-बलानक तट पर तंत्र-नृत्य आ बलिदानक गाथा

गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादक, विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका (since 2000)

ISSN 2229-547X

© Gajendra Thakur/ Preeti Thakur; गजेन्द्र ठाकुर सम्पादक, विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका (since 2000) ISSN 2229-547X

ई पोथी गजेन्द्र ठाकुर समग्रक अन्तर्गत संकलित अछि।

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक ISBN:978-93-5890-210-5

DESIGNED BY: AUM GAJENDRA THAKUR

उपक्रम : कमला-बलानक तट

कमला आ बलान धाराक संगममे बसल अछि एकटा एहन गाथा, जाहिमे नृत्य आ जादू, प्रेम आ प्रतिशोध, आ अन्ततः बलिदान — सभटा एक संग गुंथल छल। एक कात छलि बहुरा गोढ़िन — केवटीक बेटी, हक्कलि, कमरूसँ सीखल जादूक स्वामिनी। दोसर कात छलाह नटुआ दयाल — मिथिला राज्यक भरौड़क राजकुमार, जे नृत्य सिखबाक क्रममे तांत्रिक बनि गेलाह।

ई गाथा जटिल अछि — जेना कमला-बलानक धार स्वयं जटिल अछि, कैक मोड़ लेने। एहिमे राजकुमारक साधना अछि, बहुराक क्रोध अछि, आ अन्तमे एकटा एहन बलिदान, जकर वर्णन आइयो साओन-भादवक रातिमे कमला-बलानक तटपर सुनाइ पड़ैत अछि।

अध्याय १ : बहुरा गोढ़िन आ नटुआ दयाल

चित्र 1

कमला-बलानक कातमे, बखरी-बेगूसरायक अंचलमे, रहैत छलि बहुरा गोढ़िन — एकटा केवटीक बेटी, नर्त्तकी, आ जादूक ज्ञाता। ओ हक्कलि छलि, ओकर जादू कमरू-कामरूपसँ सीखल, बड्ड शक्तिशाली।

मिथिला राज्यक भरौड़क राजकुमार छलाह दुलरा दयाल — जे नृत्यक प्रति आकर्षित भऽ बहुरा लग नृत्य सीखए आयल। बहुरासँ नृत्य सीखलाक बाद सभ ओकरा 'नटुआ' नामसँ पुकारए लगलाह — नटुआ दयाल।

चित्र 2

नटुआ दयाल बहुरा गोढ़िनक प्रशंसक छलाह — मुदा ई प्रशंसा कलाक नहि, प्रेमक छल — ओ बहुराक पुत्रीसँ प्रेम करैत छलाह। ई प्रेम आगाँ चलि कऽ पूरा गाथाक केन्द्र बनल।

नटुआ दयाल स्वयं तांत्रिक बनि गेल छलाह — नृत्यक संगे-संगे तंत्र-विद्याक साधना सेहो अर्जित केलनि। हुनक गुरु छलाह मंगल — एकटा सिद्ध पुरुष, जिनक शक्ति अद्भुत छल — ओ आकाशमे बिनु खुट्टी धोती टाँगि सुखाबथि!

अध्याय २ : बहुराक शक्ति आ क्रोध

चित्र 3

बहुरा गोढ़िनक शक्ति असाधारण छल — ओ गाछकेँ हँकैत छलि। जकरा संग झगड़ा भऽ जाए, ओकरा ओ सुग्गा बना अपन पिंजरामे पोसि लैत छलि — क्रोध आ शक्तिक ई मिश्रण बहुराकेँ भयभीत करैवला बनओने छल।

बहुरा कमलाक कात रहैत छलीह आ भजन गबैत छलीह — 'कमलेक आसन, ओहीमे बास हे कमला मैय्या।' ओकर भक्ति आ शक्ति दुनू कमला मैयाक प्रति समर्पित छल।

चित्र 4

बहुरा अपन वरकेँ मारि जादू सिखने छलि — ई तथ्य ओकर चरित्रक जटिलता देखबैत अछि: ओ प्रेममयी सेहो छलि, आ भयंकरो।

जखन नटुआ दयाल — जे राजकुमार सेहो छलाह — बहुराक पुत्रीसँ विवाहक प्रस्ताव राखलनि, त' बहुरा ठुकरा नहि सकलि — राजकुमारक प्रस्ताव अस्वीकार करब कठिन छल। मुदा जखन बरियाती दरबज्जा लागल, त' कोनो कहा-सुनी भऽ गेल, आ बहुरा क्रोधित भऽ सभकेँ बत्तु बना देलक!

अध्याय ३ : व्यापारीक कुचक्र

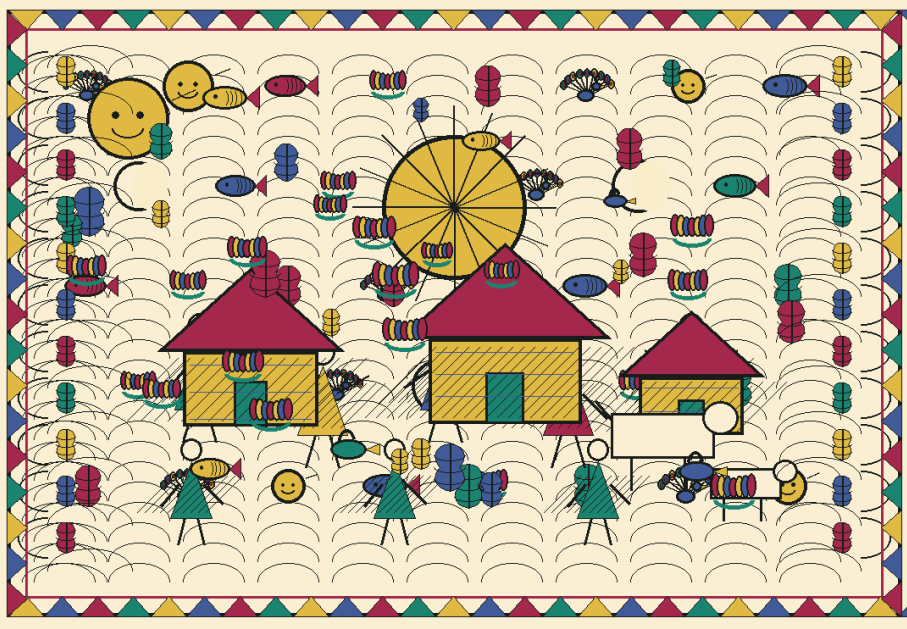

चित्र 5

एहि उपद्रवमे मंत्री मल्लक एक आँखिक रोशनी खतम भऽ गेल — बहुराक जादूक प्रकोप निर्दोषोपर पड़ल। 'आहि रे बा' — पीड़ाक ई शब्द गाथामे बेर-बेर गूँजैत अछि, दुखक गहराइ देखबैत।

एहि सभटा उपद्रवक पाछाँ एकटा कुचक्र छल — व्यापारी जयसिंह, जे बहुराक बेटीपर मोहित छल, ओकरे षड्यन्त्र छल जे एहि पूरा घटनाक्रमकेँ जटिल बनओलक। स्वार्थ आ वासना बेशीकाल सत्य आ प्रेमक बीच बाधा बनि जाइत अछि।

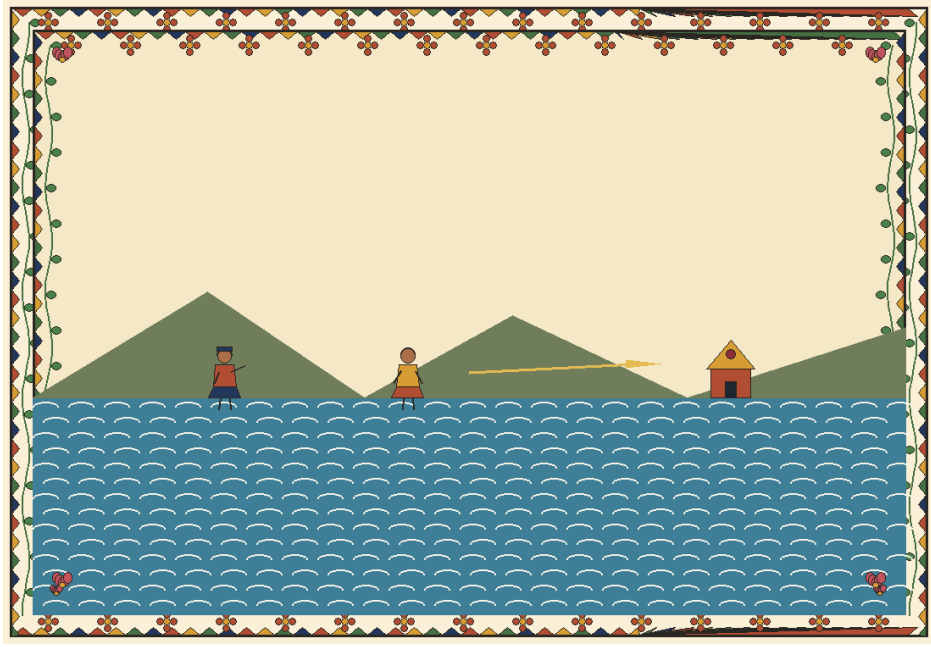

चित्र 6

'आहि रे बा' — फेर एक बेर पीड़ाक ई पुकार गूँजल, ई संकेत करैत जे स्थिति आरो बिगड़ल। एहि उलझनसँ बाहर निकलबाक एकमात्र रस्ता छल — उच्चतर साधना, गहींर तांत्रिक शक्ति।

नटुआ दयाल अपन गुरु मंगल लग गेलाह, समाधानक खोजमे। गुरुक आदेश स्पष्ट छल — 'जो कामाख्या, सीखय लेल षट् नृत्य आ जादू।' ई आदेश नटुआकेँ एकटा नव, कठिन साधनाक मार्गपर अग्रसर केलक।

अध्याय ४ : कामाख्याक साधना

चित्र 7

नटुआ दयाल कामाख्या गेलाह — तंत्र-विद्याक प्रसिद्ध केन्द्र। ओतय चण्डिका मंदिरमे योगिनी सभसँ षट्नृत्य सिखलनि — छह प्रकारक दिव्य नृत्य, जकर शक्ति साधारण नृत्यसँ बहुत ऊपर छल।

फेर आदेश भेल — सर्रैया ग्रामक भुवन मोहिनीसँ षट् नृत्यक एक अंग सिखबाक। नटुआक साधना क्रमशः गहींर आ जटिल होइत गेल, सभ चरणमे नव ज्ञान आ शक्ति अर्जित करैत।

चित्र 8

सर्रैया ग्रामक सिद्ध देवी छलीह वागेश्वरी — मुदा ओतय नरबलि चढ़ैत छल! दैत्य सभ अबैत छल! ई साधना-स्थल अत्यन्त भयावह छल, मुदा नटुआ निर्भय भऽ आगाँ बढ़ला।

एहि भयावह वातावरणमे नटुआ राजकुमार सिद्ध नृत्य 'अनहद' आ 'आज्ञा चक्र' सिखलनि — तंत्रक अत्यन्त उच्च स्तरक साधना। गुरु करिया जादूकेँ काटय बला मंत्र फुकलनि राजकुमारक कानमे — रक्षाक अन्तिम कवच।

अध्याय ५ : सूखल धार

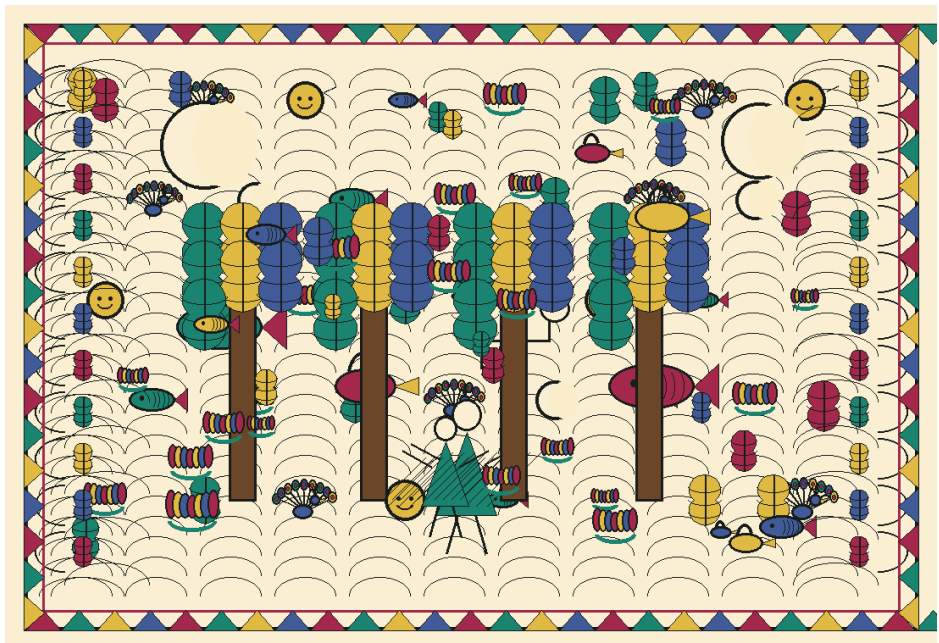

चित्र 9

साधना पूर्ण कऽ नटुआ दयाल कमला-बलान लग आयल — अपन गन्तव्य दिस, अपन प्रेम आ अपन दायित्व दुनू पूरा करबाक लेल। मुदा बहुरा — जे अखनहुँ क्रोधित छलि — कमला धारक पानि सुखा देलक!

राजा -नटुआक पिता आ राज्यक शासक- जूकियाक गुप्तचरीसँ पता लगा बहुराकेँ पकड़ि अनलक। मुदा बहुरा चतुराइसँ दोष राजकुमारपर मढ़ि देलक — 'यज्ञ भेल तैयो कमलामे पानि नहि आयल, नटुआ पठेलक सभटा पानिकेँ पताल?'

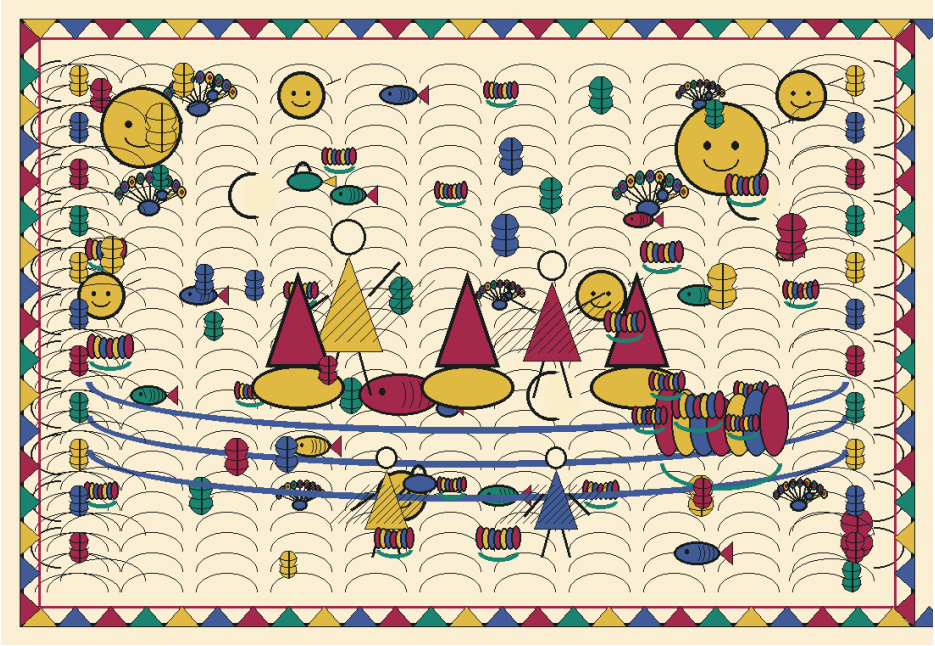

चित्र 10

ई आरोप गम्भीर छल — राजकुमारपर कमलाक पानि पातालमे भेजबाक इल्जाम! सत्य आ असत्यक बीचक ई उलझन नटुआकेँ फेर संकटमे धकेललक, भलहिं ओ निर्दोष छल।

नटुआकेँ पकड़ि आनल गेल — आरोप लगलापर। मुदा नटुआ अपन नृत्यक शक्तिसँ कमलाकेँ 'जलाजल' कऽ देलनि — अपन निर्दोषताक प्रमाण दैत। मुदा एहि विजयक क्षणमे सेहो नटुआ बहुरासँ माफी माँगलनि — क्षमाशीलता आ विनम्रताक ई भाव नटुआक चरित्रक विशेषता छल।

अध्याय ६ : बरियातीक तैयारी

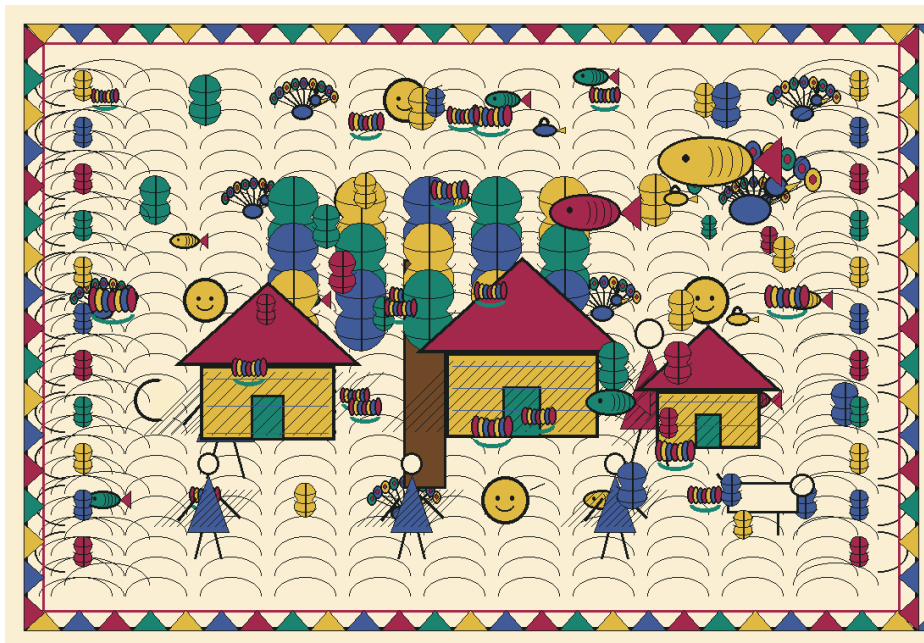

चित्र 11

बहुरा नटुआक ई विनम्रता आ शक्ति दुनू देखि प्रभावित भेलि। ओ कहलनि — 'आब तोँ भेलह हमर बेटीक योग्य! आबह बरियाती लऽ कऽ।' अन्ततः बहुराक हृदय पिघलल, आ विवाहक अनुमति भेटल।

नटुआ बरियाती लऽ कऽ पहुँचल — प्रसन्नता आ उत्साहक बीच। तीन टा पान -शुभ कार्यक प्रतीक- अएलैक — एक कमलाक पानिक हेतु, दोसर बहुराकेँ माफ करबाक हेतु, आ तेसर ओकर बेटीसँ व्याह करबाक हेतु।

चित्र 12

ई तीन पान तीन विजयक प्रतीक छल — प्रकृतिपर, क्रोधपर, आ प्रेमपर। नटुआ तीनूटा पान उठओलनि, आ शुरू भेल गीत-नाद — विवाहक उल्लासमय क्षण।

मुदा एहि उत्सवक बीच एकटा साधारण घटना — नटुआकेँ पियास लागल, आ ओ अपन शिष्य झिलमिलकेँ इनार पर पठओलनि। ई छोट घटना आगाँ चलि कऽ एकटा पैघ त्रासदीक संकेत बनि गेल।

अध्याय ७ : डोरीक रहस्य

चित्र 13

झिलमिल इनार पर पानि भरए गेल, मुदा डोरी छोट भऽ गेलैक — पानि धरि नहि पहुँचल। ई एकटा साधारण असुविधा जकाँ बुझायल, मुदा एहिमे कोनो अदृश्य शक्तिक खेल छल।

अपने नटुआ पानि भरबाक लेल इनार गेलाह — आ ई निर्णय गाथाक अगिला मोड़क कारण बनल। जखन नटुआ गेलाह, त' डोरी अपने पैघ भऽ गेलैक — जेना कोनो अदृश्य हाथ ई सभटा नियन्त्रित कऽ रहल हो।

चित्र 14

एहि बीच फूलमती — नटुआक पहिल पत्नी — ओतय उपस्थित छलि, अपन पतिक प्रतिभासँ प्रसन्न।

बहुरा एहि बीच एकटा आर काज केलक — मल्ल मंत्रीक एक आँखिक रोशनी जे खतम भऽ गेल छल, ओकरा ठीक कऽ देलक — अपन पूर्व क्रोधक प्रायश्चित्तक रूपमे। ई देखबैत अछि जे बहुरा हृदयसँ दयालु छलि, खाली क्रोधमे भयंकर बनि जाइत छलि।

अध्याय ८ : कमलाक तटपर विवाह

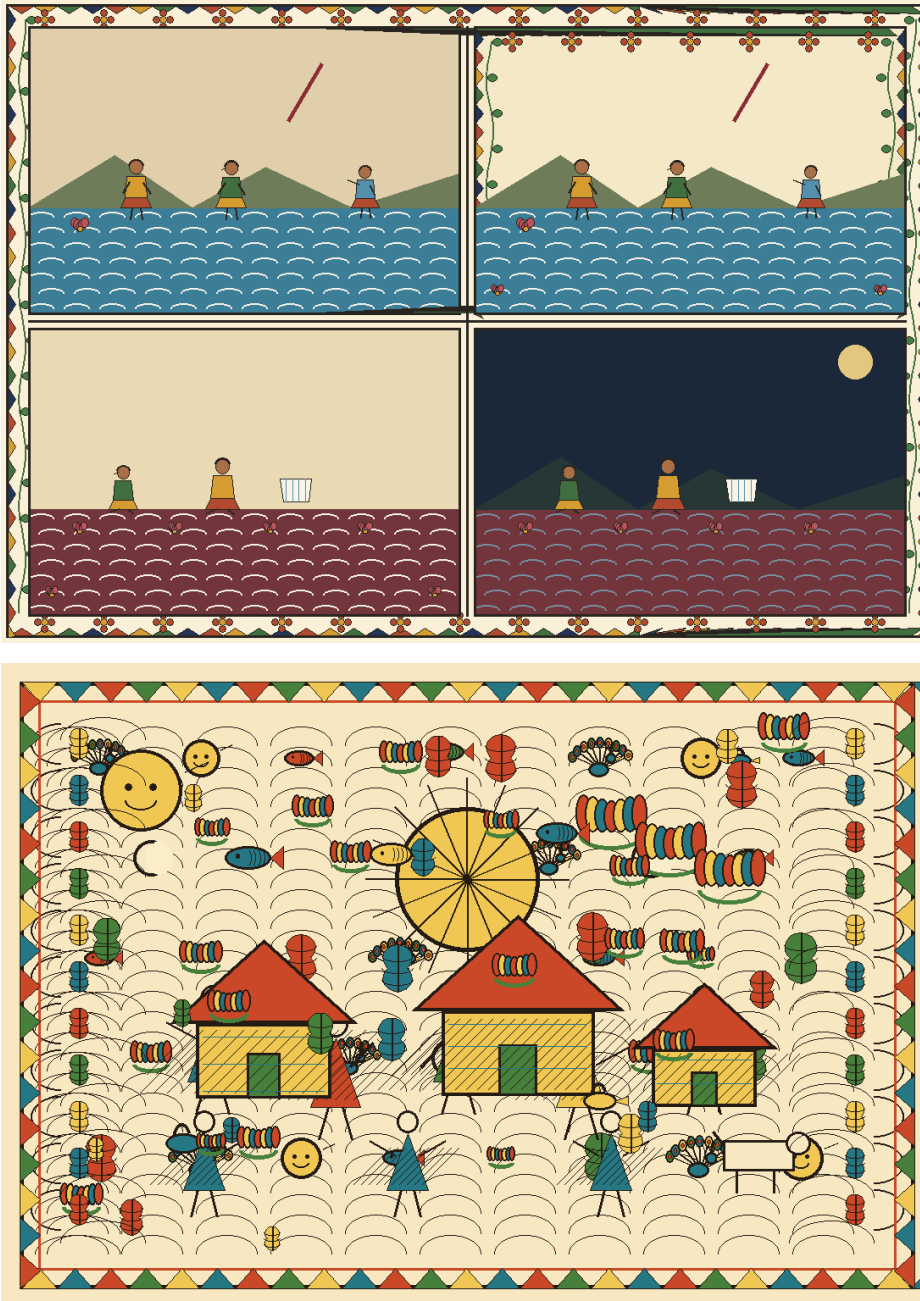

चित्र 15

नटुआ बहुराक बेटी संग कमला धारक तटपर पहुँचल — विवाहक अन्तिम विधिक लेल। सभ किछु शुभ लागि रहल छल, प्रसन्नताक वातावरण छल।

मुदा तखने — 'आहि रे बा!' — फेर एक बेर विपत्तिक पुकार गूँजल। नटुआकेँ चक्कू मारल गेल — बहुरासँ दूर भेल ओकर अपने शिष्य द्वारा! विश्वासघातक ई क्षण गाथाक सभसँ दुखद मोड़ अछि।

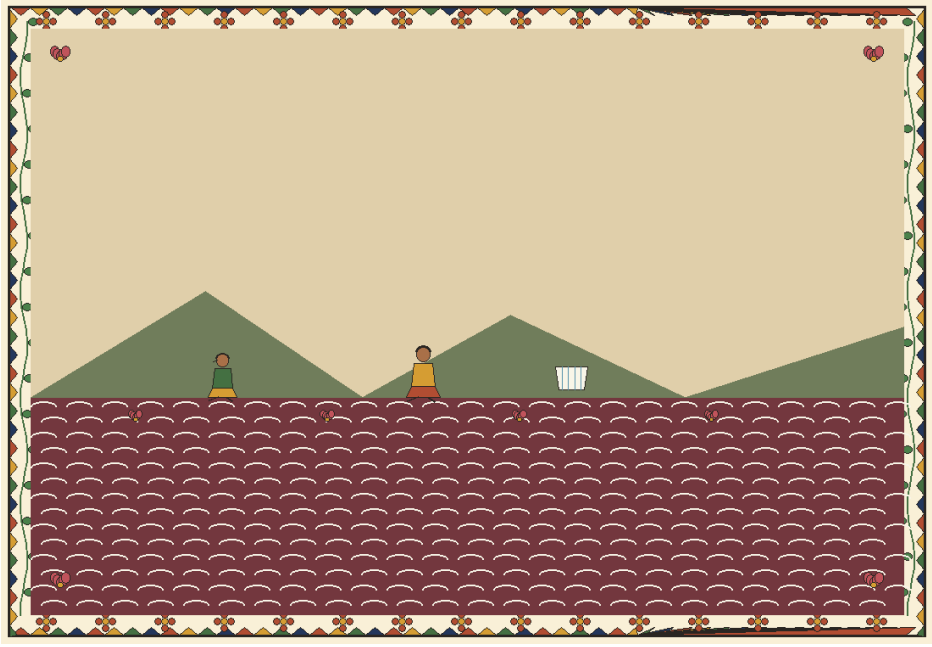

चित्र 16

मुदा नटुआ, घायल होइतो, अपन अन्तिम कर्तव्य पूरा केलनि — ओ पटोर -वस्त्र विशेष भेंट- कमला मैय्याकेँ चढ़ओलनि। मृत्युक मुखमे सेहो भक्ति आ कर्तव्यक ई निर्वाह असाधारण छल।

कमलाक धार खूने-खूनामे भऽ गेल — नटुआक बलिदानक साक्षी बनैत। ई दृश्य करुण आ भयावह दुनू छल, प्रेम आ बलिदानक चरम प्रतीक।

अध्याय ९ : कामाख्याक जादूगरनी

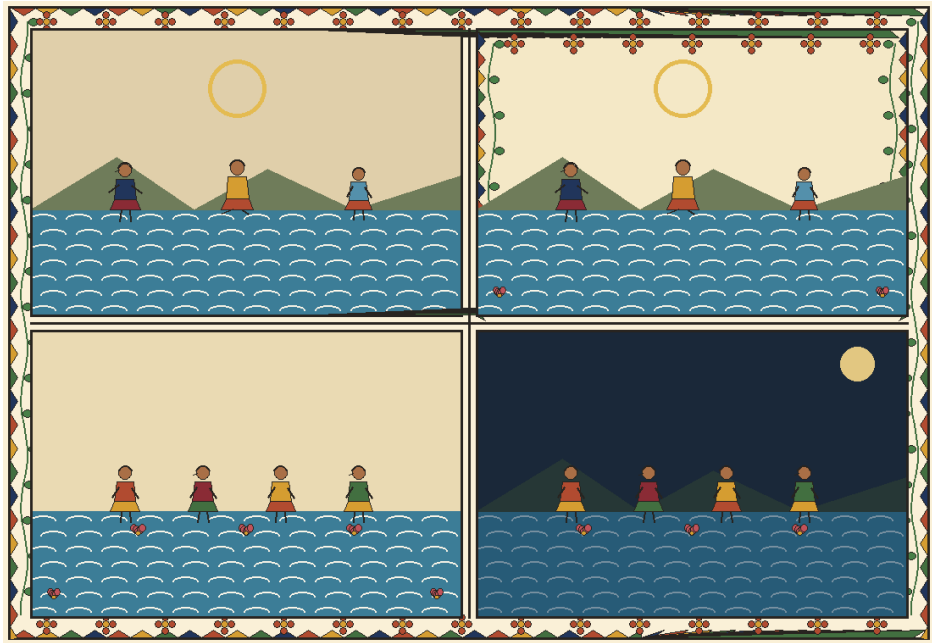

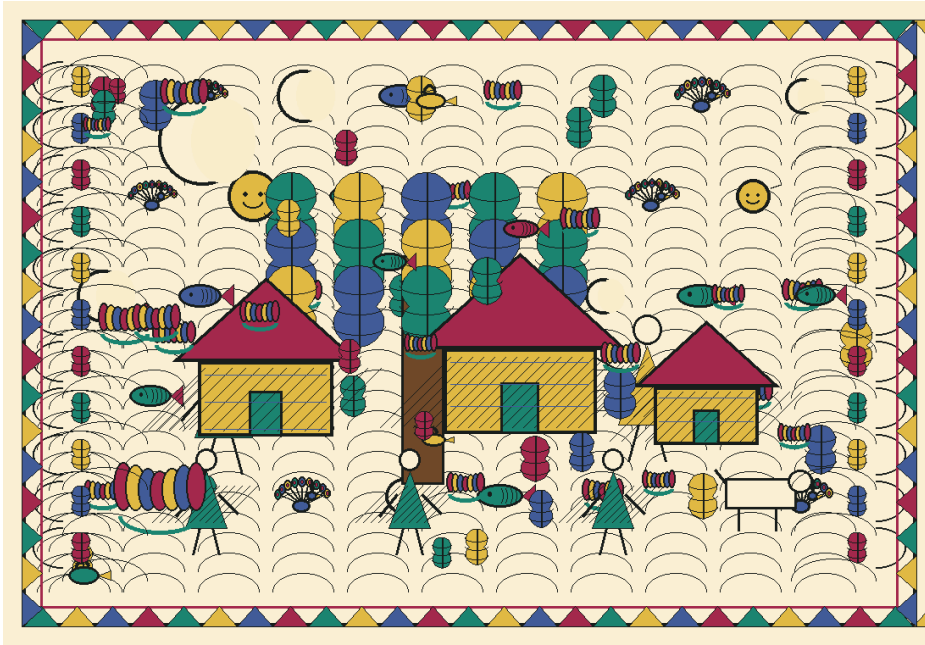

चित्र 17

मुदा गाथा एतय समाप्त नहि भेल। कामाख्याक जादूगरनी — जे नटुआक गुरुक परम्परासँ जुड़ल छलि, छलि एकटा दिव्य शक्ति — अएलीह आ नटुआकेँ जीवित कऽ देलनि। मृत्युसँ पुनर्जीवन, तांत्रिक शक्तिक चरम प्रदर्शन।

मुदा एहि पुनर्जीवनक मूल्य भारी छल — जादूगरनी दुश्मनक बलि कमलाकेँ चढ़ओलनि। ई प्रतिशोधक चक्र — विश्वासघातक बदला विश्वासघातीक बलिदानसँ — गाथाकेँ न्यायक एकटा जटिल रूप देलक।

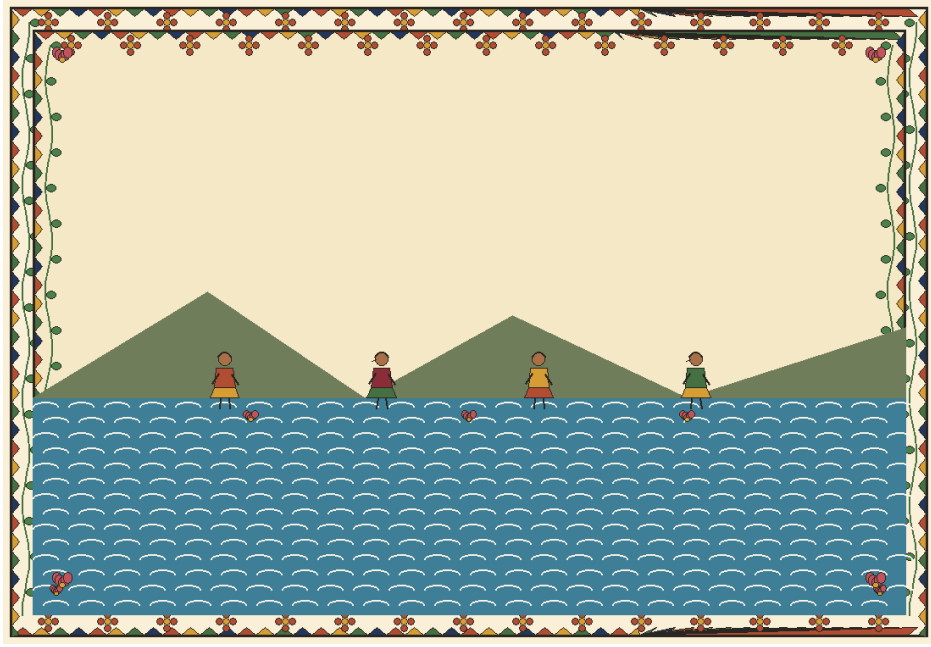

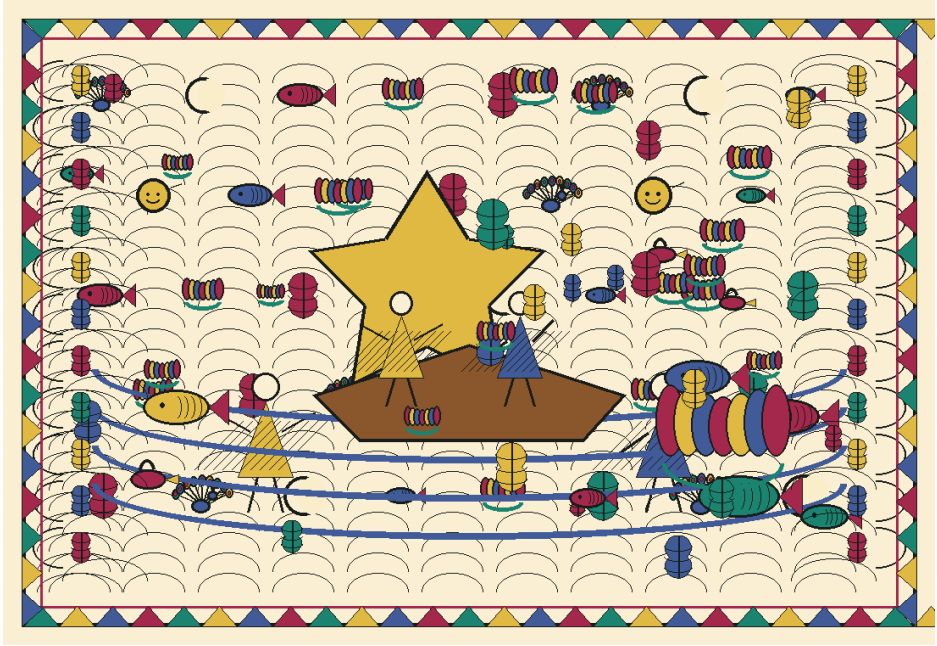

चित्र 18

ई गाथा एहि तरहेँ प्रेम आ प्रतिशोध, नृत्य आ तंत्र, बलिदान आ पुनर्जीवनक जटिल मिश्रण छोड़ि जाइत अछि — कोनो सरल सुखान्त नहि, मुदा एकटा एहन अन्त जतय न्याय अपन तरीकासँ पूर्ण होइत अछि।

आइयो कमला-बलानक कातमे लोक ई गाथा सुनबैत अछि — बहुरा गोढ़िनक शक्ति, नटुआ दयालक साधना आ बलिदान, आ कामाख्याक जादूगरनीक अन्तिम न्यायक कथा — तंत्र-विद्या आ प्रेमक ई जटिल संगम मिथिलाक लोककथाक अमूल्य धरोहर बनि गेल अछि।

समाप्त

VIDEHA

विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका | ISSN 2229-547X | www.videha.co.in

चौहड़मल आ रेशमा

मोकामा घाटक अमर प्रेम-दुखान्त

गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादक, विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका (since 2000)

ISSN 2229-547X

© Gajendra Thakur/ Preeti Thakur; गजेन्द्र ठाकुर सम्पादक, विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका (since 2000) ISSN 2229-547X

ई पोथी गजेन्द्र ठाकुर समग्रक अन्तर्गत संकलित अछि।

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक ISBN:978-93-5890-210-5

DESIGNED BY: AUM GAJENDRA THAKUR

उपक्रम : मोकामा घाट

गंगा जतय सभसँ चाकर होइत छथि, ओतय अछि मोकामा घाट। घाटक एक कात टाल — दूर धरि पसरल पानि-माटिक राज — आ ओही टालक हवामे बहैत अछि ई खिस्सा: चूहड़मल आ रेशमाक।

ई प्रेम-गाथा थिक — मुदा एहन प्रेमक, जकरा समाज स्वीकार नहि केलक। एक कात अखराहाक वीर बोनिहार, दोसर कात धनिक घरक बेटी — आ बीचमे ओ सभटा देवाल जे मनुक्ख मनुक्खक बीच ठाढ़ करैत आयल अछि। देवाल जीति गेल, प्रेमी हारि गेल — मुदा खिस्सा? खिस्सा आइयो मेला लगबैत अछि।

अध्याय १ : अखराहाक वीर

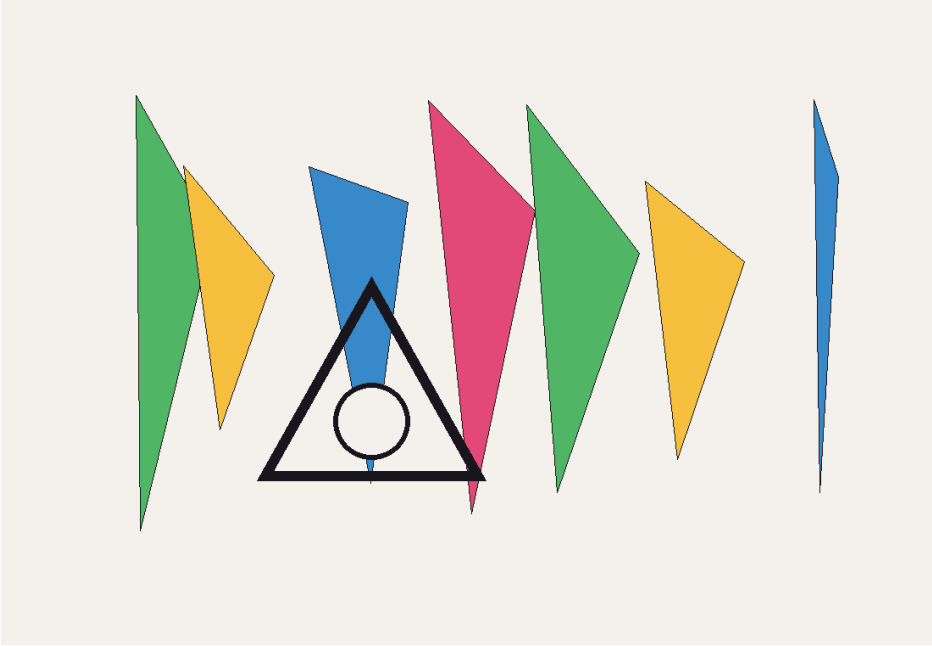

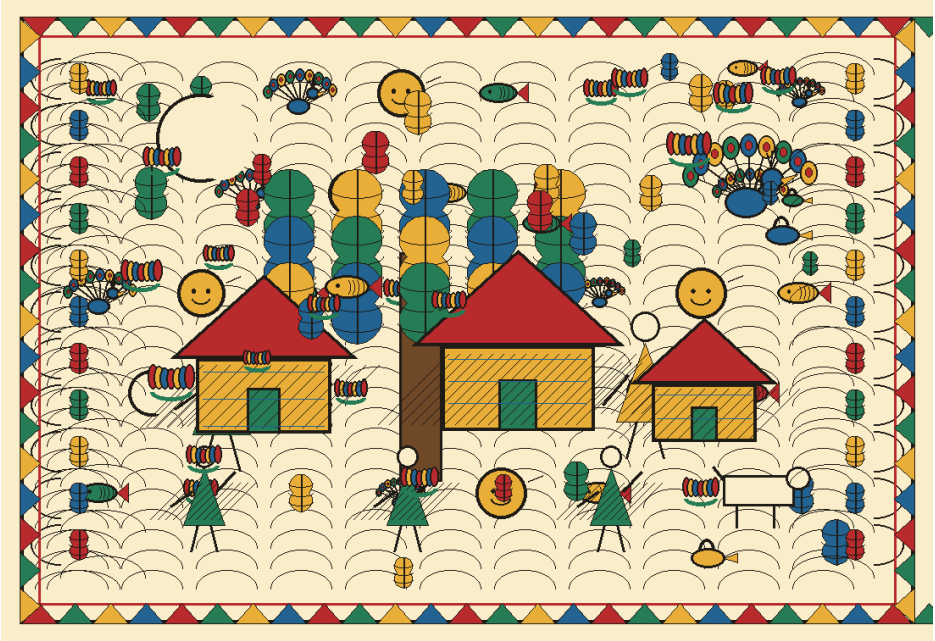

चित्र 1

चूहड़मल — गरीब बोनिहार, जातिक दूधबंसी। बापक नाम राजवंसी, माताक अंजनी, काकाक बैसीराय। घरमे धनक नामपर खाली मेहनतिक देह छल — मुदा से देह केहन!

अखराहाक वीर छल चूहड़मल। भोरे गंगा-स्नान, फेर अखराहाक माटि — दण्ड, बैठक, कुश्ती। ओकर पकड़िसँ पहलमान सभ थर्राए, आ ओकर सोझ स्वभावसँ टोल-पड़ोस नेहाल।

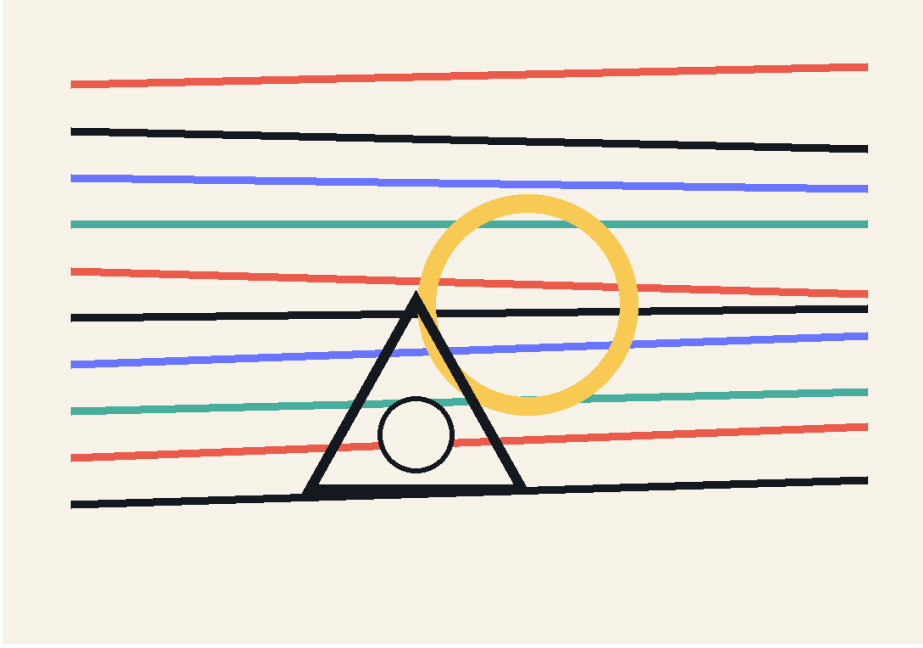

चित्र 2

बोनिहारक बेटा छल, त' दिन भरि खटैत छल — खेत, घाट, बोझ। मुदा ओकर चालिमे दीनता नहि छल; छल एकटा एहन स्वाभिमान जे गरीबीक फाटल कपड़ोमे चमकैत छल।

मोकामा घाटपर ओकरा सभ चिन्हैत छल — 'राजवंसीक बेटा, अखराहाक शेर।' आ यएह चिन्हारी एक दिन गंगाक काते-कात बहैत ओहि ऊँच हवेली धरि पहुँचि गेल, जतय ओकर पहुँचब मना छल।

अध्याय २ : रेशमा

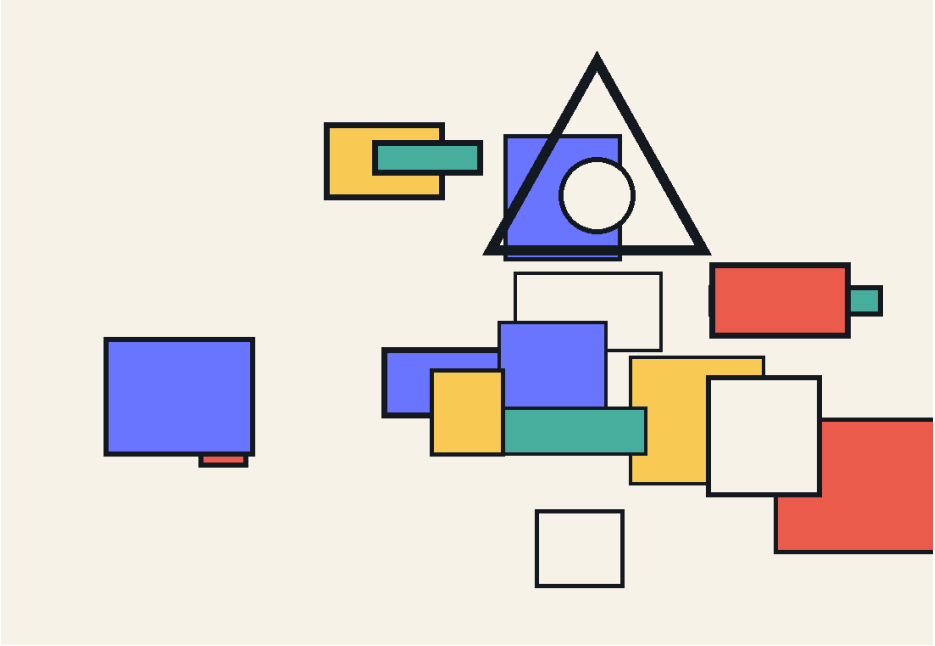

चित्र 3

रेशमा — अजबी सिंहक बेटी, अजय सिंहक बहिन। भूमिहार ब्राह्मण घराना, पाइ-पैसा-रूपा, हवेली, नोकर-चाकर — जे किछु धनसँ भेटैत अछि, सभटा रेशमा लग छल।

मुदा रेशमाक भीतर एकटा एहन मोन छल जे हवेलीक ऊँच देवालसँ ऊँच उड़ैत छल। ओकरा हिसाब-किताबक दुनियाँ नहि, गंगाक खुजल हवा नीक लगैत छल।

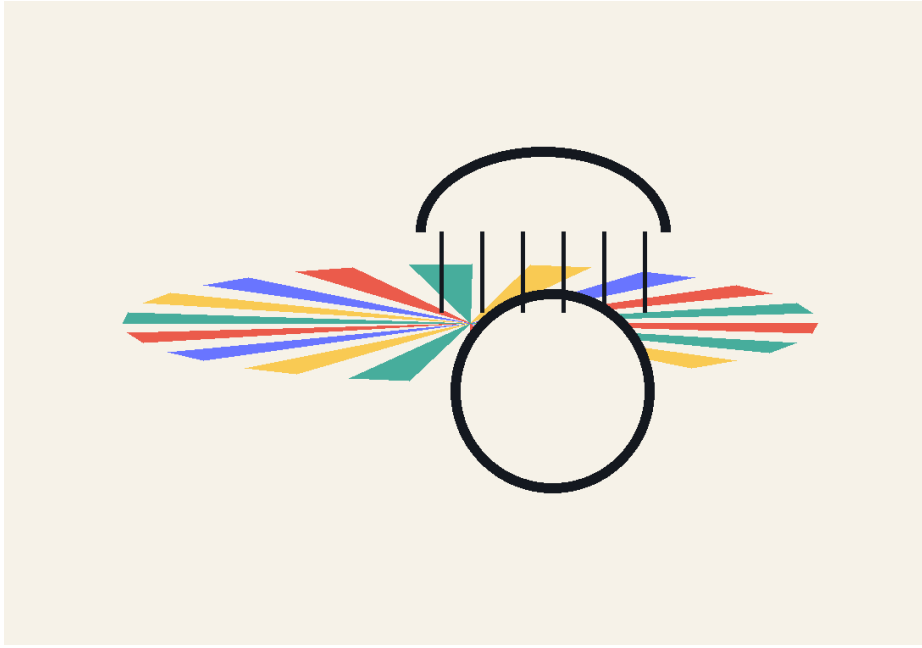

चित्र 4

एक दिन गंगा धारक कातमे भेँट भेलै — रेशमा सखी-बहिनपाक संग घाटपर छलि, आ ओम्हरसँ चूहड़मल — भीजल देह, कान्हपर गमछा, चालिमे अखराहाक ठसक।

आ रेशमा देखिते रहि गेलीह। ई ओ क्षण छल जकरा खिस्सा 'पहिल नजरि' कहैत अछि — जखन आँखि अपन काज छोड़ि करेजक काज करए लगैत अछि। रेशमा ओही क्षण हारि गेलि — आ जे हारल, से एहन जिद्दी हारि हारल जे जीतबाक कोनो इच्छे नहि रहलै।

अध्याय ३ : एकतरफा बसात

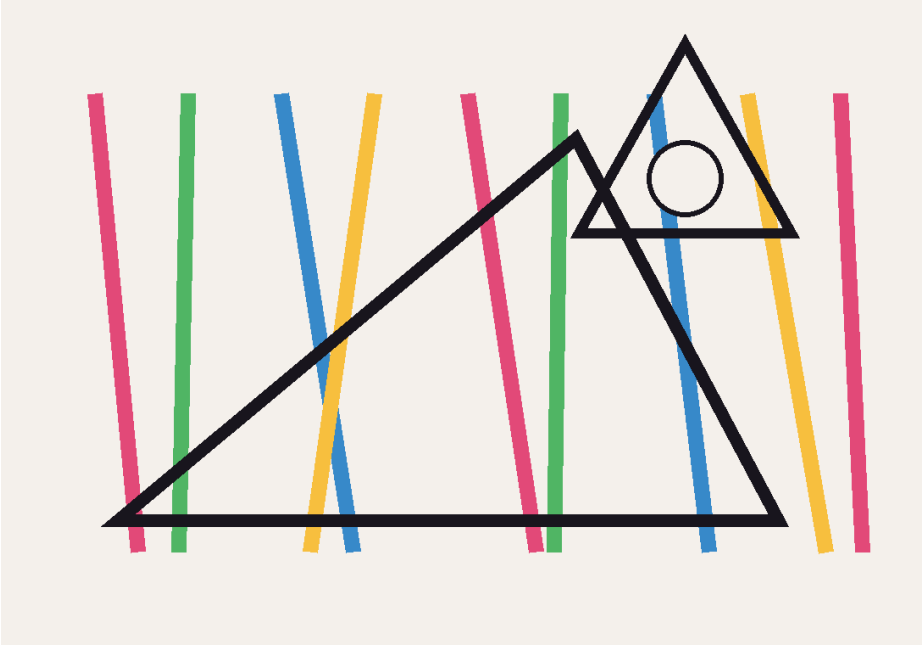

चित्र 5

रेशमा अपन प्रेम व्यक्त कऽ देलनि — सोझे, बिनु लाग-लपेटक। धनिक बेटीक ई साहसे छल — ओ माँगब जनैत छलि।

मुदा चूहड़मल? ओ बुझबे नहि करए! कतबो बुझाबथि रेशमा, चूहड़मल गप काटि दिअए — 'अहाँ हवेलीक बेटी, हम घाटक बोनिहार। ई बाट बाटे नहि थिक।' ओकर मना करब अभिमान नहि छल — दूरदर्शिता छल; ओ जनैत छल जे एहि प्रेमक दाम की लागत।

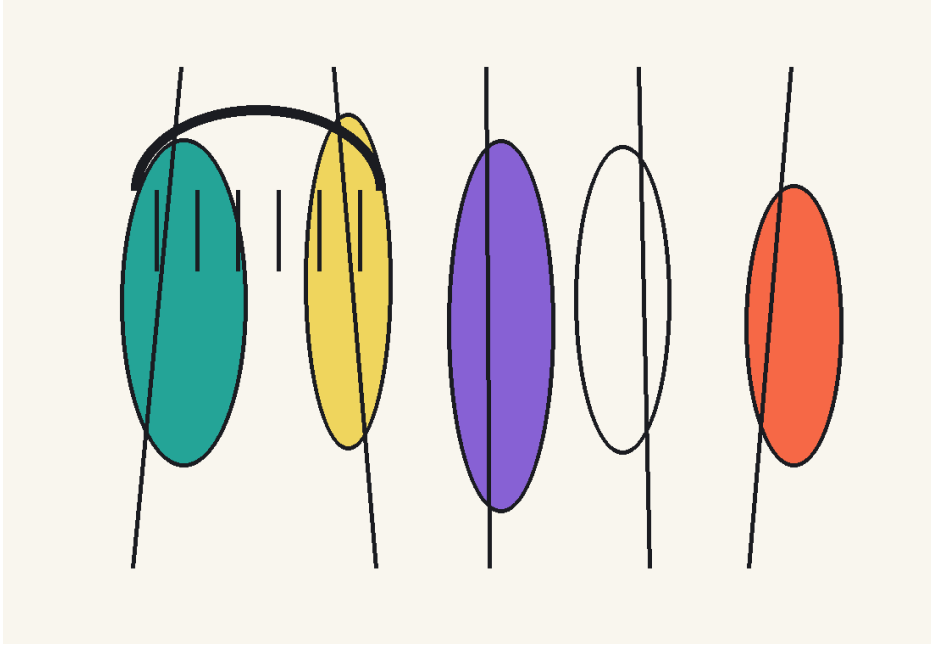

चित्र 6

मुदा प्रेम दूरदर्शिताक भाषा कहिया बुझलक? रेशमा भेँट करबा लेल आबि जाथि — कखनो घाटपर, कखनो टालक बाटपर। बहन्ना सए, गन्तव्य एक।

आ जेना-जेना ई भेँट बढ़ल, तेना-तेना चूहड़मलक 'नहि' पातर पड़ैत गेल। पाथरपर पानिक बून्न — एक दिनमे किछु नहि, मुदा लगातार? पाथरो घसाइत अछि। आ एम्हर हवेलीक कानो ठाढ़ भऽ रहल छल — एहन भेँट बेसी दिन नुकाएल नहि रहैत।

अध्याय ४ : पहरा

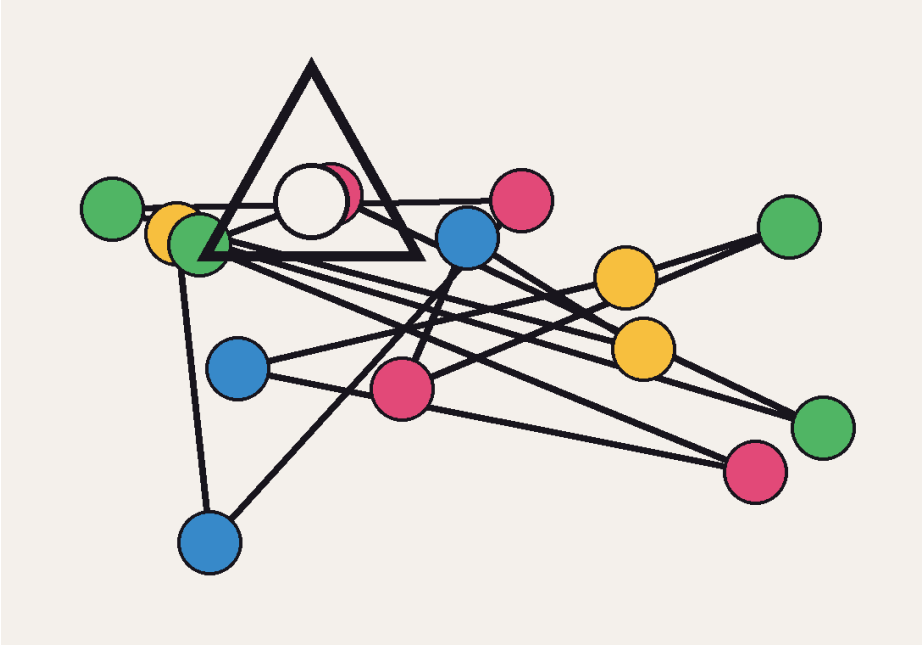

चित्र 7

भेद खुजल — आ हवेलीमे भूकम्प आबि गेल। अजबी सिंहक बेटी आ घाटक दुसाध बोनिहार! भूमिहार घरानाक 'मर्यादा' थरथरा उठल।

रेशमापर पहरा पड़ि गेल। दरबज्जापर पहरेदार, खिड़कीपर नजरि, सखी-बहिनपा धरि सँ मिलबापर रोक। हवेली रेशमा लेल घरसँ कैदखाना बनि गेल।

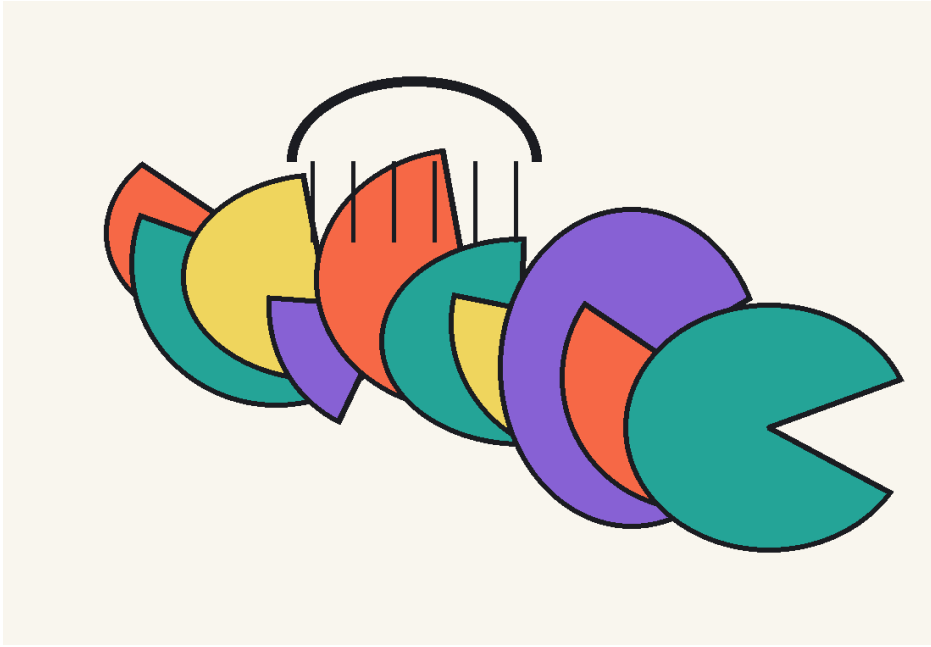

चित्र 8

मुदा पहरा देहकेँ रोकैत अछि, मोनकेँ नहि। रेशमाक मोन त' दिन-राति घाटेपर रहैत छल। आ पहराक एकटा उल्टा असरि सेहो होइत छै — जे वस्तु रोकल जाए, से आरो प्रिय भऽ जाइत अछि।

एम्हर भाइ अजय सिंहक तामस पहरासँ शान्त नहि भेल। ओकर हिसाबमे कलंकक जड़ि रेशमा नहि — चूहड़मल छल। आ जड़ि काटबाक ओकर उपाय वैह छल जे अहंकार सदिखन सोचैत अछि: गरदनि।

अध्याय ५ : रामजीत आ मन्ने खाँ

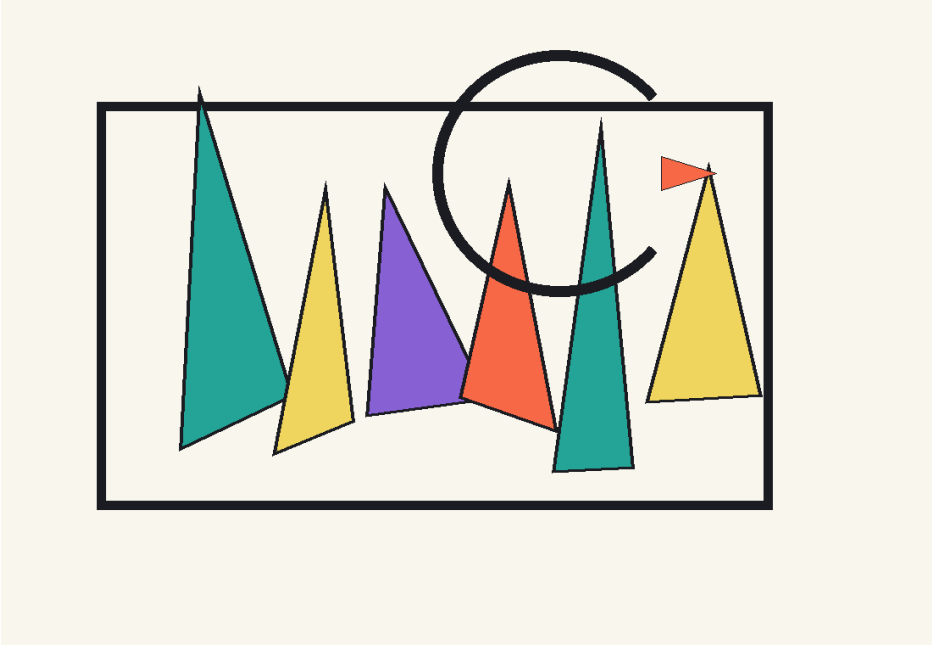

चित्र 9

अजय सिंहक कहलापर दू गोटे बिदा भेलाह — गड़ेरिया रामजीत आ मन्ने खाँ। काज: चूहड़मलक गरदनि काटब। दाम तय, हथियार तेज, आ शिकार? — एकटा बोनिहार, जकरा मारब हुनका सभकेँ खेल बुझाइत छल।

मुदा आहि रे ब्बा! हुनका सभकेँ ई के कहलकनि जे जकर गरदनि काटए जा रहल छथि, से अखराहाक शेर थिक?

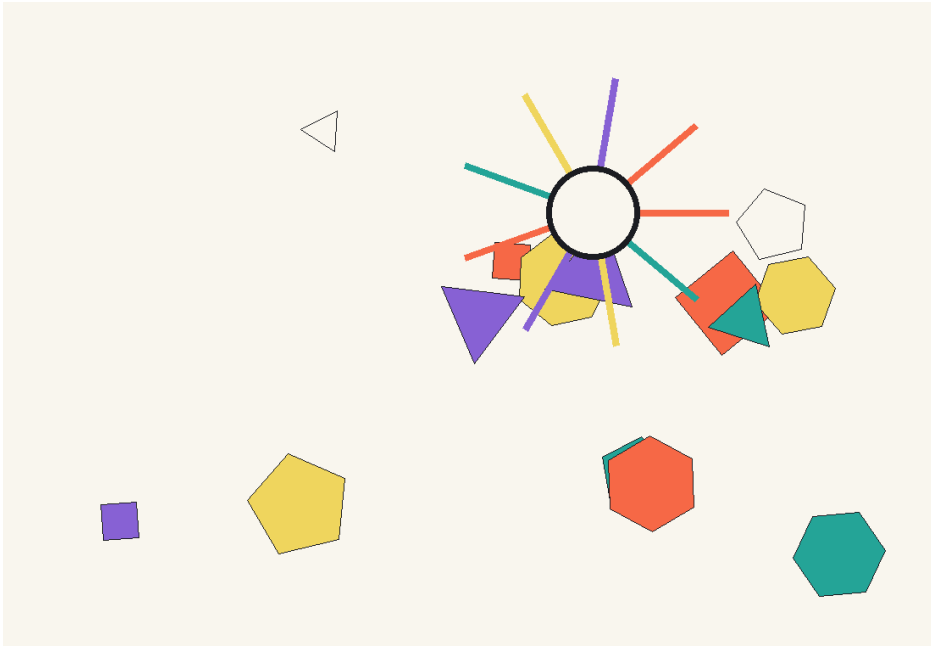

चित्र 10

घात लगाओल गेल, वार भेल — आ फेर जे भेल, से मोकामा घाट आइयो कहैत अछि: कथी ले से होएत — उनटे चूहड़मल तरुआरिसँ गरदनि काटि लेलक गड़ेरिया रामजीत आ मन्ने खाँक! मारए आएल दुनू अपने मारल गेलाह।

ई चूहड़मलक पहिल रक्तपात छल — आ आत्मरक्षामे भेल छल। मुदा ओ जनैत छल जे एहि घटनाक अर्थ की थिक: आब युद्ध खुजि गेल। हवेली अपन भाड़ाक हथियार गमओलक — आब ओ अपन असली फौज लऽ कऽ आओत। आ निशाना खाली चूहड़मल नहि — पूरा टोल हएत।

अध्याय ६ : टोलपर आक्रमण

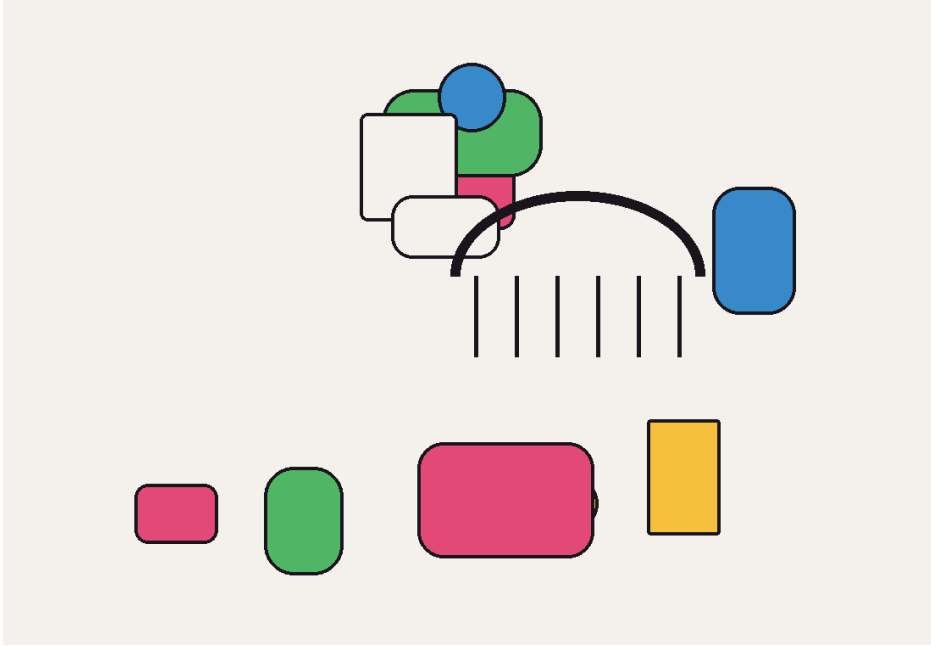

चित्र 11

आ सैह भेल — दूधबंसी टोलपर आक्रमण!

अजय सिंहक अगुआइमे हथियारबन्द लोक टोलपर चढ़ि आयल। फूसक घर, निहत्था बोनिहार, कानैत बच्चा — आ ऊपरसँ तरुआरि-भाला। एकटा प्रेमक दाम पूरा टोलसँ वसूलल जा रहल छल।

चित्र 12

चूहड़मल छातीपर ढाल बनि ठाढ़ भेल, मुदा ओ एकसर — आ सोझाँ पूरा हवेलीक बल। टोलक भाग्य ओहि दिन तरुआरिक धारपर काँपि रहल छल।

तखन ओ भेल जे केओ नहि सोचने छल — रेशमा! पहरा तोड़ि रेशमा दौड़लि गेलि बाप अजबी सिंह लग, आ हाथ जोड़ि, कानि, अड़ि — आक्रमण रोकबओलक। 'हमर कारणसँ निर्दोषक रक्त बहत, त' पहिने हमर!' — बेटीक हठक आगाँ बापकेँ झुकए पड़ल। तरुआरि म्यानमे घुरल। ओहि दिन मोकामा बुझलक जे रेशमा खाली प्रेम करब नहि, प्रेम निमाहब सेहो जनैत अछि।

अध्याय ७ : रामसखीक जादू

चित्र 13

मुदा आब रेशमाकेँ ईहो बुझा गेल छल जे हवेली आ घाटक बीचक ई खींचातानी कोनो सुखद अन्त धरि नहि जाएत। जे करबाक अछि, अपने करबाक अछि — आ जल्दी।

रेशमाक संग छलि ओकर सखी-बहिनपा रामसखी — आ रामसखी लग छल जादू। खिस्सा-लोकमे सखी लग सदिखन किछु ने किछु रहैत छै — कखनो जादू, कखनो जोगाड़, कखनो खाली अटूट साथ। रामसखी लग तीनू छल।

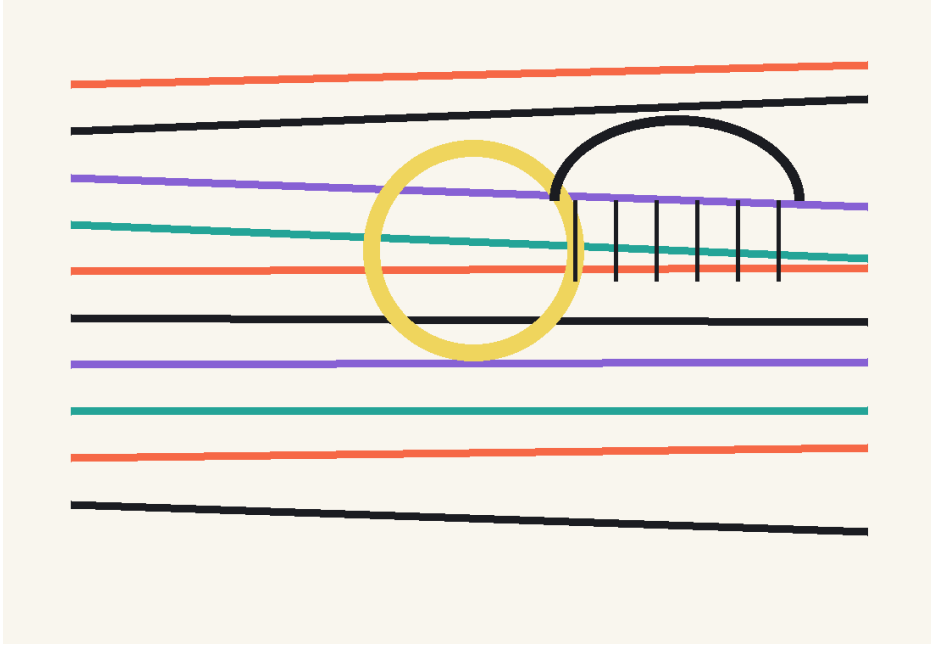

चित्र 14

गेलि रेशमा रामसखीक संग फेर चूहड़मलसँ भेँट करबा लेल — गंगाक तटपर। रामसखी जादूसँ दऽ आयल रेशमाकेँ चूहड़मल लग: जादूक असरिसँ क्यो रेशमाकेँ देखि नहि सकल। पहरेदारक आँखिक आगाँसँ रेशमा निकलि गेलि — अदृश्य, जेना हवाक झोंक।

आ गंगा-तटपर, बरखोक 'नहि'क बाद, चूहड़मल पहिल बेर 'हँ' कहलक। जे वीर तरुआरिसँ नहि हारल छल, से रेशमाक जिद आ त्यागसँ हारि गेल। आब दुनूक आगाँ एक्कहि बाट छल — आ ओ बाट काली मन्दिर दिस जाइत छल।

अध्याय ८ : शोनितक सिनूर

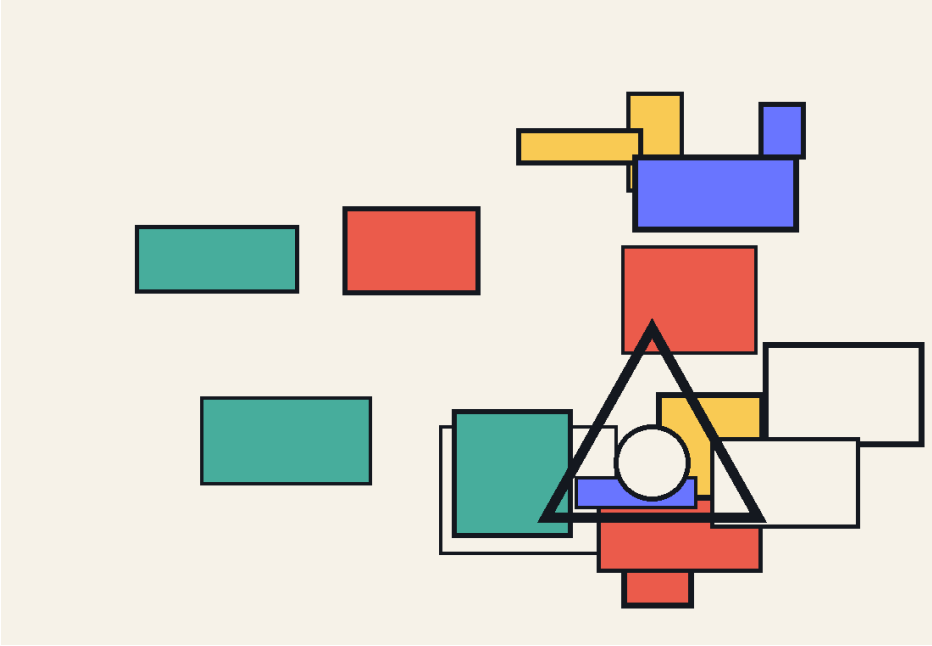

चित्र 15

घोड़ापर दुनू गोटे बिदा भेलाह — मोकामा टाल लग काली मन्दिर। ने बरियाती, ने शहनाई, ने मड़बा — साक्षी खाली काली माता, गंगाक हवा, आ एकटा पुरहित।

सिनूर? — सिनूरक डिब्बा के अनितए! तखन चूहड़मल ओ केलक जे एहि गाथाकेँ अमर कऽ गेल: अपन देहसँ शोनित निकालि, ओही शोनितसँ रेशमाक माँग भरि देलक।

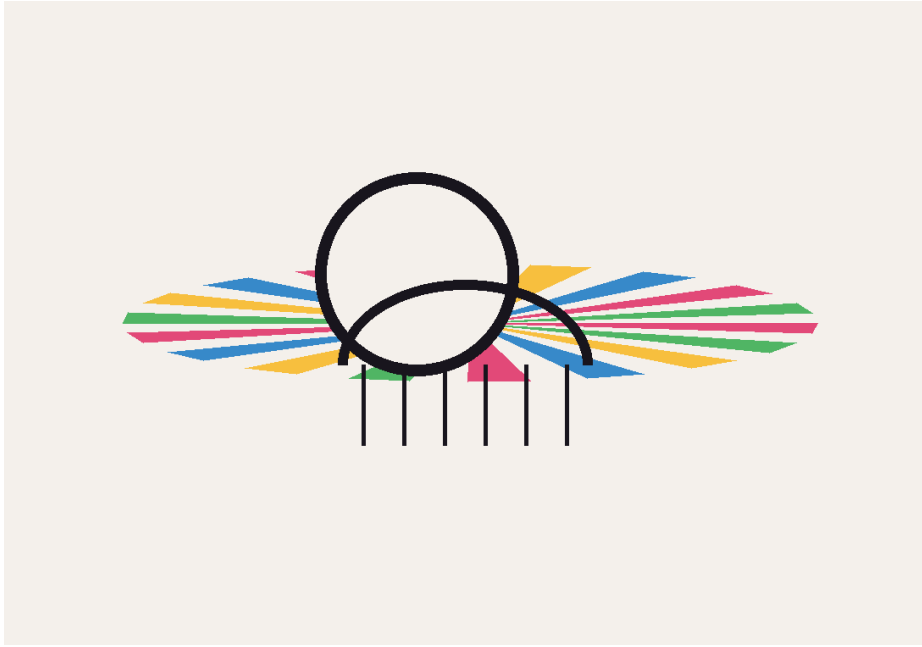

चित्र 16

शोनितक सिनूर! — एहिसँ गाढ़ सिनूर संसारमे दोसर नहि। पुरहित आशीष देलक, काली माताक आगाँ दीप काँपल, आ मोकामा टालक हवामे एकटा नव गृहस्थीक पहिल साँस घुलल।

मुदा ई साँस पूरो नहि भेल छल कि टापक आवाज आबि गेल — घेरि लेल गेलाह! हवेलीक फौज मन्दिर धरि पहुँचि गेल छल। चूहड़मल एक क्षणमे बुझि गेल — आब जे हएत, से रक्तेसँ लिखाएत। ओ रेशमाकेँ लग बजओलक, आ पहिल काज केलक ओकर रक्षाक: महुक गाछपर बैसा देलक रेशमाकेँ — 'जे किछु हो, उतरब नहि।'

अध्याय ९ : अन्तिम युद्ध

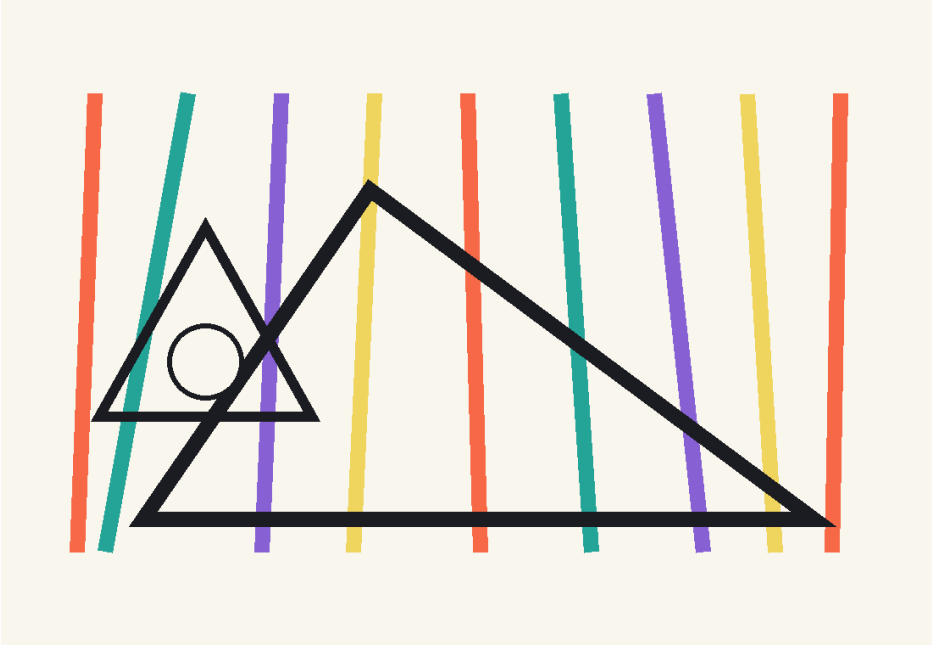

चित्र 17

आ फेर भयंकर युद्ध भेल।

एक कात चूहड़मल — असगर, नव-विवाहित, अपन सोहागक पहिल पहरक रक्षामे; दोसर कात हथियारबन्द दल। मुदा अखराहाक शेर ओहि दिन एहन लड़ल जे घेरनिहारक पएर उखड़ए लागल। तरुआरि बिजली बनल, ढाल पहाड़ — चूहड़मल जितय बला रहए!

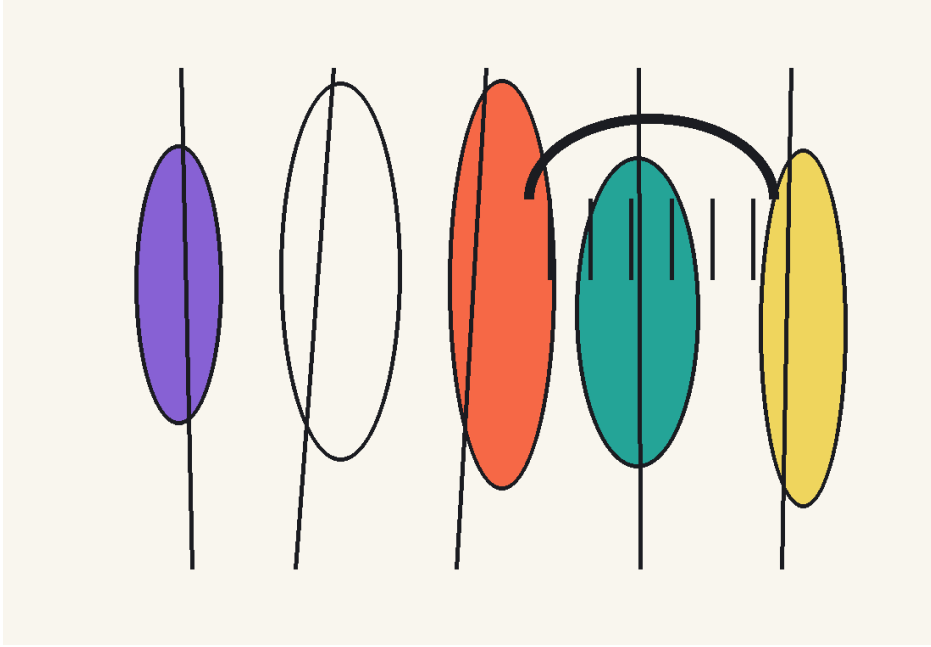

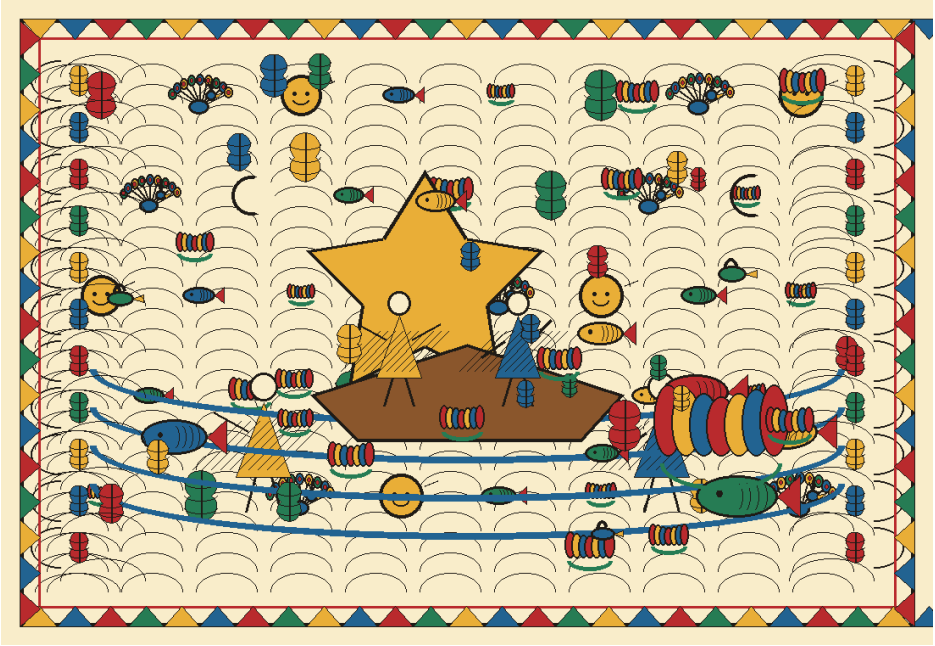

चित्र 18

मुदा नियति... ठीक तखने कलुआ सिपाही — जे लड़ाइक हल्लामे नुकाएल घात ताकि रहल छल — महुक गाछ दिस लपकल आ रेशमाकेँ लऽ कऽ भागि गेल!

'रेशमा!' — चूहड़मलक हुंकारसँ युद्धभूमि चीरा गेल। जीतल मैदान ओतहि छोड़ि ओ दौगल — घोड़ापर चढ़ि, आन्ही बनि। आगाँ कलुआ, पाछाँ चूहड़मल, आ बीचमे घटैत दूरी... मुदा तखने पाछाँसँ वार भेल — घोड़ा मारल गेल। घोड़ा खसल, सवार खसल — आ घेरनिहार सभ टूटि पड़ल।

अध्याय १० : रेशमा-रेशमा

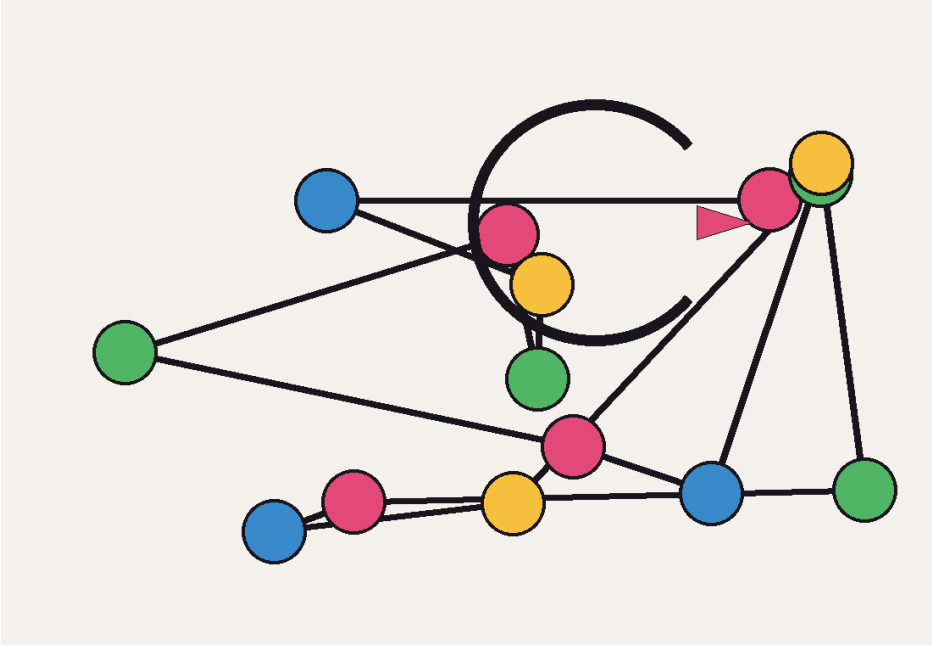

चित्र 19

मोकामा टालक माटिपर अखराहाक शेर घायल पड़ल छल — आ ओकर ठोरपर ने कोनो प्रार्थना छल, ने कोनो शाप। छल खाली एकटा नाम:

'रेशमा... रेशमा...'

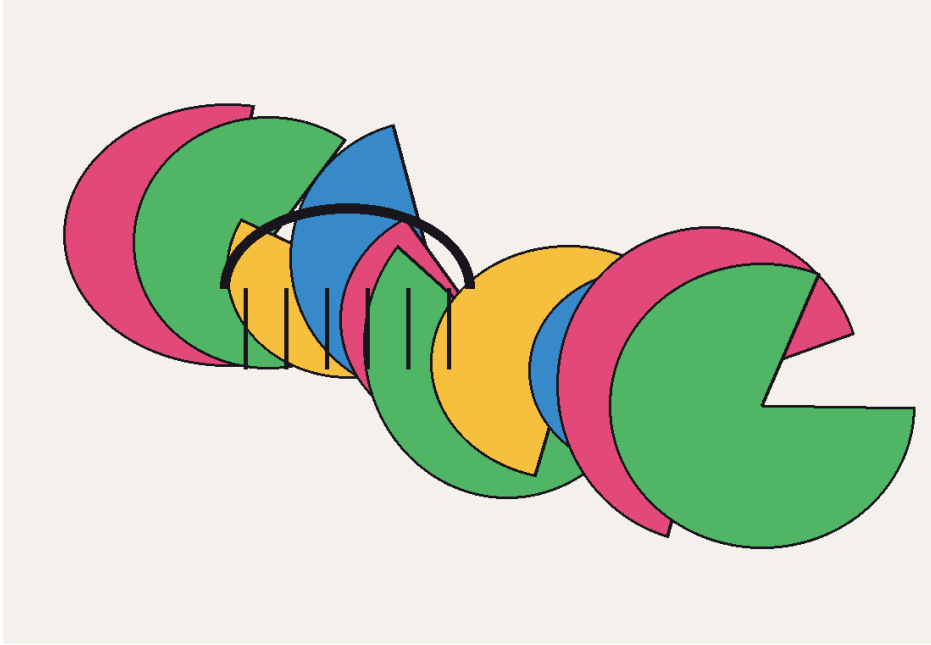

चित्र 20

जे वीर रामजीत-मन्ने खाँक तरुआरि झेललक, टोलक रक्षामे एकसर ठाढ़ भेल, घेरामे सेहो जितैत रहल — से अन्तमे प्रेमक नामकेँ टेरैत प्राण त्यागि देलक। रेशमा-रेशमा करैत चूहड़मल मरि गेल। नव-विवाहिताक शोनित-सिनूर एखन सुखाइयो नहि सकल छल कि सोहाग उजड़ि गेल।

आ रेशमा? गाथा ओकर आगाँक कथा चुप्पीमे छोड़ि दैत अछि — आ ई चुप्पी कोनो वर्णनसँ बेसी करुण थिक। जे कन्या प्रेम लेल हवेली, पहरा, समाज — सभसँ लड़लि, से अपन सोहागक लहासो धरि नहि पहुँचि सकलि। दुखान्तक एहिसँ गहींर तल आर की?

अध्याय ११ : रेशमा-चूहड़मल मन्दिर

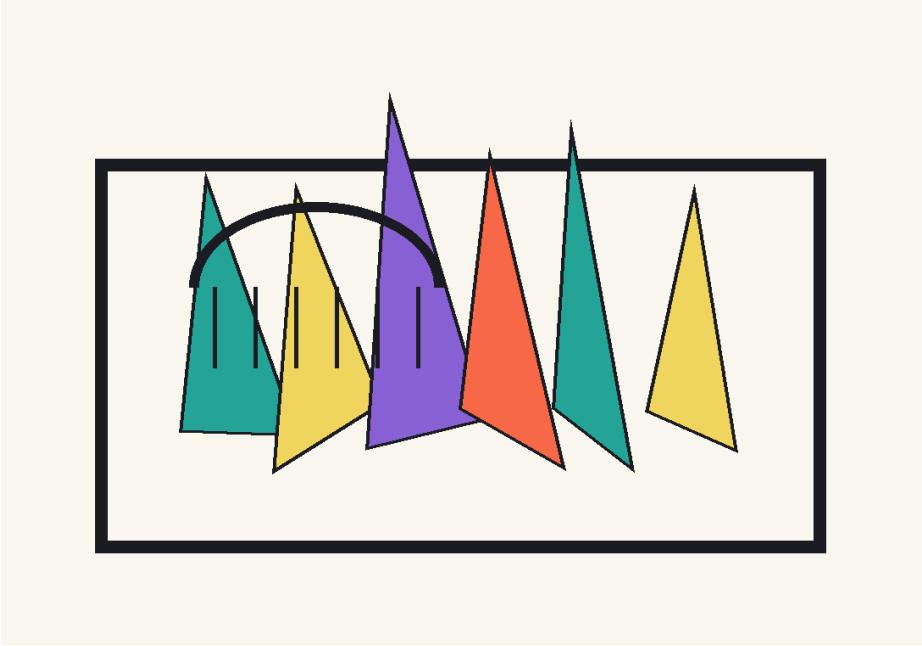

चित्र 21

बचल अछि स्मृति टा मात्र — मुदा केहन स्मृति!

मोकामा टालमे रेशमा-चूहड़मल मन्दिर अछि — दुनूक नाम संगे, जेना जीवनमे नहि जुड़ि सकल, से पाथरपर जुड़ि गेल। जाहि समाजक देवाल दुनूकेँ अलग केलक, वैह समाज आब दुनूक संग-पूजा करैत अछि। समयक एहिसँ पैघ प्रायश्चित्त की?

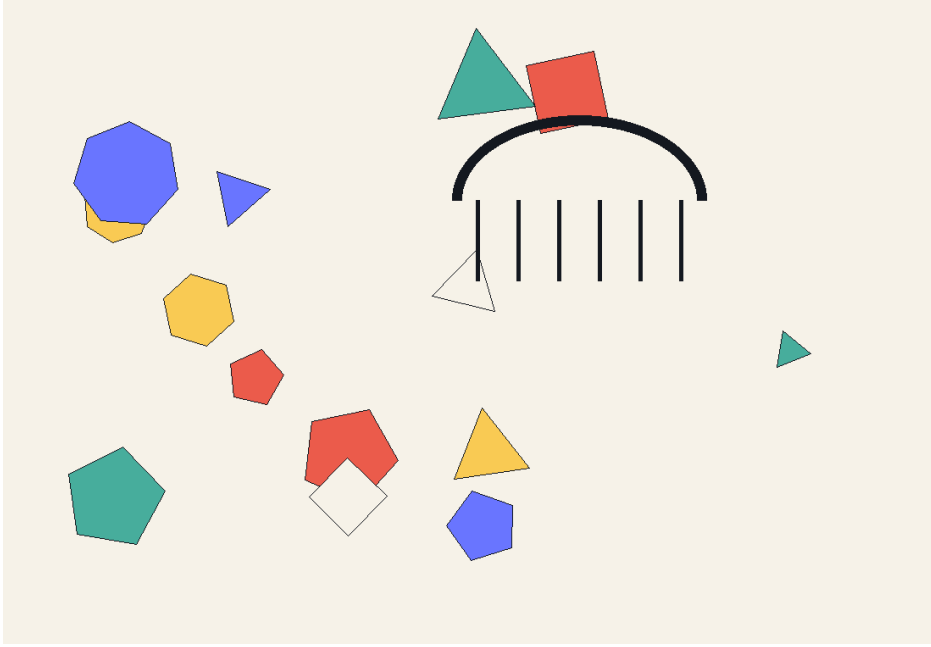

चित्र 22

आ ओतय सभ बरख मेला लगैत अछि। हजारो लोक जुटैत अछि — दूधबंसी सेहो, भूमिहार सेहो, आ सभ जातिक लोक — एक्कहि मेलामे, एक्कहि मन्दिरक आगाँ। जे प्रेम जीबैत काल दू टोलकेँ लड़ओलक, से मरला उत्तर हजारो लोककेँ जोड़ैत अछि।

मोकामाक बूढ़ लोक कहैत छथि — साँझखन जखन गंगापर हवा चलैत अछि, त' टालक महुक गाछ सभ अपने डोलए लगैत अछि। के जनए — कदाचित् ओहि डोलबमे आइयो कियो बैसलि अछि, आ नीचाँ, माटिपर, कियो ओकर पहरा दऽ रहल अछि। खिस्सा कहैत अछि: प्रेमी मरि जाइत अछि, प्रेम मेला बनि जाइत अछि।

समाप्त

VIDEHA

विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका | ISSN 2229-547X | www.videha.co.in

महुआ घटवारिन

परमान नदीक तटपर एकटा अमर प्रेम-बलिदान

गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादक, विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका (since 2000)

ISSN 2229-547X

© Gajendra Thakur/ Preeti Thakur; गजेन्द्र ठाकुर सम्पादक, विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका (since 2000) ISSN 2229-547X

ई पोथी गजेन्द्र ठाकुर समग्रक अन्तर्गत संकलित अछि।

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक ISBN:978-93-5890-210-5

DESIGNED BY: AUM GAJENDRA THAKUR

उपक्रम : परमान नदीक घाट

महुआ घटवारिन — परी जेकाँ सुन्दर, जेना गूथल आँटामे एक चुटकी केसर! मुदा रूपसँ बेसी अनमोल छल ओकर सतवंती-सतीत्व चरित्र — एहन गुण जे विपत्तिमे सेहो नहि डोलल।

ई गाथा परमान नदीक तटक थिक — जतय एकटा गरीब, विवश कन्या अपन माएक लोभ आ सौदागरक छलक बीच फँसल, आ अन्ततः अपन प्रेम आ स्वाभिमान दुनू लेल प्राण दऽ देलक। ई गाथा आइयो साओन-भादवक धारमे गूँजैत अछि — 'एकटा छलीह महुआ घटवारिन...'

अध्याय १ : सतमाएक घर

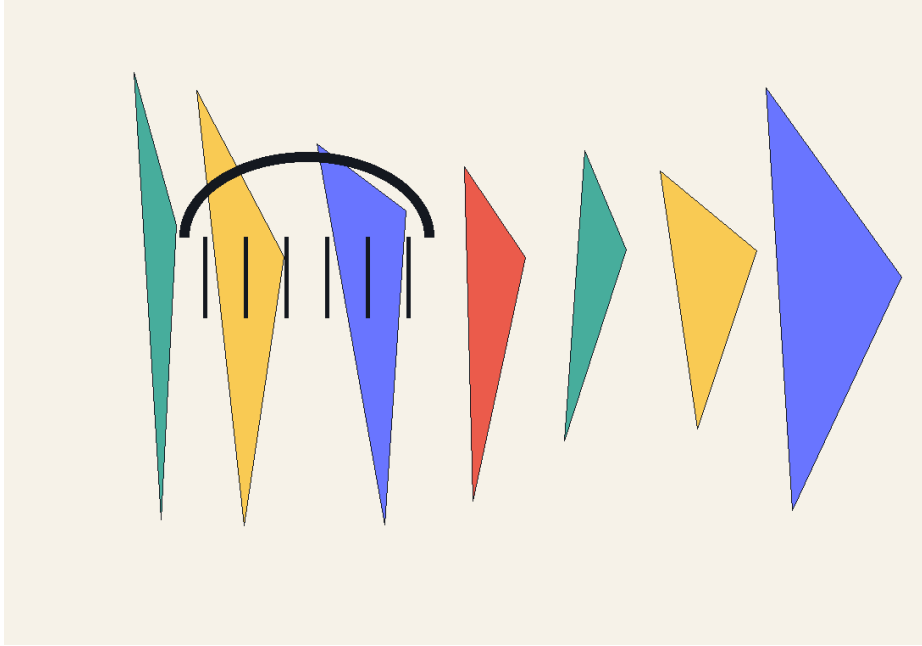

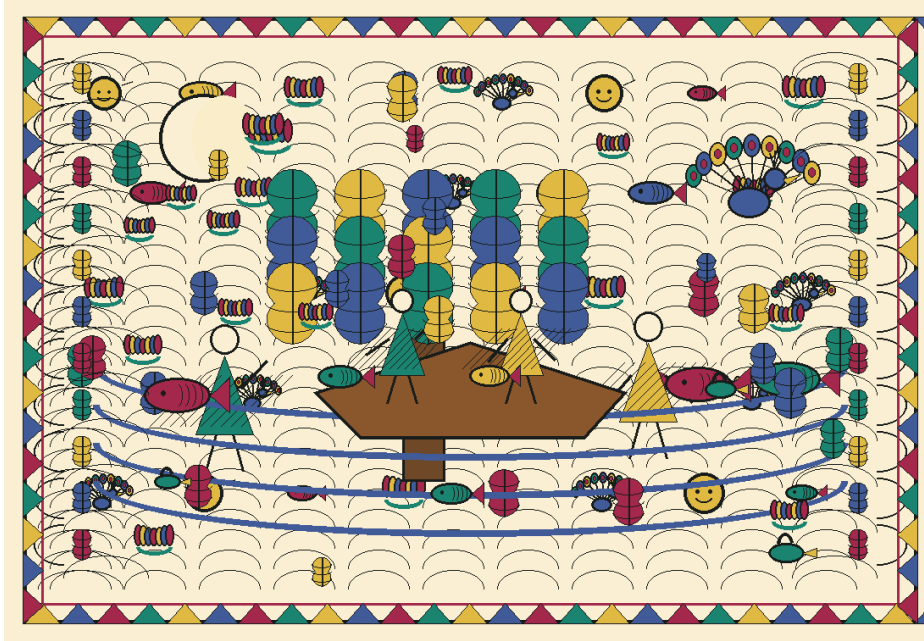

चित्र 1

महुआ घटवारिन परी जेकाँ सुन्दर छलीह — मुदा ओकर असली सुन्दरता ओकर सतवंती स्वभावमे छल, जे कोनो प्रलोभन वा विवशतासँ नहि डोलैत छल।

मुदा महुआक घर सुखी नहि छल। बाप गँजेरी आ शराबी छलाह — नशामे डूमल, अपन कर्तव्यसँ विमुख। माए सतमाए छलि — नजरि चोर, स्वार्थी, ममताविहीन।

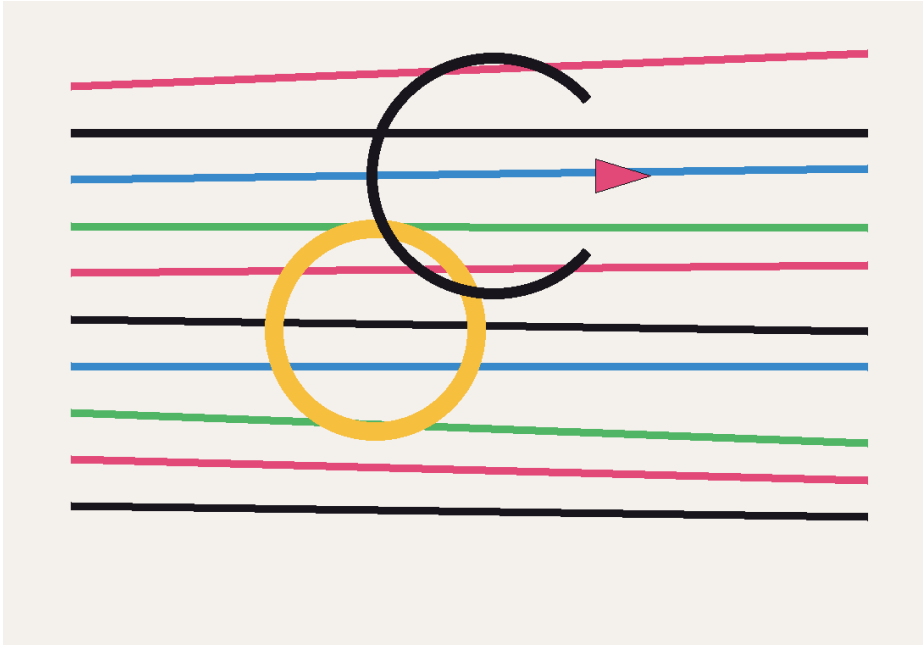

चित्र 2

घरमे सतमाएक राज छल — महुआक कोनो बात नहि सुनल जाइत छल। सोलह बरखक भऽ गेल छलीह महुआ, मुदा हुनकर बियाहक चिन्ता ककरो नहि छलनि — एहन उपेक्षा एकटा युवतीक लेल असहनीय छल।

परमान नदीक पुरनका घाटक मलाह सभ प्रार्थना करैत छथि — 'महुआक नावकेँ किनार लगा दियौक' — ई प्रार्थना महुआक प्रति समाजक चिन्ता आ स्नेह देखबैत अछि, भलहिं ओकर अपन घरमे ई स्नेह निपत्ता छल।

अध्याय २ : साओन-भादवक चेतावनी

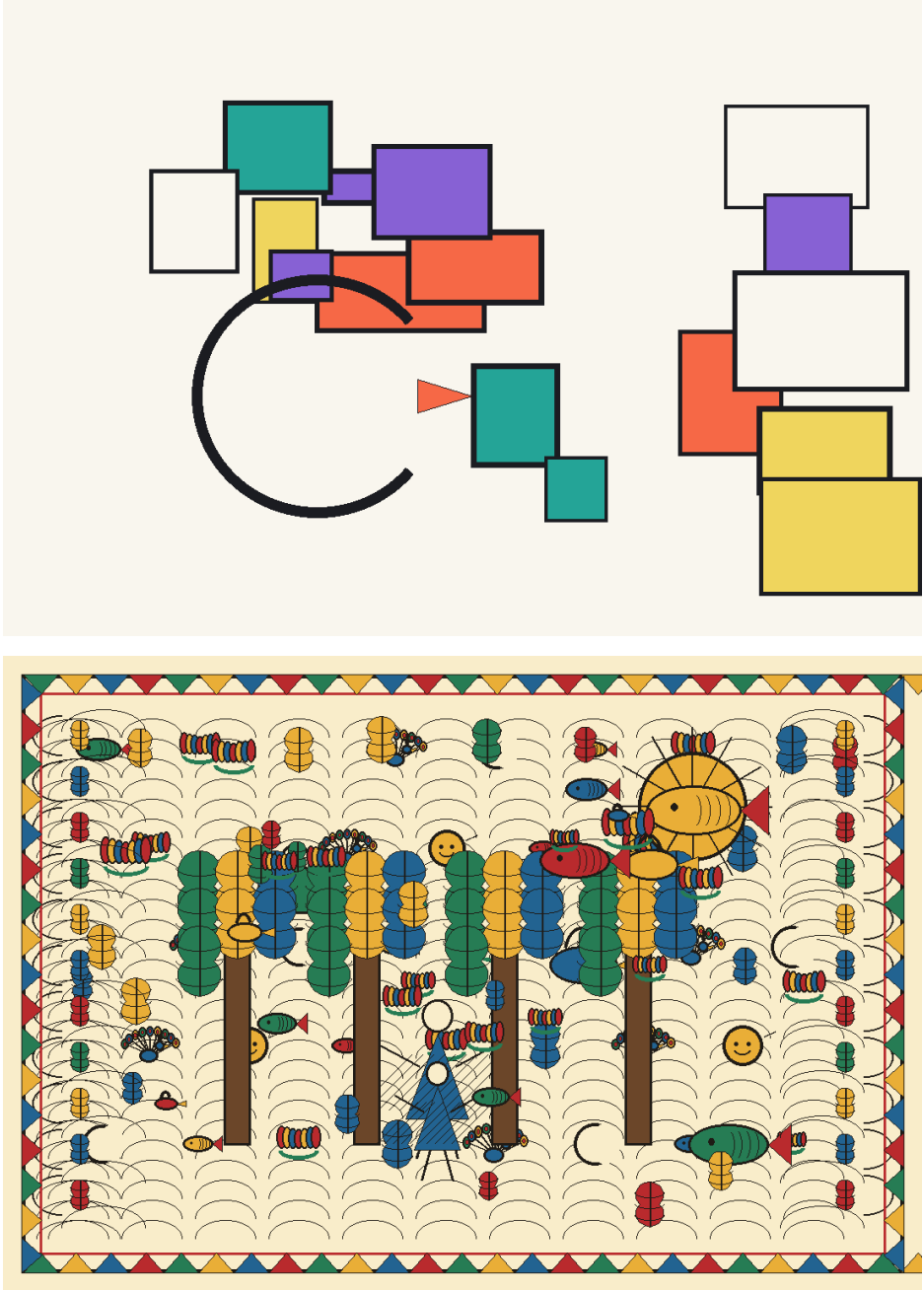

चित्र 3

साओन-भादवक भरल धारक बीच एकटा लोकगीत गूँजैत छल — 'साओन-भादवक, भरल धार, कम वयसक महुआ नहि जाऊ, एहि राति खेबय लेल नाह।' ई गीत महुआक प्रति समाजक चेतावनी आ चिन्ता दुनू व्यक्त करैत छल।

एहने साओन-भादवक एक रातिमे सतमाए एकटा नव योजना बनओलक। घाटपर एकटा वणिक् उतरल छल, आ सतमाए महुआकेँ ओकरा तेल लगएबाक हेतु पठबए चाहैत छलि।

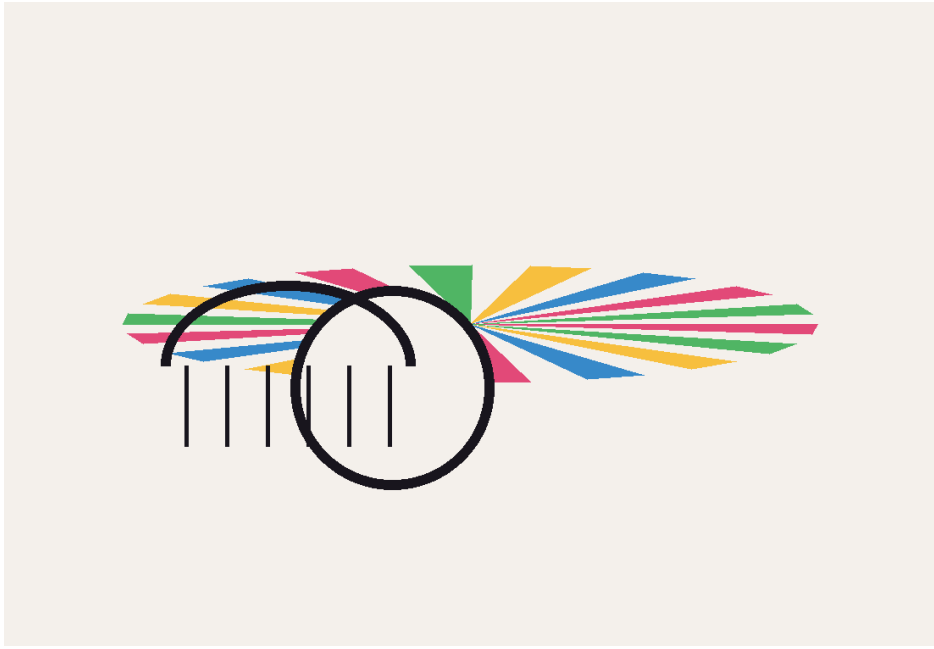

चित्र 4

महुआ जाए नहि चाहैत छलीह — ओकर मोनमे कोनो अनिष्टक आशंका छल। ओ अपन माएकेँ मोन पाड़ैत छलीह, ओकर ममता, ओकर संरक्षण — जे आब एहि सतमाएक घरमे नहि छल।

महुआक हृदयमे एकटा वेदना उठल — 'नोन चटा कैँ किए नहि मारलँह, पोसलँह एहि दिन खातिर?' — ई वाक्य महुआक गहींर पीड़ा प्रकट करैत छल: जँ एहि दिनक लेल पोसने रहथि, त' कोन काजक ई पालन-पोषण?

अध्याय ३ : विवश यात्रा

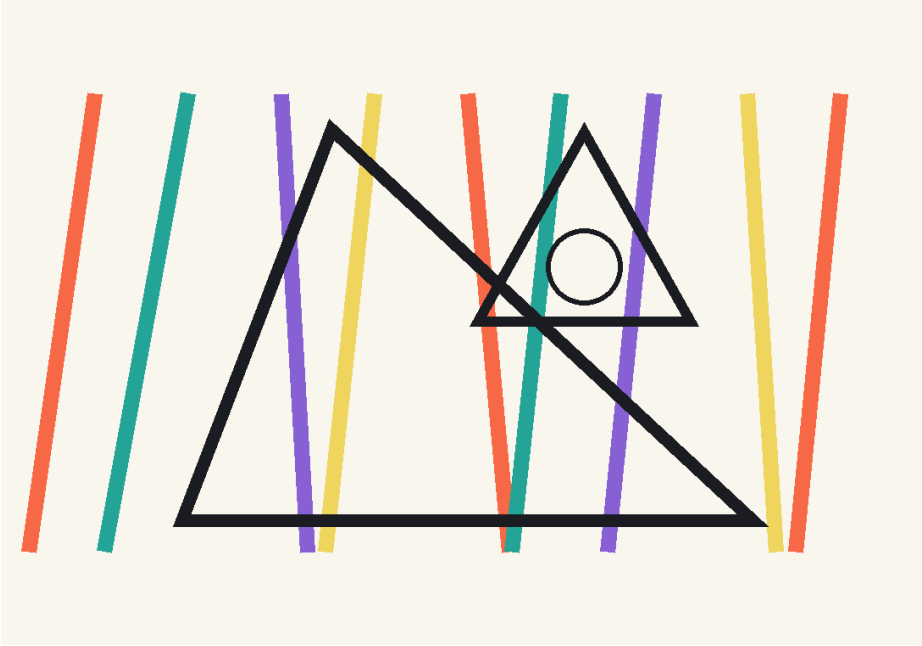

चित्र 5

मुदा सतमाए अपन निर्णयपर अडिग रहलि — साओन-भादवक ओही रातिमे पथिककेँ घाट पार करएबाक लेल महुआकेँ बलपूर्वक पठा देलक। महुआक इच्छा-अनिच्छाक कोनो मोल नहि छल।

महुआ विवश भऽ बिदा भेलीह। बीच रस्तामे ओ अपन सखी-बहिनपा फूलमतीसँ भेँट केलनि, आ दुनू भरि राति गप करैत रहलि — डर, चिन्ता, आ अनिश्चय साझा करैत।

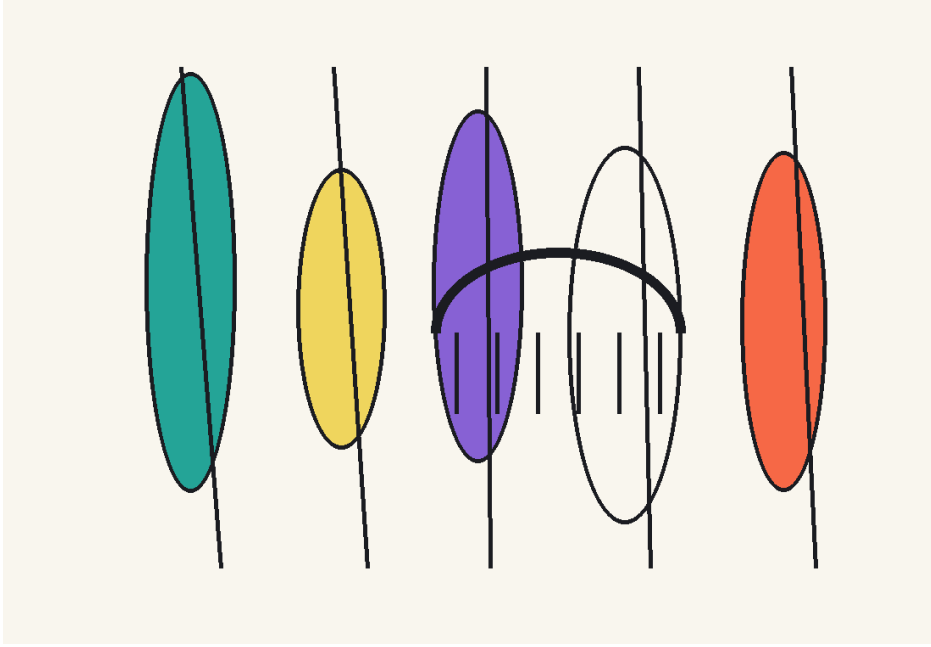

चित्र 6

महुआ अपन माएक व्यवहारपर विलाप करैत छलि — 'केहन माए अछि जे रातिमे घाट पार करेबाक लेल कहैत अछि!' सतमाएक तर्क सेहो कठोर छल — 'पथिक पाइबला होए आ बूढ़ होए त' तेल-मालिस करबामे कोनो हर्ज नहि। ओकरा जेबीसँ चारि पाइ निकालि लेल जाए, अहीमे बुधियारी अछि।'

फूलमती महुआकेँ ढाढ़स बन्हओलक — 'घबरायब नहि। जरेने रहू प्रेमक आगि, ओकरा लेल जे मोरंगमे आँगुर पर दिन गानि रहल अछि।' ई शब्द महुआक हृदयमे एकटा नाम जगओलक — मोरंगक ओ प्रेमी, जकर प्रतीक्षामे महुआ जीबैत छलि।

अध्याय ४ : मोरंगक स्मृति

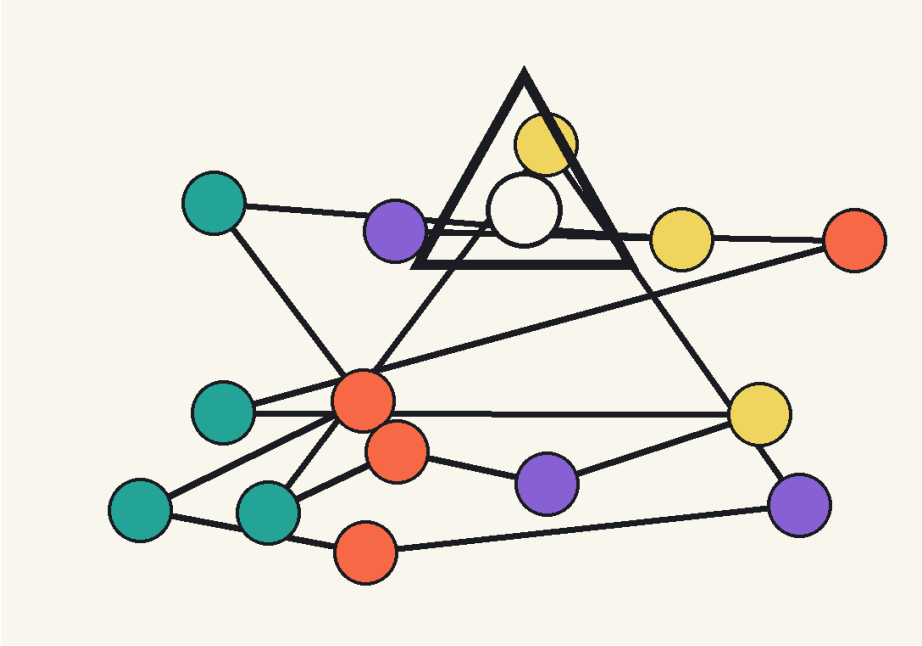

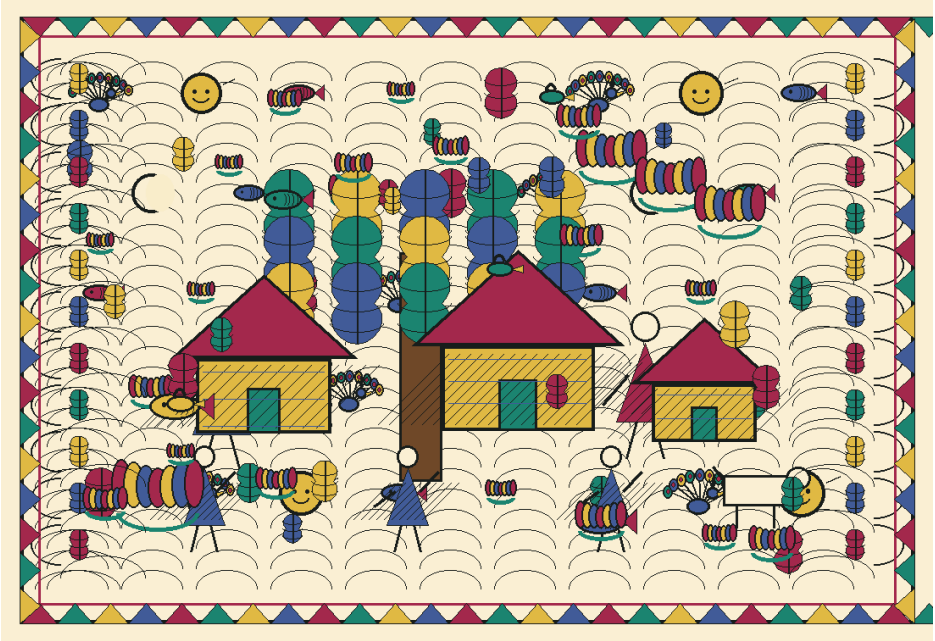

चित्र 7

मोरंगक नाम सुनिते महुआ उदास भऽ गेलि — दूर देशमे बैसल अपन प्रेमीक स्मृति ओकर हृदयकेँ कचोटलक। ओ आश्वस्त भेलि जे ओ फागुनमे आओत — ई प्रतीक्षा ओकर एकमात्र सम्बल छल।

भोरहरबामे महुआ गाम पहुँचलि, आ माए-सतमाए दस बात कहलकैक — ओल सन बोल, आरोप, अपमान। महुआ चुपचाप सहैत रहलि, कारण प्रतिवाद करबाक शक्ति ओकरा भेटले नहि छल एहि घरमे।

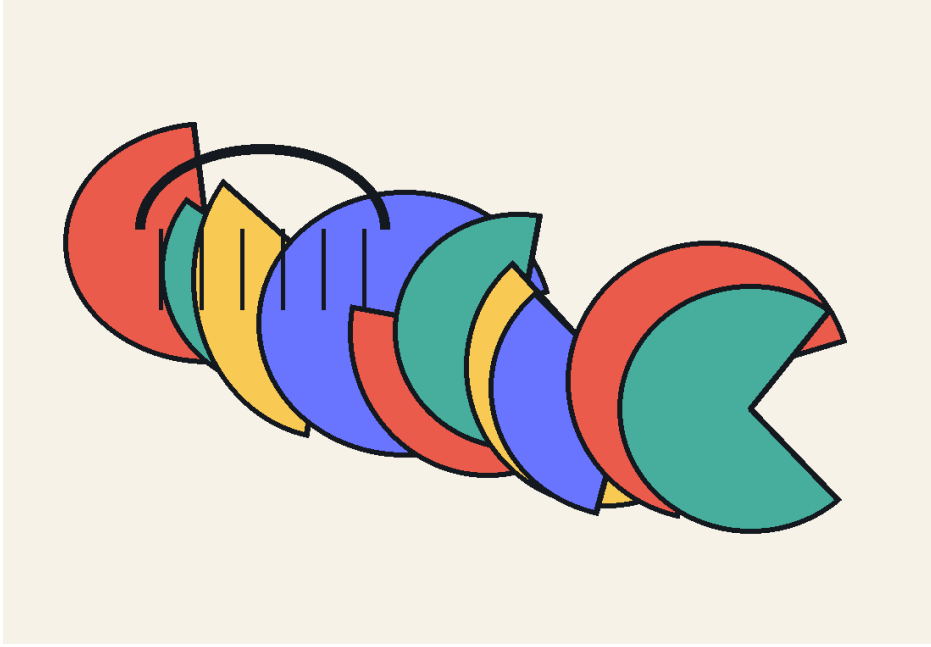

चित्र 8

बाप नशामे घर आयल त' माए ओकरो लात मारि भगा देलक — घरक ई कलह, ई अव्यवस्था महुआक लेल दैनिक जीवन बनि गेल छल। एहि बीच महुआ अपन सपना, अपन प्रेमकेँ मोनहि-मोन सम्हारने रहलि।

मुदा नियति एकटा नव विपत्तिक तैयारीमे छल। हरकारा आयल आ माएक कानमे एकटा गुप्त सन्देश देलक — ई सन्देश महुआक जीवनमे सभसँ पैघ धोखाक शुरुआत छल।

अध्याय ५ : धोखाक सौदा

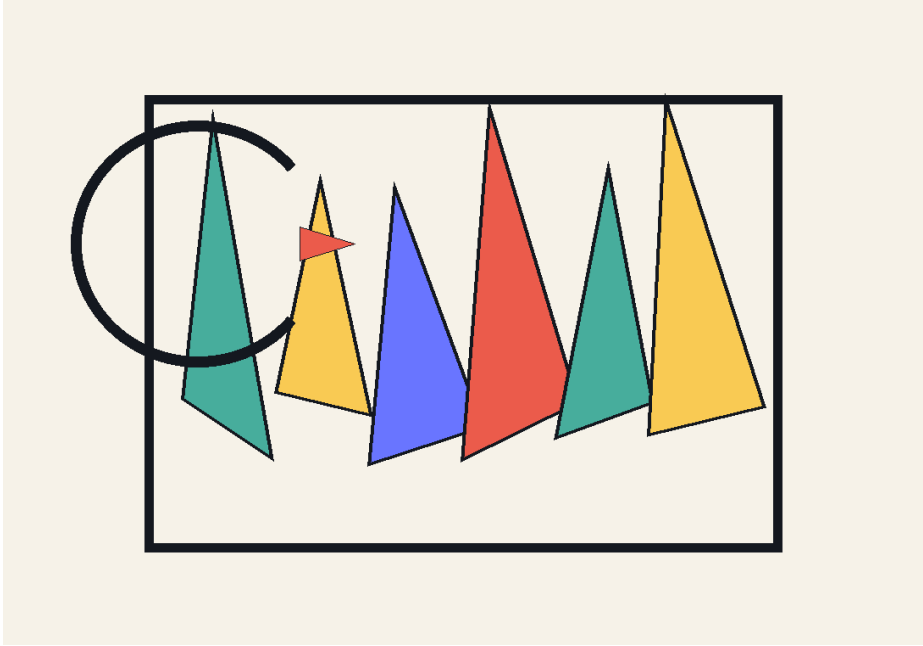

चित्र 9

हरकाराक सन्देशक बाद महुआ माएकेँ कहलक — 'अहाँ जे कहब, से हम करब' — ई समर्पण महुआक विवशता आ आज्ञाकारिताक चरम प्रदर्शन छल, बिनु ई बुझने जे आगाँ की लिखल अछि।

वणिकक आदमी आयल छल, आ ओकरा संग महुआ घाटपर पहुँचलि। वणिक दू सिपाहीक संग नावमे बैसल छल — साधारण देखबामे, मुदा एहिमे एकटा भयंकर सत्य नुकायल छल।

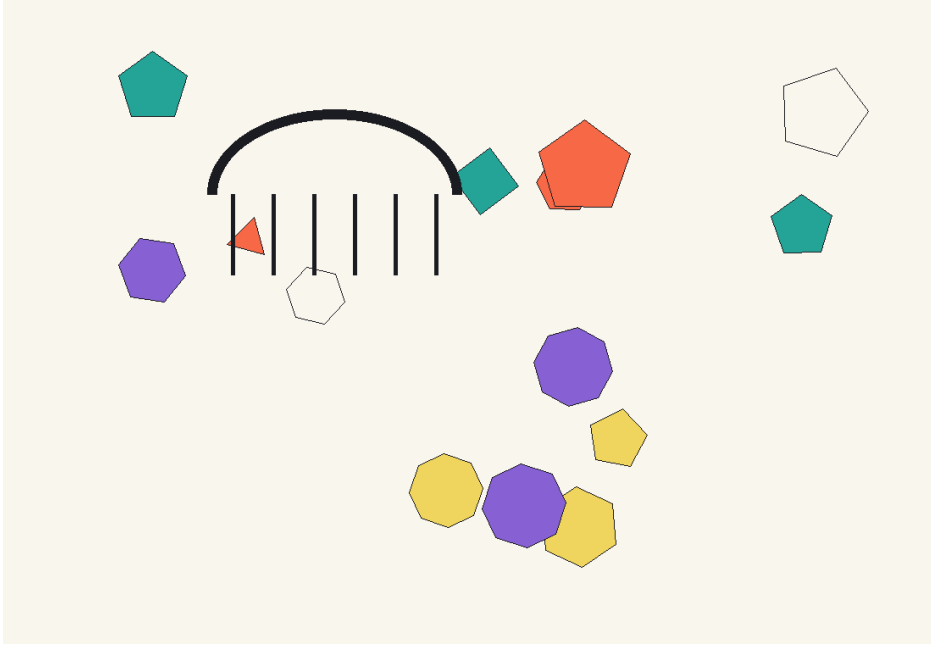

चित्र 10

महुआ नाव खेबए लागलि — विश्वाससँ, बिनु शंकाक। मुदा ओकरा नहि बूझल रहए जे ओकरा बेचि देल गेल छै! सतमाए अपन बेटीकेँ धनक बदलामे व्यापारीकेँ सौंपि देने छलि — मातृत्वक ई विश्वासघात असहनीय छल।

जखन सिपाही महुआसँ पतवार छीनि लेलक, तखने महुआकेँ आशंका भेल। सौदागर ओकरा कोरामे बैसाबए चाहलक — त' महुआ छटपटाय लागलि, अपन सतवंतीक रक्षामे।

अध्याय ६ : सौदागरक निर्ममता

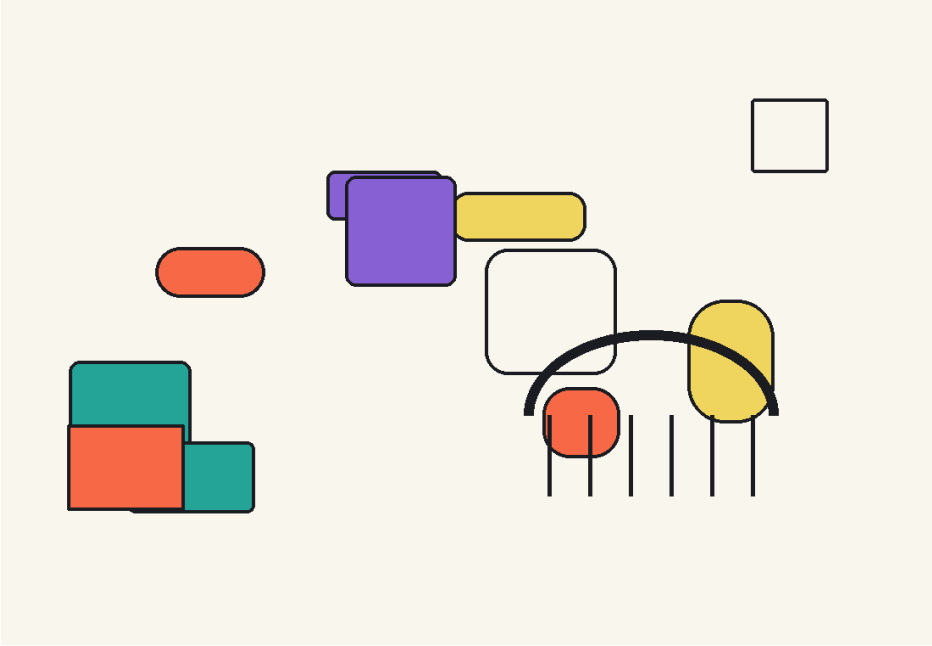

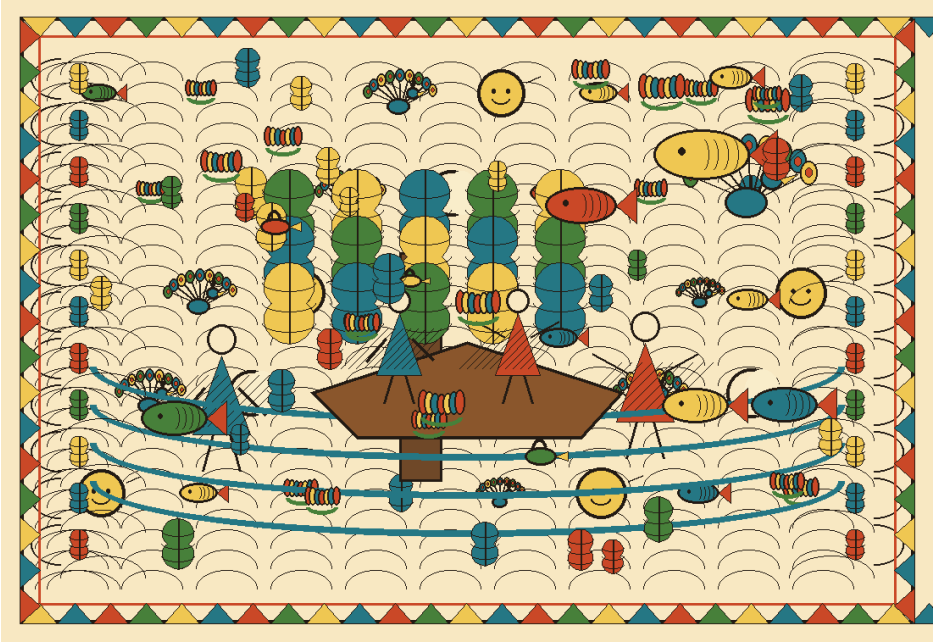

चित्र 11

सिपाही महुआकेँ ठण्ढा स्वरमे कहलक — 'सभटा पाइ चुका देल गेल अछि, अहाँकेँ कोनो मँगनीमे नहि लऽ जा रहल छथि' — ई शब्द महुआक हृदयकेँ छेदि गेल। ओ खाली एकटा व्यापारक वस्तु बना देल गेल छलि, बिनु अपन इच्छाक।

ई सत्य जानि महुआक भीतर कोनो पीड़ा नहि, एकटा दृढ़ता जागल। ओ स्थिर भऽ गेलीह — बाहरसँ शान्त, भीतरसँ एकटा निर्णय पाकल छल।

चित्र 12

सौदागर आ सिपाही सभ बुझलक जे महुआ मानि गेल अछि — ओकर स्थिरताकेँ आत्मसमर्पण बुझि लेल गेल, जखन कि ई आत्मसमर्पण नहि, आत्मरक्षाक अन्तिम योजना छल।

तखने, बिनु कोनो चेतावनीक, महुआ धारमे कूदि पड़लि! ई क्षण एहि गाथाक सभसँ साहसिक आ करुण मोड़ छल — एकटा युवतीक अन्तिम स्वतन्त्रताक चयन।

अध्याय ७ : धारमे साहस

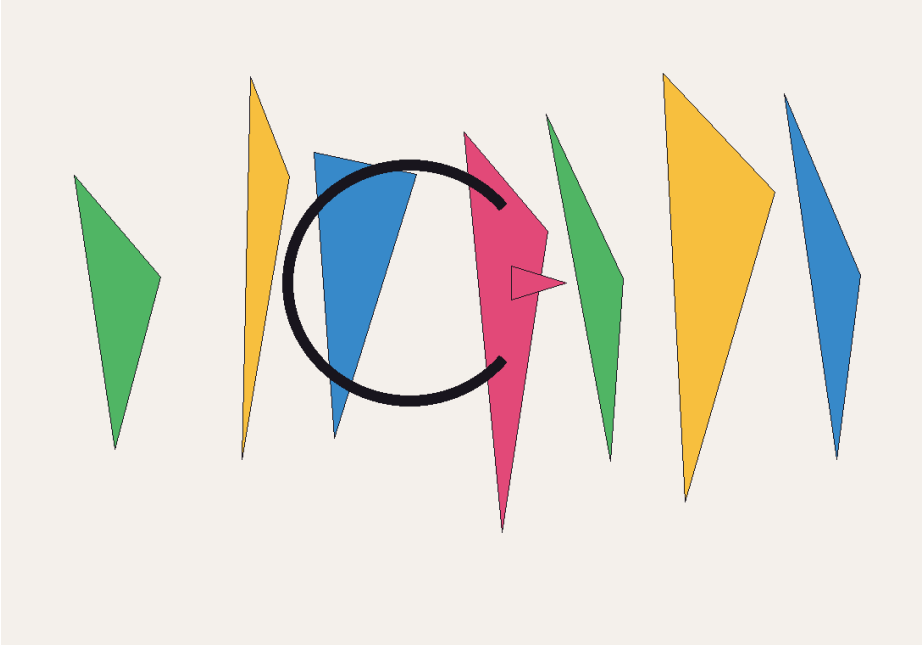

चित्र 13

महुआ उल्टा धारमे मोरंग दिस निकलि जाए चाहलक — जतय ओकर प्रेमी छल, ओकर लेल सात पालक नाव लेने प्रतीक्षामे। ई अन्तिम आशा, अन्तिम प्रयास छल — प्रेम धरि पहुँचबाक, बिक्रीसँ मुक्त हेबाक।

मुदा भरल धार, तीव्र प्रवाह, आ महुआक थाकल शरीर — ई सभटा एकसंग ओकरा विरुद्ध छल। महुआक साहस अपार छल, मुदा प्रकृतिक शक्ति ओकर बलसँ पैघ छल।

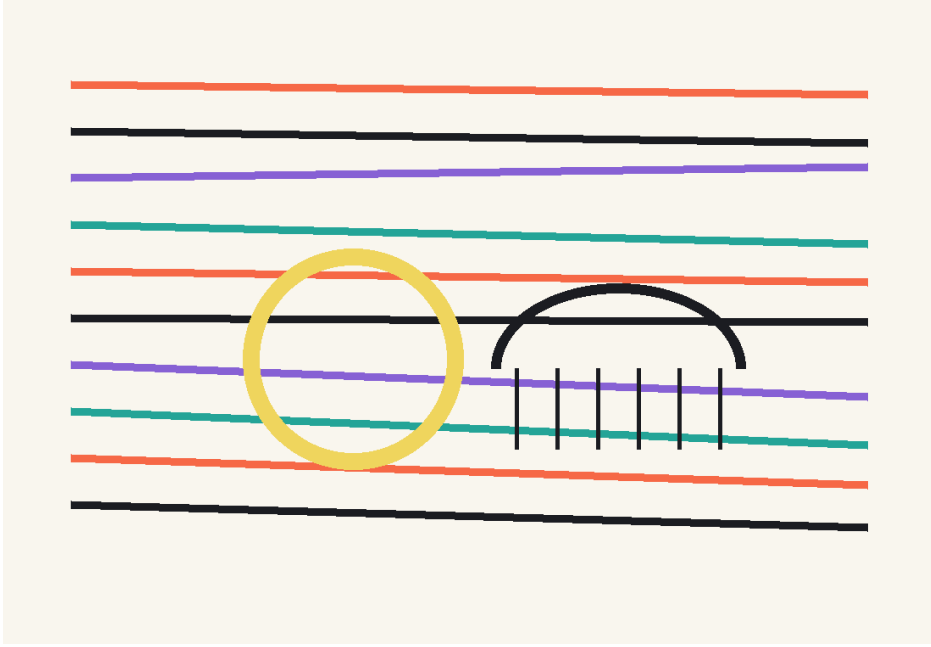

चित्र 14

एहि बीच एकटा अप्रत्याशित घटना भेल — सौदागरक छोटका सिपाही, जे महुआसँ गुप्त रूपसँ प्रेम करए लागल छल, ओहो कूदि गेल कोशिकीक धारमे — महुआकेँ बचएबाक लेल, वा ओकर संग रहबाक लेल।

मुदा धारक शक्तिक आगाँ दुनू असहाय भऽ गेल — महुआ आ ओ सिपाही, दुनू डूमि गेल! ई अन्त करुण छल — एकटा प्रेम जे कहियो पूर्ण नहि भेल, आ एकटा नव प्रेम जे जनमितहि खतम भऽ गेल।

अध्याय ८ : घटवारिनक अमरता

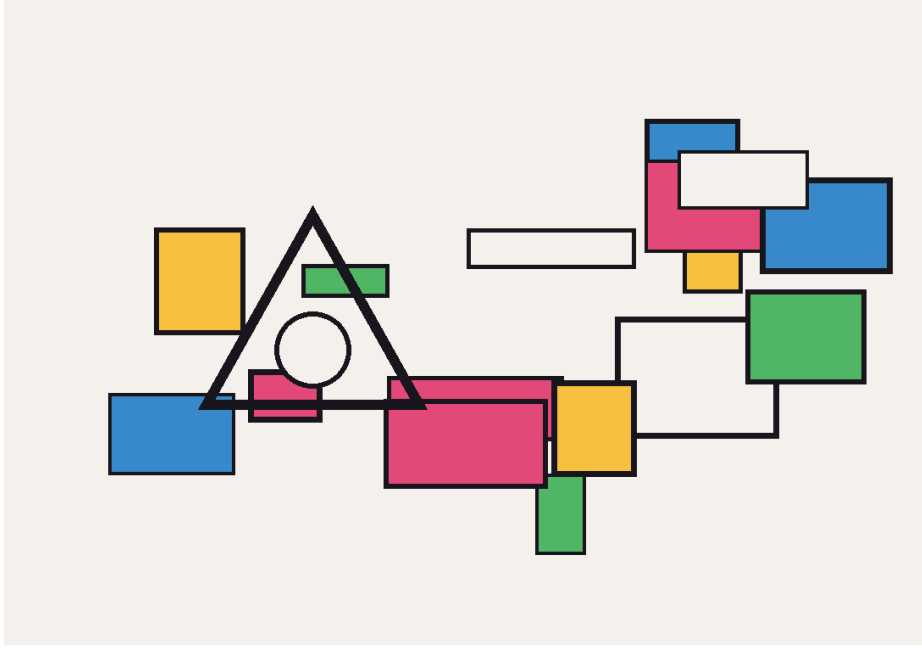

चित्र 15

महुआक कथा एतय समाप्त नहि होइत अछि। अखनहुँ साओन-भादवक धारमे कोनो घटवारकेँ कखनो काल महुआ देखा पड़ैत छथि — एकटा आत्मा जे धारमे सदा लेल जीवित अछि।

कोनो खिस्सा वचनहारकेँ ओ देखा जाइत अछि, आ जखने ओ महुआकेँ देखैत अछि, त' खिस्सा शुरू भऽ जाइत अछि — 'एकटा छलीह महुआ घटवारिन...' — गाथाक ई चक्रीय आरम्भ ओकर अमरताक प्रतीक थिक।

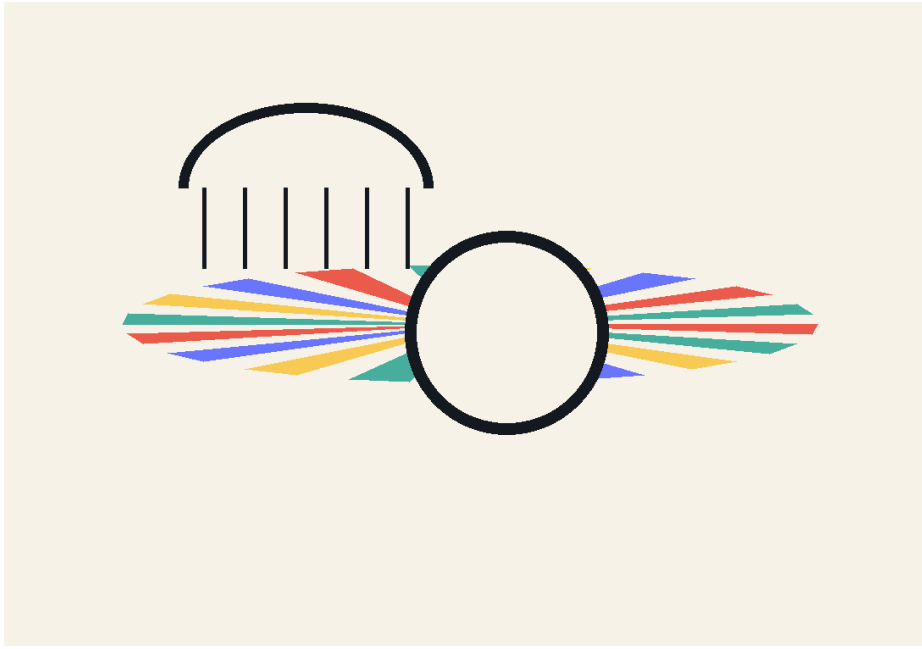

चित्र 16

महुआक गाथा मिथिलामे स्त्रीक सतवंती, साहस, आ बलिदानक प्रतीक बनि गेल अछि। एकटा एहन कन्या, जे अपन घरमे उपेक्षित रहलि, अपन माए द्वारा बेचल गेल, मुदा अपन स्वाभिमान आ प्रेम कहियो नहि त्यागलक।

आइयो परमान आ कोशिकीक धारमे साओन-भादवक रातिमे लोक महुआक स्मृतिमे सतर्क रहैत अछि — ओकर गीत गबैत अछि, ओकर बलिदानकेँ सम्मान दैत अछि।

महुआ घटवारिन — एकटा गरीब घरक कन्या, जे अपन मृत्युसँ अमर भऽ गेलि।

समाप्त

VIDEHA

विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका | ISSN 2229-547X | www.videha.co.in

छेछन

डोम लोकदेवताक बल आ प्रेमक वीरगाथा

गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादक, विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका (since 2000)

ISSN 2229-547X

© Gajendra Thakur/ Preeti Thakur; गजेन्द्र ठाकुर सम्पादक, विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका (since 2000) ISSN 2229-547X

ई पोथी गजेन्द्र ठाकुर समग्रक अन्तर्गत संकलित अछि।

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक ISBN:978-93-5890-210-5

DESIGNED BY: AUM GAJENDRA THAKUR

उपक्रम : बलगर छेछन महराज

डोम जातिक लोकदेवता छेछन महराज बड्ड बलगर छलाह — एकटा एहन वीर, जकर बल आ साहस मिथिलाक लोककथामे आइयो स्मरण कएल जाइत अछि।

ई गाथा शक्तिपरीक्षा, प्रेम-विजय, आ अन्ततः एकटा शक्तिशाली द्वन्द्वक थिक — जतय छेछन अपन बलपर एकटा जिद्दी सुग्गर आ मानिकचन्द नामक बलशाली डोम सरदारकेँ पराजित कऽ, प्रेम आ सम्मान दुनू प्राप्त केलनि।

अध्याय १ : सहिदापुरक चर्च

चित्र 1

छेछन महराजक संगी-साथी सभ एक दिन ओकरा एकटा रोमांचक खिस्सा सुनओलनि। जखन ओ सभ सहिदापुर गेल छला — बाँसक टोकरी आ पटिया बेचबाक लेल — तखन ओतुक्का डोम सरदार मानिक चन्दक वीरताक चर्च सुनलनि।

मानिकचन्द एकटा अखराहा बनओने छलाह, आ ओतय एकटा पैघ सन डंका राखल छल — चुनौतीक प्रतीक, वीरताक आह्वान।

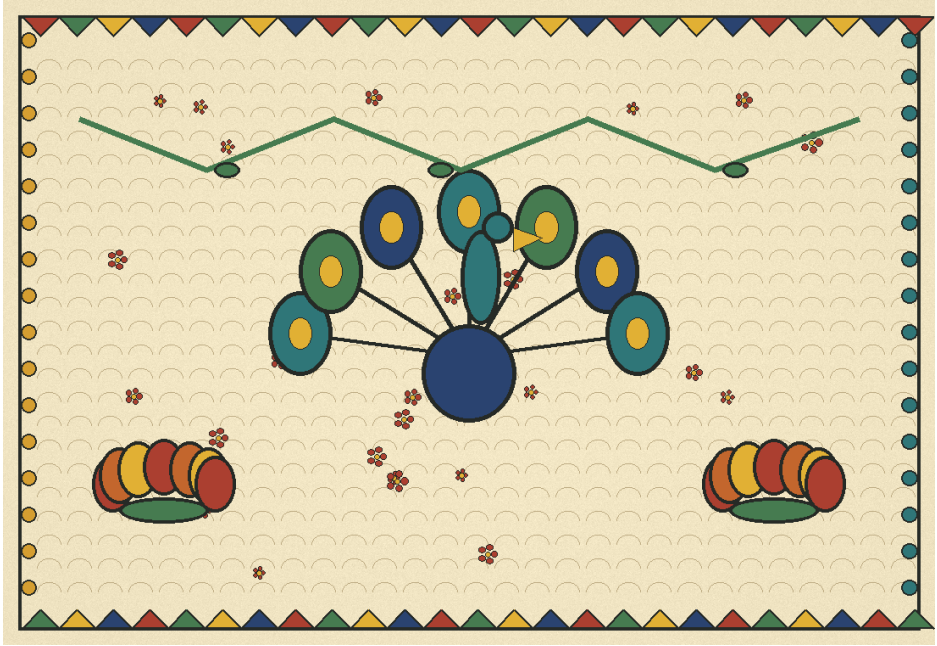

चित्र 2

जे किओ ओहि डंकापर चोट करैत छल, ओकरा मानिकचन्दक पोसुआ सुग्गर — जकर नाम चटिया छल — तकरासँ लड़ए पड़ैत छलैक! ई सुग्गर कोनो साधारण जानवर नहि, अत्यन्त शक्तिशाली आ भयंकर छल।

मानिकचन्द एकटा प्रण केने छलाह — जे किओ चटियासँ जीति जाएत, से मानिकचन्दसँ लड़बाक योग्य होएत, आ जे मानिकचन्दकेँ हराएत, से मानिकचन्दक बहिन पनमासँ विवाहक अधिकारी होएत! ई असाधारण शर्त एकटा दुर्लभ अवसर छल, मुदा आइ धरि कोनो व्यक्ति चटियाकेँ हराबएमे सक्षम नहि भेल छल।

अध्याय २ : चिलमक साहस

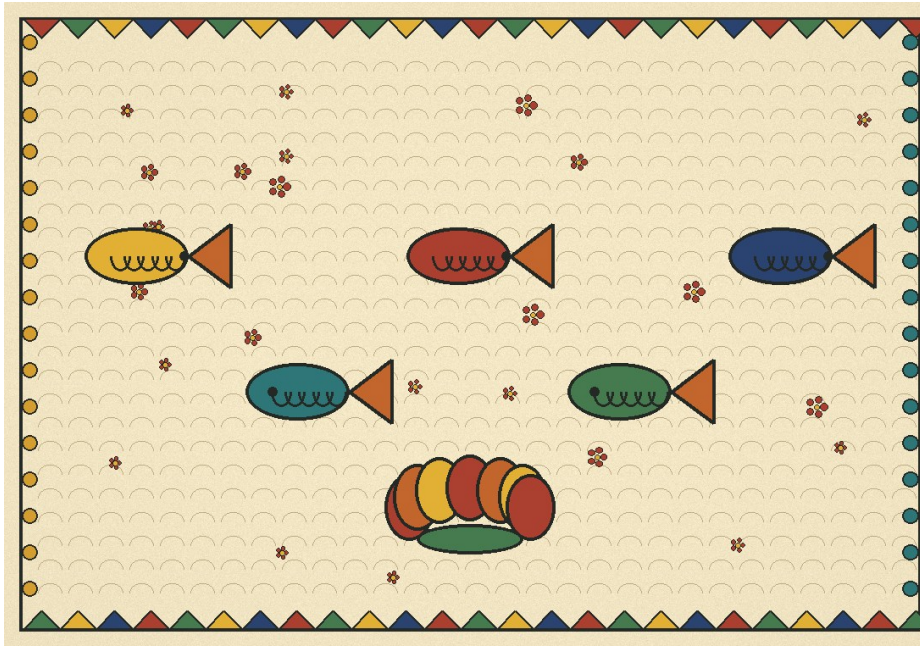

चित्र 3

दिन बितैत गेल, आ एक दिन छेछन महराज अपन पाँच पसेरीक भारी कत्ता लऽ सहिदापुर दिस बिदा भेला — ओहि चुनौतीपूर्ण डंकाक सामना करबाक लेल।

डंकापर चोट करबासँ पहिने, छेछन महराज एकटा अद्भुत तैयारी केलनि — ओ एकटा बुढ़ीसँ आगि माँगलनि, आ अपन चिलममे आगि आ विशेष पुष्प-पदार्थ मेदनीफूल भरि सभटा पीबि गेलाह!

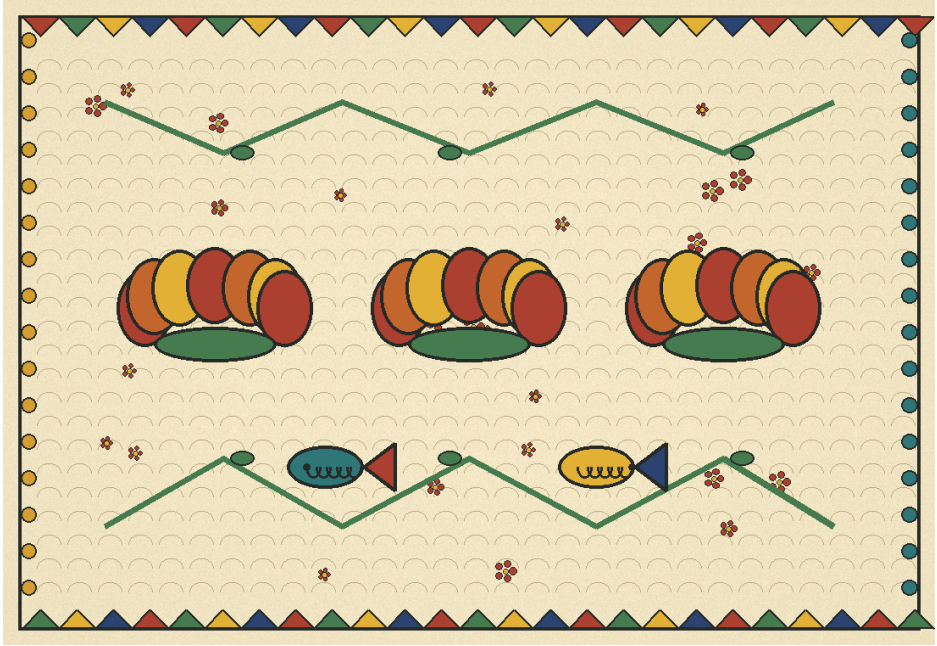

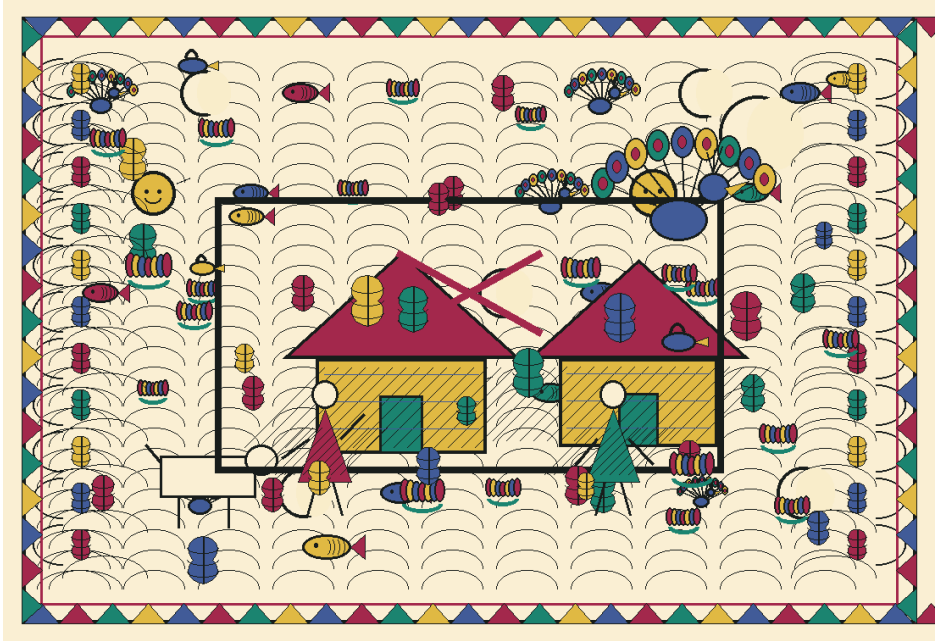

चित्र 4

ई तैयारी छेछनक असाधारण साहस आ आत्मविश्वासक प्रतीक छल — चुनौतीक सामना करबासँ पहिने अपन आत्माकेँ सुदृढ़ करब, शारीरिक आ मानसिक दुनू रूपसँ तैयार होएब।

झुमैत, नशाक प्रभावमे मस्त, मुदा पूर्ण नियन्त्रणमे छेछन डंकापर जोरसँ चोट कऽ देलनि! ई ध्वनि सम्पूर्ण सहिदापुरमे गूँजल — चुनौती स्वीकार भऽ गेल छल, आब पाछाँ हटबाक कोनो प्रश्न नहि छल।

अध्याय ३ : चटियासँ द्वन्द्व

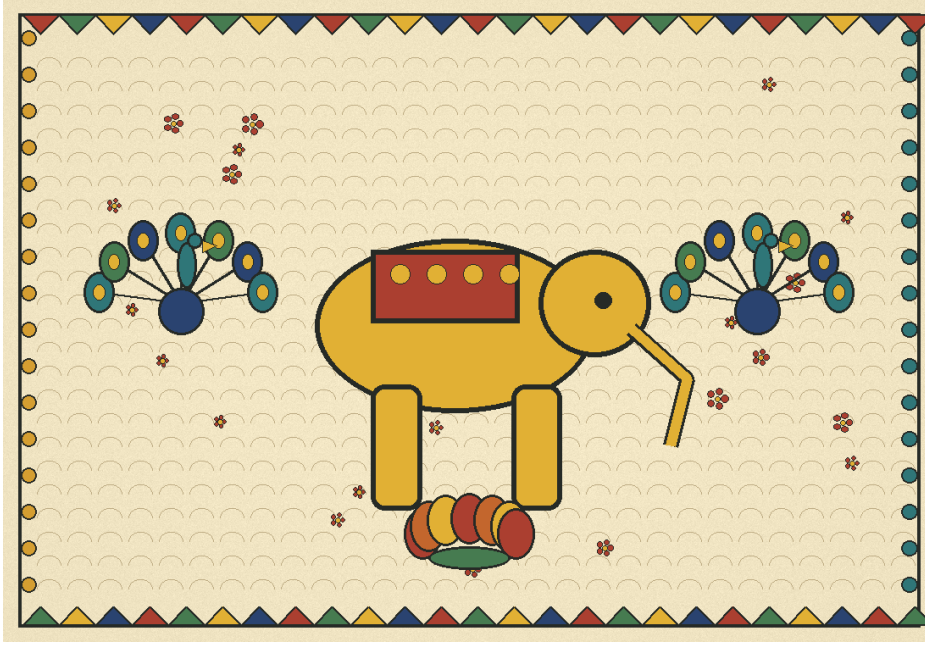

चित्र 5

मानिकचन्द छेछनकेँ देखलनि आ तुरत चटियाकेँ शोर केलनि — युद्धक संकेत। चटिया — भयंकर सुग्गर — दौगि कऽ आयल, अपन शक्तिक प्रदर्शन करैत।

मुदा आश्चर्यजनक रूपसँ, चटिया छेछनकेँ देखि पड़ा गेल! ई प्रतिक्रिया असामान्य छल — शाइत छेछनक तेजस्वी रूप, वा हुनक असाधारण आत्मविश्वास, चटियाकेँ डरा देलक।

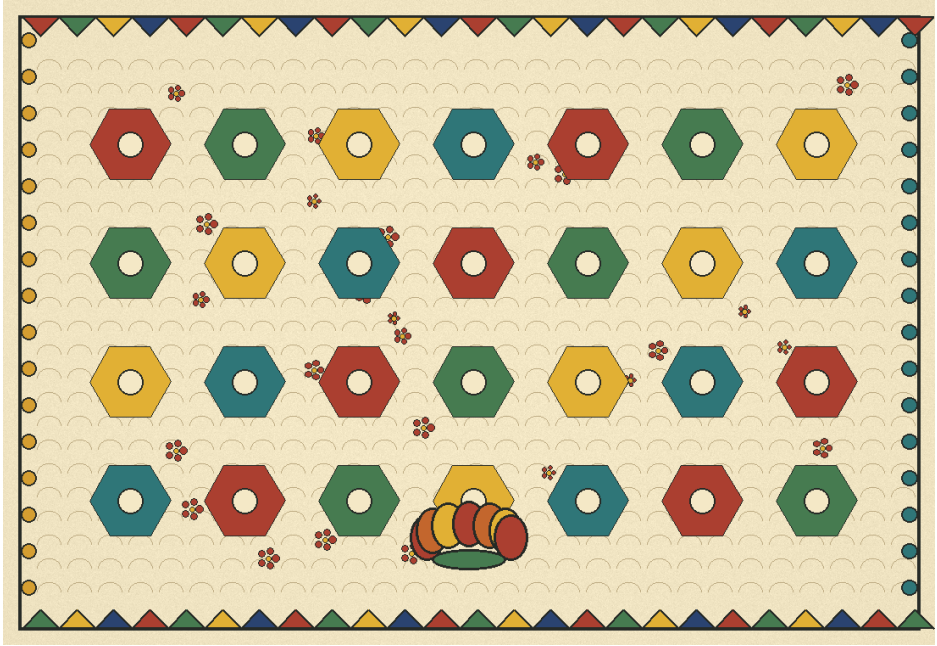

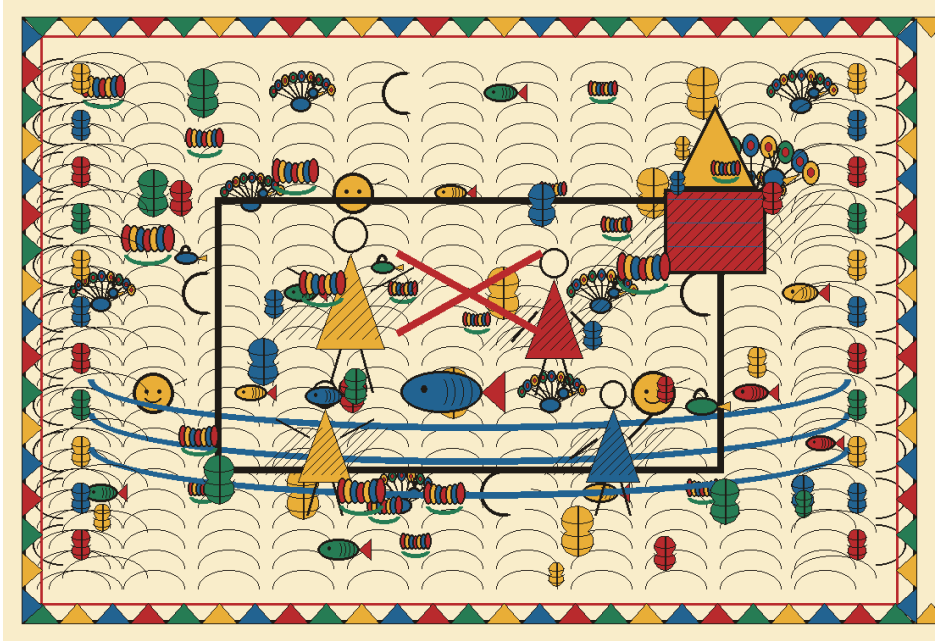

चित्र 6

पनमा आ मानिकचन्द ई देखि चटियाकेँ ललकारा देलनि — अपन पोसुआ पशुकेँ फेर लड़बाक लेल प्रोत्साहित करैत। चटिया दौगि कऽ छेछनपर झपटल — निर्णायक क्षण आबि गेल छल।

मुदा छेछन तैयार छला — ओ चटियाक दुनू पएर पकड़ि चीरि देलनि! ई कार्य अद्भुत बल आ कौशलक प्रदर्शन छल — जकरा आइ धरि कियो हरा नहि सकल छल, ओकरा छेछन एक्के प्रहारमे पराजित कऽ देलनि।

अध्याय ४ : मानिकचन्दसँ दंगल

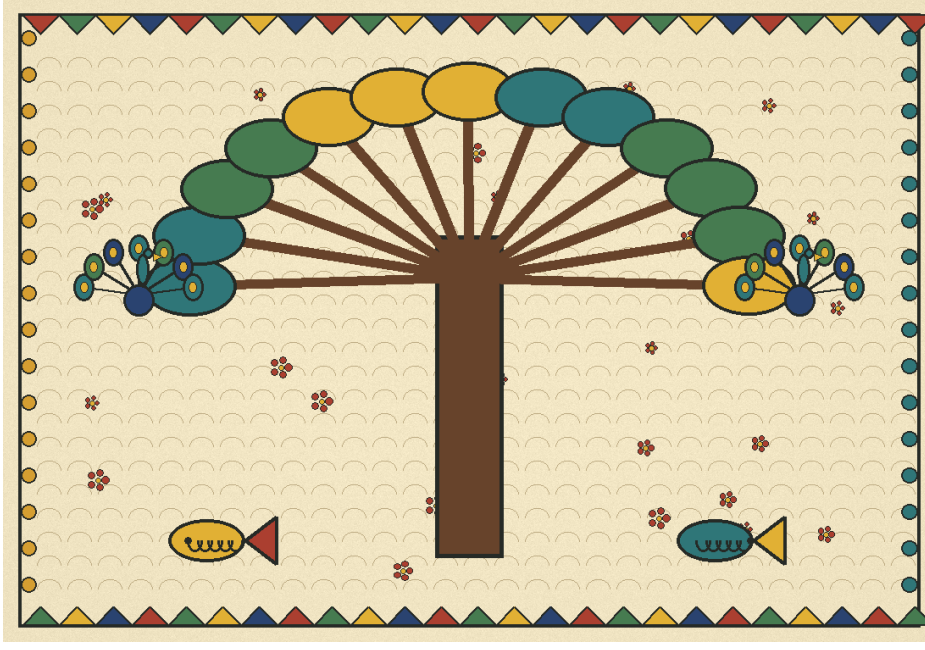

चित्र 7

चटियाक पराजयक बाद, अगिला चरण शुरू भेल — मानिकचन्द स्वयं आब छेछनसँ लड़बाक लेल तैयार भेला, प्रण अनुसार। ई दंगल दुनू शक्तिशाली योद्धाक बीचक निर्णायक मुकाबला छल।

मानिकचन्द आ छेछनमे भयंकर दंगल भेल — बल, कौशल, आ दृढ़ताक टक्कर। दुनू पक्ष अपन-अपन सामर्थ्यक पूर्ण प्रदर्शन करैत, दुनू गोटे जनसमूहक आगाँ एकटा रोमांचक द्वन्द्व प्रस्तुत केलनि।

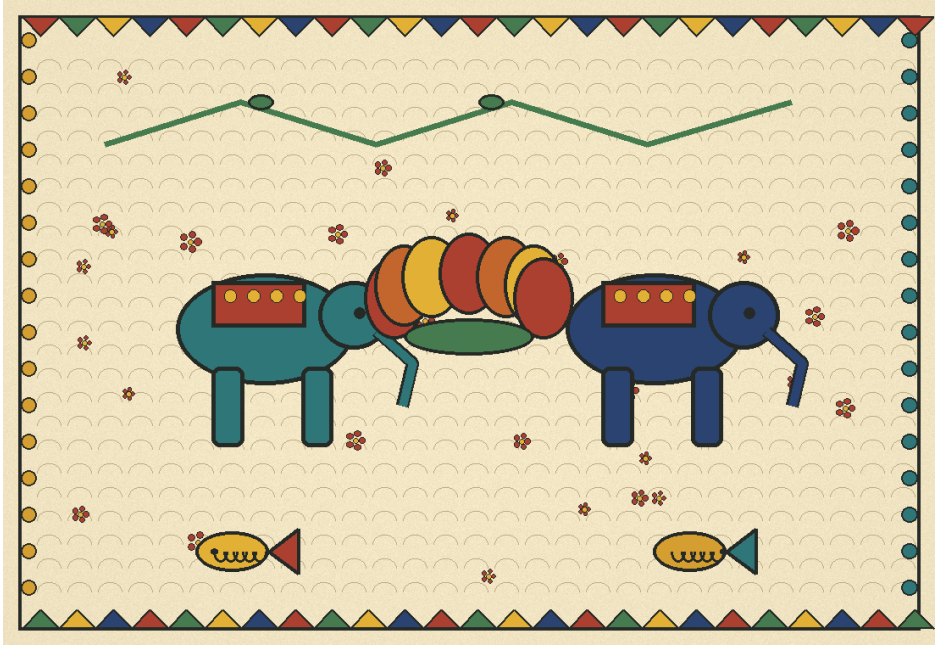

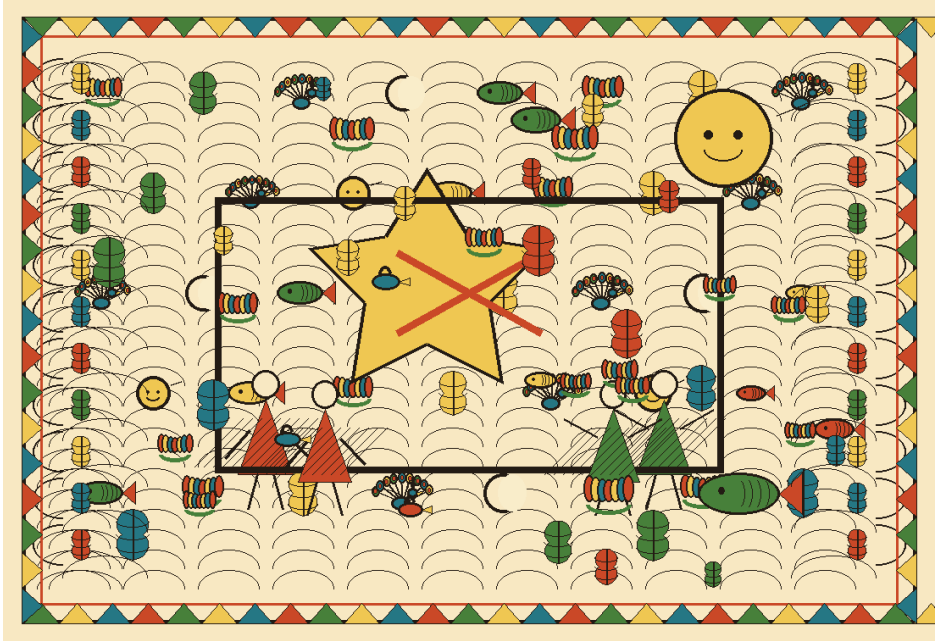

चित्र 8

अन्ततः छेछन विजयी भेला — ओ मानिकचन्दकेँ बजारि देलनि! ई विजय छेछनक बल आ साहसक चरम प्रमाण छल — जे चुनौती आइ धरि कियो पूर्ण नहि कऽ सकल छल, से छेछन सफलतापूर्वक पूर्ण कऽ देलनि।

मानिकचन्द अपन पराजय स्वीकार केलनि, मुदा दुखी नहि भेला — अपितु प्रसन्न भेला! कारण ओकर प्रण पूर्ण भेल, आ एकटा योग्य वीरकेँ अपन बहिनक हाथ सौंपबाक अवसर भेटलनि।

अध्याय ५ : पनमाक विवाह

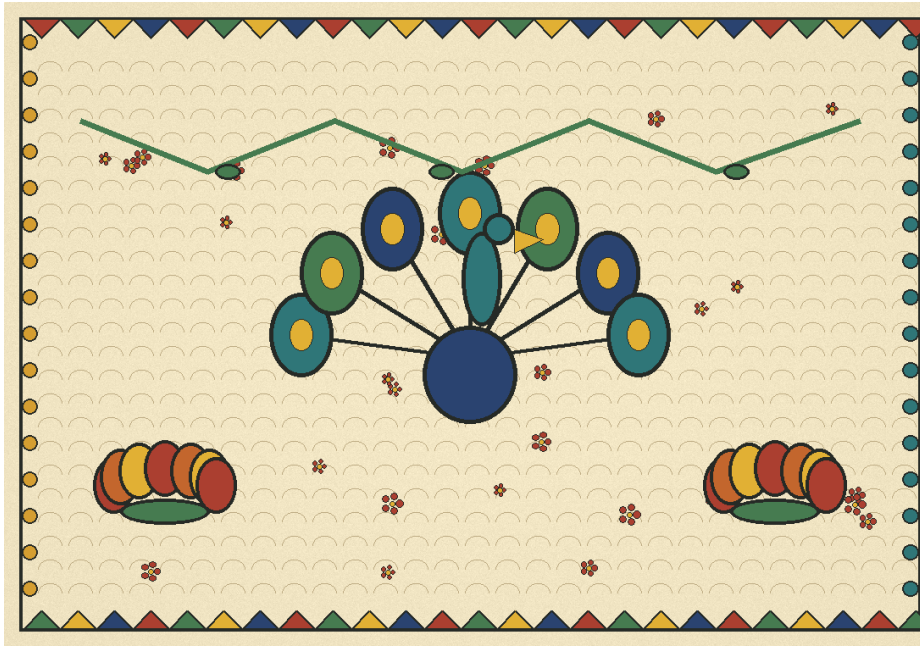

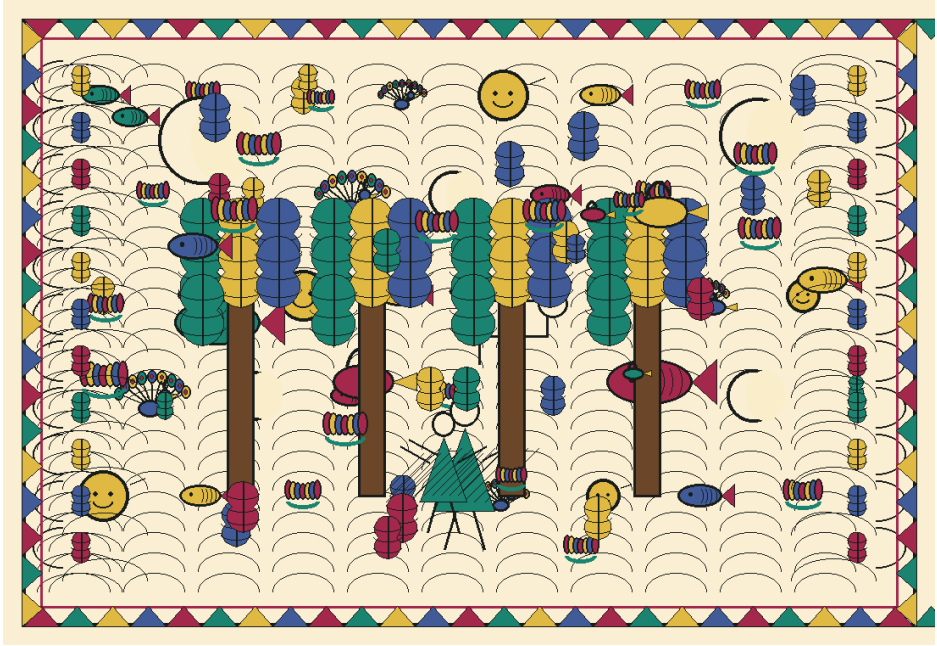

चित्र 9

खुशी-खुशी मानिकचन्द अपन बहिन पनमाक विवाह छेछनक संग करा देलनि — प्रणक अनुसार, आ छेछनक असाधारण वीरताक सम्मानमे। ई विवाह छेछनक बल-विजयक मधुर फल छल।

पनमा आ छेछनक ई मिलन एकटा वीरगाथाक सुखान्त अध्याय छल — शक्ति आ साहसक पुरस्कार प्रेम आ गृहस्थीक रूपमे भेटल। छेछन आब केवल एकटा योद्धा नहि, एकटा गृहस्थ सेहो बनि गेला।

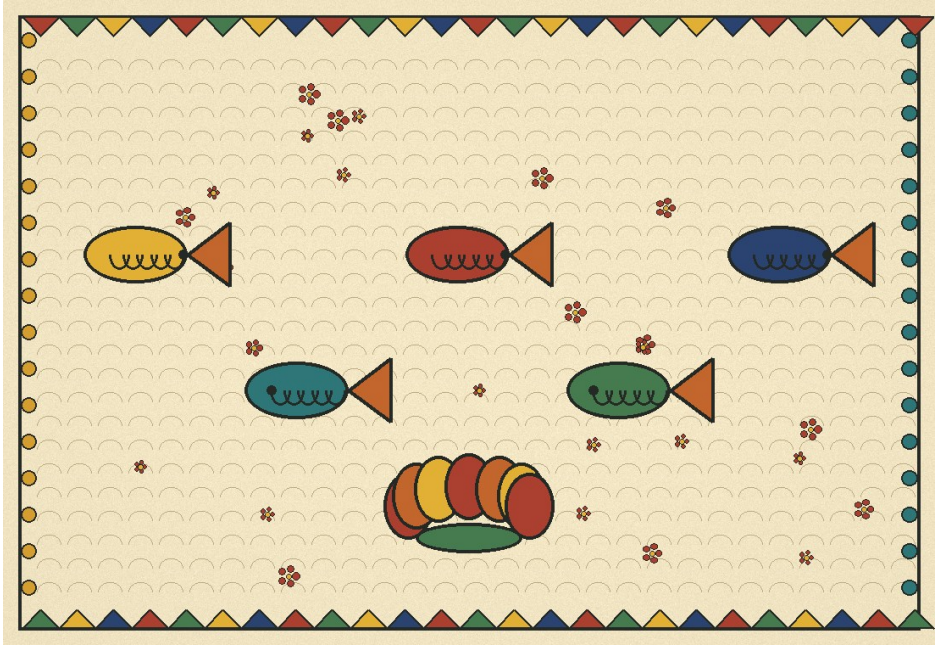

चित्र 10

मानिकचन्द आ छेछनक बीच ई प्रतियोगिता शत्रुतामे नहि बदलल — अपितु सम्मान आ पारिवारिक बन्धनमे परिणत भेल। ई सम्बन्ध डोम समुदायक भीतर वीरता आ सम्मानक परम्परा देखबैत छल।

मुदा गाथा एतय समाप्त नहि होइत अछि— छेछनक जीवनमे आरो एकटा चुनौती प्रतीक्षामे छल, जकर सामना ओकरा अपन नव गृहस्थ जीवनक बीच करए पड़त — एकटा आर शक्तिशाली विरोधीक संग।

अध्याय ६ : कृष्णारामक बसबिट्टी

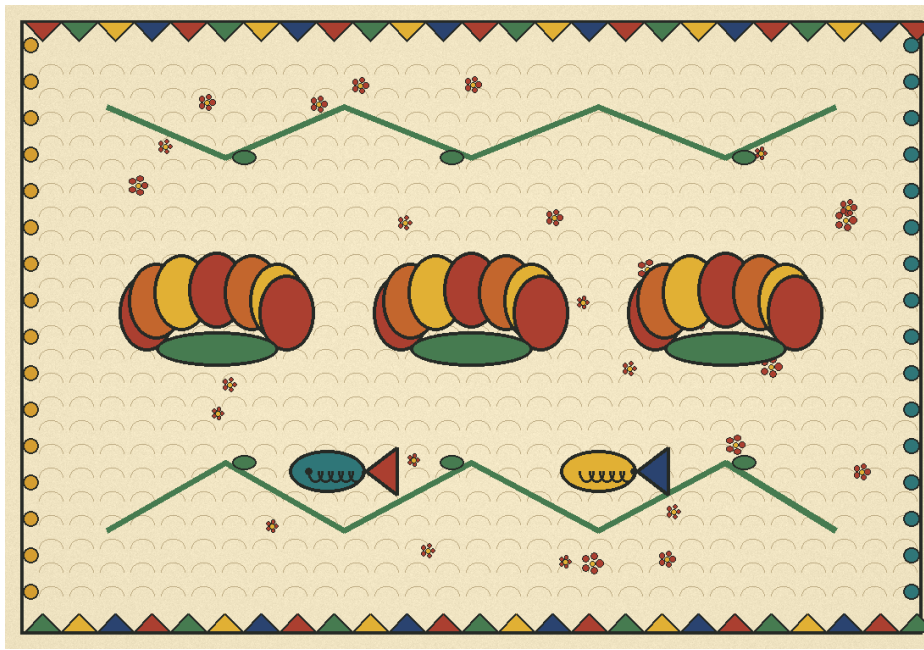

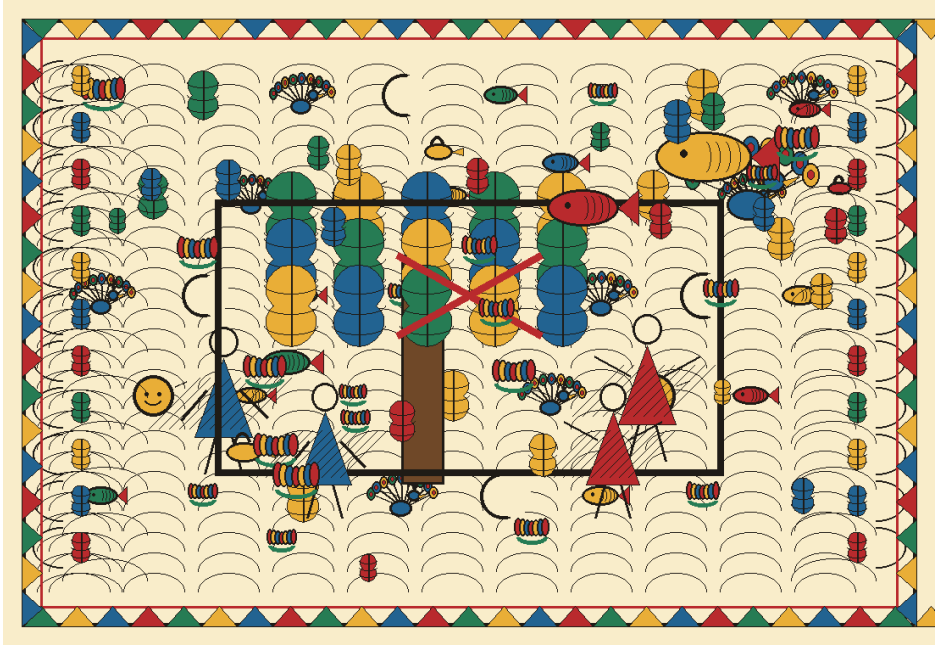

चित्र 11

दिन बितैत गेल। विवाहक बाद छेछन अपन नव जीवन जीबए लगला — मुदा हुनक स्वभाव अखनहुँ साहसी आ निर्भीक छल। ओ दोसराक बसबिट्टीसँ बाँस काटए लगला — शाइत जीविकाक आवश्यकतासँ, वा अपन पुरान आदतिसँ।

एहिना एक बेर छेछन यादवक लोकदेवता कृष्णारामक बसबिट्टीसँ बहुत रास बाँस काटि लेलनि — बिनु अनुमतिक, वा शाइत प्रथागत अधिकारक भ्रममे। ई कार्य आगाँ चलि कऽ एकटा नव द्वन्द्वक कारण बनल।

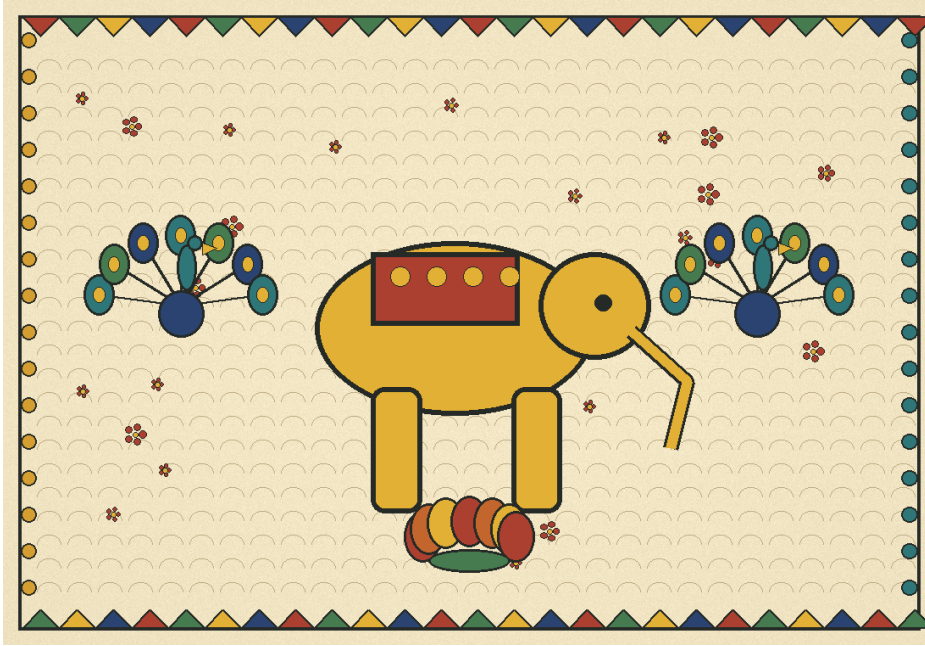

चित्र 12

कृष्णारामकेँ जखन ई पता चललनि, त' ओ क्रुद्ध भऽ अपन सुबरन हाथीपर चढ़ि छेछन लग अएलाह — प्रतिशोध वा स्पष्टीकरणक लेल।

कृष्णाराम छेछनकेँ आमक कलममे पनमा संग सुतल देखलनि — शान्त, निश्चिन्त क्षण, जे अकस्मात् एकटा तनाव भरल मुठभेड़मे बदलए बला छल।

अध्याय ७ : हाथीक शक्ति-प्रदर्शन

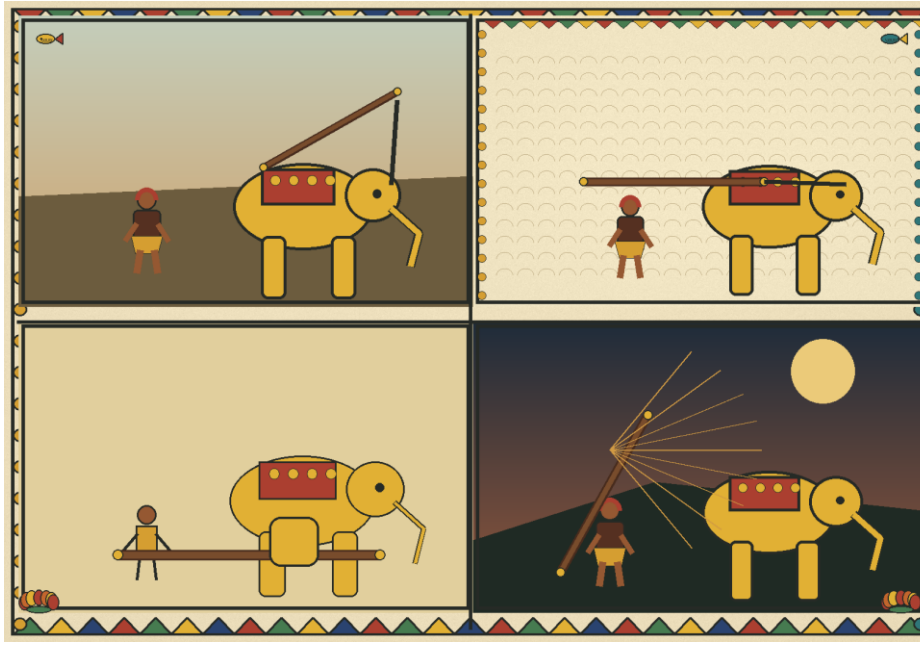

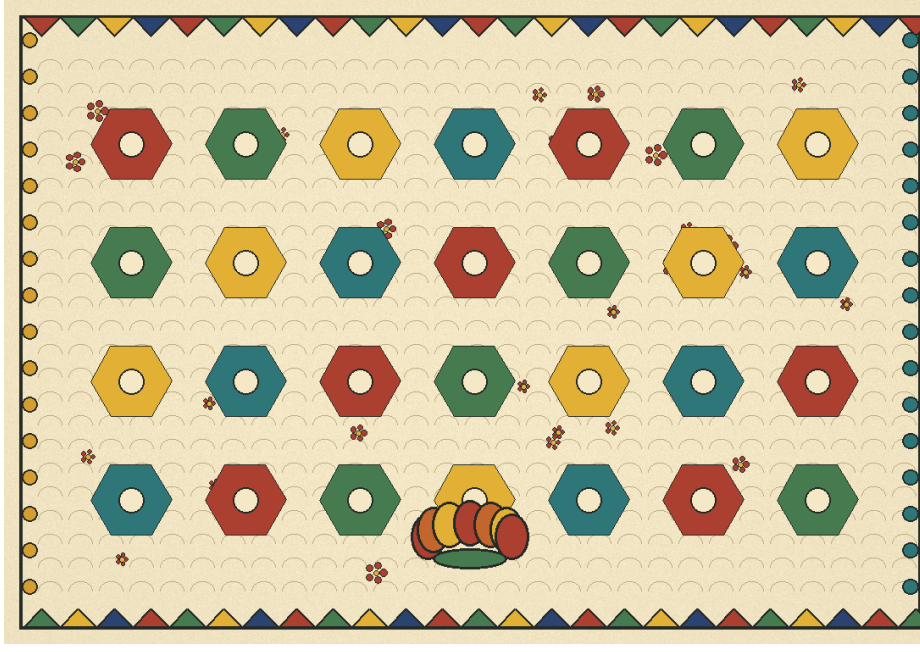

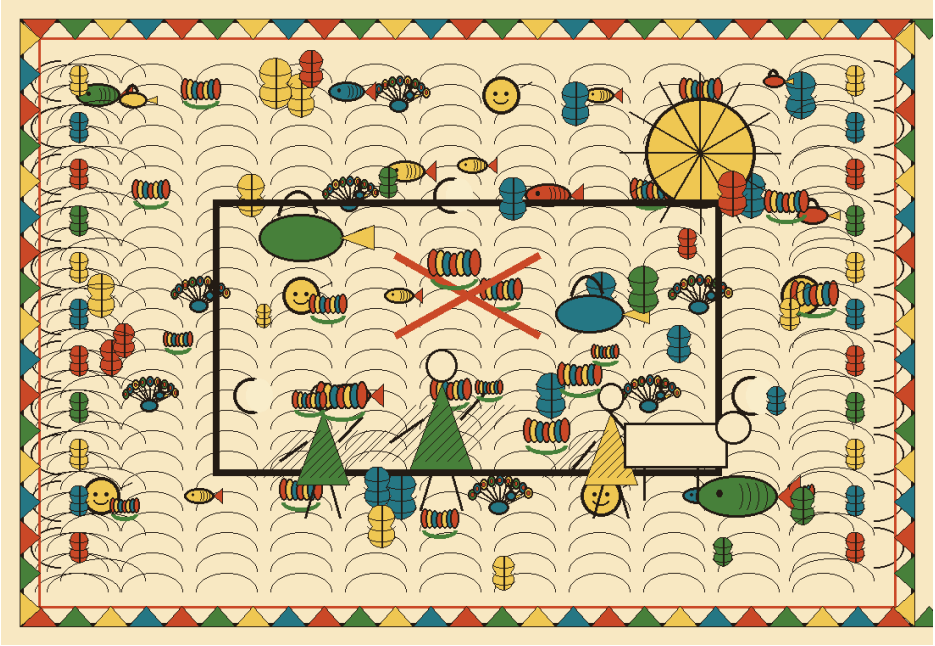

चित्र 13

कृष्णारामक हाथी सुबरन — अत्यन्त शक्तिशाली आ आज्ञाकारी — अपन स्वामीक क्रोधकेँ बुझि तुरत कार्रवाइ केलक। ओ छेछनक पाँच पसेरीक भारी कत्ताकेँ अपन सूढ़सँ उठा लेलक।

सुबरन ऐ भारी कत्ताकेँ छेछनक गरदनिपर राखि देलक — एकटा प्रतीकात्मक आ शारीरिक दुनू रूपसँ शक्तिशाली कार्य, जे छेछनक स्वतन्त्रता आ शक्तिकेँ सीमित करबाक प्रयास छल।

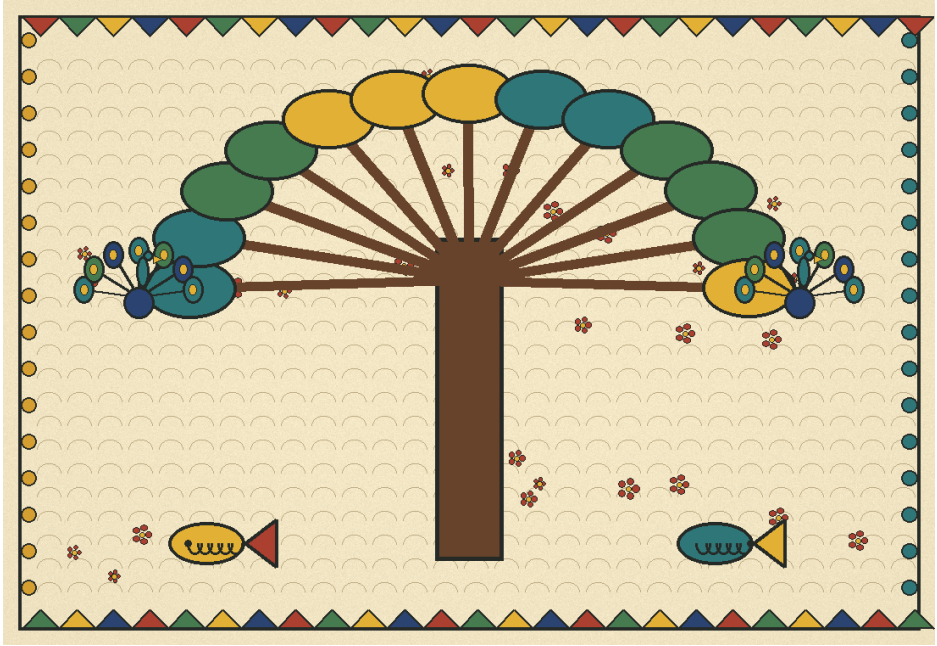

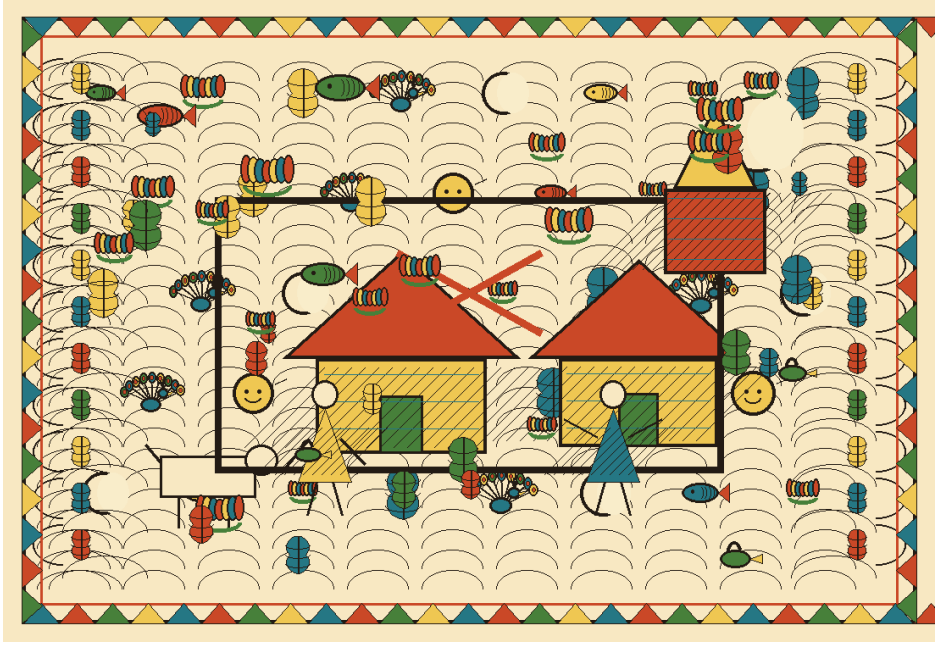

चित्र 14

फेर सुबरन अपन भरिगर पएर ओही कत्तापर राखि देलक — छेछनकेँ पूर्णतः जकड़ैत, हिलब-डुलब असम्भव बनबैत। ई हाथीक अपार शक्तिक प्रदर्शन छल, जकर सामना करब कोनो साधारण मनुष्यक लेल असम्भव जकाँ बुझाइत छल।

ई क्षण छेछनक जीवनक एकटा नव, गम्भीर चुनौतीक आरम्भ छल — जे वीर चटिया आ मानिकचन्द सन शक्तिशाली विरोधीकेँ पराजित केने छला, से आब एकटा हाथीक अपार बलक सोझाँ ठाढ़ छला। गाथा एतय एकटा नव मोड़ लैत अछि, जकर आगाँक विकास मिथिलाक लोक-स्मृतिमे छेछनक अदम्य साहस आ अन्ततः हुनक विजयी संघर्षक रूपमे सुरक्षित अछि — एकटा एहन वीर, जे बाँसक बजारसँ लऽ कऽ हाथीक शक्ति-प्रदर्शन धरि, सभ चुनौतीक सामना अपन अदम्य साहससँ केलनि।

समाप्त

VIDEHA

विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका | ISSN 2229-547X | www.videha.co.in

गरीबन बाबा

अनजान-सुनजानमे भेल अपराधसँ देवीक कोप आ भक्तक अमरता

गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादक, विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका (since 2000)

ISSN 2229-547X

© Gajendra Thakur/ Preeti Thakur; गजेन्द्र ठाकुर सम्पादक, विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका (since 2000) ISSN 2229-547X

ई पोथी गजेन्द्र ठाकुर समग्रक अन्तर्गत संकलित अछि।

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक ISBN:978-93-5890-210-5

DESIGNED BY: AUM GAJENDRA THAKUR

उपक्रम : तीन संगी

कमला कातक उधरा गाममे तीनटा संगी रहथि — बरहम ठाकुर ब्राह्मण, घासी यादव आ गरीबन धोबि। पहिने गामे-गामे अखराहा रहए, आ ओतय ई तीनू संगी कुश्ती लड़थि, पहलमानी करथि।

ई गाथा एकटा अनजान-सुनजानमे भेल भूलक थिक, जकर परिणाम अकल्पनीय भेल — एकटा साधारण दैनिक क्रियामे अनायास भेल गलतीसँ देवीक कोप, आ अन्ततः भक्तिक शक्तिसँ अमरता प्राप्तिक कथा।

अध्याय १ : अनजान-सुनजानमे भूल

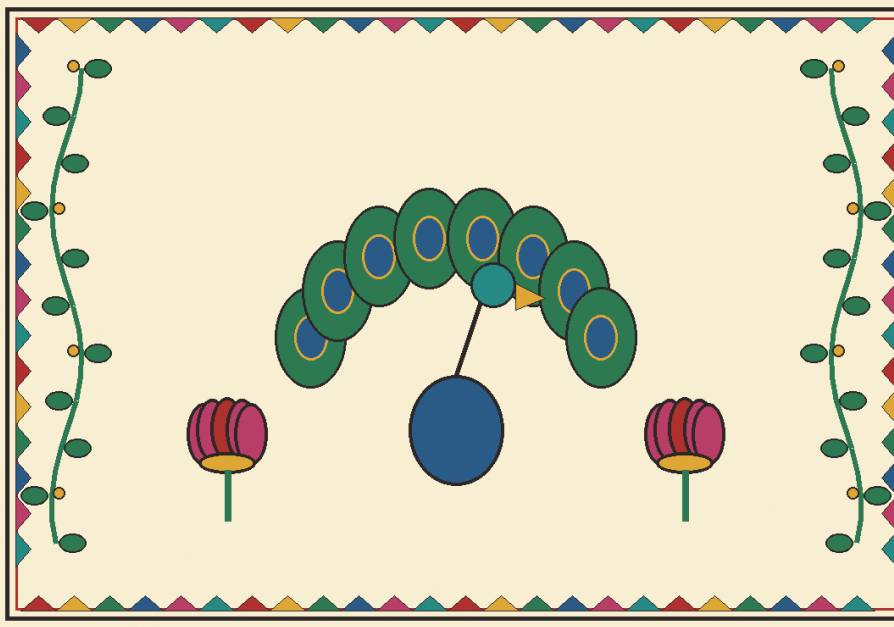

चित्र 1

उधरा गामक अखराहा लग कमला माइक पीड़ी पूजा-स्थल/चबूतरा छल — पवित्र, सम्मानित स्थान, जतय गामक लोक श्रद्धासँ पूजा करैत छला।

एक बेर, कुश्ती वा दैनिक अभ्यासक बीच, गरीबनक पएर अनजान-सुनजान ओहि पवित्र पीड़ीमे लागि गेलनि — कोनो जानबूझि कऽ कएल अपराध नहि, मात्र एकटा अनजान-सुनजान भेल स्पर्श।

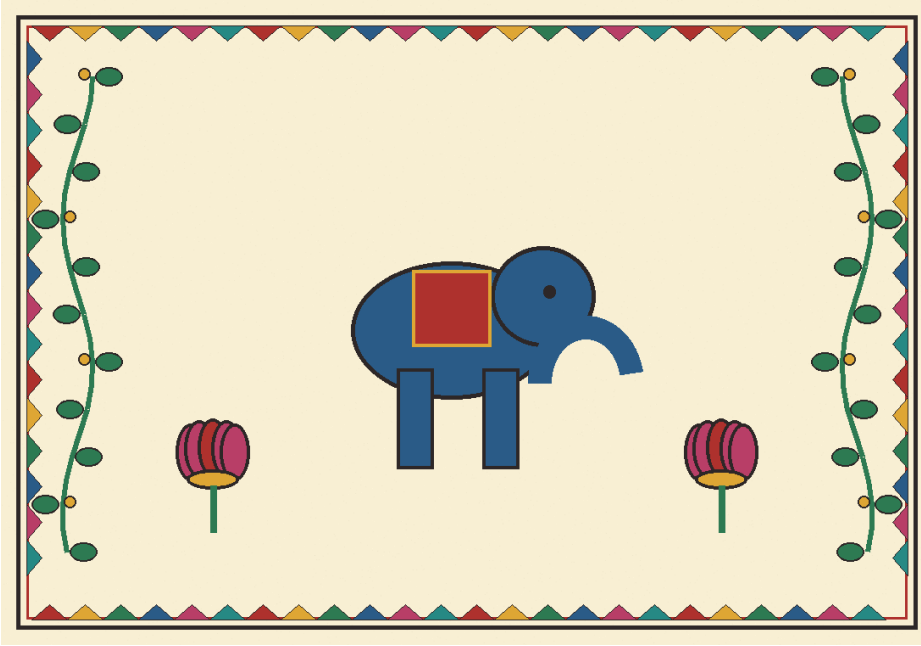

चित्र 2

मुदा ई अनजान-सुनजानमे भेल भूल कमला मैय्याकेँ तमसा देलक! देवीक क्रोध अत्यन्त गम्भीर छल — भलहिं गरीबनक कोनो दुर्भावना नहि छल, मुदा पवित्र स्थानक अपमान क्षम्य नहि मानल गेल।

क्रोधित कमला मैय्या इन्द्रक दरबारसँ एकटा बाघिन अनलनि — दण्ड देबाक लेल एकटा शक्तिशाली, भयंकर साधन। ई निर्णय गरीबनक भाग्यमे एकटा भयावह मोड़ आनलक।

अध्याय २ : बाघिनसँ युद्ध

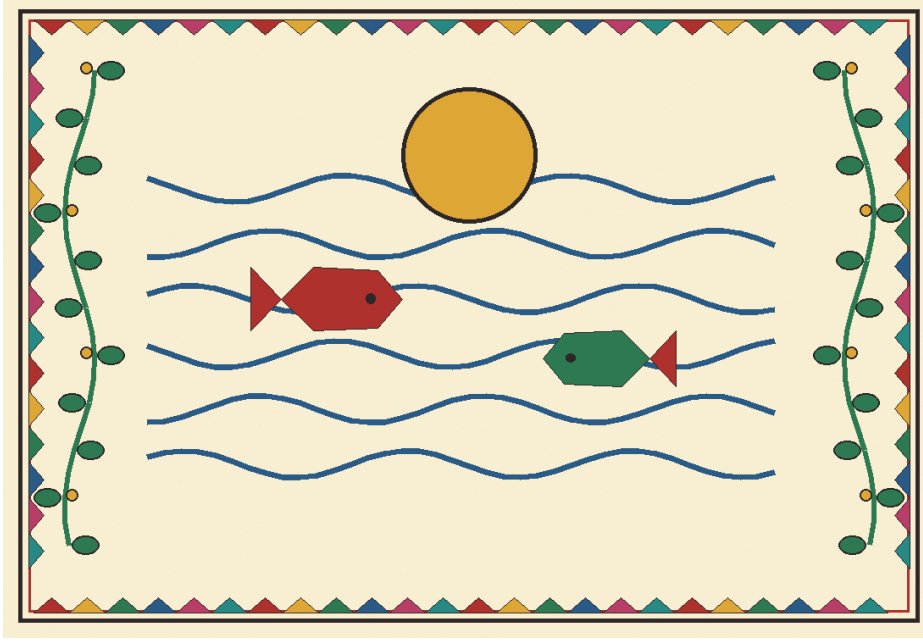

चित्र 3

अखराहामे गरीबनक युद्ध ओहि बाघिनसँ भेल — साधारण कुश्तीक स्थान आब एकटा जीवन-मृत्युक संघर्षस्थल बनि गेल। गरीबन, जे कुश्तीमे निपुण छला, आब एकटा दैवी शक्तिसँ युक्त बाघिनक सोझाँ छला।

ई युद्ध असमान छल — मानव बल आ दैवी क्रोधसँ प्रेरित बाघिनक शक्तिक बीच। गरीबनक पहलमानीक कौशल एहि असाधारण विरोधीक सोझाँ अपर्याप्त साबित भेल।

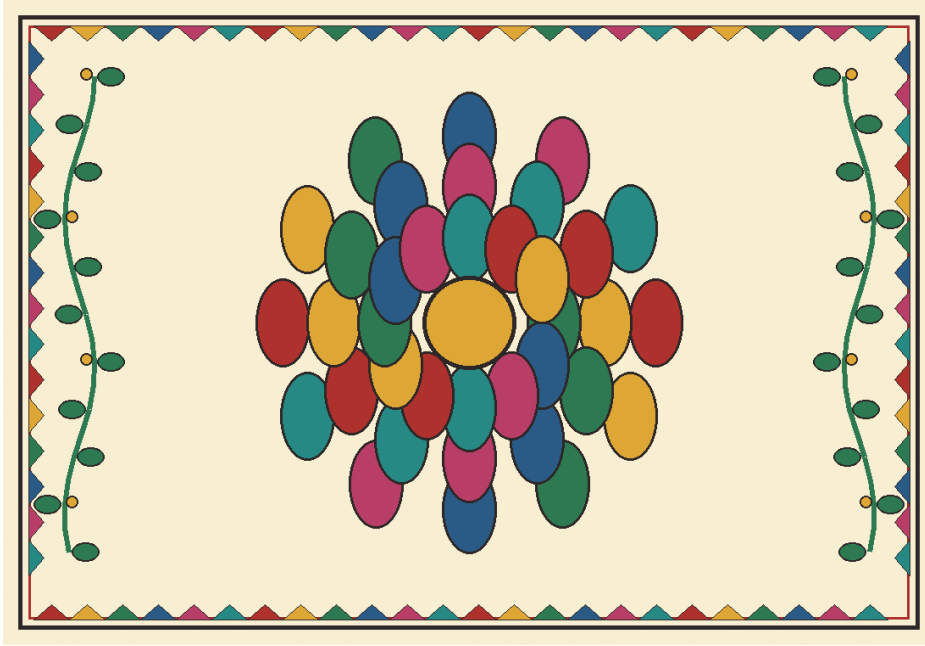

चित्र 4

अन्ततः गरीबन मारल गेला — एकटा अनजान-सुनजानमे भेल भूलक एतेक भारी मूल्य! ई घटना गामक लोकक लेल दुख आ आश्चर्यक विषय बनल — एकटा निर्दोष व्यक्तिक एहन दुखद अन्त।

गरीबनक लहासकेँ कमला धारमे फेंकि देल गेलनि — देवीक क्रोधक अन्तिम परिणति, जतय भौतिक शरीर सेहो सम्मानपूर्वक दफन नहि भऽ सकल।

अध्याय ३ : धोबीक अनादर

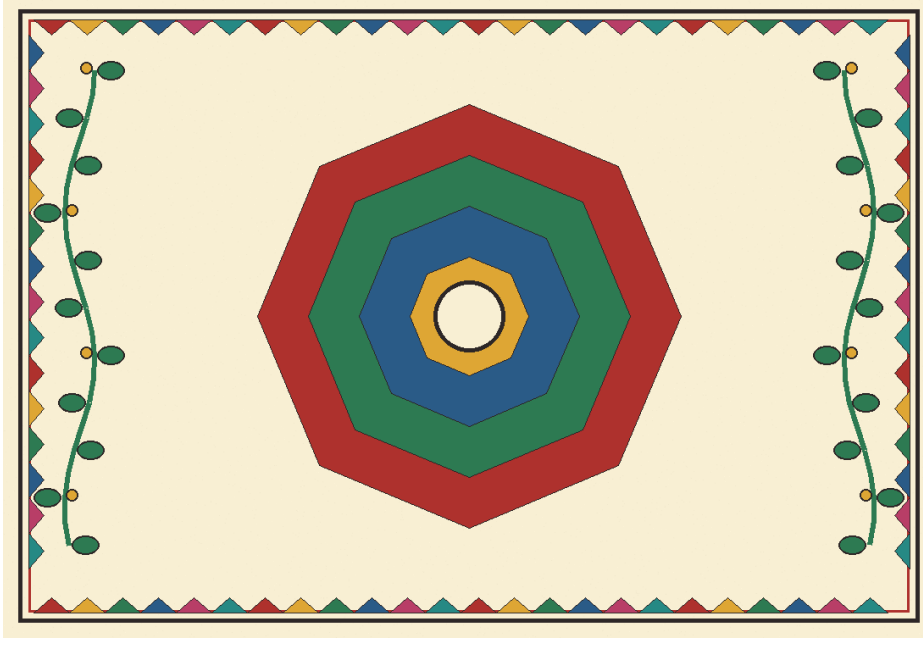

चित्र 5

गरीबनक लहास कमला धारमे बहैत एकटा धोबिया घाटपर पहुँचल, जतय एकटा धोबि कपड़ा साफ करैत छला। ई सामान्य दृश्य — दैनिक जीविकाक कार्य — अकस्मात् एकटा अप्रिय स्थितिमे बदलि गेल।

धोबिकेँ कपड़ा साफ करएमे दिक्कत भेलनि — लहासक उपस्थिति ओकर काजमे अड़चन बनि गेल। ई साधारण असुविधा, मुदा एकर प्रतिक्रिया गम्भीर परिणाम आनत।

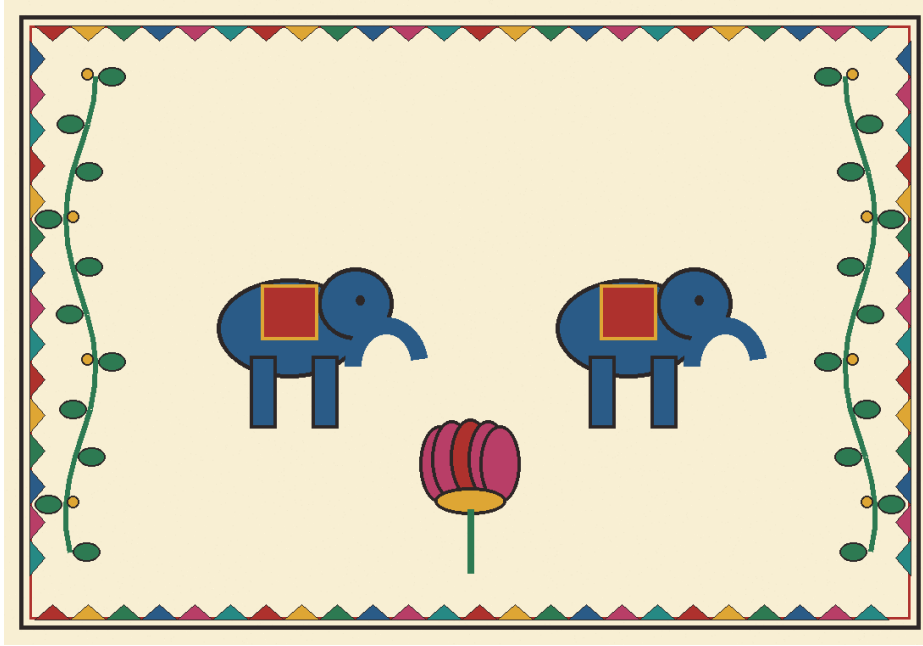

चित्र 6

धोबि — बिनु ई सोचने जे ई कोनो सम्मानित व्यक्तिक शव अछि — लहासकेँ सहटारि कऽ दोसर दिस बहा देलनि! ई कार्य अनादरपूर्ण छल, भलहिं धोबिक कोनो दुर्भावना नहि छल, केवल अपन काजक असुविधा दूर करबाक स्वार्थ छल।

ई अनजान-सुनजानमे भेल दोसर भूल — पहिल भूल छल गरीबनक पएर पीड़ीमे लागब — आगाँ चलि कऽ एकटा नव परिणामक जन्मदाता बनत, जे धोबि समुदायकेँ प्रभावित करत।

अध्याय ४ : कनियाँक आर्तनाद

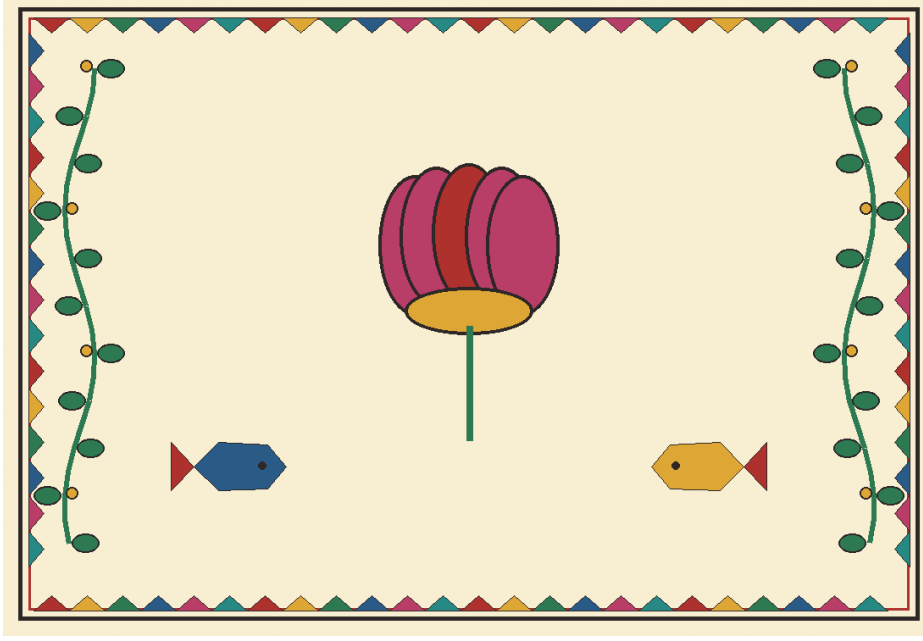

चित्र 7

एम्हर गरीबनक कनियाँ अपन पतिक मुइलाक समाचार सुनि दुखित मोने आर्तनाद करए लगलीह — पत्नीक असहनीय शोक, अपन जीवनसाथीक अकाल मृत्युपर।

शोकाकुल कनियाँ भगवानकेँ सुमिरलनि — गहींर श्रद्धा आ निराशाक बीच, एकमात्र सहारा। ई प्रार्थना ओकर अन्तिम आशा छल, अपन पतिक न्यायक लेल।

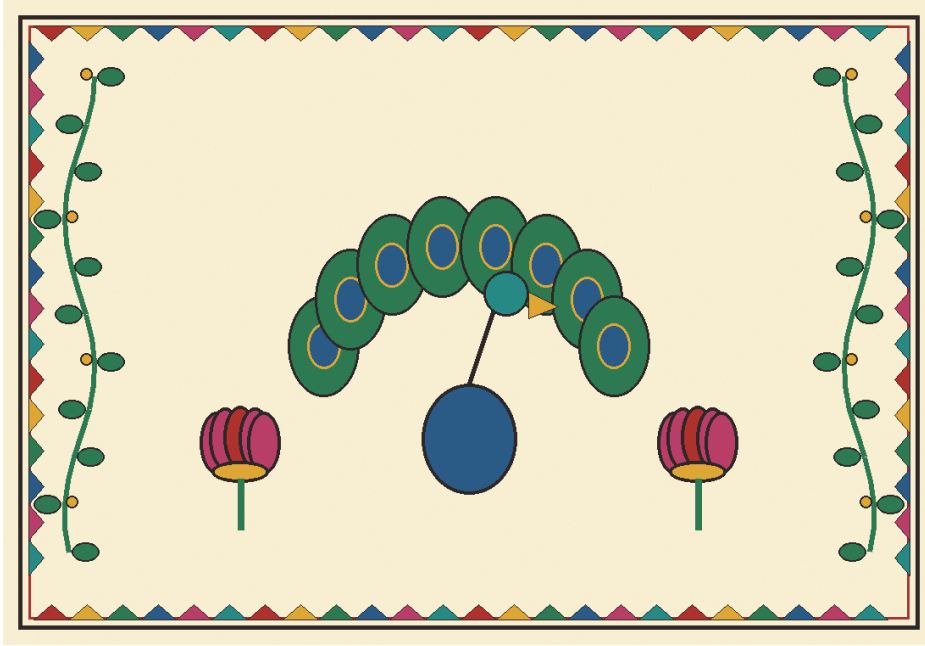

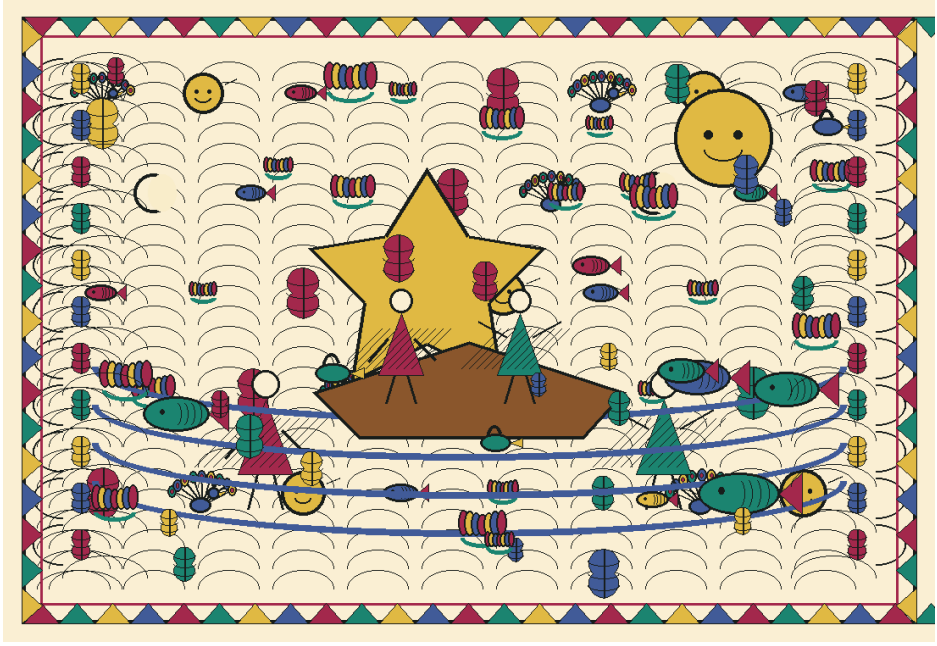

चित्र 8

आब भगवानक कृपासँ एकटा अद्भुत घटना भेल — गरीबनक आत्मा एक गोटेक शरीरमे पैसि गेल, आ ओ भगता -भक्तक शरीरमे देवात्माक प्रवेश- खेलाए लागल — मृत्युक बादो न्यायक लेल आत्माक पुनः सक्रिय होएब छल ई।

ई भगता-अवस्थामे गरीबनक आत्मा अपन कष्ट, अपन अनादर, आ अपन अन्यायपूर्ण मृत्युक कथा कहबाक अवसर पओलक — मृतात्माक स्वर, जीवितसभक बीच गूँजैत।

अध्याय ५ : स्राप आ चेतावनी

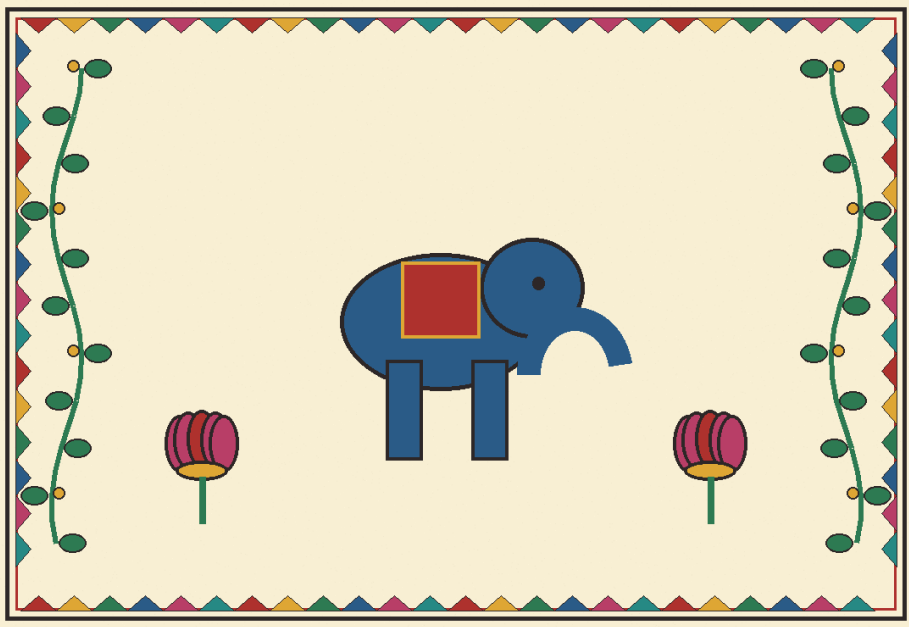

चित्र 9

भगता (गरीबनक आत्मायुक्त शरीर) कहलनि — 'एक गोटे धोबि हुनकर अपमान केलन्हि, से ओ शाप दैत छथिन्ह!' — मृत्युक बादो अपन अनादरक स्मृति, आ न्यायक माँग।

शापक विषयवस्तु स्पष्ट छल — 'सभ धोबि मिलि हुनकर लहाशकेँ कमला धारसँ निकालि कऽ दाह-संस्कार करथि, नहि त' धोबि सभक भट्ठीमे कपड़ा जरि जाएत!' — एकटा सामूहिक चेतावनी, सम्पूर्ण धोबि समुदायकेँ सम्बोधित।

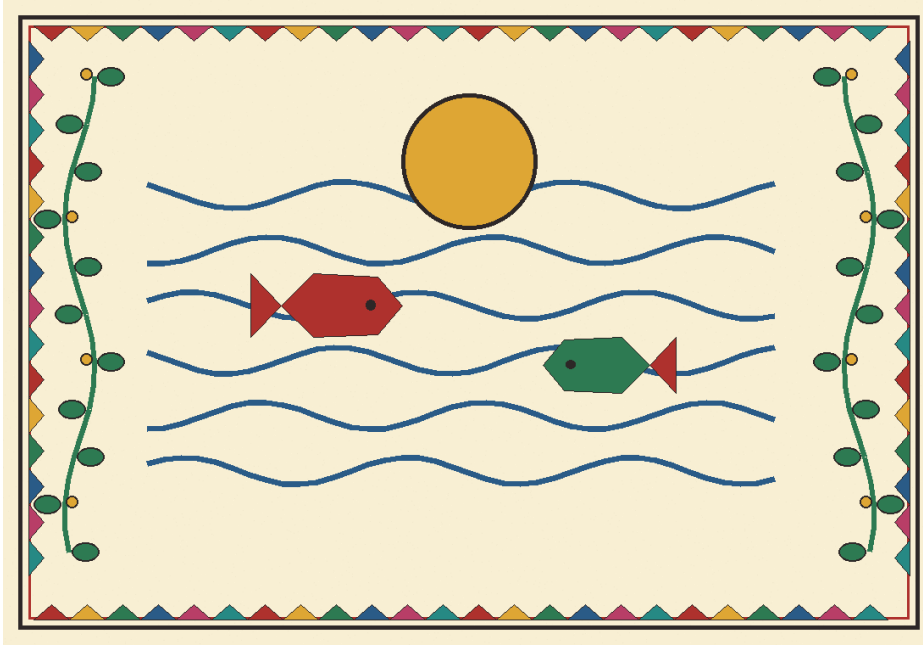

चित्र 10

ई शाप न्यायसंगत आ प्रतीकात्मक छल — जइ लहासकेँ अनादरपूर्वक बहाओल गेल छल, ओकर उचित दाह-संस्कार अनिवार्य छल; अन्यथा समस्त धोबि समुदायक जीविकाक साधन (कपड़ा धोअब आ सुखाएब) नष्ट भऽ जाएत।

ई शाप एकटा गम्भीर सन्देश छल — मृतकक प्रति अनादर, चाहे अनजान-सुनजानमे किएक नहि होअए, गम्भीर परिणाम आनि सकैत अछि। सम्मान आ उचित संस्कारक महत्व एहि शाप द्वारा रेखांकित भेल।

अध्याय ६ : सामूहिक प्रायश्चित्त

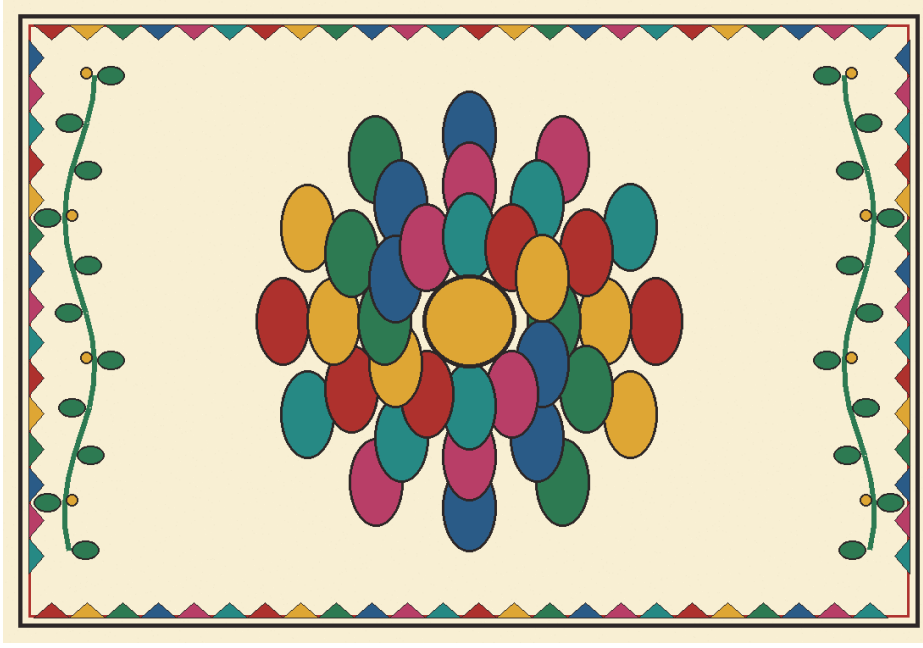

चित्र 11

सभ गोटे (धोबि समुदाय) ई शाप सुनि तुरत कार्रवाइ केलनि — भयक कारण, वा विवेकक कारण, ओ सभ धारमे कूदि गरीबनक लहासकेँ ताकए लगला।

सामूहिक प्रयाससँ लहास निकालल गेल, आ विधिवत् दाह-संस्कार कएल गेल — गरीबनकेँ अन्ततः ओ सम्मान भेटलनि, जकर ओ हकदार छला, भलहिं मृत्युक बाद।

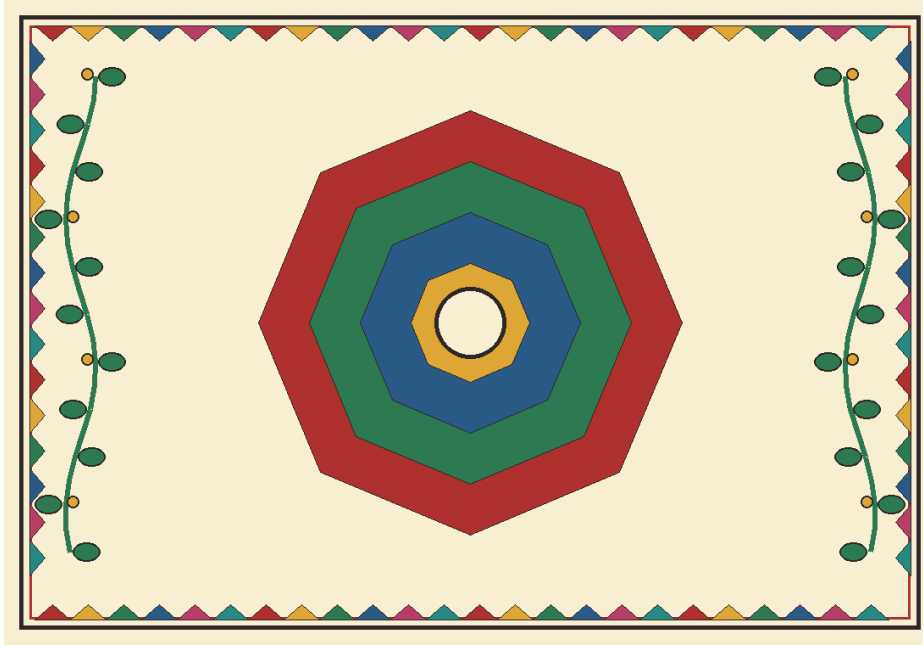

चित्र 12

ई सामूहिक प्रायश्चित्त धोबि समुदायक एकताक प्रतीक छल — एकटा भूलक सुधार, सामूहिक जिम्मेदारीक स्वीकृति, आ भविष्यक विपत्तिसँ बचेबाक प्रयास।

दाह-संस्कारक बाद शाप निष्प्रभावी भऽ गेल — धोबि समुदायक भट्ठी सुरक्षित रहल, आ गरीबनक आत्माकेँ शान्ति भेटलनि। न्याय आ सम्मान अन्ततः पुनर्स्थापित भेल।

अध्याय ७ : भट्टीक रक्षक

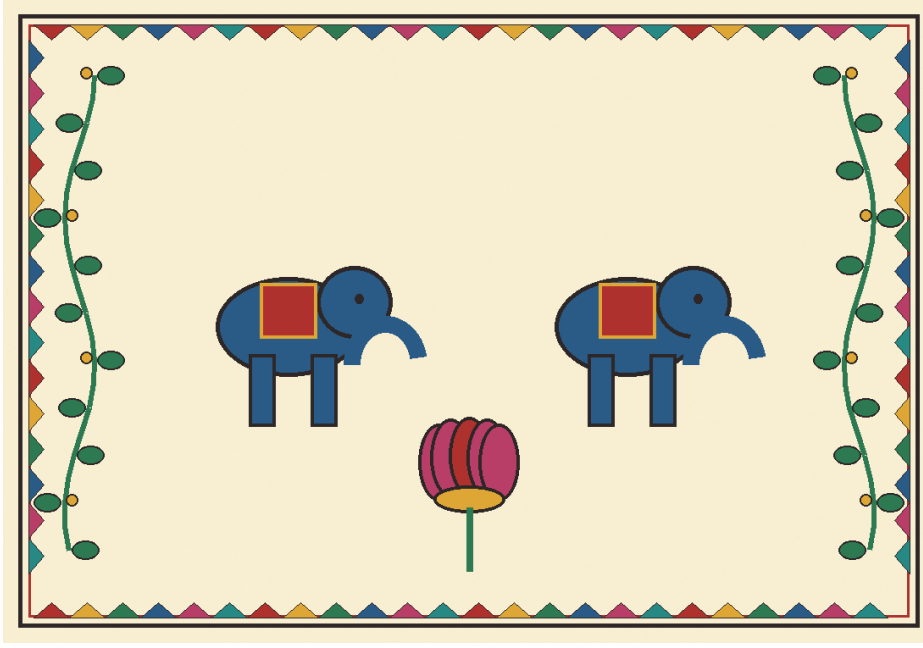

चित्र 13

तकर बादसँ गरीबन बाबा भट्ठीक कपड़ाक रक्षा करैत आएल छथि — एकटा साधारण, अनजान-सुनजानमे भेल भूलमे मारल गेल व्यक्ति, अन्ततः एकटा रक्षक देवताक रूपमे स्थापित भेला।

ई परिवर्तन असाधारण छल — गरीबन, जे अपने अन्यायपूर्ण मृत्युक शिकार भेला, से आब ओही धोबि समुदायक रक्षक बनि गेला, जकर एकटा सदस्यक भूलक कारण ओकर लहासक अनादर भेल छल।

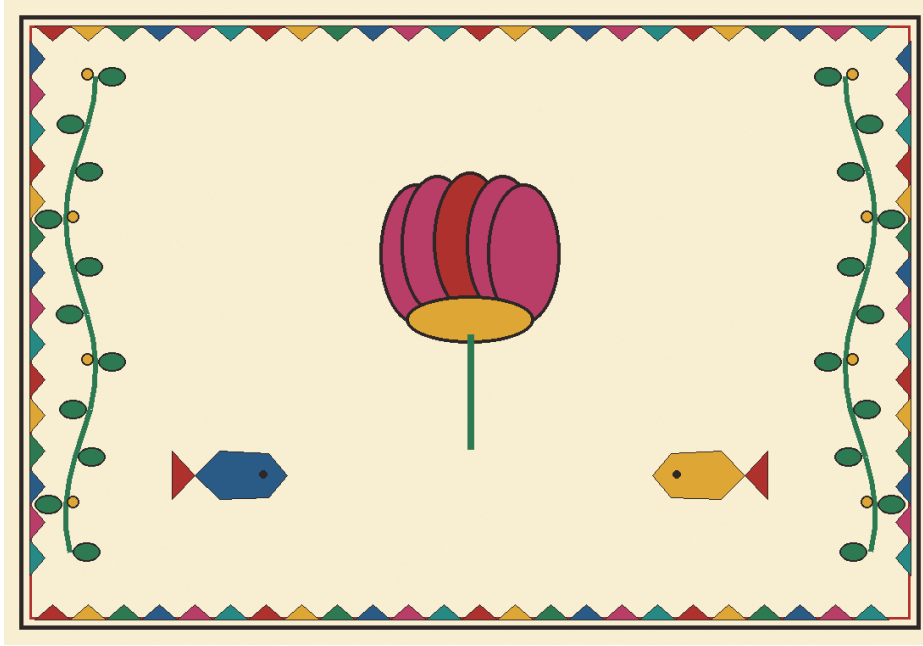

चित्र 14

ई गाथा क्षमा आ रूपान्तरणक गहींर सन्देश दैत अछि — अन्याय आ अनादरक बादो, सामूहिक प्रायश्चित्त आ सम्मानसँ सम्बन्ध पुनर्स्थापित भऽ सकैत अछि, आ पीड़ित स्वयं रक्षक बनि सकैत अछि।

आइयो धोबि समुदायमे गरीबन बाबाक स्मृति सुरक्षित अछि — भट्ठीक रक्षक, कपड़ाक सुरक्षाक देवता, एकटा एहन लोकदेवता, जकर कथा अनजान-सुनजानमे भेल भूल, देवीक कोप, अनादर, शाप, आ अन्ततः सामूहिक प्रायश्चित्त आ अमरताक सम्पूर्ण चक्रकेँ प्रदर्शित करैत अछि।

समाप्त

VIDEHA

विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका | ISSN 2229-547X | www.videha.co.in

वर्णमाला शिक्षा : अंकिता

अंकिताक संग वर्णमाला-यात्रा

गजेन्द्र ठाकुर

गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादक, विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका (since 2000)

ISSN 2229-547X

© Gajendra Thakur/ Preeti Thakur; गजेन्द्र ठाकुर सम्पादक, विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका (since 2000) ISSN 2229-547X

ई पोथी गजेन्द्र ठाकुर समग्रक अन्तर्गत संकलित अछि।

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक ISBN:978-93-5890-210-5

DESIGNED BY: AUM GAJENDRA THAKUR

उपक्रम : अंकिता आ ओकर पिता

ई पोथी आन सभ बाल-उपन्याससँ भिन्न अछि — ई मैथिली वर्णमाला सिखएबाक एकटा प्रयास थिक। अंकिता नामक एकटा नान्हि सन बुच्चीक संग हुनक पिता यात्रा करैत छथि, आ एहि यात्रामे प्रत्येक अध्याय मैथिली वर्णमालाक एक-एक वर्गसँ शुरू होएबला शब्दसँ भरल अछि।

पहिल अध्याय 'अ' वर्णसँ, दोसर 'क' वर्गसँ, तेसर 'च' वर्गसँ — एहिना आगाँ बढ़ैत, अंकिताक साँझक यात्रा वर्णमालाक पूरा यात्रा बनि जाइत अछि। प्रत्येक अध्यायक अन्तमे प्रश्नोत्तर सेहो देल गेल अछि, जाहिसँ बच्चा शब्द आ अर्थ दुनू सीखि सकए।

अध्याय १ : अकादारुण साँझ (अ-वर्ण)

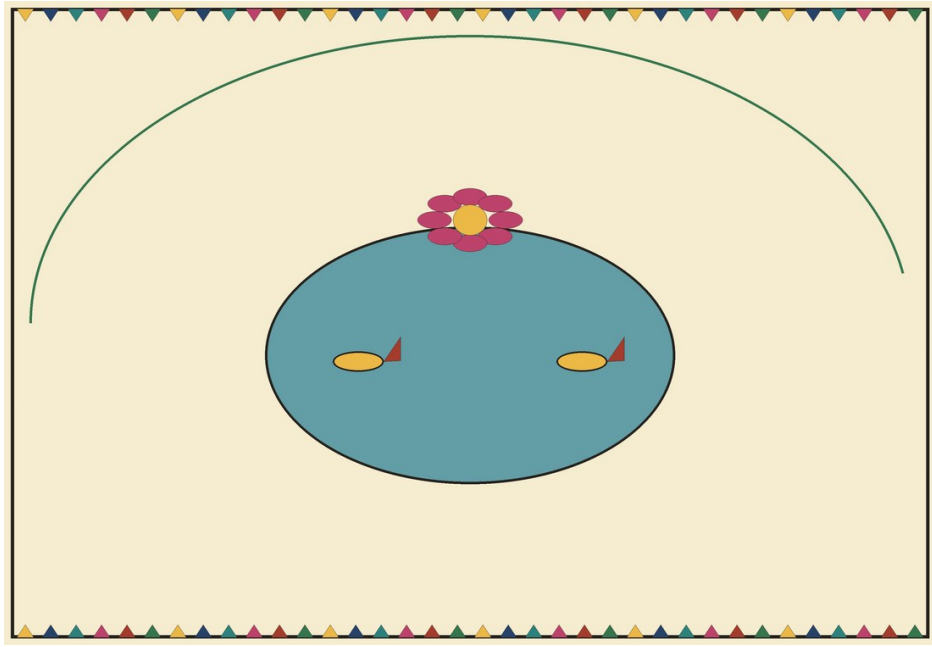

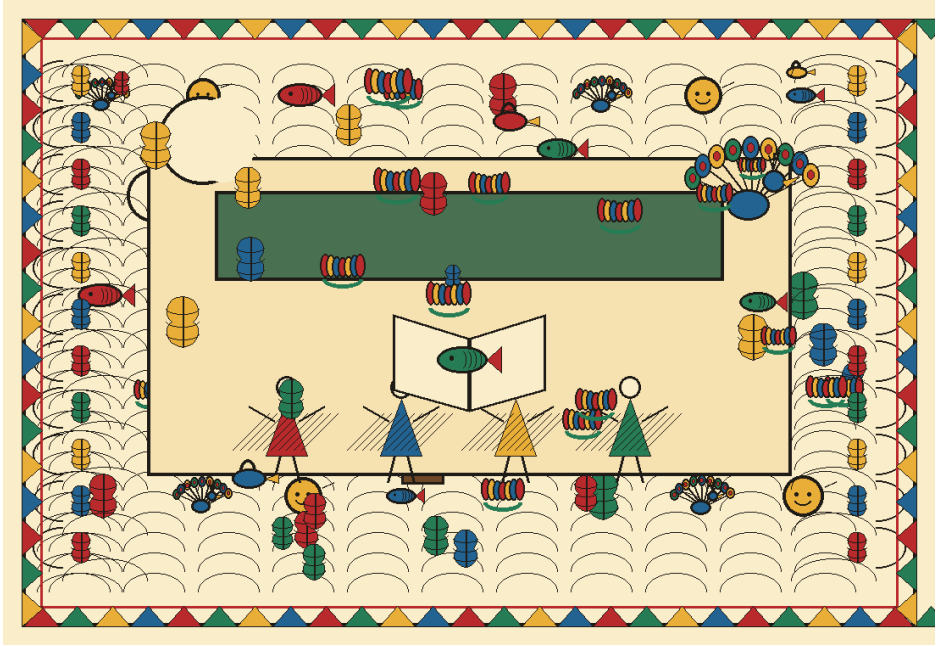

चित्र 1

अकादारुण समय छल। अंकिता अडैठीमोड़ कएलक। ओकर पिता कहलनि —

'अतत्तह करए छी। जल्दीसँ झटकारि कऽ चलू!'

अंकिता अकच्छ भऽ गेलि। चलैत-चलैत ओकर पएर दुखा गेलैक — नान्हिटा पएरक लेल नमहर रस्ता।

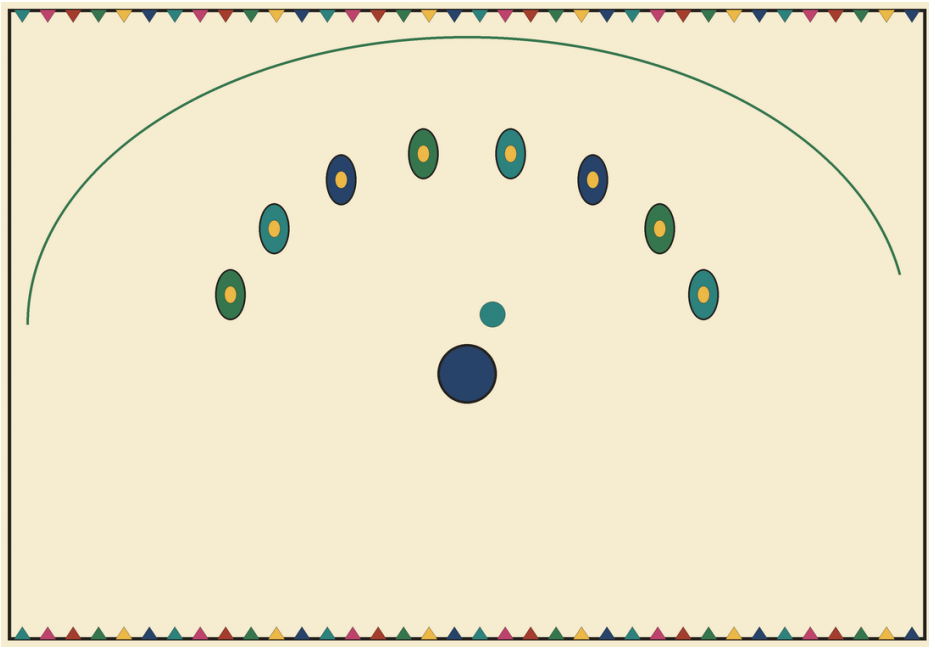

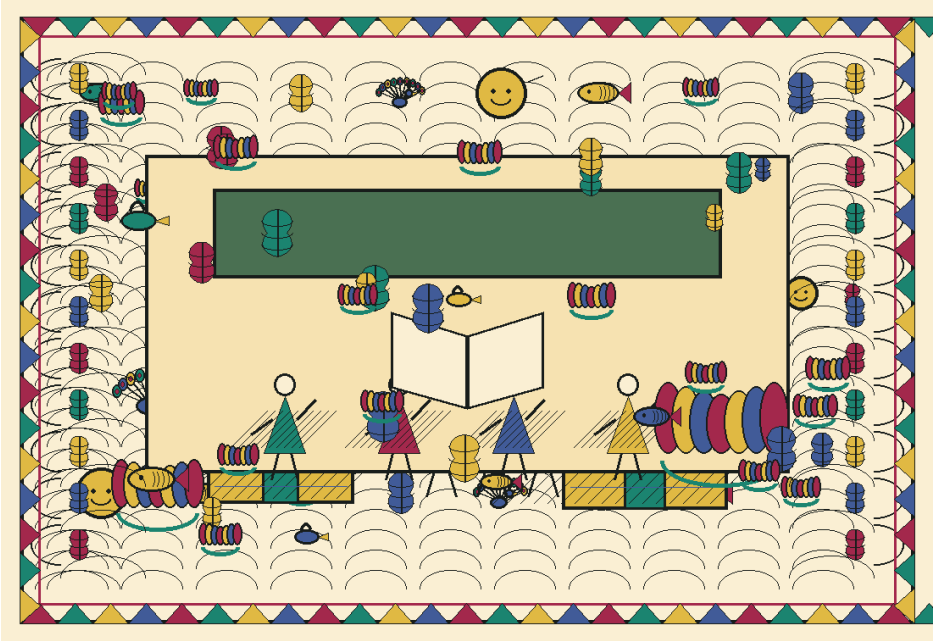

चित्र 2

रस्तामे ओ एकटा लालछड़ी बलाकेँ देखलक — 'हमरा लालछड़ी कीनि दिअ!' पिता कहलनि — 'अंकिता, अकर-धकर नहि खाऊ।' मुदा अंकिता जिद्द केलक — 'नहि! हमरा ई चाहबे करी!' पिता हँसैत कहलनि — 'अहूँ अधक्की छी, एखने त' कतेक रास चीज खएने रही!' तैयो पिता ओकरा लालछड़ी कीनि देलनि।

रस्तामे अगिनवान देखि अंकिता पुछलक — 'ई आगि किएक लागल अछि?' पिता कहलनि — 'बोन-झाँकुर खतम करबाक लेल।' अंकिता ध्यानसँ देखि कहलक — 'अक्खज गाछ सभ तैयो नहि जरल अछि!'

प्रश्नोत्तर

प्रश्न: बचियाक नाम की छी?

उत्तर: अंकिता

प्रश्न: समय केहन छल?

उत्तर: अकादारुण

प्रश्न: अंकिता चलैत-चलैत... भऽ गेल छलि।

उत्तर: अकच्छ

प्रश्न: पिता ... खाए लेल मना केलन्हि।

उत्तर: अकर-धकर

प्रश्न: बोन-झाँकुड़ जरएबाक आगिक लेल प्रयुक्त शब्द की छल?

उत्तर: अगिनवान

प्रश्न: अगिनवानमे केहन बोन-झाँकुड़ नहि जरल?

उत्तर: अक्खज

अध्याय २ : छाहरिमे विश्राम (आगाँक अ-वर्ण)

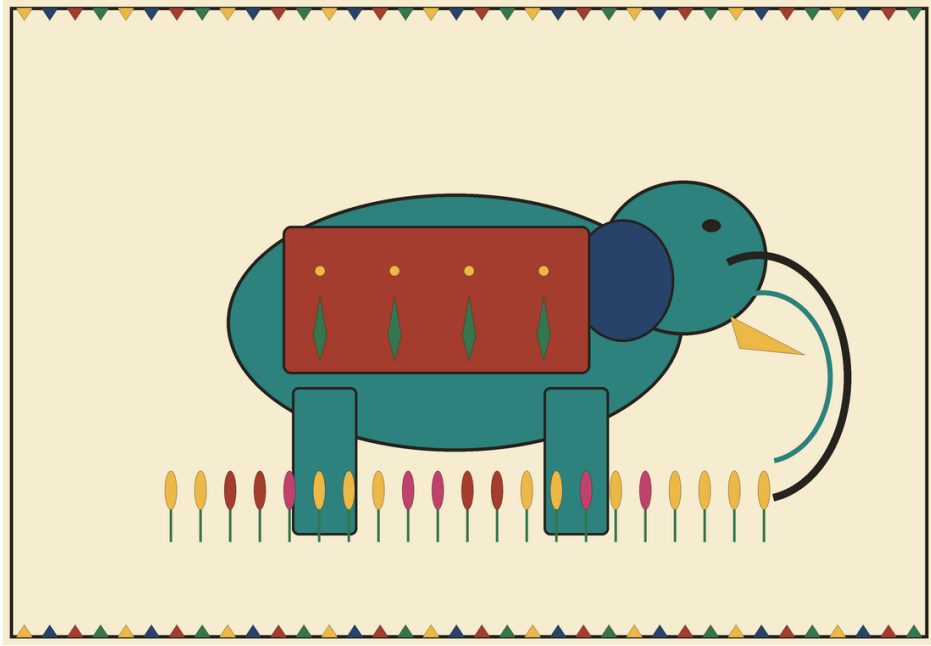

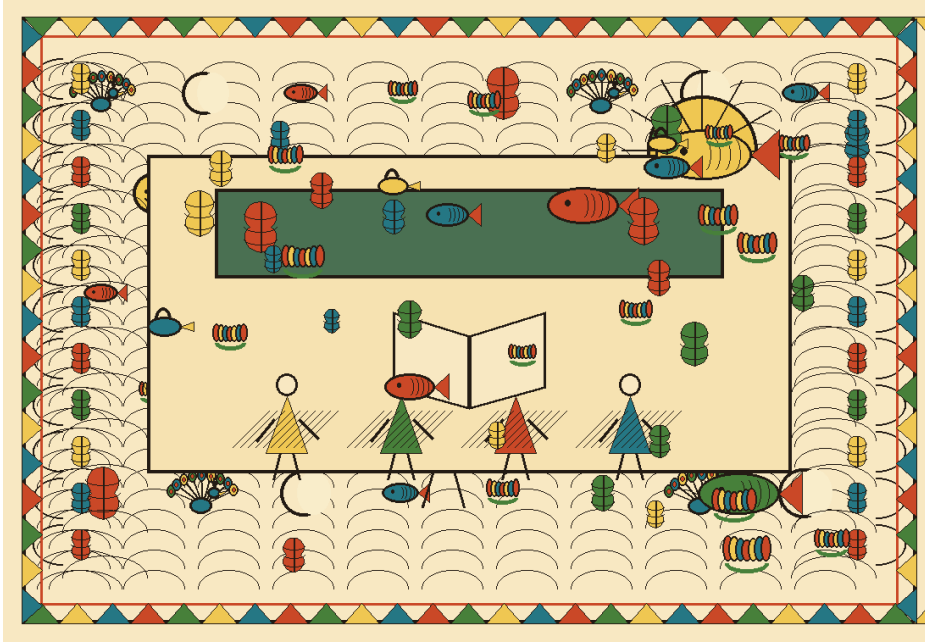

चित्र 3

कनी काल दुनू बाप-बेटी गाछक छाहमे बैसि जाइ गेलाह — थाकल पएरकेँ आराम देबाक लेल। अंकिता उकड़ू भऽ बैसि गेलि आ उकसपाकस करए लागलि।

पिता पुछलनि — 'अहाँकेँ उखी-बिखी किएक लागल अछि अंकिता? साँझ भऽ गेल अछि। कनेक काल आर चलब त' घर आबि जाएत।'

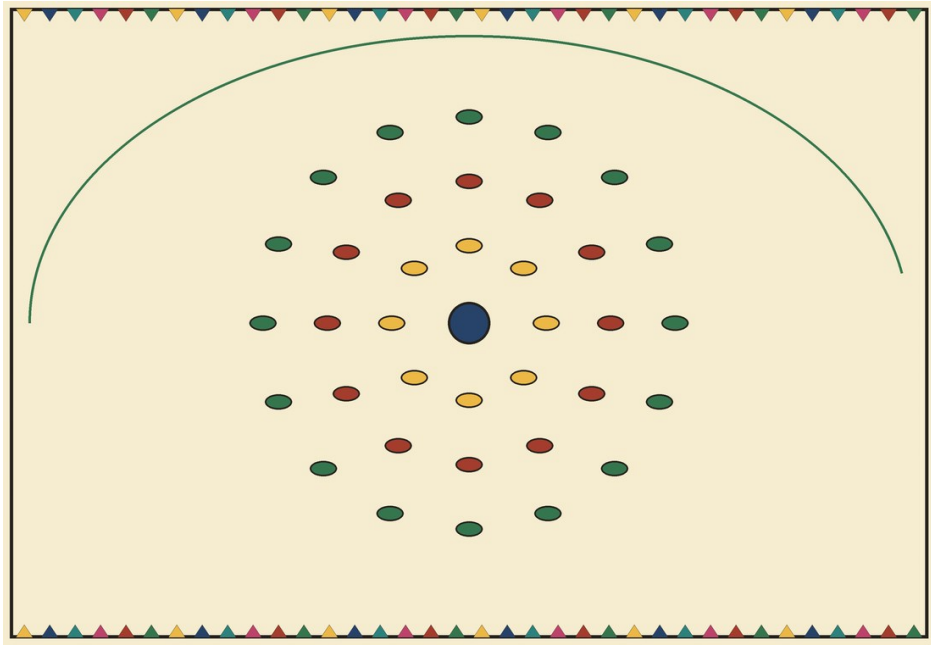

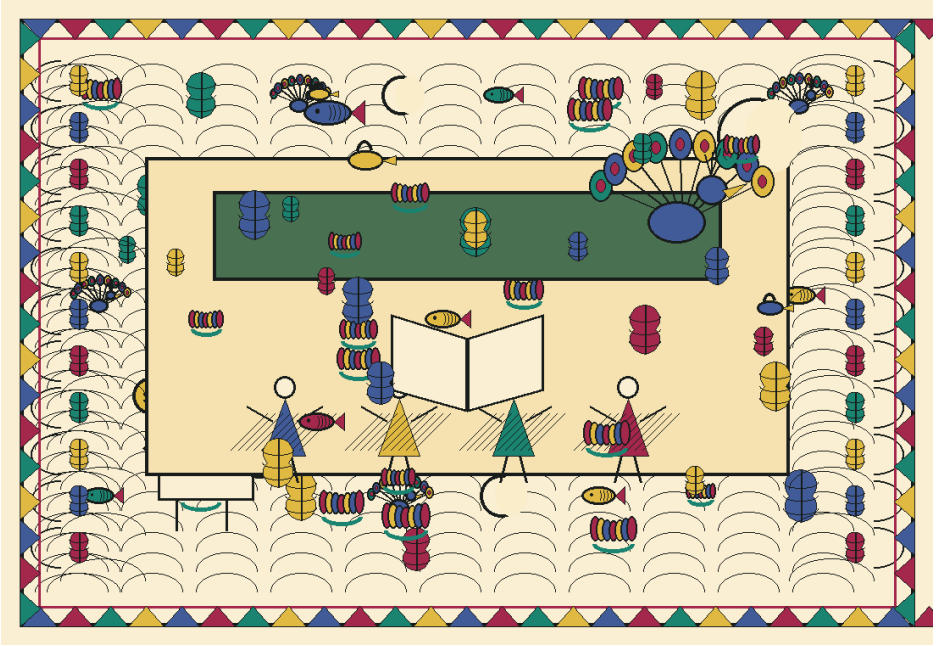

चित्र 4

तखने अकासमे अंकिता उकापतङ्ग देखलक, आ बाजलि — 'एक उखराहा चललाक बादो गामपर नहि पहुँचलहुँ!'

पिता कहलनि — 'चलू, चली, रस्ता धऽ कऽ चलू, नहि त' उड़कुस्सी देहमे लागि जाएत।' अंकिता कहलक — 'दिन रहितए त' खेतमे ओड़हा खइतहुँ!'

प्रश्नोत्तर

प्रश्न: अंकिता कोन आसनमे बैसलि?

उत्तर: उकड़ू

प्रश्न: अंकिताकेँ की लागल छलैक?

उत्तर: उखी-बिखी

प्रश्न: अकासमे अंकिता की देखलक?

उत्तर: उकापतङ्ग

प्रश्न: रस्तापर *विषाक्त रोड़आँवाली लत्ती जकरा छूला से पीड़ा आ नोचनी उठैत अछि* लेल कोन शब्द अएलैक?

उत्तर: उड़कुस्सी

अध्याय ३ : कलमक कड़ेकमान (क-वर्ग)

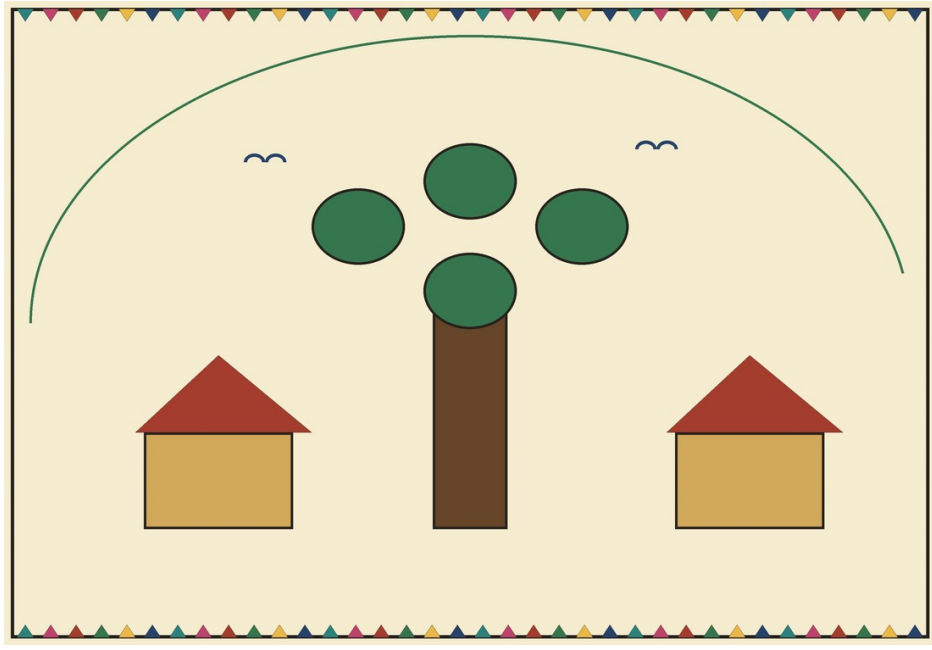

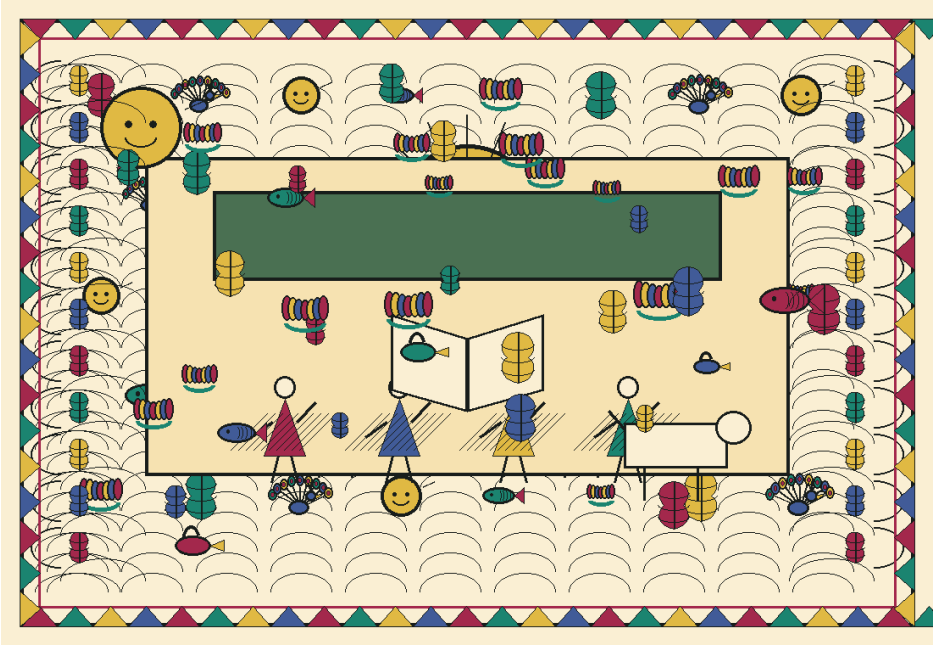

चित्र 5

आगाँ बढ़ैत पिता कहलनि — 'कलममे ओगरबाह सभ आबि गेल। कड़ेकमान अछि, अपन-अपन मचानपर!' अंकिता कौतूहलसँ ताकए लागलि।

'इजोरियामे देखू' — पिता कहलनि — 'दिनमे बरखा भेल रहए, से लोक सभ खेतमे कदबा केने अछि।' अंकिता खेतक हरियरी देखि प्रसन्न भेलि।

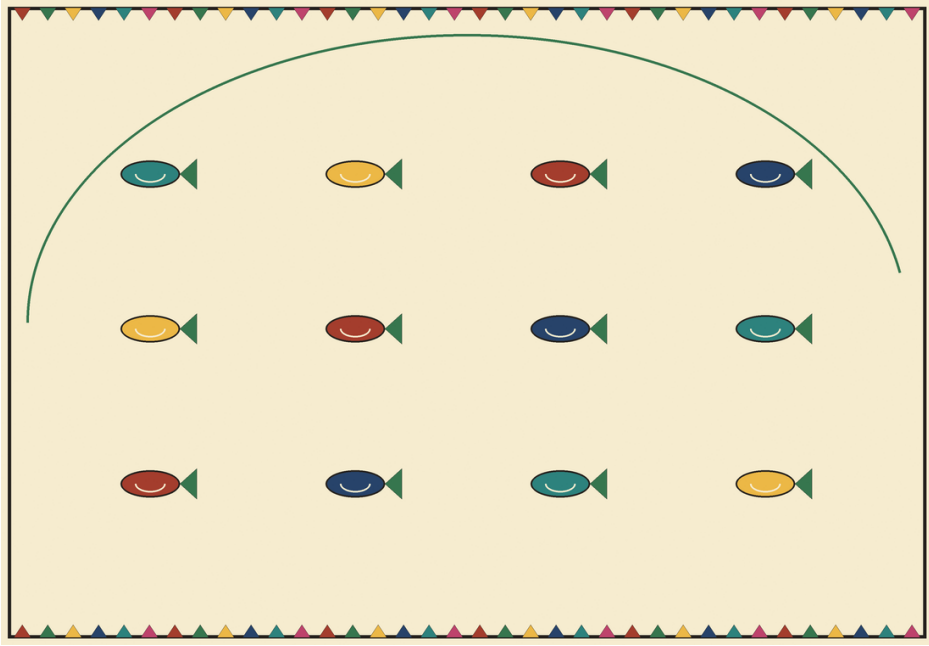

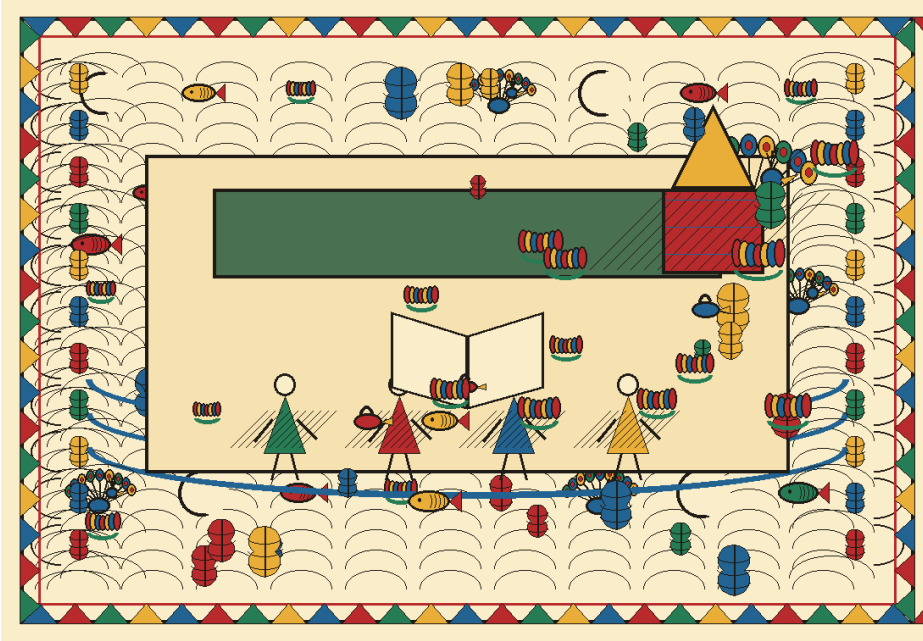

चित्र 6

'कमरसारि आबि गेल, आ अपन सभक घर सेहो!' — पिताक स्वरमे राहतक भाव छल, नम्हर यात्राक अन्त निकट छल।

अंकिता कूदि पड़लि — 'कतेक कोस चललहुँ पिताजी?' पिता हँसैत कहलनि — 'कमसँ कम कोस, मुदा आब कष्ट समाप्त!'

प्रश्नोत्तर

प्रश्न: कलममे रखबारीक लेल के आबि गेल छला?

उत्तर: ओगरबाह

प्रश्न: मचानपर पहरा छल?

उत्तर: कड़ेकमान

प्रश्न: इजोरियामे लोक खेतमे की केने छल?

उत्तर: कदबा

प्रश्न: गामक कमारक कारखाना लेल कोन शब्द प्रयुक्त भेल?

उत्तर: कमरसारि

अध्याय ४ : चौपर आ चिक्कन बाट (च-वर्ग)

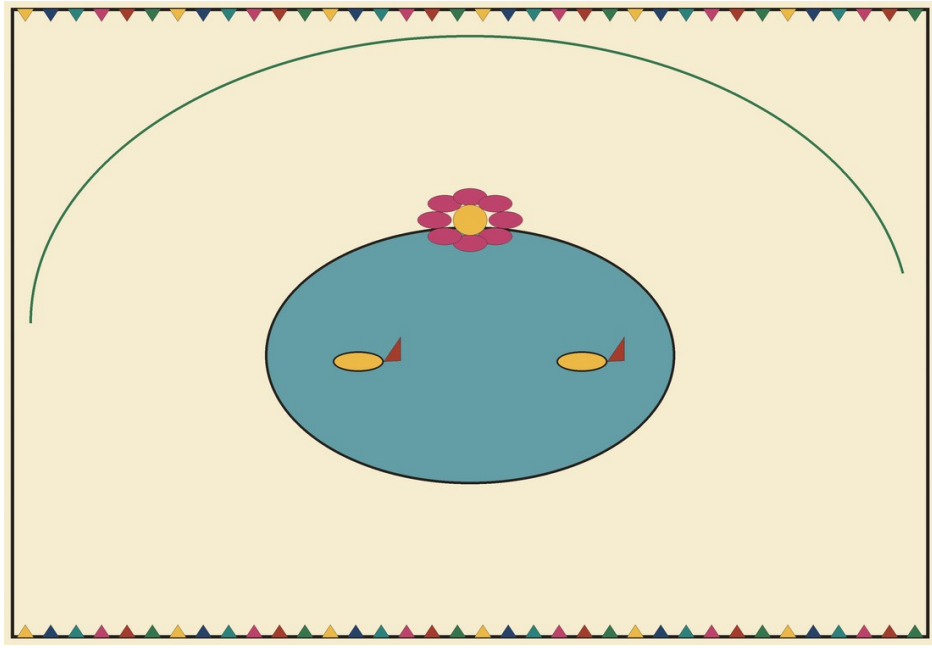

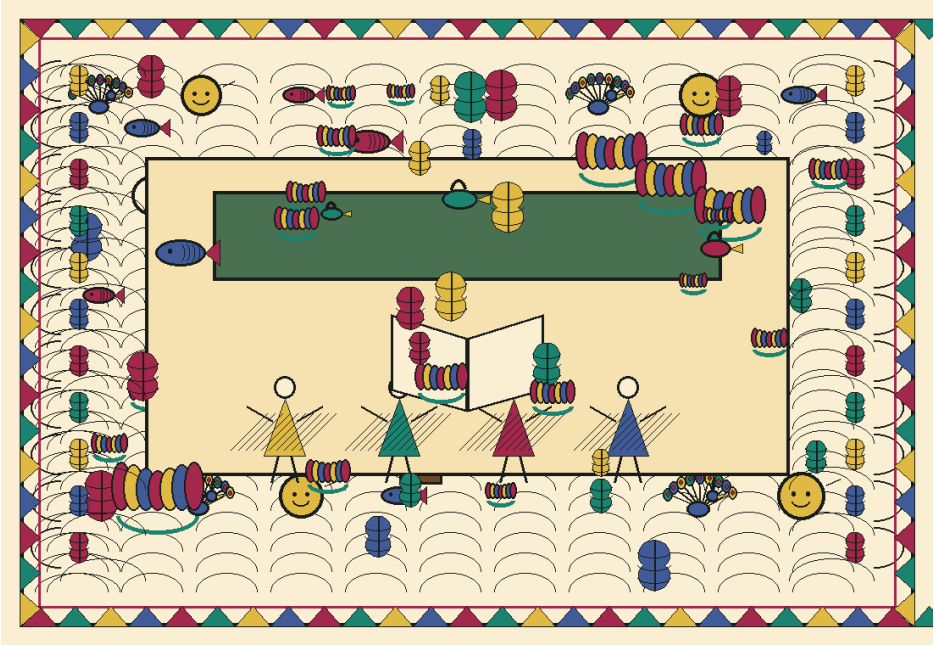

चित्र 7

गामक चौपरपर पहुँचिते अंकिता चंचल भऽ गेलि — घर लगमे बुझि उत्साहित। पिता कहलनि — 'चटपट चलू, चिक्कन बाट अछि, आब देरी नहि करू।'

अंकिता चिचिआयलि — 'ओ देखू, चम्पाक गाछ!' — रस्ता कातमे ठाढ़ चम्पाक गाछ, फूलक सुगन्धसँ भरल, अंकिताक मोन मोहि लेलक।

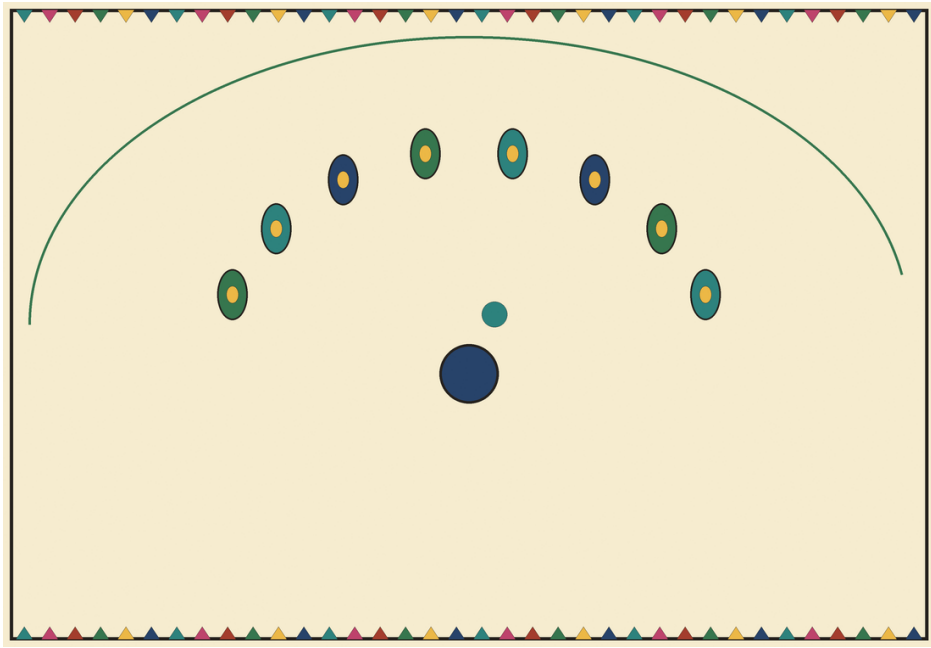

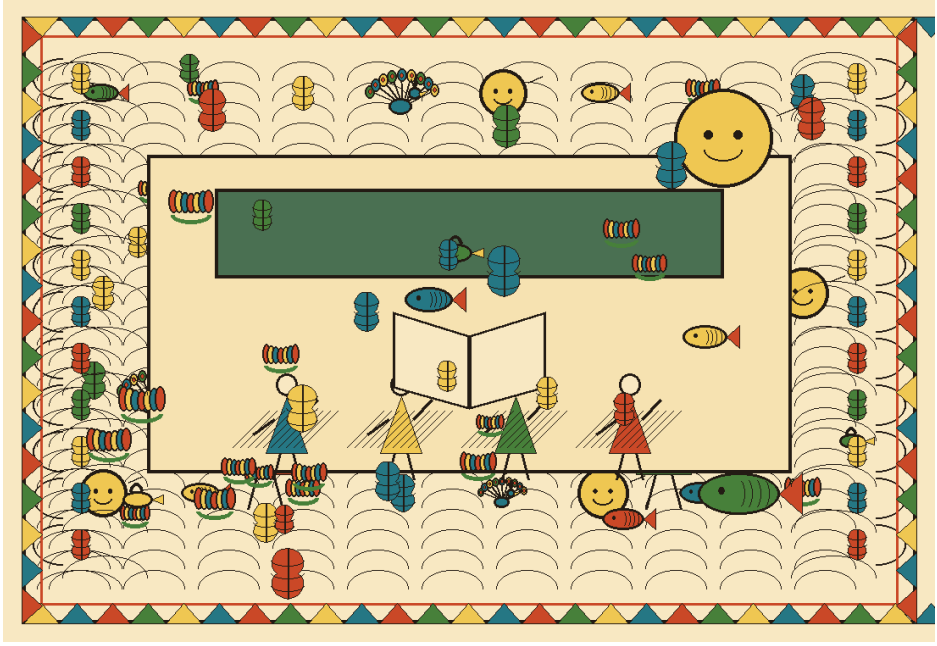

चित्र 8

'चानो निकलि आयल अछि' — पिता आकाश दिस देखैत कहलनि — 'चाँदनीमे बाट आरो चिक्कन बुझाइत अछि।'

अंकिता चंचल भऽ आगाँ-आगाँ दौड़ए लागलि — घरक चिन्हार गली देखि ओकर पएरक थकान जेना उड़ि गेल छलैक।

प्रश्नोत्तर

प्रश्न: गामक कोन स्थानपर पहुँचिते अंकिता चंचल भेलि?

उत्तर: चौपर

प्रश्न: पिता कोन प्रकारक बाटपर चलबाक लेल कहलनि?

उत्तर: चिक्कन

प्रश्न: अंकिता कोन गाछ देखि चिचिआयलि?

उत्तर: चम्पाक गाछ

प्रश्न: आकाशमे की निकलि आयल छल?

उत्तर: चान

अध्याय ५ : टोलक टाभनेबोक गाछ लग टाहि मारब (ट-वर्ग)

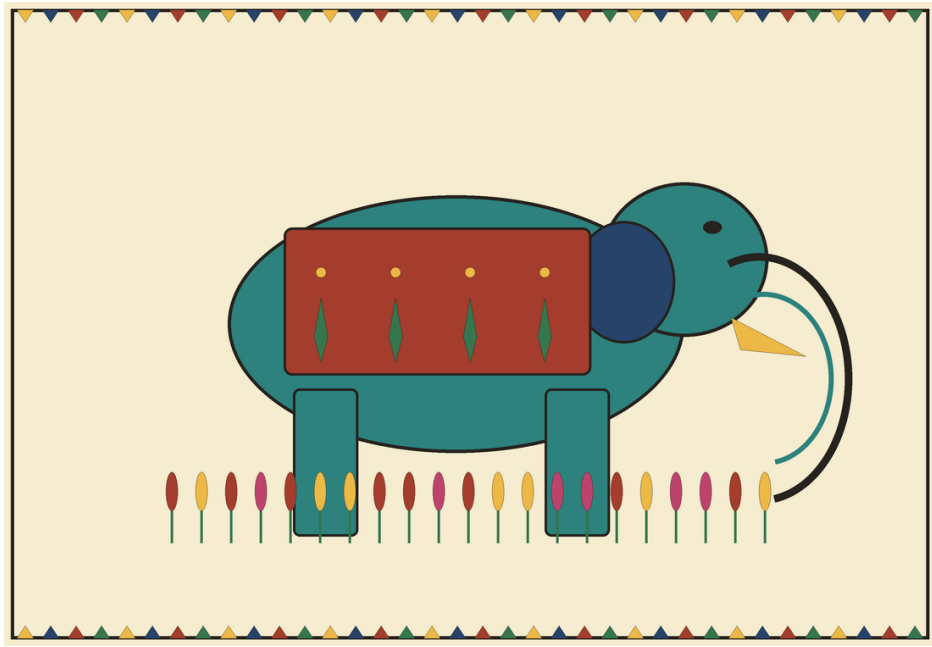

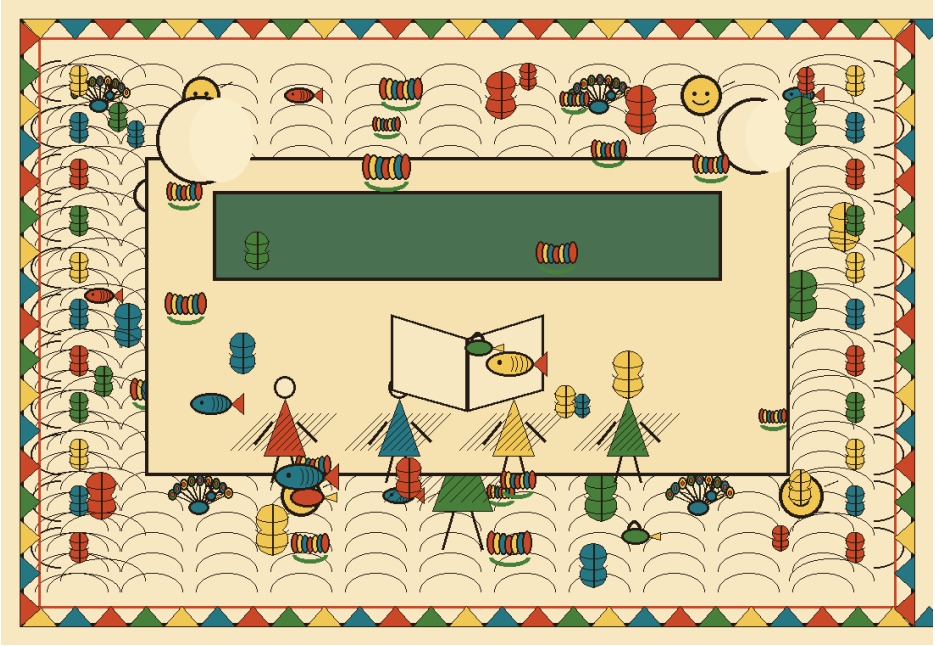

चित्र 9

टोलक टाभनेबोक गाछ लग पहुँचिते अंकिता ककरो टाहि मारि कऽ बजबाक स्वर सुनलक। ऐ टहाटहीमे लागल जे कोनो रतिचर मनुक्खक अबाजमे बाजल छल। पिता कहलनि — 'देखू, डिहबार स्थान लग दीप जरि रहल अछि।'

अंकिता टुनटुन बाजए लागलि — 'हमरा भूख लागल अछि पिताजी!' पिता हँसैत कहलनि — 'घर पहुँचि टटका रोटी बनतै।'

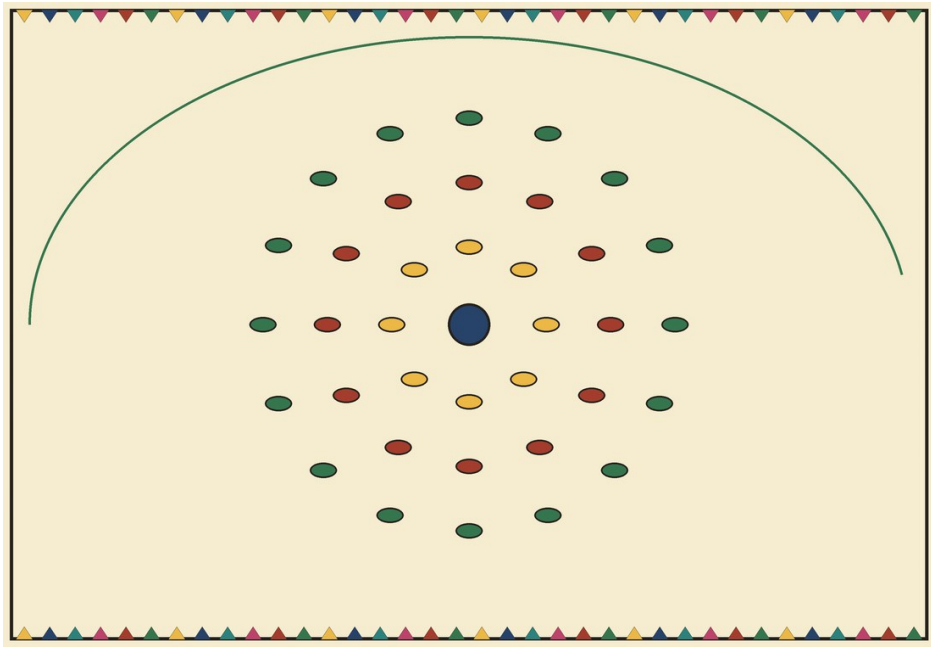

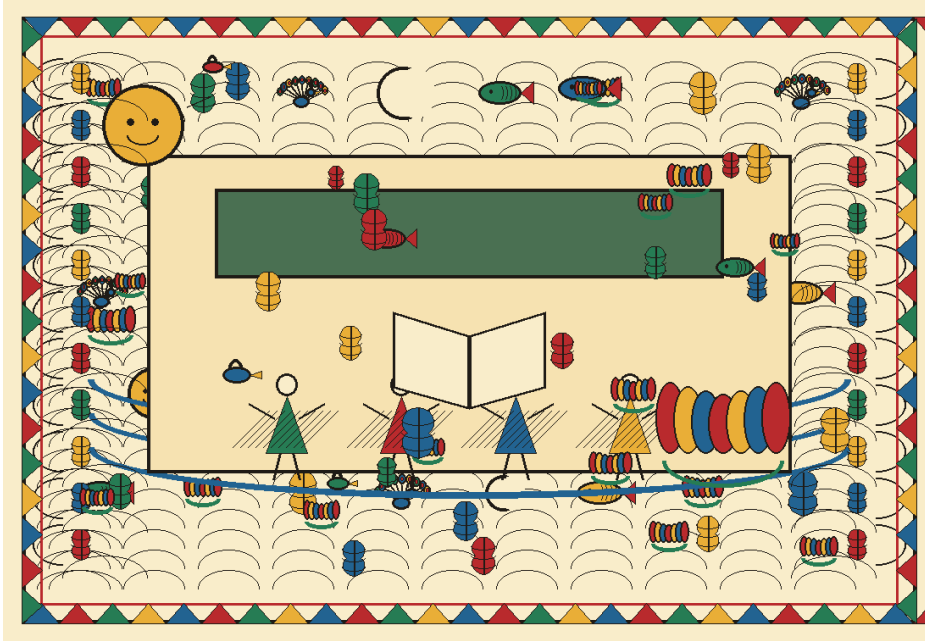

चित्र 10

अंकिता ठोंठ पर हाथ राखलक, जेना कण्ठ सुखाइत होइक — छोट सन तामस, मुदा तुरन्ते बिसरैत, ओ फेर हँसए लागलि।

टोलक कुकुर देखि अंकिता पिताक हाथ जोरसँ पकड़ने रहलि।

प्रश्नोत्तर

प्रश्न: टोलमे कोन स्थान लग दीप जरि रहल छल?

उत्तर: डिहबार (ग्राम देवता) स्थान।

प्रश्न: पिता की बनएबाक बात कहलनि?

उत्तर: टटका रोटी

अध्याय ३ : तरेगण (त-वर्ग)

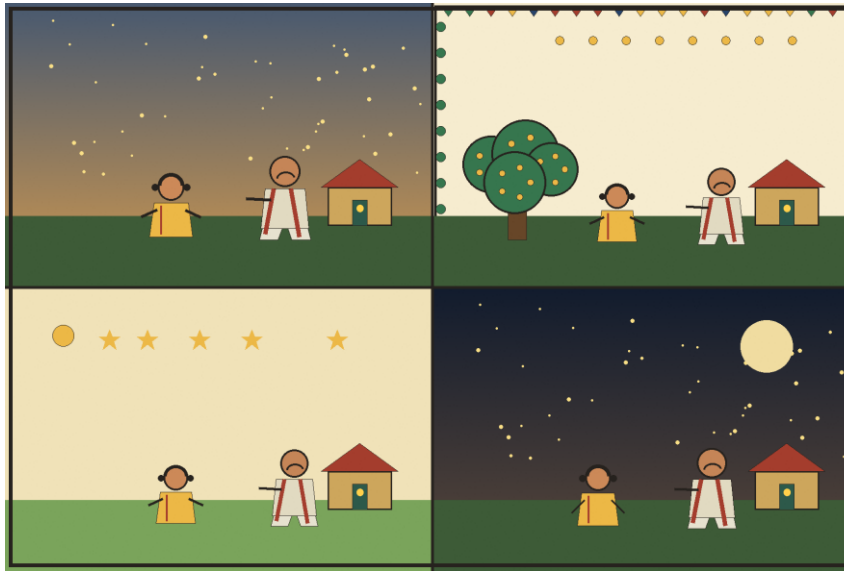

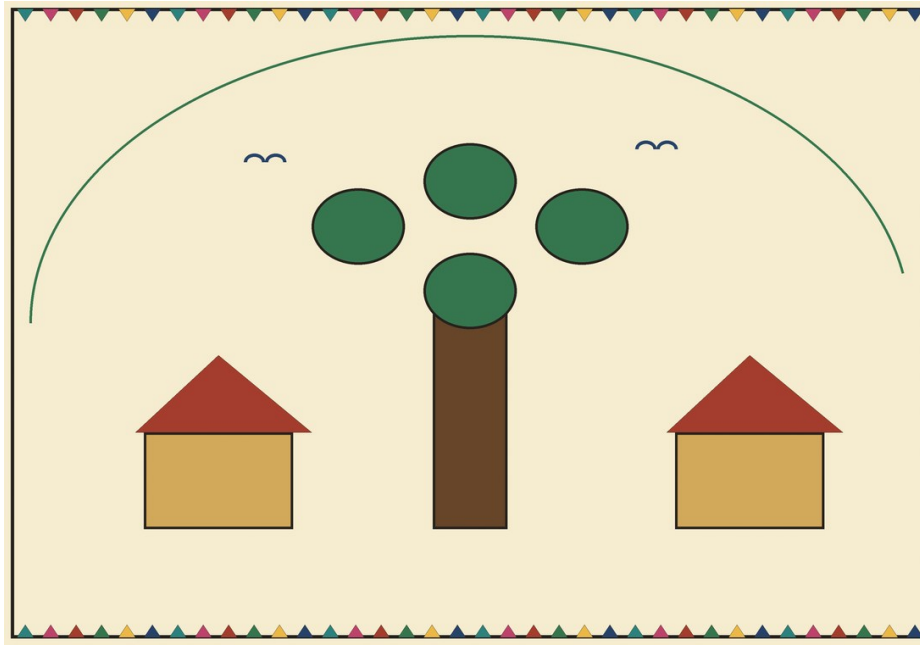

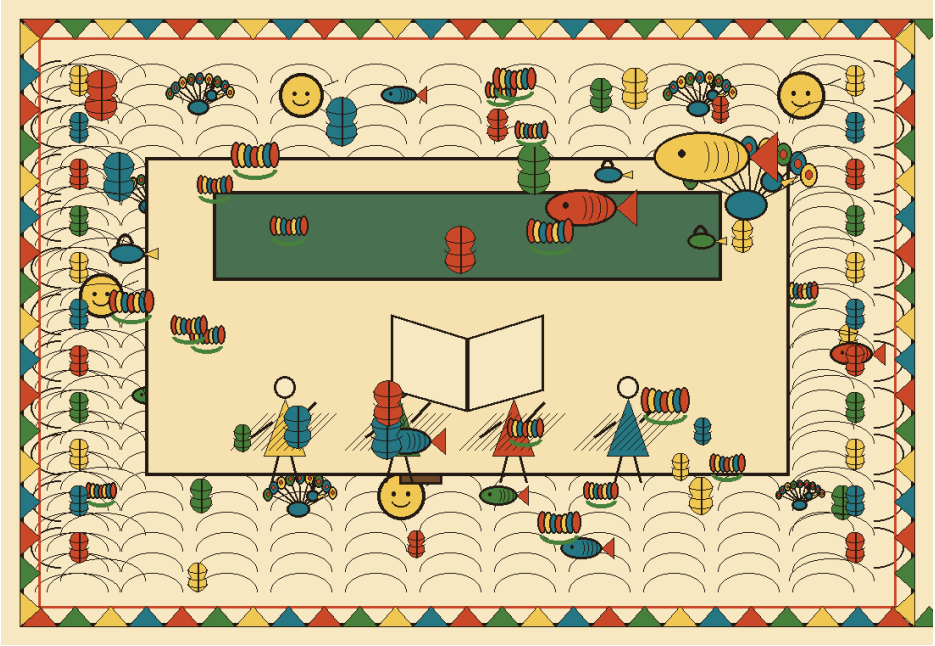

चित्र 11

अन्हार गहीरा गेल छल, आकाशमे तरेगण चमकए लागल। अंकिता तकैत रहलि —

'पिताजी, तरेगण कतेक तेज देखा रहल अछि! कतेक रास! मोन तिरपित भऽ गेल!

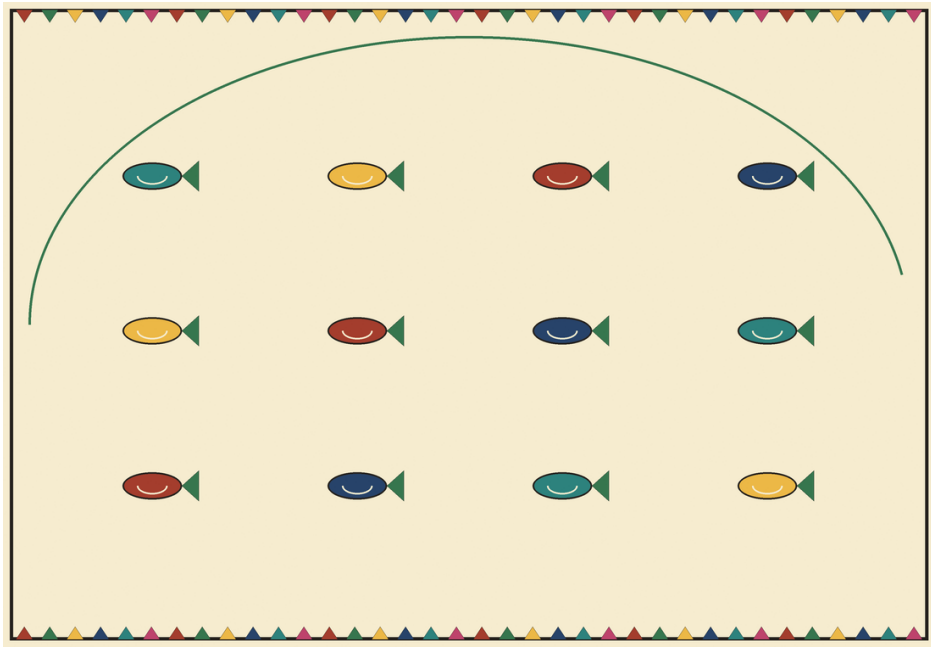

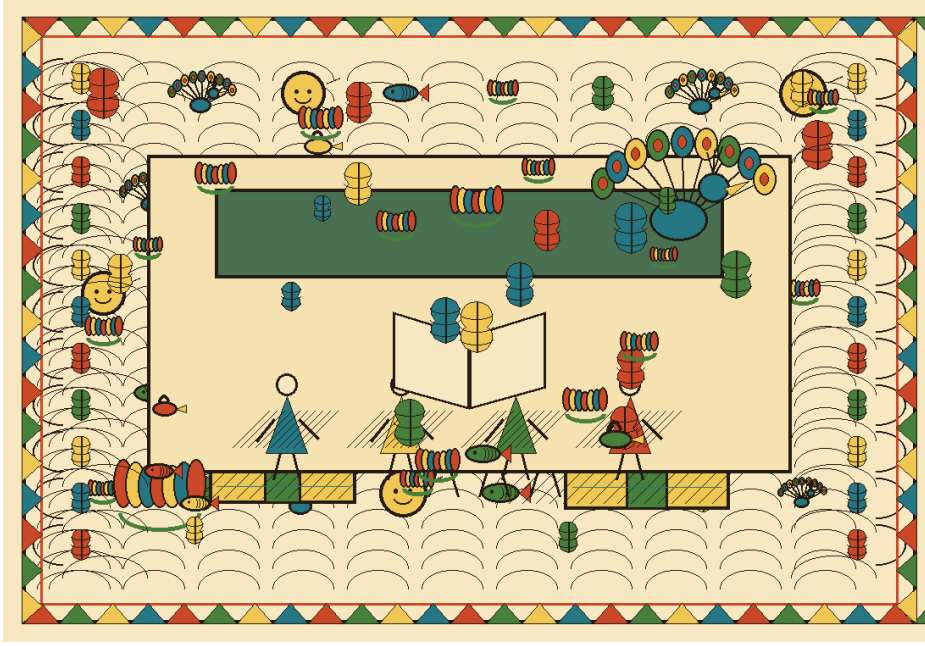

चित्र 12

अंकिता तमसाइत पुछलक — 'एतेक झटकारि किएक चलि रहल छी पिताजी?' पिता स्नेहसँ कहलनि — 'तेज चलल छलहुँ, जइसँ तूँ जल्दी पहुँचि आराम करितह।'

अंकिता तुरत मुस्कुरा उठलि — पिताक स्नेहभरल उत्तर सुनि ओकर सभ शिकायत तिरोहित भऽ गेलैक।

प्रश्नोत्तर

प्रश्न: आकाशमे की चमकए लगलैक?

उत्तर: तरेगण

प्रश्न: अंकिता किएक तमसायलि?

उत्तर: तेज चलबाक कारण

प्रश्न: अंकिताक शिकायत की भऽ गेल?

उत्तर: तिरोहित

अध्याय ७ : पओलक पथक पड़ाव (प-वर्ग)

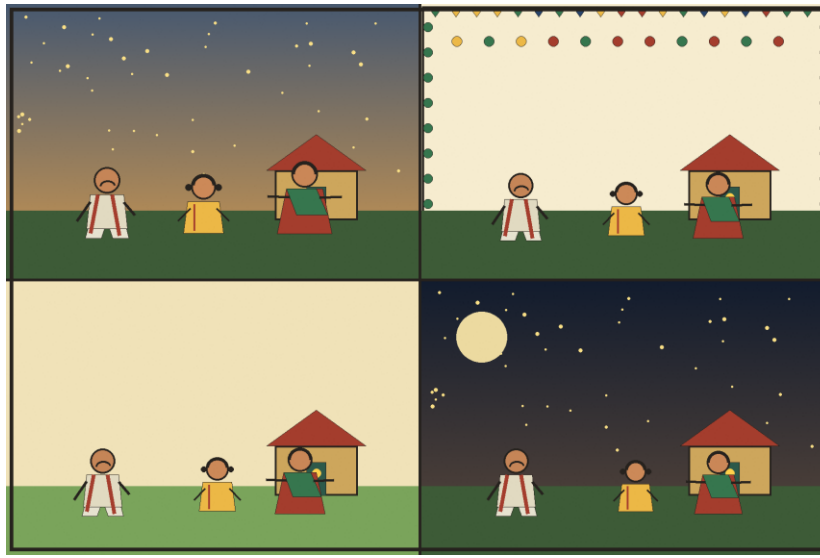

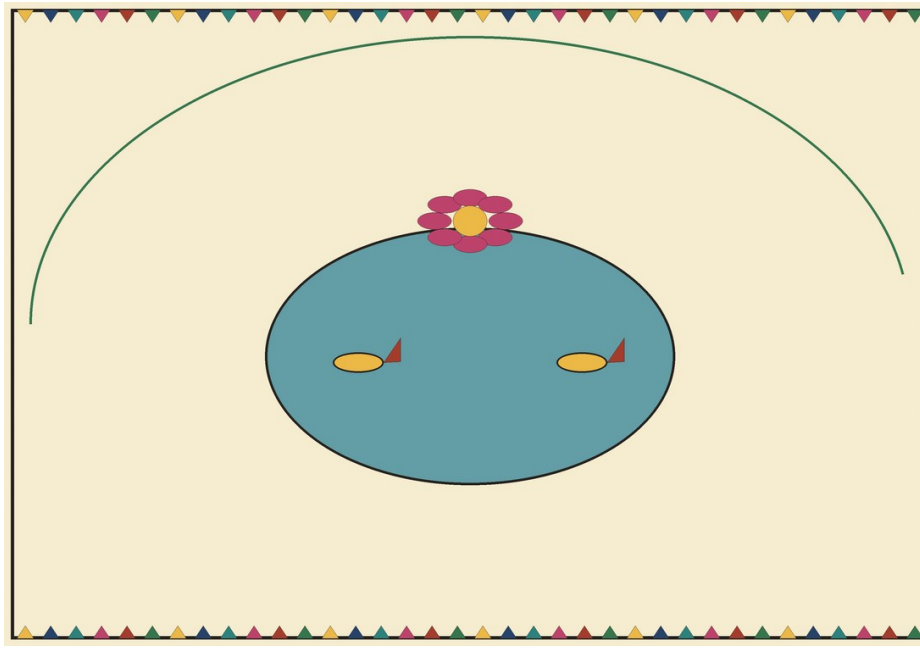

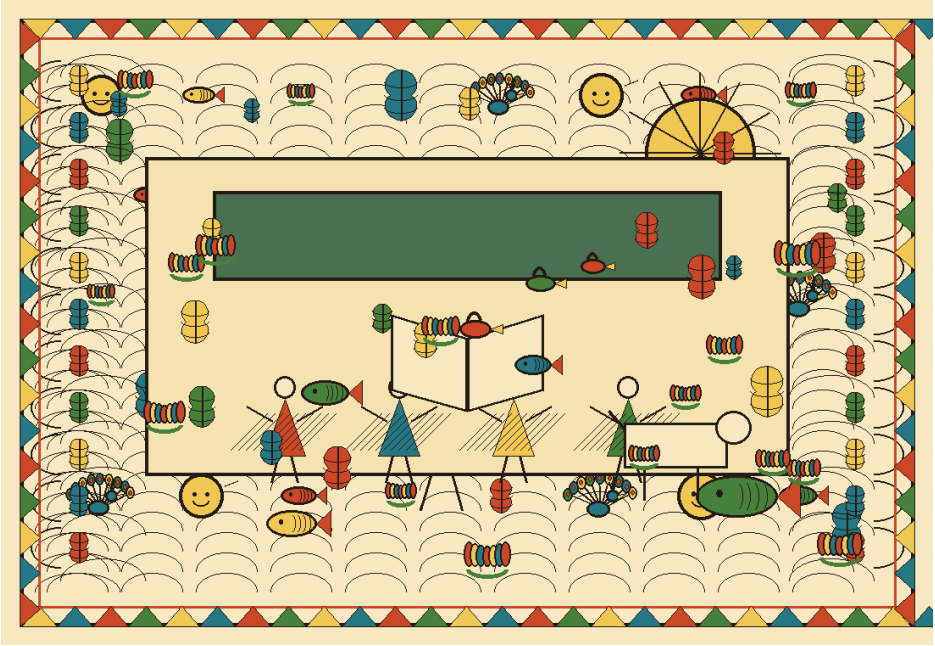

चित्र 13

अन्ततः अंकिता आ पिता द्वार लग पहुँचि गेला — यात्राक अन्त। अंकिता प्रसन्नतासँ पुकारलक — 'माए! हम सभ पहुँचि गेलहुँ!'

पिता पएरक धूरा झाड़ैत कहलनि — 'पूरा दिन परिश्रम भेल, मुदा अंकिता, तूँ बहुत धैर्यसँ चललह। पुरस्कारक हकदार छह!'

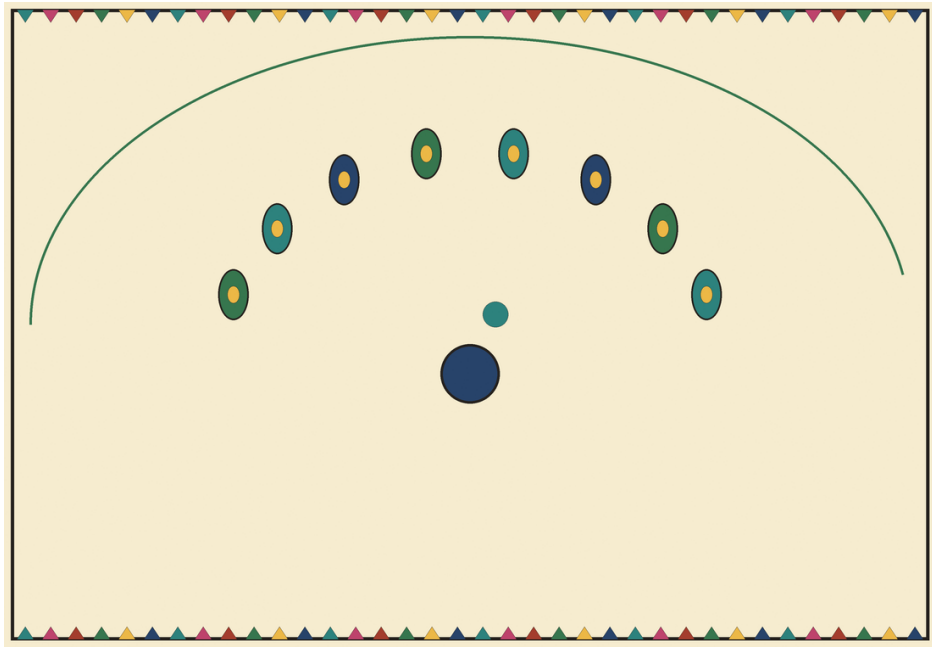

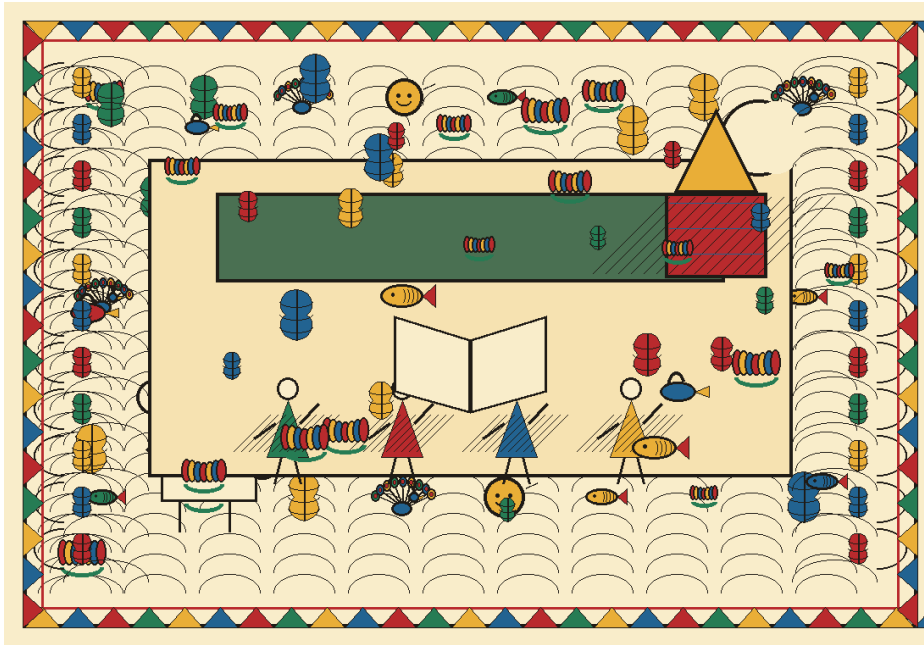

चित्र 14

अंकिताक माए द्वारपर प्रकट भेलीह — 'पहुँचलहुँ! प्रतीक्षा करैत-करैत परेशान भऽ गेल रही!' अंकिता दौड़ि कऽ माएक कोरामे पैसि गेलि।

पिता सन्तोषसँ कहलनि — 'प्रिय बेटी, आइक ई पूरा यात्रा — अकासँ लऽ कऽ प धरिक — तोहर संगे नीक जकाँ पूर्ण भेल। आब आराम करू।'

प्रश्नोत्तर

प्रश्न: अंकिता आ पिता कतय पहुँचला?

उत्तर: द्वार

प्रश्न: पिता अंकिताकेँ कोन गुणक हकदार कहलनि?

उत्तर: धैर्य

प्रश्न: घरपर के प्रतीक्षा करैत छलीह?

उत्तर: माए

प्रश्न: पिता आइक यात्राकेँ की कहलनि?

उत्तर: पूर्ण भेल

अध्याय 8 : वर्णमालाक अन्तिम चरण (य-ह वर्ग)

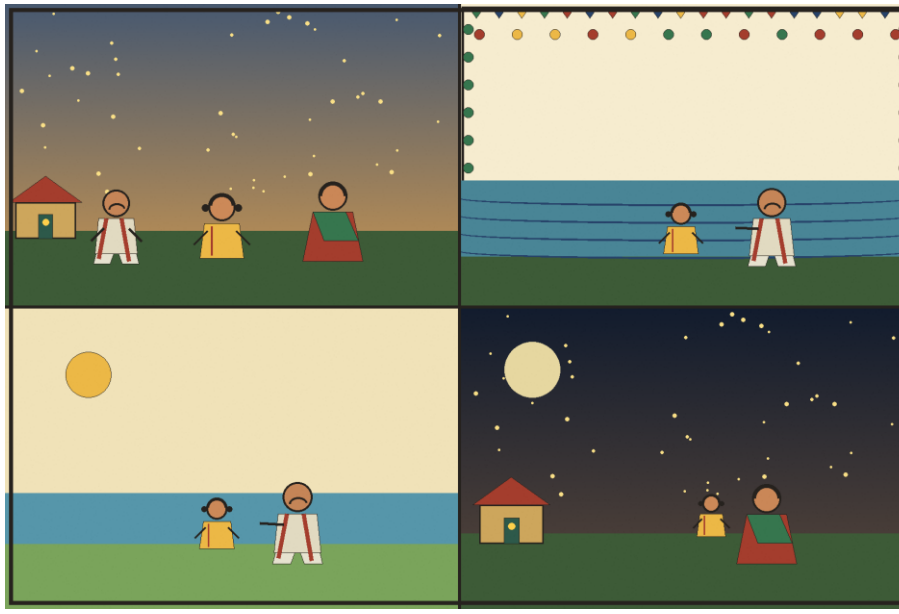

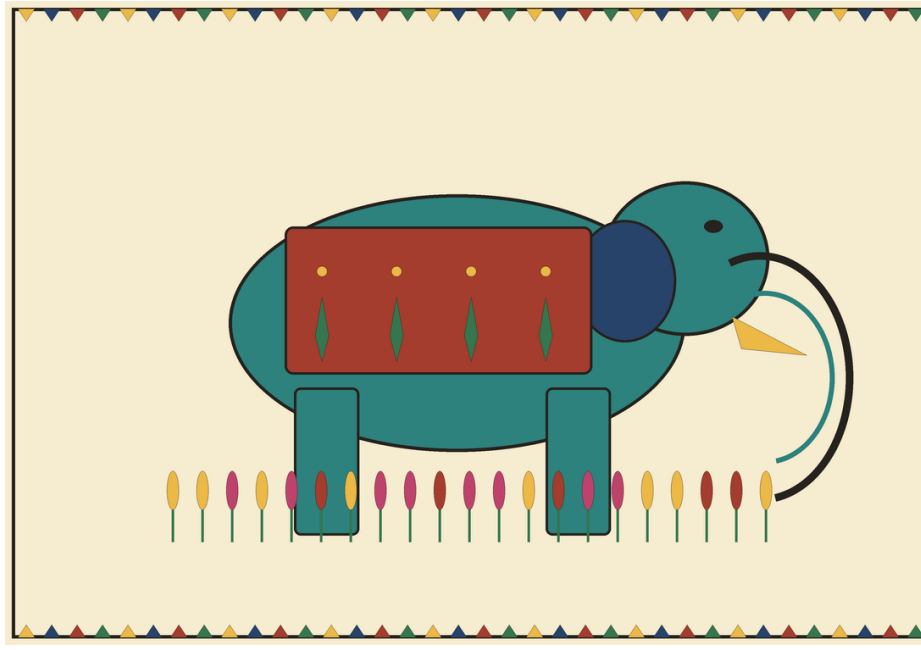

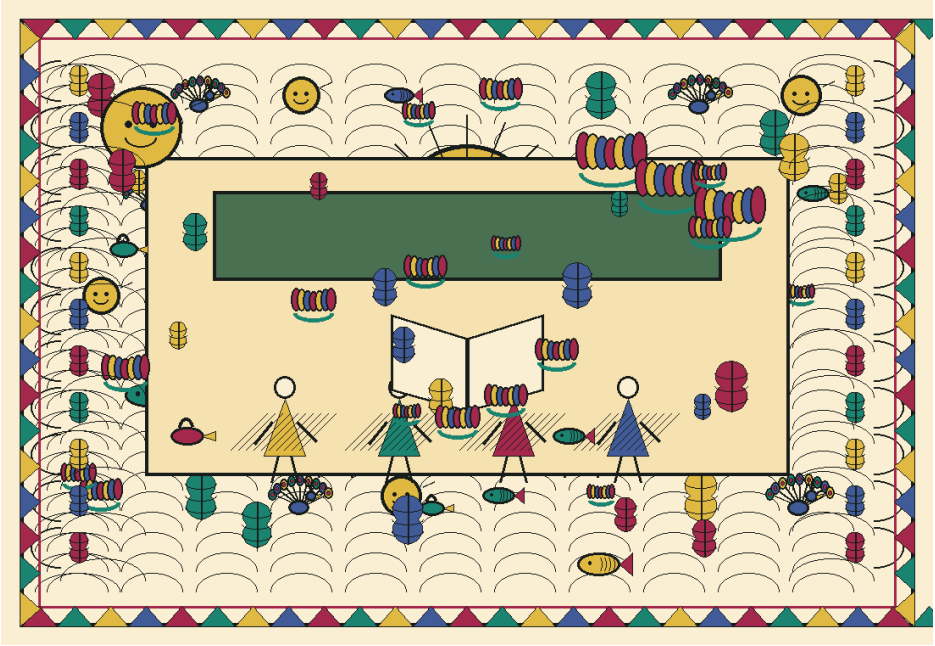

चित्र 15

राति गहीर भेल, अंकिता माएक कोरामे बैसि यात्राक खिस्सा सुनाबए लागलि —

'माए, रस्तामे यमुना सन चाकर एकटा धार भेटल!' (शब्द: यमुना)

'फेर रस्तामे रजनी उतरि आयल, आ हम सभ रस्ता रोकि कऽ थोड़ेक विश्राम कएलहुँ।' (शब्द: रजनी)

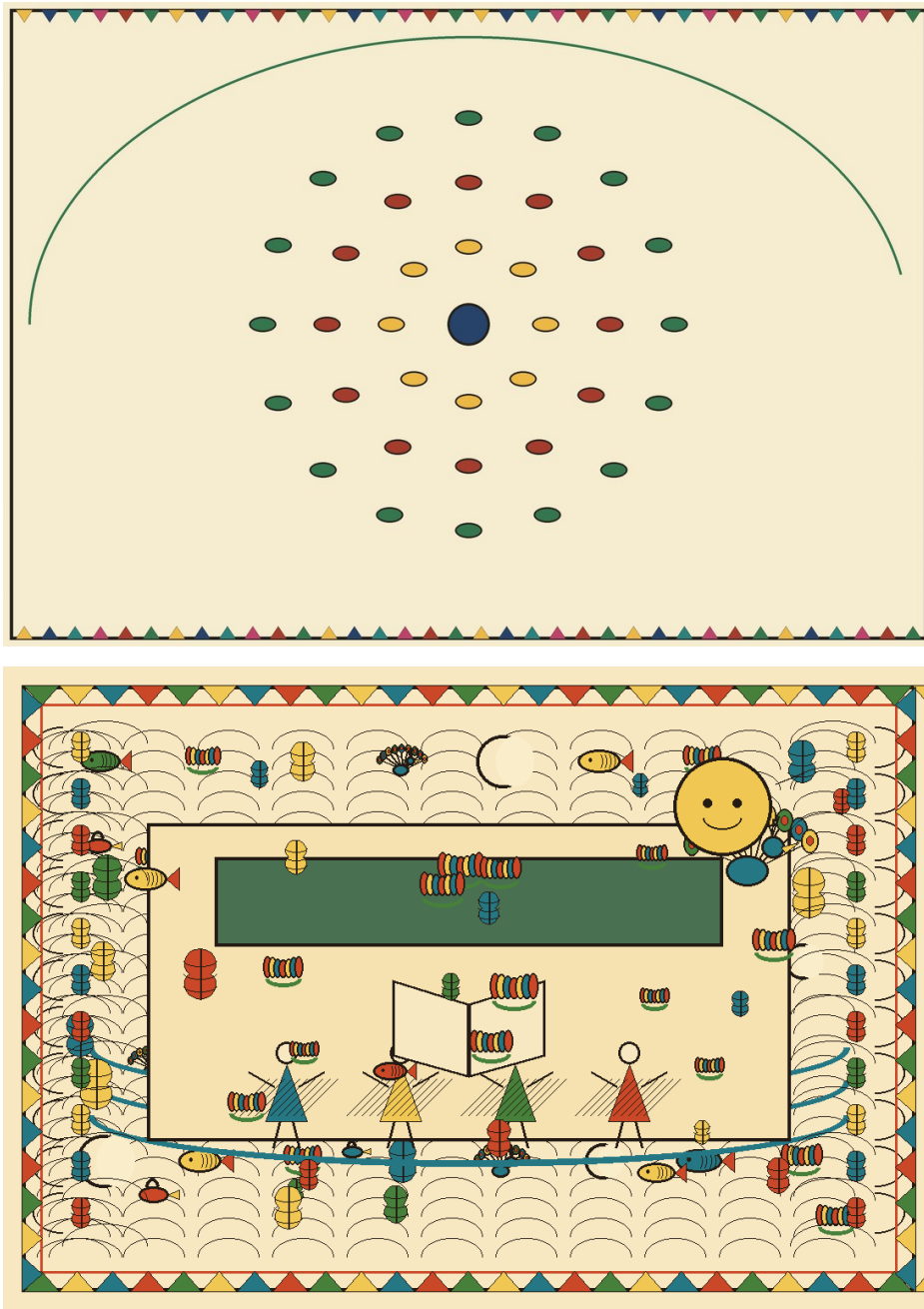

चित्र 16

'लस्सा-माटिमे पएर फँसि गेल रहए, मुदा पिताजी हमरा उठा लेलनि!' (शब्द: लस्सा)

'बोने-बोन घुमैत हम सभ अन्ततः घर पहुँचि गेलहुँ — हमरा हर्ष भऽ रहल अछि!' (शब्द: बोन, हर्ष) — अंकिताक आँखि नीन्दसँ बन्द होमए लगलैक, आ ओ माएक कोरामे सुति गेलि।

प्रश्नोत्तर

प्रश्न: रस्तामे कोन चकरगर धार भेटल छल?

उत्तर: यमुना

प्रश्न: टहाटही लेल कोन शब्द प्रयुक्त भेल?

उत्तर: रजनी

प्रश्न: अंकिताक पएर कोन माटिमे फँसल छल?

उत्तर: लस्सा

प्रश्न: अंकिताकेँ घर पहुँचि कोन भाव भेल?

उत्तर: हर्ष

अध्याय ९ : शिक्षकक टिप्पणी : आगाँक यात्रा

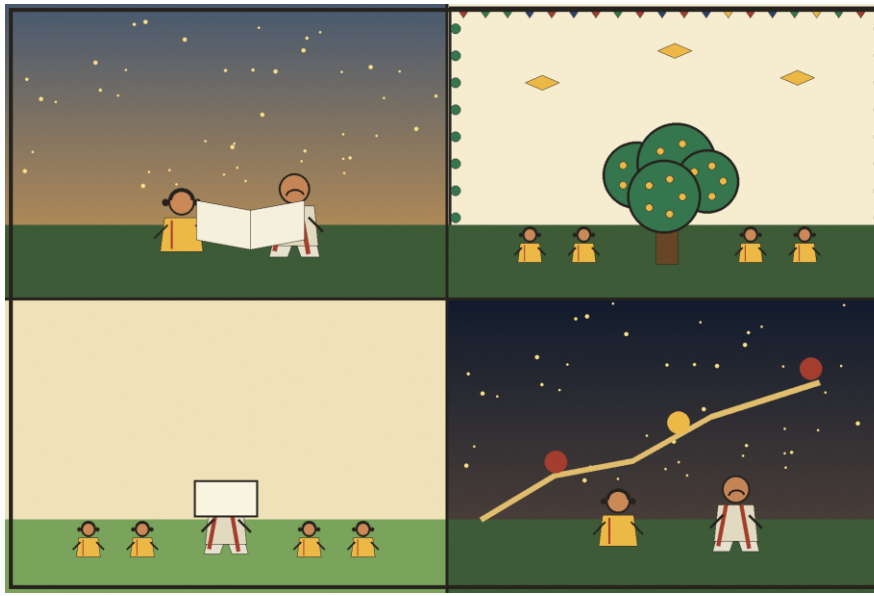

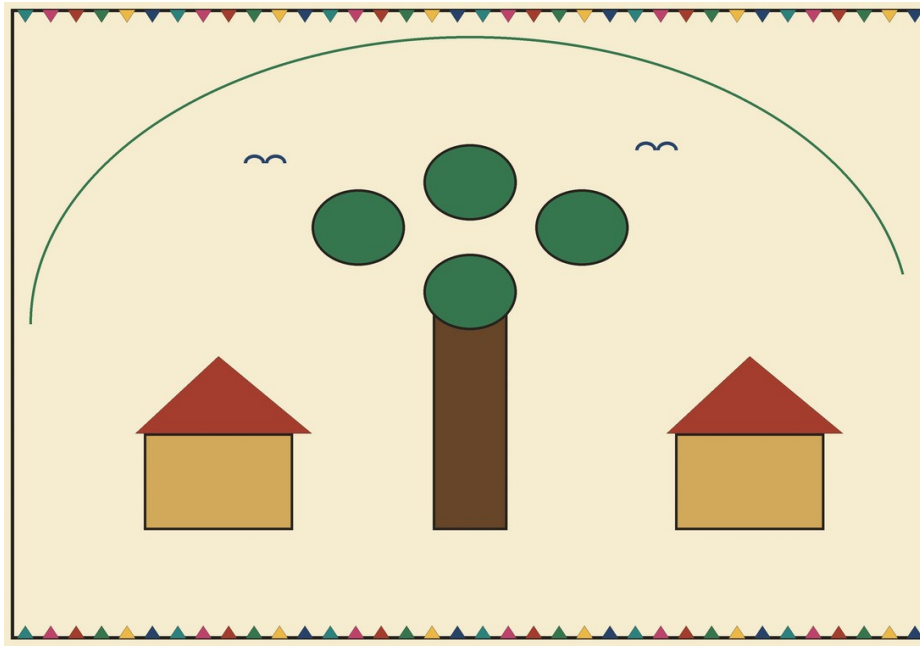

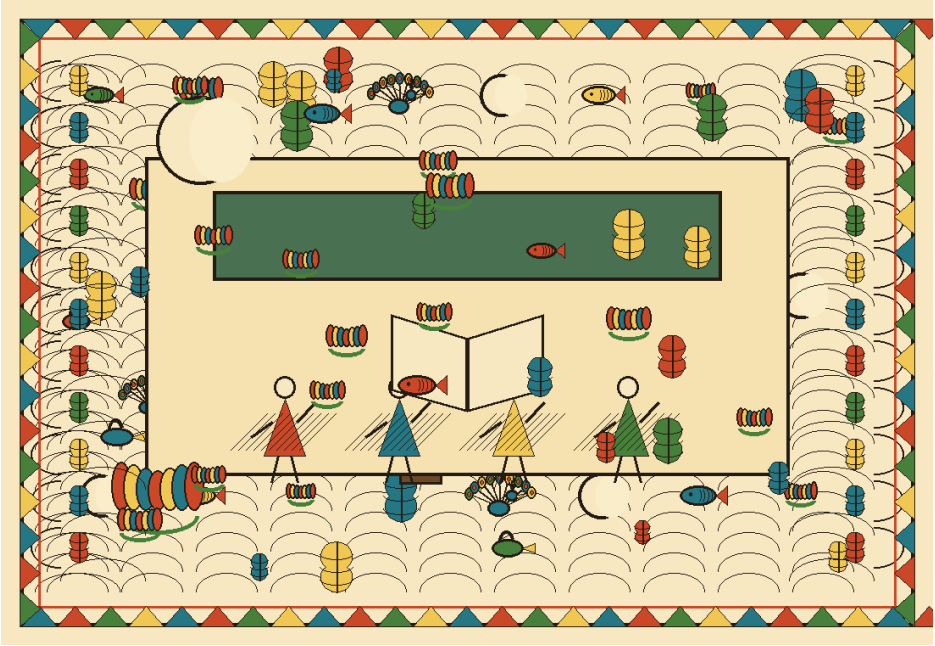

चित्र 17

अंकिताक ई साँझ-यात्रा एतय समाप्त होइत अछि, मुदा वर्णमाला-शिक्षाक यात्रा नहि समाप्त होइत अछि। एहि पोथीक मूल उद्देश्य थिक — बच्चाकेँ खिस्सा सुनबैत-सुनबैत मैथिली वर्णमालाक सभ अक्षरसँ परिचित कराएब।

जेना अंकिताक ई खिस्सा 'अ' सँ 'ह' धरिक वर्णक्रममे शब्द समेटने अछि, तहिना अभिभावक आ शिक्षक एहि पद्धतिकेँ आगाँ बढ़ा सकैत छथि — नव-नव खिस्सा बना कऽ, प्रत्येक वर्णसँ शुरू होमएबला शब्द भरि-भरि कऽ।

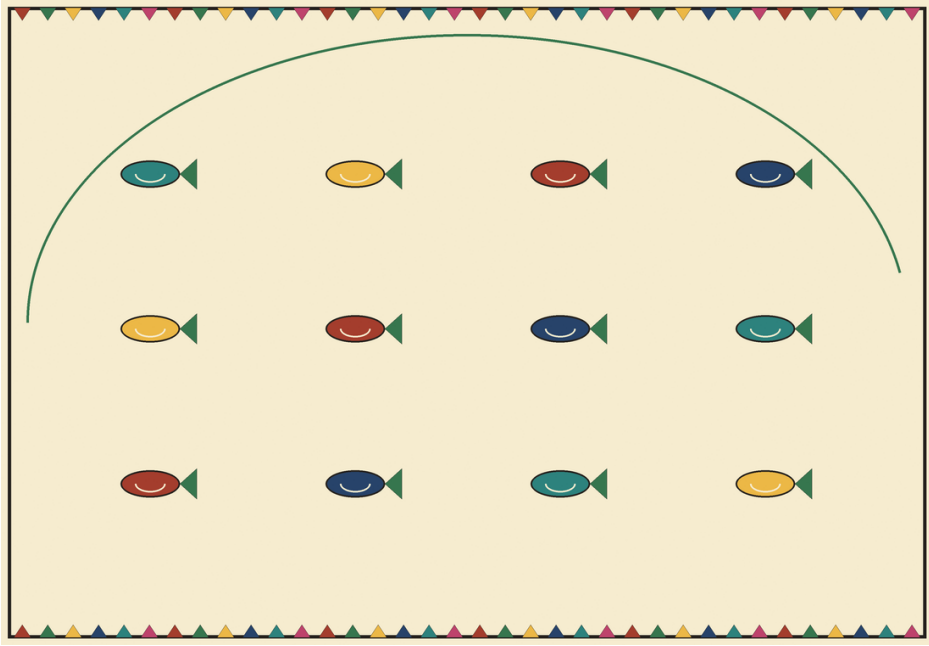

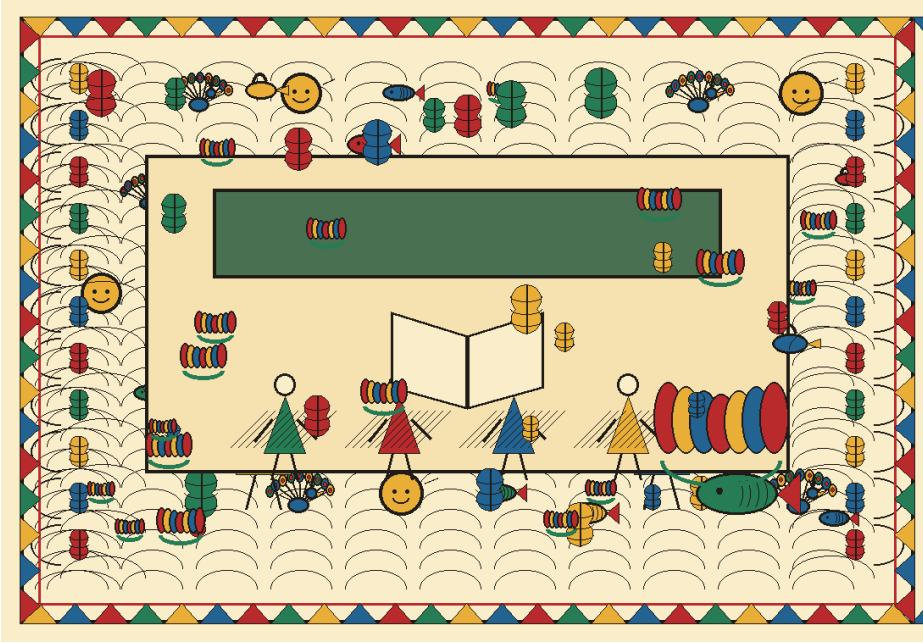

चित्र 18

खिस्सा कतेक बेर बच्चाकेँ सुनाओल जाए, से बच्चाक क्षमता आ कथामे प्रयुक्त शब्दावलीक संख्याक हिसाबसँ निर्धारित करब उचित अछि — प्रत्येक बच्चाक गति भिन्न होइत छैक, तेँ धैर्य आवश्यक अछि।

अंकिताक ई गाथा — एकटा साधारण साँझक यात्रा, जे वर्णमालाक पूर्ण यात्रा बनि गेल — मिथिलाक बाल-साहित्यमे एकटा अभिनव प्रयोग थिक। ई पोथी ने केवल मनोरंजन करैत अछि, अपितु शिक्षाक एकटा सहज, आनन्दमय माध्यम सेहो प्रस्तुत करैत अछि — जतय भाषा सिखब कोनो बोझ नहि, एकटा प्रेमपूर्ण यात्रा बनि जाइत अछि, जेना अंकिता अपन पिताक संग कएलक।

समाप्त

VIDEHA

विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका | ISSN 2229-547X | www.videha.co.in

गांगोदेवीक भगता

मलाहिन गांगोक श्रद्धा आ अटूट विश्वास

गजेन्द्र ठाकुर

गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादक, विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका (since 2000)

ISSN 2229-547X

© Gajendra Thakur/ Preeti Thakur; गजेन्द्र ठाकुर सम्पादक, विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका (since 2000) ISSN 2229-547X

ई पोथी गजेन्द्र ठाकुर समग्रक अन्तर्गत संकलित अछि।

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक ISBN:978-93-5890-210-5

DESIGNED BY: AUM GAJENDRA THAKUR

उपक्रम : धारक पुत्री गांगो

गांगोदेवी मलाहिन छलीह — साधारण, मुदा अपन पतिक हृदयमे विशेष स्थान रखनिहारि। ई गाथा एकटा एहन प्रेमक थिक, जकर शक्तिसँ माछ मारबाक असम्भव कठिन दिन सेहो चमत्कारिक रूपसँ सफल भऽ गेल।

मिथिलामे साओनमे माछ खाएब आकि बेचब निषिद्ध नहि छल, तेँ ई ऋतु मलाह परिवार लेल जीविकाक स्वाभाविक समय छल। मुदा ई गाथा साधारण जीविकासँ बेसी, प्रेम आ श्रद्धाक शक्तिक अद्भुत प्रमाण प्रस्तुत करैत अछि, जे आइयो मिथिलाक मलाह समुदायमे जीवित अछि।

अध्याय १ : साओनक मेला आ माछ-यात्रा

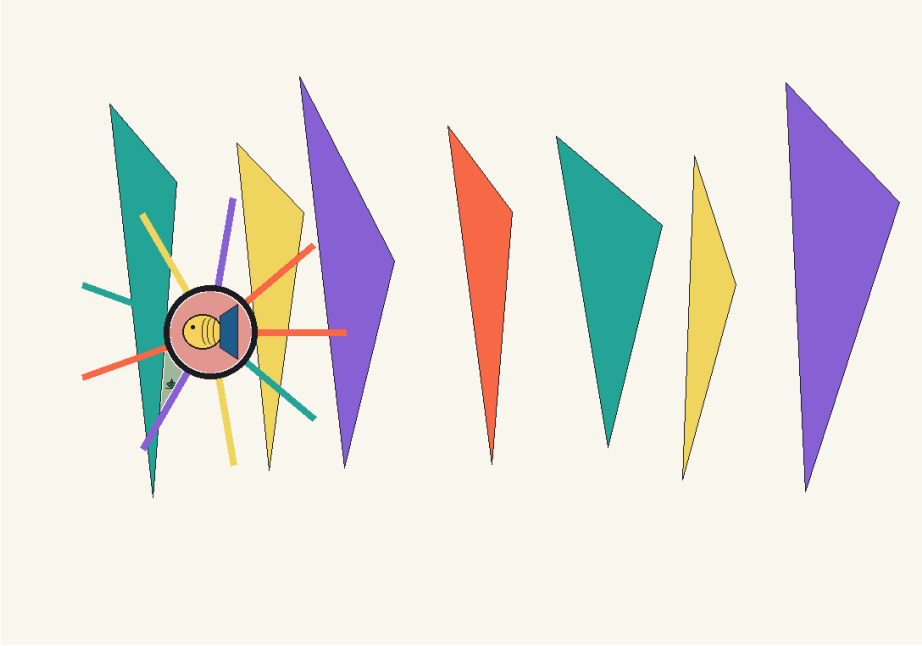

चित्र 1

एक दिन गांगोदेवीक साँए, अपन भाय आ पिताक संग माछ मारए धार दिस गेलाह। साओनक मेला चलि रहल छल — मिथिलामे साओनमे माछ खाएब आकि बेचब निषिद्ध नहि छल, तेँ ई समय सामान्य मत्स्य-व्यवसायक छल।

गांगोदेवीक वर मोनहि-मोन योजना बनओलनि — 'आइ माछ मारि हाटमे बेचब, आ साओनक मेलासँ गांगो लेल चूड़ी-लहठी आनब।' ई साधारण, मुदा प्रेमपूर्ण इच्छा हुनक हृदयमे उमड़ि रहल छल।

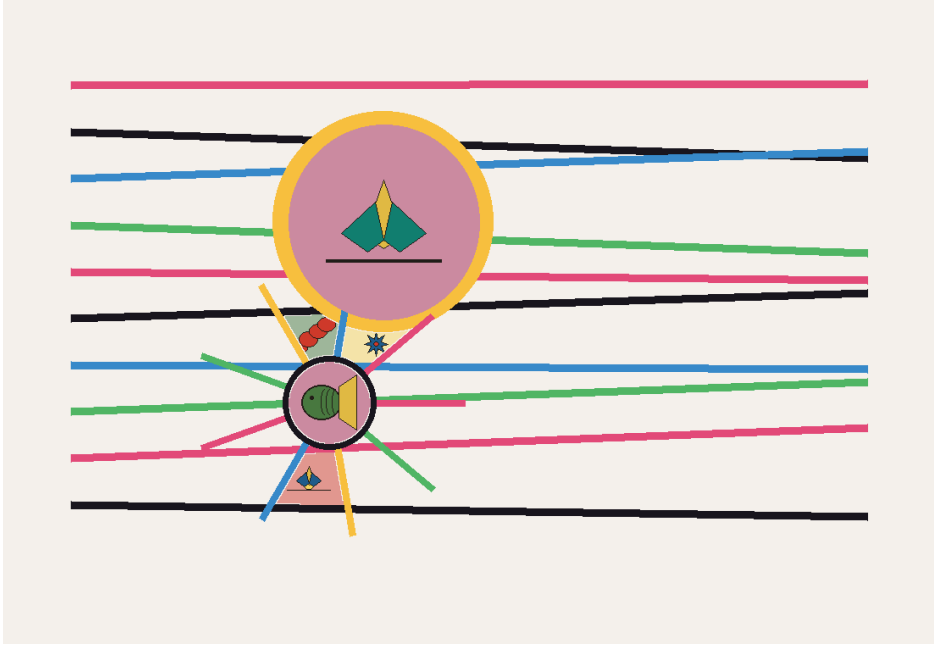

चित्र 2

तीनू गोटे धारमे जाल फेकलनि, सरैया -एकटा मत्स्य-पकड़बाक उपकरण- पाथलनि — मुदा बेरू पहर धरि खाली डोका, हराशंख आ सतुआ -छोट किसिमक मत्स्य/जलजन्तु- मात्र हाथ आबए, बड़का माछक कोनो सफलता नहि भेटलनि।

निराशाजनक स्थितिमे, गांगोक वरक धैर्य क्षीण होमए लागल — दिन भरिक श्रम, मुदा सन्तोषजनक परिणाम नहि। ई विफलता ओकर योजना — गांगोक लेल उपहार — कैं खतरामे धऽ देलक।

अध्याय २ : पत्नीक नामसँ अन्तिम प्रयास

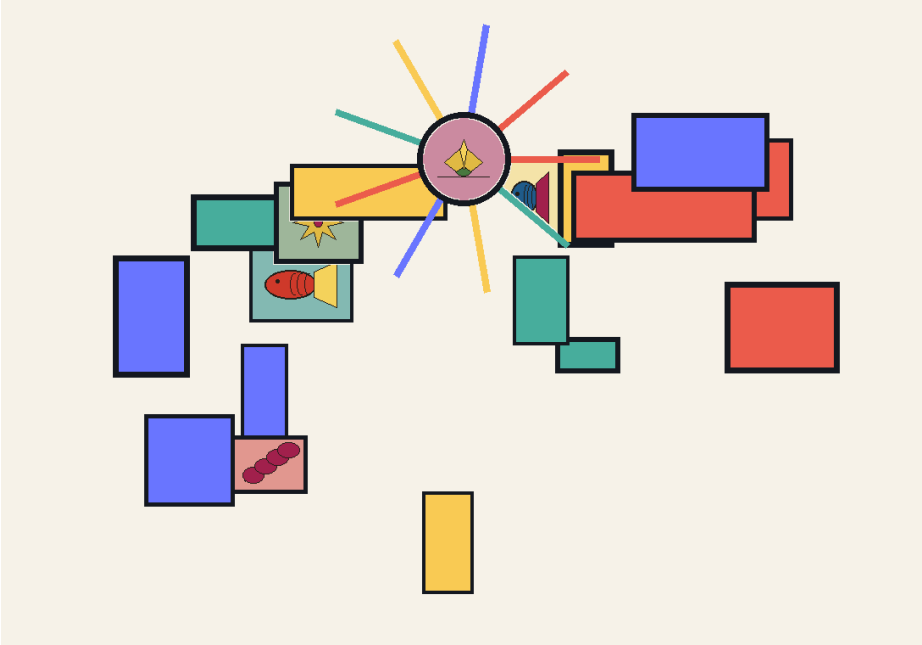

चित्र 3

गांगोक वर एकटा अन्तिम, भावुक प्रयास करबाक निर्णय लेलनि। ओ अपन कनियाँक नाम लऽ जाल फेकलनि — 'ई अन्तिम बेर छी गांगो। एहि बेर जे माँछ नहि आएल, त' हमरा क्षमा करब!'

ई वाक्य असाधारण छल — एकटा मलाहक अपन पत्नीक नाम लऽ जाल फेकब, अपन प्रेम आ श्रद्धाक अभिव्यक्ति, जेना गांगोदेवीक नाम स्वयं एकटा शक्तिशाली आह्वान हो।

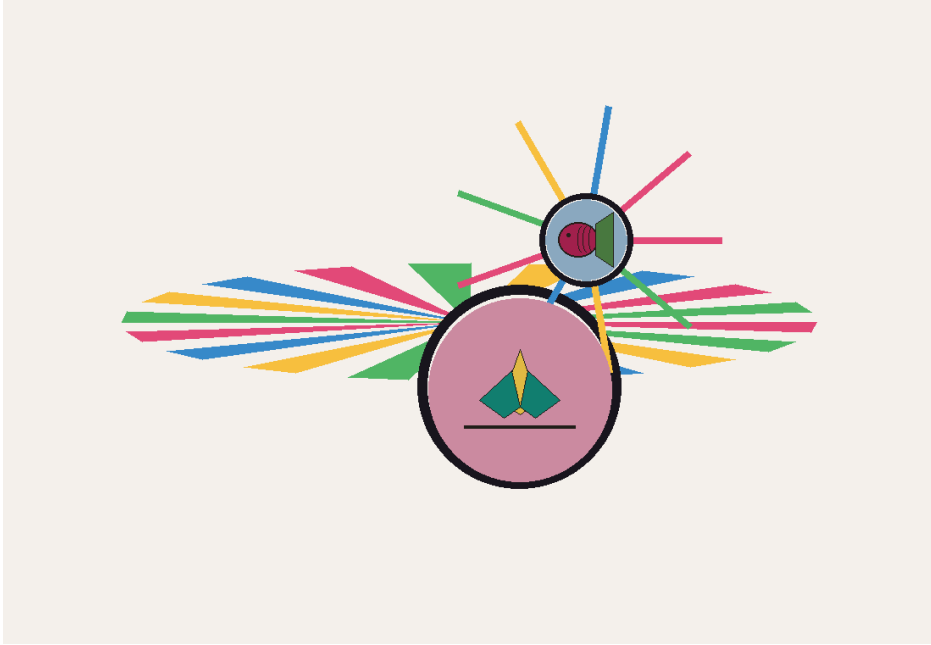

चित्र 4

आ तखन चमत्कार भेल! जाल माँछसँ भरि गेल — एतेक अधिक जे जाल घिंचने नहि घिंचाए! ई अकल्पनीय सफलता, जे दिन भरिक विफलताक बाद, गांगोक नाम लइतहि आयल।

सभटा माँछ बेचि गांगोक लेल लहठी-चूड़ीक संग नूआ सेहो कीनल गेल — गांगोक वरक इच्छा पूर्ण भेल, आ ओकर पत्नीक प्रति प्रेम आ श्रद्धा एहि चमत्कारसँ आरो दृढ़ भेल।

अध्याय ३ : दोसर दिनक पुष्टि

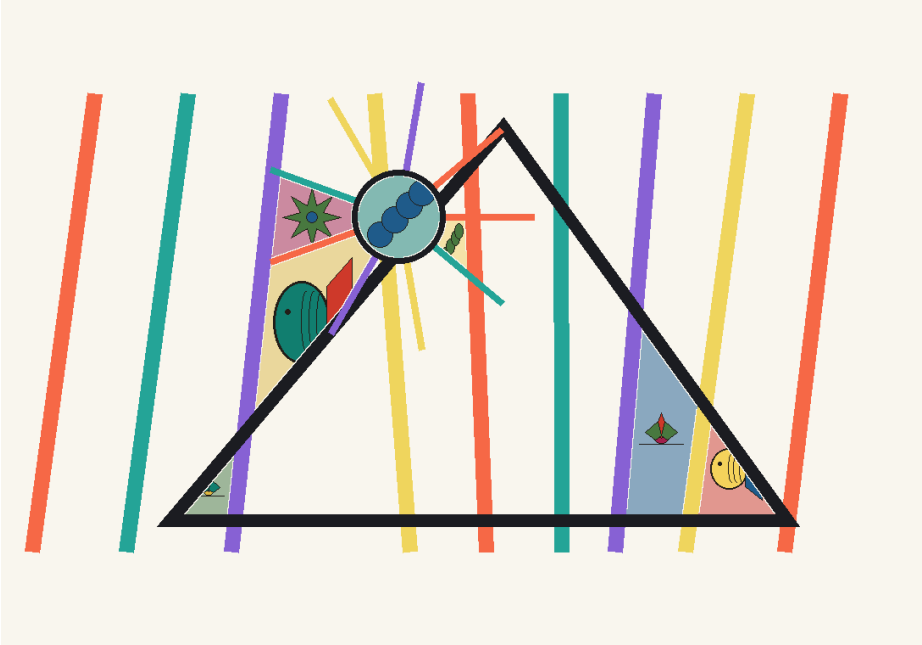

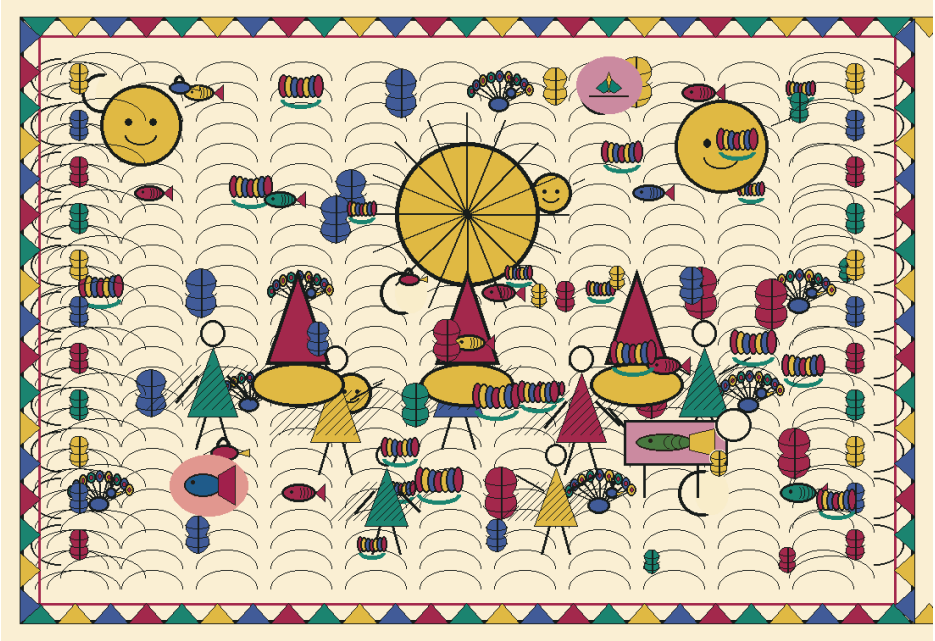

चित्र 5

अगिला दिन गांगोक वर फेर गांगोक नाम लऽ जाल फेंकलनि — पहिल दिनक चमत्कार दोहरएबाक आशामे। आ फेर हुनकर जाल माँछसँ भरि गेलनि — ई पुनरावृत्ति संयोग नहि, एकटा स्पष्ट पैटर्न छल।

मुदा एहि बीच एकटा रोचक अन्तर छल — हुनक भाइ आ बाबूक हिस्सामे वैह डोका-काँकड़ु अएलनि, जे पहिल दिन भेटल छल! केवल गांगोक वरक जालमे ई विशेष सफलता छल।

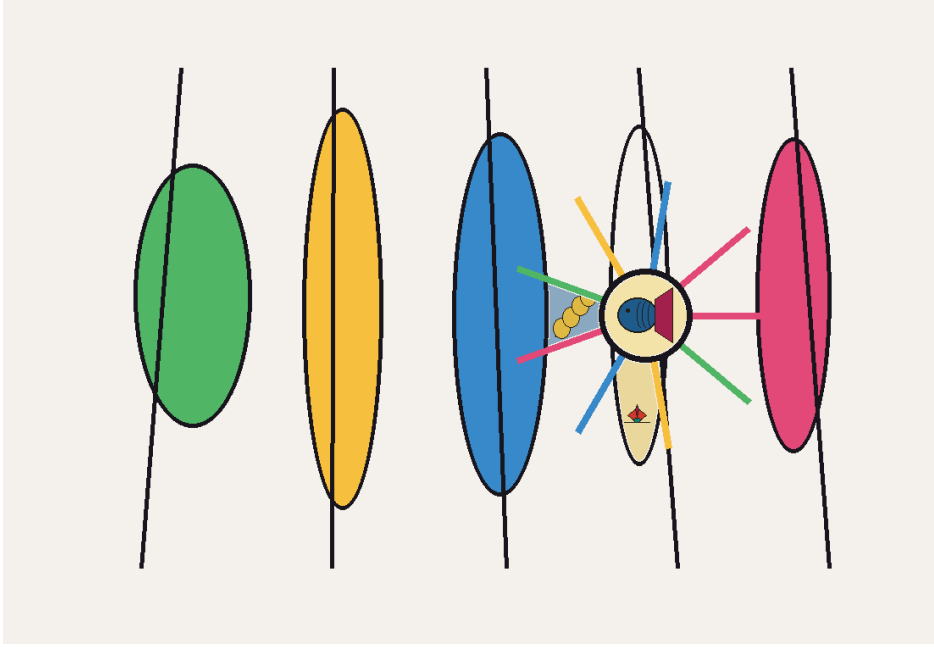

चित्र 6

ई अन्तर देखि गांगोक भाय आ पिता खोधिया कऽ पुछलनि आ एकर रहस्य बूझि गेला — गांगोक नाम लइतहि माछक अम्बोहि, आ बिनु नाम लेने साधारण परिणाम। ई पैटर्न स्पष्ट रूपसँ गांगोदेवीक विशेष शक्ति वा श्रद्धाक फल छल।

ई रहस्य परिवारक भीतर एकटा नव अध्याय खोललक — गांगोदेवीक नाम मात्र एकटा पत्नीक नाम नहि, एकटा शुभ, शक्तिशाली आह्वान बनि गेल, जे माछ मारबाक कठिन कार्यकेँ सुगम बना सकैत छल।

अध्याय ४ : मिथिलाभरिमे प्रसार

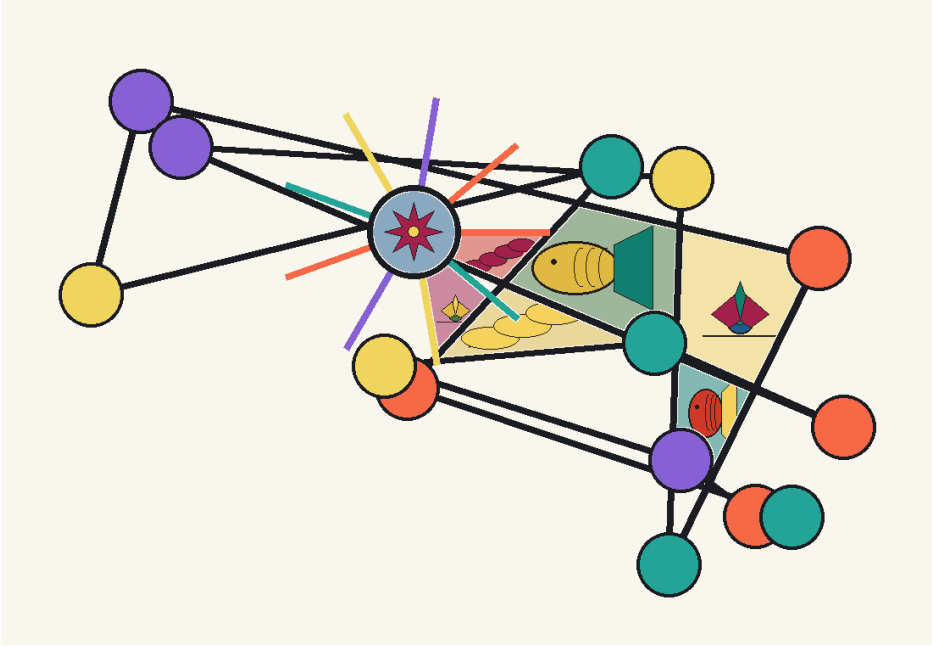

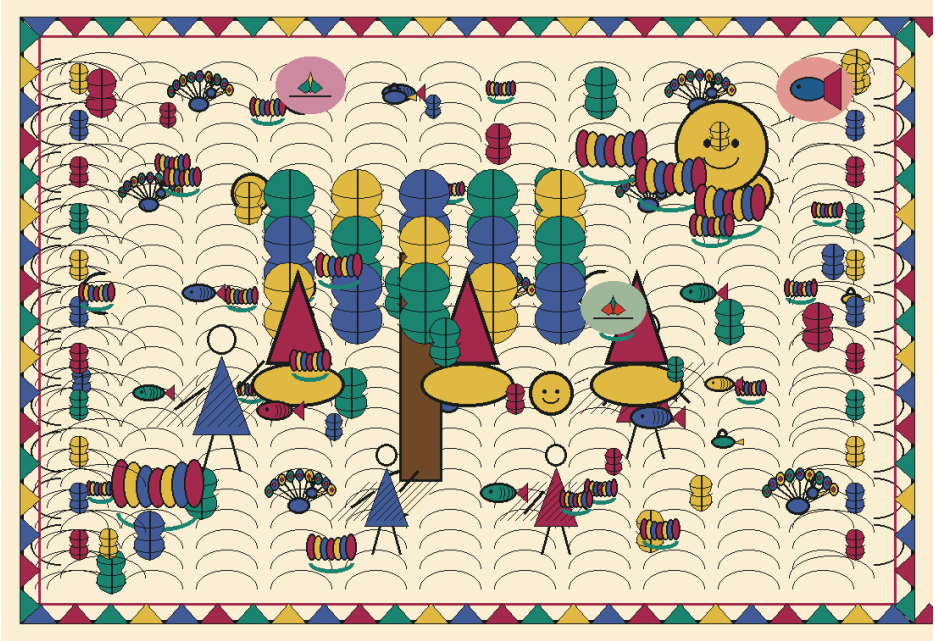

चित्र 7

ई अद्भुत रहस्य — गांगोक नामक चमत्कारिक शक्ति — शीघ्र सौंसे मिथिलाक मलाह समुदायमे पसरि गेल। एकटा परिवारक व्यक्तिगत अनुभव आब सामूहिक विश्वास आ परम्पराक रूपमे स्थापित होमए लागल।

मलाह लोकनि — जे कइएक खाढ़ीसँ माछ मारबाक व्यवसायमे संलग्न छला — गांगोदेवीक ई गाथा सुनि विश्वास करए लगला जे श्रद्धापूर्वक स्मरण केला पर गांगोदेवी सभकेँ सफलता दैत छथि।

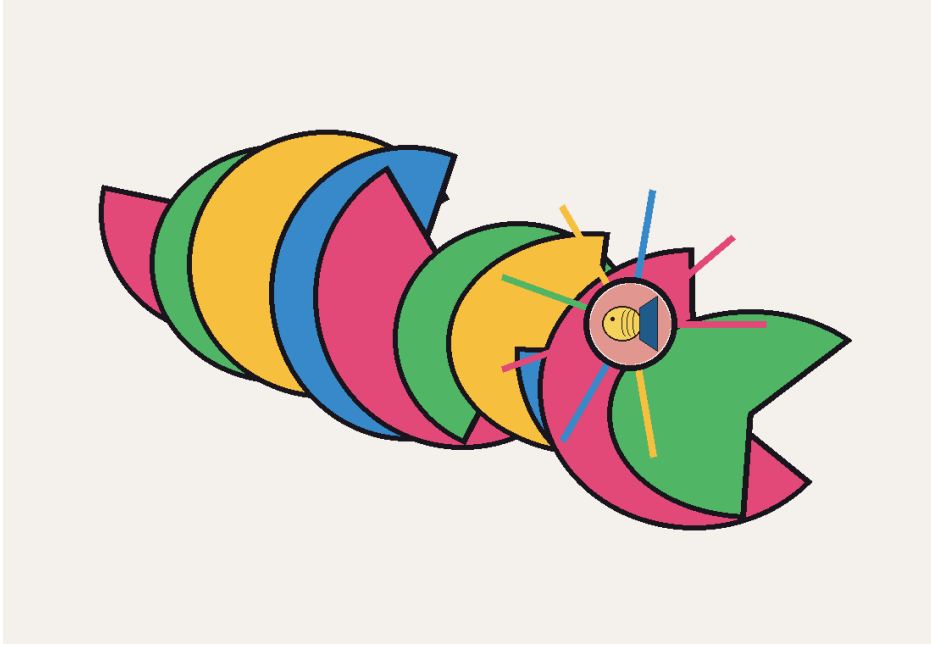

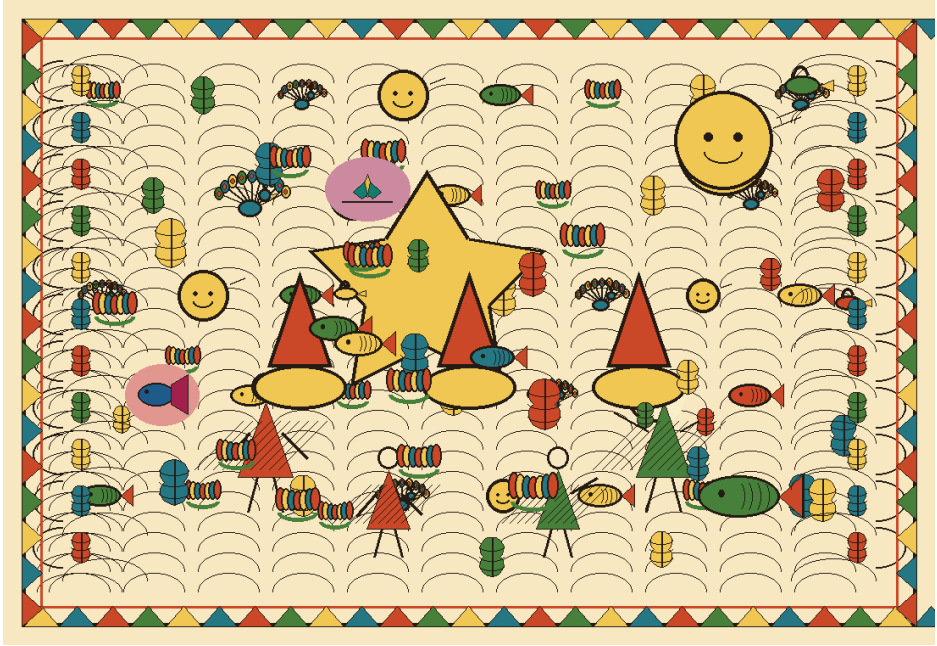

चित्र 8

'गांगोदेवीक भगता' — ई शब्द आब एकटा परम्पराक नाम बनि गेल, जे मिथिलाक मलाह लोकनिमे आइयो प्रचलित अछि। ई परम्परा हस्तान्तरित होइत रहल, अपन मूल कथाक स्मृतिकेँ जीवित रखैत।

आइयो मिथिलाक मलाह लोकनि जाल फेंकबासँ पहिने गांगोक स्मरण करैत छथि — एकटा साधारण मलाहिनक श्रद्धा आ ओकर वरक प्रेम, जे कालान्तरमे एकटा सम्पूर्ण समुदायक आस्थाक प्रतीक बनि गेल। ई गाथा सिखबैत अछि — असली प्रेम आ श्रद्धा, चाहे कतबो साधारण परिस्थितिमे प्रकट होअए, असाधारण परिणाम आनि सकैत अछि, आ पीढ़ीक बादक पीढ़ी धरि प्रेरणाक स्रोत बनि सकैत अछि।

अध्याय ५ : श्रद्धाक धरोहर

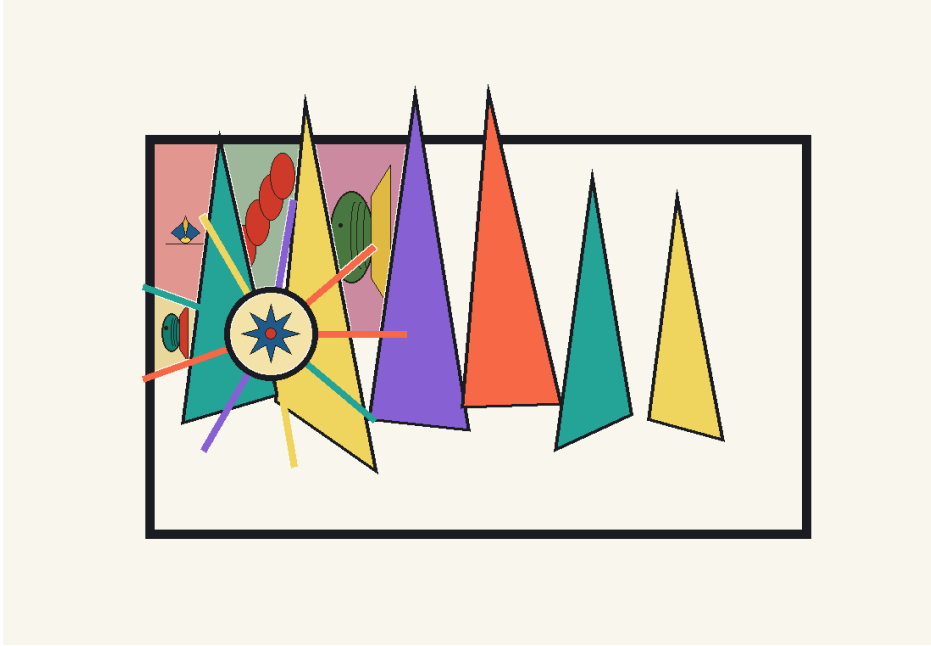

चित्र 9

गांगोदेवीक ई गाथा मिथिलाक अनेक लोकगाथासँ भिन्न अछि — एहिमे कोनो राक्षस नहि, कोनो युद्ध नहि, कोनो जटिल षड्यन्त्र नहि। ई एकटा साधारण दम्पतिक प्रेम आ श्रद्धाक कथा थिक, जे अपन सरलतामे सेहो असाधारण अछि।

गांगोक वरक ओ वाक्य — 'ई अन्तिम बेर छी गांगो, क्षमा करब' — एकटा पतिक अपन पत्नीक प्रति विनम्रता आ प्रेमक गहींर अभिव्यक्ति छल। ई विनम्रता, ई श्रद्धा, ई चमत्कारक असली स्रोत बुझना जाइत अछि।

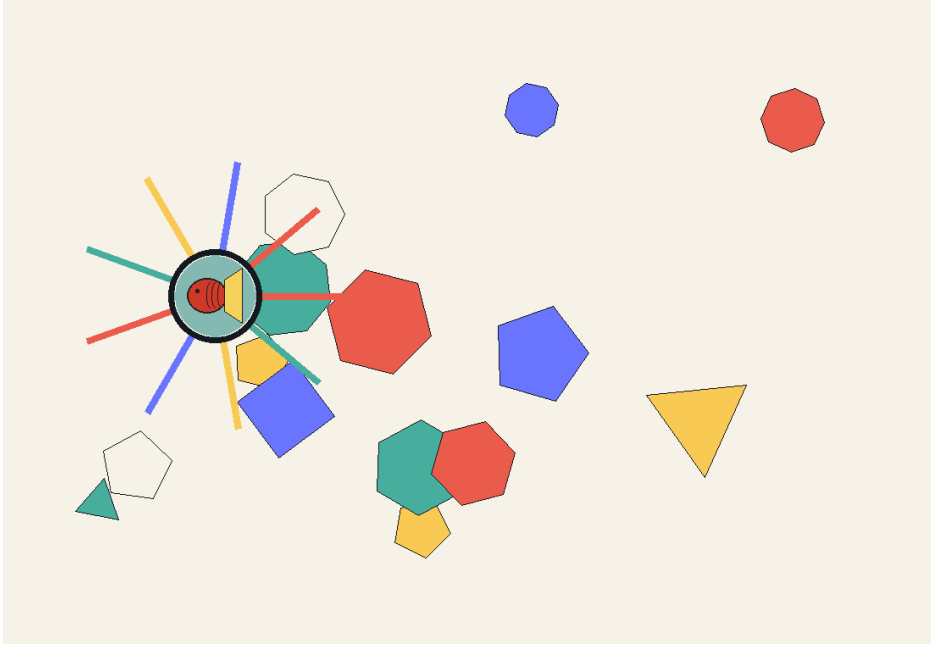

चित्र 10

मलाह समुदायमे आइयो जखन कियो जाल फेंकबासँ पहिने गांगोक नाम लैत अछि, त' ओ केवल एकटा अनुष्ठान नहि करैत अछि— ओ एकटा प्रेमक स्मृतिकेँ जीवित राखैत अछि, जे एक खाढ़ीसँ दोसर खाढ़ीमे हस्तान्तरित भेल अछि।

गांगोदेवीक भगता — ई नाम आइयो मिथिलाक धारक कातक गामसभमे गूँजैत अछि, एकटा साधारण मलाहिनक असाधारण श्रद्धाक अमर स्मृतिक रूपमे।

समाप्त

VIDEHA

विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका | ISSN 2229-547X | www.videha.co.in

मीरांसाहेब

डिलरीनगरक एकाकी योद्धाक गाथा

गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादक, विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका (since 2000)

ISSN 2229-547X

© Gajendra Thakur/ Preeti Thakur; गजेन्द्र ठाकुर सम्पादक, विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका (since 2000) ISSN 2229-547X

ई पोथी गजेन्द्र ठाकुर समग्रक अन्तर्गत संकलित अछि।

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक ISBN:978-93-5890-210-5

DESIGNED BY: AUM GAJENDRA THAKUR

उपक्रम : एकटा नाम, एकटा नग्र

डिलरीनगर — मिथिलाक खिस्सा-भूगोलक एकटा नगर, जकर हवामे आइयो एकटा नाम शान्ति बनि कऽ बहैत अछि: मीरांसाहेब।

ई गाथा एकटा एहन बालकक थिक जे जन्मसँ पहिनहि अनाथ भऽ गेल छल; एकटा एहन योद्धाक, जकरा सभ किओ युद्धसँ रोकए चाहलक; आ एकटा एहन आत्माक, जे मृत्युक बादो अपन नगरक पहरा दैत रहल। वीरता एतय गरजैत नहि अछि — ऐ गाथामे वीरता चुपचाप अपन कर्तव्य पूरा करैत अछि, आ चलि जाइत अछि।

अध्याय १ : डिलरीनगरक सैयद

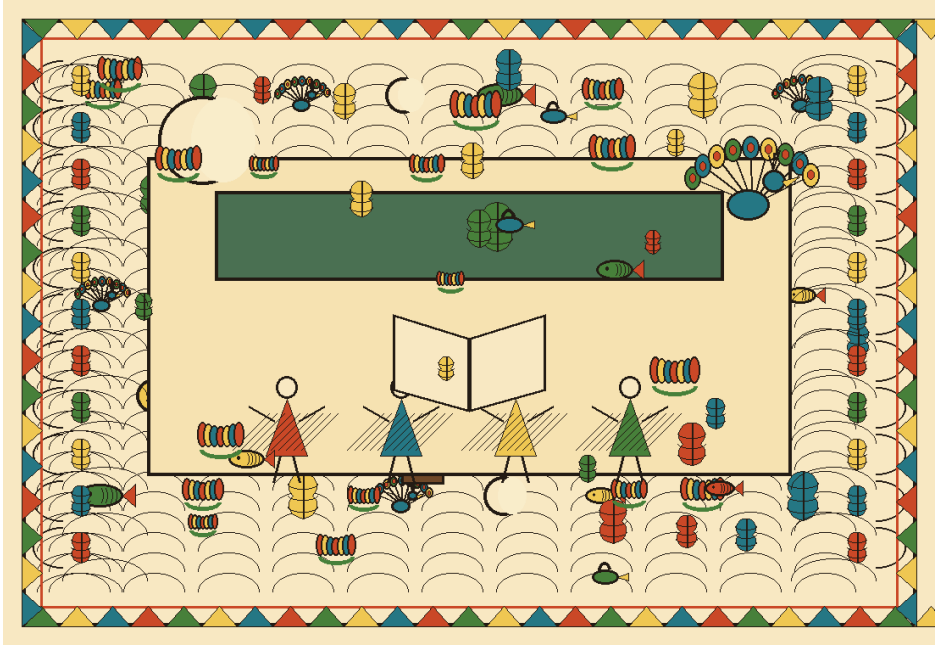

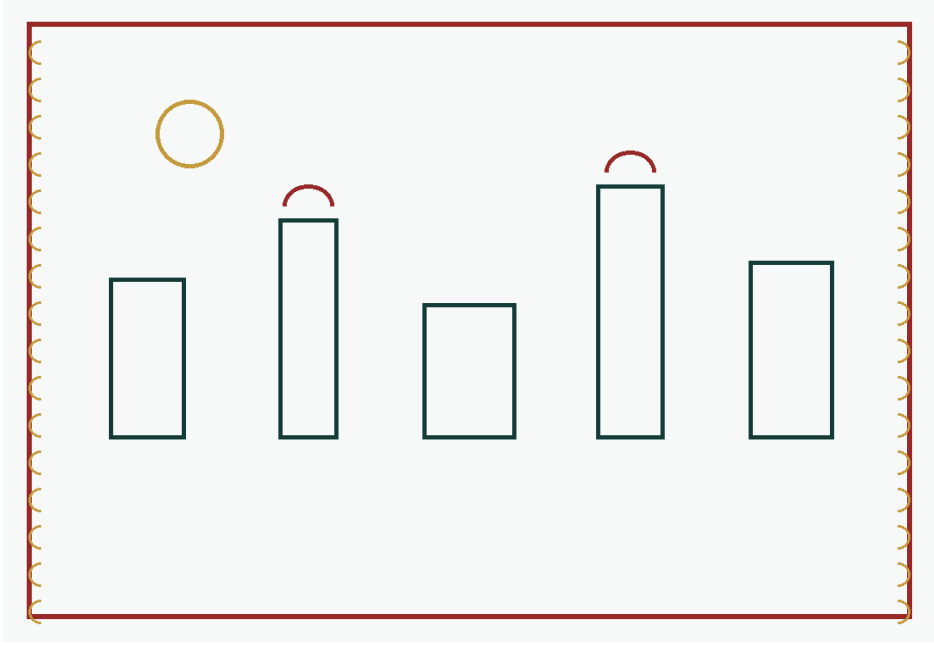

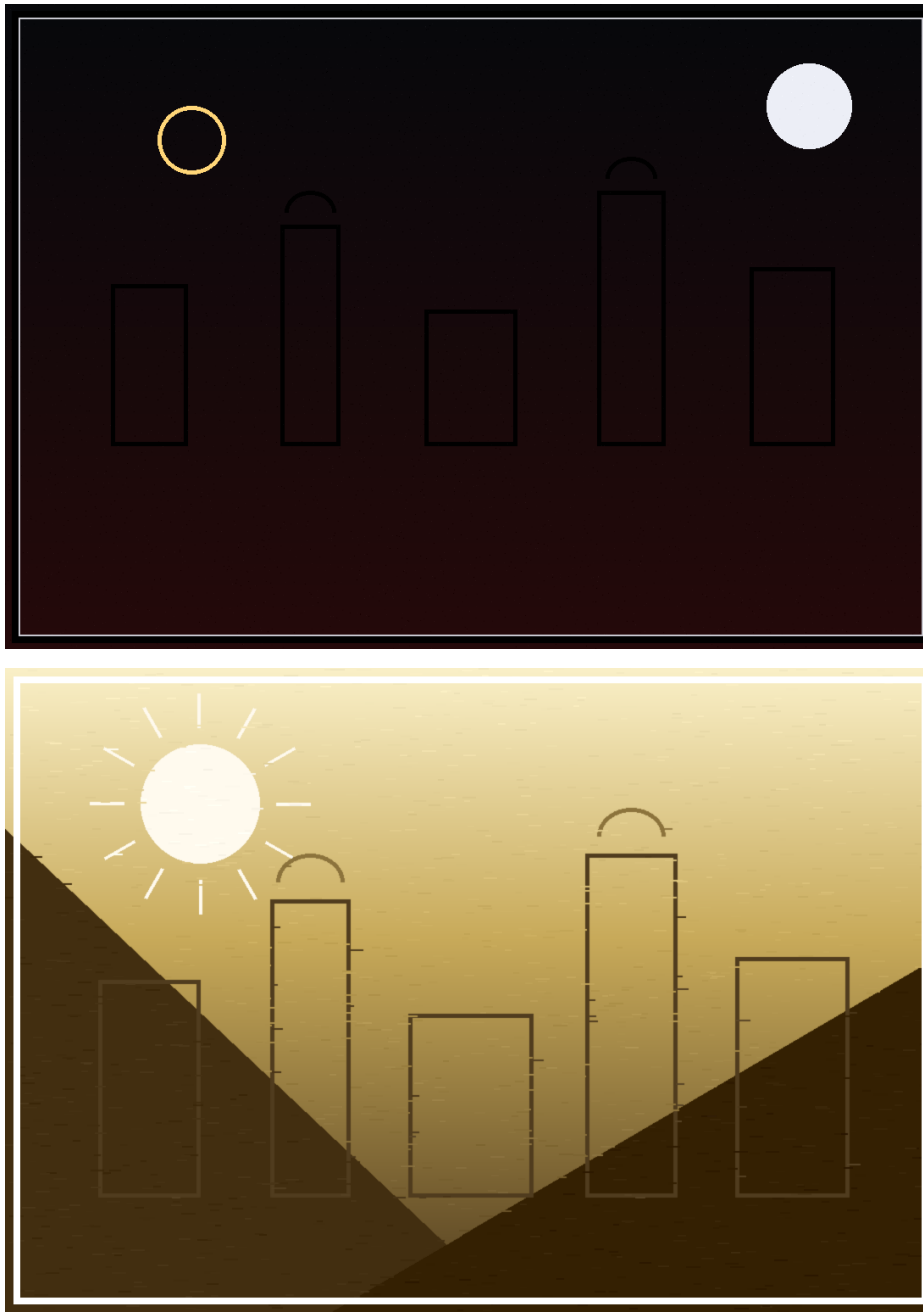

चित्र 1

डिलरीनगरमे एकटा सैयद रहैत छलाह — प्रतिष्ठित, धर्मपरायण, आ पूरा लड़ाका घरेन। हुनकर एकटा कनियाँ छलखिन्ह आ कैकटा बेटा — सभक-सभ योद्धा, जिनक तरुआरिक चर्च दूर-दूर धरि छल।

सैयदक हवेलीमे भोरे-भोर दूटा आवाज उठैत छल — नमाजक आ अखराहाक। बेटा सभ पिताक संग अभ्यास करथि: घोड़सवारी, तीर, तरुआरि। माए ई सभ देखथि — गर्वसँ, आ संगहि ओहि चिन्तासँ जे योद्धाक घरक सभ स्त्रीक करेजमे बसैत अछि।

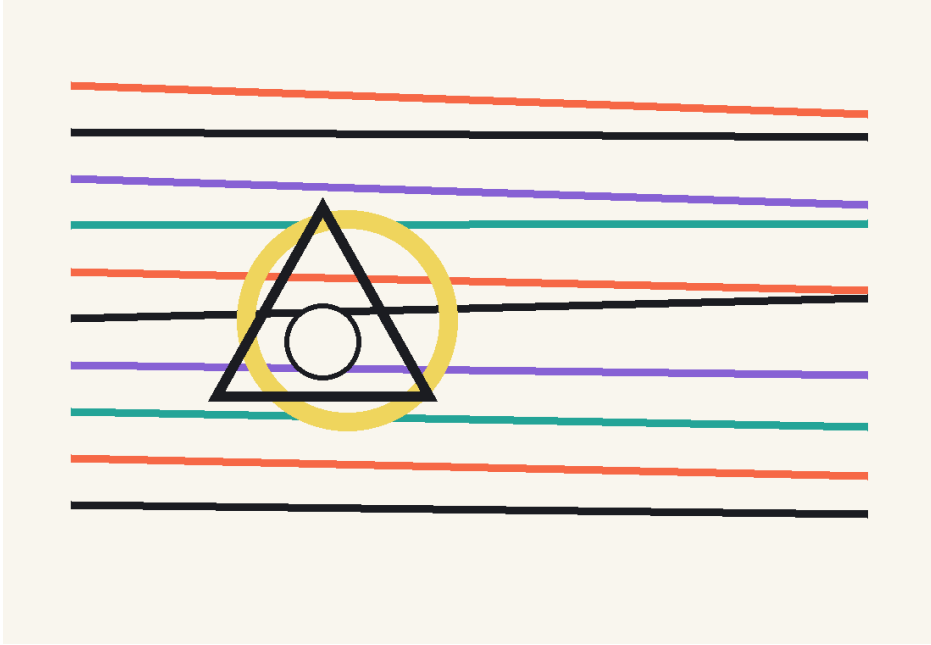

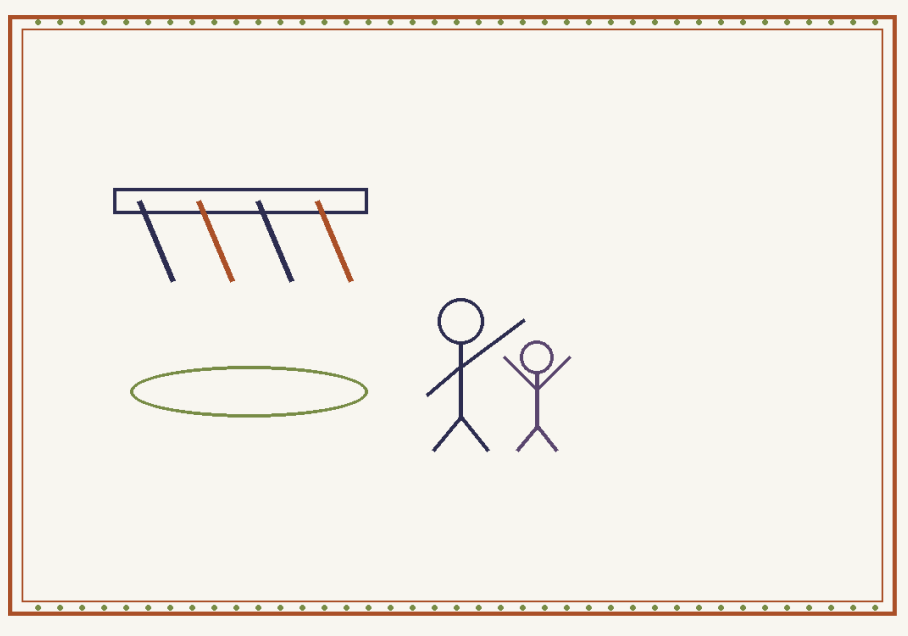

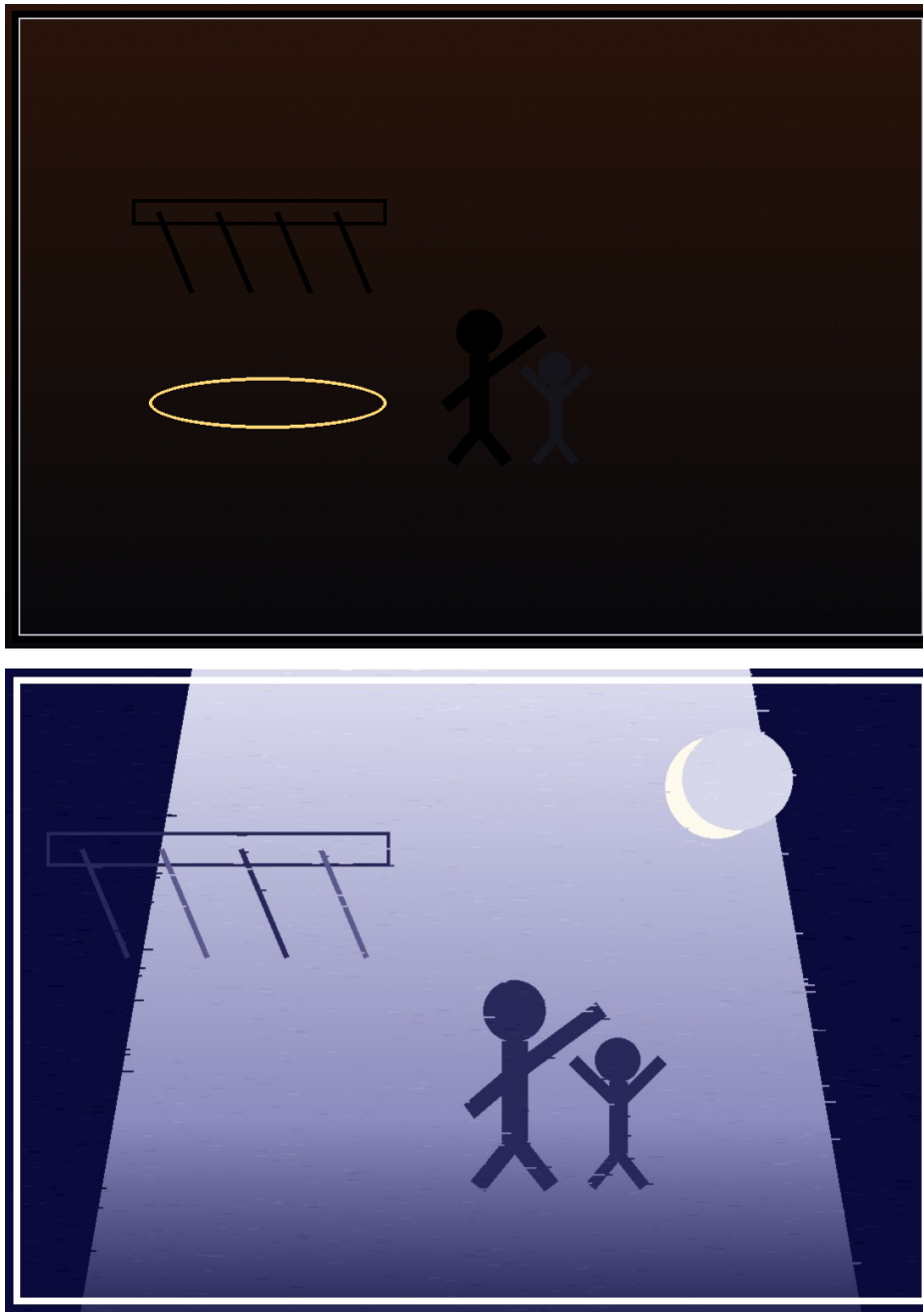

चित्र 2

कारण योद्धाक घरमे एकटा साँच सभ जनैत अछि, मुदा केओ बजैत नहि अछि: तरुआरि जे घरमे टँगल अछि, से एक दिन घरसँ बाहर जाइत अछि — आ घुरैत नहि अछि।

आ ओ दिन आबि गेल। दूर नूनजागढ़सँ युद्धक बजाहटि आएल। सैयद अपन सभ बेटाक संग कवच बान्हलनि। हवेलीक देहरिपर माए सभकेँ काजर-टीका कएलनि — आ देहरि ओहि दिन जतेक चुप छल, ततेक कहियो नहि।

अध्याय २ : नूनजागढ़क युद्ध

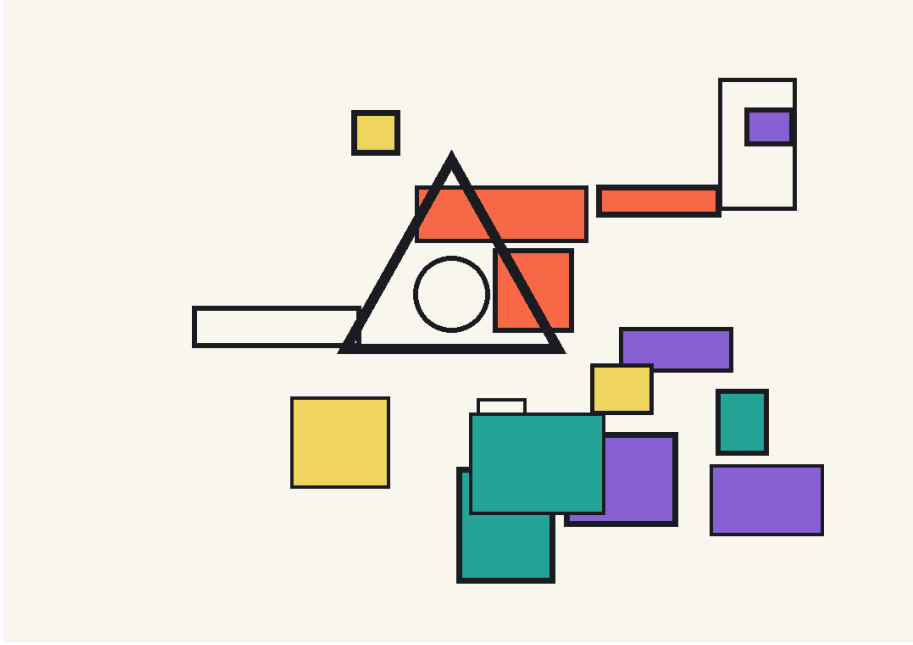

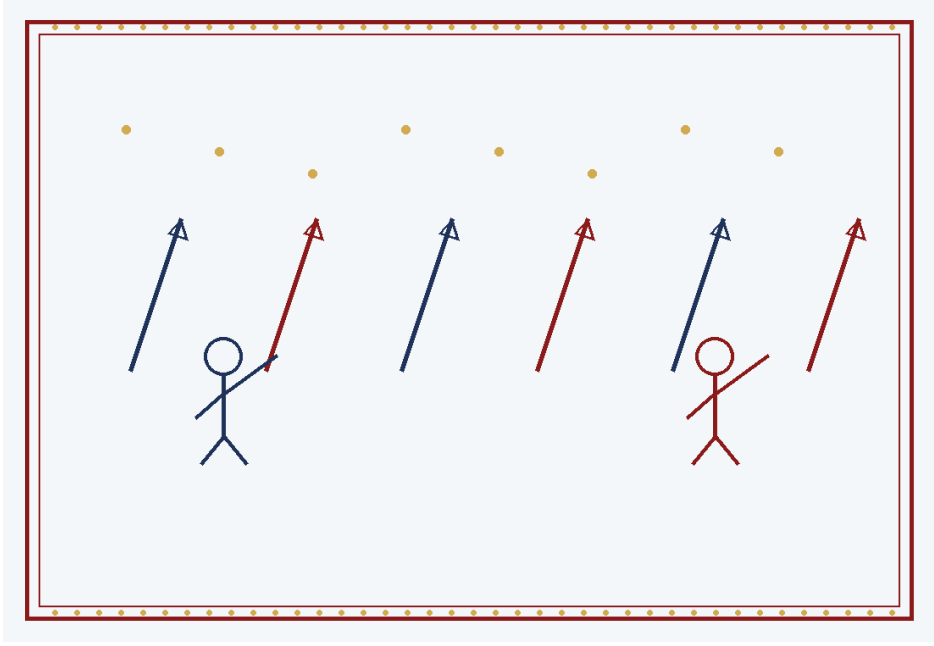

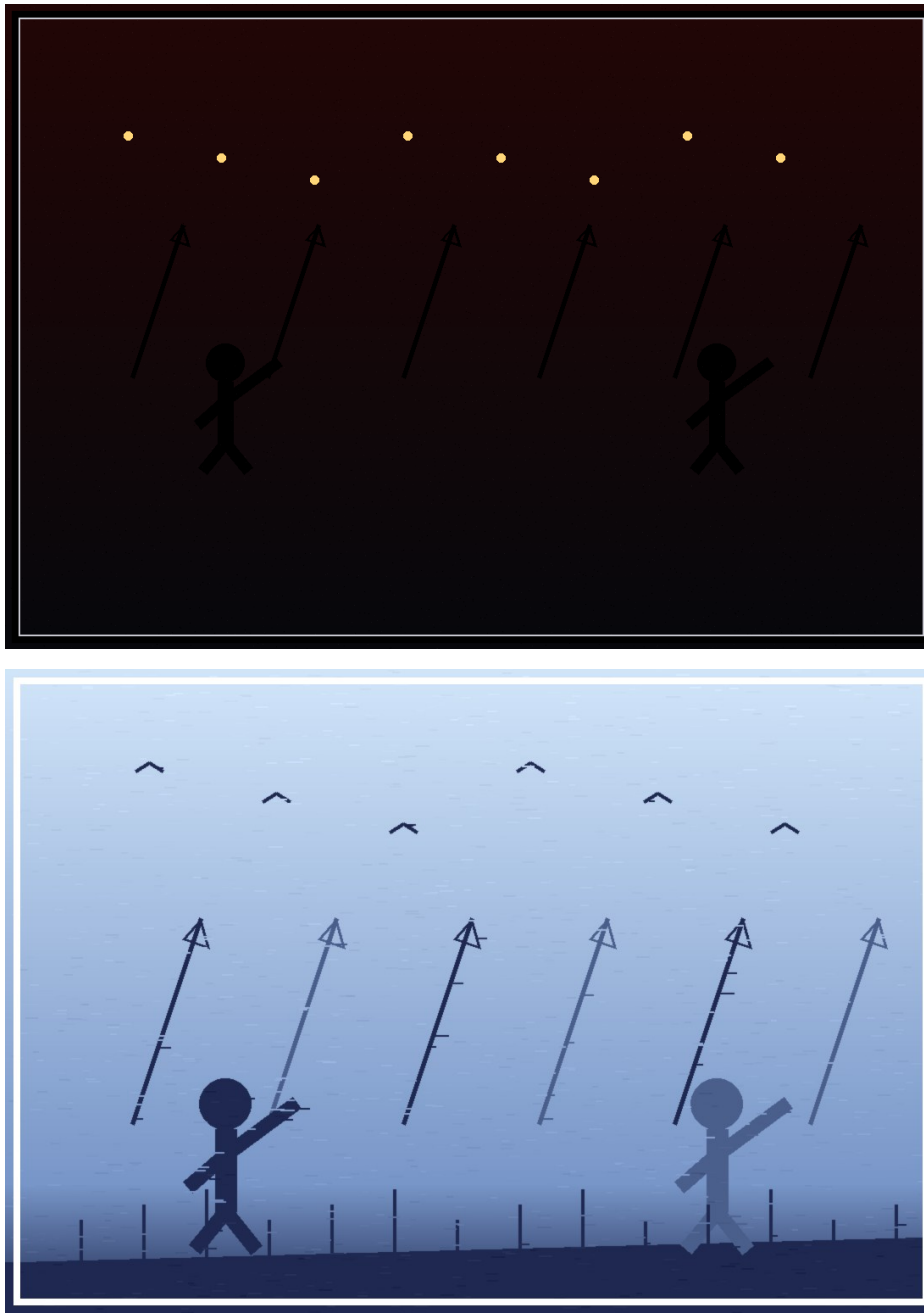

चित्र 3

नूनजागढ़क युद्ध भयंकर भेल। तरुआरि तरुआरिसँ बाजल, धरती लाल भेल, आ जखन गर्दा बैसल, त' समाचार डिलरीनगर पहुँचल — एहन समाचार, जकरा सुनबा लेल कोनो करेज तैयार नहि छल।

सैयद मारल गेलाह। आ हुनकर सभटा बेटा सेहो। पूरा घरेन — एक्कहि युद्धमे, एक्कहि दिन। हवेलीक अखराहा सुन्न भऽ गेल, टँगल तरुआरि सभक ठाम खाली खुट्टी रहि गेल।

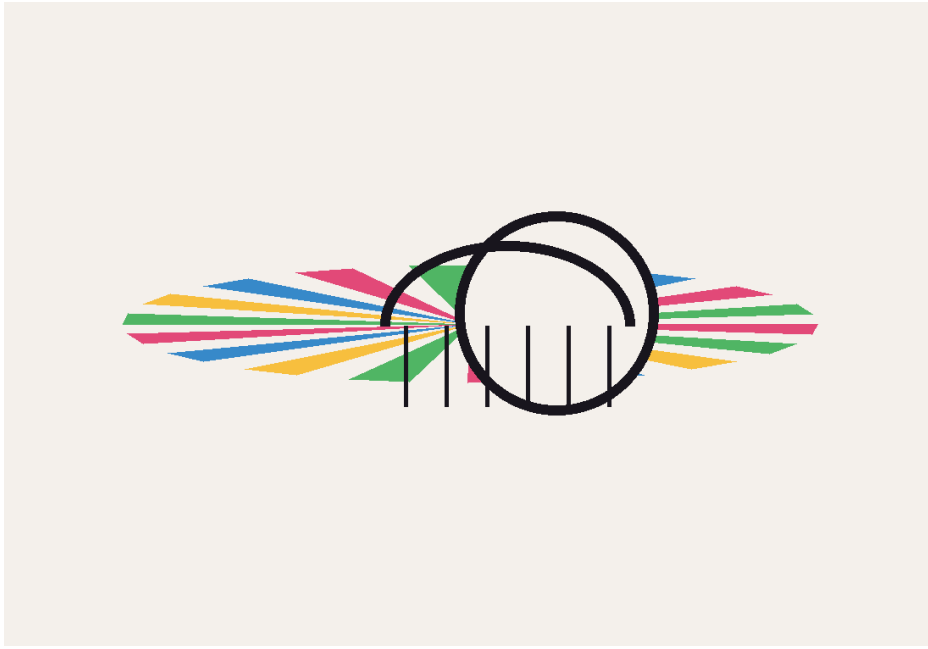

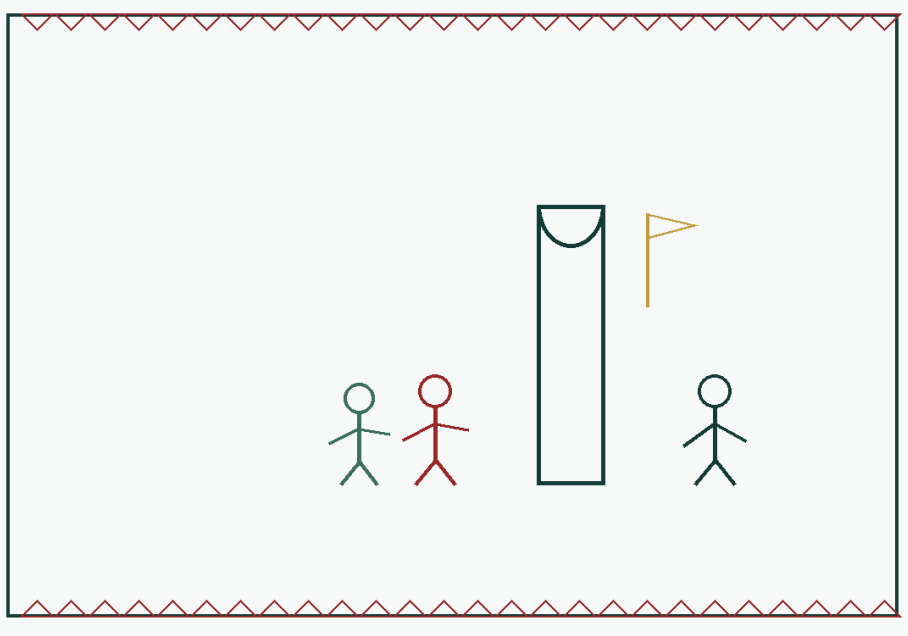

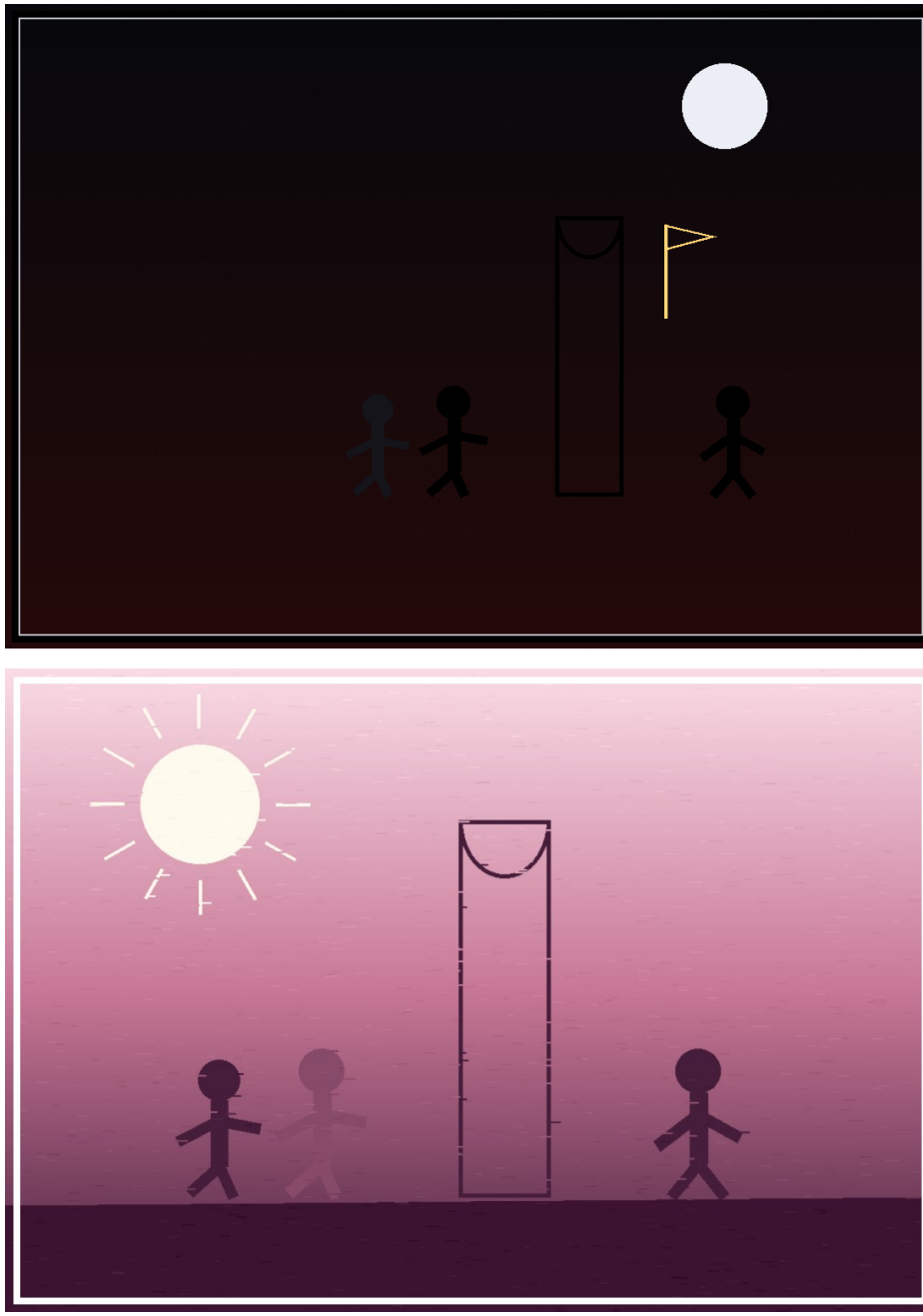

चित्र 4

डिलरीनगर शोकमे डूबि गेल। मुदा सभसँ गहींर शोक ओहि हवेलीक भीतर छल, जतय एकटा विधवा असगरि रहि गेल छलीह — पति गेलनि, बेटा गेलनि, आ आगाँ... आगाँ की?

आगाँ छल एकटा भेद, जे ओहि अन्हार घड़ीमे इजोतक एकमात्र रेखा छल: विधवा गर्भसँ छलीह। मृत्युक ओहि घरमे एकटा जीवन बाट ताकि रहल छल। शोक आ आस — दुनू एक्कहि आँचरमे।

अध्याय ३ : मीरांक जन्म

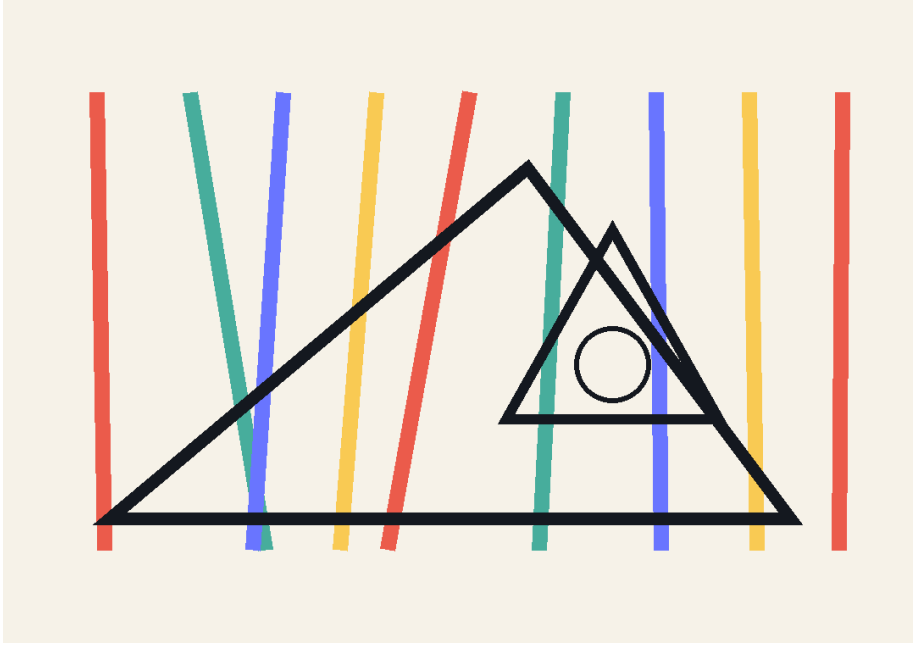

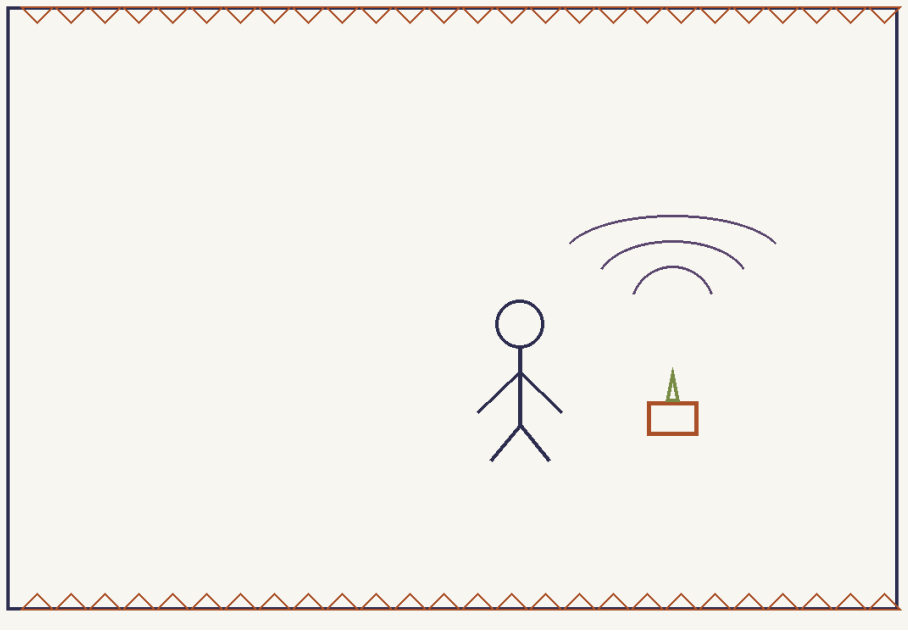

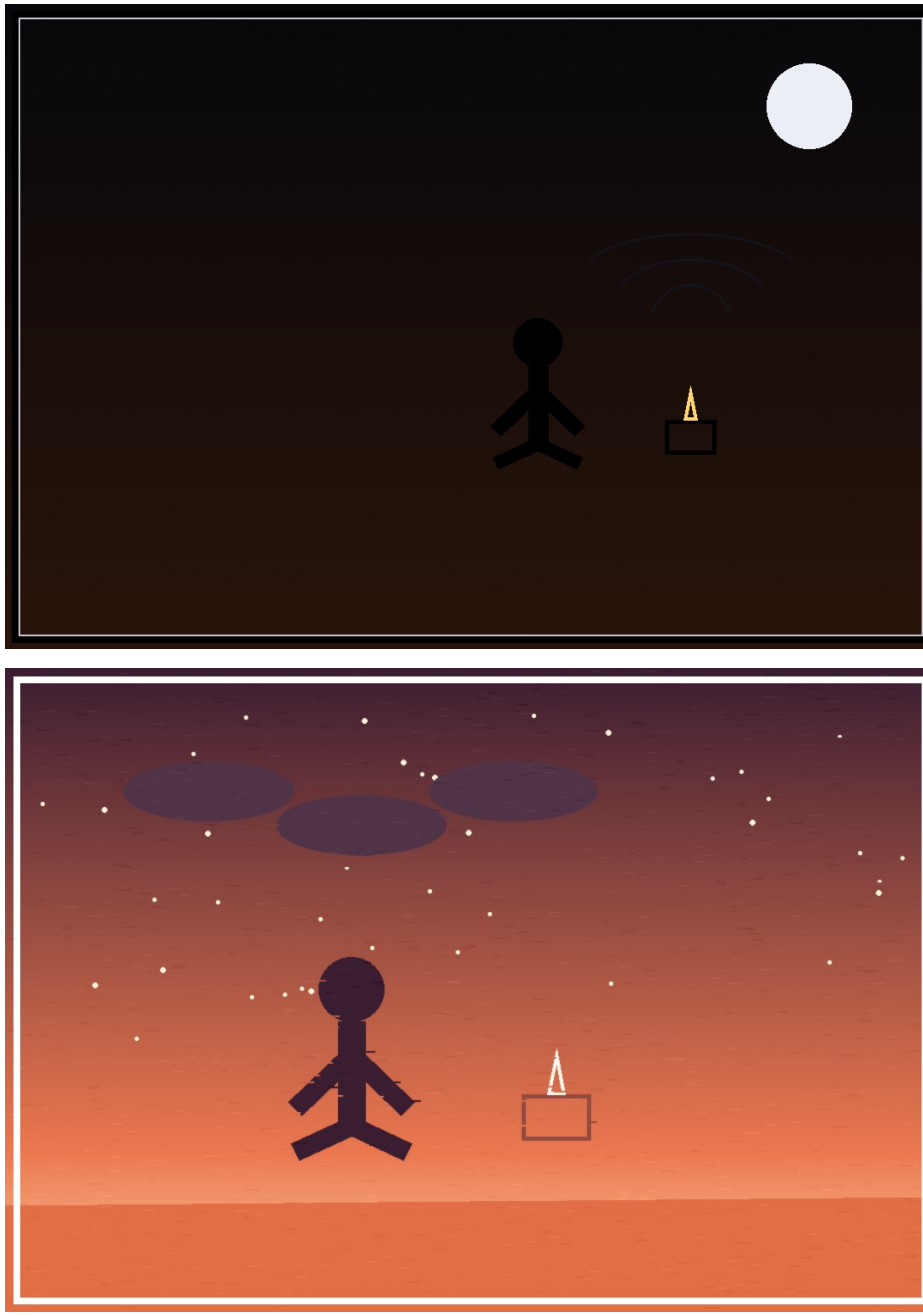

चित्र 5

किछु दिनमे बच्चा भेलनि — बेटा, नाम राखल गेल: मीरां।

जे बालक जन्मसँ पहिनहि पिता आ सभ भाए गमा चुकल हो, ओकर पालना कोना डोलत? माए ओकरा छातीसँ लगओने रहथि आ मोनहिमे प्रण करथि — 'एकरा हम युद्धक छाँहसँ दूर राखब। ई तरुआरि नहि छूत। ई जीयत — बस, जीबैत रहत।'

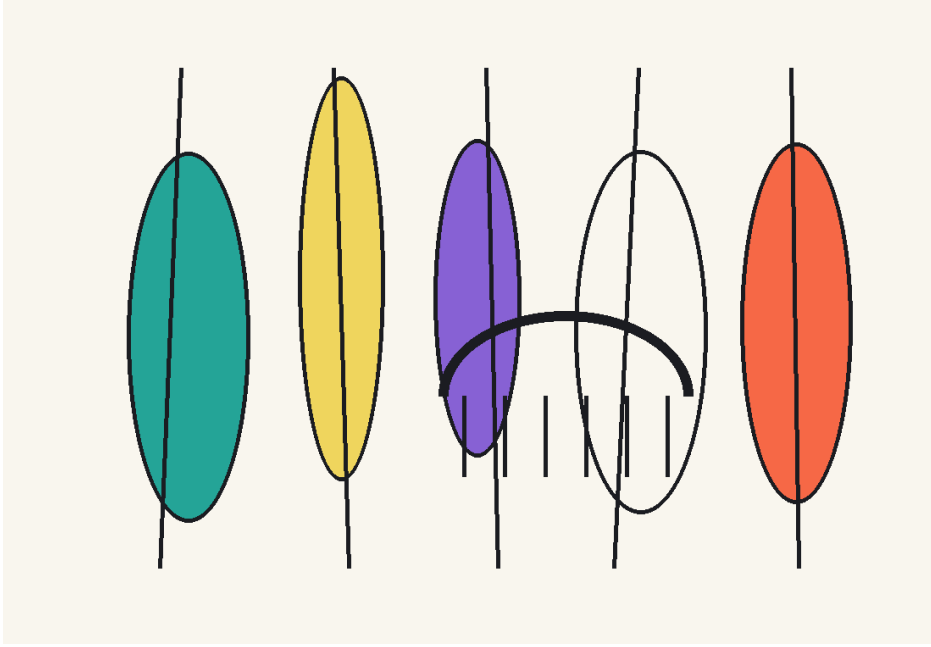

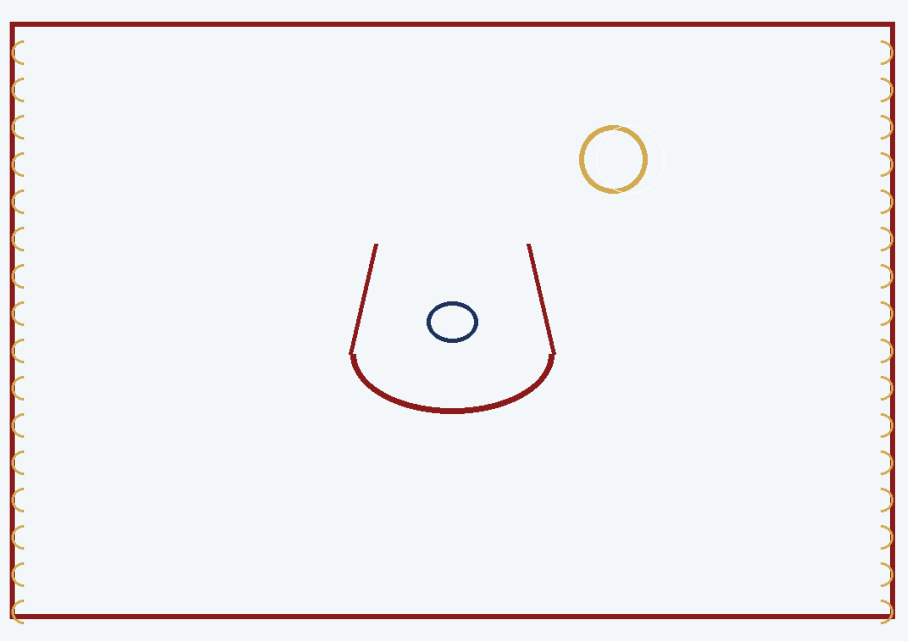

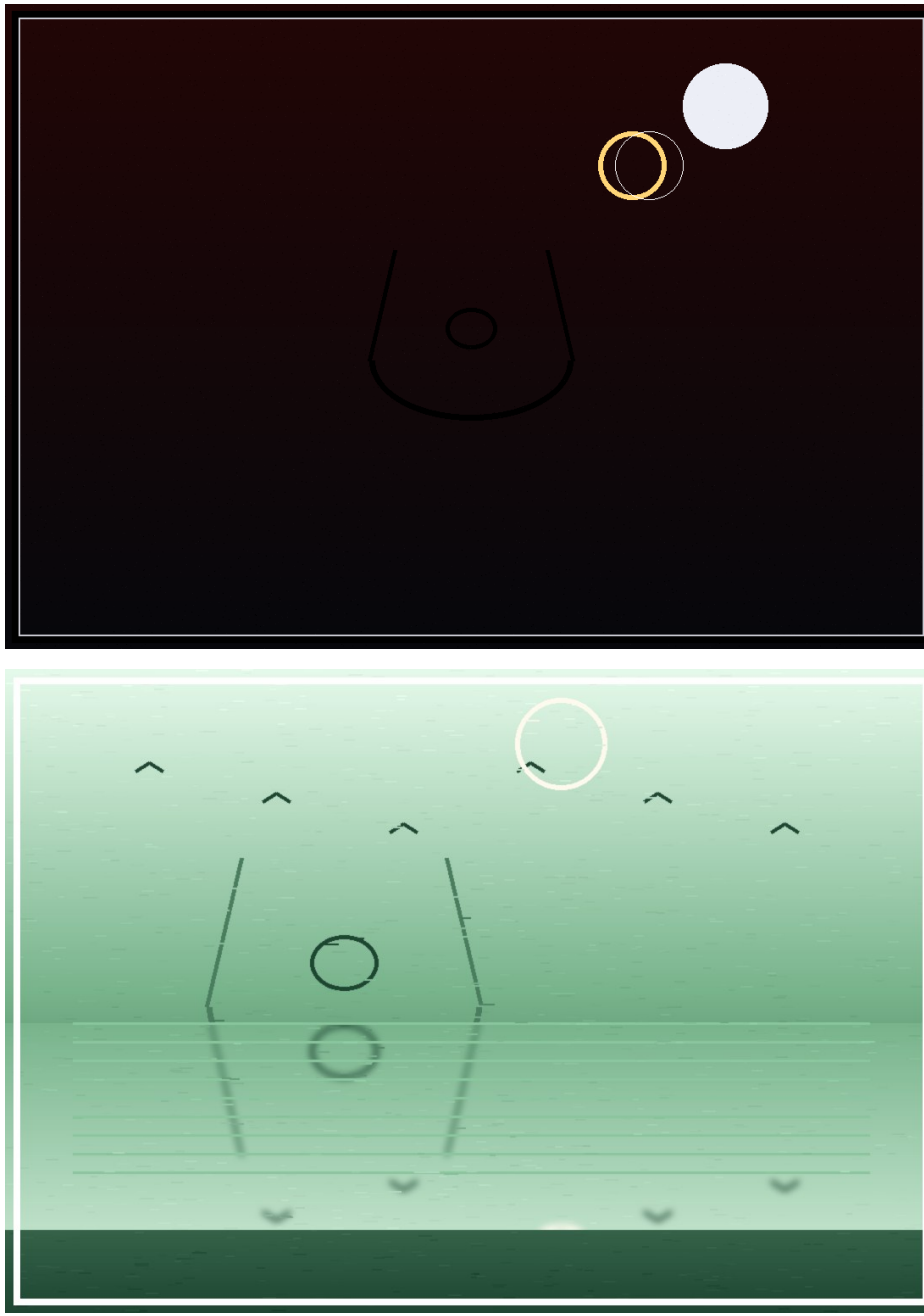

चित्र 6

मुदा रक्त अपन भाषा अपने बजैत अछि। मीरां जेना-जेना बढ़लाह, हुनक खेल-खेलौना अपने युद्धक रूप लैत गेल — लाठी तरुआरि बनल, माटिक ढेरी गढ़, आ आँखिमे ओ चमक उतरल जकरा माए बड्डु नीकसँ चिन्हैत छलीह — पतिक आँखिक चमक, बेटा सभक आँखिक चमक।

ओहो लड़ाका छलाह — जन्मजात। मुदा माएकेँ ई पसिन्न नहि। आ माएक ई अनसोहाँत लागब कोनो कमजोरी नहि छल — ई ओहि स्त्रीक घाव छल, जे एक्कहि युद्धमे पूरा संसार गमओने छलि। के दोष दितनि?

अध्याय ४ : कम बयसक बियाह

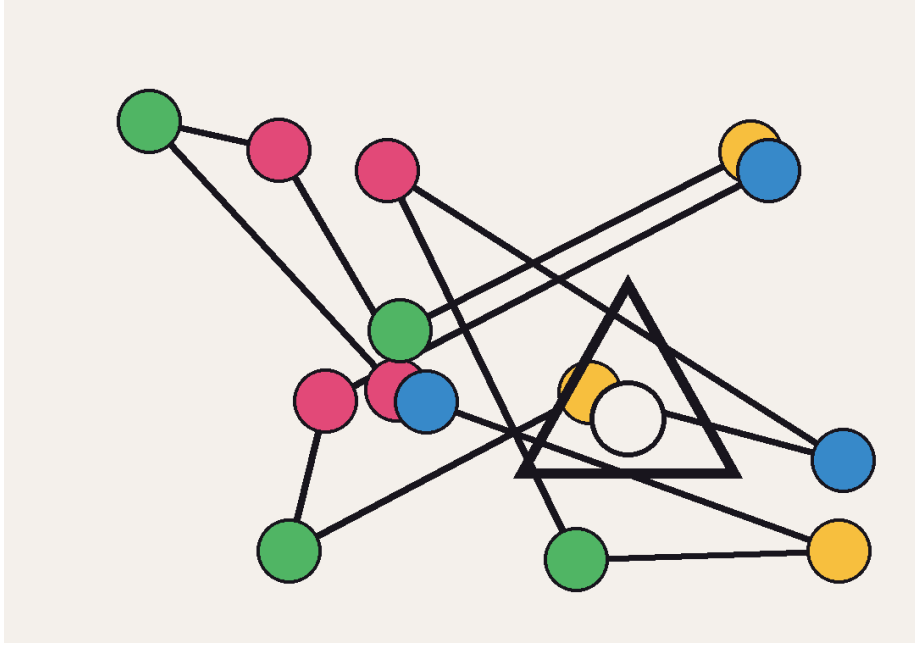

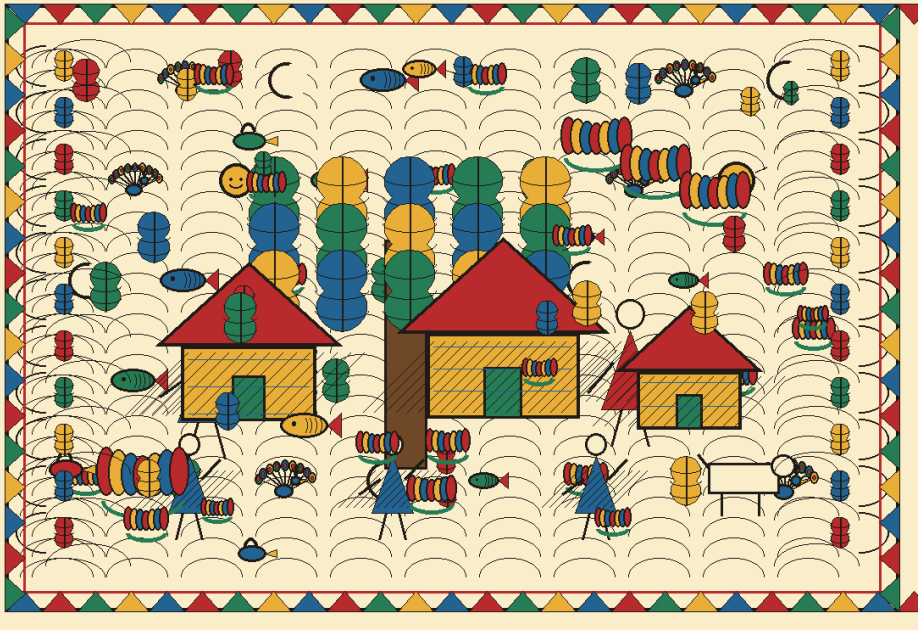

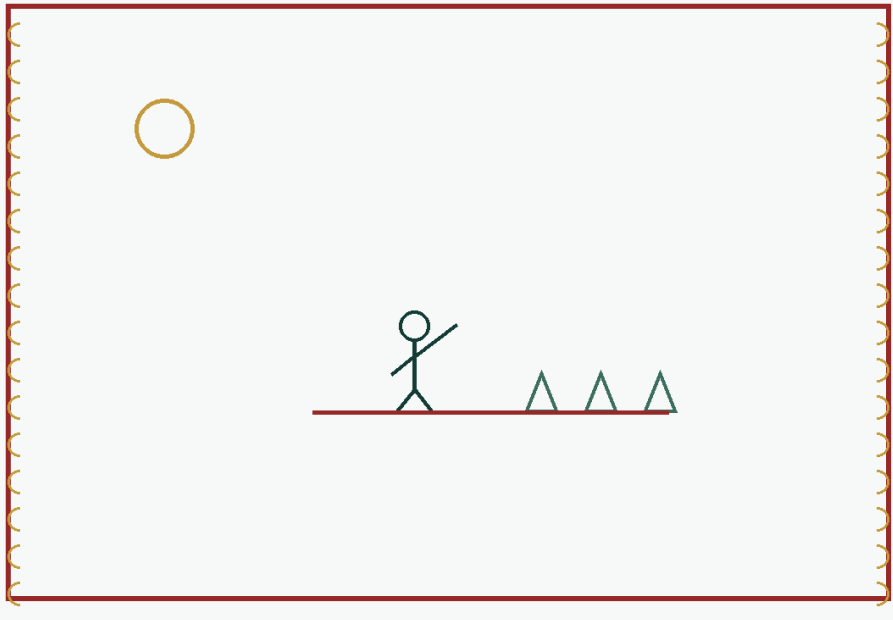

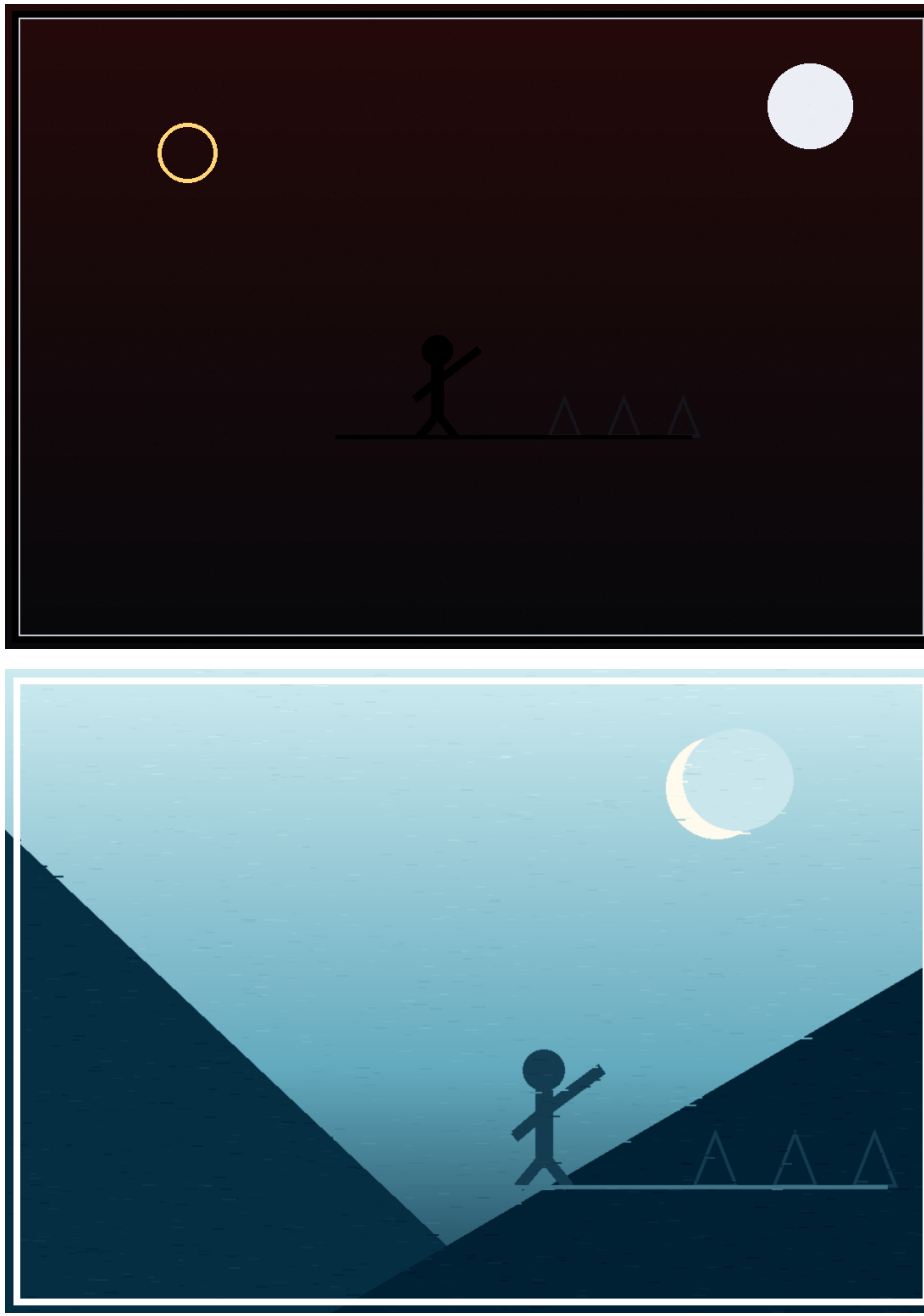

चित्र 7

माए उपाय सोचलनि — जे उपाय ओहि युगक सभ चिन्तित माए सोचैत छलि: बियाह। 'घर-गृहस्थीक डोरि बान्हि देब, त' मोन युद्धसँ हँटि जेतै।'

आ मीरांक बियाह करबाओल गेल — कमे बयसमे। हवेलीमे बरखो बाद शहनाइ बाजल; जाहि आँगनमे मातम उतरल छल, ओतय हरियर पातक तोरण टँगाएल। माएक आँखिमे पहिल बेर निश्चिन्तताक झलक आएल — बेटा आब बान्हल गेल।

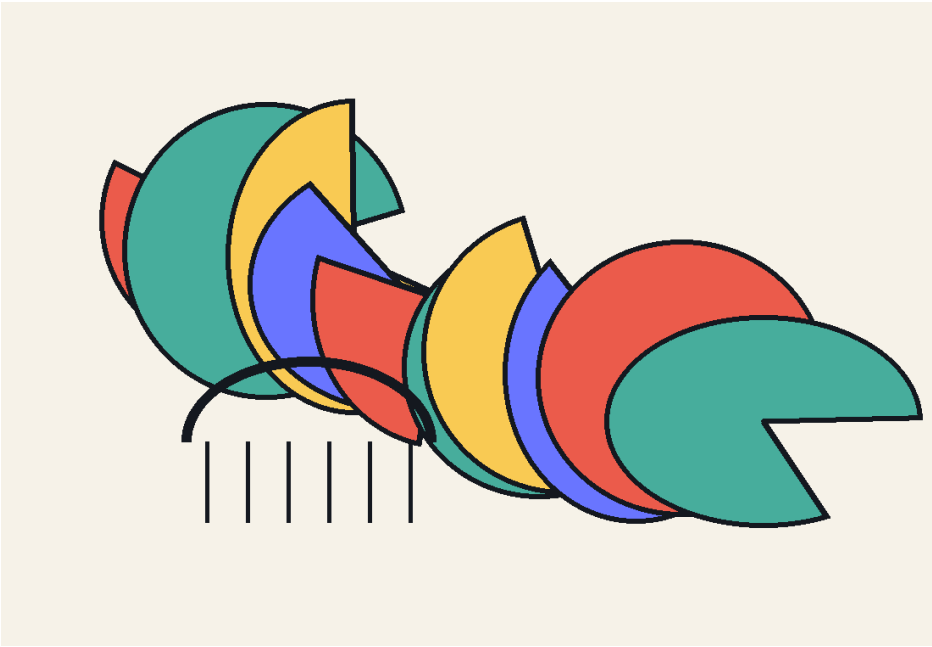

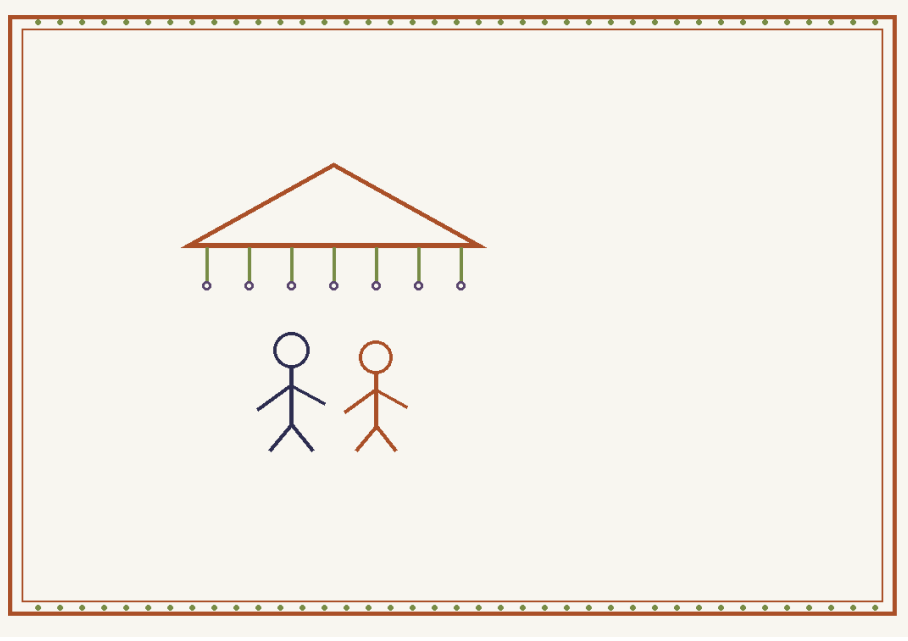

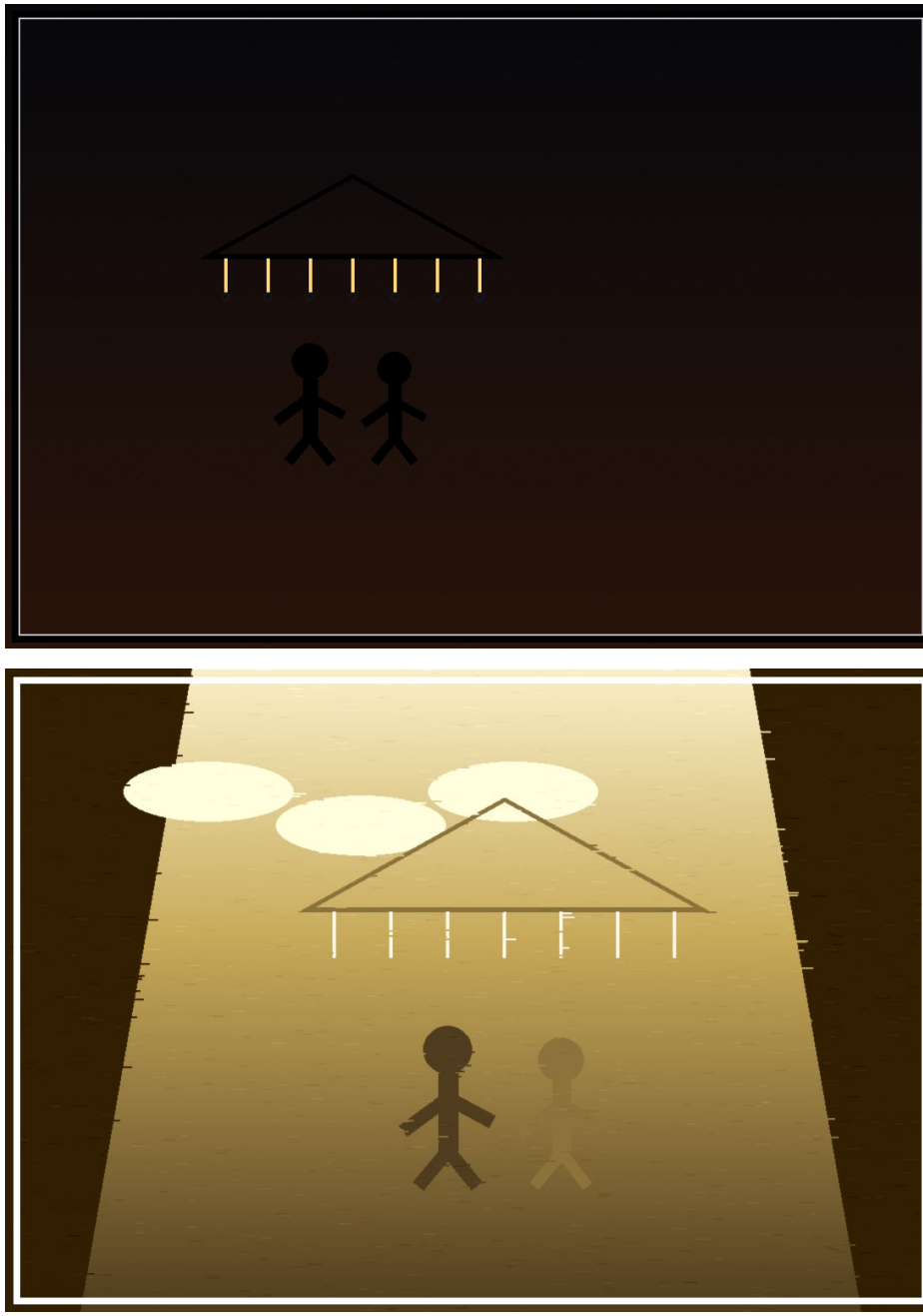

चित्र 8

नव कनियाँ सेहो पूरा मोनसँ ई डोरि थम्हलनि। मुदा...

मुदा। — एहि गाथाक सभसँ भारी शब्द यएह थिक। डोरि प्रेमक होअए वा कर्तव्यक, ओ ओकरे बान्हि सकैत अछि जे बान्हल जाए चाहए। आ मीरांक भीतर एकटा हिसाब खुजल छल, जे ने शहनाइसँ बन्द होइत छल, ने सिन्नुरसँ — नूनजागढ़क हिसाब। पिताक रक्त, भाए सभक रक्त — आ बदला, जे एखन धरि बाँकी छल।

अध्याय ५ : अनसुनल मोन

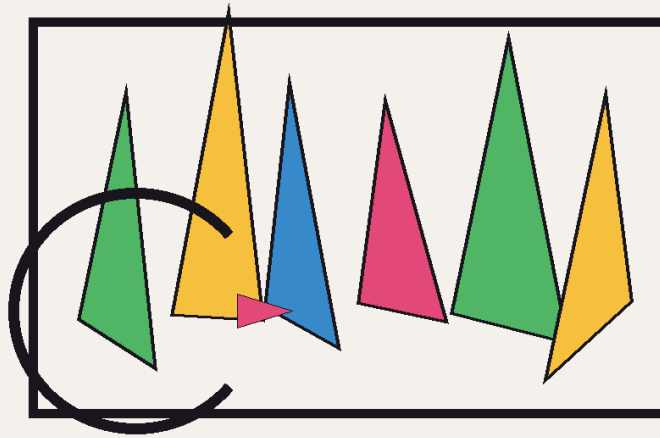

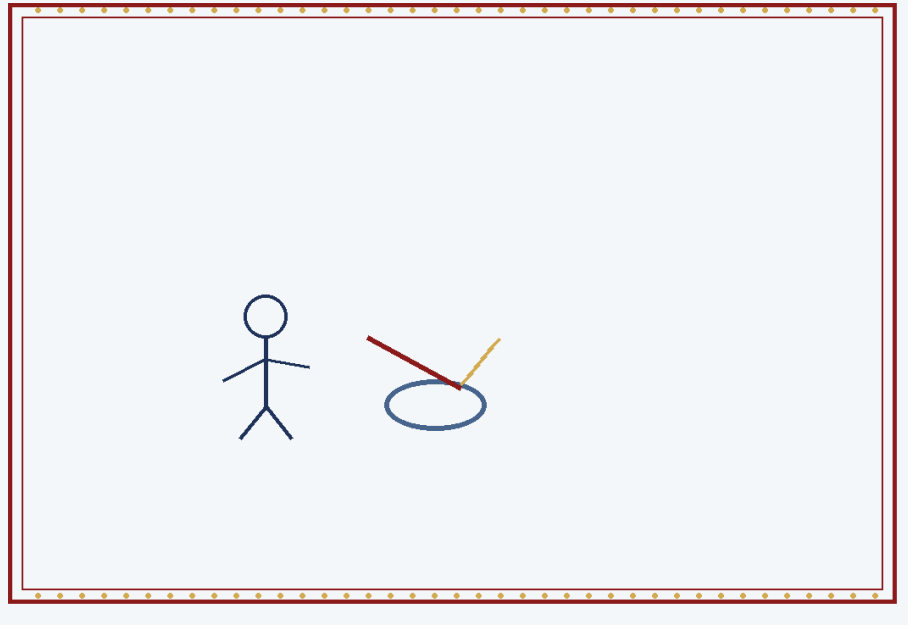

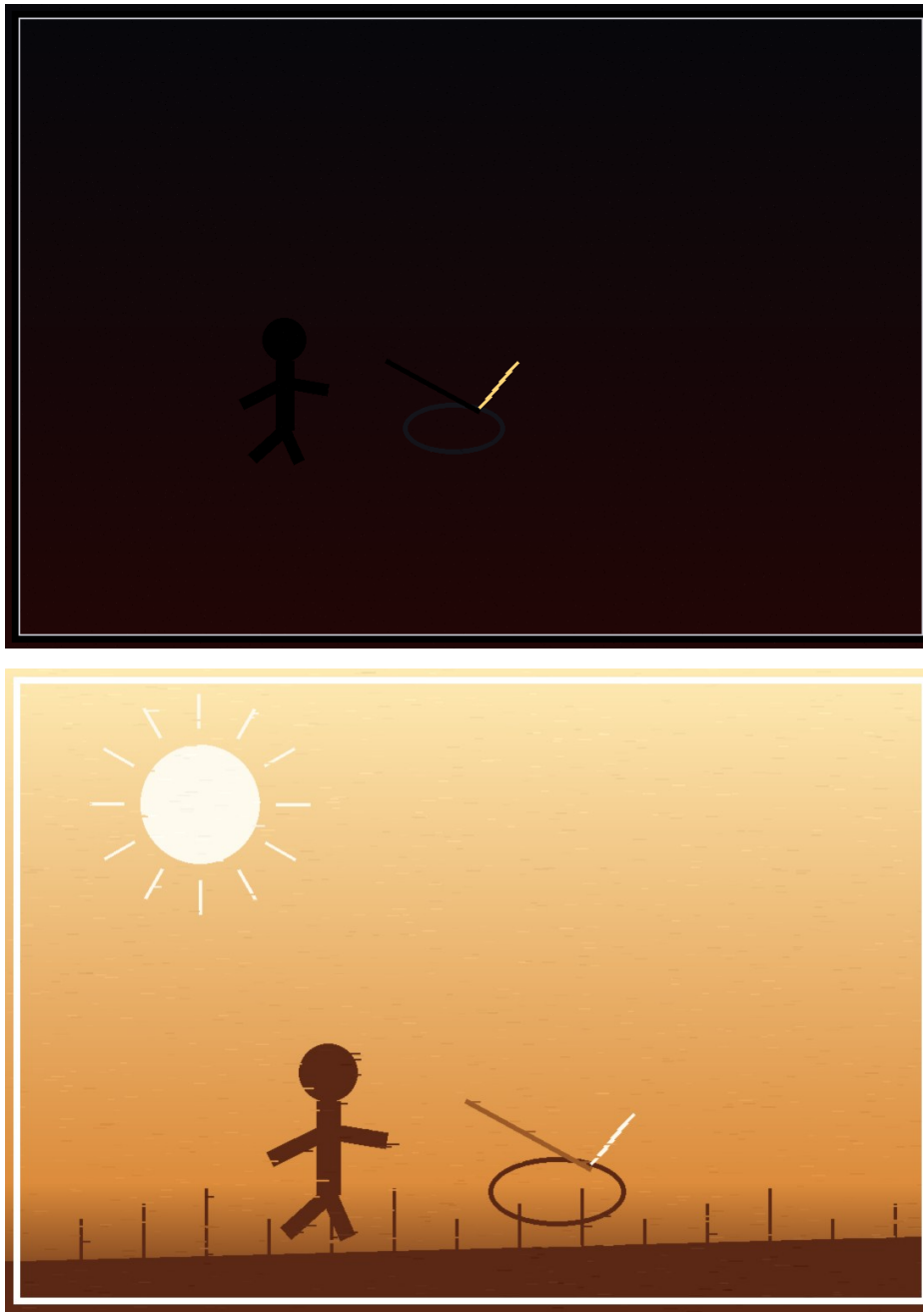

चित्र 9

माए बुझओलखिन्ह — 'बौआ, जे गेलाह से घुरताह नहि। बदलासँ मुइल लोक नहि जीबैत अछि।' कनियाँ बुझओलखिन्ह — 'अहाँक जिनगीपर आब हमरो अधिकार अछि।' दुनू स्त्री — एक जे अतीत गमओने, एक जे भविष्य जोड़ने — दुनू मिलि कऽ एकटा पुरुषकेँ रोकए चाहलनि।

मीरां सुनथि — चुपचाप, आदरसँ, माथ झुकओने। ने कहियो बहस, ने कहियो प्रतिवाद। आ यएह चुप्पी दुनूकेँ भ्रममे रखलक। हुनका सभकेँ लागल जे बात मानि लेल गेल।

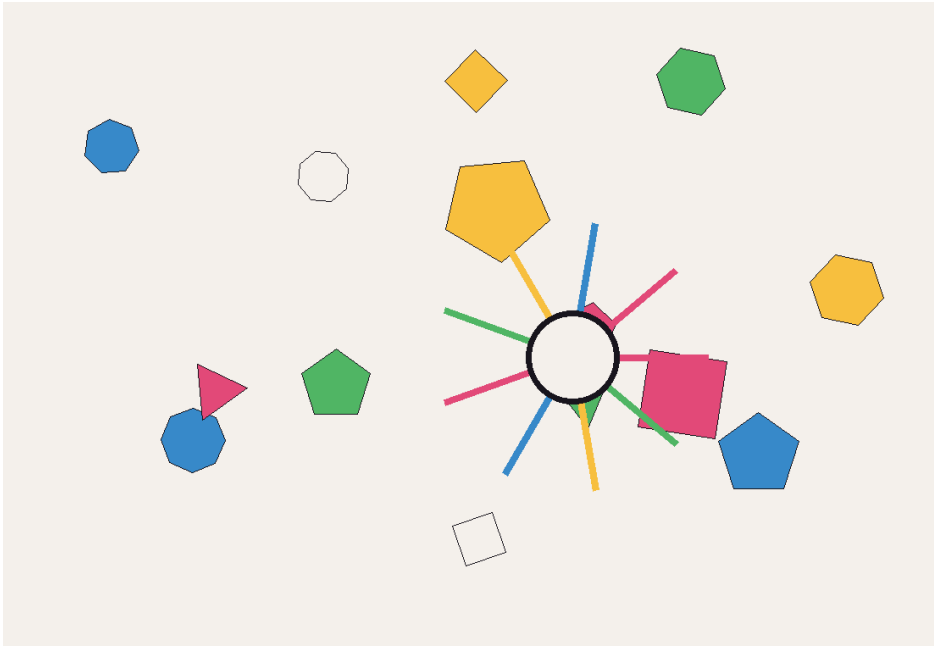

ل

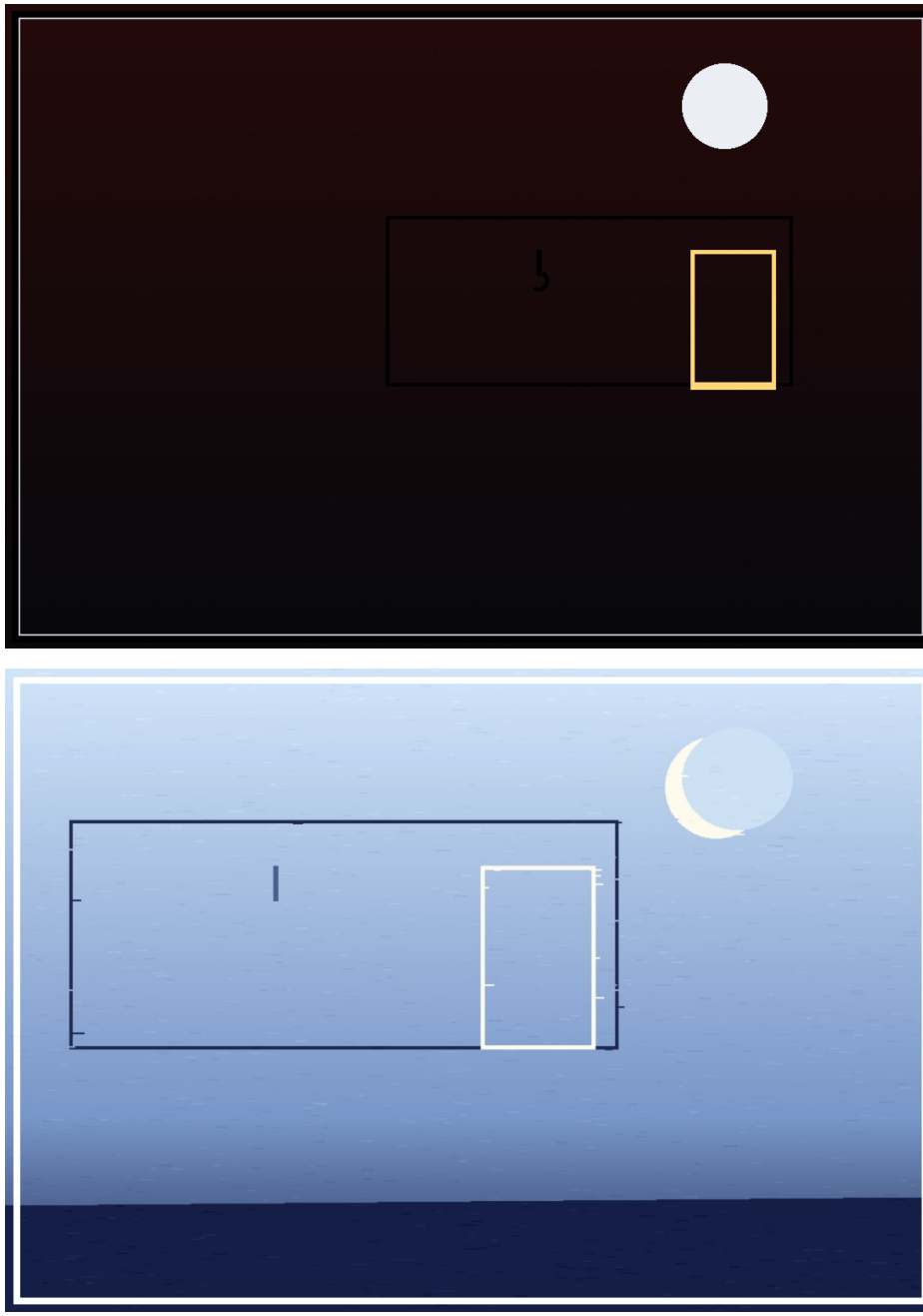

चित्र 10

मुदा जे मोन भीतरसँ निर्णय कऽ चुकल हो, ओकर चुप्पी सहमति नहि — तैयारी होइत अछि। मीरां रातिकेँ असगरमे तरुआरिपर सान दैथ, घोड़ाकेँ अपने हाथे दाना खुआबथि, आ नूनजागढ़क बाट मोने-मोन नापथि।

एक भोर हवेली जागल, त' मीरांक कोठली खाली छल। ने कोनो हल्ला, ने कोनो घोषणा — खाली एकटा खाली खुट्टी, जतय काल्हि धरि तरुआरि टँगल छल। माए देहरिपर बैसि गेलीह। हुनका बुझबामे एक्को क्षण नहि लागल जे बेटा कतय गेल।

अध्याय ६ : असगर सवार

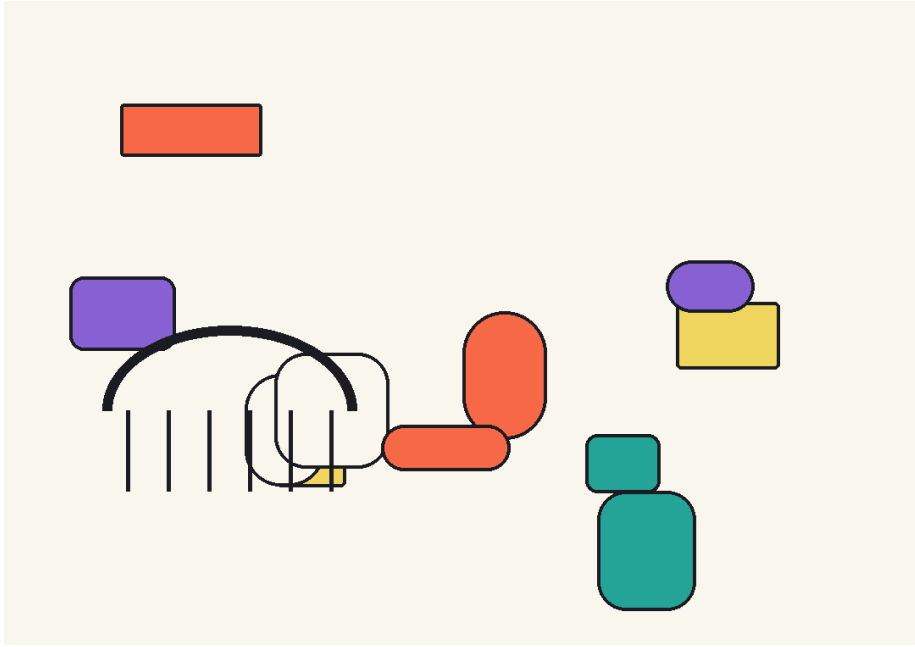

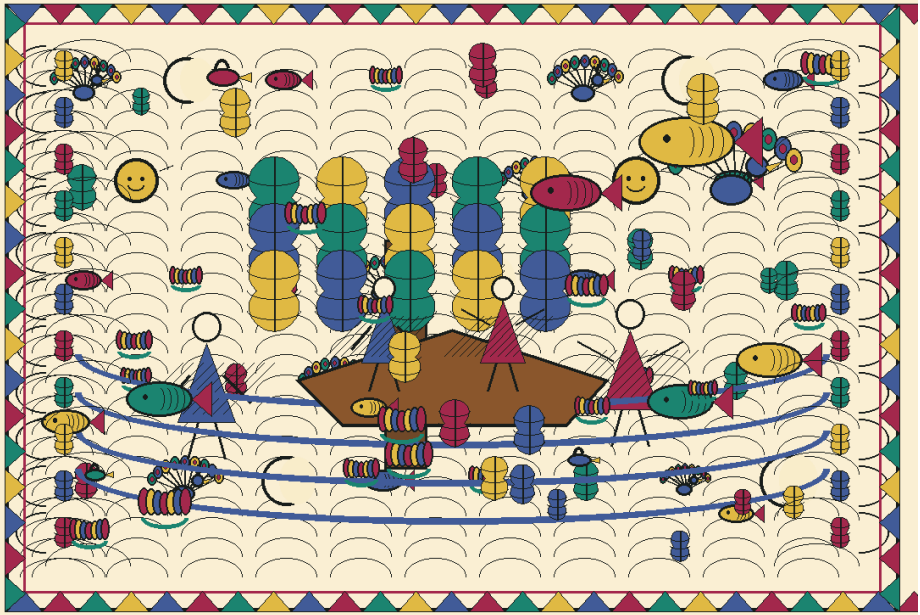

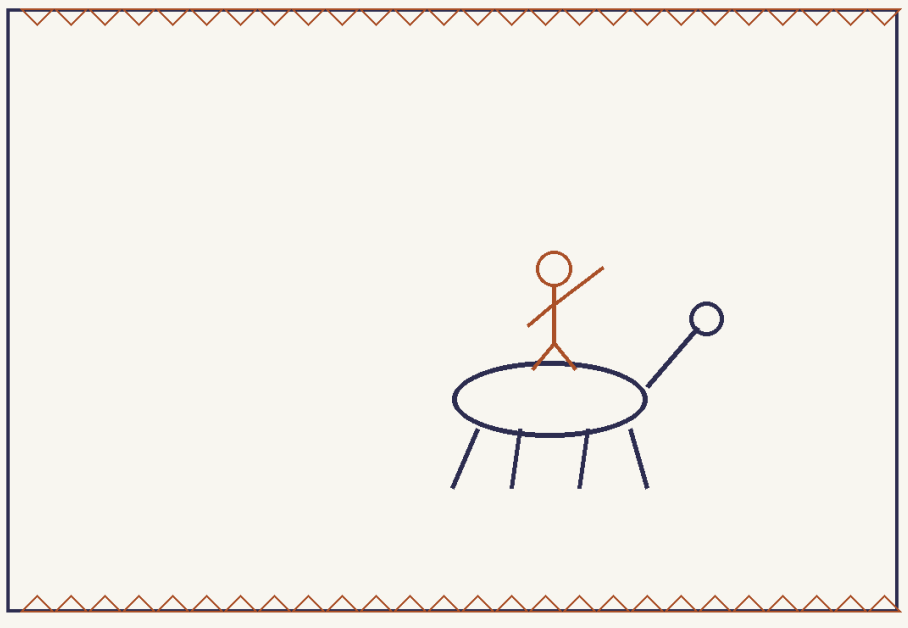

चित्र 11

मीरां असगरे नूनजागढ़ बिदा भेलाह — ने सेना, ने संगी, ने कोनो झण्डा। एकटा घोड़ा, एकटा तरुआरि, आ एकटा हिसाब।

बाट नमहर छल। दिन गुमार देलक, राति ओस — मुदा सवार नहि रुकल। जे बालक जन्मसँ पहिने अनाथ भेल छल, से आब ओही धरती दिस बढ़ि रहल छल जतय ओकर अनाथ होएब लिखल गेल छल।

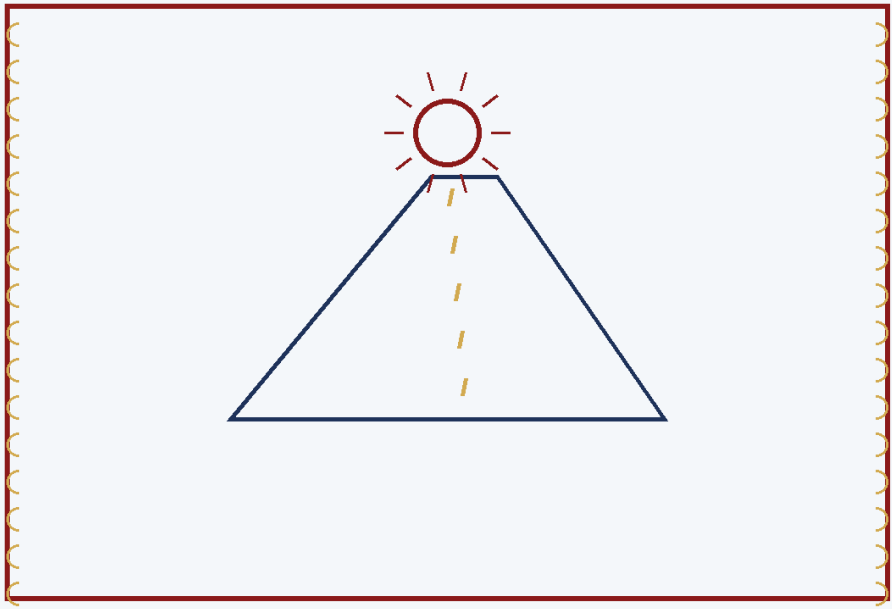

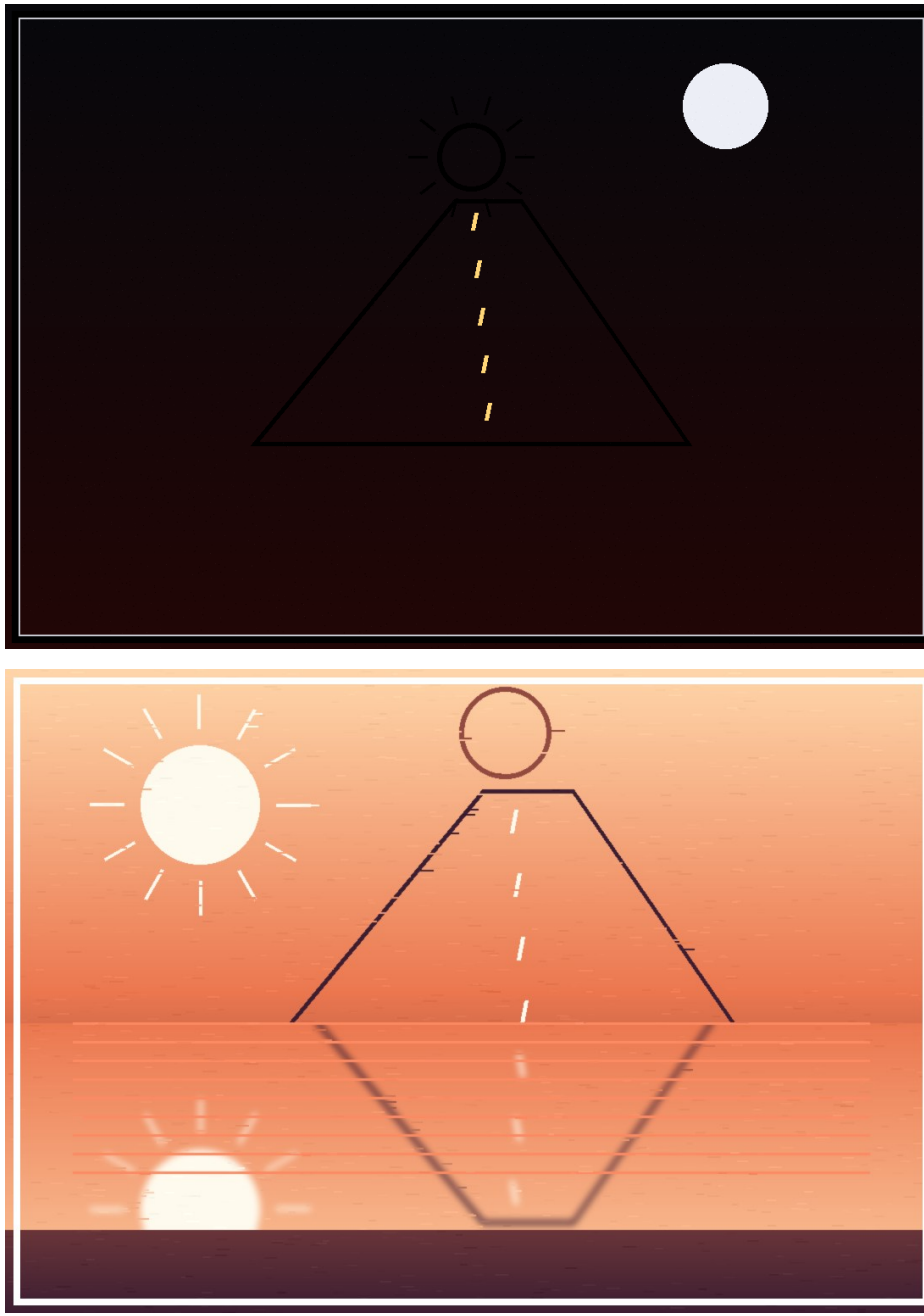

चित्र 12

असगर जाएब दुस्साहस छल — नूनजागढ़ ओ ठाम छल जतय पूरा लड़ाका घरेन खतम भऽ गेल छल। एक अकेला जुआन ओतय की कऽ लेत? मुदा मीरांक गणित दोसर छल: जे लड़ाइ फौजसँ हारल गेल, से कखनो काल एकटा निर्भय करेजसँ जीतल जाइत अछि — कारण फौजकेँ मृत्युक डर रोकैत अछि, आ मीरां लग गमेबा लेल किछु बचले नहि छल।

नूनजागढ़क सीमापर पहुँचि मीरां घोड़ा रोकलनि। सोझाँ वैह धरती छल — पिताक अन्तिम युद्धभूमि। ओ माटि उठा कऽ माथसँ लगओलनि। 'अब्बा, भाइजान — मीरां आबि गेल।'

अध्याय ७ : बदला

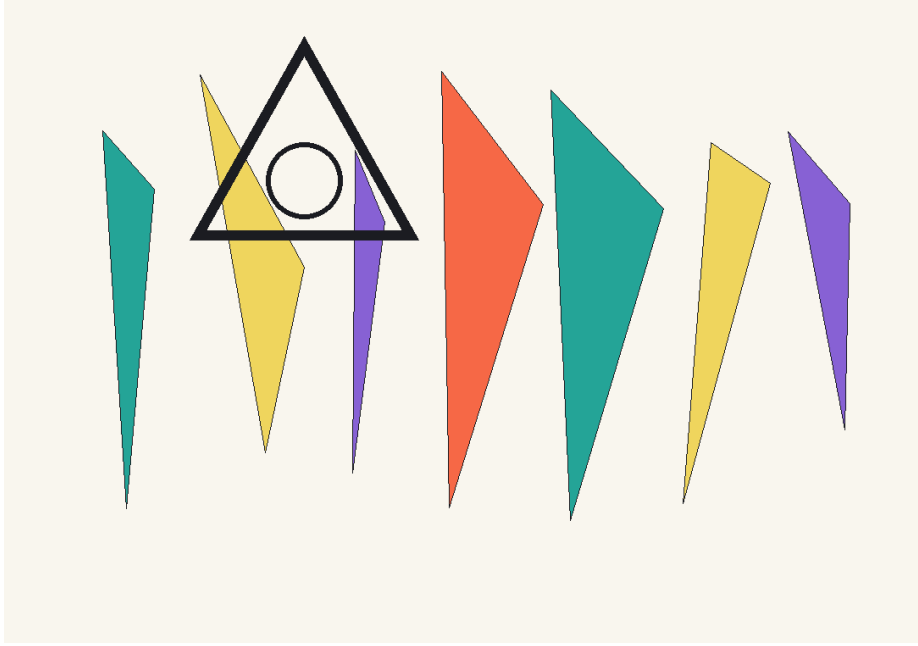

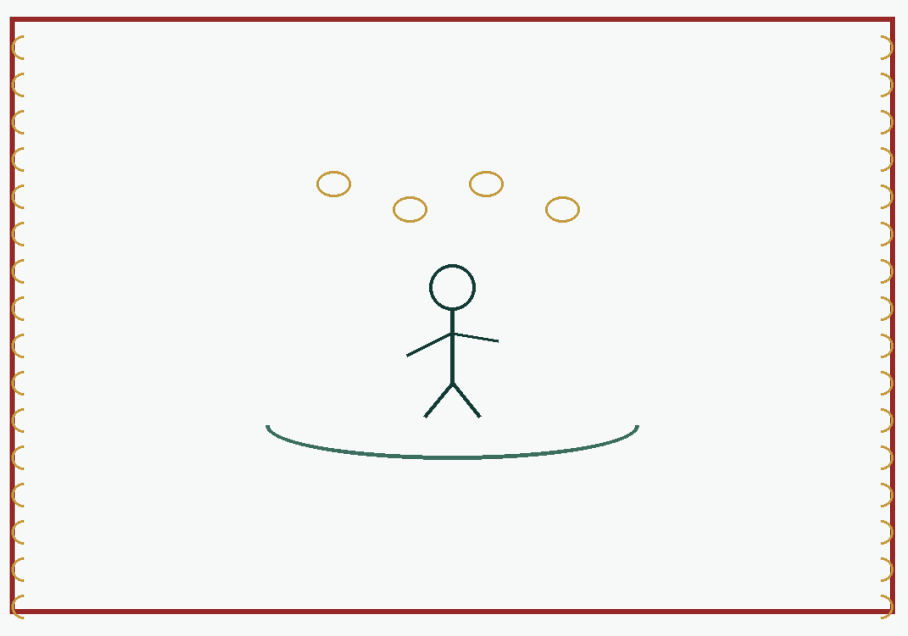

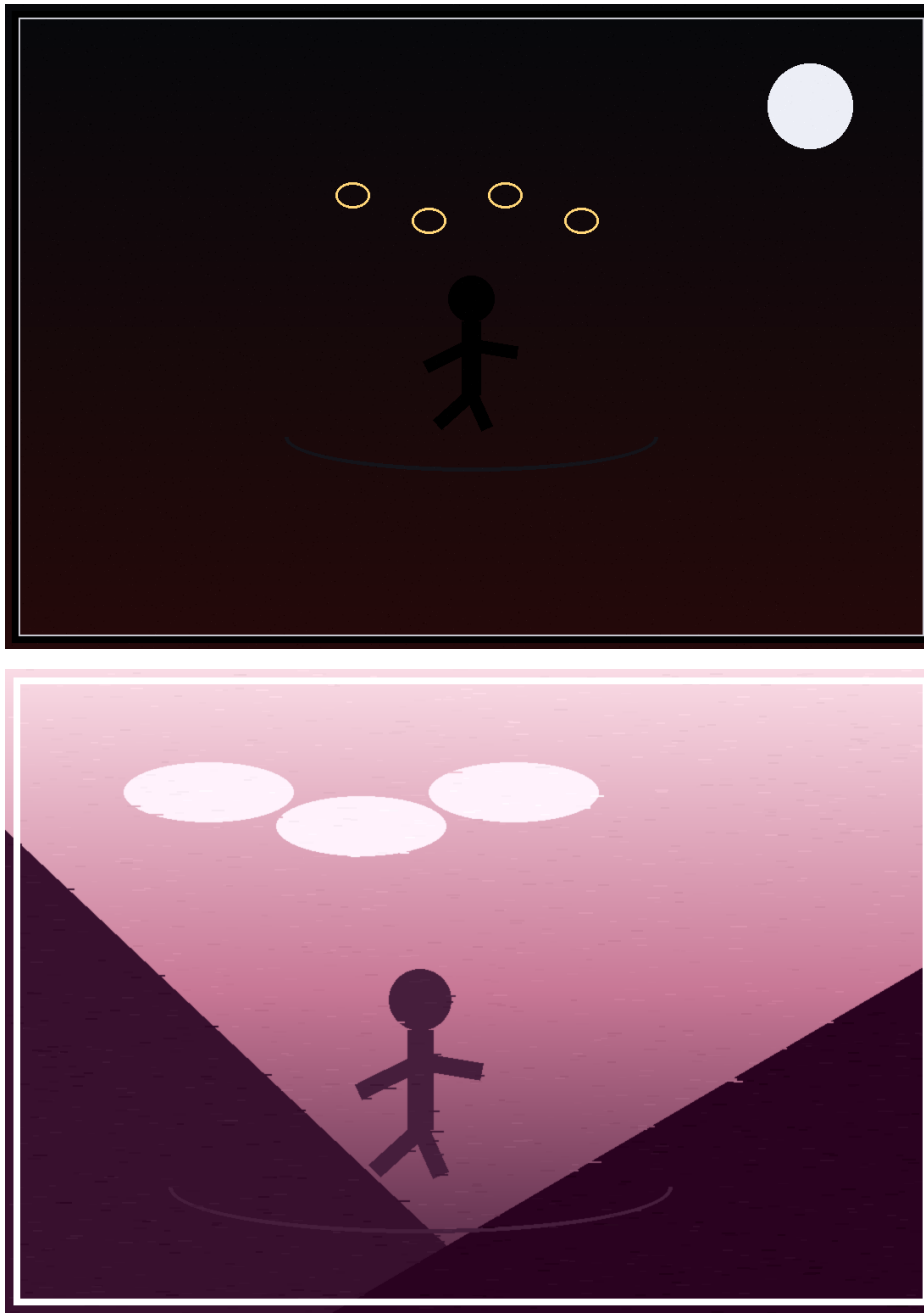

चित्र 13

जे भेल, से डिलरीनगरक खिस्सामे बिजलीक रेखा सन दर्ज अछि — मीरां असगरे नूनजागढ़मे बाप-भाएक बदला लेलनि।

शत्रुकेँ अनुमानो नहि छल जे मारल गेल घरेनक कोनो चिराग बाँचल अछि — आ चिराग जे आबए, त' एना, आन्हीक रूपमे! मीरांक तरुआरि ओहि दिन खाली लोहा नहि छल; ओहिमे एकटा विधवाक बरखोक नोर, सात कब्रक चुप्पी, आ एकटा अजन्मल अनाथ — सभटा सान बनि कऽ चढ़ल छल।

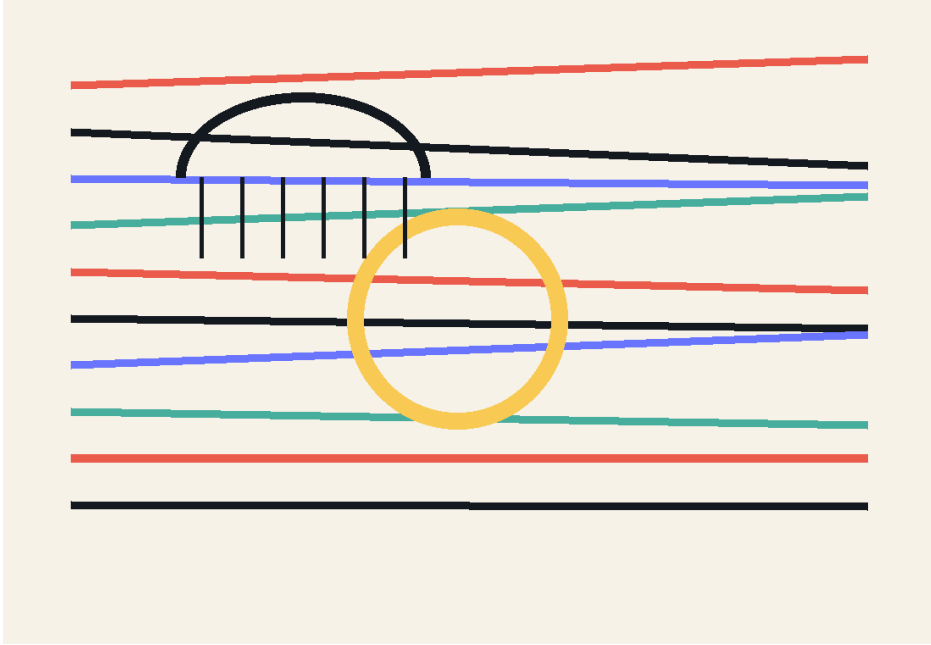

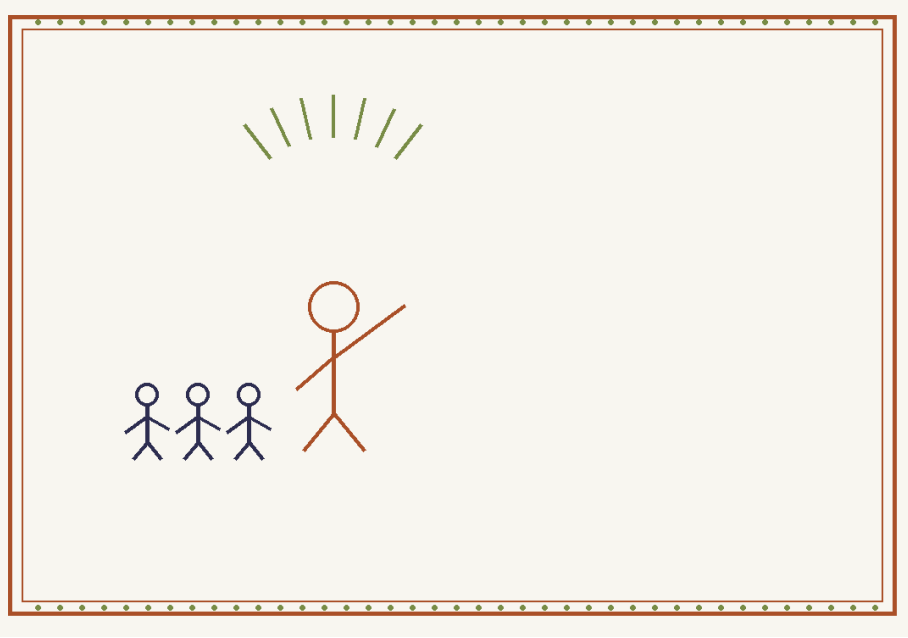

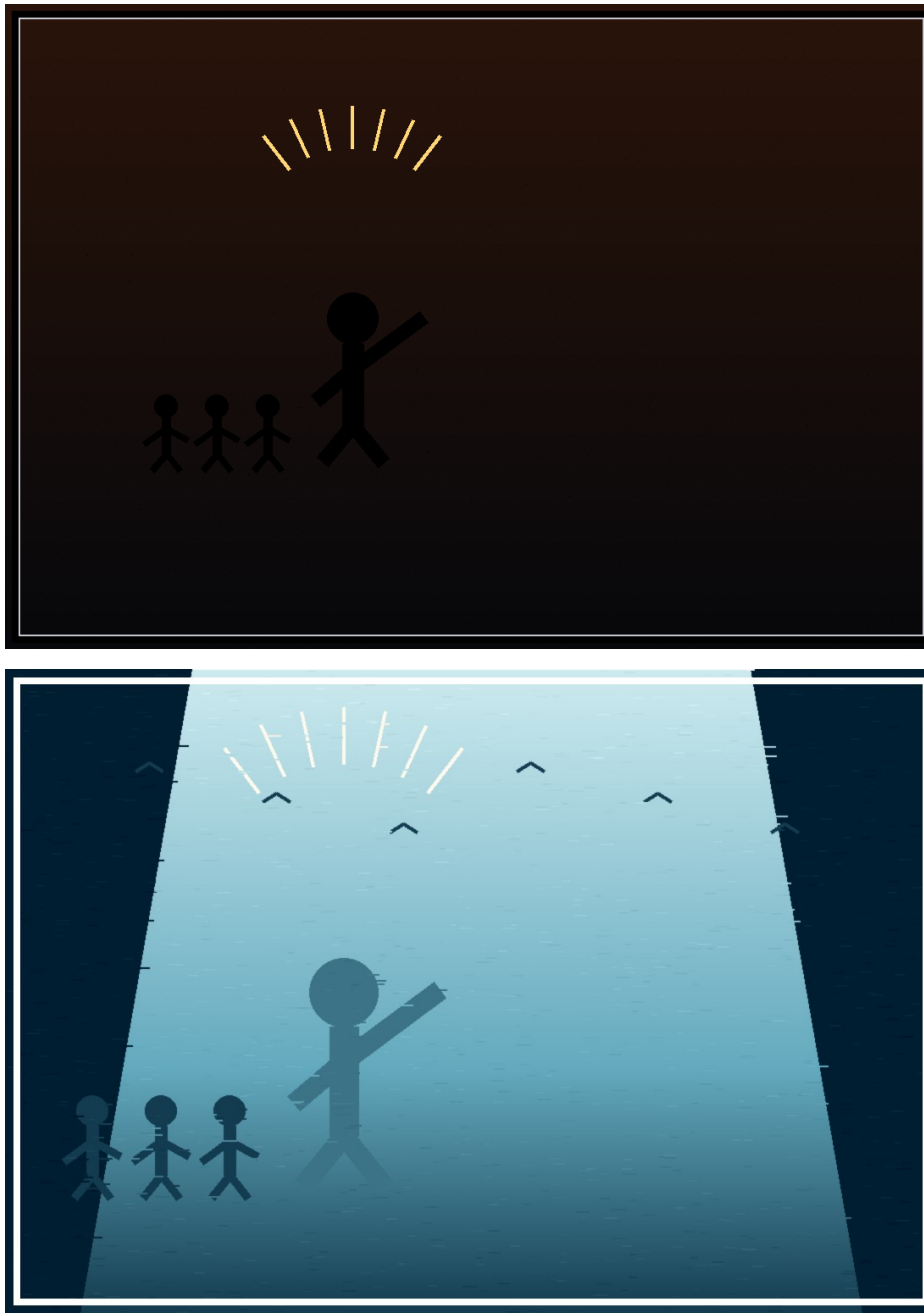

चित्र 14

युद्ध भेल — आ हिसाब पूरा भेल। जे रक्त नूनजागढ़क माटिमे बरखो पहिने खसल छल, से उऋण ओही माटिपर भेल।

आ फेर — एतय ई गाथा आन बदला-कथासँ अलग भऽ जाइत अछि — मीरां ओतय रुकलाह नहि, राज्य जीतलनि नहि, लूट केलनि नहि। हिसाब बन्द केलनि आ घोड़ा घुमा लेलनि। बदला हुनका लेल आगि नहि छल जे पसरैत जाए; ओ कर्ज छल, जे चुकता भेल आ बही बन्द।

अध्याय ८ : घुरती

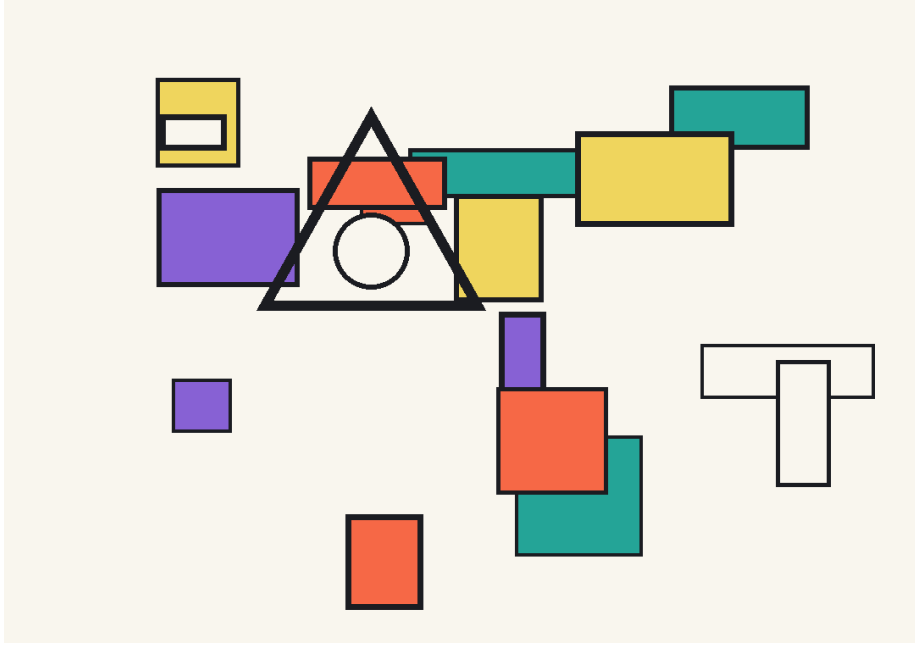

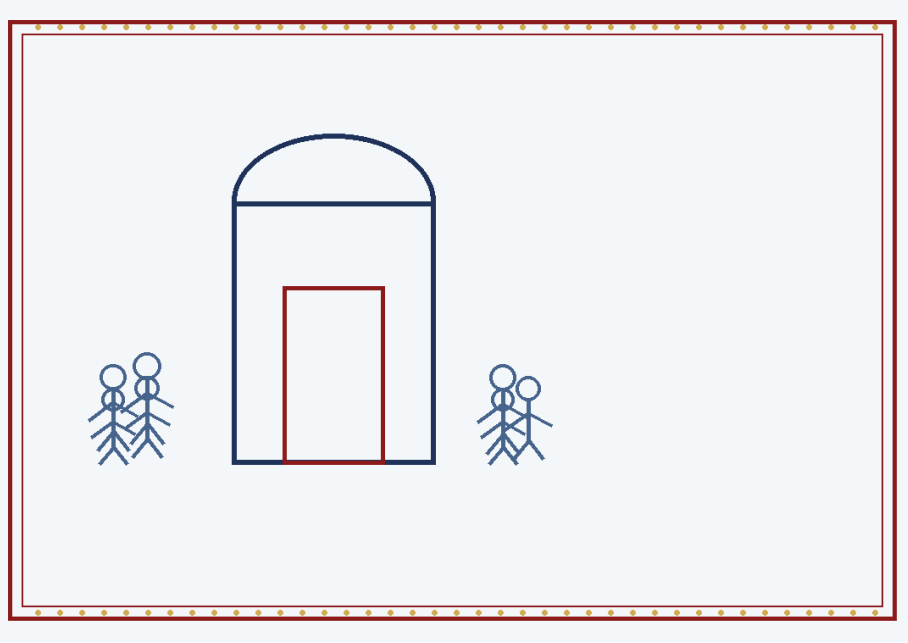

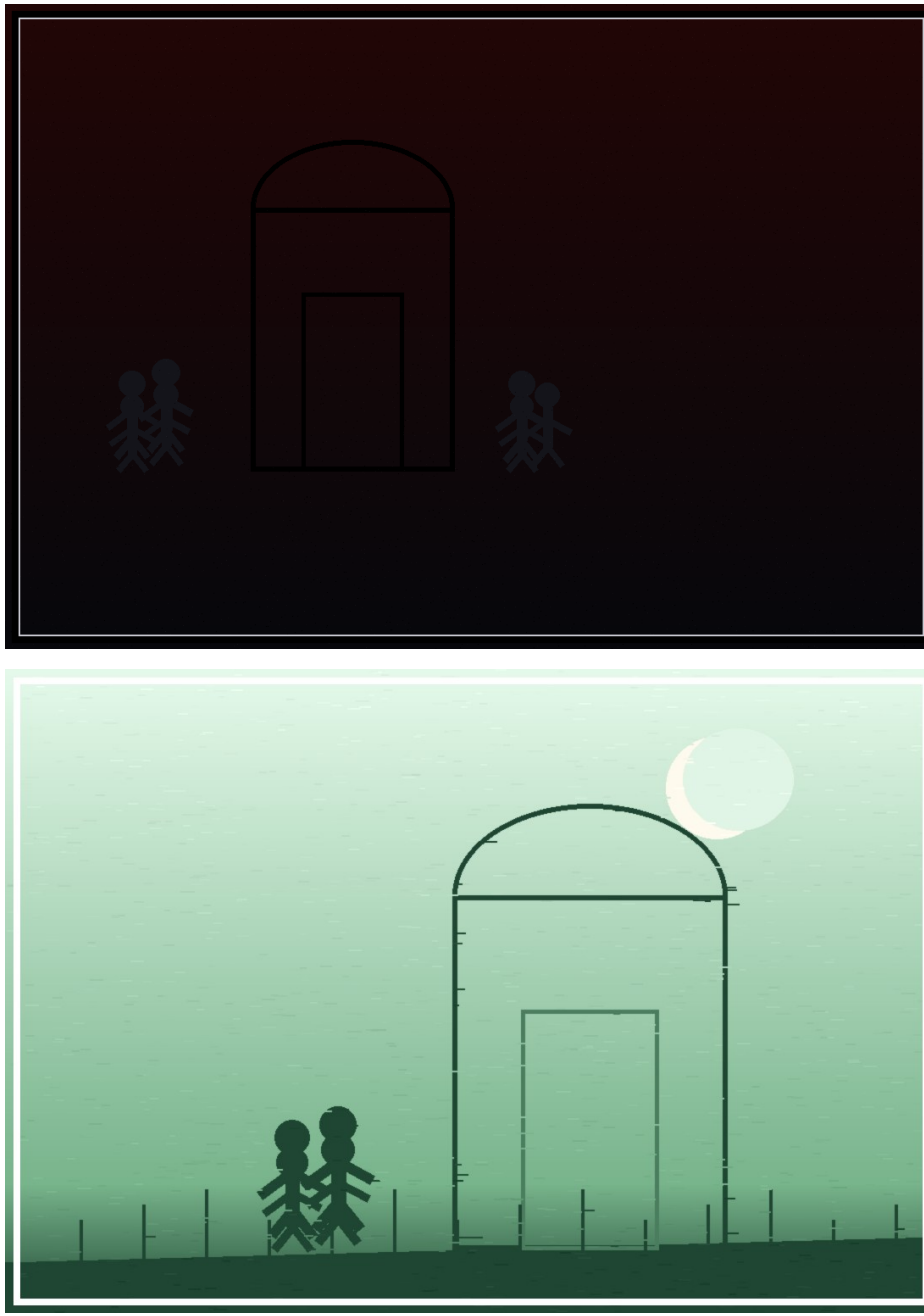

चित्र 15

मीरां घुरि कऽ डिलरीनगर अएलाह। नगर हुनका देखए उमड़ि पड़ल — जे बालक चुपचाप गेल छल, से इतिहास बनि कऽ घुरल छल।

माए देहरिपर ठाढ़ि छलीह। बेटाकेँ साबुत देखि हुनक बरखोक बान्हल नोर एक्कहि बेर बहि गेल। ओ ने तमसेली, ने पुछलनि — खाली माथपर हाथ फेरलनि। किछु घुरती एहन होइत अछि जकरा आगाँ सभ प्रश्न छोट पड़ि जाइत अछि।

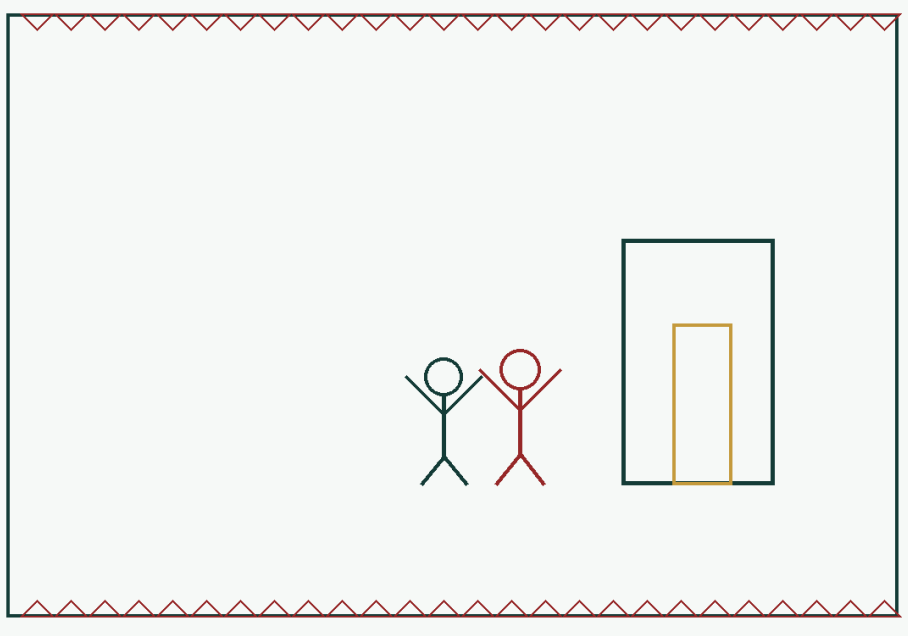

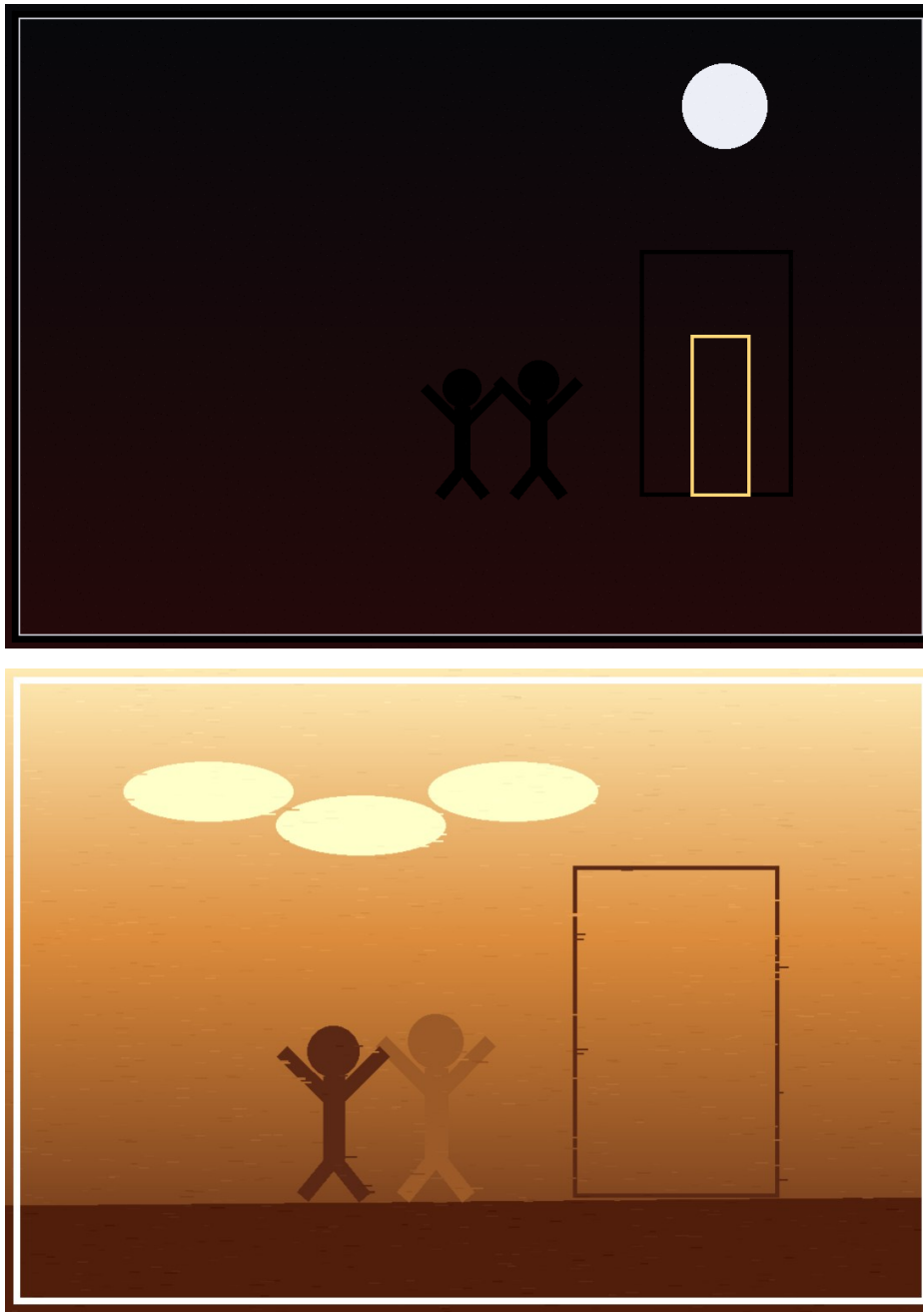

चित्र 16

मीरां आब शान्त छलाह — जेना भीतरक कोनो बरखो पुरान आन्ही थम्हि गेल हो। ओ गृहस्थीमे घुरलाह, नगरक सेवामे लगलाह, आ हुनक उपस्थिति मात्रसँ डिलरीनगरमे एकटा भरोस पसरि गेल — 'मीरांसाहेब छथि, त' चिन्ता कोन बातक?'

लोक हुनका आब 'मीरांसाहेब' कहए लागल छल — नाममे 'साहेब' अपने जुड़ि गेल छल, जेना श्रद्धा अपने उपाधि गढ़ि लैत अछि।

अध्याय ९ : आत्माक पहरा

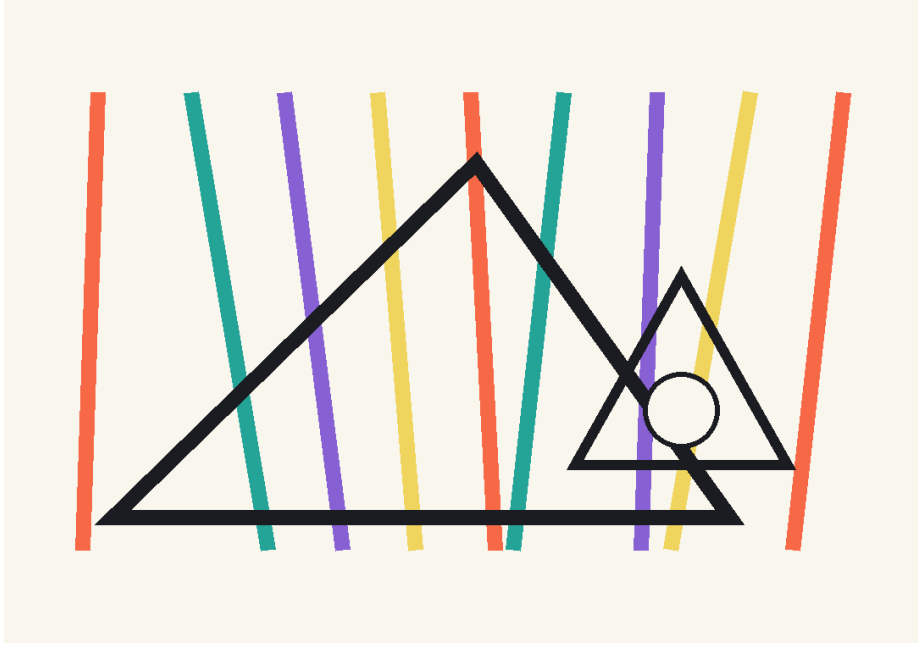

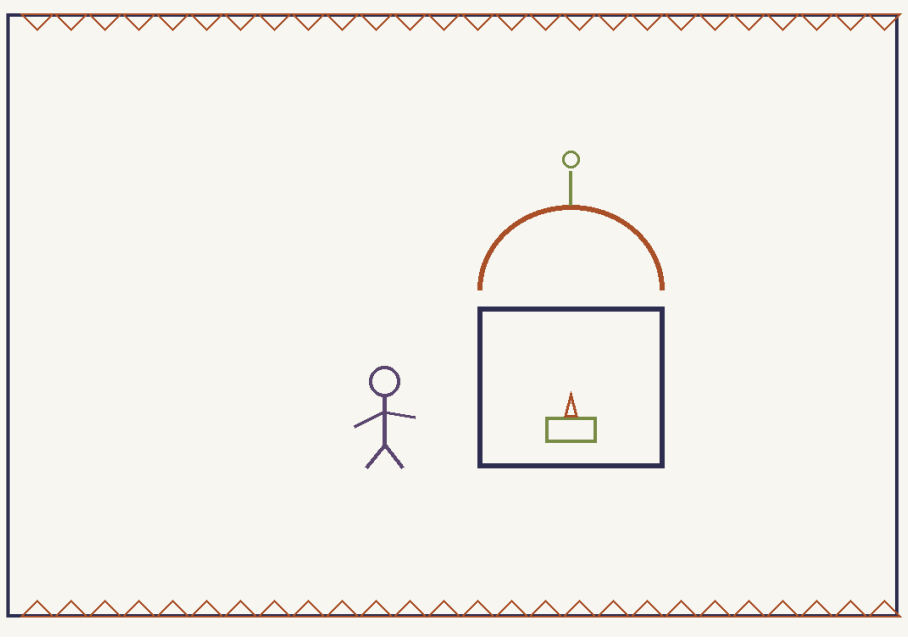

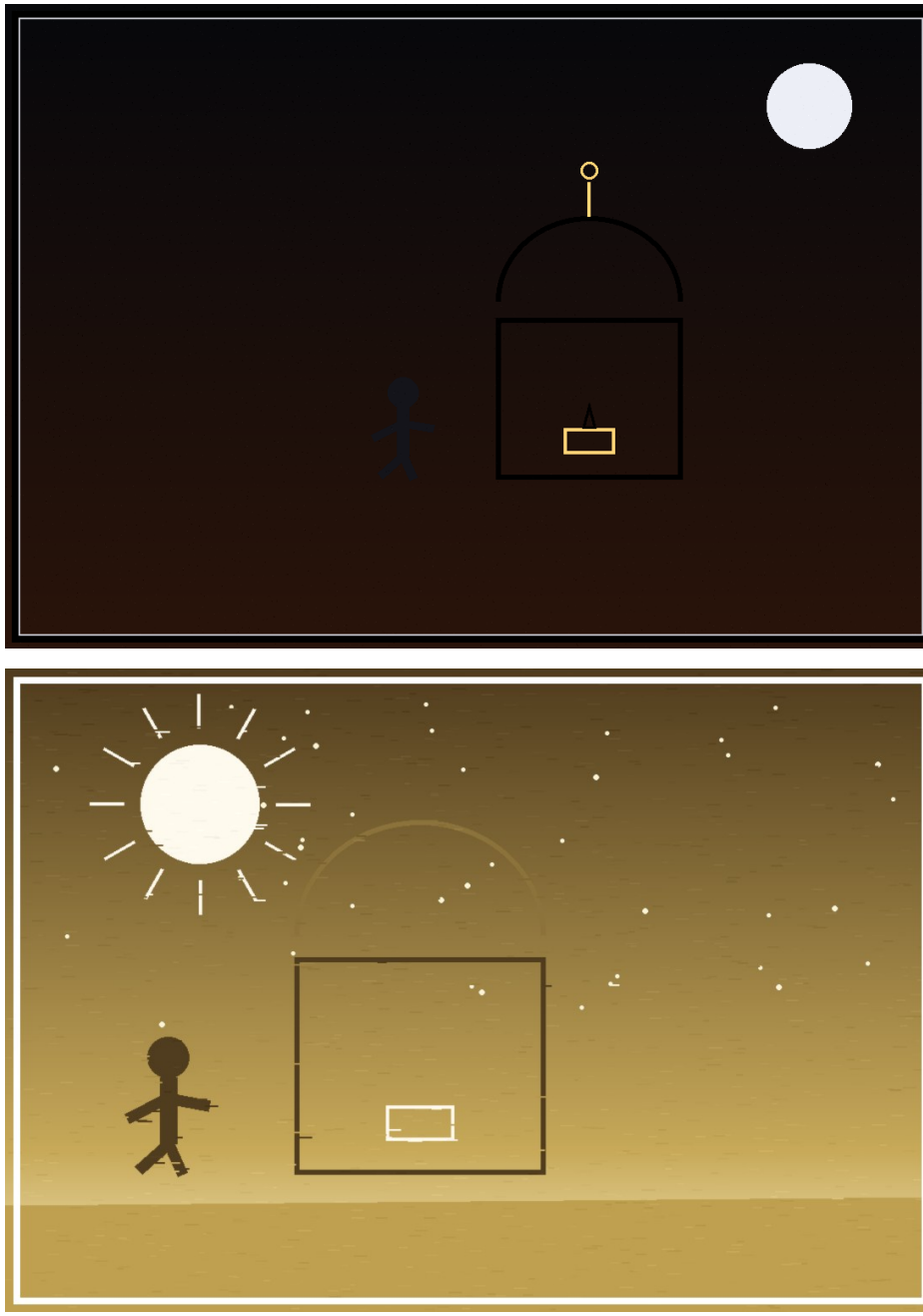

चित्र 17

समय अपन चालि चलल, आ एक दिन मीरांसाहेबक देह-यात्रा पूरा भेल। डिलरीनगर फेर शोकमे डूमल — मुदा एहि बेरक शोकमे एकटा अलगे निश्चिन्तता छल, जकर भेद आगाँ खुजल।

भेद ई — जे मीरांसाहेबक मृत्युक बादो डिलरीनगरमे बहुत दिन धरि शान्ति रहल। ने चोरि, ने डकैती, ने कोनो उपद्रव। लोक कहए — 'ई हुनकर आत्माक प्रभाव थिक। मीरांसाहेब गेल नहि छथि — पहरापर छथि।'

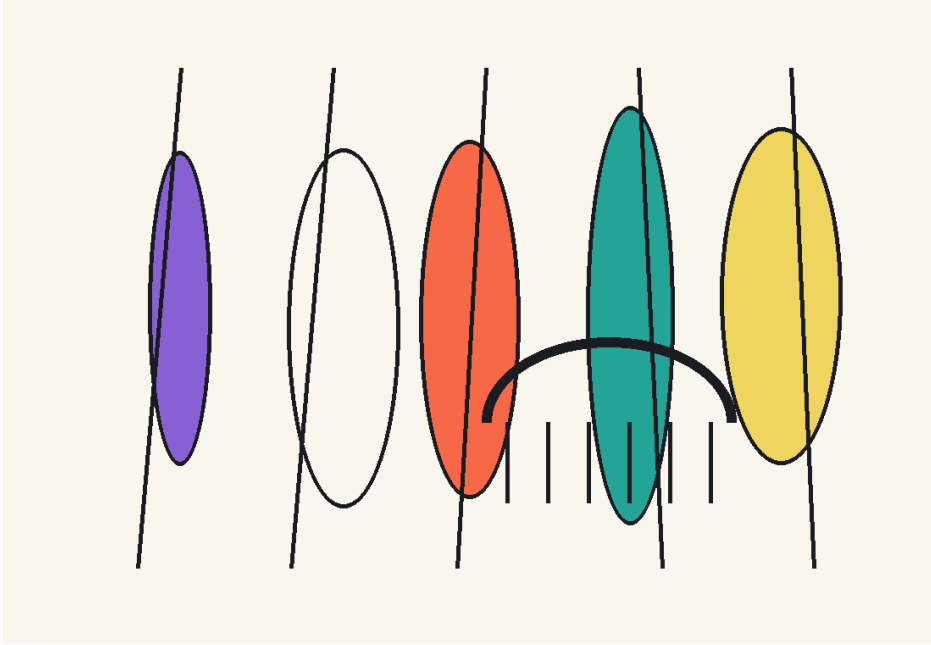

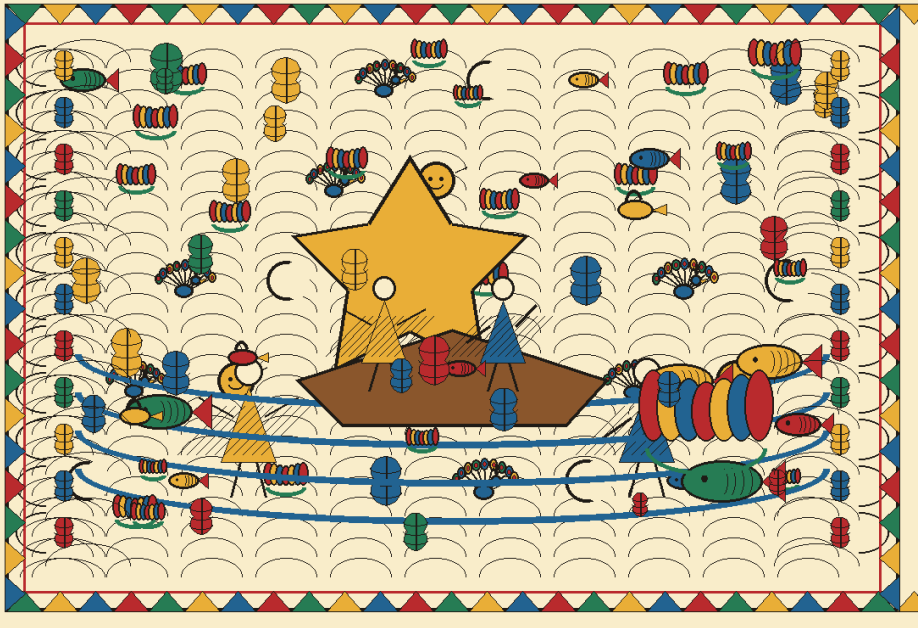

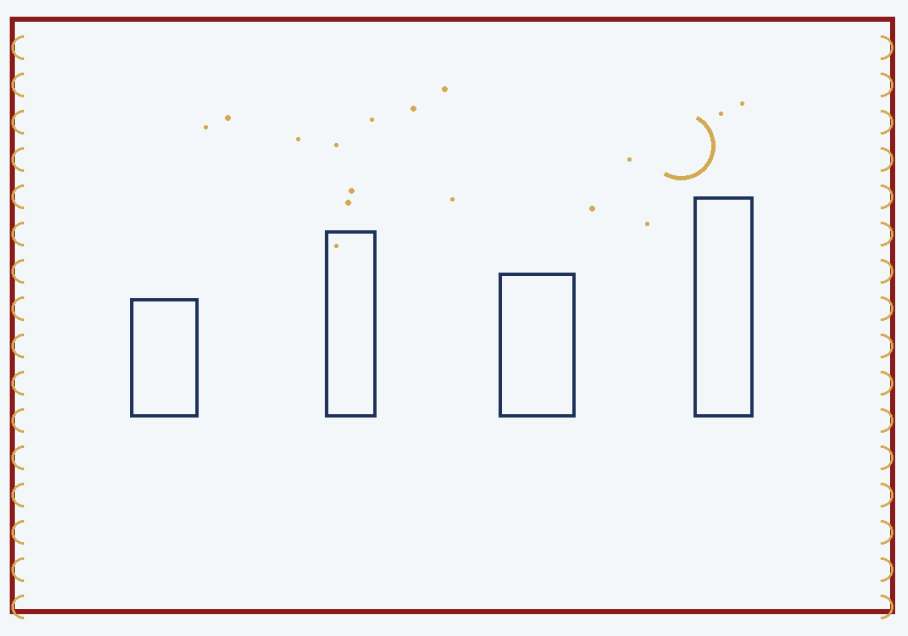

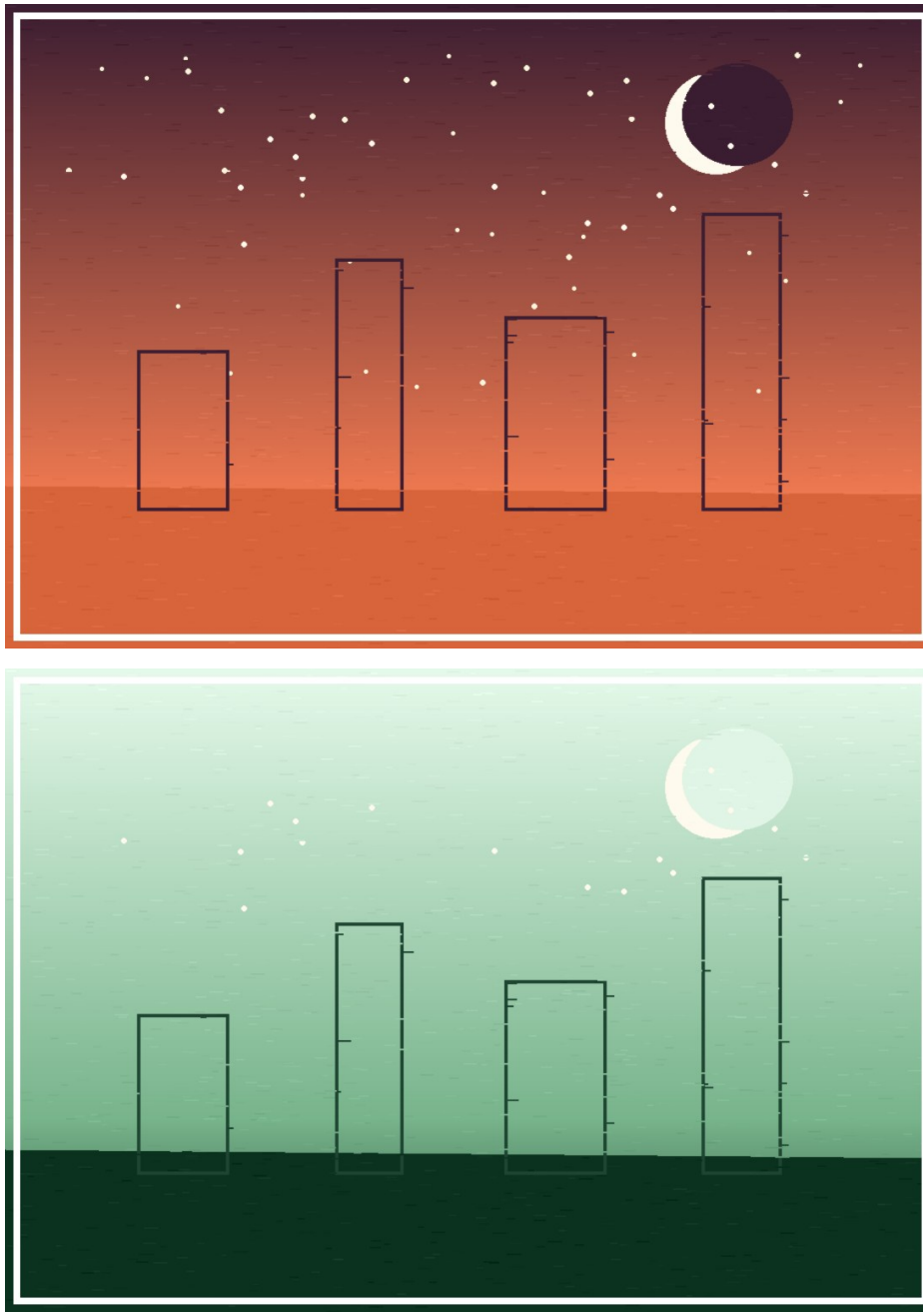

चित्र 18

आ ई विश्वास खाली अन्धविश्वास नहि छल; ई ओहि जीवनक स्वाभाविक विस्तार छल। जे व्यक्ति जीबैत अपन नगरक ढाल छल, ओकर स्मृति सेहो ढाल बनि गेल। दुष्ट लोक हुनक नामसँ डराइत छल, आ दुखी लोक हुनक नामसँ बल पबैत छल।

डिलरीनगरमे साँझखन आइयो जखन कोनो माए अपन जिद्दी बेटाकेँ खिस्सा सुनबैत अछि, त' मीरांसाहेबक नाम अबैत अछि — ओ बालक जे जन्मसँ पहिने अनाथ भेल, जकरा सभ रोकलक मुदा जे रुकल नहि, आ जे मरि कऽ सेहो अपन नगर नहि छोड़लक। किछु लोक इतिहासमे रहैत अछि; किछु लोक हवामे रहि जाइत अछि — शान्ति बनि कऽ।

समाप्त

VIDEHA

विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका | ISSN 2229-547X | www.videha.co.in

जट-जटिन

विद्यापतिक युगक लोकनाट्य — प्रेम, गृहस्थी आ वर्षाक अनुष्ठान

गजेन्द्र ठाकुर

गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादक, विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका (since 2000)

ISSN 2229-547X

© 2026; Gajendra Thakur/ Preeti Thakur;

गजेन्द्र ठाकुर सम्पादक, विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका (since 2000) ISSN 2229-547X

ई पोथी गजेन्द्र ठाकुर समग्रक अन्तर्गत संकलित अछि।

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक ISBN:978-93-5890-210-5

DESIGNED BY: AUM GAJENDRA THAKUR

उपक्रम : महाराज शिव सिंहक दरबार

महाराज शिव सिंह (१४१२-१४४६) मिथिलाक राजा छलाह। संस्कृत आ अवहट्ठक विद्यापति हुनके शासनकालमे भेलाह, आ राजा शिव सिंह आ हुनक रानी लखिमारानी विद्यापतिसँ बड़ प्रेम करैत रहथि।

ओही समयमे एकटा जयट वा जट नामक बड़ पैघ संगीतकार सेहो छलाह। राजा शिव सिंह हुनकासँ ज्तोतिरीश्वर पूर्व आदिकवि विद्यापतिक पदावलीक गीतकेँ राग-रागिनीमे बान्हबाक लेल कहने रहथि। वैह जयट जट-जटिन नाटकक रचना केलनि, आ ओ जटक भूमिका स्वयं करैत छलाह।

ई नाटक साओन-भादवक शुक्ल-पक्षक रातिमे स्त्रीगण द्वारा अभिनीत होइत अछि — एकटा एहन लोकनाट्य, जे प्रेम, गृहस्थी, विरह-मिलन, आ अन्तमे वर्षाक अनुष्ठानसँ जुड़ल अछि। ई गाथा ओही नाटकक कथावस्तुक थिक, जे पीढ़ी-दर-पीढ़ी मिथिलाक स्त्रीगण द्वारा जीवन्त राखल गेल अछि।

अध्याय १ : जट आ जटिनक परिचय

चित्र 1

जट-जटिन नाटकमे दुइये पात्र मुख्य छथि — जट, जे पुरुष-परिधान पहिरने छथि, आ जटिन, जे छिटगर नूआ पहिरने छथि। ई दुनू भूमिका स्त्रीगण द्वारा अभिनीत होइत छल, कारण नाटक सर्वथा स्त्रीगणक अपन अनुष्ठान छल।

आ देखू — दुनू गोटे अपना संग अपन-अपन सखी-मण्डली लऽ आबि गेल छथि। ई सामूहिक प्रस्तुति साओन-भादवक रातिमे गामक स्त्रीगणकेँ एकजुट करैत छल — मनोरंजन आ सामाजिक बन्धन दुनूक माध्यमसँ।

चित्र 2

नाटकक कथा बियाहक पहिल सालक साओनसँ शुरू होइत अछि — नवविवाहित जटिनक जीवनक पहिल वर्षाऋतु, जखन नैहर जएबाक परम्परा आ सासुरक नियमक बीच द्वन्द्व शुरू होइत अछि।

ई नाट्य-कथा मिथिलाक गृहस्थ जीवनक सूक्ष्म चित्रण करैत अछि — नैहर-सासुरक खींचातानी, दम्पतिक नोक-झोंक, आ अन्ततः प्रेमक स्थायित्व, सभटा एकटा मनोरंजक नाट्य-रूपमे प्रस्तुत।

अध्याय २ : नैहर जएबाक हठ

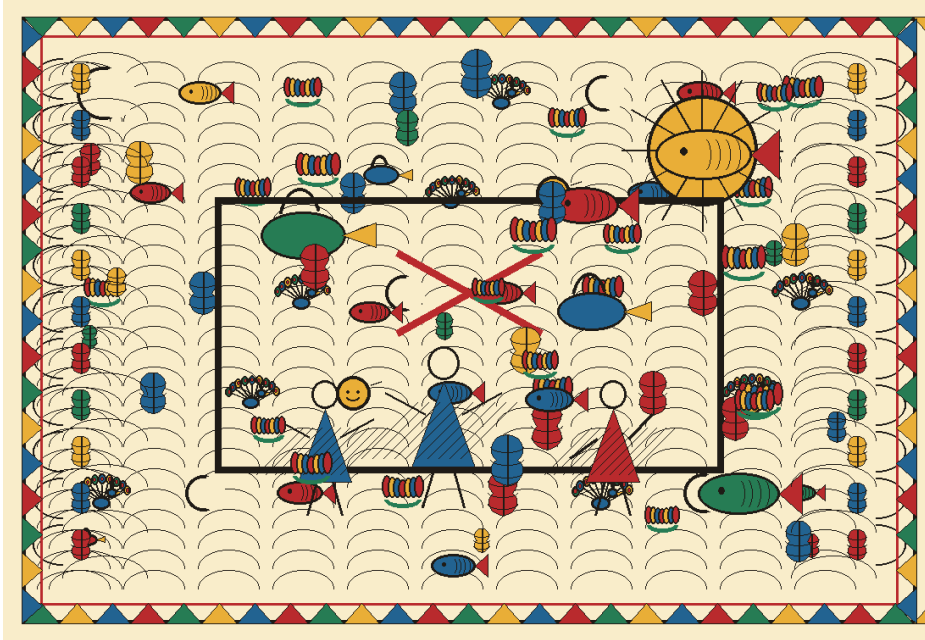

चित्र 3

जटिन नैहर जाए चाहैत छथि — मुदा धारमे बाढ़ि छै! ओ अपन माएकेँ (नाटकमे प्रतीकात्मक सम्बोधन) कहैत छथि — 'हे माय, कोनो नौआ-ठाकुर-ब्राह्मण आकि पैघ भाइक बदलामे छोटका भाइकेँ पठबिहँ बिदागरीक लेल, नै त' सासुरबला सभ बिदागरी आपिस कऽ देत!'

ई संवाद मिथिलाक परम्पराक एकटा झलक देखबैत अछि — बिदागरीक विधि, नैहरसँ आदर-सत्कारक अपेक्षा, आ ई सभटा सामाजिक मर्यादाक जटिल तानी-भरनी।

चित्र 4

जाहि नवकनियाँकेँ नैहर नहि जाए देल गेल, ओ अपन पतिकेँ कहैत छथि — 'जट-जटिनक नृत्यमे त' भाग लेबए दिअ!' — एकटा वैकल्पिक आनन्दक खोज, जखन मूल इच्छा माने नैहर-यात्रा पूर्ण नहि भऽ सकल।

मुदा वर झूमर खेलएबासँ मना कऽ दैत छथि — फेर एकटा नकार! जटिन घामक बहन्ना बना दूर भऽ जाइत छथि — तामसक एकटा शालीन अभिव्यक्ति, नाटकीय मुदा वास्तविक गृहस्थ जीवनक झलक देनिहार।

अध्याय ३ : झूमरक निमन्त्रण

चित्र 5

जट-जटिन बीचमे छथि, आ दुनूक संगी-मण्डलीमे बहस चलि रहल अछि — नाटकीय संवाद, जे उपस्थित दर्शक (स्त्रीगण) केँ मनोरंजित करैत अछि।

'चलू झूमर खेलाए' — एकटा पक्ष आमन्त्रित करैत। 'कोन पातपर चढ़ि कऽ?' — दोसर पक्ष प्रश्न पुछैत। 'पुरैनीक' — उत्तर भेटैत। ई काव्यात्मक संवाद-शैली लोकनाट्यक विशेषता अछि।

चित्र 6

जट-जटिनमे विवाह होएबला अछि — नाटकक भीतर एकटा नाट्य, प्रतीकात्मक विवाह। मुदा जट किछु बातपर अड़ि गेल — जेना धानक शीस जकाँ लीबि कऽ चलए जटिन, एकटा शर्त, विनोदपूर्ण मुदा अर्थपूर्ण।

किछु देखावटी विरोधक बाद जटिन सभटा गप मानि जाइत छथि — नाटकीय शैलीक ई हल्लुक विरोध-स्वीकृतिक क्रम, दर्शककेँ हँसाबैत आ मनोरंजन दैत, फेर दुनू गोटे प्रतीकात्मक विवाह कऽ लैत छथि।

अध्याय ४ : घरेलू जीवनक झलक

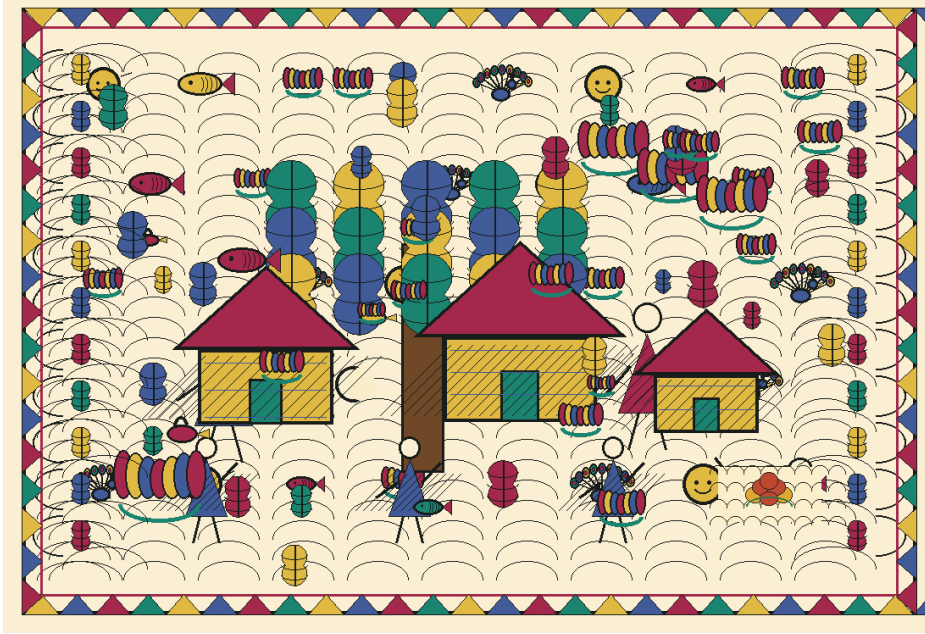

चित्र 7

भोर होइत अछि, जटिन कहैत छथि — 'जाए दिअ, अँगना बहारबाक अछि!' मुदा जटा कहैत छथि — 'अँगना माए-बहिन बहारि लेत!' — नवविवाहितक श्रमसँ रक्षाक ई भाव पारिवारिक स्नेहक प्रतीक छल।

दिन बितैत अछि, आ जटिन एकटा नव माँग रखैत छथि — 'गहना किएक नहि बनबाए रहल छी हमरा लेल? आर बहन्ना करब त' हम सोनारक घर चलि जाएब!' — नवविवाहित पत्नीक स्वाभाविक अपेक्षा, हल्लुक धमकीक संग व्यक्त।

चित्र 8

जटिन एतेक खरचा करबैत छथि जे जटाक हाथी तक बिका जाइत छन्हि, आ हाथीक सिक्कड़ि मात्र बचल रहि जाइत छन्हि! ई अतिशयोक्ति नाटकीय हास्य आ पत्नीक खर्चालू प्रवृत्तिक व्यंग्यपूर्ण चित्रण अछि।

ई दृश्य नाटकक हास्य-तत्त्वकेँ प्रकट करैत अछि — गृहस्थ जीवनक साधारण नोक-झोंक, जे मनोरंजक ढंगसँ प्रस्तुत, दर्शक स्त्रीगणकेँ अपनहि जीवनक झलक देखबैत।

अध्याय ५ : नैहर-प्रस्थान आ चेतौनी

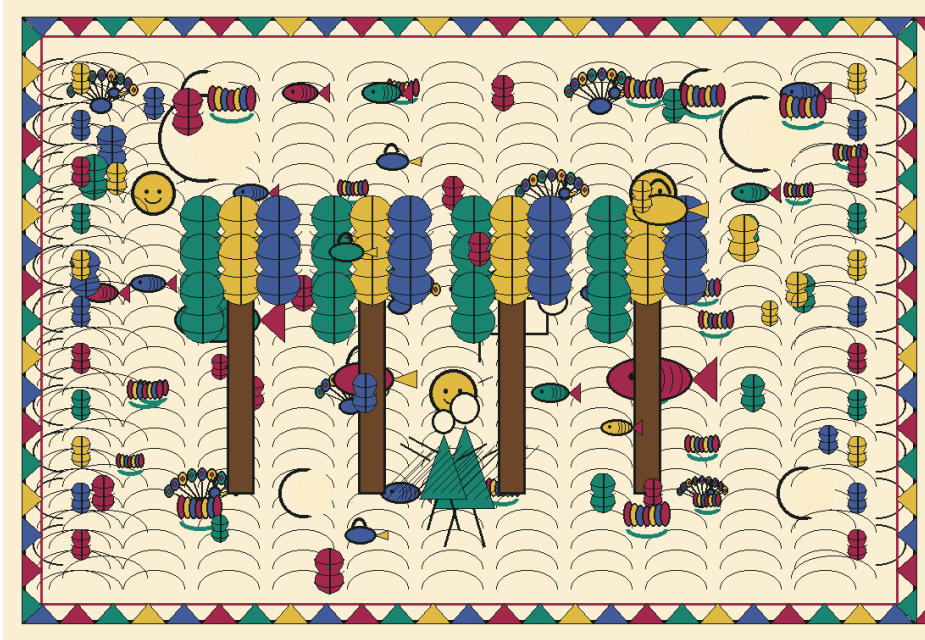

चित्र 9

जटिन फेर कहैत छथि — 'हमरा नैहर जएबाक अछि!' जटा उत्तर दैत छथि — 'धानक फसिल तैयार अछि, तकरा काटि कऽ जाऊ' — कृषि-कार्यक प्राथमिकता, गृहस्थीक व्यावहारिक आवश्यकता।

जटिन नहि मानैत छथि, कहैत छथि — 'एहि बेर जे हम जाएब, त' घुरि कऽ नहि आएब!' — एकटा तीव्र चेतावनी, भावनात्मक उत्तेजनाक क्षण, नाटकक तनावपूर्ण मोड़।

चित्र 10

मुदा सौतिनक गप (शाइत कोनो प्रतिद्वन्द्वी स्त्रीक चर्चा वा भय) सुनि जटिन डेराए जाइत छथि — भय आ असुरक्षाक ई भाव नाटकक भावनात्मक गहराइकेँ बढ़बैत अछि।

बीचमे स्वांग जेना कोनो रोगीक इलाज आदि सेहो होइत रहैत अछि — नाटकमे उप-दृश्य, जे मूल कथासँ हटि कऽ अतिरिक्त मनोरंजन आ सामाजिक टिप्पणी प्रस्तुत करैत अछि।

अध्याय ६ : मोरंग-प्रवास आ सोनारक प्रलोभन

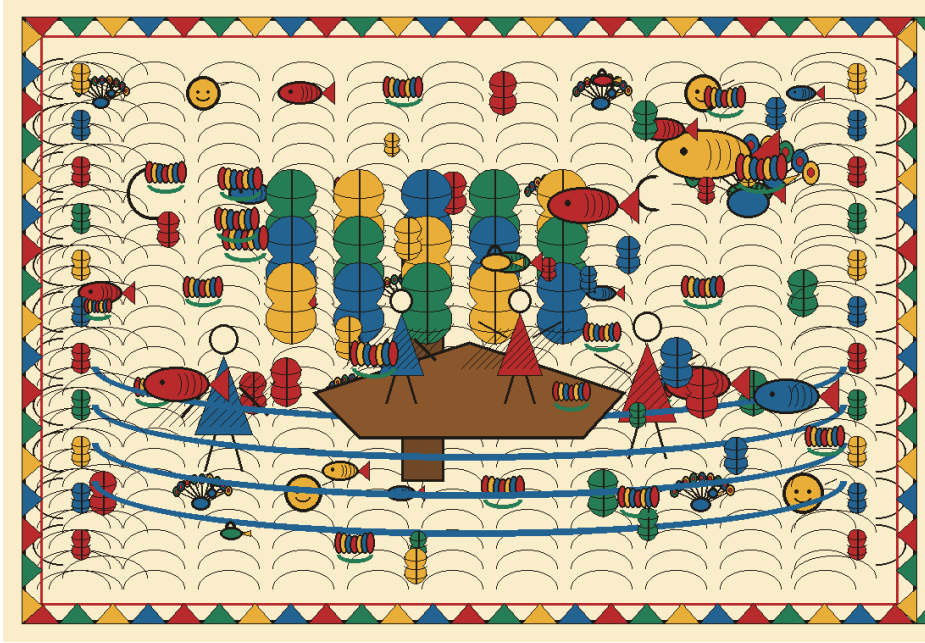

चित्र 11

जट मोरंग बिदा भऽ जाइत छथि — कमएबाक लेल, गृहस्थीक आर्थिक आवश्यकता पूर्ण करबाक हेतु। ई प्रस्थान नाटकक एकटा नव अध्यायक आरम्भ छल — विरहक काल।

जटिनकेँ सोनार गहनाक प्रलोभन दैत छन्हि — एकटा सम्भावित प्रलोभन-कथा, जतय बाहरी पुरुष स्त्रीकेँ भटकाबए चाहैत अछि। मुदा जटिन दृढ़ रहैत छथि।

चित्र 12

जटिन जटाक सुन्दरताक वर्णन करैत छथि — अपन पतिक प्रति अटूट प्रेम आ निष्ठा व्यक्त करैत, सोनारक प्रलोभनकेँ अस्वीकार करैत। ई दृश्य नारी-निष्ठाक प्रतीकात्मक प्रस्तुति छल।

ई प्रसंग नाटकक नैतिक शिक्षाकेँ उजागर करैत अछि — विरहमे सेहो पत्नीक निष्ठा अडिग रहबाक चाही, बाह्य प्रलोभन कतबो आकर्षक किएक नहि होअए।

अध्याय ७ : झगड़ा आ विरह

चित्र 13

फेर जटा घुरि अबैत अछि — मोरंगसँ, कमाइ लऽ कऽ। मुदा एक दिन दुनू गोटेमे कोनो गप लऽ कऽ झगड़ा भऽ जाइत छन्हि — साधारण दाम्पत्य कलह, जे कोनो गृहस्थीमे स्वाभाविक अछि।

जट छौंकीसँ जटिनकेँ छूबि दैत छथि — शाइत क्रोधमे, वा असावधानीसँ। ई स्पर्श जटिनकेँ अपमानजनक लागल।

चित्र 14

जटिन रूसि कऽ घर छोड़ि दैत छथि! ई विरहक क्षण नाटकक भावनात्मक चरम छल — प्रेम आ अहंकारक द्वन्द्व, जे कतेको दाम्पत्य सम्बन्धमे घटित होइत अछि।

जटा — अपन भूलपर पछताइत — जटिनकेँ ताकए लगैत छथि, विभिन्न रूप धरि — गोपी, मनिहारिन, आ आन-आन रूप। ई खोज-यात्रा प्रेमक अन्वेषण, पछतावा, आ पुनर्मिलनक आशाक प्रतीक अछि।

अध्याय ८ : पुनर्मिलन

चित्र 15

जटाक घरमे झोल-मकड़ा भरि जाइत छन्हि, आ अंगनामे दूभि जनमि जाइत छन्हि — उपेक्षा आ शून्यताक प्रतीकात्मक चित्रण, जतय पत्नीक अनुपस्थितिमे घर वीरान भऽ गेल छल।

ई दृश्य दर्शककेँ स्पष्ट संकेत दैत छल — पत्नी बिनु घर सुन्न, अव्यवस्थित। जटाक विभिन्न रूपक बादो, घरक ई दुर्दशा जटिनक महत्वकेँ रेखांकित करैत अछि।

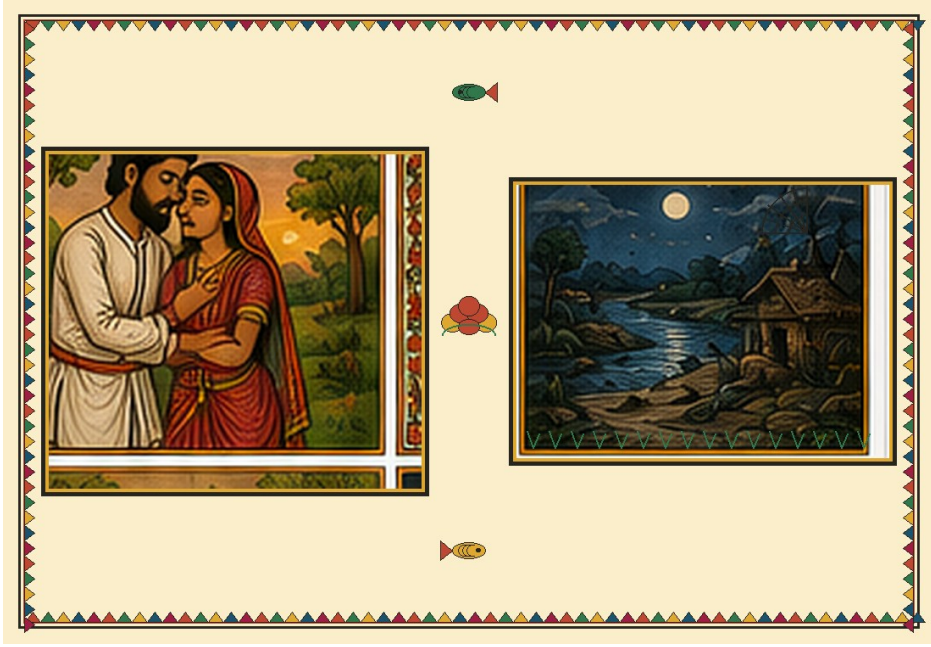

चित्र 16

अन्तमे जटिन जटा लग आबि जाइत छथि — क्रोध शान्त भऽ गेल, प्रेम फेर विजयी भेल। ई पुनर्मिलन नाटकक सुखान्त मोड़ अछि, जे दर्शककेँ सन्तोष आ आनन्द दुनू दैत अछि।

जट-जटिनक ई कथा — नैहर-सासुरक खींचतान, गहनाक माँग, नैहर-यात्राक चेतावनी, विरह, आ पुनर्मिलन — सम्पूर्ण दाम्पत्य जीवनक एकटा चक्रकेँ नाट्य-रूपमे प्रस्तुत करैत अछि, स्त्रीगणकेँ अपनहि जीवनक प्रतिबिम्ब देखबैत अछि।

अध्याय ९ : बेंगक वर्षा-अनुष्ठान

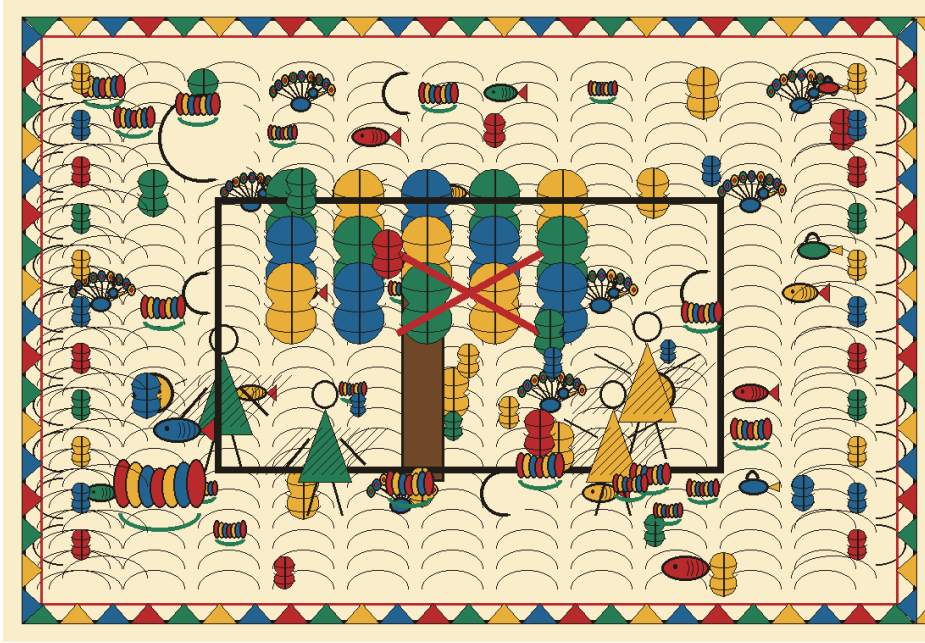

चित्र 17

नाटकक अन्तमे एकटा विशेष अनुष्ठान होइत अछि — स्त्रीगण बेंग सभकेँ एकटा खद्धा खुनि ओहिमे दऽ दैत छथि, आ ऊपरसँ ओकरा कूटैत छथि।

फेर मरल बेंगकेँ स्त्रीगण झगराहि स्त्रीक दरबज्जापर फेकि अबैत छथि — ई एकटा लोक-विश्वाससँ जुड़ल अनुष्ठान छल।

चित्र 18

ओ स्त्री भोरमे मरल बेंगकेँ देखलाक बाद जतेक गारि पढ़ैत छथि, ततेक बेशी बरखा होइत अछि! — ई लोकविश्वास वर्षा आ स्त्रीक क्रोधक बीच एकटा प्रतीकात्मक सम्बन्ध स्थापित करैत छल।

ई अनुष्ठान जट-जटिन नाटकक एकटा अभिन्न अंग अछि — मात्र मनोरंजन नहि, अपितु वर्षा आमन्त्रित करबाक एकटा सामूहिक, लोकपरम्परागत क्रिया। जट-जटिन नाटक एहि तरहेँ प्रेम-कथा आ कृषि-अनुष्ठान दुनूकेँ एक संग बुनैत, मिथिलाक साओन-भादवक रातिमे स्त्रीगणक सामूहिक अभिव्यक्तिक माध्यम बनल — मनोरंजन, सामाजिक बन्धन, आ प्रकृतिसँ जुड़ावक त्रिवेणी।

समाप्त

VIDEHA

विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका | ISSN 2229-547X | www.videha.co.in

लालमैन बाबा

मित्रताक विश्वासघात आ शापित न्यायक गाथा

गजेन्द्र ठाकुर

गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादक, विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका (since 2000)

ISSN 2229-547X

© 2026; Gajendra Thakur/ Preeti Thakur;

गजेन्द्र ठाकुर सम्पादक, विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका (since 2000) ISSN 2229-547X

ई पोथी गजेन्द्र ठाकुर समग्रक अन्तर्गत संकलित अछि।

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक ISBN:978-93-5890-210-5

DESIGNED BY: AUM GAJENDRA THAKUR

उपक्रम : दू संगी

नौहट्टामे दू टा संगी रहथि — मनसाराम आ लालमैन बाबा। दुनू गोटे चमार जातिक छला, आ संगे-संगे महीस चराबथि — बाल्यकालक मित्रता, जे साधारण ग्रामीण जीवनक हिस्सा छल।

ई गाथा मित्रताक परीक्षा, विश्वासघात, आ अन्ततः न्यायपूर्ण प्रतिशोधक थिक — जतय एकटा मित्रक अन्तिम इच्छाक अनादर दोसर मित्रक प्राणहरणमे परिणत भेल, आ अन्ततः दुनू संगी देवताक रूपमे पूजित भेला।

अध्याय १ : नौहट्टाक बोन

चित्र 1

नौहट्टामे मनसाराम आ लालमैन — दुनू चमार जातिक संगी, नेनेसँ एकसंग महीस चराबएबला मित्र। हुनक मित्रता गामक जीवनक स्वाभाविक अंग छल, दुनू गोटे प्रतिदिन संगे बोन जाथि।

ओहि समयमे नौहट्टामे बड्डु पैघ बोन छल — घनगर, विस्तृत, आ कहियो-कहियो खतरनाक। एहन जंगलमे महीस चराएब सेहो एकटा हिम्मतिक काज छल, मुदा दुनू मित्र निर्भीक भऽ अपन दैनिक दिनचर्या निमहबैत छला।

चित्र 2

ई साधारण, शान्तिपूर्ण जीवन एक दिन अकस्मात् एकटा भयावह मोड़ लेलक —घन जंगलमे एकटा खतरा हुनका सभक प्रतीक्षामे छल, जकर परिणाम दुनू संगीक जीवन बदलि देत।

ई घटना मित्रताक असली परीक्षा बनल — संकटक क्षणमे साहस, बलिदान, आ अन्ततः विश्वासघातक जटिल मिश्रण, जे एहि गाथाकेँ मिथिलाक लोककथामे एकटा अविस्मरणीय स्थान देलक।

अध्याय २ : बाघिनसँ संघर्ष

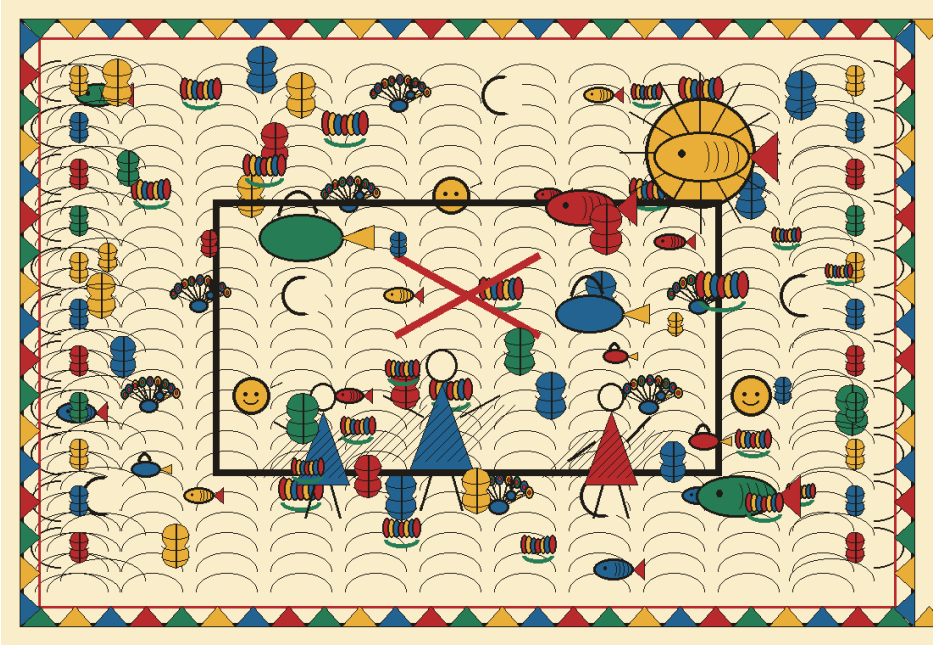

चित्र 3

एक दिन जंगलमे लालमैनक महीसकेँ एकटा बघिनिया घेरि लेलकनि — अकस्मात् आक्रमण, जकर सामना करब आवश्यक भऽ गेल। लालमैन तुरत अपन महीसक रक्षाक लेल आगाँ अयला।

लालमैन महीसकेँ बचबैमे बाघिनसँ लड़ए लगला — साहसिक प्रतिरोध, अपन पशुधनक रक्षाक लेल प्राणपणसँ संघर्ष। ई युद्ध कठिन आ खतरनाक छल, मुदा लालमैनक साहस अटूट छल।

चित्र 4

मुदा एकटा विशेष कारणसँ लालमैन अपन सम्पूर्ण शक्तिक प्रयोग नहि केलनि — ओ स्त्रीजातिक बाघिनपर पूर्ण बलसँ प्रहार करबासँ हिचकला! ई नैतिक संकोच — नारी-

जातिक प्रति सम्मानक भावना, भलहिं ओ पशु-रूपमे होअए — लालमैनक चरित्रक विशेषता छल।

एहि संकोचक कारण लालमैन अपन पूर्ण शक्ति नहि लगा सकला, आ अन्ततः बाघिनसँ मारल गेला! ई त्याग आ नैतिकताक मूल्य अत्यन्त भारी छल — अपन जीवनक बलिदान।

अध्याय ३ : अन्तिम इच्छा

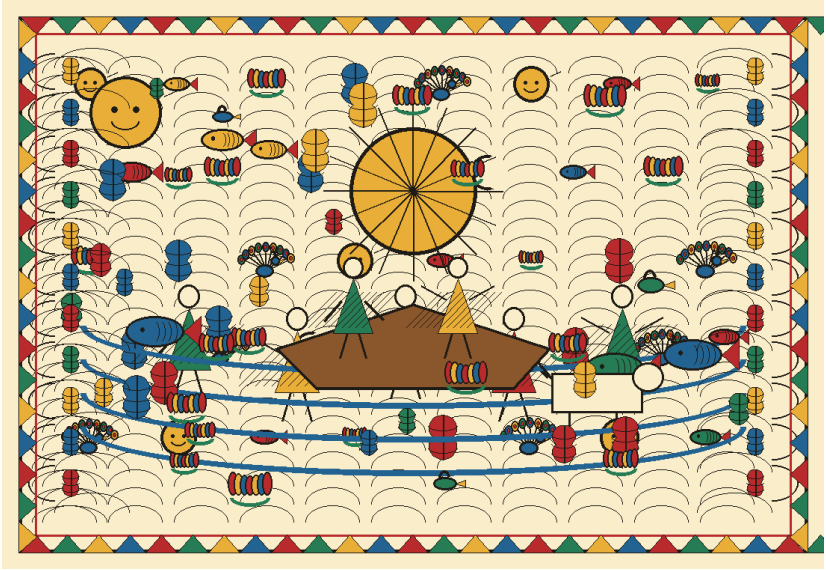

चित्र 5

मरैत-मरैत लालमैन अपन प्रिय संगी मनसारामकेँ एकटा अन्तिम अनुरोध केलनि — 'मुइलाक बाद हमर दाह-संस्कार नीकसँ कएल जाए' — एकटा साधारण, मुदा अत्यन्त महत्वपूर्ण अन्तिम इच्छा।

ई अनुरोध मित्रताक अन्तिम परीक्षा छल — मनसारामसँ अपेक्षा छल जे ओ अपन मृत मित्रक सम्मान बचाओत, विधिवत् संस्कारक व्यवस्था करत, जेना कोनो असली मित्रसँ अपेक्षित होइत छै।

चित्र 6

मुदा मनसाराम — किए से गाथा स्पष्ट नहि करैत, शाइत भय, स्वार्थ, वा उपेक्षासँ — गामपर ककरो ई गप नहि कहलनि! अपन मित्रक अन्तिम इच्छाकेँ ओ पूर्णतः उपेक्षित कऽ देलनि।

ई विश्वासघात लालमैन बाबाक आत्माक लेल असहनीय छल — एकटा मित्र, जकरा लेल ओ अपन प्राण गमौलनि, से मृत्युक बादो सम्मान नहि देलक। ई अनादर आत्माक शान्तिमे बाधक बनल।

अध्याय ४ : आत्माक क्रोध

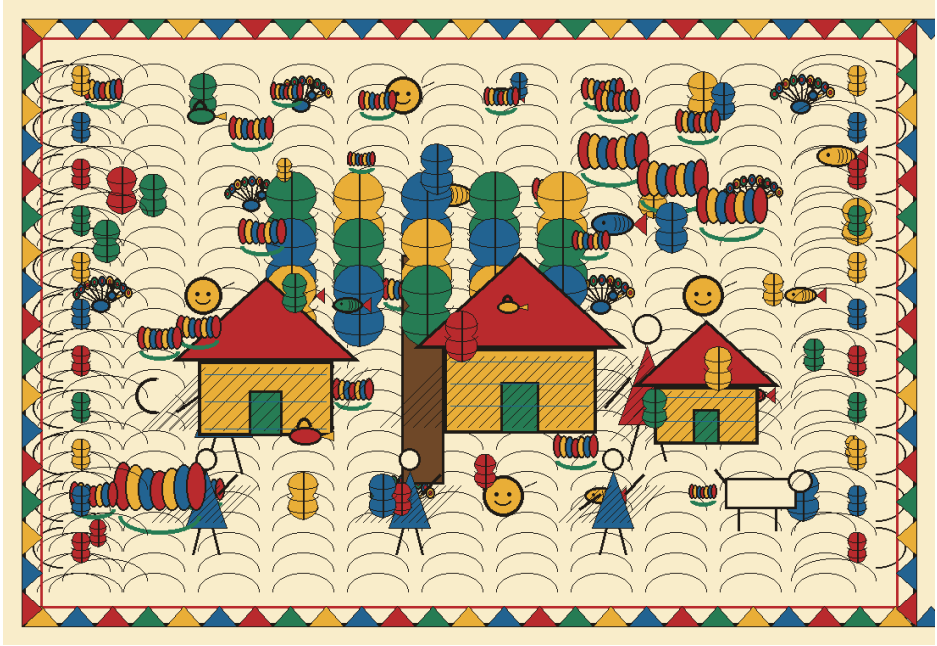

चित्र 7

एहि विश्वासघातसँ लालमैन बाबाकेँ बड्ड तामस चढ़लनि — मृत्युक बादो, अपन मित्रक अनादरसँ आत्मा अशान्त भऽ उठल। ई क्रोध स्वाभाविक छल — जकरा लेल प्राण गमाओल, तकर अन्तिम इच्छाक अनादर असहनीय छल।

लालमैन बाबाक आत्मा — क्रोधसँ भरल — मनसारामकेँ बका कऽ मारि देलनि! ई प्रतिशोध आत्माक शक्तिक प्रमाण छल, जकर क्रोध मृत्युक सीमाकेँ सेहो पार कऽ गेल।

चित्र 8

ई घटना गामक लोकक लेल एकटा चेतौनी बनल — मित्रताक अन्तिम इच्छाक अनादर, चाहे ओ कतबो साधारण होअए, गम्भीर परिणाम आनि सकैत अछि। मृतात्माक इच्छाकेँ हल्लुकमे नहि लेल जा सकैए।

मनसारामक मृत्यु गामक लोककेँ स्तब्ध कऽ देलक — दुनू संगी, जे एक दिन संगे महीस चराबथि, से आब एहि जंगलक घटनाक शिकार भऽ गेला, एकटा बाघिनसँ, दोसर अपने मित्रक क्रोधित आत्मासँ।

अध्याय ५ : सामूहिक दाह-संस्कार

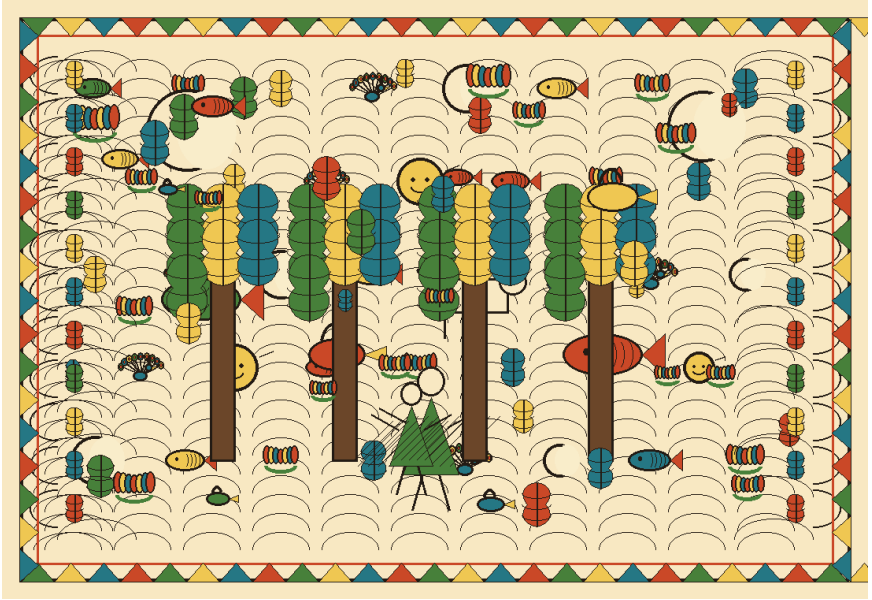

चित्र 9

मनसारामक मृत्युक बाद गामक लोक ई पूरा घटनाक्रम बुझि गेला — लालमैनक बलिदान, ओकर अन्तिम इच्छा, मनसारामक विश्वासघात, आ अन्तमे लालमैनक आत्माक प्रतिशोध।

सभ गोटे मिलि कऽ लालमैन बाबाक दाह-संस्कार केलनि — देरीसँ सही, मुदा अन्ततः विधिवत् आ सम्मानपूर्वक। ई सामूहिक कार्य गामक लोकक पश्चाताप आ सुधारक प्रयास छल।

चित्र 10

दाह-संस्कारक बाद लालमैन बाबाक आत्माकेँ शान्ति भेटल — जे इच्छा मनसाराम पूर्ण नहि कऽ सकल छला, से गामक सामूहिक प्रयाससँ पूर्ण भेल। न्याय अन्ततः स्थापित भेल।

ई घटना गामक लोकक लेल एकटा गहींर शिक्षा बनल — मृतकक अन्तिम इच्छाक सम्मान, आ मित्रताक प्रति निष्ठाक महत्व, जकर उपेक्षा गम्भीर परिणाम आनि सकैत अछि।

अध्याय ६ : भगताक रूपमे अमर

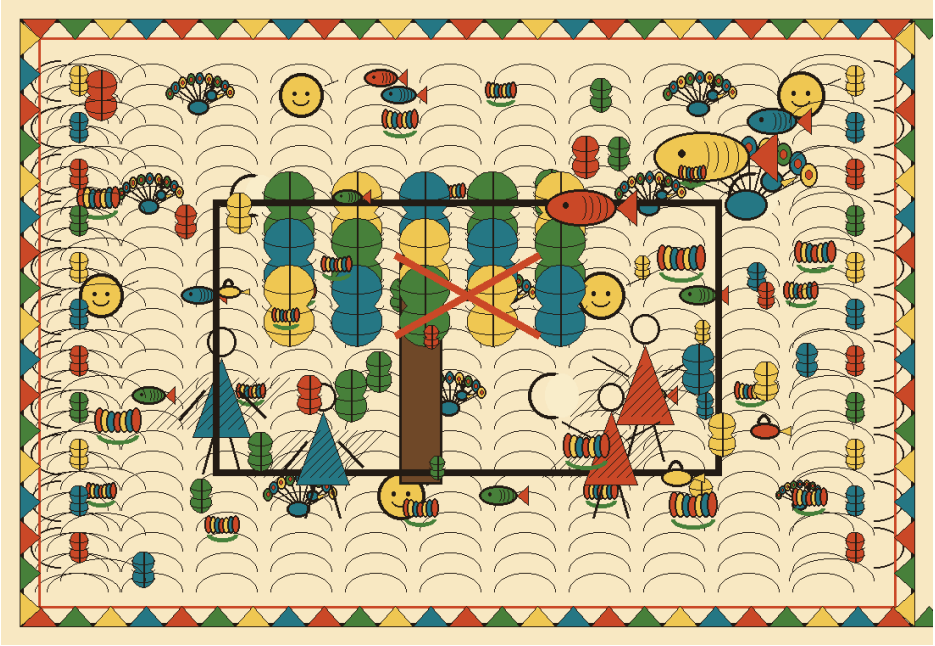

चित्र 11

लालमैन बाबाक दाह-संस्कारक बाद, हुनकर भगता -आत्माक भक्त-शरीरमे प्रवेशक परम्परा- मानल गेल — ओ एकटा लोकदेवताक रूपमे स्थापित भेला, गामक श्रद्धाक केन्द्र बनि।

आइयो ओ भगताक देहमे पैसि मनता पूरा करैत छथि — भक्तक शरीरमे प्रवेश कऽ, लालमैन बाबा अपन आशीर्वाद आ शक्ति गामक लोककेँ प्रदान करैत छथि।

चित्र 12

ई रूपान्तरण असाधारण छल — एकटा साधारण चमार, जे अपन मित्रक रक्षाक लेल प्राण गमौलनि, आ फेर मित्रक विश्वासघातसँ क्रोधित भऽ प्रतिशोध लेलनि, से अन्ततः एकटा पूजनीय देवताक रूपमे स्थापित भेला।

लालमैन बाबाक गाथा मिथिलाक लोकधर्ममे एकटा जटिल, मुदा गहींर सन्देश दैत अछि — बलिदान, विश्वासघात, क्रोध, आ अन्ततः क्षमा आ सम्मानक चक्र। नारी-जाति - बाघिनक प्रति सेहो सम्मान देखओनिहार लालमैनक चरित्र, आ मित्रताक अन्तिम इच्छाक महत्व — ई दुनू मूल्य आइयो हुनक भगताक पूजामे जीवित अछि, जतय भक्तगण अपन मनोकामना लऽ हुनक शरणमे जाइत छथि।

समाप्त

VIDEHA

विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका | ISSN 2229-547X | www.videha.co.in

मूँगा आ जालिम सिंह

बेतिया राजक प्रेम आ प्रतिशोधक गाथा

गजेन्द्र ठाकुर

गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादक, विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका (since 2000)

ISSN 2229-547X

© 2026; Gajendra Thakur/ Preeti Thakur;

गजेन्द्र ठाकुर सम्पादक, विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका (since 2000) ISSN 2229-547X

ई पोथी गजेन्द्र ठाकुर समग्रक अन्तर्गत संकलित अछि।

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक ISBN:978-93-5890-210-5

DESIGNED BY: AUM GAJENDRA THAKUR

उपक्रम : बेतिया राज

बेतिया राज — जतय राजपूत सिपाही आ दूधबंसी कन्या बीच एक दिन प्रेमक एकटा एहन डोरि बान्हल गेल जे जाति, कुल, आ राजदरबारक कुचक्र — सभकेँ चीरि कऽ अन्तमे घर धरि पहुँचल।

ई गाथा जालिम सिंह आ मूँगाक थिक — एकटा एहन प्रेमक, जकरा पाबए लेल एक कात राजाक क्रोध सहय पड़ल, दोसर कात बाघ-शिकारी महींससँ जूझय पड़ल। रोमांच, विश्वासघात, आ अन्तमे मिलन — तीनू एहि छोट गाथामे भरल अछि।

अध्याय १ : इनार लगक भेँट

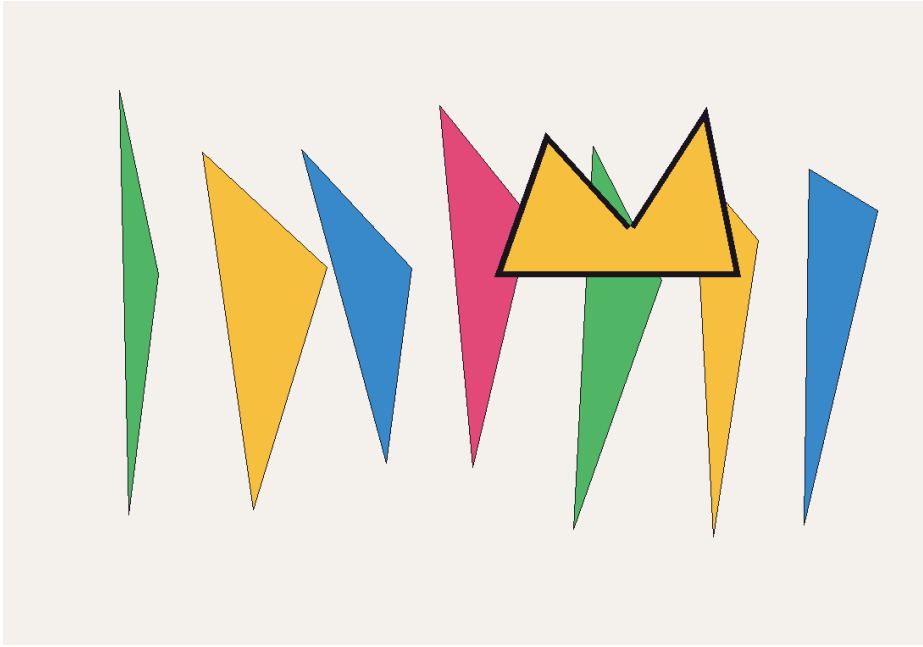

चित्र 1

बेतिया राजक सीमाक भीतर एकटा गाम छल, जतय भोरे-भोर इनार लग जनानी सभक भीड़ लागए — पानि भरबाक बेर। ओही भीड़मे एक दिन मूँगा सेहो छलीह — दूधबंसी घरेनक कन्या, रूपे-गुणे गामक चर्चाक विषय।

ओही रस्ता होइत जालिम सिंह आबि रहल छलाह — राजपूत, बेतिया राजाक सिपाही-सरदार, जिनक घोड़ाक टाप सुनिते रस्ता चाकर भऽ जाइत छल। इनार लग मूँगाकेँ पानि भरैत देखि जालिमक डेग अपने रुकि गेलनि।

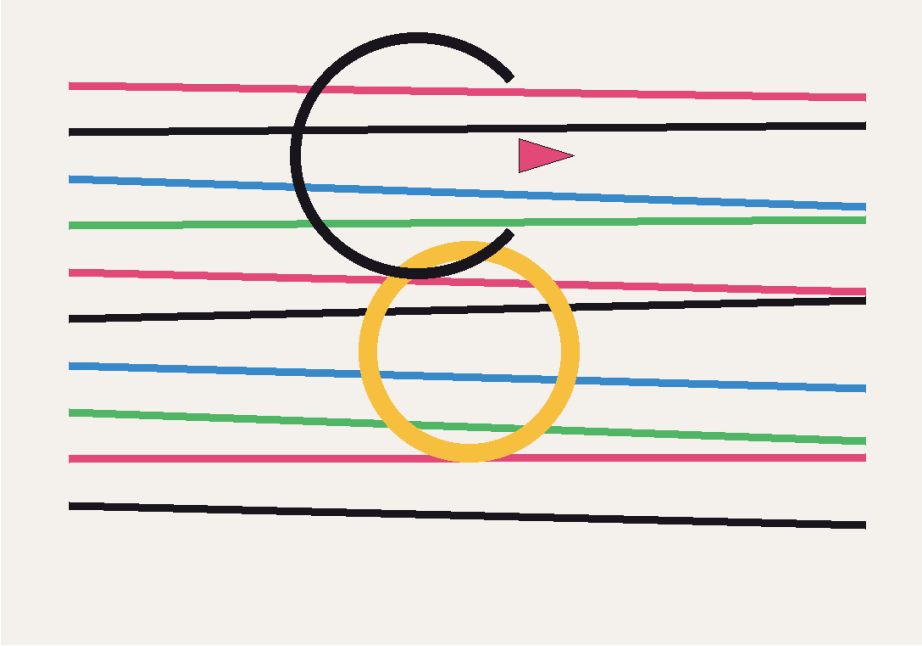

चित्र 2

पियास त' बहन्ना छल — असल त' आँखिये रुकल छलनि। जालिम आगाँ बढ़ि कऽ पानि पिआबए लेल प्रार्थना केलनि, जेना कोनो सामान्य बटोही पानि मँगैत हो।

मुदा मूँगा राजपूत सरदारक आँखिमे बसल ओ चमक चीन्हि गेलीह — आ ओतहि घैल छोड़ि तेजीसँ भागि गेलीह। भागब लाजक छल, कि डरक — कि दुनू — से मूँगा अपनो ठीक-ठीक नहि जनैत छलीह। मुदा जालिम ओतय ठाढ़ रहि गेलाह, आँखिमे ओ छवि , जे आब बिसरल नै हेतनि।

अध्याय २ : पृथ्वीपालक कुचक्र

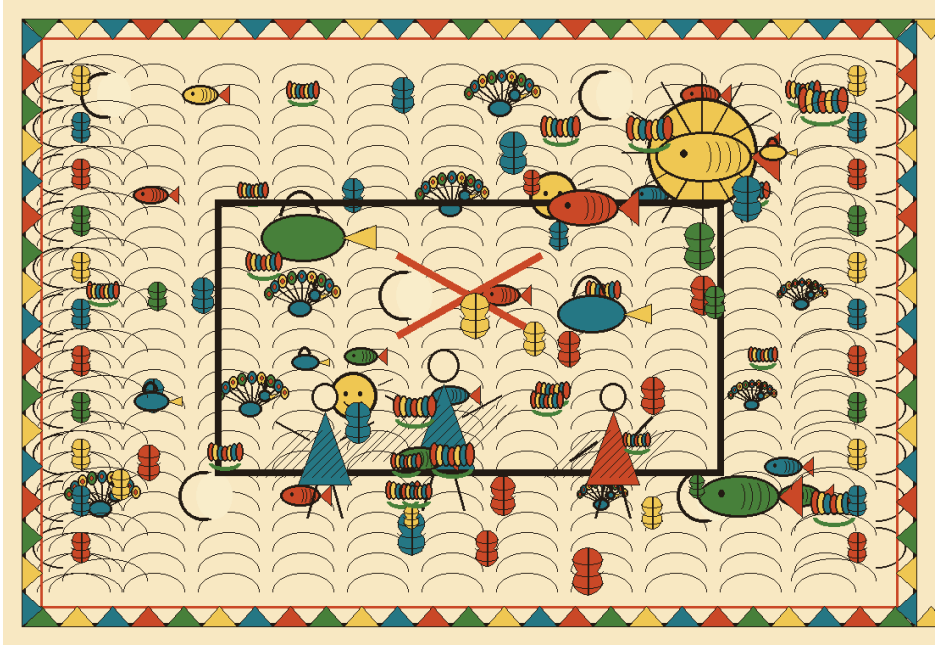

चित्र 3

बेतिया दरबारमे पृथ्वीपाल सिंह नामक एकटा मुँहलग्गू छल — राजाक कान लग सदिखन रहनिहार, मुदा मोनमे विष भरल। जालिम सिंहक बढ़ैत यश ओकरा आँखिमे कटैत छल — सरदारक पद, सिपाहीक श्रद्धा, आ आब मूँगाक चर्च सेहो।

पृथ्वीपाल जालिमक विरुद्ध कुचक्रमे लागल रहए — कखनो अफवाह, कखनो आरोप, कखनो चुगली। मुदा जालिमक एकटा असल संगी छल — मलाह पट्टू, जे जालिमक हर विपत्तिमे कान्हसँ कान्ह मिलओने ठाढ़ रहए।

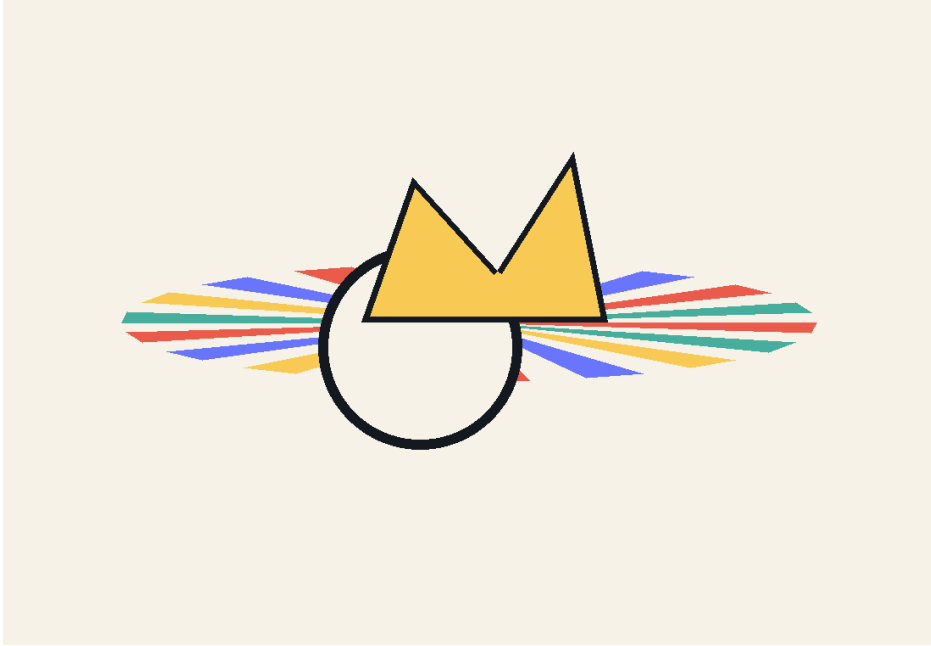

चित्र 4

एक बेर पृथ्वीपाल एकटा आक्रमण करबओलक — भाड़ाक लोक लगा कऽ, जालिमक विरुद्ध कोनो षड्यन्त्र रचबाक फिराकमे। मुदा पट्टू सतर्क छल। आक्रमणकारी सभ जखन धाबा बोललक, त' पट्टू असगरे सभटा हमलावरक मूड़ी काटि देलक — एकोटा नहि बाँचल।

ई विजय पट्टू आ जालिम लेल गौरवक बात छल, मुदा पृथ्वीपाल लेल आरो पैघ अपमान। आ अपमानित मनुष्यक जीह बिखाह भऽ जाइत छै — पृथ्वीपाल राजाक कान भरए लागल, अनर्गल गप, झूठ-साँच सभ मिलाकऽ — आ ओहिमे मूँगाक विषयमे सेहो अनर्गल बात जोड़ि देलक। राजा सुनि-सुनि जालिमपर खिसिया गेलाह।

अध्याय ३ : गुरु मौनी बाबा

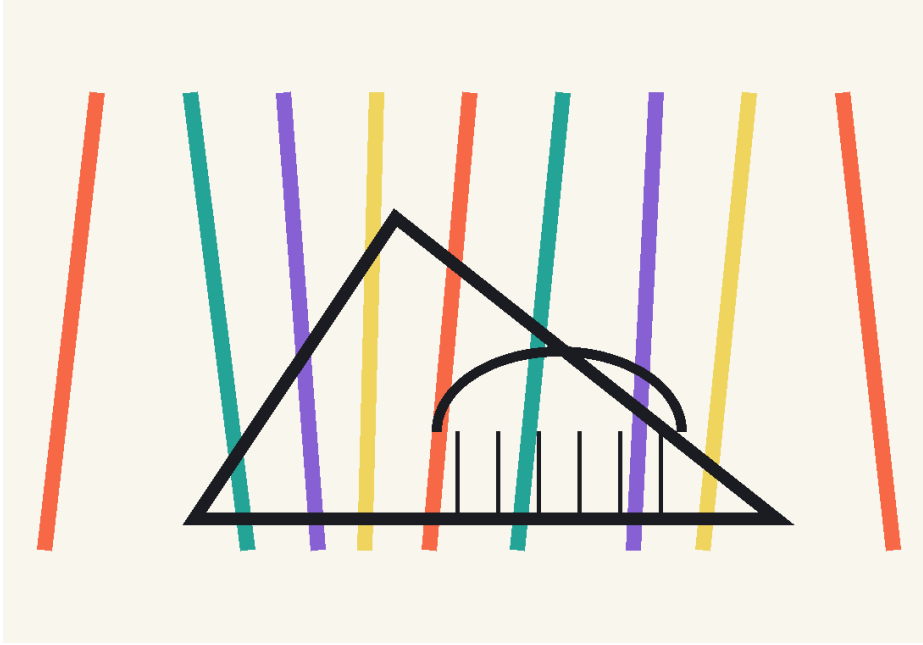

चित्र 5

राजाक अप्रसन्नताक खबरि जालिम धरि पहुँचल। एक दिस राजाक क्रोध, दोसर दिस मूँगाक प्रति बढ़ैत खिंचाव — जालिमक मोन दुविधामे पड़ि गेल।

एहि उधेड़बुनमे जालिम आ पट्टू गुरु मौनी बाबा लग पहुँचलाह — गामक ओ सिद्ध साधु, जिनक वचन गामक लोक वेदवाक्य मानैत छल। जालिम अपन मोनक बात कहलनि — मूँगाक प्रति खिंचाव, राजाक क्रोध, आ आगाँ की करी।

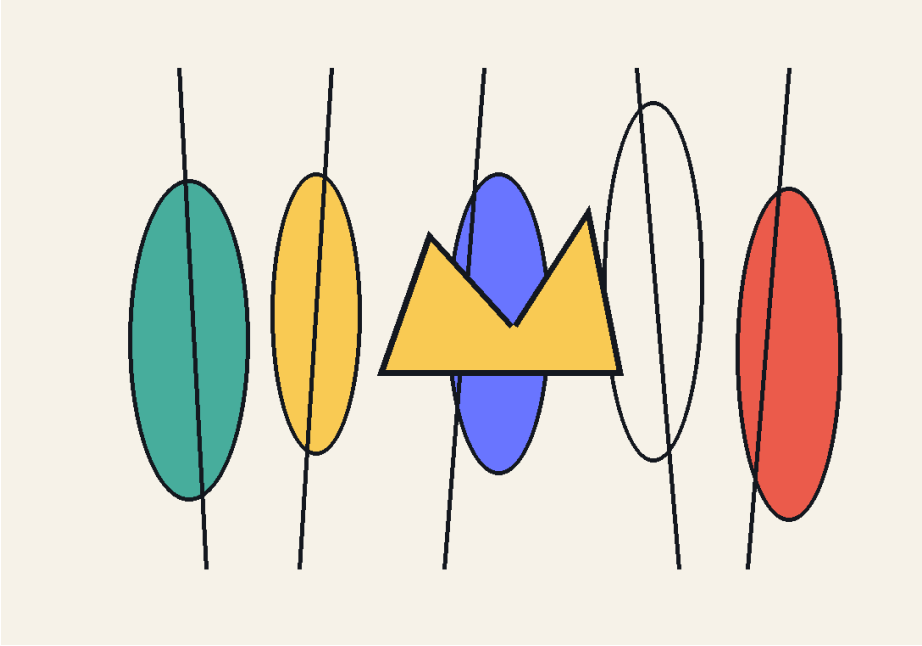

चित्र 6

मौनी बाबा किछु काल मौन रहलाह, फेर बजलाह — 'छोड़ि दे मूँगाक संग।' दुइ शब्द, मुदा जालिमक करेजमे बरछी जकाँ गड़ल। जालिम हतप्रभ रहि गेलाह — जइ साधुक वचन कहियो असत्य नहि होइत, से आइ हुनकर ई सलाह!

मुदा नियति साधुक वाणीसँ सेहो पैघ होइत अछि। जालिम मौन रहि गेलाह, ने हाँ कहलनि ने नहि — कारण करेज मानि नहि रहल छल जे जाहि छविसँ ओ बान्हल छथि, ओकरा छोड़ि सकैत छथि।

अध्याय ४ : पट्टूक बलिदान

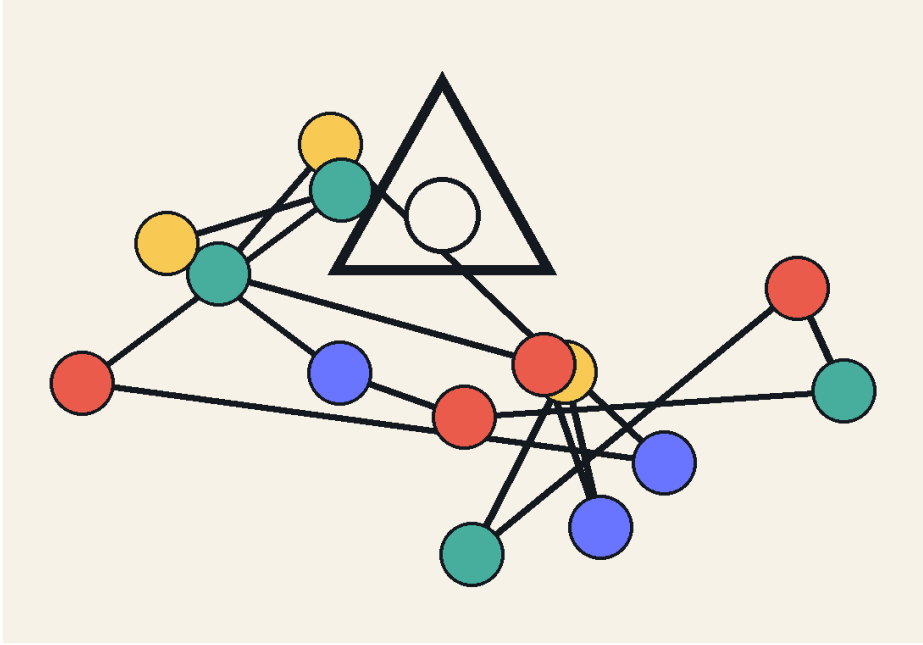

चित्र 7

पृथ्वीपालक क्रोध पट्टूक विजयसँ आरो भड़कि उठल छल। ओ बदलाक अवसर ताकए लागल। मौका भेटला पर ओ फेर एकटा चालि चललक — मुदा एहि बेर सोझे पट्टूक विरुद्ध।

पट्टू — जालिमक विश्वासपात्र, जे अपन स्वामीक सभ संकटमे ढाल बनैत छल — भवानी माताक नाम लऽ कऽ, धर्मक शपथ नेने, पृथ्वीपालक विरुद्ध सोझे भिड़ि गेल। संघर्षमे पट्टू पृथ्वीपालक खून कऽ देलक — विश्वासघातीक अन्त विश्वासघातीक हाथेसँ।

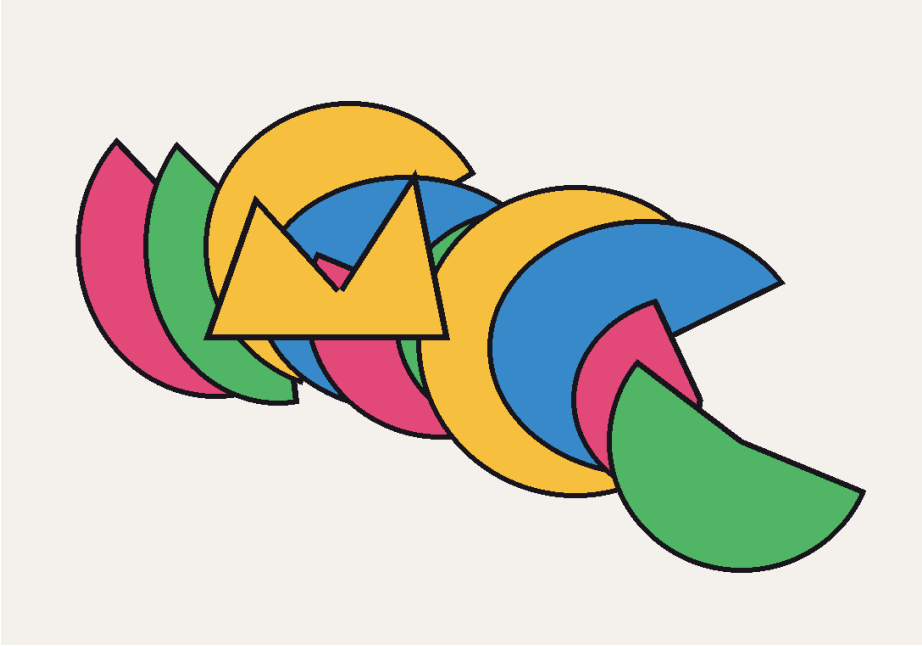

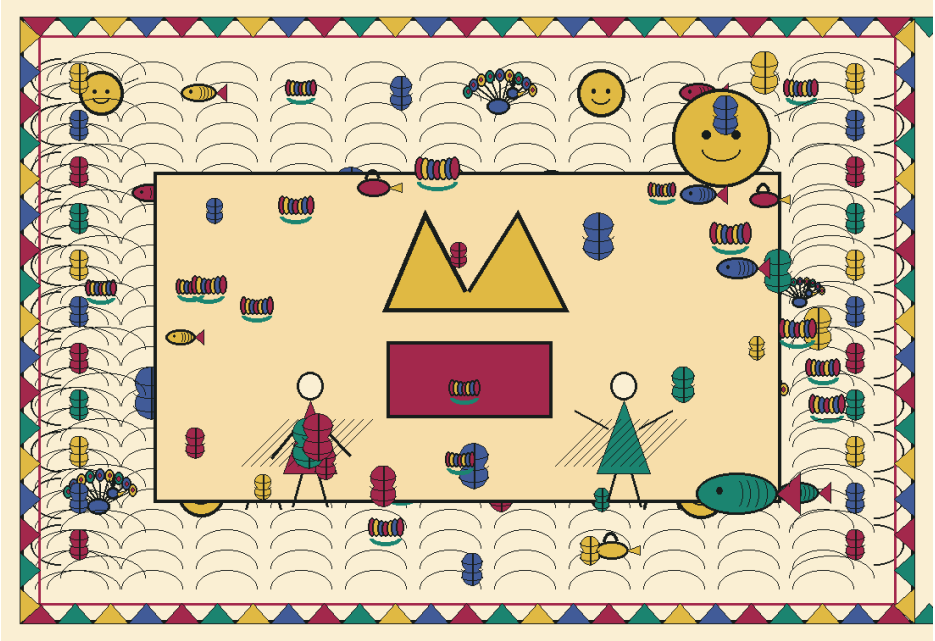

चित्र 8

मुदा पृथ्वीपालक लोक-लश्कर पट्टूकेँ घेरि लेलक। एकसर पट्टू कतेक काल लड़ैत? भीड़क आगाँ ओकरो प्राण गेल। जे मलाह जालिमक सभ विपत्तिमे ढाल बनल छल, से अन्तमे अपन स्वामीक नामपर प्राण दऽ देलक।

पट्टूक मृत्यु जालिमक करेजमे एकटा गहींर घाव छोड़ि गेल — दोस्तीक ई मोल जालिम जिनगी भरि नहि बिसरलाह। मुदा शोकक बीच एकटा आर खबरि आयल, जे जालिमक ध्यान दोसर दिस मोड़ि देलक — मूँगाकेँ बेतियाक बोनमे पठा देल गेल छल।

अध्याय ५ : बोनक कनुआ

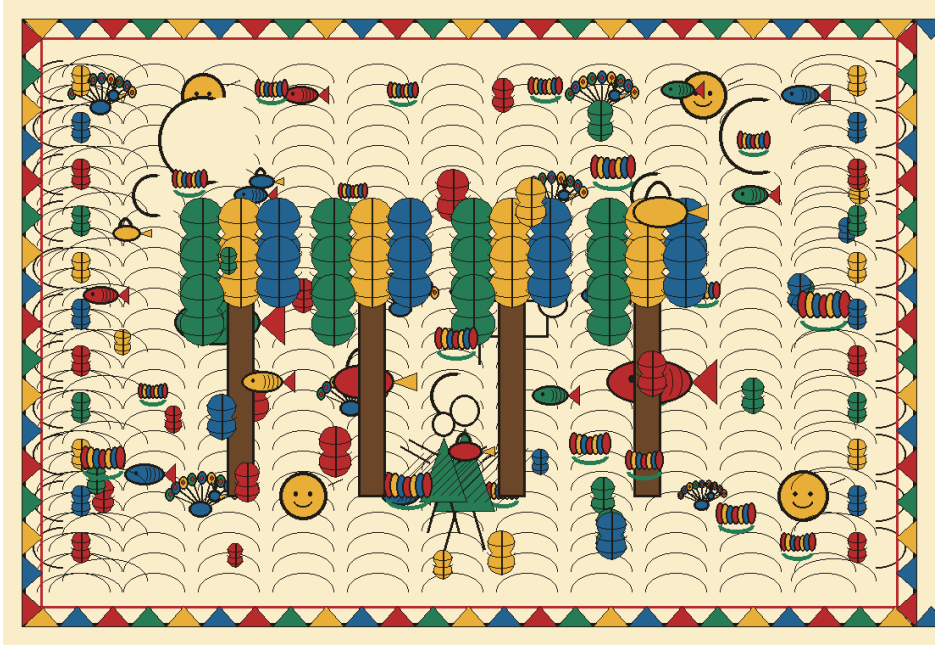

चित्र 9

मूँगाक भौजीक भाए छल कनुआ — बेतियाक घन बोनमे रहनिहार दुसाध, जकर देह-बल आ आहार दुनू लोकोत्तर छल। सवा मोन दूध आ एकटा खस्सी ओकर रोजीक खोराकी छल!

कनुआक सवारी सेहो साधारण नहि छल — ओ महींसपर चढ़ैत छल, आ ओ महींस सेहो कोनो साधारण जानवर नहि — बाघक शिकार करैवला महींस! एहन बल, एहन आहार, आ एहन सवारीक बीच कनुआ बोनमे राजा सन जिनगी जिबैत छल।

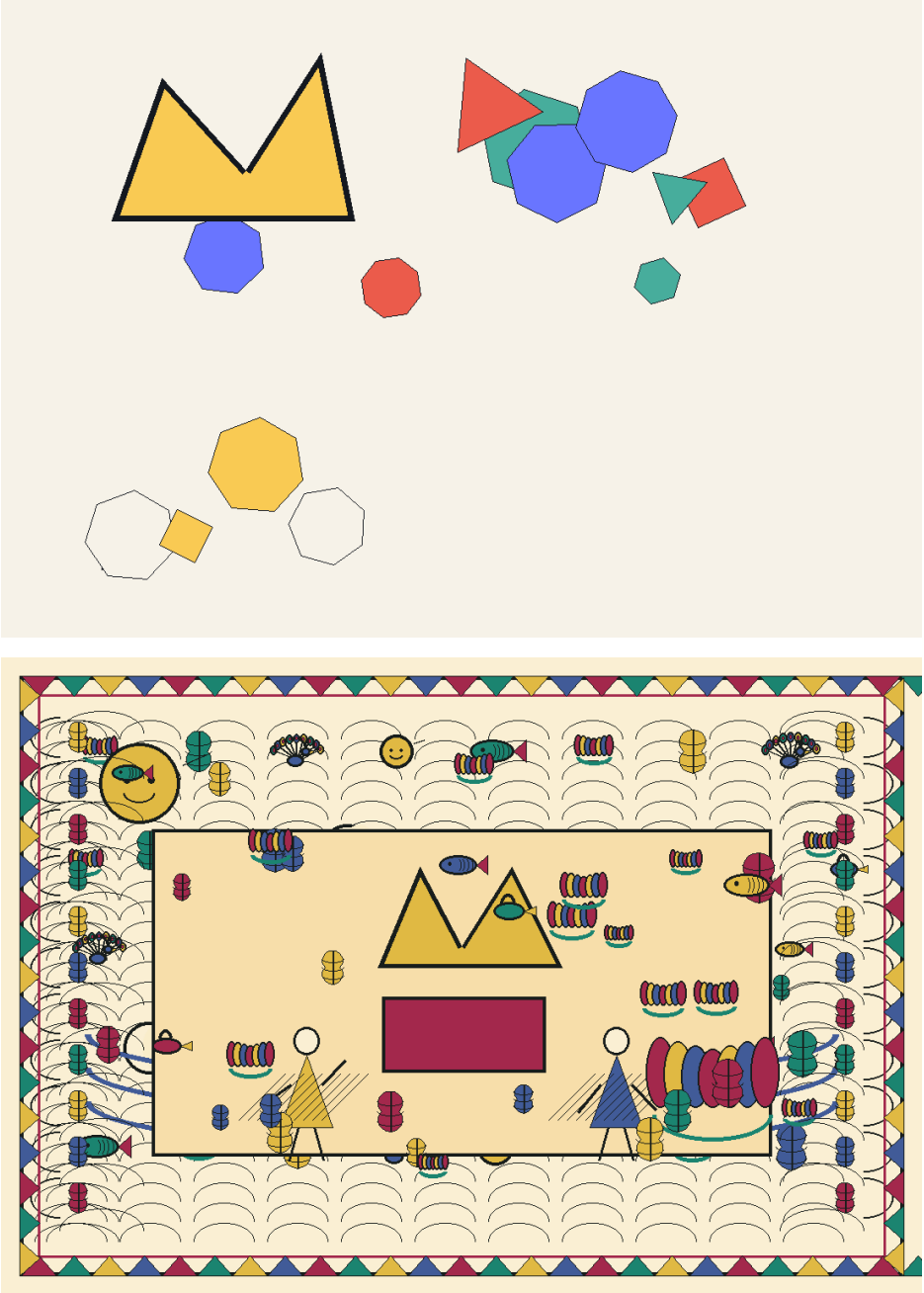

चित्र 10

मूँगाकेँ बेतियाक बोनमे कनुआ लग पठाओल गेल — कोनो कारणवश, जकर विस्तार गाथा नहि कहैत, मुदा जे स्पष्ट अछि, से ई जे मूँगा आब कनुआक संरक्षणमे छलीह, आ कनुआक अपन एकटा भयंकर रीति छल।

बोनक देवी लग मूँगाकेँ बान्हल गेल — आ कनुआ खाँड़ासँ ओकर मूड़ी काटबाक तैयारीमे छल। कोन कारण, कोन रीति-रिवाज एहि बलिक पाछाँ छल, से अस्पष्ट, मुदा खतरा साक्षात् छल — मूँगाक प्राण ओही क्षण खाँड़ाक धारपर टँगल छल।

अध्याय ६: मरण-द्वार पर युद्ध

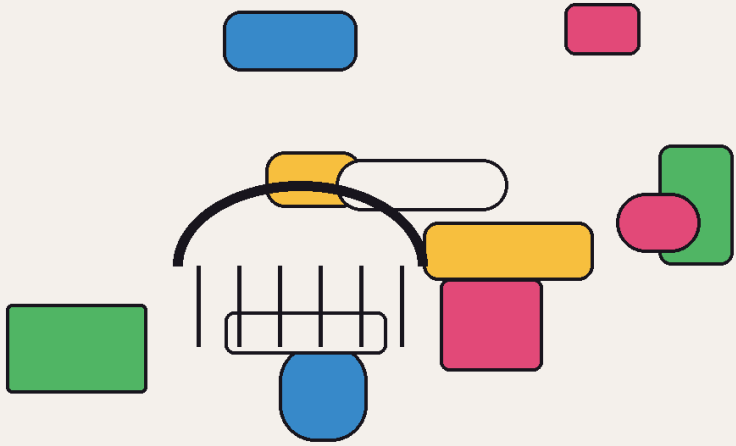

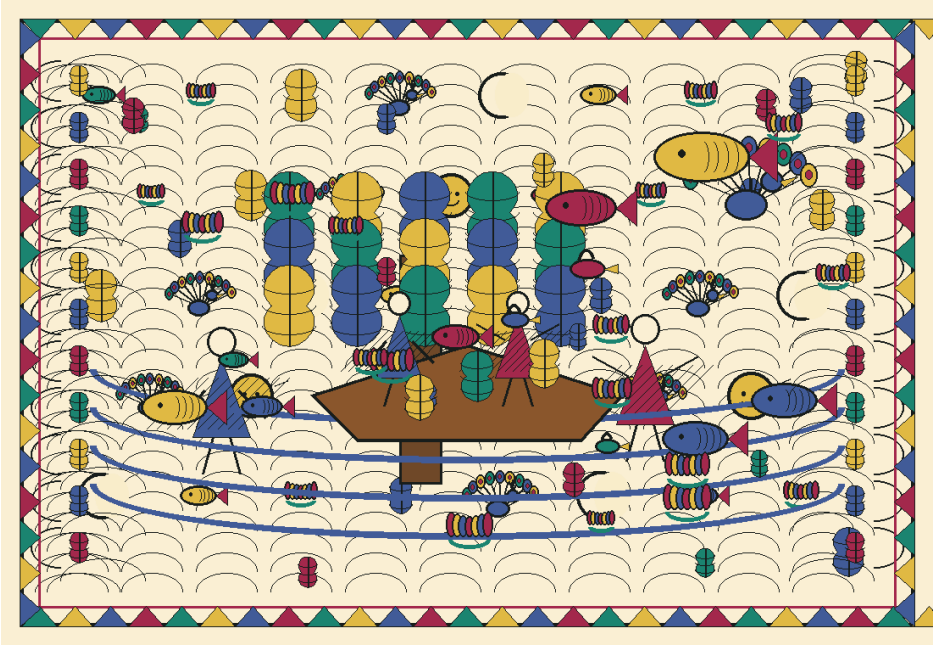

चित्र 11

ठीक ओही क्षण, जखन कनुआक खाँड़ा उठल, जालिम सिंह ओतय आबि गेलाह — कोनो अन्तःप्रेरणासँ, कोनो सूचनासँ, वा कोनो नियतिक खिंचावसँ, से गाथा नहि कहैत अछि, मुदा जालिमक आगमन ठीक ओही क्षण भेल जखन एक पल आरो देरी मूँगाक प्राण लऽ लितए।

जालिम भालासँ सोझे कनुआक महींसपर वार केलनि — बाघ-शिकारी महींस, जकरासँ बड़-बड़ शिकारी डरथि, से जालिमक एक्के वारमे घायल भऽ खसि पड़ल। महींसक खसब कनुआक शक्तिक आधा हरण जकाँ छल।

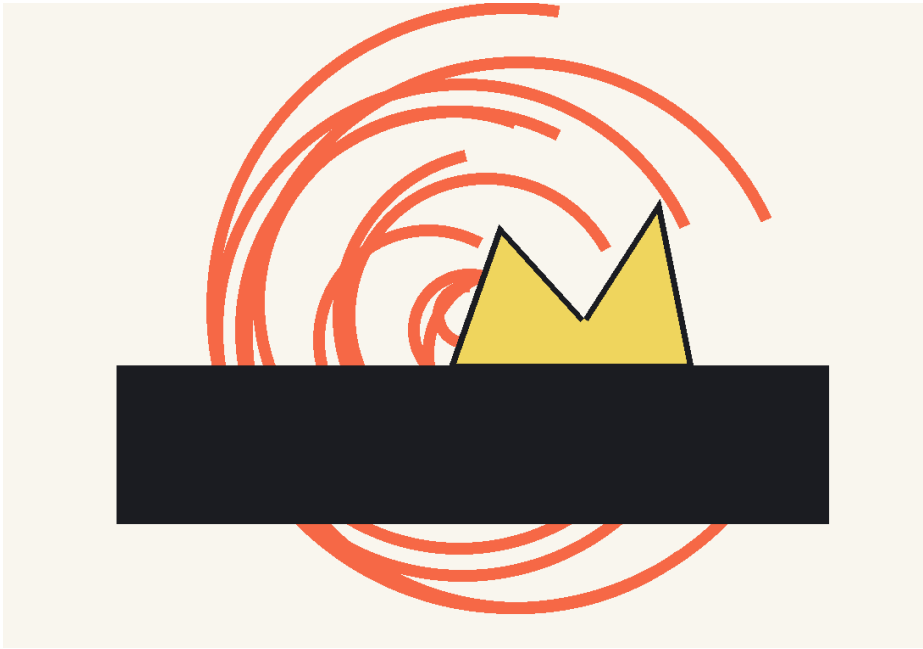

चित्र 12

फेर जालिम आ कनुआक बीच सोझ युद्ध भेल — खाँड़ा आ भाला, बोनक देवीक सोझाँ, मूँगाक प्राणक रक्षामे। कनुआ बलवान छल, मुदा जालिमक क्रोध आ प्रेम दुनू मिलि कऽ ओहि दिन ओकरा अजेय बना देने छल।

युद्ध अन्तमे कनुआक मृत्युसँ खतम भेल। मूँगा जीवित बाँचि गेलीह — मुदा जीवन बचएबाक दाम एकटा जिनगी छल। जालिम मूँगाक बन्हन खोलि, हाथ पकड़ि, ठाढ़ केलनि — आ ओही बोनमे, ओही क्षण, दुनूक भाग्य सदा लेल जुड़ि गेल।

अध्याय ७: शोनितक सिनूर

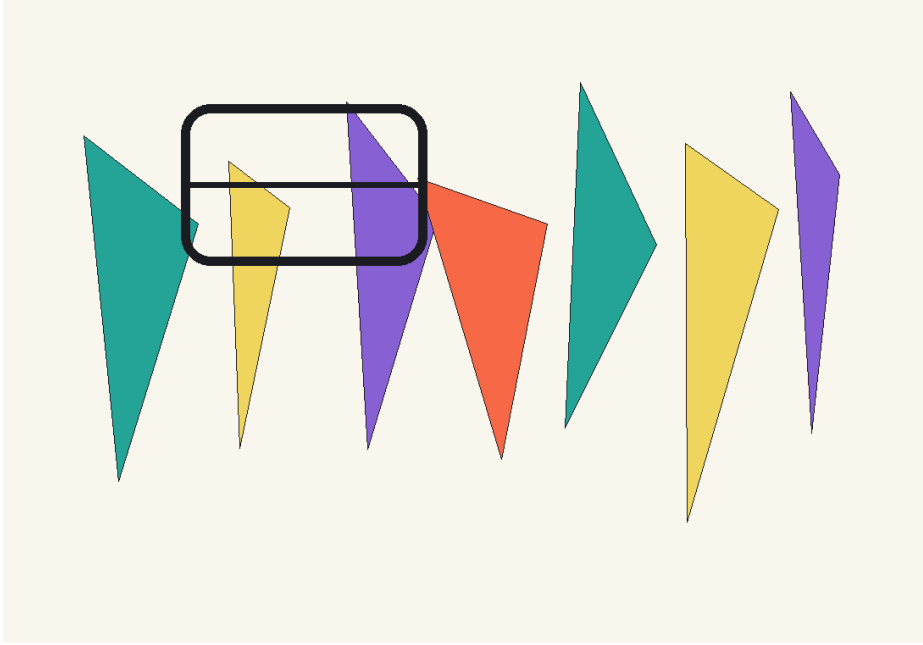

चित्र 13

बोनक ओही ठाम, जतय मृत्युक साँस अखनहुँ बसल छल, जालिम मूँगाकेँ सिनूर देलनि। पुरहित (जे कोनो रूपे ओतय उपस्थित छल, वा मौनी बाबाक आशीषे पुरहितक काज कऽ देलक) आशीष देलक — विधिपूर्वक, यथासम्भव।

जालिम मूँगाकेँ अपन गाम अनलनि आ सभक सोझाँ घोषणा केलनि — 'ई हमर क्षत्राणी छी।' राजपूत सरदारक मुँहसँ एहि उद्घोषणाक अर्थ स्पष्ट छल: जातिक देवाल आब हुनका लेल कोनो अर्थ नहि राखैत छल।

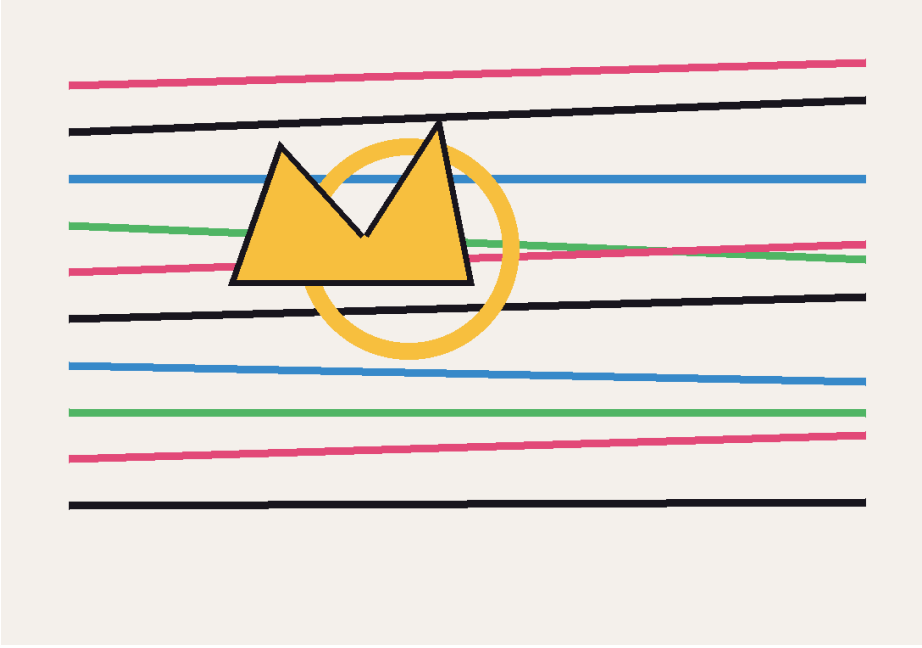

चित्र 14

मुदा समाज एतेक सहजतासँ नहि झुकैत। जालिमक भाए कुँअरकेँ भेद पता लागि गेल जे मूँगा दूधबंसी (दुसाध) जातिक छथि — राजपूतक घरमे आन जातिक कनियाँ! ई खबरि घरक भीतर आगि बनि पसरि गेल।

मुदा जालिमक माए — कठोर परिस्थितिमे सेहो — बेटाक संग देलनि। माएक स्वीकृति एहि नव गृहस्थीक पहिल आधार बनल, भलहिं घरक बाँकी लोक असहमत रहए।

अध्याय ८: भाइक विद्रोह

चित्र 15

माएक स्वीकृतिसँ जालिम आ मूँगाक जिनगी किछु दिन चैनसँ बीतल। मुदा कुँअर आ आन भाइ सभक भीतर ओ असहमति सुलगैत रहल — कारण जाति-भेदक जड़ि समाजमे एतेक गहींर होइत अछि जे एक माएक स्वीकृतिसँ ओ उखड़ैत नहि छै।

एक दिन भाइ सभ जालिमपर आक्रमण कऽ देलक — अपनहि घरमे, अपनहि रक्तसँ। ई सभसँ करुण मोड़ छल एहि गाथाक — प्रेमक दुश्मन बाहरी शत्रु नहि, अपन घरक लोक निकलल।

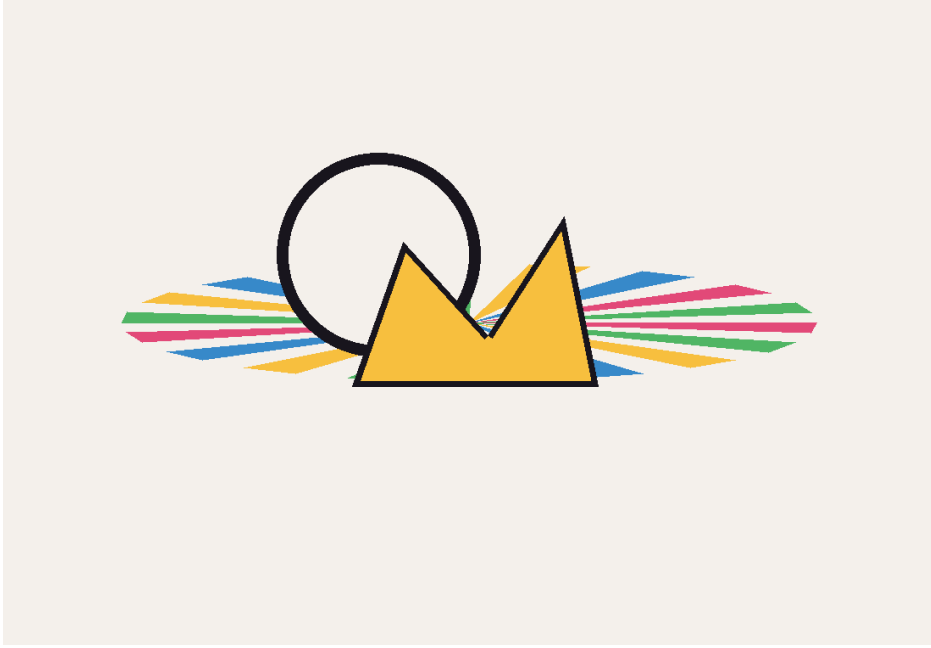

चित्र 16

आक्रमणक बाद स्थिति एतेक बिगड़ल जे भाइ सभ भागि गेलाह — जालिमसँ डरि कऽ, वा अपमानसँ, से स्पष्ट नहि। मुदा एहि उथल-पुथलमे जालिम घायल भऽ गेलाह — भाइयेक हाथसँ लागल घाव, जकर पीड़ा शारीरिकसँ बेसी मानसिक छल।

मूँगा अपन घायल वरकेँ लऽ कऽ जालिमक दोस भैरवक घर दिस बिदा भेलीह — जतय शाइत शरण आ सुरक्षा भेटितनि। मुदा रस्ता नमहर छल, आ जालिमक हालति क्षण-क्षण नाजुक भऽ रहल छल।

अध्याय ९: वैद्यक द्वार

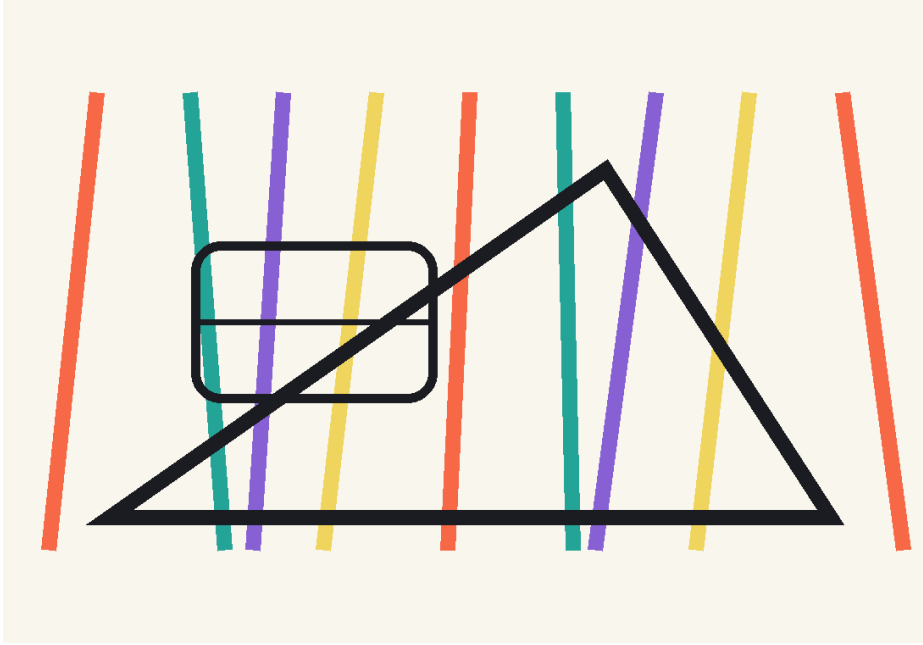

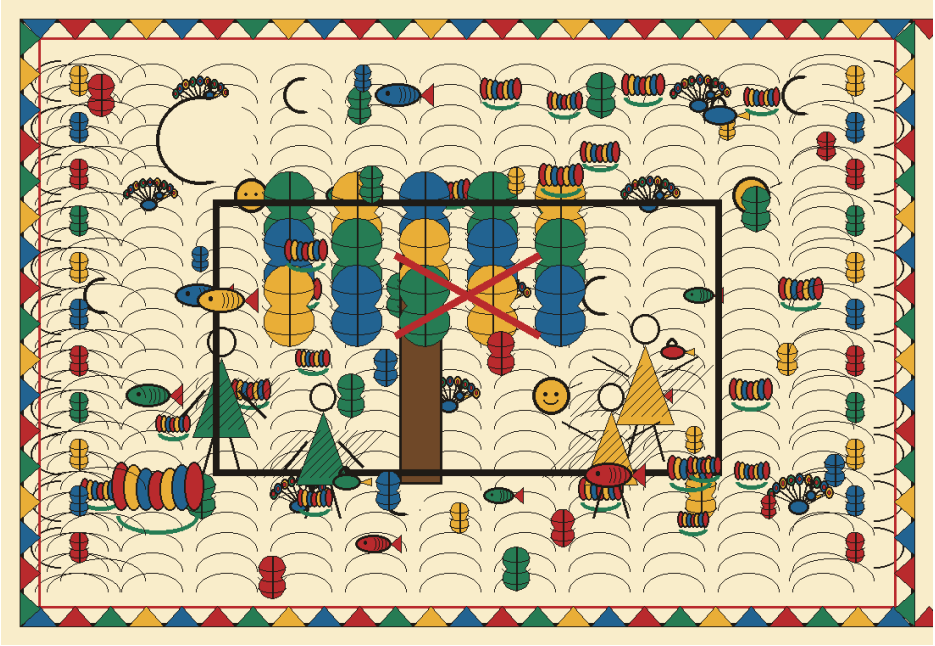

चित्र 17

रस्तेमे जालिमक घाव बढ़ैत गेल — रक्त, दर्द, आ थकानसँ ओ लटपटाए लगलाह। मूँगा एक क्षणक लेल सेहो हिम्मत नहि हारलीह। ओ रस्तामे एकटा वैद्यक द्वार लग रुकलीह।

वैद्य जालिमक हालति देखि तुरत मरहम-पट्टी शुरू केलक। घाव गहींर छल, मुदा वैद्यक हाथमे जीवन-रेखा छल — आस्ते-आस्ते रक्तस्राव थमल, दर्द कमल, आ जालिमक साँस स्थिर भेल।

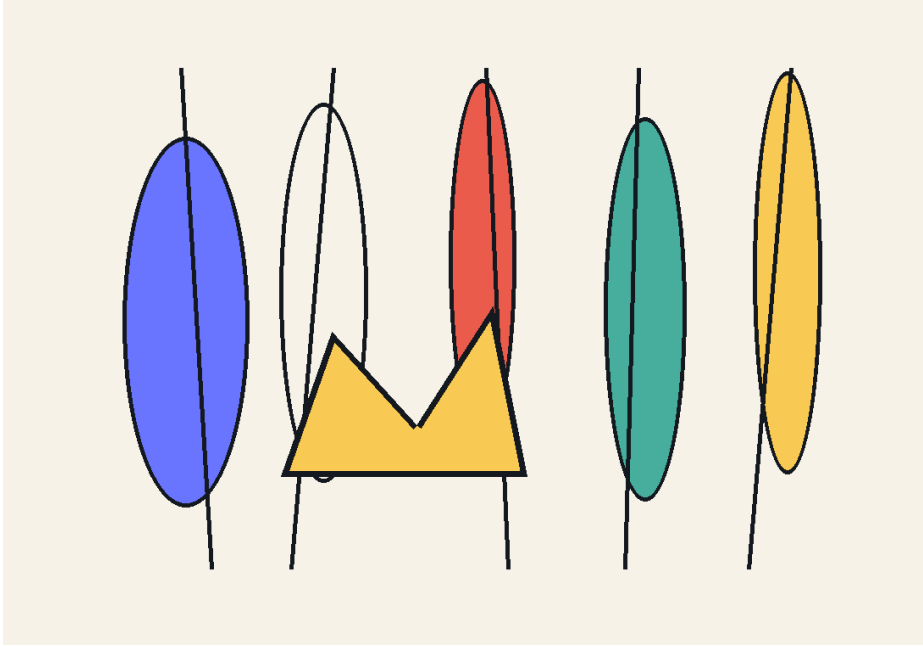

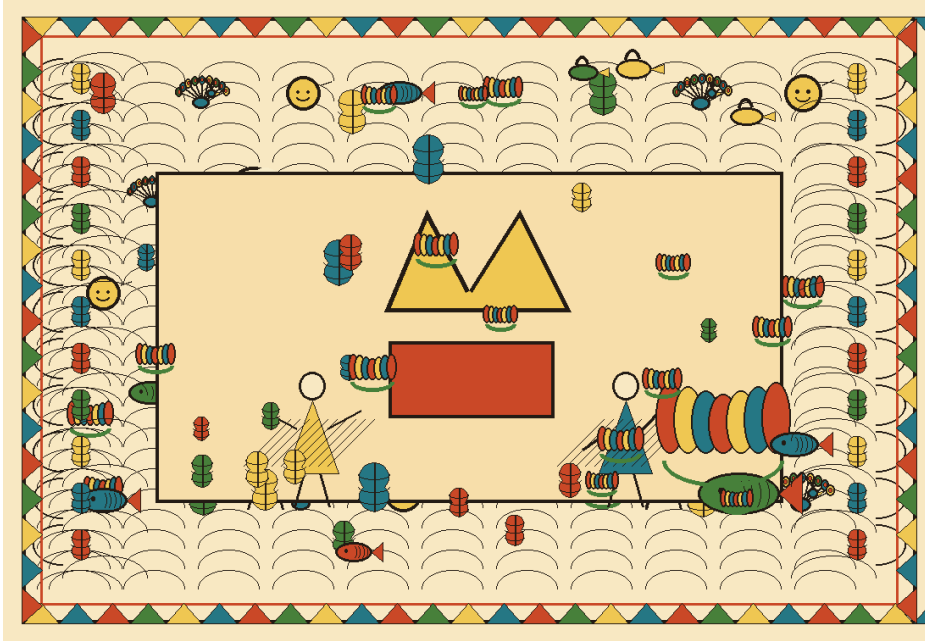

चित्र 18

मूँगा ओतय रातिभरि जागल रहलीह — पतिक कातमे, वैद्यक सभ संकेतपर सतर्क। जे कन्या इनार लग पानि भरैत भागल छलीह, से आब पतिक प्राणरक्षामे असगरे ठाढ़ छलीह — गाथाक ई परिवर्तन एकर सभसँ बलगर पल थिक।

वैद्यक सेवा आ मूँगाक अटूट देखभालसँ जालिम आस्ते-आस्ते सम्हरए लगलाह। संकट टरल — मुदा एहि बीच एकटा आर खबरि ओतय पहुँचल, जकर प्रतीक्षा मूँगा शाइत सभसँ बेसी करैत छलीह।

अध्याय १० : घर घुरब

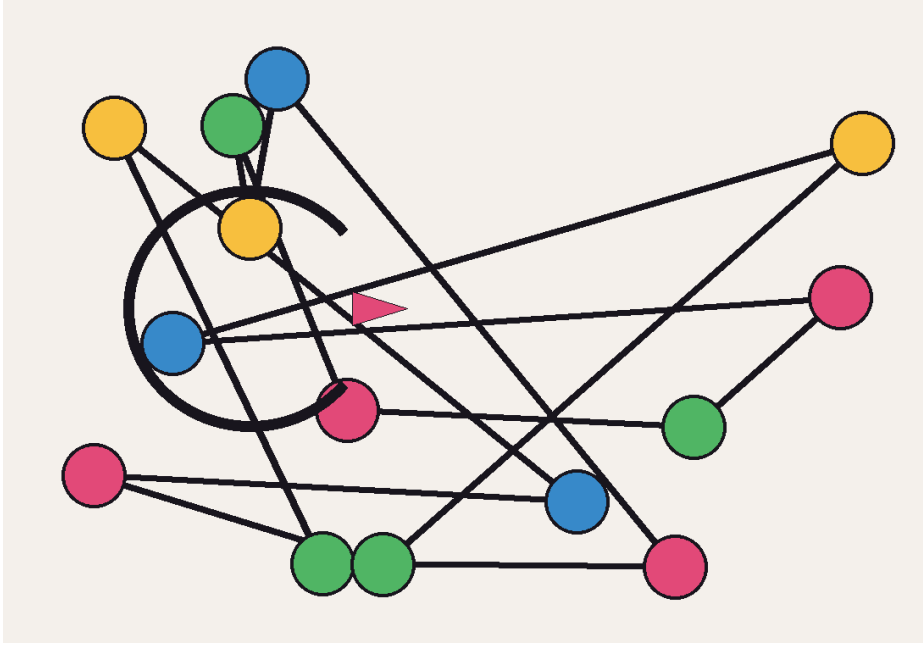

चित्र 19

कनैत-कनैत मूँगाक माए आ भाइ सभ ओतय आबि गेलाह — पश्चातापसँ भरल, आ मूँगा-जालिमक प्रेमक दृढ़ताक आगाँ अन्ततः झुकल।

जे भाइ किछु दिन पहिने अपने हाथसँ जालिमपर वार केने छलाह, से आइ हुनकर घा’ देखि कानि रहल छलाह। पश्चाताप कहियो-कहियो एतेक गहींर होइत अछि जे शब्द ओकरा बहन्ना नहि दऽ पबैत अछि।

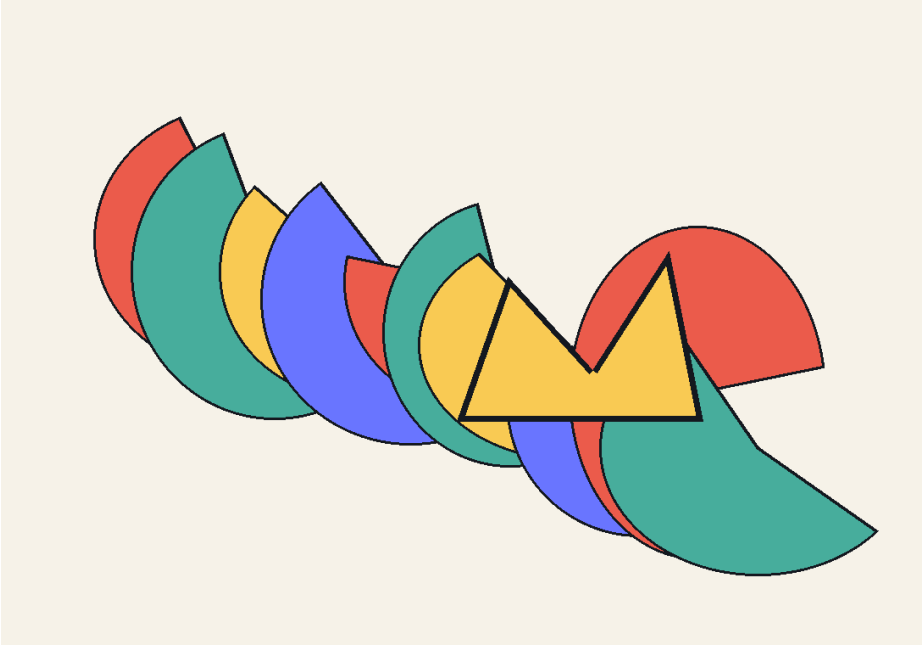

चित्र 20

माए आ भाइ सभ जालिम आ मूँगा दुनूकेँ प्रेमसँ घर लऽ गेलाह — आब कोनो विरोध नहि, कोनो जाति-भेदक बहन्ना नहि। जे रक्त-सम्बन्ध एक दिन तरुआरि उठा चुकल छल, से आब अपन गलतीक प्रायश्चित करैत प्रेमसँ स्वागत करैत छल।

घर पहुँचि सभ हँसी-खुशी रहए लगलाह — ओ घर, जतय एक दिन आक्रमण भेल छल, ओतय आब मिलनक उत्सव छल। ई गाथाक अन्त थिक — रोमांच, विश्वासघात, आ बलिदानक बादक ओ मिठास, जे खाली असली प्रेम आ अटूट धैर्यसँ भेटैत अछि।

अध्याय ११: प्रेमक विजय

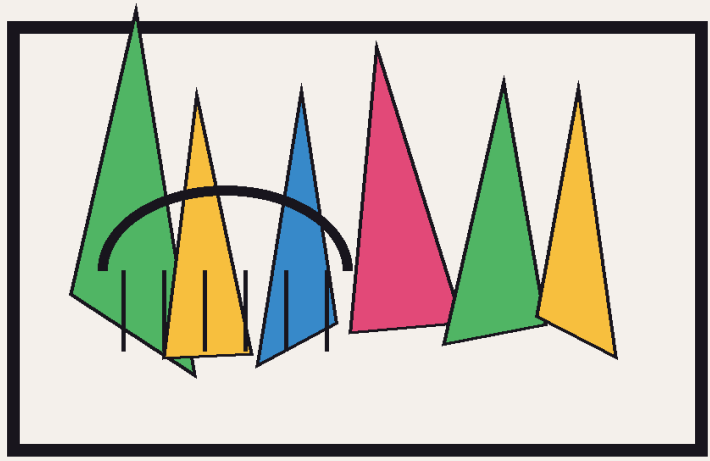

चित्र 21

मूँगा आ जालिम सिंहक ई गाथा बेतिया राजक इतिहासमे एकटा एहन अध्याय थिक जतय जाति आ कुलक देवाल प्रेमक आगाँ हारि गेल — मुदा हारल बिनु संघर्षक नहि।

एहि गाथामे रोमांच छल — इनार लगक पहिल भेँट, पृथ्वीपालक कुचक्र, पट्टूक बलिदान; भावना छल — जालिमक दुविधा, मूँगाक साहस, माएक स्वीकृति; आ दुखक छाह सेहो — पट्टूक मृत्यु, कनुआक वध, भाइक विद्रोह, जालिमक घा’।

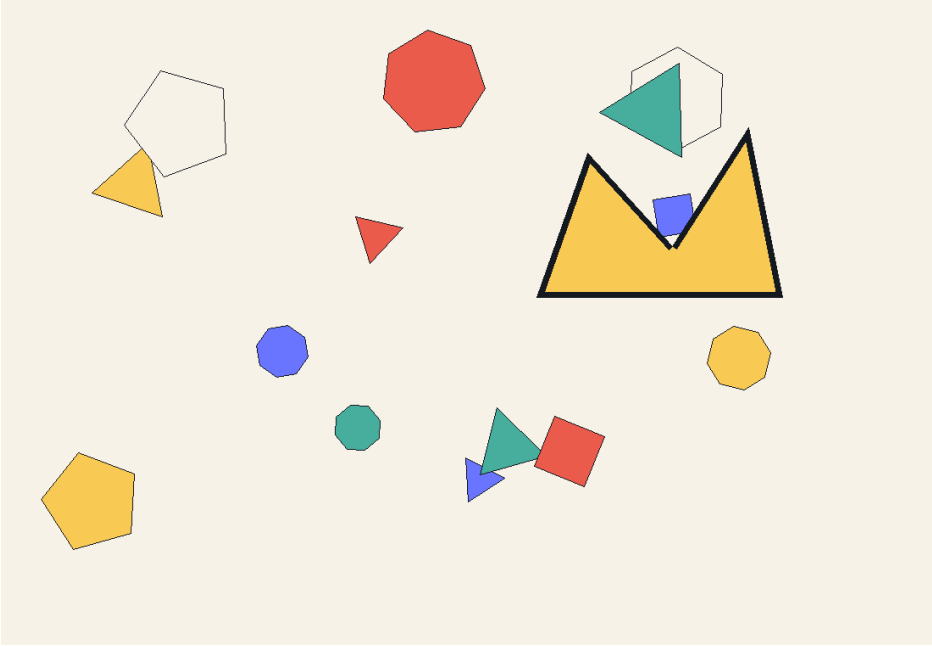

चित्र 22

मुदा एहि सभ घटनाक बीच एकटा डोरी अटूट रहल — मूँगा आ जालिमक प्रेम, जे सभ विपत्तिमे आरो दृढ़ भेल। ने राजाक क्रोध, ने बोनक खतरा, ने घरक विद्रोह — किछुओ एहि प्रेमकेँ तोड़ि नहि सकल।

आइयो बेतियाक लगपास एहि गाथाक स्मृति लोकगीतमे जीवित अछि — ओ गाथा, जे कहैत अछि: प्रेम जँ साँच हो, त' ओ इनार लगक एकटा साधारण भेँटसँ शुरू भऽ कऽ, तरुआरि आ खाँड़ाक बीचसँ होइत, अन्तमे घरक आँगन धरि पहुँचिये जाइत अछि।

समाप्त

VIDEHA

विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका | ISSN 2229-547X | www.videha.co.in

बड़ सुख सार पाओल तुअ तीरे

बोधि कायस्थक गंगा-लाभ आ विद्यापतिक अमर पद

गजेन्द्र ठाकुर

गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादक, विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका (since 2000)

ISSN 2229-547X

© 2026; Gajendra Thakur/ Preeti Thakur;

गजेन्द्र ठाकुर सम्पादक, विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका (since 2000) ISSN 2229-547X

ई पोथी गजेन्द्र ठाकुर समग्रक अन्तर्गत संकलित अछि।

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक ISBN:978-93-5890-210-5

DESIGNED BY: AUM GAJENDRA THAKUR

उपक्रम: निष्कलंक जीवन

मिथिलाक राजाक दरबारमे रहथि बोधि कायस्थ — एकटा एहन व्यक्ति, जकर सम्पूर्ण जीवन नैतिकता आ भक्तिक आदर्श छल। ई गाथा सादगी, सत्यनिष्ठा, आ अन्ततः मोक्षक थिक — एहन मोक्ष, जे स्वयं गंगा माय अपन तट तोड़ि प्रदान केलनि।

ई घटना एतेक महत्वपूर्ण छल जे विद्यापतिसँ पूर्वक विद्वान् ज्योतिरीश्वर एकरा अपन संस्कृत ग्रंथ पुरुष-परीक्षामे वर्णित केलनि, आ स्वयं विद्यापति एहिपर अपन प्रसिद्ध मैथिली पद 'बड़ सुख सार पाओल तुअ तीरे' रचलनि — साहित्य आ भक्तिक ई संगम मिथिलाक सांस्कृतिक धरोहरक अमूल्य रत्न थिक।

अध्याय १: निष्कलंक कायस्थ

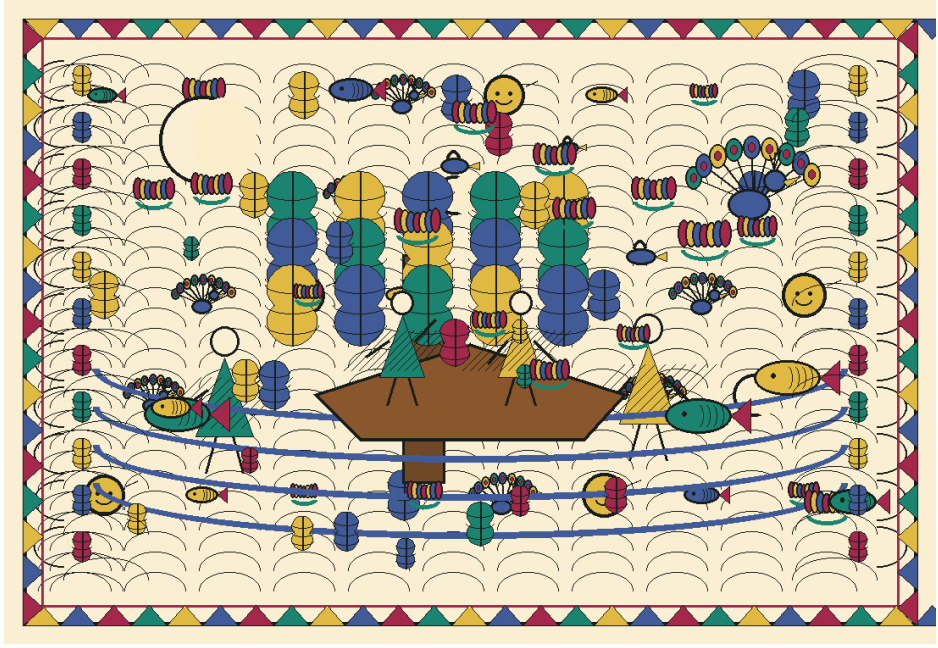

चित्र 1

मिथिलाक राजाक दरबारमे बोधि कायस्थ सेवारत छलाह। राजा हुनका दरमाहा देथिन्ह, जाहिसँ हुनकर गुजर-बसर होइत छलनि — साधारण, मुदा सम्मानजनक जीवन।

बोधि कायस्थक चरित्र असाधारण छल — दोसराक प्रति हिंसा, दोसराक स्त्री वा धनक लालसा, एहि सभसँ ओ भरि जन्म दूर रहलाह। एहन निष्कलंक व्यवहार एकटा दरबारी सेवकक लेल दुर्लभ गुण छल, जतय प्रलोभन आ शक्तिक निकटता स्वाभाविक छल।

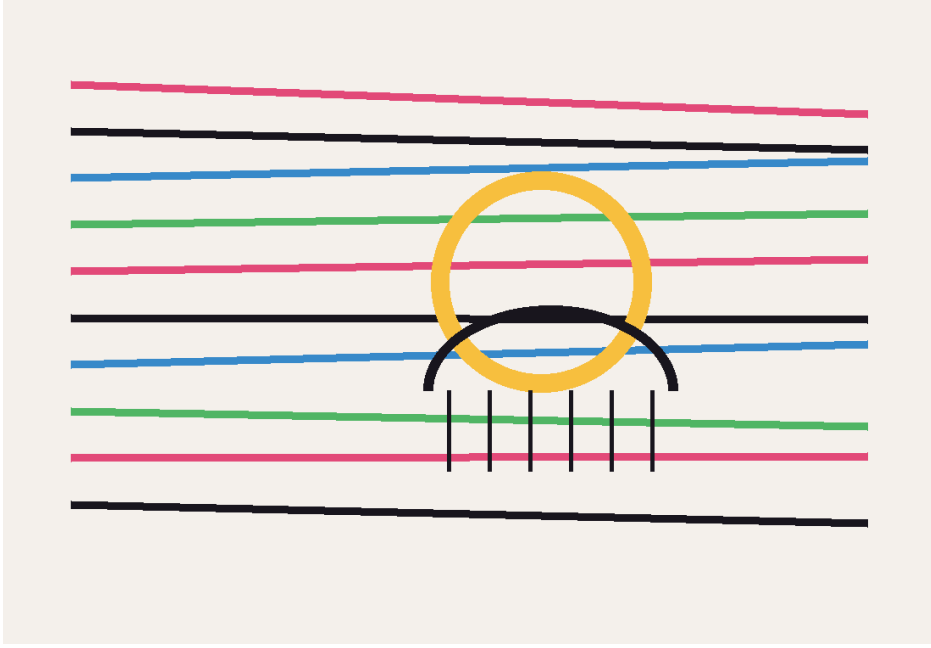

चित्र 2

आजीविकासँ अतिरिक्त जे राशि हुनका भेटनि, से दान-पुण्यमे खर्चा भऽ जाइत छलनि — बोधि कायस्थ अपन लेल संग्रह नहि करैत छला, अपितु आवश्यकतासँ बेसी सम्पत्तिकेँ समाजक सेवामे लगबैत छला।

ओ भोलाबाबाक भक्त छलाह — गहींर आस्था आ नियमित पूजा-अर्चनासँ भरल जीवन। ई भक्ति हुनक सम्पूर्ण अस्तित्वक आधार छल, जकर फल आगाँ चलि कऽ अद्भुत रूपमे प्रकट होएत।

अध्याय २: गंगा-लाभक निर्णय

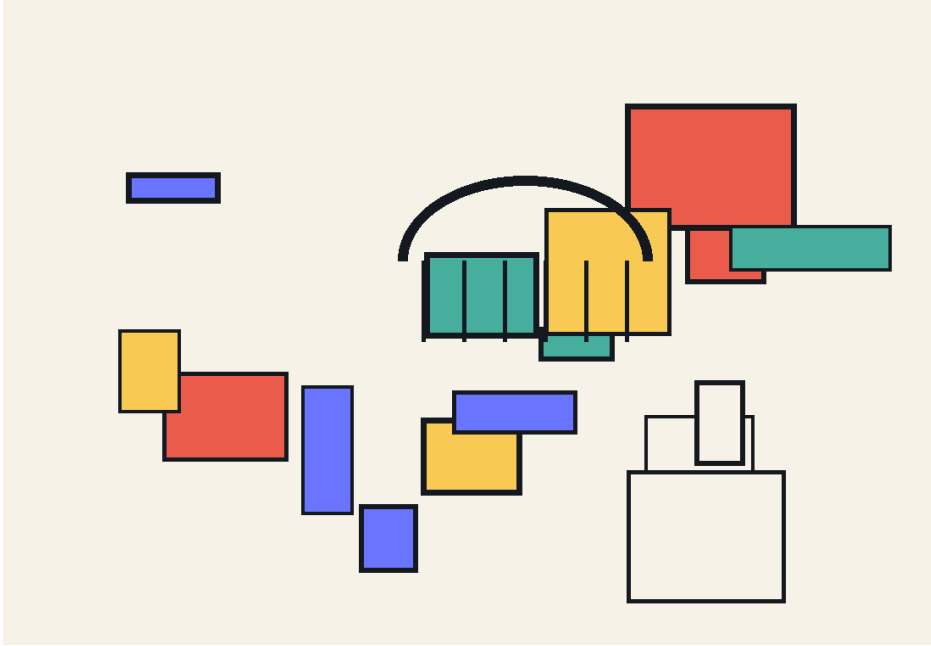

चित्र 3

जेना सभकेँ बुढ़ापा अबैत छै, तहिना बोधि कायस्थक मृत्युक समय सेहो निकट अएलनि। जीवनक अन्तिम चरणमे, ओ एकटा महत्वपूर्ण निर्णय लेलनि — घर-द्वार छोड़ि गंगा-लाभ- गंगातटपर देहत्याग, जे मोक्षदायी मानल जाइत अछि- करबाक लेल घरसँ निकलि गेलाह।

ई निर्णय बोधि कायस्थक गहींर आध्यात्मिकताक प्रमाण छल — सांसारिक बन्धनसभकेँ त्यागि, अन्तिम समयमे ईश्वरक शरणमे जएबाक इच्छा। मिथिलाक धार्मिक परम्परामे गंगा-लाभ एकटा उच्च आध्यात्मिक लक्ष्य मानल जाइत अछि।

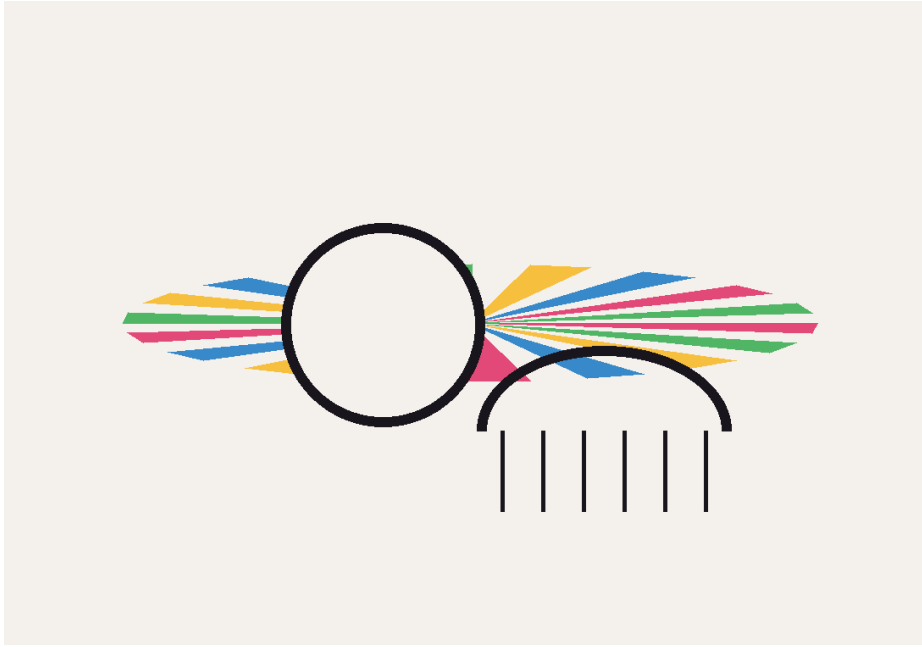

चित्र 4

बोधि कायस्थ अपन दीर्घकालीन सेवा, अपन परिवार, अपन दरबारी जीवन — सभटा पाछाँ छोड़ि, गंगाक दिशामे बिदा भेला। ई यात्रा शारीरिक रूपसँ कठिन, मुदा आध्यात्मिक रूपसँ पूर्ण संकल्पित छल।

चलैत-चलैत ओ गंगा-तटक निकट पहुँचला — मुदा जीवनक अन्तिम परीक्षा अखनहुँ बाँकी छल, जे हुनक श्रद्धाक चरम परीक्षा लेत।

अध्याय ३: गंगाकेँ सम्बोधन

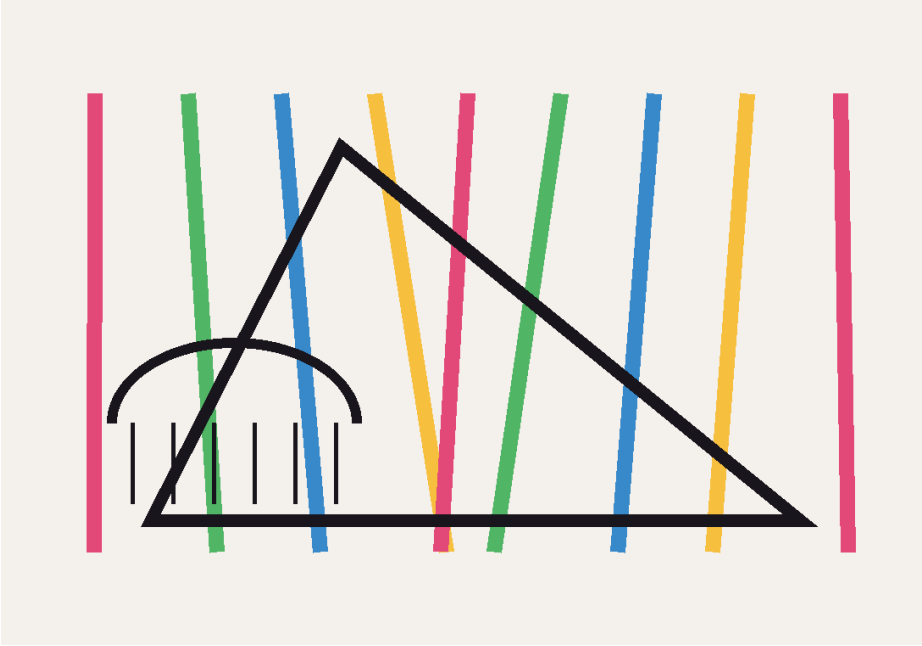

चित्र 5

जखन गंगा धार अदहा कोसपर छलीह, तखन बोधि कायस्थ एकटा साहसिक कार्य केलनि — परीक्षाक लेल ओ गंगाकेँ सम्बोधित कऽ अपनाकेँ पवित्र करबाक अनुरोध केलनि।

ई कार्य असाधारण छल — बोधि कायस्थ शारीरिक रूपसँ गंगाक तट धरि नहि पहुँचल छलाह, मुदा हुनकर श्रद्धा एतेक दृढ़ छल जे ओ दूरहिसँ गंगा मायकेँ पुकारि सकैत छला, अपन विश्वासक परीक्षा करैत।

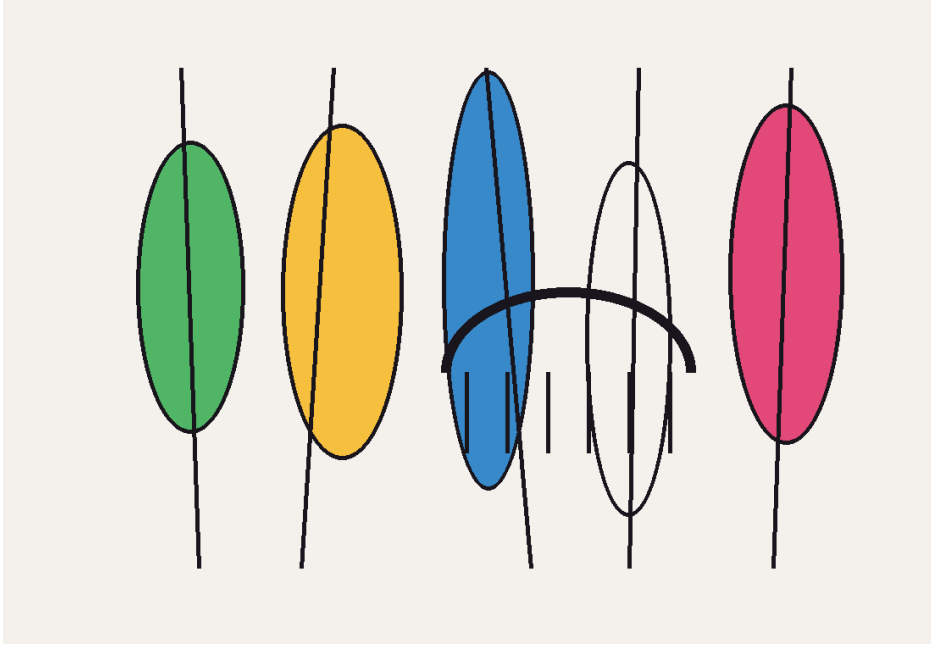

चित्र 6

ई सम्बोधन कोनो अहंकार वा दुस्साहस नहि छल — अपितु एकटा पूर्ण समर्पित भक्तक अन्तिम, निश्छल याचना, जे अपन सम्पूर्ण जीवन धर्मपरायणतामे बितओने छला, आ आब गंगा मायक कृपाक अन्तिम आशामे छला।

ई क्षण बोधि कायस्थक जीवनक सभसँ महत्वपूर्ण परीक्षा छल — की गंगा माय एतेक दूरसँ हुनक पुकार सुनतीह? की हुनक जीवनभरिक निष्कलंक भक्ति एहि अन्तिम क्षणमे सार्थक होएत?

अध्याय ४: गंगाक अद्भुत कृपा

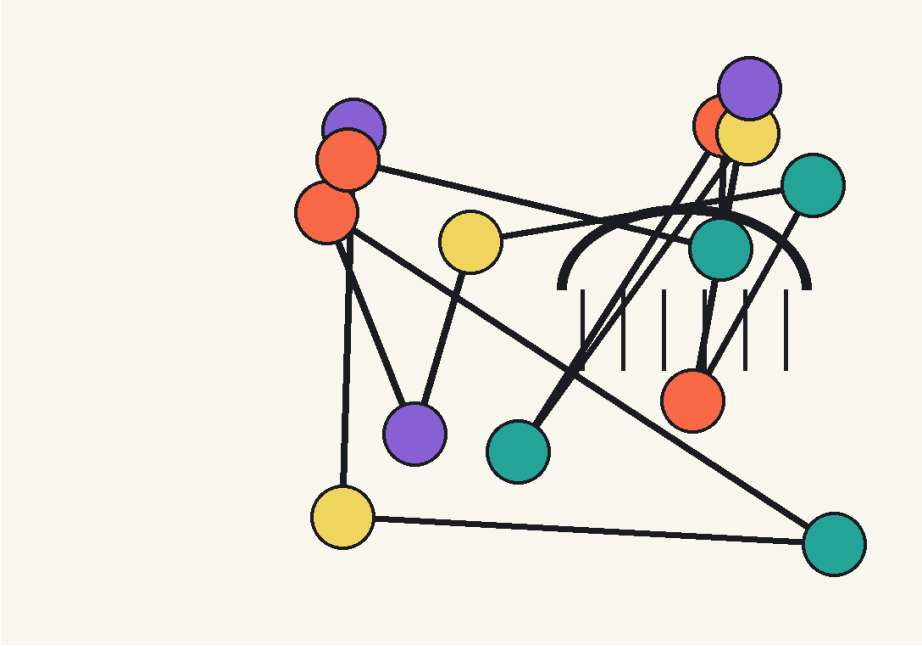

चित्र 7

आ तखन एकटा चमत्कार भेल — गंगा माय तट तोड़ि आबि बोधि कायस्थकेँ अपनामे समाहित कऽ लेलनि! ई घटना अकल्पनीय छल — साक्षात् गंगा माय, अपन प्राकृतिक सीमाकेँ तोड़ि, अपन भक्तक निकट आबि गेलीह।

ई चमत्कार बोधि कायस्थक सम्पूर्ण जीवनक भक्ति, त्याग, आ निष्कलंकताक प्रतिफल छल। गंगा माय एतेक दूरसँ हुनक पुकार सुनलनि, आ स्वयं आबि हुनका आशीर्वाद देलनि — भक्तिक शक्ति प्रकृतिक नियमकेँ सेहो झुका सकैत अछि।

चित्र 8

बोधि कायस्थकेँ सोझे स्वर्ग भेटलनि — बिनु कोनो अतिरिक्त तपस्या, बिनु कोनो दीर्घ प्रतीक्षाक, केवल अपन जीवनभरिक शुद्ध आचरण आ अन्तिम क्षणक अटूट श्रद्धाक फलस्वरूप।

ई गाथा एकटा गहींर सन्देश दैत अछि — जीवनभरिक सत्यनिष्ठा, दान-पुण्य, आ भक्ति अन्ततः सर्वोच्च फल दैत अछि। बाह्य कर्मकाण्डसँ बेसी महत्वपूर्ण होइत अछि हृदयक शुद्धता आ आचरणक निष्कलंकता।

अध्याय 5 : विद्यापतिक अमर पद

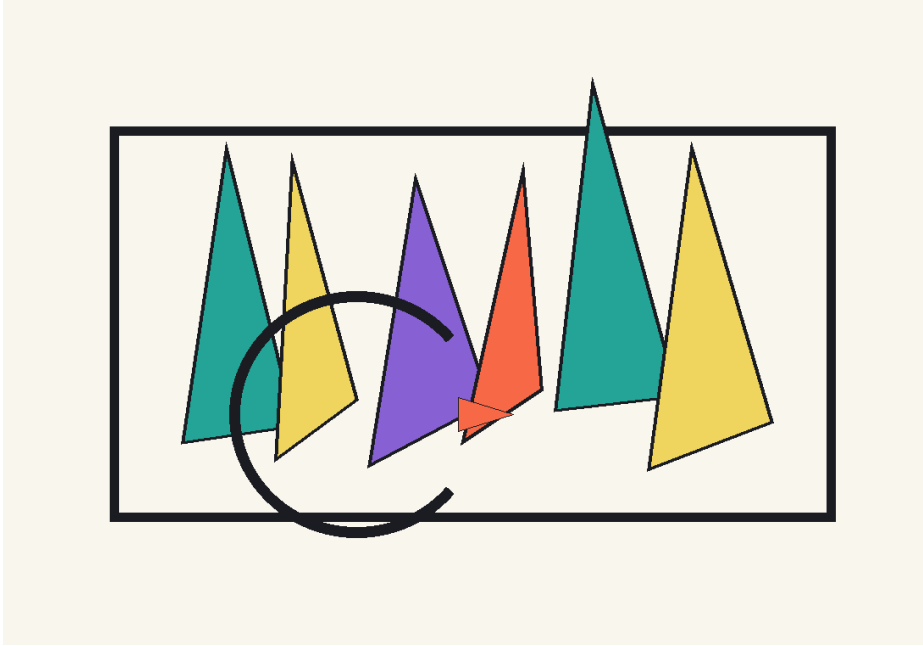

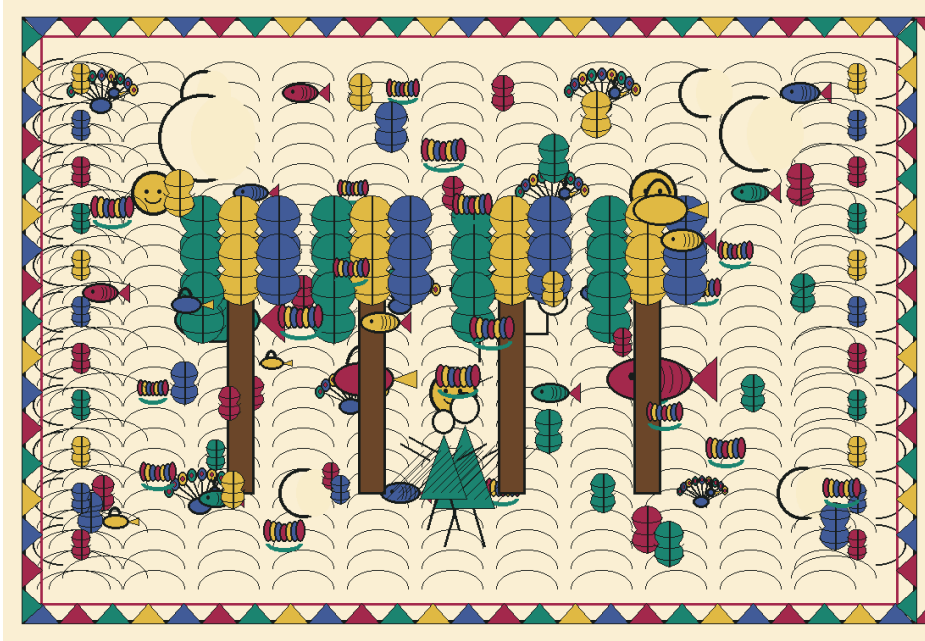

चित्र 9

बोधि कायस्थक ई गाथा विद्यापतिसँ पूर्व घटित भेल छल — ई तथ्य विशेष महत्वक अछि, कारण ई घटना विद्यापति रचित संस्कृत ग्रंथ पुरुष-परीक्षामे वर्णित अछि, जे प्रमाणित करैत अछि जे ई कथा विद्यापतिक समयमे सेहो एकटा प्रसिद्ध, प्रेरणादायी आख्यान छल।

विद्यापति एहि गाथासँ एतेक प्रभावित भेला जे ओ अपन मैथिली पद 'बड़ सुख सार पाओल तुअ तीरे' रचलनि — एकटा एहन काव्य-रचना, जे बोधि कायस्थक गंगा-लाभक अनुभवकेँ काव्यात्मक अमरता प्रदान केलक।

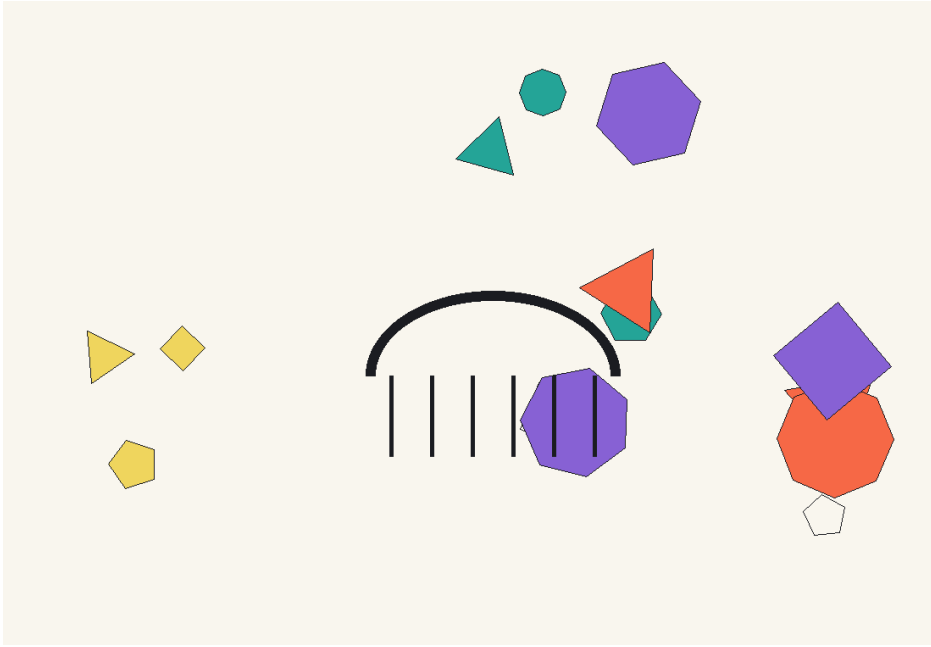

चित्र 10

ई पदक शीर्षक स्वयं गहींर अर्थ राखैत अछि — 'तोहर तीरपर (गंगाक तटपर) हम बड़ सुख आ सार (सारभूत तत्व) पओलहुँ' — बोधि कायस्थक अनुभवक सार-तत्व, जे विद्यापति अपन काव्यमे संजोय राखलनि।

आइयो ई पद मिथिलाक भक्ति-साहित्यक अमूल्य धरोहर मानल जाइत अछि। बोधि कायस्थ जेकाँ गंगा लाभ करब — ई वाक्यांश मिथिलामे एकटा आदर्श मृत्युक प्रतीक बनि गेल अछि, जतय निष्कलंक जीवन आ अटूट भक्तिक फलस्वरूप स्वयं गंगा माय अपन भक्तकेँ अपनामे समाहित करैत छथि। बोधि कायस्थक ई गाथा, विद्यापतिक काव्यक माध्यमसँ, सदियोंसँ मिथिलावासीकेँ धर्मपरायण जीवन जीबाक प्रेरणा दैत आबि रहल अछि।

समाप्त

VIDEHA

विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका | ISSN 2229-547X | www.videha.co.in

बत्तू

जंगलक चतुर छागरक अद्भुत साहस

गजेन्द्र ठाकुर

गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादक, विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका (since 2000)

ISSN 2229-547X

© 2026; Gajendra Thakur/ Preeti Thakur;

गजेन्द्र ठाकुर सम्पादक, विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका (since 2000) ISSN 2229-547X

ई पोथी गजेन्द्र ठाकुर समग्रक अन्तर्गत संकलित अछि।

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक ISBN:978-93-5890-210-5

DESIGNED BY: AUM GAJENDRA THAKUR

उपक्रम : बलिदानसँ बचाव

एकटा बकड़ी छलि, आ ओकरा एकटा बच्चा भेलैक — एकटा नन्हा छागर। मुदा नियतिक विडम्बना — ई छागर मात्र चारि मासक भेल छल आकि दुर्गापूजा आबि गेल, आ ओहि पूजामे छागरक बलिदानक परम्परा छल।

ई गाथा एकटा माएक बचाव-बुद्धि, एकटा बच्चाक जंगली साहस, आ अन्ततः चतुराइक बल पर भयंकर बाघकेँ सेहो पराजित करबाक अद्भुत कथाक थिक — साहस आ बुद्धिक ई मिश्रण बच्चाकेँ जीवनक सभसँ पैघ पाठ सिखबैत अछि।

अध्याय 1 : बलिदानक छाया

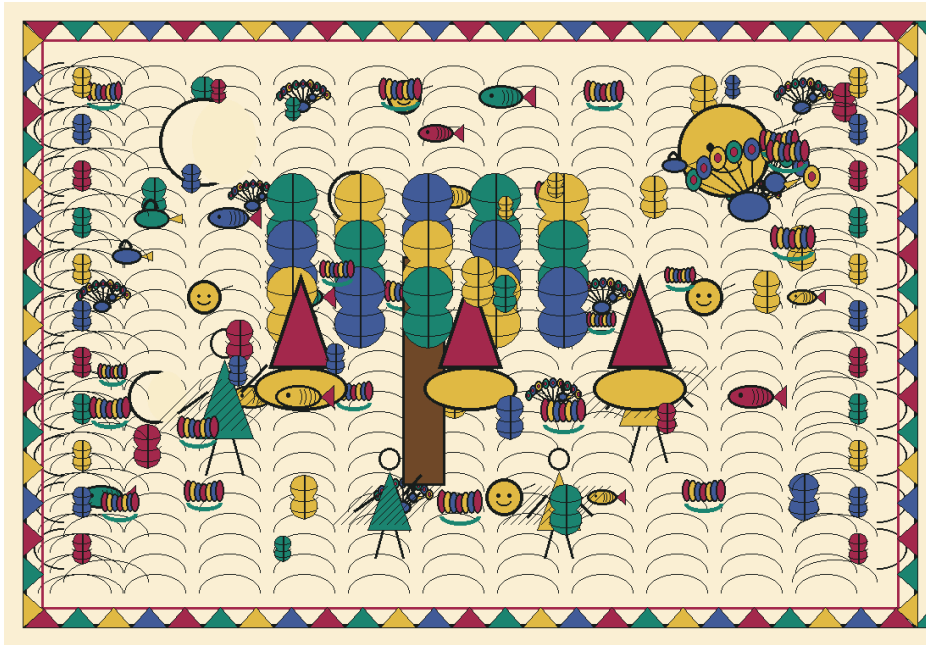

चित्र 1

एकटा बकड़ी छलि, शान्त आ स्नेहमयी। ओकरा एकटा बच्चा भेलैक — एकटा नन्हा, कोमल छागर, जकरा ओ प्रेमसँ पोसैत छलि।

मुदा दुर्गापूजा नजदीक आबि गेल, आ ई पूजामे बलिदानक एकटा पुरान परम्परा छल। ओहि छागरक दाम-दीगर (मोल-भाव) करबाक लेल एकटा व्यक्ति आयल, जे पहिनहिये बलिदानक कबुला (प्रतिज्ञा) केने छलाह।

चित्र 2

मालिक (बकड़ीक मालिक) लग ई व्यक्ति आबि पूरा दाम तय केलनि। मुदा संगमे पाइ नहि अनने छलाह, तेँ अगिला दिन पाइ अनबाक आ छागर लऽ जएबाक बात कऽ चलि गेला।

बकड़ी ई सभ बातचीत सुनैत छलि — भयावह भविष्यक ई संकेत ओकर मातृ-हृदयकेँ काँपि गेल। अपन नन्हा बच्चाक जीवन आब खतरामे छल।

अध्याय 2 : माएक चेतावनी

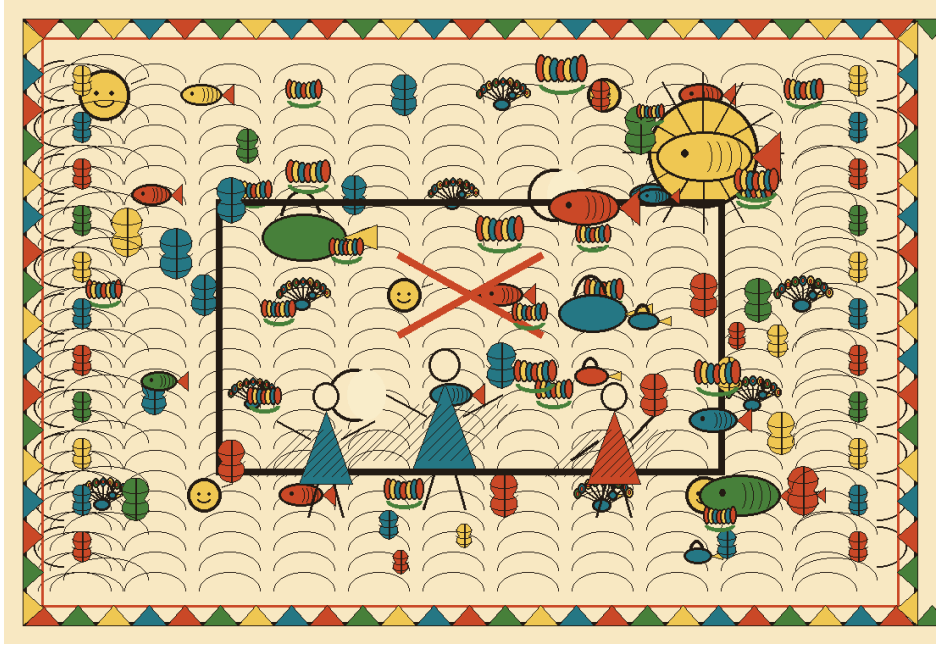

चित्र 3

बकड़ी तुरत अपन बच्चाकेँ बजा कहलनि — 'भागि जाऊ जंगल दिस, नहि त' ई मलिकबा काल्हि अहाँकेँ बेचि देत, आ किननहार दुर्गापूजामे अहाँक बलि दऽ देत!'

ई चेतावनी अत्यन्त गम्भीर छल — एकटा माएक अन्तिम प्रयास, अपन सन्तानक जीवन बचएबाक। बकड़ी जनैत छलि जे ई विदाई कठिन हएत, मुदा ई आवश्यक छल।

चित्र 4

छागर — नन्हा, मुदा माएक शब्दक गम्भीरता बुझैत — राता-राती (रातिहिमे) जंगल भागि गेल! ई निर्णय साहसिक छल, कारण एकटा नन्हा छागरक लेल जंगलक अपरिचित संसार भयावह भऽ सकैत छल।

मुदा जीवन आ मृत्युक बीचक ई चयन स्पष्ट छल — जंगलक अनिश्चितता बलिदानक निश्चित मृत्युसँ बेहतर छल। छागर अपन घर, अपन माए, सभ किछु पाछाँ छोड़ि, अन्धकारमे जंगलक दिस दौड़ल।

अध्याय 3 : बत्तूक रूपान्तरण

चित्र 5

जंगलमे छागर दू-तीन साल बितओलक — कठिन, मुदा स्वतन्त्र जीवन। प्रकृतिक गोदमे पलैत, ओ धीरे-धीरे बदलैत गेल — नन्हासँ मोट-सोट बत्तू (एकटा बड़का, शक्तिशाली छागर) बनि गेल!

ओकरा पैघ दाढ़ी आ सिंघ (सींग) भऽ गेलैक — जंगली जीवनक प्राकृतिक परिणाम। जे नन्हा, कोमल बच्चा एक दिन बलिदानसँ बचि भागल छल, से आब एकटा प्रभावशाली, बलशाली प्राणी बनि गेल छल।

चित्र 6

एक दिन घुमैत-घुमैत बत्तू दोसर जंगलमे चलि गेल — नव क्षेत्रक अन्वेषण, अपन स्वतन्त्र जीवनक स्वाभाविक विस्तार। ओतय एकटा नव, भयावह मुठभेड़ ओकर प्रतीक्षामे छल।

ओहि जंगलमे एकटा बाघ रहैत छल — जंगलक राजा, शक्तिशाली आ भयभीत करैवला। बत्तू बाघकेँ देखि घबड़ा गेल — स्वाभाविक भय, कारण बाघ सामान्यतः शिकारीक रूपमे जानल जाइत अछि।

अध्याय 4 : आमने-सामने भेँट

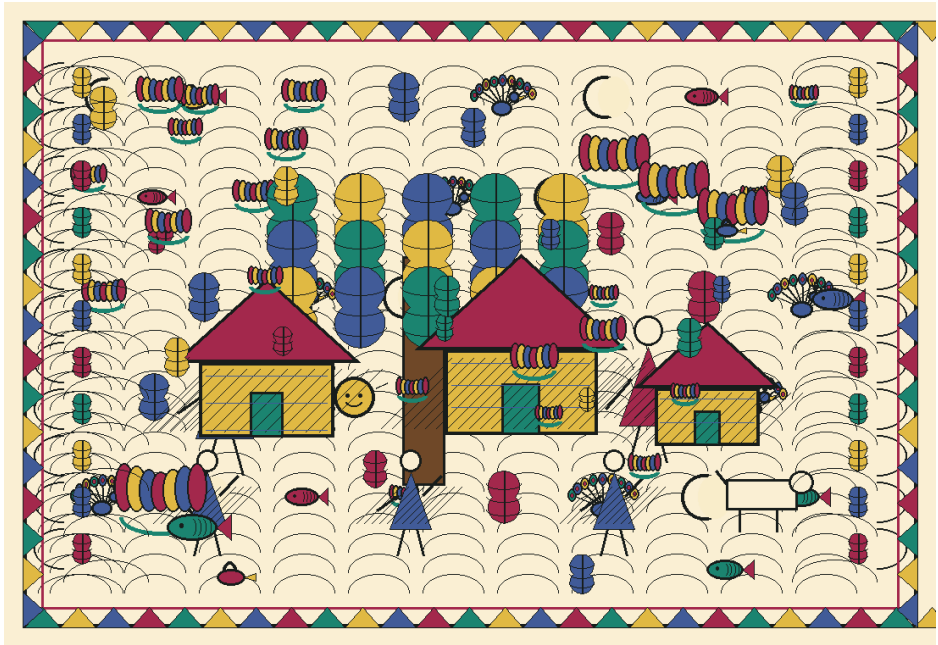

चित्र 7

मुदा आश्चर्यजनक रूपसँ, बाघ सेहो एहन जानवर पहिने कहियो नहि देखने छल — पैघ दाढ़ी, विशाल सिंघ, मोट-सोट शरीर! बत्तूक असामान्य रूप बाघकेँ सेहो डरा देलक।

बाघ, अपन भयकेँ छिपबैत, बत्तूसँ पुछलक — काव्यात्मक शैलीमे — 'नामी नामी दाढ़ी-मोंछ भकुला, कहू कतएसँ अबैत छी, नञि त' देव ठकुरा!' — ई प्रश्न बाघक अन्तर्निहित भयकेँ दर्शबैत छल, भलहिं ओ राजसी स्वरमे पूछि रहल छल।

चित्र 8

बत्तू — अपन चतुराइक पहिल प्रदर्शन करैत — उत्तर देलक, ओहो काव्यात्मक शैलीमे:

'अर्चुन्नी खेलहुँ गरचुन्नी खेलहुँ, सिंह खेलहुँ सात। आ जहिया दस बाघ नञि होए,

तहिया परहुँ ठक दऽ उपास।'

ई उत्तरक अर्थ स्पष्ट छल — बत्तू स्वयंकेँ एकटा भयंकर, अजेय प्राणीक रूपमे प्रस्तुत केलक, जे सिंह सन शक्तिशाली जीवसँ सेहो खेलैत अछि, आ जकरा दस बाघ नहि भेटलापर भूखे रहए पड़ैत छै! ई सुनि बाघ भयभीत भऽ पड़ा (भाग) गेल!

अध्याय 5 : सियारक धूर्तता

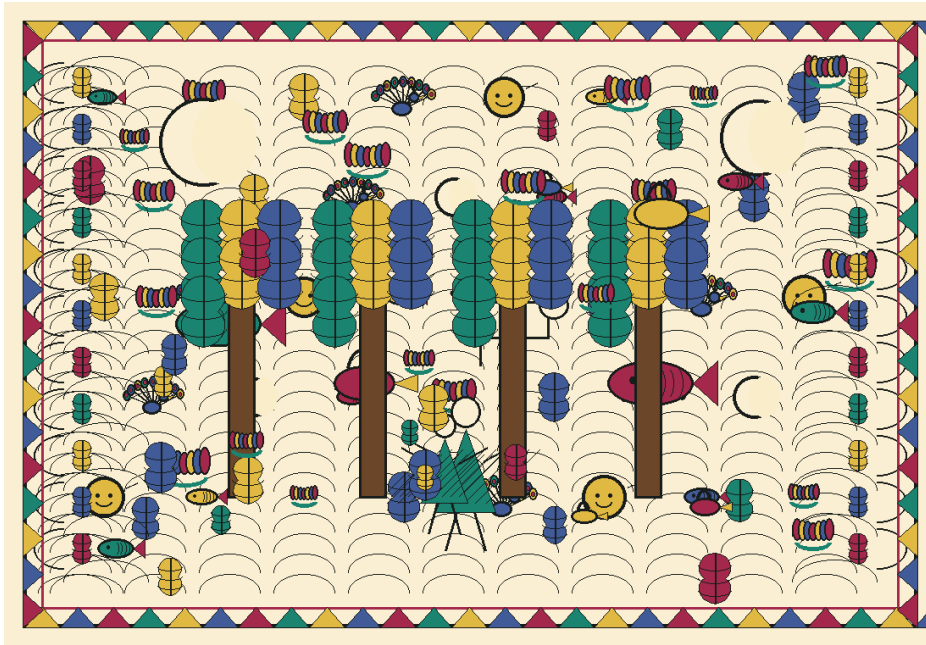

चित्र 9

बाघ, भयसँ काँपैत, जंगलमे भागि रहल छल — मुदा रस्तामे ओकरा एकटा नढ़िया सियार भेटलैक। सियार बाघक भयक कारण पुछलक, आ पूरा किस्सा सुनि हँसि पड़ल।

सियार कहलकैक — 'अहाँ अनेरे (व्यर्थ) डराइत छी! चलू, आइ त' नीक मसुआइ (भोजन) होएत — ओ त' बकड़ीक बच्चा अछि!' सियारक चतुराइ आ अनुभव बाघक भयकेँ चुनौती देलक।

चित्र 10

बाघ अखनहुँ आश्वस्त नहि छल, मुदा सियारक तर्कमे विश्वास करए लागल। सियार एकटा विचित्र सुझाव देलक — 'हमर पएरमे अपन पएर बान्हि लिअ, हम अहाँकेँ लऽ चलब, त' अहाँ भागि नहि सकब आ हमहूँ अहाँक डरसँ बचल रहब।'

बाघ डेराएल छल, तेँ ओ सियारक ई अजीब प्रस्ताव मानि लेलक — अपन पएरमे सियारक पएर बान्हि, दुनू गोटे बत्तू लग जएबा लेल बिदा भेल। ई दृश्य नाटकीय आ हास्यास्पद छल — डरपोक बाघ सियारक संग बान्हल!

अध्याय 6 : बत्तूक अन्तिम चतुराइ

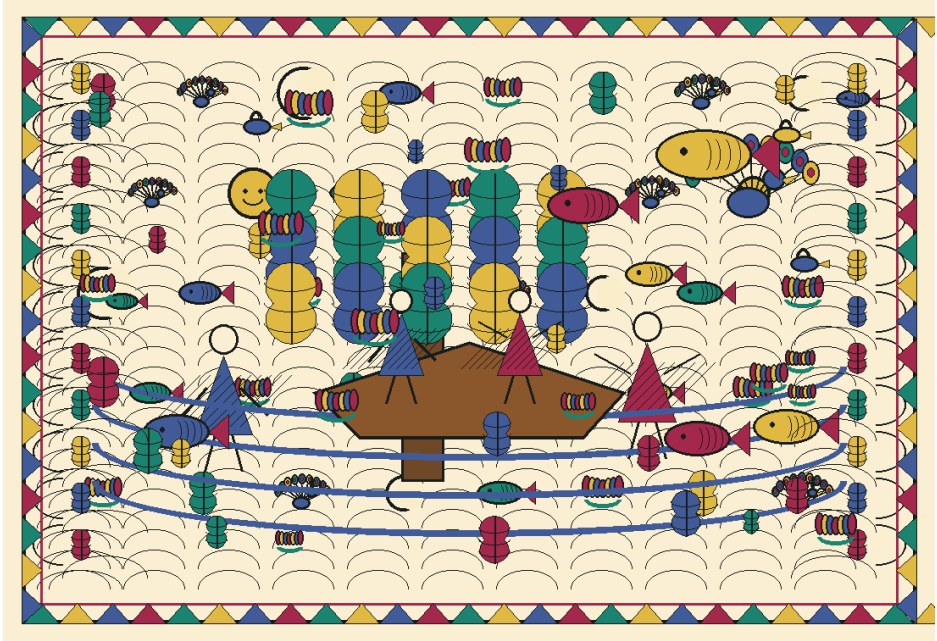

चित्र 11

जखन बत्तू दुनूकेँ (बाघ आ सियार) अबैत देखलक, त' ओ तुरत बुझि गेल जे ई सियरबाक काज अछि — सियार बाघकेँ फोकसलाकऽ ओकरा फेर आनि रहल छल। मुदा बत्तू घबरायल नहि, बुद्धिसँ काज लेलक।

बत्तू जोरसँ चिचिआयल — 'ऐं हौ, तोरा दू टा बाघ आनए लेल कहलियहु, आ तों एकेटा अनलह?' ई वाक्य अत्यन्त चतुराइपूर्ण छल — मानू बत्तू पहिनहिये सियारकेँ दू बाघ आनबाक आदेश देने छल!

चित्र 12

ई सुनतहि बाघक हृदयमे भय फेर व्याप्त भऽ गेल — 'हम त' खाली एक्केटा छी, आ ई बत्तू त' दू बाघ माँगने छल! ई कतेक शक्तिशाली अछि!' — बाघ ई सोचि तुरत भागल, बिनु पाछू तकने।

मुदा भागैत बाघक पएरमे बान्हल सियार — जे अपनहि चतुराइक शिकार भऽ गेल — बाघक तीव्र गतिमे घिसिआइत (घीसटैत) मरि गेल! सियारक धूर्तता अन्ततः ओकरे प्राण लऽ लेलक।

अध्याय 7 : चतुराइक विजय

चित्र 13

ई गाथाक अन्त अद्भुत छल — एकटा नन्हा छागर, जे बलिदानसँ बचबाक लेल जंगल भागल छल, से अपन बुद्धि आ साहसक बलपर जंगलक सभसँ भयंकर प्राणी (बाघ)केँ सेहो पराजित कऽ देलक!

बत्तूक विजयक रहस्य बलमे नहि, बुद्धिमे छल। ओ कहियो सोझा-सोझी बाघसँ नहि लड़लक — ओकर चतुर वाक्य, आत्मविश्वासपूर्ण भाव-भंगिमा, आ सही क्षणपर सही शब्दक प्रयोगे ओकर सभसँ पैघ हथियार छल।

चित्र 14

सियार — जे धूर्तताक प्रतीक मानल जाइत अछि — स्वयं अपन धूर्तताक शिकार बनि गेल। ई काव्यात्मक न्याय एहि गाथाक सभसँ गहींर सीख थिक: छल आ धूर्तता अन्ततः छलनिहारकेँ स्वयं नुकसान पहुँचा सकैत अछि।

बत्तूक गाथा मिथिलाक लोककथामे साहस, चतुराइ, आ आत्मविश्वासक प्रतीक बनि गेल अछि — एकटा एहन कथा, जे बच्चाकेँ सिखबैत अछि: शारीरिक बलसँ बेसी महत्वपूर्ण होइत अछि बुद्धिक प्रयोग, आ सही समयपर सही साहस देखाएब।

समाप्त

VIDEHA

विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका | ISSN 2229-547X | www.videha.co.in

भाट-भाटिन

विश्वासघातक प्रहेलिका आ बहिनक बुद्धिक विजय

गजेन्द्र ठाकुर

गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादक, विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका (since 2000)

ISSN 2229-547X

© 2026; Gajendra Thakur/ Preeti Thakur;

गजेन्द्र ठाकुर सम्पादक, विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका (since 2000) ISSN 2229-547X

ई पोथी गजेन्द्र ठाकुर समग्रक अन्तर्गत संकलित अछि।

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक ISBN:978-93-5890-210-5

DESIGNED BY: AUM GAJENDRA THAKUR

उपक्रम : गुप्त प्रेम

एकटा भाट (लोकगायक/चारण) छल, आ एकटा छलि भाटिन (हुनक पत्नी)। ई गाथा विश्वासघातक थिक — कोना एकटा पत्नी अपन पतिक प्रति निष्ठाहीन भऽ, गुप्त प्रेमक चक्करमे अपन पतिक प्राण लेबाक षड्यन्त्र रचि लेलक।

मुदा ई गाथा अन्ततः न्यायक विजयक सेहो थिक — जतय एकटा बहिनक बुद्धि आ साहस अपन भाइकेँ मृत्युसँ बचबैत अछि, आ छलकपटीक अन्त स्वयं ओकरे रचल जालमे होइत अछि।

अध्याय 1 : गुप्त प्रेमक विषबेल

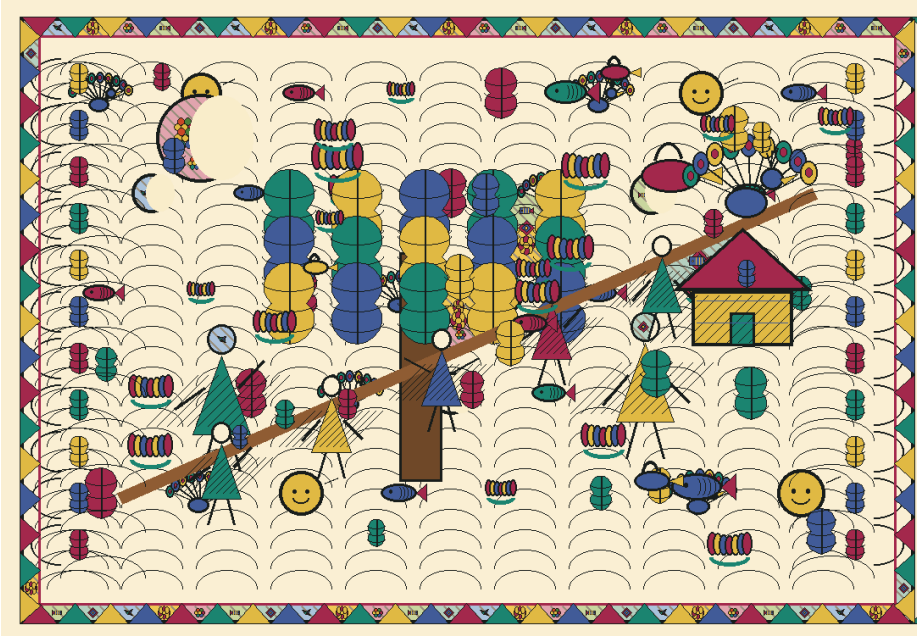

चित्र 1

भाटिन — एकटा मणिधारी गहुमन (मणिवाला विशेष साँप) सँ गुप्त प्रेम करैत छलि। ई सम्बन्ध पूर्णतः अनैतिक आ विश्वासघाती छल, मुदा भाटिन एहिमे इतेक लीन छलि जे अपन पतिक अस्तित्व सेहो ओकरा बाधाक रूपमे बुझाए लागल।

भाटिन साँपक लेल नीक निकुत (भोजन/सेवा) बनबैत छलि — पूर्ण समर्पणसँ, प्रेमपूर्वक। मुदा एहि बीच अपन पतिकेँ ओ बसिया-खोसिया (बासी, घटिया भोजन) दैत छलि — उपेक्षा आ तिरस्कारक स्पष्ट संकेत।

चित्र 2

एहि निरन्तर उपेक्षाक कारण भाट दुबर-पातर (कमजोर, दुबरा) होइत गेल — शारीरिक क्षय, जे भाटिनक क्रूरताक प्रत्यक्ष परिणाम छल। मुदा भाटिनक हृदयमे दयाक कोनो स्थान नहि छल।

अन्ततः भाटिन अपन क्रूरताक चरम प्रकट केलक — ओ अपन पति भाटकेँ जिबए नहि देब चाहैत छलि! ओ साँपकेँ स्पष्ट आदेश देलक — भाटकेँ काटि, अर्थात् डँसि कऽ मारि देबाक लेल!

अध्याय 2 : पनहीमे नुकाएल मृत्यु

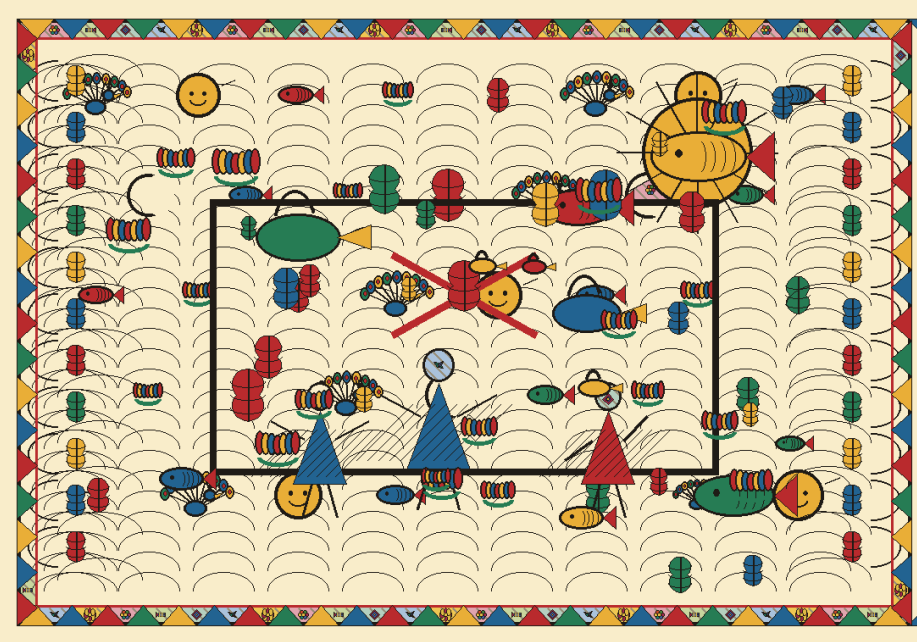

चित्र 3

साँप — भाटिनक आदेशक पालनमे — भाटकेँ काटबाक अवसर ताकए लागल।

ओकर धैर्य आ चालाकी दुनू एहि हत्याक योजनामे नियोजित छल।

एक दिन भाट धारमे पएर धोबए लेल अपन पनही (जूता) खोलि कऽ राखलक — दैनिक क्रियाक सामान्य क्षण। ठीक ओही समय साँप ओकर पनहीमे चुपचाप नुका गेल — घातक जालक अन्तिम चरण।

चित्र 4

भाट अपन काज पूर्ण कऽ घुरल, आ पहिरबासँ पहिने पनहीकेँ स्वाभाविक रूपसँ झारलक (झटकारलक) — ई साधारण आदत, जे प्रायः धूरा-माटि हटएबाक लेल कएल जाइत अछि, ओही क्षण भाटक प्राणरक्षक साबित भेल।

साँप पनहीसँ खसि पड़ल! भाट — जे अपन जीवनपर एहि आकस्मिक हमलाक कारणसँ अनजान छल, मुदा तुरत प्रतिक्रिया देलक — पनहीयेसँ मारि-मारि कऽ साँपक जान लऽ लेलक। ई आत्मरक्षा भाटक अनजाने भऽ गेल विजय छल।

अध्याय 3 : वरक गाछपर लटकाएल सत्य

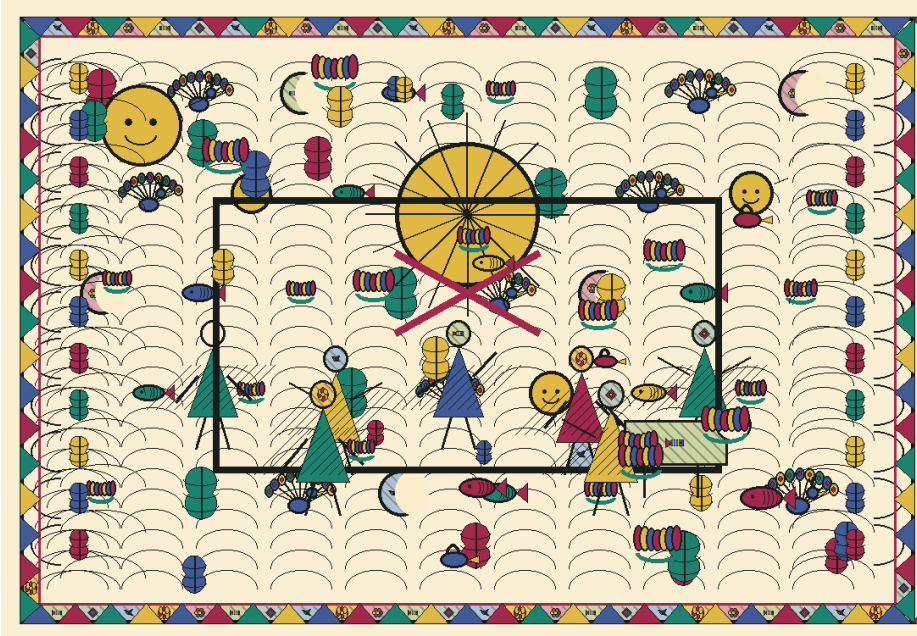

चित्र 5

भाट साँपकेँ मारि, ओकरा वरक (बरगदक) गाछपर लटका देलक — शायद एकटा चेतावनी वा प्रदर्शनक रूपमे, बिनु ई जानने जे ई साँप ओकर अपनहि पत्नीक गुप्त प्रेमी छल!

भाट जखन गाम पहुँचल, त' ओ अपन कनियाँ (भाटिन)केँ सम्पूर्ण खिस्सा उत्साहसँ सुनओलक — साँपसँ बचब, आत्मरक्षा, आ ओकर वध — बिनु ई समझने जे ई समाचार भाटिनक लेल केहन विनाशकारी हएत।

चित्र 6

भाटिनक त' प्राण सुखा गेलैक! अपन गुप्त प्रेमीक मृत्युक समाचार सुनि ओ भीतरे-भीतर टूटि गेलि, मुदा बाहरी रूपसँ अपन दुखकेँ छिपाबए बाध्य छलि — पतिक सोझाँ अपन असली परिचय प्रकट नहि कऽ सकैत छलि।

भाटिन भाटक संग वरक गाछ लग गेल — अपन प्रेमीक शवकेँ देखबाक अनियन्त्रित इच्छासँ। जखन ओ अपन साँपकेँ मरल देखलक, त' गहींर दुख आ आघातसँ बेहोश भऽ गेलि — ई दृश्य ओकर सच्चा भावनाक अनियन्त्रित प्रकटीकरण छल, भलहिं भाट एकर असली कारण नहि बुझि सकल।

अध्याय 4 : नौ टुकड़ीक रहस्य

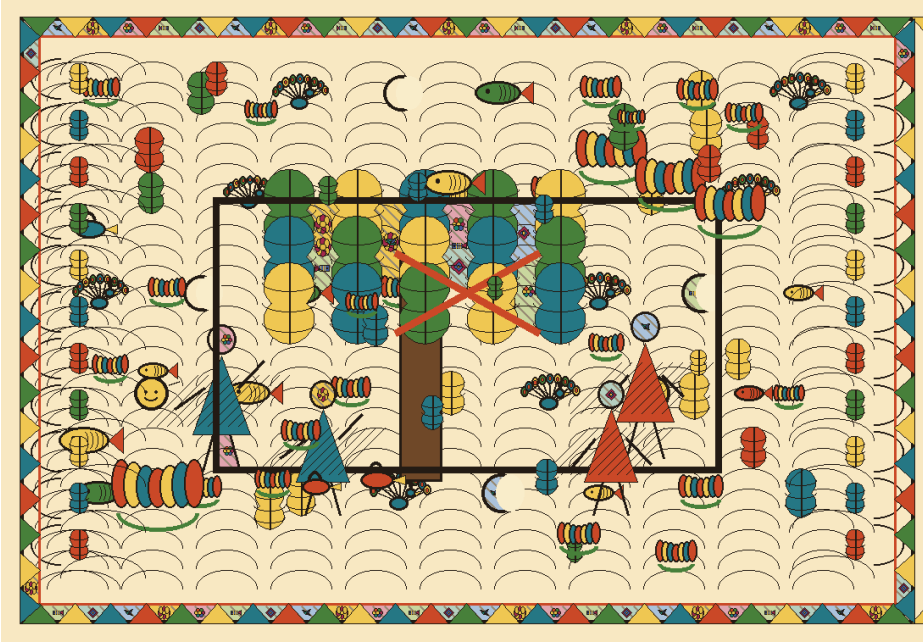

चित्र 7

भाट बेहोश भाटिनकेँ गामपर अनलक — चिन्तित, मुदा अनजान अपन पत्नीक विश्वासघातक बारेमे। मुदा भाटिन भीतरे-भीतर एकटा भयंकर बदलाक योजना बना रहल छलि।

भाटिन दुखी भऽ, असगरे वरक गाछपरसँ मरल साँपकेँ उतारि, ओकरा नौ टुकड़ा कऽ घर आनि लेलक — अपन प्रेमीक शरीरक संग ई क्रूर, मुदा भावुक कर्म ओकर गहींर आसक्तिक प्रमाण छल।

चित्र 8

भाटिन साँपक नौ टुकड़ी विभिन्न ठाम छिपा देलक — चारि टुकड़ी चारू खाटक पाइस (खटियाक पाया) क नीचाँ, एकटा मचियाक नीचाँ, एकटा तेलमे, एकटा नूनमे, एकटा डाँरमे (अनाज-भण्डारमे), आ एकटा खोपामे (टोकरीमे)।

ई विचित्र, गुप्त छिपाव भाटिनक योजनाक अगिला चरणक तैयारी छल — ओ अपन पतिकेँ एकटा घातक प्रहेलिका (पहेली)क सामना करएबाक लेल तैयार छलि, जकर उत्तर भाटक जीवन-मृत्युक निर्णायक बनत।

अध्याय 5 : प्राणघातक प्रहेलिका

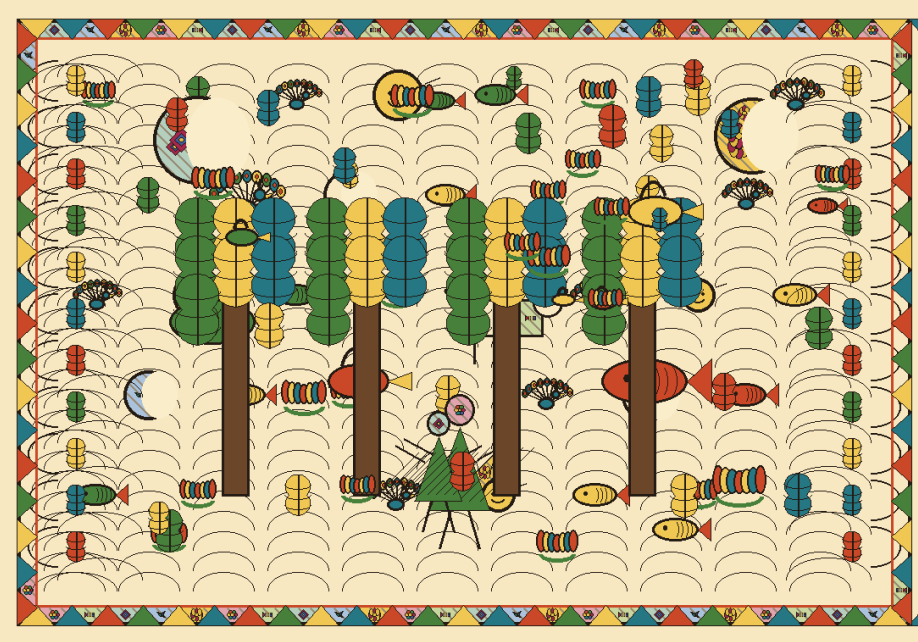

चित्र 9

भाटिन भाटकेँ चुनौती देलक — 'खाट, मचिया, नून-तेल, डाँर आ खोपामे की अछि, से बता! नहि त' भकसी झोका कऽ (गला घोंटि/काटि) मारबौक!' — ई प्रहेलिका असल मे भाटक मृत्युदण्डक एकटा छद्म-न्यायिक प्रक्रिया छल।

भाट — बिनु ई जानने जे साँपक टुकड़ी विभिन्न स्थानपर छिपाओल गेल अछि — एहि प्रहेलिकाक कोनो उत्तर नहि दऽ सकल। ओकर जीवन आब पूर्णतः भाटिनक क्रूर इच्छापर निर्भर छल।

चित्र 10

मृत्युक निकट पहुँचि, भाट एकटा अन्तिम अनुरोध केलक — 'मरएसँ पहिने हम बहिनसँ भेँट करए चाहैत छी, आ ताहि लेल दू दिनुका मोहलति (अवकाश) हमरा चाही।' ई अनुरोध भाटक अन्तिम आशाक प्रयास छल — शायद बहिन कोनो सहायता कऽ सकए।

भाटिन — कदाचित् अपन विजयक निश्चिततामे, वा सामाजिक मर्यादाक कारण — ई अनुरोध स्वीकार कऽ लेलक। भाट दुखी हृदयसँ अपन बहिन लग यात्रा शुरू केलक, बिनु ई जानने जे ई यात्रा ओकर जीवनरक्षाक मार्ग बनत।

अध्याय 6 : दीयाक रहस्योद्घाटन

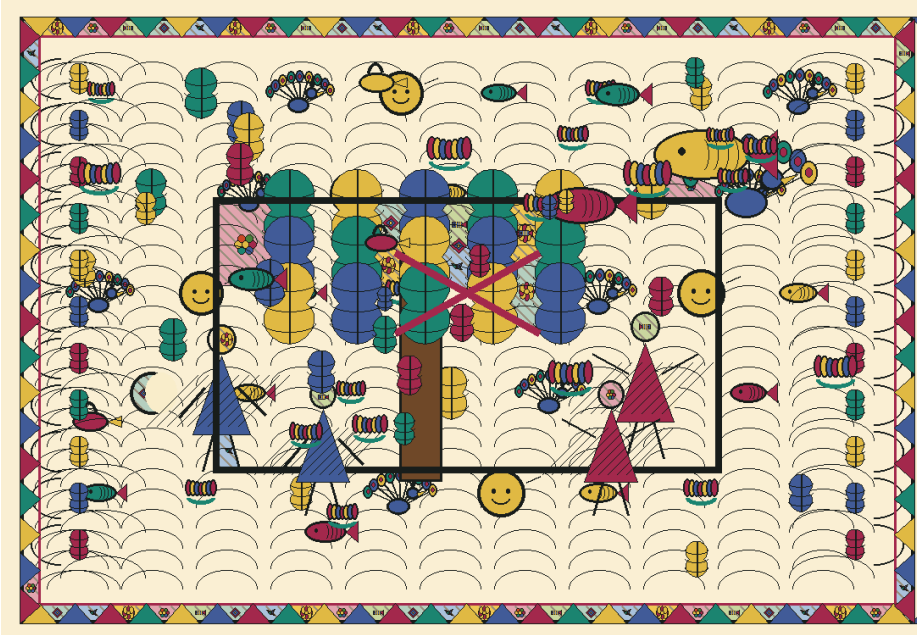

चित्र 11

भाट अपन बहिन लग पहुँचल — ओ अपन भाइक औरदा (आयु/भाग्य) जोड़ि रहल छलि, कोनो ज्योतिषीय वा पारिवारिक विधिक अनुसार। भाइकेँ देखि ओ चिन्तित भेलि।

सभ गप जखन बहिनकेँ पता चललैक — प्रहेलिका, धमकी, भाइक निकट मृत्यु — तखन ओ तुरत निर्णय लेलक — 'हम सेहो संग चलब!' बहिनक ई साहसिक निर्णय भाटक जीवनरक्षाक पहिल कदम छल।

चित्र 12

रस्तामे एकटा धर्मशालामे रातिमे दुनू भाइ-बहिन रुकल। मुदा बहिन चिन्तासँ भरल, सुति नहि सकलि — अपन भाइक भाग्यक चिन्ता ओकर निन्न उड़ा देने छल।

तखने एकटा अद्भुत घटना भेल — धर्मशालाक सभटा दीया (दीप) एक ठाम आबि कऽ आपसमे गप करए लागल! ई अलौकिक दृश्य दीपकसभक चेतनताक प्रतीकात्मक चित्रण छल — लोककथाक जादुई तत्व। भाटक बहिनक कोठलीक दीया प्रकट केलक — 'भाटिन अपन वर (पति) भाटकेँ मारए चाहैत अछि, आ ओ जे फुसियाही (झूठक) प्रहेलिका बनओने अछि, से ओकर प्रेमी — जे मरल गहुमन (साँप) छल — तकरा ओ टुकड़ी कऽ ठाम-ठाम राखि देने अछि, आ तकरे प्रहेलिका बना देने अछि!'

अध्याय 7 : न्यायक प्रतिशोध

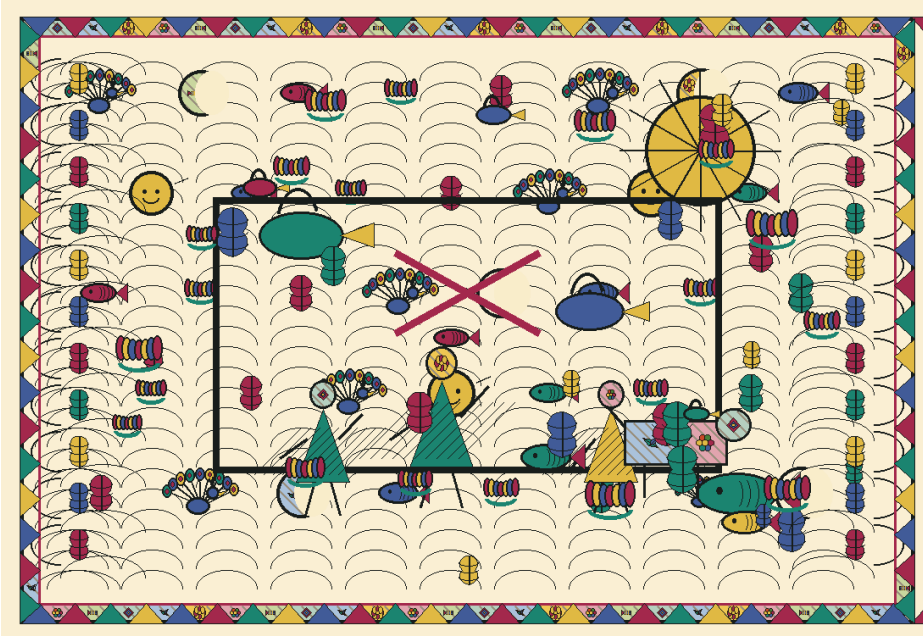

चित्र 13

भोरमे जखन दुनू भाइ-बहिन गामपर पहुँचए जाइ रहल छला, त' बहिन एकटा योजना बनओलक। ओ अपन भौजी (भाटिन)केँ कहलक — 'हम सेहो प्रहेलिका सुनए चाहैत छी!'

भाटिन — अपन शक्ति आ अधिकारक दंभमे — कहलक — 'ज्यौँ ओ प्रहेलिका नञि बुझि सकल, तखन ओकरो भकसी झोंका कऽ ओ मारि देत!' — अपन क्रूरताक विस्तार, आब ननदि (पतिक बहिन) पर सेहो।

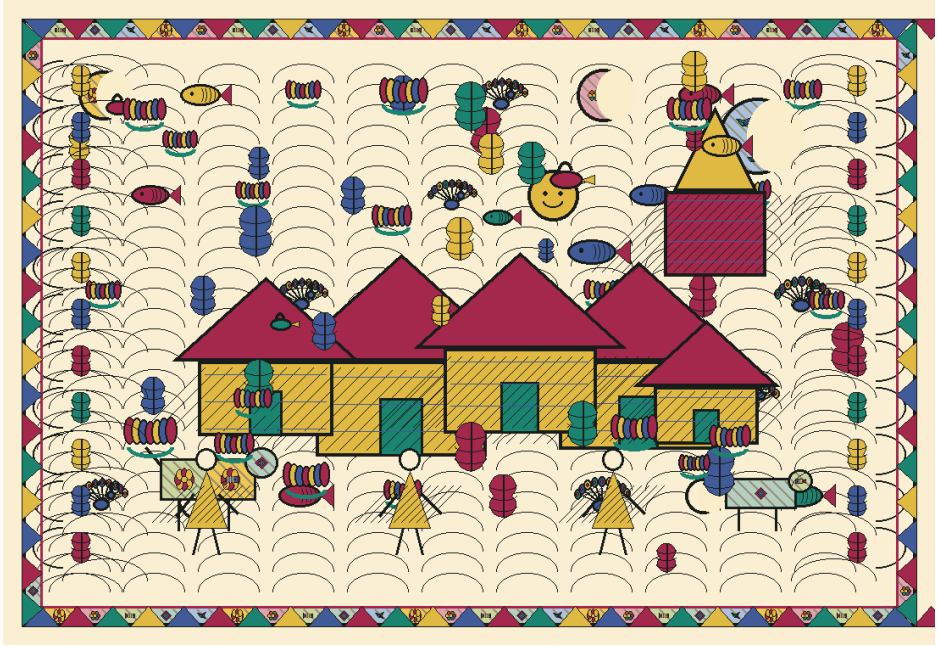

चित्र 14

मुदा बहिन — दीयासँ भेद पहिनहिये जानि चुकल — निर्भीक भऽ प्रतिवाद केलक — 'यदि हम प्रहेलिकाक उत्तर दऽ देब, त' हम भौजीकेँ भकसी झोंका कऽ मारि देब!' ई प्रत्युत्तर भाटिनक अहंकारकेँ चुनौती देलक, ओकरा अपने रचल खेलमे फँसबैत।

आब जखने भाटिन प्रहेलिका कहलक, तखने बहिन तुरत सभटा टुकड़ी (साँपक नौ टुकड़ी) एक-एक कऽ निकालि-निकालि सोझाँ राखि देलक — पूर्ण, सटीक उत्तर! आ अपन प्रतिज्ञाक अनुसार, बहिन भौजी (भाटिन)केँ भकसी झोंका कऽ मारि देलक — विश्वासघातिनीक अन्त, न्यायक विजय, आ भाटक जीवनरक्षा — बहिनक बुद्धि आ साहसक फलस्वरूप, एहि गाथाक अन्तिम, निर्णायक मोड़ बनल।

समाप्त

VIDEHA

विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका | ISSN 2229-547X | www.videha.co.in

बिहुला

चम्पानगरक सती — मनसा आ चाँद सौदागरक गाथा

गजेन्द्र ठाकुर

गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादक, विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका (since 2000)

ISSN 2229-547X

© 2026; Gajendra Thakur/ Preeti Thakur;

गजेन्द्र ठाकुर सम्पादक, विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका (since 2000) ISSN 2229-547X

ई पोथी गजेन्द्र ठाकुर समग्रक अन्तर्गत संकलित अछि।

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक ISBN:978-93-5890-210-5

DESIGNED BY: AUM GAJENDRA THAKUR

उपक्रम : चम्पानगर

गंगाक कातमे बसल छल चम्पानगर — बनिजाराक नगर, जतय घाटपर जहाज लागए आ बजारमे सात समुद्रक सुगन्ध बिकाए। एही नगरक खिस्सा थिक ई — जाहिमे देवता आ मनुक्खक जिद आमने-सामने ठाढ़ भेल, आ बीचमे पिसाएल एकटा पूरा परिवार।

मुदा ई खिस्सा अन्ततः ने देवताक थिक ने सौदागरक — ई खिस्सा एकटा कनियाँक थिक, जे मृत्युक धारमे अपन सोहागक संग उतरि गेलि, आ धारकेँ हारि मानए पड़ल। नाम — बिहुला।

अध्याय 1 : चाँद सौदागर

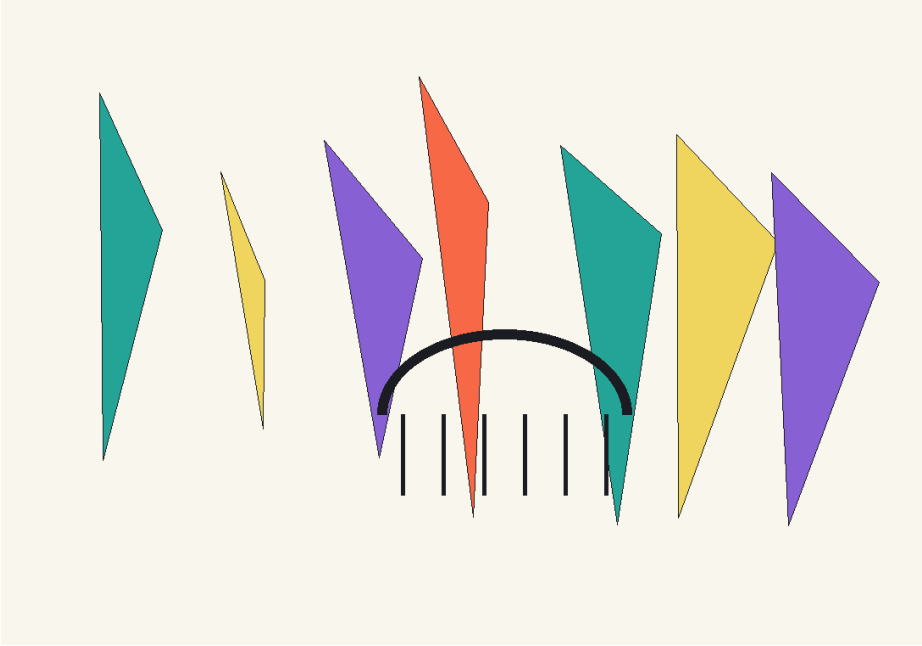

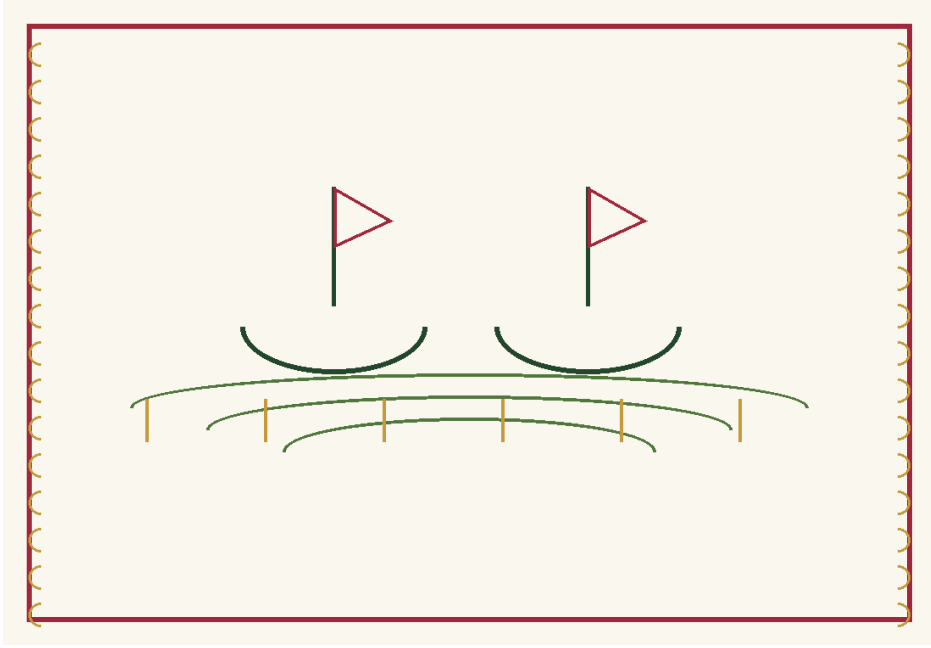

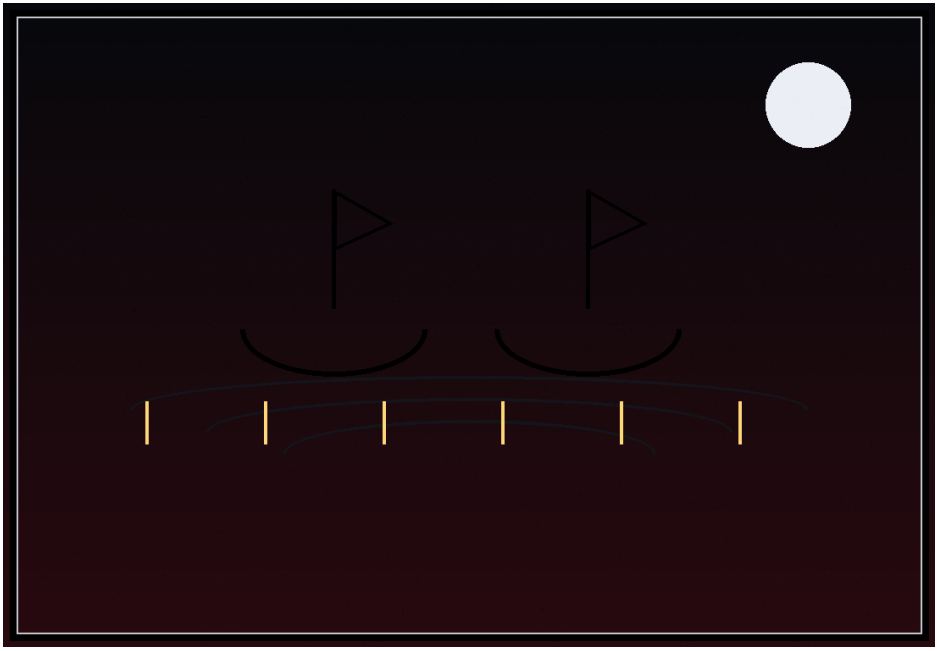

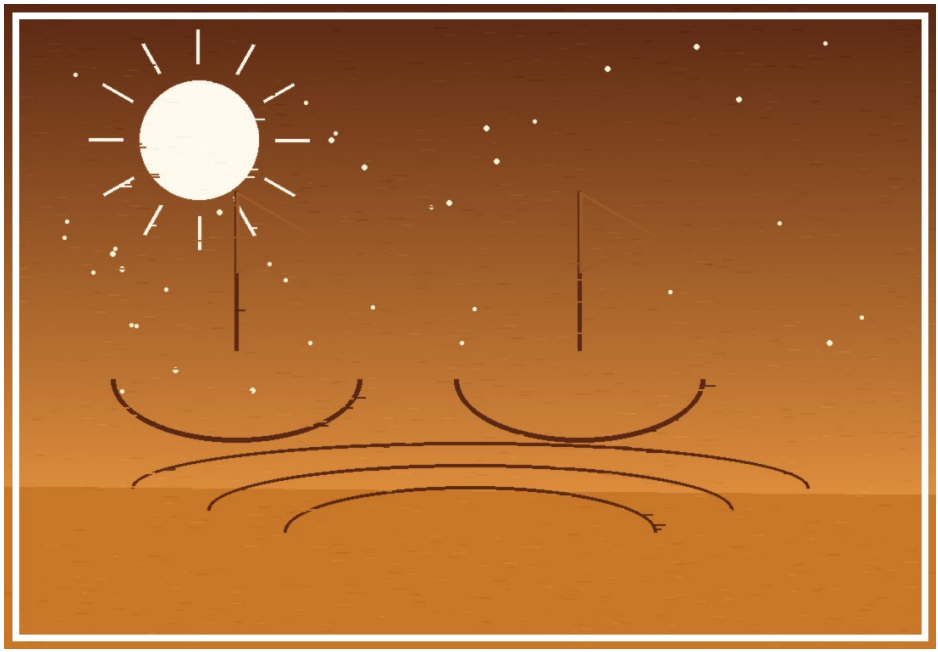

चित्र 1

चम्पानगरमे एकटा पैघ बनिजारा छलाह — चाँद सौदागर। चौदह जहाजक स्वामी, जिनक व्यापार दूर-दूरक देश धरि पसरल छल। धन एतेक जे राजो लजाए, आ प्रतिष्ठा एहन जे नगर हुनके नामसँ चिन्हल जाए।

मुदा चाँद सौदागरक असल पहिचान धन नहि छल — भक्ति छल। ओ शिवजीक अनन्य भक्त छलाह। भोरे गंगा-स्नान, बेलपत्र, रुद्राक्ष, आ 'हर-हर महादेव' — एहि नेमसँ हुनक दिन खुजैत छल।

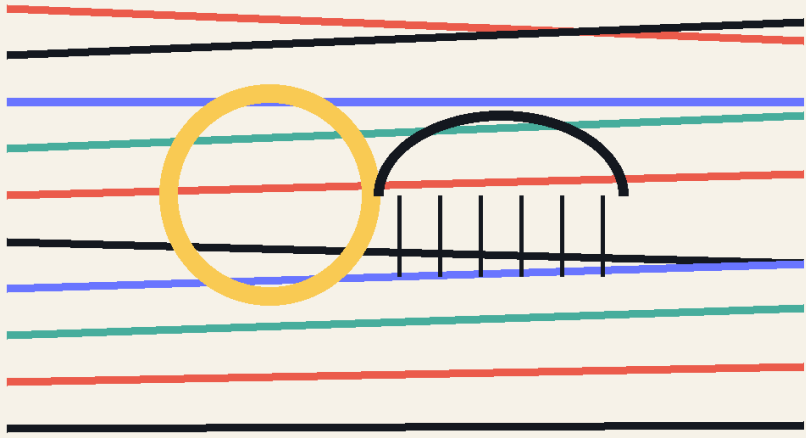

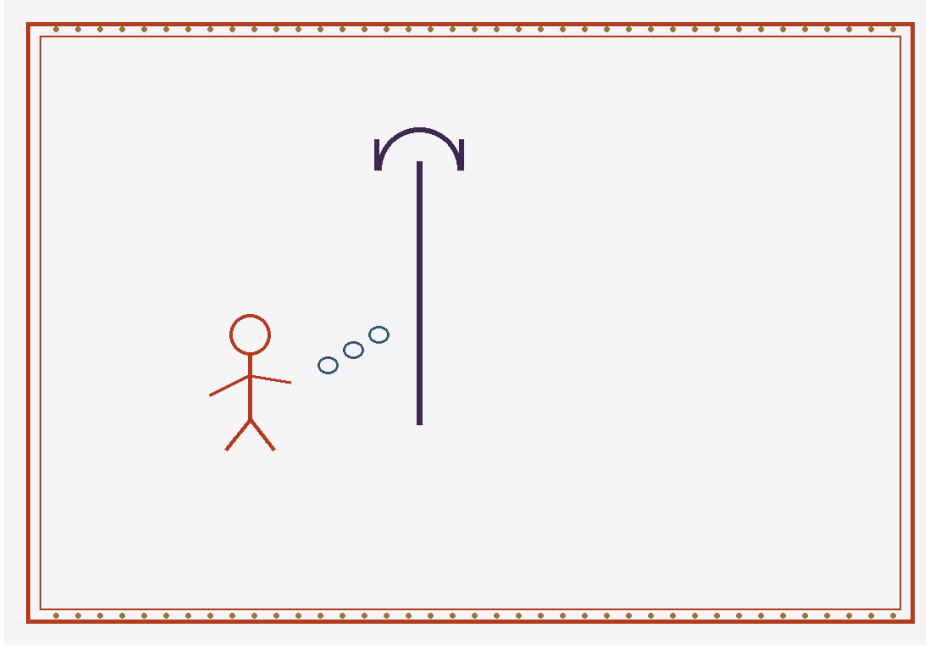

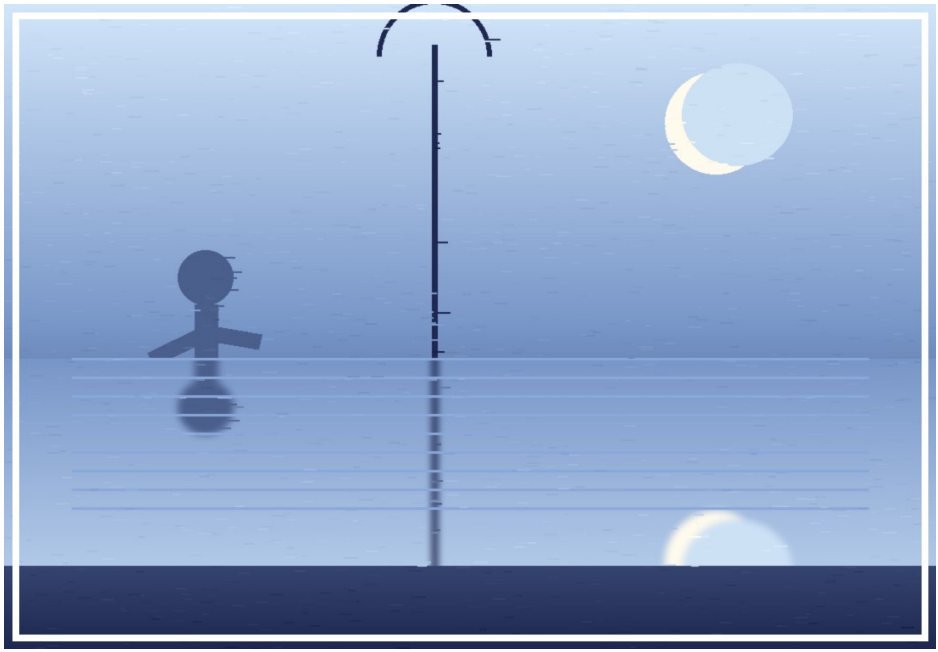

चित्र 2

हुनक भक्तिमे एकटा योद्धाक दृढ़ता छल। ओ कहथि — 'ई माथ एक्कहि ठाम झुकैत अछि — कैलासपति के चरणमे। दोसर ठाम झुकए, त' ई माथे कोन काजक?'

आ नियति देखू — हुनक यएह दृढ़ता, यएह अखण्ड निष्ठा, आगाँ चलि कऽ हुनक जिनगीक सभसँ पैघ परीक्षा बनि गेल। कारण ठीक ओही काल, कैलाससँ बहुत नीचाँ उतरबाक एकटा निर्णय भऽ रहल छल।

अध्याय 2 : मनसाक मनोरथ

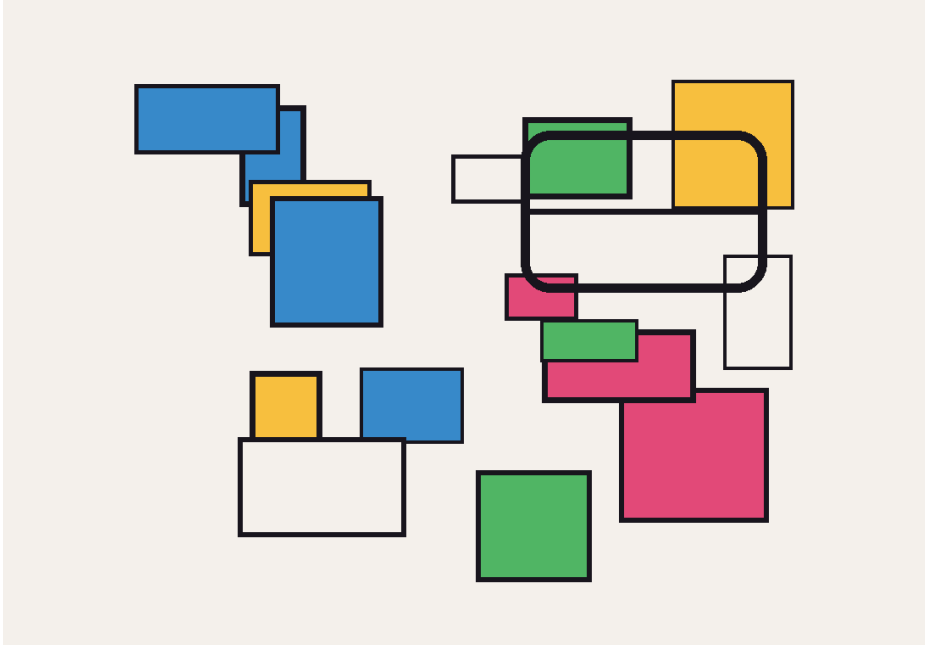

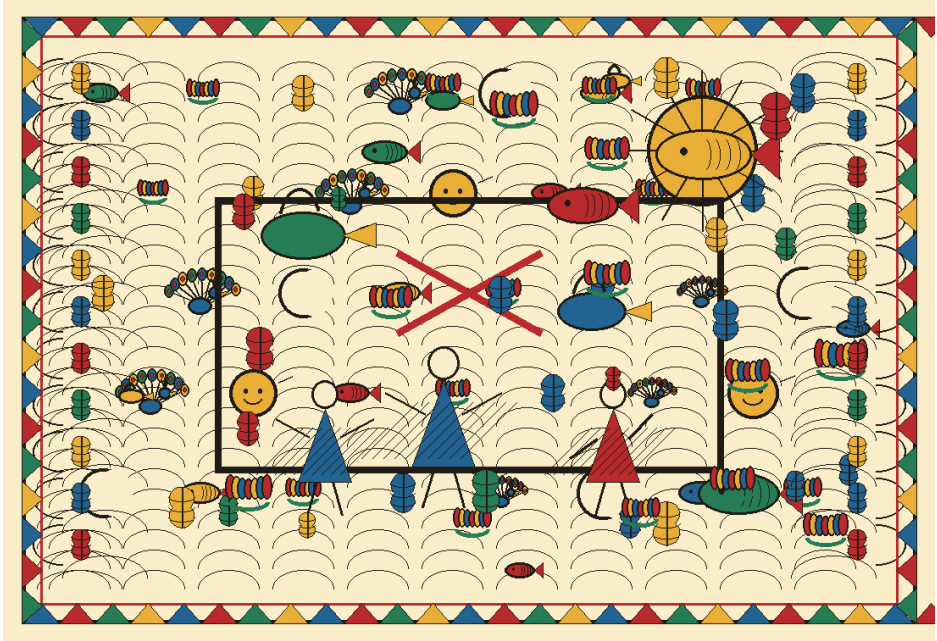

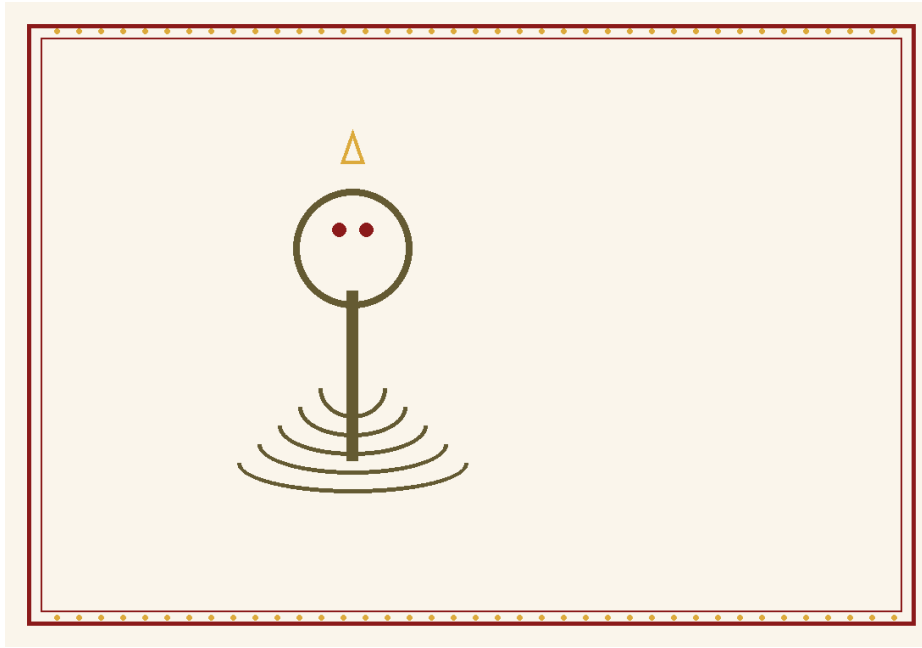

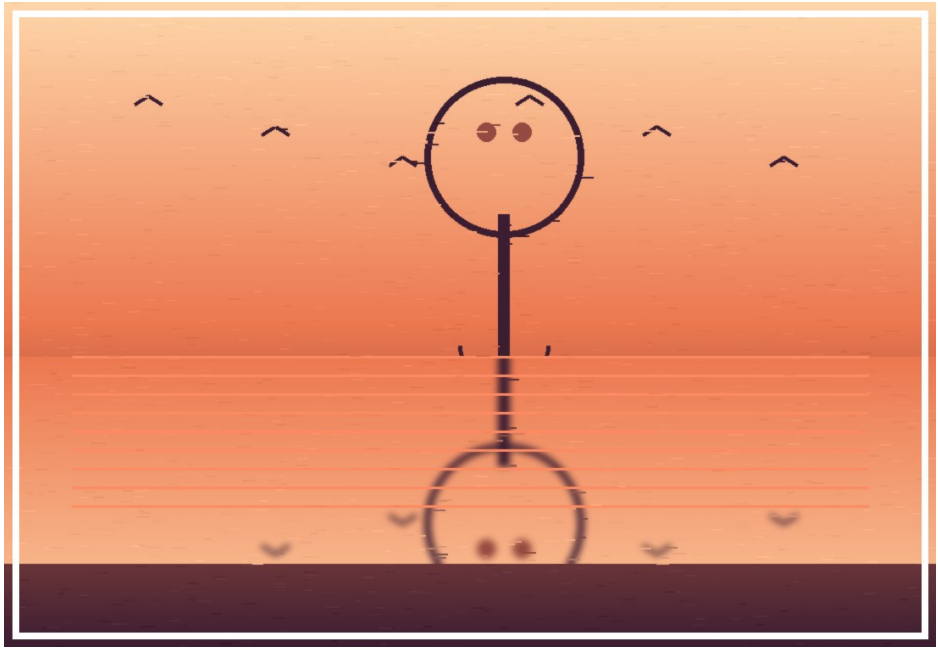

चित्र 3

विषहारा मनसा — सर्पलोकक देवी, विषक स्वामिनी। एक बेर ओ सोचलनि: 'कैलासमे हमरा के पूछैत अछि? हम कैलास त्यागि मृत्युलोक चलि जाइ। ओतय लोक हमर पूजा करत, हमर थान बनत, हमर गीत गाओल जाएत।'

मनोरथ देवीक छल, मुदा भूख मनुक्खे सन — मान्यताक भूख। आ एहि भूखमे एकटा गणित छल: मृत्युलोकमे पूजा तखने पसरत जखन कोनो पैघ, प्रतिष्ठित लोक पहिने माथ झुकाओत। बाँकी नगर अपने पाछाँ चलि देत।

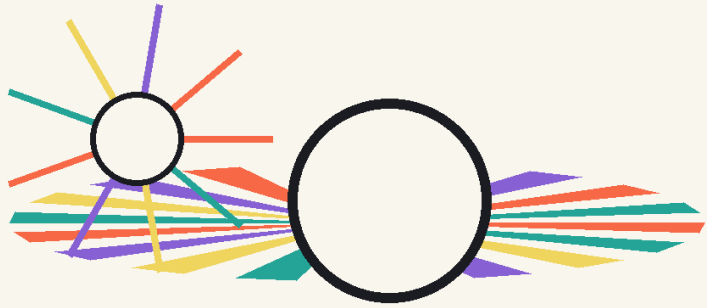

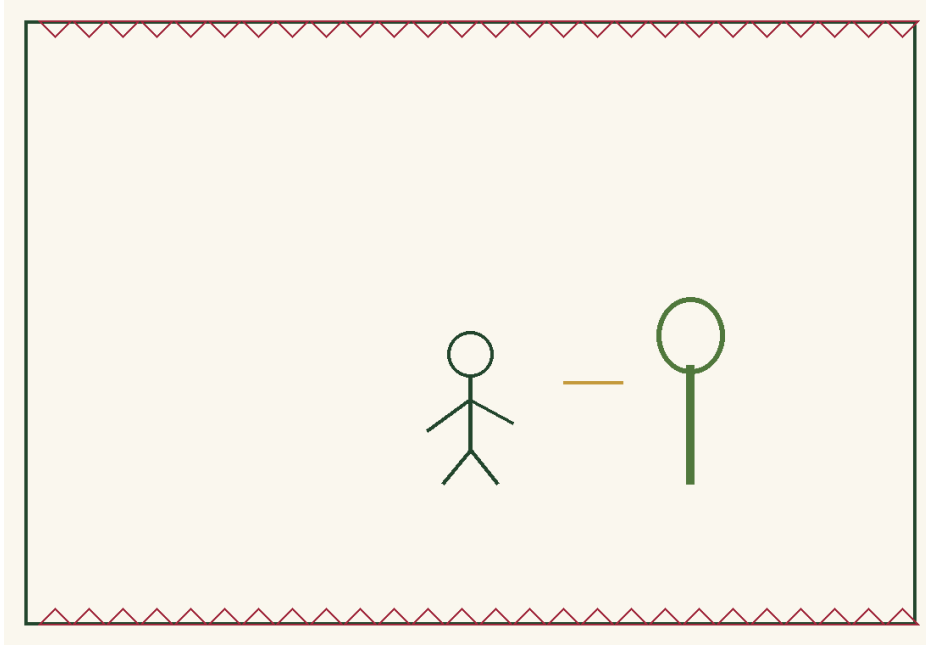

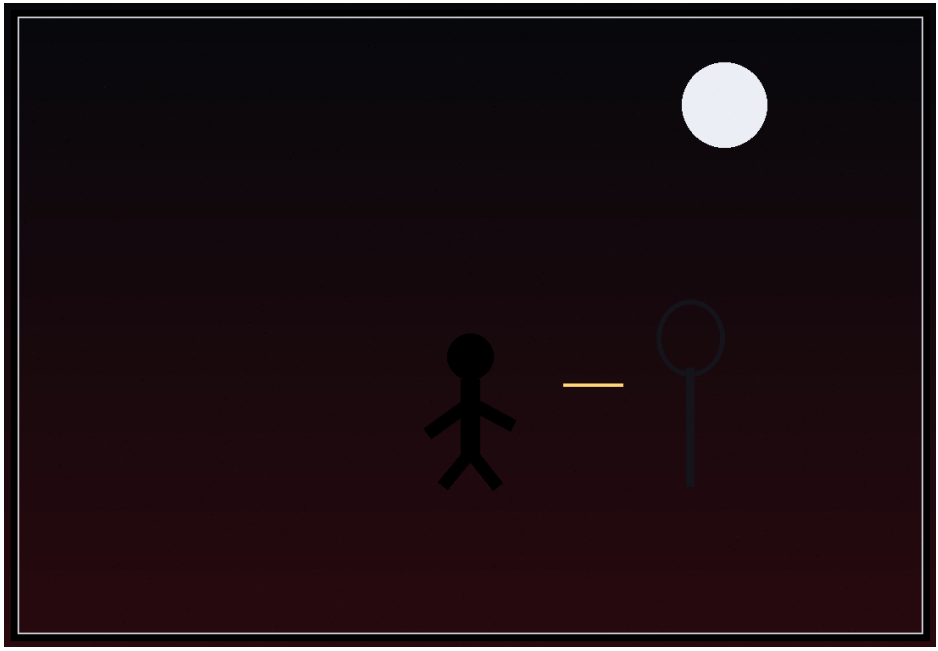

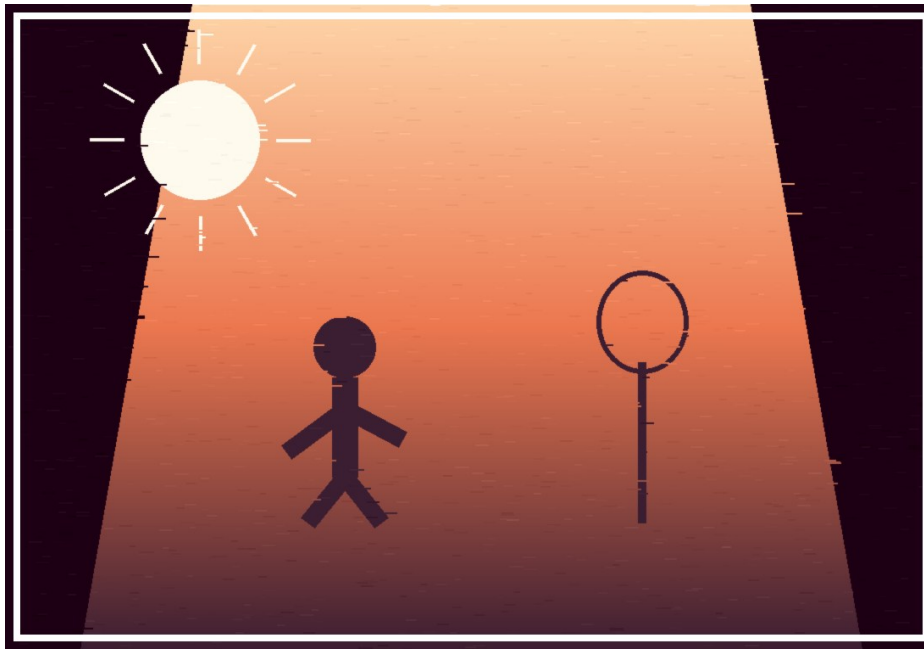

चित्र 4

मनसा मृत्युलोक आएलि — आ उतरलि सोझे चम्पानगर। नगरक सभसँ पैघ नाम? चाँद सौदागर। देवी हुनकहि लग गेलीह आ कहलनि — 'हमर पूजा कर।'

आदेश छोट छल, मुदा ओकर पाछाँ पूरा योजना ठाढ़ छल। मनसाकेँ भरोस छल — के मना करत देवीकेँ? मुदा ओ जकरा लग पहुँचल छलीह, से चाँद सौदागर छलाह — जिनक माथक नियम हुनका अपने घोषित छलनि।

अध्याय 3 : इनकार

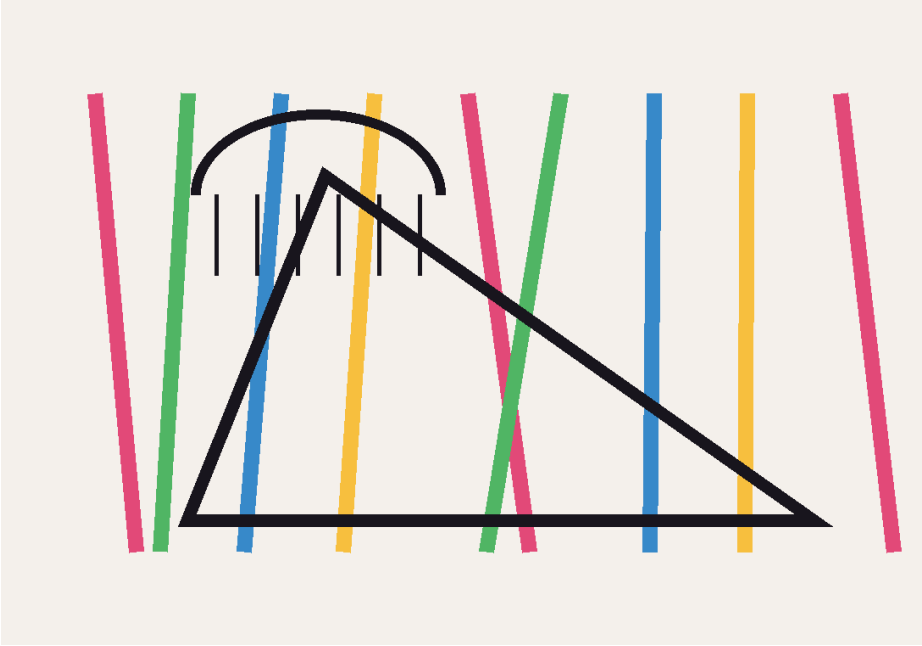

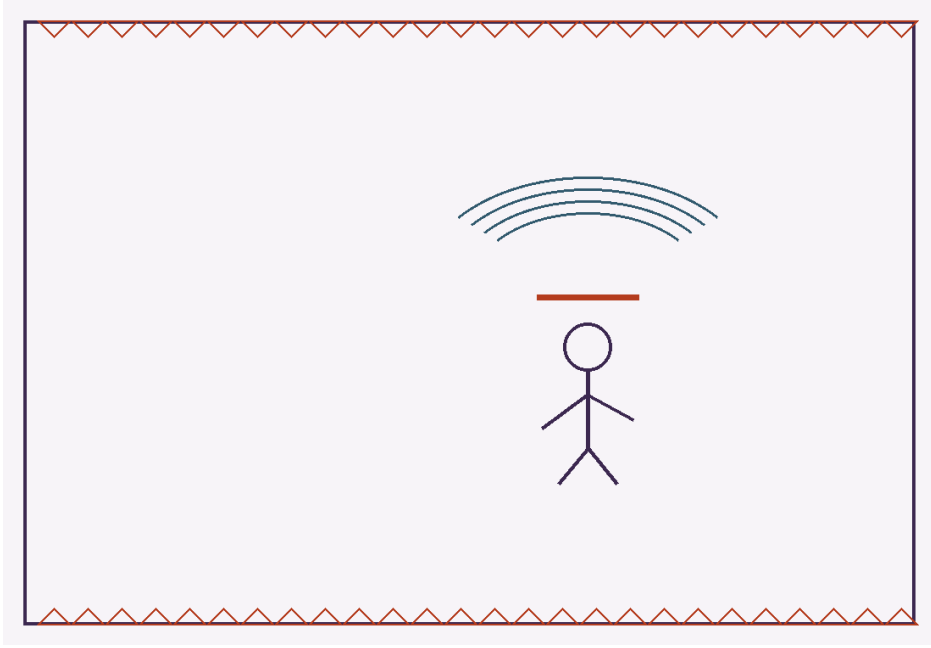

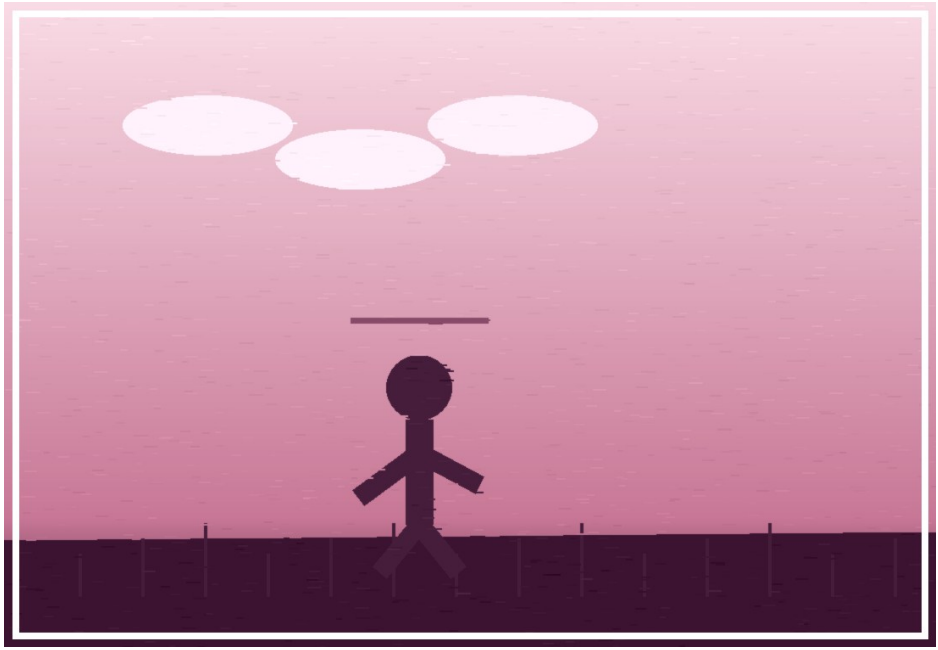

चित्र 5

चाँद सौदागर मना कऽ देलनि।

'हम शिवक भक्त छी। ई हाथ जाहि फूलसँ महादेवक पूजा करैत अछि, से आन ककरो नहि चढ़ाओत।' — ने घृणा, ने अपमान; खाली एकटा भक्तक सोझ निष्ठा। मुदा जिद आ जिद जखन टकराइत अछि, त' बीचमे तर्कक ठाम नहि बचैत।

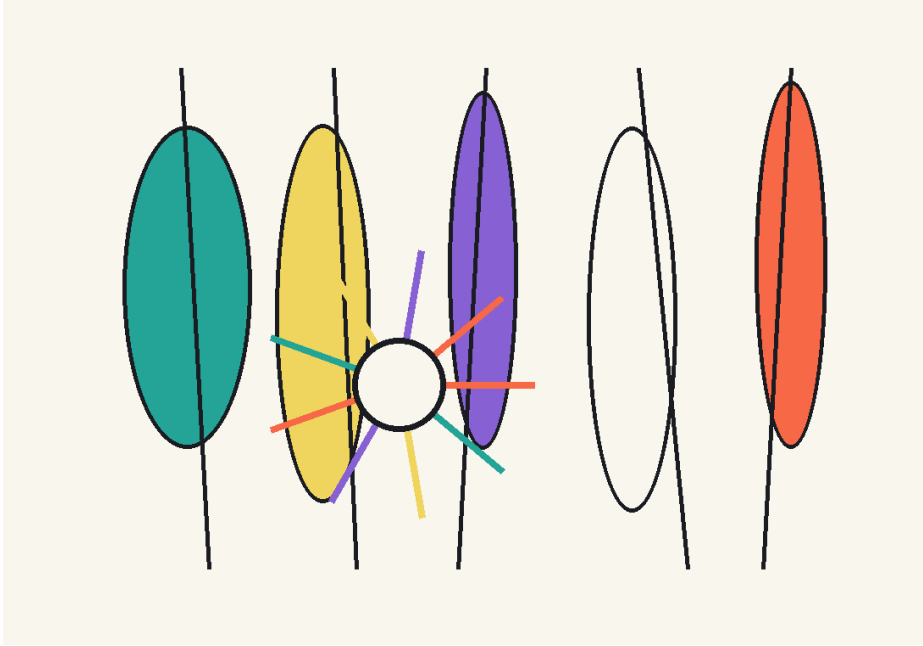

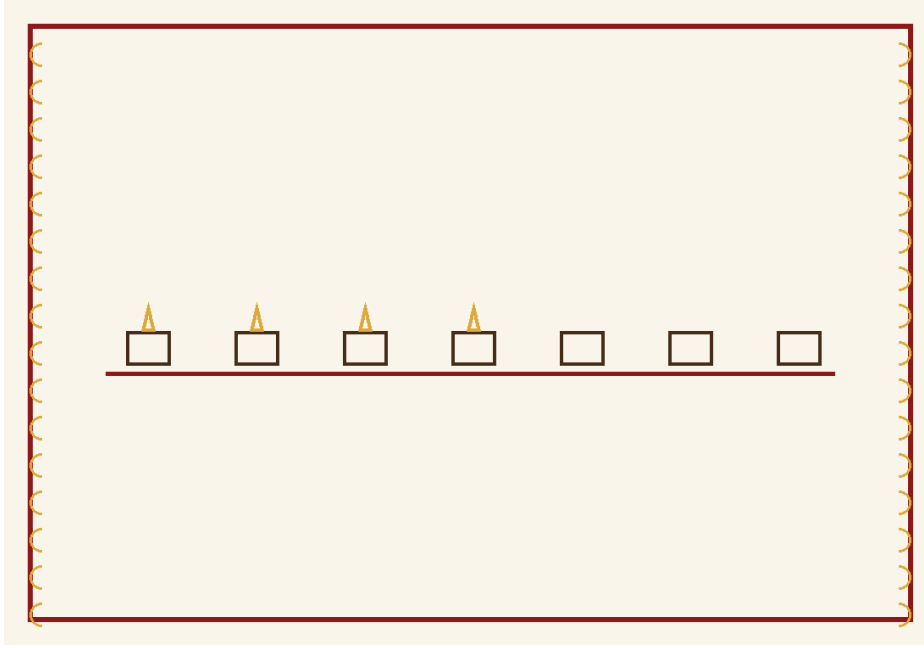

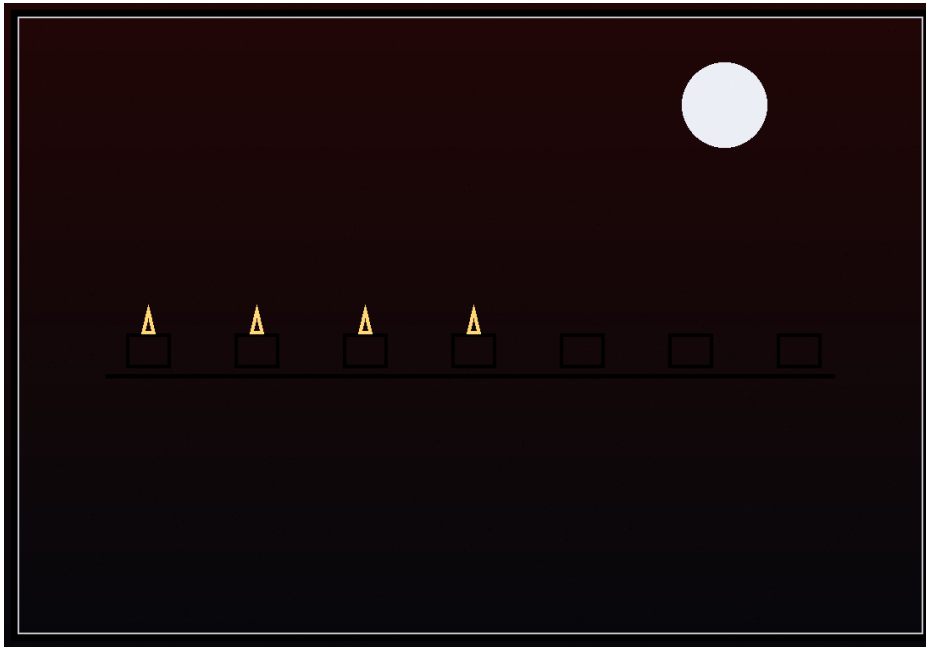

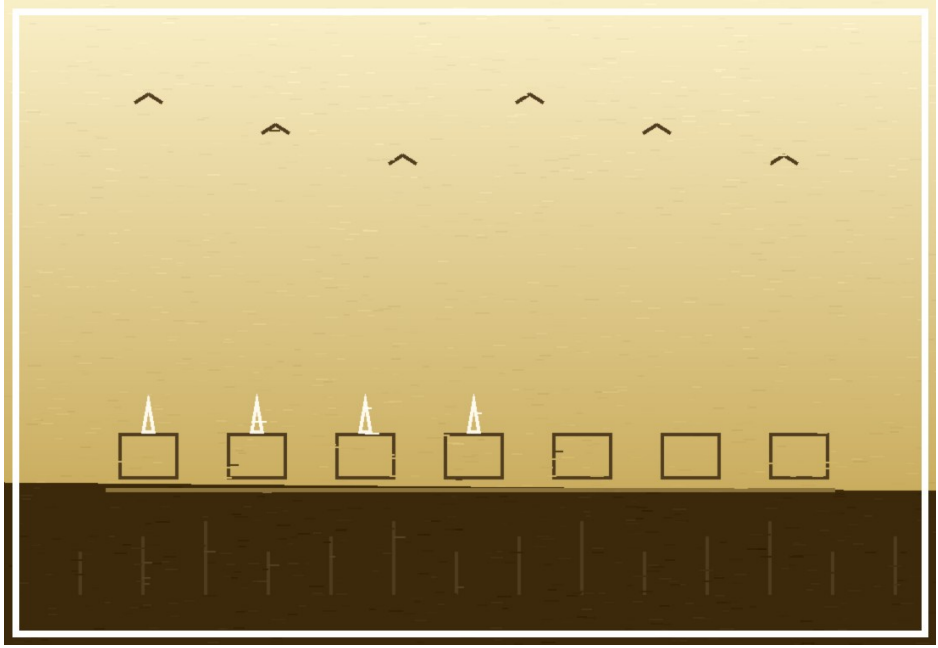

चित्र 6

मनसा क्रोधित भेलीह! जकरा माध्यमसँ मृत्युलोकमे पूजा पसरबाक छल, वैह ठाढ़ भऽ गेल! देवीक मान्यताक भूख आब अपमानक आगि बनि गेल — आ ओहि आगिक पहिल लपट खसल ओतय, जतय चाँद सौदागर सभसँ कमजोर छलाह।

चाँद सौदागरकेँ सात टा बेटा छलनि — सात दीप, सात सहारा। मनसाक दृष्टि ओम्हरे घूमल। देवता जखन मनुक्खसँ हारए लागैत अछि, तखन ओ मनुक्खक करेजपर वार करैत अछि।

अध्याय 4 : सात आघात

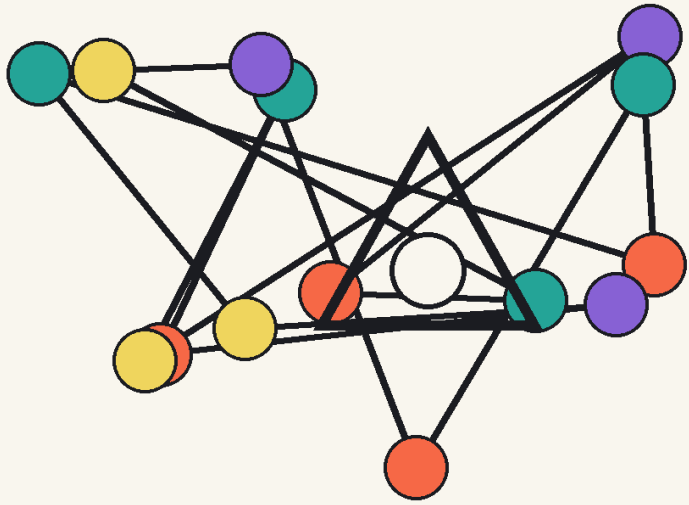

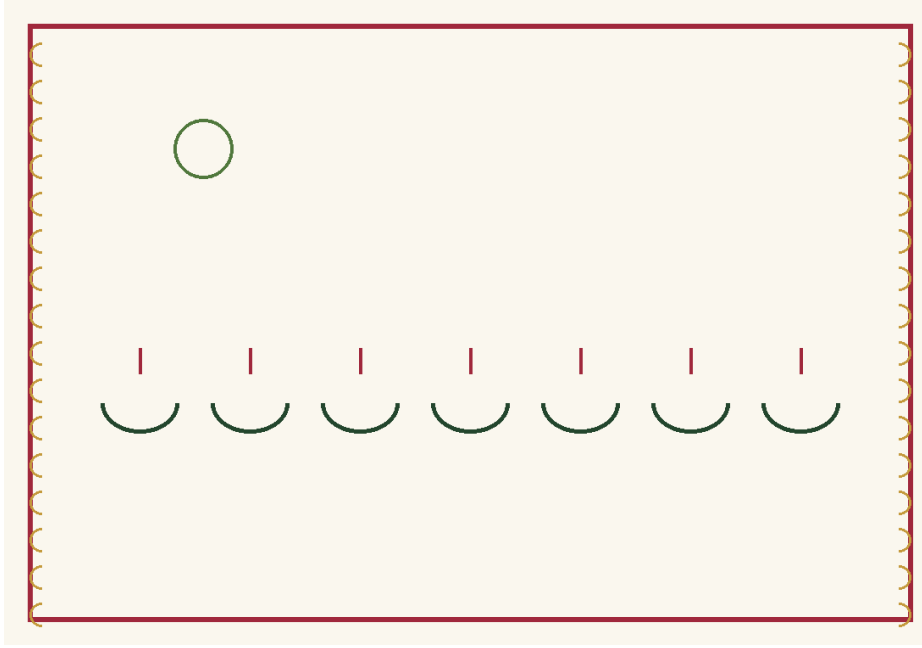

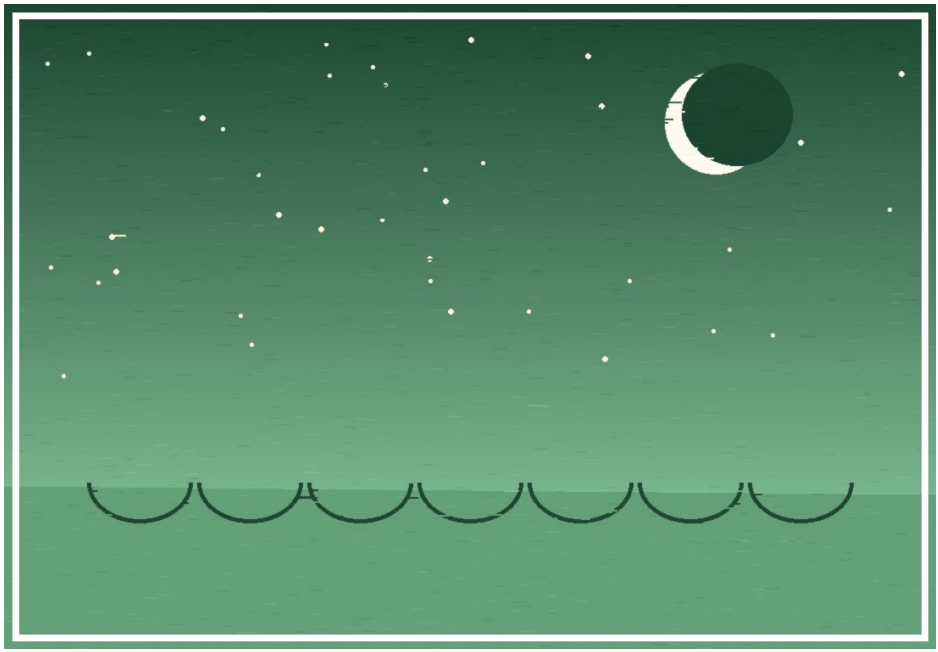

चित्र 7

आ मनसा सातूकेँ काटि लेलनि। एक-एक कऽ, विषक डंकसँ — सात बेटा, सात लहास। चम्पानगरक सभसँ भरल-पूरल आँगन एक्कहि कालखण्डमे सात चिताक घाट बनि गेल।

नगर थरथरा गेल। लोक फुसफुसाए लागल — 'विषहरीक कोप थिक... सौदागर, पूजा कऽ लिअ...' मुदा चाँद सौदागर सात-सात आघात सहितो डोललाह नहि। हुनक शोक पहाड़ छल, मुदा निष्ठा पहाड़सँ ऊँच।

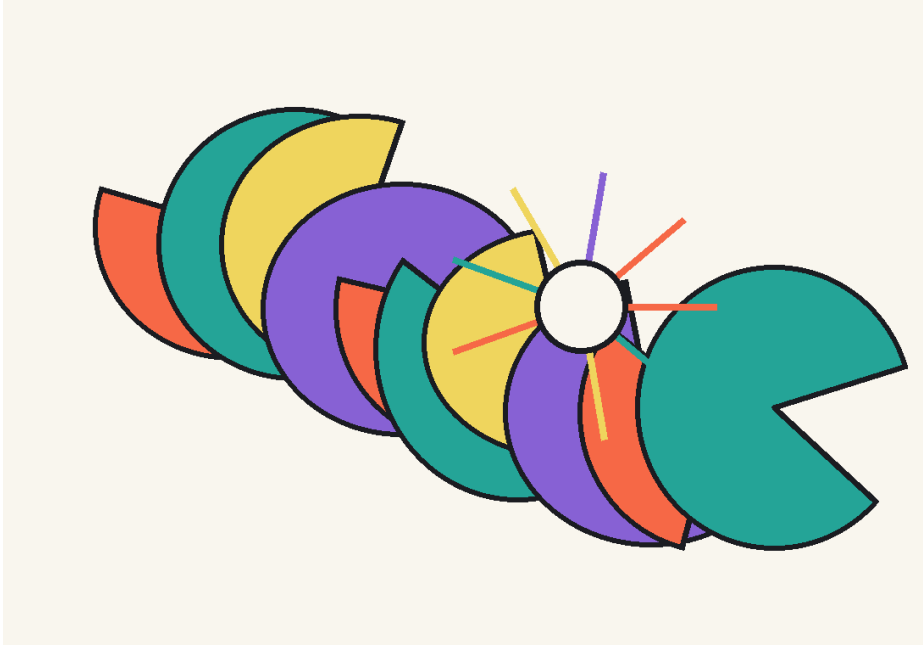

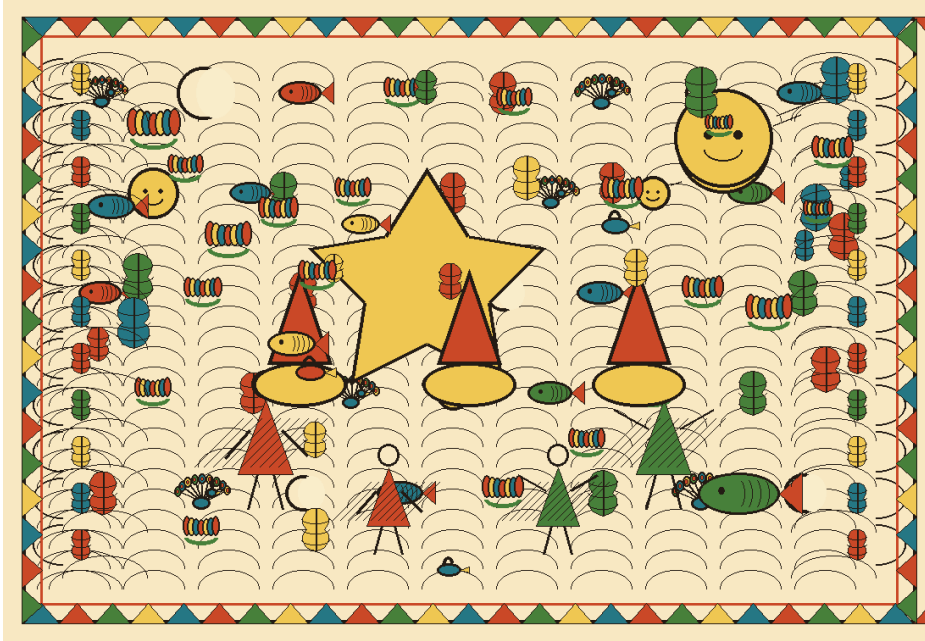

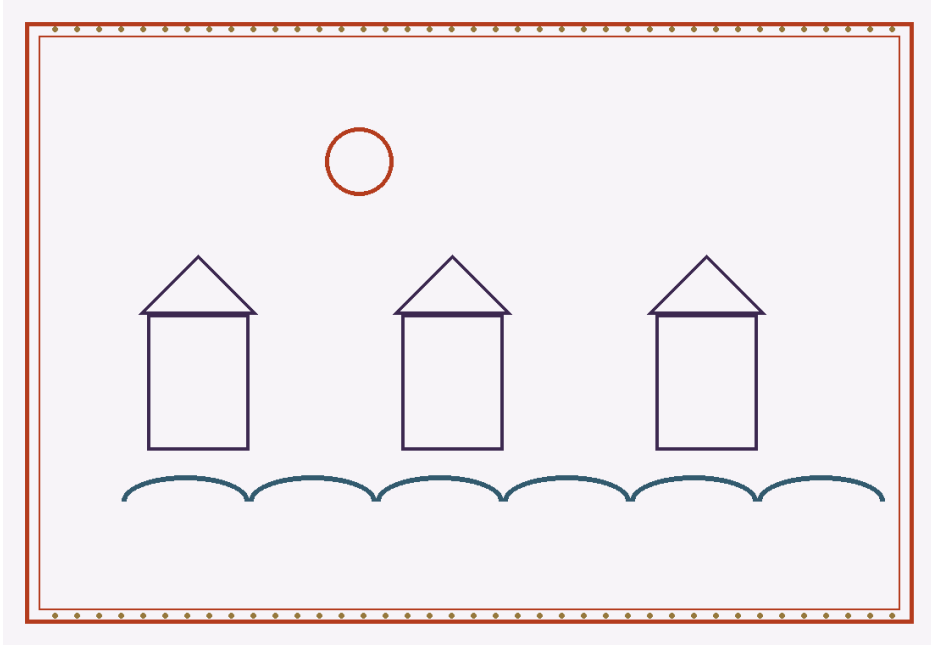

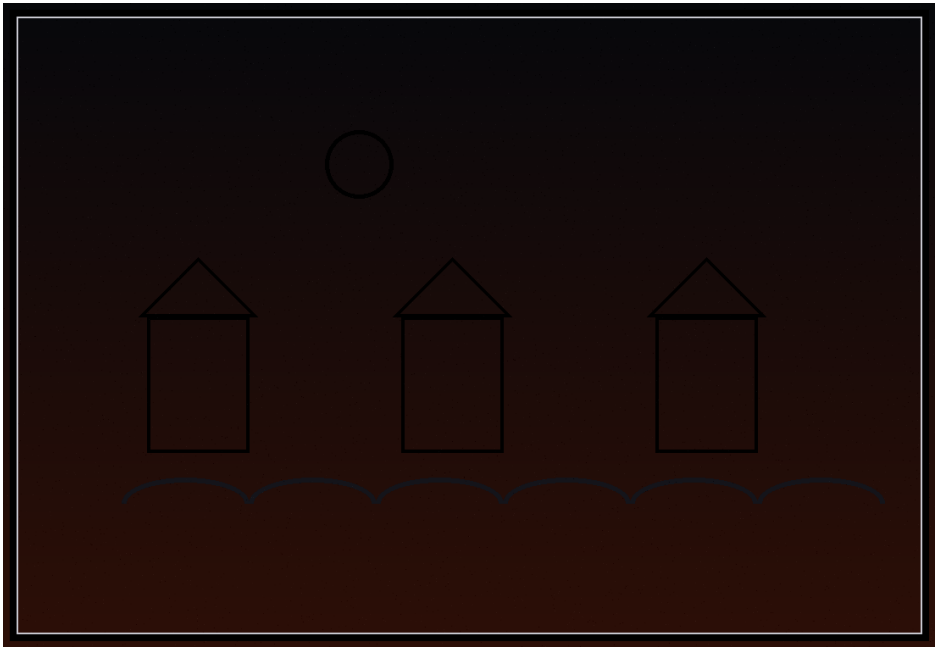

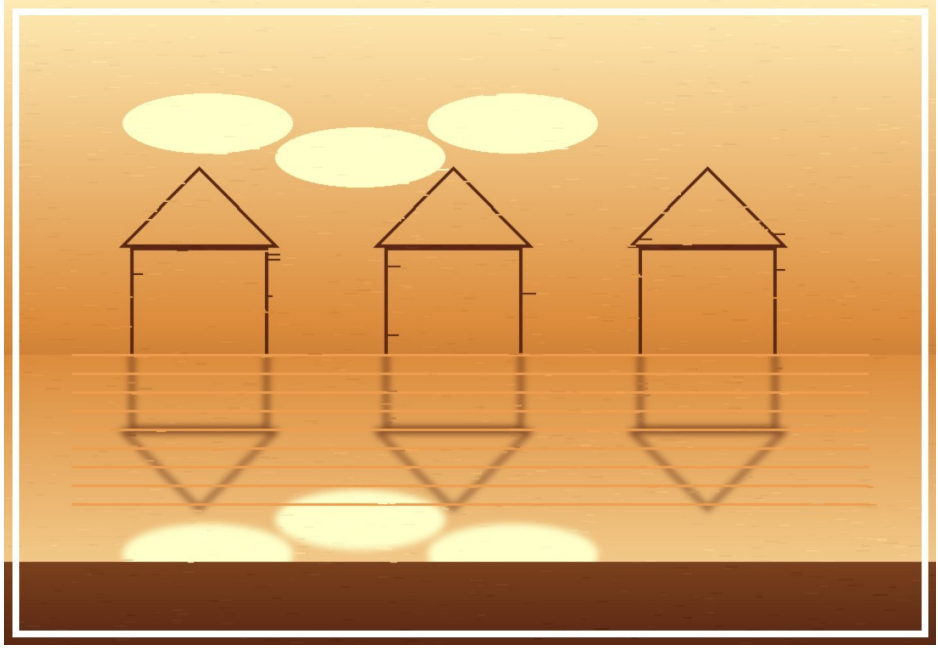

चित्र 8

'जे देवी हमर सात निर्दोष बेटाक प्राण लऽ सकैत छथि, से पूजा नहि — भय माँगि रहल छथि। आ भयसँ झुकल माथक कोन मोल?' — एहि एक वाक्यमे चाँद सौदागरक पूरा चरित्र अछि। ओ हठी छलाह, निष्ठुर बुझाइत छलाह — मुदा हुनक भीतर एकटा सिद्धान्त जरैत छल।

मुदा मनसाक तरकस एखन खाली नहि भेल छल। बेटा गेल — आब बेर छल धनक। आ चाँद सौदागरक धन समुद्रपर तैरैत छल।

अध्याय 5 : डूबल जहाज

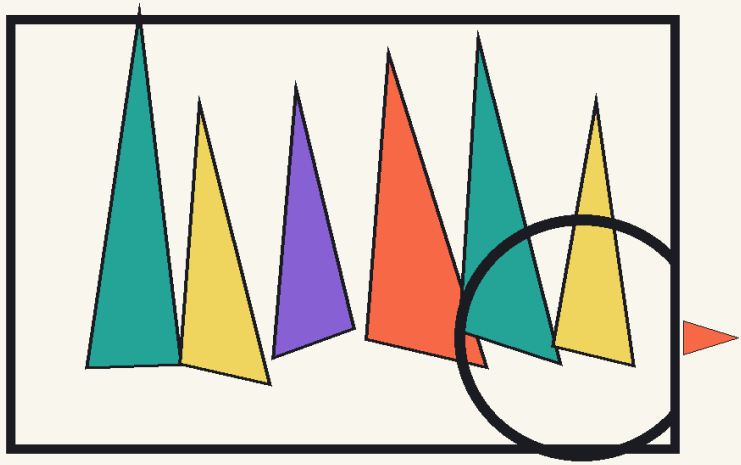

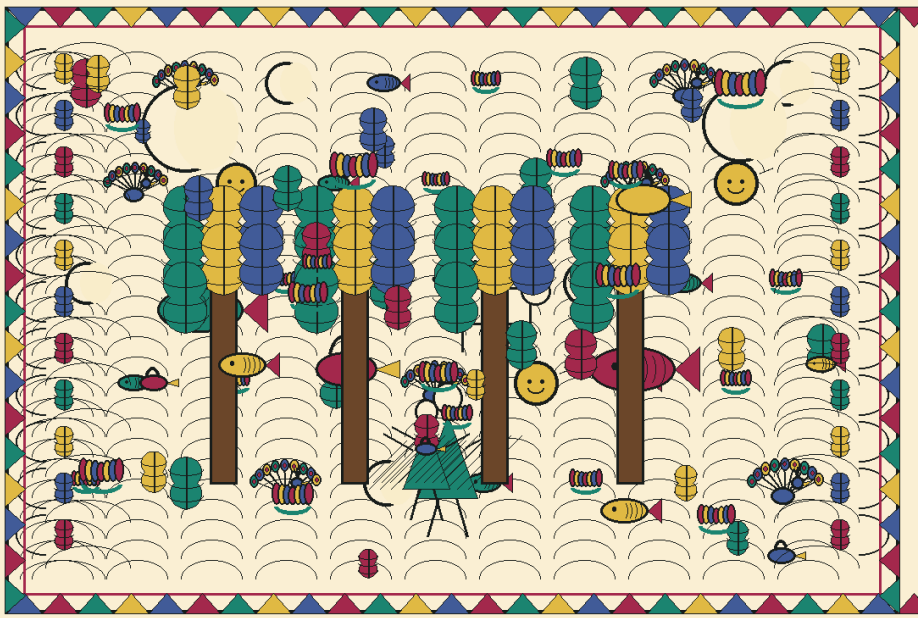

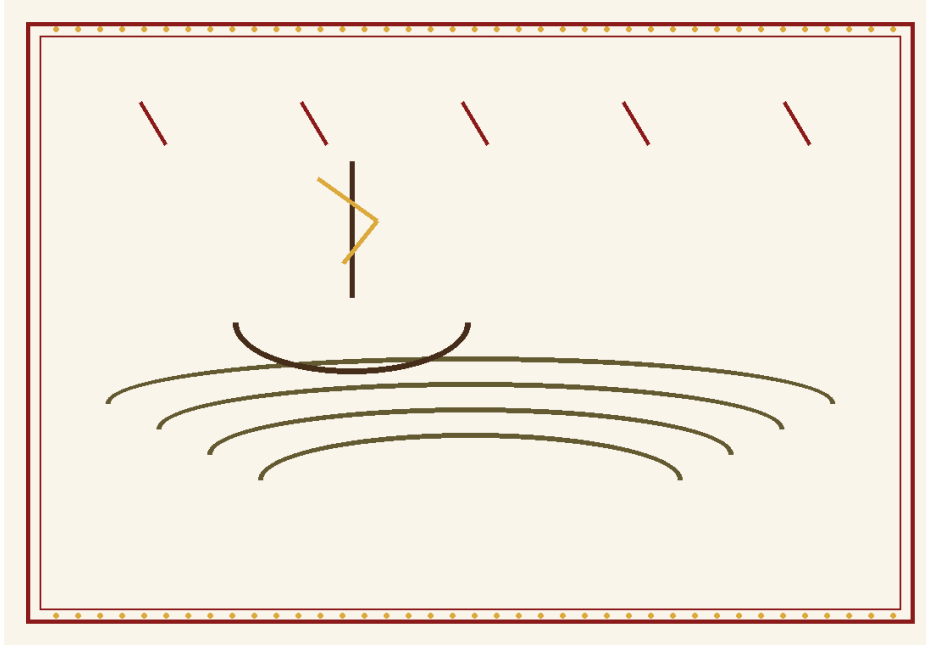

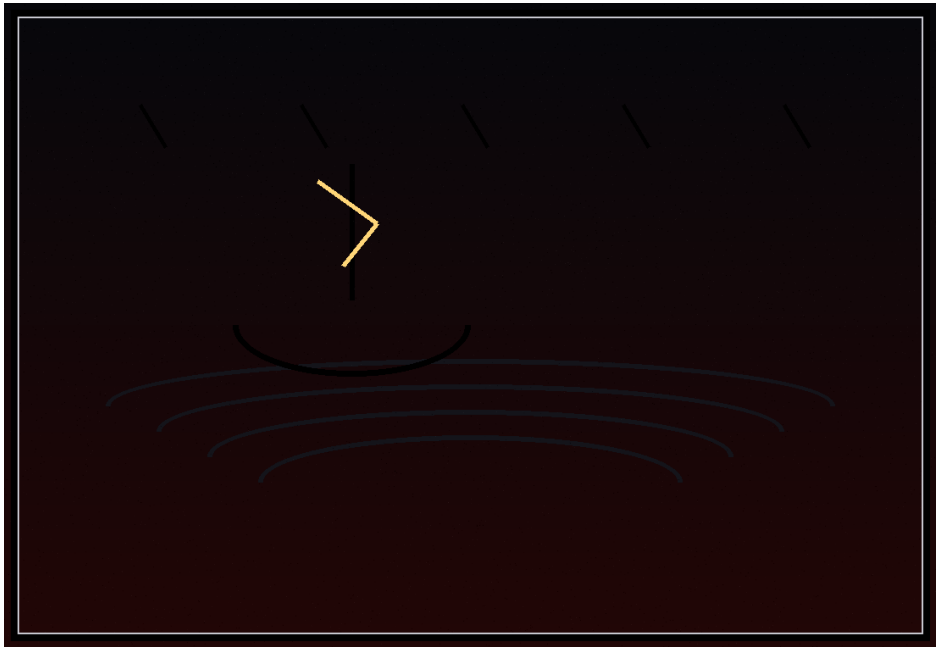

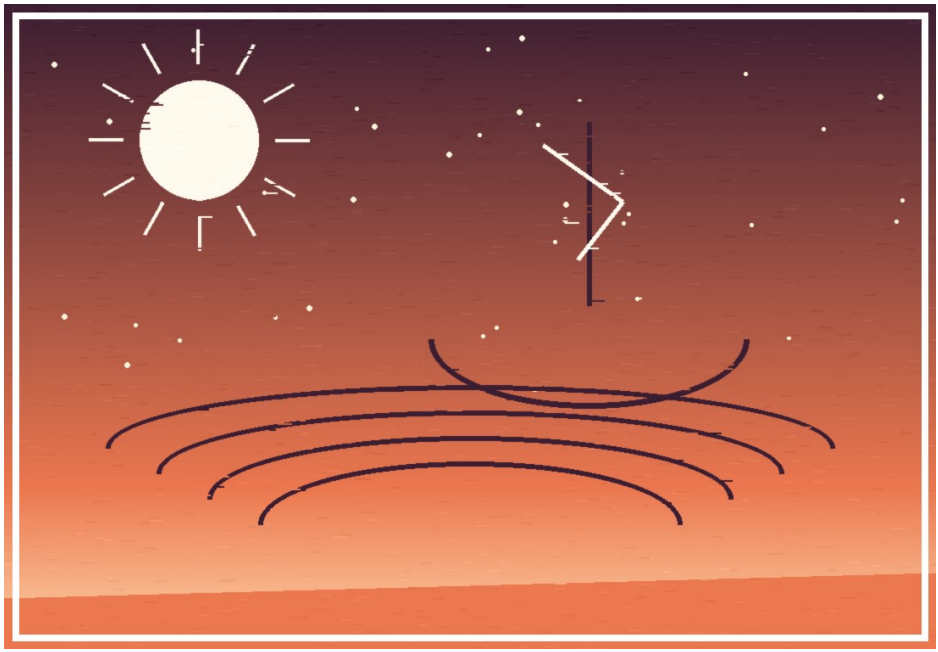

चित्र 9

एक बेर सौदागर दूर देशसँ जहाजसँ घुरि रहल छलाह — व्यापार सम्पन्न, जहाज भरल। आ बीच धारमे मनसा जहाज डुमा देलनि।

आन्ही उठल, लहरि पहाड़ भेल, आ चौदहो जहाज एक-एक कऽ पानिक पेटमे समा गेल। चाँद सौदागर कोनहुना प्राण नेने कात लगलाह — मुदा कात लागल एकटा कंगाल।

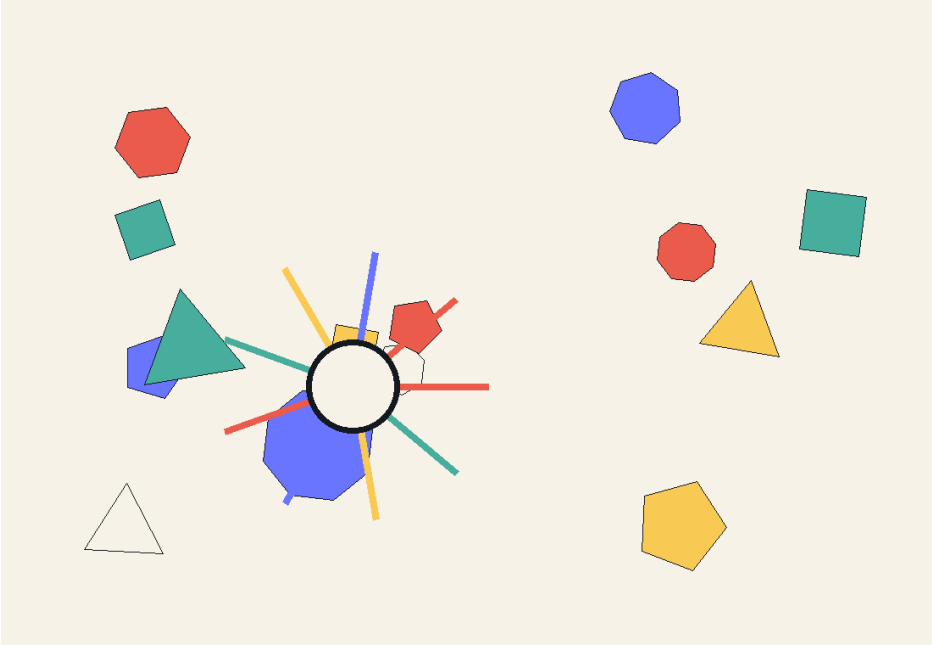

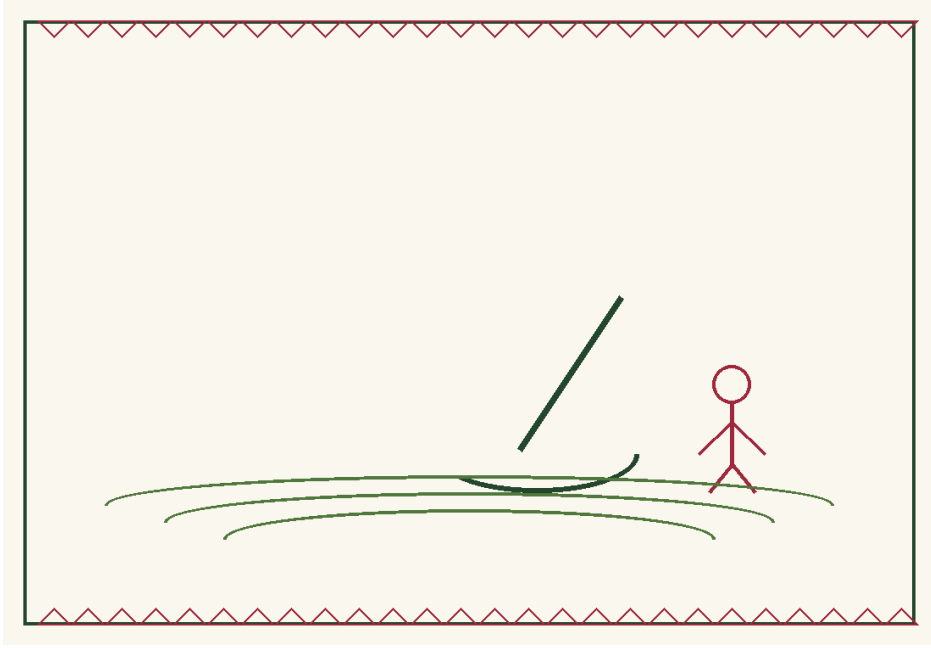

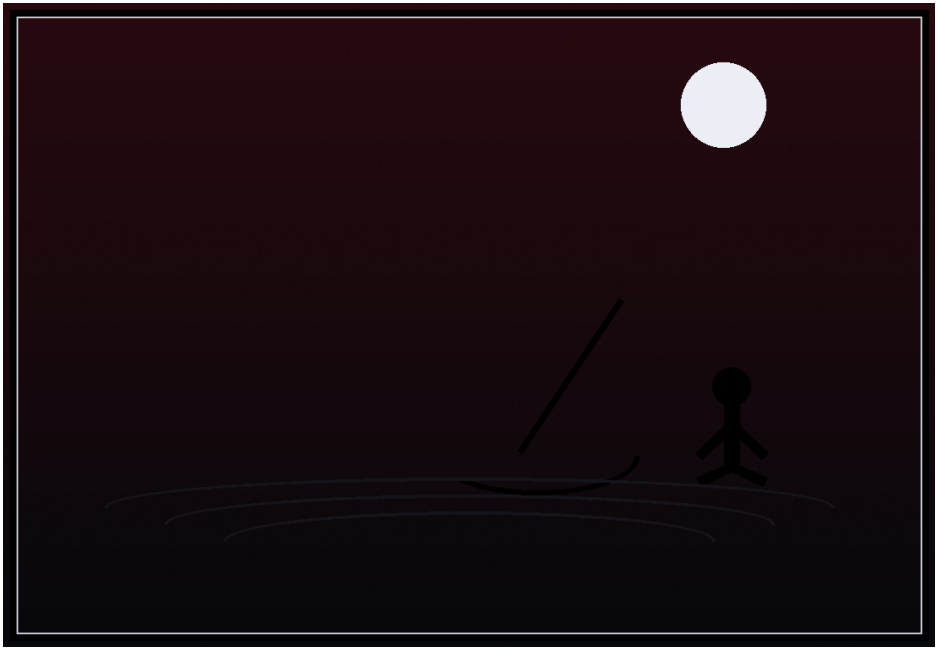

चित्र 10

जे नगरक सभसँ धनी छल, से आब खाली हाथ। सात बेटा गेल, धन गेल, जहाज गेल। मनसा दूरसँ देखैत छलीह — आब त' झुकत!

मुदा टूटल चाँद सौदागर सेहो झुकलाह नहि। आ ठीक एही अन्हार घड़ीमे नियति एकटा दीप जरओलक — हुनका एकटा बेटा भेलनि। नाम राखल गेल: लखिन्दर। राखक ढेरीमे एकटा चिनगी — आ चिनगीसँ पैघ कोनो आस नहि होइत।

अध्याय 6 : लखिन्दर आ बिहुला

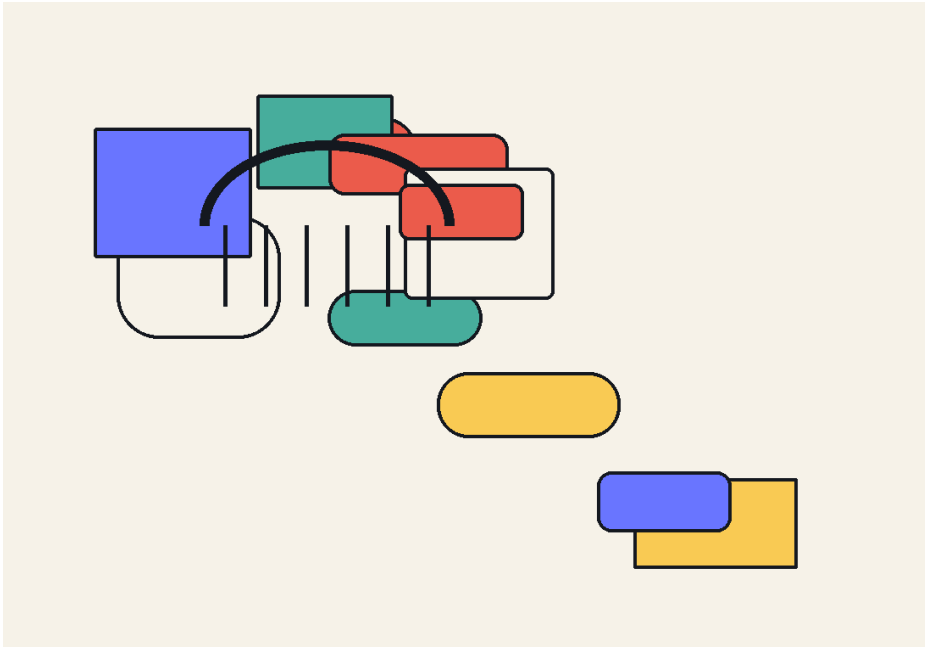

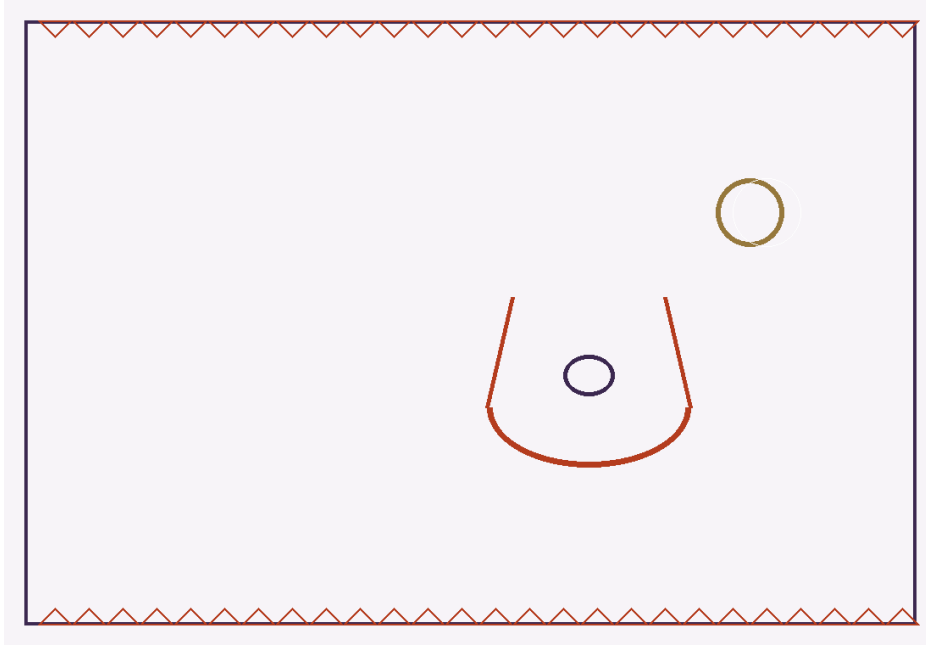

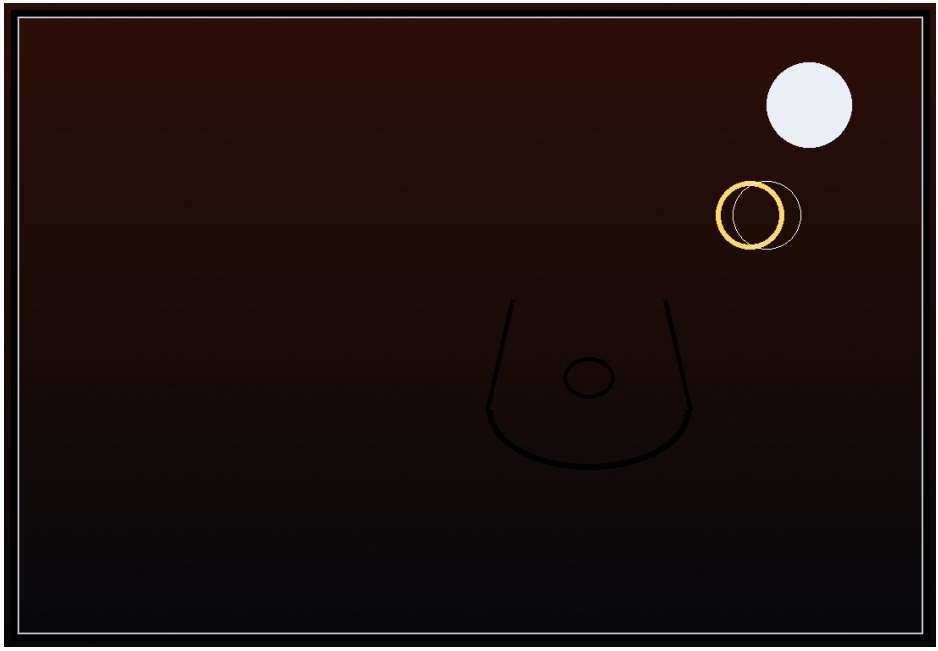

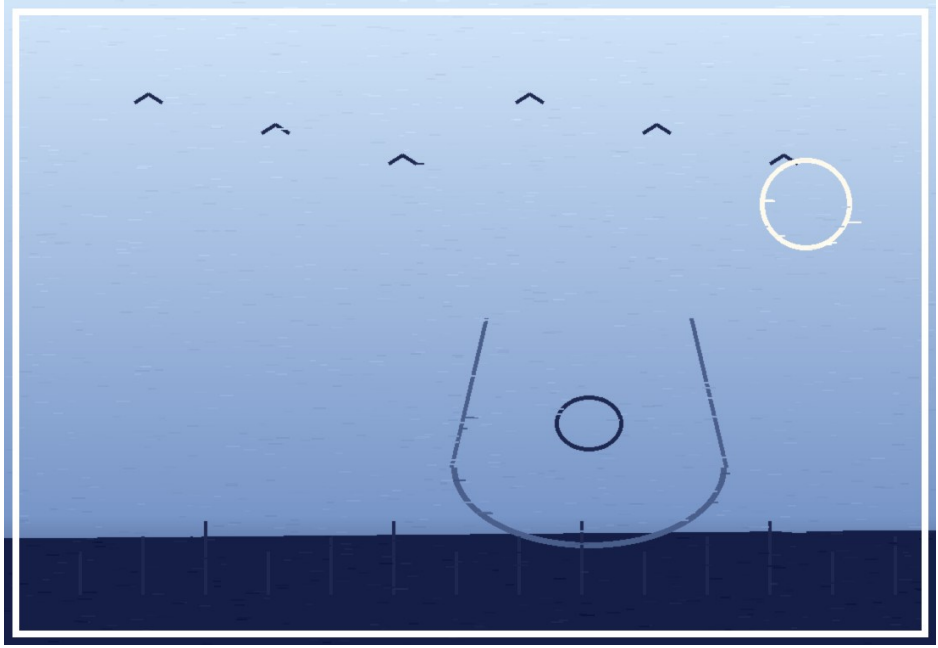

चित्र 11

लखिन्दर बढ़ल — सुन्नर, सुशील, सात मुइल भाइक एकटा उत्तर। मुदा चाँद सौदागर डराएल रहथि — डर आब हुनक छाया बनि गेल छल। मनसाक क्रोध जीवित छल, आ लखिन्दर ओकर अन्तिम निशाना।

तखन उपाय सोचल गेल — बियाह, आ से एहन कन्यासँ जकर भाग्ये कवच हो। खोज भेल, आ भेटलीह बिहुला — अखण्ड सौभाग्यवती कन्या, जकर कुण्डलीमे वैधव्यक कोनो रेखे नहि! जकर सोहाग अटल, तकर पति कोना मरत? — यएह छल चाँद सौदागरक गणित।

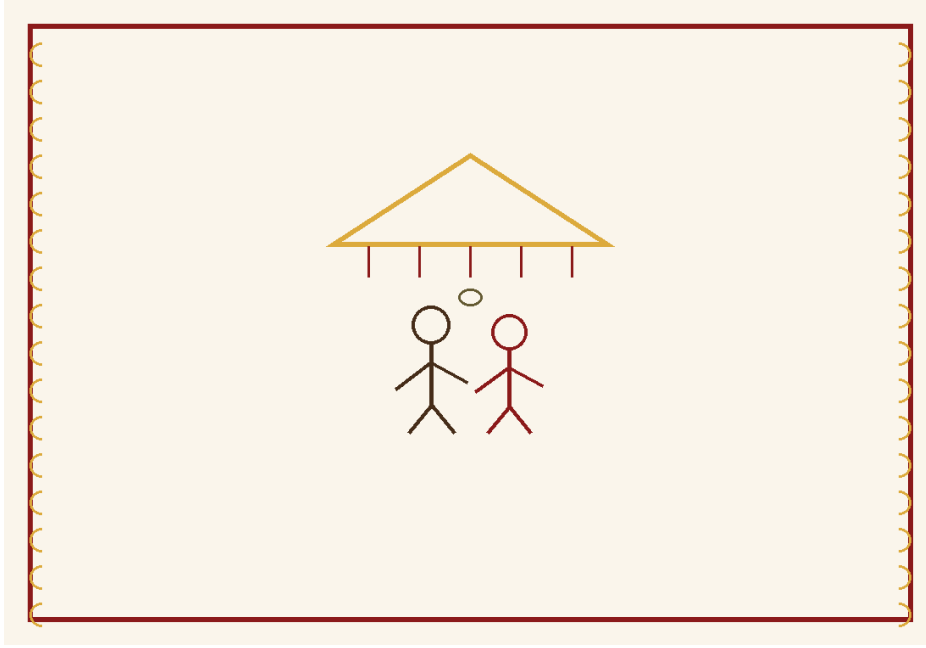

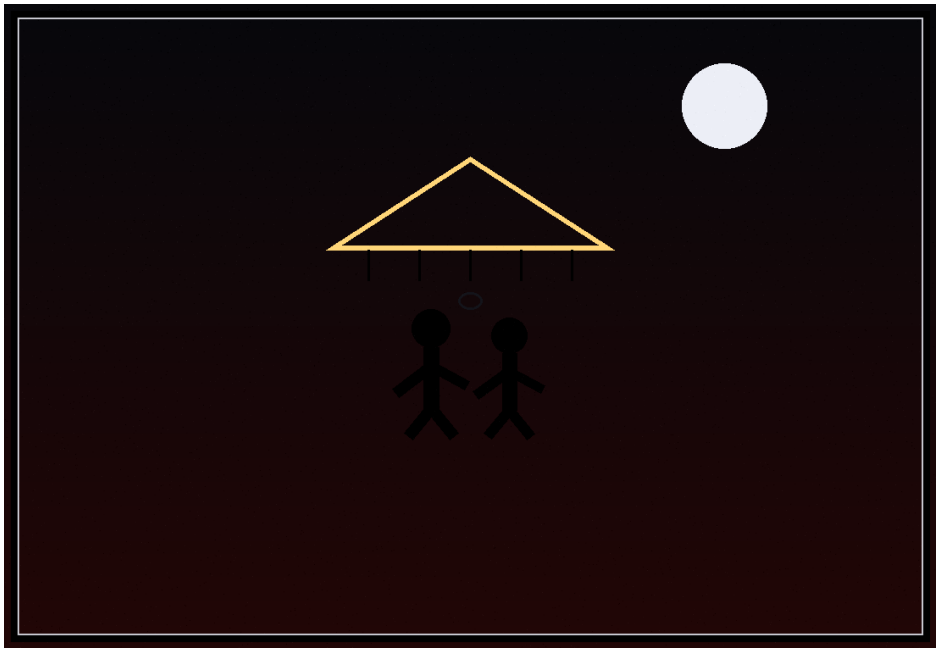

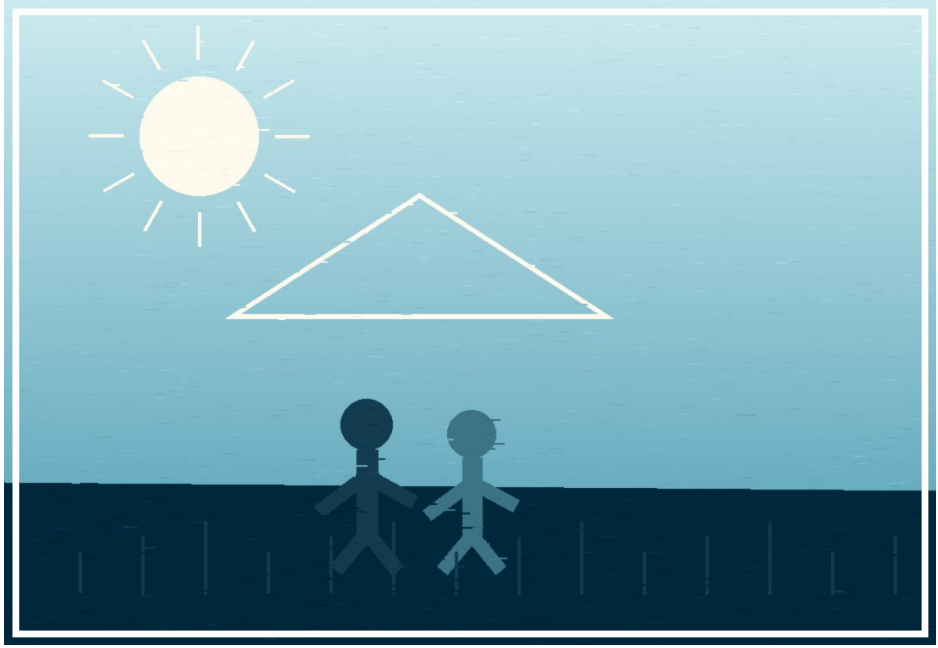

चित्र 12

बियाह भेल — धूम-धामसँ, जतबा टूटल घरसँ भऽ सकैत छल। बिहुला चम्पानगरक पुतोहु बनलि — आ आबिते बुझि गेलि जे ओ खाली कनियाँ नहि, एकटा युद्धक मोर्चा बनल छथि।

आब की करतीह मनसा? — नगर सोचलक। अखण्ड सौभाग्यक आगाँ विषो त' हारि जाएत! मुदा देवीक क्रोध गणितसँ नहि चलैत। मनसा चाँद सौदागरकेँ सपना देलनि — आ सपनामे खाली एकटा वाक्य छल, बरफ सन ठण्ढा: 'कोहबरमे डसब तोहर बेटाकेँ।'

अध्याय 7 : जालीक कोहबर

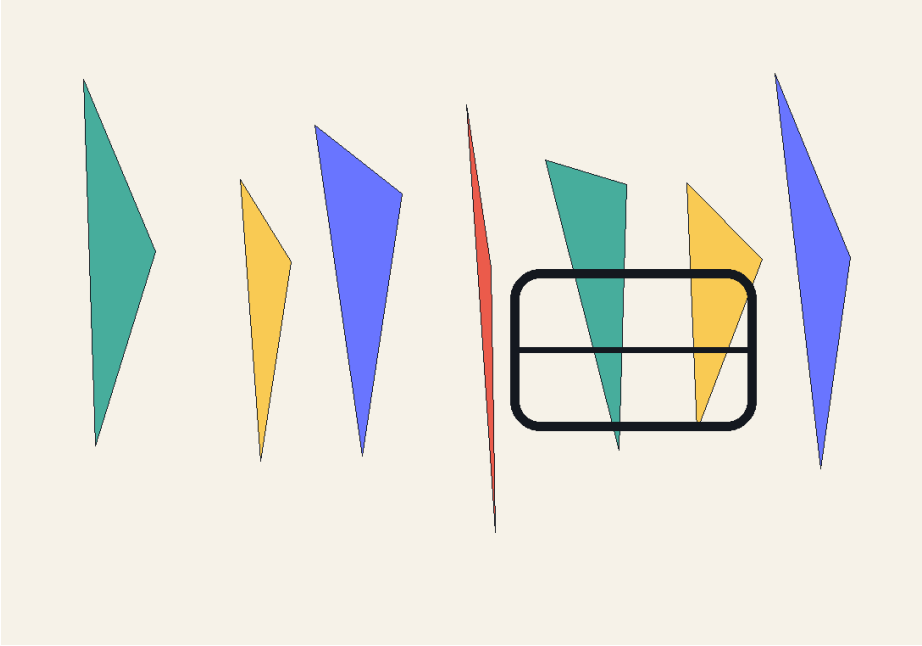

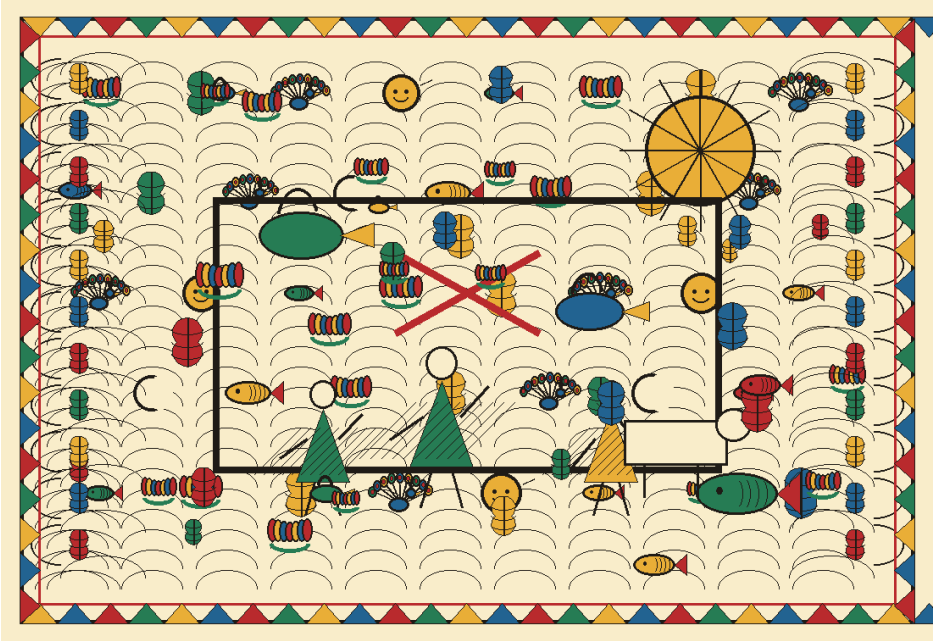

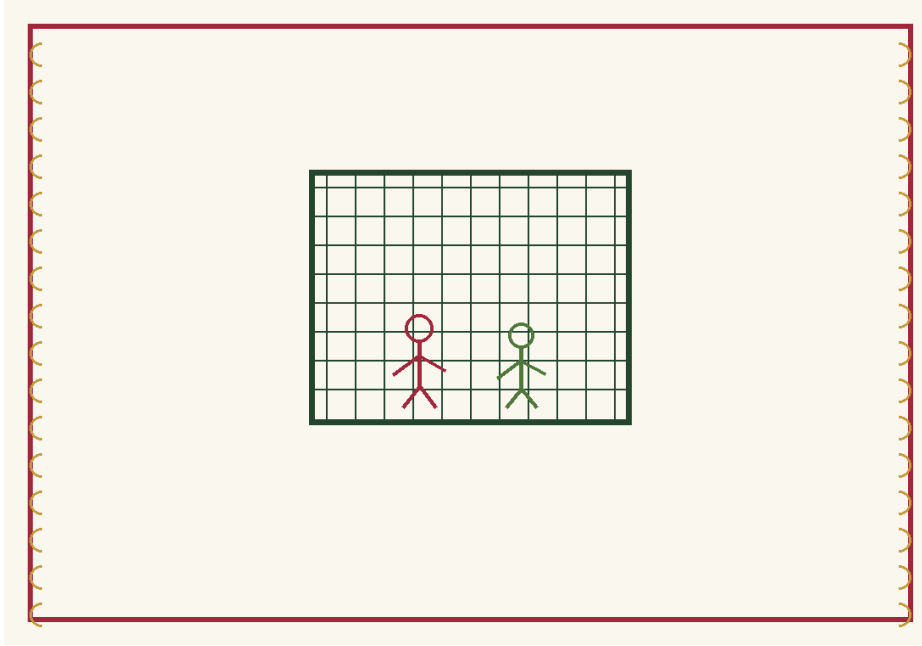

चित्र 13

चेतावनी साफ छल — कोहबर, माने बियाहक पहिल राति, माने ओ ठाम जतय कोनो पहरा नहि रहैत। मुदा चाँद सौदागर हारि माननिहार लोक नहि छलाह। ओ संसारक सभसँ अद्भुत कोहबर बनबओलनि — पातर जालीसँ।

एहन जाली, जाहिमे हवा टा पैसए — साँपक त' कल्पनो नहि। लोहा-काँसाक चादरि, आ ओहिपर महीन-सँ-महीन जाली; ने कोनो छेद, ने कोनो दरारि। कारीगर सभ कहलक — 'सौदागर, एहिमे त' विषो नहि पैसत!'

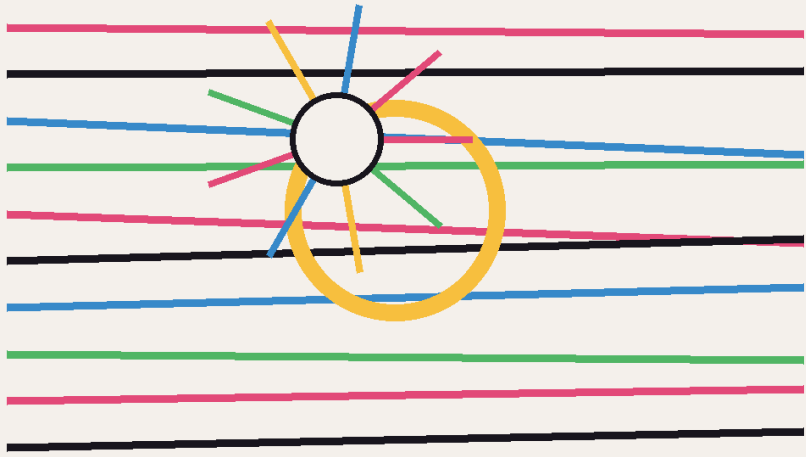

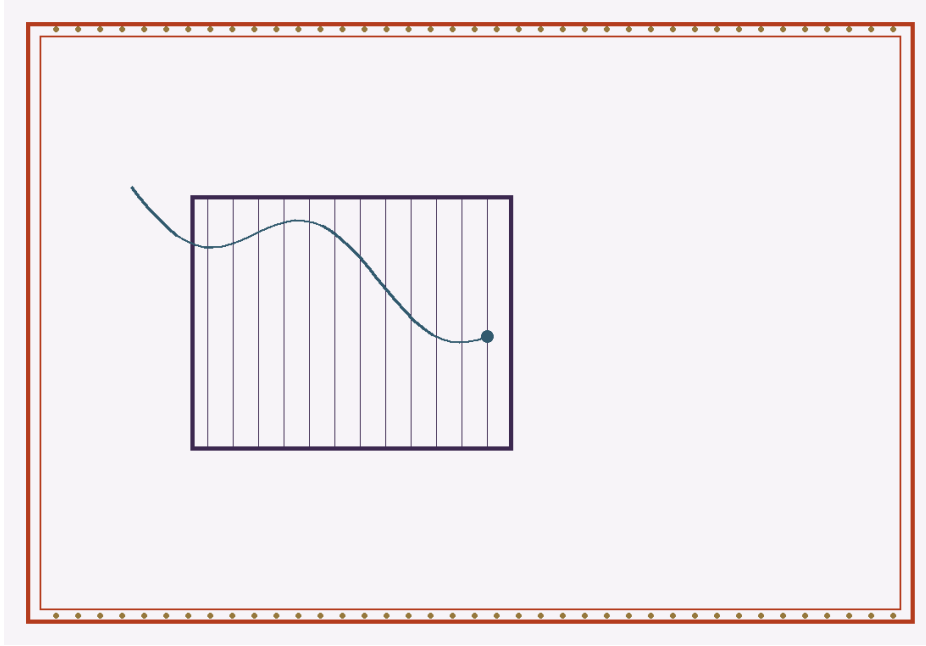

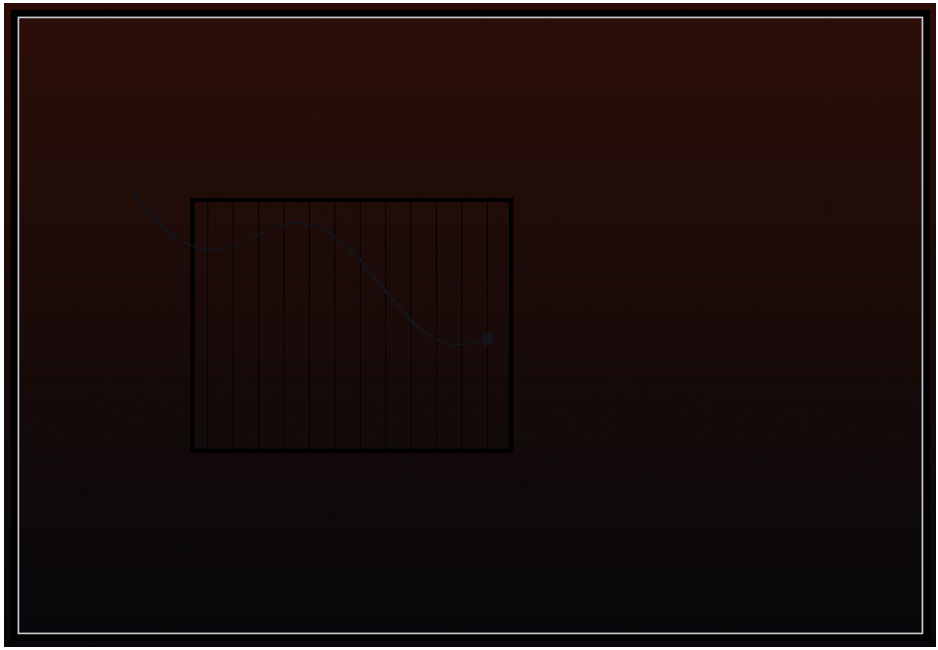

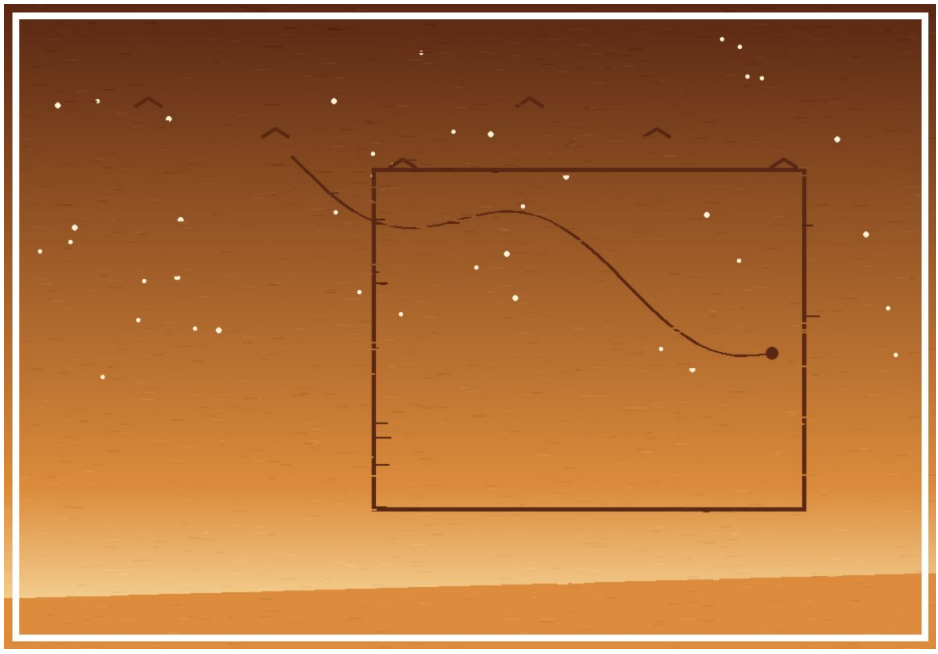

चित्र 14

बियाहक राति लखिन्दर आ बिहुला ओही जालीक कोहबरमे गेलाह। बाहर पहरा, भीतर दीप, आ चारू कात ओ अभेद्य जाली। चाँद सौदागर राति भरि जागल रहलाह — आब की करतीह मनसा?

मुदा — फेर वैह शब्द — मनसा देवी छलीह। ओ पातरो सँ पातर भऽ गेलीह — एतेक सूक्ष्म, जे जालीक बुनावटि सेहो बाट बनि गेल। भीतर पैसलीह, आ काटि लेलनि। लखिन्दर खतम। अखण्ड सौभाग्यवतीक सिन्नुर, बियाहक पहिले राति, कोहबरेमे धोखराएल। नियतिक एहिसँ क्रूर व्यंग्य आर की?

अध्याय 8 : केराक थम्ह

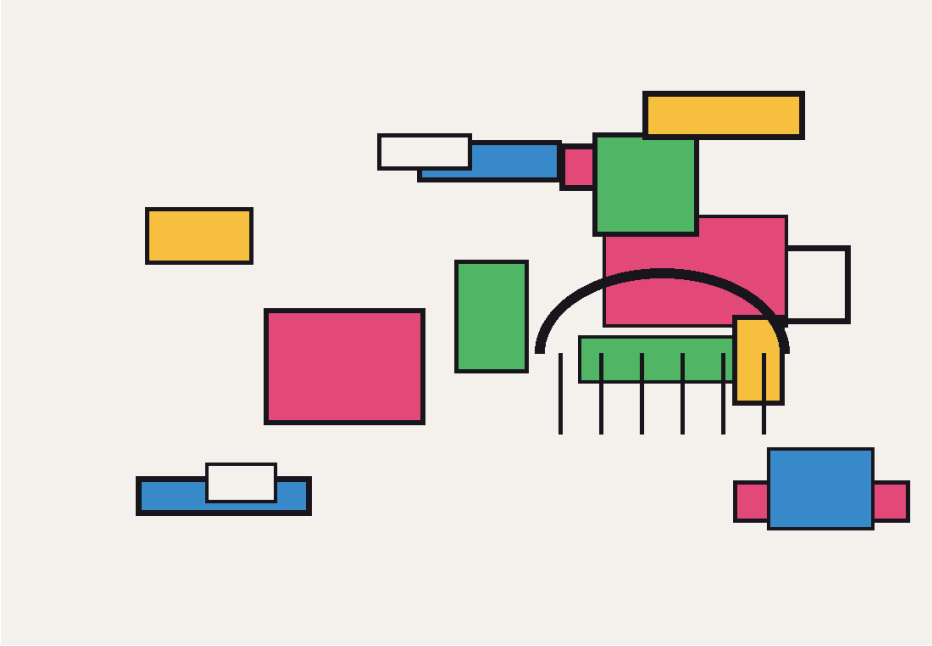

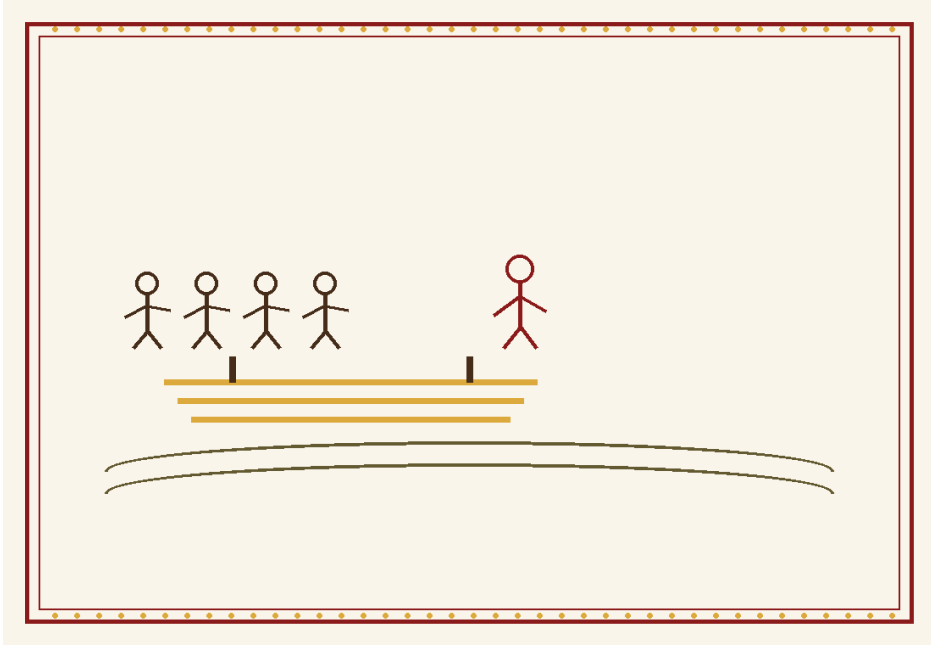

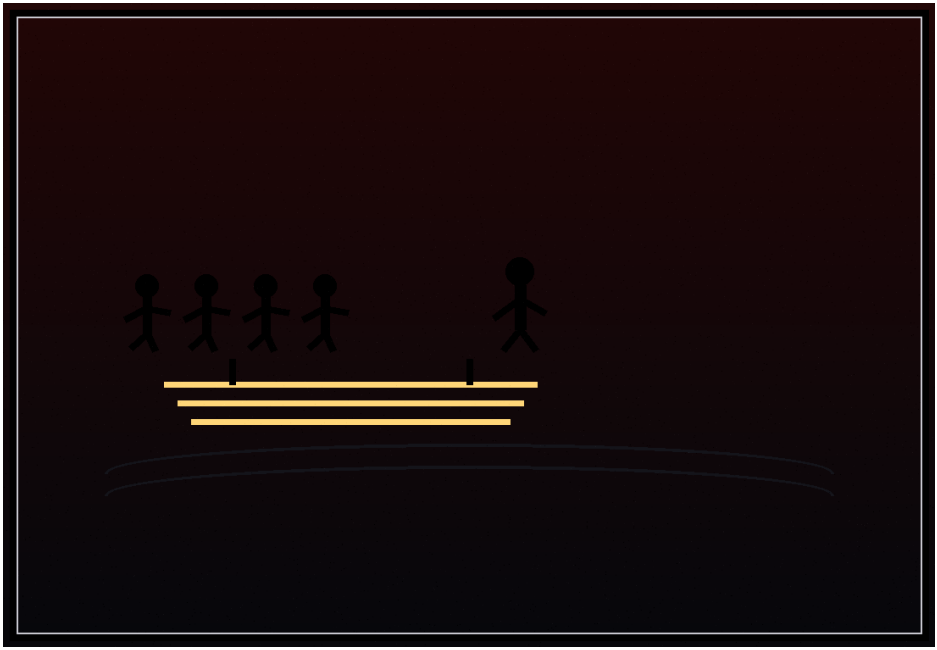

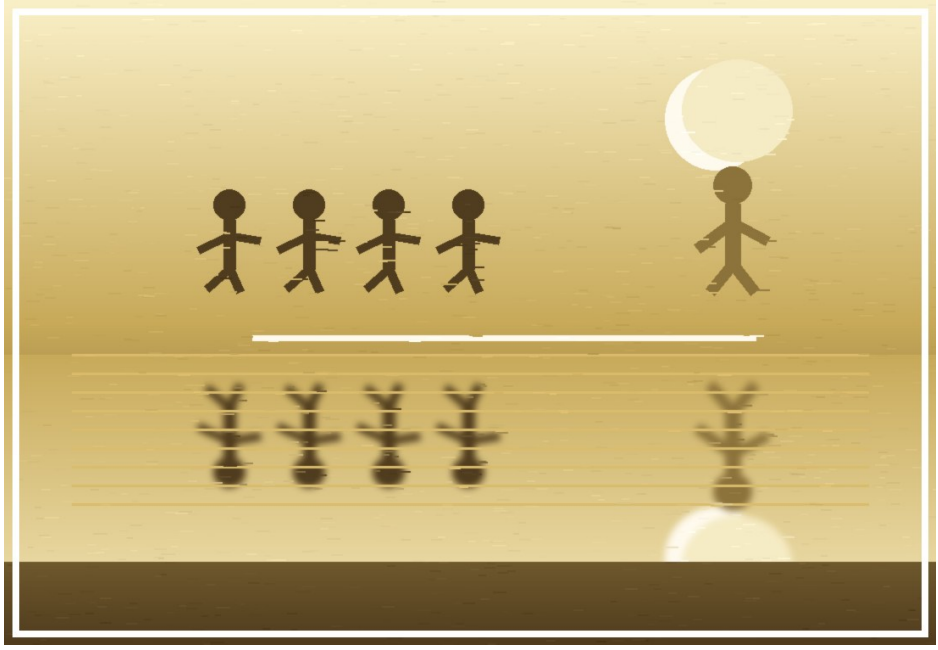

चित्र 15

मिथिलामे रीति अछि — साँपक काटल लहासकेँ जराओल नहि जाइत; ओकरा केराक थम्हपर बान्हि धारमे बहा देल जाइत अछि, एहि आसमे जे कतहु कोनो गुनी-वैद्य जिया दिअए।

लखिन्दरक देह सेहो केराक थम्हपर राखल गेल। गंगाक घाटपर पूरा चम्पानगर कानैत ठाढ़ छल। थम्ह पानिमे उतारल गेल — बहि गेल लखिन्दर गंगामे।

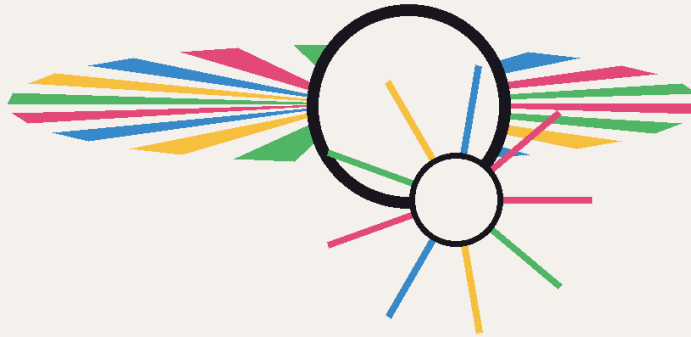

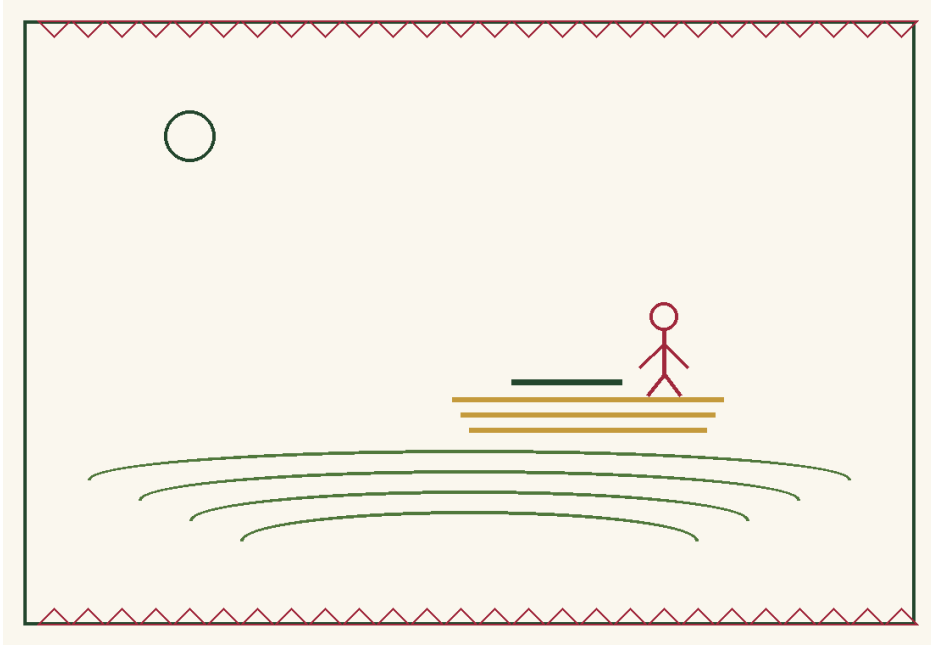

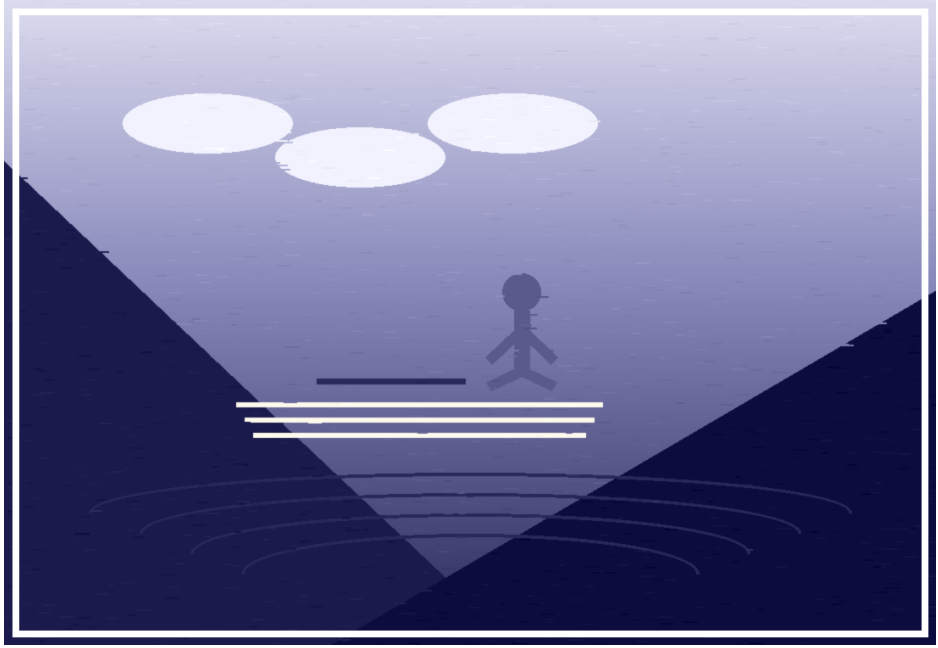

चित्र 16

मुदा बिहुला! — जखन थम्ह धारमे ससरल, त' सभ देखलक जे नव-कनियाँ अपन भीजल आँचर समेटि ओही थम्हपर बैसि गेलीह — पिताक संग, पतिक लहास लग। 'हमर सोहाग जतय जाएत, हम ओतहि जाएब। ई अखण्ड सौभाग्य थिक — एकरा बीच धारमे केओ खण्डित नहि कऽ सकत।'

लोक चिचिआएल, रोकलक, बुझओलक — धार, साँप, बोन, अनजान बाट! मुदा बिहुला नहि उतरलीह। आ थम्ह बहैत गेल — एकटा मुइल दूल्हा, एकटा जीबैत दुलहिन, आ हुनक अटल हठ नेने — गंगाक अनन्त धारमे। एतयसँ ई गाथा शोकगीत नहि, यात्रा बनि जाइत अछि।

अध्याय 9 : त्रिवेणीक धोबिन

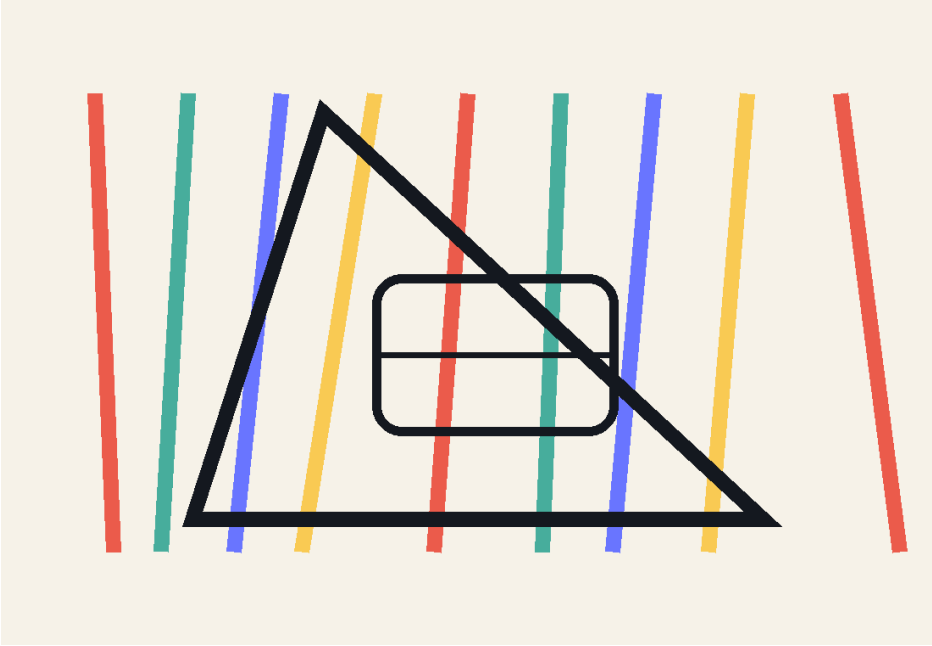

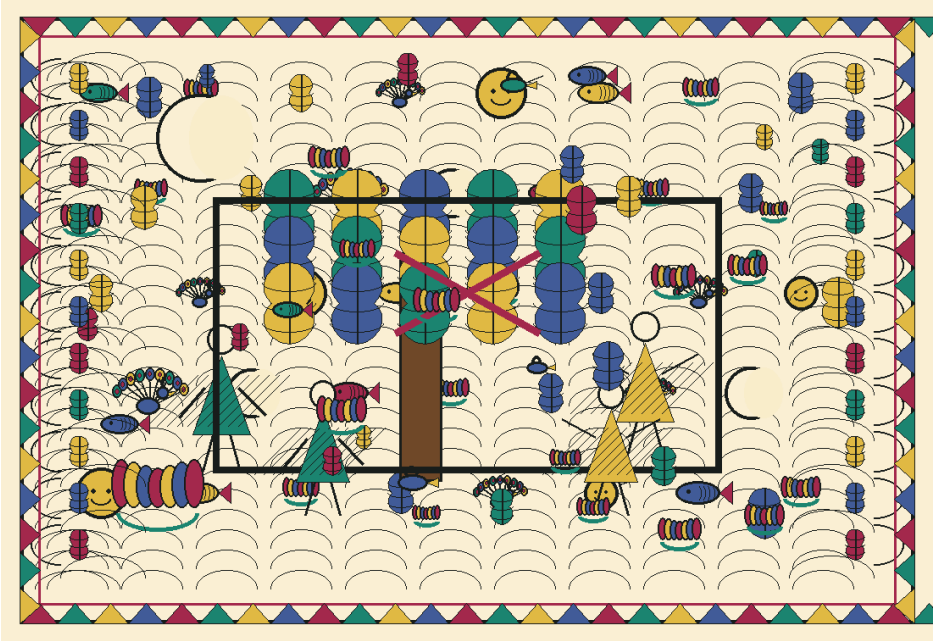

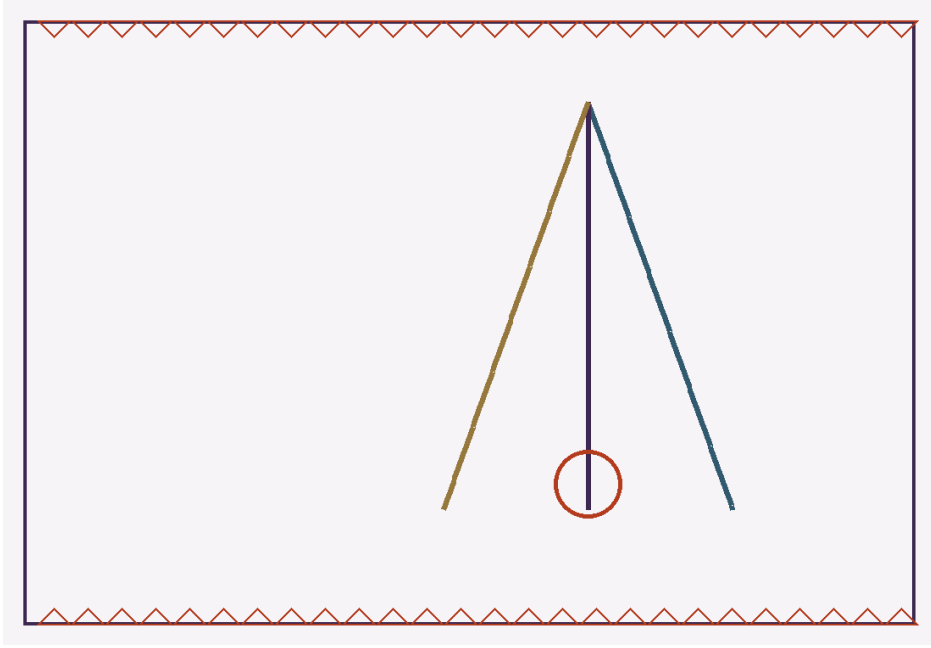

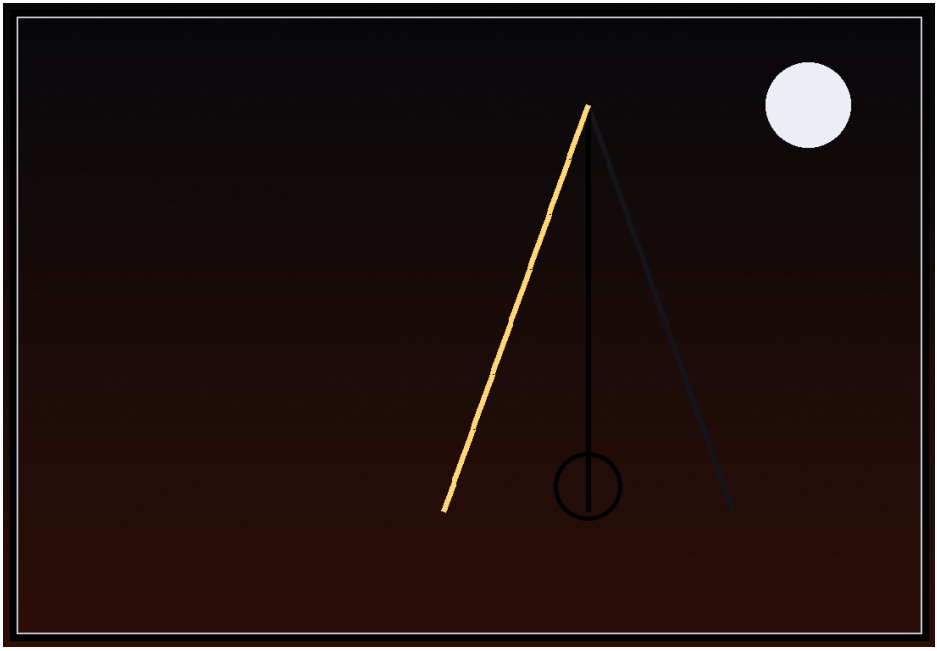

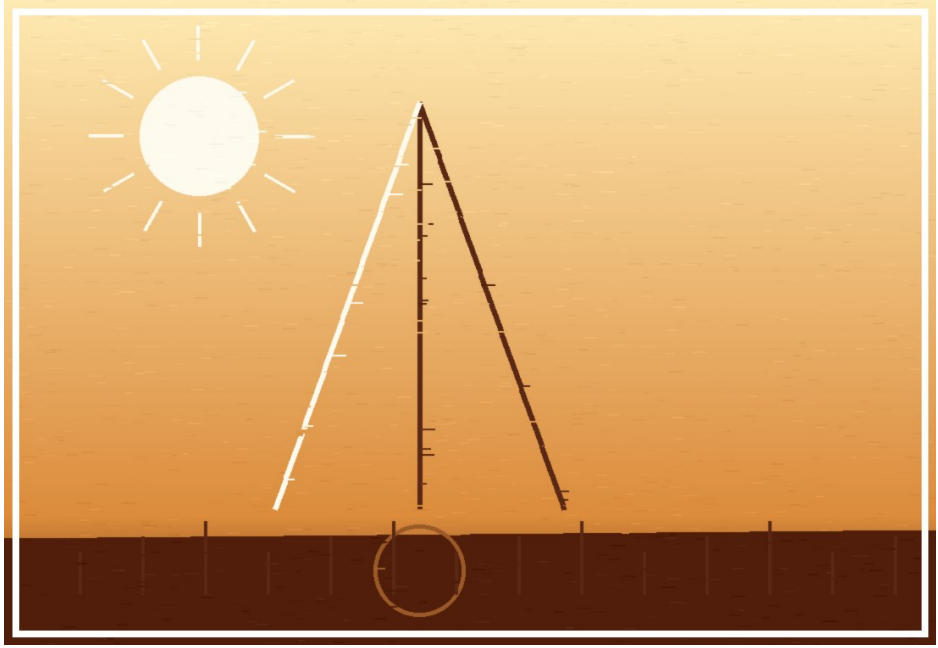

चित्र 17

धार थम्हकेँ बहबैत रहल — दिन, राति, फेर दिन। घाट-घाट पाछाँ छुटल, आ अन्तमे थम्ह पहुँचल संगम — त्रिवेणी घाट, जतय तीन धाराक भेँट होइत अछि।

ओतय एकटा धोबिन कपड़ा खीचि रहल छलीह। संगमे ओकर छोट बेटा — जे बेर-बेर कानए, काजमे बाधा दिअए। आ तखन बिहुला ओ देखलनि, जे देखि हुनक साँस अटकि गेल: धोबिन तंग भऽ कऽ बेटाकेँ मारि देलक आ लहासकेँ कपड़ासँ झाँपि फेर काजमे लागि गेलि!

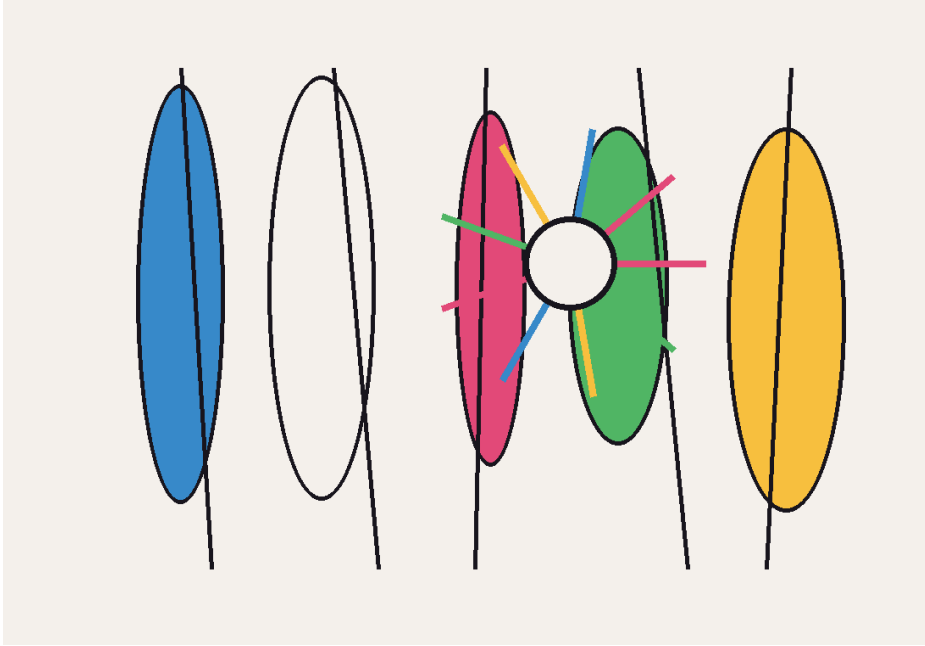

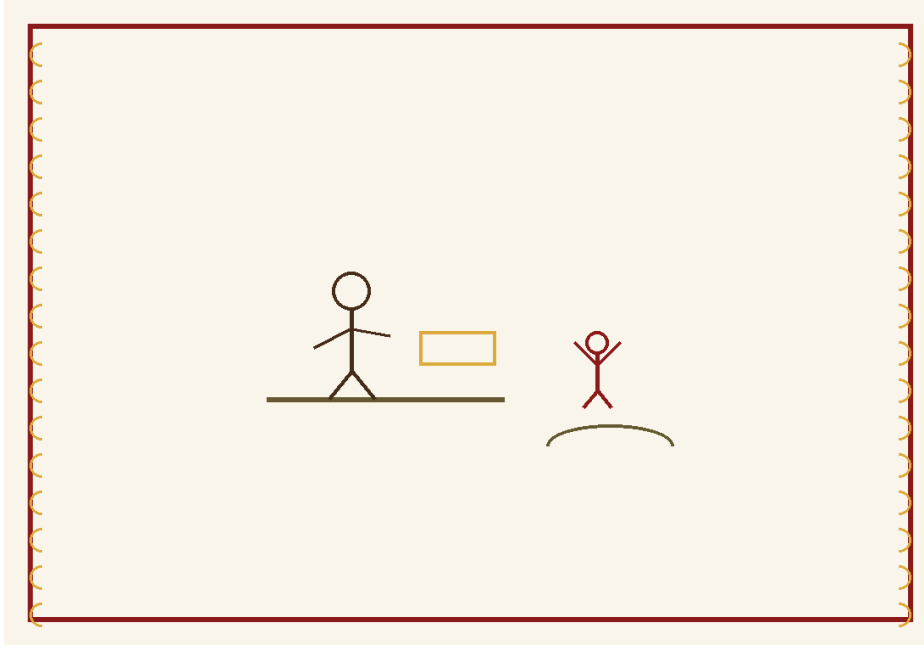

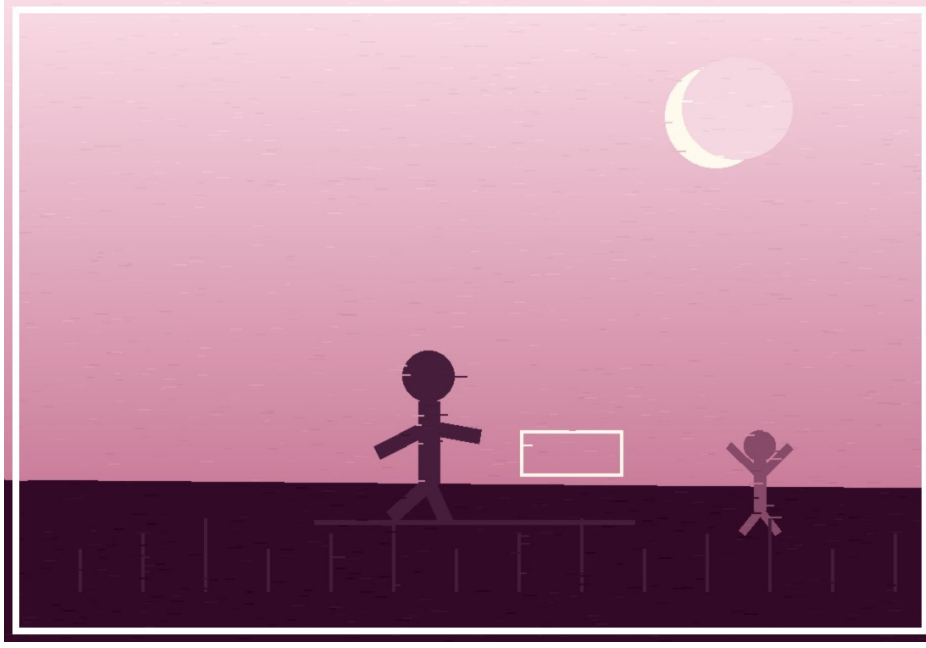

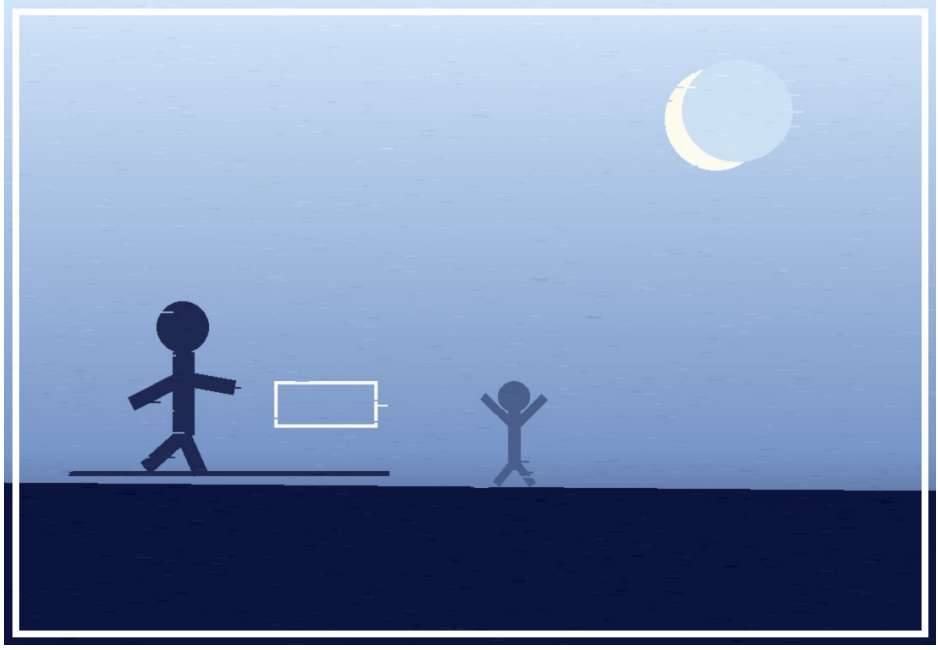

चित्र 18

बिहुला स्तब्ध — ई केहन निष्ठुरता! मुदा असल अचरज त' साँझखन भेल। काज सम्पन्न कऽ जेबा काल धोबिन झाँपल बेटा लग गेलि, किछु फुसफुसेलक — आ बेटा जीबि उठल! जेना निन्नसँ जागल हो। दुनू हाथ पकड़ने घर बिदा भेल।

बिहुला दौड़लि — 'रुकू! ई की देखलहुँ हम? मृत्युकेँ अहाँ खेलौना जकाँ...' धोबिन मुस्कुरेलि, आ जे भेद खोललक, से बिहुलाक अन्हार यात्राक पहिल इजोत छल: 'मनसा देवीक कृपासँ ई सम्भव अछि। जीवन-मरणक ई डोरि हुनके हाथमे अछि।' — त' बाट मनसे धरि जाइत अछि! जे देवी काटलनि, वैह जोड़ि सकैत छथि।

अध्याय 10 : बिहुलाक तप

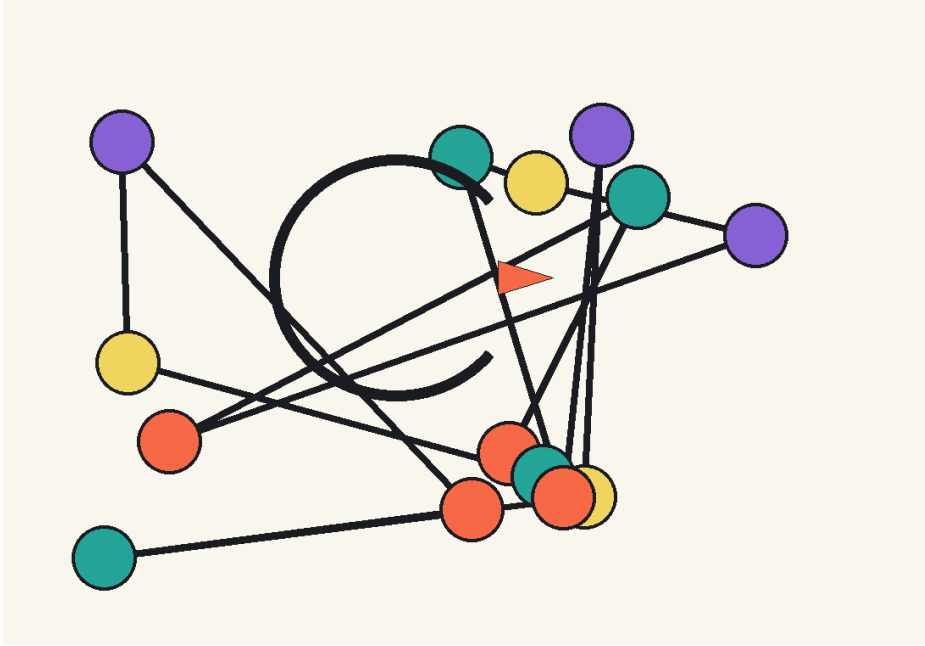

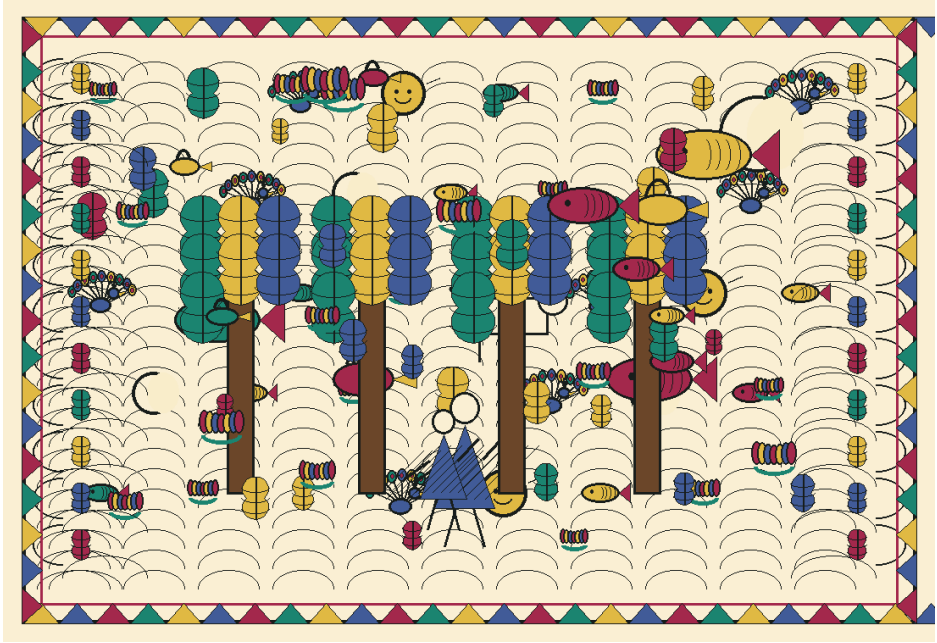

चित्र 19

आ बिहुला ओ बाट धऽ लेलनि। तप, तप, तप — धोबिनक देखाओल मार्गसँ मनसा धरिक यात्रा, आ ओतय एकटा एहन आराधना जे देवलोको नहि देखने छल।

बिहुलाक तपमे याचना छल, मुदा दीनता नहि; हठ छल, मुदा उद्दण्डता नहि। ओ मनसाक आगाँ अपन नृत्य, अपन सेवा, अपन अश्रु — सभटा अर्पित केलनि, आ संगहि अपन प्रश्न सेहो ठाढ़ रखलनि: 'देवीक क्रोध पुरुषपर छल — दण्ड कनियाँ किए भोगय? हमर सिन्नुर घुरा दिअ, माता।'

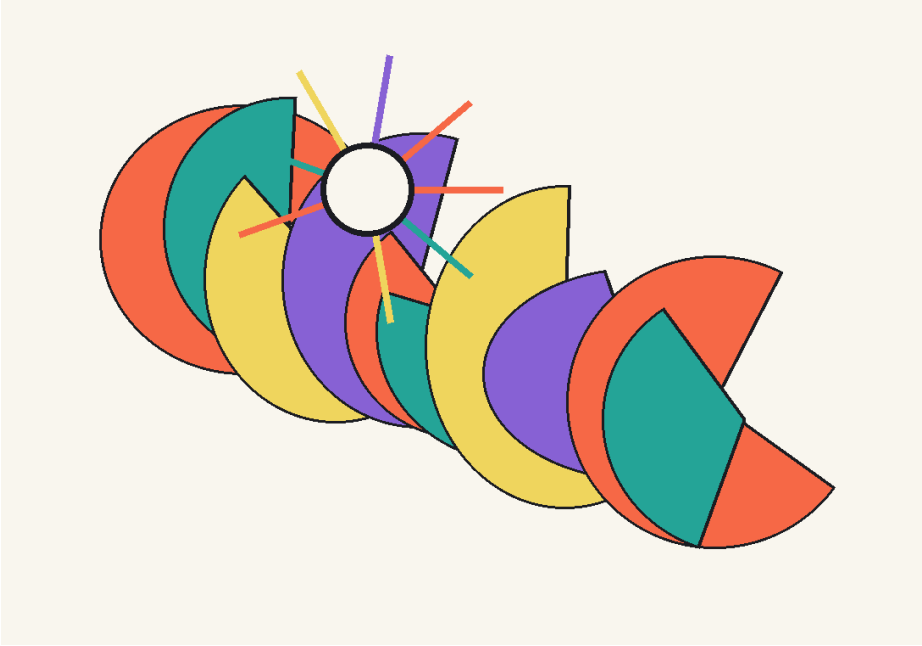

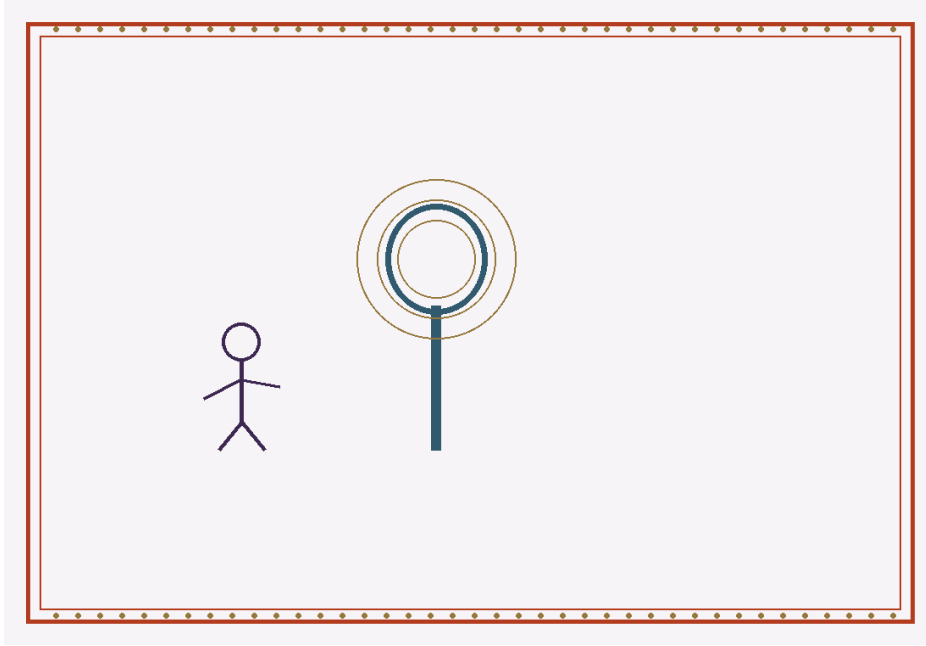

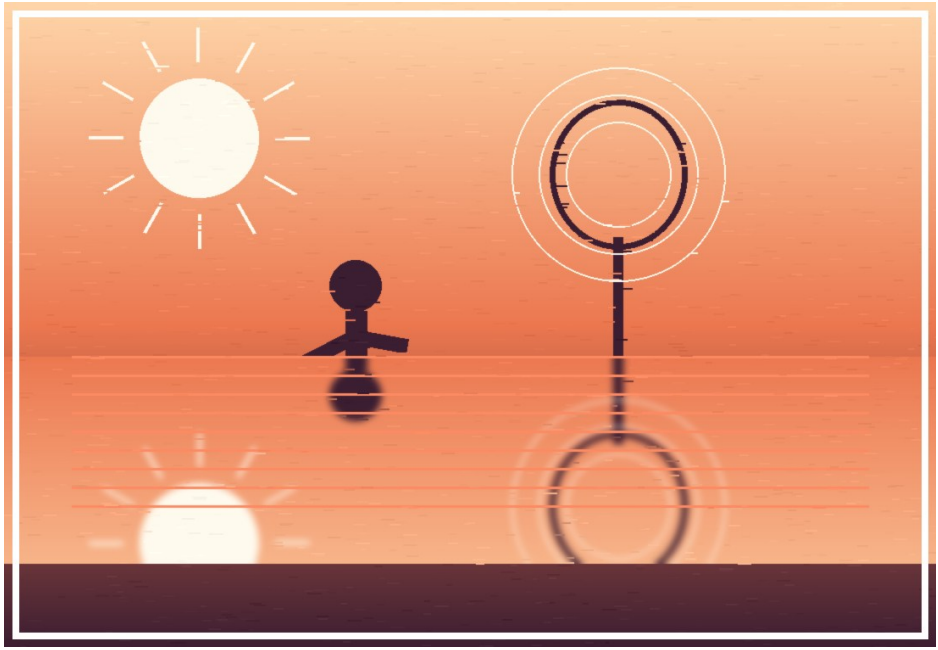

चित्र 20

मनसा देखैत रहलीह — ई कन्या, जे मृत्युक धारमे बैसि कऽ हुनका दुआरि धरि आबि गेलि; जे ने कोसलक, ने डरेलि — खाली माँगलक, अपन तपक बलपर। आ देवीक भीतरक ओ ठाम, जे मान्यताक भूखसँ कठोर भऽ गेल छल, बिहुलाक भक्तिसँ पघिलए लागल।

अन्तमे मनसा प्रसन्न भेलीह। 'माँग, बिहुला।' आ बिहुला जे माँगलनि, से खाली अपन सोहाग नहि — 'लखिन्दर, आ हुनक जेठ सातो भाइ — सभक प्राण घुरा दिअ, माता। हमर ससुरक आँगन फेर भरि जाए।' अपना लेल आएलि, सभक लेल माँगलक — यएह बिहुलाकेँ बिहुला बनबैत अछि।

अध्याय 11 : जीवन-दान

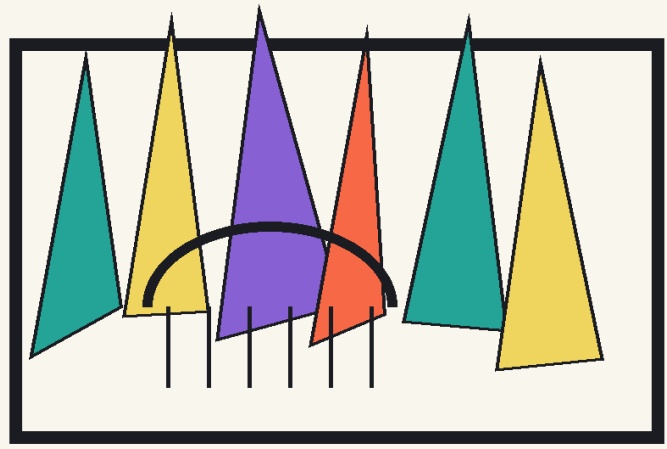

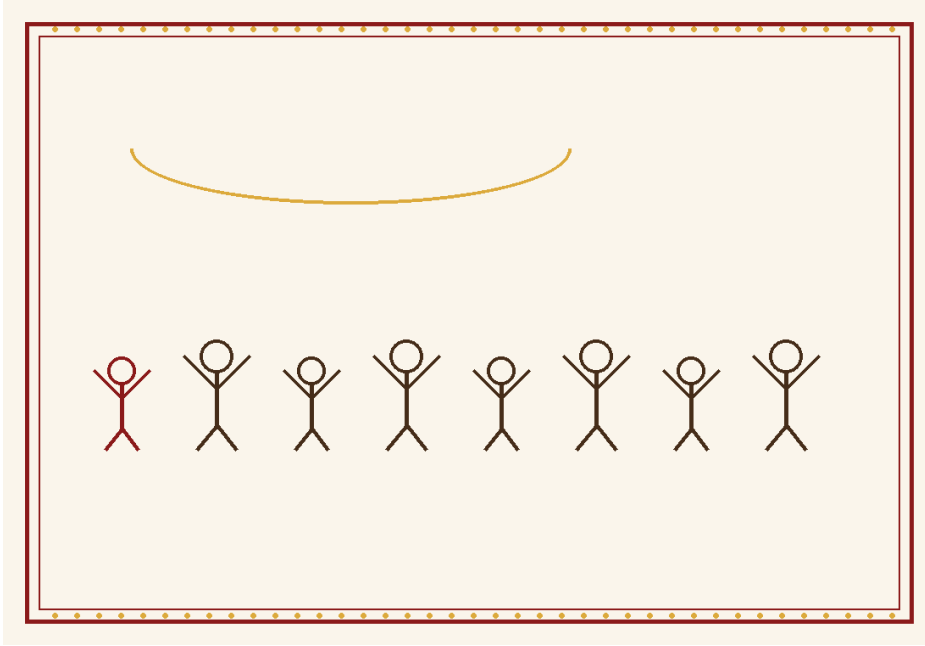

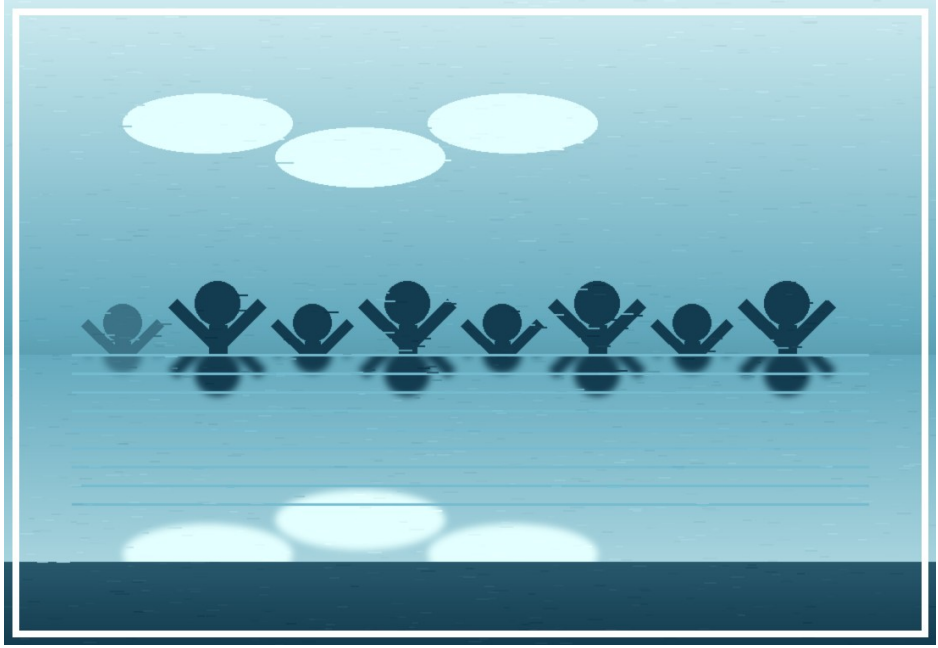

चित्र 21

आ मनसा जिया देलनि — लखिन्दरकेँ, आ हुनक जेठ सातो भाइकेँ। आठ प्राण, जे विषक खातामे दर्ज छल, एक्कहि क्षणमे जीवनक खातामे घुरि आएल।

लखिन्दर आँखि खोललनि, त' सोझाँ बिहुला छलीह — वैह कनियाँ जे कोहबरक रातिसँ हुनक लहासक पहरा दैत आबि रहल छलि। जे यात्रा गंगाक धारमे शोक बनि कऽ शुरू भेल छल, से मनसाक थानमे उत्सव बनि कऽ पूरल।

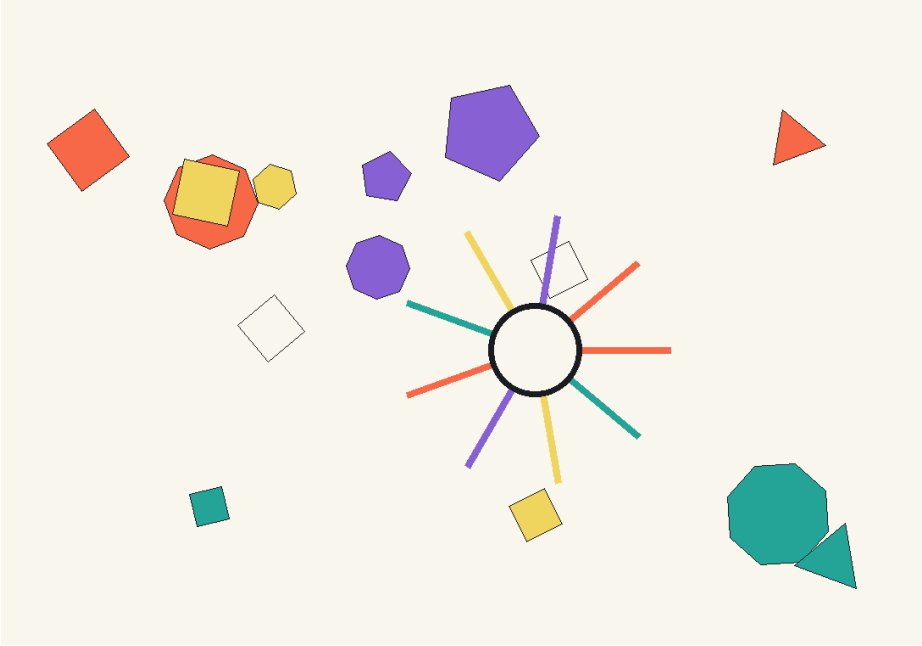

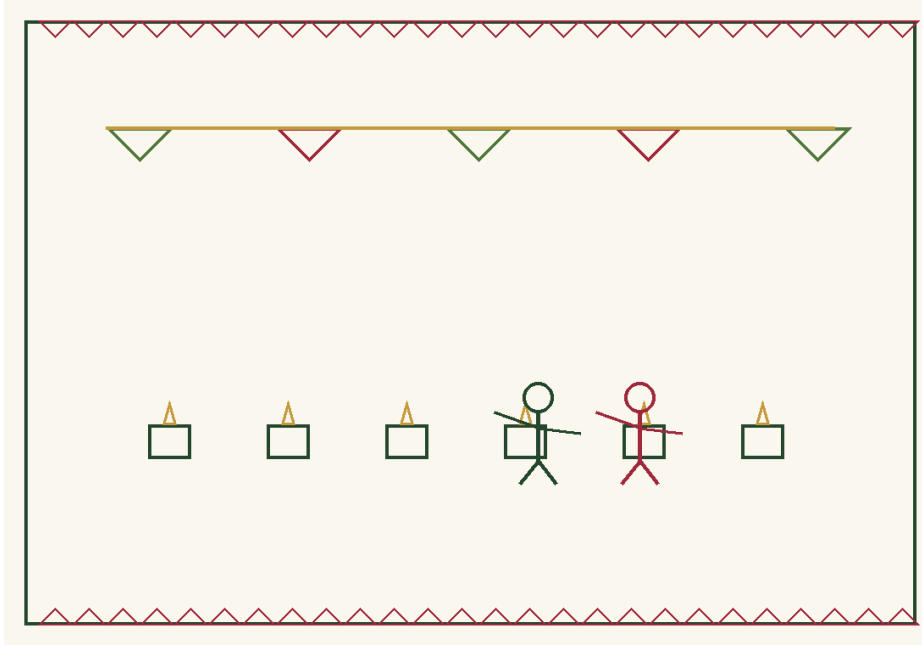

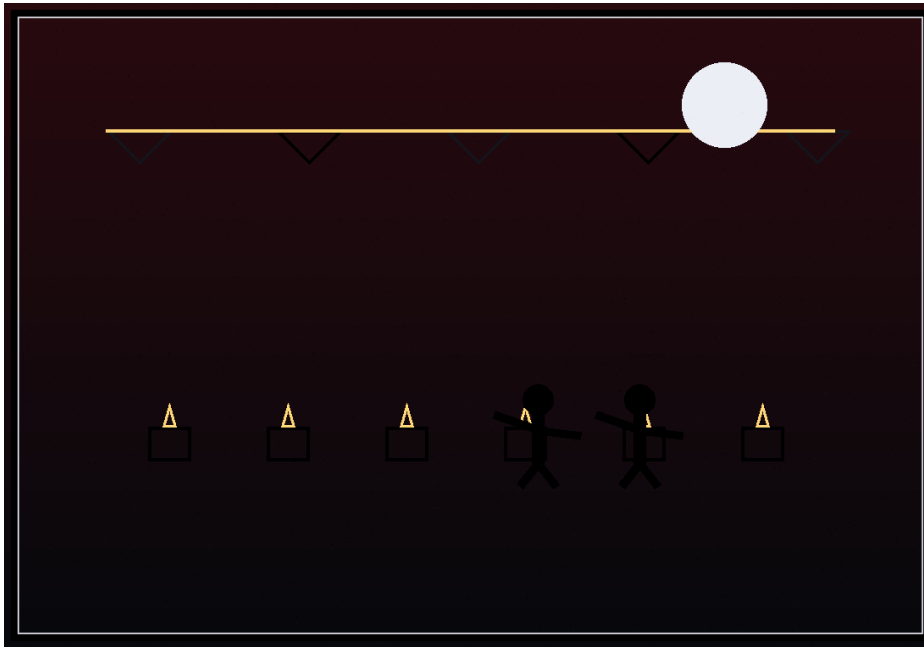

चित्र 22

चम्पानगरमे जखन ई काफिला घुरल — आठ जीवित बेटा आ हुनका आगाँ-आगाँ बिहुला — त' नगरक की दशा भेल हएत, से वर्णनसँ बाहर। चाँद सौदागर प्रसन्न, चम्पानगरक लोक प्रसन्न; जाहि आँगनमे सात चिता जरल छल, ओतय आठ आरती उतरल।

आ चाँद सौदागर? गाथाक न्याय देखू — हुनक निष्ठा सेहो राखल गेल आ मनसाक मान सेहो भेटल। जे पूजा भयसँ नहि भेल छल, से आब कृतज्ञतासँ भेल — आ कृतज्ञताक पूजा भयक पूजासँ सदिखन पैघ होइत अछि।

अध्याय 12 : पूजा — मनसा आ बिहुला

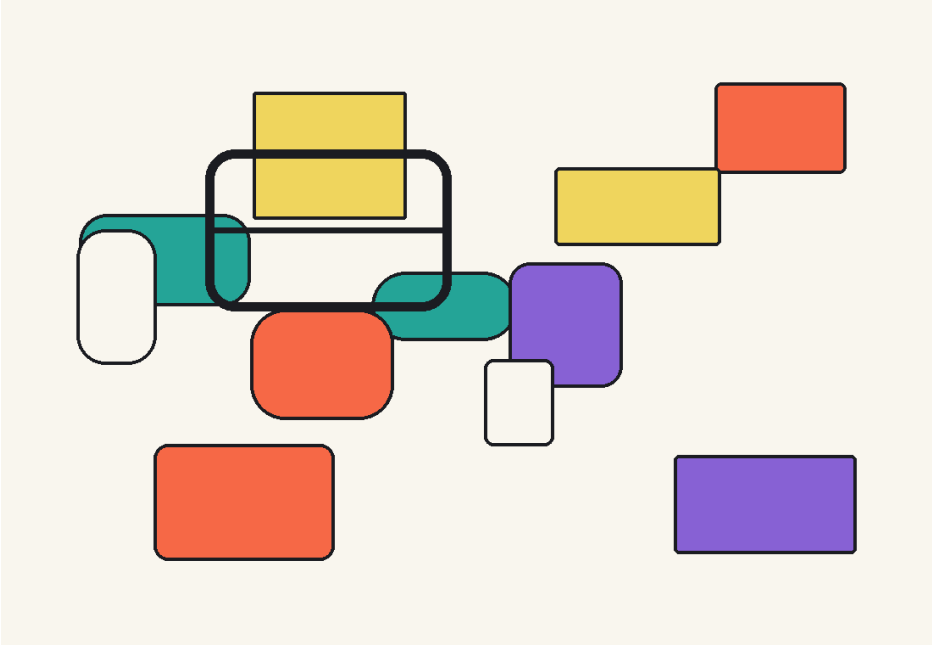

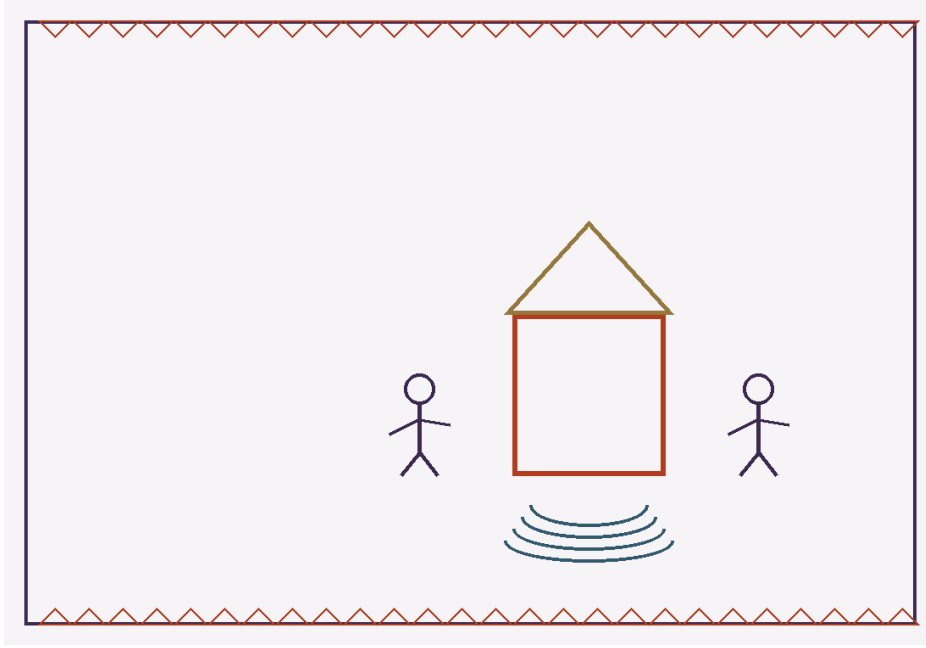

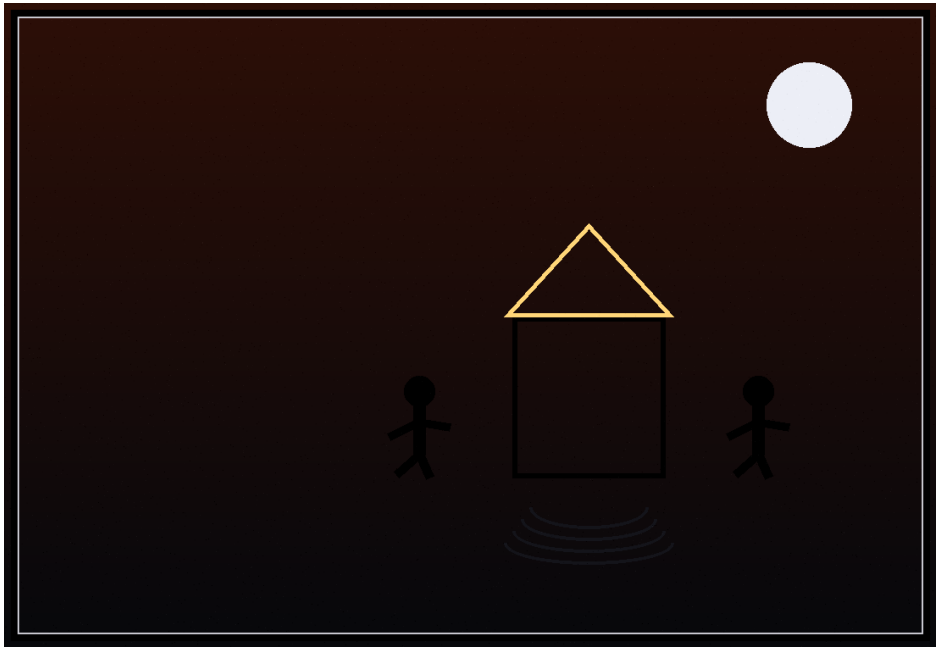

चित्र 23

तहियासँ चम्पानगरमे — आ फेर पूरा मिथिलामे — सभ मनसाक पूजा करए लगलाह, आ संगमे बिहुलाक सेहो। विषहरी-पूजा, मनसा-गीत, बिहुला-नाच — ई परम्परा ओही गाथाक सन्तान थिक।

देखू त' — पूजा माँगए एलीह देवी, आ पूजा भेटलनि त' एकटा मनुक्ख-कन्याक कारण। मनसा जे बलसँ नहि पाबि सकलीह, से बिहुलाक भक्ति हुनका दिआ देलक। आ बिहुला, जे किछु नहि माँगए एलि छलीह, से देवीक संगे पूजल जाए लगलीह। भक्ति आ शक्तिक एहन जोड़ी आन कोन गाथामे?

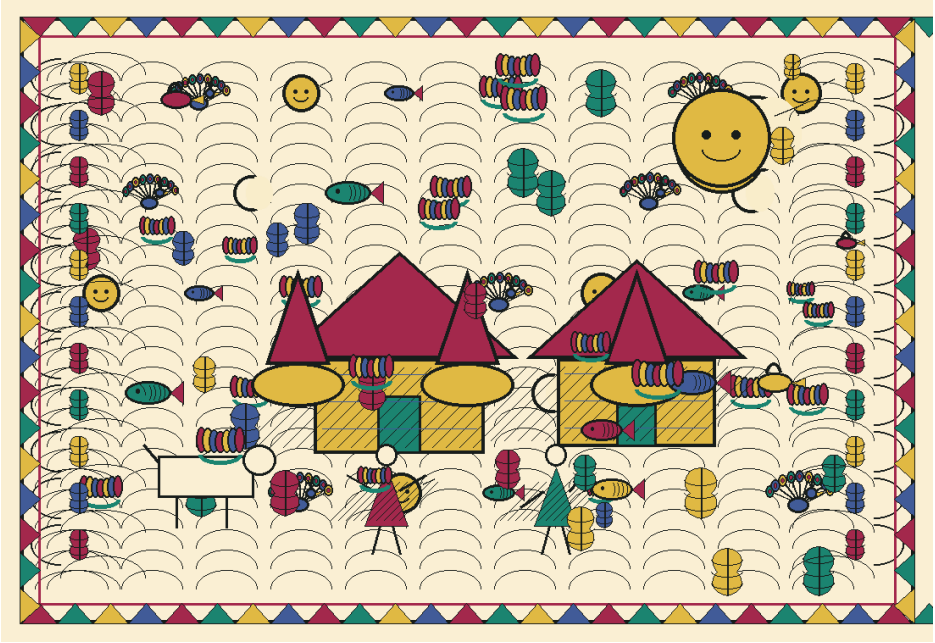

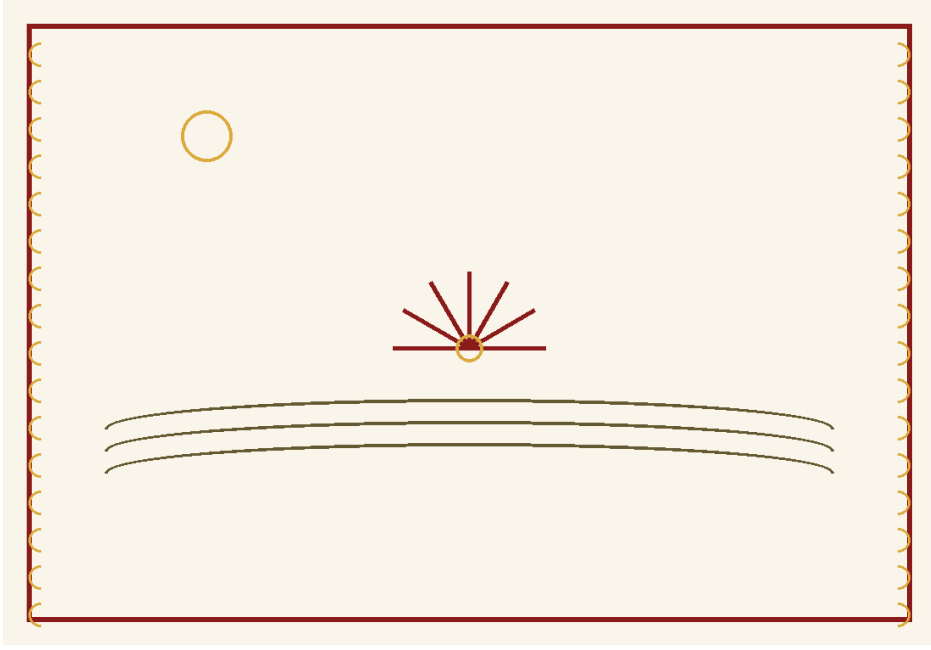

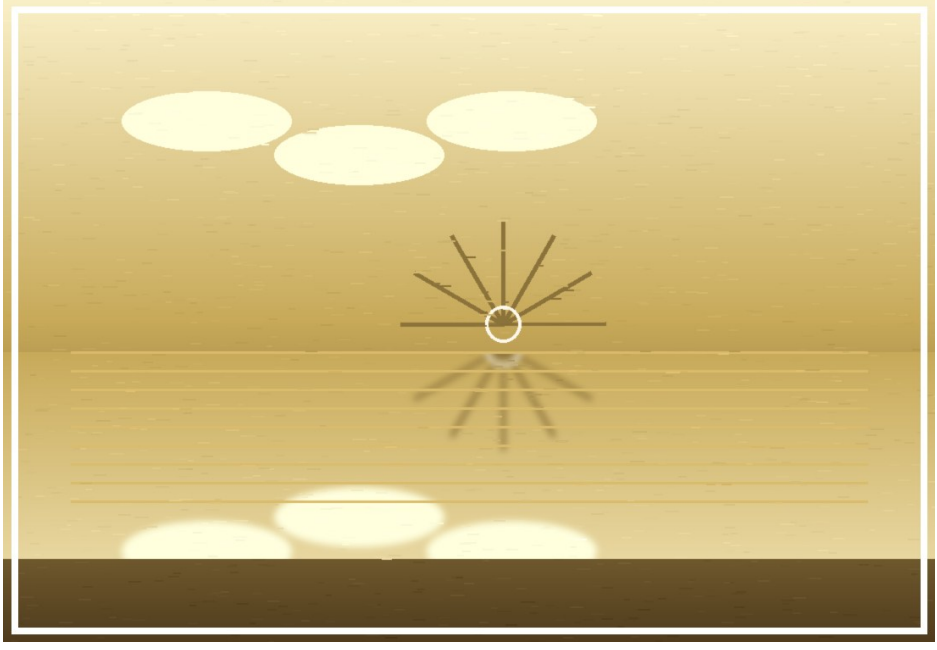

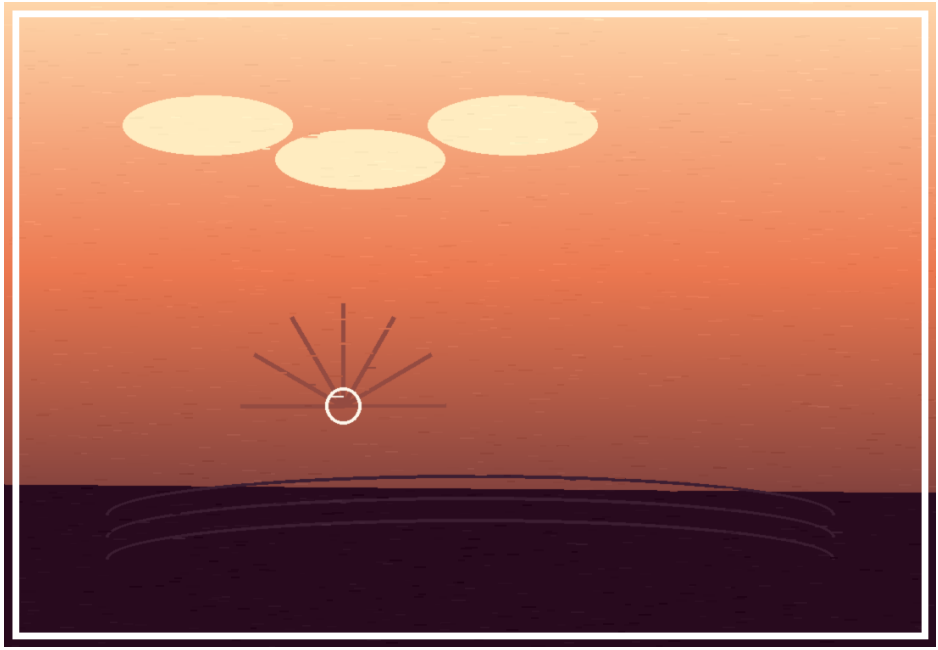

चित्र 24

ई गाथा दुखक गहींर पानिसँ गुजरैत अछि — सात बेटाक वध, डूबल जहाज, कोहबरक डंक, धार पर बहैत लहास। मुदा एकर अन्तिम शब्द दुख नहि थिक। एकर अन्तिम शब्द थिक — बिहुला: ओ कनियाँ जे नियतिक सोझाँ बैसि गेलि, आ उठलि त' नियतिकेँ बदलि कऽ।

आइयो जखन कोनो आँगनमे विपत्ति पहाड़ बनैत अछि, त' मिथिलाक बूढ़ि-पुरनियाँ कहैत छथिन — 'बिहुला बनू।' माने — धारमे उतरू, मुदा हारि नहि मानू; कानू, मुदा बैसि नहि रहू; आ माँगू त' खाली अपना लेल नहि — सभक लेल।

समाप्त

VIDEHA

विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका | ISSN 2229-547X | www.videha.co.in

ब्राह्मण आ ठाकुरक कथा

रस्तेक तीन रहस्य आ एकटा शर्त

गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादक, विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका (since 2000)

ISSN 2229-547X

उपक्रम : देबीगंजक शर्त

देबीगंज नगरमे एकटा ब्राह्मण रहैत छलाह — विद्वान, सरल, मुदा असगर। भगवान श्री सत्यनारायणक पूजाक निमंत्रण दूरसँ आयल छलनि, आ अकेल यात्रा करब हुनका दुरगर लागल।

तँए ब्राह्मण अपन नगरक एकटा ठाकुरक बच्चाकेँ संग लऽ लेलनि। मुदा बच्चा चलबासँ पहिने एकटा शर्त रखलक — 'पंडीजी, हम अहाँक संग जाएब, मुदा जतय हमरा कोनो गप गलत बुझाएत, ओतय अहाँकेँ बुझा देमए पड़त, नहि तँ हम अहाँक संग नहि जाएब।' पंडितजी मानि गेलाह — आ एहि एक्के शर्तसँ एहि यात्राक पूरा रूप बदलि गेल। ई अब खाली पूजाक यात्रा नहि रहल; ई तीन रहस्यक उत्तरक यात्रा बनि गेल।

अध्याय 1 : भाँसैत लहास

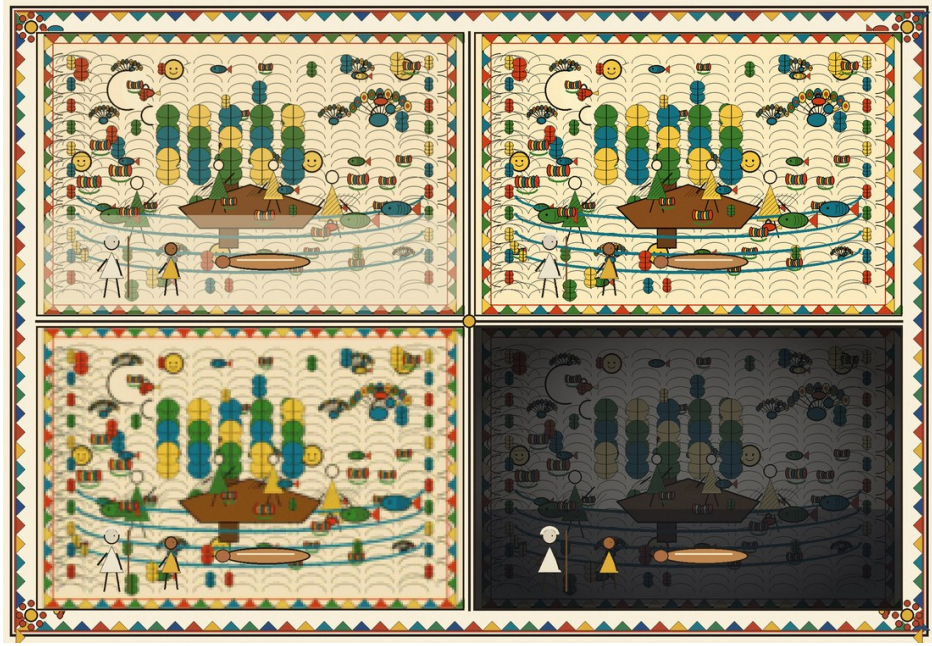

चित्र 1

ब्राह्मण आ ठाकुरक बच्चा चलैत-चलैत एकटा धार लग पहुँचल। धार टपबाक छल, तँए दुनू कपड़ा उतारि तैयार भेल। तखने ठाकुरक बच्चाक नजरि धारमे पड़ल — एकटा लहास भाँसि रहल छल, स्त्रीक, आ ओ भँसना बालु-रेतक ओजनसँ भाँसि रहल छलि।

'पंडित ओ देख, ओ लहास भाँसि रहल अछि, ओ तीन जान — बड़ आश्चर्य!' बच्चा चिचिआयल। ओकर आँखिमे कुतूहल आ किछु डर दुनू छल। 'अहाँ हमरा बुझा दिअ, नहि तँ हम घुरि कऽ चलि जाएब!'

चित्र 2

शर्तक बान्हल पंडितजी ओतहि बैसि गेलाह आ खिस्सा शुरू केलनि — 'देख बच्चा। अपन गाम लग के.नगरक राजा छल। ओहि राजाक एकटा बेटाक बियाह ओही स्थानपर भेल, जतय हम सभ चलि रहल छी।'

'बादमे राजा मरि गेलाह। बेटा राजपाट सम्हारि नहि सकल, आ राजकेँ बन्हक लगा देलक। सासुरमे पता लागल जे द्विरागमन करएबाक लेल राजा लग आब पाइये नहि छल — बड्डु मोश्किल भऽ गेलैक।'

अध्याय 2 : टूटल खाटक कथा

चित्र 3

'एक दिन सासुरमे भगवानक पूजा भऽ रहल छल। गरीब राजा साँझमे पहुँचल, मुदा पूजाक भीड़मे ककरो ओकर खोज-पुछारी नहि भेलैक। ओ कातमे बैसि गेल। पूजा समाप्त, सभ प्रसाद खा अपन-अपन घर गेल — एकरा केओ नहि पुछलक, आ ओ ओतहि सूति गेल।'

'रातिक बारह बाजल तँ राजाक अपन स्त्री उठि गेलि आ अपन घोड़सनियाँ लग गेलि। ओतय सुतबाक ब्यबस्था नहि छल — एकटा खाट, जकर तीन टा टाँग! एकटा टाँग कतएसँ लगाओत!'

चित्र 4

'लड़की आबि बेचारा राजासँ पुछलक — तूँ किछु खेने छह? राजा कहलक नहि। भूखक मारल ओ बचल-खुचल भोजन खएलक। ओहू क्षण लड़की अपन पतिकेँ नहि चिन्हलक — ओकरा टूटल खाटक टाँग लगेबाक लेल बजओलक, आ दुनू घोड़सनियाँ आ लड़की सूति रहलि।'

'सुतलाक बाद राजाकेँ कियो स्वप्न देलक — जो अपन घर, ओतय तोहर पिताक कोचक नीचाँ चारि घाड़ा द्रव्य छहु; एक बेचि अपन राज छोड़ा लिअ। भोर होइते राजा घर घुरि गेल, राज्य बन्हकीसँ मुक्त कएलक, आ सासुरकेँ पता चलल जे राजा पहिनेसँ बेशी नीक भऽ गेल अछि। द्विरागमनक बेर आयल।'

अध्याय 3 : ऐंठक शर्म

चित्र 5

'गौना करा राजा कनियाँकेँ अनलक, मुदा एकटा खबासनीक संग खेनाइक समान दऽ एकटा कोठलीमे बन्न कऽ देलक। ओ ओतहि रहए लागलि, मुदा राजा ओतय नहि जाइत छल।'

'किछु दिन बाद रानी खबासनीकेँ राजाकेँ बजएबा पठओलक। राजा आयल तँ रानी शिकायत केलक — गौना करा अनलहुँ, आ एहि कोठलीमे बन्न कऽ राखने छी, अबितहुँ नहि छी!'

चित्र 6

'राजा उत्तर देलक — ओ घोड़सनियाँ नहि छी, जे टूटल खाटक एक पएर वैह रहए। आ बाँचल भोजन हम खएने रही, आ फेर वैह ऐंठ खाए लेल अहाँ हमरा कहने रही।'

'ई सुनि लड़की बड्डु लज्जित भेलि। भोर भेल, ओ खबासनीसँ कहलक — व्रतक दिन अछि, हम धारसँ नहा कऽ अबैत छी। ओ सभटा कपड़ा खोलि धारमे फाँगि गेल। भसना भाठी जे भसैत अछि, जान ई ठाकुर, वैह लड़की अछि। चलू हमरा सभ आगाँ।' — प्रथम रहस्यक उत्तर एना भेटल, आ ठाकुरक बच्चाक जिज्ञासा फेर शान्त भेल।

अध्याय 4 : मारल जाइत बकरी

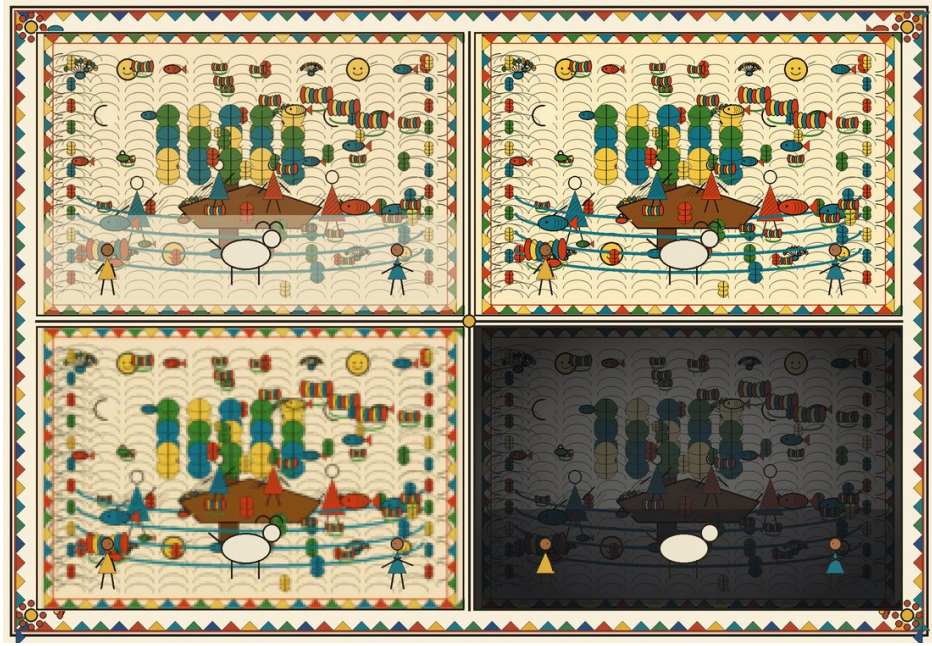

चित्र 7

धारक कात पार कऽ दुनू आगाँ बढ़लाह — चलैत-चलैत एकटा पैघ गाममे पहुँचलाह, जतय बड्ड भीड़ लागल छल। ठाकुरक बच्चा जा कऽ देखलक — एकटा बकरीक बच्चा बान्हल रहए, आ जे किओ अबैत रहए, से ओकरा दू लात मारैत छल।

बच्चा सोचलक जे ई बकरी शायद ककरो फसिल खा लेने होएत — मुदा सभ मिलि कऽ किएक मारि रहल अछि? ओ पुछलक — 'पंडितजी, ई गप बुझा कऽ कहू, तखने आगाँ बढ़ब।'

चित्र 8

ब्राह्मण बैसि गेलाह — 'सुन ठाकुर। लोदीपुर नगरक राजा प्रताप सिंहक बेटा आ ओही गामक ठाकुरक बेटामे खूब दोस्ती छल। एक दिन दुनू दोस्त शिकार लेल जंगल गेल। साँझ भऽ गेल, राति ओतहि गाछ तर काटबाक निर्णय भेल।'

'रातिक बारह बजे एक जोड़ा बीध-बीधीन गाछपर बैसल। बीधीन दुनू सुतल राजकुमार-ठाकुर देखि कहलक — कतेक सुन्दर! बीध कहलक — एतबे सुन्दर लालपरी कन्या अछि, दुनूक जोड़ी मिलाउ! बिधाता — जे बीध छल — सुतले-सुतले दुनूकेँ लालपरी लग पहुँचा देलक।'

अध्याय 5 : चोला-मंत्रक विश्वासघात

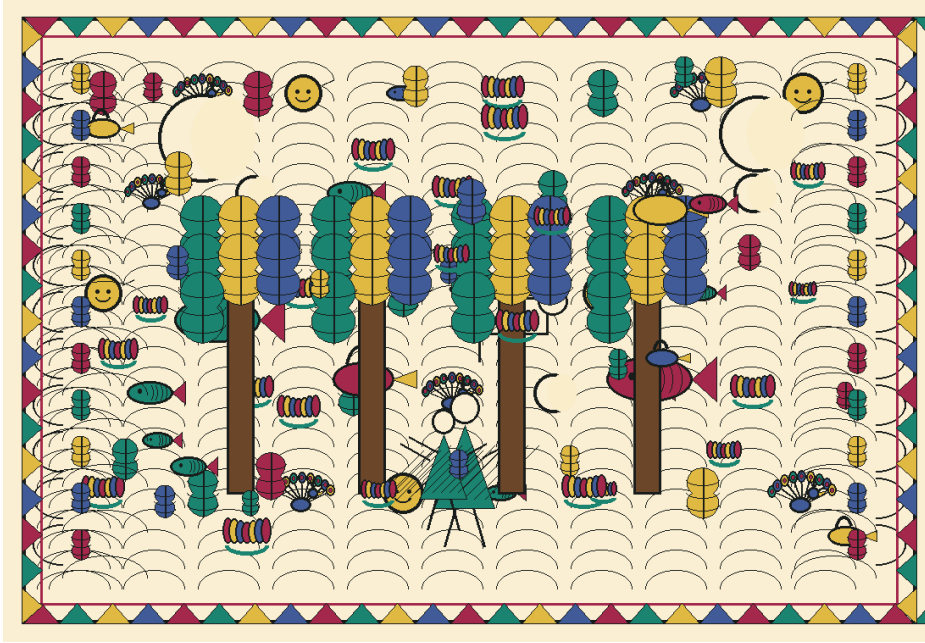

चित्र 9

'राजा आ लालपरी एक पलंगपर, ठाकुर दोसरपर। भोर होइते लालपरी बगलमे राजाक बेटाकेँ देखि प्रसन्न भेलि — विधाताक जोड़ी! राजा-परीक बियाह ओतहि भऽ गेल।'

'किछु दिन बाद बिदा होइत काल परीकेँ याद पड़ल — पिताकेँ चोला (जीव) बदलबाक मंत्र अबैत छनि, अहाँ सीखि लिअ। राजाक बेटा आ ठाकुरक बेटा — दुनू संगे गेला, आ दुनू मंत्र सीखि लेलनि। मुदा मंत्र सिखलाक बाद ठाकुरक बेटाक मोनमे खोट आबि गेलैक।'

चित्र 10

'रस्तामे परीक्षाक वेर आयल — राजाक बेटा मंत्र पढ़ि एकटा मरल सुग्गामे पैसल, आ ठीक ओही क्षण ठाकुर मंत्र पढ़ि राजाक (अब खाली) पिंजरामे पैसि गेल! ठाकुरक अपन लहास फेकि, ओ राजाक रूपमे उठि खड़ा भेल, आ राजाक जीव सुग्गा बनि उड़ि गेल।'

'लालपरी बुझि गेलि जे ई हमर असल पति नहि थिक। मुदा प्रकट किछु नहि केलक। नकली राजा 'सुख-रातिक' बात केलक तँ परी टारि देलक — हमर एकटा कौल बाँकी अछि; जबुनाक तटपर मन्दिर बनबा दिअ, बारह बरख सदाव्रत बाँटब। राजा (असल ठाकुर) मानि गेल — मुदा भीतर-भीतर डेराइत रहल जे कतहु असल राजा घुरि नहि आबए।'

अध्याय 6 : परीक बुद्धि

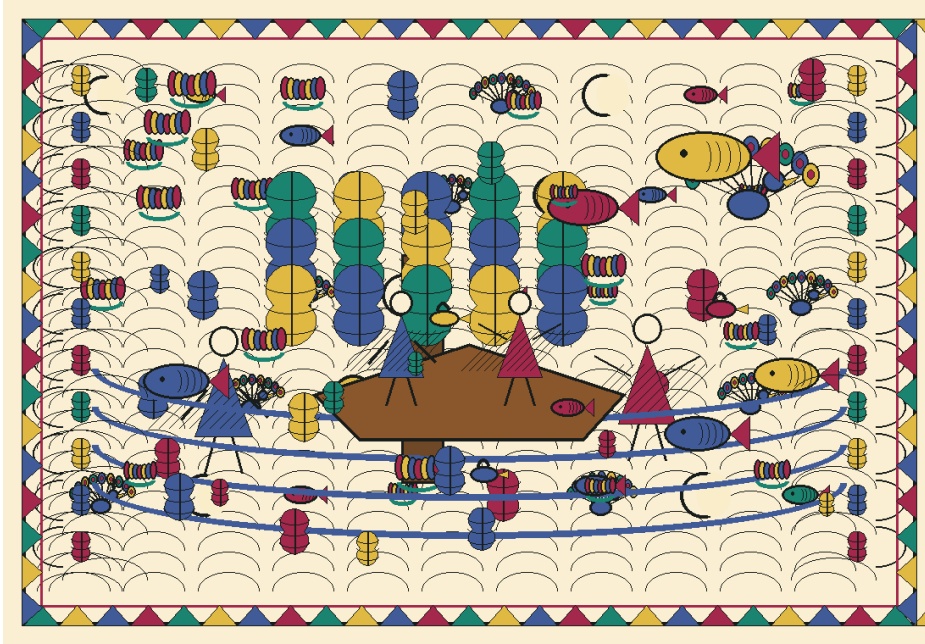

चित्र 11

'डरे नकली राजा एकटा भयंकर उपाय सोचलक — बोनक सभटा सुग्गा मरबा देब, जाहिसँ असल राजाक जीव सेहो खतम भऽ जाए! शिकारीकेँ बजा कऽ प्रति सुग्गा एक टाका देबाक लालच देलक, आ शिकारी सुग्गा बझबा-मारबा लागल।'

'एक दिन एहन शिकारी सुग्गा लऽ जबुना कातसँ जाइत छल, तँ परीक नजरि पड़लै। परी पुछलक — ई सुग्गा ककरा देल जाइत अछि? शिकारी कहलक — राजाकेँ, ओ मारि कऽ फेकि दैत अछि। परीक माथ दुखा गेलैक।'

चित्र 12

'परी शिकारीकेँ कहलक — आइसँ सभ सुग्गा हमरा देल कर, हम दुगुन पाइ देब। शिकारी मानि गेल। परी हर सुग्गासँ पुछथि — अहाँ चोला बदलबाक मंत्र जनैत छी? बहुत सुग्गा पुछल गेल, छोड़ल गेल — अन्ततः एकटा सुग्गा बाजल: हँ, हम जनैत छी!'

'ओ असली राजा छल! परी ओकरा अपन पिंजरामे राखि लेलनि, आ एकटा बकरीक बच्चा कीनि कऽ राखलनि। बारह बरखक सदाव्रतक अवधि पूर्ण भेलापर, नकली राजा परीकेँ फेर अपन महलमे अनलक। परी बकरीक बच्चा संगे अनलि, आ रातिकेँ ओकरा मारि देलक, आ खेनाइ त्यागि कानए लागलि।'

अध्याय 7 : पुनर्जन्मक क्षण

चित्र 13

'राजा (नकली) पुछलक — किएक कानि रहल छी? परी कहलक — बकरीक बच्चा मरि गेल, जाधरि ई नहि खाइत छल, हम नहि खाइत छलहुँ। ई मरि गेल, आब हमहूँ मरब!'

'नकली राजा घबरा कऽ कहलक — चुप रहू, बकरी जीवित भऽ जाएत — आ ई कहिते ओ चोला बदलि बकरीमे पैसल! ठीक ओही क्षण सुग्गा अपन असल राजाक पिंजरामे उड़ि गेल, आ ठाकुर बकरीक पिंजरामे कैद भऽ गेल!'

चित्र 14

'सुनलहुँ ठाकुरक बच्चा? — वैह बकरीक बच्चा ठाकुर राजा (नकली) छी, जकरा जे किओ अबैत अछि, से दू लात मारैत अछि — अपन विश्वासघातक फल।' पंडितजीक कथा समाप्त भेल, आ ठाकुरक बच्चाक दोसर जिज्ञासा शान्त भेल।

मुदा यात्रा एतय समाप्त नहि छल — ठाकुरक बच्चा आ पंडितजी आगाँ बढ़लाह, आ अगिला रहस्य हुनका प्रतीक्षामे छल: नगरक चौबटियापर एकटा अस्सी बरखक बुढ़ियाकेँ फाँसी!

अध्याय 8 : फाँसीक बुढ़िया

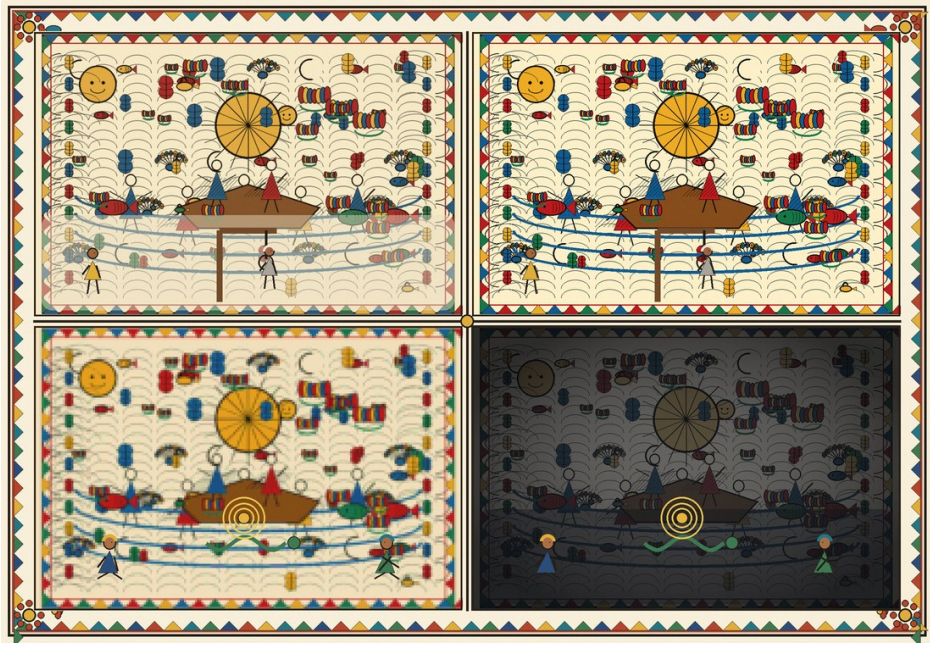

चित्र 15

नगरक चौबटियापर बड्डु भीड़ छल। ठाकुरक बच्चा दौगि कऽ गेल — एकटा अस्सी बरखक बुढ़ियाकेँ फाँसी देल जा रहल छल! बच्चा सोचलक — भूखे कोनो अनाज खएने होएत, तेँ ई सजा! ओ फेर पंडितजीसँ बुझबाक जिद्द करी।

पंडितजी बैसि खिस्सा शुरू केलनि — 'बिराटनगरक राजा आ ओकर मन्त्रीक बेटामे गाढ़ दोस्ती छल। एक दिन दुनू शिकार लेल बोन गेल, राति ओतहि पैघ गाछपर बितओलनि। मन्त्रीक बेटा राजाक बेटाकेँ गमछासँ बान्हि गाछपर सुरक्षित राखि खुद दोसर ठाढ़िपर चलि गेल।'

चित्र 16

'बारह बाजल तँ एकटा पैघ साँप निकलल, अपन मणी निकालि लग राखलक — इजोत होमए लागल। मन्त्रीक बेटा चुपचाप गाछक जड़िमे तरुआरि ठाढ़ कऽ राखि, ऊपर जा गमछा मणीपर खसा देलक — मणी झँपा गेल, अन्हार भऽ गेल। साँप व्याकुल भऽ अपने पुच्छी पटकि-पटकि टुकड़ा-टुकड़ा भऽ गेल!'

'भोर भेल तँ मणी लऽ दुनू दोस्त बिदा भेल। पोखरिमे धोइत काल मणी दुनूकेँ खींचि नागवत्ती कन्या लग पहुँचा देलक — कन्या कहलक: अहाँ हमर पिताकेँ मारि देलहुँ, आब अहाँसँ बियाह करू! मन्त्रीक बेटा राजाक बेटाक बियाह ओहि कन्यासँ ठीक करौलक।'

अध्याय 9 : बताह प्रेमी

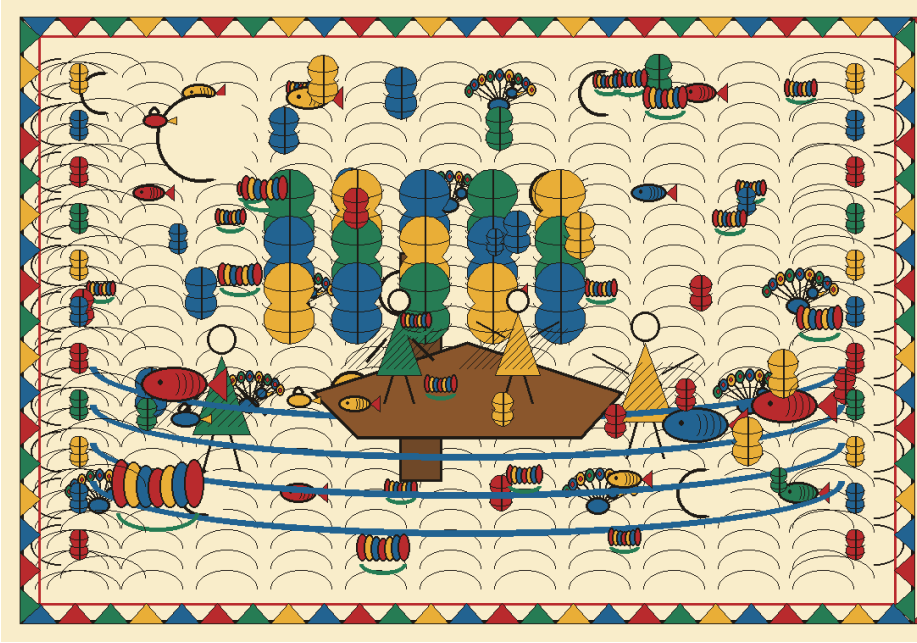

चित्र 17

'ढोल-बाजा-पालकी अनबाक लेल मन्त्रीक बेटा बिदा भेल, मुदा दोसर दिन बारह बजे नागवती कन्या पोखरिमे नहाइत छलि, तँ ठगपुर नगरक राजाक लड़का शिकार खेलैत ओतय पानि पीबए आयल। कन्याकेँ देखिते ओ मूर्च्छित खसि पड़ल — आ कन्या पोखरिक भीतर बिला गेलि। ओहि दिनसँ राजाक बेटा बताह भऽ गेल।'

'ठगपुरक राजा ढोलहो पिटओलक — जे बेटाकेँ ठीक करत, ओकरा राज्यक हिस्सा आ अपन बेटीक बियाह दुनू देब। एकटा अस्सी बरखक गरीब बुढ़िया — जकर अपने एकटा बताह बेटा छल — आगाँ आयलि।'

चित्र 18

'बुढ़िया राजाक बेटाकेँ कोठामे बन्न कऽ बुझलक, तँ ओ अपन बेहोशी आ पोखरिक सुन्दरीक बात कहलक। बुढ़िया वचन देलक — ओ लड़की हम आनब। पाँच सखी-सहेली लऽ बुढ़िया पोखरि दिस बिदा भेलि।'

'दिनक बारह बाजल, कन्या पोखरिसँ निकलि नहाए लागलि। बुढ़िया लग जा ओकर सेवा करए लागल — कन्या ममतासँ बुढ़ियाक देह साफ करए लागलि। तखने बुढ़िया चुटकी बजओलक, आ सखी सभ चारू दिससँ कन्याकेँ पकड़ि ठगपुर लऽ गेल — राजा इनाम देबा तैयार, बियाहक तैयारी शुरू भेल।'

अध्याय 10 : मन्त्रीक बेटाक चालि

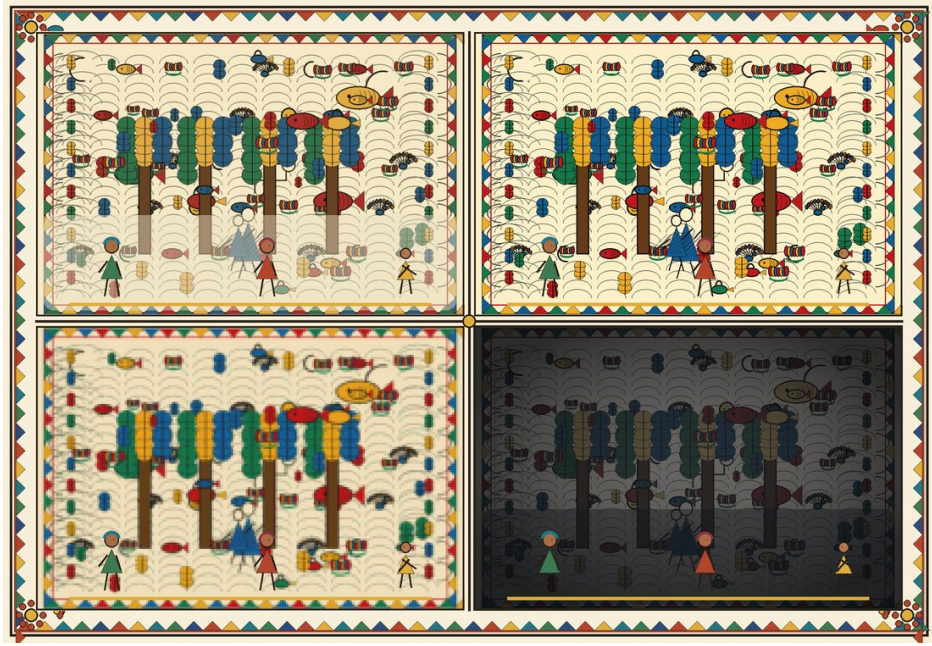

चित्र 19

'ओम्हर मन्त्रीक बेटा जखन गाम-गाम बाजा-पालकी खोजैत छल, तँ पता चलल — सभटा बाजा-पालकी ठगपुर राजा लऽ गेल! ओतय गेला, तँ पता चलल जे बुढ़ियाक बताह बेटाक बियाह ओही कन्या (नागवती) संग होमए बला अछि!'

'मन्त्रीक बेटा भिखमंगाक भेष धऽ राजाक आँगन गेल, कन्याकेँ देखलक, इशारा केलक — साँझ धरि आएब। फेर ओ ओहि बुढ़ियाक बताह बेटाकेँ ताकि निकाललक — गाए-महीस चरबैत बोनमे। ओकरे संग खेलाए लागल, आ फेर मौका पाबि ओकरा बोनमे भीतर लऽ जा छोड़ि, ओकर कपड़ा उतारि लेलक।'

चित्र 20

'झलफल भेला पर मन्त्रीक बेटा बताह जेकाँ करैत घरमे घुसल, ओहि लड़कीक चारू कात घुरिआए लागल जकरा संग बियाह होमए बला छल — आ नागवती कन्या लग पहुँचि कहलक: कपड़ा बदलू, पोटरी बान्हि बगलमे दबा लिअ, आगाँ निकलू, हम पाछाँ आबि रहल छी।'

'दुनू ओतयसँ भागि निकललि आ ओही पोखरि लग पहुँचि गेल जतय ओ पहिने भेँट भेल छल। सुनलहुँ ठाकुरक बच्चा — अही गपपर एहि बुढ़ियाकेँ फाँसी! राजा कहैत अछि जे ई बुढ़िया हमर राज्यक हिस्सा हड़पबाक षड्यन्त्र रचने रहए।' — तेसर रहस्यक उत्तर सेहो भेटल।

अध्याय 11 : रस्तेक पचीस संकट

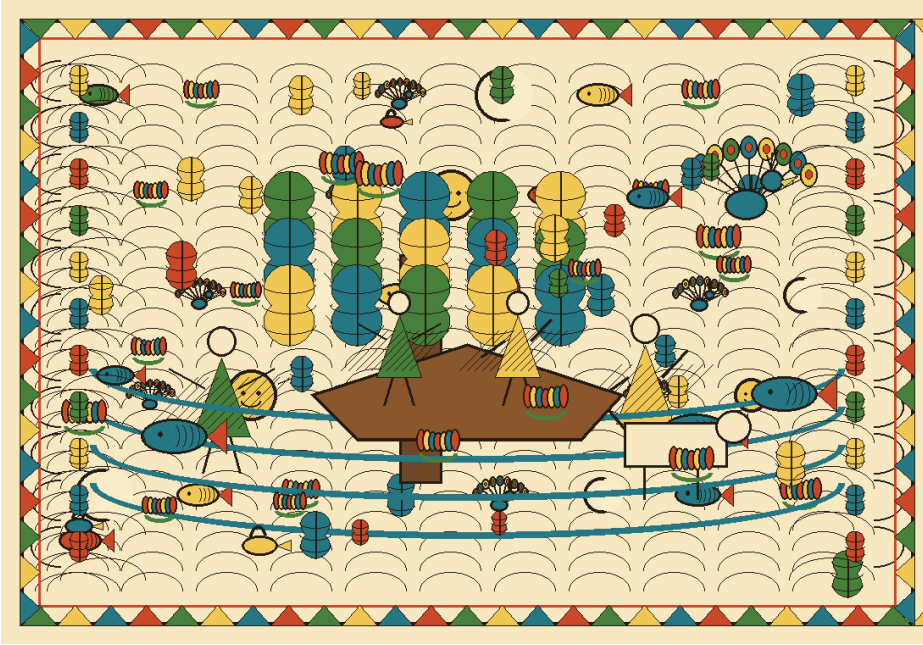

चित्र 21

आब मन्त्रीक बेटा (जे अनेक भेषमे राजाक बेटाकेँ बचबैत रहल छल) अपन असल परिचयमे घुरि आयल — पालकी आ बाजा लऽ, नागवती कन्याक संग राजकुमारक विधिवत बियाह करा, बरियातीक संग घर दिस बिदा भेल।

रस्तामे साँझ भेल, सभ एकटा पैघ गाछ तर सूति रहल। रातिक बारह बाजल तँ बिध-बिधाता आयल — जोड़ी देखि प्रसन्न भेल, मुदा बिधाता बाजल: राजाक बेटा मरि जाएत, कारण पचीस टा संकट रस्तामे बाँकी अछि! ओ सभटा संकट विस्तारसँ कहलक।

चित्र 22

नागवती कन्या आ मन्त्रीक बेटा — दुनू जागल छल, सभटा सुनि लेलनि। भोर होइते ओ सभ बरियातीकेँ आगाँ पठा देलनि, आ तीनू गोटे (राजकुमार, कन्या, मन्त्रीक बेटा) एसगरे आगाँ बिदा भेलाह — हर संकटसँ बचबाक लेल तैयार।

रस्तामे दू गाछ खसए बला छल — तीनू हाथ पकड़ि दौगि कऽ बचि गेला। धारमे बोच (जलजन्तु) फँसबए बला छल — तीनू तेजीसँ तैरि बचि गेला। एहन कैक संकट एक-एक कऽ पार भेल — मन्त्रीक बेटाक सूझ-बूझ आ कन्याक साहससँ।

अध्याय 12 : पाथरक शरीर

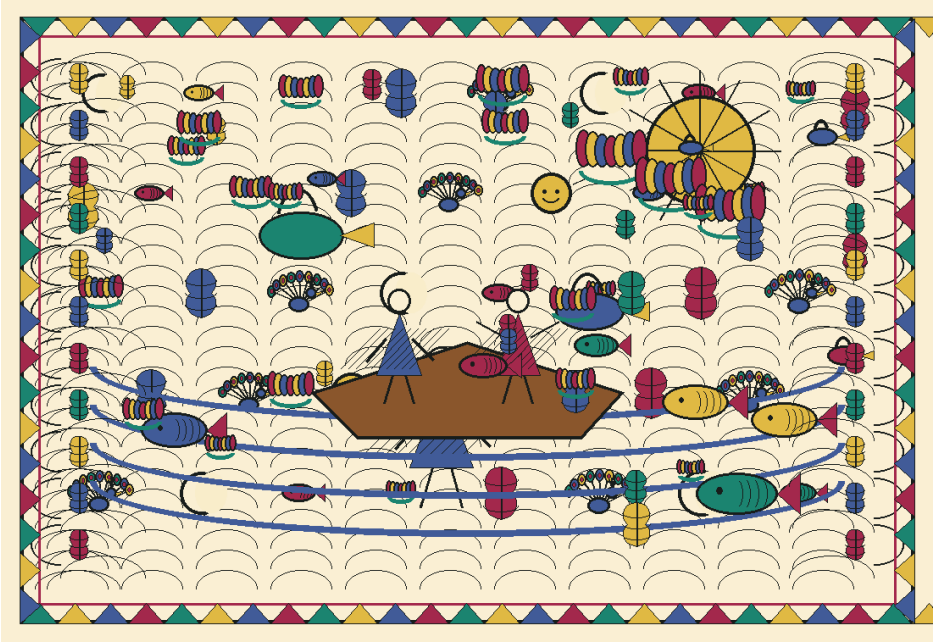

चित्र 23

घर पहुँचि सभ राजाक बेटाक बियाहक जोड़ी देखि प्रसन्न भेल। मुदा राजाक बेटाकेँ मन्त्रीक बेटा आ कन्याक बीचक रस्तेक गुफ्तगूपर शक भऽ गेल — कारण ओ सभ बात राजासँ नुकाओल गेल छल।

राजा मन्त्रीक बेटाकेँ बजा कऽ कहलक — रस्तामे अहाँ दुनू एतेक बात केलहुँ, से हमरा नहि बुझल भेल, कहू। मन्त्रीक बेटा टारए चाहलक — 'ई सभ हँसी-मजाक छल, देखी जे राजा दौगि सकैत छथि आकि नहि।' मुदा राजाकेँ विश्वास नहि भेल — कहलक, नहि कहब तँ फाँसी!

चित्र 24

कन्या ई धमकी सुनि रहल छलि। हारि कऽ मन्त्रीक बेटा बिधाताक कहल सभटा भेद खोलए लागल — जतबे कहए, ओकर अंग तत्क्षण पाथरक होइत गेल! सभटा भेद कहिते-कहिते ओकर अदहा शरीर पाथर बनि गेल, आ पूर्ण भेलापर ओ कोचक बगलमे साक्षात् पहाड़ बनि गेल — वचन तोड़बाक ई मूल्य छल।

किछु दिन बाद राजाकेँ रातिमे एकटा बेटा जनमल। पहाड़ बनल मन्त्रीक बेटा कहल गप पूर्ण करए लागल — पहाड़पर बालककेँ राखि दू टुकड़ी कऽ देलक! टुकड़ा होइते ओ पाथरसँ फेर मनुष्य बनि गेल, आ बालक माँगलक।

अध्याय 13 : क्षमा आ मित्रताक पुनर्स्थापन

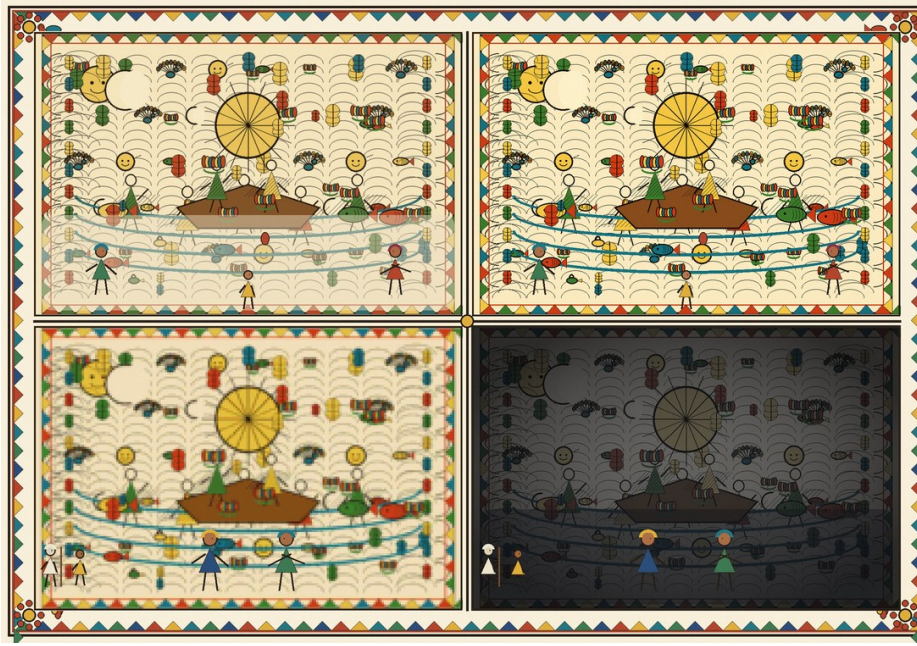

चित्र 25

मन्त्रीक बेटा बालककेँ लऽ अपन सासुर गेल — बारह बजे राति। स्त्री लग पहुँचि सभटा गप कहि बालककेँ आमक गाछक ठाढ़िपर लटका देलक।

रातिमे अपन स्त्रीकेँ कलममे अनलक, बालककेँ ठाढ़िसँ उतारि नीचाँ केलक, आ कहलक — चक्कू लिअ, अपन कँगुरिया आंगुरसँ रक्त काटि एहि बालकपर छींटि दिअ। छिटतहि बालक कानए लागल — जीवित भऽ गेल!

चित्र 26

मन्त्रीक बेटा बालककेँ लऽ जा राजाकेँ देलक — 'आइसँ अहाँक संग हमर दोस्ती समाप्त!' — ई कहि ओ घर घुरए लागल। ओही क्षण राजाकेँ ज्ञान प्राप्त भेल — सभटा त्याग, सभटा बलिदान, सभटा रहस्य एक्कहि क्षणमे स्पष्ट भऽ गेलनि।

राजा दौगि कऽ जा अपन दोस्तकेँ गरा लागि क्षमा माँगलक — 'आइसँ एहन गलती हमरासँ कहियो नहि होएत।' आ दोस्ती फेर स्थापित भेल — पचीस संकट, तीन गुप्त रहस्य, आ एकटा वचनक बलिदानक बाद, अन्ततः विश्वास आ मित्रता विजयी भेल। ब्राह्मण आ ठाकुरक बच्चा — जे ई सभ गप कहैत-सुनैत यात्रा तय केने छलाह — अपन गन्तव्य धरि पहुँचि गेलाह, आ बच्चाक तीनू शर्त पूर्ण भेल।

समाप्त

VIDEHA

विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका | ISSN 2229-547X | www.videha.co.in

डाकू रौहिणेय

मगधक चतुर डाकूक हृदय-परिवर्तनक गाथा

गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादक, विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका (since 2000)

ISSN 2229-547X

उपक्रम : मगधक आतंक

मगध देशमे अशोकक पिता बिम्बिसारक राज्य छल — सम्पूर्ण शान्ति व्याप्त छल, मुदा एकटा डाकू रौहिणेयक आतंक ओहि शान्तिकेँ लगातार भंग करैत छल। ई गाथा ओही डाकूक थिक — जकर चतुराइ राजाक सम्पूर्ण सेनासँ बेसी शक्तिशाली छल, आ जकर अन्तिम परिवर्तन एकटा साधारण वचनसँ भेल।

रौहिणेय कोनो साधारण डाकू नहि छल — ओ गरीबक मित्र, धनीक शत्रु, आ राजशक्तिक लेल एकटा अजेय पहेली छल। मुदा एहि गाथाक असली सौन्दर्य ओकर अन्तमे छिपल अछि — जतय बल आ छल दुनू हारि जाइत अछि, आ सत्यक एकटा छोट वचन विजयी होइत अछि।

अध्याय 1 : पिताक अन्तिम आदेश

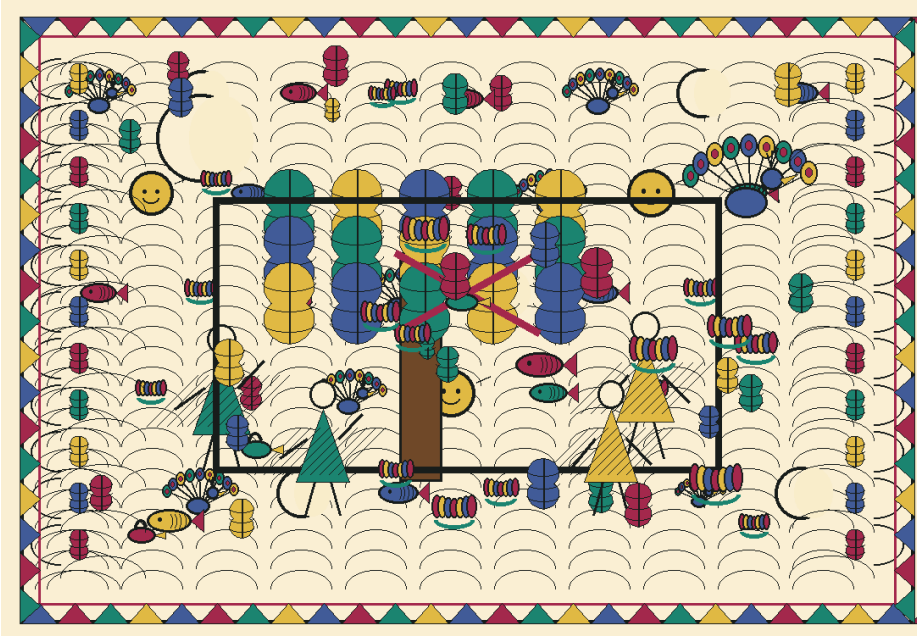

चित्र 1

रौहिणेयक पिता छल डाकू लौहखुर — अपन समयक कुख्यात लुटेरा। मृत्युशय्यापर ओ अपन बेटाकेँ एकटा विचित्र आदेश देलक — 'महावीर स्वामीक प्रवचन कहियो नहि सुनिहँ। ज्यौँ कतहु प्रवचन होअय, तँ अपन कान बन्द कऽ लिहँ, अन्यथा बर्बादी निश्चित होएत।'

ई आदेश रहस्यमय छल — कोन शक्ति एहि प्रवचनमे छल, जे एकटा कठोर डाकूकेँ सेहो डरा सकैत छल? मुदा पितृभक्तिवश रौहिणेय एहि आदेशकेँ अपन जीवनक अटल नियम बना लेलक।

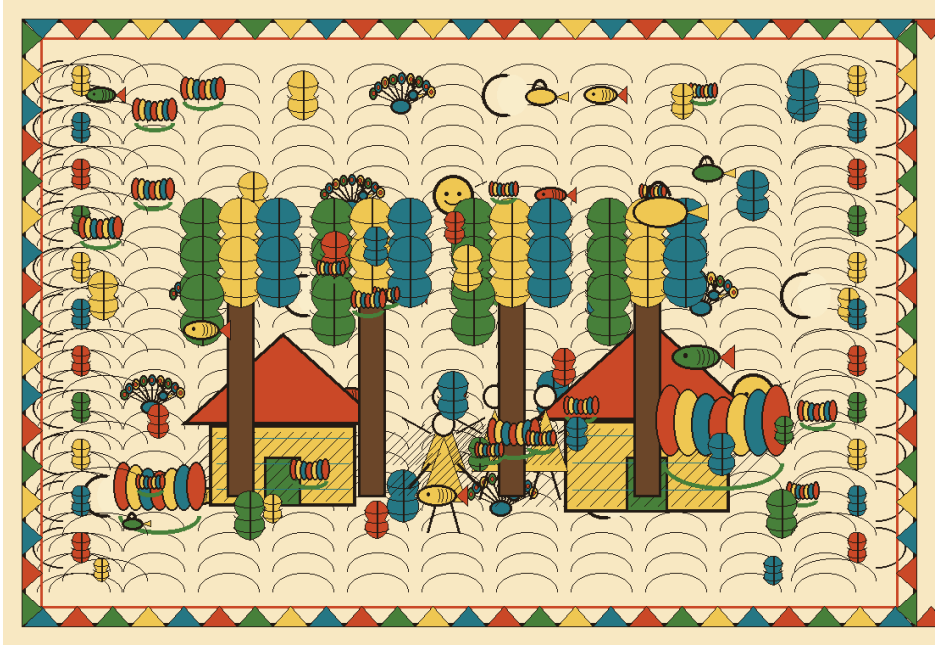

चित्र 2

रौहिणेय अपन पिताक विरासत सम्हारलक — डकैती आ लूटक पेशा। मुदा ओकर स्वभाव अपन पितासँ भिन्न छल — ओ मात्र धनीकेँ लूटैत छल, आ लूटल धन गरीबमे बाँटि दैत छल।

एहि नीतिक कारण गामक लोक ओकर मदति करैत रहए, आ रौहिणेय कहियो पकड़ल नहि जा सकल छल — जनताक समर्थन ओकर सभसँ पैघ कवच छल, राजाक पूरा सेनासँ बेसी शक्तिशाली।

अध्याय 2 : मदनवतीक अपहरण

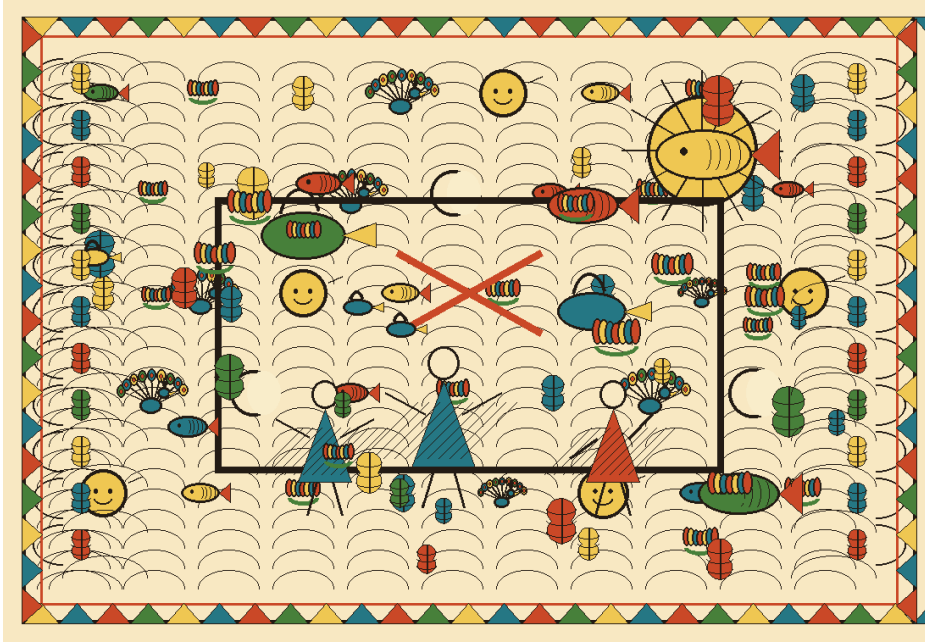

चित्र 3

एक बेर रौहिणेय अपन संगीक संग पाटलिपुत्रक सभसँ पैघ सेठक पुतोहु मदनवतीकेँ वाटिकासँ अपहरण कऽ लेलक — ठीक ओही क्षण, जखन ओकर पति फूल लेबाक हेतु गेल रहए।

जखन पति घुरल आ अपन पत्नीकेँ नहि पओलक, त' रौहिणेयक संगी ओकरा भ्रामक जानकारी दऽ भ्रमित कऽ देलक — रौहिणेयक योजनाक चतुराइ आ सतर्कता एहि घटनामे स्पष्ट छल।

चित्र 4

ई अपहरण डाकूक साहस आ निर्भयताक प्रमाण छल — सभसँ पैघ सेठक परिवारपर सोझे प्रहार, बिनु कोनो भयक। मुदा एहि साहसक पाछाँ कोनो क्रूरता नहि छल — रौहिणेयक अपन आचार-संहिता छल।

ई घटना राजाक कानतक पहुँचल, आ रौहिणेयक विरुद्ध क्रोध बढ़ैत गेल। मुदा डाकू आब आरो साहसी योजना बनाबए लागल — ओकर अगिला चालि आरो चौंकाबएवाली छल।

अध्याय 3 : नकली नर्त्तकीक चालि

चित्र 5

किछु समय बाद सुभद्र सेठक पुत्रक विवाह छल। जखन बराती घुरि रहल छल, तखन रौहिणेय सेठानी मनोरमाक भेष धरि लेलक, आ ओकर संगी नर्त्तक बनि गेल — छलक ई नाटक अद्भुत चतुराइसँ रचल गेल।

नकली नर्त्तक जखन नाचए लागल आ भीड़ मंत्रमुग्ध भऽ देखए लागल, तखने रौहिणेय भीड़मे कपड़ाक साँप छोड़ि देलक! भगदड़, चीख-पुकार — पूरा दृश्य अफरातफरीमे बदलि गेल।

चित्र 6

एहि अराजकताक बीच रौहिणेय गहनासँ लादल वरकेँ उठा निपत्ता (गायब) भऽ गेल! ई अपहरण पहिलेसँ बेसी साहसिक आ चतुर छल — पूरा बारातक बीच, सभक आँखिक सोझाँ।

राजाक क्रोध आब सीमा तोड़ि चुकल छल। एहन धृष्टता — विवाहक शुभ अवसरपर सेहो! राजा शहरक कोतवालकेँ तुरत बजा भेजलक, न्याय आ दण्डक माँग करैत।

अध्याय 4 : अभयकुमारक चुनौती

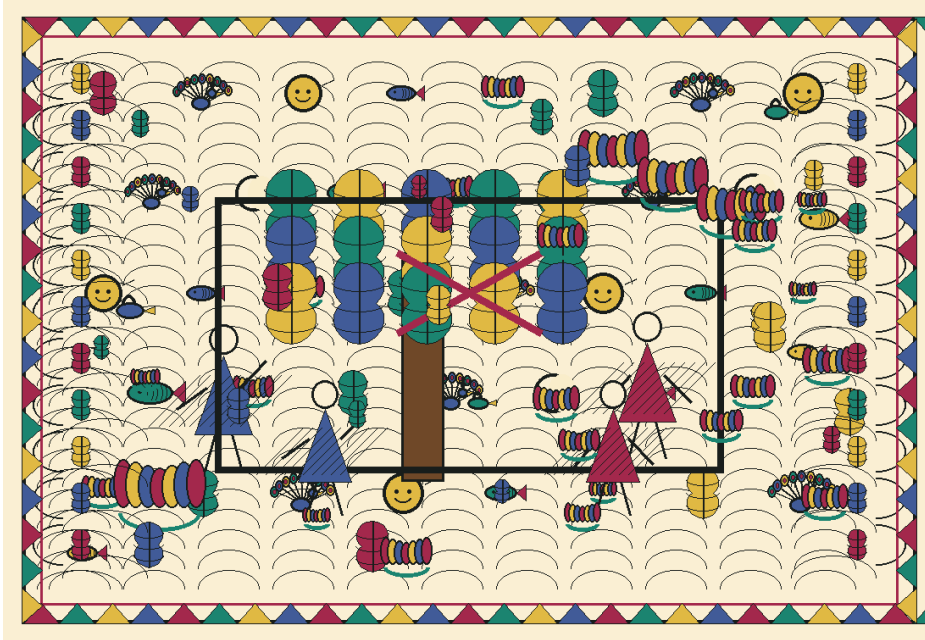

चित्र 7

कोतवाल राजाक आगाँ अपन असमर्थता व्यक्त केलक — 'हम रौहिणेयकेँ पकड़बामे असमर्थ छी' — आ कोतवालीक पदसँ त्यागपत्र देबाक बातो केलक। राजाक क्रोध आरो बढ़ल।

तखन मंत्री अभयकुमार आगाँ आयल आ एकटा साहसिक प्रतिज्ञा केलक — 'पाँच दिनमे डाकू रौहिणेयकेँ पकड़ि कऽ अनब।' राजा ई प्रस्ताव सुनि सशर्त स्वीकृति देलनि — 'यदि पाँच दिनमे नहि अनलहुँ, त' अहाँक गरदनि काटि लेल जाएत!'

चित्र 8

ई शर्त अत्यन्त कठोर छल — अभयकुमारक जीवन आब रौहिणेयक गिरफ्तारीसँ जुड़ल छल। मंत्रीक बुद्धि आब परीक्षामे छल — कोना एहन चतुर, अजेय डाकूकेँ पाँच दिनमे पकड़ल जाए?

अभयकुमार तुरत जासूस सभ लगओलक — शहरक हर कोन-कातमे, हर सम्भावित स्थानपर, रौहिणेयक गतिविधिक सूचना जुटाबए लेल।

अध्याय 5 : राजमहलक दुस्साहस

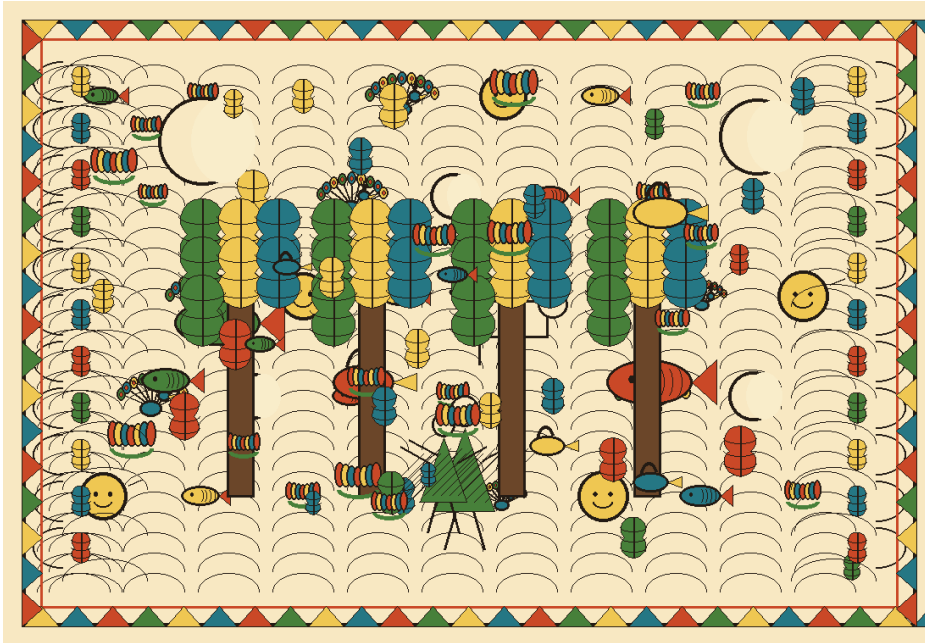

चित्र 9

रौहिणेयकेँ सभटा बातक पता चलि गेल छलैक — अभयकुमारक प्रतिज्ञा, राजाक चेतावनी। मुदा एहि खतराक बावजूद रौहिणेयक मोनमे एकटा नव, दुस्साहसिक विचार आयल — 'सेठ-साहूकार बहुत भेल, आब किए नहि राजमहलमे डकैती कएल जाय?'

ई विचार अत्यन्त जोखिमपूर्ण छल — राजमहल, जतय पहरा सभसँ कड़ा हो, ओतय डकैती? मुदा रौहिणेयक आत्मविश्वास आ चतुराइ एतेक प्रबल छल जे ओ ई चुनौती स्वीकार कऽ लेलक।

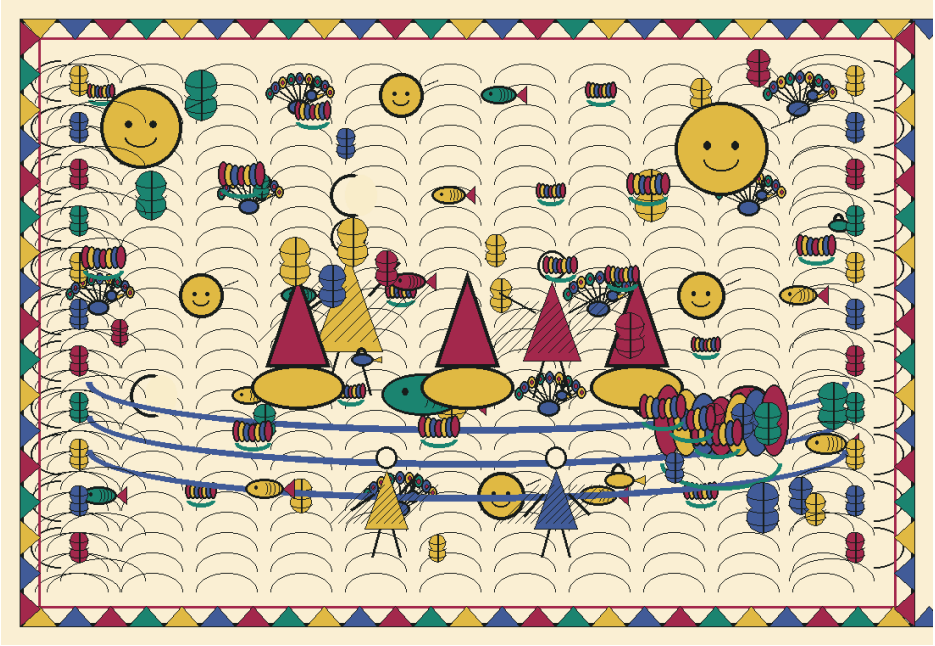

चित्र 10

ओ राजमहलक रस्तापर चलि पड़ल। मुदा रस्तामे एकटा वाटिकामे महावीरस्वामीक प्रवचन चलि रहल छल — ठीक ओतय, जतयसँ रौहिणेयकेँ गुजरब छल!

पिताक आदेश स्मरण करैत रौहिणेय तुरत अपन कान बन्द कऽ लेलक — मुदा ठीक ओही क्षण ओकर पएरमे काँट गरि (चुभि) गेल! ई एकटा छोट, मुदा नियति-निर्धारक क्षण छल।

अध्याय 6 : अनसुनल वचन

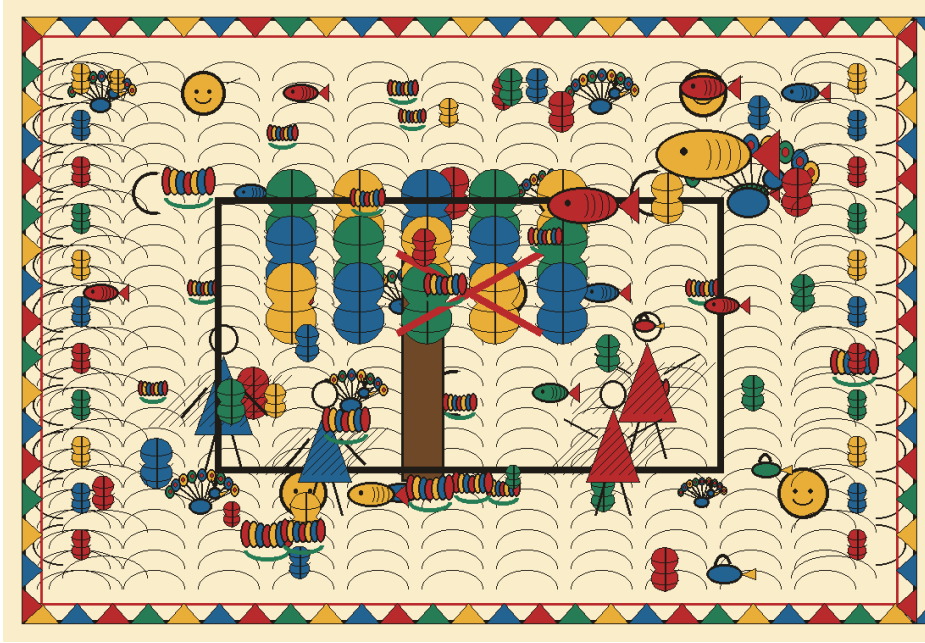

चित्र 11

काँटक पीड़ासँ रौहिणेयकेँ क्षण भरिक लेल अपन कान खोलए पड़ल — आ ठीक ओही क्षण महावीर स्वामीक वाणी ओकर कानमे पड़ल: 'देवता लोकनिकेँ कहियो घाम नहि छुटैत छन्हि। हुनकर मालाक फूल मौलाइत नहि अछि, हुनकर पएर धरती पर नहि पड़ैत छन्हि, आ हुनकर पिपनी नहि खसैत छन्हि।'

ई वाक्य साधारण लागल, मुदा एकर गहींर अर्थ रौहिणेयक अवचेतन मोनमे बैसि गेल — बिनु ओकरा एहि क्षण एकर महत्व बुझने। ई एकटा बीज छल, जे आगाँ चलि कऽ अंकुरित होएत।

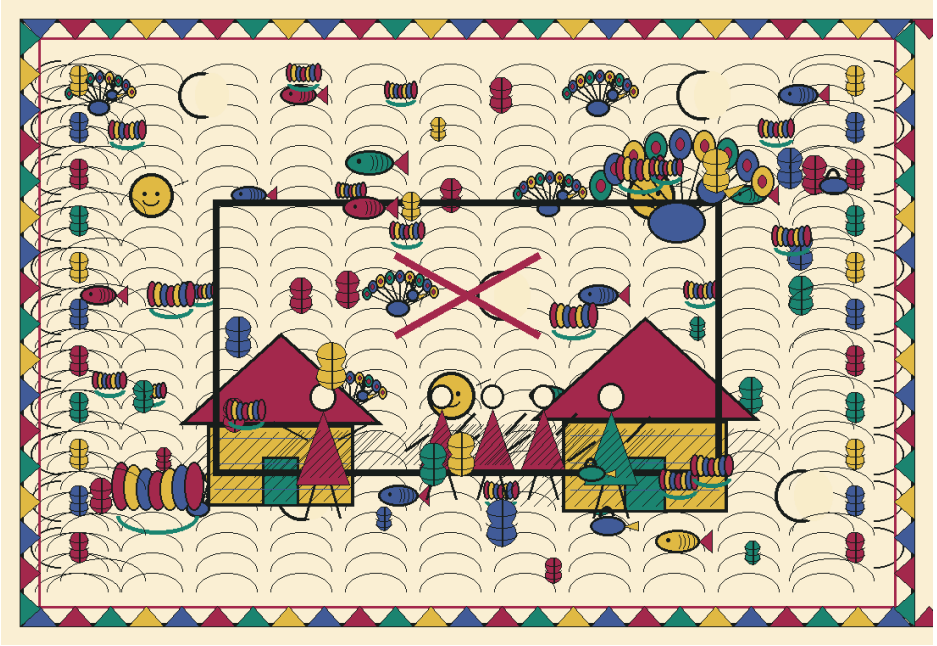

चित्र 12

काँट निकालि रौहिणेय फेर अपन कान बन्द कऽ लेलक — पिताक आदेशक पालन करैत। ओ राजमहल दिस बिदा भऽ गेल, बिनु ई जानने जे ओ अनजानहि एकटा वचन सुनि चुकल अछि, जे ओकर भविष्य बदलि देत।

राजमहल पहुँचि रौहिणेय देखलक जे सभ पहरेदार सुतल बुझाइत छल — मुदा ई भ्रम छल! ई असल मे अभयकुमारक चतुर चालि छल, जासूससँ पता लगा राजमहलक रक्षाकेँ जानि-बुझि कऽ शिथिल देखाओल गेल छल।

अध्याय 7 : गिरफ्तारी आ छलक भण्डाफोड़

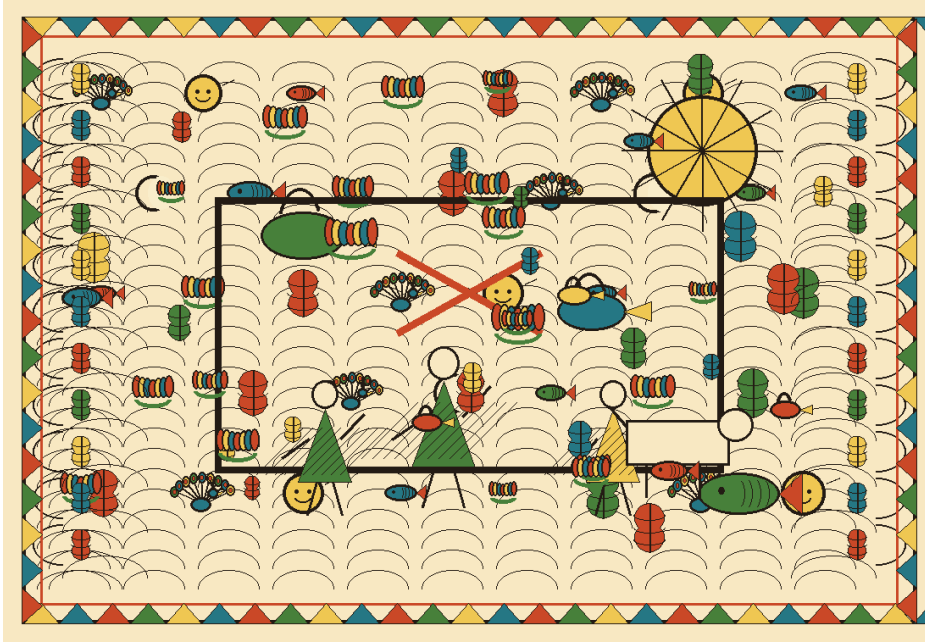

चित्र 13

जखने रौहिणेय महलमे घुसए लागल, तखने पहरेदार ललकार (चुनौती) देलक। रौहिणेय तुरत भागि काली मन्दिरमे शरण लेलक — मुदा सिपाही सभ मन्दिरकेँ घेरि लेलक।

जखन रौहिणेय देखलक जे बाहरसँ सभ घेरने अछि, त' ओ सिपाहीक बीचसँ छड़पि (कूदि) मन्दिरक चहारदिवारी लाँघि गेल — मुदा ओतहु सिपाही तैनात छलनि, आ अन्ततः ओ पकड़ल गेल!

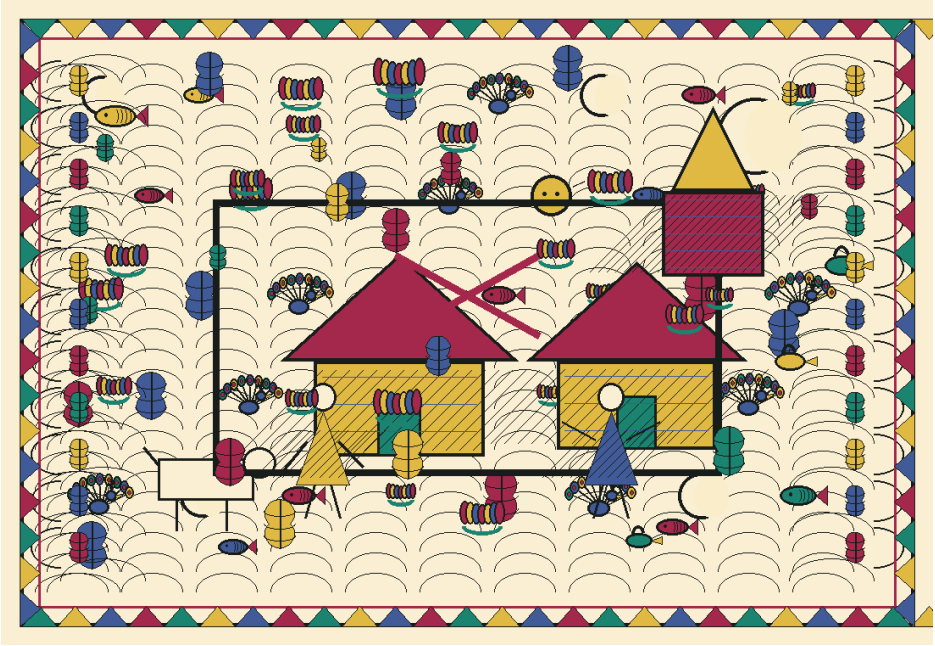

चित्र 14

राजा तुरत आदेश देलनि — 'एकरा सूलीपर चढ़ाओ!' मुदा मंत्री अभयकुमार बुद्धिमानीसँ हस्तक्षेप केलनि — 'बिना चोरीक माल बरामद केने, आ बिना चिन्हासीक, एकरा कोना फाँसी देल जाए?' — कानूनी प्रक्रियाक ई सम्मान अभयकुमारक बुद्धिमत्ता दर्शबैत अछि।

रौहिणेय मौका देखि गोहारि (चिचिआइ) कऽ कहलक — 'हम शालि गामक दुर्गा किसान छी! हमर घर-परिवार ओही गाममे छै, हम त' नगर मन्दिर दर्शनक हेतु आयल छलहुँ!' — ई झूठ चतुराइसँ बुनल गेल छल।

अध्याय 8 : चतुर भेष

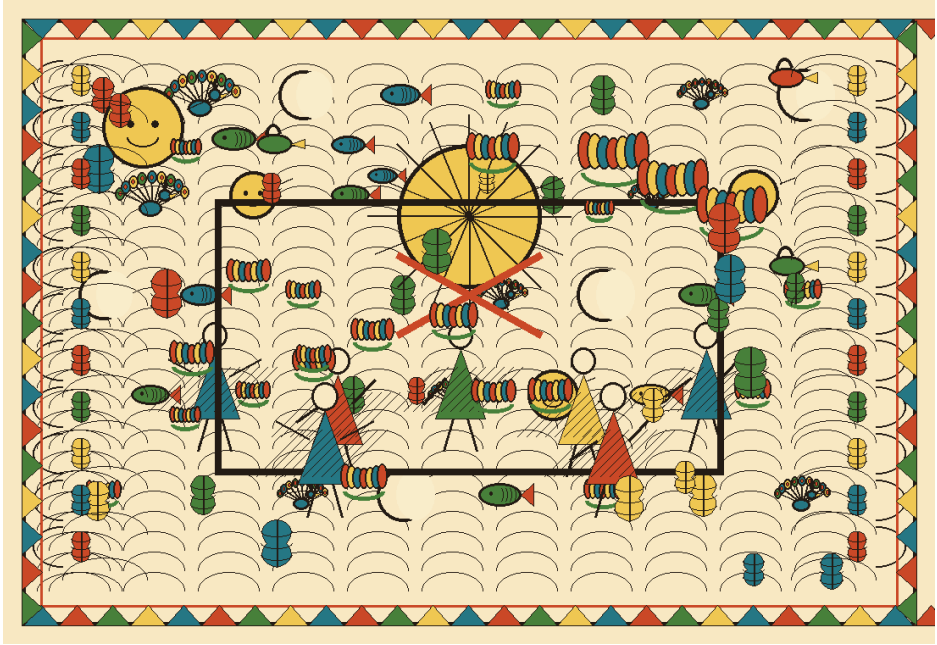

चित्र 15

राजा ओहि गाममे हरकारा पठओलनि, सत्यताक जाँचक लेल। मुदा ग्रामीण सभ पहिनहिये रौहिणेयसँ मिलल छल — रौहिणेयक जनसमर्थन एतय सेहो काज आयल। ग्रामीण सभ कहलकनि — 'हँ, दुर्गा ओही गाममे रहैत अछि, मुदा अखन कतहु बाहर गेल छल।'

अभयकुमार एहि उलझनमे सोचलक — 'एकरासँ गलती कोना स्वीकार करबाबी?' ओ सत्यताक पूर्ण प्रमाण नहि पाबि, एकटा नव योजना बनओलक — रौहिणेयकेँ नीक महलमे कैदीक रूपमे राखल गेल, ऐश-आरामक सुविधा संग।

चित्र 16

रौहिणेय — डाकू महाराज — एहि अप्रत्याशित सुविधामे डूबि गेल, बिनु ई जानने जे ई सभटा एकटा गहींर चालिक हिस्सा छल। अभयकुमार सत्य निकालबाक लेल एकटा अत्यन्त चतुर योजना रचि रहल छल।

एक दिन अभयकुमार रौहिणेयकेँ खूब मदिरा पिया देलनि। रौहिणेय जखन नशामे डूबल, त' ओकरा होश नहि रहल जे आगाँ की भऽ रहल अछि — योजनाक अगिला चरण शुरू भऽ चुकल छल।

अध्याय 9 : नकली स्वर्गलोक

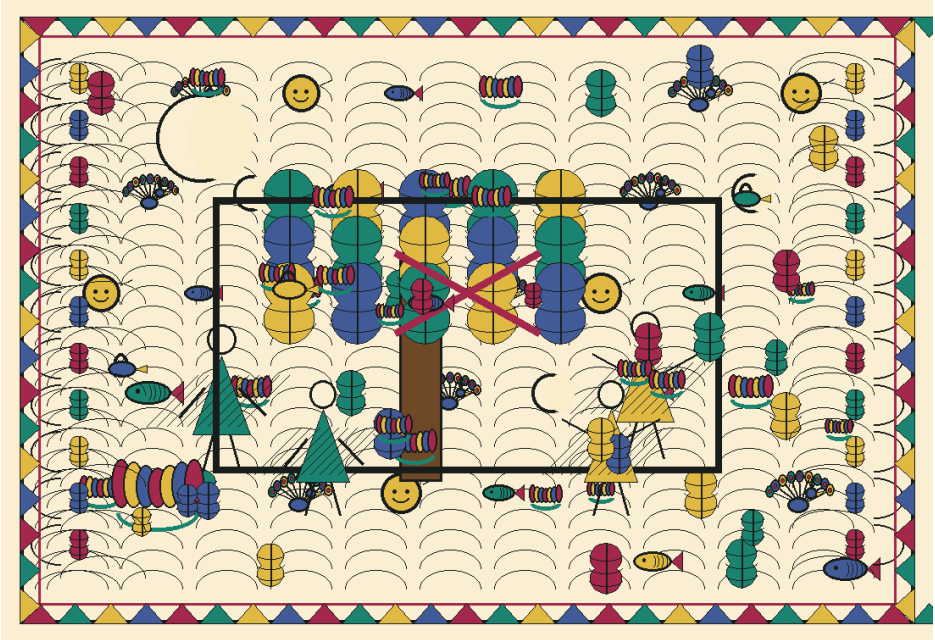

चित्र 17

रौहिणेय जखन होशमे आयल, त' चारू कात गंधर्व-अप्सरा नाचि रहल छल! विस्मित रौहिणेय स्तब्ध रहि गेल — ई की दृश्य छल?

उपस्थित सभ कहलकनि — 'ई स्वर्गपुरी थीक, आ इन्द्र रौहिणेयसँ भेँट करबाक हेतु आबए बला छथि!' रौहिणेय सोचलक — 'राजा हमरा सूलीपर चढ़ा देलक, त' हम मरि कऽ स्वर्ग पहुँचि गेल छी!'

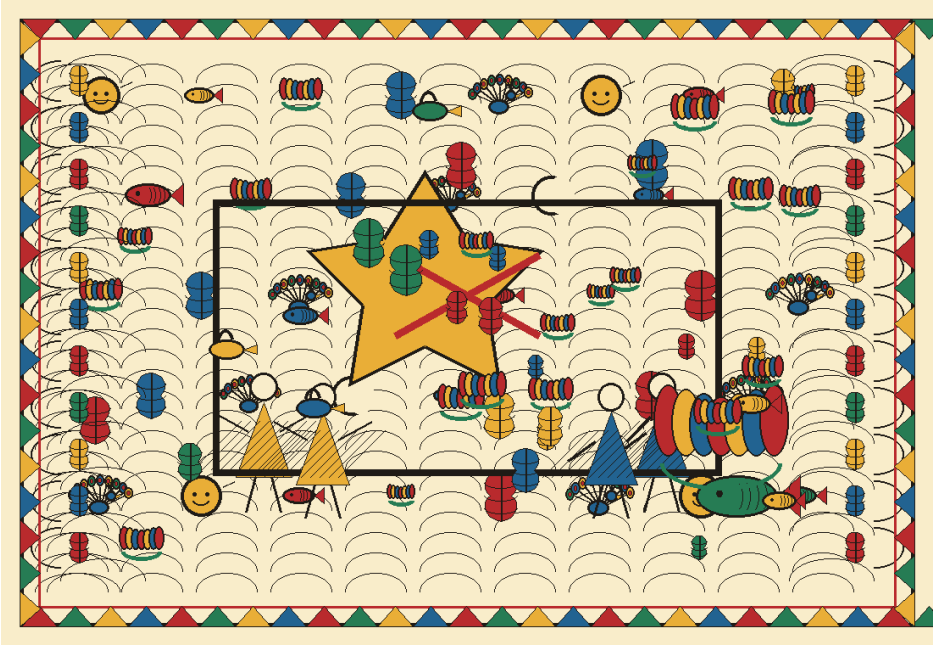

चित्र 18

मुदा ई सभटा भ्रम छल — असल मे ई मंत्रीक पठाओल गबैया आ नर्तक सभ छल, एकटा विस्तृत नाटक, रौहिणेयकेँ सत्य कहबाबए लेल रचल गेल। अभयकुमारक बुद्धि रौहिणेयक अपनहि चतुराइसँ बेसी प्रबल साबित भऽ रहल छल।

तखने 'इन्द्रक दूत' (असल मे मंत्रीक आर एकटा एजेंट) आयल आ कहलक — 'रौहिणेयकेँ देवताक रूपमे अभिषेक होएतैक, मुदा ताहिसँ पहिने ओकरा अपन पृथ्वीलोकपर कएल नीक-अधलाह कार्यक विवरण देबए पड़तैक।'

अध्याय 10 : सत्यक क्षण

चित्र 19

रौहिणेयकेँ लागल जे स्वर्गमे प्रवेशक लेल सभटा पाप स्वीकार करब आवश्यक अछि। ओ अपन पाप स्वीकार करबाक तैयारी केलक — मुदा ठीक ओही क्षण, ओकर अनजानहि सुनल महावीर स्वामीक वचन ओकर मोनमे कौंधल!

रौहिणेय ध्यानसँ देखलक — ई 'दैव लोकक जीव' सभ घामे-पसीने छल! हुनकर माला मौलायल छल! हुनकर पएर धरती पर छल! हुनकर पिपनी उठि-खसि रहल छल! — जे बात महावीर स्वामी कहने छलाह, से यथार्थ देवतासँ पूर्ण विपरीत!

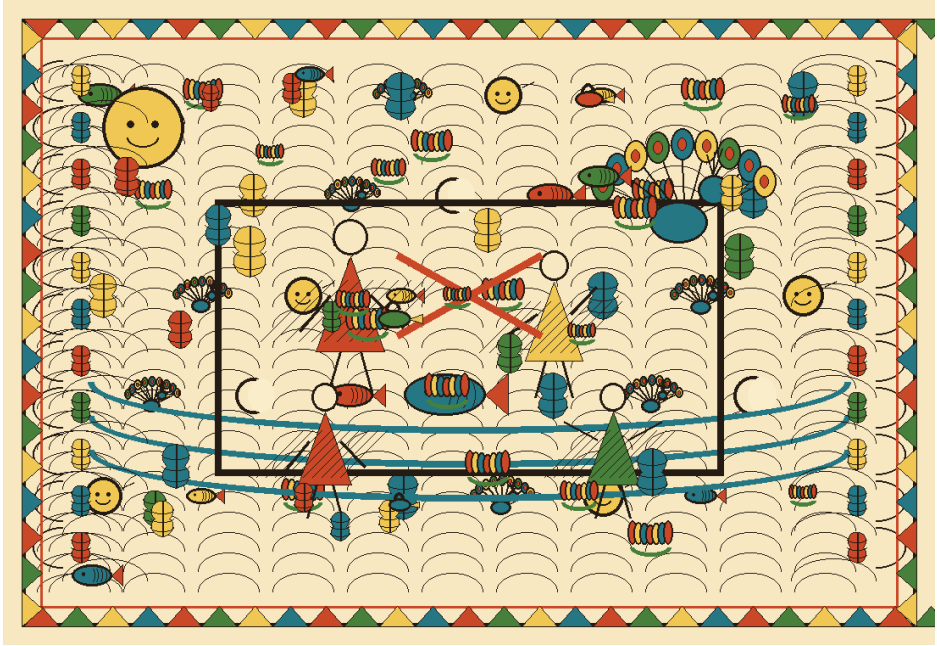

चित्र 20

रौहिणेयक चतुर मस्तिष्क तुरत सत्य भाँपि गेल — 'ई स्वर्ग नहि, कोनो छल अछि!' आ एहि पहचानसँ ओकर रणनीति बदलि गेल। ओ अपन पापक बदला अपन पुण्यक गुणगाण शुरू कऽ देलक — चतुराइक अन्तिम प्रदर्शन।

अभयकुमार, जे ई सभटा देखि रहल छल, राजाकेँ सूचित केलक — 'यदि अहाँ ओकरा अभयदान (क्षमा) दऽ देब, त' ओ सभटा सत्य बता देत।' राजा सहमत भेलनि — न्याय आ सत्यक बीच एकटा समझौता।

अध्याय 11 : अभयदान आ प्रायश्चित्त

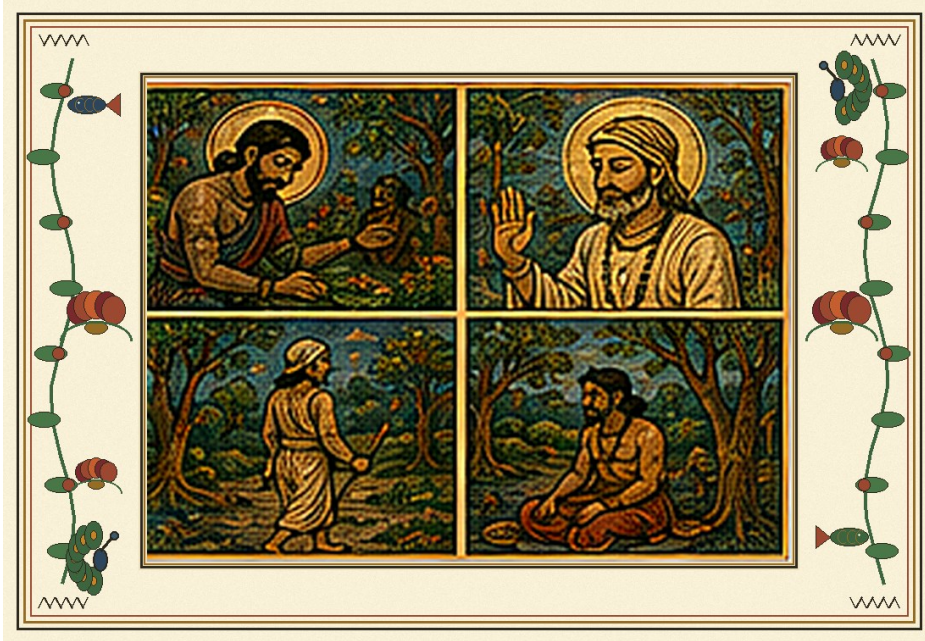

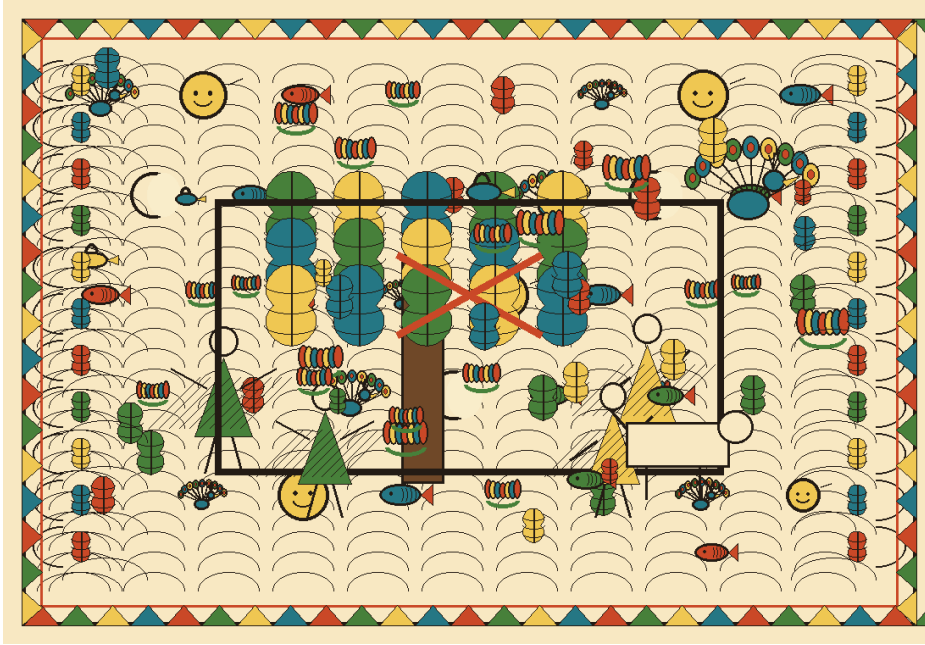

चित्र 21

अभयदान भेटिते रौहिणेय नगरक बाहरक अपन जंगलक गुफाक पूरा पता बता देलक — जतय सभटा लूटल खजाना आ अपहृत व्यक्ति सभ छल! ई स्वीकारोक्ति रौहिणेयक चतुराइक अन्त आ सत्यताक आरम्भ छल।

राजा घोषणा केलनि — 'कारण अहाँकेँ अभयदान भेटि गेल छै, तैं अहाँ सभटा सम्पदा राखि सकैत छी!' ई उदारता राजाक न्यायप्रियताक प्रमाण छल।

चित्र 22

मुदा रौहिणेय — जे कहियो सम्पत्तिक लोभी छल — अब कोनोटा वस्तु नहि लेलक! ई परिवर्तन आश्चर्यजनक छल — जे डाकू धनक लेल जीवन जोखिममे डारने छल, से आब धनकेँ ठुकरा रहल छल।

रौहिणेय कहलक — 'जाहि महावीरस्वामीक एकटा वचन सुनलासँ हमर जान बचि गेलैक, तकर दीक्षा लेब, आ ओकर सभटा वचन सुनि जीवन धन्य करब।' — ई घोषणा एहि गाथाक अन्तिम आ सभसँ पैघ चमत्कार छल: बल आ छलक जीवन जीनिहार डाकू, सत्यक एकटा वचनसँ पूर्ण रूपेँ परिवर्तित भऽ गेल — डाकू रौहिणेयसँ शिष्य रौहिणेय धरिक यात्रा।

समाप्त

VIDEHA

विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका | ISSN 2229-547X | www.videha.co.in

डोकी डोका

सातम राति धरिक अटूट प्रेम-खोज

गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादक, विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका (since 2000)

ISSN 2229-547X

उपक्रम : दुनू गोटेक प्रेम

एकटा डोका आ एकटा डोकी — दुनूमे बड्डु प्रेम। डोकी जे कहए, डोका ओ काज सेकेण्ड-भरिक देरीसँ पूर्ण करैत, मुदा मिनट भरिक देरी कहियो नहि होमए दैत। ई प्रेम एतेक गाढ़ छल जे सियारकेँ ईर्ष्या होमए लागल।

ई गाथा ईर्ष्याजनित छलक, भ्रमक विपत्ति, आ अन्ततः एकटा असाधारण खोज-यात्राक थिक — जतय डोकी अपन डोकाकेँ पओलाक लेल जंगल-जंगल, प्राणी-प्राणी भटकैत रहलि, सातम रातिक प्रतीक्षामे।

अध्याय 1 : अटूट प्रेम

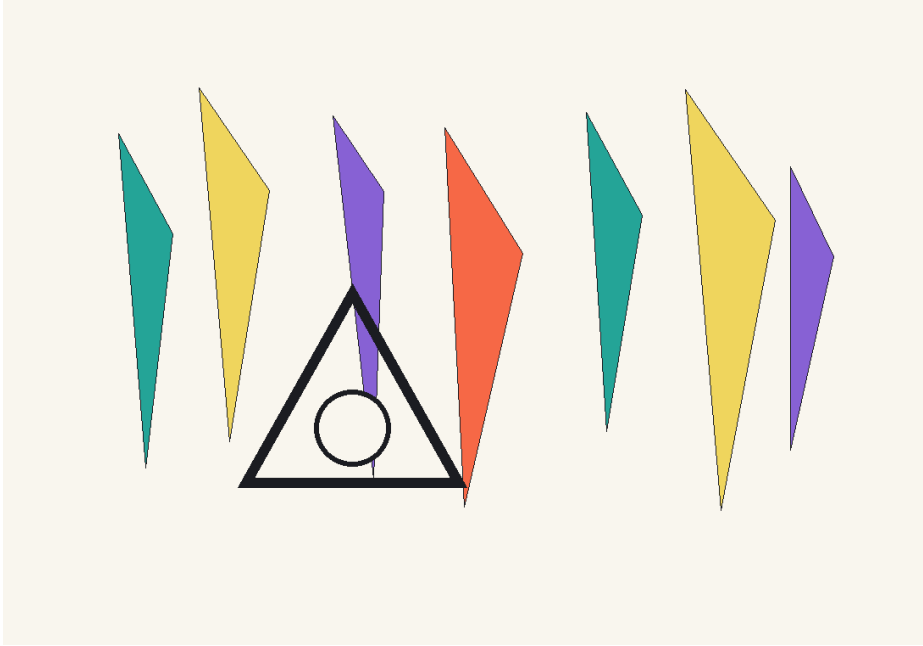

चित्र 1

डोका आ डोकी — दुनूक बीच अपार प्रेम छल। डोकी जे किछु कहए, डोका ओकर पूर्ति तुरत करैत — 'डोकी कहए तरेगण (तारा) लऽ आऊ त' डोका तरेगण आनएमे सेकेण्डक देरी भऽ जाए त' ठीक, मुदा मिनटक देरी नञि होमए दैत छल!'

ई अतिशयोक्तिपूर्ण प्रेम-वर्णन डोका-डोकीक सम्बन्धक गहराइ दर्शबैत छल — असम्भव कार्य सेहो डोका अपन प्रेमक बलपर सम्भव बना दैत छल।

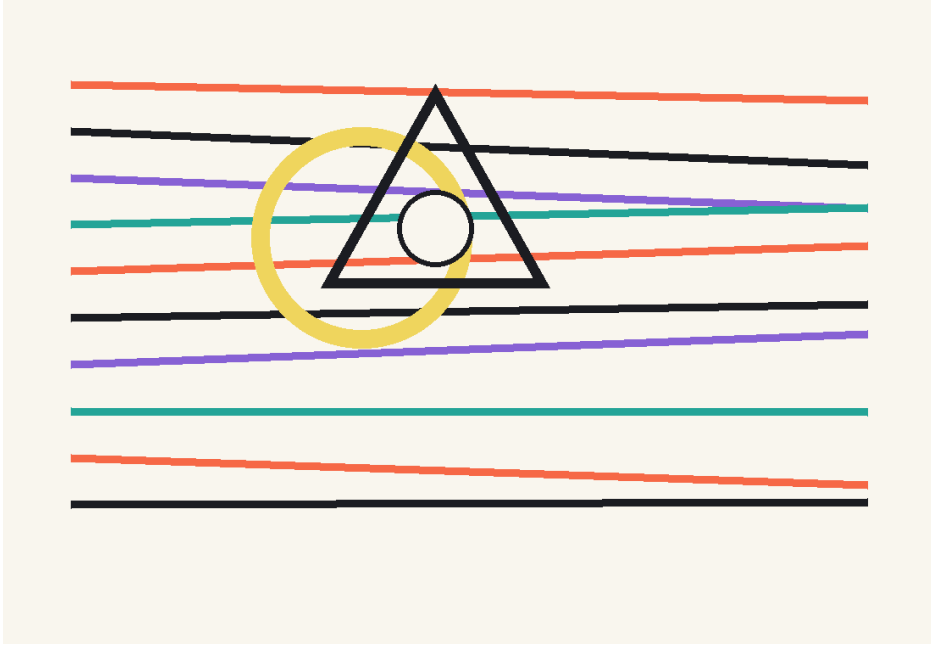

चित्र 2

मुदा एहन प्रगाढ़ प्रेम अक्सर आन प्राणीक ईर्ष्याक कारण बनि जाइत अछि। सियारकेँ डोका-डोकीक प्रेमसँ ईर्ष्या होमए लागल — ई ईर्ष्या आगाँ चलि कऽ एकटा गम्भीर षड्यन्त्रमे परिणत भेल।

सियार एकटा कनही (कान-कटल वा विशेष चिन्हबाली) सियारिनसँ मिलि गेल, आ दुनू मिलि कऽ डोका-डोकीक प्रेममे बाधा डालबाक योजना बनओलक।

अध्याय 2 : सियारक छल

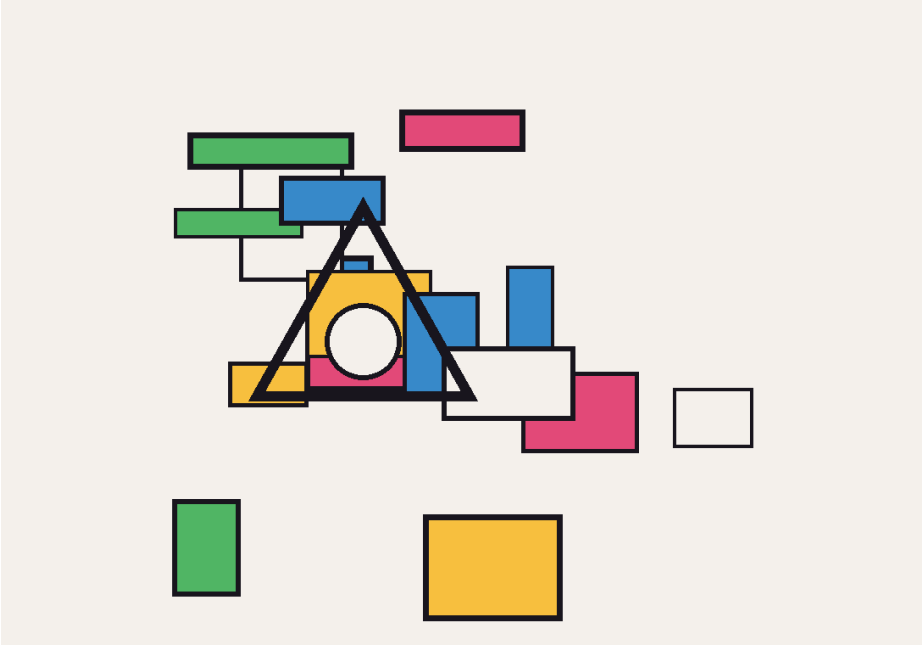

चित्र 3

एक दिन जखन डोका आ डोकी एक्के थारीमे भोजन कऽ रहल छल — प्रेमक ई सहज दृश्य — तखन सियार डोकाकेँ बजओलक। एम्हर-ओम्हरक गप कऽ ओकरा बिदा कऽ देलक — डोकाकेँ भोजनस्थलसँ दूर लऽ गेल।

फेर सियार डोकीकेँ बजओलक। ओ पुछलक — 'अहाँ दुनू गोटेमे बड़ प्रेम अछि, मुदा डोका जे कहलक, ताहिसँ त' हमरा बड़ दुख भेल!' — ई झूठ, डोकीक मोनमे शंकाक बीज रोपबाक लेल रचल गेल छल।

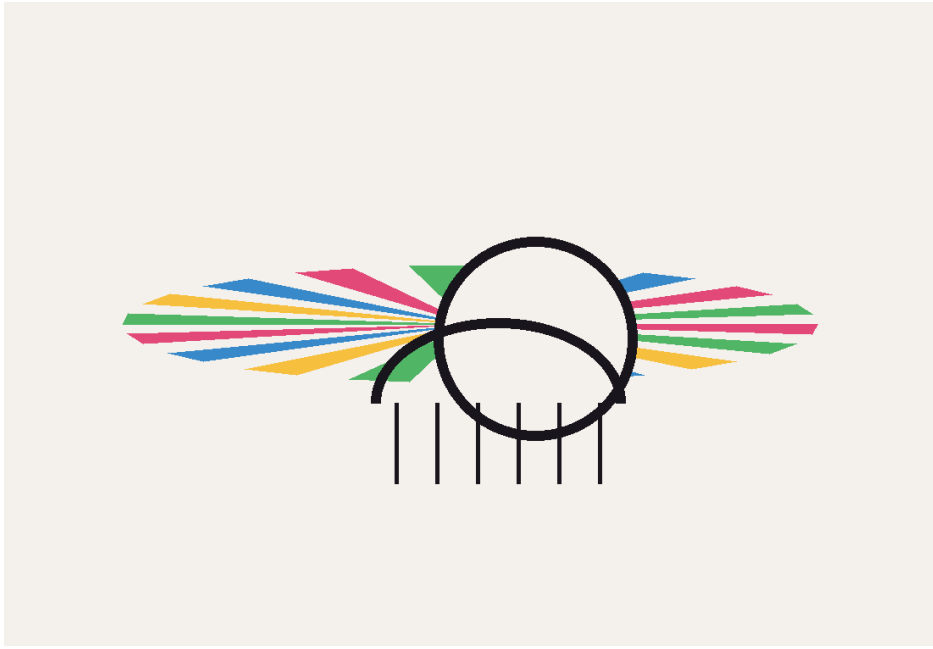

चित्र 4

सियार आगाँ कहलक — 'लागय-ए जे ओकर (डोकाक) मोन ककरो आन पर छै!' — ई आरोप डोकीक हृदयमे विश्वासघातक भय जगओलक, बिनु कोनो प्रमाणक।

डोकी आरो पुछए लागल — सत्यताक खोजमे, स्पष्टीकरणक लेल — मुदा तावत ओ सियार पड़ा (भाग) गेल! अपन काज (शंकाक बीज रोपब) पूर्ण कऽ, बिनु उत्तर देने, सियार अन्तर्धान भऽ गेल।

अध्याय 3 : डोकाक अन्तर्धान

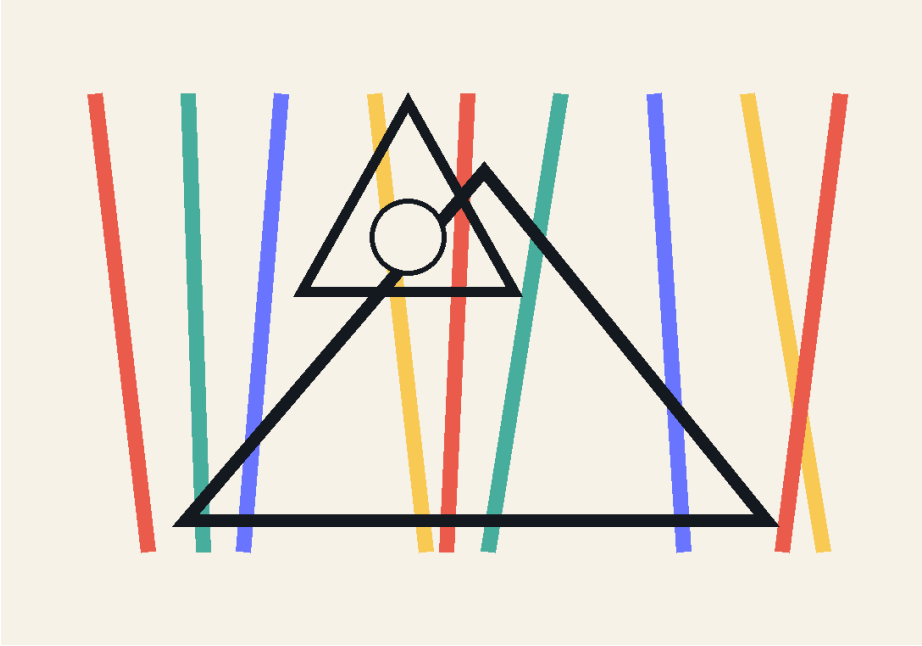

चित्र 5

डोकीक मोनमे शंका आब गहींर भऽ चुकल छल। ओ घरमे हनहन-पटपट (व्याकुलता आ अशान्ति) मचा देलक — प्रेमक विश्वासमे दरार आबि चुकल छल।

एहि बीच डोका — जे सियारक चालिसँ पूर्णतः अनभिज्ञ छल — लकड़ी काटबाक लेल बोन दिस गेल, अपन दैनिक काजक क्रममे। मुदा ओ घुरल नहि!

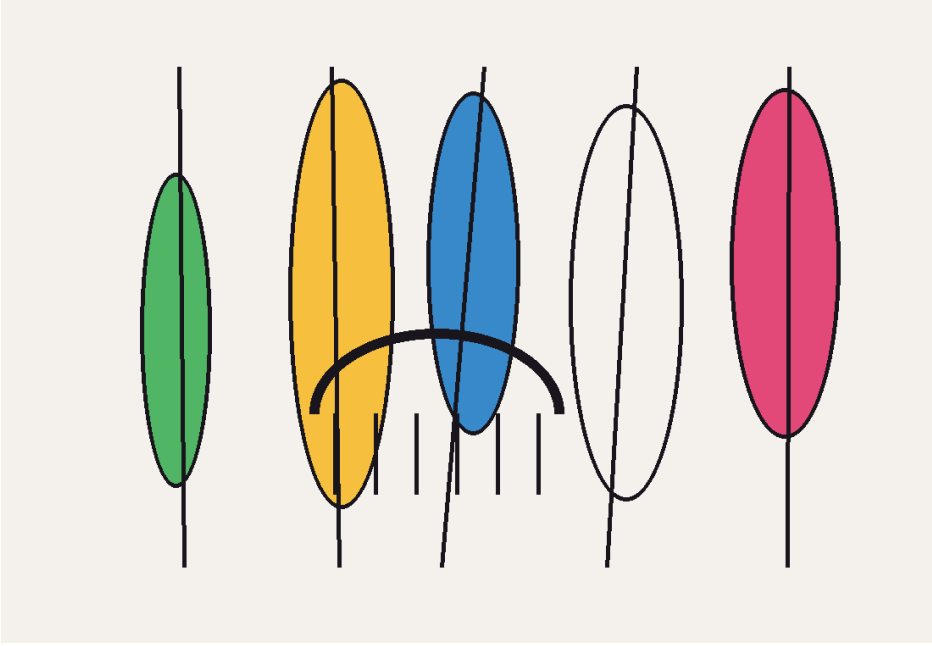

चित्र 6

डोकीक चिन्ता आब भय आ आतंकमे बदलि गेल। रातिभरि प्रतीक्षाक बाद, भोरमे एकटा जोगी आयल। डोकी व्याकुल भऽ पुछलक — 'ई की भेल?'

जोगिया उत्तर देलक — 'ई अछि पूर्व जन्मक शराप। जखने अहाँ डोकीपर विश्वास छोड़ब, डोका छोड़ि कऽ चलि जाएत, मुदा सातम दिन भेटि जाएत!' — ई रहस्यमय भविष्यवाणी डोकीक आगाँक यात्राक आधार बनल।

अध्याय 4 : खोजक आरम्भ

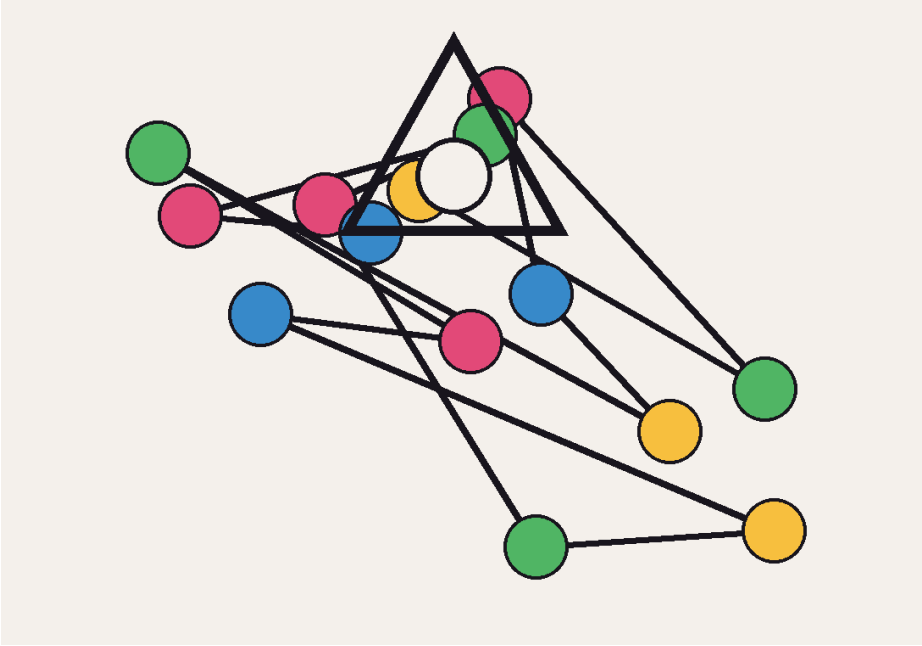

चित्र 7

जोगीक भविष्यवाणी सुनितो डोकी स्थिर नहि बैसि सकलि — ओकर प्रेम एतेक प्रबल छल जे प्रतीक्षा असम्भव लागल। ओ निकलि गेलि डोकाकेँ ताकए, सातम रातिक प्रतीक्षा कएनहि सक्षम।

रस्तामे बगुला भेटलैक। बगुला डोकीकेँ कहलकैक — 'रुकि जाऊ एहि राति!' — मुदा डोकी एहि निमन्त्रणकेँ अस्वीकार केलक, अपन खोज जारी राखि।

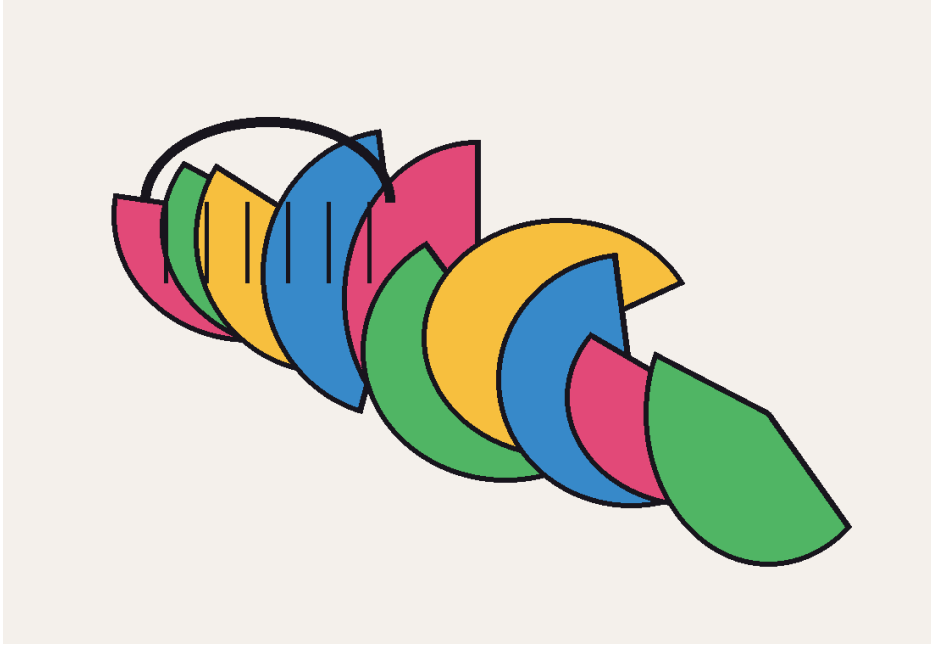

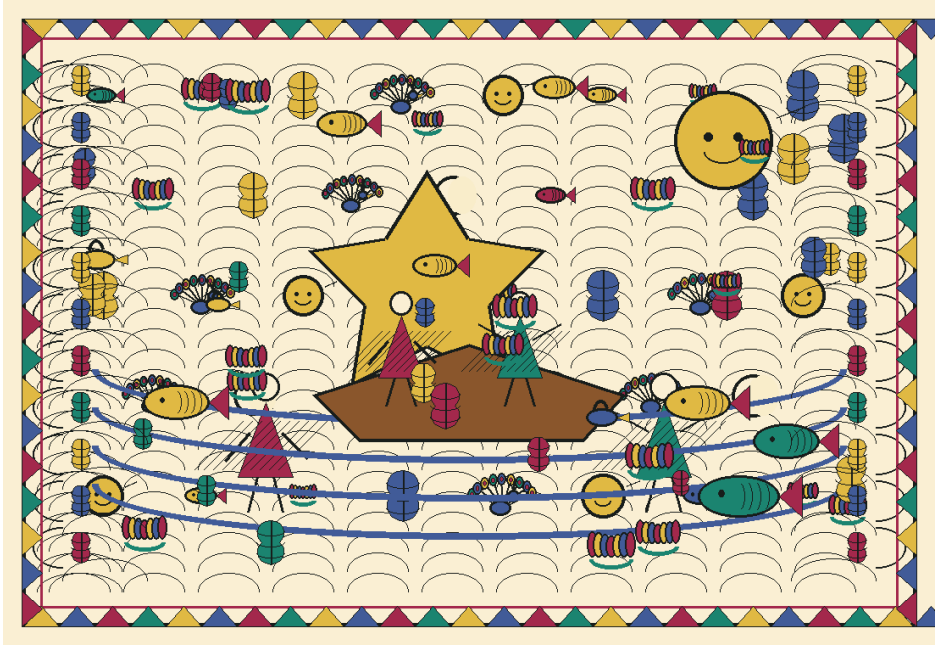

चित्र 8

आगाँ बढ़ैत डोकीकेँ सियरबा (एक आर सियार), वटवृक्ष, आ मानसरोवरक रस्तामे बोनमे हाथी सभ भेटलैक। प्रत्येक कहलकैक — 'एक-एक राति रुकि कऽ जाऊ!' — मुदा डोकी कोनो निमन्त्रण स्वीकार नहि केलक।

डोकीक ई अटूट दृढ़ता ओकर प्रेमक गहराइ दर्शबैत छल — रस्ताक हर प्रलोभन, हर विश्रामक अवसर त्यागि, ओ केवल एकटा लक्ष्यपर केन्द्रित रहलि: अपन डोकाकेँ पुनः पाबब।

अध्याय 5 : मूसक खिस्सा

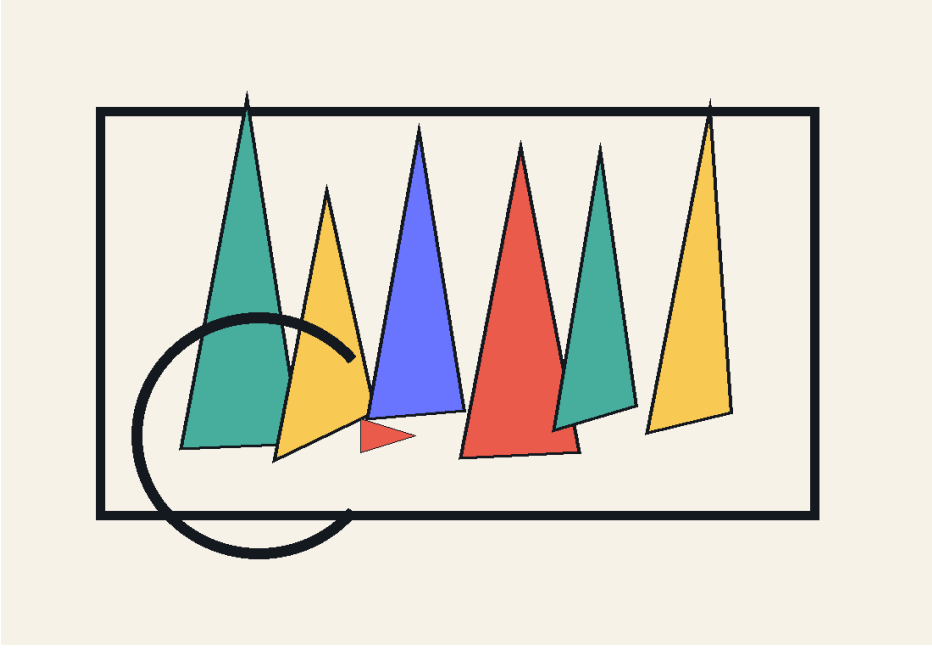

चित्र 9

अन्ततः डोकीकेँ एकटा मूस भेटल। मूस कहलक — 'हमरा संग चलू, हम अहाँकेँ महल लऽ जायब, आ खिस्सा सुनाएब — छह रातिक बाद सातम राति बीतत, आ डोका भेटत!'

डोकी आ मूस दुनू गोटे खिस्सा सुनैत-सुनबैत महल दिस बिदा भेल। मूस एकटा शर्त राखलक — 'अहाँ हँ-हँ कहैत रहब खिस्साक बीचमे, ध्यान देबाक प्रमाणस्वरूप।'

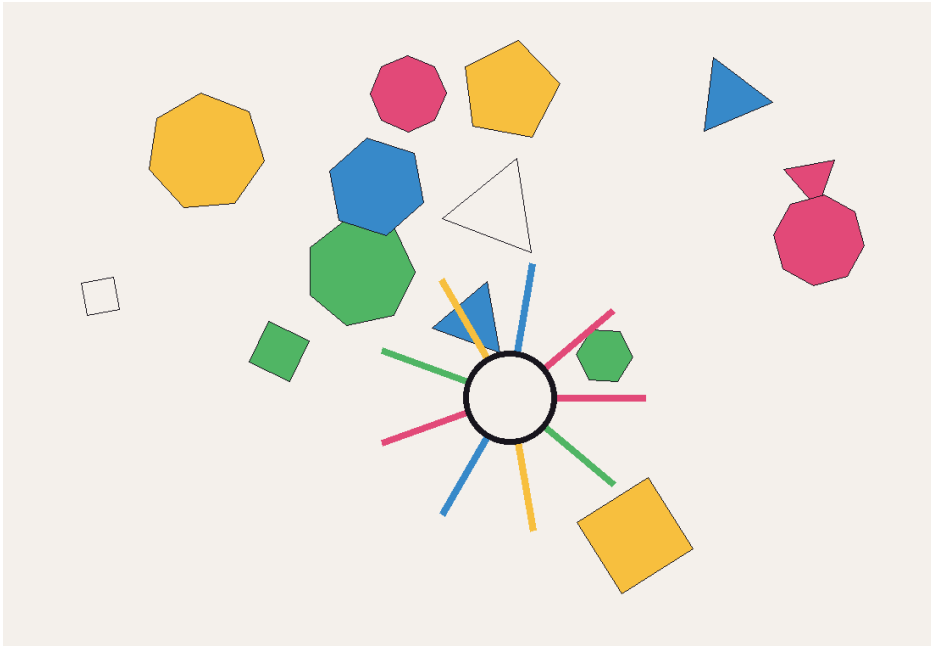

चित्र 10

मूसक खिस्सा कनेक नमगर (लम्बा) छल। लम्बाइक कारण डोकी बीचमे 'हँ' कहब बिसरि गेलि — एकाग्रताक स्वाभाविक क्षति। आ तखन मूस सेहो अपन खिस्सा बिसरि गेल!

कतबो प्रयास केलनि, दुनूकेँ मोन नहि पड़लैक जे खिस्सा कतय छूटल छल। मुदा एहि छोट असफलताक बावजूद, दुनू आगाँ बढ़ल — लक्ष्य अखनहुँ स्पष्ट छल: महल आ डोका।

अध्याय 6 : सुरंगक यात्रा

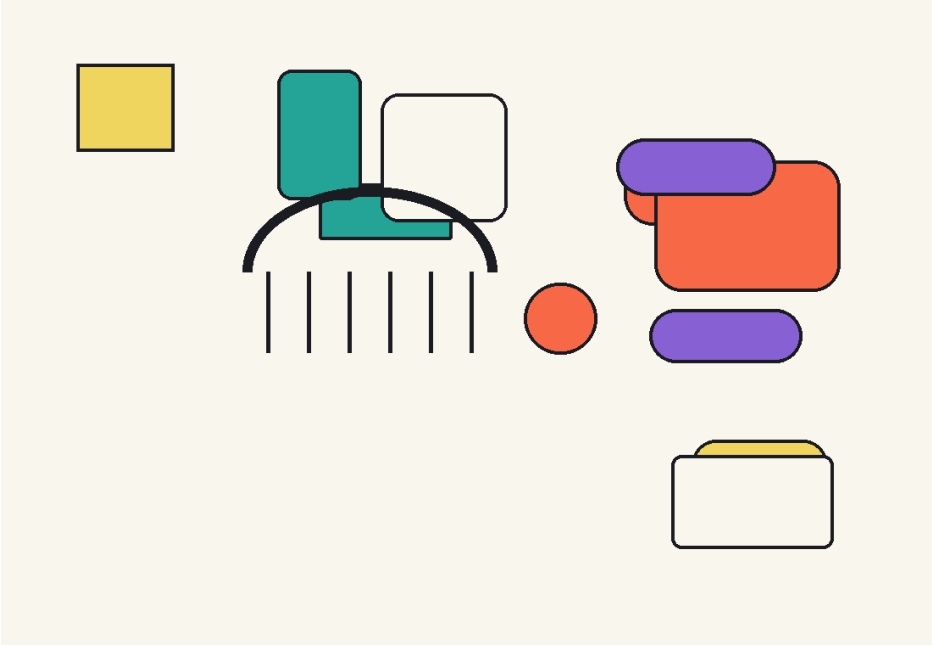

चित्र 11

एकटा दीबारि (दीवाल)मे भूर (गड्ढा/छेद) कऽ दुनू गोटे सुरंगमे प्रवेश केलनि। ई सुरंग-यात्रा लम्बी आ कठिन छल — दू राति धरि दुनू सुरंगमे चलैत रहलाह, अन्हार आ अनिश्चयक बीच।

अन्ततः महल आयल — डोकीक यात्राक गन्तव्य, जतय जोगीक भविष्यवाणी अनुसार डोका भेटबाक आशा छल। दुनू गोटे थाकल, मुदा आशान्वित छला।

चित्र 12

महलमे डोकी हलुआ (मिठाई) बनएबाक निर्णय लेलक — शायद स्वागतक तैयारी, वा भूखक शमन। ओ लोहियामे (कोनो बर्तनविशेष) सामग्री देलक, आ पानि अनबाक लेल बाहर गेल।

मुदा एहि छोट अनुपस्थितिमे एकटा दुखद घटना भेल — मूसकेँ रहल नहि गेलैक (लोभ वा भूखसँ), आ ओ लोहियामे मुँह दऽ देलक — आ मरि गेल! डोकी घुरि कऽ ई दृश्य देखलक त' ओकरा कुहड़ि (गहींर दुख/करुणा) उठल।

अध्याय 7 : सातम रातिक चमत्कार

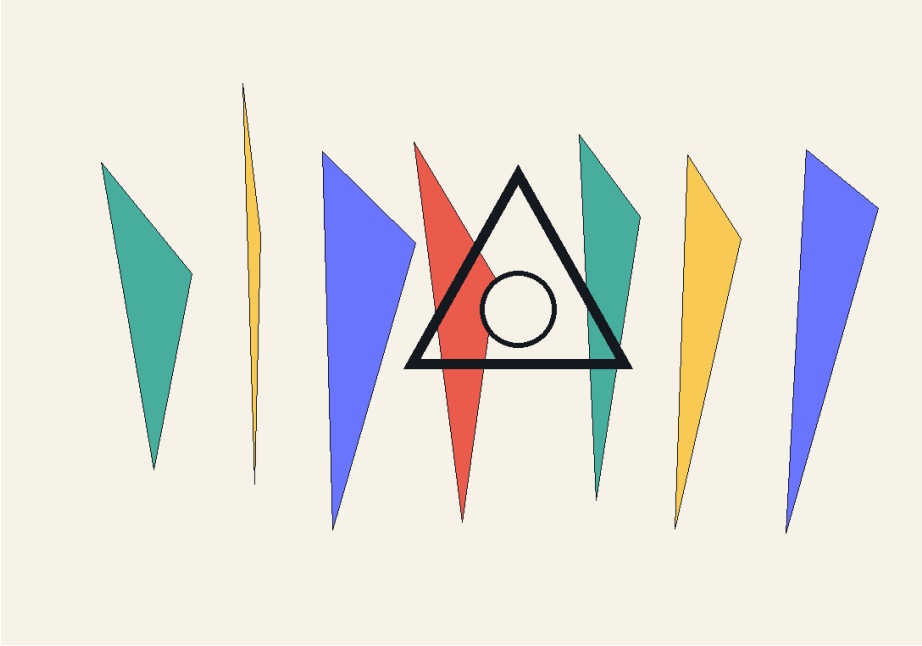

चित्र 13

डोकी शोकाकुल भऽ मूसक मृत्युपर विलाप करैत गीत गओलक — 'बगुला छोड़ल सियरबा छोड़ल, छोड़ल वटक वृक्ष, हाथी सन बलगर, पकड़ल ई मूस।' ई पंक्ति डोकीक यात्राक सम्पूर्ण संघर्षकेँ सारांशित करैत छल — केतेक प्रलोभन त्यागि, अन्ततः एकटा छोट मूसक संग रहब चुनल गेल छल, आ ओहो असमय समाप्त भऽ गेल।

गीत आगाँ बढ़ल — 'मूस भैयाक संग लेल बीतल छह राति, सातम रातिमे ओ प्राण गमेलन्हि' — मूसक बलिदान, जे डोकीक यात्रामे सहायक बनल छल, से सातम रातिमे अपन प्राण गमा देलक — जोगीक भविष्यवाणीक 'सातम राति' आब एकटा नव अर्थ लऽ आयल छल।

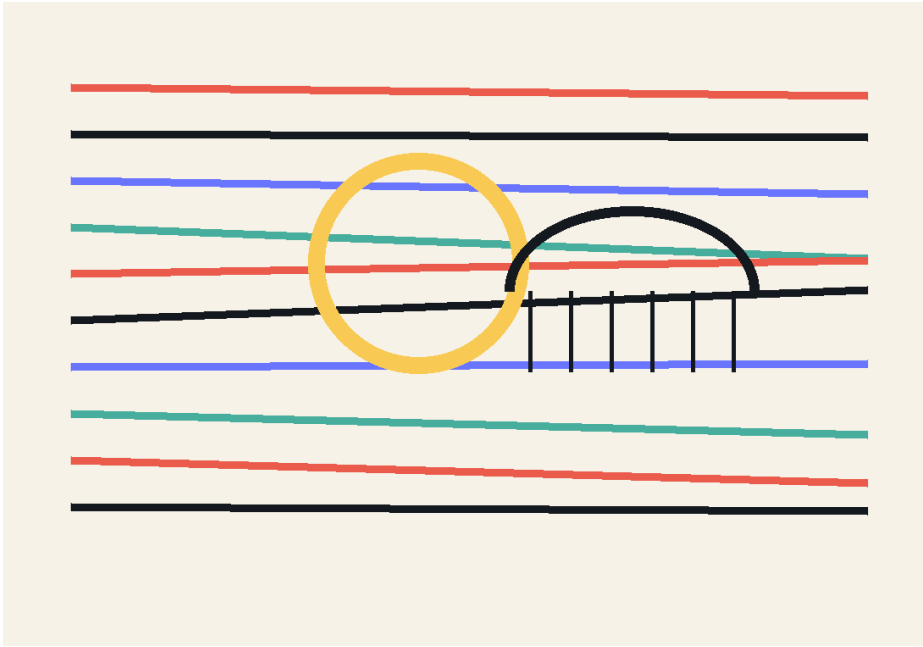

चित्र 14

डोकीक हृदय शोक आ निराशासँ भरि गेल — ओकर साँस टुटए (रुकए) लगलैक, जेना जीवनक सभटा आशा समाप्त भऽ गेल हो। ई क्षण गाथाक सभसँ अन्हार, सभसँ निराशाजनक मोड़ छल।

मुदा ठीक तखने — जखन डोकीक साँस टुटैत छल, आशाक अन्तिम किरण सेहो बुझाइत छल — दरबज्जा खुजल, आ कुरहड़ि (कुल्हाड़ी) लेने डोका हाजिर भेल! जोगीक भविष्यवाणी सत्य साबित भेल — सातम दिन, सातम राति, डोका आ डोकी अन्ततः पुनः मिलल। सभटा भटकाव, सभटा प्रलोभनक अस्वीकृति, सभटा कष्ट — अन्तमे प्रेमक विजयमे परिणत भेल।

समाप्त

VIDEHA

विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका | ISSN 2229-547X | www.videha.co.in

गोनू झा आ दस ठोप बाबा

चतुर मैथिलक ढोंगी-भेदन

गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादक, विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका (since 2000)

ISSN 2229-547X

उपक्रम : मिथिलाक सुखाड़

मिथिला राज्यमे भयंकर सुखाड़ (सूखा) पड़ल — फसिल सुखल, प्रजा त्रस्त, राज्यक चिन्ता चरमपर। राजा ढोलहो पिटबा देलनि — जे किओ एहि सुखाड़क तोड़ (उपाय) बताओत, ओकरा पुरस्कार भेटत!

ई गाथा गोनू झाक थिक — मिथिलाक प्रसिद्ध चतुर मन्त्री-सलाहकार, जिनक बुद्धिक चर्च आइयो लोककथामे जीवित अछि। ई गाथा ढोंग आ चतुराइक बीचक एकटा रोचक द्वन्द्व प्रस्तुत करैत अछि, जतय अन्ततः चतुराइ ढोंगकेँ बेनकाब कऽ दैत अछि।

अध्याय 1 : दस ठोप बाबाक आगमन

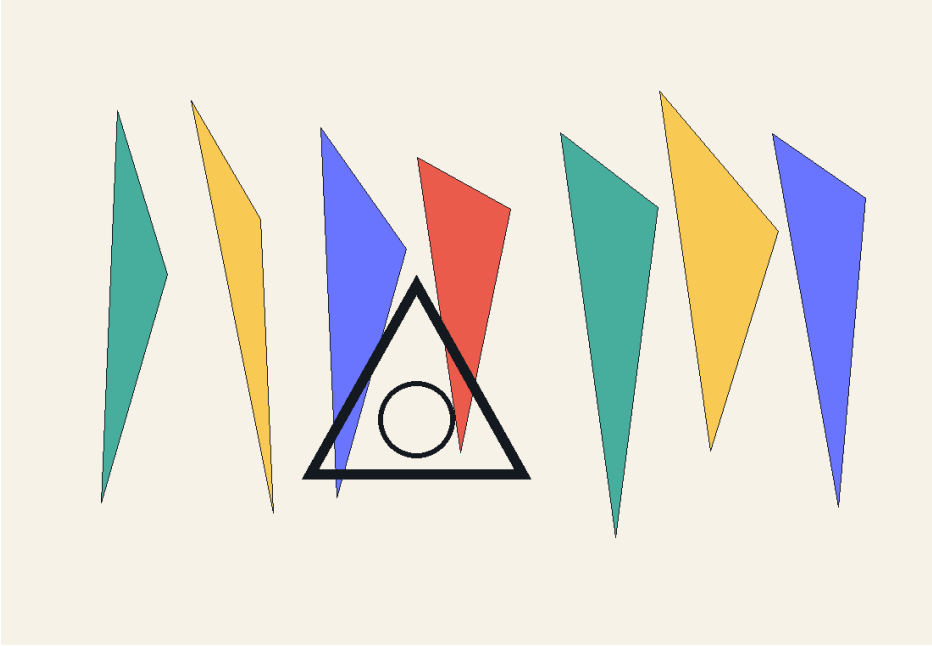

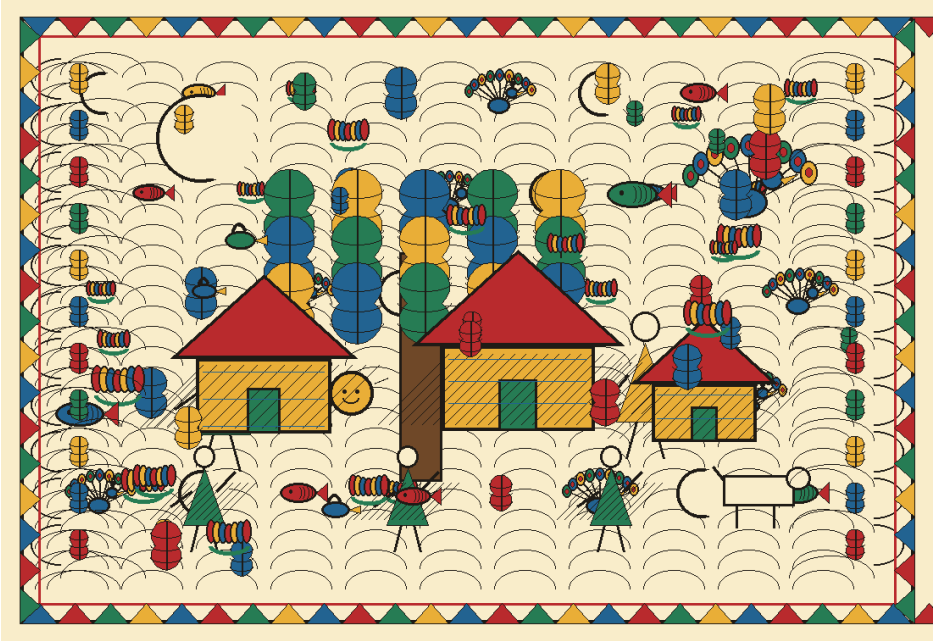

चित्र 1

राजाक घोषणाक बाद एकटा विशालकाय बाबा राजदरबारमे पधारला — शरीरपर दस टा ठोप (तिलक/चिन्ह) सजाओने, प्रभावशाली रूप-रंग। ओ दावा केलनि — 'हम सय वर्ष हिमालयमे तपस्या कएने छी, आ यज्ञसँ वर्षा करा सकैत छी!'

ई दावा राजा आ दरबारीक लेल आशाक किरण छल — एतेक विकट सुखाड़मे, एकटा एहन तपस्वीक आगमन, जे वर्षा करा सकए, अत्यन्त स्वागतयोग्य छल। राजा तुरत विश्वास कऽ लेलनि।

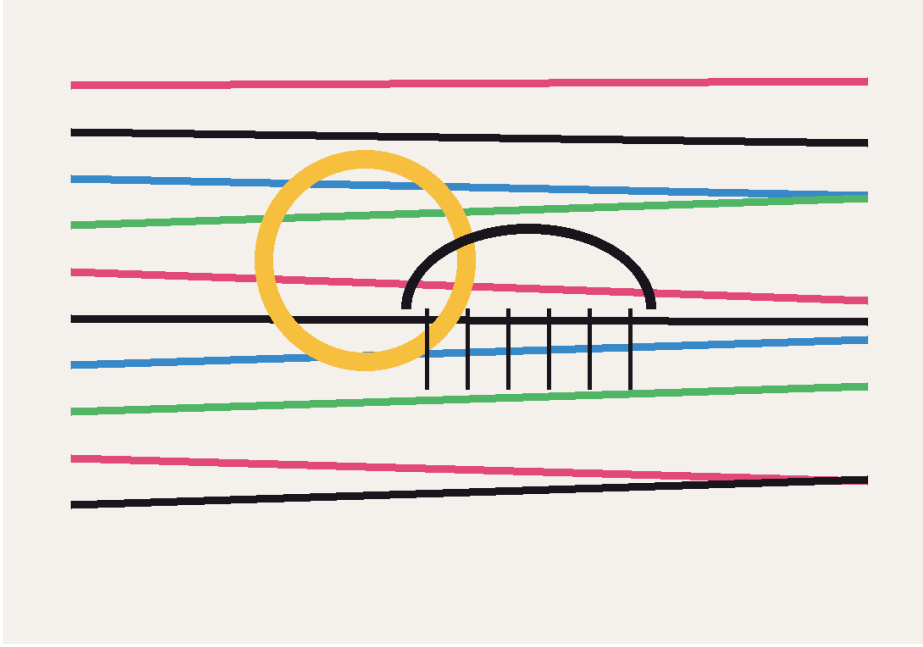

चित्र 2

साँझमे बाबाकेँ राजकीय स्थान आ आवश्यक सामग्री सभ प्रदान कऽ देल गेल — सम्मानजनक स्वागत, हुनक कथित शक्तिक प्रति श्रद्धा दर्शबैत।

ठीक ओही समय गोनू झा — मिथिलाक प्रसिद्ध चतुर सलाहकार — कतहु पहुनाइ (आतिथ्य) करबाक लेल बाहर गेल छला, तेँ ओ एहि पूरा घटनाक्रमसँ अनभिज्ञ छला।

अध्याय 2 : गोनू झाक आश्चर्य

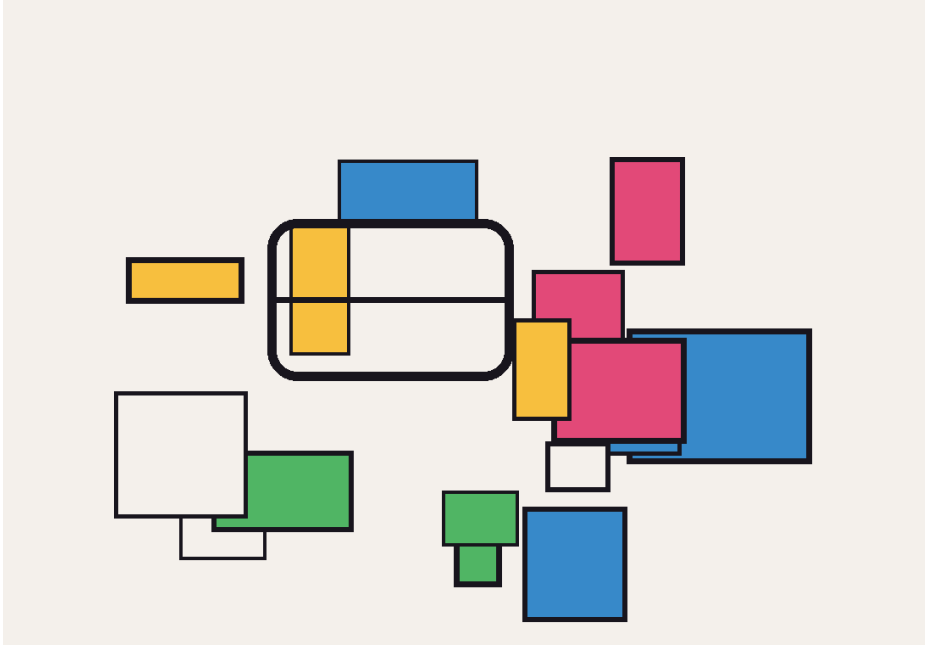

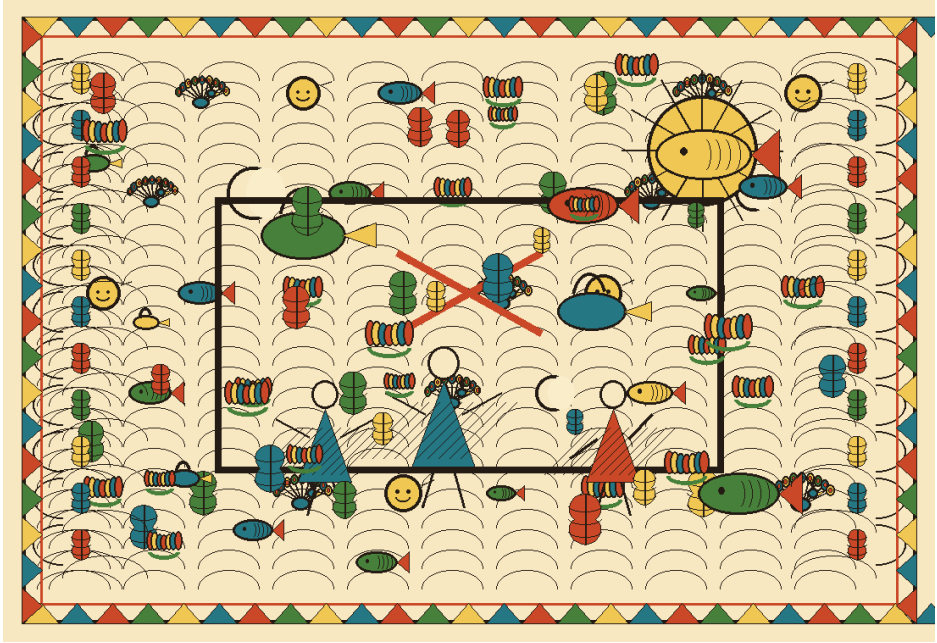

चित्र 3

जखन गोनू झा साँझमे घुरला, त' अपन कनियाँक मुँहसँ सभटा गप सुनलनि — दस ठोप बाबाक आगमन, हुनक दावा, राजाक विश्वास। ई सुनि गोनू झा आश्चर्यचकित भेला।

गोनू झाक अनुभवी बुद्धि तुरत सशंकित भऽ गेल — सय वर्षक तपस्याक दावा, यज्ञसँ वर्षाक वादा — ई सभ किछु अतिशयोक्तिपूर्ण, संदेहास्पद बुझायल। ओ एहि तथाकथित बाबाक असलियत जाँचबाक निर्णय लेलनि।

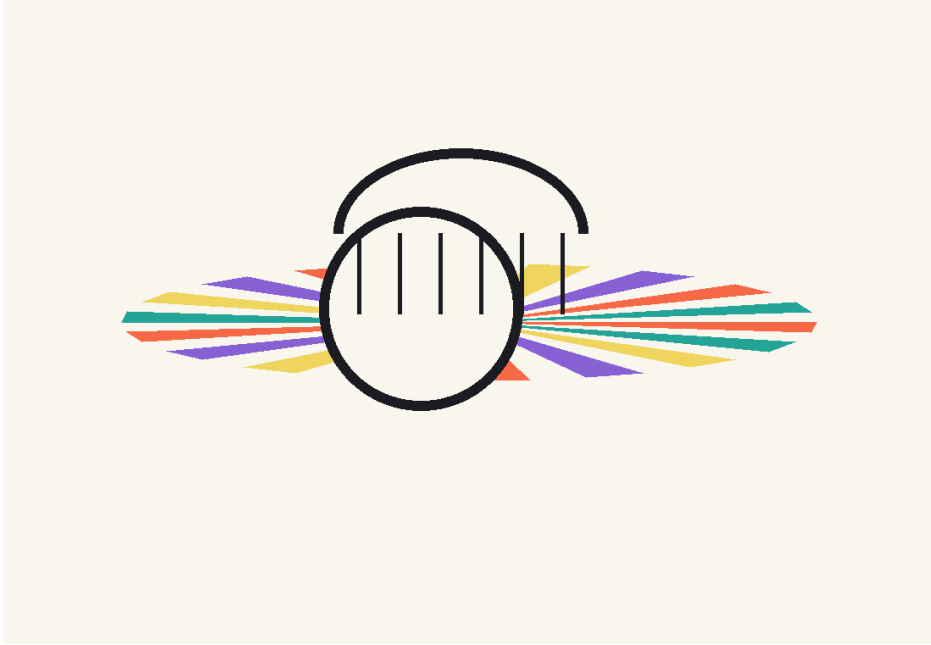

चित्र 4

गोनू झा तुरत ओहि बाबाक दर्शनार्थ बिदा भेला — बिनु कोनो पूर्वाग्रहक, मुदा पूर्ण सतर्कतासँ। हुनक उद्देश्य स्पष्ट छल — सत्यताक जाँच, आ यदि ढोंग होअए, त' राज्यकेँ ठगीसँ बचाएब।

ई निर्णय गोनू झाक चरित्रक विशेषता प्रकट करैत छल — तार्किक सोच, त्वरित निर्णय, आ राज्यक हितक प्रति गहींर निष्ठा — गुण, जे हुनका मिथिलाक इतिहासमे अमर बनओलक।

अध्याय 3 : बीस ठोप बाबाक प्रवेश

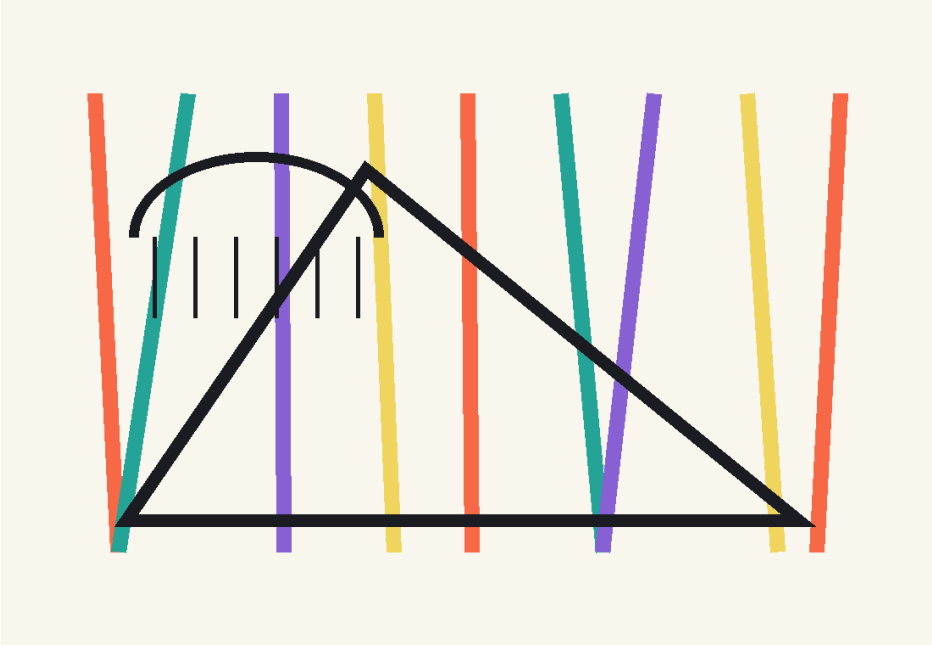

चित्र 5

मुदा एहि बीच एकटा आश्चर्यजनक घटना भेल — भोर होएसँ पहिनहि सौंसे राज्यमे सोर (हल्ला) भऽ गेल जे एकटा बीस ठोप बाबा सेहो पधारि चुकल छथि! दस ठोपसँ दुगुना ठोप — प्रतिस्पर्धाक एकटा नव आयाम।

ई नव बाबाक आगमन दस ठोप बाबाक लेल एकटा अप्रत्याशित चुनौती छल — यदि बीस ठोप, दस ठोपसँ बेसी शक्तिशाली मानल जाए, त' प्रथम बाबाक कथित श्रेष्ठताकेँ चुनौती भेटत।

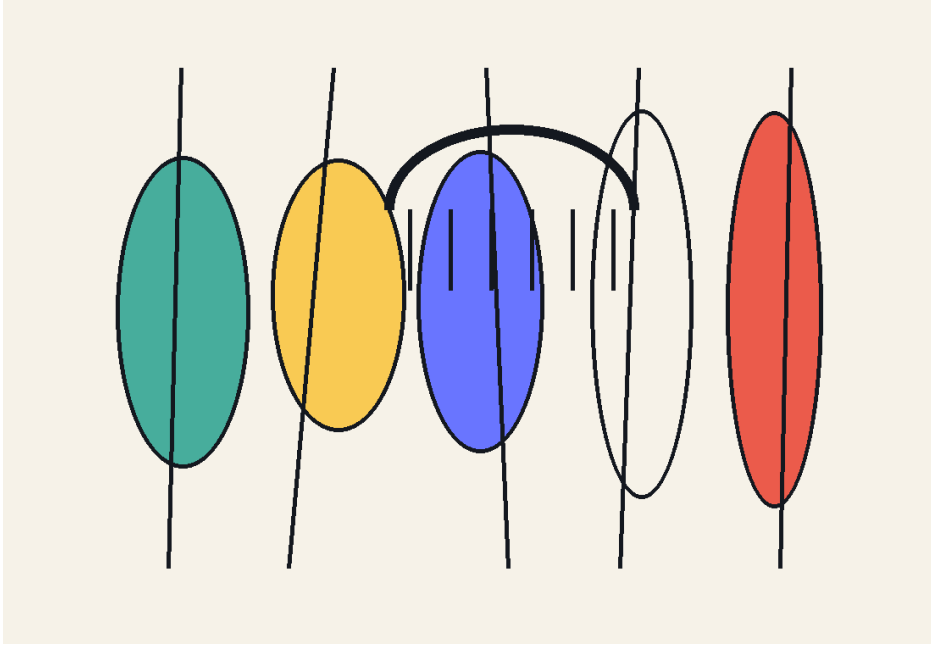

चित्र 6

ई 'बीस ठोप बाबा' असल मे गोनू झा छला — भेष बदलि, नकली दाढ़ी-मोंछ लगा, अपन असली परिचय छिपा, ओ दस ठोप बाबाक सत्यताक परीक्षा लेबाक लेल एहि रूपमे प्रकट भेला।

ई चतुर योजना गोनू झाक बुद्धिमत्ताक प्रमाण छल — सोझे आरोप लगएबाक बदला, ओ एकटा नाटकीय, परोक्ष तरीका चुनलनि, जे अन्ततः सत्यकेँ स्वयं उजागर करत।

अध्याय 4 : दुनू बाबाक भेँट

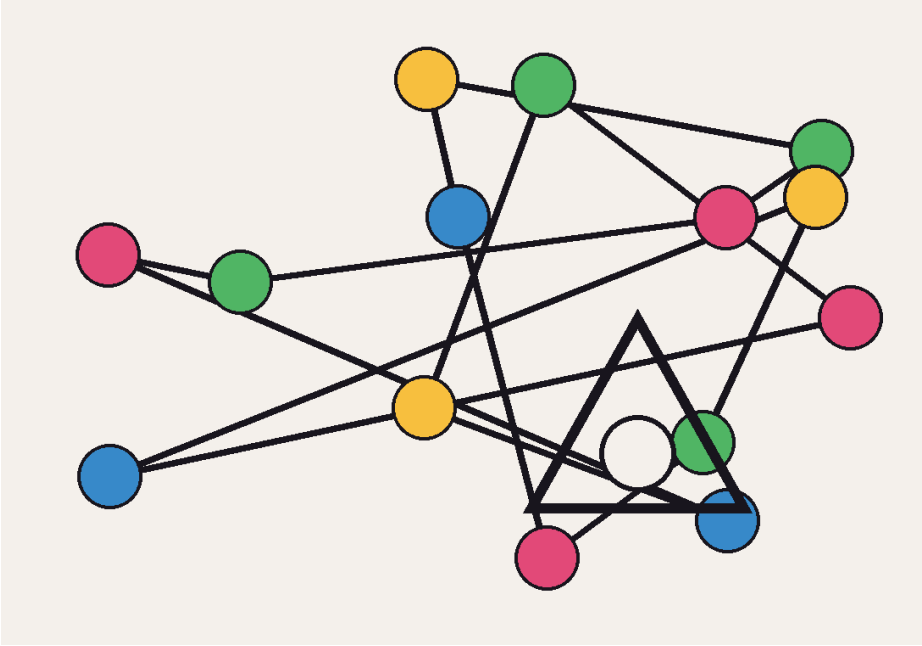

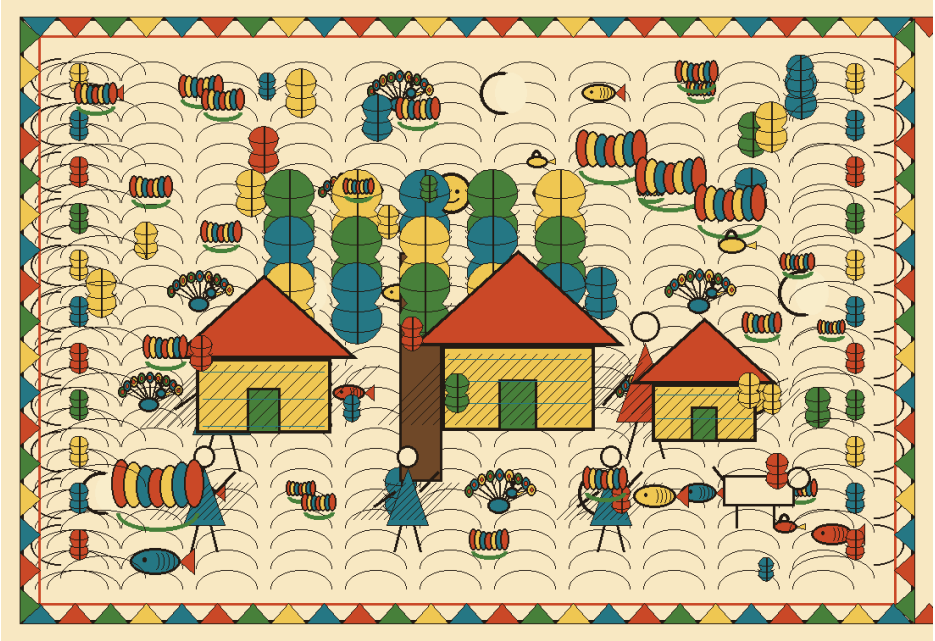

चित्र 7

दस ठोप बाबाक भेँट बीस ठोप बाबा (गोनू झा)सँ भेल। दस ठोप बाबा — अपन प्रतिष्ठाकेँ चुनौती मिलल देखि — तुरत आत्मरक्षात्मक भऽ गेला।

ओ कहलनि — 'अहाँ बीस ठोप बाबा छी, त' हम श्री श्री १०८ बीस ठोप बाबा छी!' — एकटा हास्यास्पद प्रतिस्पर्धा, जतय दुनू पक्ष अपन-अपन श्रेष्ठताक दावा कऽ रहल छला, बिनु कोनो ठोस प्रमाणक।

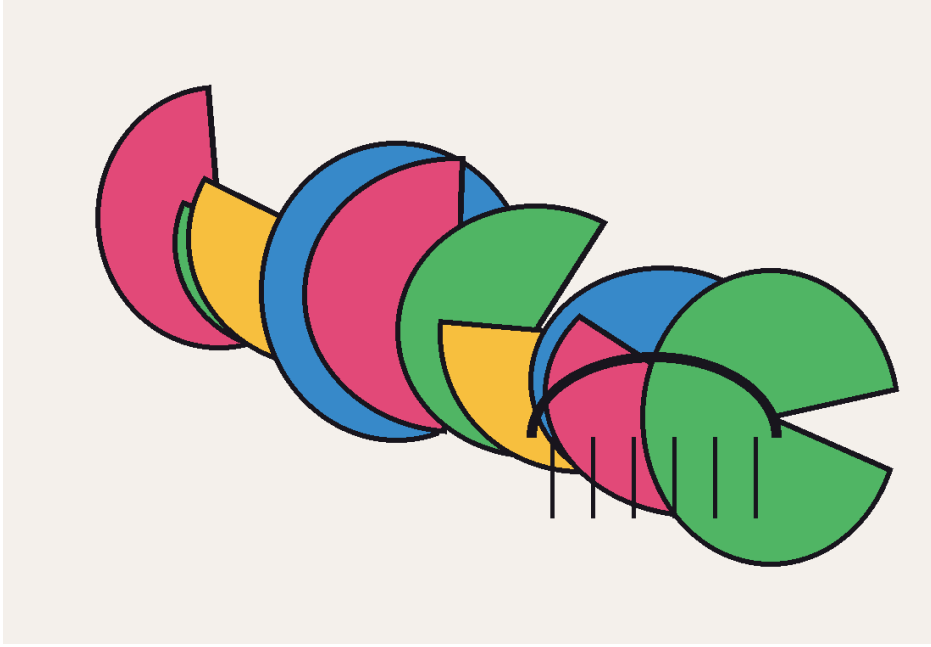

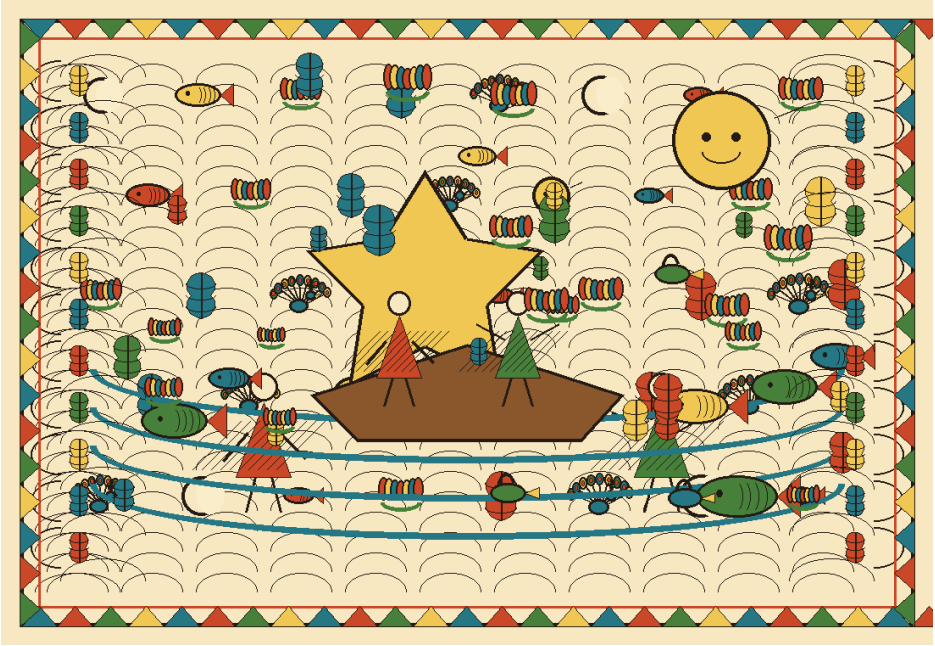

चित्र 8

गोनू झा (बीस ठोप बाबाक भेषमे) चतुराइसँ पुछलनि — 'कहू, अहाँ कोन विधिये वर्षा कराएब?' ई प्रश्न सीधा, मुदा निर्णायक छल — असली परीक्षा एतय शुरू भेल।

दस ठोप बाबा उत्तर देलनि — 'हम एकटा बाँस रखने छी, जकरासँ मेघकेँ खोँचारब, आ वर्षा होएत!' — ई उत्तर हास्यास्पद आ अवैज्ञानिक छल, स्पष्ट संकेत जे ई व्यक्ति ढोंगी छल, वास्तविक तपस्वी नहि।

अध्याय 5 : चतुर प्रश्न आ भण्डाफोड़

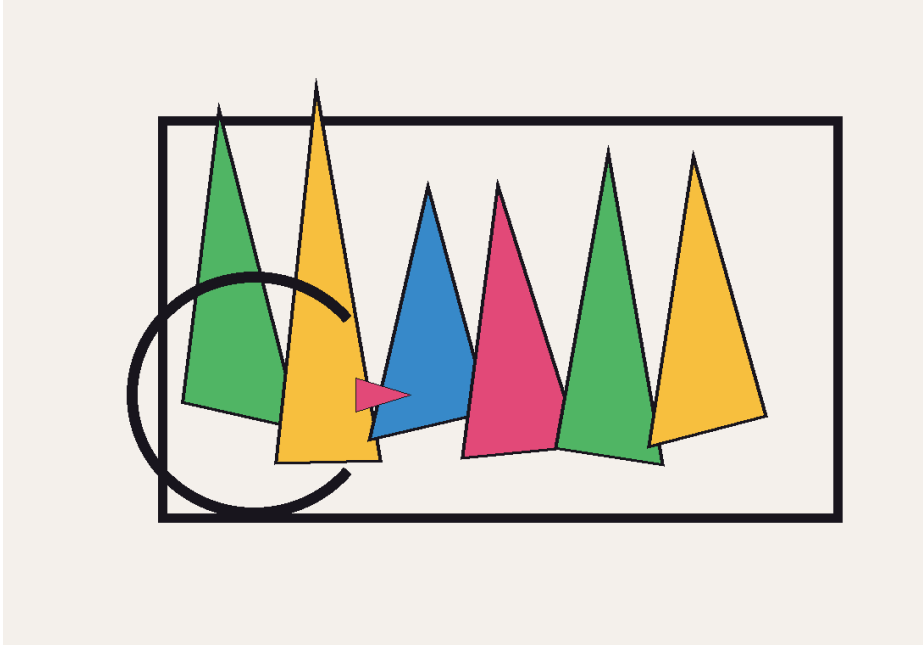

चित्र 9

गोनू झा (बीस ठोप बाबाक भेषमे) तुरत एकटा तीक्ष्ण प्रश्न पुछलनि — 'ओतेक टाक (लम्बा) बाँस राखैत छी कतय?' — ई प्रश्न दस ठोप बाबाक झूठकेँ उजागर करबाक लेल पर्याप्त छल, कारण मेघ खौँचारबाक लेल आवश्यक बाँस व्यावहारिक रूपसँ असम्भव छल।

दस ठोप बाबा एहि प्रश्नक कोनो सन्तोषजनक उत्तर नहि दऽ सकला — हुनक असलियत आब स्पष्ट होमए लागल। गोनू झा तुरत निर्णायक वार केलनि — 'अहाँ एहन ढोंगी साधुक मुँहमे!' — सीधा आरोप, बिनु कोनो लाग-लपेटक।

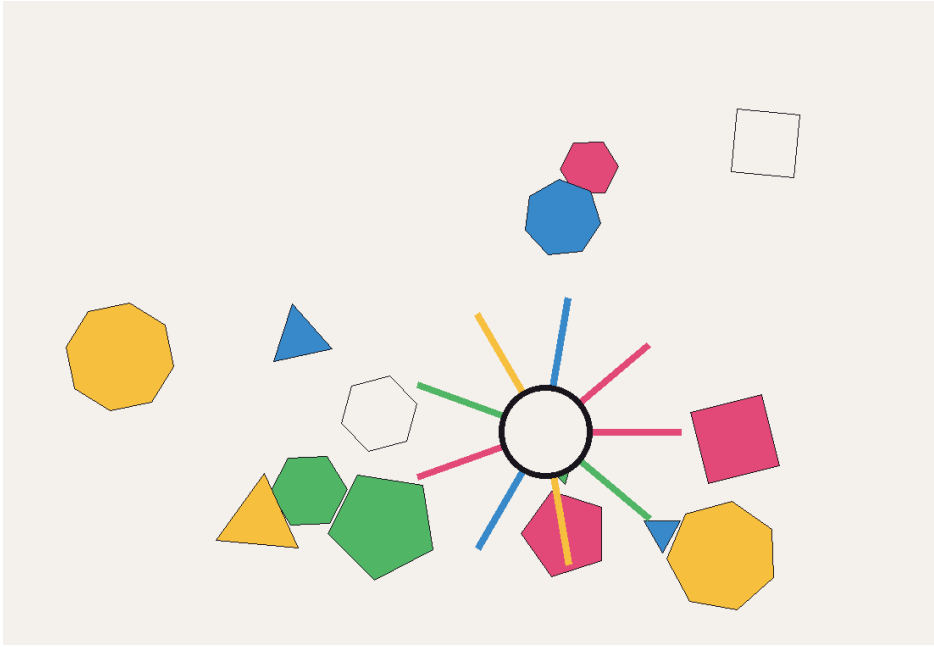

चित्र 10

ई आरोप सुनि दस ठोप बाबा घबरा गेला। ओ शौचक बहन्ना कऽ (टॉयलेट जाबाक बहाना बना) विदा भेला — पलायनक एकटा हास्यास्पद, मुदा प्रभावी युक्ति, अपन असलियत उजागर होएसँ पहिने भागबाक प्रयास।

मुदा गोनू झा सतर्क छला — ओ चिचिआयला 'औ, अपन खराम (खड़ाऊँ) आ कमण्डल त' लऽ जाऊ!' — मुदा दस ठोप बाबा त' पहिनहिये भागि रहल छला, अपन सामान छोड़ि, अपन ढोंगक अन्तिम प्रमाण पाछाँ छोड़ैत।

अध्याय 6 : नकली दाढ़ीक रहस्य

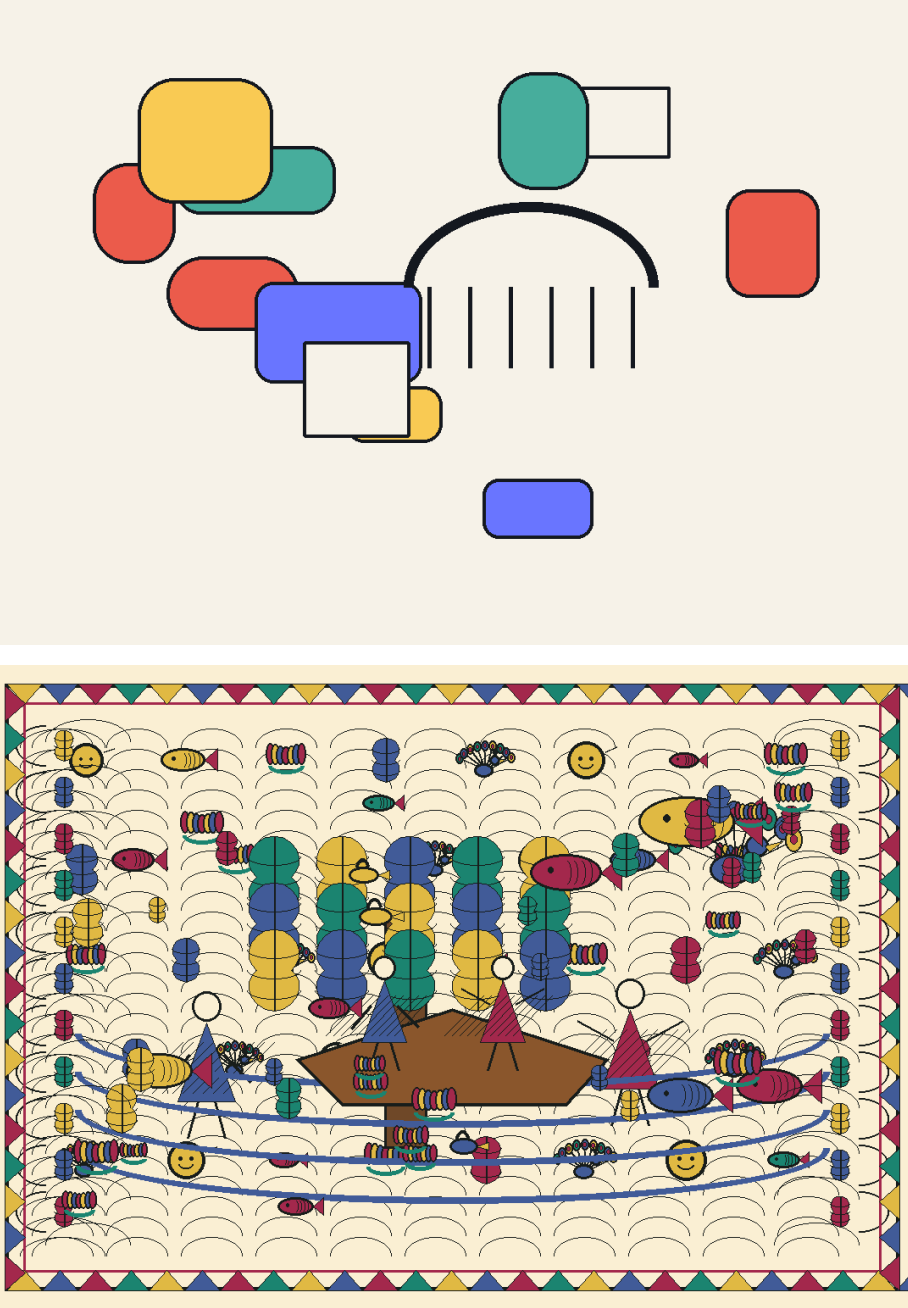

चित्र 11

लोक सभ पछोड़ (पीछा) कऽ दस ठोप बाबाक दाढ़ी पकड़ि घीचए (खींचए) चाहलक — भागैत ढोंगीकेँ रोकबाक अन्तिम प्रयास। मुदा एहि कार्यमे एकटा आश्चर्यजनक सत्य उजागर भेल!

ओ दाढ़ी नकली छल! जखने लोक ओकरा घीचलक, त' ओ पूर्णतः नोचा (उखड़ि) गेल — दस ठोप बाबाक सम्पूर्ण वेश-भूषा, तपस्वीक रूप, सभ किछु छद्म साबित भेल। ई क्षण गाथाक निर्णायक उद्घाटन छल।

चित्र 12

अपन नकली दाढ़ीक भण्डाफोड़ भेला पर, ओ ढोंगी बाबा मौका पाबि भागि गेला — पूर्णतः बेनकाब, अपन झूठक पूरा जाल उजागर भऽ चुकल छल। राज्यक साथ केल गेल छल, सत्य विजयी भेल।

तखन गोनू झा सेहो अपन नकली मोंछ-दाढ़ी हटा अपन असली रूपमे आबि गेला — रहस्योद्घाटन पूर्ण भेल! राजा हुनक चतुरताक भरपूर सम्मान केलनि — गोनू झाक बुद्धि, साहस, आ राज्यक प्रति निष्ठाक ई प्रदर्शन मिथिलाक इतिहासमे एकटा अविस्मरणीय गाथा बनि गेल, जे पीढ़ी-दर-पीढ़ी सुनाओल जाइत रहल — ढोंग आ छलकपटक विरुद्ध बुद्धिक विजयक प्रतीक।

समाप्त

VIDEHA

विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका | ISSN 2229-547X | www.videha.co.in

ज्योति पँजियार

शापसँ वरदान धरिक तांत्रिक-भक्ति गाथा

गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादक, विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका (since 2000)

ISSN 2229-547X

उपक्रम : पम्पीपुर गामक सिद्ध

पम्पीपुर गाममे रहथि ज्योति पँजियार — सिद्ध तांत्रिक, तंत्र-मंत्रक ज्ञाता, जिनकर कुलदेवता छलाह साक्षात् धर्मराज। पत्नी लखिमाक संग हुनकर जीवन सन्तुष्ट आ श्रद्धासँ भरल छल।

मुदा ई गाथा एकटा एहन परीक्षाक थिक जे भक्ति आ अहंकारक बीचक अन्तर स्पष्ट करैत अछि — एकटा क्षणिक इनकार, आ ओकरा बाद बारह बरखक कठोर तपस्या, जकर अन्तमे शाप वरदान बनि जाइत अछि।

अध्याय 1 : धर्मराजक भिक्षा

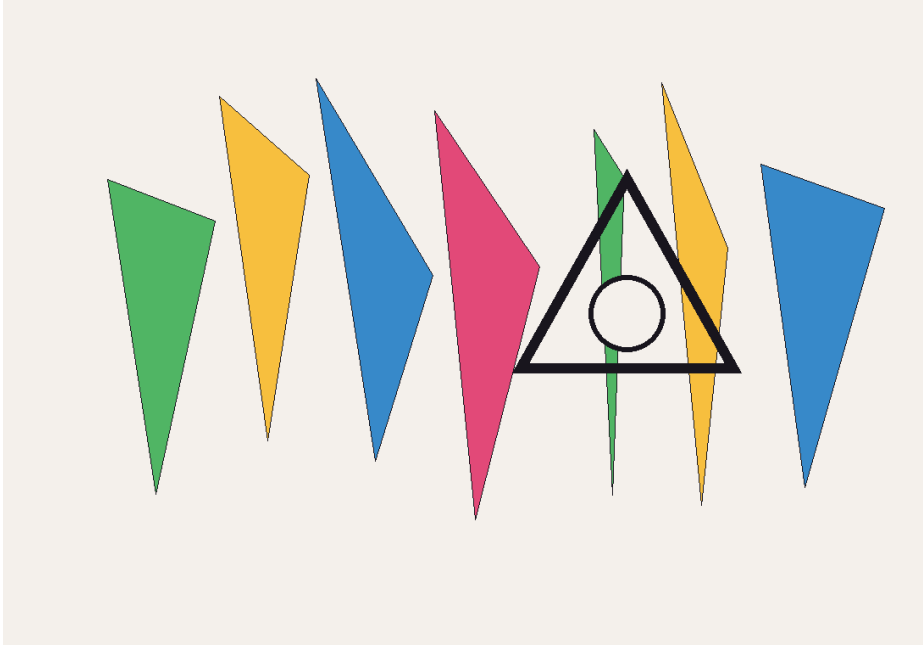

चित्र 1

ज्योति पँजियार लखिमाक संग गहबर (देवस्थान) बना रहल छलाह — श्रद्धासँ, एकाग्र मोनसँ। ओही समय एकटा साधु भिक्षाक हेतु अएलाह — मुदा ई साधु साधारण नहि छलाह, साक्षात् धर्मराज, कुलदेवता स्वयं, वेष बदलि परीक्षा लेबए आयल छलाह।

माए (लखिमा) सूपमे अन्न लऽ कऽ साधु लग गेलीह — भिक्षा देबाक लेल तैयार। मुदा साधु कहलखिन्ह — 'हम तँ भीख लेब ज्योति पँजियारक हाथेटासँ।' ई एकटा परीक्षाक क्षण छल, जकर महत्व ज्योति नहि बुझि सकलाह।

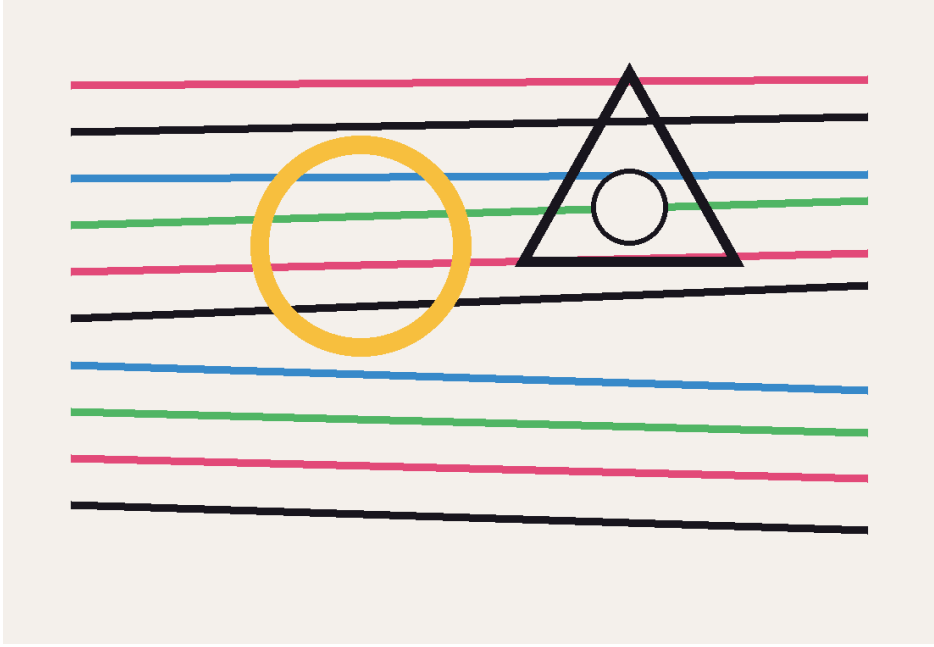

चित्र 2

ज्योति पँजियार गहबर बनएबामे मग्न छलाह, आ ओ मना कऽ देलखिन्ह — 'हम गहबर बनायब छोड़ि कऽ नहि आयब।' ई इनकार साधारण लागल, मुदा ई भक्तिक परीक्षामे असफलता छल — काज आ भक्तिक बीच ज्योति काजकेँ चुननलनि।

साधु — जे साक्षात् धर्मराज छलाह — क्रोधित भऽ शाप देलखिन्ह — 'निर्धन भऽ जयताह ज्योति पँजियार, कुष्ठ फूटि जएतन्हि हुनका!' ई शाप वज्रपात जकाँ छल, आ एकर परिणाम तुरत देखा देबए लागल।

अध्याय 2 : शापक फल

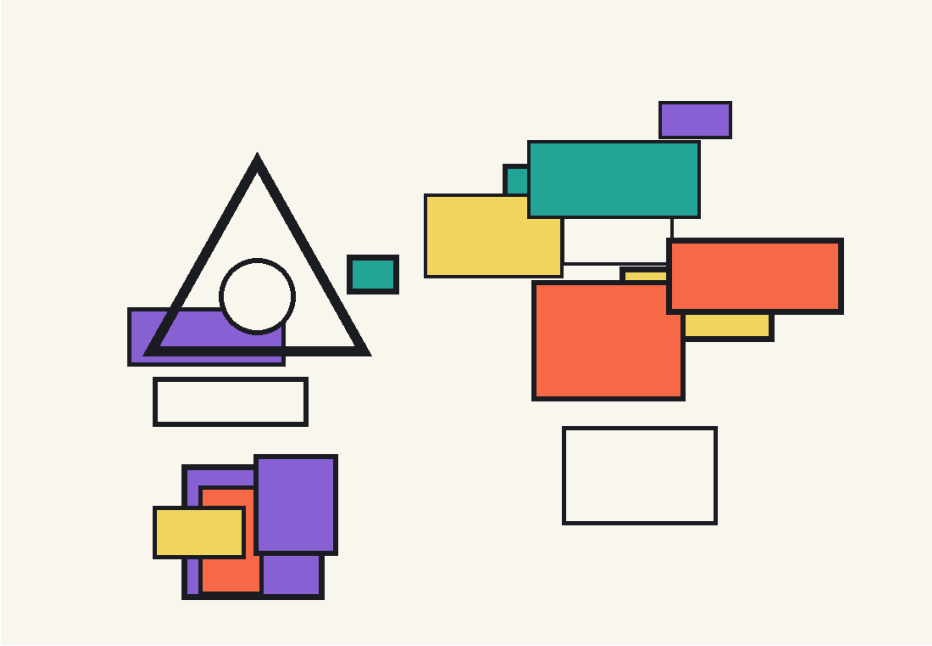

चित्र 3

आस्ते-आस्ते शाप घटित होमए लागल। ज्योति पँजियारक धन क्षीण होमए लागल, आ शरीरपर कुष्ठक चिन्ह उभरए लागल — जे सिद्ध तांत्रिक कहियो सम्मानित छलाह, से आब समाजक आँखिमे गिरए लगलाह।

निराश ज्योति अपन बहिनिक ओहिठाम शरण लेबाक लेल गेलाह — रक्तसम्बन्धमे आस्था रखैत। मुदा ओतय हुनका अवहेलना भेटलनि — बहिन आ हुनकर परिवार एहि रोगी, निर्धन भाइकेँ अपनएबामे संकोच केलनि।

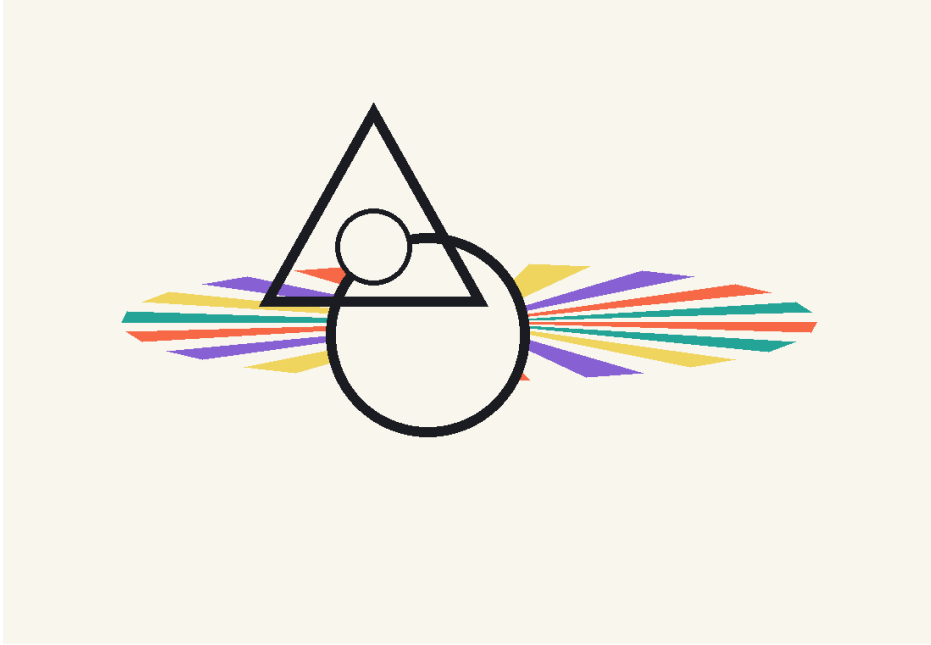

चित्र 4

ई अवहेलना ज्योति लेल शापसँ बेसी पीड़ादायक छल। जे भाइ कहियो सम्मानित सिद्ध छलाह, से आब अपनहि रक्तसम्बन्धीक द्वारपर अस्वीकृत। ज्योति ओतयसँ निकलि गेलाह, अकेल, आ आगाँक बाट अनिश्चित।

भटकैत-भटकैत ज्योति ओइटदल गाम पहुँचलाह — अपन पुरान संगी लगवारक लग। एतय हुनका किछु सान्त्वना भेटल, मुदा शापक निवारणक उपाय अखनहुँ अज्ञात छल।

अध्याय 3 : तांत्रिकक निर्देश

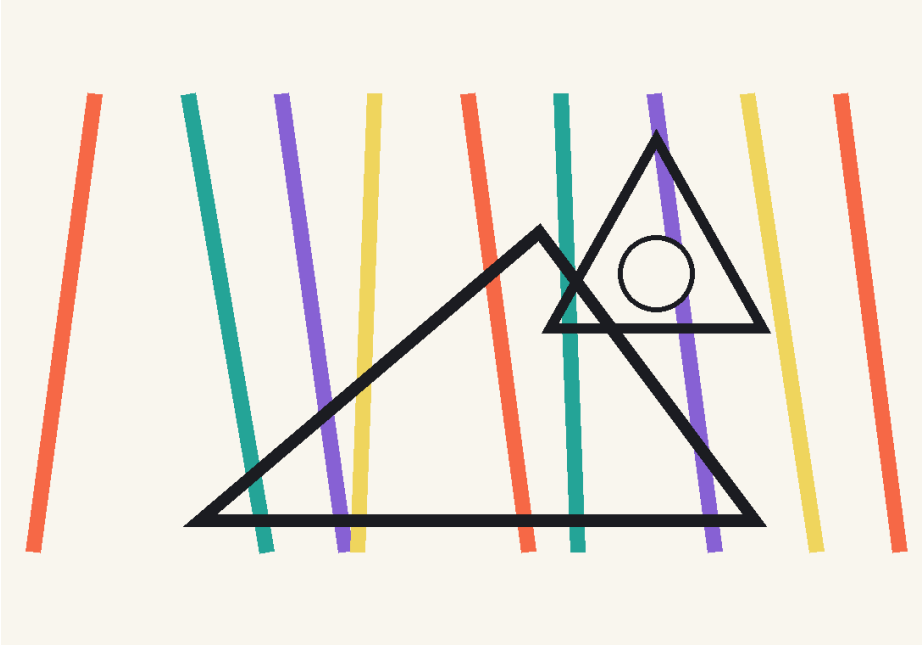

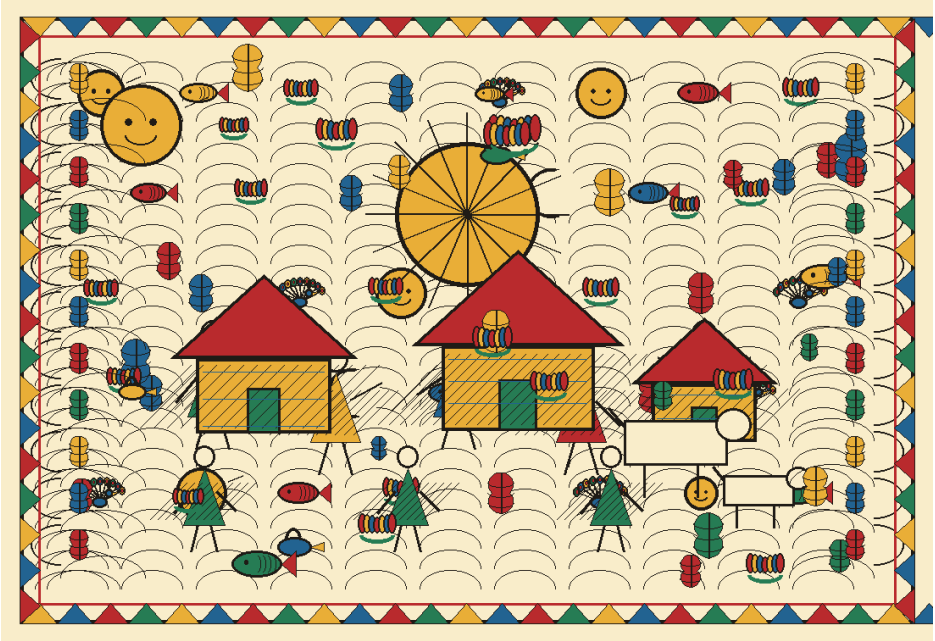

चित्र 5

ओइटदलमे एकटा तांत्रिक अएलाह, जिनक ज्ञान गहींर छल। ओ ज्योतिक हालति देखि उपाय सुझओलनि — 'बारह वर्ष धरि कदलीवनमे रहए पड़त। धर्मराजक आराधना करए पड़त, गहबर बनाए करची (काष्ठ) रोपी ओतए। बाँसक घर बनाऊ धर्मराजक हेतु।'

'धर्मराज दर्शन देताह, अहाँ ठीक भऽ जाएब' — तांत्रिकक ई वचन आशाक एकमात्र किरण छल ज्योति लेल। कुष्ठसँ ग्रस्त, निर्धन, अस्वीकृत — मुदा एहि वचनमे विश्वास राखि ज्योति बारह बरखक कठोर तपस्याक लेल तैयार भेलाह।

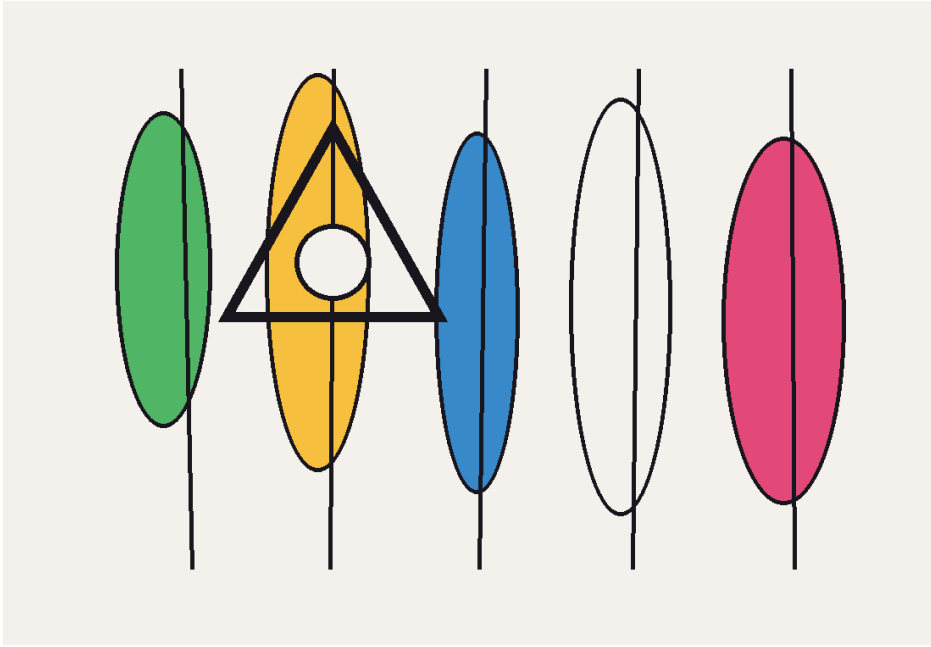

चित्र 6

ई तपस्या साधारण नहि छल — बारह बरख, कदलीवन (केराक बोन) जकाँ दुर्गम स्थानमे, अकेल, रोगग्रस्त शरीरसँ। मुदा ज्योतिक भीतर आब ओ अहंकार नहि छल जे पहिल इनकारक कारण बनल छल — केवल विनम्र समर्पण छल।

ज्योति पँजियार कदलीवन दिस बिदा भेलाह — शापक बोझ नेने, मुदा वरदानक आसमे। रस्ता लम्बा आ कष्टकर छल, आ एहि रस्तापरे हुनक असली परीक्षा शुरू भेल।

अध्याय 4 : सैनी गाछक बलिदान

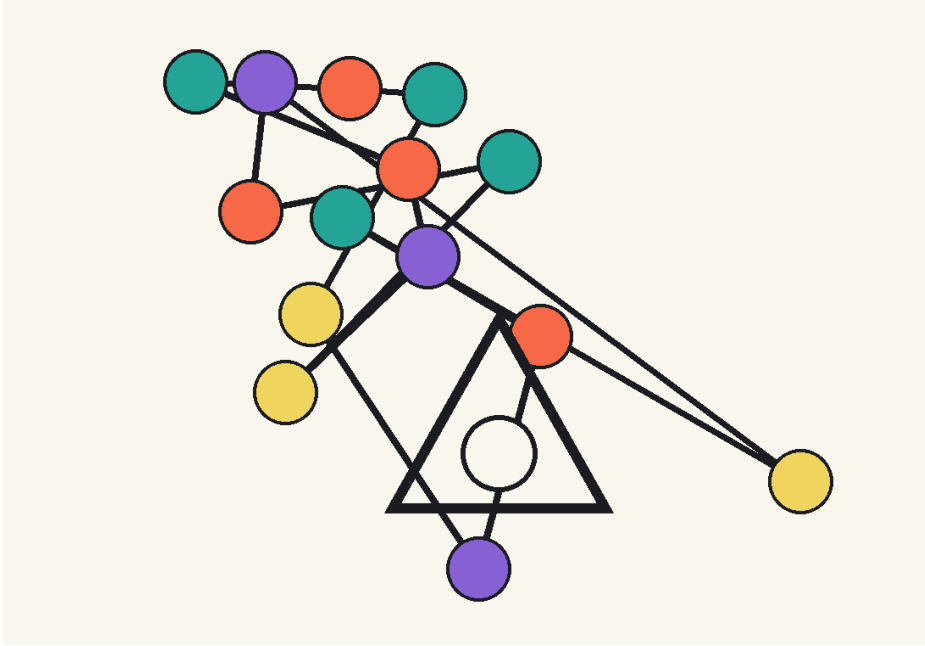

चित्र 7

रस्तामे एकटा सैनी गाछ भेटलनि — छायादार, विशाल। ज्योति थाकल शरीरसँ ओकर छाहमे सुस्तेलाह — किछु क्षणक विश्राम, जकर आवश्यकता हुनक कमजोर देहकेँ छल।

मुदा ई विश्राम गाछक लेल घातक साबित भेल। ज्योतिक शापित उपस्थितिक प्रभाव — वा कोनो अज्ञात कारण — ओ गाछ सुखा गेल, अरड़ा (सूखल आवाज करैत) कऽ खसि पड़ल।

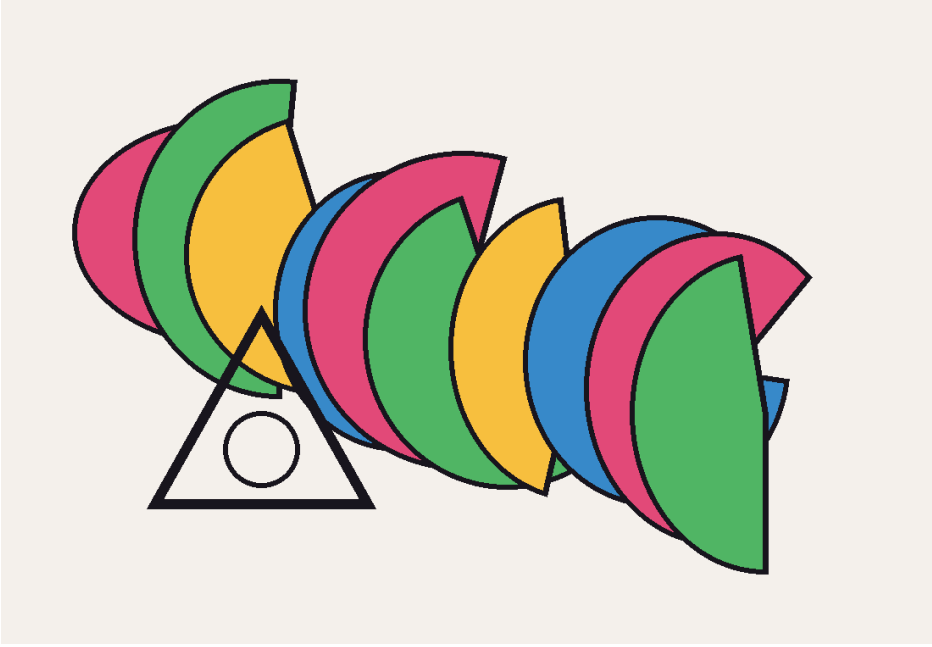

चित्र 8

ज्योति एहि दृश्यसँ स्तब्ध रहि गेलाह। जे गाछ हुनका छाहर देलक, से हुनक कारणे नष्ट भऽ गेल — शापक प्रभाव खाली हुनके देह धरि सीमित नहि छल, ओकर परछाँही जतय पड़ैत छल, ओतय दुख आबि जाइत छल।

ई घटना ज्योतिक करेजमे गहींर पीड़ा छोड़ि गेल। ओ आगाँ बढ़लाह, मुदा आब हर डेगमे एकटा सतर्कता छल — कतहु आर किओ हुनक शापसँ आहत नहि होअए।

अध्याय 5 : कोइलीक बलिदान

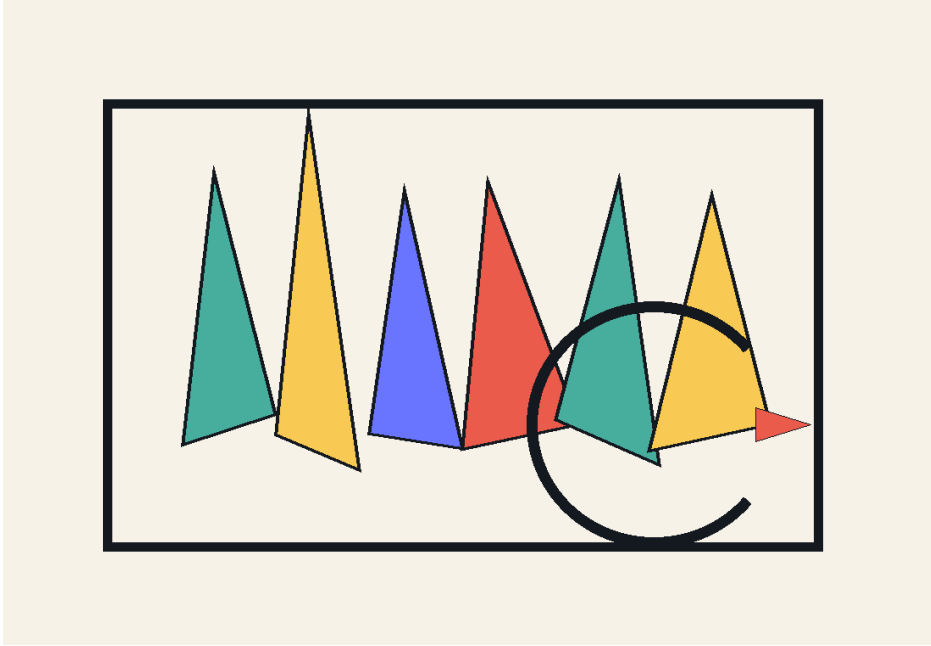

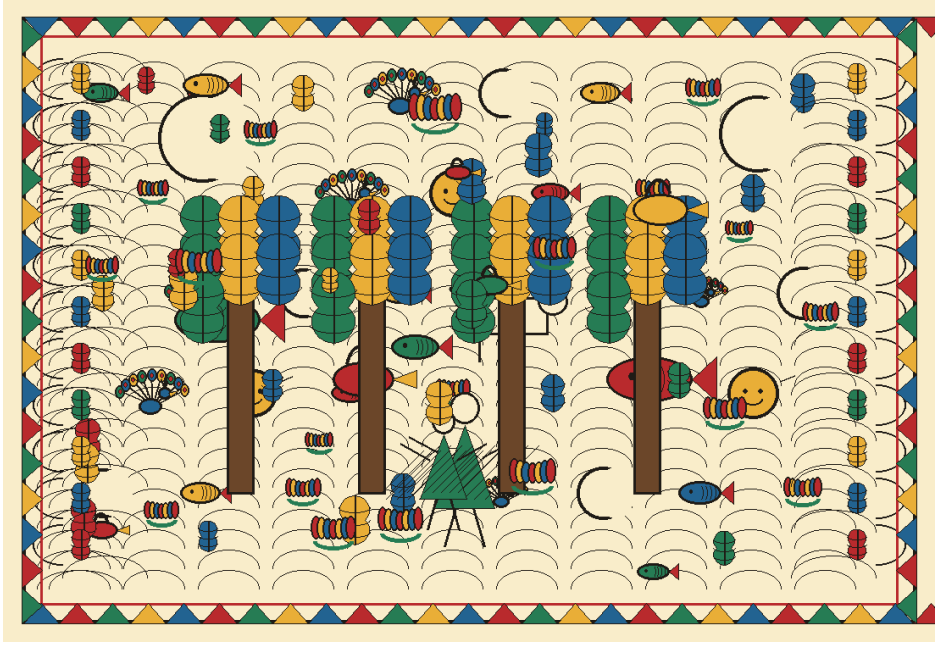

चित्र 9

आगाँ बढ़ैत ज्योतिकेँ पियास लागल। हुनका लग एकटा कोइली छलनि — शायद संगी वा सेवामे तैनात। ज्योति कोइलीकेँ पानि आनबाक लेल कहलनि।

कोइली आज्ञाकारी भऽ उड़ल — मुदा तखने बिहाड़ (आँधी-तूफान) आबि गेल। प्रकृतिक ई प्रकोप — शायद शापक विस्तारित प्रभाव — कोइलीक छोट देहकेँ झेलए नहि देलक।

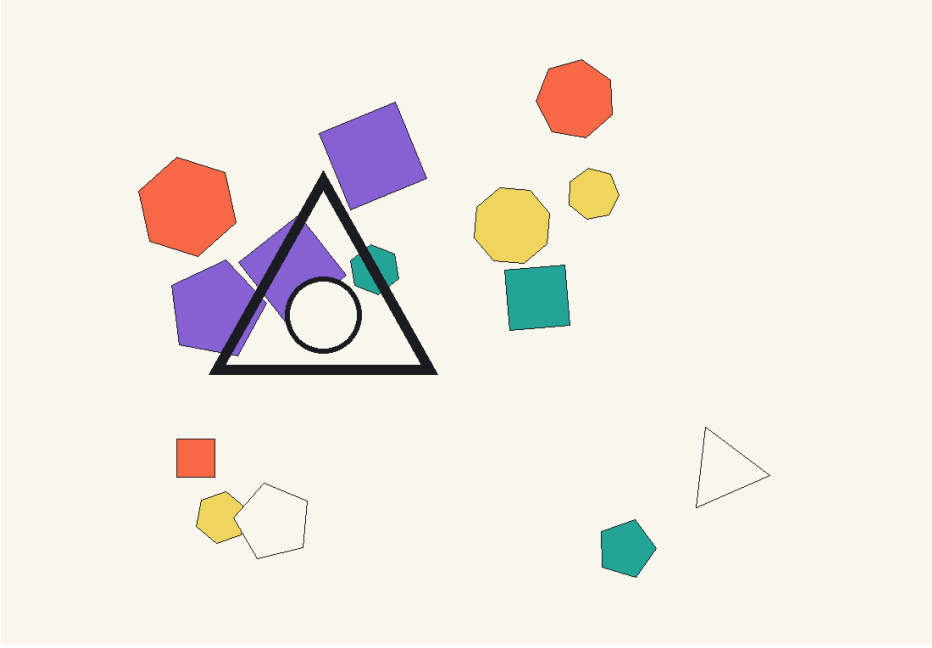

चित्र 10

कोइली मरि गेल — ज्योतिक सेवामे प्राण गमाकऽ। ई दोसर बलिदान छल एहि यात्रामे, आ ज्योतिक हृदय एहि क्षतिसँ आरो भारी भऽ गेल। सैनी गाछ, आब कोइली — शापक छाया जतय पड़ैत छल, ओतय विनाश होइत छल।

मुदा ज्योति रुकलाह नहि। दुखसँ भरल हृदयसँ, आगाँ बढ़बाक अतिरिक्त कोनो विकल्प नहि छल। तपस्याक अन्तिम लक्ष्य — कदलीवन — अखनहुँ दूर छल।

अध्याय 6 : कदलीवन धरिक यात्रा

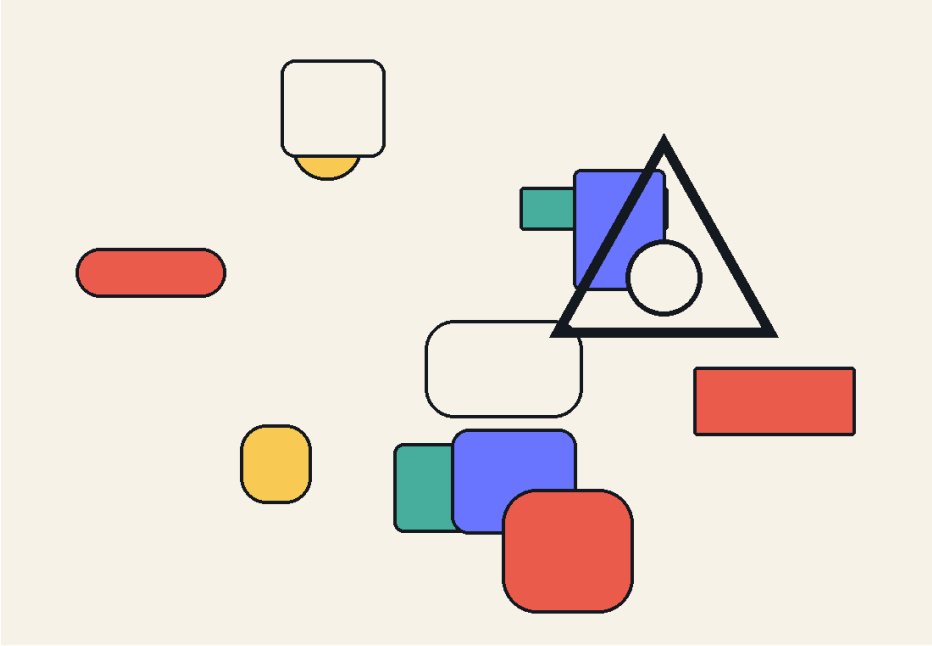

चित्र 11

ज्योति उड़ि कऽ (कोनो तांत्रिक शक्तिसँ, वा दीर्घ यात्राक रूपक) कदलीवन पहुँचि गेलाह। ओतय एकटा महिसबार (भैंस चरओनिहार) भेटलनि, जे कहलकनि — 'अछमितपुर गाम जाऊ।'

ई महिसबार असल मे धर्मराज छलाह — भेष बदलि, फेर एक बेर ज्योतिक परीक्षा वा मार्गदर्शन करैत। जे देवता एक बेर शाप देने छलाह, से आब सूक्ष्म रूपमे मार्ग देखा रहल छलाह।

चित्र 12

आगाँ बढ़ला पर ज्योतिकेँ एकटा व्यक्ति भेटलनि — ओहो कोनो दिव्य रूप छल, जे कहलकनि — 'आगू वरक गाछ भेटत, ओकर पात तोड़ू। ओहिपर अहाँक सभ प्रश्नक उत्तर रहत।' ई कहि ओ व्यक्ति परबा (कबूतर) बनि गेल — देवताक लीला स्पष्ट होमए लागल छल।

ज्योति वरक (बरगदक) पात तोड़लनि — ओहिपर लिखल छल: 'यैह छी अछमितपुर।' गन्तव्य आब स्पष्ट छल — ओतुक्का राजाकेँ बच्चा नहि छलनि, आ ई तथ्य आगाँक कथाक केन्द्र बनल।

अध्याय 7 : छागरक वरदान

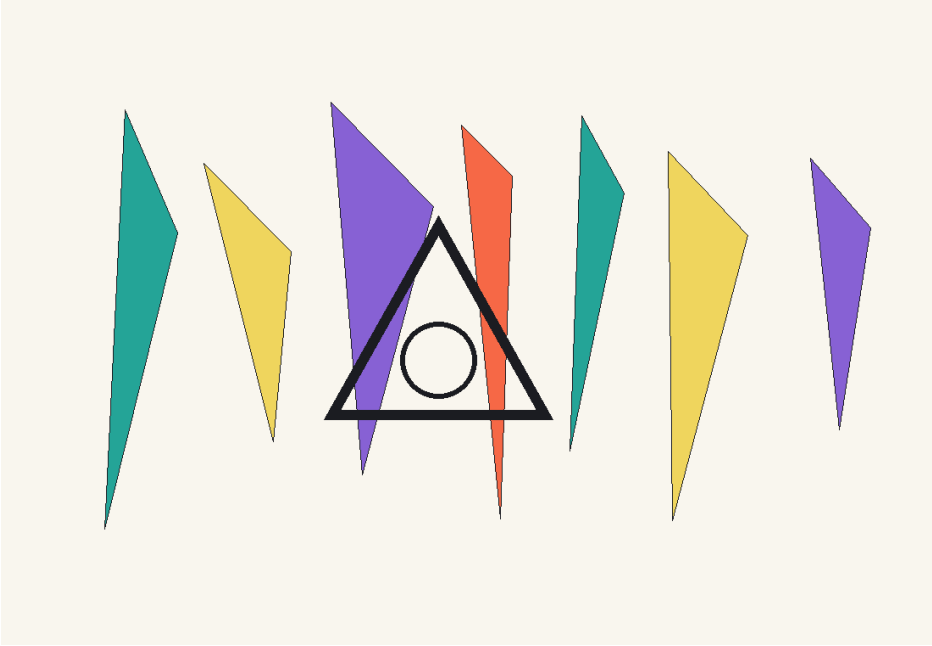

चित्र 13

अछमितपुर पहुँचि ज्योति राजाकेँ आशीर्वाद देलनि — निःसन्तान राजाक पीड़ा हुनका अपनहि दुखक स्मरण करओलक। ज्योति कहलनि — 'एकटा छागर ओहि दिन पोसब, जाहि दिन गर्भ ठहरि जाए। हम कदली वनसँ आएब त' ई छागर स्वयं खुट्टासँ खुजि जाएत।'

ई वरदान अद्भुत छल — छागरक मुक्ति आ राजाक सन्तान-प्राप्ति एक्कहि सूत्रमे बान्हल। राजाक विश्वास ज्योतिक वचनपर दृढ़ भेल, आ ओ आदेशानुसार छागर पोसलनि।

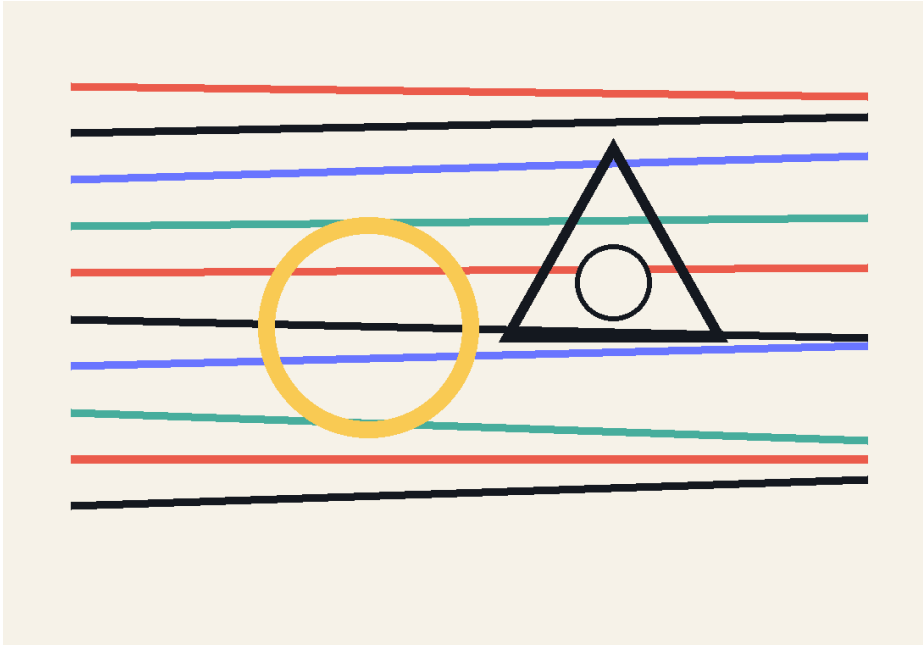

चित्र 14

ज्योति फेर कदलीवन घुरि गेलाह — अपन बारह बरखक तपस्या पूर्ण करबाक लेल। गहबर बनओलनि, करची रोपलनि, बाँसक घर बनओलनि धर्मराजक हेतु — तांत्रिकक निर्देशानुसार, बिनु कोनो शिथिलताक।

बारह बरख — दीर्घ, कष्टकर, मुदा अटूट श्रद्धासँ भरल। ज्योति एहि अवधिमे न शिकायत केलनि, न धैर्य छोड़लनि। ई तपस्या हुनक पहिल इनकारक प्रायश्चित्त छल — आ अन्ततः धर्मराज प्रसन्न भेलाह।

अध्याय 8 : बारह बरख पूर्ण

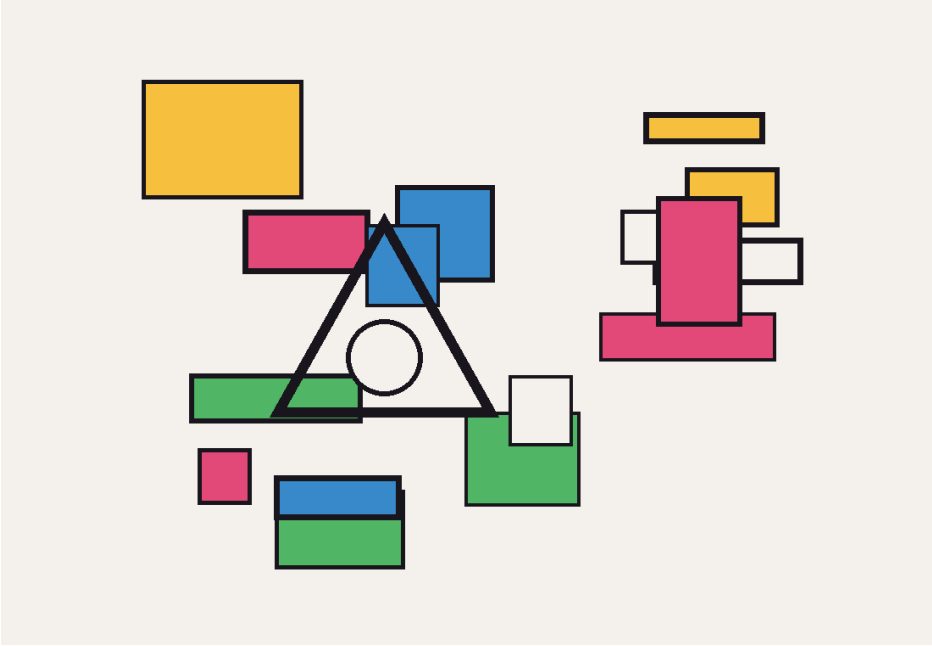

चित्र 15

बारह बरखक अन्तमे ज्योति पँजियार कदलीवनसँ बिदा भेलाह — शापमुक्त, वरदानसँ आशीर्वादित। हुनक तपस्याक फल आब प्रकट होमए लागल — चमत्कारिक रूपेँ।

जे कोइली सेवामे प्राण गमौने छलि, ज्योति ओकरा जीवित कऽ देलनि — मृत्युसँ पुनर्जीवन, तपस्याक शक्तिक प्रमाण। जे धार सुखा गेल छल, ओहिमे फेर पानि आबि गेल — प्रकृतिक पुनर्जीवन।

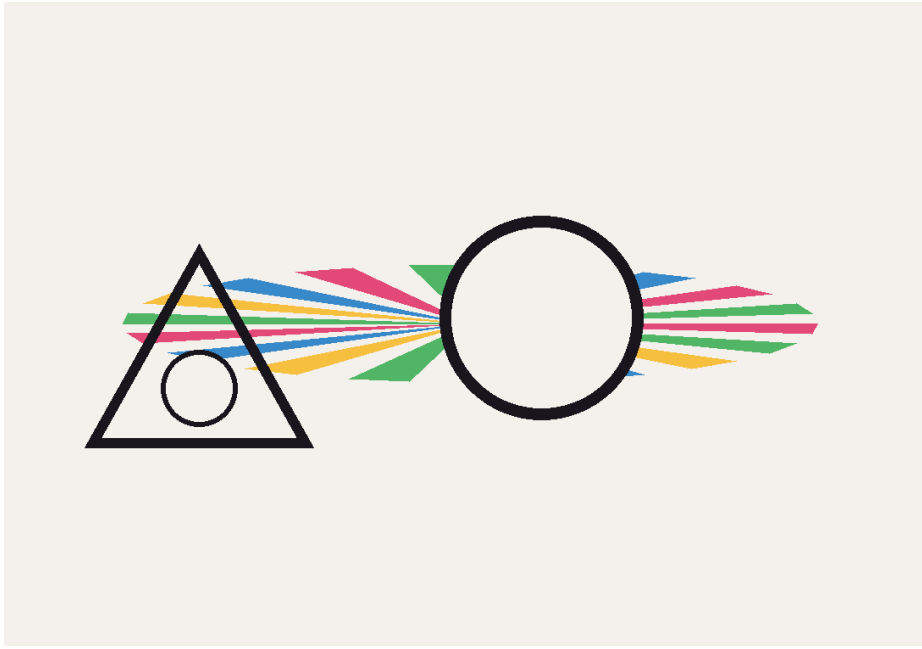

चित्र 16

सैनी गाछ, जे शापक कारण खसि गेल छल, फेर हरियर कचोर भऽ जीबि उठल — जतय एक दिन विनाश छल, ओतय आब जीवन पुनः पल्लवित भेल। ज्योतिक शापसँ जे नुकसान भेल छल, से सभटा हुनक वरदानसँ ठीक भऽ गेल।

ई पुनर्जीवनक श्रृंखला ज्योतिक आध्यात्मिक विजयक प्रतीक छल — शाप जे विनाश आनने छल, वरदान ओकरा पूर्ण रूपेँ मेटा देलक। भक्ति आ तपस्याक ई शक्ति असाधारण छल।

अध्याय 9 : अछमितपुरक चमत्कार

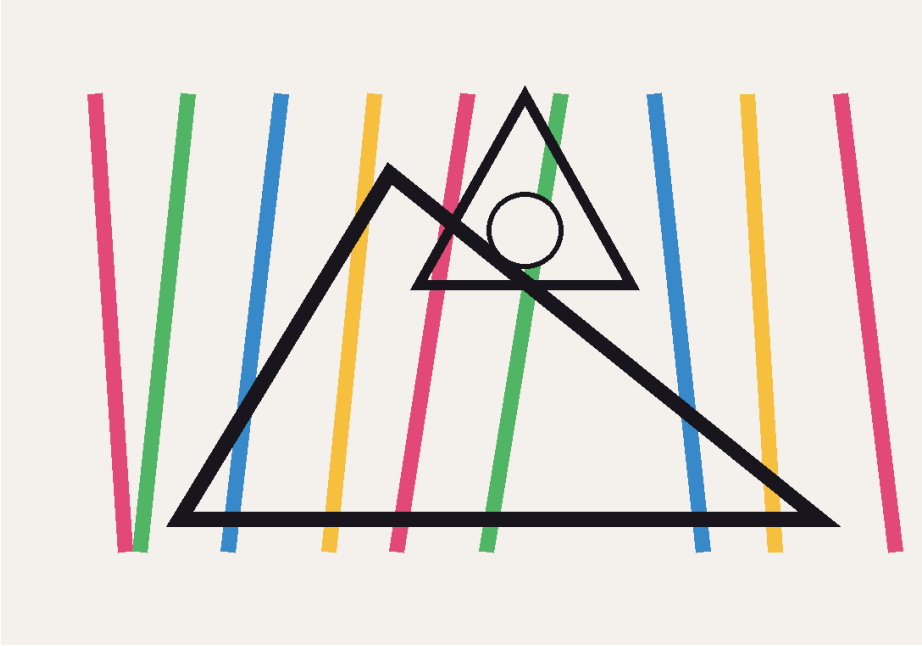

चित्र 17

अछमितपुर गाममे राजा एकटा दुखद समाचार कहलनि — 'छागर आ पुत्र दुनू एकहि दिन मरि गेल।' राजाक हर्ष, जे सन्तान-प्राप्तिसँ जागल छल, से एहि दुखद घटनासँ शोकमे बदलि गेल।

मुदा ज्योति पँजियार — आब पूर्ण शक्तिसम्पन्न, शापमुक्त — पाठा (छागरक बच्चा)केँ जिया देलनि। ई पहिल चमत्कार छल, मुदा असली रहस्य आगाँ छल।

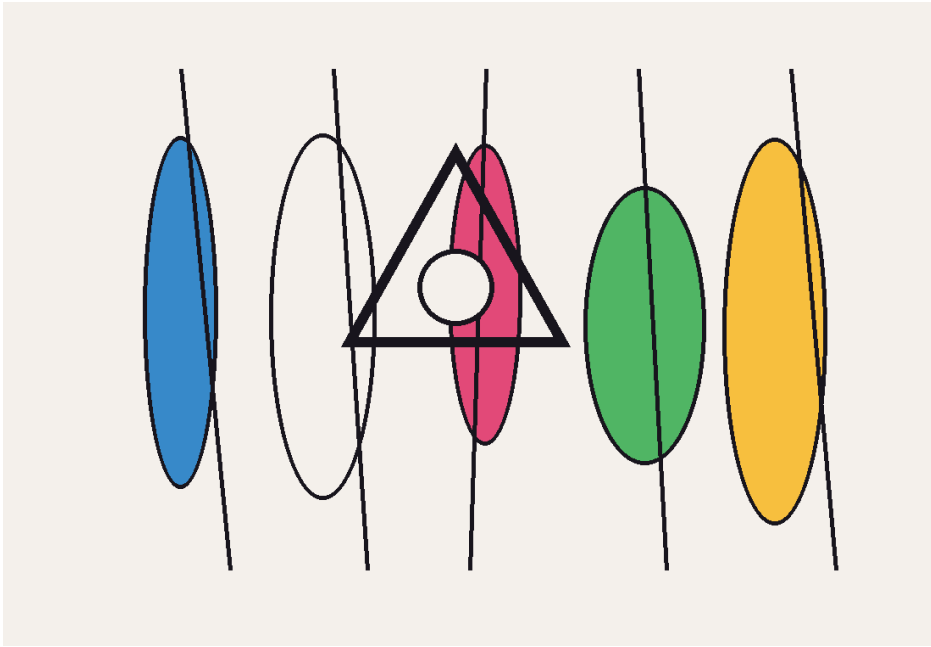

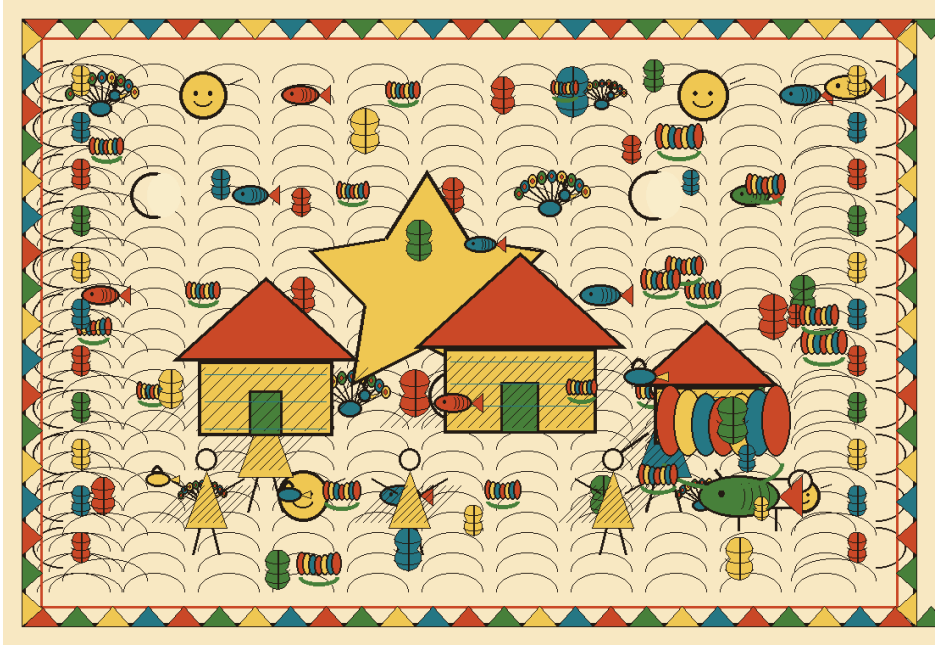

चित्र 18

ज्योति पाठाकेँ कहलनि — 'जो, तोँ कदलीवनक धारमे नाओ (नाव)पर चढ़ि जो, मनुक्ख रूप भेटि जएतौक।' ई आदेश रहस्यमय छल, मुदा ज्योतिक शब्दक शक्तिपर विश्वास राखि पाठा आज्ञापालन केलक।

तावत राजाक पुत्र सेहो कदलीवनसँ शिकार खेला कऽ घोड़ापर चढ़ि घुरि आयल — जीवित, स्वस्थ! ई रहस्य स्पष्ट भेल — छागर आ पुत्रक आत्मा किसिम-किसिम रूपमे परस्पर जुड़ल छल, आ ज्योतिक तपस्या दुनूकेँ पुनर्जीवन देलक। ज्योति पँजियार अपन गाम पम्पीपुर घुरि गेलाह — गमछामे गहबर लेने, विनम्र मुदा शापमुक्त, सिद्ध — पहिलेसँ बेसी महान भक्ति आ तपस्याक साक्षी बनि कऽ।

समाप्त

VIDEHA

विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका | ISSN 2229-547X | www.videha.co.in

कौवा आ फुद्दी

शृंखला-कथाक दुखान्त — लोभक अन्तिम मूल्य

गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादक, विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका (since 2000)

ISSN 2229-547X

उपक्रम : भजार-सखी

एकटा कौआ आ एकटा फुद्दी (एकटा छोट चिड़ै) — दुनूक बीच भजार-सखीक (गहींर मित्रताक) सम्बन्ध छल। ई गाथा मित्रताक परीक्षा, धूर्तताक चालि, आ अन्ततः एकटा शृंखलाबद्ध खोजक थिक, जकर अन्त अप्रत्याशित आ करुण भेल।

ई एहन कथाक शैलीक थिक जतय एकटा माँग दोसर माँगकेँ जन्म दैत अछि, आ ओ फेर तेसरकेँ — शृंखला बनैत चलि जाइत अछि, जाधरि अन्तमे एकटा एहन मोड़ नहि आबए, जे सम्पूर्ण यात्राकेँ एक्कहि क्षणमे समाप्त कऽ देत।

अध्याय 1 : दुर्भिक्षक विपत्ति

चित्र 1

कौआ आ फुद्दी — दुनू गहींर मित्र, भजार-सखी। हुनक मित्रता एतेक प्रगाढ़ छल जे सुख-दुख दुनूमे ओ एक-दोसराक संग रहैत छला।

एक बेर भयंकर दुर्भिक्ष पड़ल। खेनाइक अभाव एहन विकट भेल जे कौआ आ फुद्दी दुनू गोटे अपन-अपन बच्चाकेँ खएबाक निर्णय केलनि — भूखक ई चरम विवशता कल्पनातीत छल, मुदा दुर्भिक्षक क्रूरता एतेक गहींर छल।

चित्र 2

पहिने कौआक बेर आयल। फुद्दी आ कौआ दुनू मिलि कऽ कौआ-बच्चाकेँ खा गेल — ई निर्णय करुण छल, मुदा दुनू मित्र एक-दोसराक साथ एहि विपत्तिमे सेहो छल।

आब फुद्दीक बेर आयल — मुदा फुद्दी त' होइते अछि धूर्त! ओकरा अपन बच्चा प्रिय छल, आ ओ एकटा योजना बनओलक, जे कौआकेँ लम्बा समयक लेल टारि सकए।

अध्याय 2 : शुद्धिकरणक बहन्ना

चित्र 3

फुद्दी कौआकेँ कहलक — 'अहाँ त' अखाद्य पदार्थ खाइत छी। हमर बच्चा अशुद्ध भऽ जायत। से अहाँ गंगाजीमे मुँह धोबि कऽ आबि जाऊ।' ई बहन्ना चतुराइपूर्ण छल — शुद्धताक नामपर कौआकेँ दूर भेजब।

कौआ — सरल स्वभावक, फुद्दीक चालिसँ अनजान — ई बात मानि लेलक। ओ उड़ैत-उड़ैत गंगाजी लग पहुँचल, अपन काज पूर्ण करबाक उत्साहमे।

चित्र 4

गंगाजी लग पहुँचि कौआ प्रार्थना केलक — 'हे गंगा माय, दिए पानि, धोबि कए ठोढ़, खाइ फुद्दीक बच्चा।' ई सरल याचना कौआक निष्कपट स्वभाव दर्शबैत छल।

मुदा गंगा माय सोझे पानि नहि देलनि — ओ कहलनि, 'चुक्का (पात्र) आनू, तखने पानि देब।' ई प्रथम शर्त छल, जे कौआकेँ एकटा नव यात्रापर पठौलक — शृंखलाक आरम्भ।

अध्याय 3 : कुम्हार आ माटिक खोज

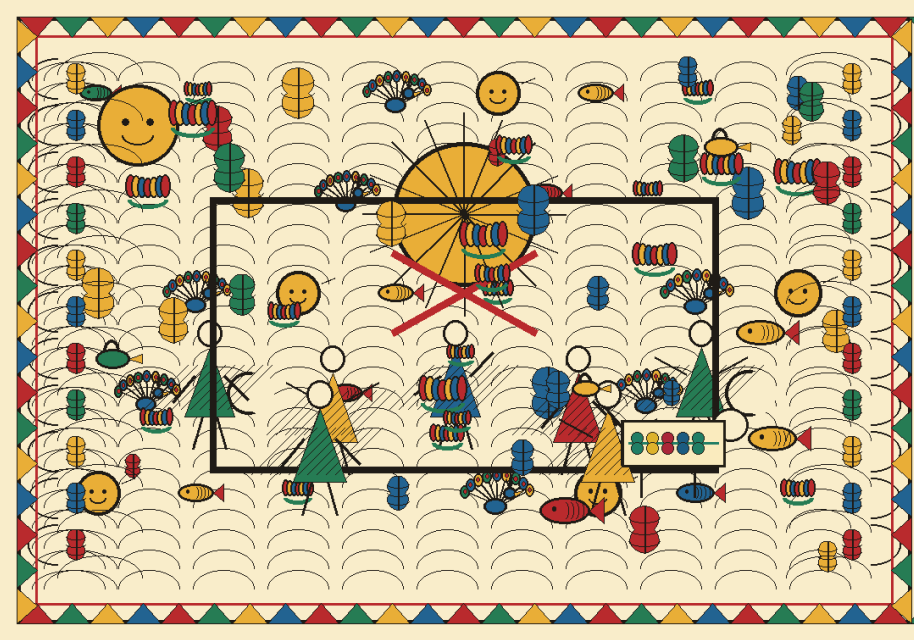

चित्र 5

कौआ चुक्का अनबाक लेल कुम्हार लग गेल। मुदा कुम्हार महाराज सोझे चुक्का नहि देलनि — ओ कहलनि, 'माटि आनू, तखने चुक्का बनाएब।' दोसर शर्त, दोसर यात्रा।

कौआ खेतपर माटिक लेल गेल। खेतक मालिक कहलक, 'माटि खोदबाक लेल हिरणिक सिंघ (सींग) आनू।' — ई माँग विचित्र, मुदा शृंखला आगाँ बढ़ैत गेल, प्रत्येक चरण नव खोजक जन्म दैत।

चित्र 6

कौआ हिरण लग गेल, सिंघक माँग करैत। हिरण कहलक — 'सिंहकेँ बजा कऽ आनू, जाहिसँ ओ हमरा मारि कऽ अहाँकेँ हमर सिंघ दऽ देमए!' — ई शर्त सभसँ विचित्र आ भयावह छल, कारण हिरण स्वयं अपन मृत्युक बात कहि रहल छल।

ई शृंखला अब जीवन-मृत्युक चक्रमे प्रवेश कऽ चुकल छल — प्रत्येक प्राणी अपन आवश्यकताक पूर्तिक लेल दोसर प्राणीक बलिदान वा सहयोग माँगि रहल छल, कौआ बिनु रुकल एहि जटिल जालमे आगाँ बढ़ैत गेल।

अध्याय 4 : सिंह आ गायक शर्त

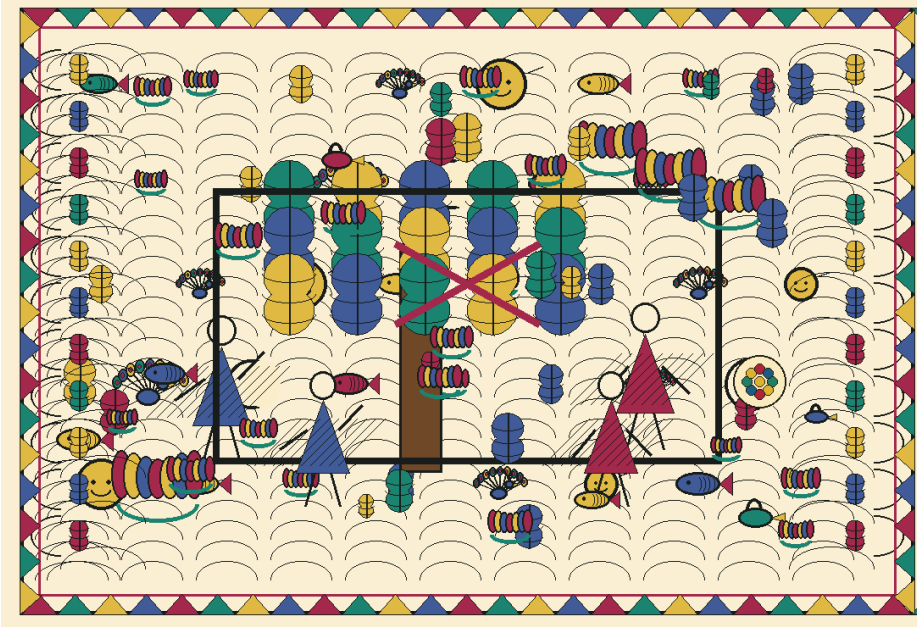

चित्र 7

कौआ सिंह लग पहुँचल, हिरणक प्रस्ताव कहैत। मुदा सिंह उत्तर देलक — 'हम भेलहुँ शक्तिहीन, बूढ़। गाएक दूध आनू, ओकरा पीबि कऽ हमरामे ताकति आयत, आ हम शिकार कऽ सकब!'

ई शर्त सिंहक अपन कमजोरी स्वीकार करैत छल — राजा जानवरो असहाय भऽ सकैत अछि, बिनु समुचित पोषणक। कौआ फेर एकटा नव खोजपर बिदा भेल।

चित्र 8

कौआ गाए लग गेल, दूधक माँग करैत। मुदा गाए दूध नहि देलक — ओ कहलक, 'घास आनू, हम घास खाएब, तखने दूध देब।' — शृंखला आरो विस्तारित भेल।

घास कौआसँ कहलक — 'हाँसू (हँसुआ) आनि हमरा काटि लिअ!' — अब घासो अपन कटबाक लेल उपकरणक माँग कऽ रहल छल। कौआ, बिनु थाकल, अपन अन्तिम गन्तव्य — लोहार लग बिदा भेल।

अध्याय 5 : लोहारक दू हाँसू

चित्र 9

कौआ लोहार लग पहुँचल आ अपन पूरा यात्राक गीत गओलक — 'हे लोहार भाए, दिअ हाँसू, काटब घास, खुआयब गाय, पाबि दूध, पिआयब सिंहकेँ, ओ मारत हरिण, भेटत हरिणक सिंघ, ताहिसँ कोरब माटि, माटिसँ कुम्हार बनओताह चुक्का, भरब गंगाजल, धोब ठोर, आ खायब फुद्दीक बच्चा!'

ई गीत सम्पूर्ण शृंखलाक सारांश छल — कौआक यात्राक हर चरण, हर शर्त, एकठाम गुंथल। ई काव्यात्मक पुनरावृत्ति एहि लोककथा-शैलीक विशेषता छल, जतय संचयी दोहराव कथाकेँ लय दैत अछि।

चित्र 10

लोहार कौआक ई पूरा कथा सुनि कहलनि — 'हमरा लग दू टा हाँसू अछि, एकटा कारी आ एकटा लाल। जे पसिन्न परए, ले लिअ।' ई एकटा साधारण चयन जकाँ बुझायल, मुदा एहिमे कौआक भविष्य निर्धारित छल।

कौआकेँ ललका (लाल) हाँसू पसिन्न पड़लैक — रंगक आकर्षणमे कौआ अनजान छल जे ई हाँसू कतेक खतरनाक अछि। ओकर चयन ओकर अन्तिम निर्णय बनल।

अध्याय 6 : अन्तिम भूल

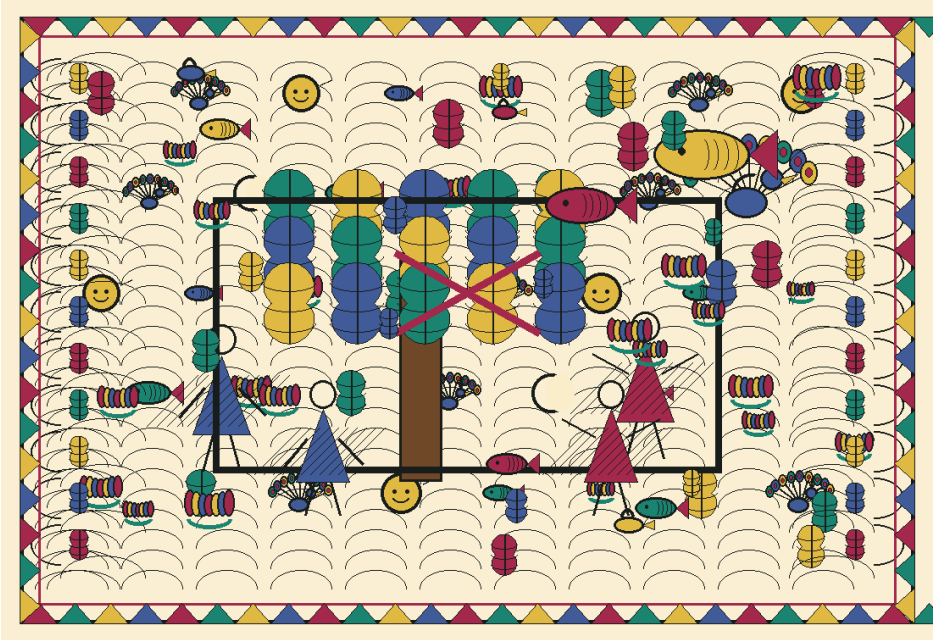

चित्र 11

कौआ नहि जनैत छल जे ओ हाँसू धीपल (गरम, आगिपर तपाओल) छल —
लोहारशालामे अखने तैयार भेल, ठण्ढा होबाक समय नहि पओने।

जहाँने कौआ ओकरा अपन लोलमे (चोंचमे) दबओलक, तहाँने ओ छरपटा (छटपटा) कऽ मरि गेल! ई अन्त एतेक अकस्मात्, एतेक अप्रत्याशित छल जे पूरा शृंखलाक यात्रा एक्कहि क्षणमे व्यर्थ भऽ गेल।

चित्र 12

सोचू — गंगासँ चुक्का, चुक्कासँ माटि, माटिसँ सिंघ, सिंघसँ सिंहक शक्ति, गायसँ घास, घाससँ हाँसू — एतेक लम्बा, कठिन यात्राक बाद, कौआ अपन लक्ष्य (फुद्दीक बच्चाकेँ खाएब) धरि पहुँचबे नहि केलक!

ई गाथाक सभसँ करुण आ विडम्बनापूर्ण मोड़ छल — फुद्दीक धूर्त योजना, जे कौआकेँ टारबाक लेल रचल गेल छल, से कौआक मृत्युमे परिणत भऽ गेल। फुद्दी अपन बच्चाकेँ त' बचा लेलक, मुदा एहि कीमतपर कि ओकर सखी कौआ अपन प्राण गमा देलक।

अध्याय 7 : शृंखलाक शिक्षा

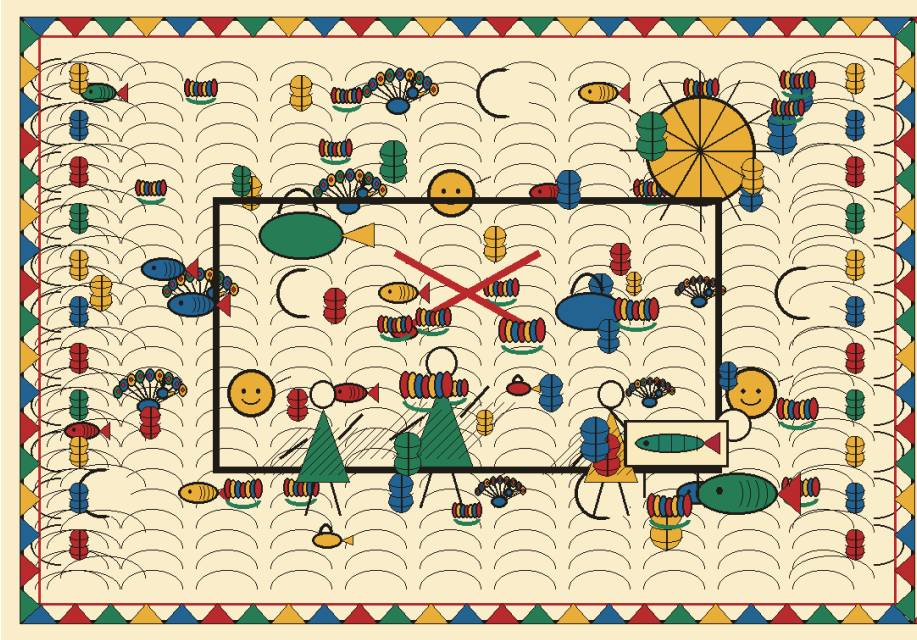

चित्र 13

ई गाथा एकटा गहींर शिक्षा दैत अछि — जीवनक हर आवश्यकता, हर इच्छा, एकटा शृंखलाबद्ध निर्भरतामे बान्हल अछि। एकटा साधारण काज (मुँह धोएब) सेहो केतेक जटिल शृंखलामे बदलि सकैत अछि, से एहि गाथासँ स्पष्ट होइत अछि।

फुद्दीक धूर्तता — जे शुरूमे मात्र अपन बच्चाकेँ बचएबाक एकटा चाल छल — अन्ततः एकटा प्राणक हानिमे परिणत भेल। धूर्ततासँ रचल कोनो योजना, चाहे ओकर उद्देश्य कतबो निर्दोष होअए, अनपेक्षित परिणाम आनि सकैत अछि।

चित्र 14

कौआक निष्कपट स्वभाव — ओ बिनु प्रश्न केने हर शर्त पूर्ण करैत गेल, बिनु ई सोचने जे ई यात्रा ओकरा कतय लऽ जा रहल अछि — ई सेहो एकटा सीख अछि: कखनो-कखनो एतेक भोलापन सेहो खतरनाक भऽ सकैत अछि।

आ अन्तमे, ई गाथा शृंखला-कथाक (cumulative tale) शैलीक एकटा उत्कृष्ट उदाहरण थिक — जतय प्रत्येक तत्व अगिलाकेँ जन्म दैत अछि, आ अन्तमे एकटा अप्रत्याशित मोड़ पूरा शृंखलाकेँ नाटकीय ढंगसँ समाप्त कऽ दैत अछि। कौआ आ फुद्दीक ई गाथा मिथिलाक लोककथाक परम्परामे एकटा एहन स्मरणीय कथा बनि गेल अछि, जे बच्चाकेँ हँसाबैत अछि, आ संगहि सोचबाक लेल विवश करैत अछि।

समाप्त

VIDEHA

विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका | ISSN 2229-547X | www.videha.co.in

माधव सिंह आ अमता गाम

राग मेघ-मल्हार, बरखा आ एकटा राजाक अन्तिम यात्रा

गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादक, विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका (since 2000)

ISSN 2229-547X

उपक्रम : संगीत आ पानि

ई गाथा तरुआरिक नहि, तानक थिक। एहिमे युद्ध नहि होइत — बरखा होइत अछि; आ सेना नहि चलैत — राग चलैत अछि।

मिथिलाक राजा माधव सिंह, नेपाल-दरबारक गबैया भाइ-लोकनि, अमता गामक खीरीक गाछ, आ एकटा एहन अन्तिम इच्छा जे रस्तेमे रहि गेल — एतबे थिक ई खिस्सा। छोट, मुदा एहन, जे सुनला उत्तर बरखाक हर बुन्नीमे ध्रुवपदक थाप सुनाइ देत।

अध्याय 1 : सुखाएल मिथिला

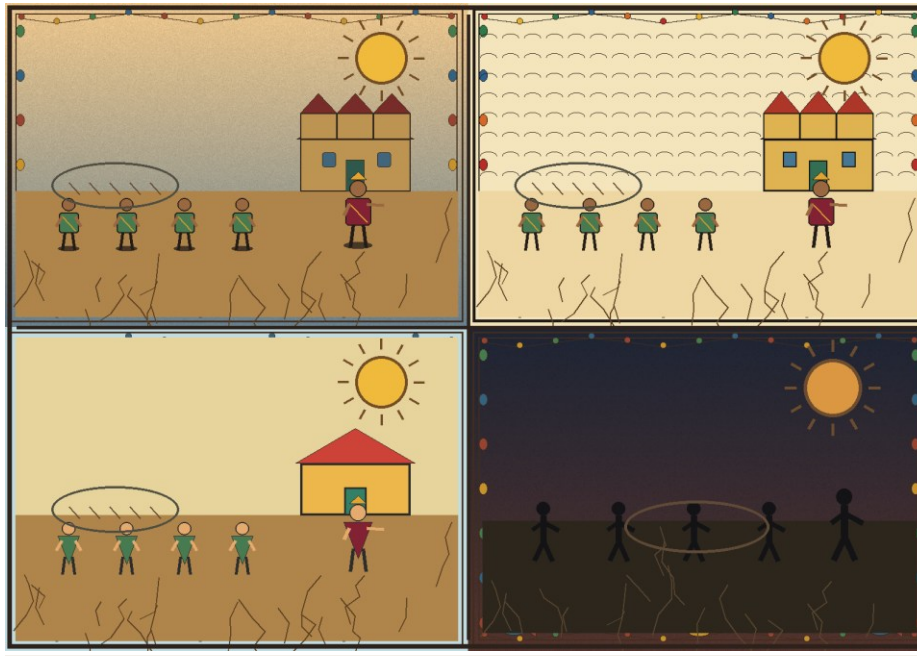

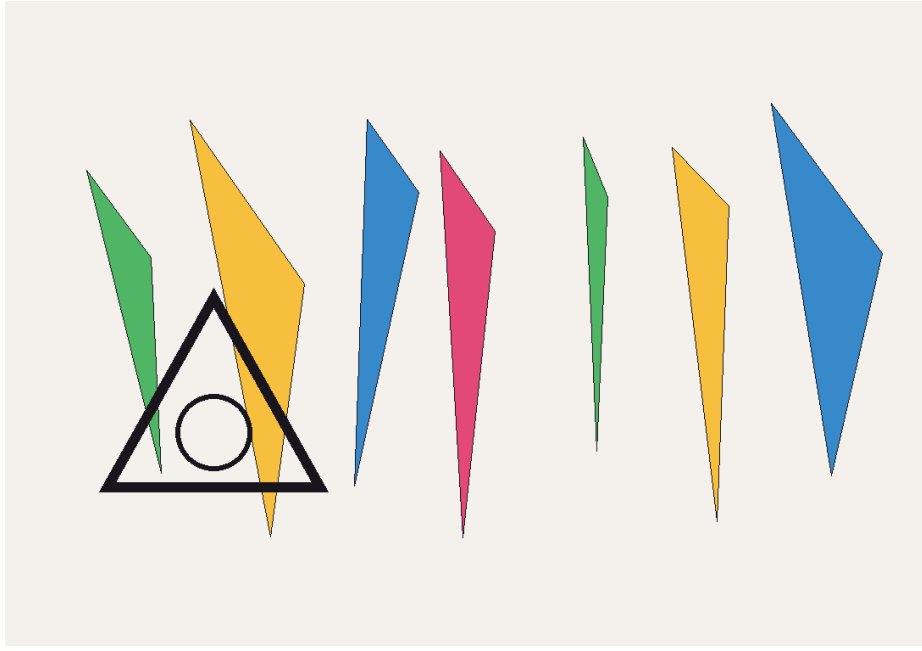

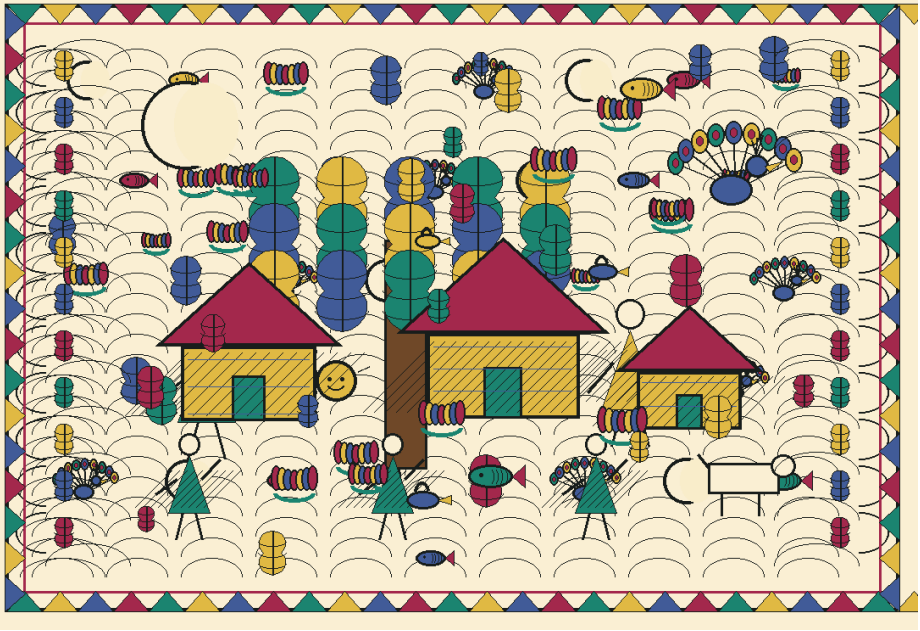

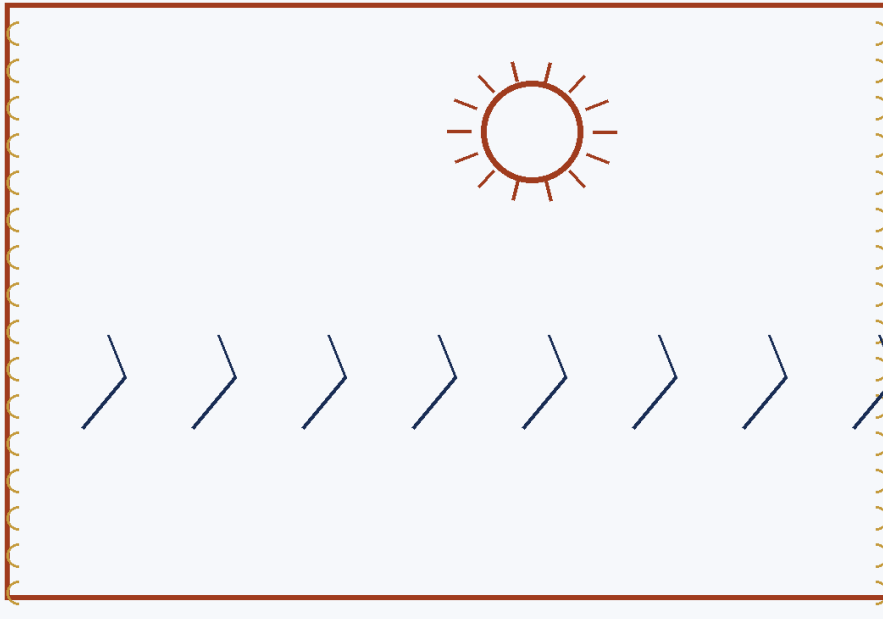

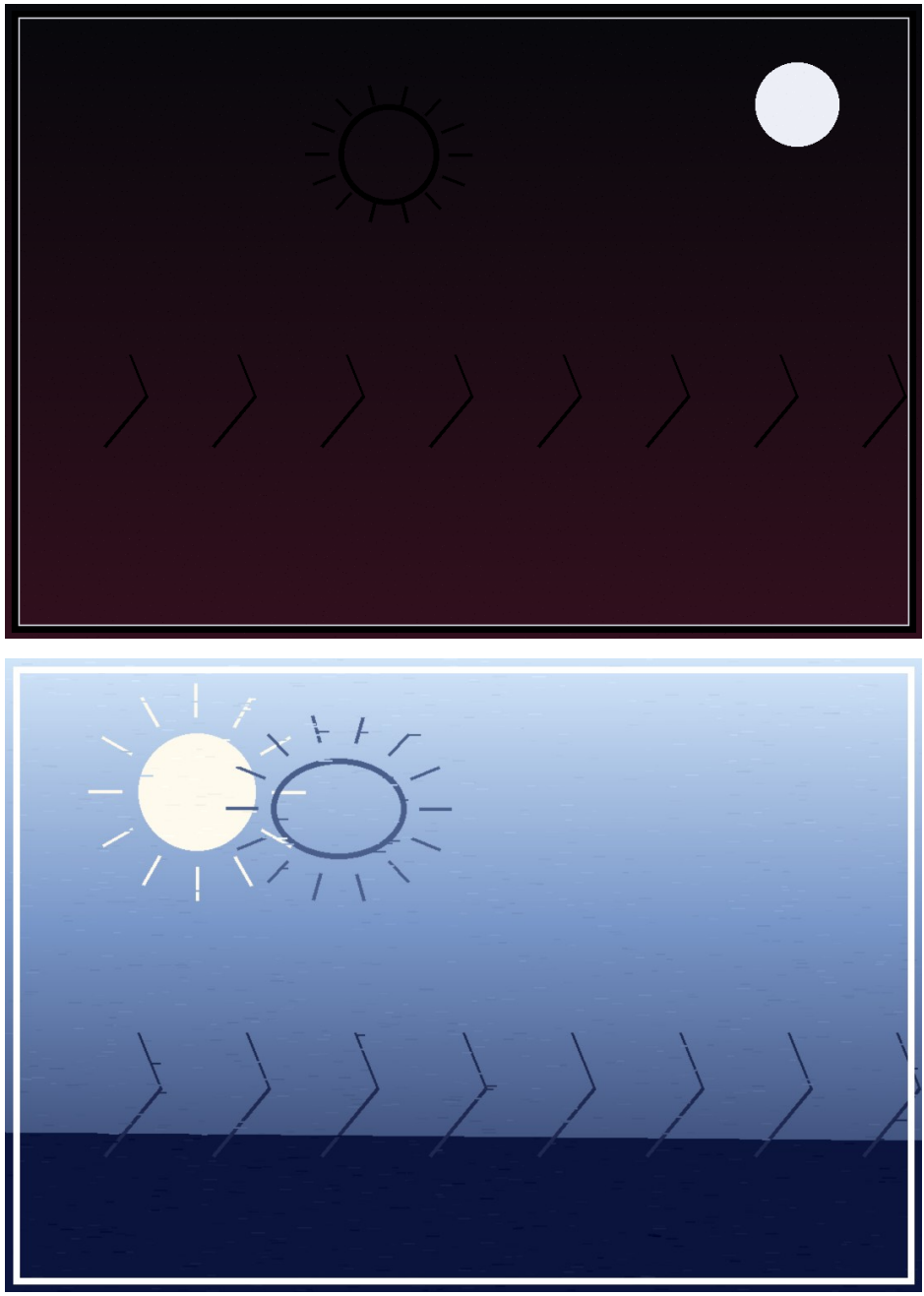

चित्र 1

मिथिलामे माधव सिंहक राज्य छल — आ ओहि बरख मिथिलापर भयंकर दुर्भिक्षक छाया। आकाश एहन कठोर, जेना ओकर पानि केओ ताला लगा कऽ बन्द कऽ देने हो।

डबरा-चभच्चा सभ सुखा गेल। जतय माछ खेलाइत छल, ओतय माटि फाटल; जतय महींस लोटाइत छल, ओतय धूरा उड़ैत। खेतक धान बिया-बियेमे मरि गेल, आ किसानक आँखि आकाश तकैत-तकैत पथरा गेल।

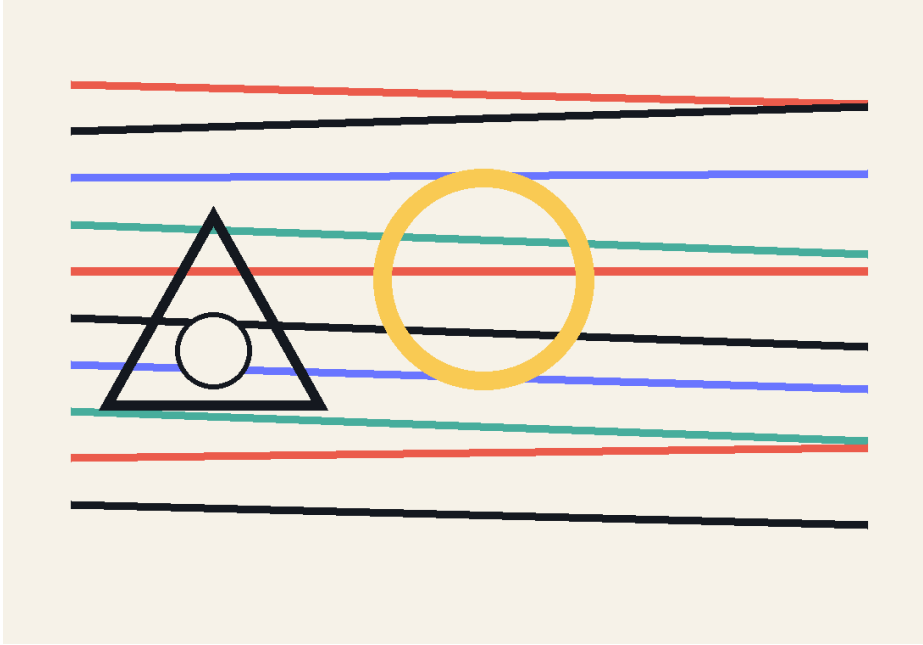

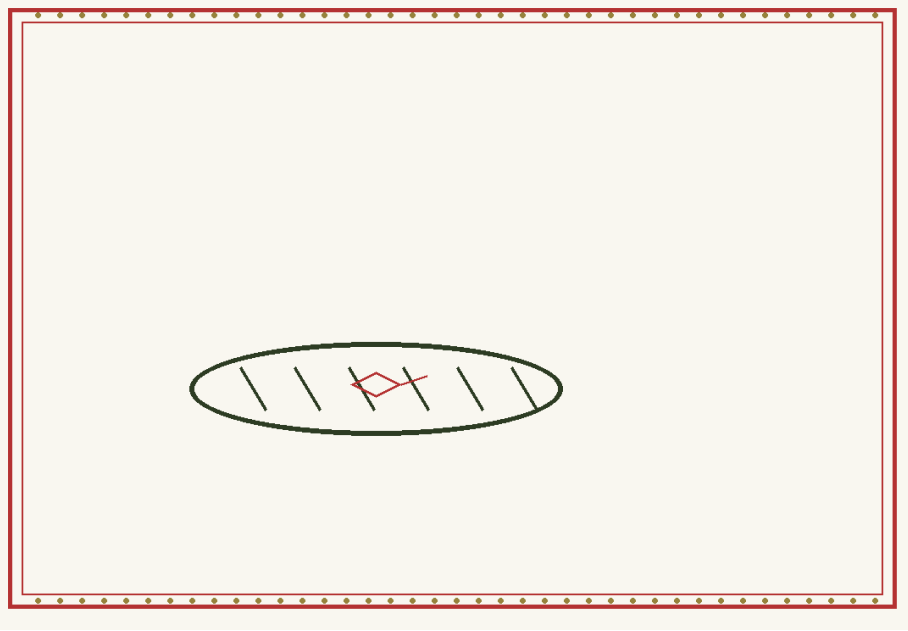

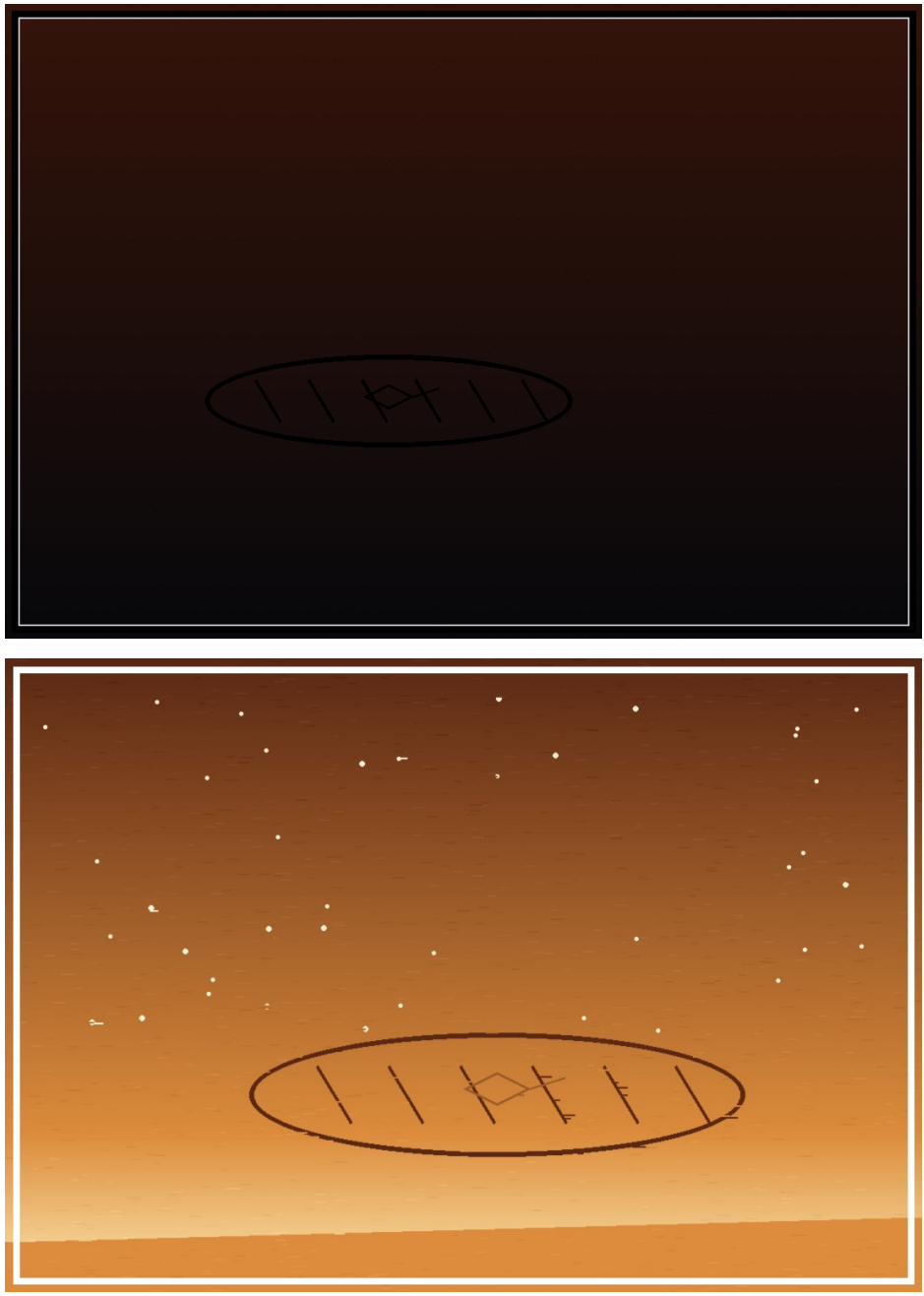

चित्र 2

गाम-गाम त्राहि-त्राहि। कतहु कादो-माटिक शीतलता नहि, कतहु हरियरीक चेन्ह नहि। पनिबिहीन मिथिला — ई शब्दे अपनामे विरोधाभास थिक, कारण मिथिला त' पोखरि-धारक देश थिक। मुदा ओहि बरख विधाता जेना मिथिलाक नक्शासँ नीले रंग उठा लेने छल।

राजा माधव सिंह रातिकेँ छतपर ठाढ़ भऽ आकाश ताकथि — एक्को टा मेघ नहि। तखन ओ दरबार बजओलनि। जखन प्रकृति उत्तर नहि दिअए, तखन मनुक्खकेँ अपन सभसँ नीक विद्या लऽ कऽ ठाढ़ होमए पड़ैत छै — आ दरबारमे ओहि दिन जे विद्याक नाम उठल, से छल: संगीत।

अध्याय 2 : दरबारक मंत्रणा

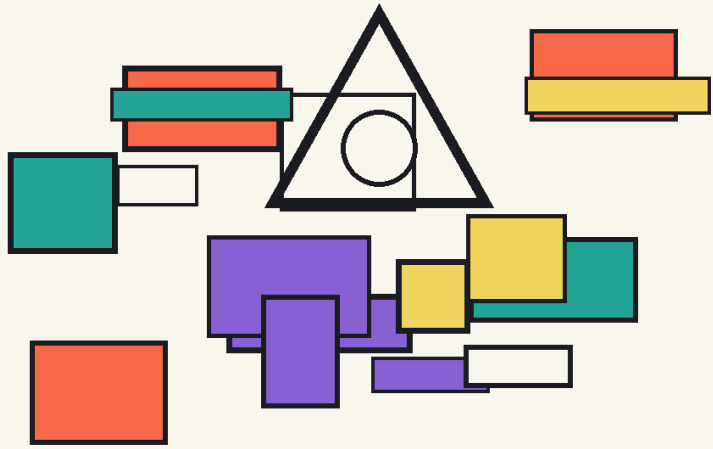

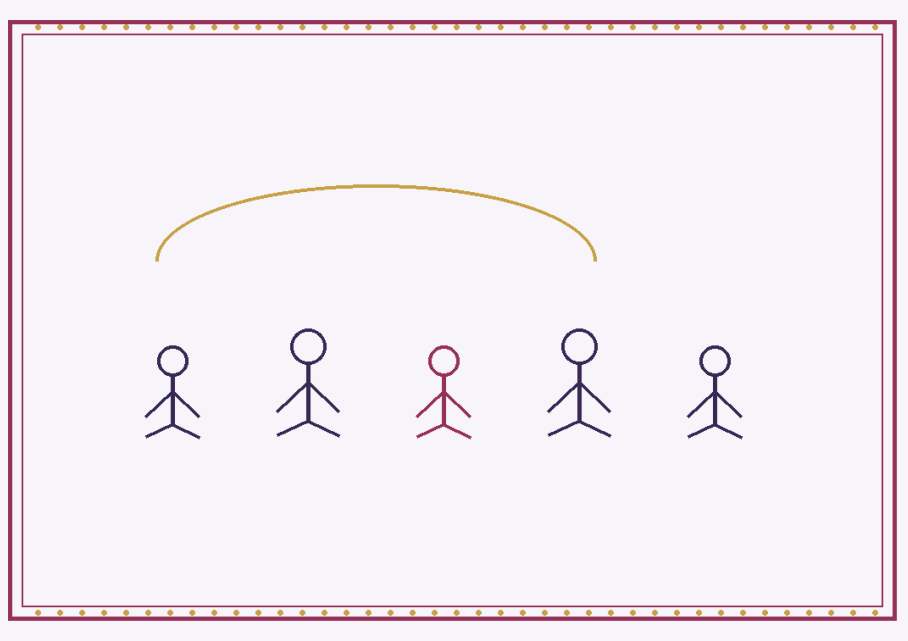

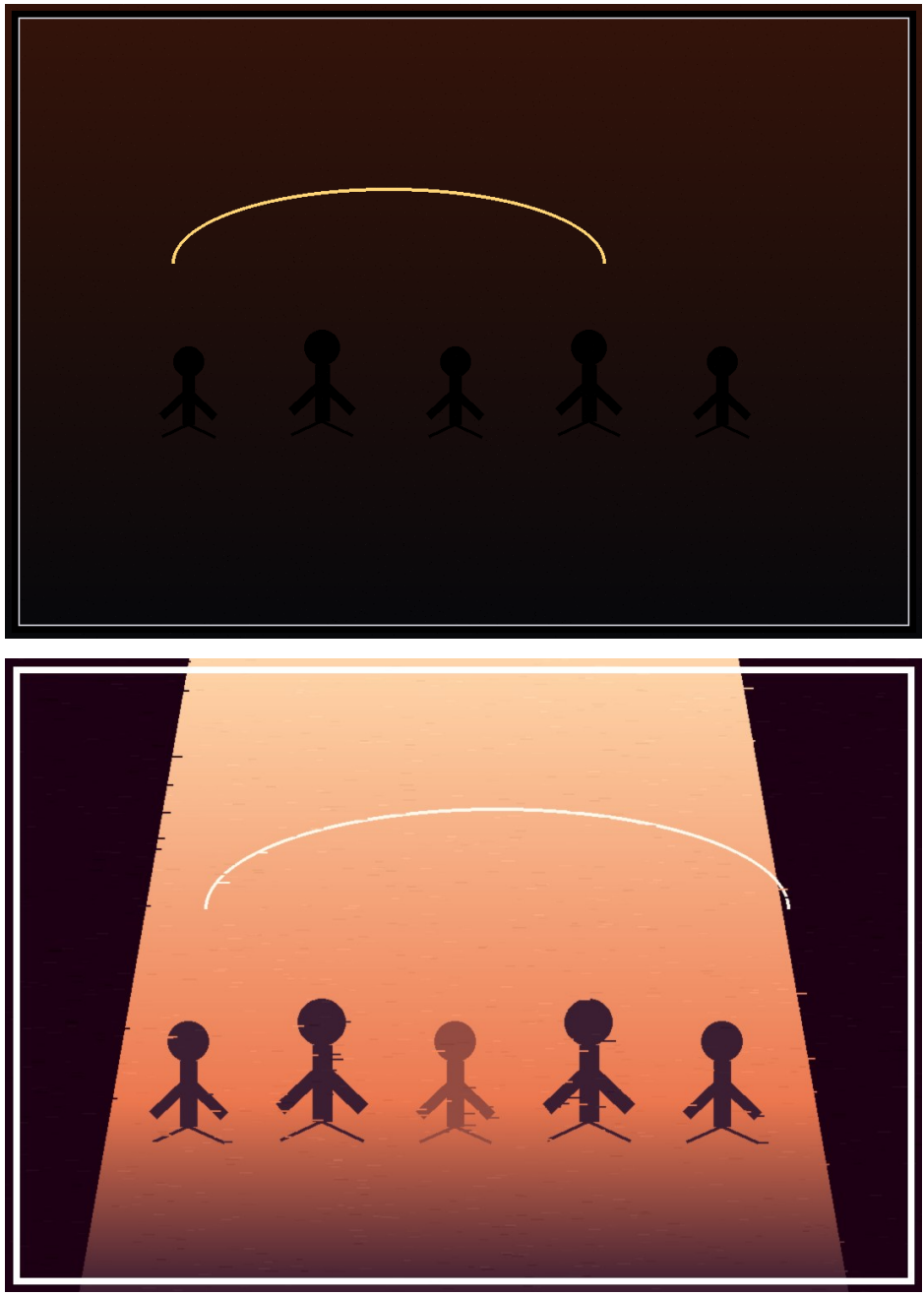

चित्र 3

दरबार जुटल — मंत्री, पंडित, प्रजाक प्रतिनिधि। उपाय पर उपाय गनाएल: यज्ञ, दान, कूप-खनन। सभ हो, मुदा पानि त' आकाशेसँ आओत — आ आकाश धरि पहुँचए के?

तखन एकटा वृद्ध सभासद ठाढ़ भेलाह — 'महाराज, सुनल अछि जे नेपाल-दरबारमे चारि भाइ संगीतज्ञ छथि — रामनवाज, सीताराम, राधाकृष्ण आ करताराम। हुनका लोकनिक संगीतमे ओ शक्ति छनि जे राग गाबि बरखा करा दैत छथि।'

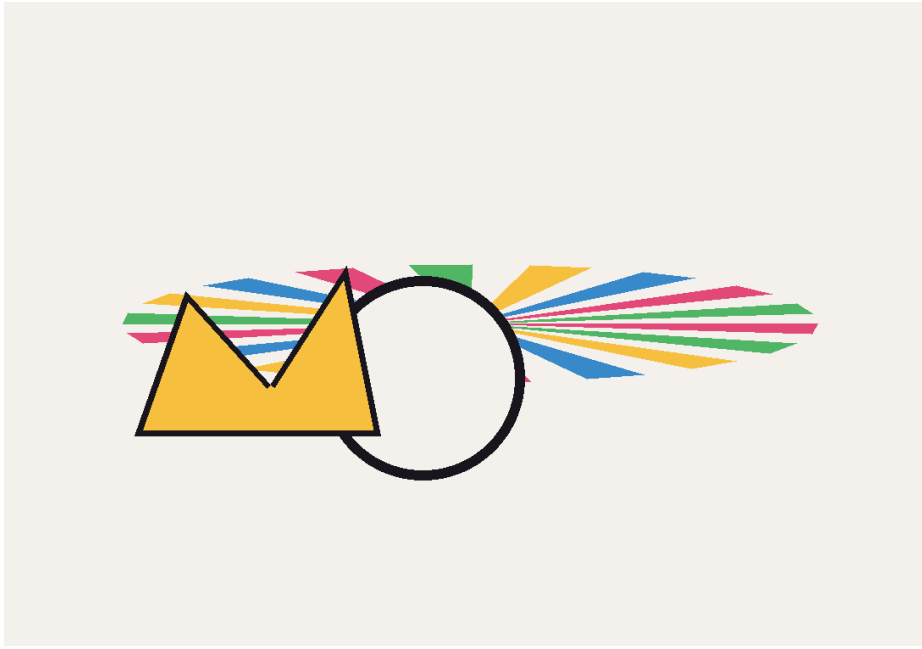

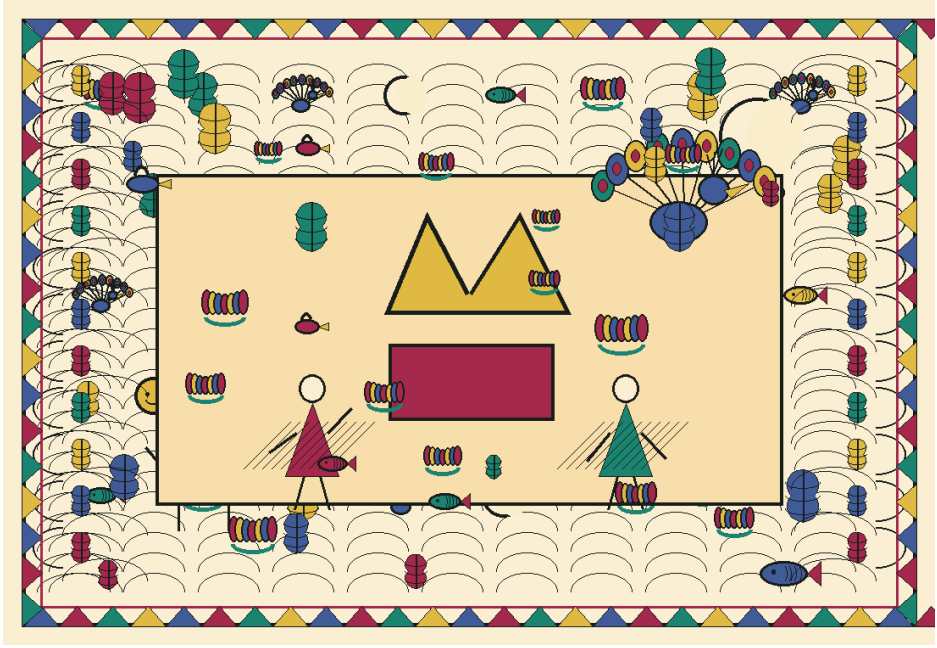

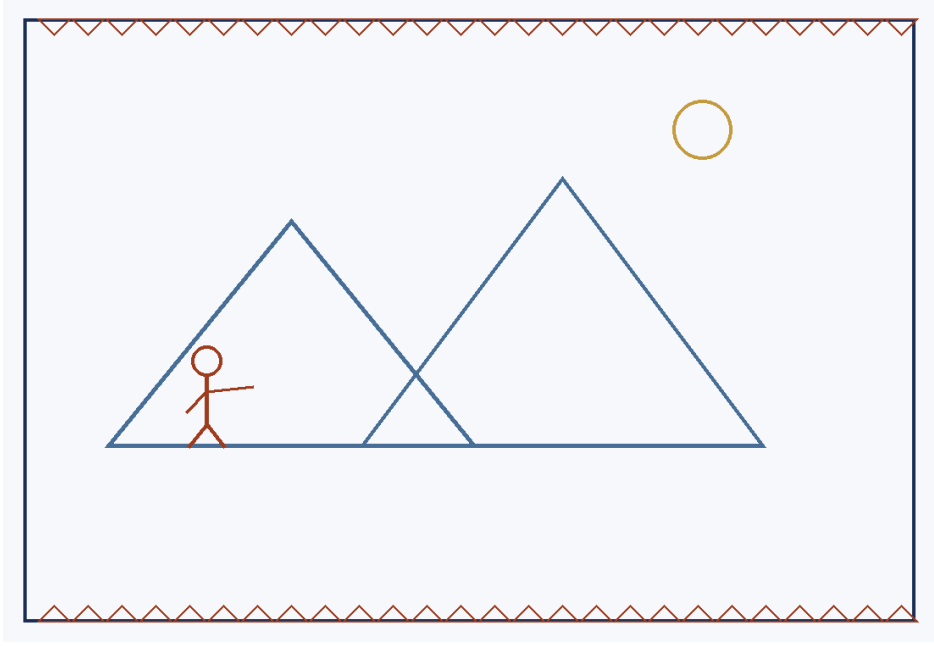

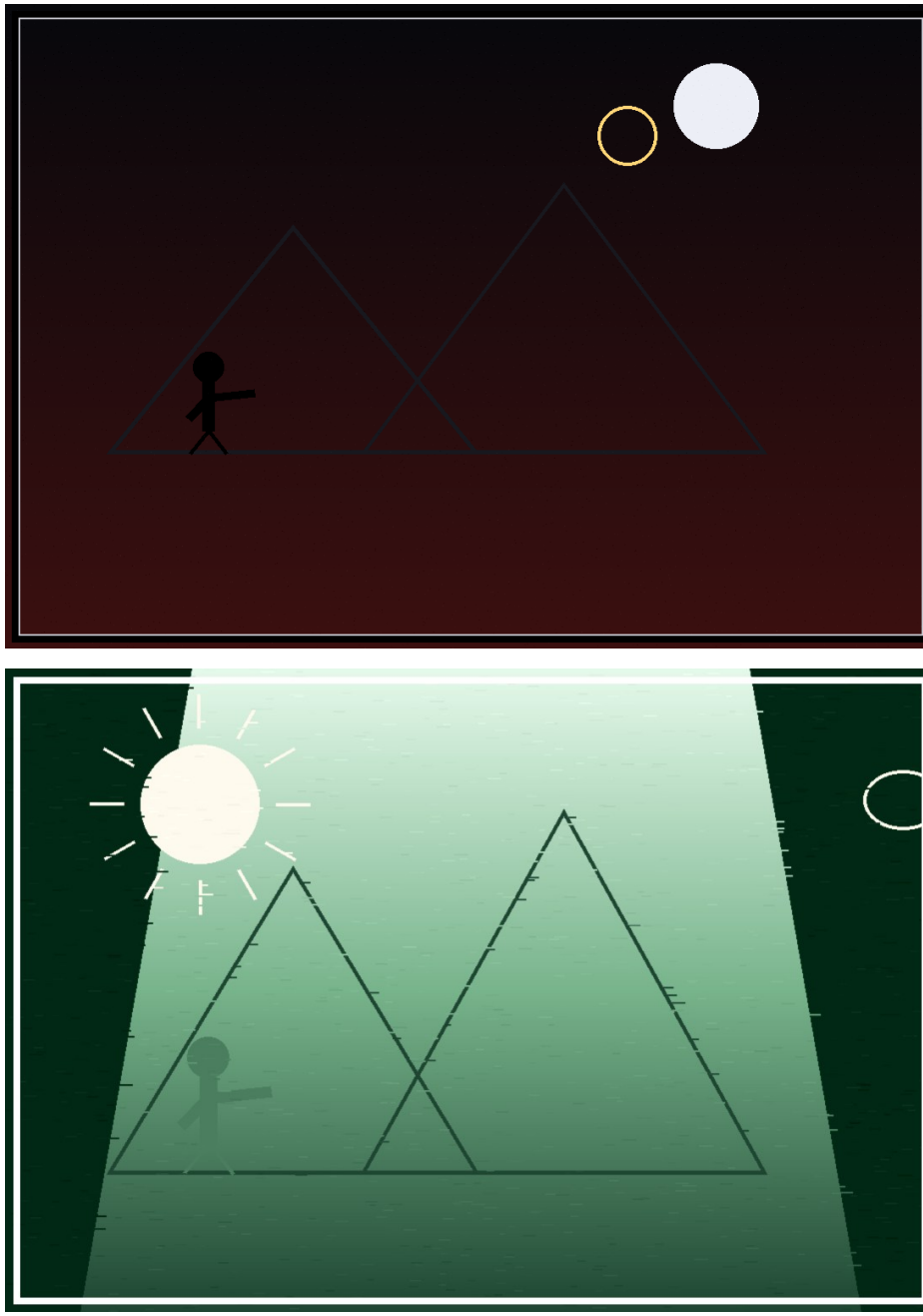

चित्र 4

दरबारमे कनी काल चुप्पी — रागसँ बरखा? किछु गोटे मुस्कुरेलाह। मुदा माधव सिंह नहि मुस्कुरेलाह। ओ जनैत छलाह जे स्वरमे की-की बसैत अछि — आ फेर, डूबैत राज्यकेँ त' तिनकोक सहारा पैघ बुझाइत छै, आ ई त' साक्षात् नाद-विद्या छल।

'नेपाल-दरबारसँ आग्रह कएल जाए' — राजाक आदेश भेल। दूत बिदा भेल हिमालय दिस, आ मिथिला प्रतीक्षा करए लागलि — पानिक नहि, स्वरक।

अध्याय 3 : नेपालसँ दू भाइ

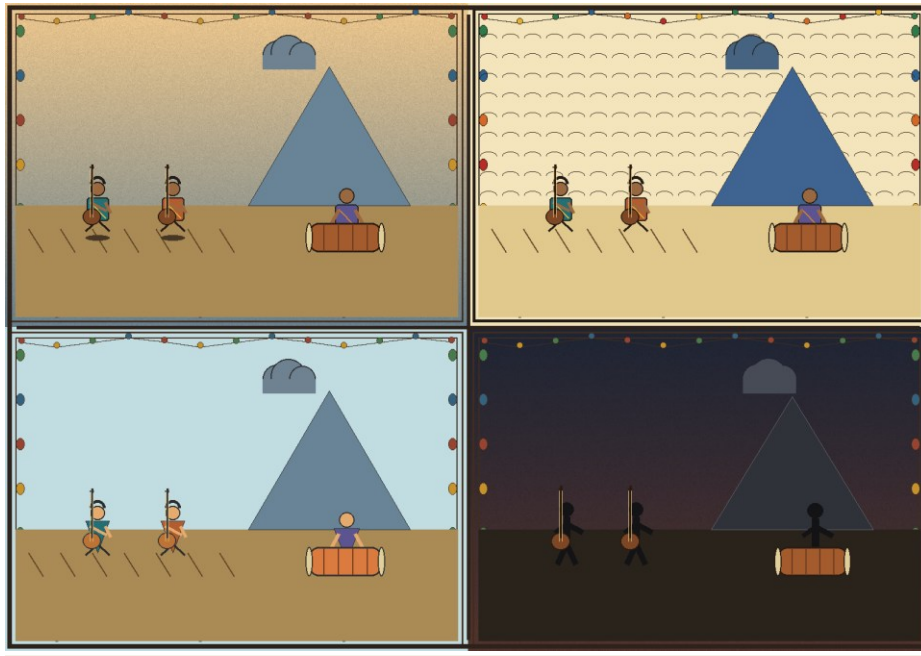

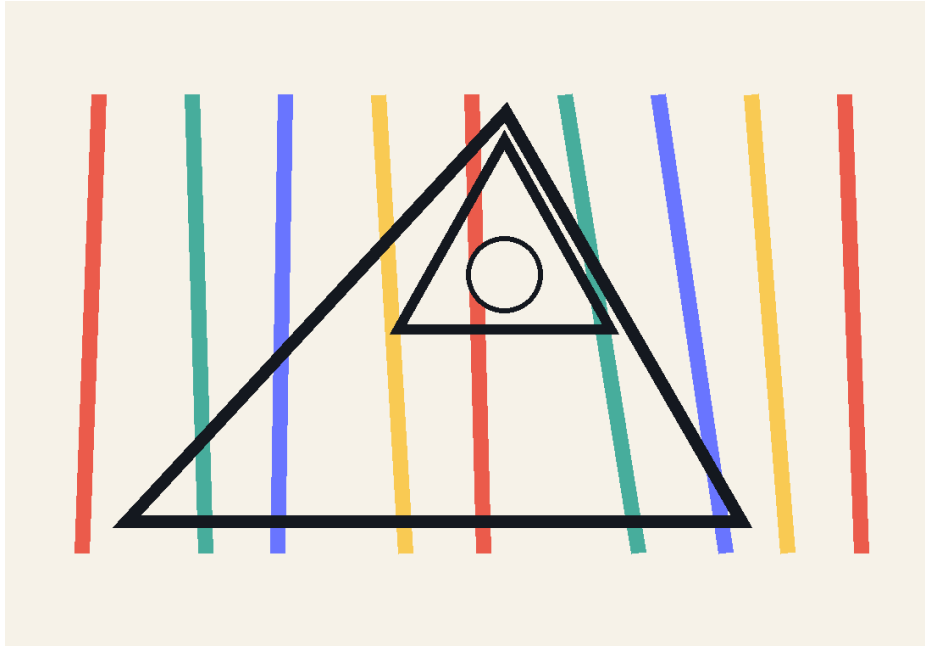

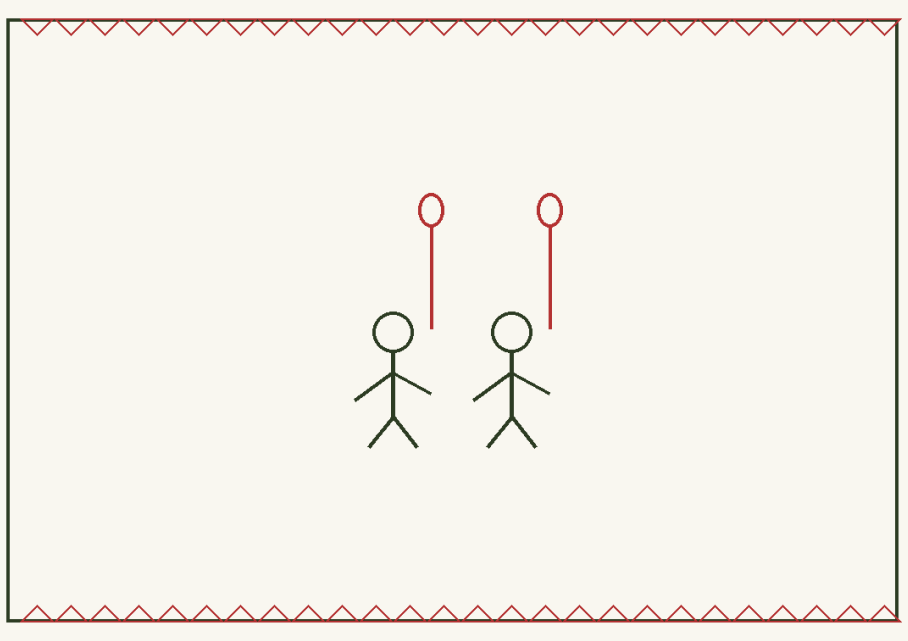

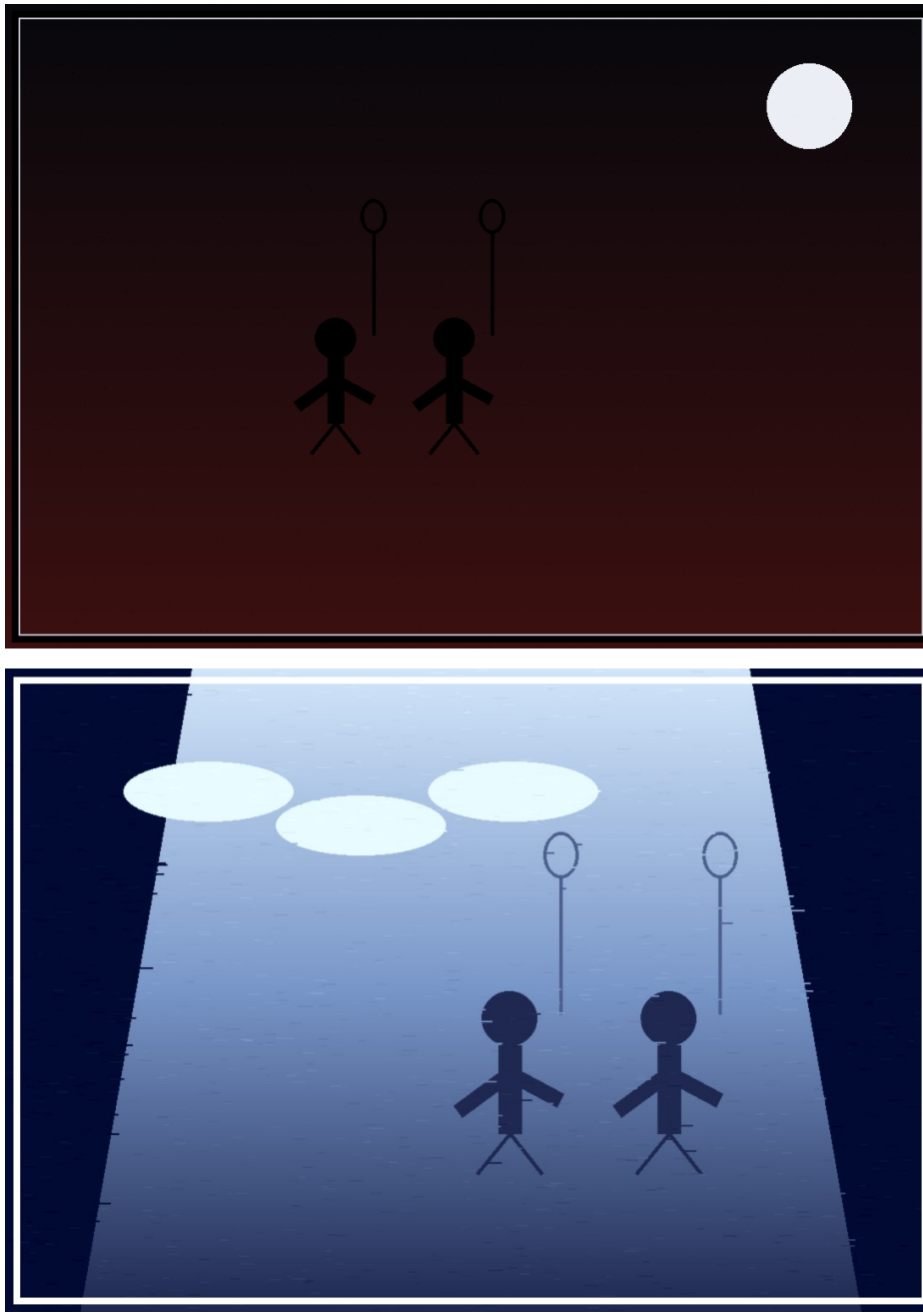

चित्र 5

नेपाल-दरबार आग्रह स्वीकार केलक। चारूमे सँ दू भाइ मिथिला बिदा भेलाह — राधाकृष्ण आ करताराम। दुनू ध्रुवपद-गबैया — ओहि गम्भीर शैलीक साधक, जाहिमे स्वर देखौआ नहि, तपस्या होइत अछि।

संगमे तानपूरा, स्वरक पोथी, आ पीढ़ी-दर-पीढ़ीक साधना। बाट भरि दुनू भाइ मौन रहलाह — गबैया प्रदर्शनसँ पहिने स्वर जमा करैत अछि, जेना मेघ पानि।

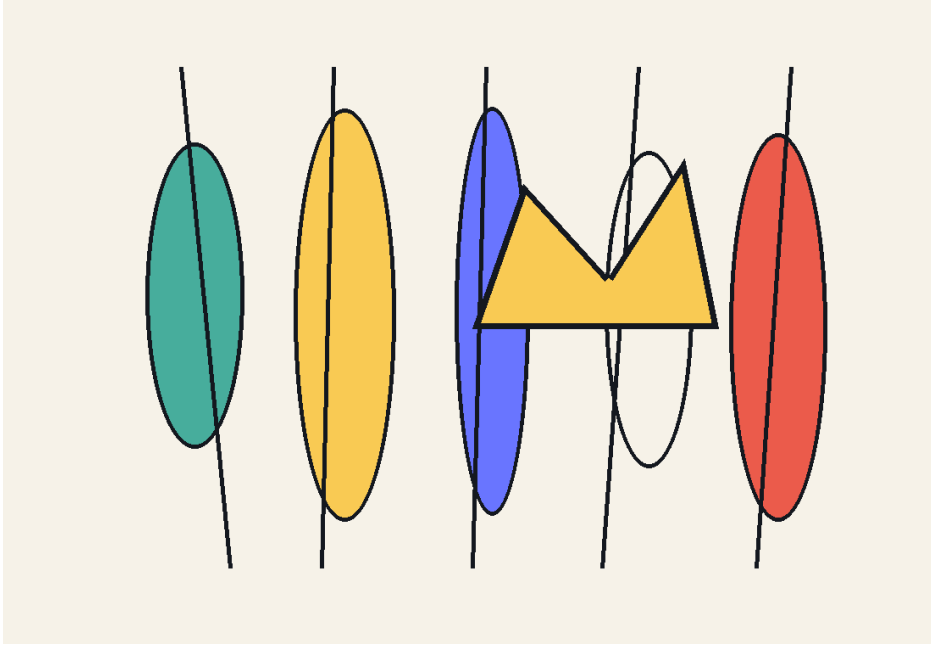

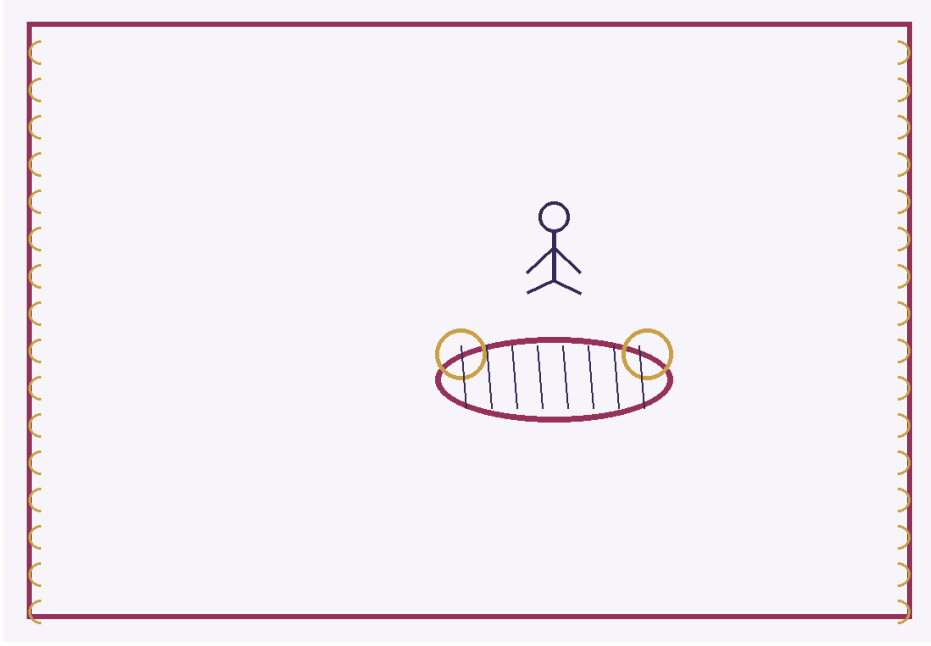

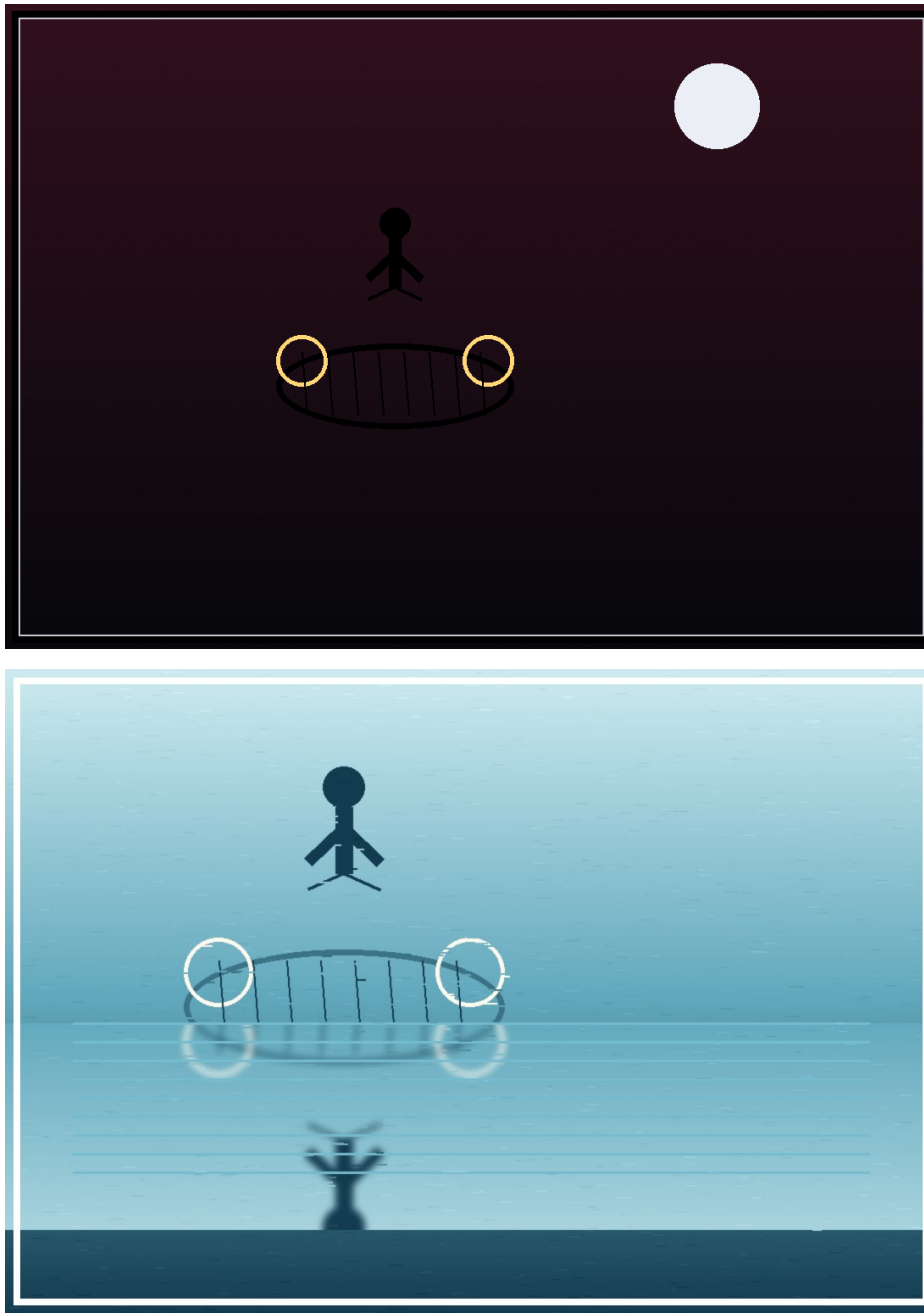

चित्र 6

मिथिला पहुँचला पर हुनका सोझाँ जे देखाइ पड़ल, से कोनो गबैयाक करेज हिला दैत: फाटल खेत, सूखल पोखरि, आ आसमे तकैत हजारो आँखि। करताराम धीरेसँ भाइकेँ कहलनि — 'एतय राग सुनाएब नहि, प्राण घुरायब अछि।'

माधव सिंहक दरबारमे स्वागत भेल। आ संगत लेल आगाँ बढ़लाह मिथिलाक अपन रत्न — पखावजी भीम मल्लिक, जिनक थापमे मेघक गरज बसैत छल। मंच सजल: दू स्वर, एक थाप, आ ऊपर — एकटा खाली, निष्ठुर आकाश।

अध्याय 4 : नोम-तोम

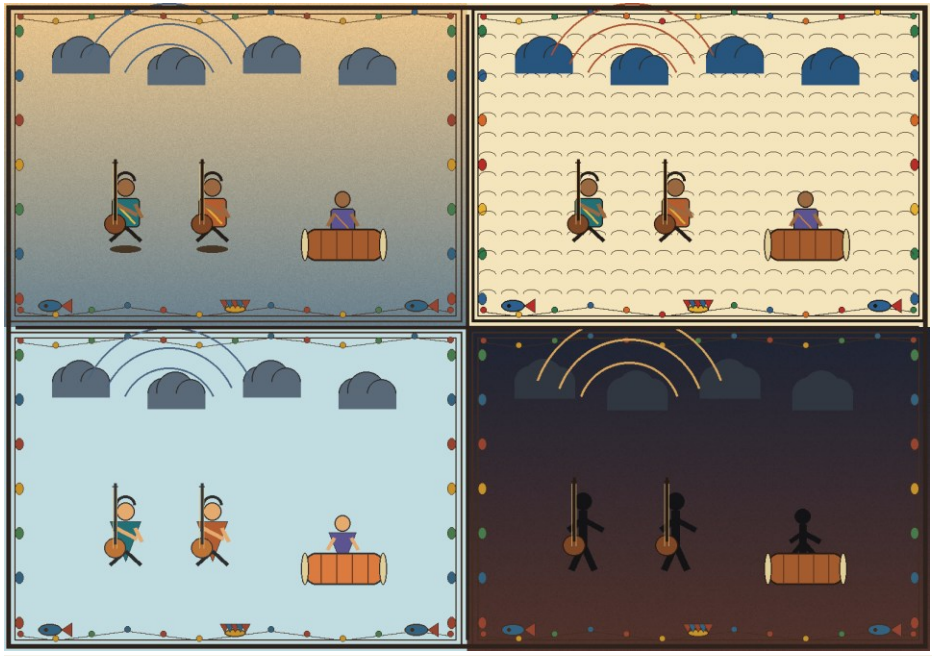

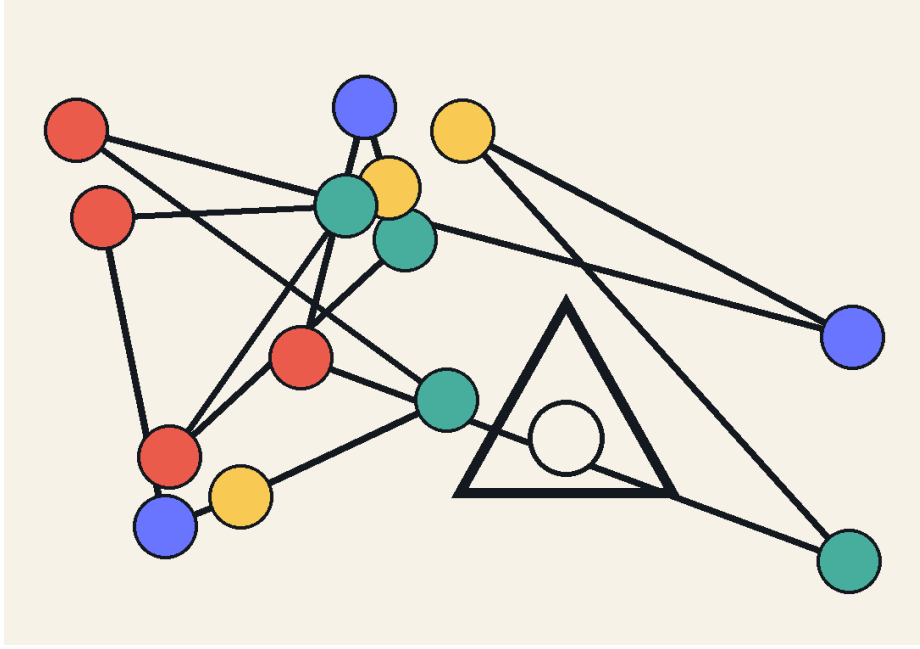

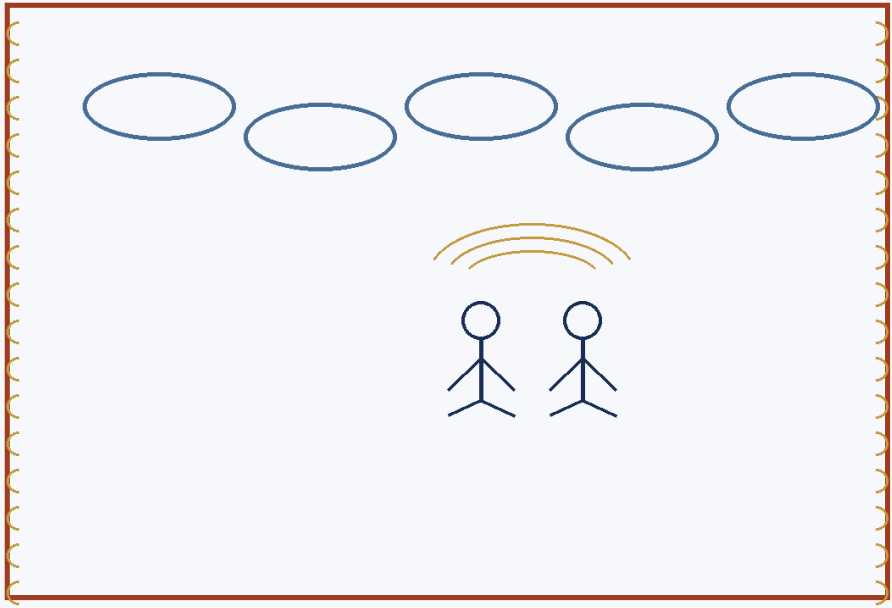

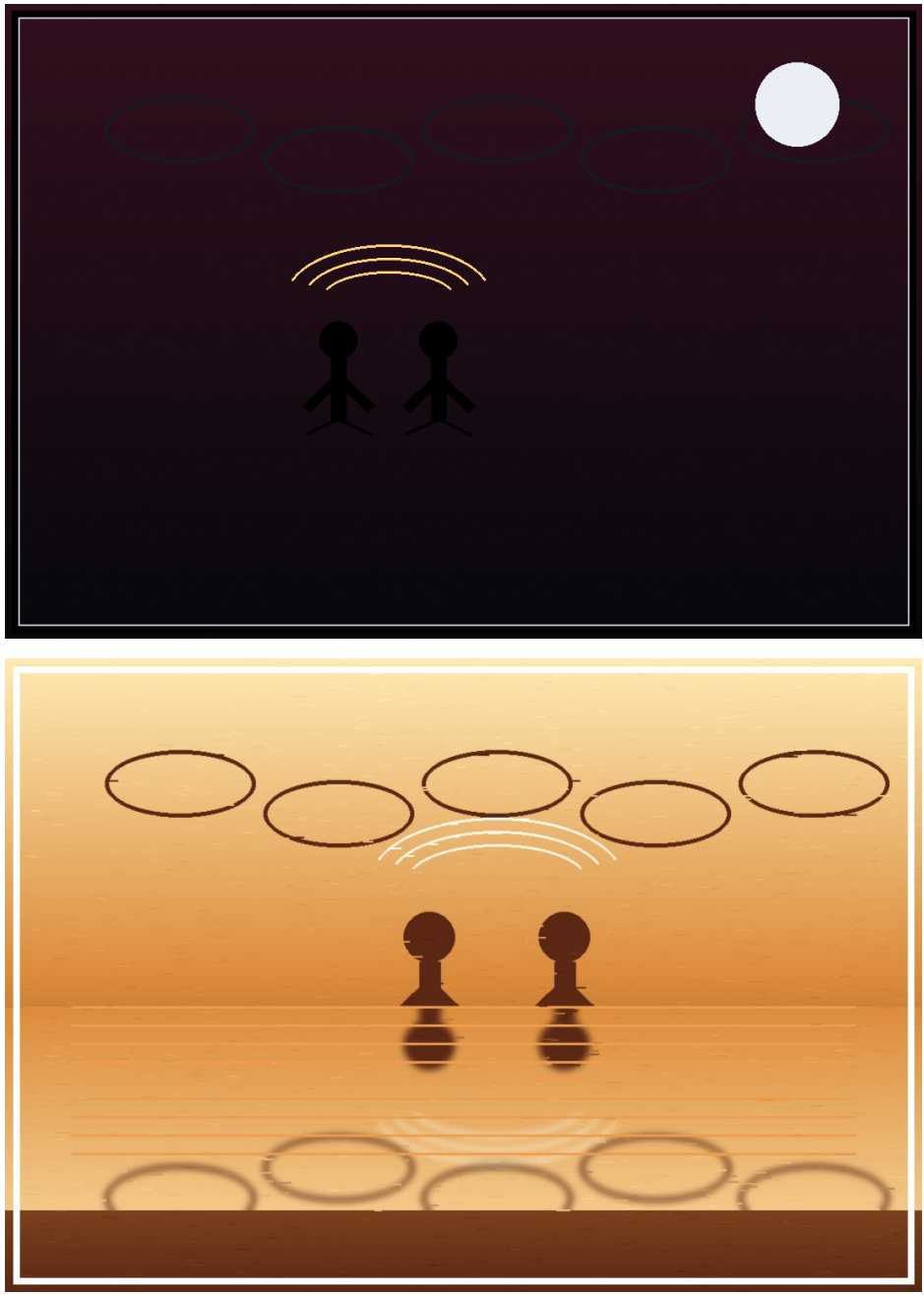

चित्र 7

राग बान्हल गेल — मेघ-मल्हार। ध्रुवपदक रीति अनुसार पहिने आलाप: नोम-तोम — बिनु शब्दक स्वर-साधना, जाहिमे गबैया रागक देह गढ़ैत अछि।

राधाकृष्ण आ करताराम आँखि मूनि नोम-तोम उठओलनि। स्वर धीरे-धीरे चढ़ल — पहिने धरतीक, फेर हवाक, फेर आकाशक। दरबार साँस रोकने; भीम मल्लिकक हाथ एखन पखावजपर राखले — प्रतीक्षामे।

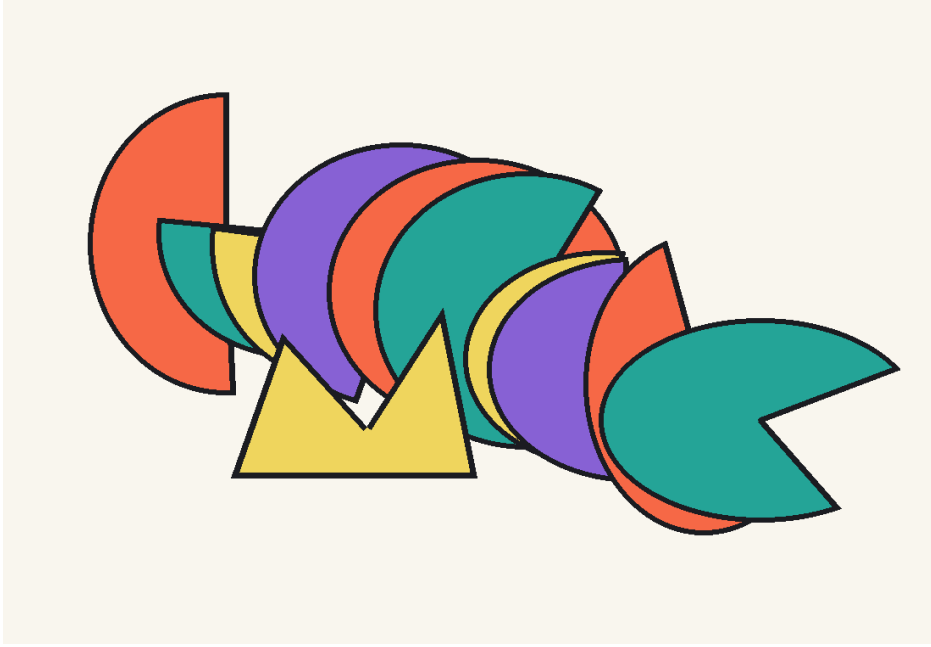

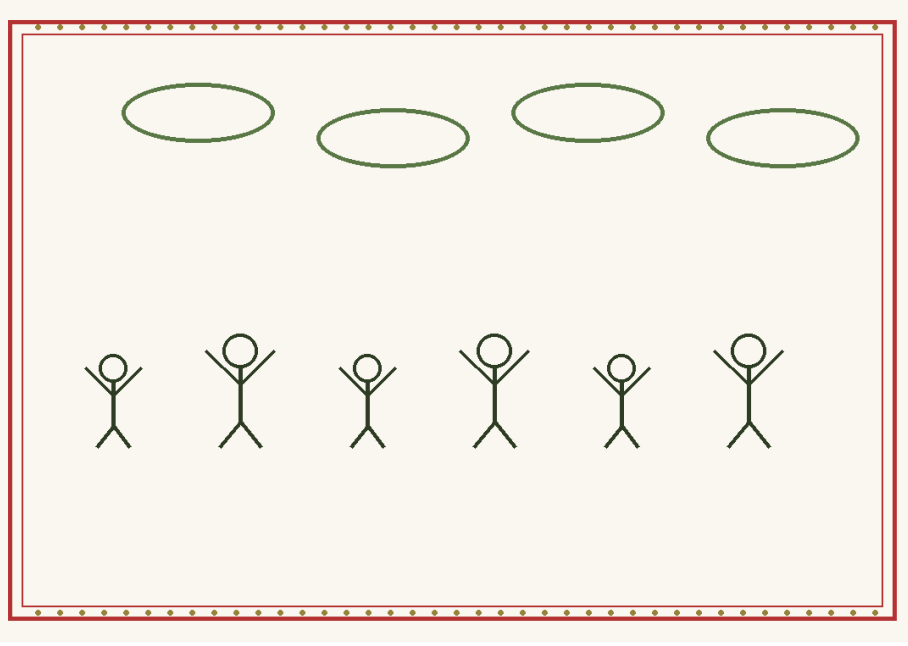

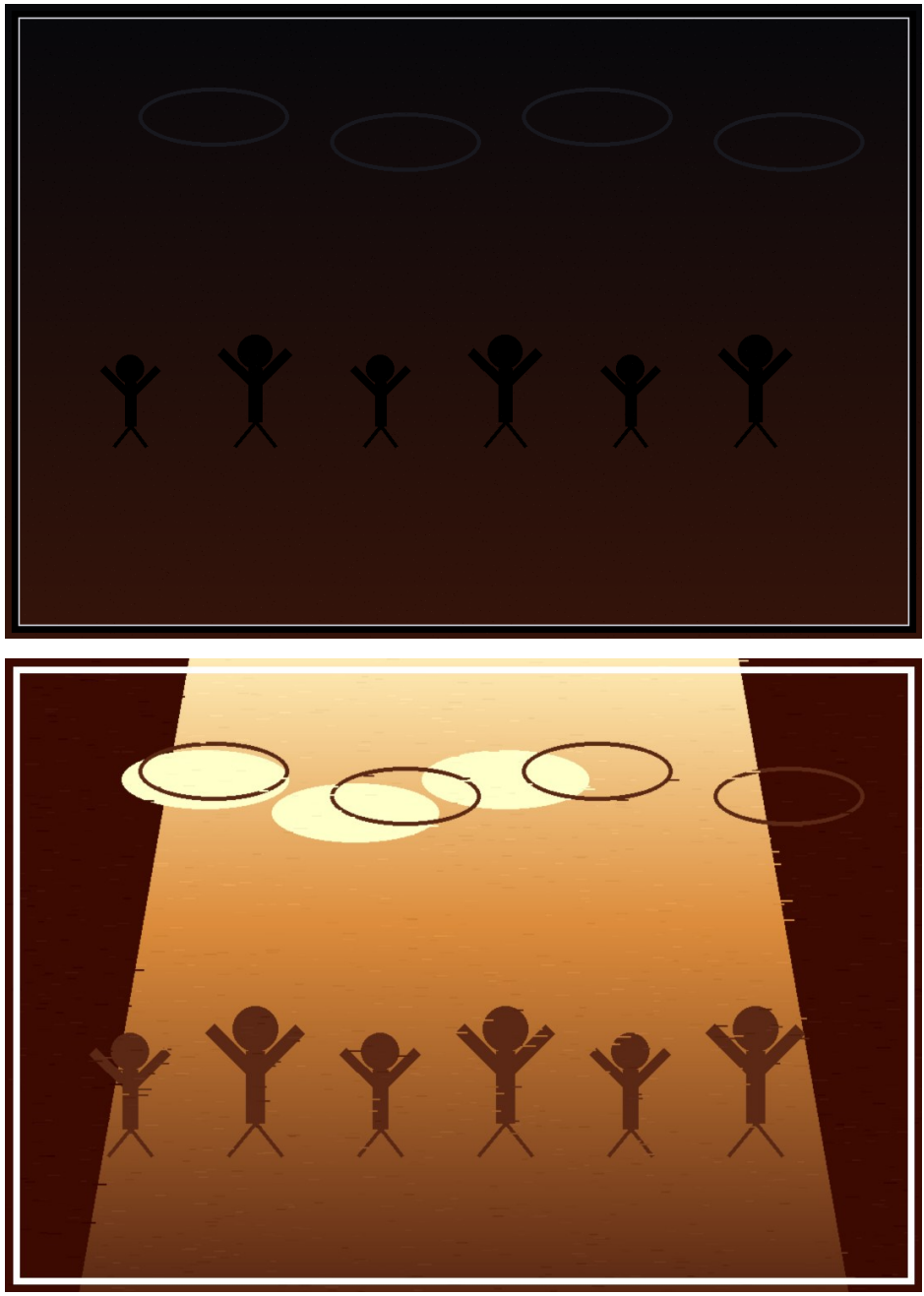

चित्र 8

आ जखन नोम-तोमसँ आलाप पूर्ण भेल — त' दरबारक बाहरसँ हल्ला आएल। लोक दौड़ल आकाश देखए: चारू दिससँ घटा उमड़ि आयल छल! कारी-कारी मेघ, जे मासो सँ मिथिलाक नक्शा बिसरि गेल छल, स्वरक डोरि पकड़ने चलि आयल छल।

दरबारमे रोमांच दौड़ि गेल। मुदा दुनू भाइ आँखियो नहि खोललनि — साधक जनैत अछि जे मेघ आनब आधा काज थिक; ओकरा बरसाएब बाँकी अछि। आ ताहि लेल चाही बन्दिश, आ बन्दिशक संग — थाप।

अध्याय 5 : पहिल बुन्नी

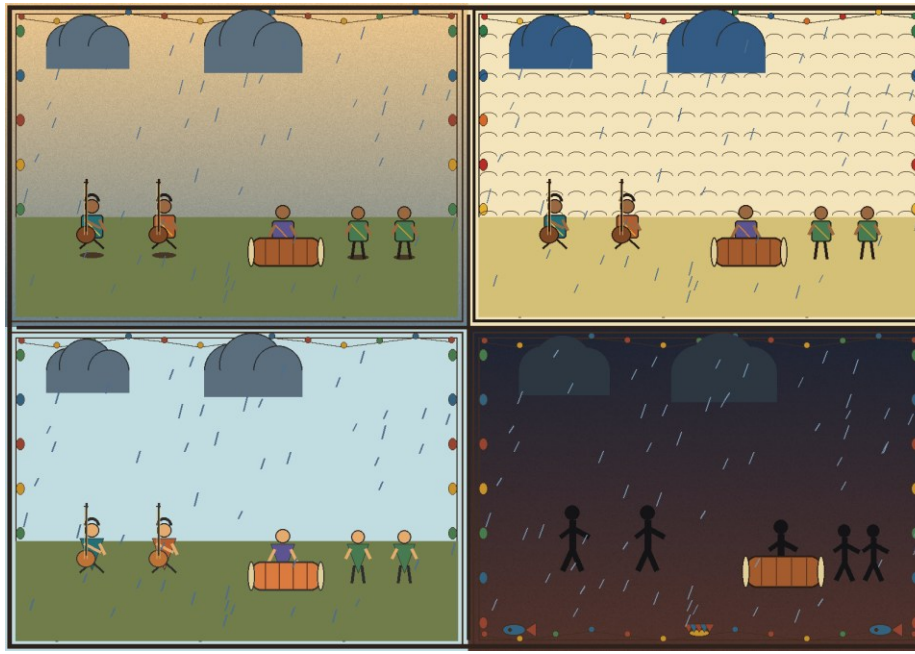

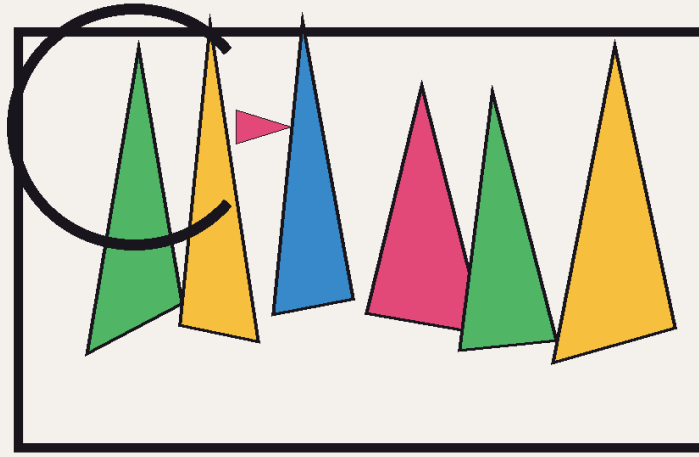

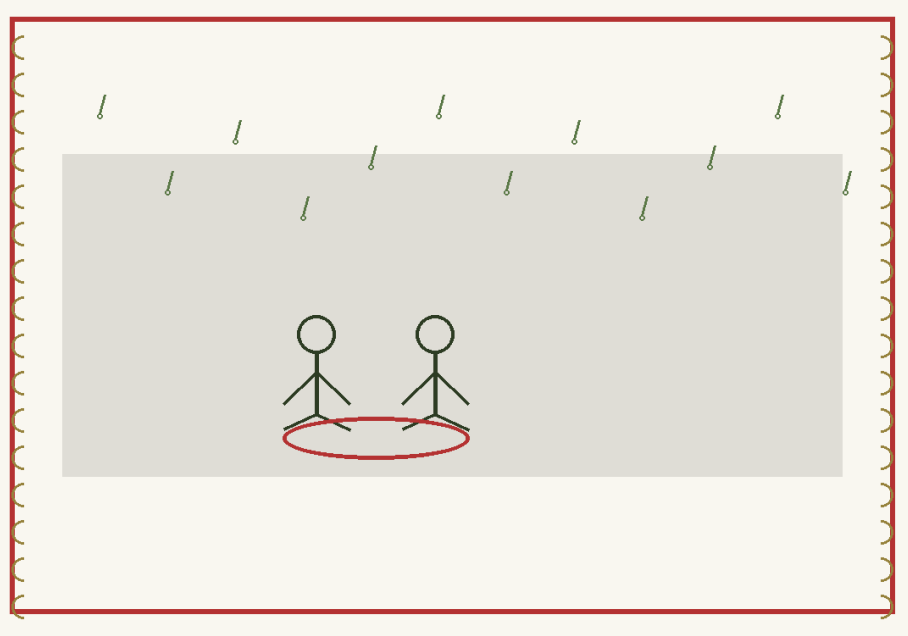

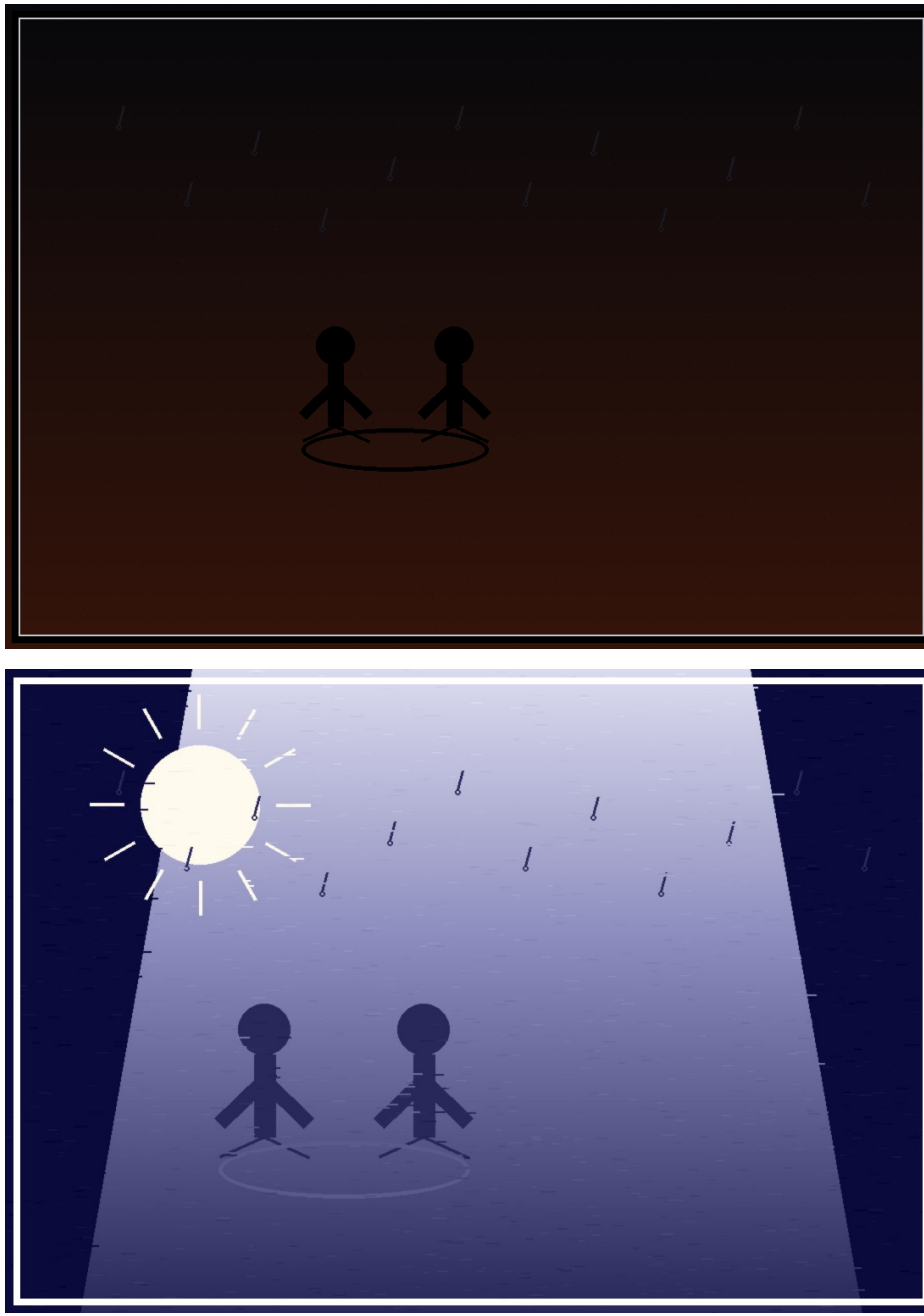

चित्र 9

बन्दिश शुरू भेल — आ संगहि भीम मल्लिकक पखावज जागल।

जेना-जेना बन्दिशक बोल आगाँ बढ़ल आ पखावजपर थाप पड़ल, तेना-तेना आकाशक घटा गम्हराइत गेल। आ फेर — पहिल बुन्नी खसल। एक बुन्नी, दोसर, तेसर... आ देखिते-देखिते झमाझम!

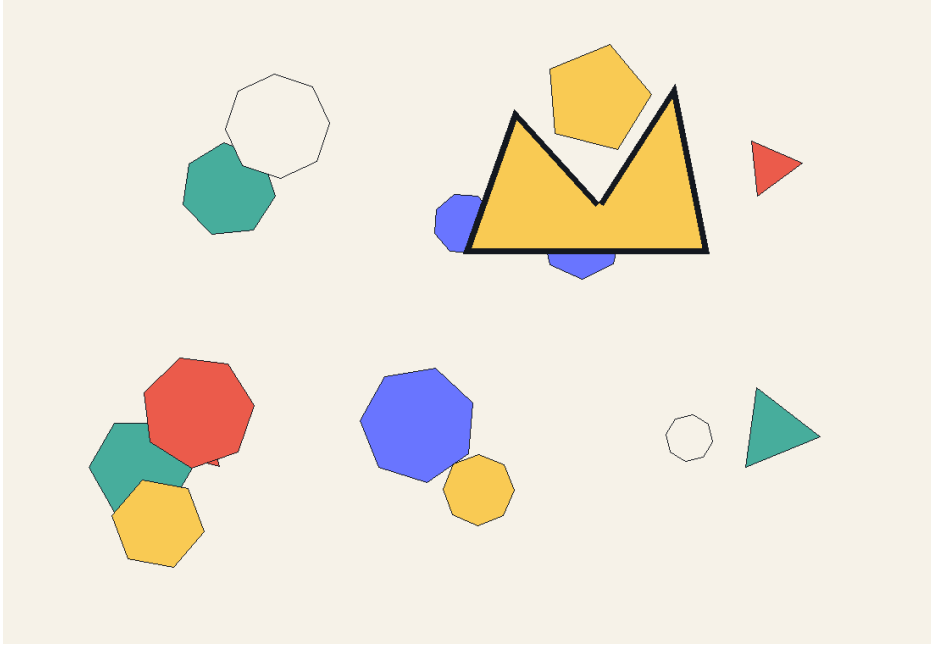

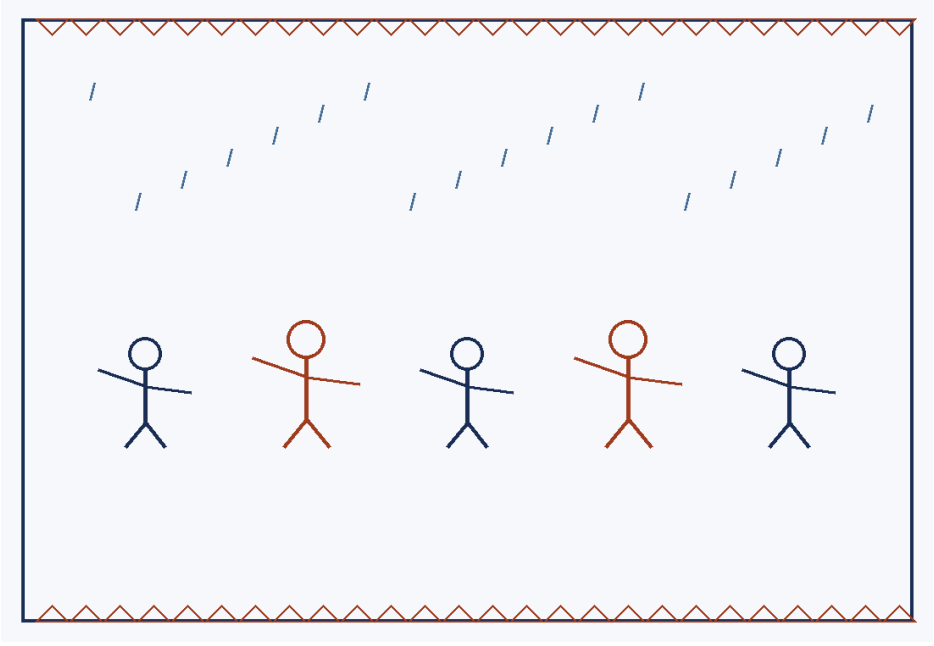

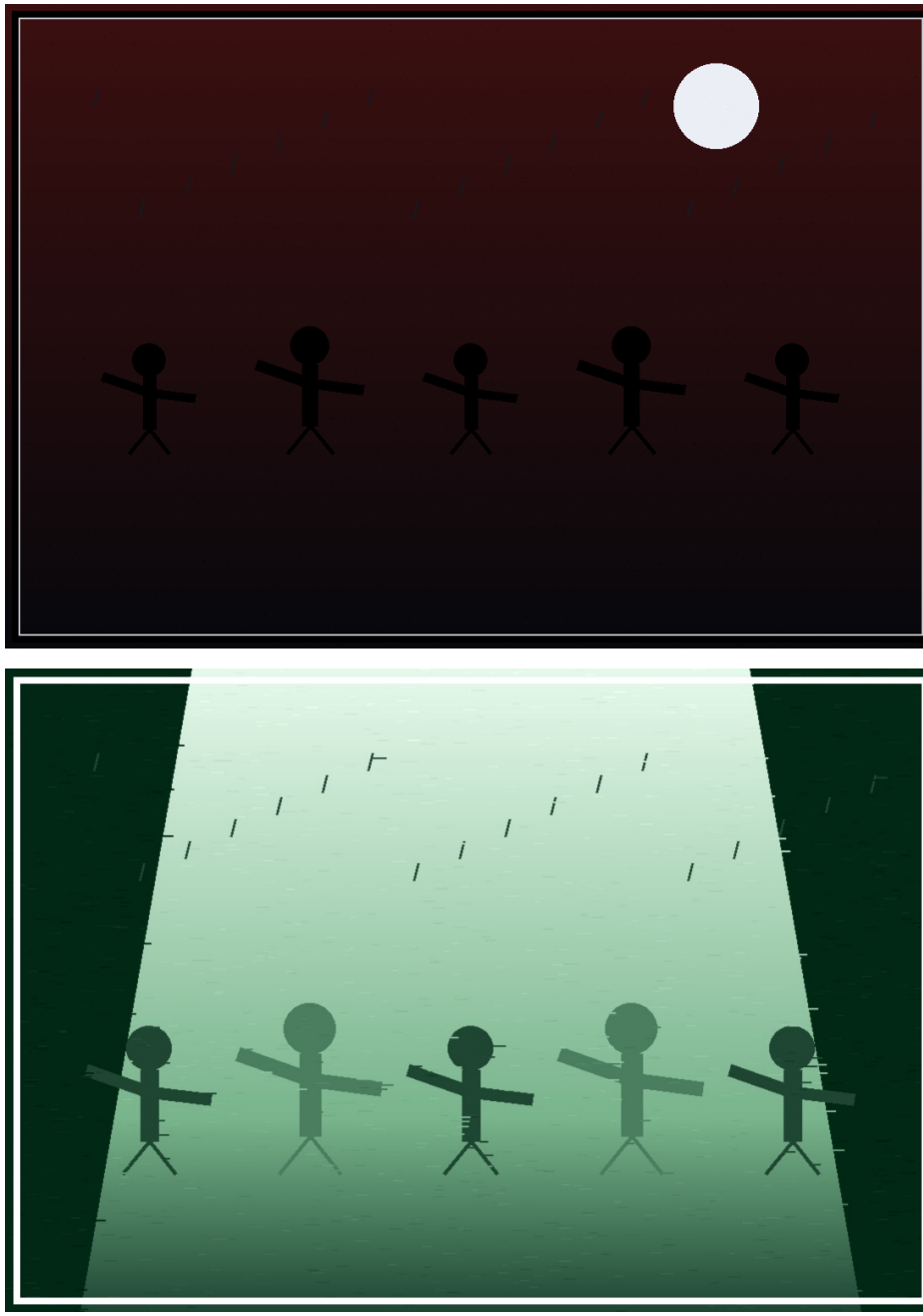

चित्र 10

बुन्नी पड़ए लागल। सूखल माटिपर पानिक पहिल गन्ध उठल — ओ गन्ध, जकरा आगाँ संसारक सभ अतर फीका। दरबारक लोक आब मर्यादा बिसरि गेल — केओ हाथ पसारने आँगन दिस दौड़ल, केओ कानैत छल, केओ हँसैत, आ बहुतो दुनू संगे।

आ मंचपर तीन साधक — दू स्वर, एक थाप — अपन काजमे लीन। हुनका लेल ई चमत्कार नहि छल; ई विद्याक स्वाभाविक फल छल। राग जँ साँच हो, साधना जँ पूर्ण हो, त' आकाशो श्रोता बनि जाइत अछि — आ श्रोता जखन द्रवित होइत अछि, त' नोर खसबे करैत छै। आकाशक नोर — बरखा।

अध्याय 6 : दरबारमे पानि

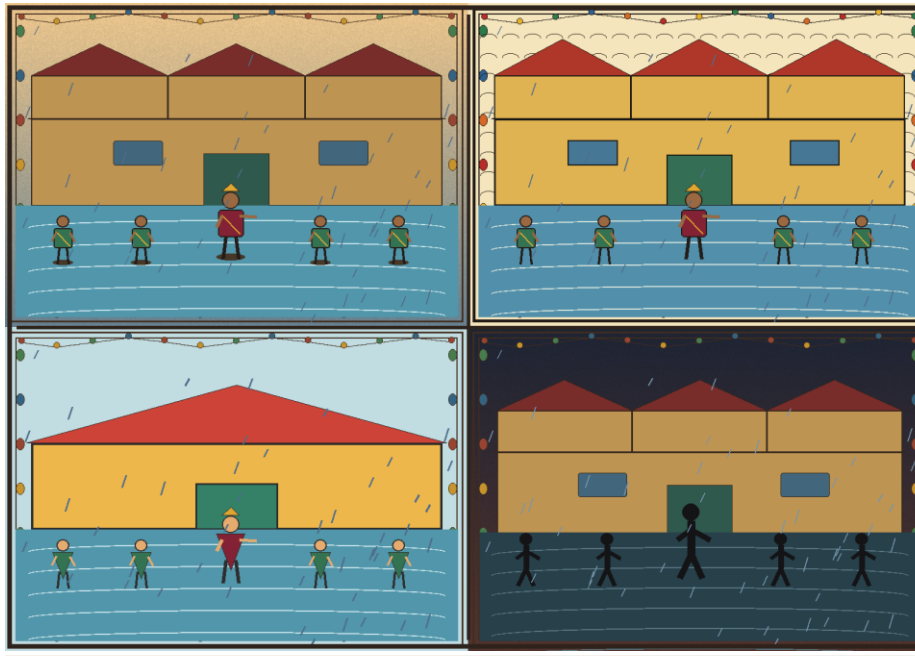

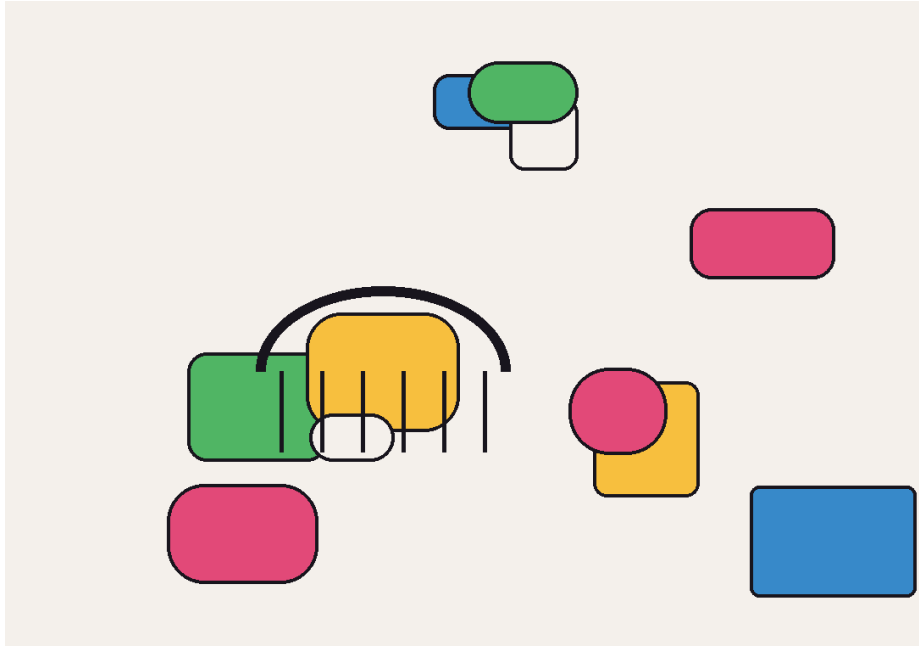

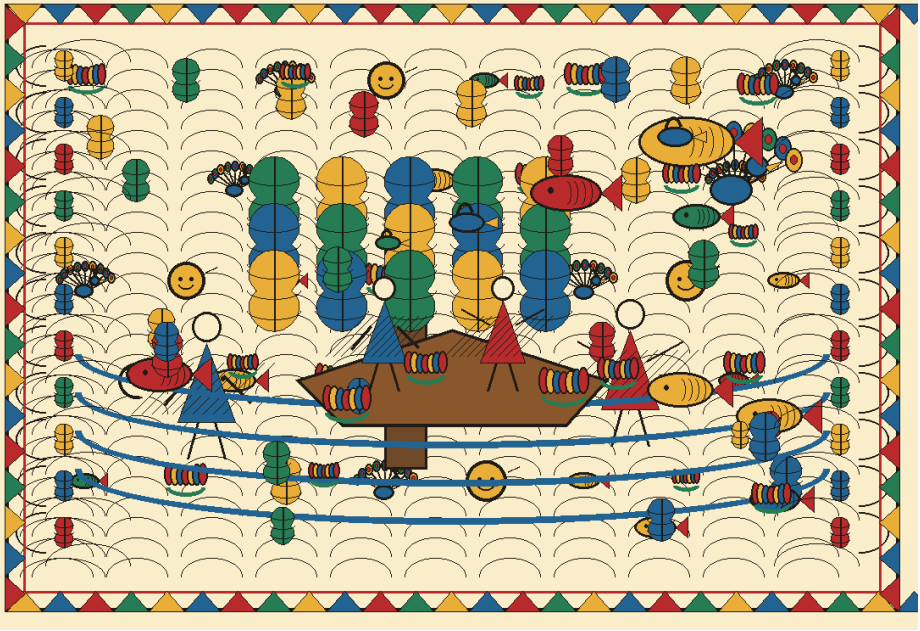

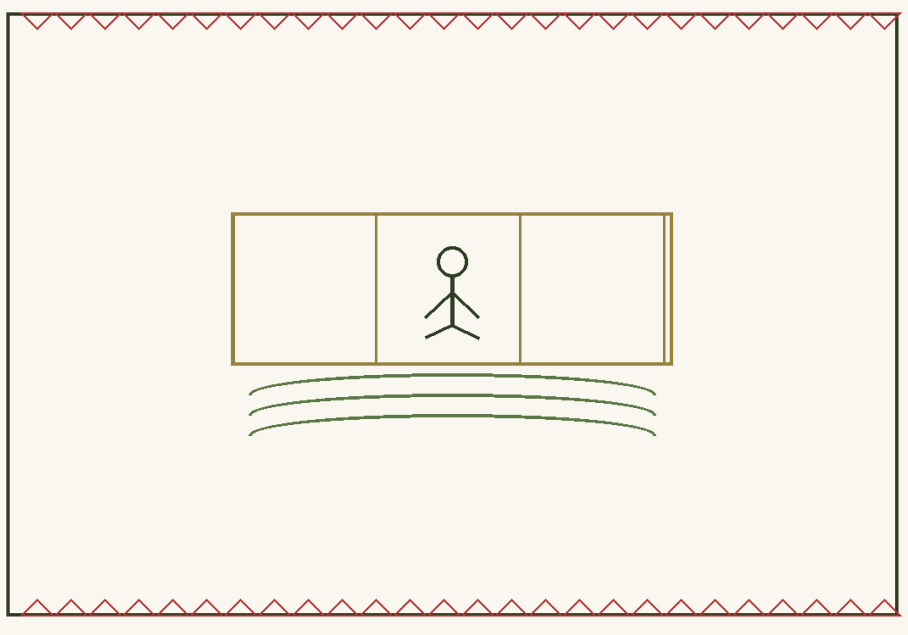

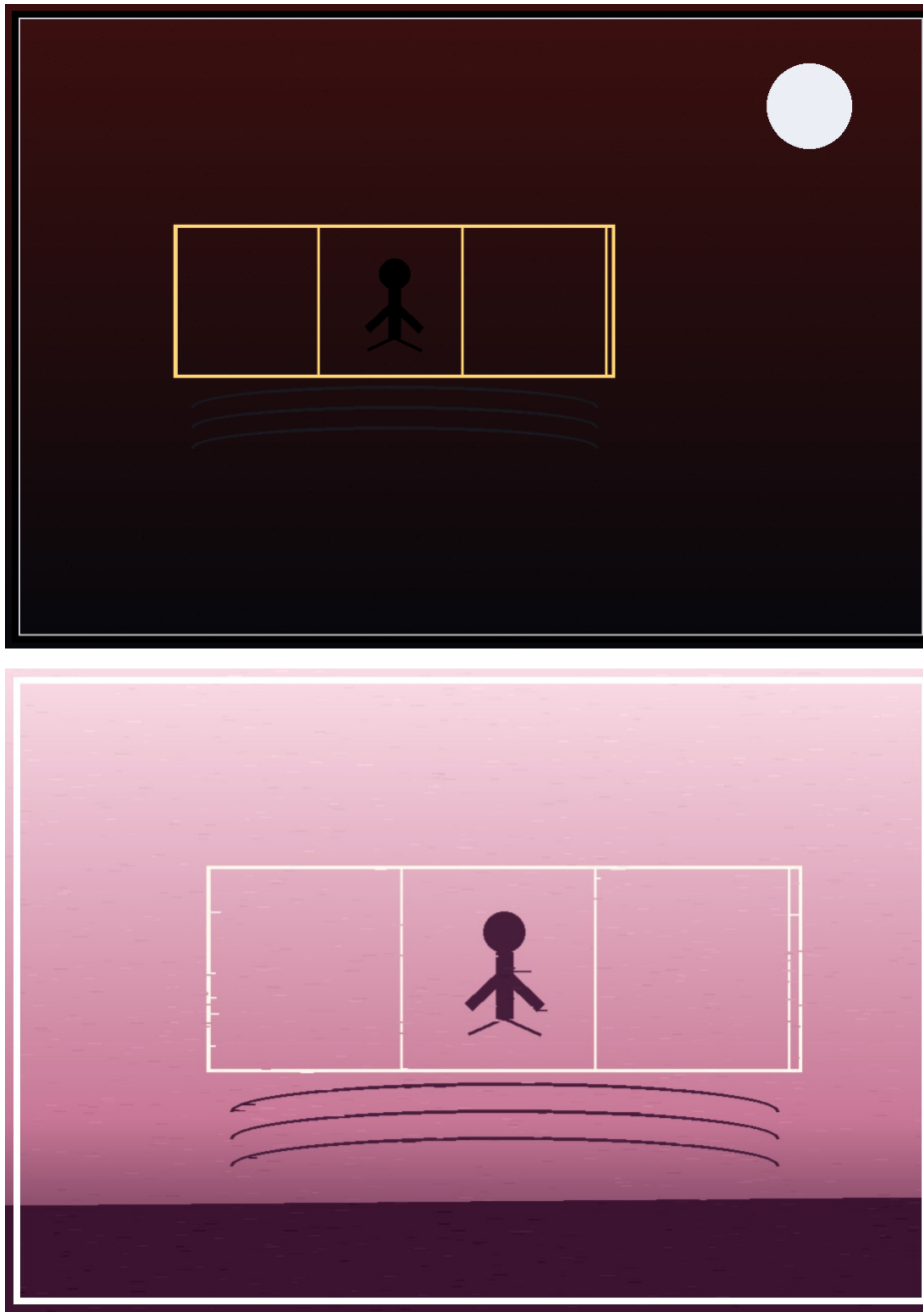

चित्र 11

गायन चलैत रहल, आ बरखा बढ़ैत गेल। एतेक बरखा, जे किछुए कालमे बरखाक पानि दरबारेमे प्रवेश कऽ गेल! राजसभाक चिक्कन फर्शपर पानिक धार — आ ओहि धारमे दरबारी सभक प्रतिबिम्ब हिलैत-डोलैत, हँसैत।

माधव सिंह सिंहासनसँ उठि ठाढ़ भेलाह। राजाक आँखिमे कृतज्ञता छल — मुदा संगहि राजाक चिन्ता सेहो: वर्षा प्रचुर भेल, मुदा कतहु एहन त' नहि जे कमी रहि गेल हो?

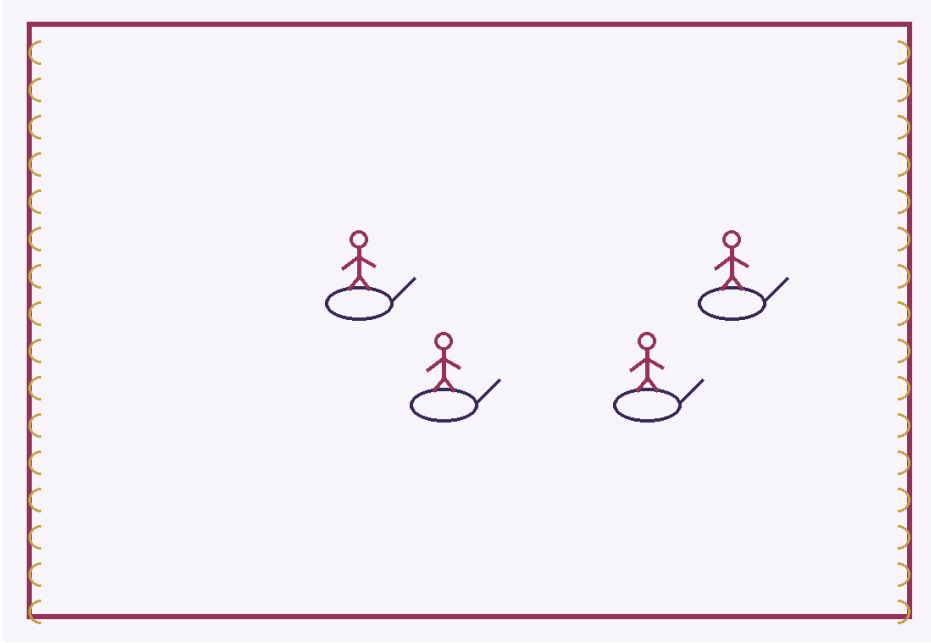

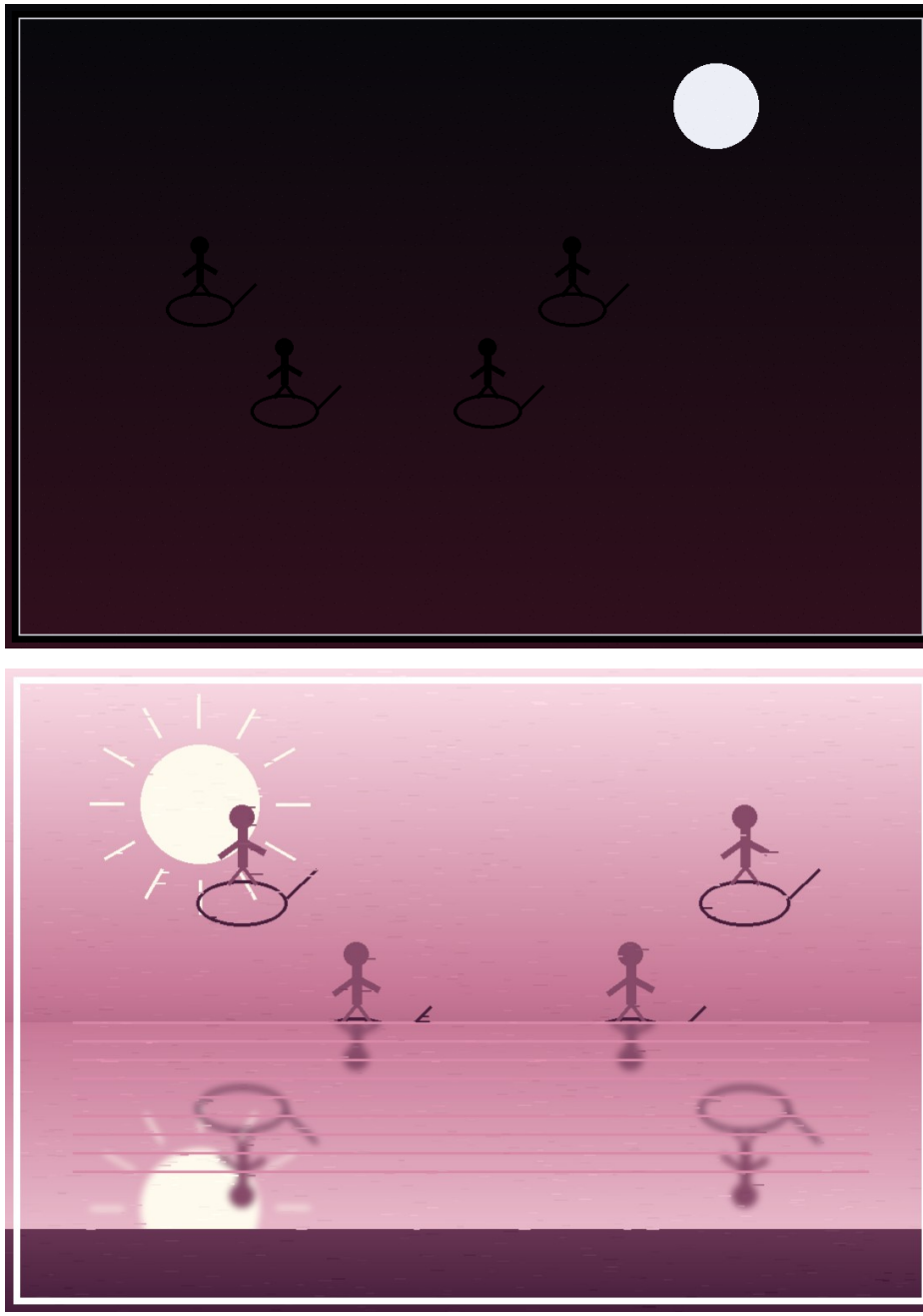

चित्र 12

दूत सभ चारू दिस दौड़ाओल गेलाह — 'देखू, राज्यमे कतहु रुक्ख (सुखाड़) त' नहि रहि गेल?' दूत घोड़ापर गाम-गाम गेलाह: पूब, पछिम, उत्तर, दक्षिण।

आ उत्तर आएल — 'महाराज, कतहु रुक्ख नहि। सगरो पानि, सगरो तृप्ति।' तखन जा कऽ राजा संकेत देलनि, आ गायन विश्राम भेल। स्वर थम्हल, थाप थम्हल — मुदा बरखा? बरखा अपन लयमे बरसिते रहल, जेना राग आकाशकेँ कण्ठस्थ भऽ गेल हो।

अध्याय 7 : राजाक कृतज्ञता

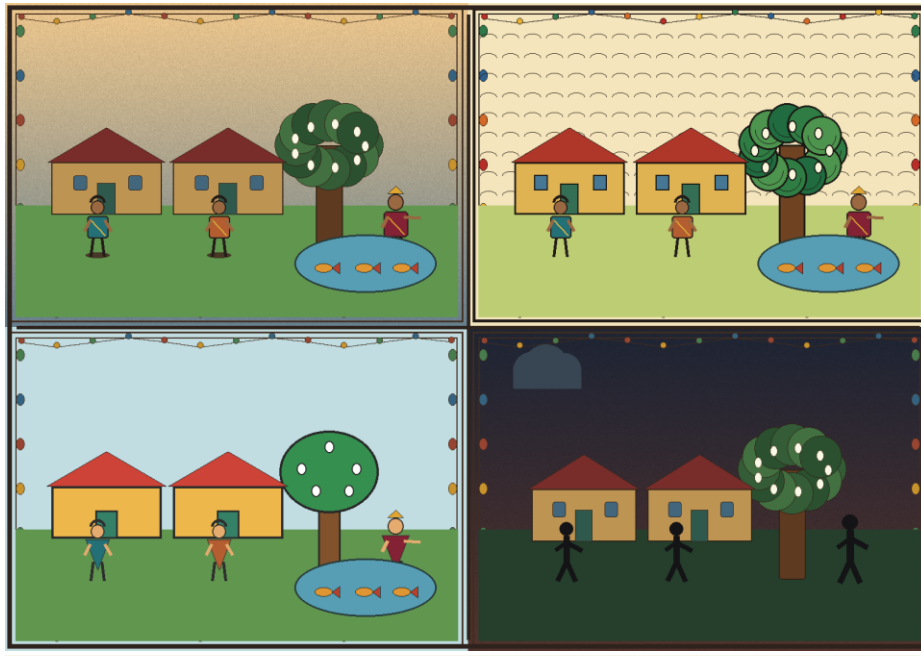

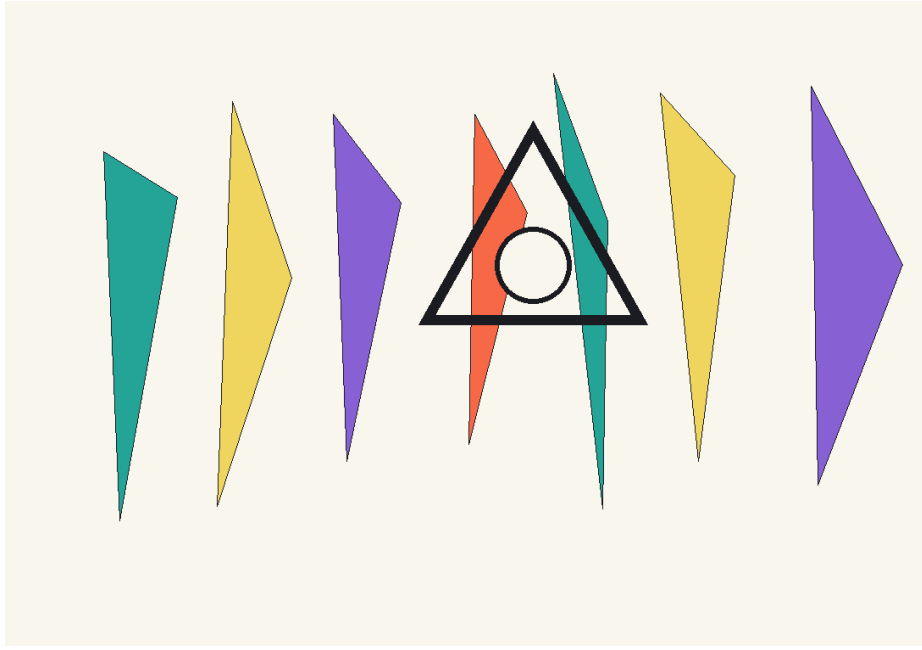

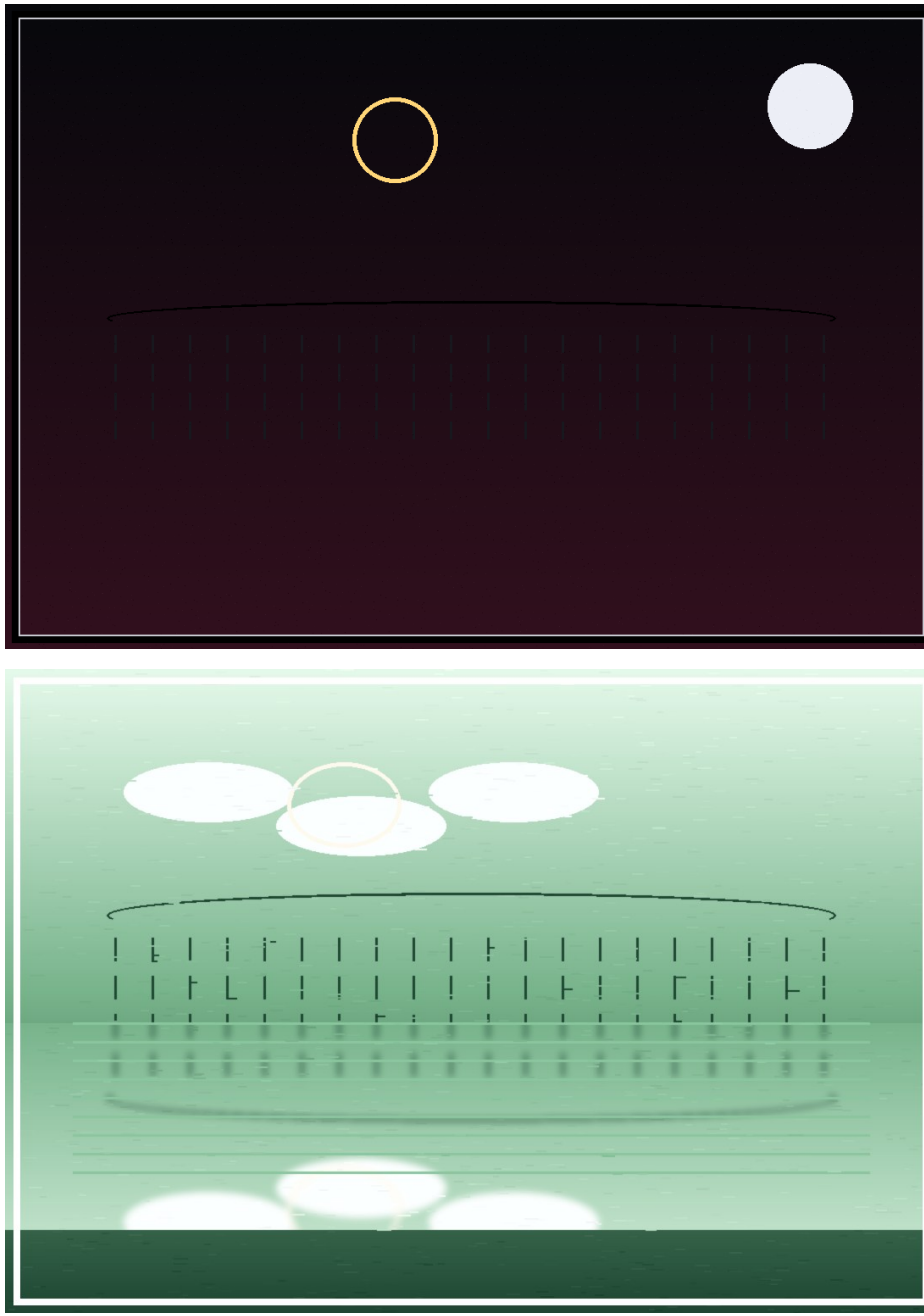

चित्र 13

मिथिला जीबि उठल। पोखरि भरल, खेत हरियाएल, डबरामे फेर माछ खेलाए लागल। आ राजा माधव सिंहक आगाँ आब एकटा प्रश्न छल — एहि उपकारक प्रतिदान की?

धन? गबैया लेल धन थोड़ेक ठाम राखैत अछि। पदवी? साधककेँ पदवीसँ की? राजा बहुत सोचलनि, आ फेर ओ केलनि जे कोनो राजा कमे करैत अछि — ओ गबैया भाइ-लोकनिकेँ जीवनक सुख देलनि: बसोबासक ठाम।

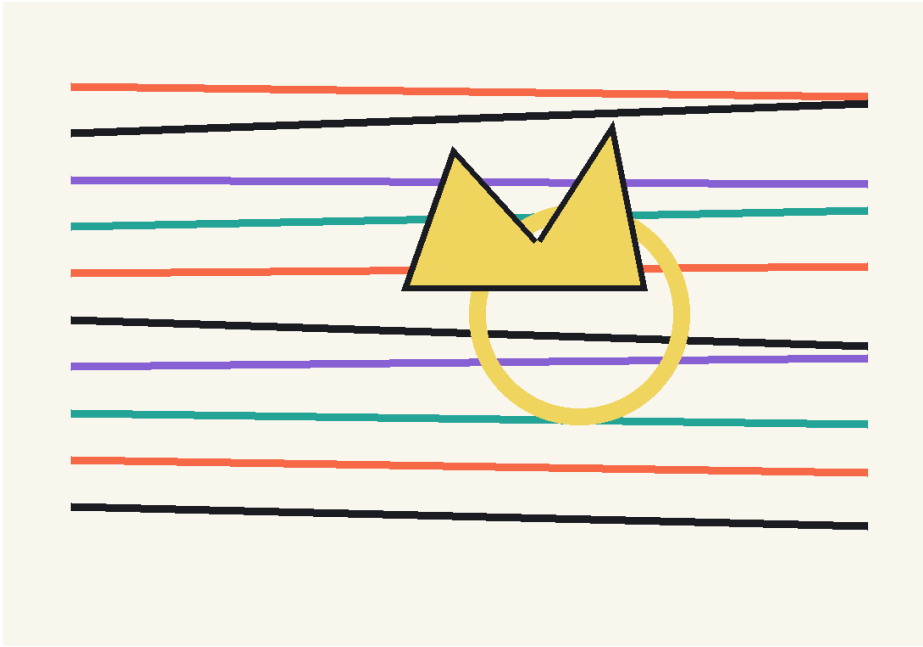

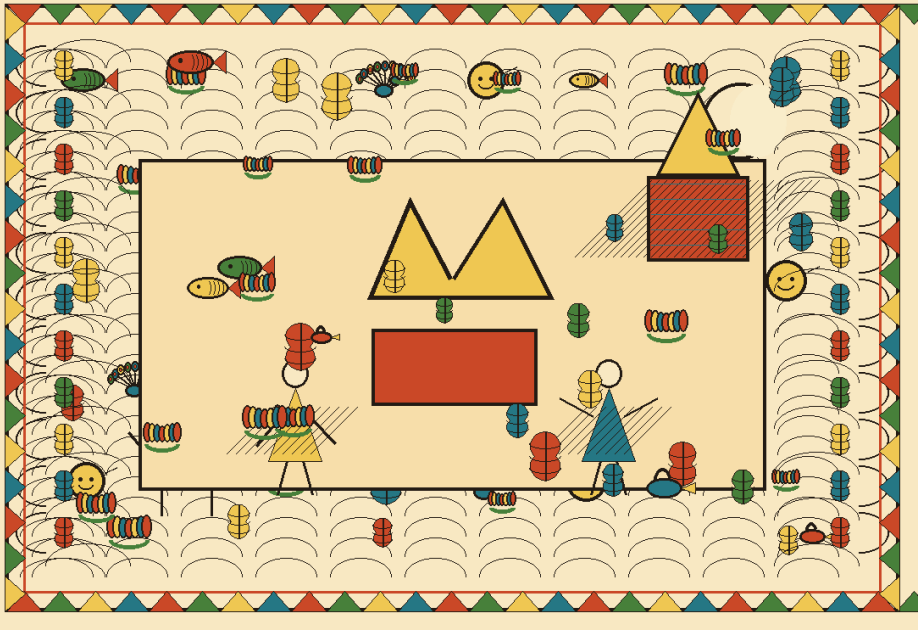

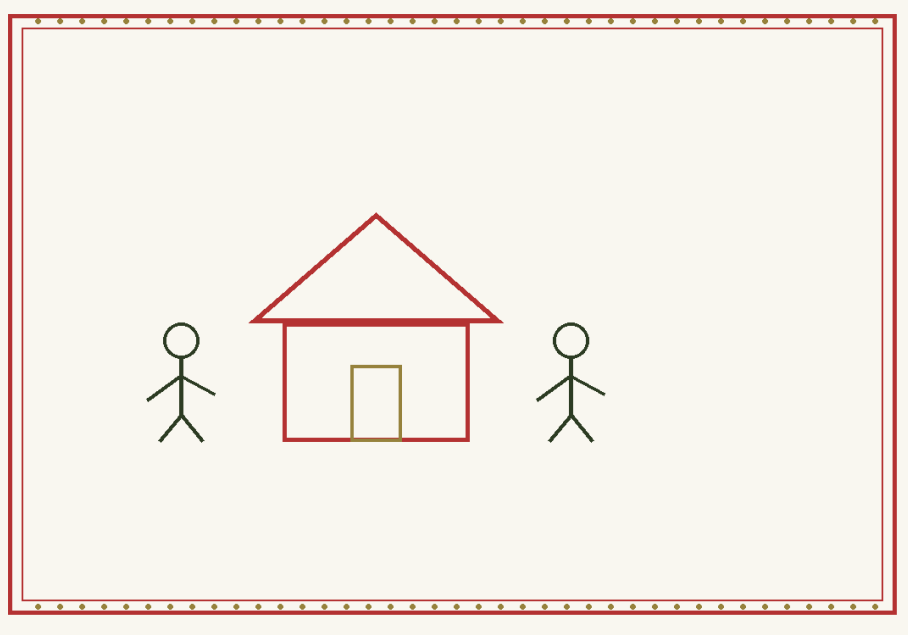

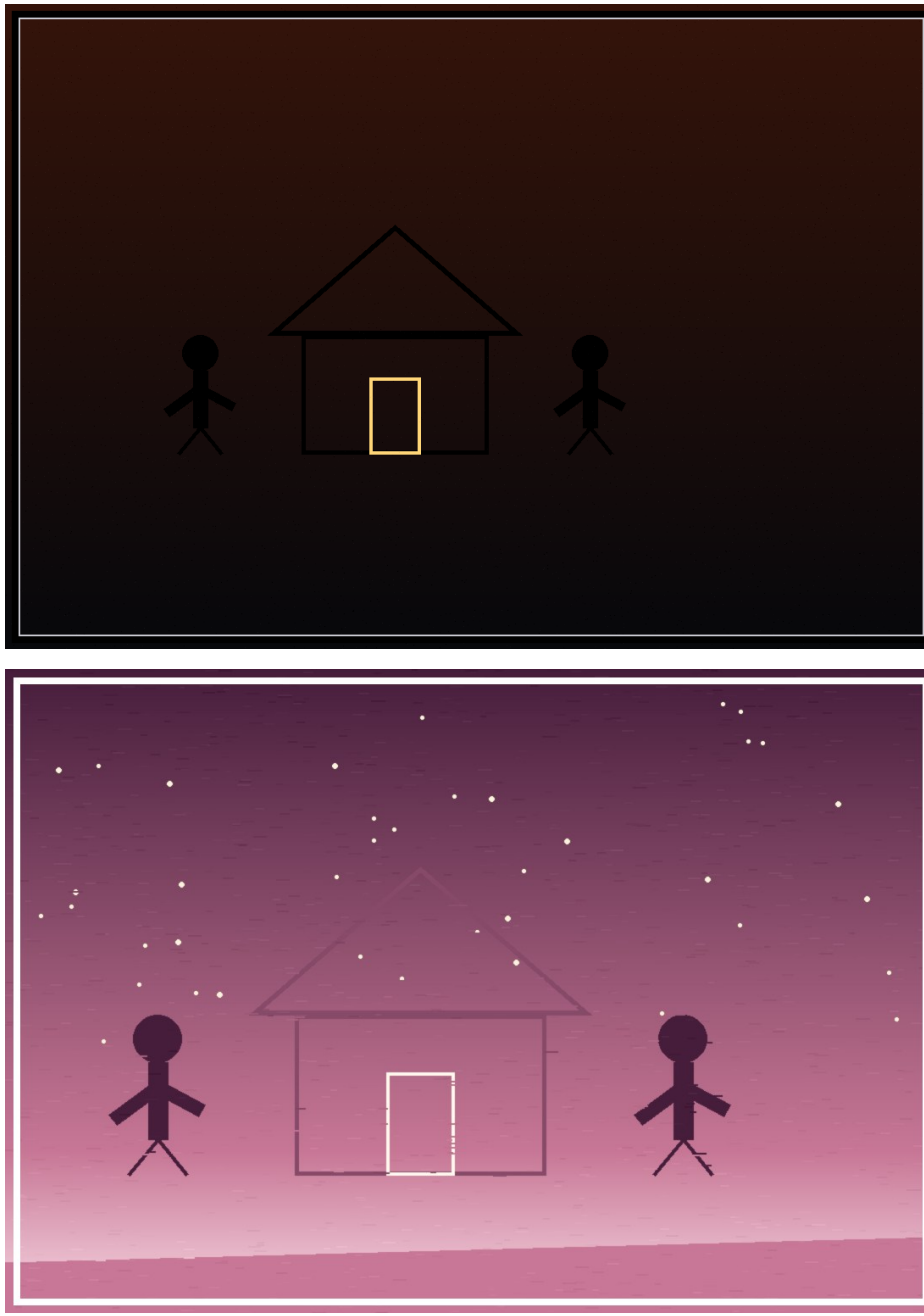

चित्र 14

अमता गाम — मिथिलाक एकटा शान्त, सुन्नर गाम — राजा दुनू भाइकेँ घर बना कऽ देलनि, आ रहबाक पूर्ण प्रबन्ध। संगीतज्ञ लेल एहिसँ पैघ उपहार की जे एकटा एहन ठाम भेटए जतय ओ निश्चिन्त भऽ कऽ रियाज करए?

आ अमता गाममे एकटा आर विलक्षण वस्तु छल — खीरीक गाछ। कहल जाइत छल जे ओकर फरमे दूध होइत छै! जेना ओ गामक माटिये एहन छल जे गाछो अमृत उपजबैत छल। संगीत, खीरीक गाछ, आ अमता — तीनू मिलि कऽ मिथिलाक नक्शापर एकटा एहन बिन्दु बनल जतय राजाक मोन बेर-बेर घुरि-घुरि जाइत छल।

अध्याय 8 : अमता गामक साँझ

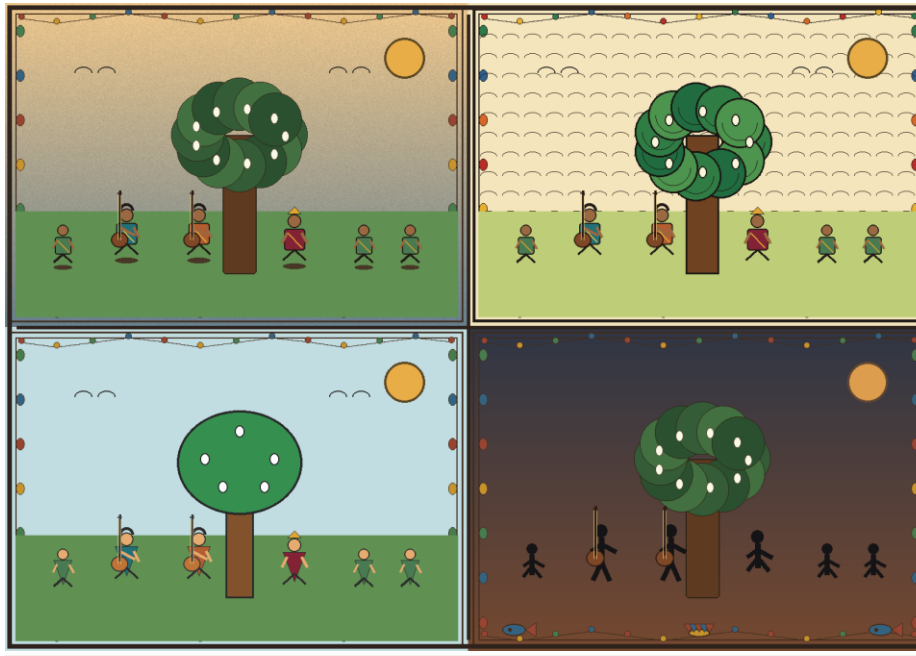

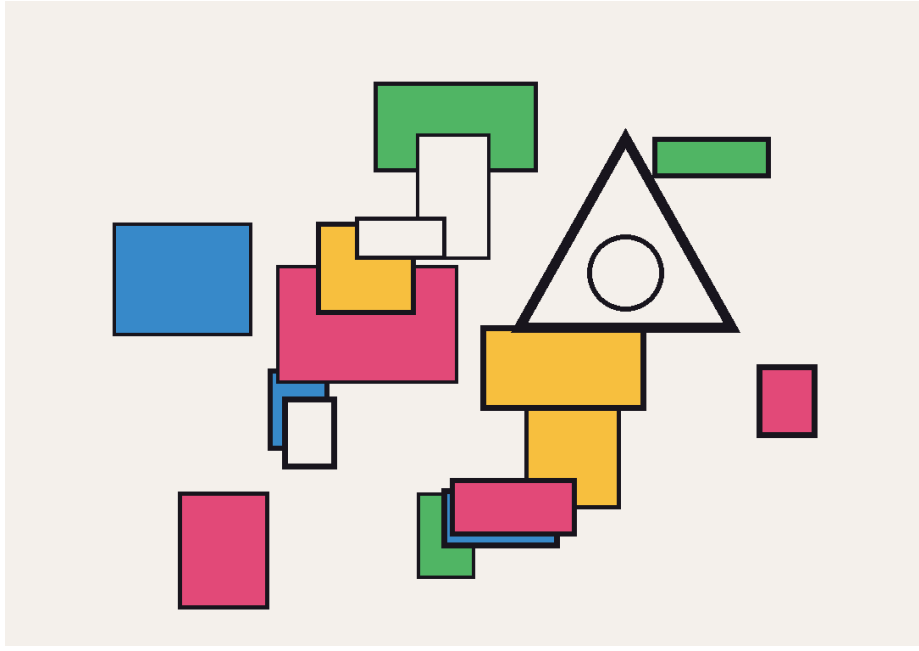

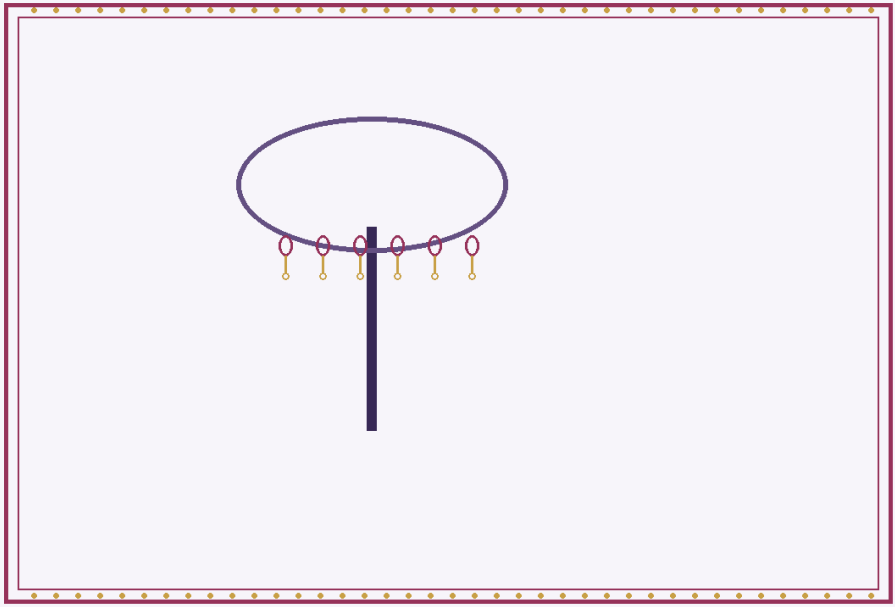

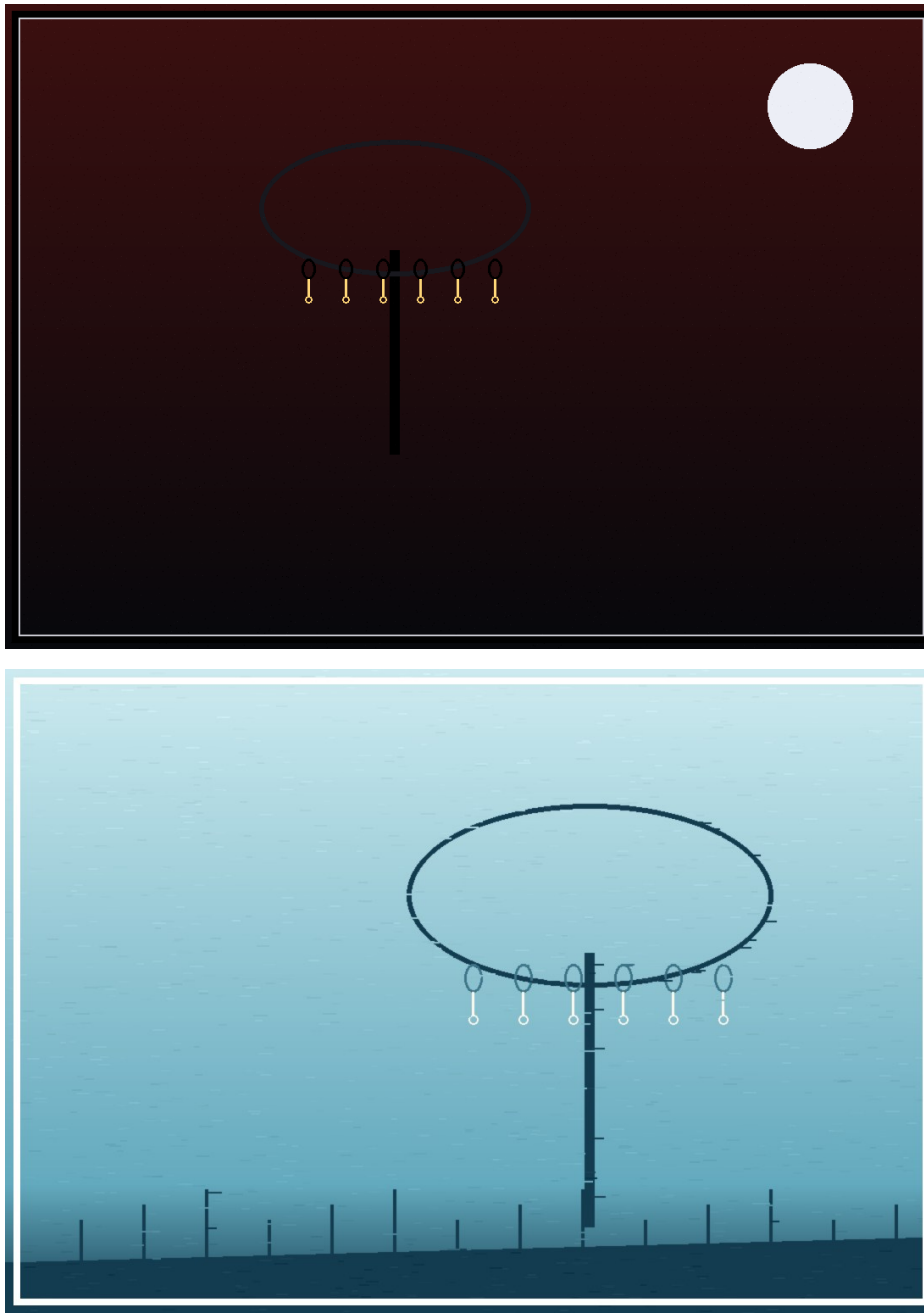

चित्र 15

आब राजा माधव सिंहक जीवनमे एकटा नव नेम जुड़ि गेल — ध्रुवपद सुनबा लेल अमता गाम जाएब।

राजसी ठाट-बाट नहि — साँझखन सादा सवारी, थोड़ेक संगी, आ अमताक बाट।

ओतय खीरीक गाछक छाहमे बैसक जमैत: राधाकृष्ण आ करताराम स्वर उठाबथि, आ राजा आँखि मूनि सुनथि — राजा नहि, श्रोता बनि कऽ।

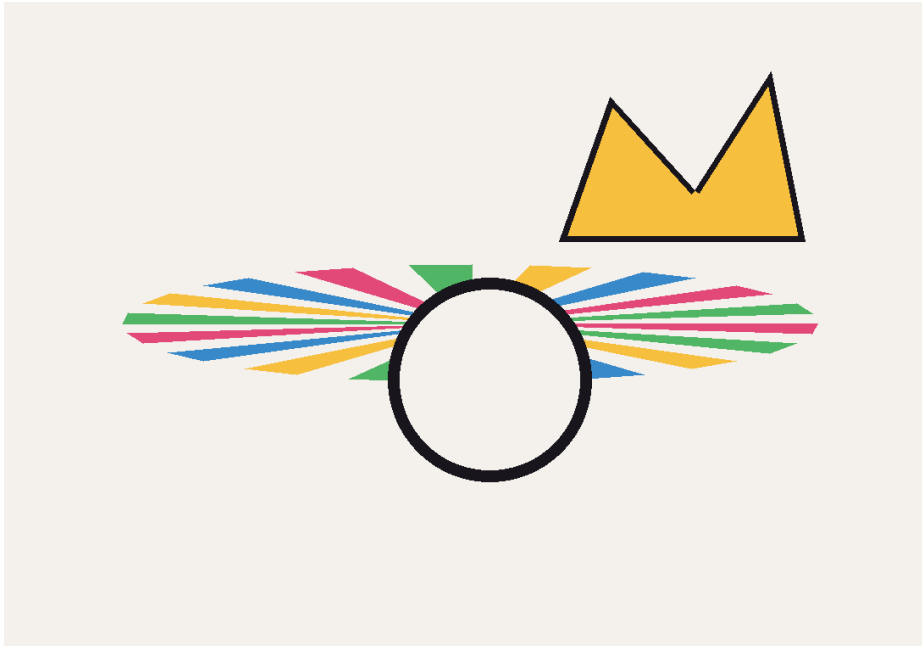

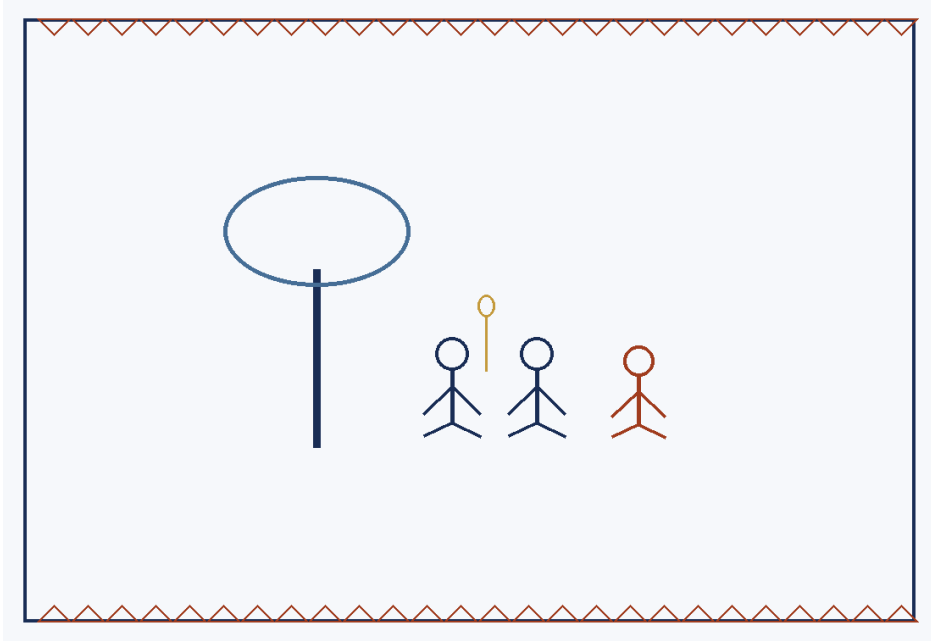

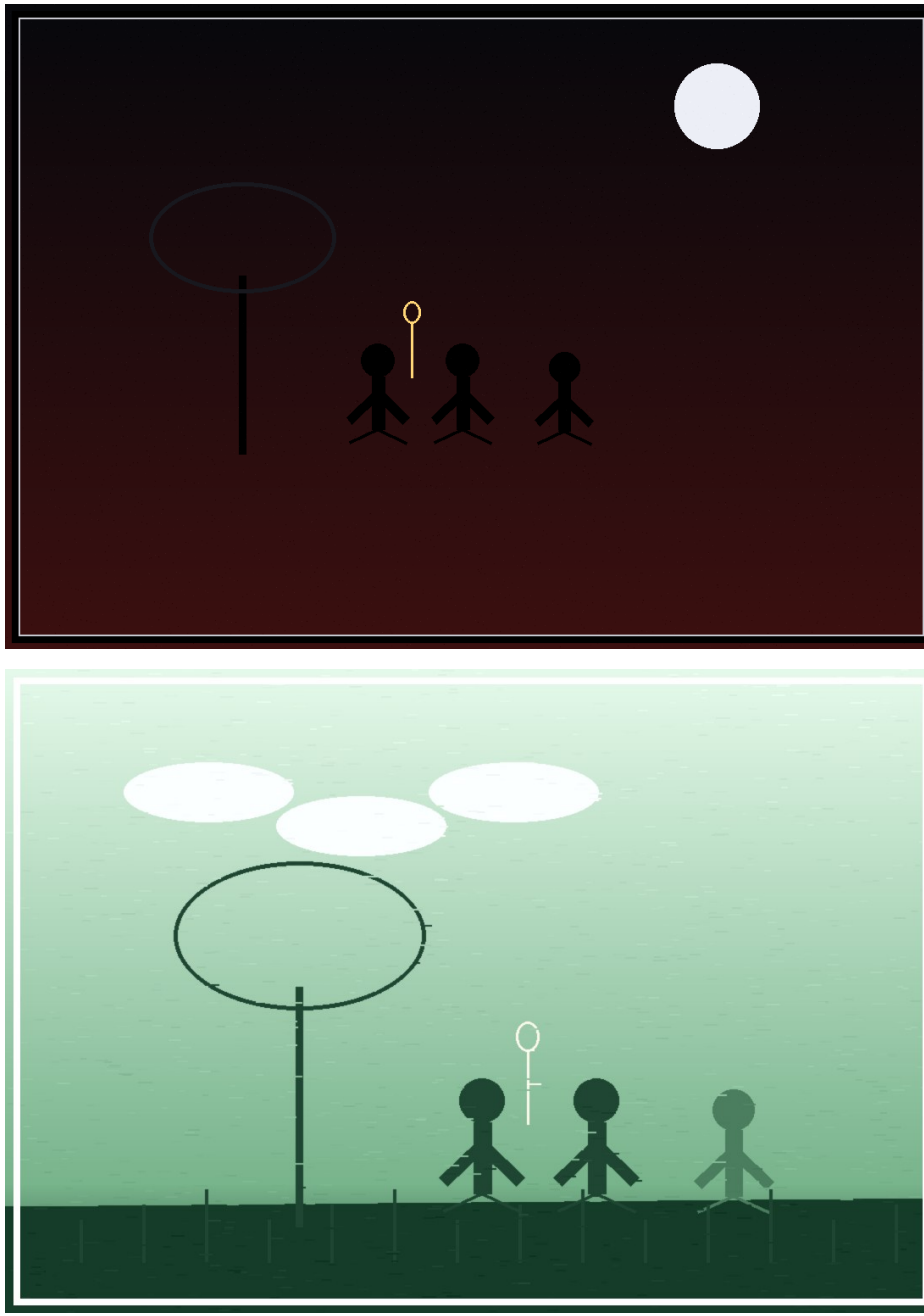

चित्र 16

ओहि बैसकमे सिंहासन नहि रहैत छल। स्वरक आगाँ सभ बराबरि — राजा, गबैया, गामक लोक, आ गाछपर बैसल चिड़ै सभ। ध्रुवपदक गम्भीर आलाप साँझक हवामे घुलैत, आ अमता गाम मिथिलाक संगीत-तीर्थ बनैत गेल।

बरख बीतैत गेल। राजाक केश उज्जर भेल, डेग धीमा भेल — मुदा अमताक बाट आ ध्रुवपदक प्रेम, ई दूटा वस्तु बुढ़ापाक कोनो नियम नहि मानलक। लोक कहए — 'महाराजक देहमे आब जतबा प्राण अछि, ओहिमे सँ आधा अमताक स्वरे थिक।'

अध्याय 9 : अन्तिम इच्छा

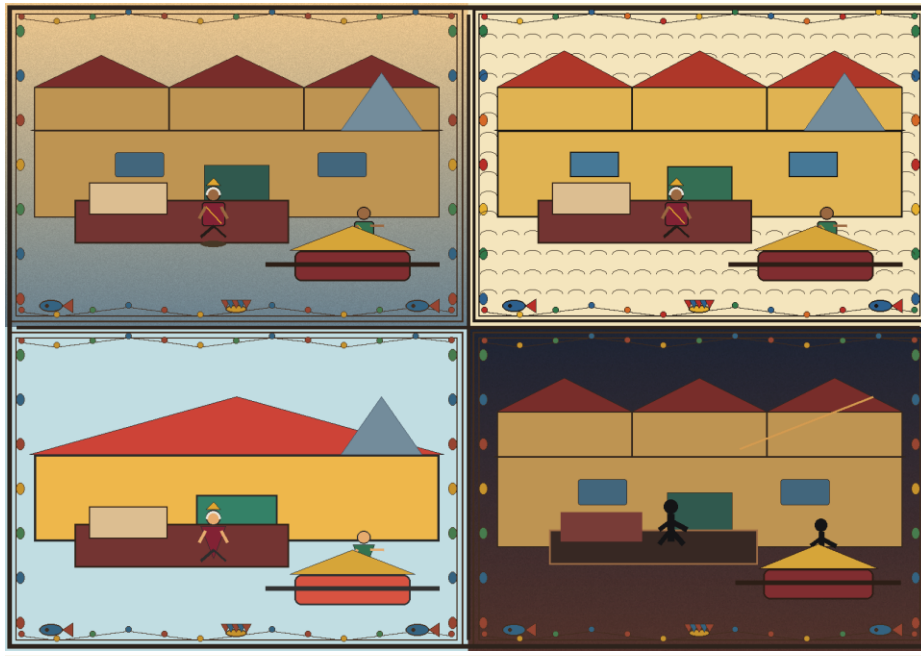

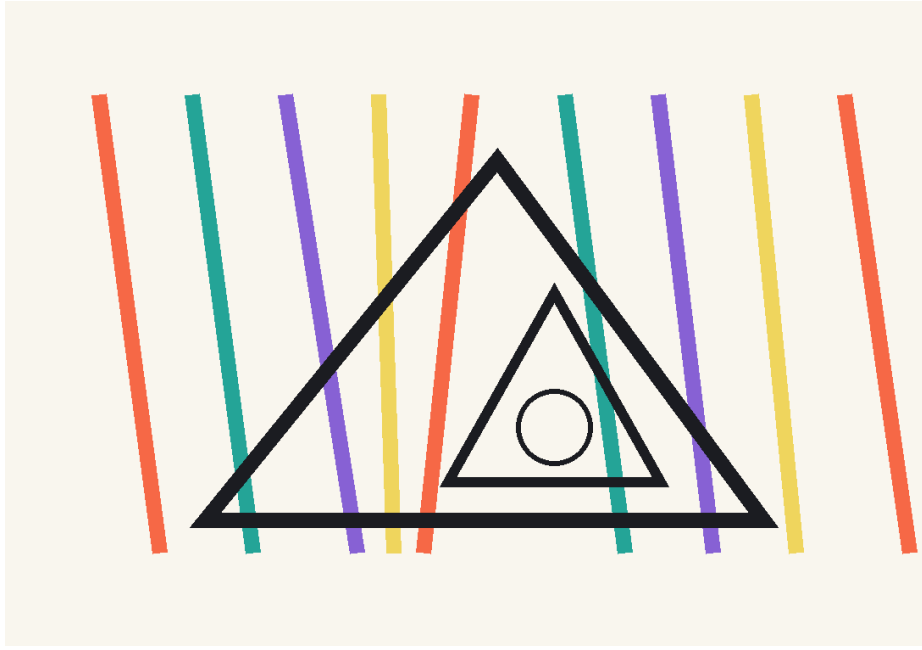

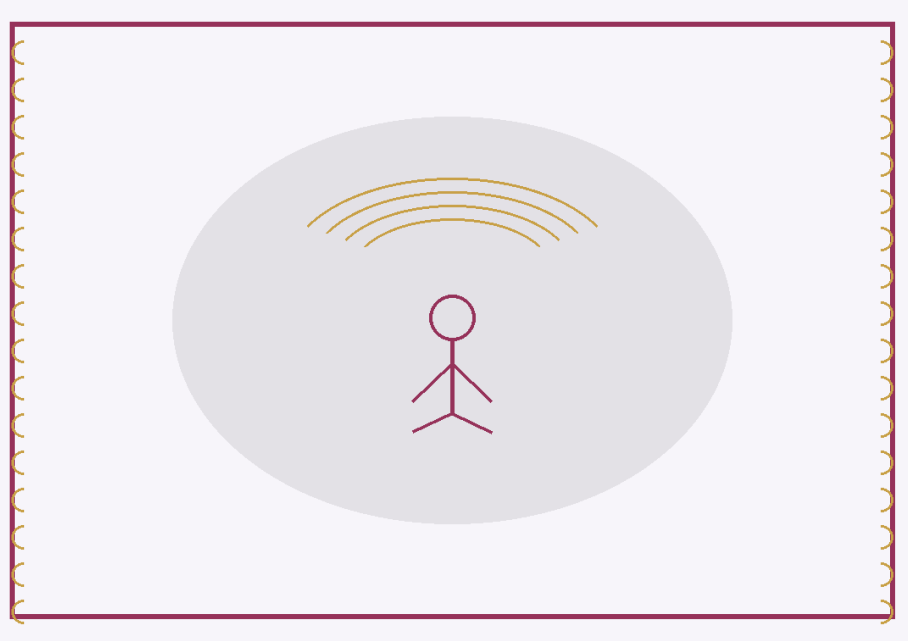

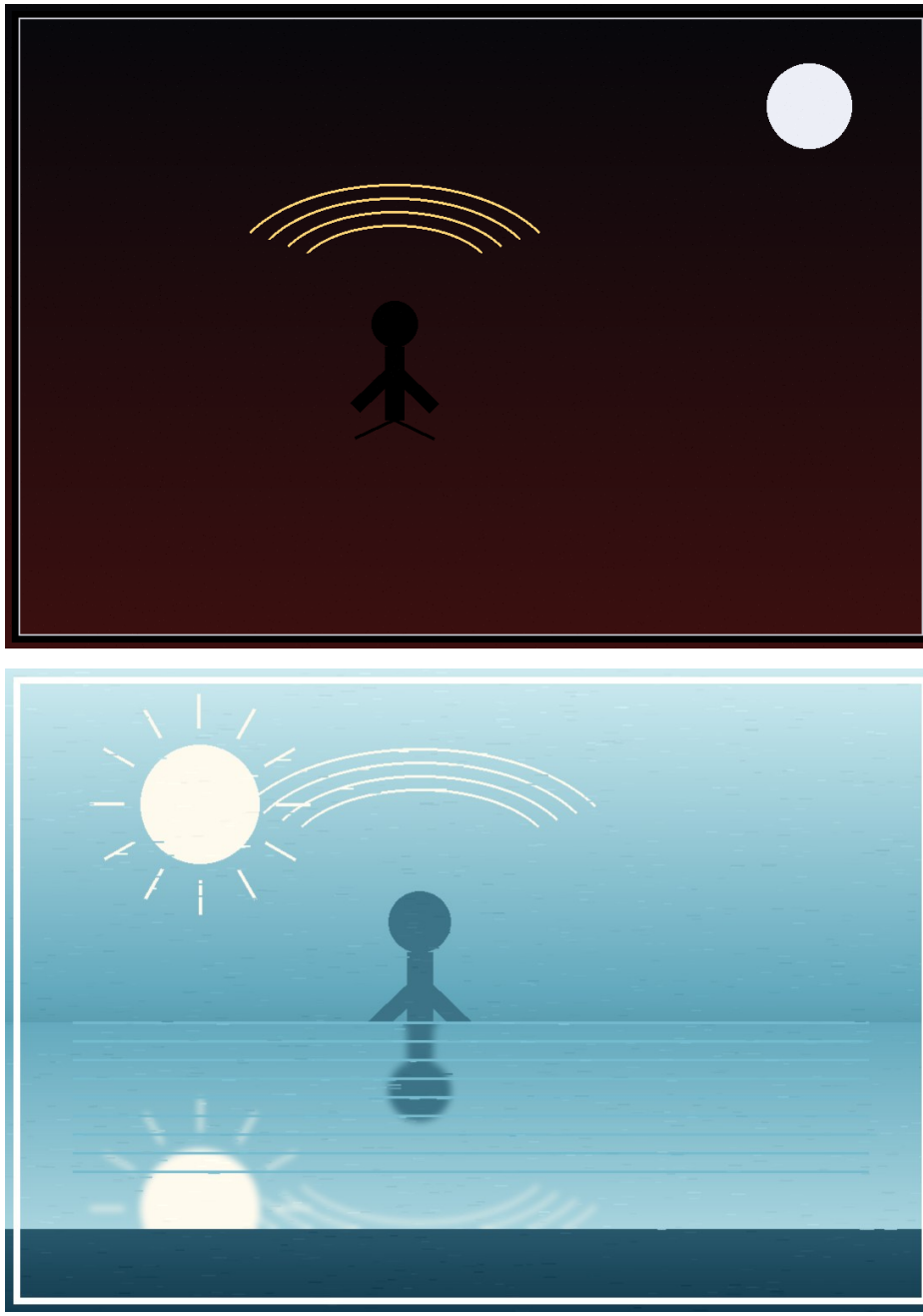

चित्र 17

आ फेर आएल ओ बेर, जे सभक जीवनमे अबैत अछि — राजा माधव सिंहक मृत्युकाल।

देह शय्यापर, वैद्य निरुपाय, दरबार चिन्तित। मुदा राजाक आँखिमे मृत्युक भय नहि छल — एकटा दोसरे तृष्णा छल। ओ धीमा स्वरमे कहलनि — 'हमरा... अमता लऽ चलू। एक बेर... ध्रुवपद...'

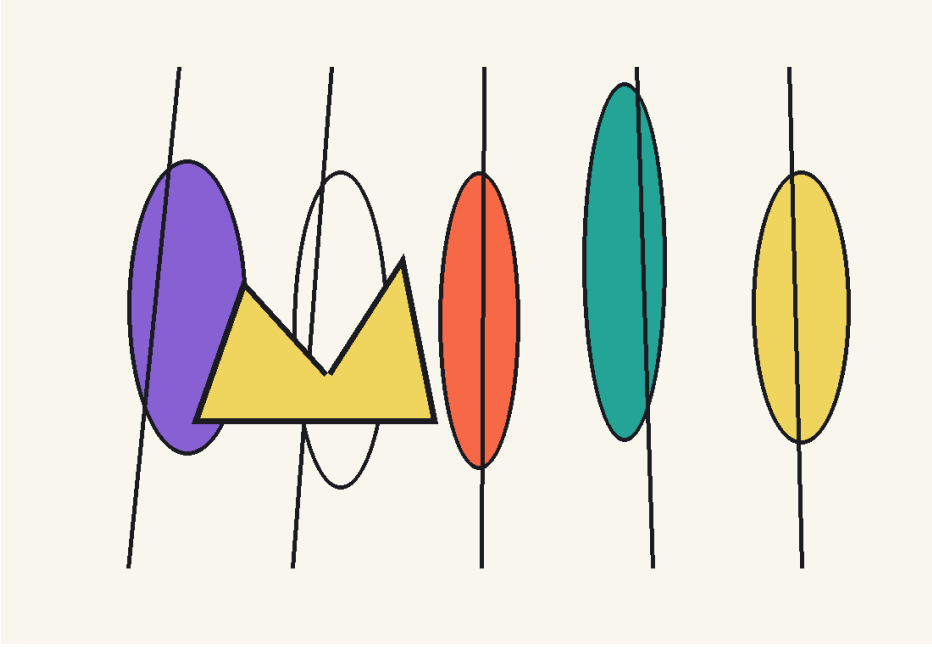

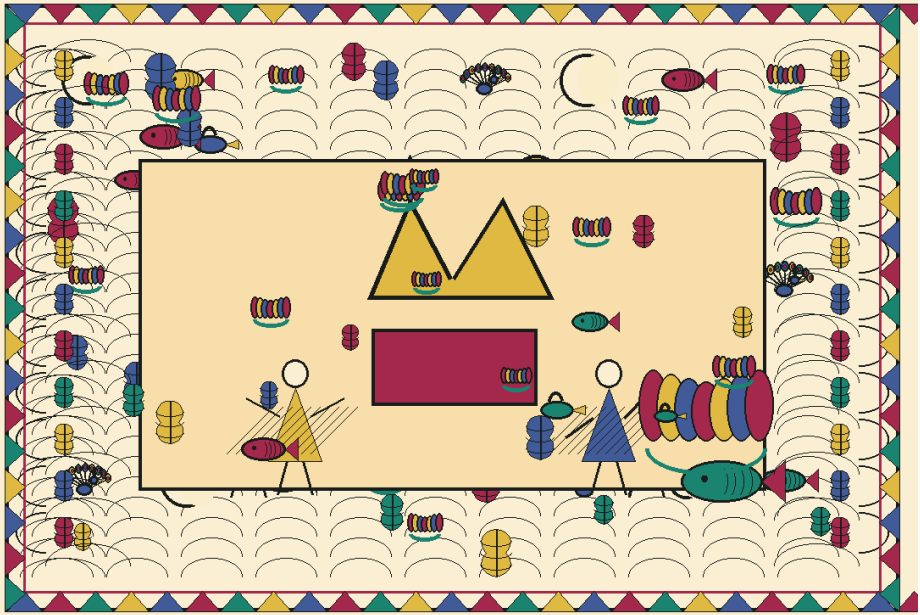

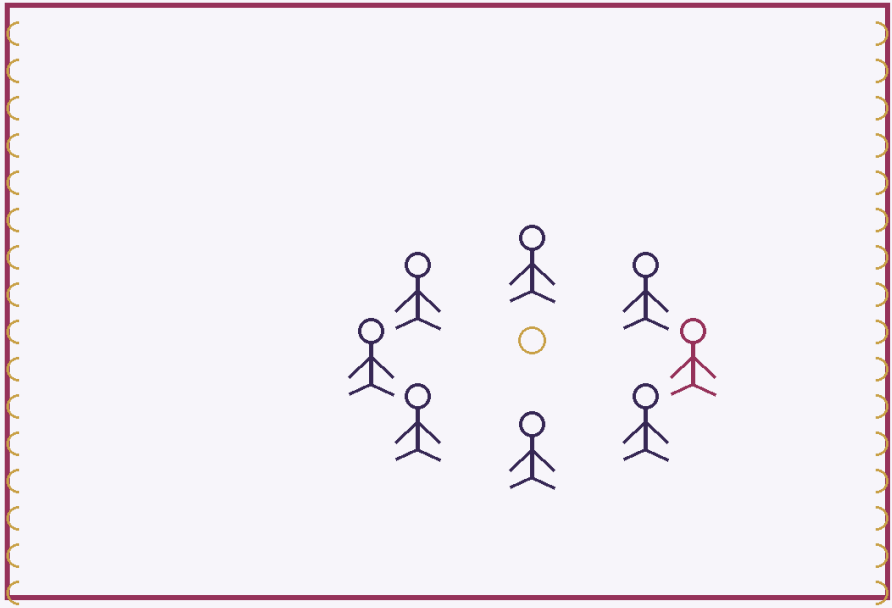

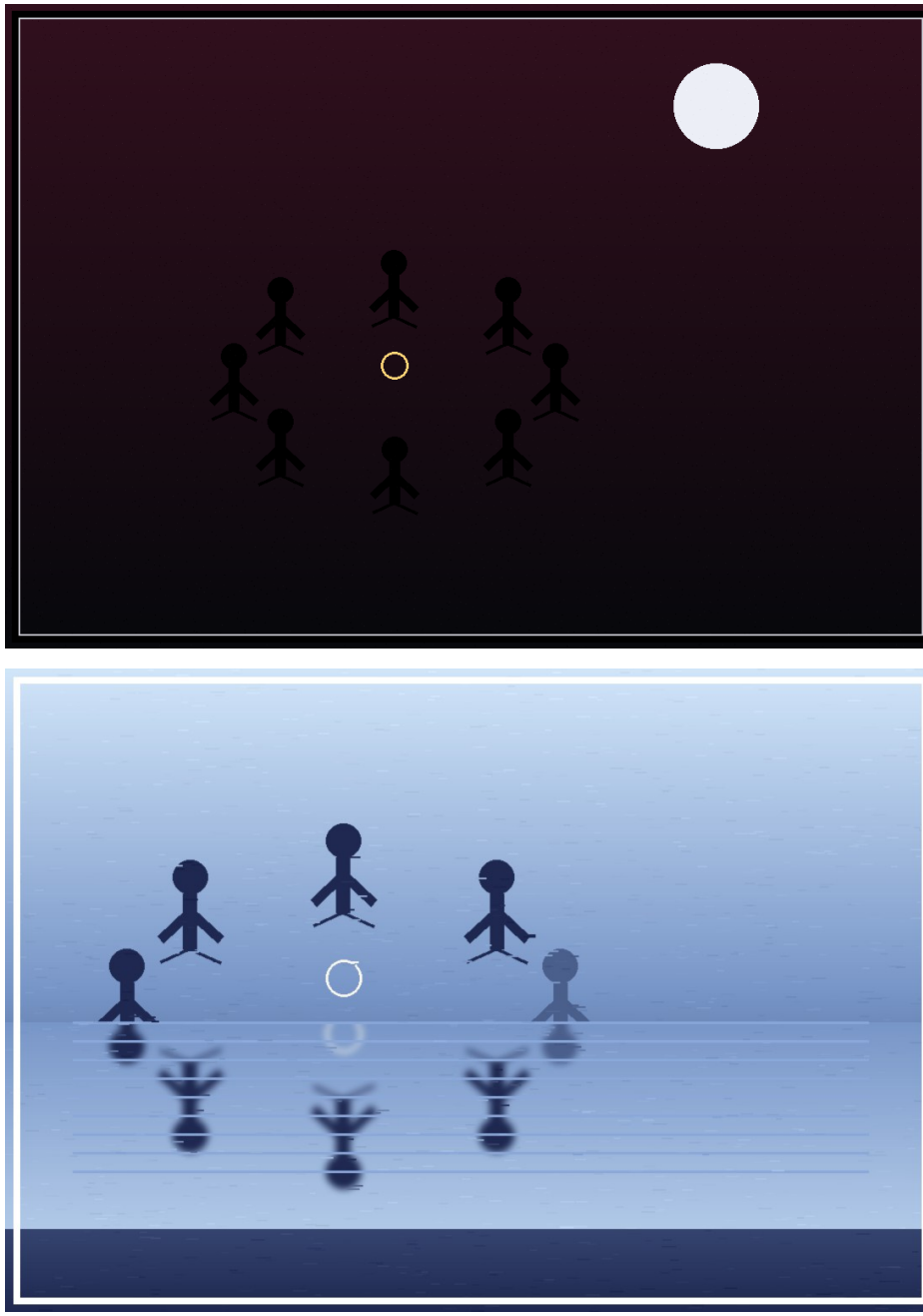

चित्र 18

अन्तिम इच्छा — मरणासन्न राजा राग सुनए चाहैत छलाह। ने राजपाटक कोनो बात, ने उत्तराधिकारक चिन्ता — खाली ओ स्वर, जे कहियो आकाशसँ पानि उतारि अनने छल। कदाचित् राजाकेँ लगैत छलनि जे जे राग मरैत मिथिलाकेँ जिया देलक, से हुनको प्राणकेँ शान्तिसँ बिदा कऽ देत।

सवारी सजाओल गेल। मृत्युशय्या पालकी बनल, आ काफिला अमता दिस बिदा भेल — धीमा-धीमा, जेना हर डेगपर समयसँ भीख माँगैत हो: 'कनी आर... बस अमता धरि...'

अध्याय 10 : रस्तेमे

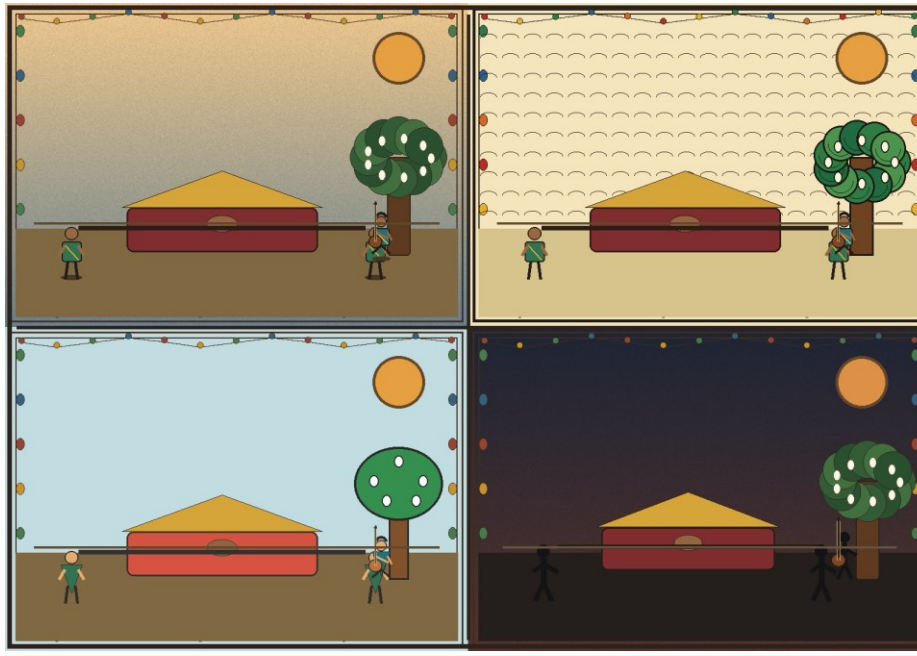

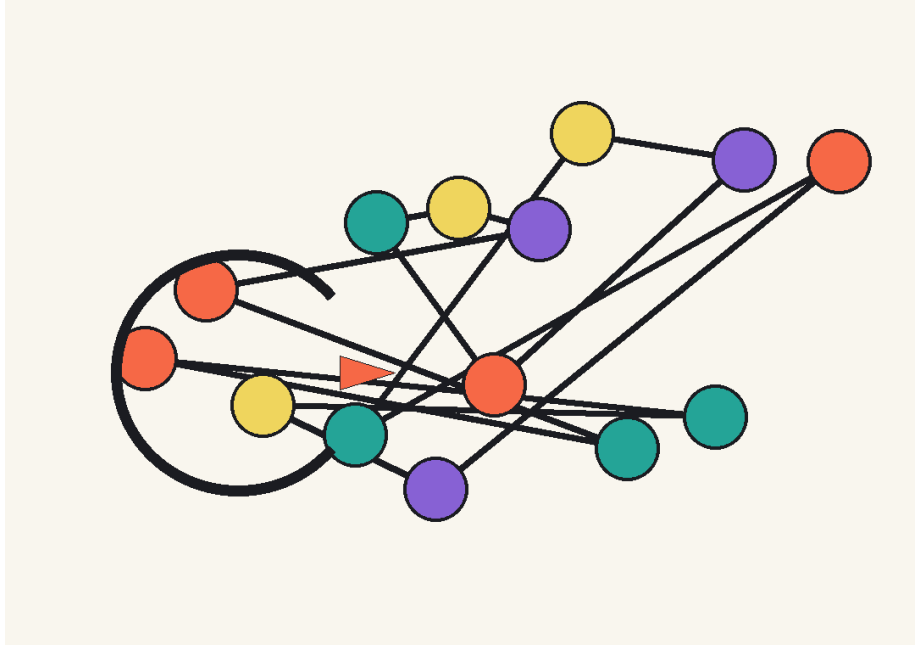

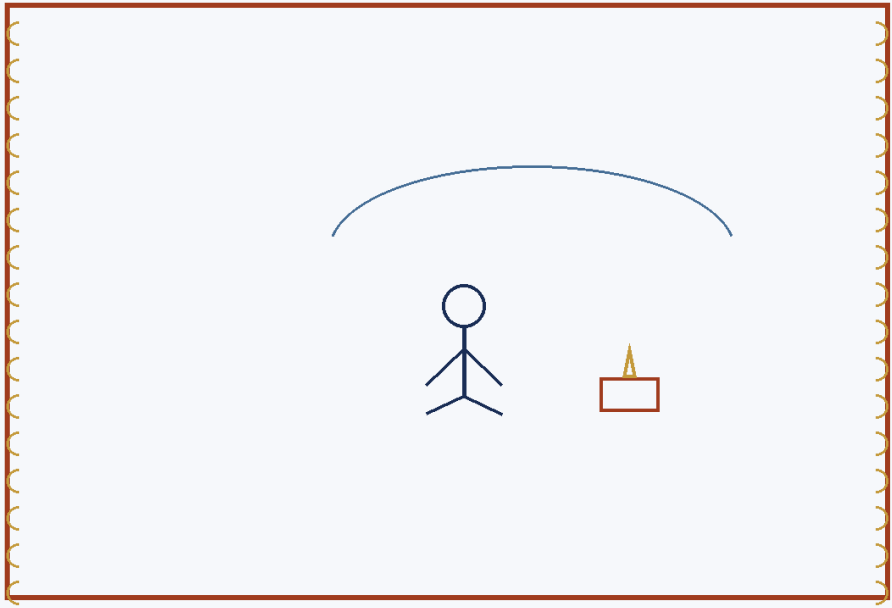

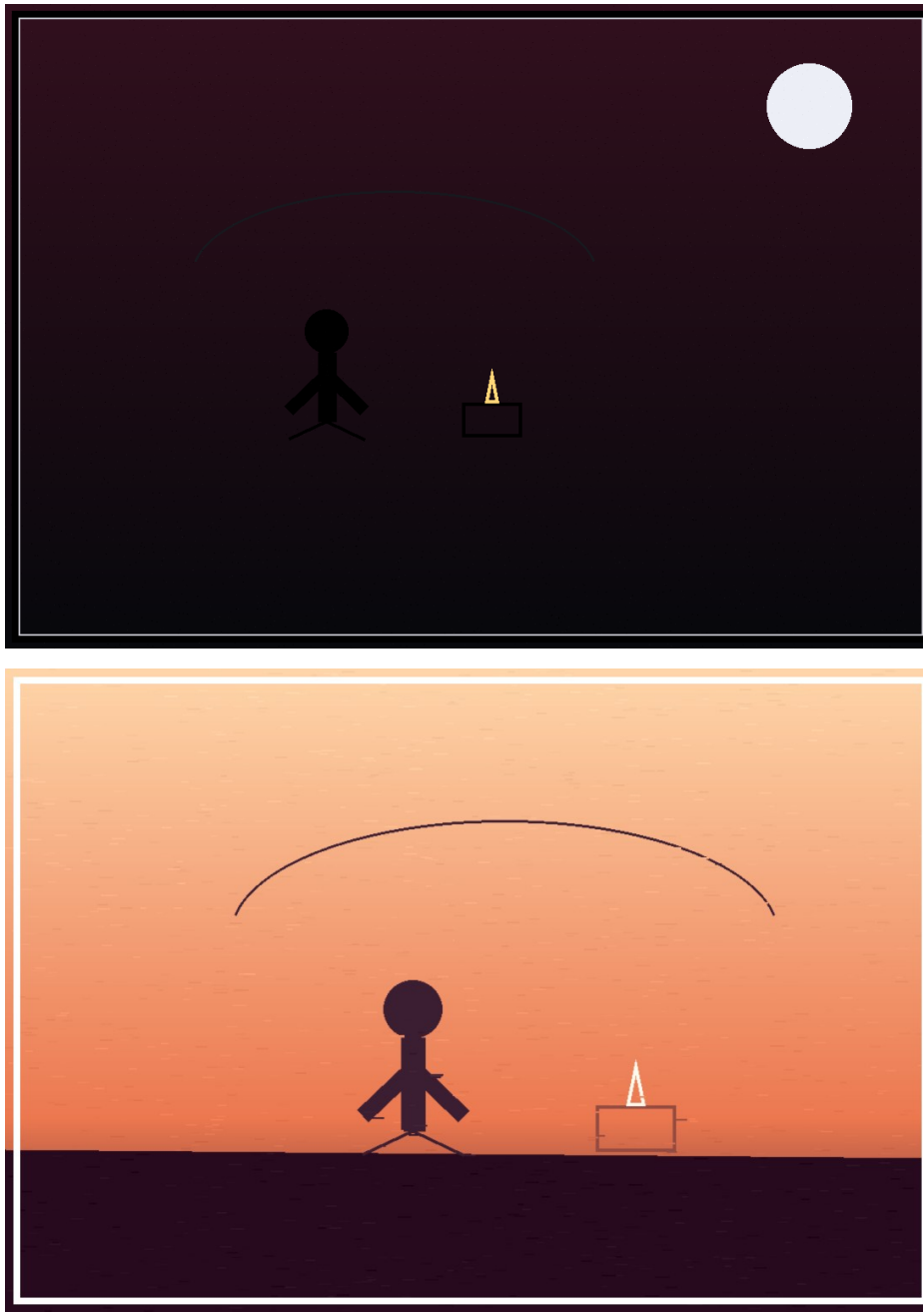

चित्र 19

मुदा समय भीख नहि दैत।

अमताक बाट एखन बाँकिये छल कि पालकीक भीतरक साँस थम्हि गेल। राजा माधव सिंह — मिथिलाक स्वर-प्रेमी राजा — ध्रुवपद सुनबाक अन्तिम इच्छा नेने, रस्तेमे, चलि बसलाह।

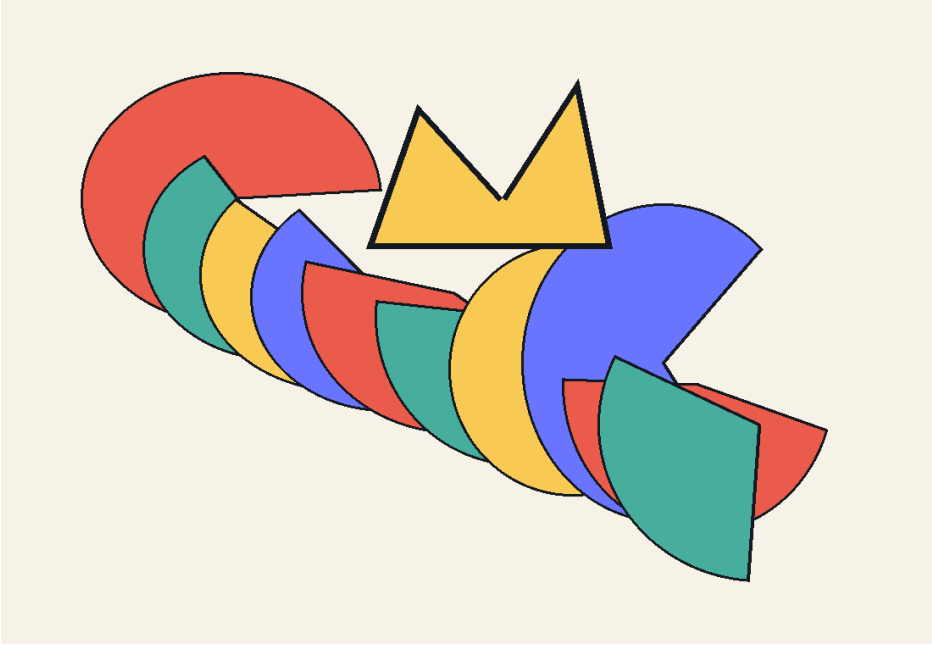

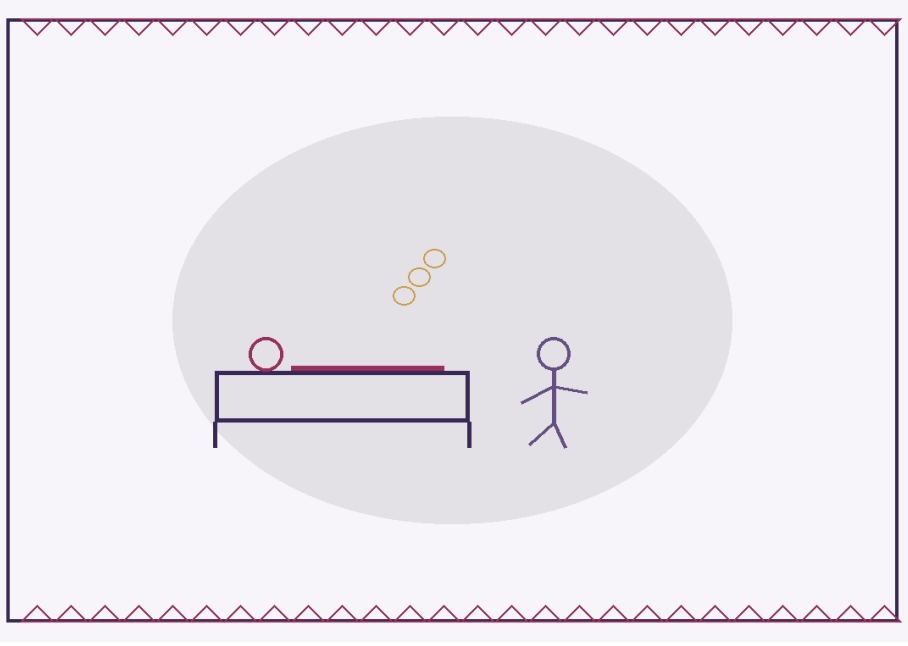

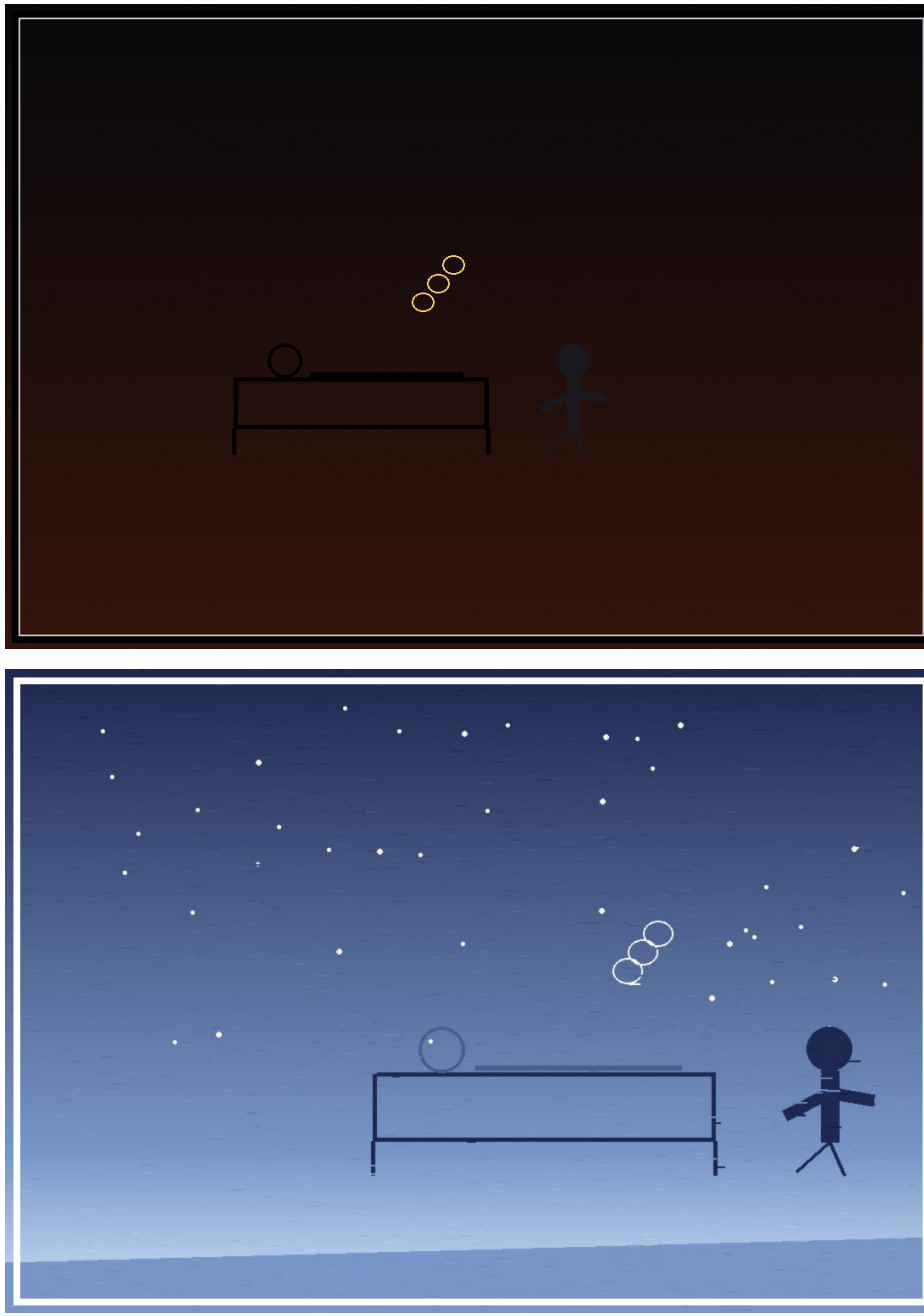

चित्र 20

काफिला ठाढ़ भऽ गेल। साँझ ढलि रहल छल। आगाँ अमता छल — ओतय खीरीक गाछ तर आसन बिछल हएत, तानपूरा मिलाओल जाइत हएत, दुनू भाइ प्रतीक्षामे हेताह... आ एम्हर बाटपर एकटा पालकी ठाढ़ छल, जकर यात्री यात्रा बीचहिमे उतरि गेल छलाह।

ई अछि एहि गाथाक दुखान्त — छोट, चुप, बिनु कोनो हाहाकारक। कोनो शाप नहि, कोनो युद्ध नहि — खाली एकटा अधूरा इच्छा, जे मिथिलाक हवामे सदा लेल टँगा गेल। जे राजा स्वरसँ आकाश झुका देने छल, से अपन अन्तिम स्वर धरि नहि पहुँचि सकल। नियति कखनो काल एहिना — बिनु कारण, बिनु न्याय — बस एकटा बाट छोट कऽ दैत अछि।

अध्याय 11 : अमताक शोक

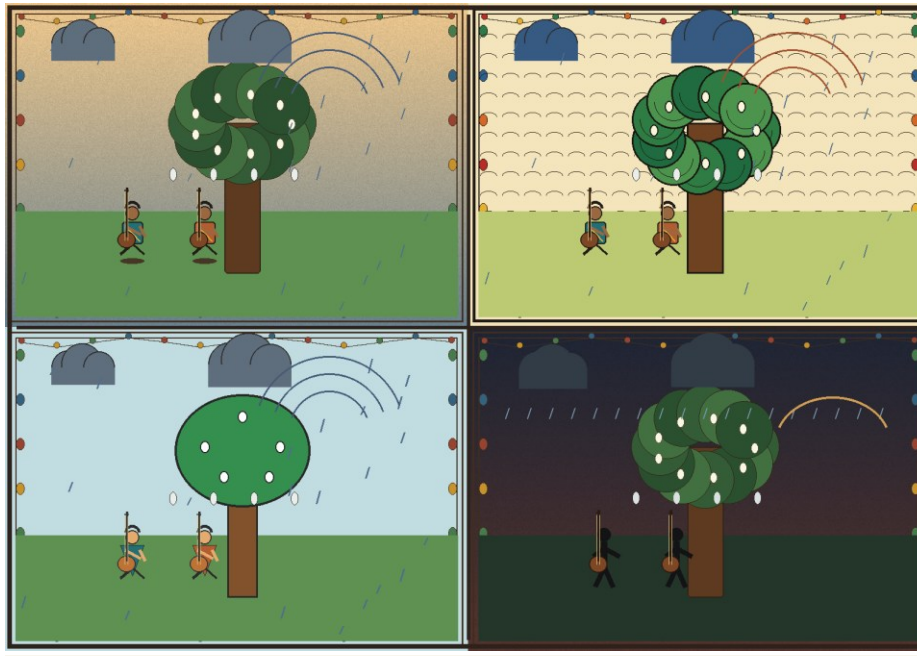

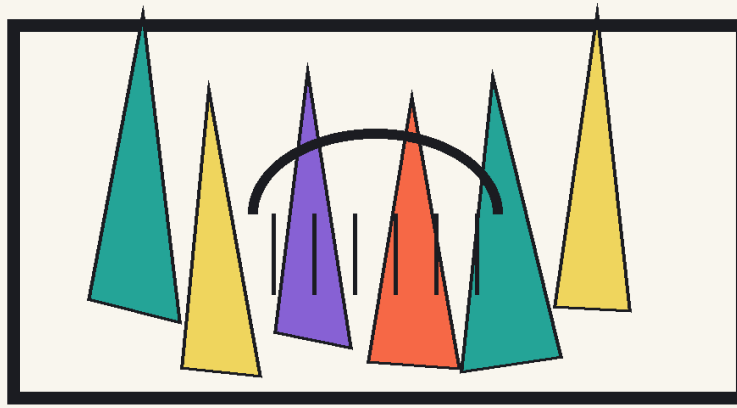

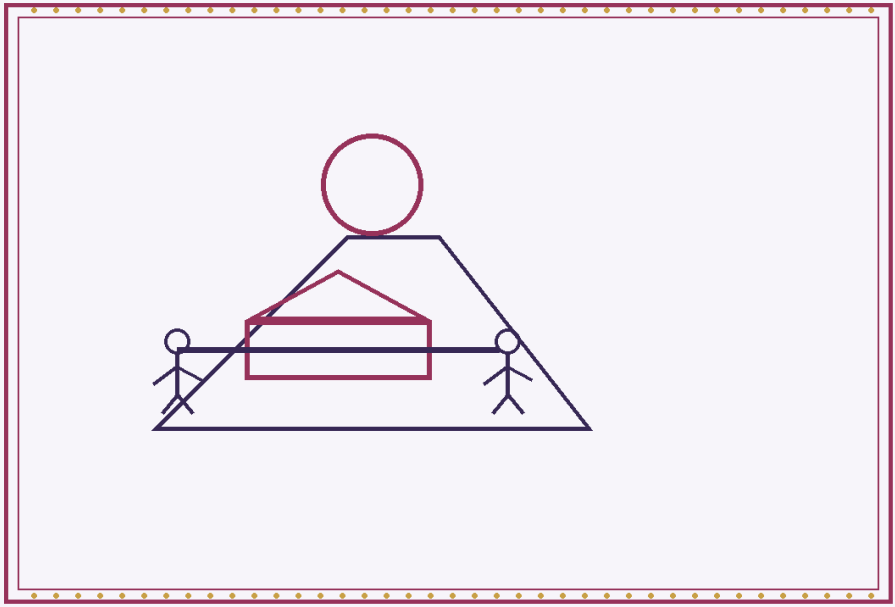

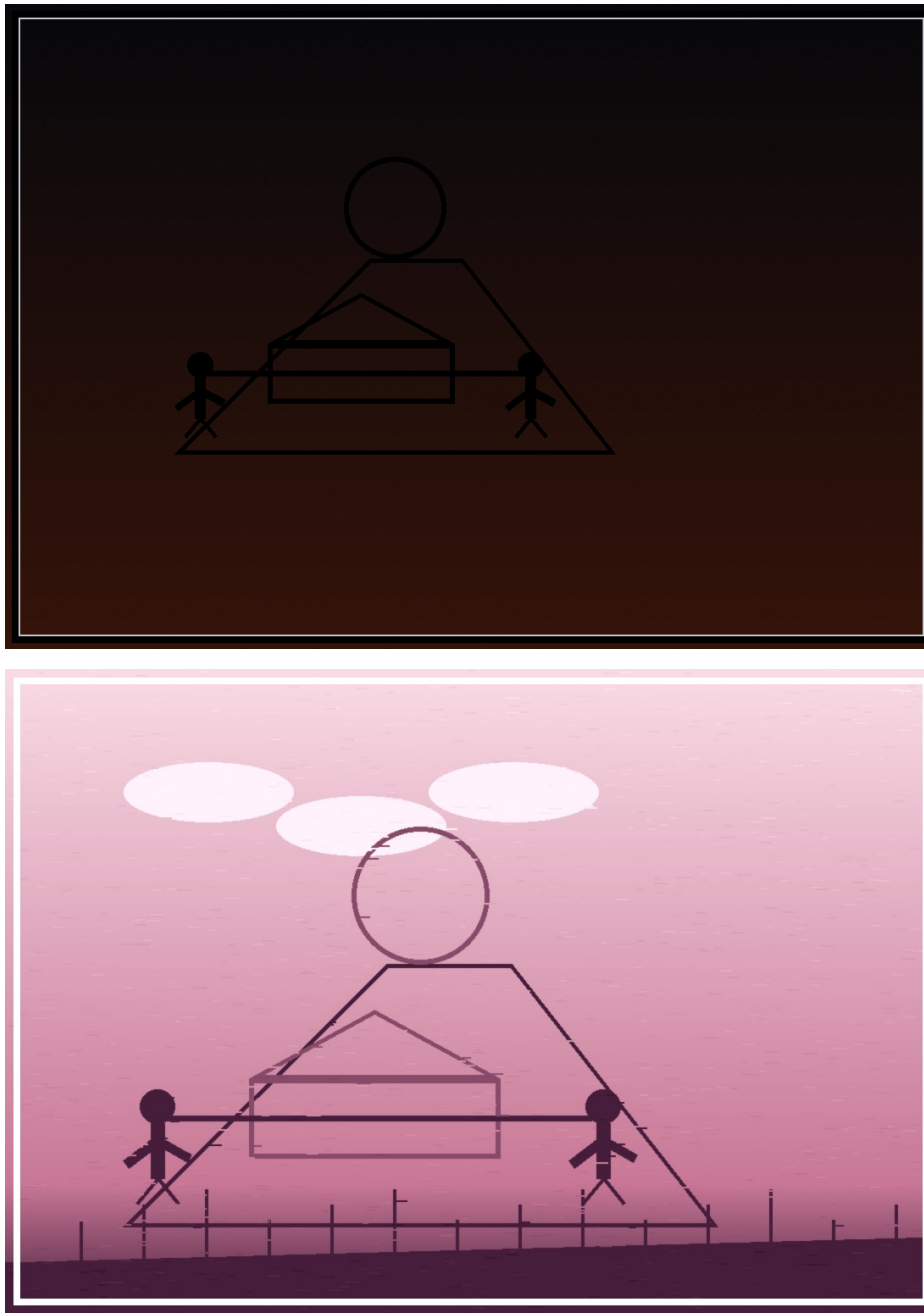

चित्र 21

अमता गाममे जखन समाचार पहुँचल, त' कहल जाइत अछि — ओहि साँझ खीरीक गाछक फरसँ दूधक ठाम नोर टघरल।

राधाकृष्ण आ करताराम ओहि दिनक बाद बहुत दिन धरि मंच पर नहि बैसलाह। जे श्रोता बाटमे रहि गेल, ओकरा बिनु गओनाइ केहन? करतारामकेँ किओ पुछलकनि, त' ओ एतबे कहलनि — 'हमर सभसँ पैघ श्रोता आब ओहि रागमे बसैत छथि जे हम आब गाबि नहि सकैत छी।'

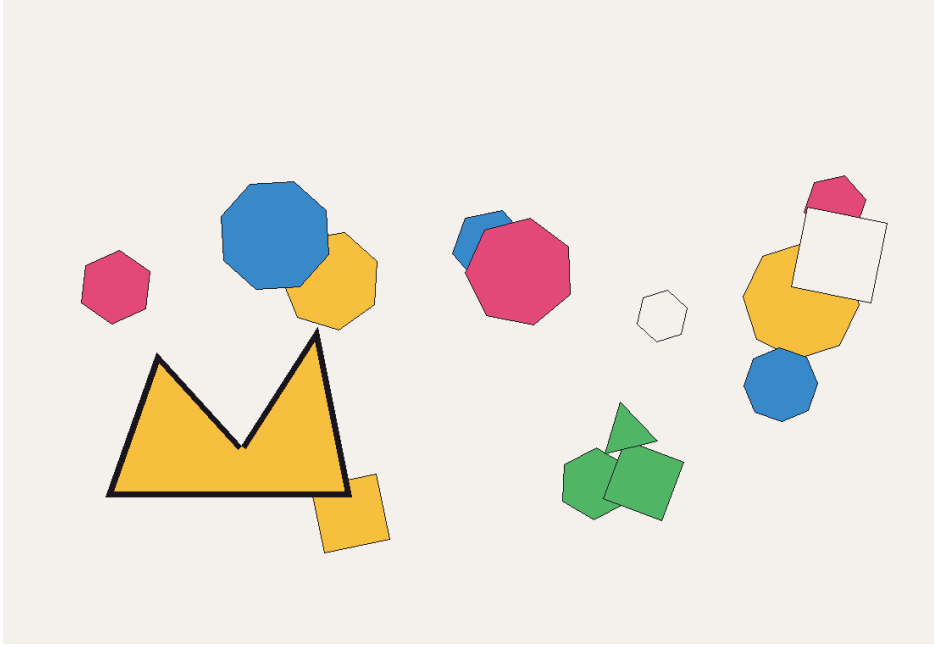

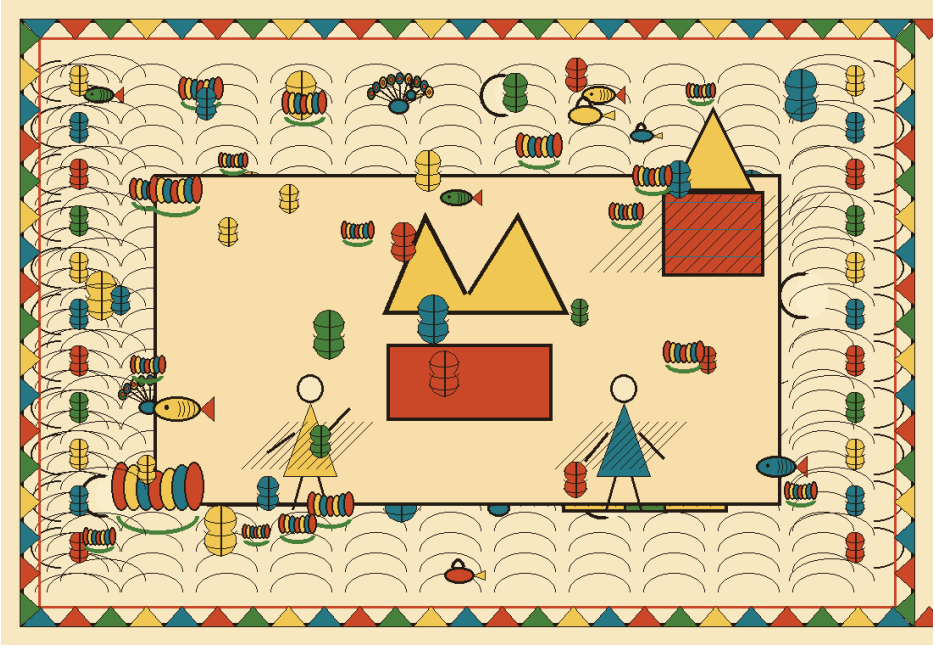

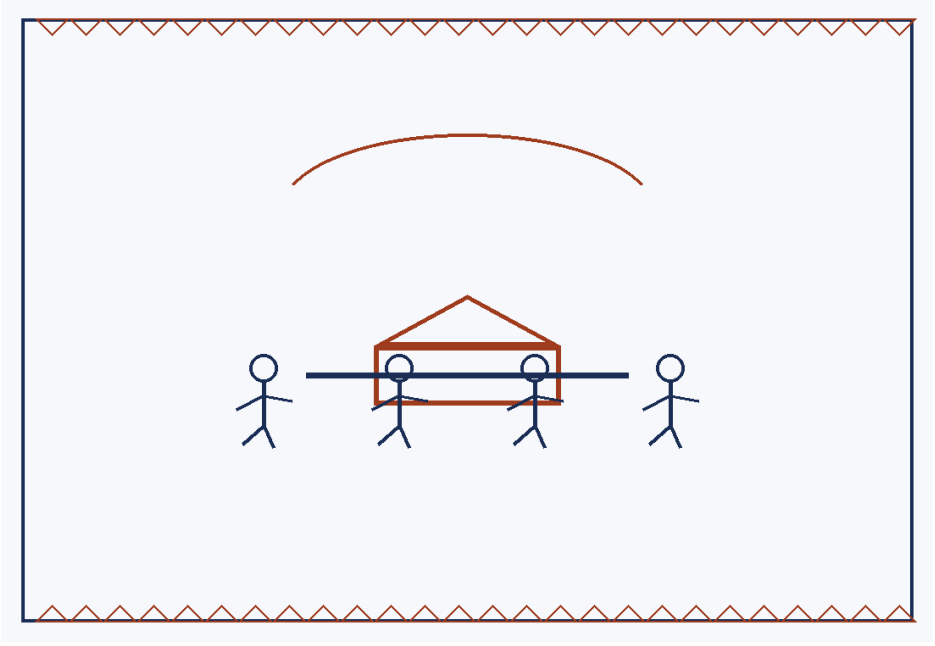

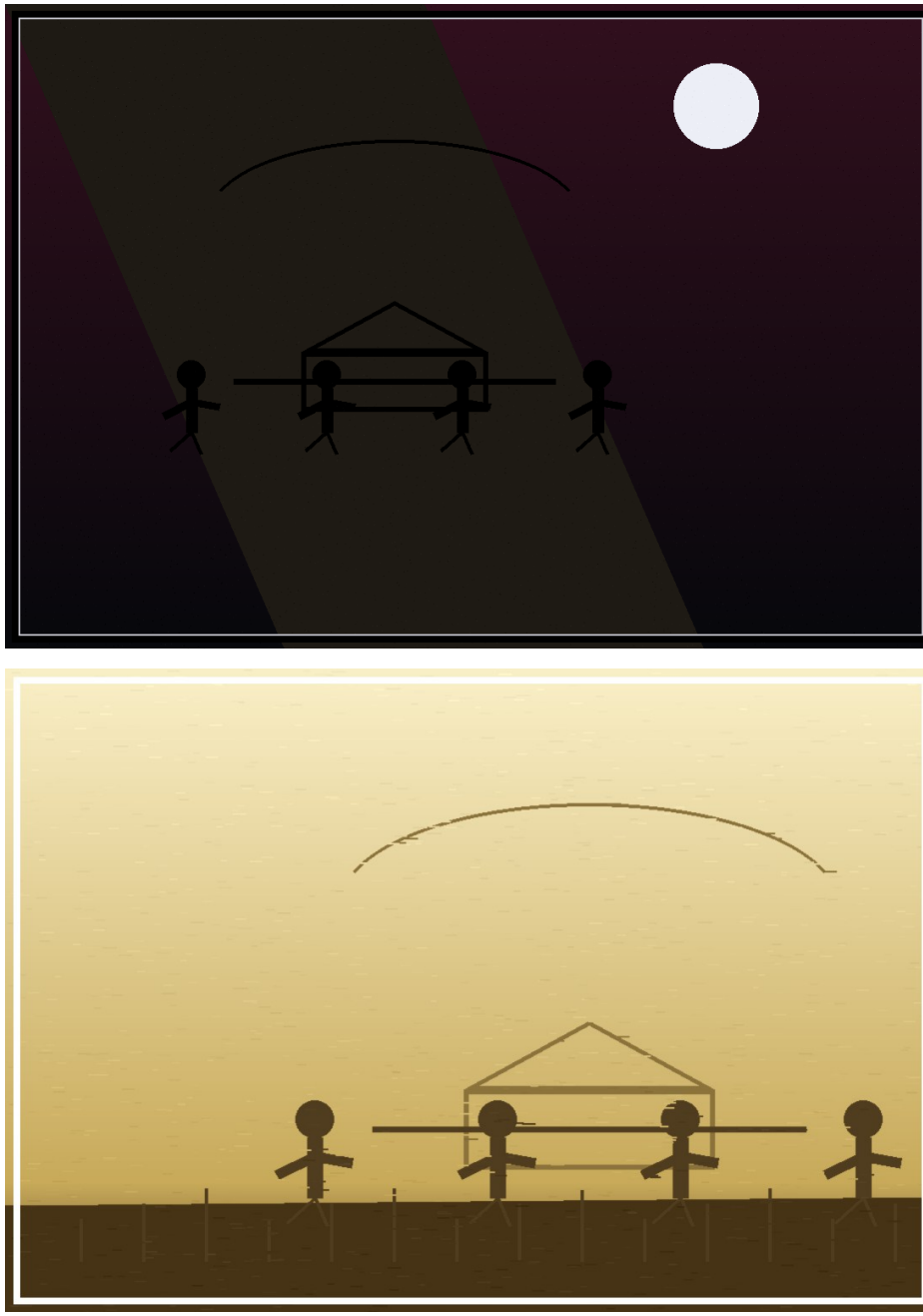

चित्र 22

मुदा संगीत शोकसँ पैघ होइत अछि — आ साधक जनैत अछि जे स्वरक अर्घ्ये असल श्राद्ध थिक। किछु कालक बाद अमतामे फेर तानपूरा बाजल — आ पहिल राग छल मेघ-मल्हार। लोक कहैत अछि, ओहि दिन बिनु बादलक बुन्नी पड़ल छल — कदाचित् कोनो श्रोता, कतहुसँ, सुनि रहल छल।

अमता गाम आइयो अछि, आ ओकर हवामे ई खिस्सा आइयो अछि। मिथिलामे जखन कखनो घनघोर घटा उमड़ैत अछि आ पहिल बुन्नी माटिपर पड़ैत अछि, त' बूढ़-पुरान आकाश दिस देखि कहैत छथि — 'राधाकृष्ण-करतारामक तान अछि, आ सुननिहार माधव सिंह।' राजा रस्तेमे रहि गेलाह — मुदा खिस्सामे ओ अमता पहुँचि गेलाह, सदा लेल।

समाप्त

VIDEHA

विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका | ISSN 2229-547X | www.videha.co.in

मोतीसाएरि

मोरंगक राजकुमारी — लोभ, छल आ मोक्षक दुखान्त गाथा

गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादक, विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका (since 2000)

ISSN 2229-547X

उपक्रम : मोरंग

हिमालयक जड़िमे, बोन आ धारक बीच, छल मोरंग — आ मोरंगमे छलाह राजा भीमसेन। राज-पाट, धन-वैभव, सभ किछु — मुदा कोरा खाली। एहि खाली कोरासँ शुरू होइत अछि ई गाथा, आ खतम होइत अछि एकटा एहन शापपर जे पूरा राज्यकेँ निगलि गेल।

ई खिस्सा तीन लोभक थिक — पंडितक लोभ, जे बेटीकेँ धारमे बहा देलक; राजाक लिलसा, जे आन्हर बना देलक; आ सत्ताक लोभ, जे युद्धपर युद्ध करओलक। आ एहि तीनूक बीच ठाढ़ि एकटा कन्या — मोतीसाएरि — जे सभसँ निर्दोष छलि, आ सभसँ बेसी दण्ड भोगलक।

अध्याय 1 : यज्ञक फल

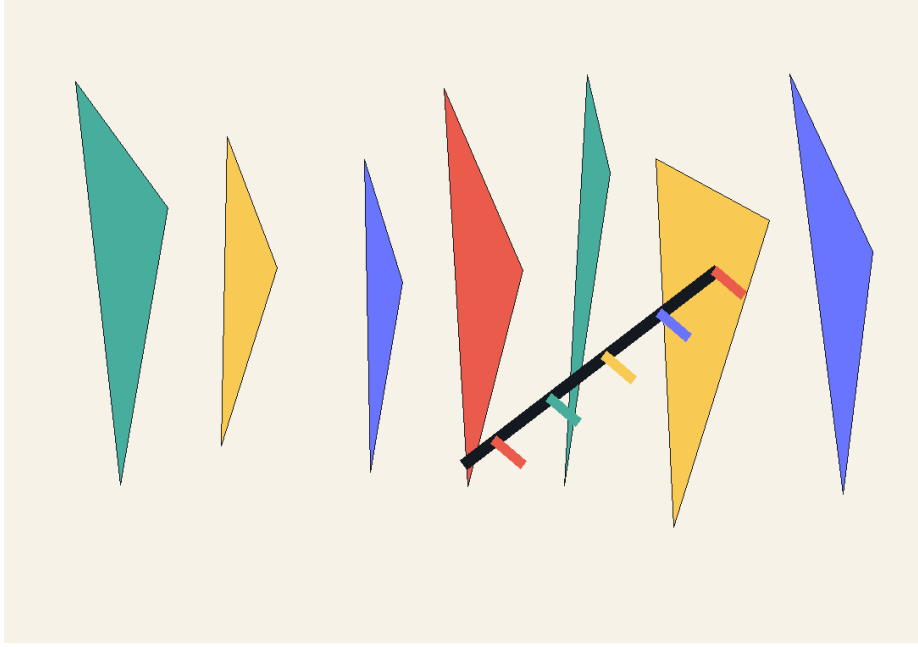

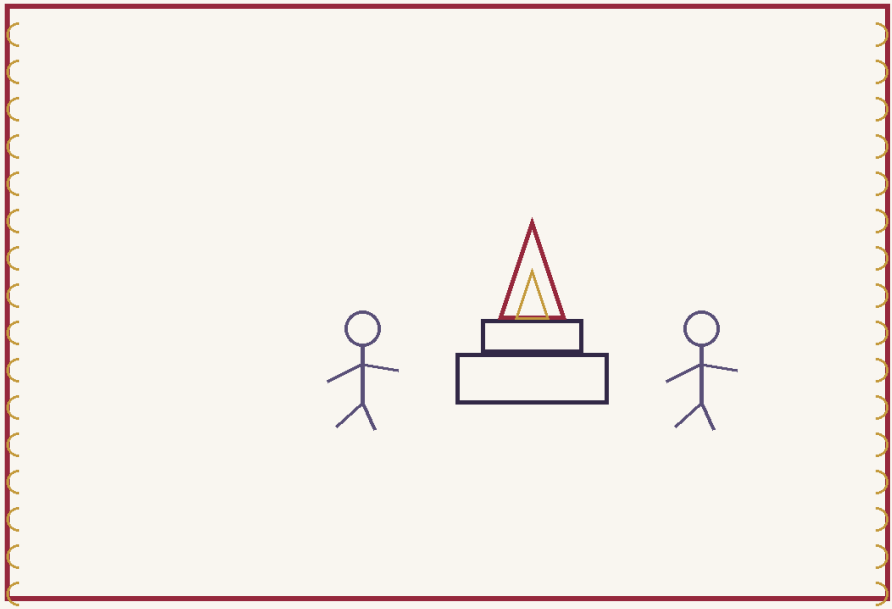

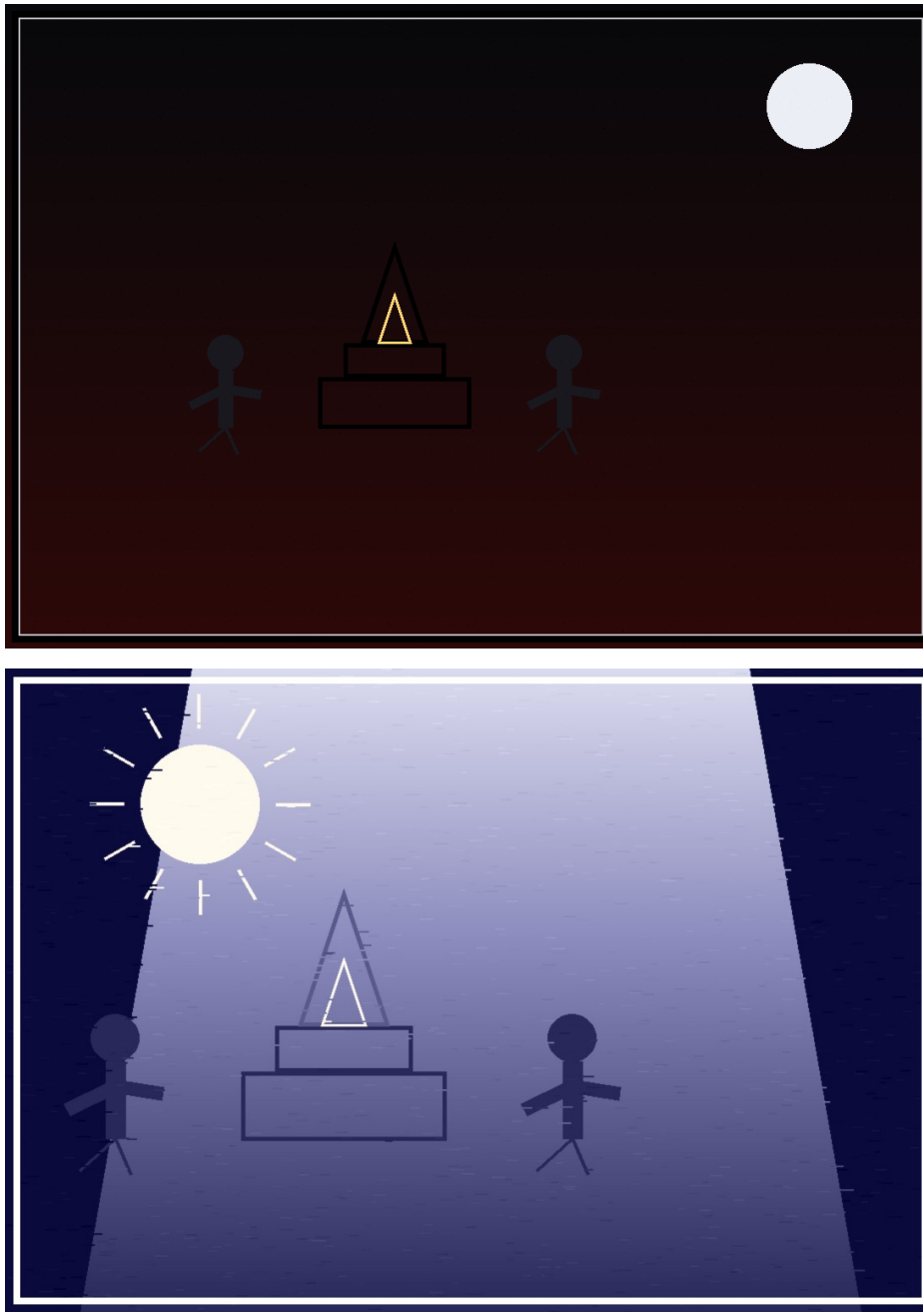

चित्र 1

राजा भीमसेन निःसन्तान छलाह। दरबारमे सए सुख, मुदा महलक भीतर एक्कहि दुख — उत्तराधिकारीक अभाव। रानीक आँखि पूजा-घरमे आ राजाक आँखि आकाशमे — दुनू एक्कहि वस्तु माँगैत।

अन्तमे यज्ञ कराओल गेल — विधिपूर्वक, ऋत्विज-मण्डली संग, अहोरात्र आहुति। आ यज्ञ फलित भेल: राजभवनमे कन्याक जन्म भेल। बेटा नहि, बेटी — मुदा भीमसेनक आनन्दमे कोनो कमी नहि; सन्तान त' सन्तान।

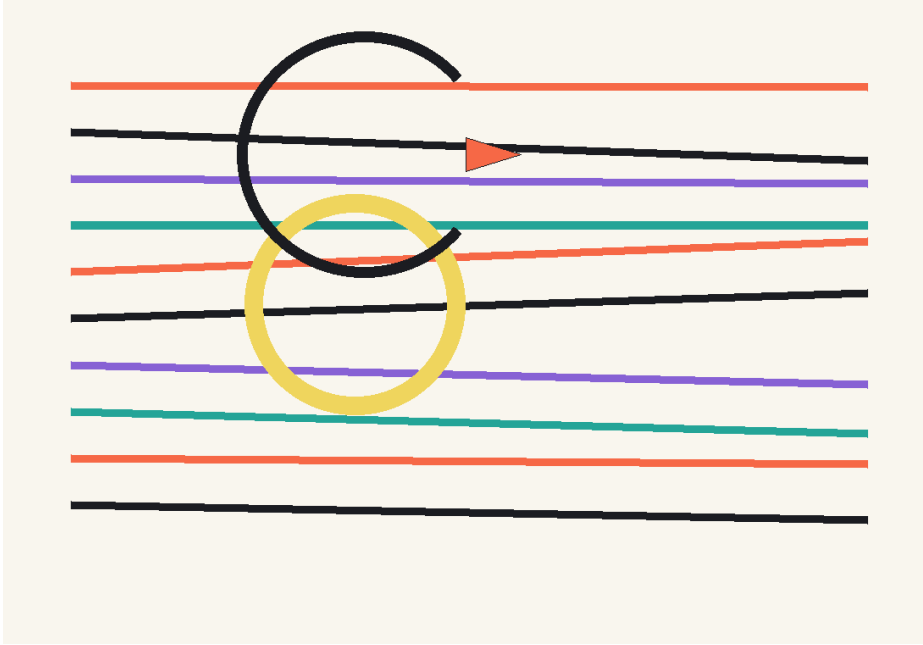

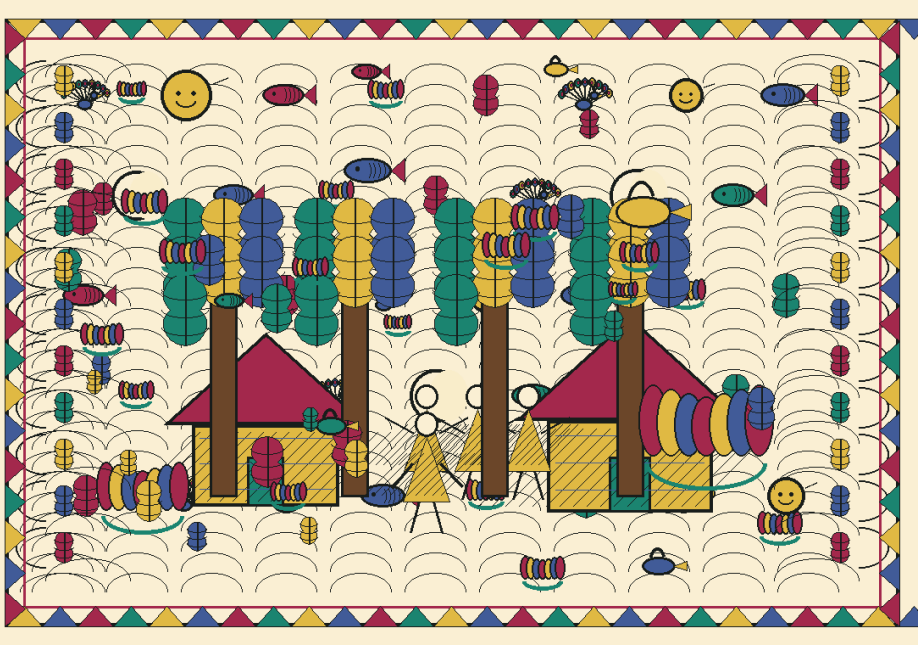

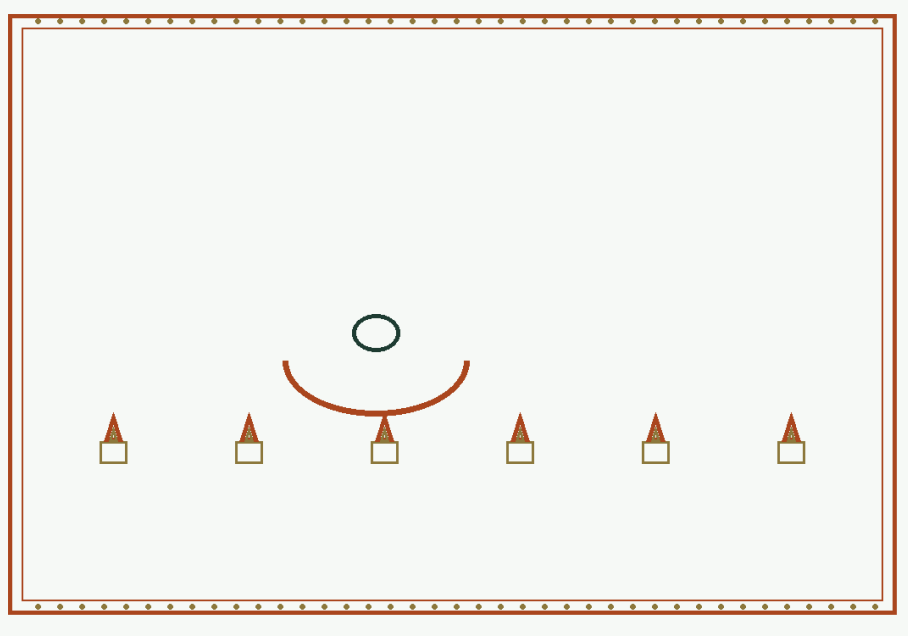

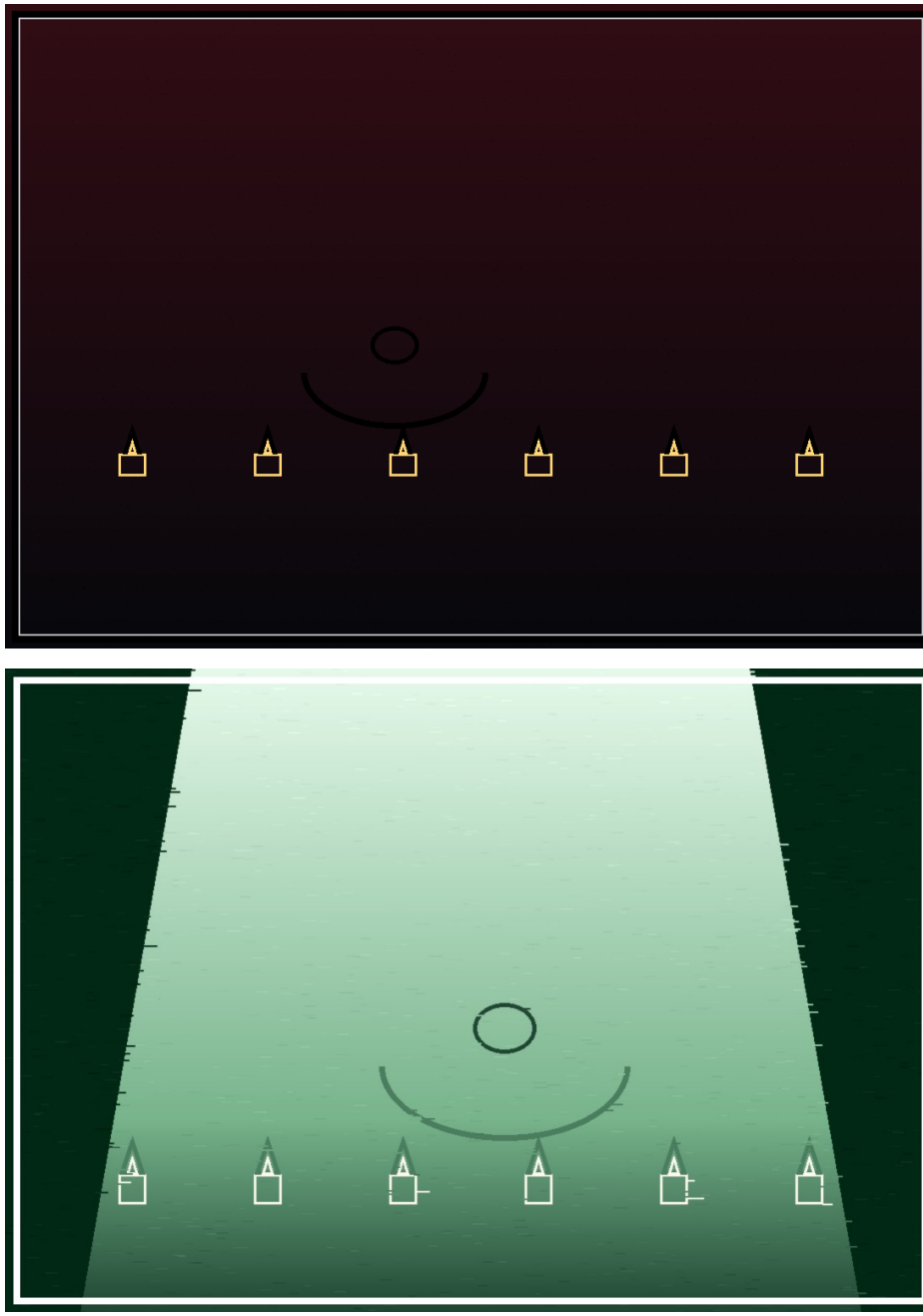

चित्र 2

नाम राखल गेल — मोतीसाएरि। नामे सन रूप: मोती सन उज्जर, साएरि (सरोवर) सन गहींर आँखि। मोरंगमे उत्सव मनाओल गेल, बन्दी छोड़ल गेल, अन्न बँटाएल।

मुदा खिस्साक नियम मोन राखू — यज्ञसँ जनमलि कन्याक भाग्य साधारण नहि होइत। ओकर कुण्डलीमे किछु एहन लिखल छल जे आगाँ चलि कऽ वरदान सेहो बनितए आ विपत्ति सेहो — ई निर्भर करैत छल पढ़निहारक नीयतपर।

अध्याय 2 : कुण्डली आ पंडित

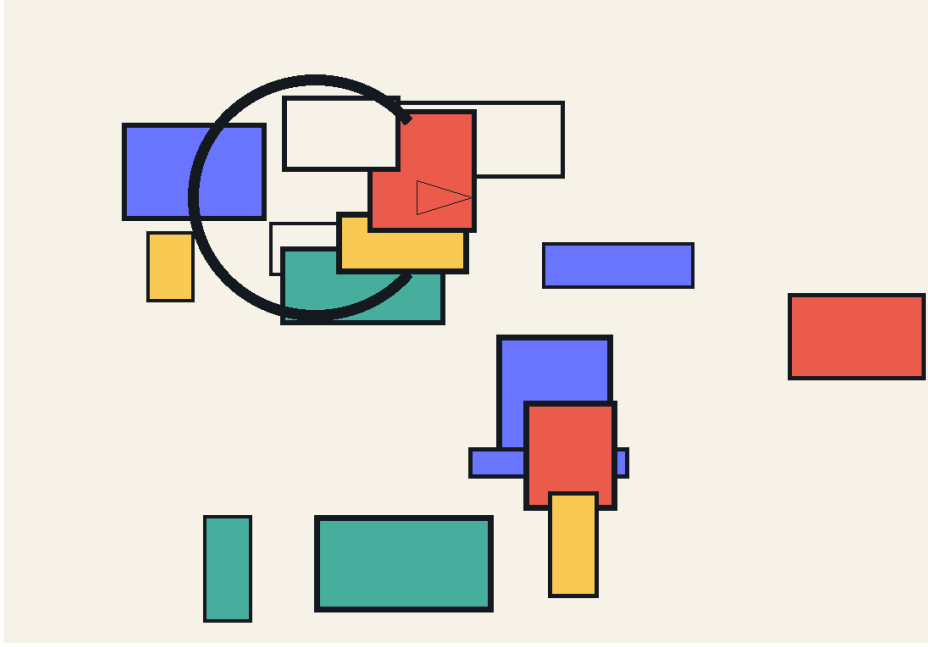

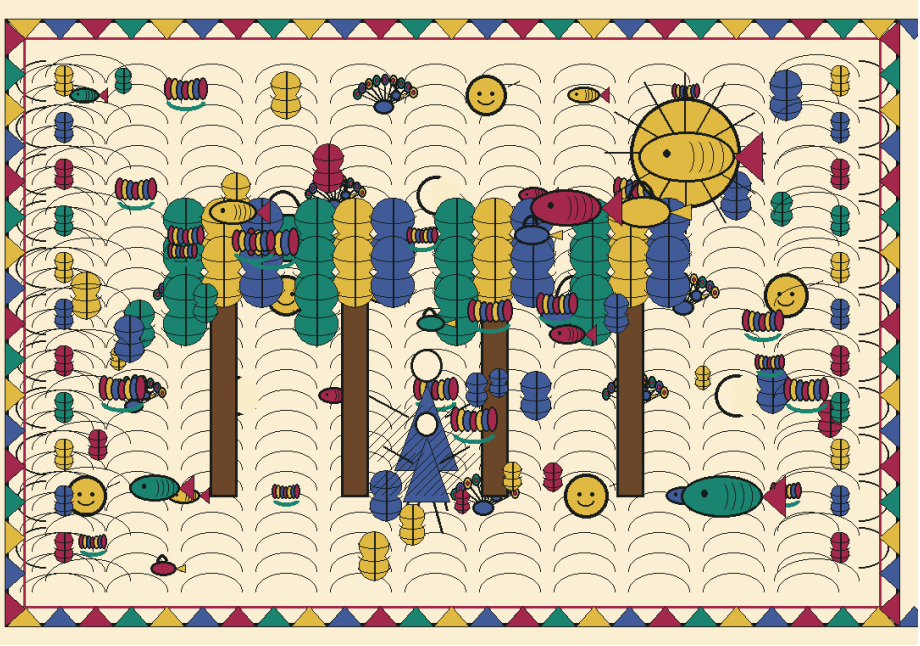

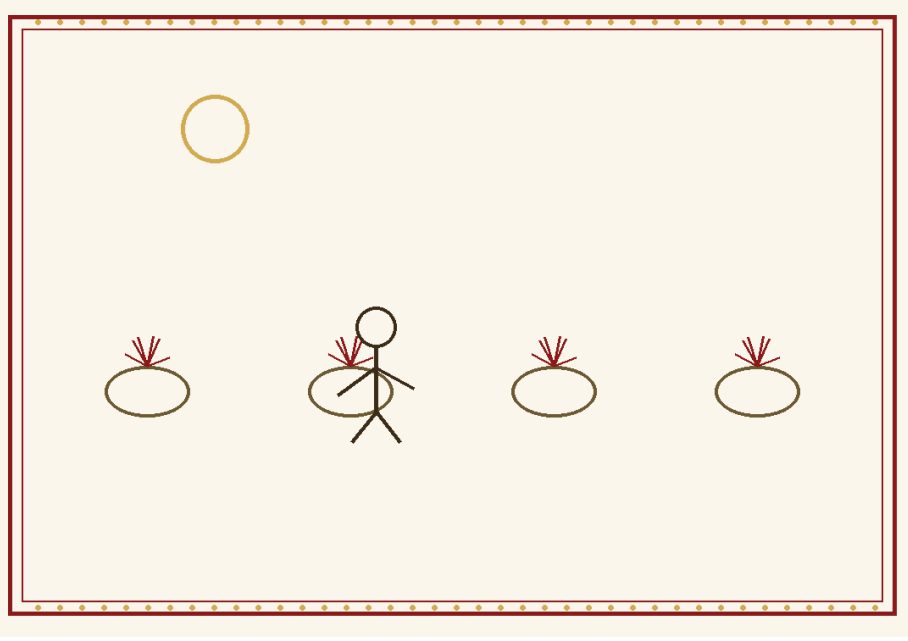

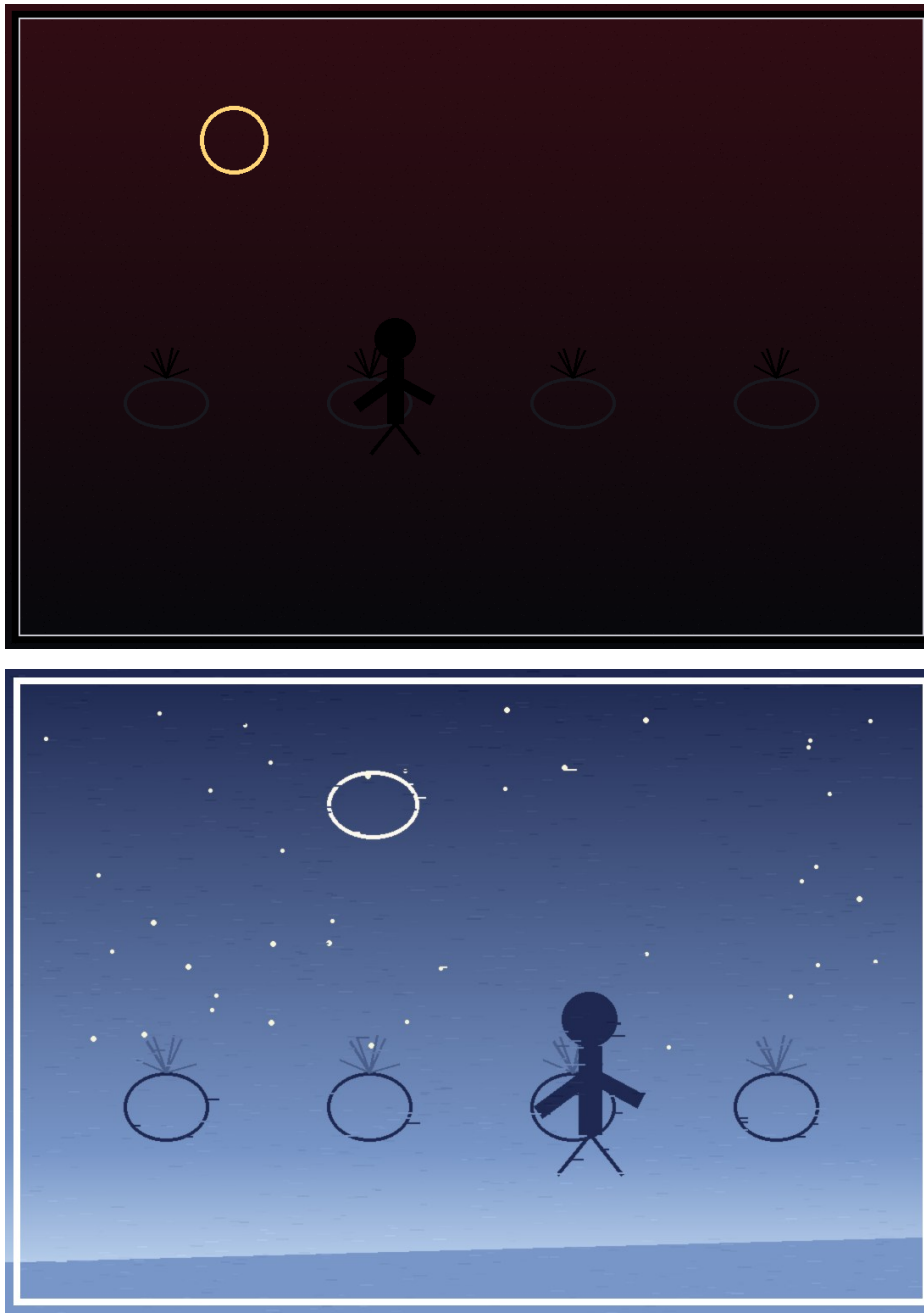

चित्र 3

मोतीसाएरि पैघ भेलि — रूप, गुण, विनय — तीनूमे अद्वितीय। राजा राज-पंडितकेँ बजओलनि: 'कुण्डली देखू पंडित। कन्याक भविष्य की कहैत अछि?'

पंडित कुण्डली खोललक — आ ओकर आँखि ठमकि गेल। ग्रह-योग अद्भुत छल: एहि कन्यासँ जे बियाह करत, से एहि प्रपंचक सभटा सुखपर अधिकार करत! राज, धन, यश — सभ किछु, जे केओ कल्पना करए।

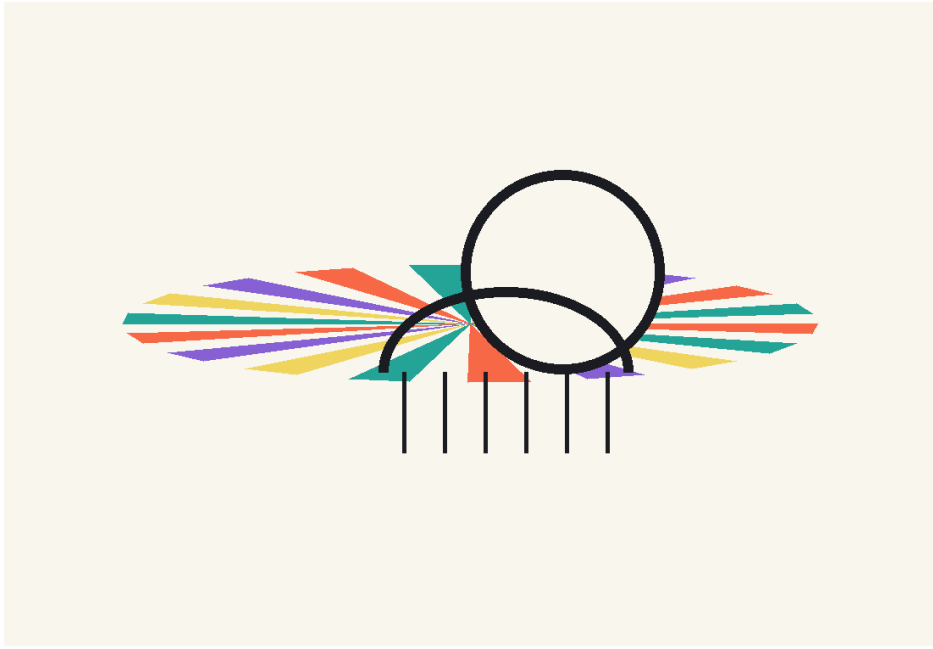

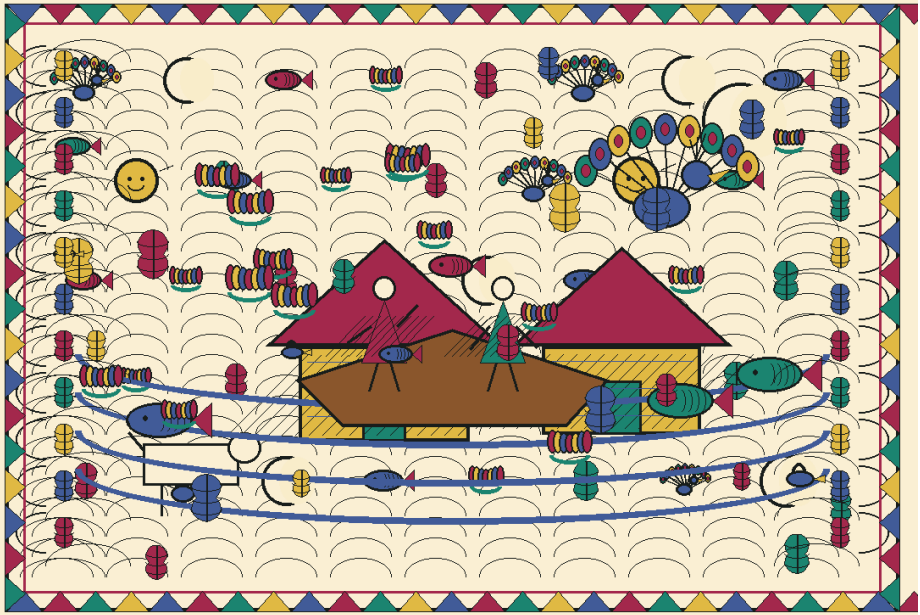

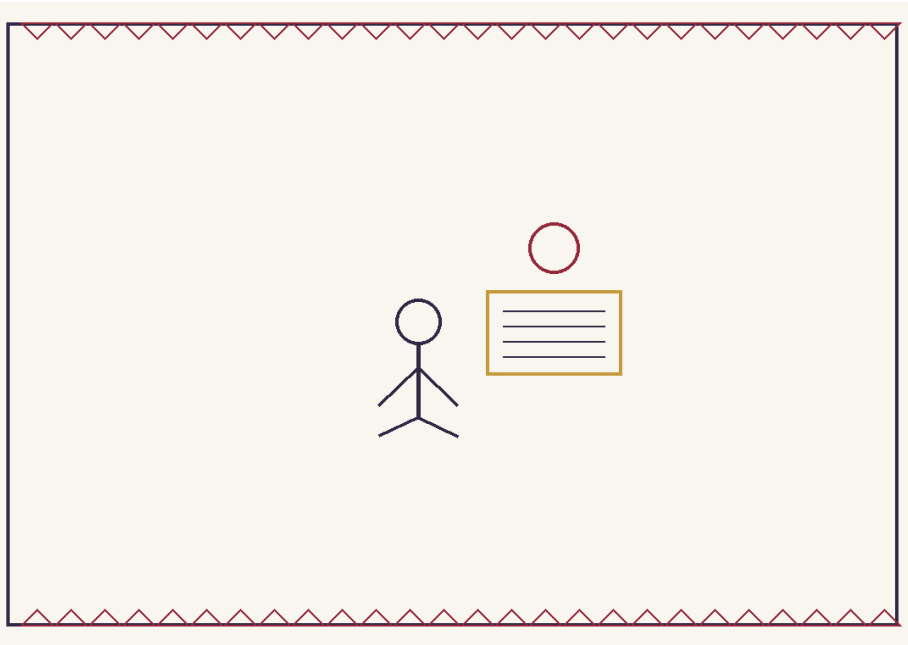

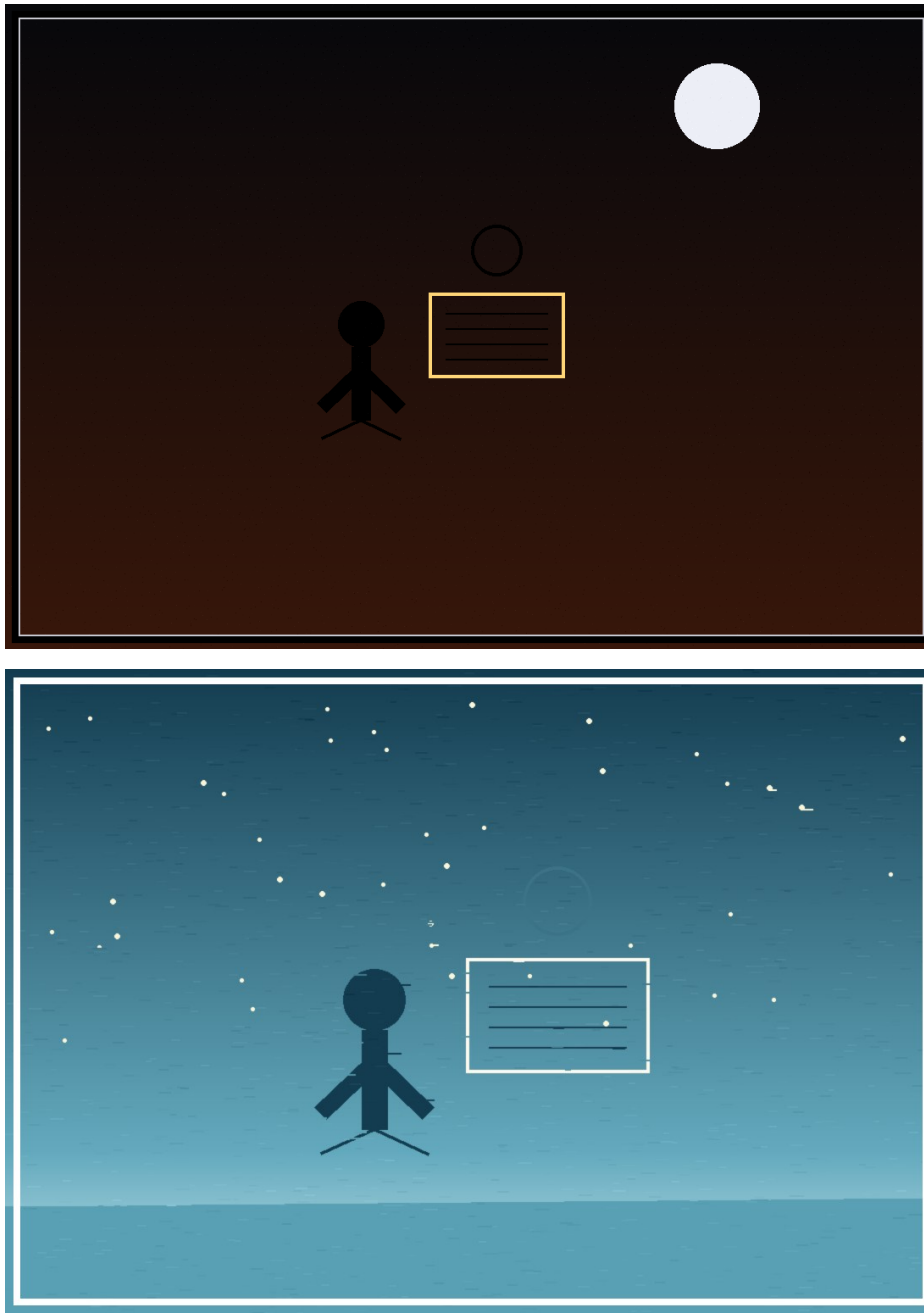

चित्र 4

पंडितक हाथ काँपल — मुदा भयसँ नहि, लोभसँ। ओकर भीतर एकटा आवाज उठल, जकरा दबाबए चाहितो ओ नहि दबा सकल: 'अद्भुत! एकरासँ जे... हमहीं बियाह कऽ ली?'

राज-पंडित — जकर काज साँच कहब छल — ओही क्षण साँचक सौदागर बनि गेल। मुदा राजाक बेटीसँ पंडित बियाह करत कोना? सोझ बाटे त' असम्भव। तखन? तखन ओ बाट, जे लोभ सदिखन देखबैत अछि — छलक बाट।

अध्याय 3 : झूठक भविष्यवाणी

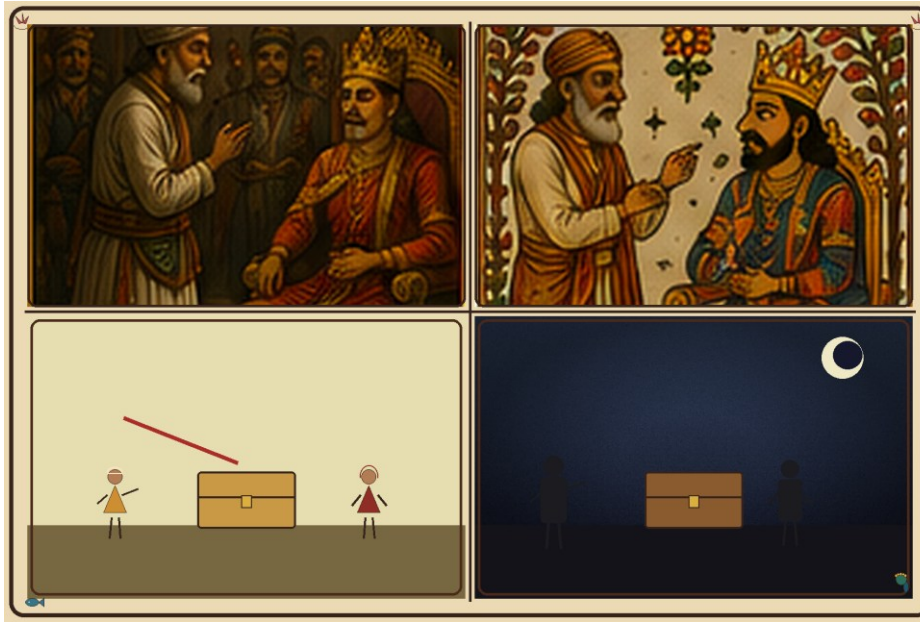

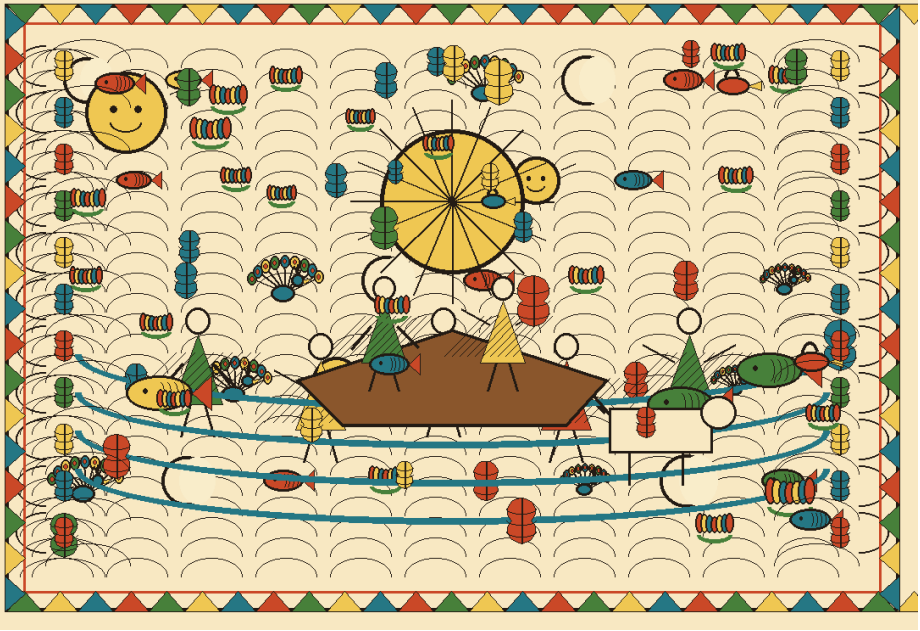

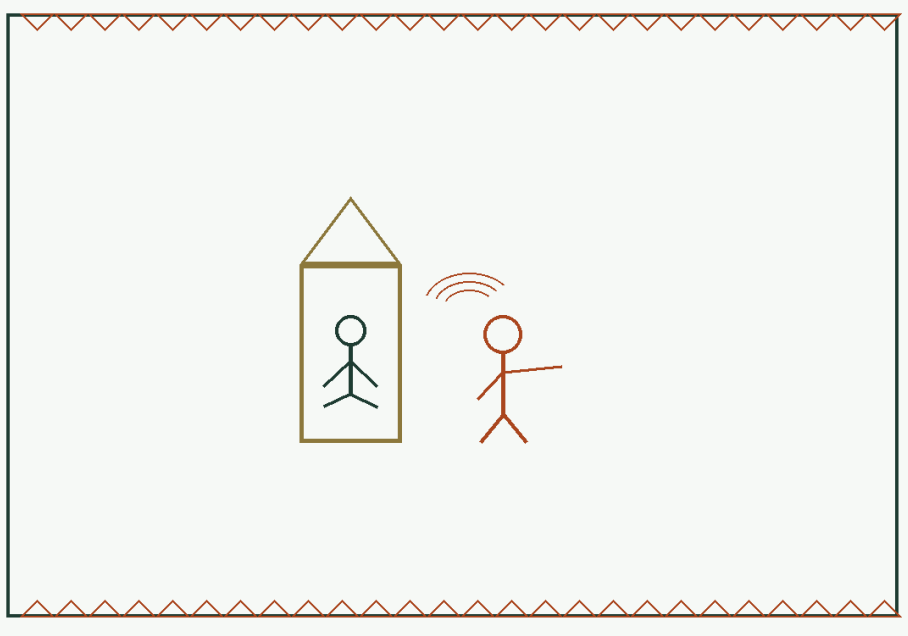

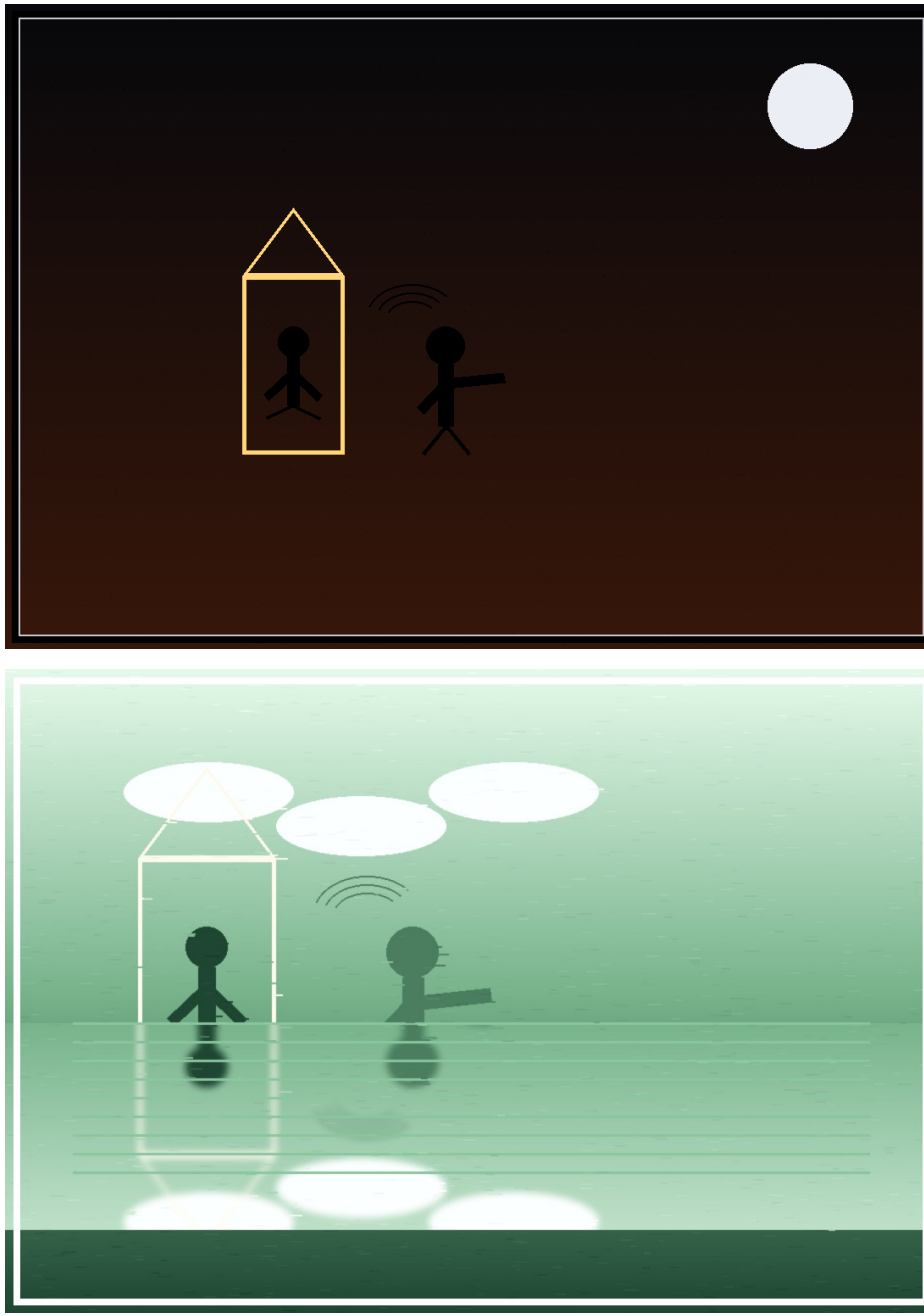

चित्र 5

पंडित राजाक आगाँ माथ झुका कऽ ठाढ़ भेल, आ मुँहपर चिन्ताक नकाब चढ़ा कऽ बाजल — 'राजन्! जे देखलहुँ, से कहैत जीह नहि उठैत... अहाँक बेटीक भाग्यमे अनिष्टे-अनिष्ट अछि। ई रहतीह त' अहाँ आ अहाँक राज्यक समापन भऽ जाएत। अविलम्ब एकरा राज्यसँ बाहर करू!'

वज्रपात! जाहि बेटी लेल यज्ञ भेल छल, वैह राज्यक काल? भीमसेन टूटि गेलाह। रानी कानलि, महल कानल — मुदा राज-पंडितक वचनपर अविश्वास के करए? ज्योतिष हुनके हाथ, शास्त्र हुनके जीह।

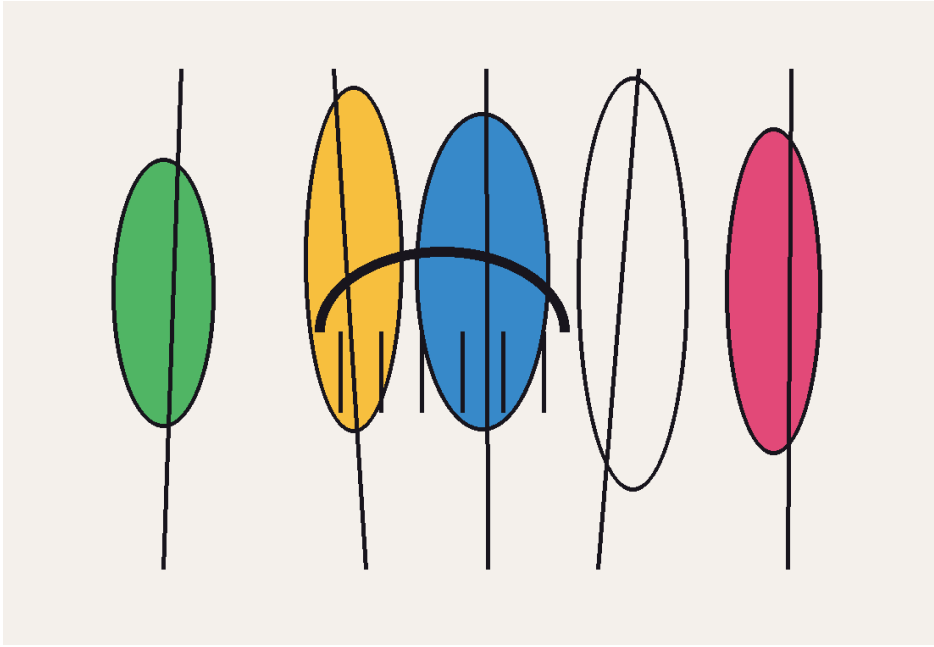

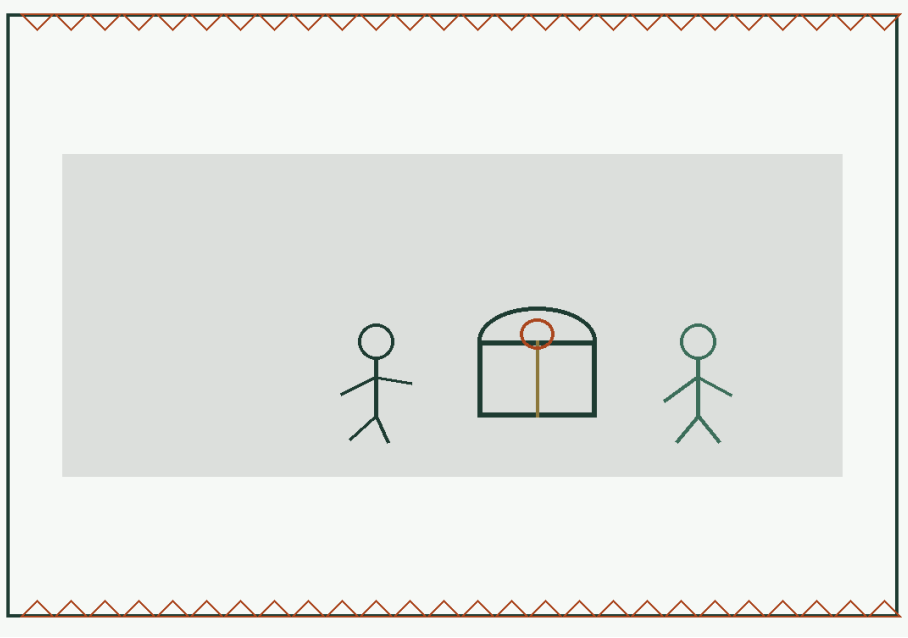

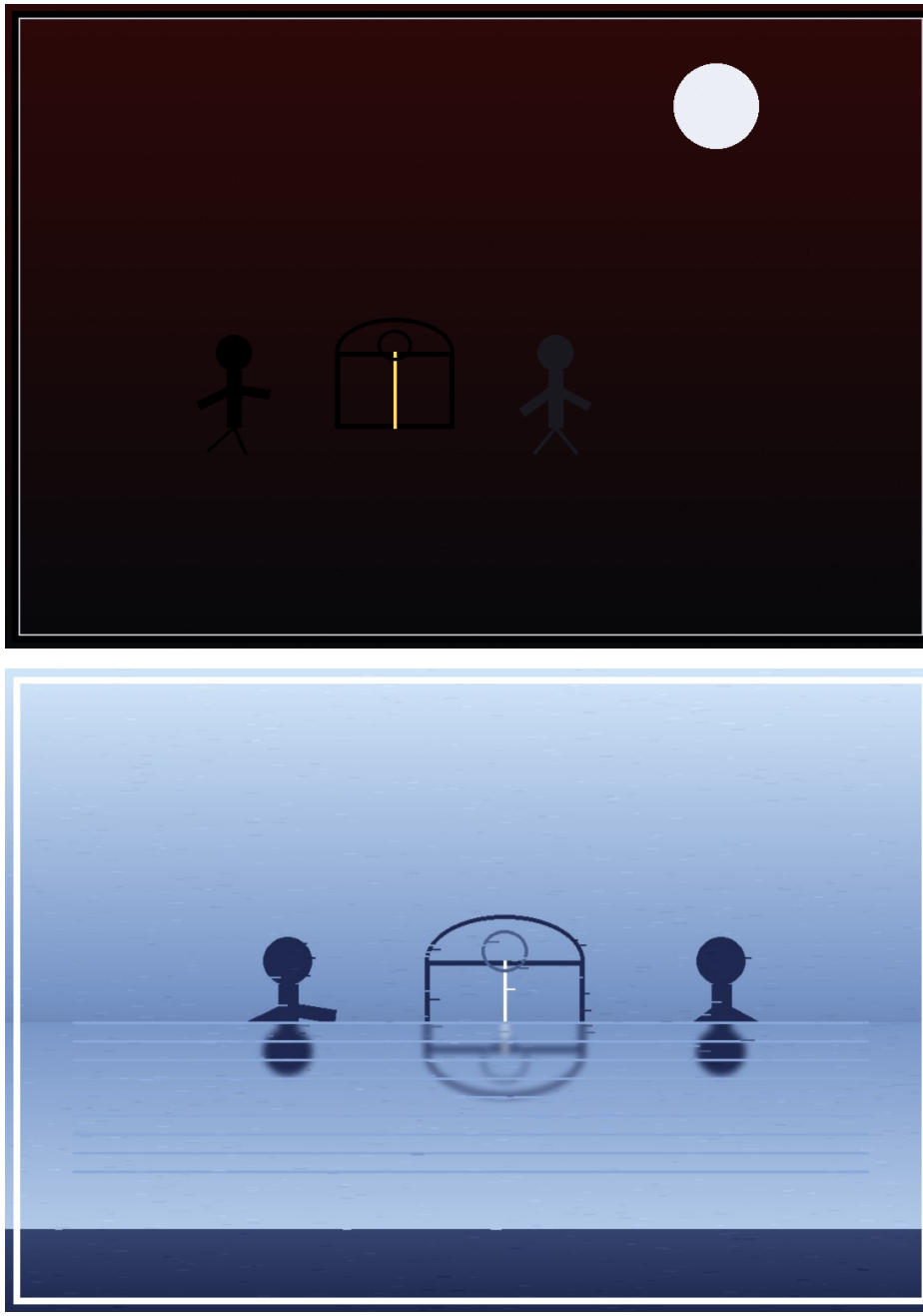

चित्र 6

आ राजधर्मक नामपर पितृधर्मक बलि चढ़ल। निर्णय भेल — मोतीसाएरिकेँ राज्यसँ बाहर कएल जाएत। मुदा राजकुमारीकेँ बाटपर त' नहि छोड़ल जाए... तखन एकटा पैघ सन्दूक मंगाओल गेल।

एकटा पैघ सन्दूकमे खेनाइ-पिनाइक सामग्रीक संग मोतीसाएरि बन्द भऽ गेलीह। बिनु अपराधक बन्दिनी — जकर एकमात्र दोष ई छल जे ओकर कुण्डली बड्डु नीक छल। सन्दूक धारमे बहा देल गेल। महलक दीप ओहि राति अपने मिझा गेल — कहैत छथि, आगि सेहो लाज करैत अछि।

अध्याय 4 : बहैत सन्दूक

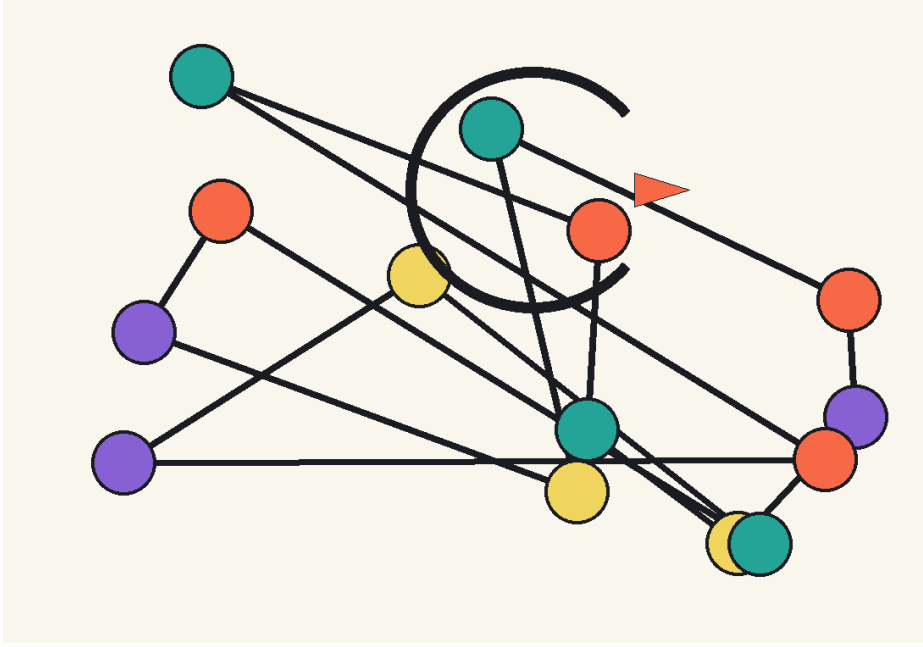

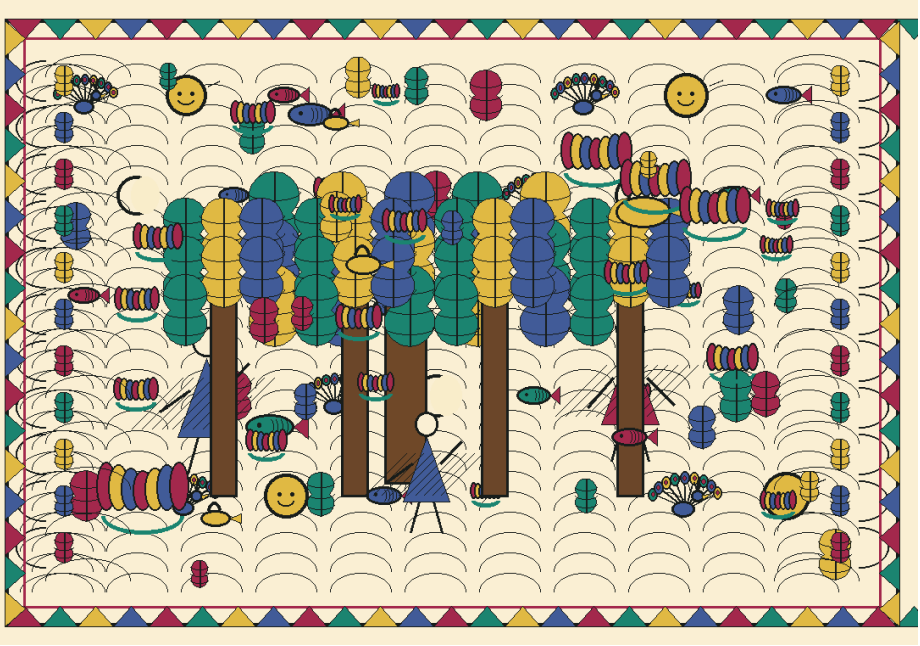

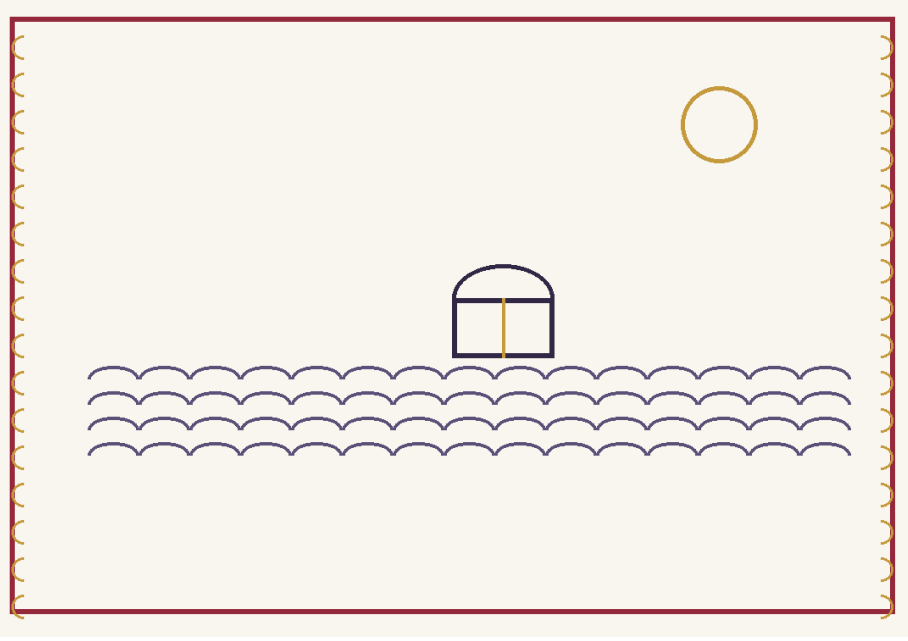

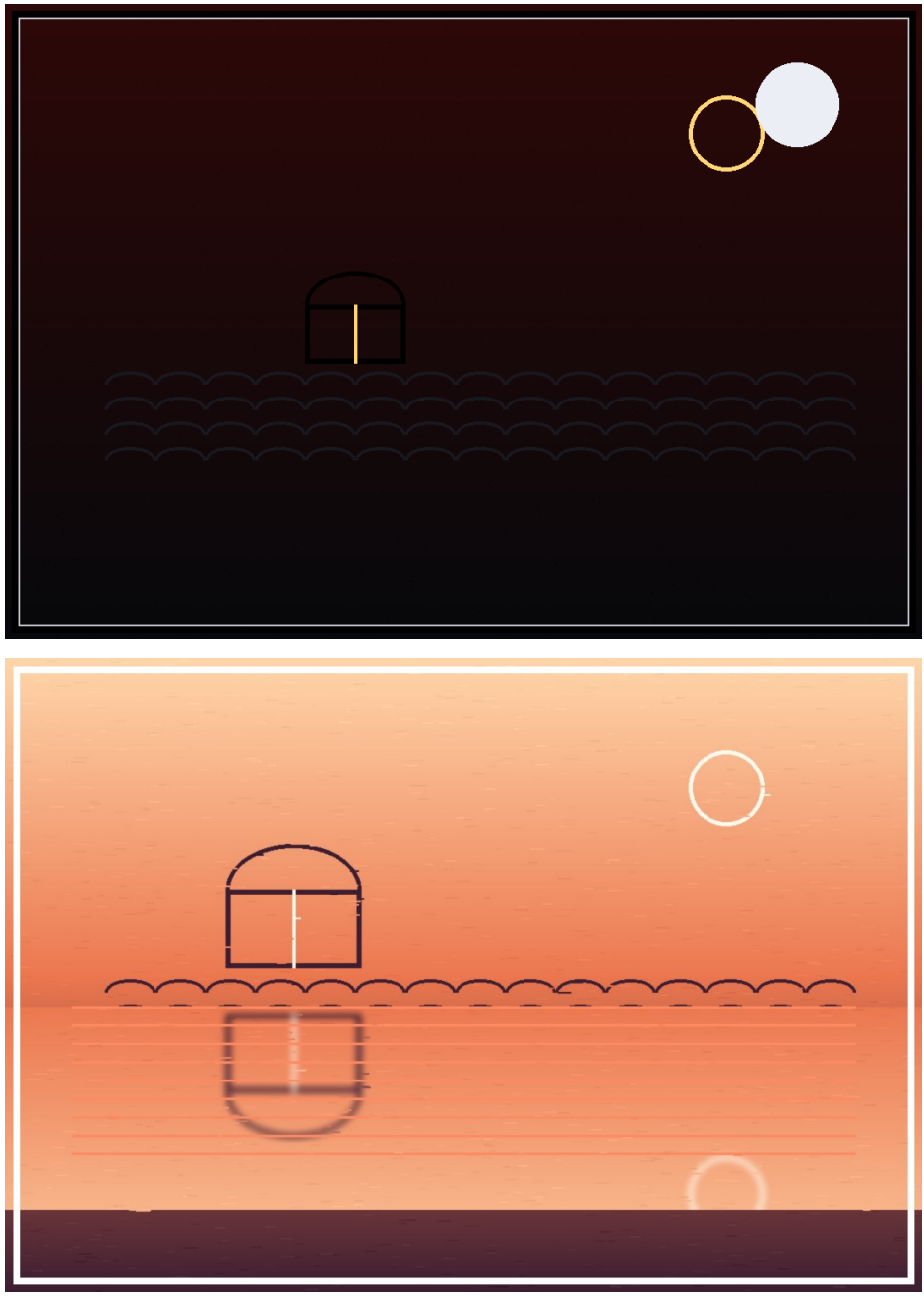

चित्र 7

आ आब देखू लोभक दौड़ — पंडित पहिनहिसँ धारक नीचाँ घाटपर ठाढ़ छल! योजना पूरा छल: सन्दूक बहैत आओत, ओ पकड़ि लेत, कन्याकेँ निकालि बियाह करत, आ भविष्यवाणीक सभटा सुख...

मुदा नियति लोभीक नौकर नहि होइत। ओहि राति प्रवाह तेज रहै — एतेक तेज जे पंडितक हाथ सन्दूकक कातो नहि छूबि सकल। सन्दूक ओकर आँखिक आगाँ-आगाँ बहैत गेल — लहरिपर नाचैत, जेना धार अपने कहैत हो: 'ई अमानत तोरा लेल नहि।'

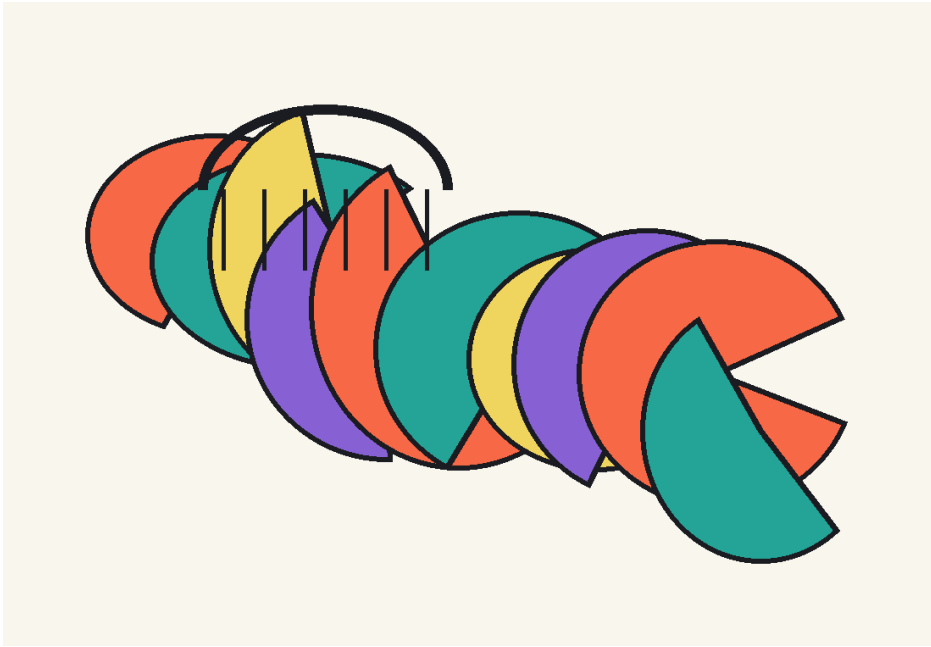

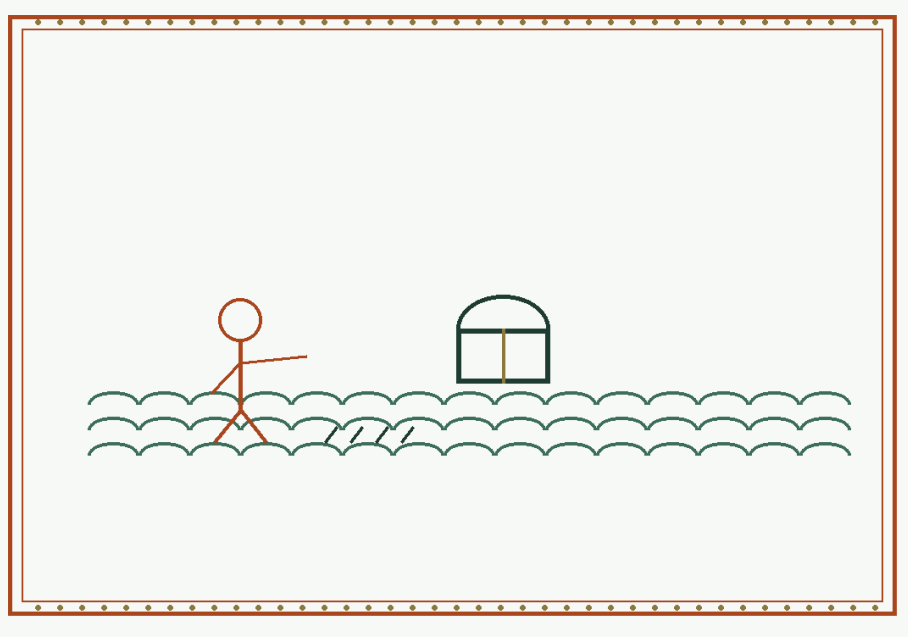

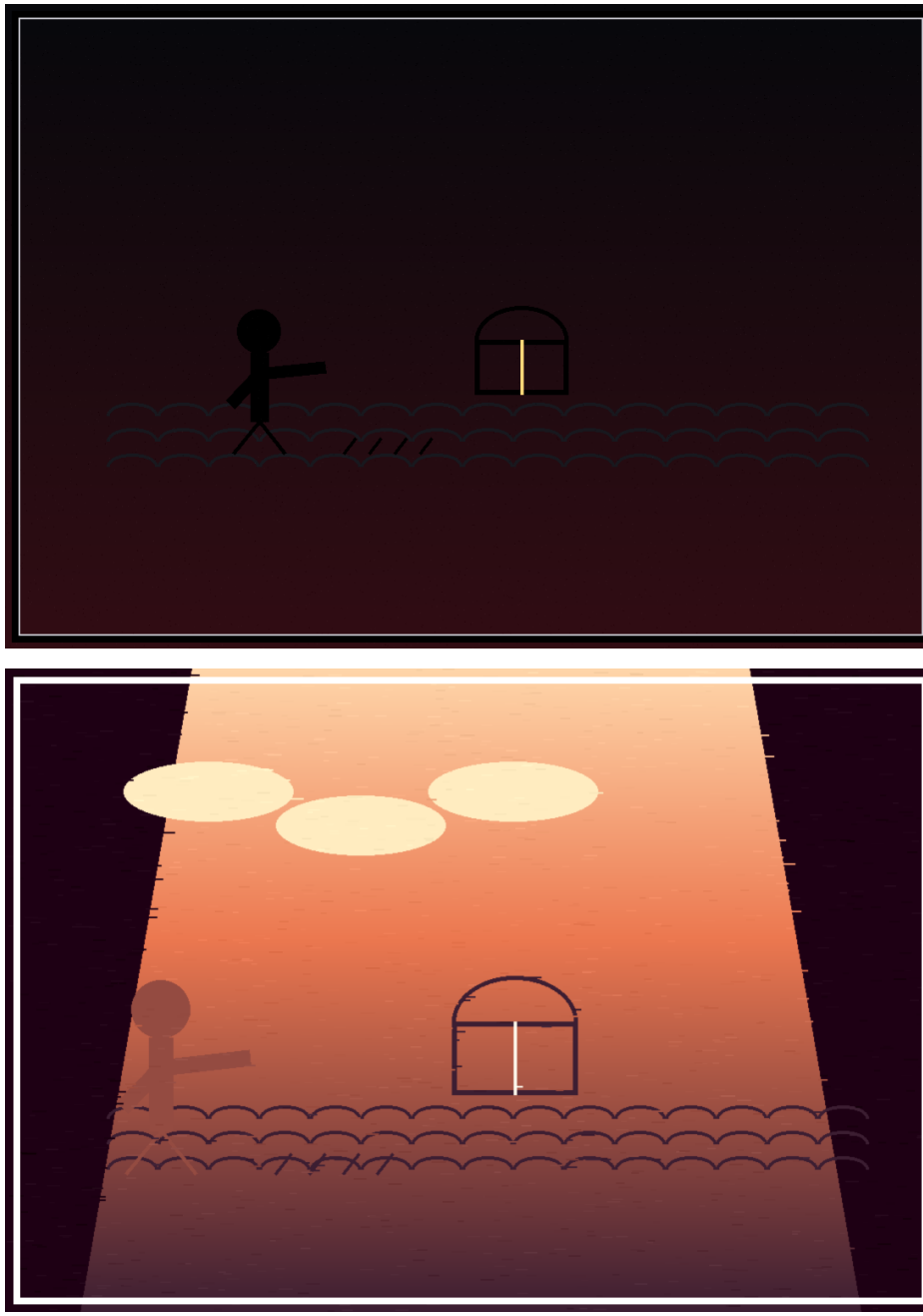

चित्र 8

पंडित कातें-कात दौड़ल, चिचिआएल, हाथ पसारलक — मुदा धार ककरो प्रार्थना नहि सुनैत। बहि गेल सन्दूक — दूर, आरो दूर, अन्हारमे।

आ भोर होइत-होइत ओ सन्दूक मोरंगक एकटा घन बोनक कात लागल। जतय ने महल छल, ने पंडित, ने कुण्डली — छल खाली गाछ, चिड़ै, आ बोनक अपन राज।

अध्याय 5 : गवल सरदार

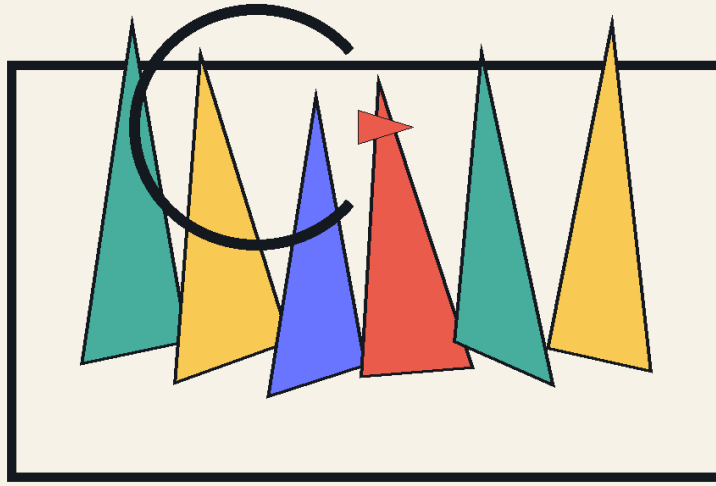

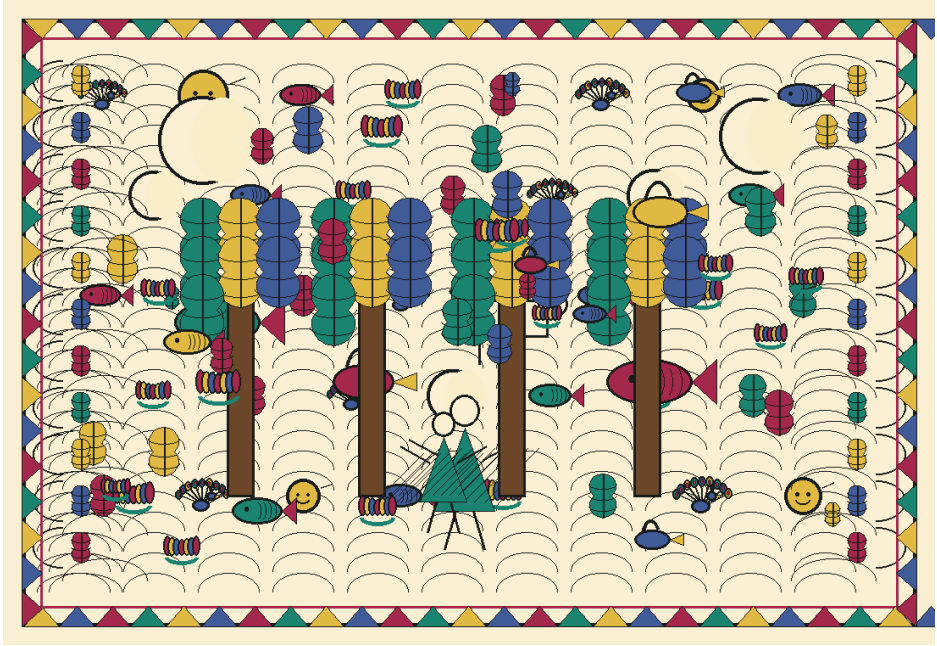

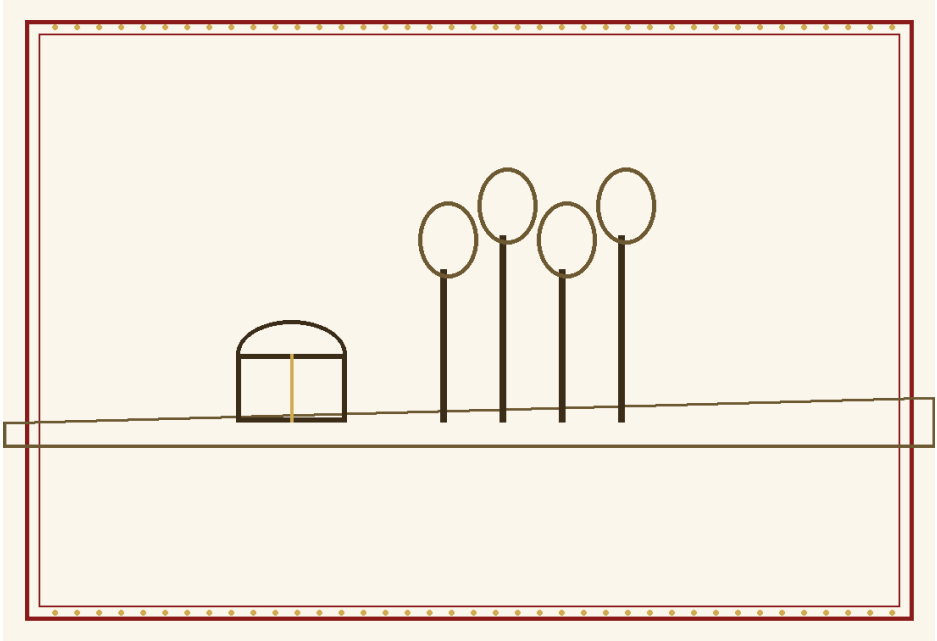

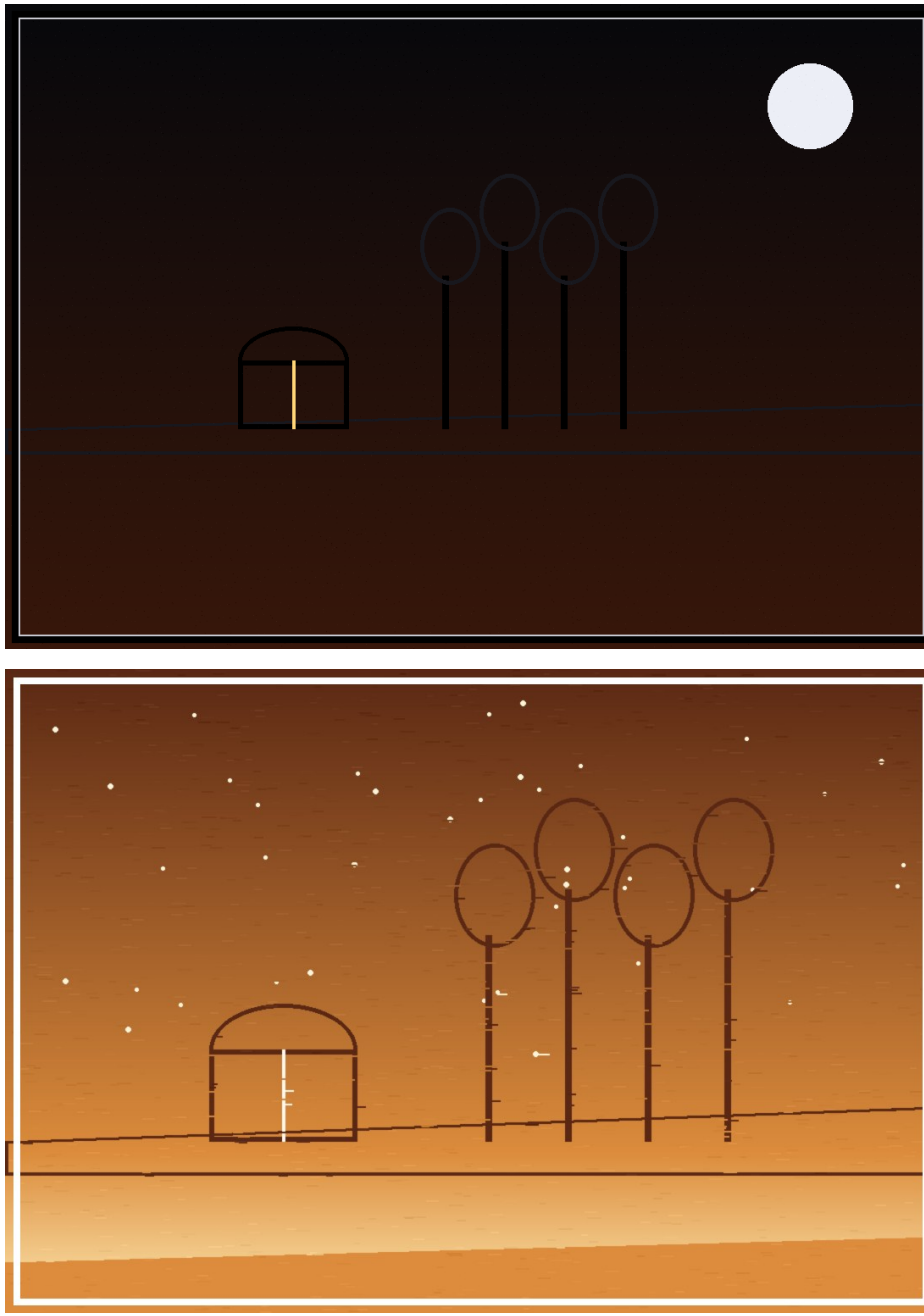

चित्र 9

ओहि बोनक सरदार छल — गवल। बोनक राजा: ने मुकुट, ने सिंहासन, मुदा बोनक पात-पात ओकर हुकुम मानए। कठोर देह, सोझ करेज।

भोरका फेरामे गवलकेँ धारक कात ओ सन्दूक भेटल। खोललक — त' भीतरसँ बहराएलि एकटा कन्या: थाकल, डेराएल, मुदा आँखिमे राजकुलक गरिमा। गवल एक क्षण देखलक, आ ओकर बोनिया करेज एक्कहि क्षणमे निर्णय कऽ लेलक।

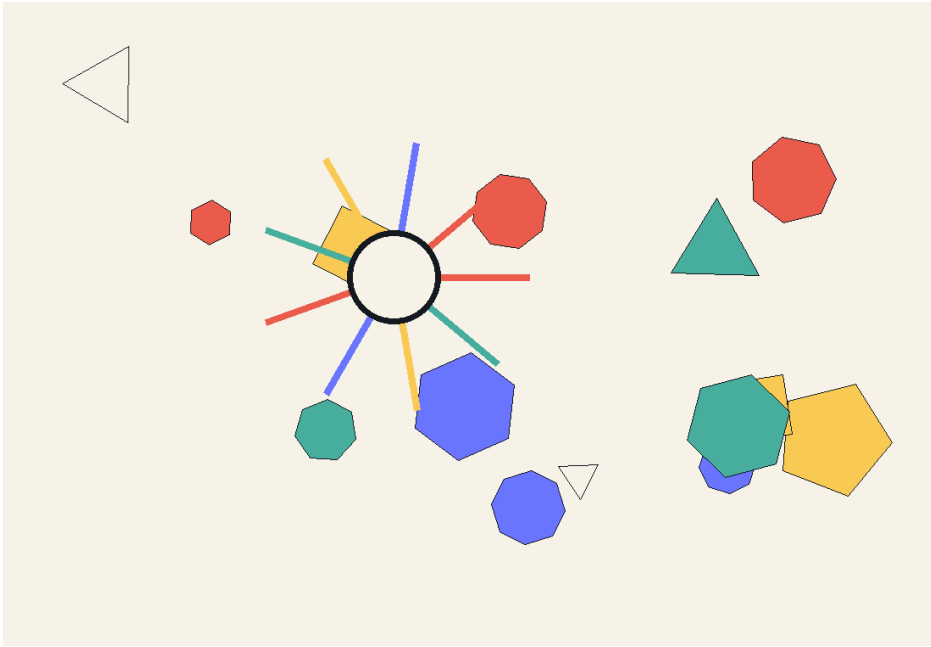

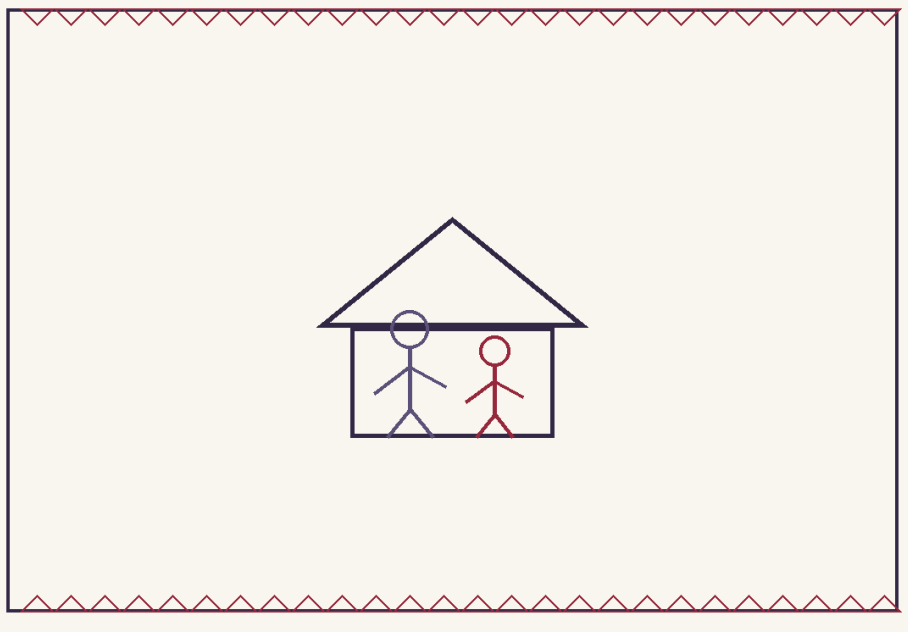

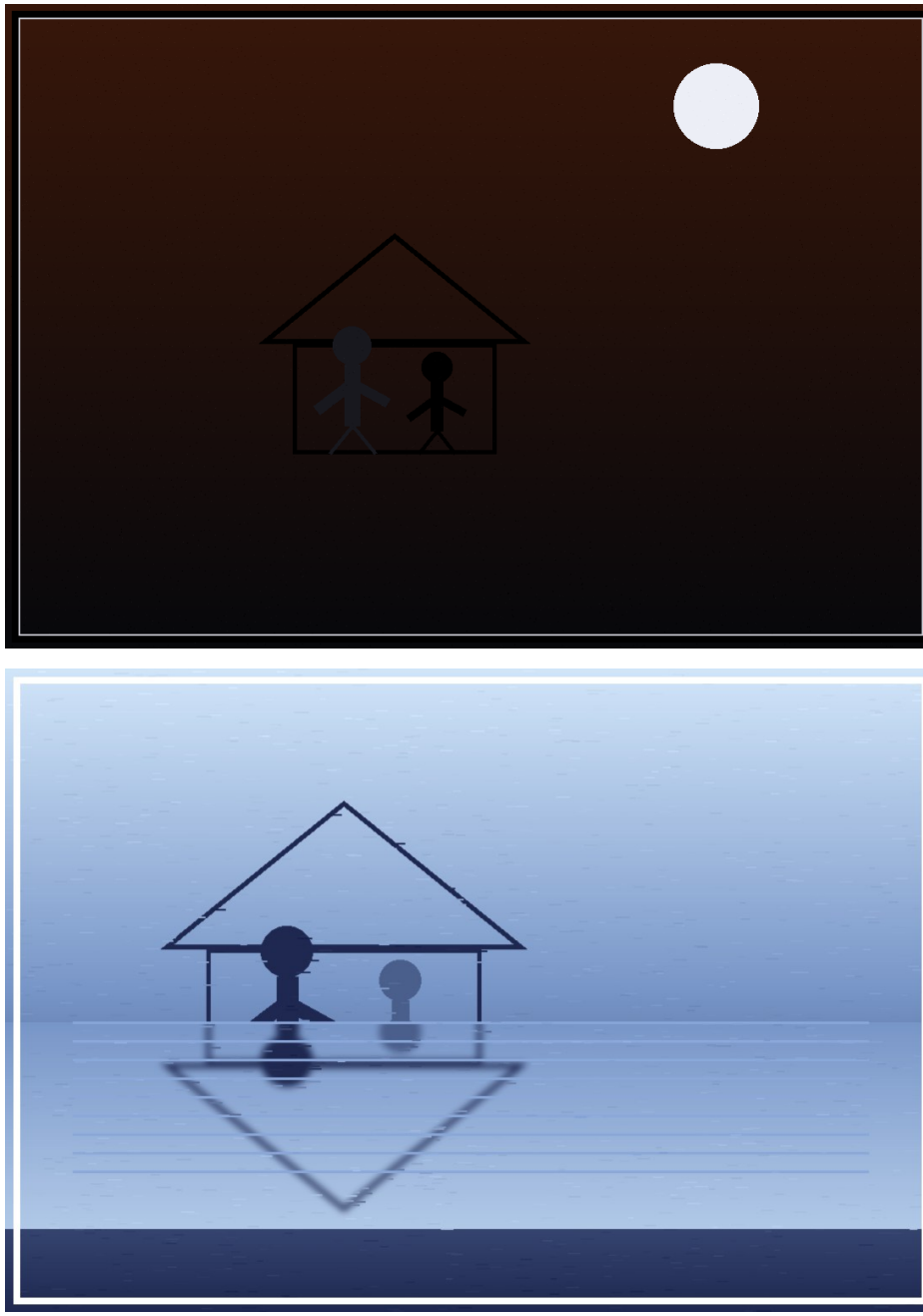

चित्र 10

'आइसँ तों हमर बेटी छैं।' — ने जाति पुछलक, ने कुल, ने कारण। बोनक नियम सोझ होइत छै: जे धार दऽ जाए, से धरोहरि।

आ गवल मोतीसाएरिकेँ बेटी जकाँ मानए लागल — बेटी 'जकाँ' नहि, बेटिये। जे स्नेह राजमहलमे कुण्डलीक एक पन्नासँ हारि गेल छल, से बोनक एकटा झोपड़ीमे बिनु शर्तक भेटि गेल। मोतीसाएरि बोनक बेटी बनि गेलि — आ किछु बरख लेल, एहि दुखान्त गाथामे सुखक एकमात्र अध्याय चलल।

अध्याय 6 : पंडितक दोसर चालि

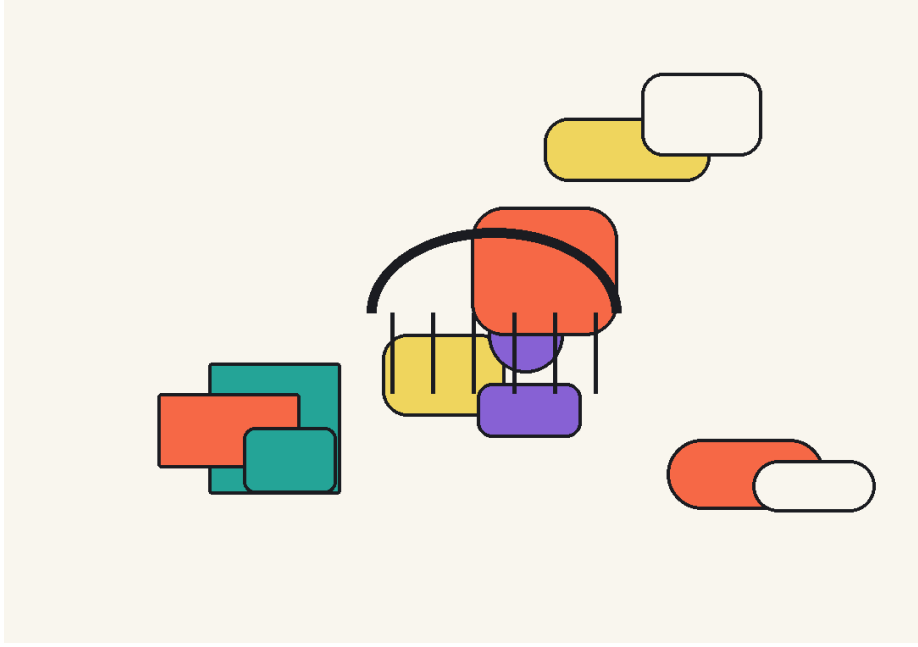

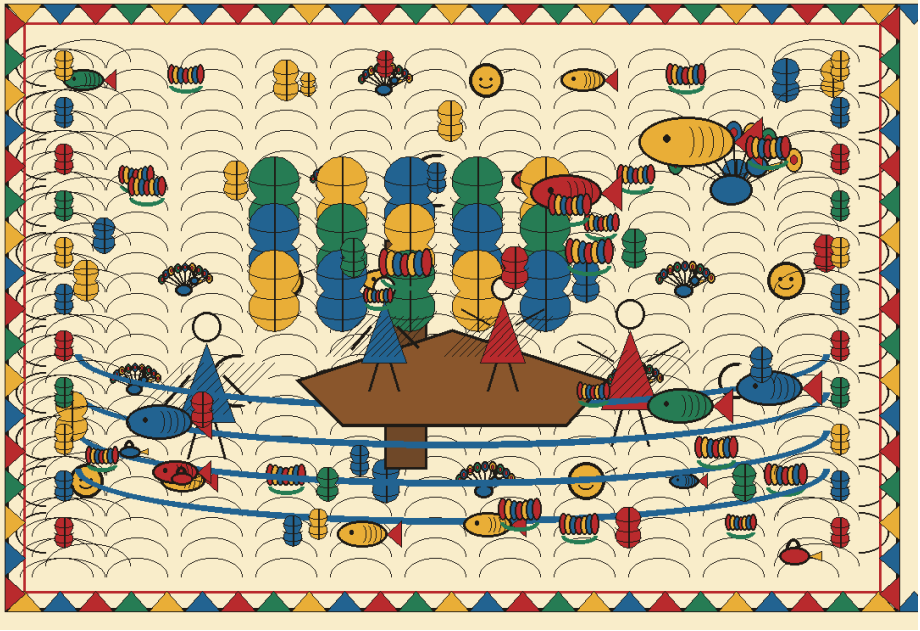

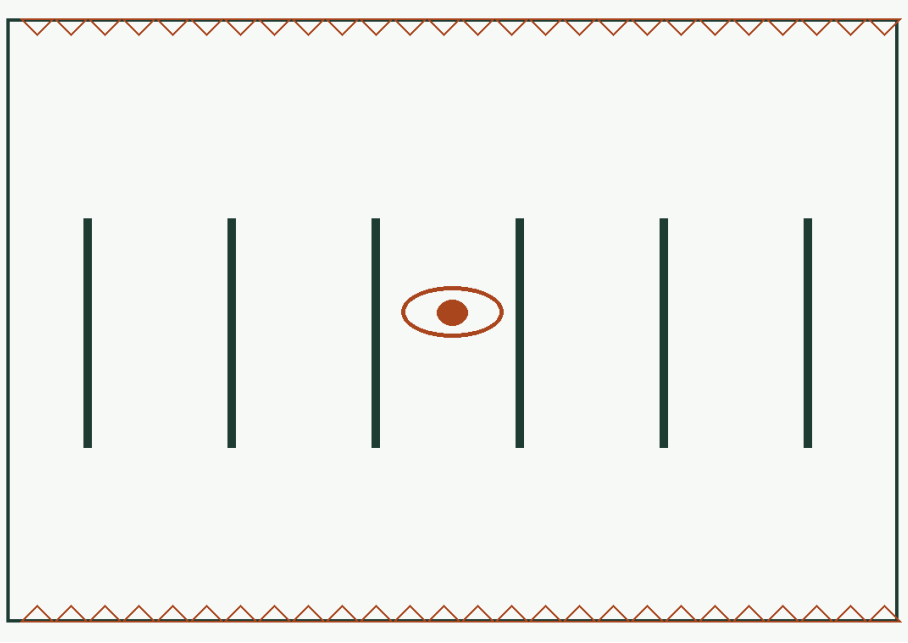

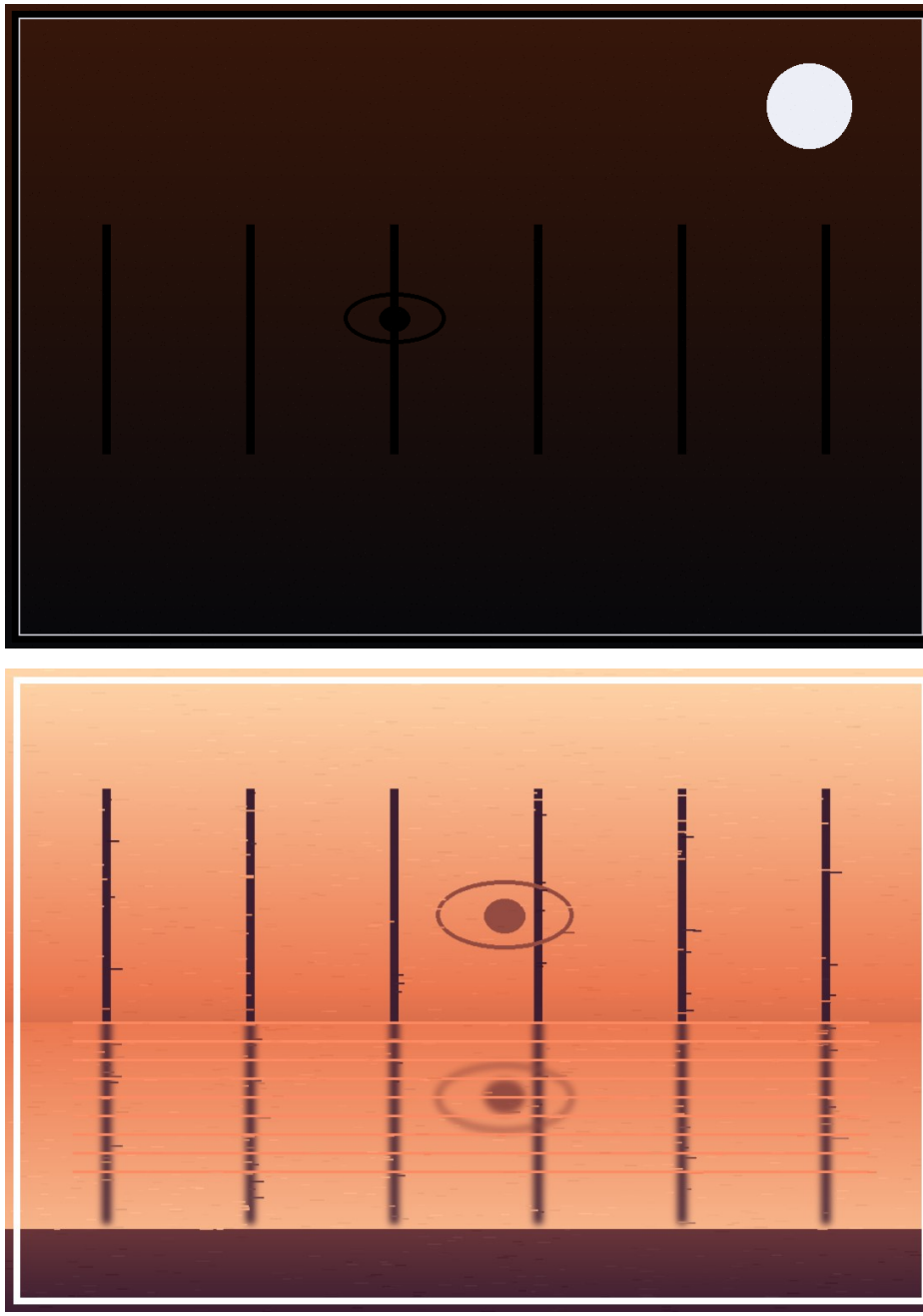

चित्र 11

मुदा लोभ मरैत नहि — ओ प्रतीक्षा करैत अछि। पंडितकेँ कोनहुना पता लागि गेलै जे सन्दूक कतय लागल आ कन्या कतय पलि रहलि अछि। ओकर बुझाएल खेल फेर जीबि उठल।

आ संयोग — ओही काल राजा भीमसेनकेँ फेर सन्तान-प्राप्तिक लिलसा भेलैक। बेटी त' 'अनिष्ट' कहि बहा देल गेल छलि; आब बुढ़ापा लग आबि रहल छल आ गद्दीक उत्तराधिकारी फेर कोनो नहि। राजा पंडितसँ पुछलक — 'उपाय?'

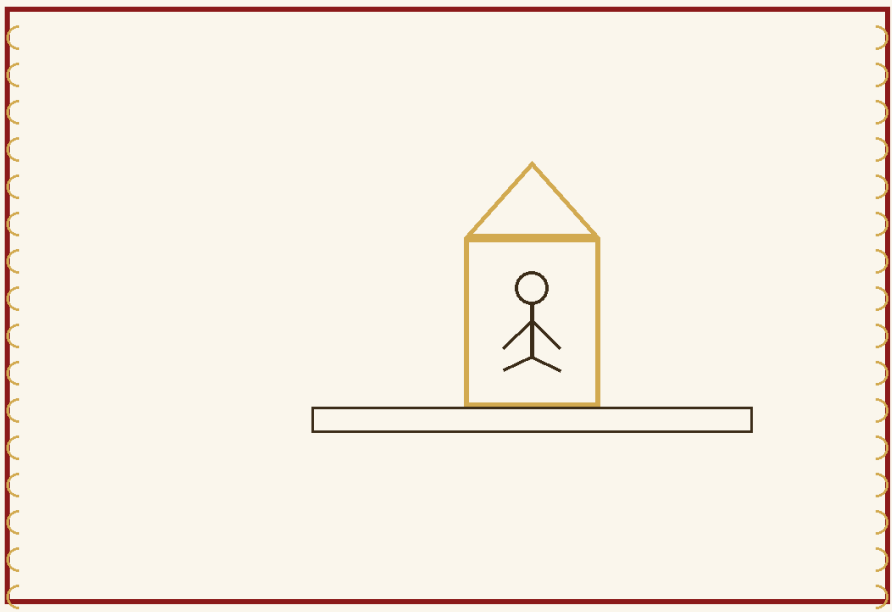

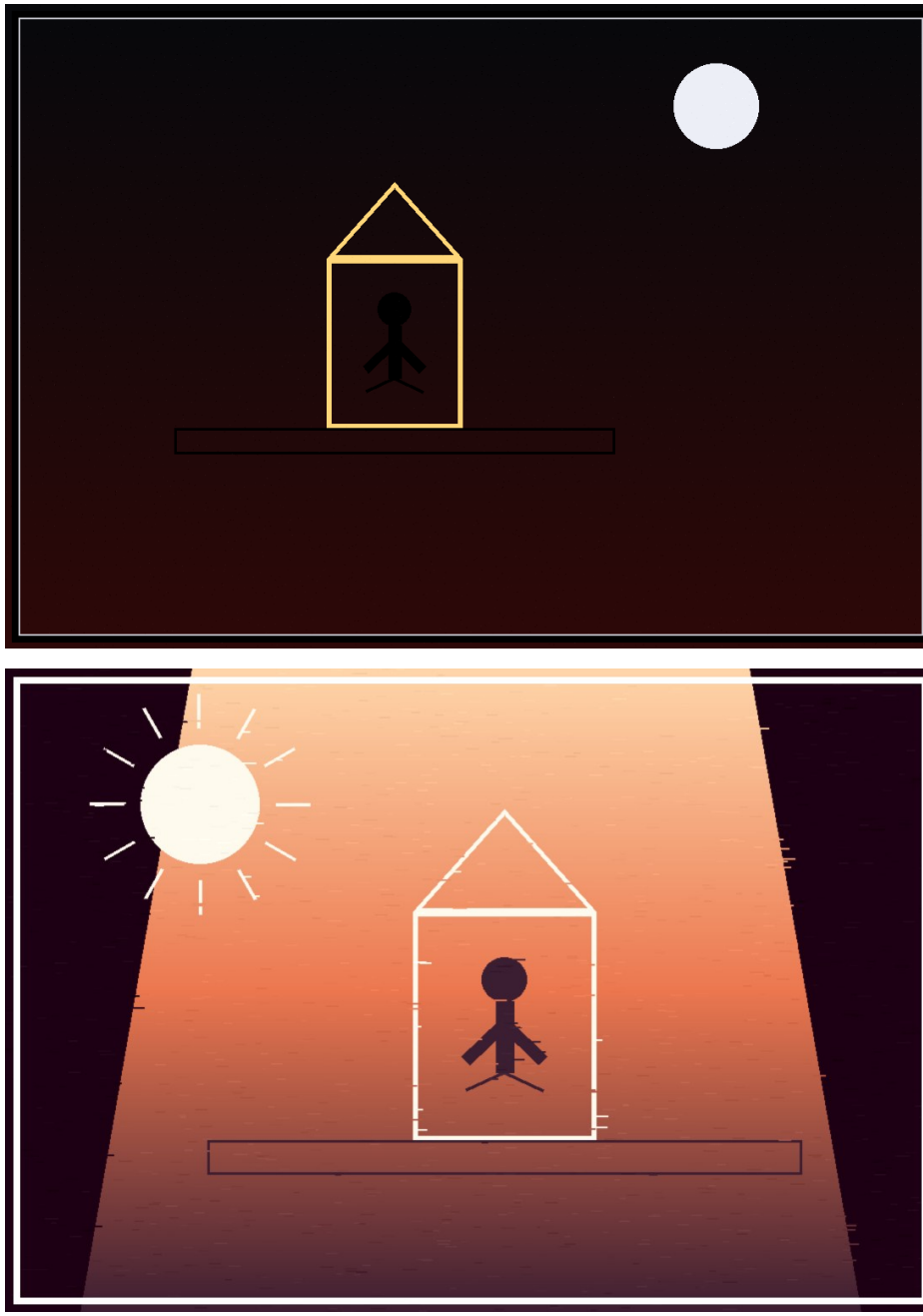

चित्र 12

पंडितक आँखि चमकल। एहि बेर योजना आरो टेढ़ छल: 'राजन्! मोरंग बोनक गवली सरदारक पुत्रीसँ जँ अहाँक बियाह भऽ जाए, त' पुत्र-प्राप्तिक योग अछि!'

गवलक पुत्री — माने मोतीसाएरि — माने राजाक अपन बेटी! पंडित ई जनैत छल, राजा नहि। पंडितक गणित: बेटीसँ बियाह भेने राजा धर्म-च्युत हएत, राज्यसँ हाथ धोअत — आ तखन खाली गद्दी पर के? पंडित! जे लोभ पहिने बेटीकेँ धारमे बहओलक, से आब पूरा कुलकेँ पापक धारमे बहबए चाहैत छल।

अध्याय 7 : गवलसँ युद्ध

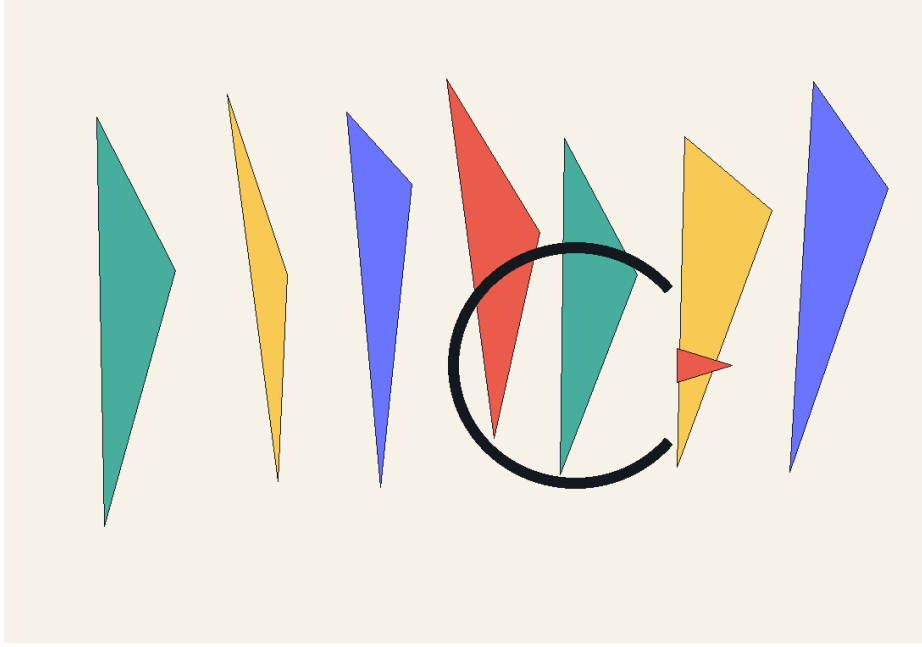

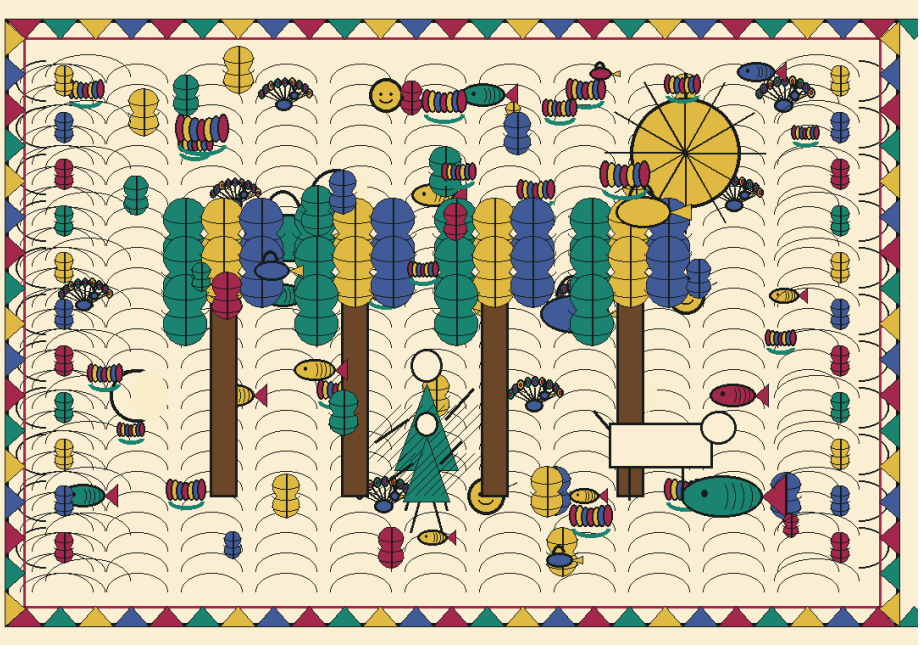

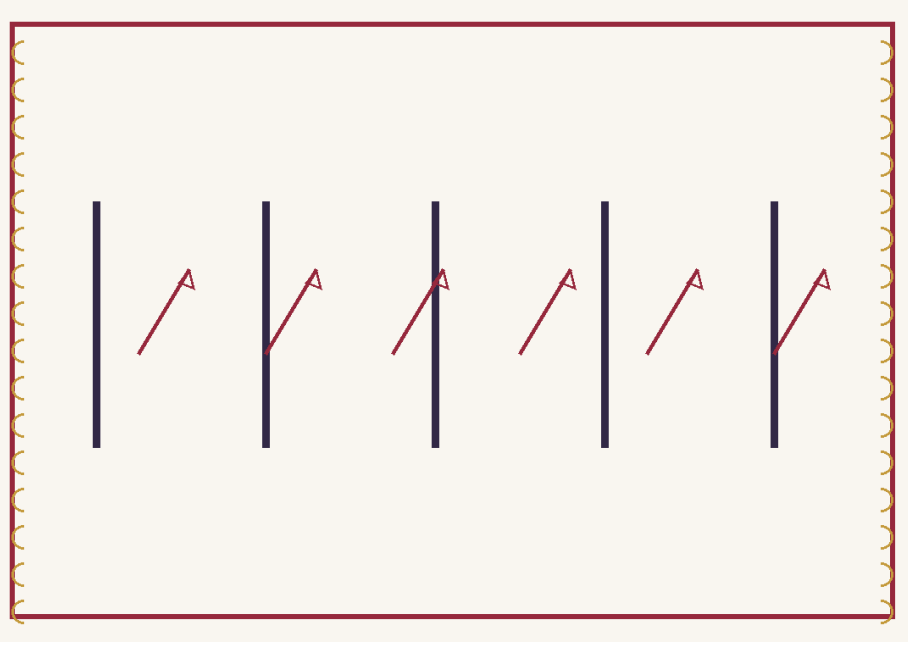

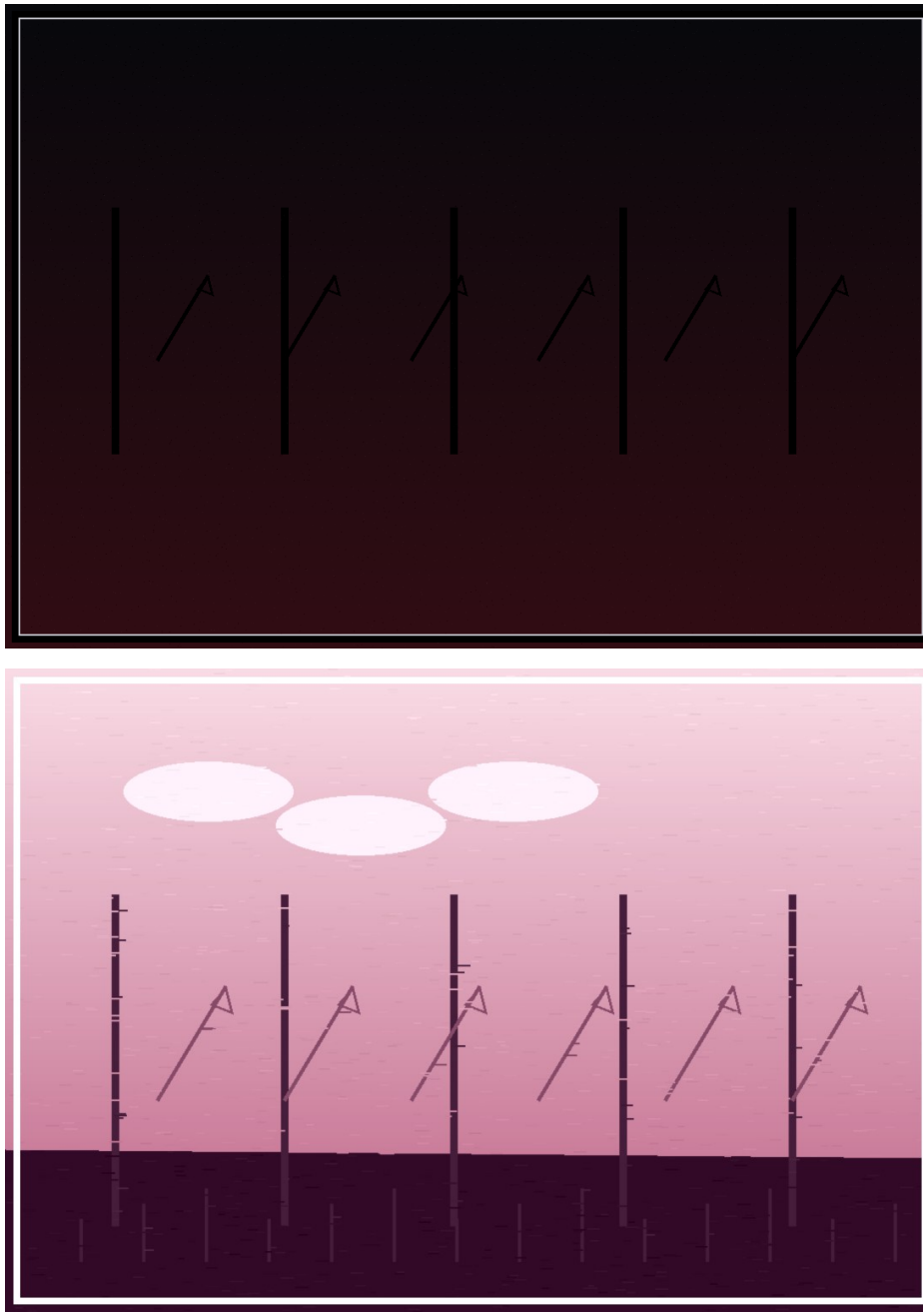

चित्र 13

राजा भीमसेन गवल लग बियाहक प्रस्ताव पठओलनि। गवल एक्कहि शब्दमे उत्तर देलक — 'नहि।' बोनक सरदार बेटी बेचैत नहि अछि — ने राज लेल, ने डर लेल।

त' फेर वैह भेल जे राजा सभ सदिखन करैत आएल छथि — प्रस्ताव हारल त' प्रहार। मोरंगक सेना बोनपर चढ़ि गेल। गवलसँ भयंकर युद्ध भेल।

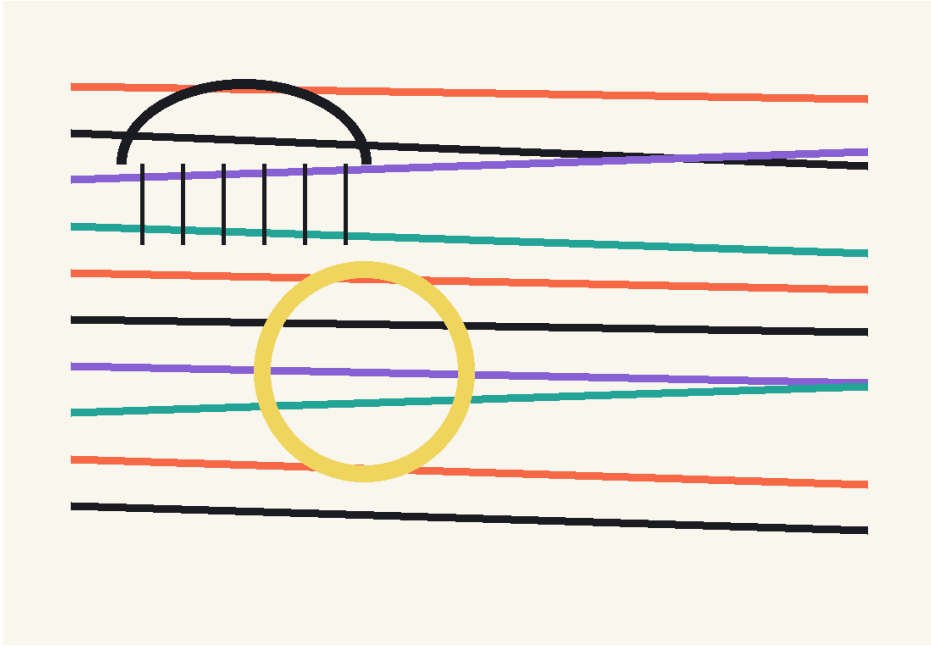

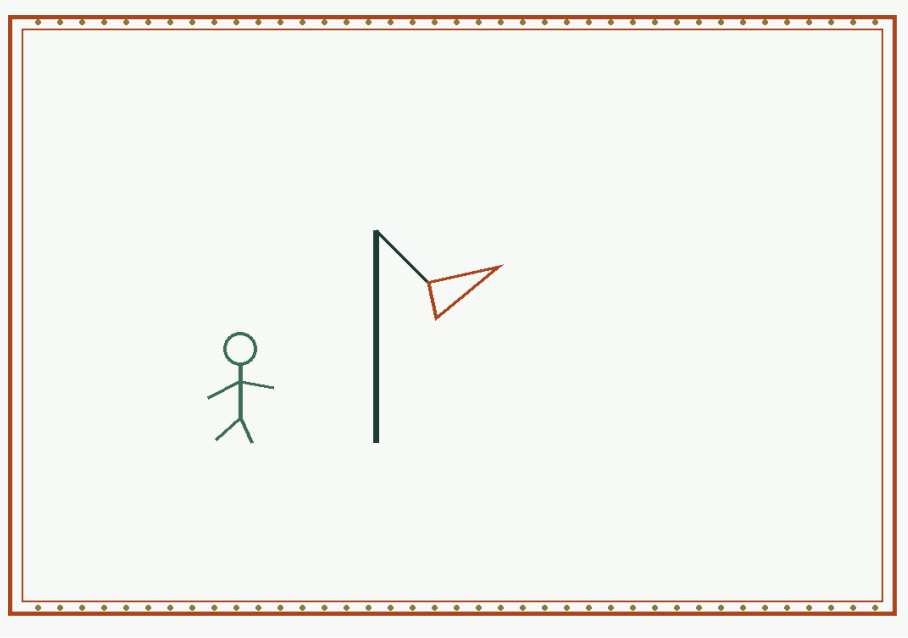

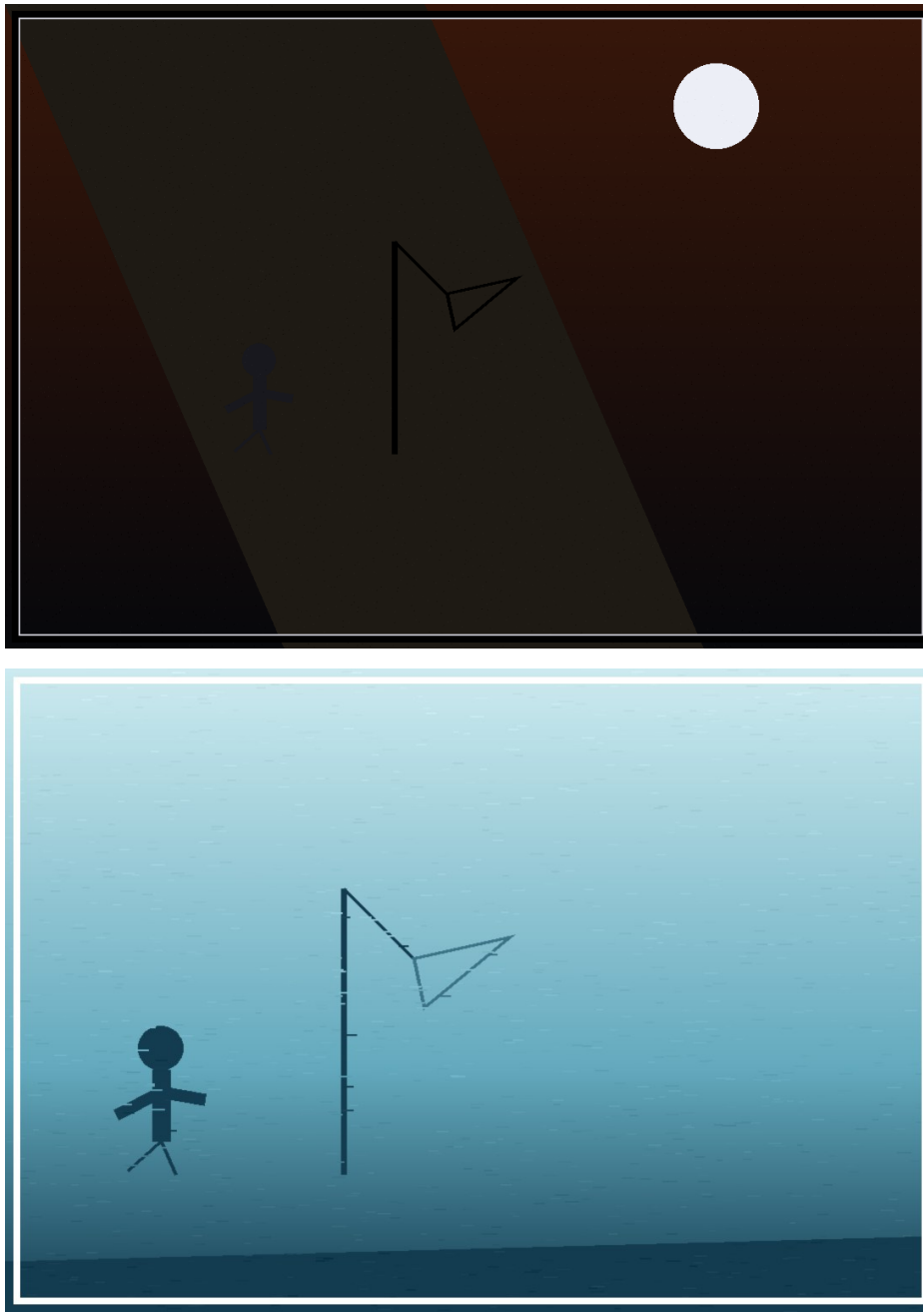

चित्र 14

मुदा बोन अपन सरदारक संग लड़ैत अछि। गाछ ढाल बनल, झाड़ी फाँस, आ गवलक बोनिया योद्धा सभ छायाक युद्ध लड़लक। राजसेना बोनमे भोथिया गेल — आ भीमसेन हारि गेल।

राजा हारल, मुदा लिलसा नहि हारल। दरबार घुरि भीमसेन पंडितसँ मंत्रणा केलक — आ मंत्रणासँ बहराएल एकटा नव नाम: कृष्णाराम, यादव जातिक सरदार, जकर वीरताक डंका दूर धरि बजैत छल। राजा कहलक — 'गवलक बेटीकेँ आनि दिअ, आ अदहा राज्य लऽ जाउ।' आधा राज — एकटा कन्याक दाम! लोभक बजारमे भाव एहिना लगैत अछि।

अध्याय 8 : कृष्णाराम

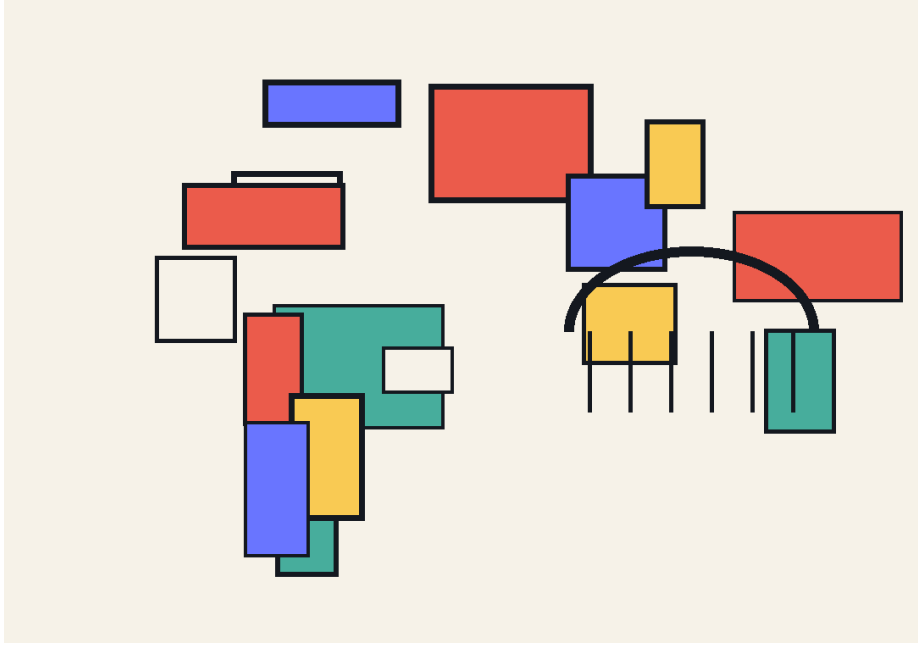

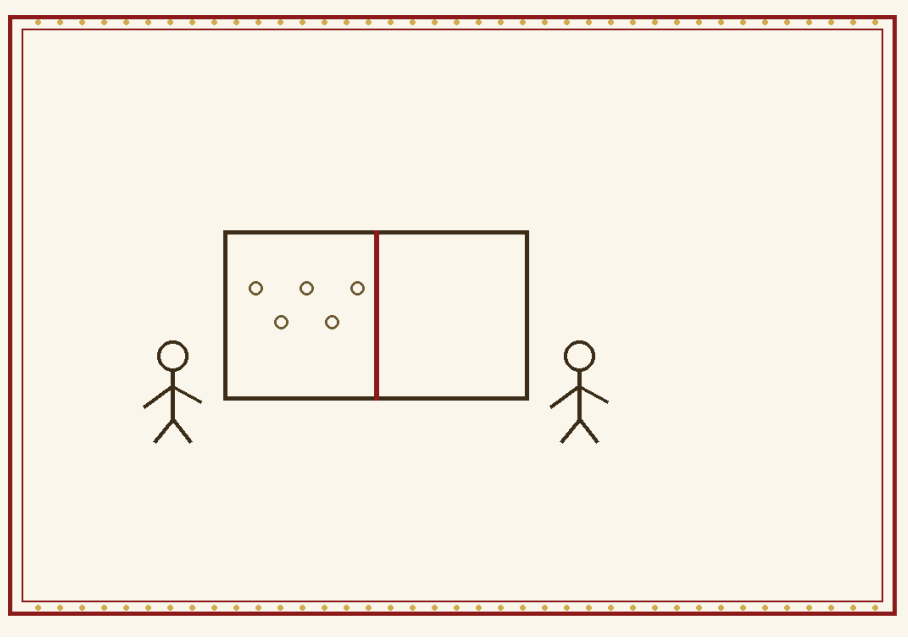

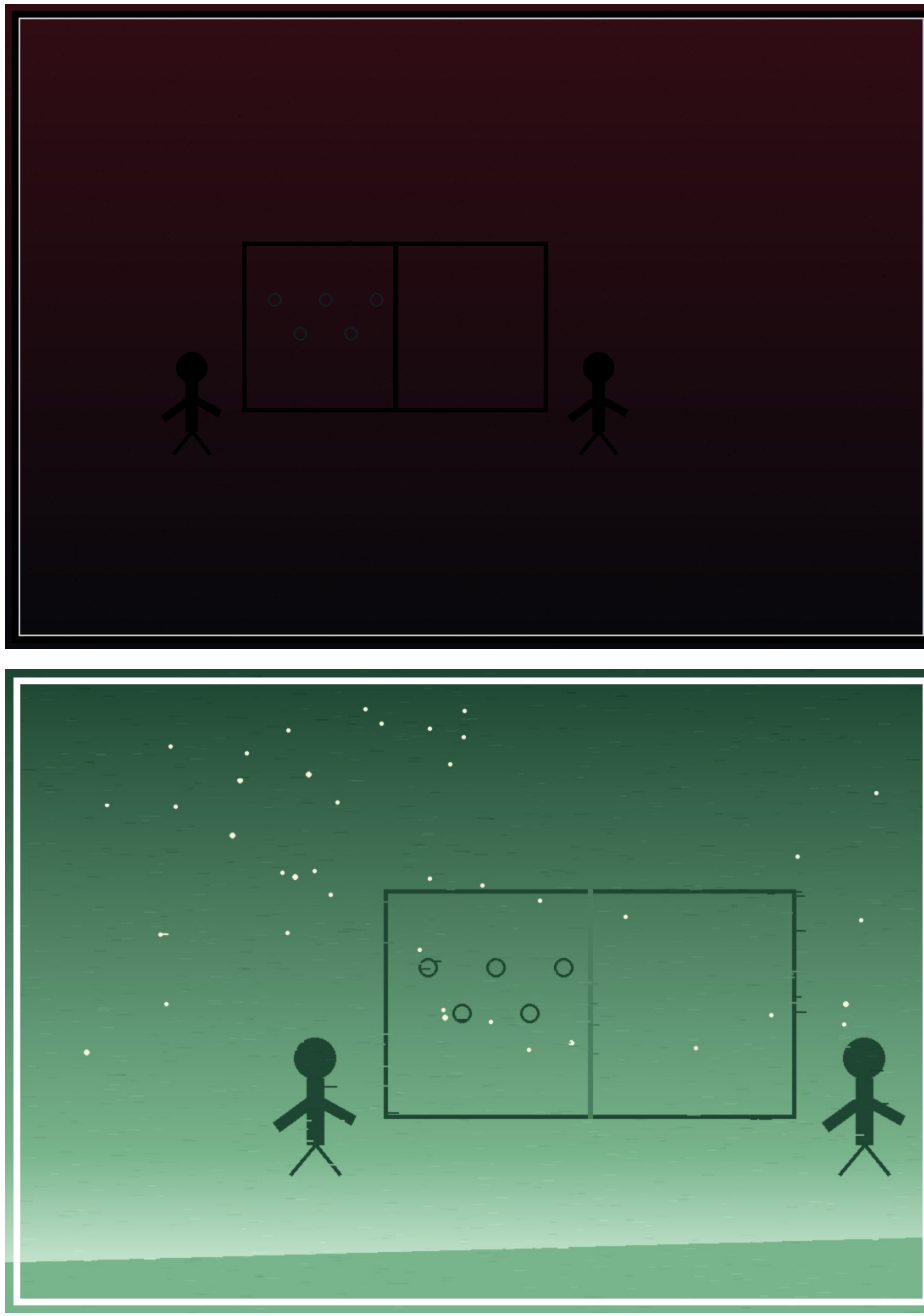

चित्र 15

कृष्णाराम पहिने बुद्धिसँ काज लेलक — गवलकेँ बुझओलक, सम्बन्धक लाभ गनओलक, राजाक क्रोधक भय देखओलक। मुदा गवल नहि मानल। ओकर उत्तर वैह — 'बेटी हमर धरोहरि थिक, सौदा नहि।'

तखन कृष्णाराम आक्रमण केलक। फेर युद्ध — आ फेर वैह परिणाम: गवल नहि हारल! बोनक सरदारक जड़ि बोनमे एतेक गहींर छल जे यादव-वीरक तरुआरियो ओकरा नहि उखाड़ि सकल।

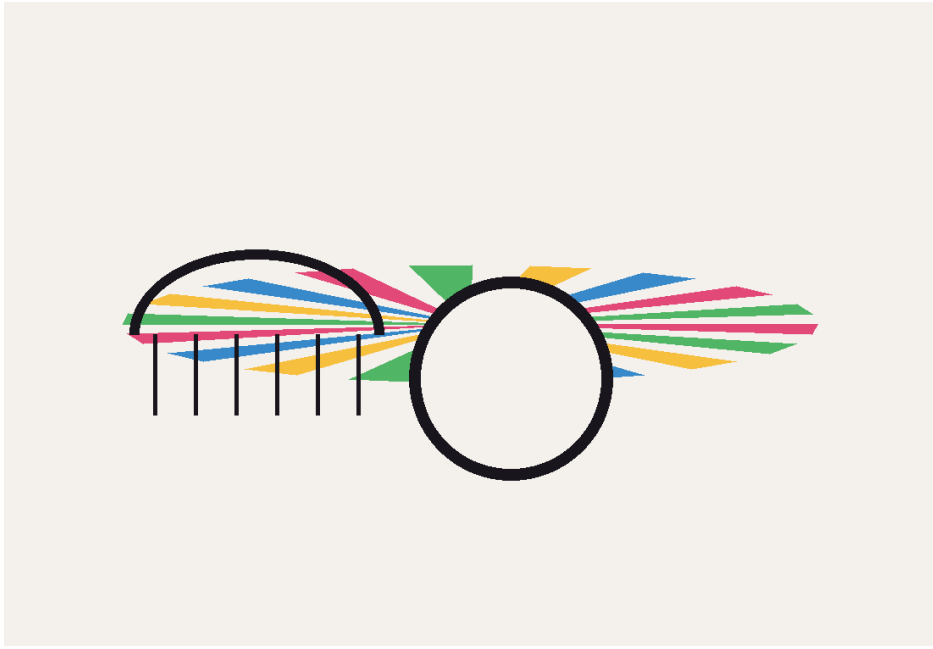

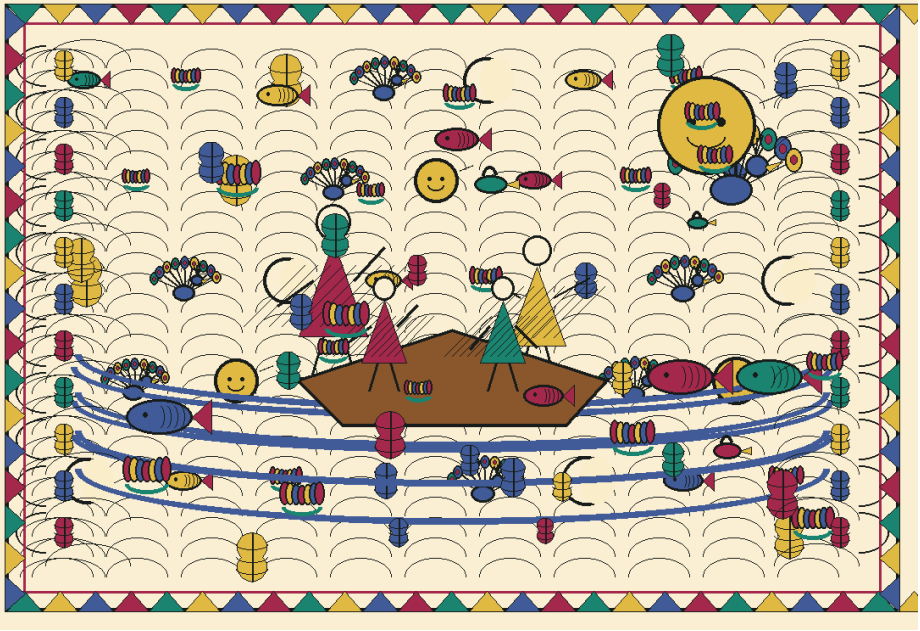

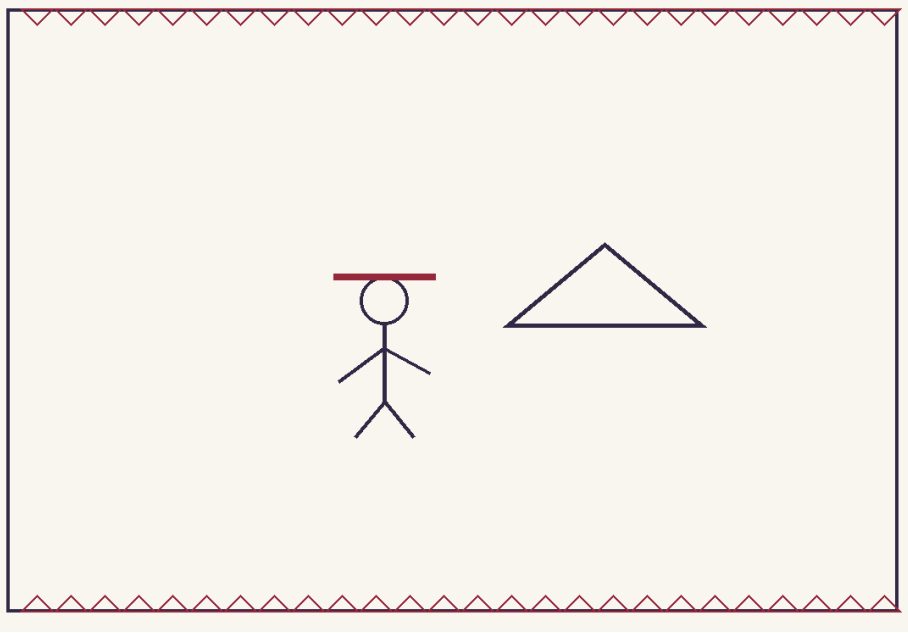

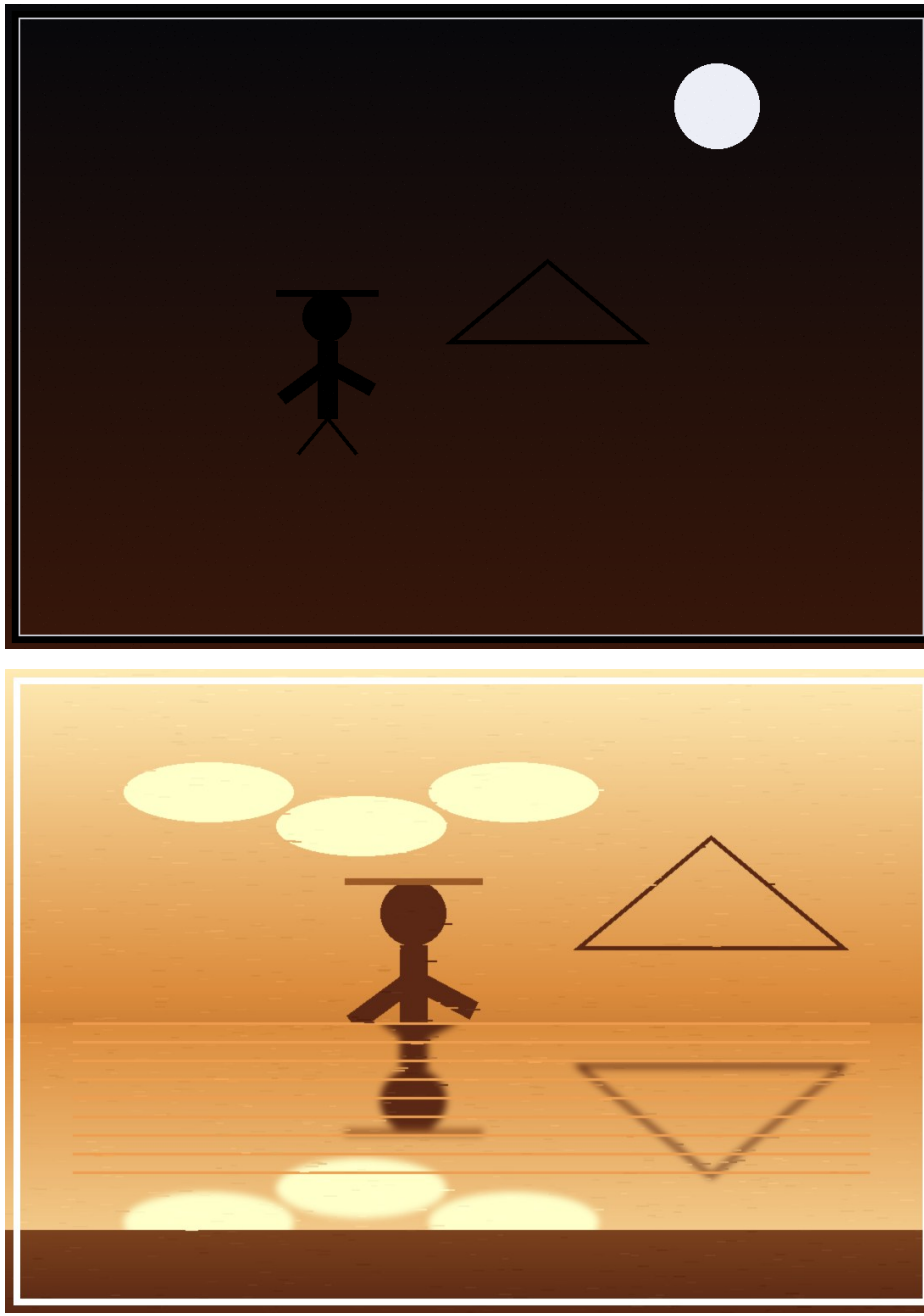

चित्र 16

त' जे बल नहि कऽ सकल, से छल केलक। कृष्णाराम मरछौर छिटवा देलक — आ ओहि धूर्त-धूरिक आन्हीमे, आँखि मुनाएल सैनिक सभक बीचसँ, मोतीसाएरिकेँ उठा लेल गेल। बोनक बेटी बोनसँ छीनल गेलि — लड़ि कऽ नहि, धोखासँ।

कृष्णाराम मोतीसाएरिकेँ भीमसेन लग पहुँचा देलक, आ वचनक मुताबिक आधा मोरंग पओलक। सौदा पूरा — सभकेँ अपन-अपन हिस्सा भेटल। खाली ओहि कन्याकेँ किछु नहि पुछल गेल, जकर जिनगी दोसर बेर सन्दूक बनाओल गेल छलि।

अध्याय 9 : प्रस्ताव

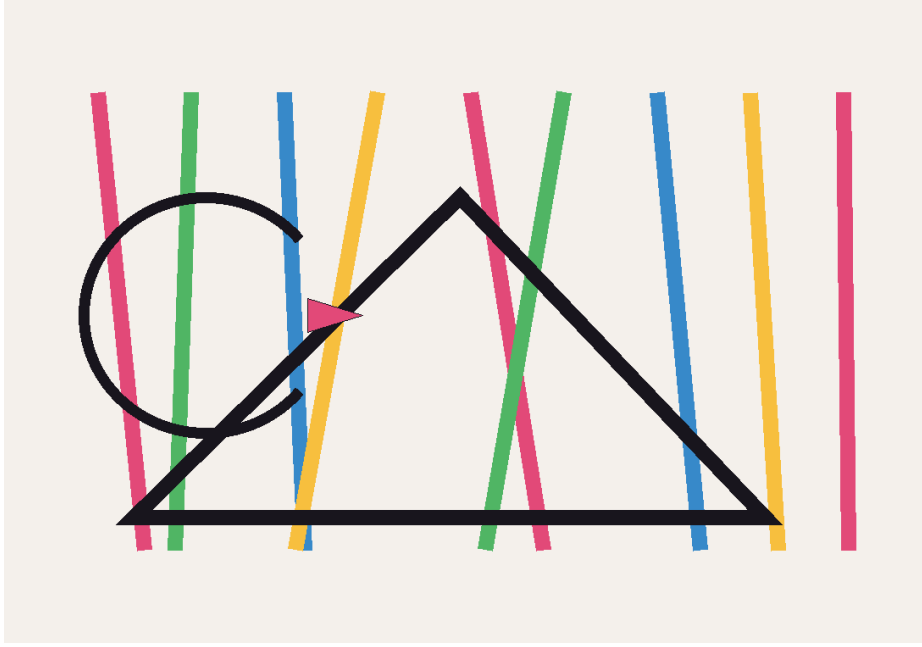

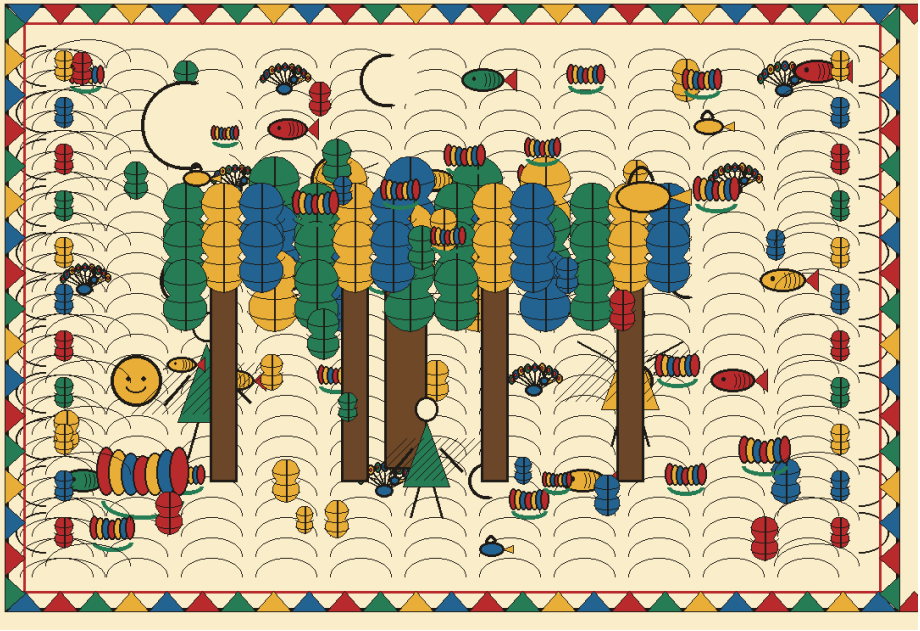

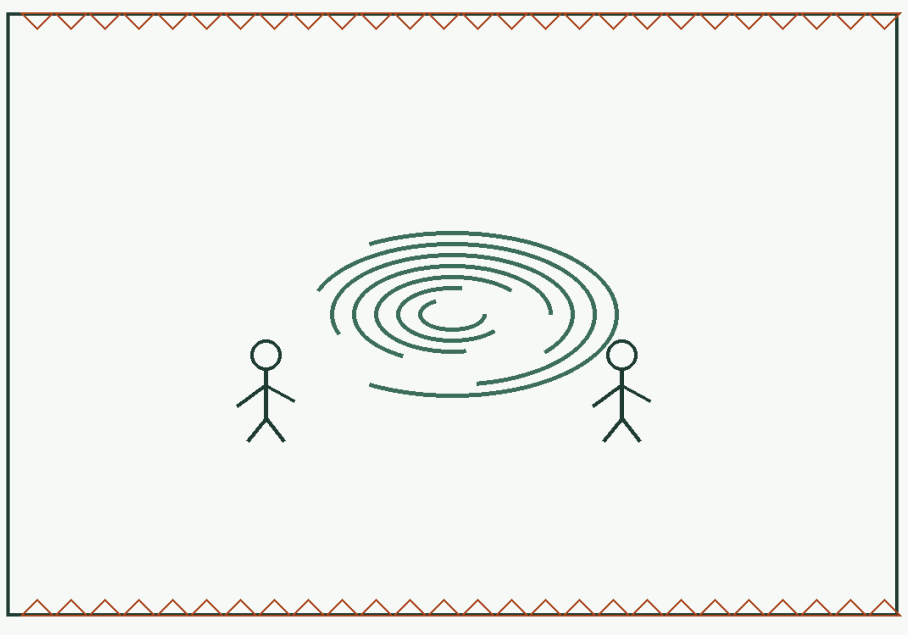

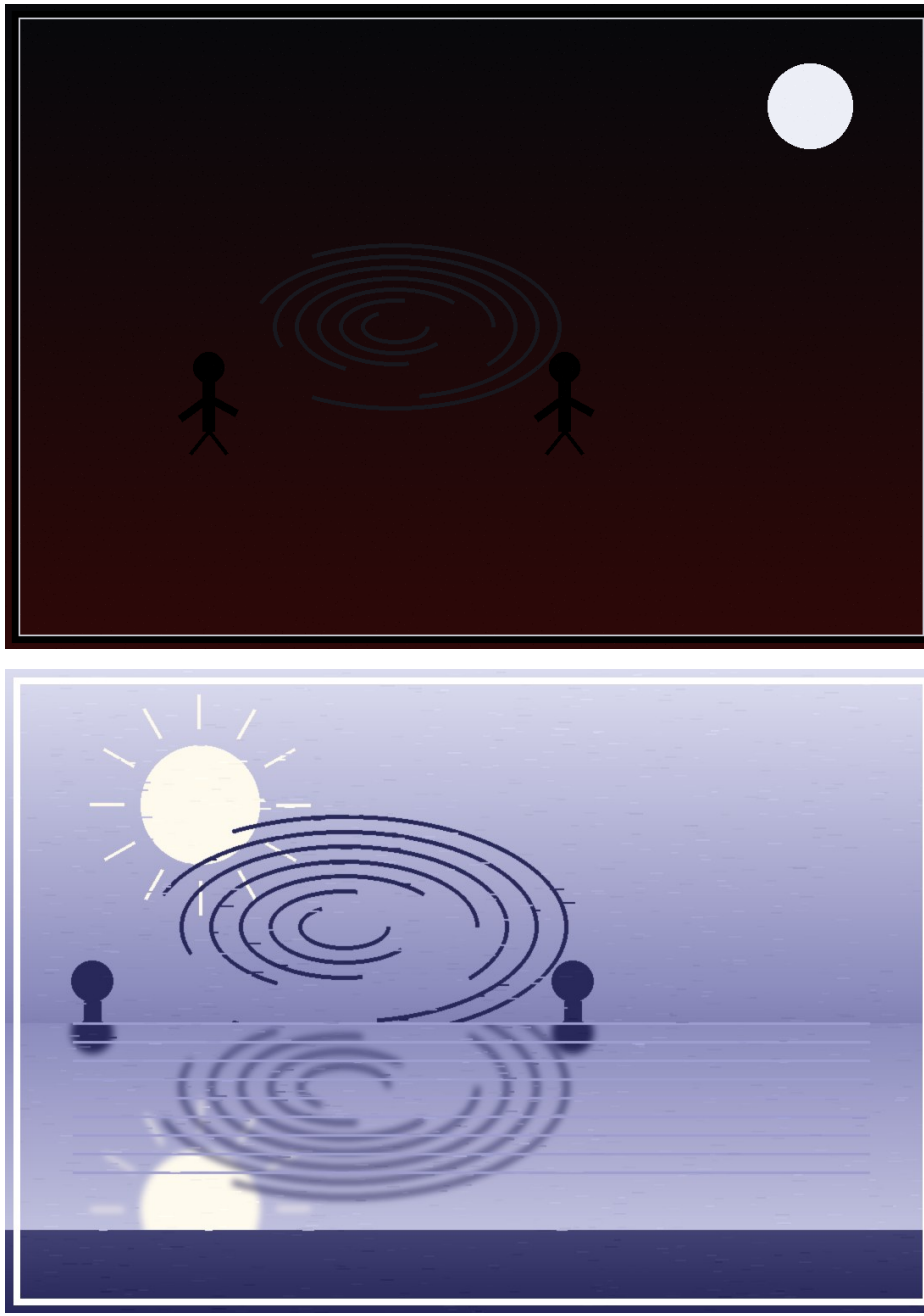

चित्र 17

राजभवनमे मोतीसाएरि ठाढ़ि छलीह — ओही महलमे, जतय ओकर जन्म भेल छल; ओही राजाक आगाँ, जे ओकर पिता छलाह। मुदा राजा नहि चिन्हलनि। सन्दूकमे बहाओल गेलि नन्हकी बेटी आ बोनमे पललि जुआन कन्याक बीच बीस बरखक धार बहि चुकल छल।

आ भीमसेन — पुत्र-योगक लिलसामे आन्हर, पंडितक भविष्यवाणीपर मुग्ध — ओहि कन्याक आगाँ बियाहक प्रस्ताव राखि देलनि।

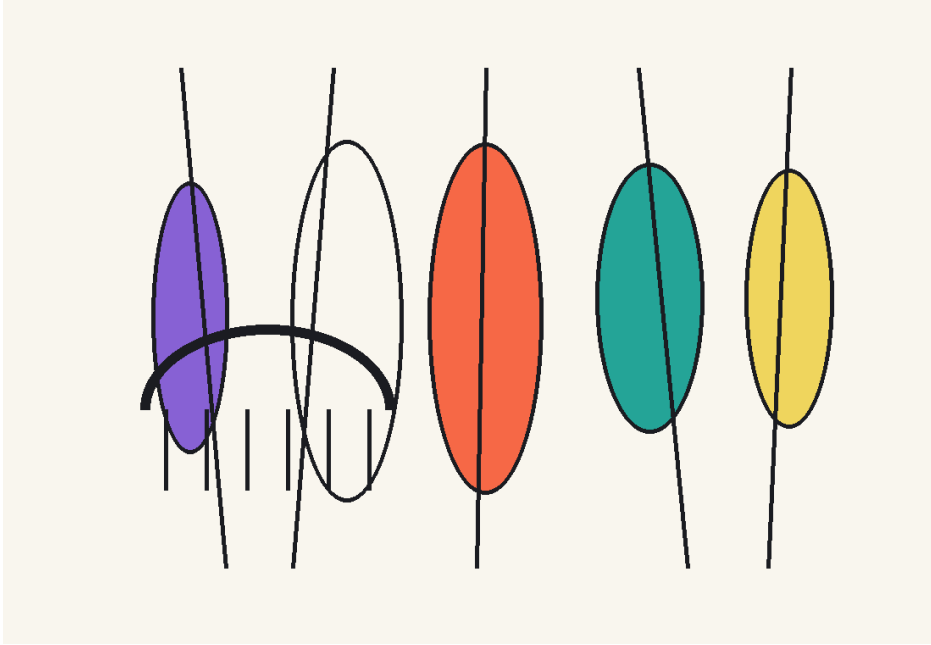

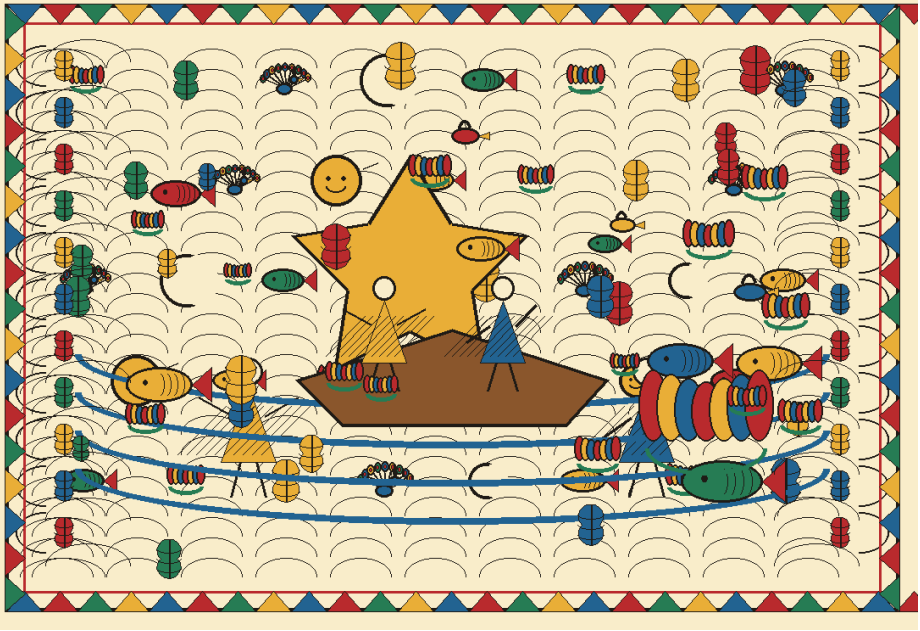

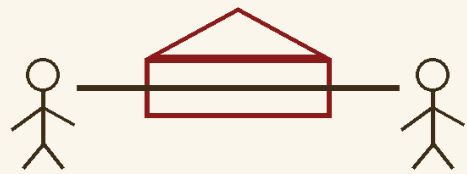

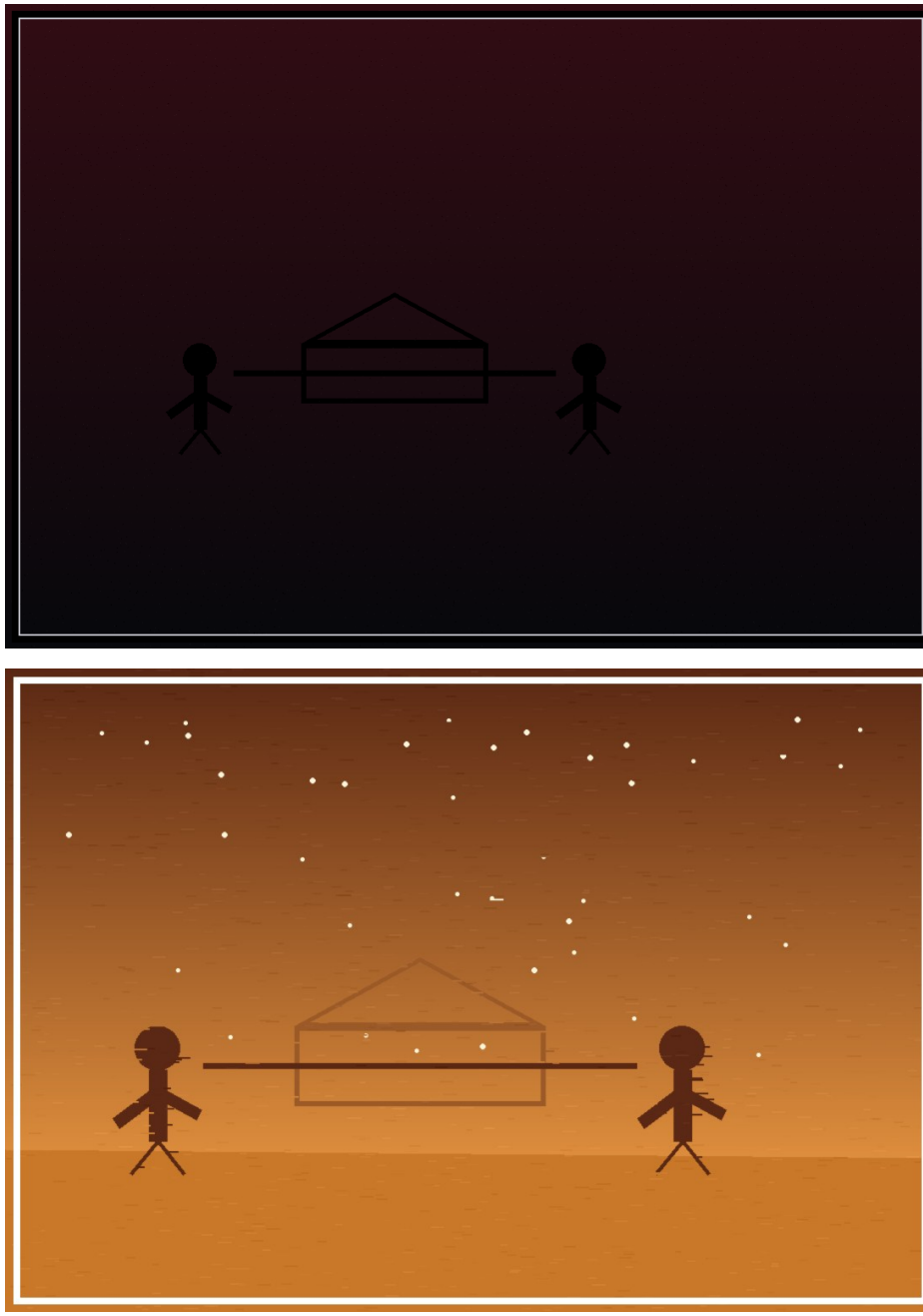

चित्र 18

क्षण भरि लेल समय ठाढ़ भऽ गेल। ई प्रपंचक सभसँ करुण दृश्य छल: एकटा पिता, अनजानहिमे, अपन बेटीक आगाँ... आ ई सभटा एकटा लोभी पंडितक रचल जाल छल, जे परदाक पाछाँ अपन गद्दीक सपना गनैत छल।

मुदा मोतीसाएरि — यज्ञसँ जनमलि कन्या — ओहि क्षण सभटा देखि लेलनि। जन्मक भेद, पंडितक छल, पिताक अज्ञान — दिव्य दृष्टिक आगाँ सभ परदा जरि गेल। आ हुनक आँखिसँ नोर नहि, अग्नि बहराएल।

अध्याय 10 : शाप

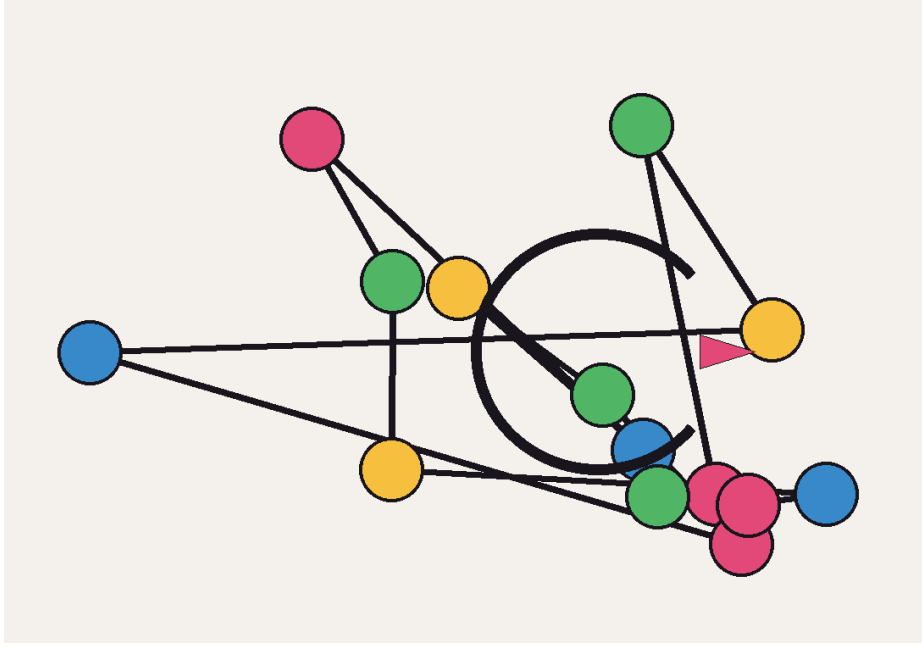

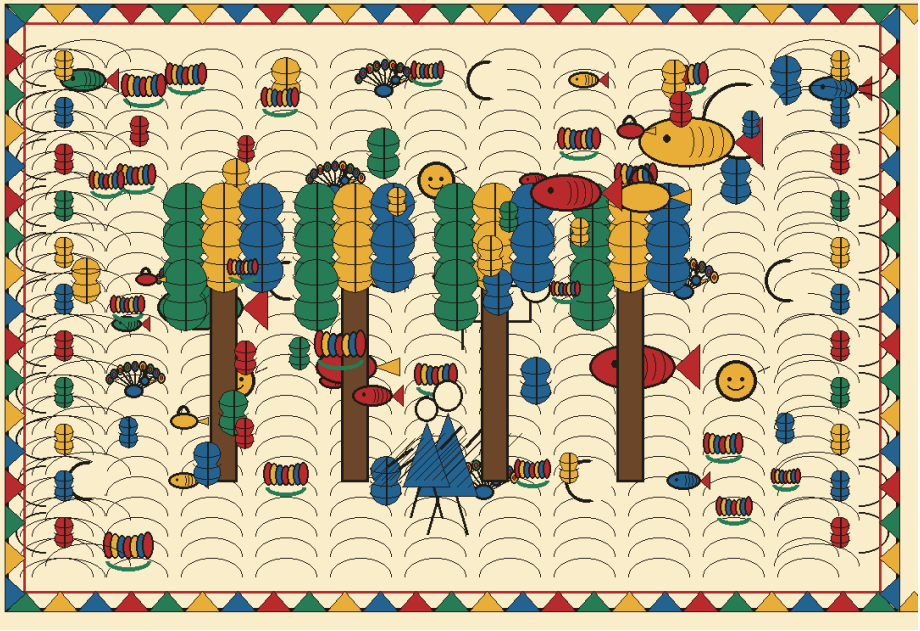

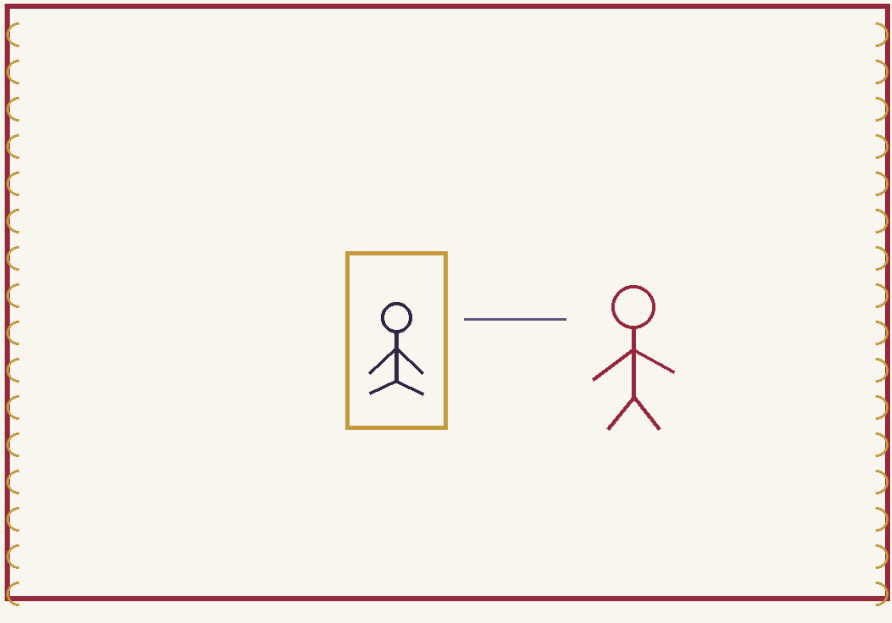

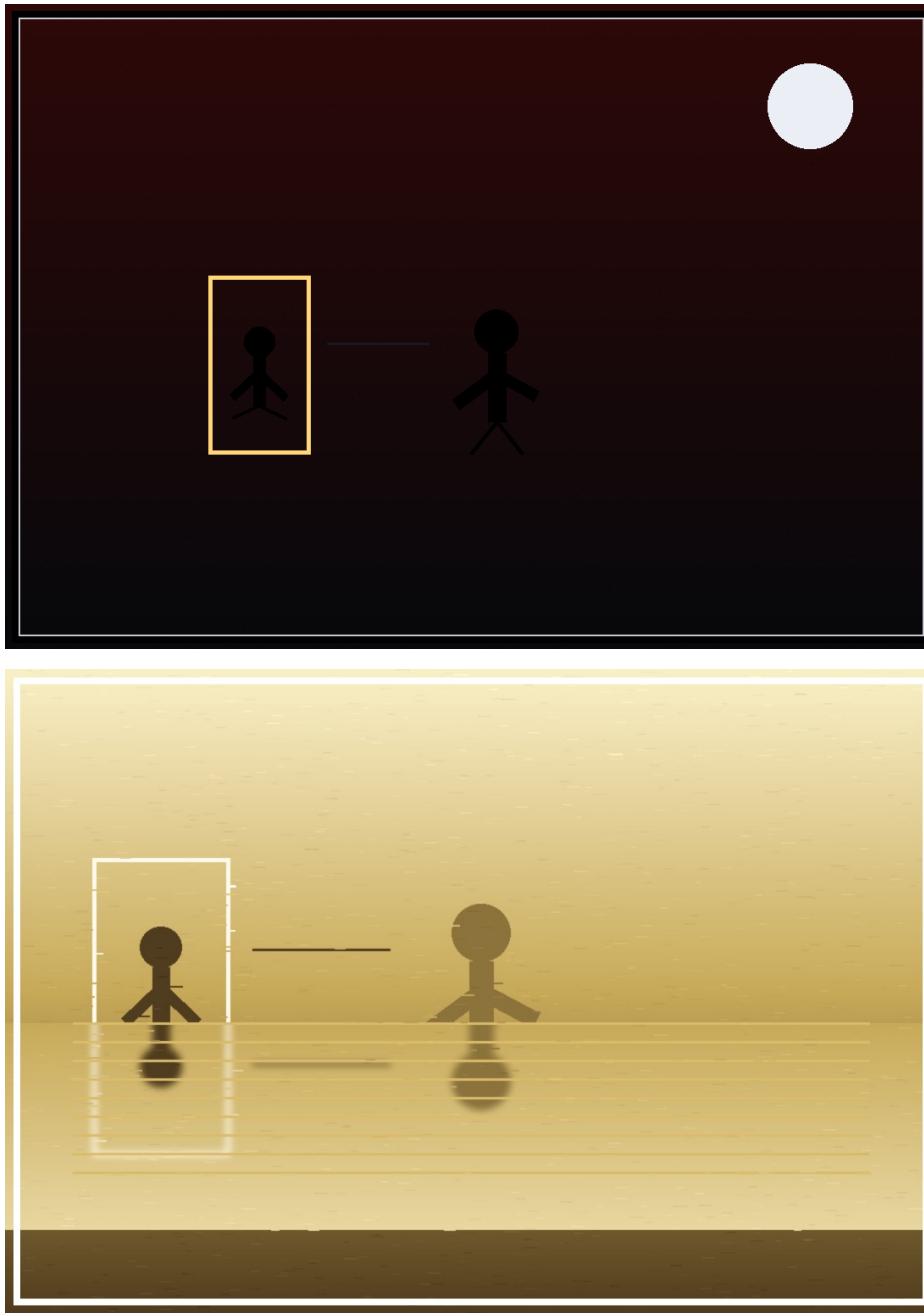

चित्र 19

मोतीसाएरि शाप देलनि।

ओ शाप क्रोधक नहि छल — ओ शाप ओहि सभटा अन्यायक जोड़ छल जे एहि गाथामे एकत्र भेल छल: यज्ञक बेटीकेँ सन्दूकमे बन्द करब, धारमे बहाएब, बोनसँ छीनब, आ अन्तमे... ई प्रस्ताव। 'जे राज्य अपन बेटीक ई गति करैत अछि, से राज्य नहि रहत!'

आ शाप दैत-दैत मोतीसाएरि अपने अन्तर्धान भऽ गेलीह — जेना दीपक लौ अपन काज पूरा कऽ हवामे समा जाए। मोक्ष भेटलनि हुनका — एहि प्रपंचक सभटा सुखक अधिकारिणी, जे एहि प्रपंचसँ मुक्ते भऽ कऽ सुखी भेलि। भविष्यवाणी सत्य भेल — मुदा एना, जेना नियति व्यंग्य करैत हो।

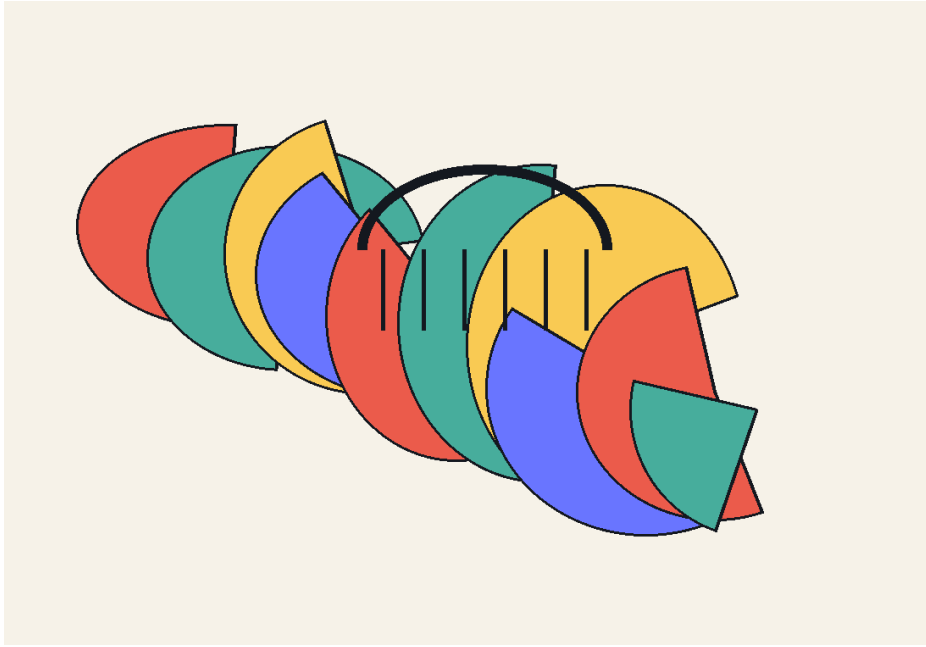

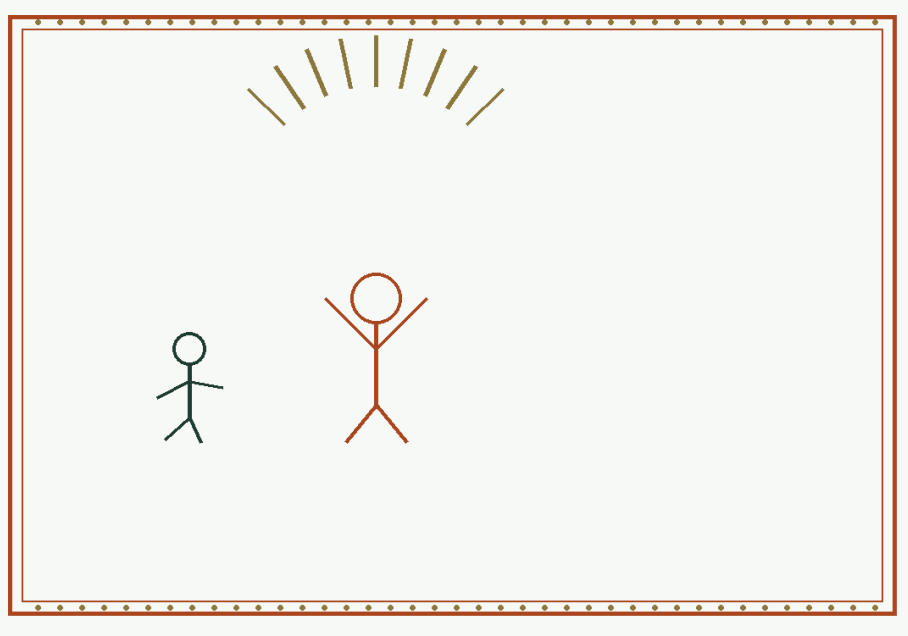

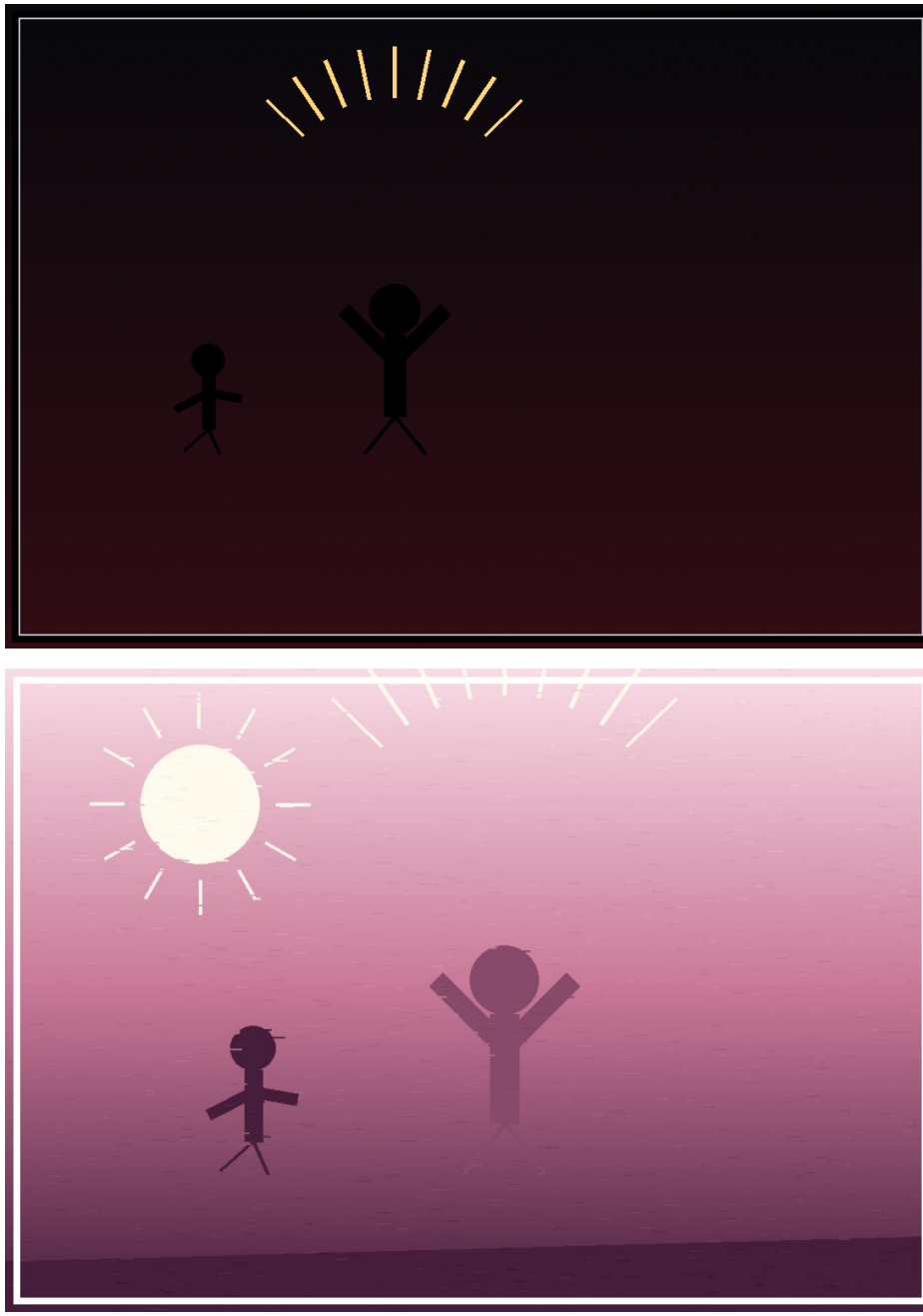

चित्र 20

भीमसेन ठाढ़ रहि गेलाह — शून्य। जे शब्द कन्याक मुँहसँ अन्तिम बेर बहराएल छल, से हुनक कानमे बरछी जकाँ गड़ल छल। आ तखन, बहुत देरसँ, सभटा भेद खुजल — पंडितक कुण्डली, झूठक अनिष्ट, सन्दूक, बोन... आ ई, जे ओ अपने बेटीक...

किछु सत्य एहन होइत अछि जकरा बुझला उत्तर मनुक्ख जीबितो मरि जाइत अछि। भीमसेन ओहि दिन दोसर बेर सन्तान गमओलनि — आ एहि बेर संगमे सभ किछु।

अध्याय 11 : राज्यक अन्त

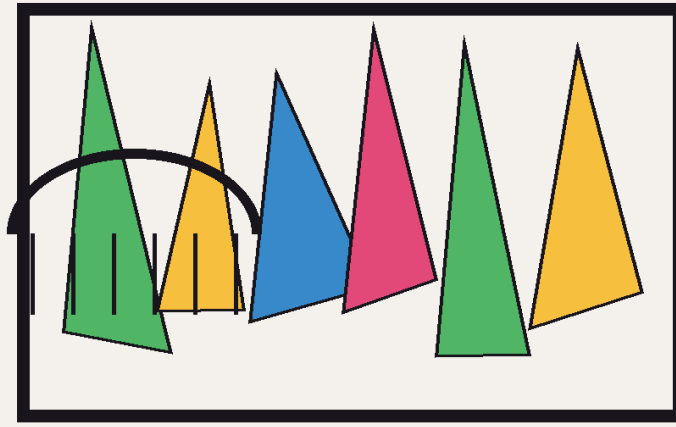

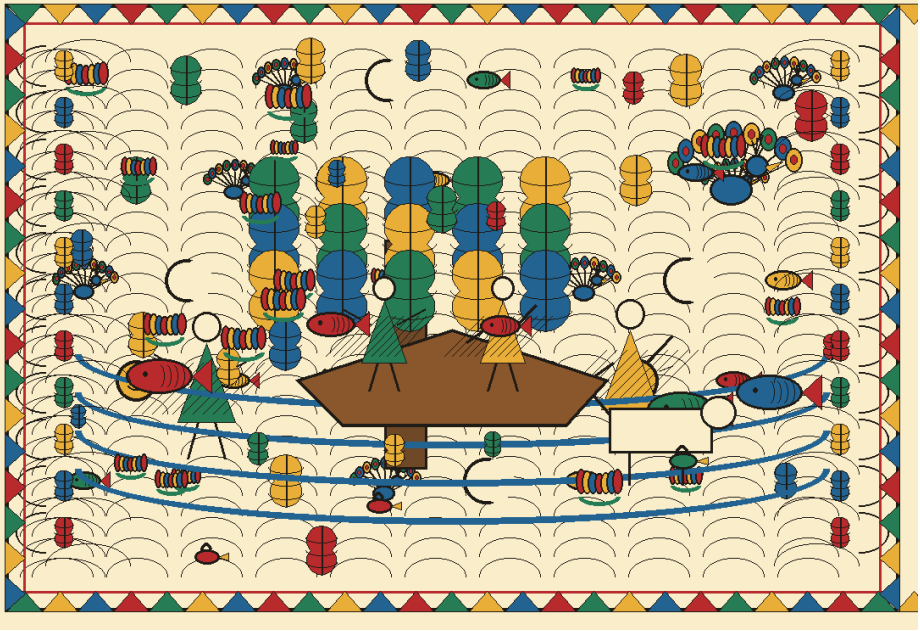

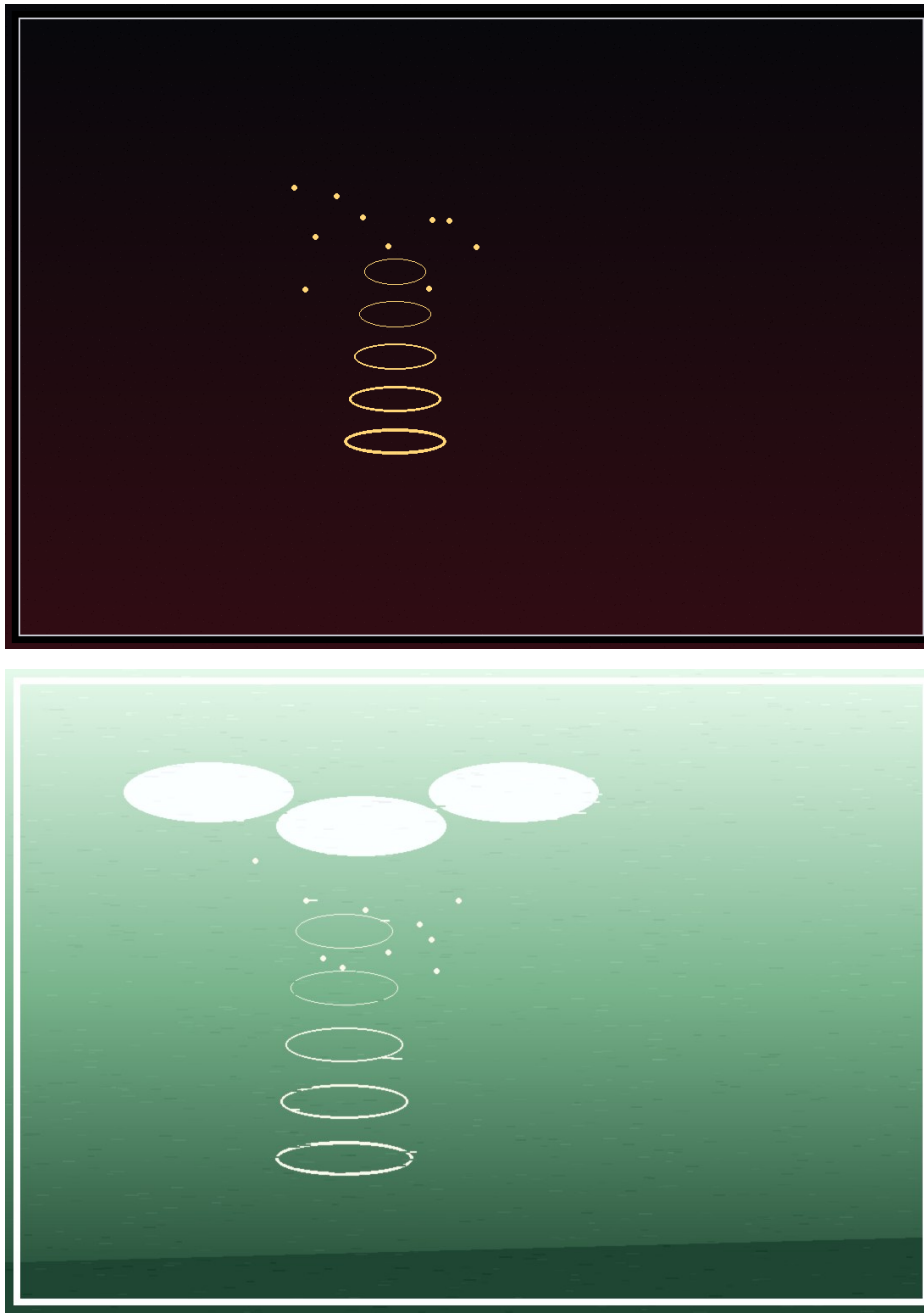

चित्र 21

शाप फलित भेल — भीमसेनक राज्य खतम भऽ गेल।

कोना खतम भेल, से गाथा विस्तारसँ नहि कहैत — आवश्यको नहि। जे राज्य अपन सभसँ निर्दोष सन्तानकेँ धारमे बहा दैत अछि, ओकरा बाहरी शत्रुक खगते की? ओ भीतरहिसँ खोखला भऽ चुकल रहैत अछि; शाप त' खाली अन्तिम धक्का होइत अछि।

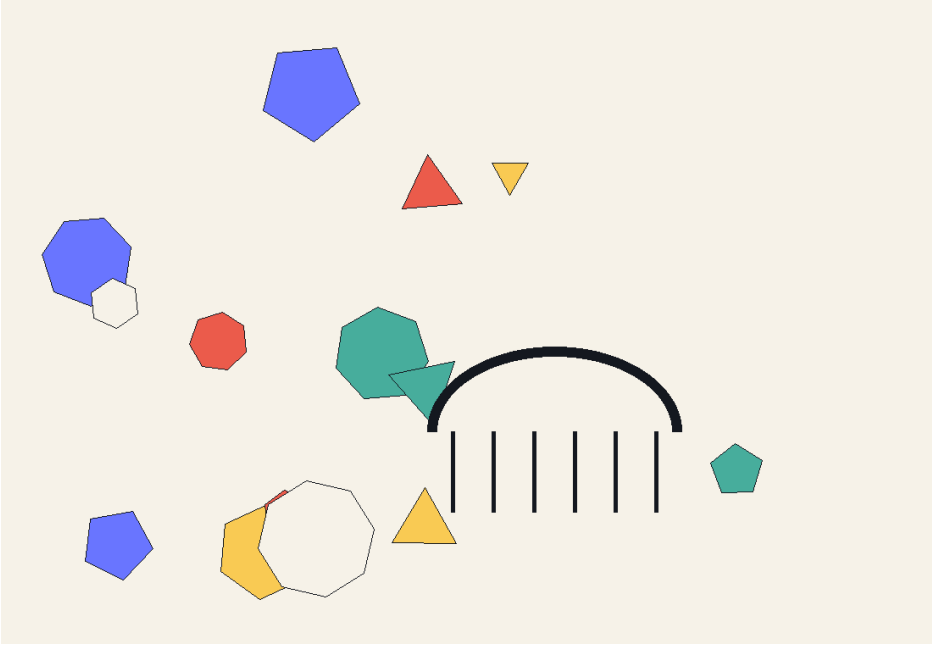

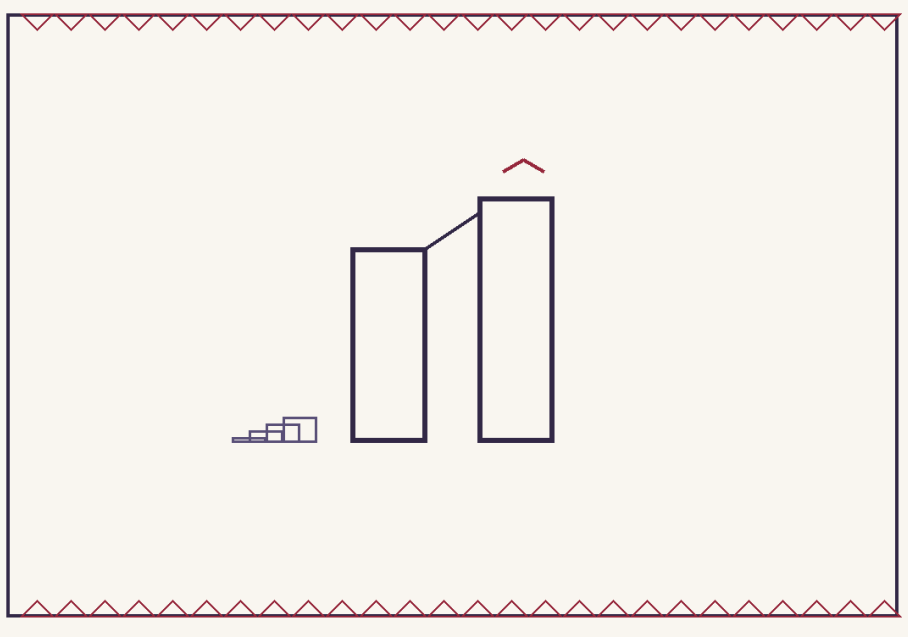

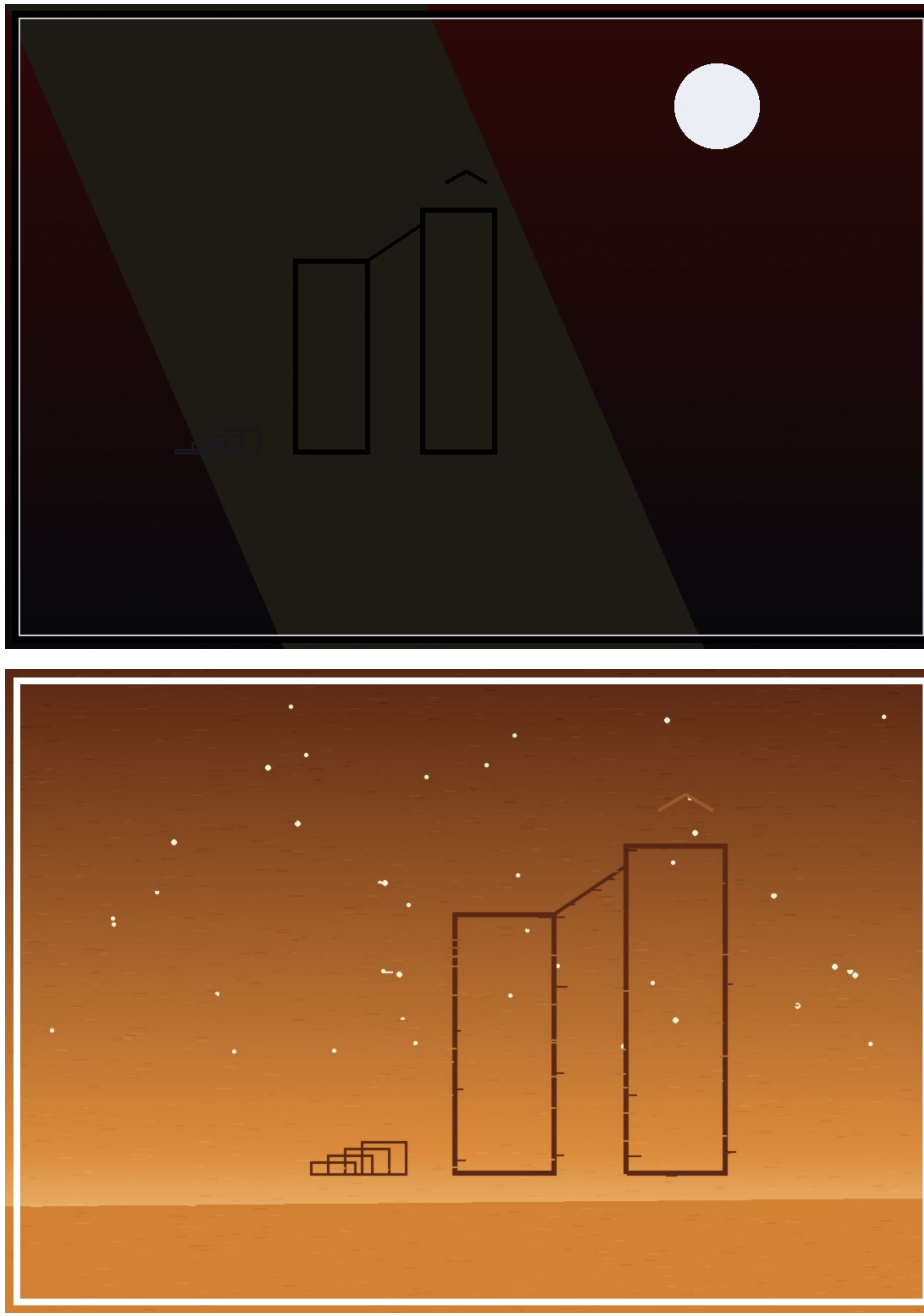

चित्र 22

आ पंडित? गाथा ओकर अन्त सेहो नहि लिखैत — ई ओकर सभसँ पैघ दण्ड थिक। जे लोभी सभ किछु पएबा लेल एतेक रचलक, से इतिहासमे बिनु नामक विलीन भऽ गेल: ने राज भेटलै, ने कन्या, ने स्मृति। लोभक अन्तिम कमाइ सदिखन शून्य होइत अछि।

आधा मोरंग नेने कृष्णाराम, टूटल भीमसेन, उजड़ल दरबार — सभ अपन-अपन हिस्साक राख नेने रहि गेल। बोनमे खाली गवल छल, जे साँझखन धारक कात बैसि ओहि बेटीकेँ मोन पाड़ैत छल जे ओकरा धार देने छल आ धोखा छीनि लेने छल।

अध्याय 12 : मोक्षक अर्थ

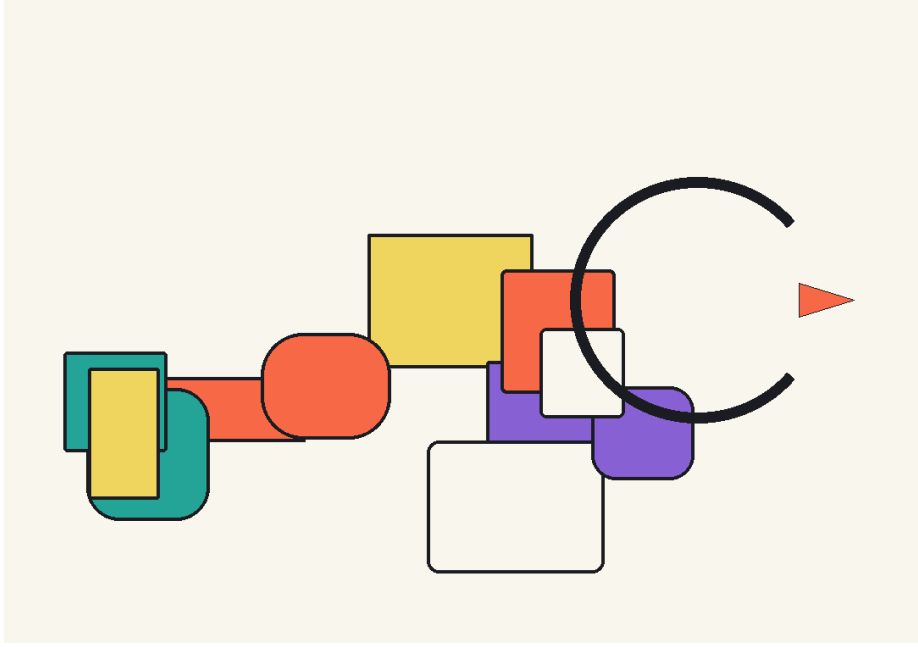

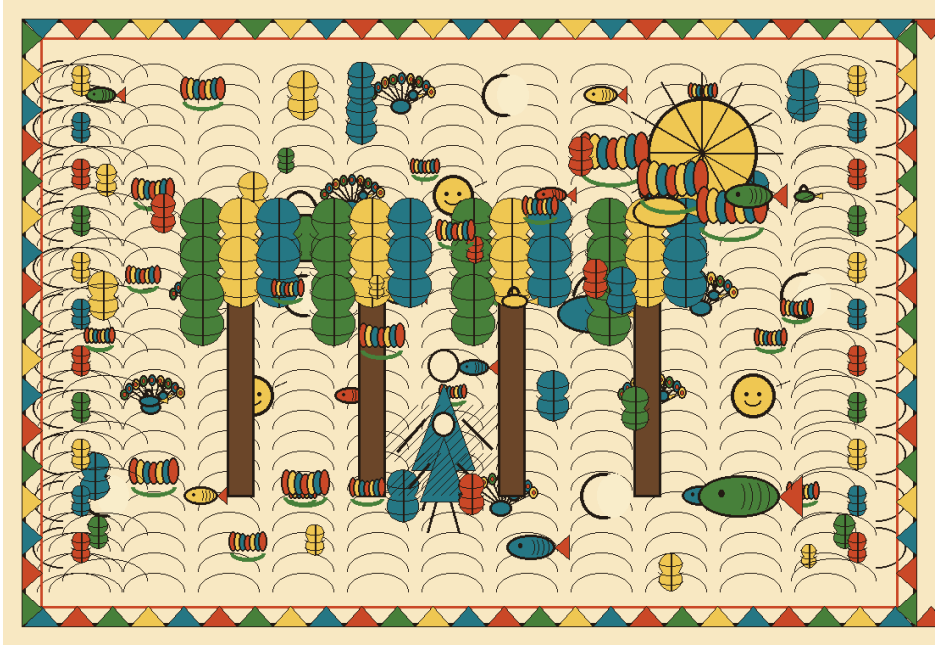

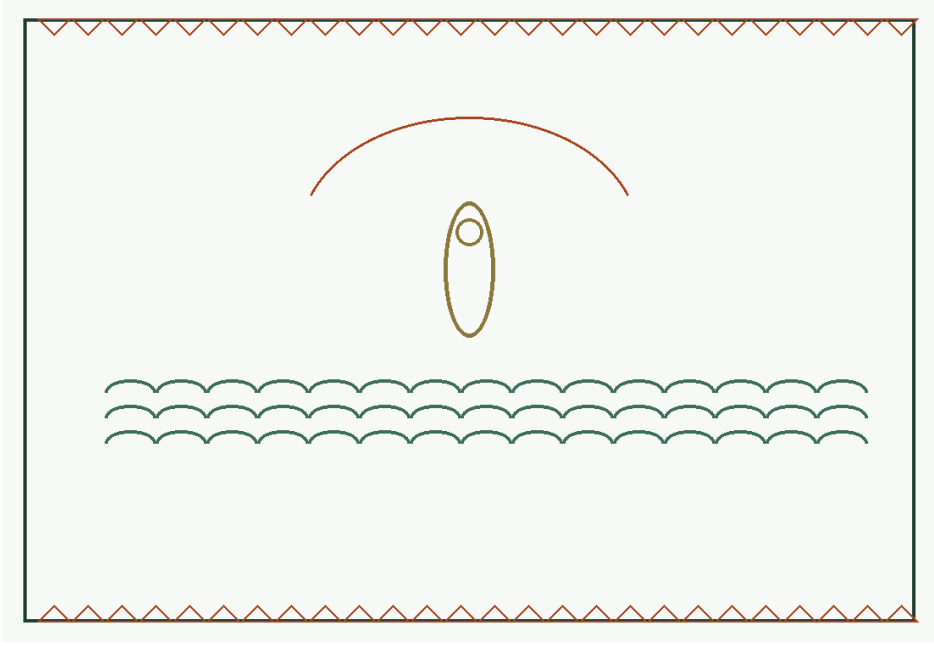

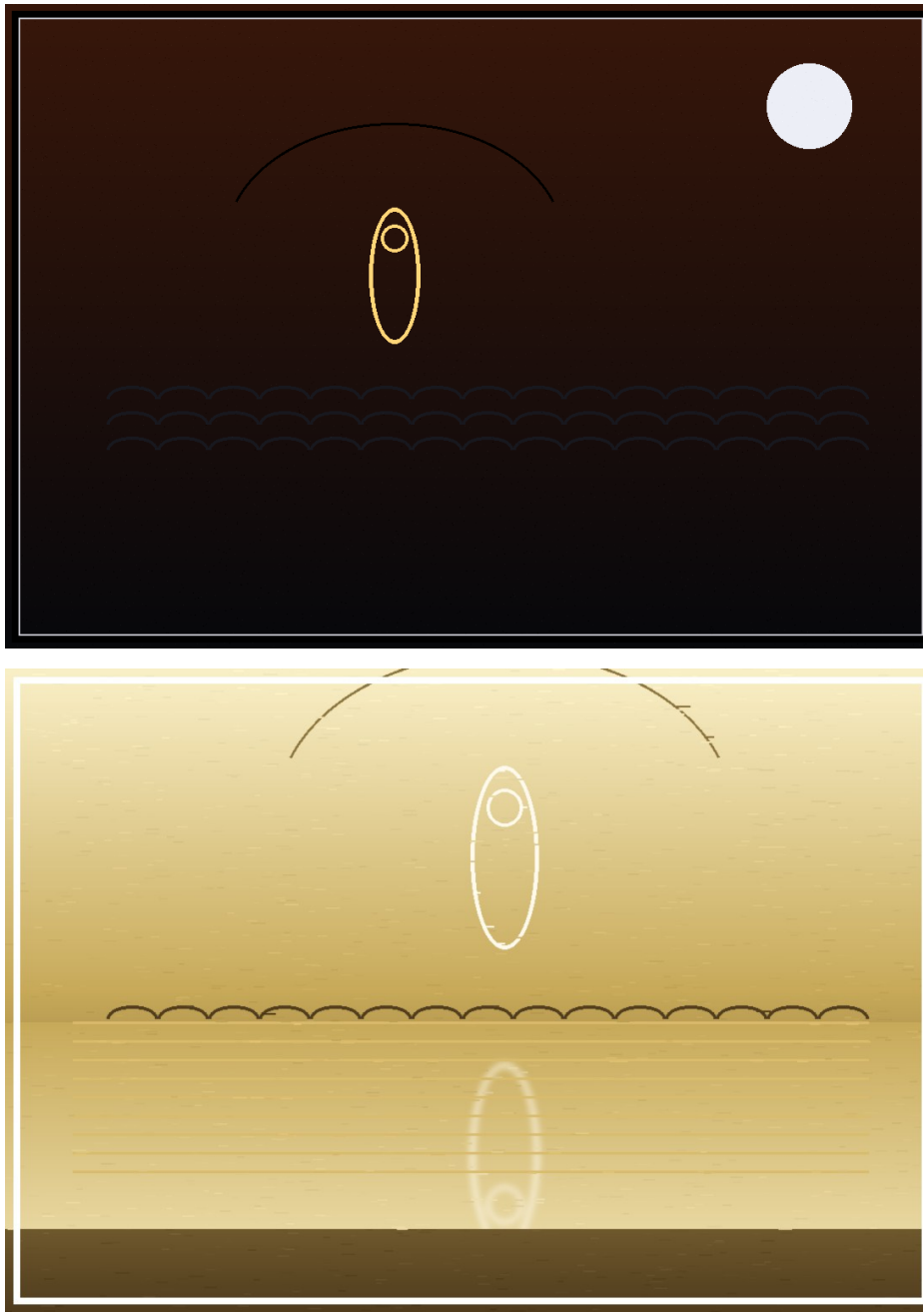

चित्र 23

त' ई गाथा हमरा की कहैत अछि? — जे मोतीसाएरि एहि पूरा खिस्सामे एक्को बेर नहि हारलि।

ओकरा सन्दूकमे बन्द कएल गेल — ओ धारक कात नव पिता पओलक। ओकरा बोनसँ छीनल गेल — ओ महलमे सत्यक अग्नि बनि ठाढ़ भेलि। आ जखन प्रपंच ओकरा अपन सभसँ कुरूप प्रस्ताव देलक, त' ओ प्रपंचे त्यागि देलक — मोक्ष! जकरा सभ हरओलक, से सभसँ ऊपर चलि गेलि।

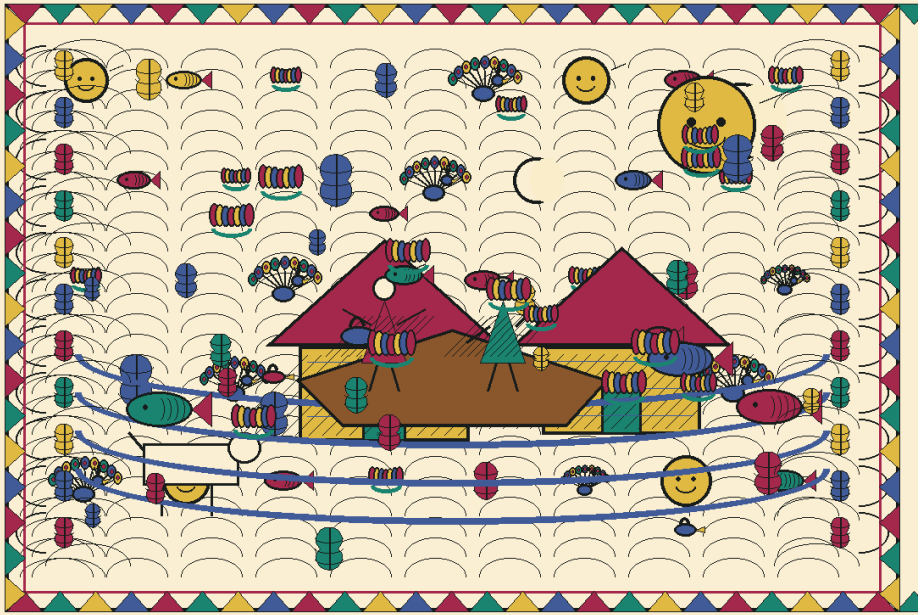

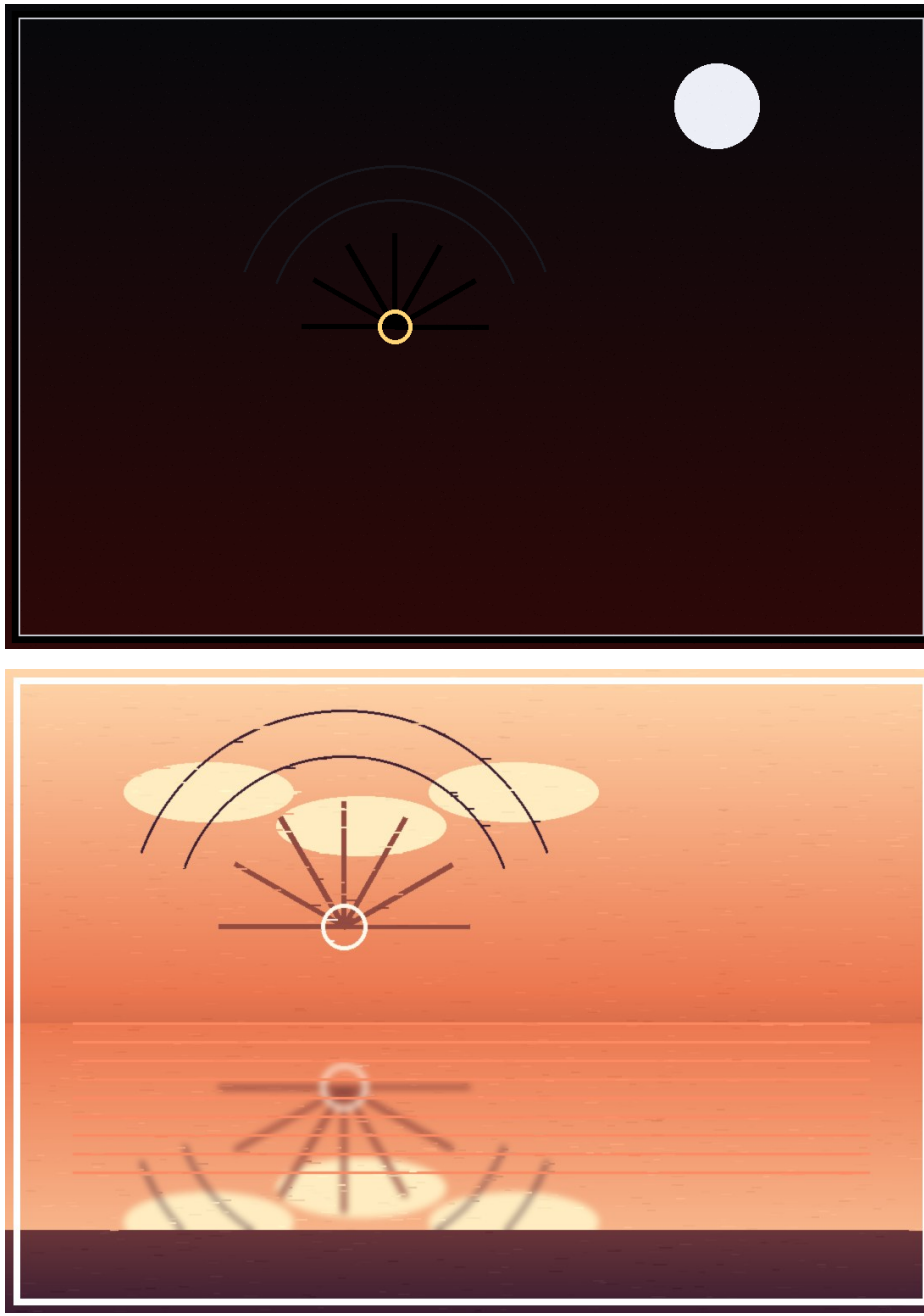

चित्र 24

मोरंगक बूढ़-पुरान कहैत छथि — बोनक ओहि धारमे आइयो कखनो काल भोरका इजोतमे एकटा उज्जर आकृति देखाइत अछि, मोती सन उज्जर, सरोवर सन शान्त। के जनए — कदाचित् मोतीसाएरि अपन बोनकेँ, अपन गवल-पितार्केँ, देखए अबैत होथि।

आ ई गाथा हर ओहि घर लेल दर्पण थिक जतय बेटीक भाग्य दोसराक जीहपर तौलल जाइत अछि। कुण्डली झूठ बाजि सकैत अछि, पंडित बिका सकैत अछि, राजा आन्हर भऽ सकैत अछि — मुदा बेटी? बेटी यज्ञक फल थिक। ओकरा धारमे बहओनिहार राज्य अपने बहि जाइत अछि — ई मोरंगक इतिहास गवाह अछि।

समाप्त

VIDEHA

विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका | ISSN 2229-547X | www.videha.co.in

मूर्खाधिराज

महामूर्ख बेटाक हास्यास्पद यात्रा

गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादक, विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका (since 2000)

ISSN 2229-547X

उपक्रम : एकटा महामूर्ख बच्चा

एकटा गोपालक (गाय चरओनिहार) रहए, जकर एकटा बेटा छल। बेटाक जन्मक समय माए मरि गेलीह, आ बा (दादी वा पितामही) बच्चाक पालन केलनि। मुदा ई बच्चा छल — महामूर्ख!

ई गाथा हास्यरसक चरम थिक — एकटा एहन बालकक, जकर हर काज, हर बात मूर्खताक नव उदाहरण प्रस्तुत करैत अछि, आ जकर यात्रा हँसीसँ भरल, मुदा अन्ततः जीवनक एकटा विचित्र सत्यसँ जुड़ल अछि — मूर्खताक अपन एकटा तर्क होइत छै।

अध्याय 1 : महामूर्ख बालक

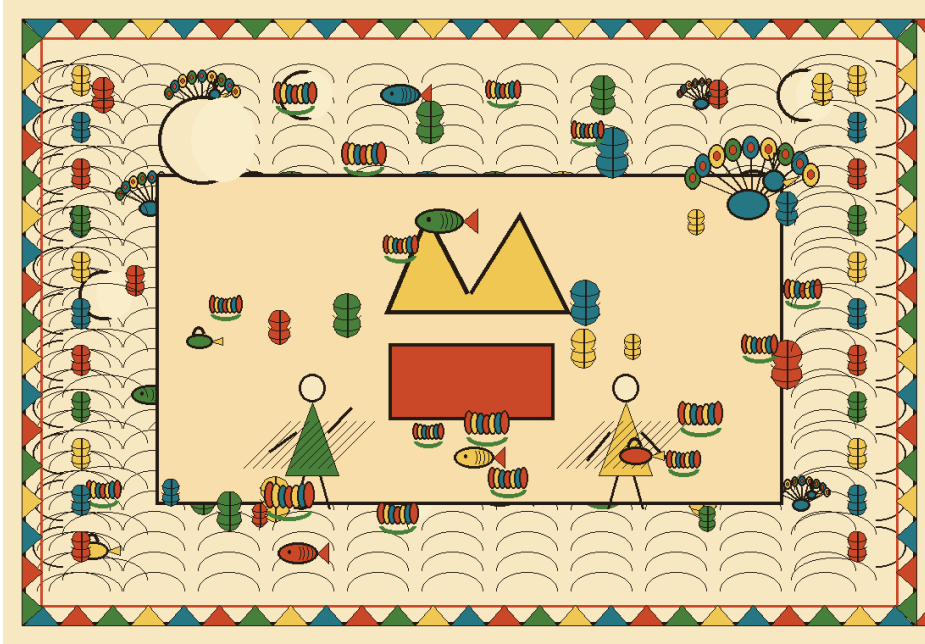

चित्र 1

गोपालकक बेटा बारह बरखक भऽ गेल, आ ओकर विवाह भऽ गेल — मुदा ओ अपन विवाहो बिसरि गेल! एहन मूर्खता, जे कल्पनासँ बाहर छल — विवाह जकाँ महत्वपूर्ण घटना ओकर मोनमे ठहरिये नहि सकल।

बा — जे बूढ़ भऽ चुकल छलीह — घरक काज करएमे दिक्कत महसूस करए लगलीह। ओ बुझा-सुझाकऽ बच्चाकेँ कहलनि — 'जो, अपन कनियाँकेँ द्विरागमन (गौना) करा कऽ अनह।'

चित्र 2

बा बच्चाक लेल रस्ताक भोजन — गमछामे मुरही बान्हि देलनि। ई साधारण तैयारी छल, मुदा आगाँक यात्रामे एहि मुरहीयेसँ मूर्खताक पहिल कड़ी शुरू होएत।

बच्चा गमछा लऽ बिदा भेल — अपन कनियाँकेँ अनबाक लेल, बिनु ई बुझने जे रस्तामे ओकर मूर्खता ओकरा कतेक बेर पिटाओत।

अध्याय 2 : उड़ि रहल मुरही

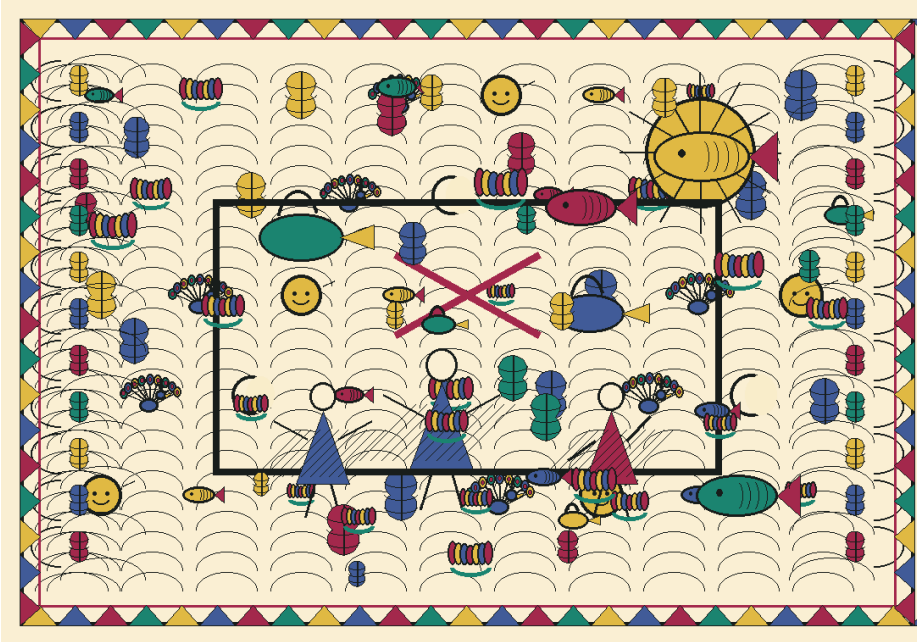

चित्र 3

रस्तामे बच्चाकेँ भूख लागल। ओ गमछासँ मुरही निकालि मुँहमे देबए चाहलक — मुदा हवाक झोंकसँ मुरही उड़ि जाइत छल! बच्चा बारम्बार प्रयास केलक, मुदा हर बेर मुरही उड़िये जाइत छल।

एहि हास्यास्पद स्थितिसँ खिन्न भऽ बच्चा बाजए लागल — 'आऊ, आऊ, उड़ि जाऊ!' — मूर्खतापूर्ण उत्साहमे, जेना ओ मुरहीकेँ उड़बाक प्रोत्साहन दऽ रहल हो!

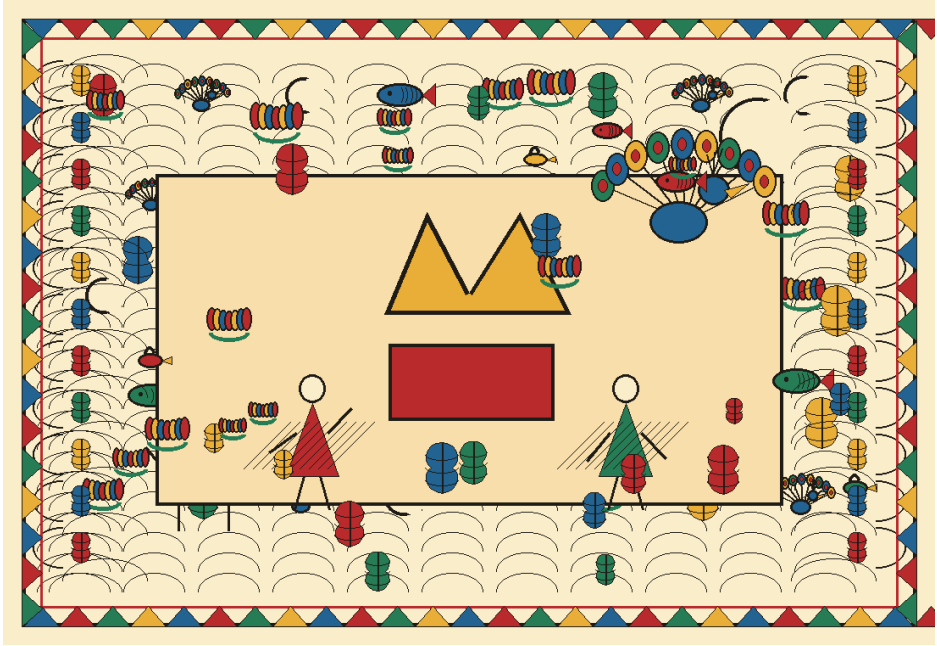

चित्र 4

लगमे बोनमे एकटा चिड़ीमार जाल पसारने छल — चिड़ै पकड़बाक लेल। बच्चाक ई वाक्य 'आऊ, उड़ि जाऊ' सुनि चिड़ीमारकेँ बड्ड तामस उठलैक — ओकरा लगलैक जे ई बच्चा जानि-बुझि ओकर चिड़ैकेँ उड़ाबए चाहैत अछि!

चिड़ीमार बच्चाकेँ पकड़ि पुष्ट पिटान पिटलक — मूर्खताक पहिल दण्ड! बच्चा दर्दसँ बिलबिलाइत पुछलक — 'हमर दोख तँ कहू?' चिड़ीमार सिखओलक — 'एना नहि, एना बाजू — आबि जो, फँसि जो।'

अध्याय 3 : पिटानक श्रृंखला

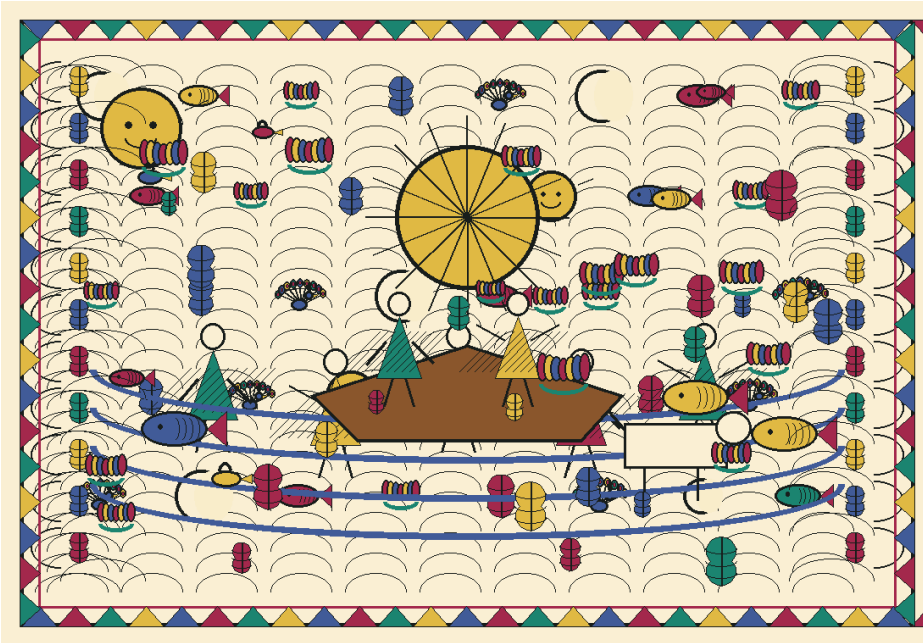

चित्र 5

बच्चा — जकरा नव वाक्य सिखाओल गेल छल — 'आबि जो, फँसि जो' कहैत आगाँ बढ़ल। साँझ ढलैत छल, बोन खतम होएबला छल।

ओतय चोर सभ चोरिक योजना बनाए रहल छलाह — गुप्त, सतर्क। बच्चाक 'आबि जो, फँसि जो' सुनि चोर सभकेँ लागल जे ई बच्चा हुनका पकड़ाबए चाहैत अछि, राहगीरकेँ सतर्क करैत!

चित्र 6

चोर सभ क्रोधित भऽ बच्चाकेँ फेर पुष्ट पिटान पिटलनि — दोसर दण्ड! बच्चा फेर पुछलक — 'हम बाजी तँ की बाजी?' चोरक सरदार नव वाक्य सिखओलक — 'बाज जे एहन सभ घरमे होए।'

बच्चा ई नव वाक्य लऽ आगाँ बढ़ल — बिनु ई बुझने जे प्रत्येक स्थान, प्रत्येक अवसरक अपन उपयुक्त वचन होइत छै, आ एकटा वचन सर्वत्र उपयुक्त नहि होइत।

अध्याय 4 : श्मशानक क्रोध

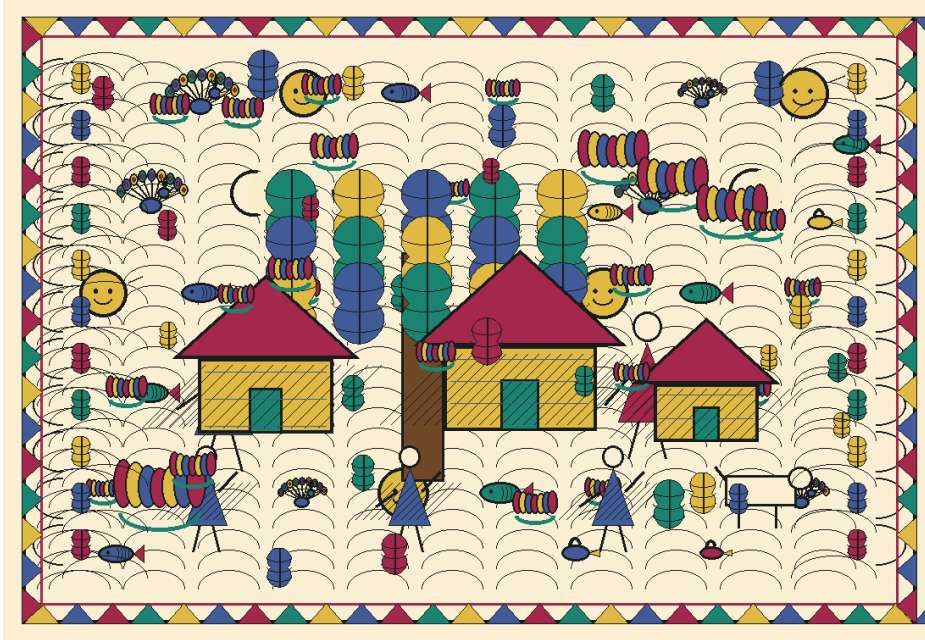

चित्र 7

आब श्मशानभूमि आबि गेल। एकटा जमीन्दारक एकेटा बेटा मरि गेल छल, आ सभ लोक ओकरा डाहबाक (जरएबाक) लेल आयल छल — शोकाकुल वातावरण, गम्भीर आ दुखद।

बच्चा एहि गम्भीर क्षणमे सेहो अपन सिखल वाक्य दोहरओलक — 'एहन सभ घरमे होए!' — मृत्युक शोकमे एहन अशुभ कामना! शोकाकुल परिवार आ उपस्थित जन बड़ कुपित भेलाह।

चित्र 8

ओ लोकनि बच्चाकेँ पुष्ट पिटलनि — तेसर दण्ड! बच्चाक शरीर आब दर्दसँ चूर-चूर छल, मुदा ओकर मूर्खता अखनहुँ अक्षुण्ण छल।

बच्चा फेर पुछलक — 'की बाजब उचित होएत?' श्मशानक लोक सभ कहलखिन्ह — 'एना बाजू — एहन कोनो घरमे नहि होए।' ई नव वाक्य लऽ बच्चा फेर आगाँ बढ़ल, अगिला विपत्तिक अनजान।

अध्याय 5 : बरातक अपमान

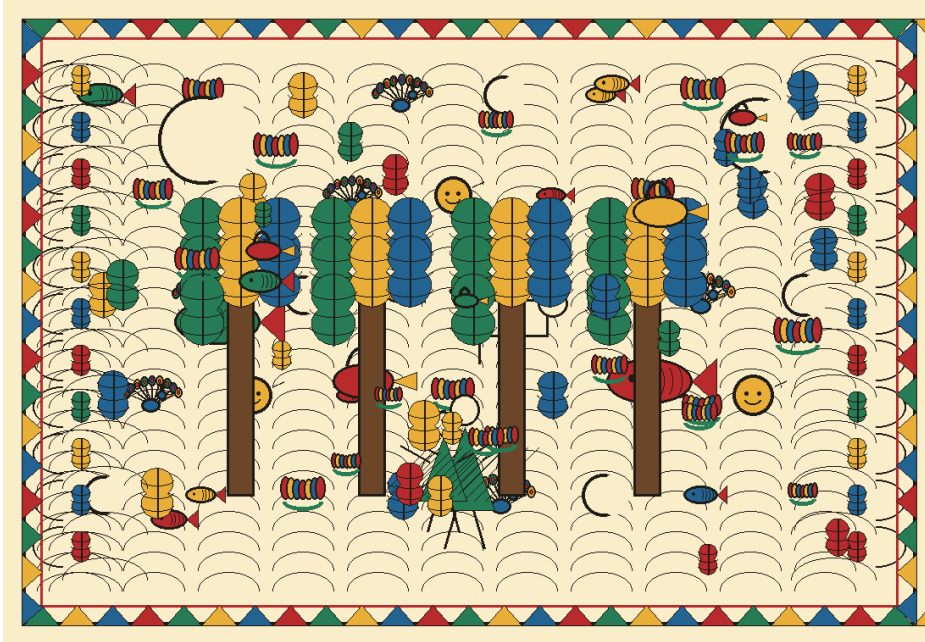

चित्र 9

बच्चा नगर पहुँचल, जतय राजाक बेटाक विवाहक बाजा-बत्ती भऽ रहल छल — हर्षोल्लासक वातावरण, संगीत आ उत्सव।

बरियाती सभ बच्चाकेँ कहैत सुनलनि — 'एहन कोनो घरमे नहि होए!' — विवाहक शुभ अवसरपर एहन अशुभ वचन! ई सुनि बरियाती क्रोधित भऽ गेल — एहन मंगल अवसरपर अमंगलक कामना?

चित्र 10

बरियाती सभ बच्चाकेँ फेर पिटपिटा देलखिन्ह — चारिम दण्ड! बच्चाक शरीर आब पूर्ण रूपेँ पीड़ासँ भरल छल, मुदा ओकर यात्रा अखन समाप्त नहि भेल छल।

बच्चा हारि नहि मानलक, फेर पुछलक — 'की बजबाक चाही?' एहि बेर उत्तर पूर्णतः भिन्न छल — 'किछु नहि बाजू, मुँह बन्न राखू!' — शायद बरियाती सभ बुझि गेल छल जे एहि बच्चाक जीहसँ बचबाक एकमात्र उपाय चुप्पी थिक।

अध्याय 6 : सासुरक मौन

चित्र 11

बच्चा चुप्पी लऽ अपन सासुर पहुँचि गेल — सिखल पाठ पूर्ण रूपेँ पालन करैत। ओतय ओ नहिये किछु बाजल, नहिये किछु खएलक — कारण खएबामे मुँह खोलए पड़ितैक, आ मुँह खोलब निषिद्ध छल!

सासुरबला परिवार बच्चाक ई मौन व्यवहार देखि चकित भेल — नव जमाए एतेक शान्त, एतेक संयमित! मुदा असल कारण — मूर्खताक चरम — ककरो नहि बुझल।

चित्र 12

भोरे-सकाले सासुरबला सभ अपन बेटी (कनियाँ)केँ बच्चाक संग बिदा कऽ देलनि — द्विरागमनक विधि पूर्ण भेल। बच्चा अपन कनियाँकेँ लऽ गाम दिस बिदा भेल।

रस्तामे बड्डु प्रखर रौद छलैक। बच्चा-कनियाँ दुनू सुस्ताए लागल — यात्राक थकान आ गर्मीक कारण विश्राम आवश्यक भऽ गेल छल।

अध्याय 7 : धोखराएल सिन्दूर

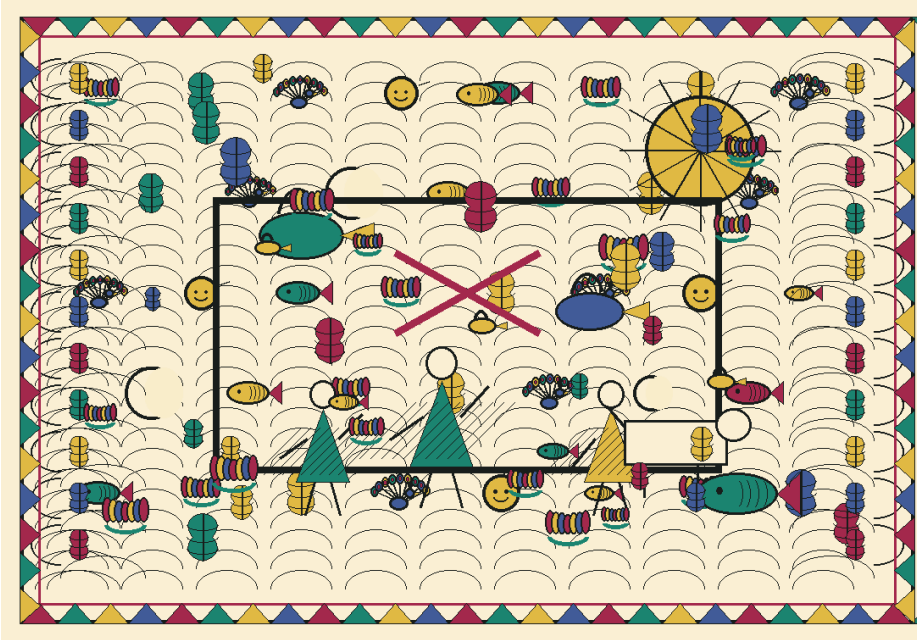

चित्र 13

कलममे (आमक बगीचामे) सेहो बड्डु गुमार (उमस) छलैक। कनियाँकेँ बड्डु घाम खसए लगलैक, आ ताहिसँ ओकर सिन्दूर धोखरि (फैलि/मिटि) गेलैक — पसीनाक स्वाभाविक प्रभाव, कोनो असामान्य बात नहि।

मुदा बच्चाक मूर्ख मस्तिष्क एकटा भयंकर निष्कर्ष निकाललक — 'सासुरबला हमरासँ छल केलक! ओ हमरा भँगलाहा कपार (टूटल भाग्य/मिटल सिन्दूर) वाली कनियाँ दऽ देलक!'

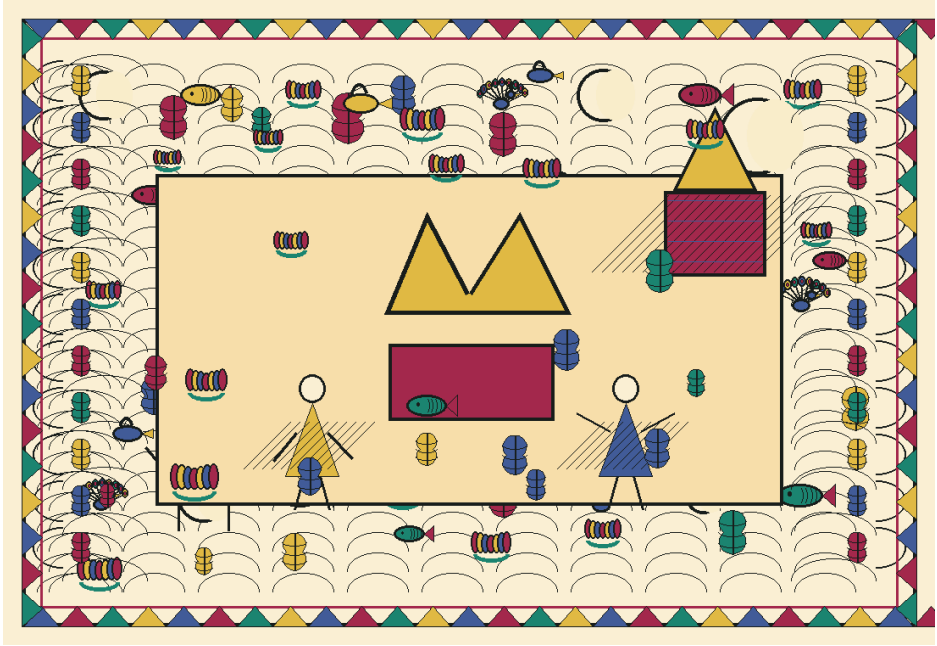

चित्र 14

बच्चाकेँ ई विश्वास भऽ गेल जे ओकर कनियाँक विवाह पहिनहिये कतहु आर भऽ चुकल छल, आ सिन्दूर मिटब एहि बातक प्रमाण छल — बिनु ई बुझने जे ई खाली गर्मी आ पसीनाक स्वाभाविक परिणाम छल।

बच्चा सोचलक — 'एहन कनियाँकेँ गाम पर लऽ जा हम की करब?' — ई विचार ओकर अगिला मूर्खतापूर्ण निर्णयक आधार बनल, जकर परिणाम पूरा गाथाक सभसँ हास्यास्पद घटना बनल।

अध्याय 8 : बकरीक संग बदलेन

चित्र 15

रस्तामे बच्चाक भेँट एकटा हजाम (नाई)सँ भेल, जे बकरी चरा रहल छल। बच्चा अपन पेटक बात (मोनक चिन्ता) कहबाक लेल अपन मुँह खोललक — आब चुप्पीक नियम टूटि चुकल छल, कारण दुख असहनीय भऽ गेल छल।

बच्चा सभटा कहि देलक — सिन्दूर धोखराएब, सासुरक छल, अपन दुविधा। हजाम — जे तुरत बुझि गेल जे ई बच्चा साक्षात् मूर्खाधिराज अछि — एकटा योजना बनओलक।

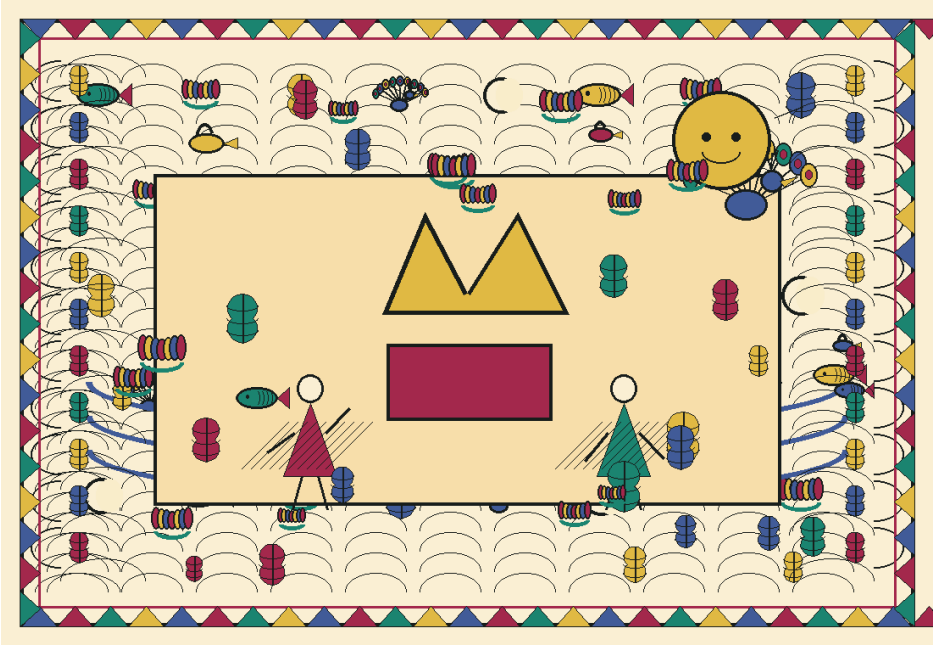

चित्र 16

हजाम कहलक — 'अहाँक कनियाँकेँ हमर दूध देमए वाली बकरीक संग बदलि लिअ।'

ई प्रस्ताव अत्यन्त हास्यास्पद छल — एकटा मनुष्यक बदला बकरी?

मुदा बच्चा — अपन चरम मूर्खतामे — सहर्ष तैयार भऽ गेल! ओ अपन कनियाँकेँ बकरीक बदलामे दऽ देलक, बिनु एहि आदान-प्रदानक विचित्रताकेँ बुझने।

अध्याय 9 : बकरीसँ कदीमा धरि

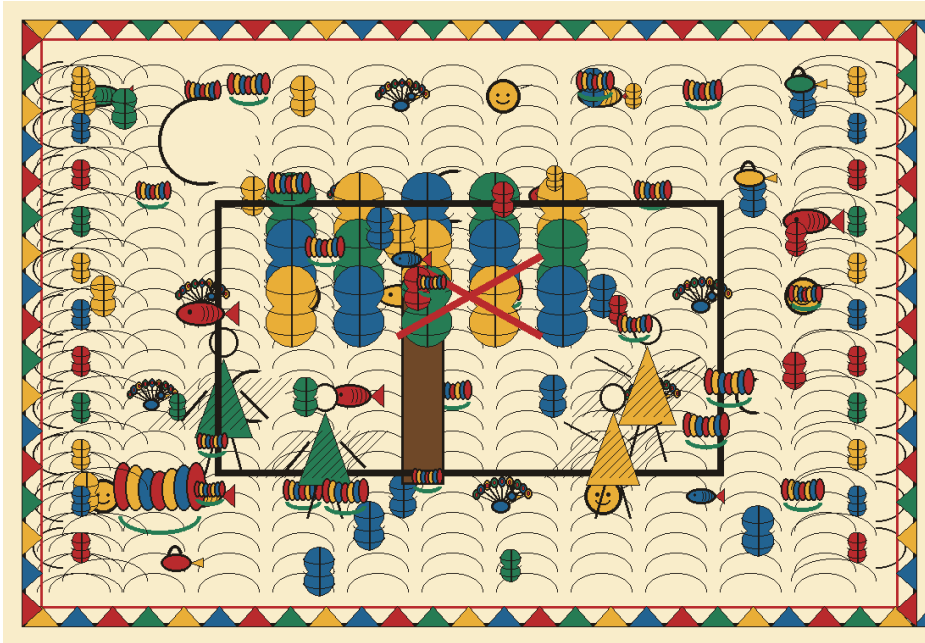

चित्र 17

आगाँ बढ़ैत बच्चा सुस्ताए लागल आ बकरीकेँ खुट्टीसँ बान्हि देलक। बकरी पाउज (मिमियाब वा मुँह हिलाएब) करए लागल — प्राकृतिक व्यवहार।

मुदा बच्चाक मूर्ख मस्तिष्क फेर एकटा विचित्र निष्कर्ष निकाललक — 'बकरी हमर मुँह दूसि (चूमि) रहल अछि!' — साधारण पशु-व्यवहारकेँ सेहो ओ अपन तरीकासँ गलत बुझलक।

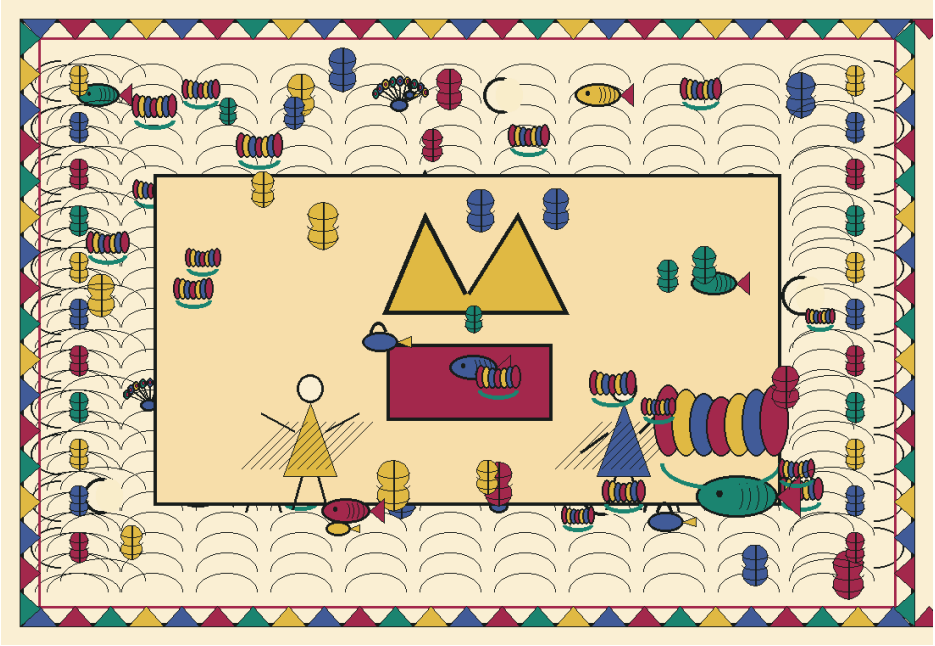

चित्र 18

बच्चा बकरीकेँ हाट लऽ गेल आ कदीमा (आमक अथान वा विशेष खाद्य वस्तु)क संग ओकरो बदलेन (अदला-बदली) कऽ लेलक! एकटा जीवित प्राणी, जे कहियो एकटा मनुष्य (कनियाँ)क बदलामे भेटल छल, से आब खाद्य वस्तुक बदलामे चलि गेल।

ई श्रृंखलाबद्ध मूर्खतापूर्ण व्यापार — कनियाँसँ बकरी, बकरीसँ कदीमा — बच्चाक बुद्धिहीनताक चरम प्रदर्शन छल, जकर परिणाम गामपर पहुँचि स्पष्ट होएत।

अध्याय 10 : बाक विलाप

चित्र 19

गाम पर पहुँचि बच्चा अपन बाकेँ भेँट भेल। बा बड्ड प्रसन्न भेलीह — हुनका लागल जे कनियाँक नैहरसँ सनेसमे (उपहारमे) कदीमा आयल अछि, एकटा शुभ संकेत।

मुदा जखन बा अपन पुतोहु (कनियाँ)केँ नहि देखलनि, त' चिन्तित भऽ पुछलनि — 'कनियाँ कतय अछि?' बच्चा — बिनु कोनो लाज वा हिचकिचाहटिक — सभटा खिस्सा सुना देलक: सिन्दूर धोखराएब, हजामक संग बकरीसँ बदलेन, फेर बकरीसँ कदीमासँ बदलेन।

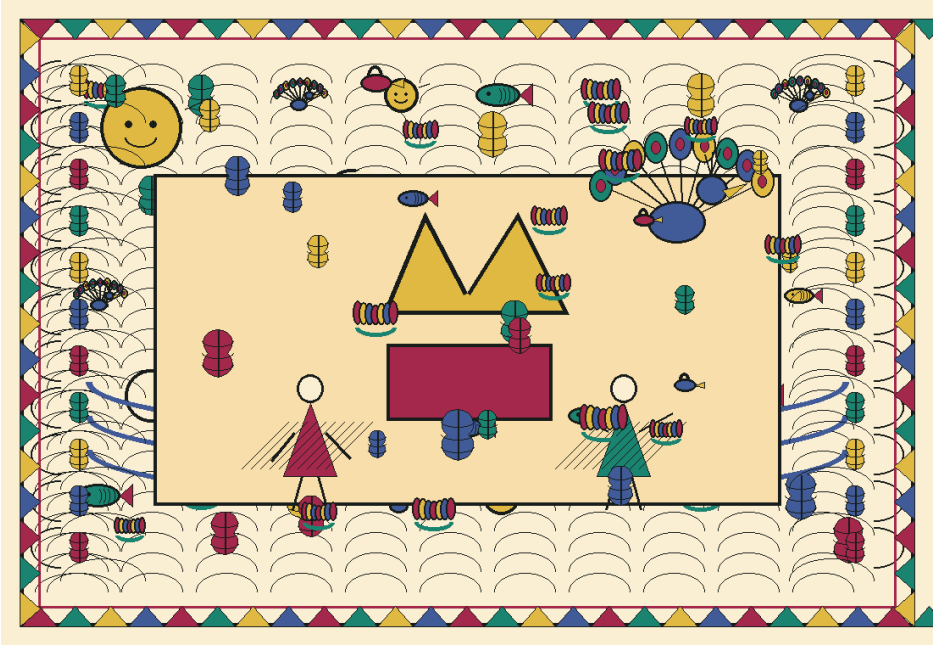

चित्र 20

बा ई सुनि माथ पीटि लेलनि — पुत्रक मूर्खताक ई चरम रूप हुनका असहनीय भऽ गेल। जे कनियाँ बड़ी मुश्किलसँ अनल गेल छलि, से आब एकटा कदीमाक अथानमे परिणत भऽ गेल छल!

बच्चा — अपन बाक विलापसँ पूर्णतः अप्रभावित — ई कहैत खेलाए चलि गेल — 'कदीमाक तरकारी बना कऽ राखू!' — मूर्खताक ई अन्तिम पंक्ति पूरा गाथाक हास्यरसक चरम बिन्दु थिक, जतय बच्चाकेँ अपन विनाशकारी निर्णयक कोनो आभास तक नहि छल।

समाप्त

VIDEHA

विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका | ISSN 2229-547X | www.videha.co.in

नैका बनिजारा

बारह बरखक विरह आ एकटा गुप्त वरदानक गाथा

गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादक, विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका (since 2000)

ISSN 2229-547X

उपक्रम : वणिकपुत्र शोभनायक

शोभनायक — एकटा वणिकपुत्र, जकर विवाह तिरहुतक कोनो स्थानमे बारी नामक स्त्रीसँ भेल। मुदा विवाहक तुरत बाद ओ व्यापारक हेतु मोरंग बिदा भऽ गेलाह — पत्नीक संग एको दिन नहि बिता सकलाह।

ई गाथा प्रतीक्षा आ विरहक थिक — बारह बरखक दीर्घ अलगावक, आ एकटा एहन दुर्गतिक जकरा एकटा निर्दोष स्त्रीकेँ सहए पड़ल। मुदा अन्तमे सत्यक विजय भेल, आ एकटा टूटल परिवार फेर जुड़ल।

अध्याय 1 : तुरत बिदाई

चित्र 1

शोभनायक — वणिकपुत्र, धनी परिवारक सन्तान — हुनकर विवाह तिरहुतक कोनो स्थानमे बारी नामक स्त्रीसँ भेल। विवाह धूमधामसँ सम्पन्न भेल, आ शोभा द्विरागमन करा कऽ अपन कनियाँकेँ घर अनलनि।

मुदा गृहस्थीक सुख भोगबासँ पहिनहि, शोभनायकपर व्यापारक जिम्मेदारी आबि पड़ल। ओ मोरंगक हेतु बिदा भऽ गेलाह — व्यापार करबाक लेल, अपन पत्नीक संग एको दिन बिता सकबासँ पहिनहि!

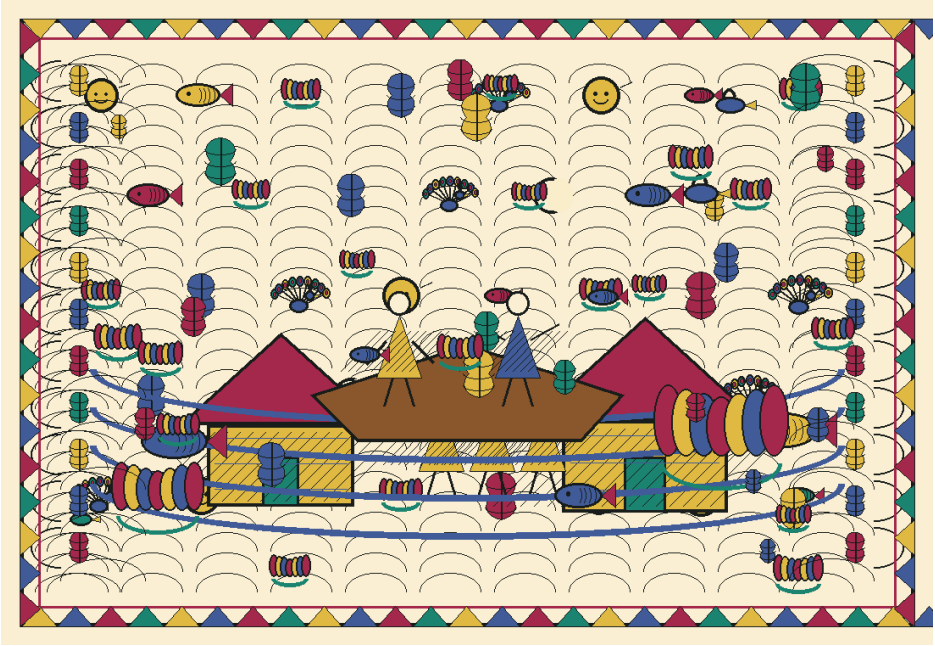

चित्र 2

ई तुरत बिदाई बारी लेल असहनीय छल — नव विवाहिता, अपन पतिक साथसँ वंचित, अकेल घरमे रहए विवश। मुदा समाजक नियम आ व्यापारक आवश्यकता आगाँ व्यक्तिगत इच्छाक कोनो मोल नहि छल।

शोभनायक मोरंगक रस्तापर बिदा भेलाह — बिनु ई जानने जे ई बिदाई कतेक लम्बा होएत, आ एहि बीच हुनकर पत्नीपर कतेक विपत्ति आएत।

अध्याय 2 : डकहरक भविष्यवाणी

चित्र 3

रस्तामे एक राति शोभनायक एकटा गाछक नीचाँ विश्राम करबाक लेल रुकलाह। थाकल शरीर, लम्बा यात्राक बोझ — विश्रामक आवश्यकता स्वाभाविक छल।

राति ढलैत, शोभनायककेँ एकटा ध्वनि सुनाइ पड़ल। ओहि गाछपर एकटा डकहर (कोनो पक्षी वा प्राणी) अपन भार्याक संग रहैत छल। दुनू गोटे आपसमे गप कऽ रहल छल — एकटा एहन गप, जे शोभनायकक जीवन बदलि देत।

चित्र 4

डकहर-दम्पति कहि रहल छल — 'ई राति बड़ शुभ छी। ओहि दिन पत्नीक संग जे रहत, तकरा बड्डु प्रतिभावान पुत्रक प्राप्ति होएतैक!' ई भविष्यवाणी शोभनायकक कानमे स्पष्ट पड़ल।

ई सुनतहि शोभनायकक हृदयमे एकटा तीव्र इच्छा जागल — अपन पत्नीक संग एहि शुभ रातिकेँ बितएबाक। व्यापारक यात्रा बीचहिमे छोड़ि, ओ तुरत घर दिस मुड़ि गेलाह।

अध्याय 3 : अभिज्ञान-अँठी

चित्र 5

शोभनायक तीव्र वेगसँ घर पहुँचलाह, अपन भार्या (पत्नी) लग। रातिक अन्हारमे, गुप्त रूपसँ, ओ अपन पत्नी लग पहुँचि गेलाह — डकहरक भविष्यवाणीकेँ साकार करबाक लेल।

मुदा शोभनायककेँ एकटा चिन्ता सतओलक — लोकोपवाद (समाजक अफवाह, गप-सप्प)। जँ केओ ई देखि लेत जे ओ रातिक अन्हारमे गुप्त रूपसँ आयल छथि, त' समाजमे गलत बात फैलि सकैत छल।

चित्र 6

एहि लोकोपवादसँ बचबाक लेल शोभनायक अपन पत्नीकेँ एकटा अभिज्ञानस्वरूप (पहचानक प्रमाणस्वरूप) एकटा अँठी (अंगूठी) दऽ देलनि — भविष्यमे प्रमाणक रूपमे, जे ई मिलन सत्य छल, बिनु कोनो लोकोपवादक भय।

ई अँठी देइते शोभनायक फेर चलि गेलाह मोरंग — व्यापारक अधूरा काज पूर्ण करबाक लेल। बारी अपन गर्भमे एकटा रहस्य लऽ कऽ अकेल रहि गेलीह, बिनु कोनो प्रमाणक, केवल एकटा अँठीक सहारे।

अध्याय 4 : बारह बरखक व्यापार

चित्र 7

शोभनायक मोरंग पहुँचि अपन व्यापार शुरू केलनि — आ ई व्यापार दीर्घकालीन साबित भेल। बारह बरख धरि ओ मोरंगमे रहलाह, व्यापारमे लीन, धन कमबैत।

एहि दीर्घ अवधिमे शोभनायकक सम्पर्क अपन परिवार आ पत्नीसँ टूटि गेल — तखनुका युगमे यात्रा आ सन्देशवाहनक साधन सीमित छल। एकटा गुप्त रातिक भेँट, आ फेर बारह बरखक मौन।

चित्र 8

मोरंगमे शोभनायक सफल व्यापारी बनि गेलाह — धन-सम्पत्तिमे वृद्धि, व्यापारिक सम्बन्धमे विस्तार। मुदा एहि सफलताक बीच, ओ अपन घर, अपन पत्नीक हालतिसँ पूर्णतः अनजान रहलाह।

तेरहम बरख अन्ततः आयल, आ शोभनायक अपन घर दिस बिदा होबाक निर्णय लेलनि — बारह बरखक व्यापारिक यात्राक अन्त, आ अपन परिवार लग घुरबाक समय।

अध्याय 5 : बारीक निर्वासन

चित्र 9

एम्हर, शोभनायकक अनुपस्थितिमे, बारीक जीवन दुर्गतिसँ भरि गेल। जखन ओ गर्भवती भेलीह — ओही गुप्त रातिक फल — त' सासु-ससुर हुनकापर सन्देह केलनि।

बिनु पतिक उपस्थितिक, गर्भधारण एकटा गम्भीर सामाजिक कलंक बनि गेल। सासु-ससुर — सत्यसँ अनभिज्ञ, आ समाजक भयसँ ग्रस्त — बारीकेँ घरसँ निकालि देलकनि!

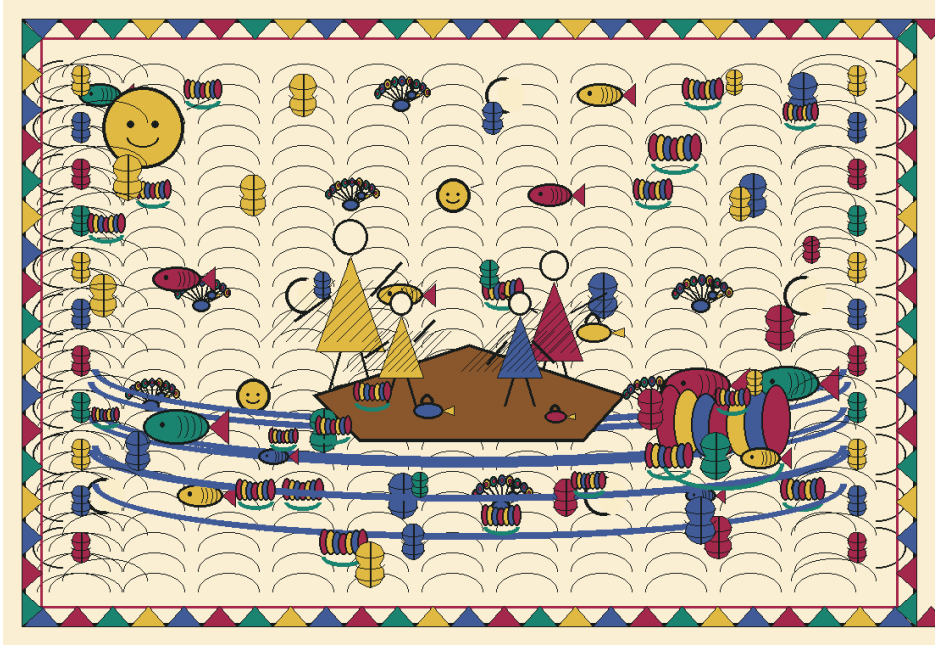

चित्र 10

ई निर्वासन बारी लेल असहनीय दुख छल — निर्दोष होइतो, अपन पतिक सत्यनिष्ठाक फलस्वरूप गर्भवती होइतो, ओकरा अपराधीक जकाँ घरसँ बाहर कऽ देल गेल। समाजक क्रूर न्याय अक्सर सत्यसँ बेसी उपस्थिति आ प्रमाणकेँ मानैत अछि।

मुदा एहि विपत्तिमे एकटा सहारा भेटलनि — शोभनायकक दिअर (देवर), जकर नाम छल चतुरगन। ओकरा सभटा सत्य कथा बुझल छलैक — शायद शोभनायक ओकरा गुप्त रातिक बारेमे बतौने रहथि।

अध्याय 6 : चतुरगनक आश्रय

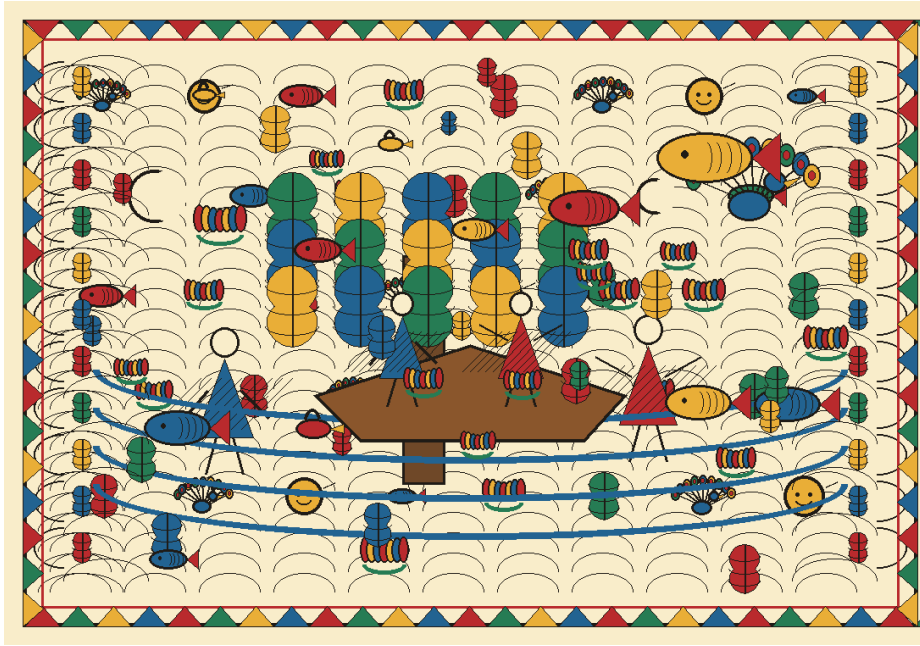

चित्र 11

चतुरगन — बुद्धिमान आ सहृदय — बारीकेँ आश्रय देलनि। ओकरा बुझल छलैक जे बारी निर्दोष छथि, आ ई सम्पूर्ण घटना एकटा दैवी संयोग आ शोभनायकक सत्यनिष्ठाक परिणाम छल, कोनो अपराध नहि।

बारी चतुरगनक आश्रयमे रहए लगलीह — अपन गर्भक बोझ, समाजक तिरस्कार, आ पतिक अनुपस्थितिक पीड़ा नेने। एहि कठिन समयमे चतुरगनक सहयोग हुनका जीवित रहबाक सम्बल देलक।

चित्र 12

एहि अवधिमे बारीक दर्द आ पीड़ा एकटा मार्मिक लोकगीतमे व्यक्त भेल — 'तब बारी रे कानय जार बेजारो कानै रे ना' — बारी फूट-फूट कऽ कानि रहल छथि, असहाय आ दुखी।

गीतक बोल आगाँ बढ़ैत अछि — 'दुर्गा गे स्वामी के लैके कोहबर घर लेवा ने केलही रे ना, कोहबर घर से हमरो निकालियो देलकइ रे ना' — बारी दुर्गा देवीसँ प्रार्थना करैत छथि, अपन पतिक अनुपस्थितिमे कोहबर घर (विवाहक कक्ष) सँ सेहो निकालि देल जएबाक दुखकेँ व्यक्त करैत।

अध्याय 7 : सत्यक पुनर्स्थापना

चित्र 13

तेरहम बरख शोभनायक अन्ततः घुरलाह — बारह बरखक व्यापारिक यात्राक बाद, अपन घर, अपन परिवार लग। ओ आशा करैत छलाह जे सभ किछु पहिनेक जकाँ शान्त आ सामान्य हएत।

मुदा घर पहुँचिते शोभनायककेँ सम्पूर्ण सत्य ज्ञात भेल — बारीक निर्वासन, ओकर दुर्गति, आ चतुरगनक आश्रय। ई सुनि शोभनायकक हृदय पीड़ासँ भरि गेल — अपन अनुपस्थितिक ई परिणाम केहन करुण छल!

चित्र 14

शोभनायक तुरत बारी लग गेलाह आ अभिज्ञान-अँठी देखा सम्पूर्ण सत्य सासु-ससुर आ समाजक आगाँ स्पष्ट केलनि — ओ गुप्त राति, डकहरक भविष्यवाणी, आ अँठीक प्रमाण। सत्य अन्ततः प्रकट भेल!

सभटा रहस्य बुझला पर परिवार पुनः एकजुट भेल, आ सभ हँसी-खुशी रहए लागल। बारीक निर्दोषिता सिद्ध भेल, ओकर दुखक अन्त भेल, आ शोभनायक-बारीक परिवार — बारह बरखक विरह आ अन्यायक बाद — अन्ततः सुख आ सम्मानसँ पुनः जीवन शुरू केलक। एहि गाथाक अन्तिम गीतक करुण बोल आइयो मिथिलाक लोकजीवनमे ओहि दीर्घ प्रतीक्षा आ अन्यायपूर्ण पीड़ाक स्मृति दियबैत अछि, मुदा अन्ततः सत्यक विजयक साक्षी सेहो बनि गेल अछि।

समाप्त

VIDEHA

विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका | ISSN 2229-547X | www.videha.co.in

रघुनी मरर

देवीभक्तक अजेय शक्ति आ न्यायक विजय

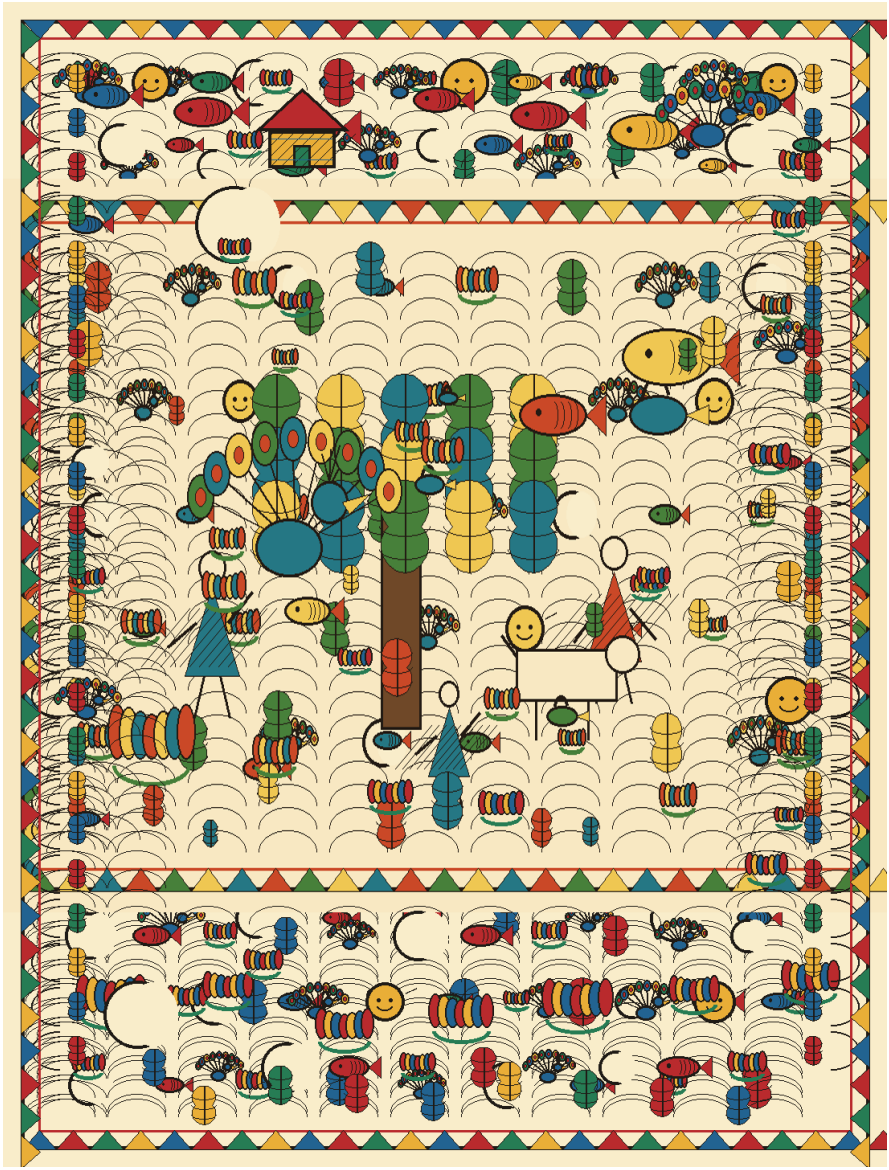

गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादक, विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका (since 2000)

ISSN 2229-547X

उपक्रम : तीन भाइ

देवदत्त, काशीराम आ रघुनी मरर — तीन भाइ, जे गाए चराबए जाथि। साधारण किसान परिवार, मुदा एहि परिवारक सभसँ छोट भाइ रघुनीक भविष्यमे एहन शक्ति आ भक्ति छिपल छल, जकर परिचय अकालक विपत्तिमे भेटल।

ई गाथा देवीभक्तिक शक्तिक थिक — कोना एकटा साधारण गोपालक जमीन्दारीक कुचक्र, जोगीक काला जादू, आ राजाक अन्यायपूर्ण दण्डक सोझाँ अडिग रहलाह, कारण हुनकर भक्ति हुनका अजेय बनओने छल।

अध्याय 1 : अकालक विपत्ति

चित्र 1

देवदत्त, काशीराम आ रघुनी मरर — तीन भाइ, गोपालनक कार्यमे लीन। हुनक जीवन साधारण, मुदा शान्तिपूर्ण छल — गाए चराब, खेतीक काज, परिवारक सुख।

मुदा एक बेर भयंकर अकाल आयल — फसिल सुखल, पशुधन विपन्न, आ जीविकाक साधन क्षीण भऽ गेल। एहि विपत्तिमे रघुनी अपन गाम छोड़ि दूर देश पलायन करबाक निर्णय लेलनि।

चित्र 2

रघुनी भागि कऽ सहरसाक बनमां प्रखण्डक बिदिया बरहमपुर गाममे अपन डेरा (आवास) खसओलनि — नव स्थान, नव सम्भावना, मुदा अनजान भविष्यक अनिश्चितता संग।

ओतय जमीन्दार छलाह जुगल आ कमला प्रसाद — स्थानीय शक्तिशाली परिवार, जिनक संग रघुनीक भविष्य जुड़ल जाइत छल।

अध्याय 2 : दंगल-विजय आ भूमि-दान

चित्र 3

जुगल प्रसाद एक बेर दंगल (कुश्ती प्रतियोगिता) करओने छलाह। ई दंगल स्थानीय प्रतिष्ठाक विषय छल, आ ओहिमे रघुनी अद्भुत बल आ कौशल देखओलनि — ओ दंगल जीति लेलनि!

रघुनीक ई विजय जुगल प्रसादकेँ प्रभावित केलनि। ओ रघुनीकेँ अपन आश्रयमे बजओलनि, हुनक बल आ चरित्रक सम्मान करैत।

चित्र 4

जुगल प्रसाद रघुनीकेँ एक सय बीघा जमीन दान देलनि — एकटा असाधारण उदारता, जे रघुनीक जीवन पूर्णतः बदलि देलक। एकटा शरणार्थी अकाल-पीड़ित किसान आब भूस्वामी बनि गेलाह।

रघुनी सुगमां गाममे बथान (पशुशाला/कृषि-केन्द्र) बनओलनि। ओ खेती करए लगलाह, अपन परिवारसँ दूर, सुगमा गाममे स्थायी भऽ, नव जीवनक आरम्भ करैत।

अध्याय 3 : जमीन्दारीक कलह

चित्र 5

मुदा एहि बीच जुगल प्रसादक घरमे कलह भेल — पारिवारिक विवाद, जकर विस्तार गाथा नहि कहैत। एहि कलहक परिणाम गम्भीर छल — जुगल प्रसाद अपन जमीन-जत्था गागोरी राजकेँ बेचि देलनि!

रघुनीकेँ जखन ई समाचार भेटलनि, त' हुनका बड्ड दुख भेल — जकरा दान देलनि, से जमीन्दारी आब आन हाथमे चलि गेल छल। ई परिवर्तन रघुनीक स्थितिकेँ अनिश्चित बना देलक।

चित्र 6

नव जमीन्दार गागोरी राजक अधीन रघुनीक स्थिति की हएत, ई प्रश्न रघुनीक मोनमे उठल। मुदा ओ अपन भक्ति आ धैर्यसँ आगाँ बढ़ैत रहलाह, बिनु कोनो अनावश्यक चिन्ताक।

एहि बीच रघुनीक जीवनमे एकटा नव पात्र प्रवेश करत — सिमरी गामक चौधरी, जकर ईर्ष्या आगाँ चलि कऽ रघुनीक जीवनमे भयंकर संघर्ष आनत।

अध्याय 4 : चौधरीक ईर्ष्या

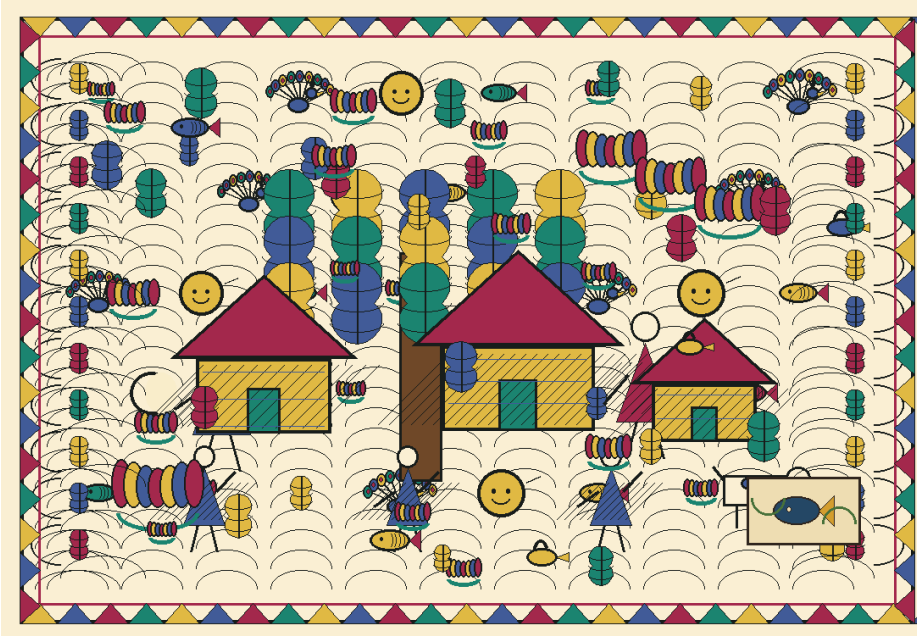

चित्र 7

एक दिन रघुनी अपन संगीक संग नाच देखबाक लेल सिमरी गामक चौधरीक दलानपर गेला। मनोरंजनक ई साधारण अवसर आगाँ चलि कऽ ईर्ष्याक बीज बनल।

नाचक बाद चौधरी नटुआ (नर्तक)केँ पुरस्कारस्वरूप औँठी आ दुशाला देलखिन्ह — उदारताक प्रदर्शन। रघुनी सेहो प्रभावित भऽ नटुआकेँ कहलखिन्ह — 'बथान परसँ अपन पसिन्नक एक जोड़ी गाए हाँकि लिअ' — रघुनीक अपन उदारताक प्रदर्शन।

चित्र 8

नटुआ खुशीसँ दू टा निकगर (उत्तम) गाय हाँकि आनि खुशीसँ चौधरीकेँ देखओलक। मुदा ई उदारता चौधरीकेँ अलग तरहेँ बुझायल — ओकरा लागल जे रघुनी हुनका नीचाँ देखाबए चाहैत छथि, अपन धन-सम्पत्तिक प्रदर्शन करैत।

ई गलतफहमी चौधरीक ईर्ष्याकेँ आरो भड़कओलक। मुदा सोझा-सोझी भिड़बाक हिम्मत चौधरीमे नहि छल — रघुनीक बल आ प्रतिष्ठा एतेक स्थापित छल जे प्रत्यक्ष टकराव जोखिमपूर्ण छल। तेँ चौधरी एकटा गुप्त, कपटपूर्ण मार्ग चुनलनि।

अध्याय 5 : जोगीक काला जादू

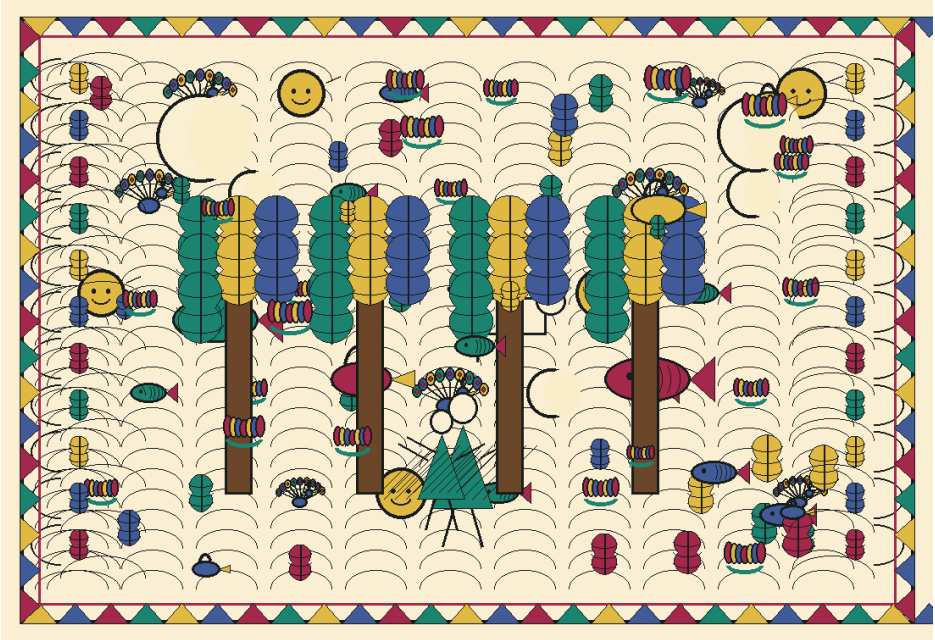

चित्र 9

चौधरी देवी उपासक जादूक कलाकार मकदूम जोगी लग गेला। ओ जोगीकेँ अनुरोध केलनि — 'रघुनीकेँ हमर नोकर बना दिअ!' — ईर्ष्यासँ प्रेरित ई माँग रघुनीक स्वतन्त्रता आ सम्मानपर सीधा प्रहार छल।

जोगी सरिसओ (सरसों) फूकि रघुनीपर छिटलक — काला जादूक एकटा प्रयोग, जकर उद्देश्य रघुनीकेँ वशीभूत करब छल। मुदा रघुनी देवी भक्त छलाह, तेँ जोगीक जादू नहि चललैक — भक्तिक शक्ति जादूसँ बेसी प्रबल साबित भेल!

चित्र 10

अपन पहिल प्रयासक विफलतासँ क्षुब्ध, जोगी चण्डिकाक सिद्धि केलक — शक्तिशाली तांत्रिक साधना। एहि सिद्धिक बलपर जोगी रघुनीपर सए टा बाघसँ घेरबा कऽ मारि देलक!

ई आक्रमण भयंकर छल — सए बाघ, एकसाथ! मुदा रघुनी भक्त छलाह, तेँ चण्डिकाक बहिन कामाख्या स्वयं आबि रघुनीकेँ जिया देलनि — मृत्युसँ पुनर्जीवन, देवीक कृपाक चरम प्रमाण।

अध्याय 6 : जोगीक पराजय

चित्र 11

अपन दोसर प्रयासक विफलतासँ हतोत्साहित, जोगी तेसर बेर प्रयास केलक — सरिसओ मन्त्राबए लेल जखन ओ सरिसओ मुट्ठीमे लेलक, तखन ओकर मुट्ठी बन्दक-बन्दे रहि गेलैक — जड़वत्, अचल!

ई घटना जोगीक शक्तिक पूर्ण पराजय छल। रघुनीक भक्तिक कवच एतेक अभेद्य छल जे जोगीक कोनो जादू ओकरा स्पर्श तक नहि कऽ सकल। तीन-तीन बेर प्रयास, तीनू बेर असफल!

चित्र 12

चौधरी आ जोगी दुनू एहि पराजयसँ स्तब्ध रहि गेला। बलसँ हारि, अब चौधरी एकटा नव, राजनीतिक चालि सोचलनि — प्रत्यक्ष आक्रमणसँ जे नहि भेल, से छलसँ करबाक प्रयास।

चौधरीकेँ पता चललैक जे रघुनी गागोरी राजाक लगान (कर) नहि देने छथि — शायद जमीन्दारी परिवर्तनक भ्रममे, वा प्रशासनिक त्रुटिवश। ई सूचना चौधरीकेँ एकटा नव अवसर देलक — कानूनी माध्यमसँ रघुनीकेँ फँसएबाक।

अध्याय 7 : झूठा आरोप

चित्र 13

चौधरी गागोरी राजा लग गेल आ झूठ आरोप लगओलक — 'रघुनी अपने त' लगान नहि देने अछि, आ उनटे लोक सभकेँ लगान देबासँ मना कऽ रहल अछि!' — ई दोहरा आरोप रघुनीकेँ अपराधी आ विद्रोही दुनू सिद्ध करबाक प्रयास छल।

राजा एहि आरोपपर विश्वास कऽ क्रुद्ध भेला। ओ सिपाही पठओलनि रघुनीकेँ पकड़बाक लेल। मुदा गाम पर रघुनी नहि रहए — ओ कतहु आर छला, सिपाहीक पहुँचसँ बाहर।

चित्र 14

सिपाही सभ रघुनीक भाइ देवदत्त मरड़कैं लऽ बिदा भेला — गलत व्यक्तिकैं दण्डक शिकार बनएबाक विडम्बना। रस्तामे केजरीडीह लग देवदत्त रघुनीकैं देखलनि, आ रघुनी सेहो देवदत्तकैं देखलनि।

मुदा आश्चर्यजनक रूपसँ, सिपाही सभ रघुनीकैं नहि देखि सकला — जेना कोनो अदृश्य शक्ति रघुनीक रक्षा कऽ रहल हो, ओकरा सिपाहीक दृष्टिसँ छिपबैत। देवीक कृपा फेर एक बेर प्रकट भेल।

अध्याय 8 : न्यायक चमत्कार

चित्र 15

राजा देवदत्तकेँ काल कोठरीमे राखि सिपाही सभकेँ ओकरा मारबाक आदेश देलनि — निर्दोष भाइपर अन्यायपूर्ण दण्ड। मुदा जखन सिपाही कोड़ा चलओलनि, त' एकटा चमत्कार भेल — जे कोड़ा चलबैत छल, उनटे तकरे चोट लागए!

ई दैवी हस्तक्षेप स्पष्ट संकेत छल — निर्दोषपर अत्याचार करएवला स्वयं दण्डित होइत छला। राजा ई चमत्कार देखि स्तब्ध आ भयभीत भेला — ई कोनो साधारण घटना नहि छल।

चित्र 16

राजा तुरत अपन भूल स्वीकार केलनि। ओ देवदत्तसँ कहलनि — 'गलती भेल, आब अहाँ जे कहब, सैह हम करब!' — अन्यायी राजाक ई विनम्रता चमत्कारक शक्तिक प्रमाण छल।

देवदत्तक कहला अनुसार, जे रैयत (प्रजा) लगान नहि भरलाक कारणसँ जहलमे छला, तिनका छोड़ि देल गेला — सामूहिक न्याय, एकटा परिवारक कष्टसँ सम्पूर्ण समुदायक मुक्ति।

अध्याय 9 : अन्तिम सम्मान

चित्र 17

राजा — अपन भूलक प्रायश्चित्त करैत — रघुनी मररसँ घट्टी (कोनो विशेष अधिकार वा सुविधा, सम्भवतः जल-मिलक अधिकार) मँगलनि — ई माँग सम्मानक प्रतीक छल, दण्डक नहि।

ई अन्त रघुनीक भक्ति आ सत्यनिष्ठाक पूर्ण विजय छल — जोगीक तीन-तीन बेर काला जादू विफल, चौधरीक ईर्ष्या आ छल पराजित, आ राजाक अन्यायपूर्ण आदेश स्वयं-दण्डित।

चित्र 18

रघुनी मरर — एकटा साधारण गोपालक, जे अकालमे अपन गाम छोड़ि पलायन केने छला — अन्ततः अपन भक्ति आ धैर्यक बलपर सम्मान आ न्याय दुनू प्राप्त केलनि।

ई गाथा सिखबैत अछि — देवीभक्ति, सत्यनिष्ठा, आ धैर्य अन्ततः बल, छल, आ अन्यायपर विजय पबैत अछि। रघुनी मररक कथा आइयो मिथिलांचलमे भक्ति आ न्यायक प्रतीकक रूपमे स्मरण कएल जाइत अछि — एकटा एहन नायक, जकर अजेयता तरुआरिसँ नहि, आस्थासँ आयल।

समाप्त

VIDEHA

विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका | ISSN 2229-547X | www.videha.co.in

राजा अनसारी

सपनाक पूर्ति — सोनाक गाछ आ रूपाक ठाढ़िक अद्भुत गाथा

गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादक, विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका (since 2000)

ISSN 2229-547X

उपक्रम : चौद्दह कोशक राज्य

राजा अनसारी महान राजा छलाह — चौद्दह कोशमे पसरल राज्य, तीन बेटा, आ जे किछु राजाक हृदयमे अबए, से पूर्ण होइत छल। मुदा एहि गाथाक जड़ि एकटा सपनामे अछि — एहन सपना, जकर पूर्ति लेल एक बेटा सात समुद्र पार गेल, आ ओतयसँ किछु आनि सोझाँ रखलक, जकर अर्थ राजाक बुद्धिसँ बाहर छल।

ई गाथा अद्भुत-रसक थिक — जोगी, वरदान, सुग्गा, परी — सभ किछु एहिमे अछि। मुदा एकर गहींर अर्थ ओतय अछि जतय बच्चा अपन विश्वाससँ राजाक सपना साकार करैत अछि, आ राजा तखनहुँ नहि बुझि पबैत छथि जे सपनाक भाषा कोना पढ़ल जाइत अछि।

अध्याय 1 : तीन बेटाक वचन

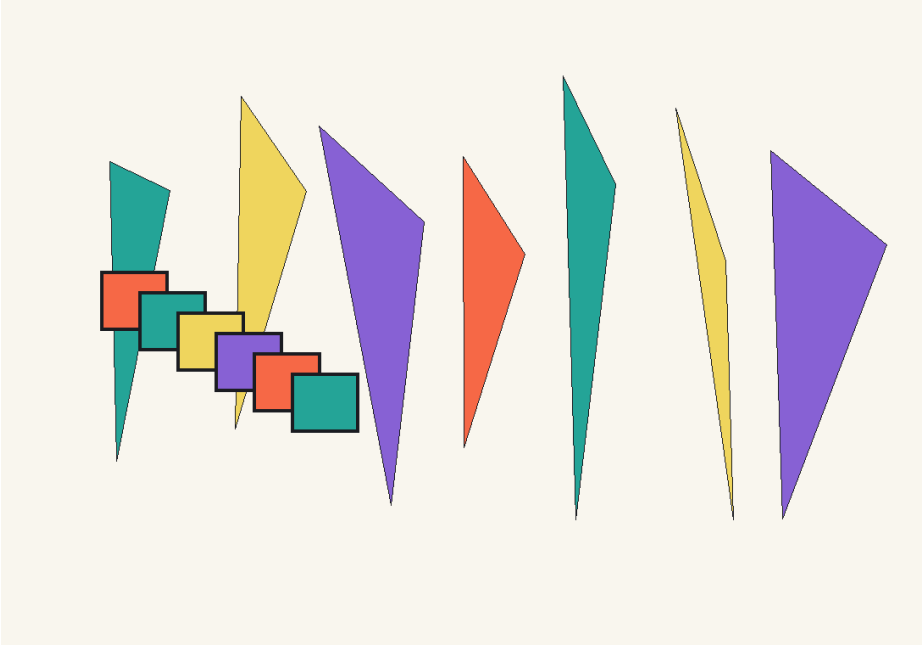

चित्र 1

राजा अनसारीक राज्य चौद्दह कोशमे पसरल छल — घर, मकान, बंगला, बाग-बगीचा, सभ किछु भरल-पूरल। तीन टा बेटा, आ राजाक हृदयमे जे किछु अबए, से पूर्ण होइत छल। एहन सुख आन राजाकेँ कमे नसीब होइत छल।

एक राति राजाकेँ एकटा अद्भुत सपना भेलनि। ओ देखलनि जे हुनकर घरमे हीरा-मोती झरि-झरि कऽ खसि रहल अछि, आ मोजर चुनि-चुनि कऽ सभ खाइत अछि। सपना एतेक स्पष्ट छल जे भोर होइते राजा ओकर याद अपन बेटा सभकेँ सुनओलनि।

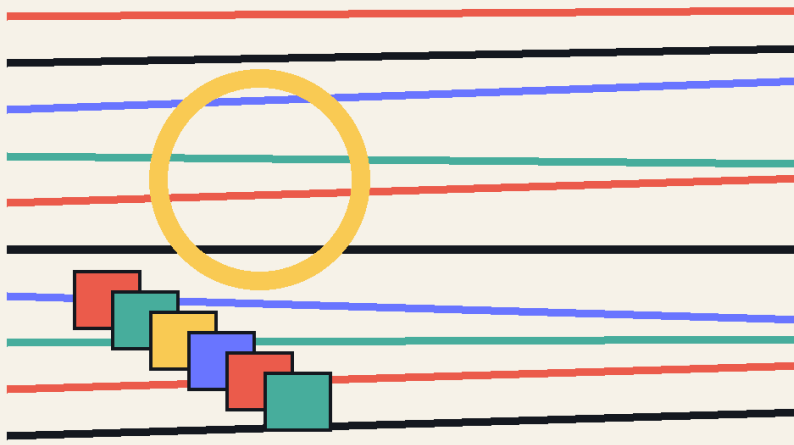

चित्र 2

'देखू, हम रातिमे ई सपना देखलहुँ' — राजा किछु चिन्तित स्वरमे कहलनि, कारण एहन सपनाक अर्थ पकड़मे नहि अबैत छल। की ई शुभ छल, आकि कोनो संकेत?

मुदा बेटा सभमे सभसँ छोट — जकर करेजमे साहस आ विश्वास दुनू भरल छल — तुरत उत्तर देलक: 'पिताजी, अहाँ एहि गपक चिन्ता नहि करू। हम ओकरा पूरा कऽ देब।' राजाकेँ अचरज भेलनि — सपना कोना पूर्ण होएत? मुदा बेटाक स्वरमे एहन दृढ़ता छल जे कोनो प्रश्न करबाक साहस नहि भेलनि।

अध्याय 2 : बोनमे बिछुड़ल भाइ

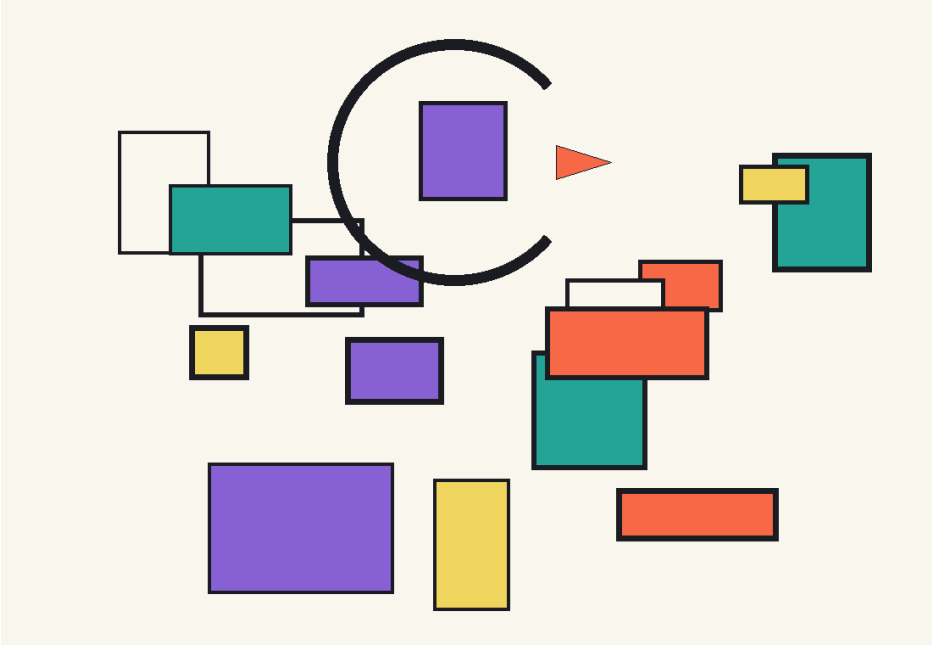

चित्र 3

तीनू भाए विचार केलनि जे सपना पूर्ण करबाक लेल यात्रा करब आवश्यक अछि। भोरे-भोर घोड़ा कसल गेल, आ तीनू बिदा भेलाह — एकटा अनजान लक्ष्यक दिस, केवल एतबे जानि कऽ जे किछु त' करब अछि।

चलैत-चलैत ओ सभ एकटा भयंकर बोनमे पहुँचि गेलाह। घन वृक्ष, अन्हार छाया, आ रस्ताक कोनो निश्चित पहचान नहि। बोनक गहराइमे प्रवेश करिते तीनू भाए एक-दोसरासँ बिछुड़ि गेलाह — रस्ता तीन दिशामे बँटि गेल छल।

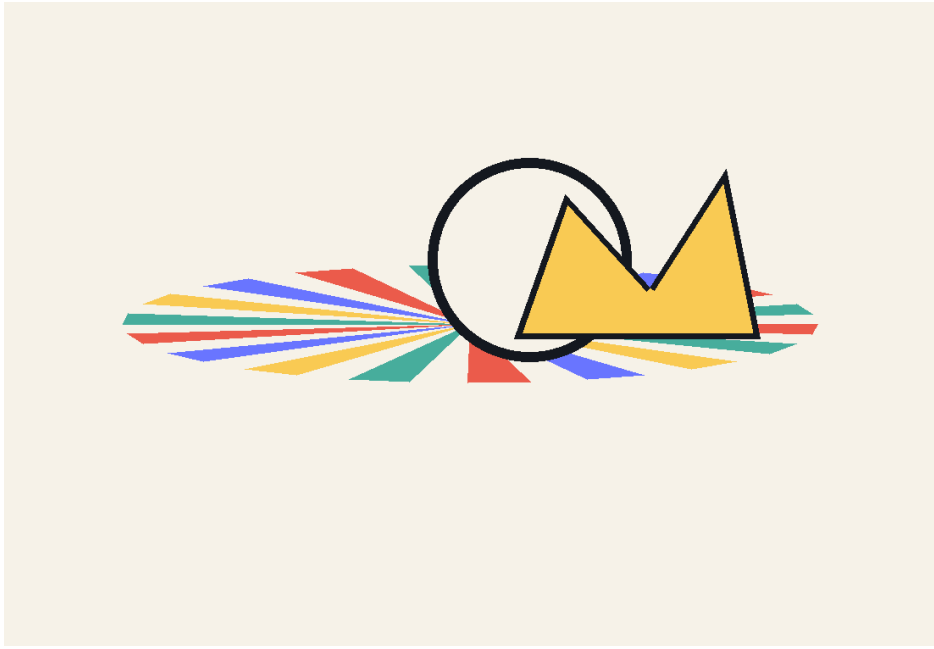

चित्र 4

दू भाए एक दिशामे भटकैत रहलाह — किछु दिन बीतल, मुदा ओ सभ अपन रस्ता नहि पाबि सकलाह। गाथा हुनकर आगाँक यात्रा विस्तारसँ नहि कहैत, मुदा ई स्पष्ट अछि जे ओ सभ भटकैत रहलाह, आ केन्द्रीय कथा तेसर भाइक दिस मुड़ि जाइत अछि।

छोट भाए — जे राजाकेँ वचन देने छल — बोनक रस्तामे भूख आ पिआससँ थाकि गेल। घोड़ा साथ देब बन्न कऽ देलक, आ ओ पएरे चलए लागल, अपन वचनक भार नेने, अकेल आ थाकल।

अध्याय 3 : बटोहीक संकेत

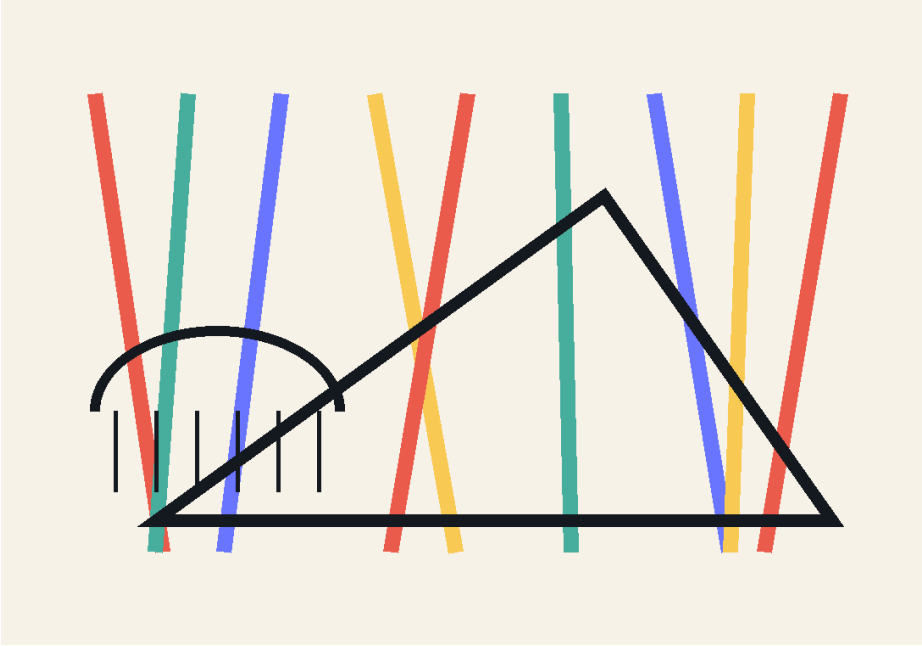

चित्र 5

थाकल, भूखल, पिआसल — छोट भाए बोनमे डेग बढ़ाइत रहल, बिनु ई जनने जे रस्ता कतय जा रहल अछि। तखने ओकरा एकटा बटोही भेटल — बोनक ओही राहमे चलैत।

बच्चा ओकरासँ अपन खोजक बारे कहलक: 'हमरा सोनारूपी गाछक ठाढ़ि लग जएबाक अछि, जकरासँ मोती झरैत अछि आ मोजर चुनि कऽ खाइत अछि।' — ठीक ओही वस्तु, जे राजा सपनामे देखने छलाह।

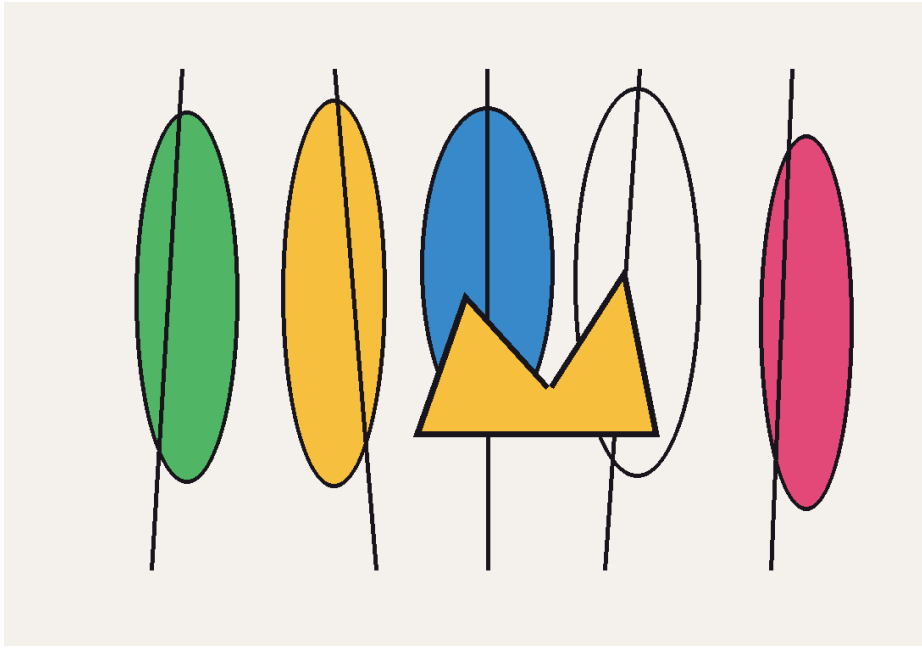

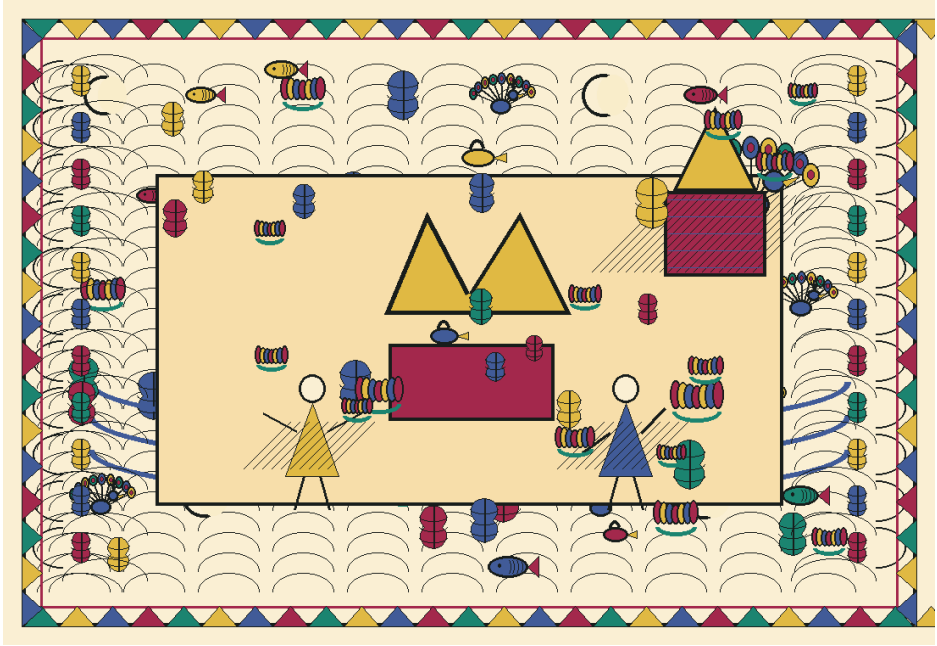

चित्र 6

बटोही ध्यानसँ सुनि, एकटा रस्ता देखओलक — 'एहि रस्तासँ चलि जाउ। आगाँ एकटा इनार अछि। ओही इनारक बाटे एकटा रस्ता अछि।' सलाह सोझ छल, मुदा एकर पाछाँ की छल, से बटोही स्पष्ट नहि कहलक।

बच्चा कृतज्ञतासँ आगाँ बढ़ल, बटोहीक कहल रस्तापर, अपन अन्तिम शक्तिसँ। थकान, भूख, आ अनिश्चितताक बावजूद ओकर करेजमे एकटा विश्वास छल — जे रस्ता भेटल अछि, से गलत नहि भऽ सकैत।

अध्याय 4 : इनारमे खसब

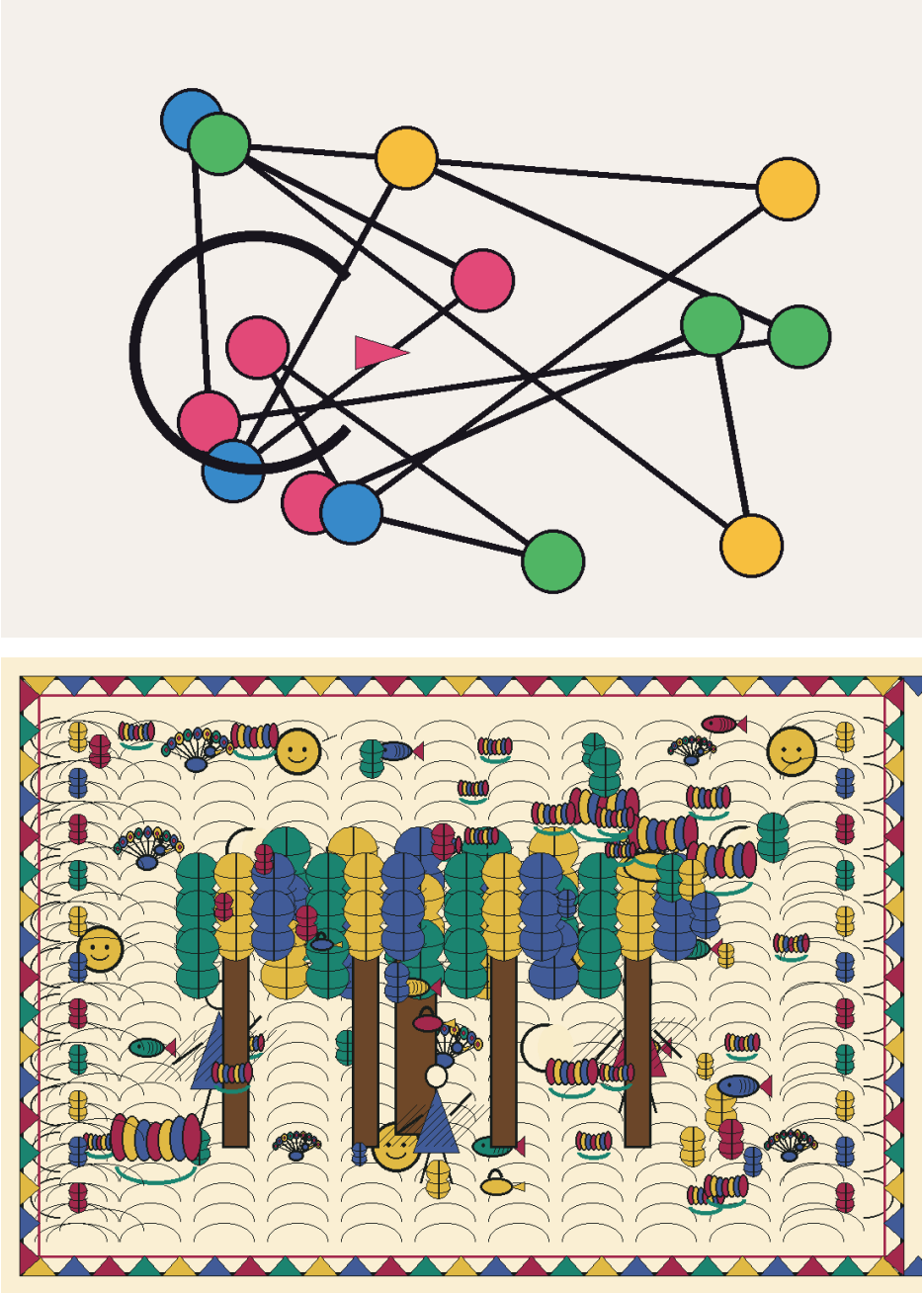

चित्र 7

चलैत-चलैत बच्चा ओहि इनार लग पहुँचल, जकर चर्च बटोही केने छल। इनारक बाटे जे रस्ता छल, ओ ठीक ओतहि जा कऽ खतम होइत छल — जेना नियति स्वयं ओकरा एहि रस्ता दिस ठेलि रहल हो।

बच्चा इनारमे खसि पड़ल — कोनो हिचकिचाहटि बिनु, जेना ओकरा पहिनहिये बुझल हो जे ई खसब कोनो विनाश नहि, एकटा नव यात्राक द्वार थिक।

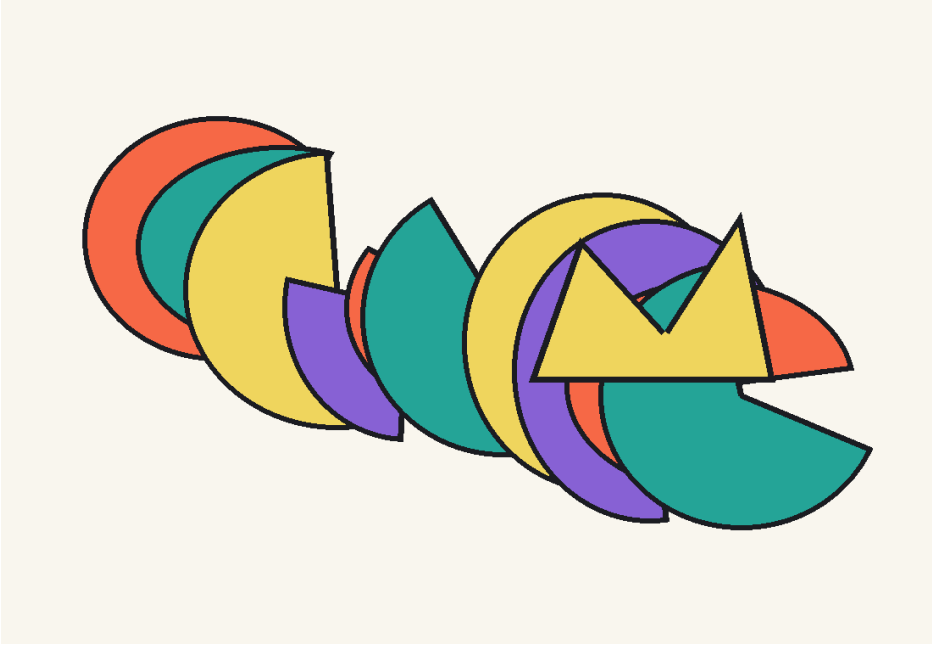

चित्र 8

इनारक भीतर अन्हार आ अनजान रस्ता छल, मुदा बच्चा चलैत रहल — डर नहि, केवल आगाँ बढ़बाक इच्छा। ई साहस ओकर उमेरसँ बेसी छल — मुदा वचनक भार एहन साहस देबे करैत अछि।

चलैत-चलैत बच्चा एकटा एहन ठाम पहुँचल जतय भैरवानन्द जोगी रहैत छलाह — एकटा सिद्ध साधु, जिनक तपोभूमि धरि आइ धरि कोनो मनुक्ख नहि पहुँचल छल।

अध्याय 5 : भैरवानन्द जोगी

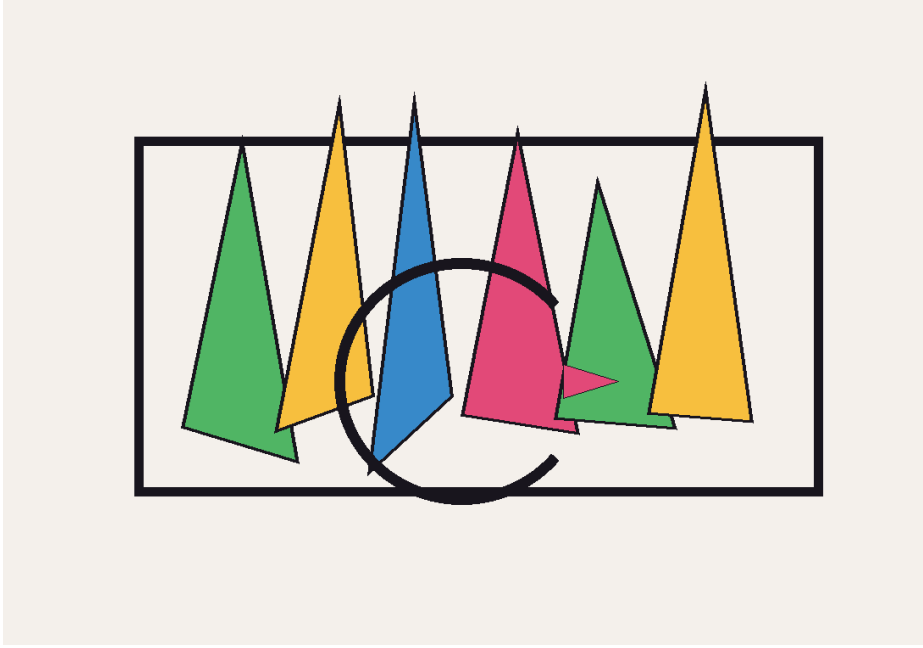

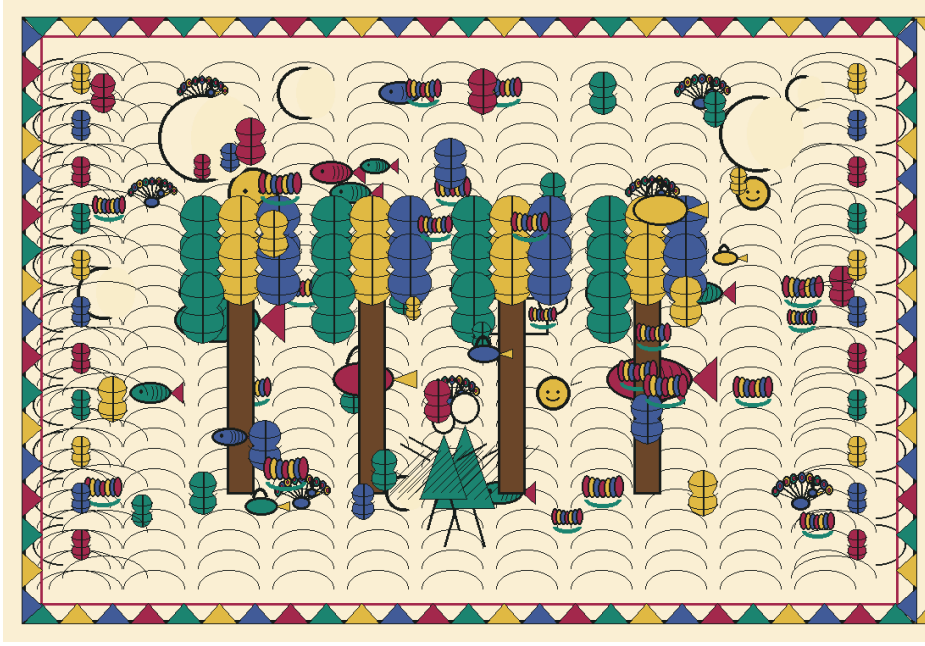

चित्र 9

जोगी बच्चाकेँ देखि आश्चर्यचकित रहि गेलाह — 'रे बच्चा, तूँ एतय कतएसँ आयलह? एतय त' कोनो मनुख आइ धरि नहि पहुँचि सकल रहए!' ई प्रश्नमे जोगीक विस्मय आ बच्चाक असाधारण साहसक स्वीकृति दुनू छल।

बच्चा अपन कथा कहलक — पिताक सपना, अपन वचन, बोनक यात्रा, बटोहीक संकेत, इनारमे खसब — सभ किछु। जोगी ध्यानसँ सुनलनि, आ हुनकर मोनमे एहि बालकक प्रति एकटा स्नेह जागल।

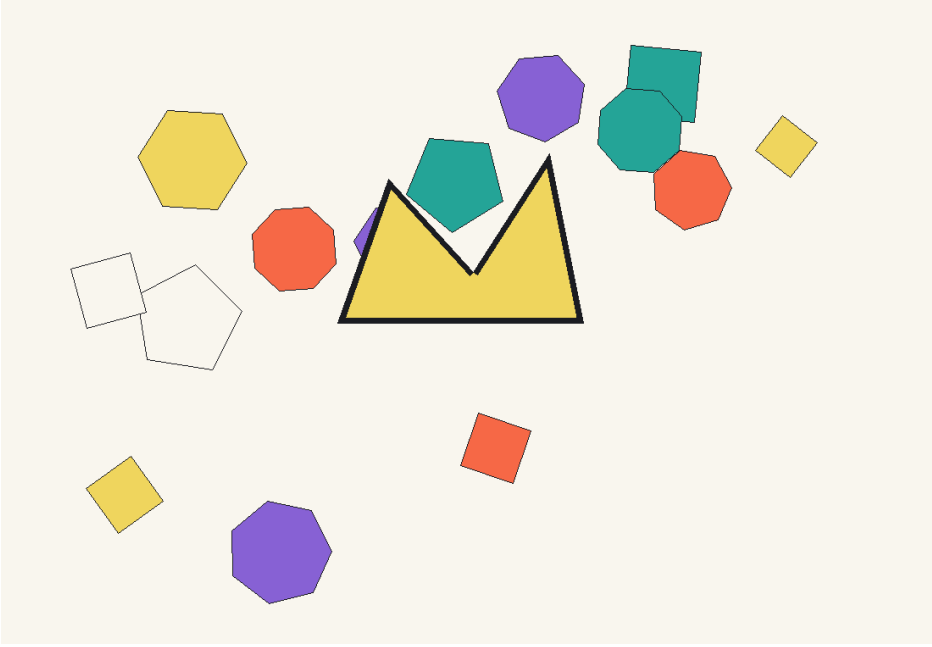

चित्र 10

बच्चा ओतय रहि गेल, आ जोगीक सेवा करए लागल। ने शिकायत, ने थकान — केवल सेवा, जेना ई ओकर स्वाभाविक धर्म हो। दिन बीतैत गेल, आ जोगीक हृदयमे बच्चाक प्रति स्नेह गाढ़ भेल।

किछु दिनक सेवाक बाद जोगी बच्चापर बड्डु प्रसन्न भऽ गेलाह। एक दिन जोगी बजलाह — 'बच्चा, माँग जे तोरा की चाही। हम तोरा अवश्य देब।' ई वरदानक क्षण छल, जकर प्रतीक्षा — बच्चाकेँ बुझलो नहि छल — पूरा गाथा करैत छल।

अध्याय 6 : वरदानक माँग

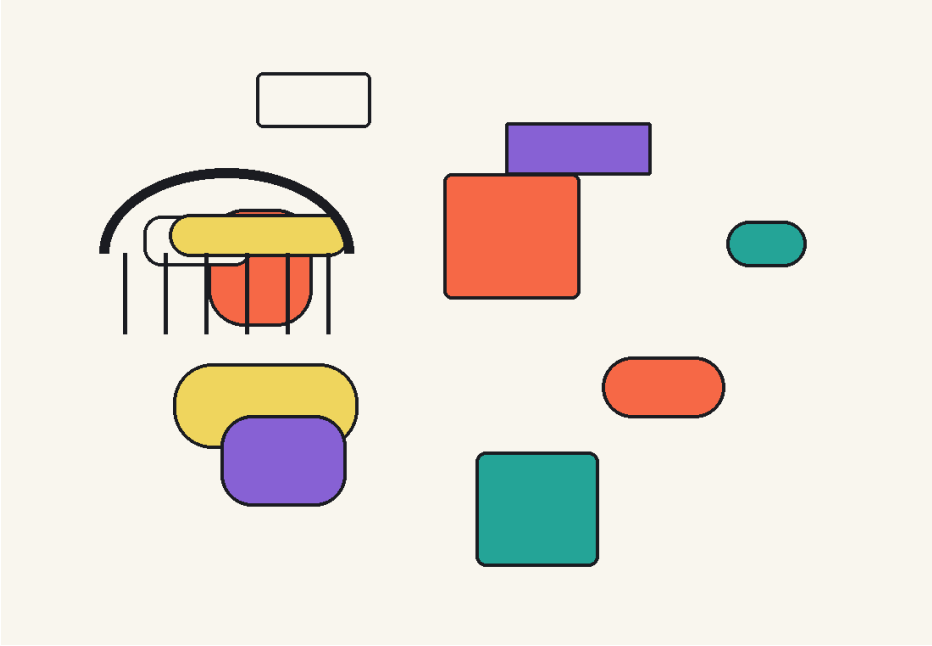

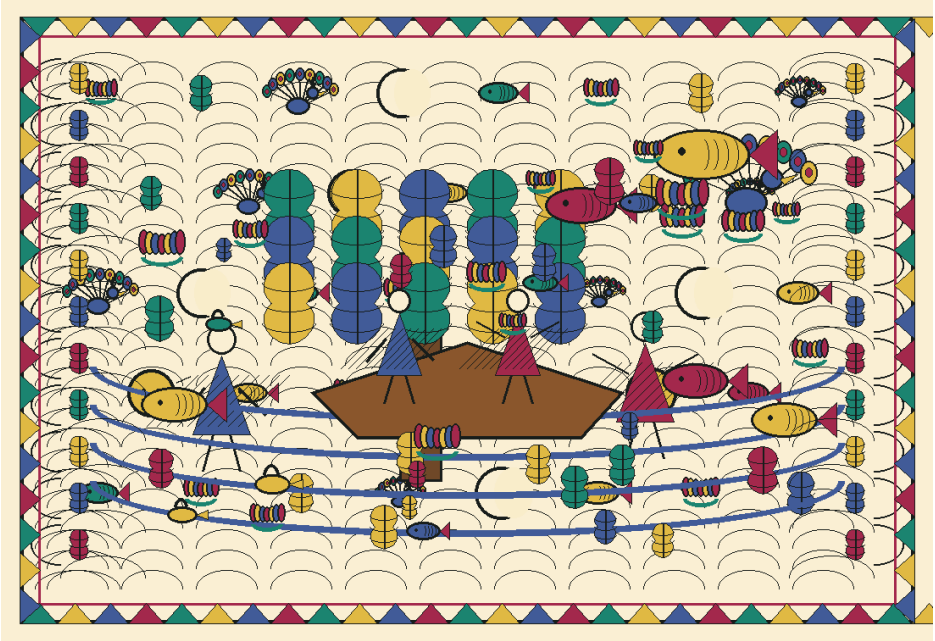

चित्र 11

बच्चा बिनु हिचकिचाहटिक अपन माँग रखलक — 'जोगी बाबा, हमरा सोनाक गाछ आ रूपाक ठाढ़ि चाही, जाहिमेसँ मोती झरैत अछि आ मोजर चुनि कऽ खाइत अछि।'

ई सुनि जोगी बड्डु आश्चर्यचकित भेलाह — 'तूँ ई चीज कोना पता लगेलह?' ई प्रश्नमे एकटा गहींर रहस्य छल — जोगीकेँ लागल जे ई ज्ञान बच्चाकेँ कोनो साधारण स्रोतसँ नहि भेटल हएत।

चित्र 12

मुदा वरदानक वचन दऽ चुकल छलाह जोगी, तैँ ओ बजलाह — 'ठीक अछि। हम जखन वरदान दऽ चुकल छी, त' अवश्य देब। मुदा तोरा कष्ट उठाबए पड़तह।' — ई चेतावनी छल, जे आगाँक यात्रा सहज नहि हएत।

भोर होइते जोगी बच्चाकेँ एकटा जंत्र देलनि आ कहलनि — 'जाऊ, सात समुद्र पार एकटा अमर फलक गाछ अछि। ओहिमेसँ एकटा फल तोड़ि कऽ आनू।' — यात्राक पहिल चरण आरम्भ भेल।

अध्याय 7 : सुग्गाक रूपमे उड़ान

चित्र 13

बच्चा जोगीसँ बिदा लऽ कऽ बिदा भेल — जंत्रक सहायतासँ सुग्गाक रूप धारण केलक, आ पाँखिक बलपर उड़ैत-उड़ैत सात समुद्र पार बिदा भेल। ई उड़ान कोनो सामान्य यात्रा नहि छल — असंख्य कोसक दूरी, अनजान आकाश, आ एक्केटा लक्ष्य।

सात समुद्रक पार पहुँचि बच्चा अमरफलक गाछ ताकि लेलक — ओ गाछ, जकर फल जोगी बतओने छलाह। सुग्गा-रूपमे बच्चा गाछपर बैसल, आ सावधानीसँ एकटा फल तोड़ि लेलक।

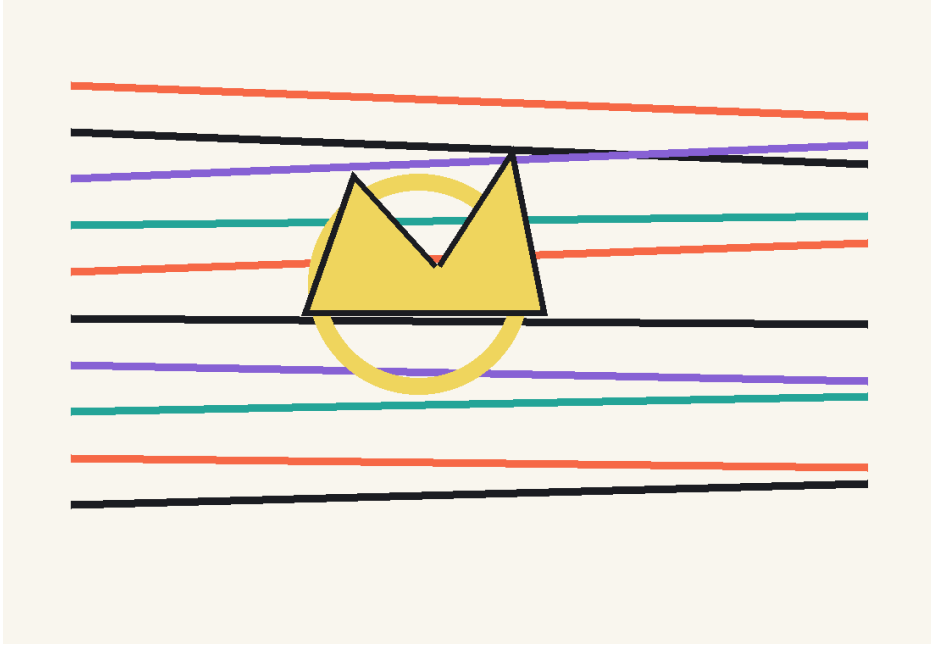

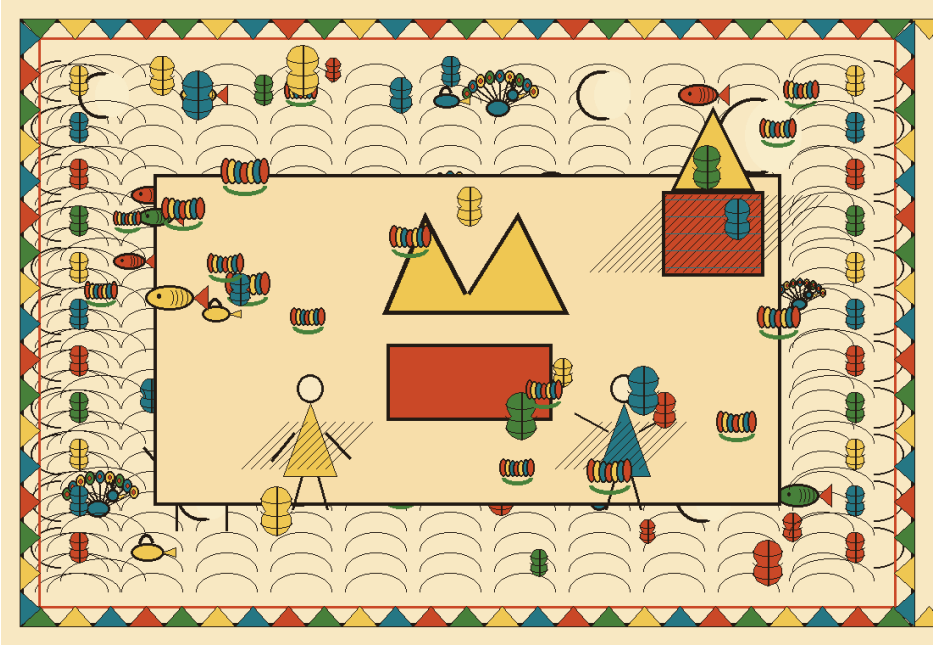

चित्र 14

फल तोड़िते बच्चा बिदा होए लगल, मुदा तखने तीन टा परी ओकर पाछू लागि गेलि — सुन्दर, मुदा रहस्यमय। ओ सभ आवाज देलक — 'घुरि कऽ देख!' — बेर-बेर, जेना कोनो मोहमयी पुकार।

सुग्गा उड़ैत रहल, परी सभ पाछू करैत रहलि, आवाज दैत रहलि। समुद्र टपला बाद, बटोहीक कहल शर्त बिसरि, सुग्गा घुरि कऽ देखि लेलक — आ ओतहि मरि गेल! जिज्ञासाक ई क्षण जीवन-मृत्युक बीचक रेखा बनि गेल।

अध्याय 8 : जोगीक चमत्कार

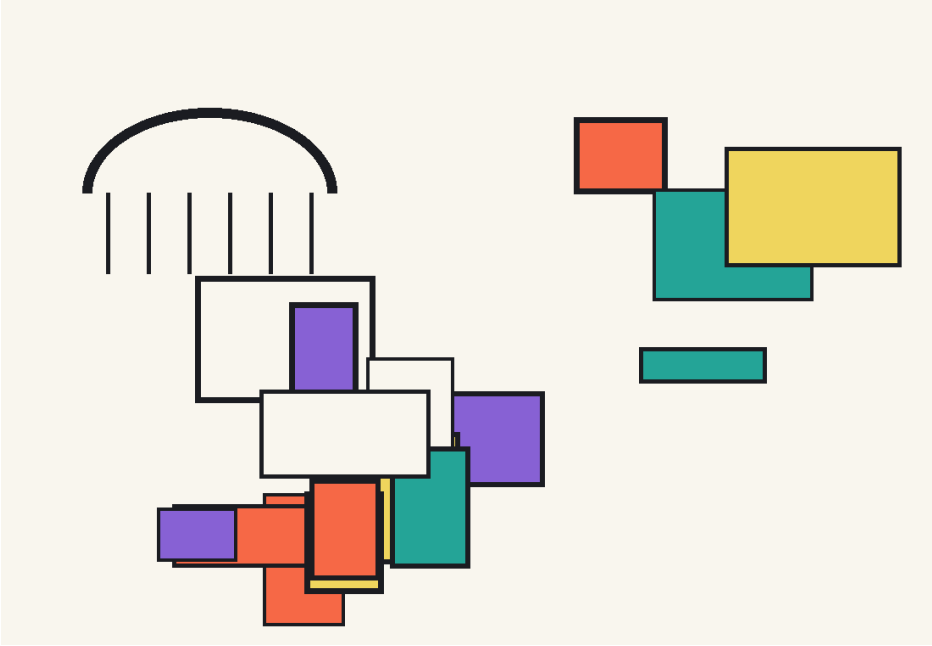

चित्र 15

जोगी ई सभटा घटना अपन ध्यानमे देखि रहल छलाह — दूरसँ, मुदा स्पष्ट। सुग्गाक मृत्युक क्षण जोगीक हृदयमे सेहो एकटा टीस पहुँचौलक — ओ बच्चा, जे एतेक साहससँ सात समुद्र पार गेल, से घुरि कऽ देखबाक एक भूलमे प्राण गमा देलक।

जोगी तुरत अपन चुट्टा (एकटा विशेष यष्टि वा साधन) लऽ कऽ बिदा भेलाह। ओतय पहुँचि, चुट्टासँ मारि कऽ ओ सुग्गाकेँ पुनः जिया देलनि — मृत्युसँ जीवनक ई वापसी जोगीक तपोबलक प्रमाण छल।

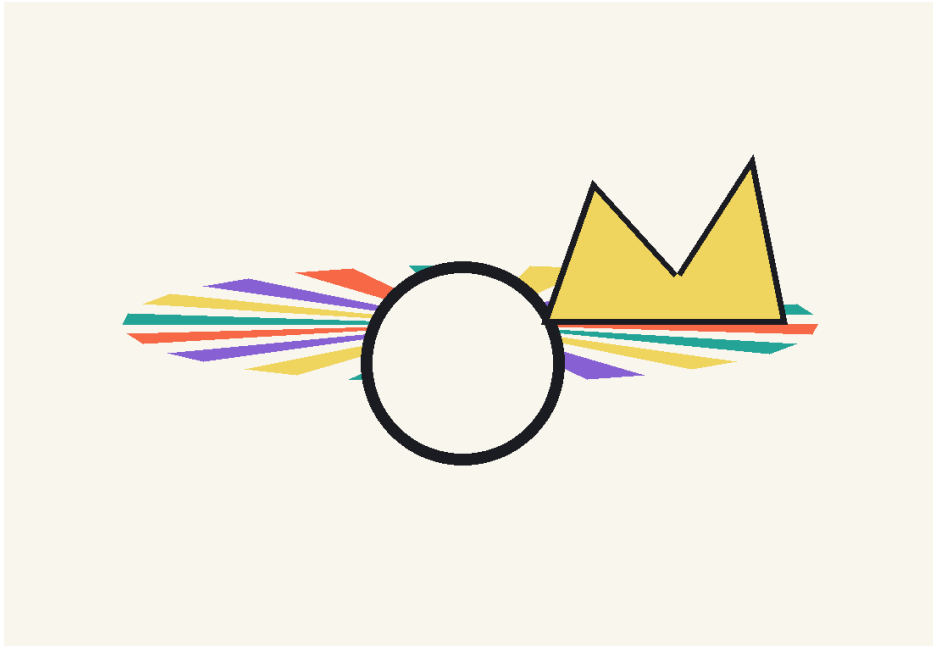

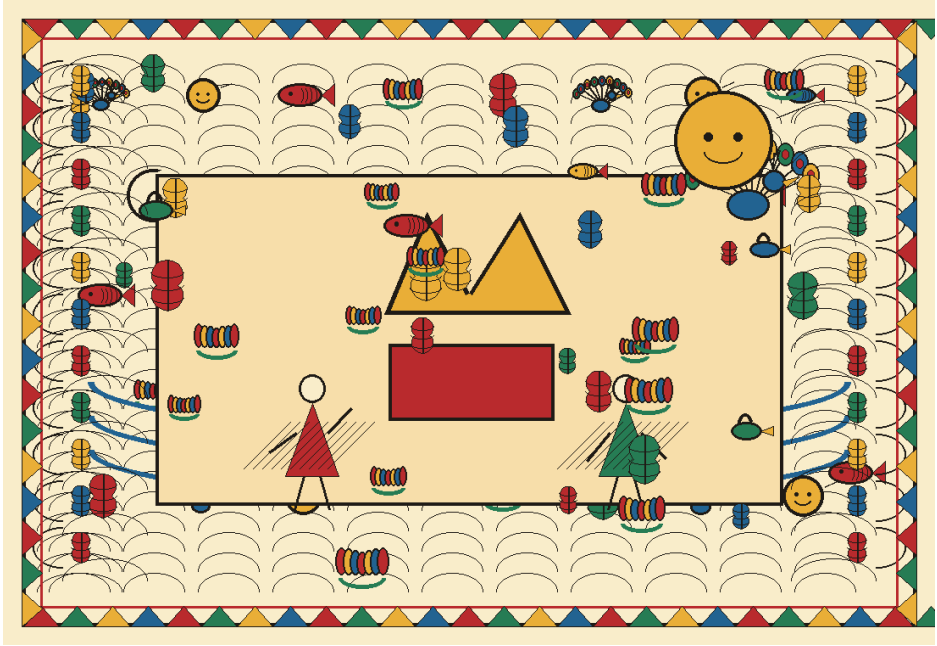

चित्र 16

जिया कऽ जोगी बच्चाकेँ स्पष्ट चेतावनी देलनि — 'आब जो। तूँ फल लऽ जे आब चलमे, तँ घुरि कऽ नहि देखिहँ।' ई बेर शर्त दोहराओल गेल, आरो स्पष्टतासँ, जेना जोगी चाहैत छलाह जे भूल दोहराएल नहि जाए।

बच्चा फेर बिदा भेल, फल तोड़लक, आ एहि बेर परीक सभक पुकार बावजूद एक्को बेर घुरि कऽ नहि देखलक। ओ उड़ैत रहल, आगू आ आगू, जाधरि जोगी लग सुरक्षित नहि पहुँचि गेल — अनुभवसँ सिखल पाठ, जे पहिल यात्रामे नहि सिखने छल।

अध्याय 9 : अमरत्वक वरदान

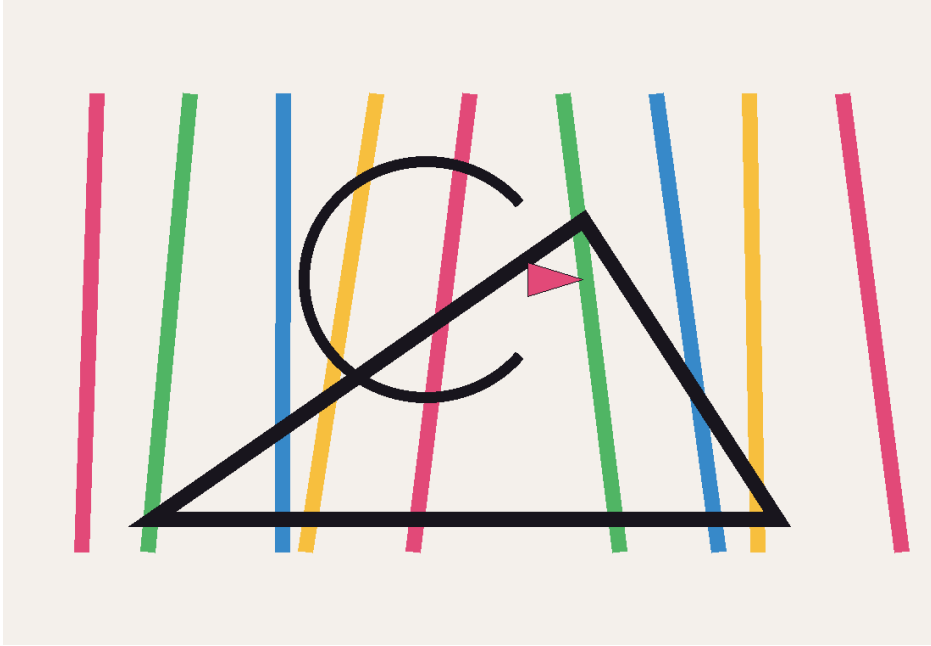

चित्र 17

बच्चा जोगी लग पहुँचि अमरफल हुनका सौंप देलक। जोगी प्रसन्न भऽ ओहि फलसँ बच्चाकेँ किछु खोआ देलनि — आ कहलनि, 'आब जाऊ, अहाँ अमर भऽ गेलहुँ।'

अमरत्वक ई वरदान बच्चाक यात्राक दोसर चरणक सफल समापन छल — मुदा गाथा एतय समाप्त नहि होइत छल। जोगी आगाँक निर्देश देलनि — एकटा नव लक्ष्य, आरो एकटा परीक्षा।

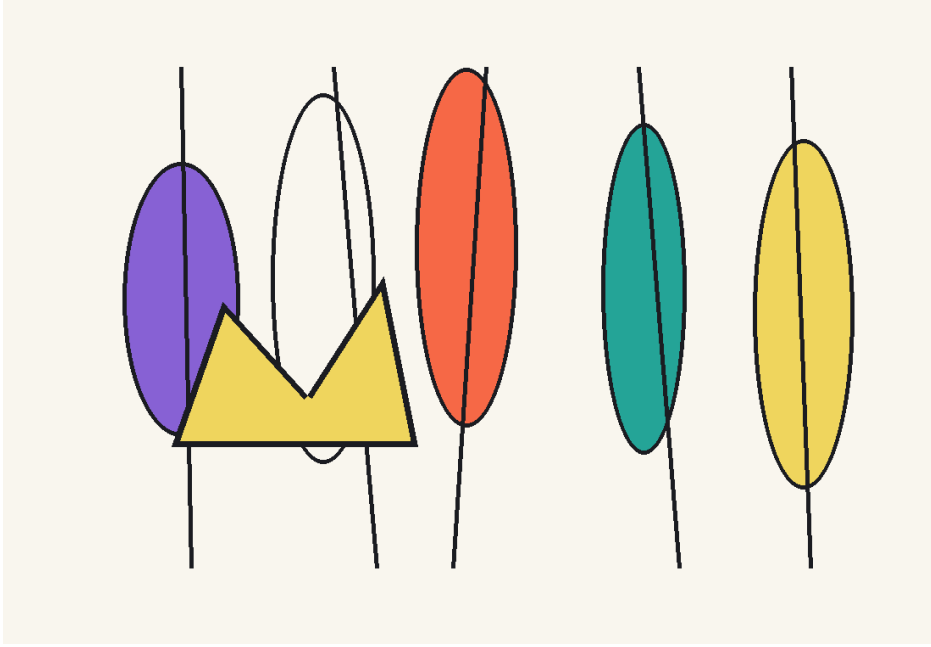

चित्र 18

'ओही सात समुद्र पार एकटा कलम-गाछी अछि। ओही गाछीमे तीन बहिन रहैत छथि। हुनके लग तोहर बात पूर्ण होएतौक।' — ई निर्देश स्पष्ट नहि छल, मुदा बच्चाक विश्वास जोगीक वचनपर अटल छल।

बच्चा बिदा भेल, फेर सात समुद्र पार गेल — एहि बेर तीन बहिनक खोजमे, जिनक संगति सोनाक गाछ आ रूपाक ठाढ़िक अन्तिम रहस्य खोलत।

अध्याय 10 : तीन बहिनक भेँट

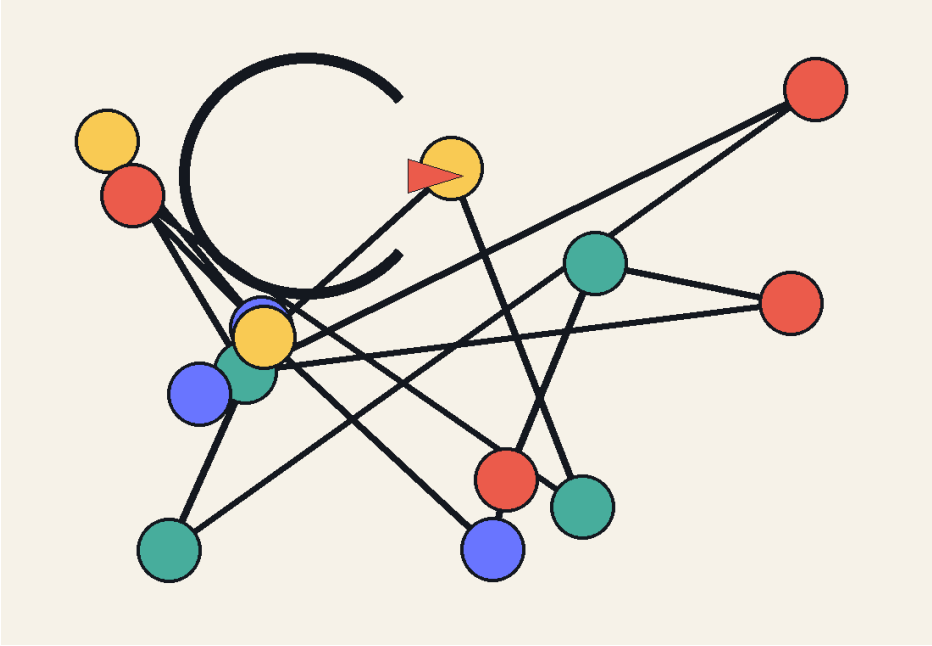

चित्र 19

सात समुद्र पार बच्चा ओही कलम-गाछी पहुँचल। ओतय पैघ बहिन लग जा कऽ अपन कथा कहलक। पैघ बहिन ओकरा माँझिल बहिन लग पठा देलक — जेना ई परीक्षाक एकटा क्रम हो, प्रत्येक बहिन अगिला दिस निर्देश दैत।

माँझिल बहिन लग गेला पर ओ बच्चाकेँ छोटकी बहिन लग पठा देलक। ई क्रम रोचक छल — जेना गाथा बच्चाक धैर्य आ श्रद्धाक परीक्षा लऽ रहल हो, हर बहिनक सोझाँ बिनु शिकायतक बढ़ैत।

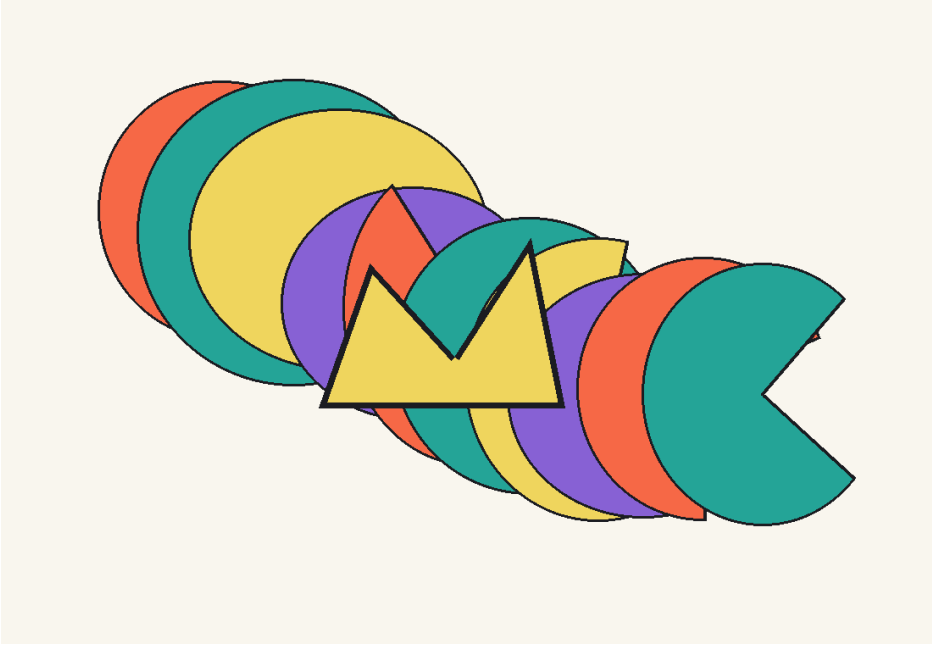

चित्र 20

जखन बच्चा छोटकी बहिन लग पहुँचल, त' ओ हाथमे चक्कू लेने बड़की आ माँझिल बहिन लग आबि गेलि — ई दृश्य किछु रहस्यमय आ रोमांचक छल, जकर अर्थ बच्चाकेँ अखनहुँ स्पष्ट नहि छल।

तीनू बहिन एकसंग बच्चासँ पुछलक — 'तोँ कतएसँ आयल छह?' बच्चा उत्तर देलक — 'जोगी बाबा हमरा पठेने छथि। अहाँ सभ हमरा संगे जोगीबाबा लग चलू।' आ आश्चर्यजनक रूपेँ तीनू बहिन एहि प्रस्तावकेँ तुरत स्वीकार कऽ लेलनि।

अध्याय 11 : जोगीक अन्तिम खेल

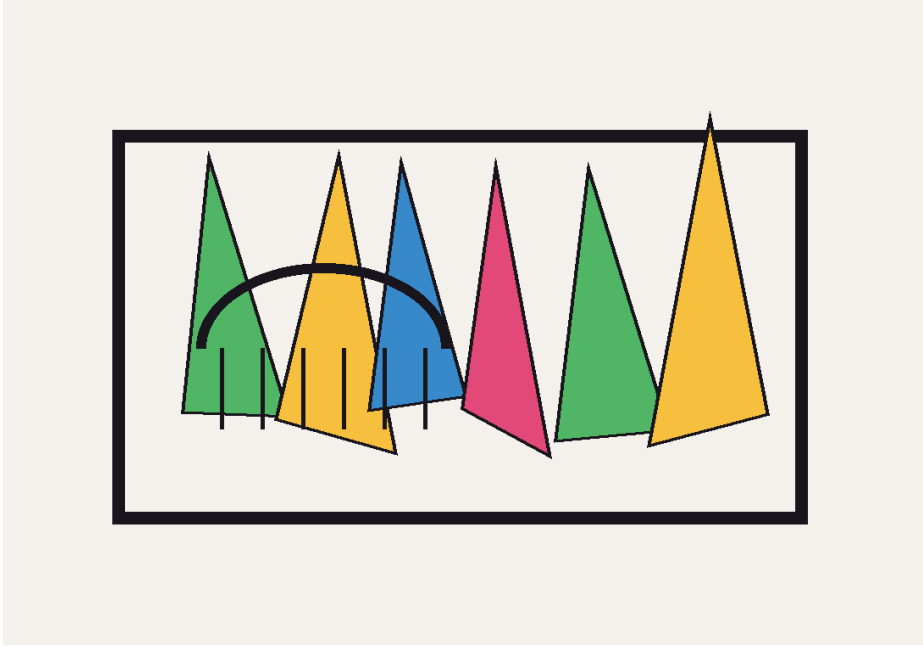

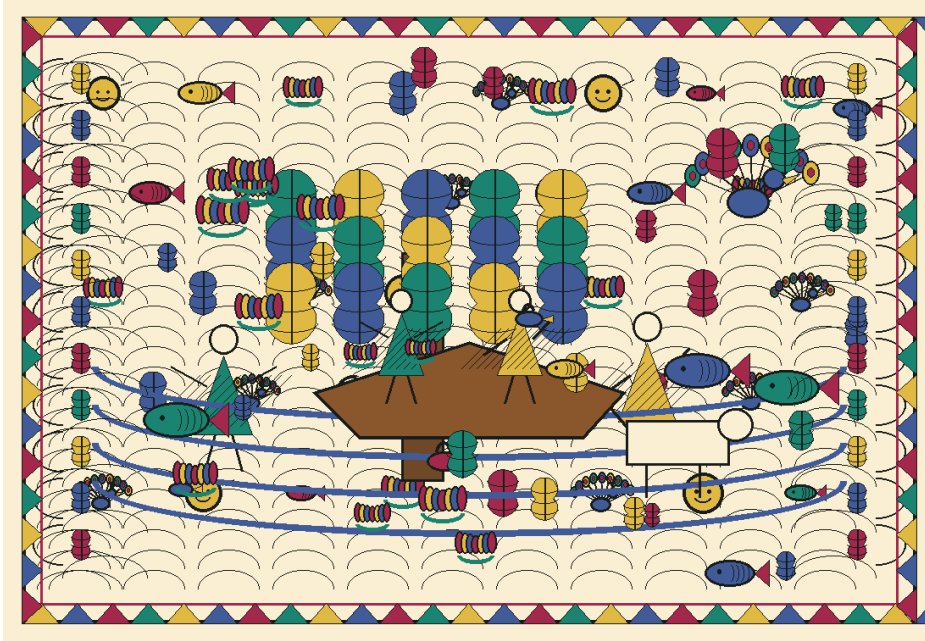

चित्र 21

चारू गोटे जोगी लग पहुँचलाह — बच्चा आ तीनू परी। जोगी बच्चाकेँ देखिते बजलाह — 'बेटी, आब अहाँ तीनूकेँ एकरा संग जेबाक अछि।' तीनू परी तैयार भऽ गेलि, बिनु कोनो विरोधक।

बच्चा जोगीसँ पुछलक — 'हमरा गाछ नहि देखाइ पड़ल।' ई प्रश्नमे बच्चाक भोलापन आ जिज्ञासा दुनू झलकैत छल — ओ अखनहुँ नहि बुझने छल जे सोनाक गाछ आ रूपाक ठाढ़ि केना प्रकट होएत।

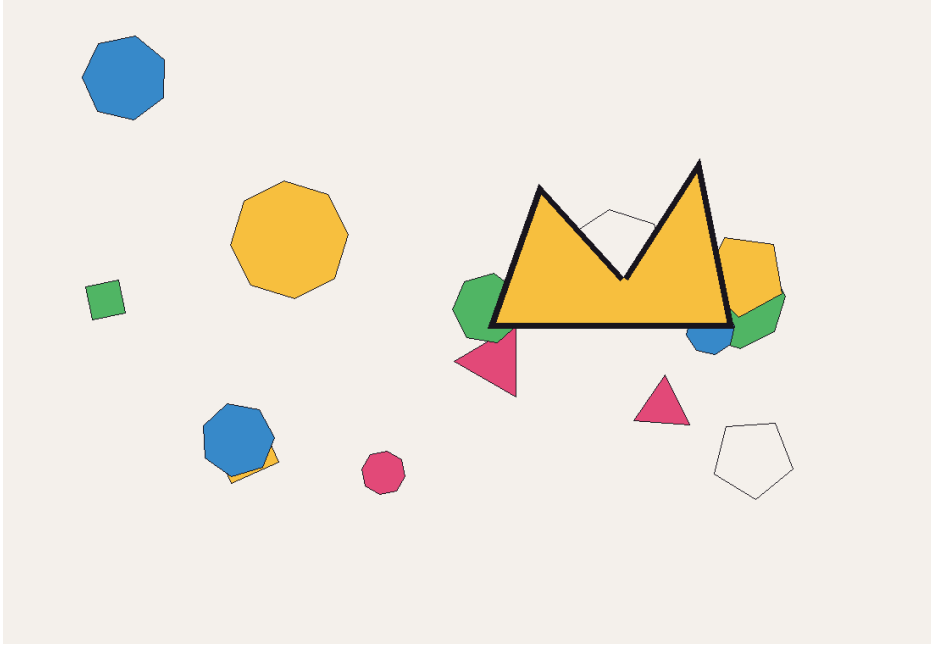

चित्र 22

जोगी तखन एकटा अद्भुत खेल देखओलनि। तीनू परी एक पाँतीमे ठाढ़ भेली, आ जोगी बच्चाक हाथमे चक्कू देलनि — 'एक्के संग तीनू परीक गरदनिमे चक्कू मारू आ अपन गरदनिमे सेहो।'

ई आदेश विचित्र आ रहस्यमय छल — मुदा जोगीक वचनपर पूर्ण विश्वास राखि बच्चा एना केलक। आ चमत्कार भेल — सोनाक गाछ आ रूपाक ठाढ़िसँ मोती झरए लागल, आ मोजर चुनि-चुनि कऽ खाए लागल! जे अद्भुत दृश्य राजा सपनामे देखने छलाह, ओ साक्षात् प्रकट भऽ गेल।

अध्याय 12 : राजाक सपनाक पूर्ति

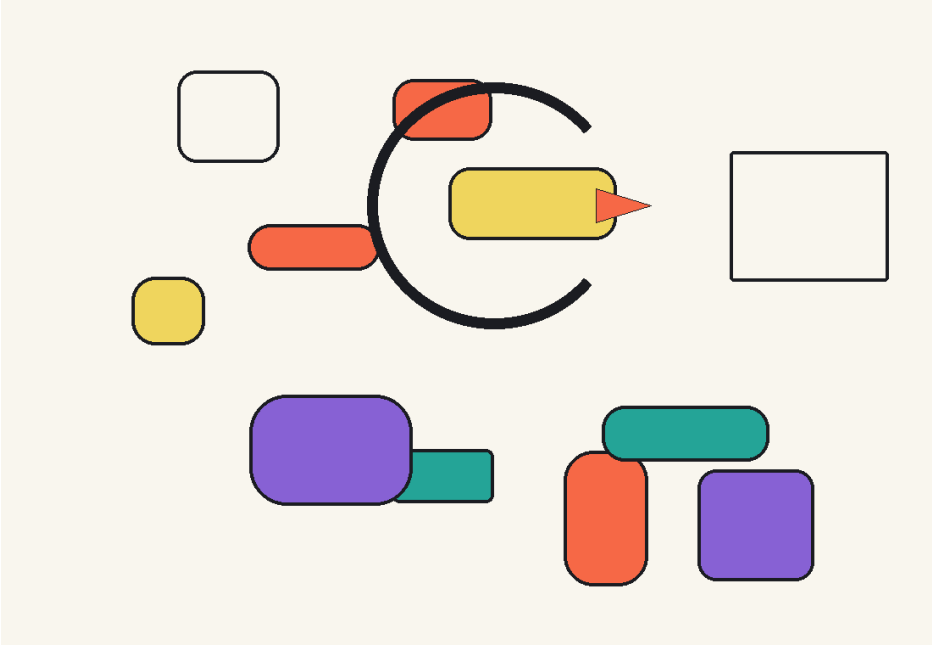

चित्र 23

एहि चमत्कारसँ बच्चाकेँ पूर्ण विश्वास भऽ गेल कि जोगीक हर वचन साँच छल — कठिन यात्रा, परीक्षा, सभटा एहि क्षणक लेल छल। किछु दिनक बाद बच्चा तीनू परीक संग ओतयसँ बिदा भेल, घर दिस।

घर पहुँचि बच्चा पिताकेँ कहलक — 'पिताजी, हम सोना-रूपाक गाछ अनने छी।' राजा ई सुनि आश्चर्यचकित भऽ गेलाह, मुदा जखन देखलनि जे बेटा तीन टा कन्या लऽ कऽ आयल अछि, त' राजाक बुद्धि भ्रमित भऽ गेलनि।

राजा कहलनि — 'बेवकूफ! तूँ तीनटा औरत अनने छँह आ कहैत छँह जे गाछ अनने छी!' राजाक ई प्रतिक्रिया स्वाभाविक छल — बाह्य दृष्टिसँ त' खाली तीन कन्या देखाइ पड़ैत छल, सोनाक गाछ कतहु नहि।

चित्र 24

मुदा बच्चा अविचलित रहल — ओकरा जोगीक चमत्कारपर पूर्ण विश्वास छल। ओ कहलक — 'सौँसे नगरक लोककेँ बजाऊ, आ तखन हम देखबैत छी।' राजा सभकेँ एकत्र कएलनि — पूरा नगर, कौतूहलसँ भरल।

आ सभक सोझाँ बच्चा फेर वैह क्रिया दोहरओलक — तीनू परीक गरदनिमे चक्कू मारलक, आ अपन गरदनिमे सेहो। तुरत सोनाक गाछ आ रूपाक ठाढ़िसँ मोती झरए लागल, मोजर चुनि-चुनि कऽ सभ खाए लागल — राजाक सपना, जकरा पूर्ण करबाक वचन बेटा देने छल, अन्ततः साकार भऽ गेल।

समाप्त

VIDEHA

विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका | ISSN 2229-547X | www.videha.co.in

राजा ढोलन

बाघिनक शाप आ नोकरक बेटाक अन्तिम विजय

गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादक, विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका (since 2000)

ISSN 2229-547X

उपक्रम : गढ़ नारियलक हाट

गढ़ नारियल राज्यक राजा दक्ष प्रतापी छलाह — मुदा हुनकर एकटा विचित्र निर्णय पूरा राज्यकेँ विपत्तिमे धकेलि देलक। ई गाथा ओही निर्णयक थिक — आ ओकर परिणामस्वरूप जन्मल एकटा नोकरक बेटाक, जे राजकुमारी बनि गेल कन्याक भाग्यसँ जुड़ल, आ अन्ततः अपने पराक्रमसँ राज्य पुनः प्राप्त केलक।

एहिमे बाघ-बाघिनक शाप अछि, जादूगरनी बहिनक कुचक्र अछि, आ अन्तमे साहस-आ-सत्यक विजय अछि — मुदा बीचमे एतेक कष्ट अछि जे ई गाथा दुखान्त-सुखान्तक बीचक एकटा अनूठा मिश्रण बनि जाइत अछि।

अध्याय 1 : हाटक हठ

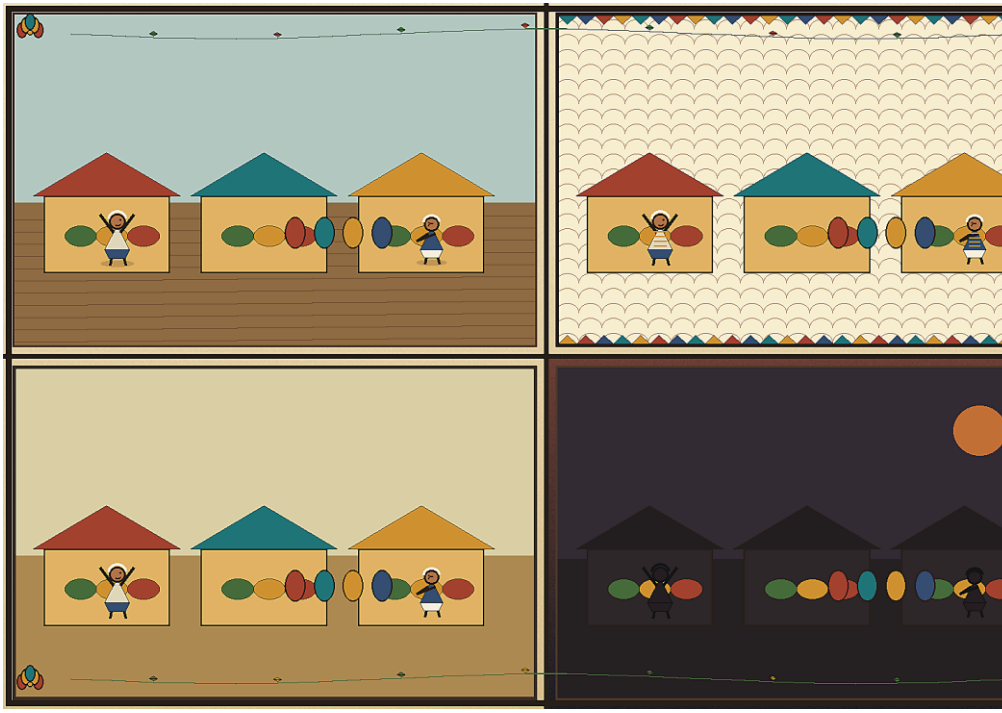

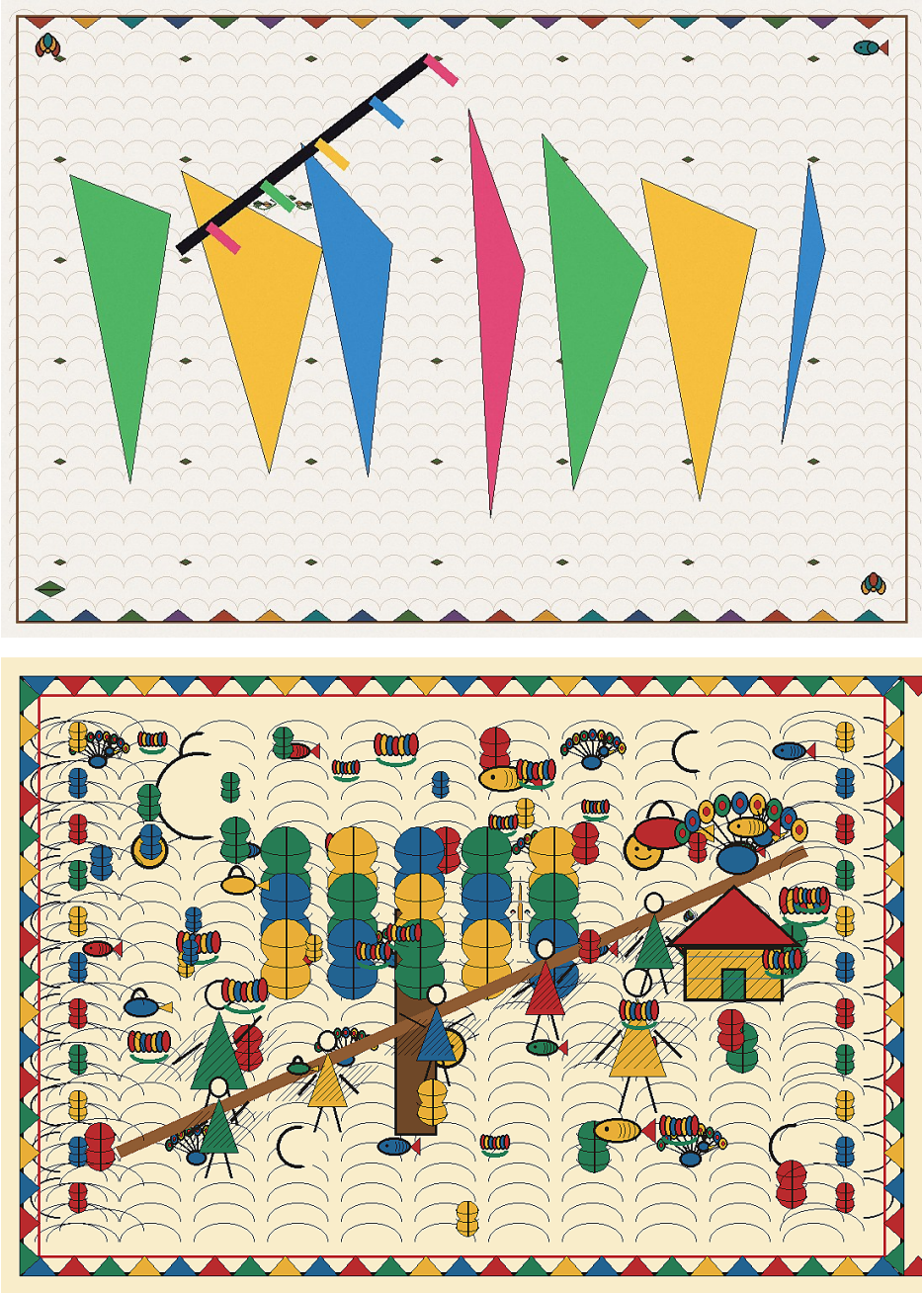

चित्र 1

गढ़ नारियलक राजा दक्ष बड्ड प्रतापी छलाह, मुदा हुनकर राज्यमे कोनो हाट-बजार नहि छल। राजा सोचलनि — 'हमर राज्यमे हाट कोना लागत?' आ एहि प्रश्नक उत्तरमे एकटा एहन निर्णय लेलनि जे आगाँ चलि कऽ राजाक सर्वनाशक कारण बनल।

राजा अपन राज्यमे ढोलहो पिटबा देलनि — 'हमर राज्यमे हाट लागत, आ जकर जे समान नहि बिकाओत, से हम कीनि लेब।' ई घोषणा सुनि सम्पूर्ण राज्यक लोक आबए लागल, आ हाट लागए लागल।

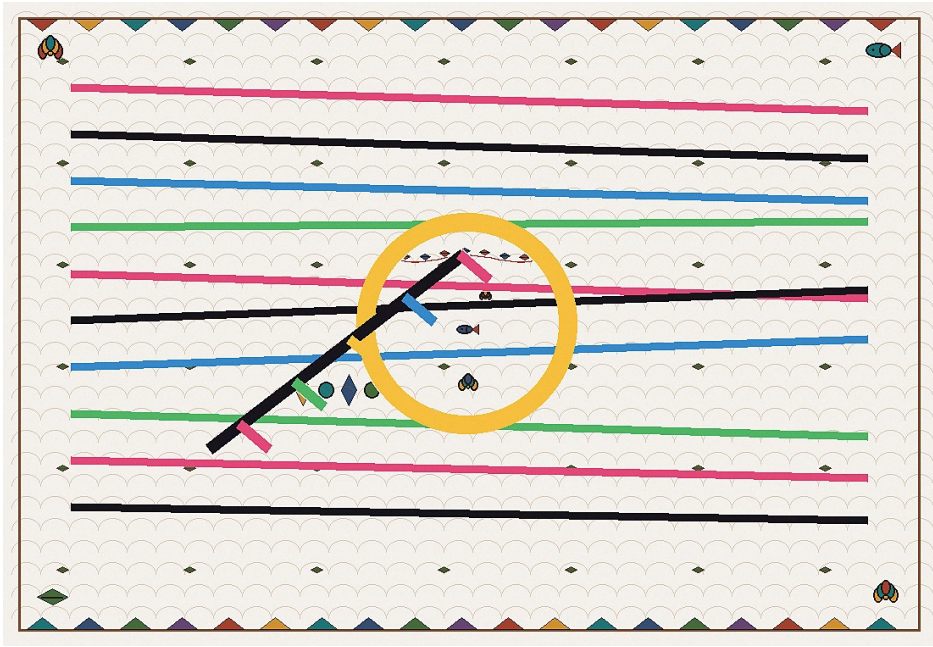

चित्र 2

किछु दिन धरि सभ ठीक चलल — जे समान बचि जाइत छल, राजा कीनि लैत छलाह। मुदा एक बेर एकटा सूतबला आयल, सूत बेचबाक लेल, मुदा तावत हाट उठि गेल छल आ ओकर सूत नहि बिकायल। राजा — अपन नियमक पालन करैत — ओकर सूत सेहो कीनि लेलनि।

मुदा ओही दिनसँ, कोनो अनजान शापक जकाँ, राजाक अवस्था घटए लागल। जे राजा एक दिन प्रतापी छलाह, से किछु दिनुका भीतर गरीब जकाँ भऽ गेलाह — जेना ओ सूत खरीदब ककरो अभिशाप बुलओने हो।

अध्याय 2 : देश-त्याग आ नोकरी

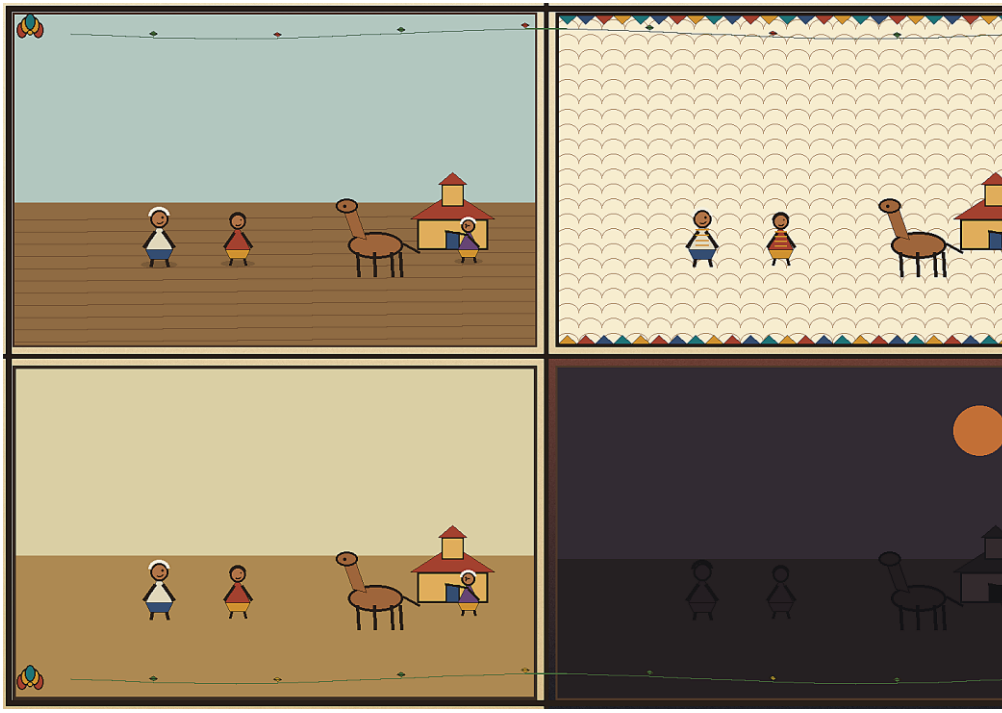

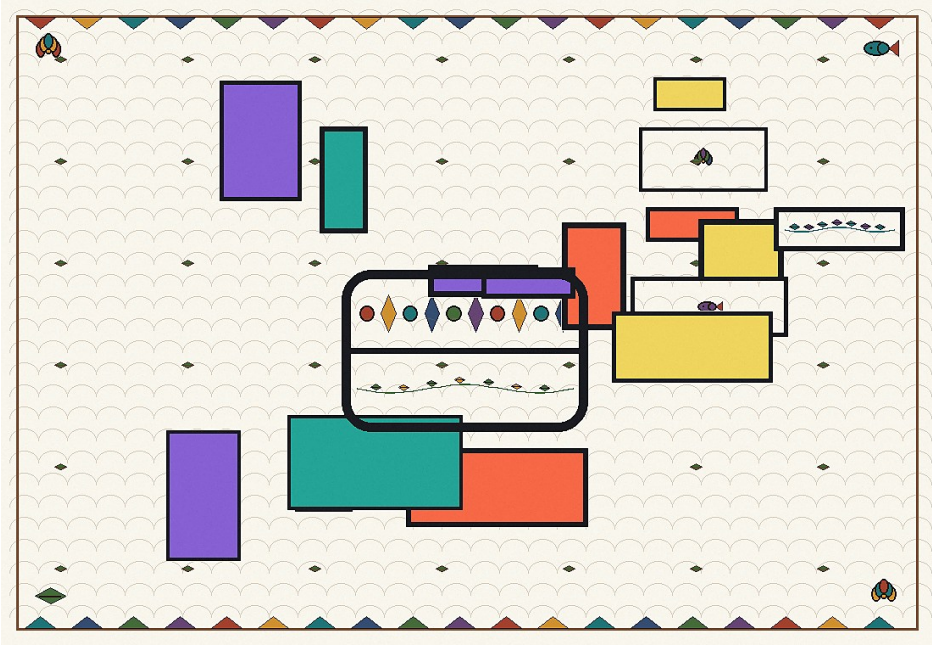

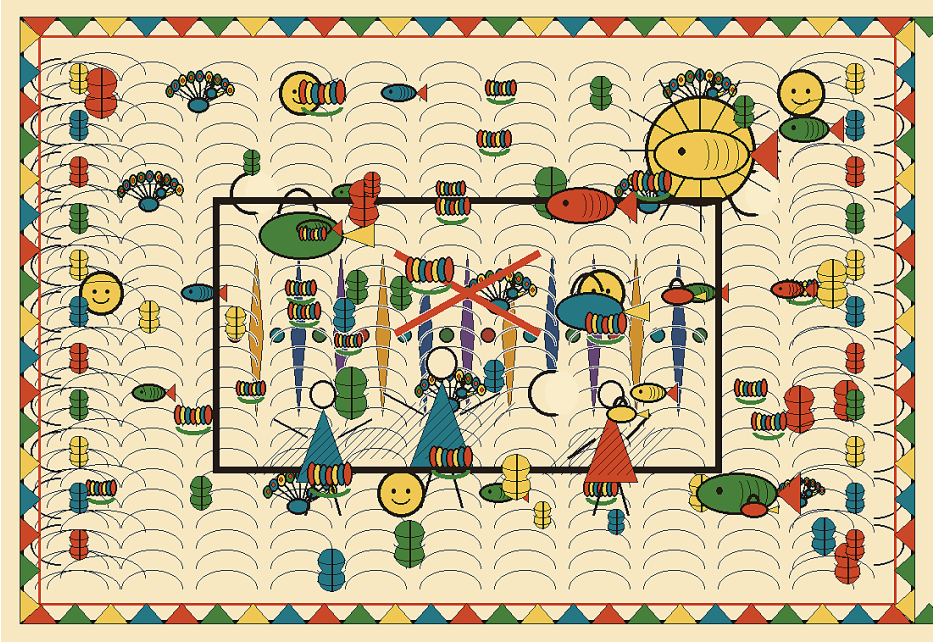

चित्र 3

राजा दक्ष अपन स्त्री अम्बिकासँ कहलनि — 'सुनू, अपन राज्यमे गरीबी पसरि गेल अछि। आब अपन राज्य रहबा योग्य नहि रहल।' ई निर्णय कठिन छल, मुदा प्रतापी राजाक लेल गरीबीक राज्यमे रहब असहनीय छल।

राजा-रानी राज्य त्यागि बिदा भेलाह, जाइत-जाइत गढ़पिंगल नामक देश पहुँचलाह। ओतुक्का राजाक नाम सेहो देशक नामपर छल। गढ़नारियल राजा घुमैत-घुमैत ओही नगरमे पहुँचि गेलाह आ पुछलनि — 'हे भाइ, हमरा कियो नोकरी राखत?'

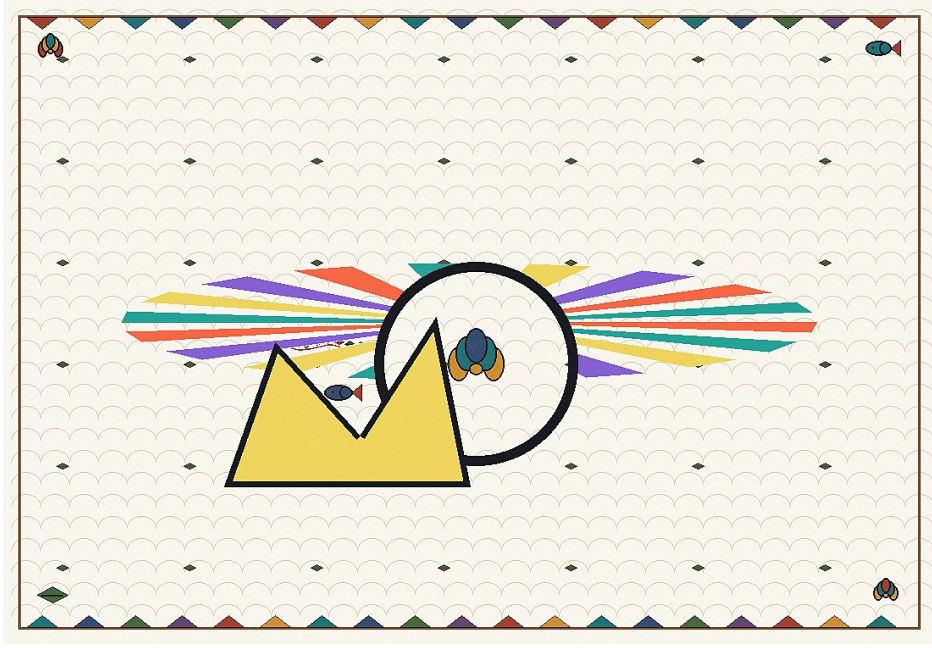

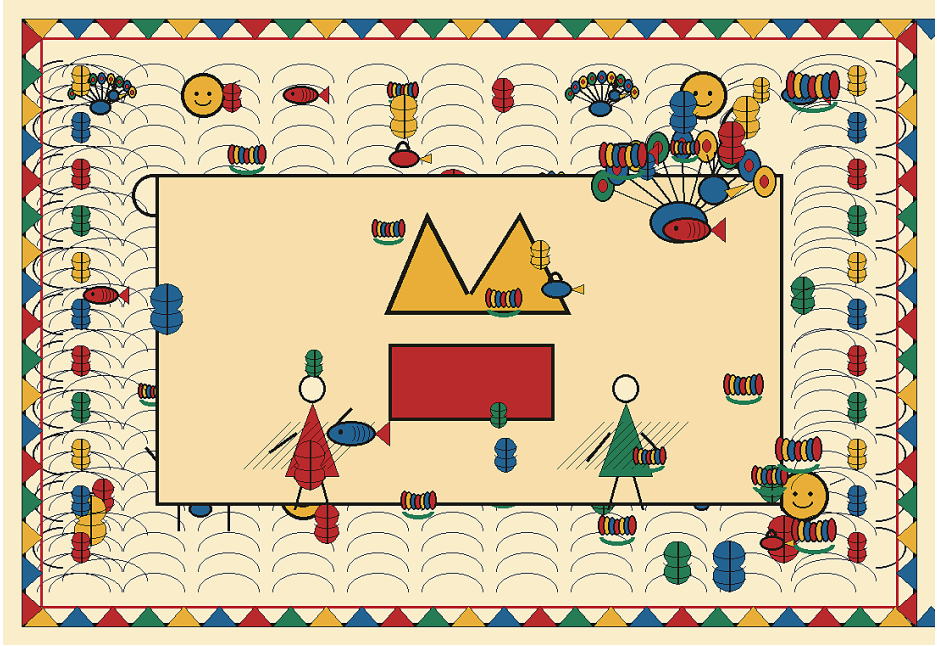

चित्र 4

गढ़पिंगल राजा हँ कहलनि — हुनका एकटा नोकरक आवश्यकता छल, कारण हुनका लग १०१ टा घोड़ा छल आ एक सए नोकरमे एकटा आर चाही छल। एहि तरहेँ, जे कहियो अपने राजा छलाह, से आब आन राजाक नोकरीमे लागि गेलाह — घास छीलब, घोड़ाक सेवा करब।

संयोग एहन भेल जे गढ़नारियल राजाक स्त्री आ गढ़पिंगल राजाक स्त्री — दुनू गर्भवती छलीह, आ दुनू एक्के दिन सन्तान जनम देलनि। ई संयोग एहि गाथाक अगिला मोड़क बीज बनल।

अध्याय 3 : मड़ुवनक जन्म आ बियाहक भविष्यवाणी

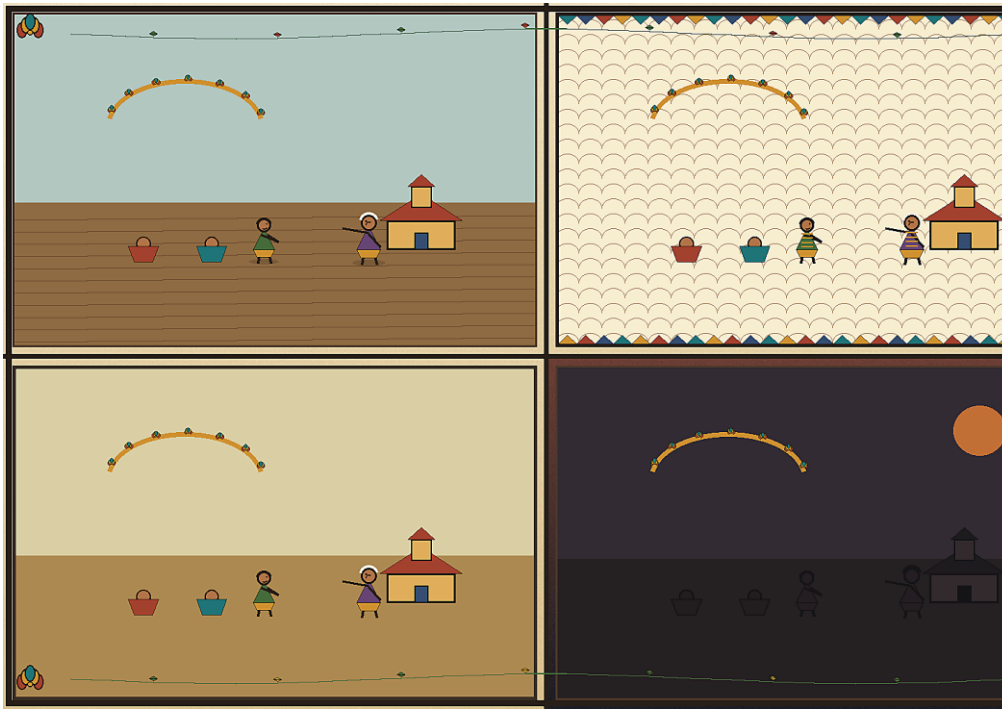

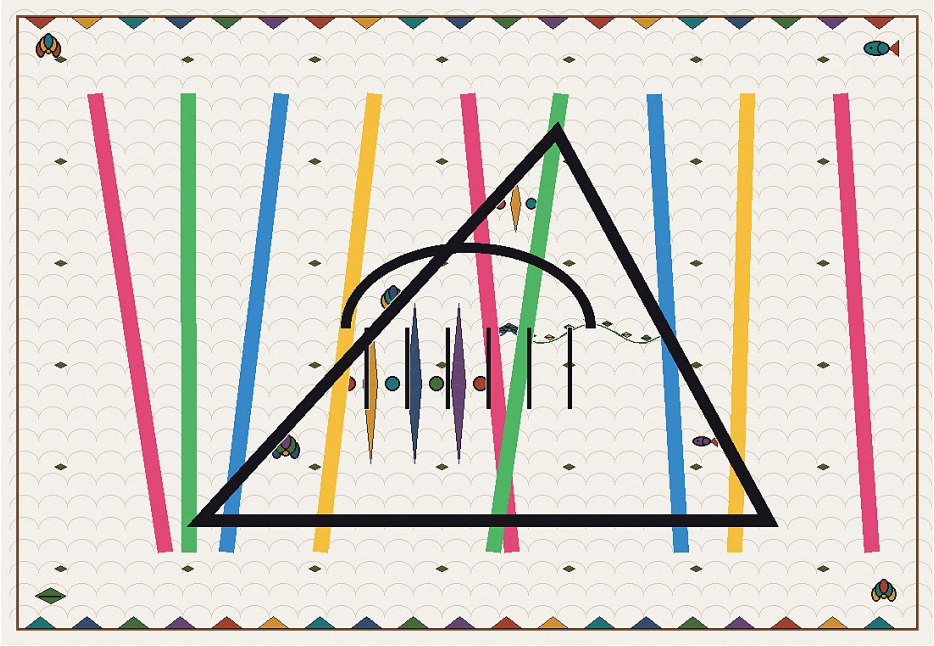

चित्र 5

गढ़पिंगल राजाक कन्या जनमलि। राजा ब्राह्मण बजा कऽ ज्योतिष देखौलनि — कन्याक नाम मड़ुवन राखल गेल, आ ब्राह्मण भविष्यवाणी केलनि जे एकर बियाह छठी रातिकेँ होएत।

राजा एहि भविष्यवाणीपर चिन्तित भेलाह — छठी रातिमे बियाह? कतय? के संग? ओ राज्य भरिमे ताकैत-ताकैत थाकि गेलाह, मुदा कोनो उपयुक्त वर नहि भेटलनि।

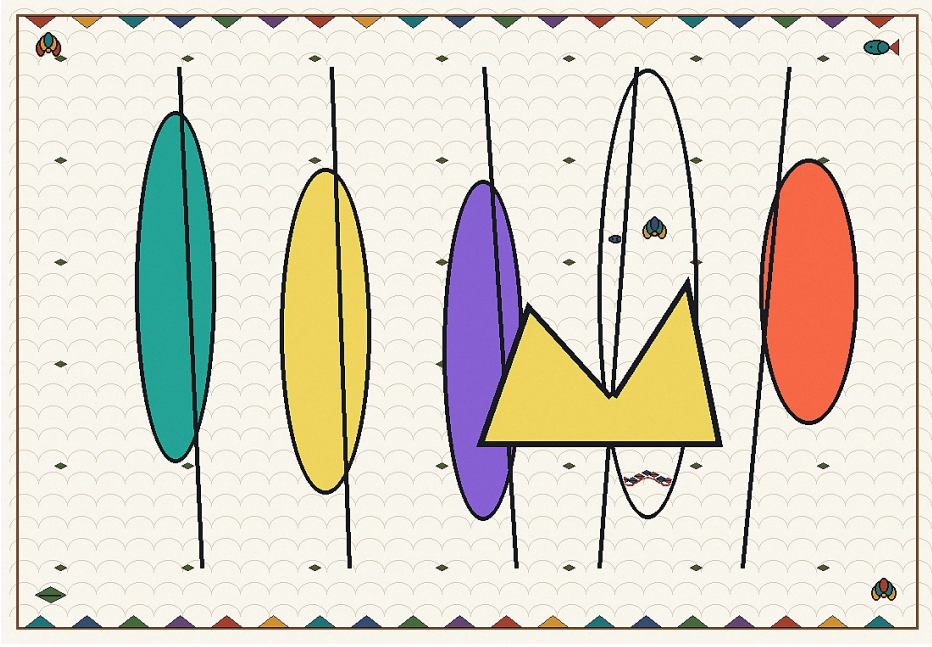

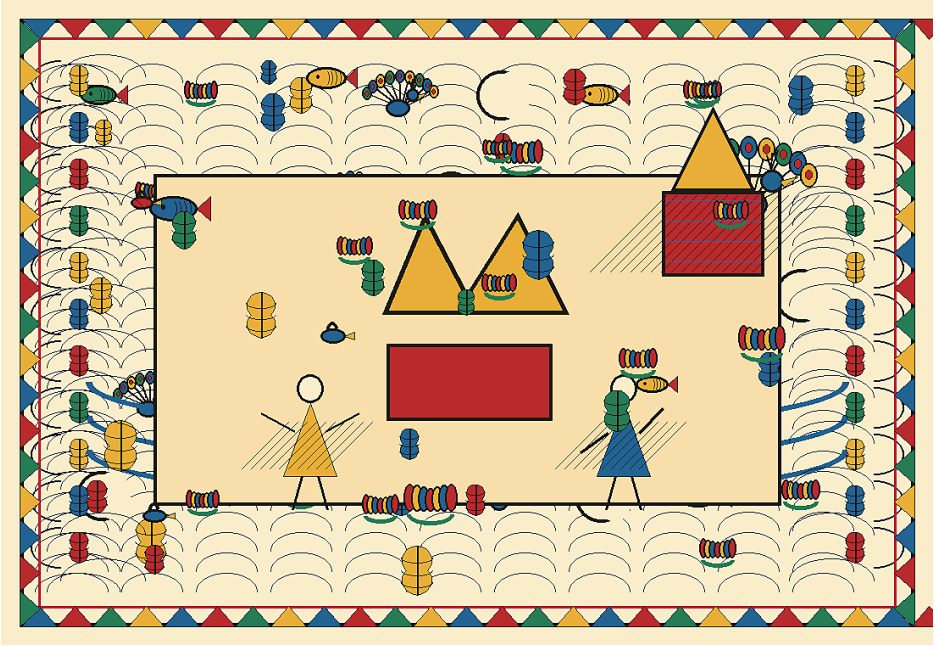

चित्र 6

तखन राजाक खबासिनी सुझाव देलनि — 'अहाँ सभ चिन्ता किएक करैत छी? पछिला बेर जे नोकर रखने छथि (गढ़नारियल राजा दक्ष), हुनका एहिठाम एकटा लड़का जन्म लेने अछि। ओकरे संग बियाह करा देल जाए।' ओही बच्चाक नाम राशिक अनुसार राजा ढोलन राखल गेल छल।

गढ़पिंगल राजाकेँ ई प्रस्ताव नीक लागल — 'जखन ई लगेमे अछि, त' ओकरे संग बियाह करा देल जाए।' दिन त' पहिनहिये ताकल छल, तँए ओही छठिक रातिमे मड़ुवन आ ढोलनक बियाह भऽ गेल — बिनु दुनू बच्चाकेँ ई भेद बुझने, कारण ओ अखनहुँ नवजात छलाह।

अध्याय 4 : बाघिनक शाप

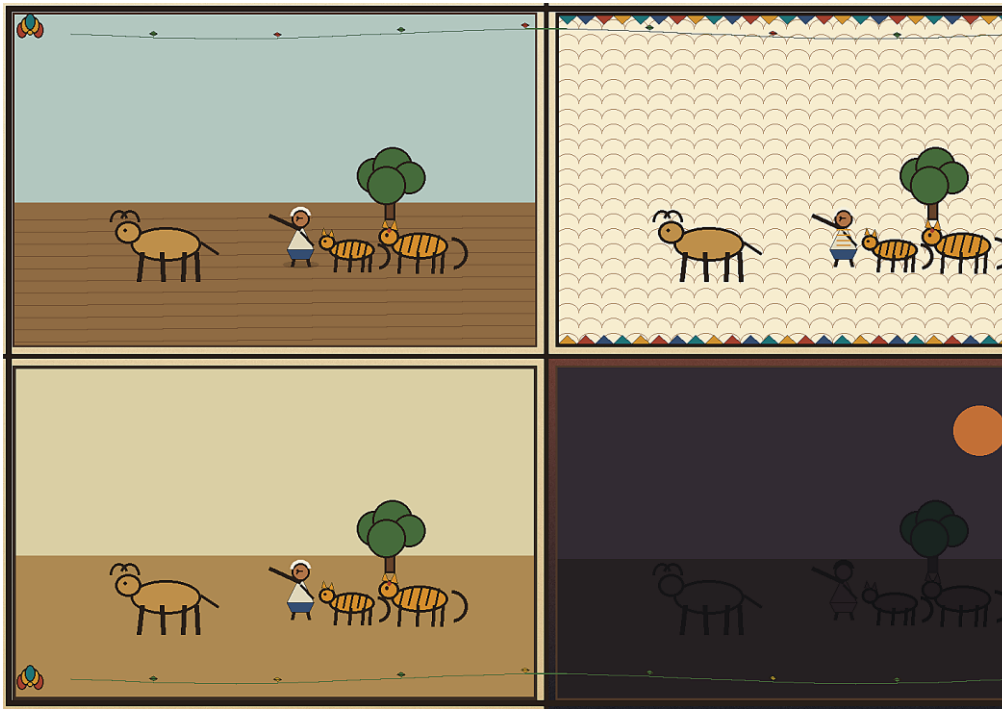

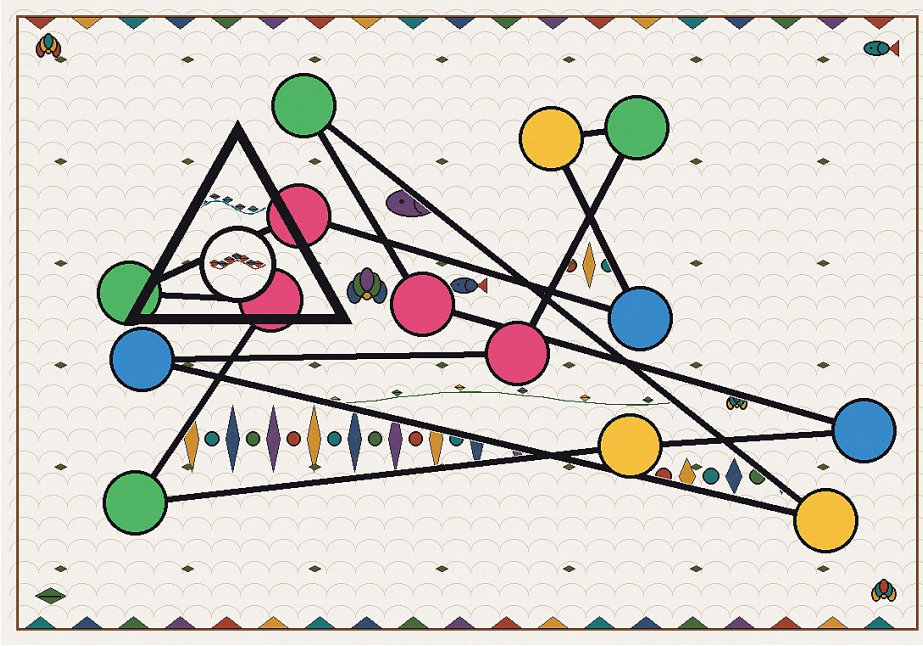

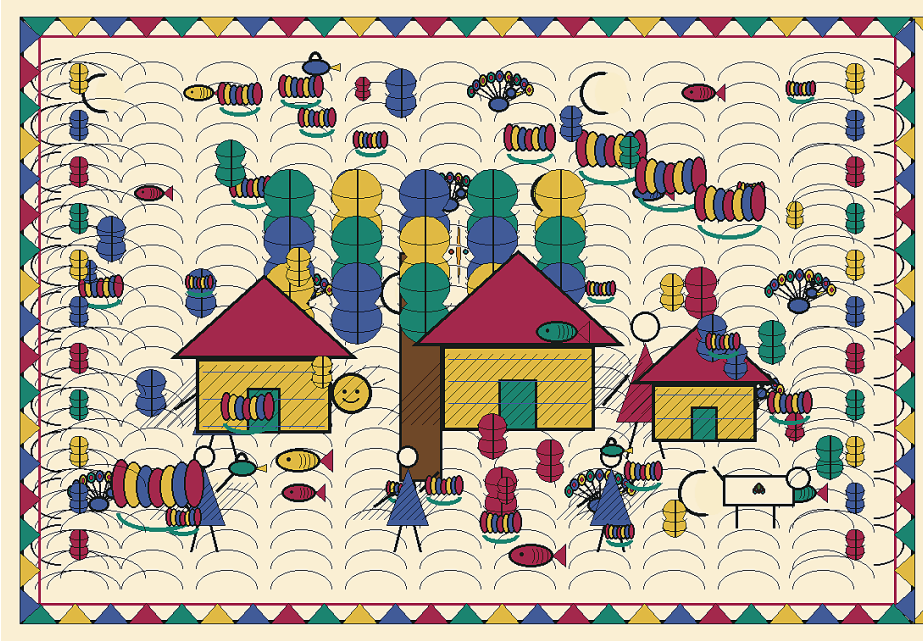

चित्र 7

किछु दिन बाद राजा दक्ष सोचलनि — आब अपन देश जएबाक चाही। ओ जाहि साढ़िनपर चढ़ि कऽ आयल छलाह, ओकरा कहलनि — 'साढ़िन, आब अपन देश चलू।' राजा-रानी साढ़िनपर सवार भऽ बिदा भेलाह।

रस्तामे एकटा बोन भेटलनि, जतय एकटा पोखरिक महारपर बाघ-बाघिन रहैत छल। राजा सोचलनि — 'हमर सभक बच्चा जखन एहि रस्तासँ अपन सासुर जएताह, तखन ई बाघ हुनका खा जाएत। एकरा मारि देनाइ ठीक होएत।' राजा बाघकेँ मारि देलनि।

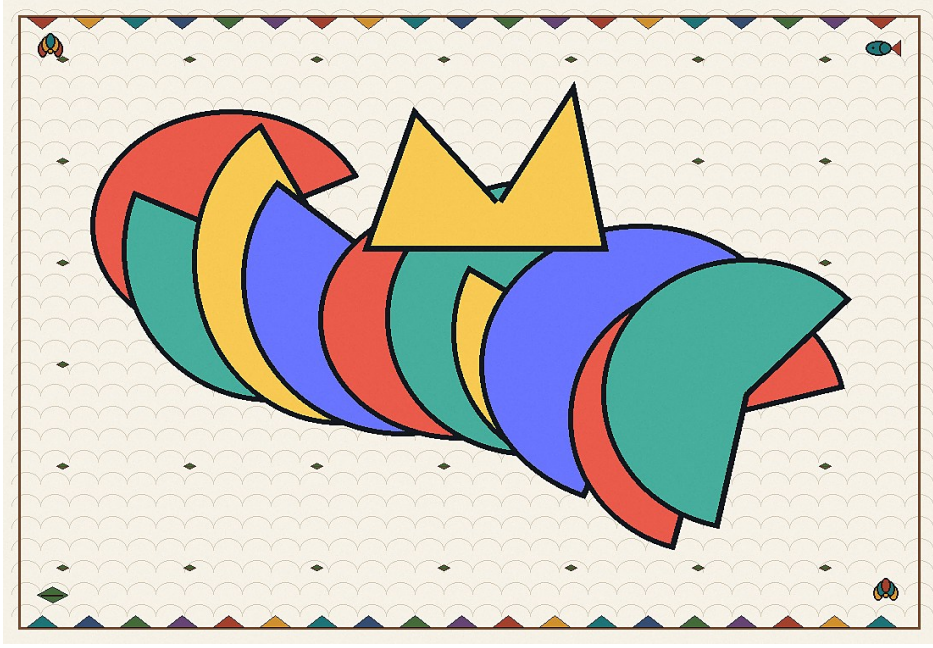

चित्र 8

आगाँ बढ़ला पर बाघिन गरजि उठलि — 'राजा, तूँ हमरा जेना राँड़ कऽ जा रहल छह, ओहिना तोहर बेटा जखन अपन सासुर जेतह, तखन गढ़पीपली राजमे ओकर कनियाँकेँ हमहूँ राँड़ कऽ देबैक!' — ई शाप जकाँ चेतावनी छल, राजाक भविष्यक निर्णयकेँ ओझरओनिहार।

राजा ई अबाज मात्र सुनलनि आ अपन घर पहुँचि ई गप ककरो नहि कहलनि — कारण डर छलनि जे ई गप बाहर रहि गेल त' बेटा धरि पहुँचि जाएत। एहि गोपनीयताक कारण, राजा अपन सासुर संगे भेल बियाहक गौना करेबासँ सेहो डेरा गेलाह।

अध्याय 5 : साढ़िनक बलिदान

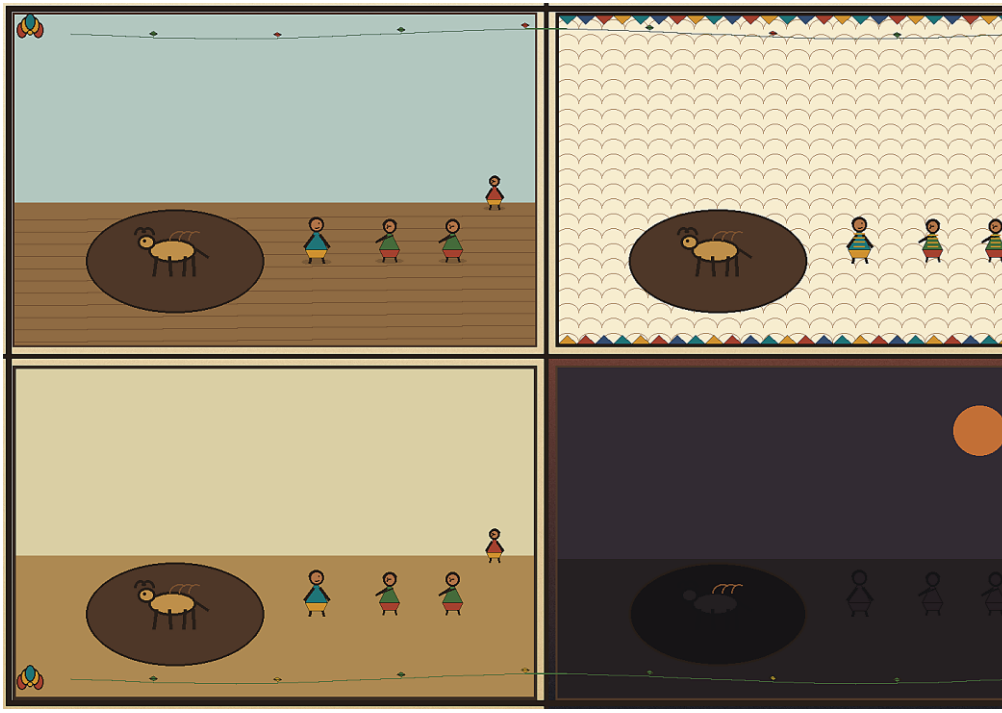

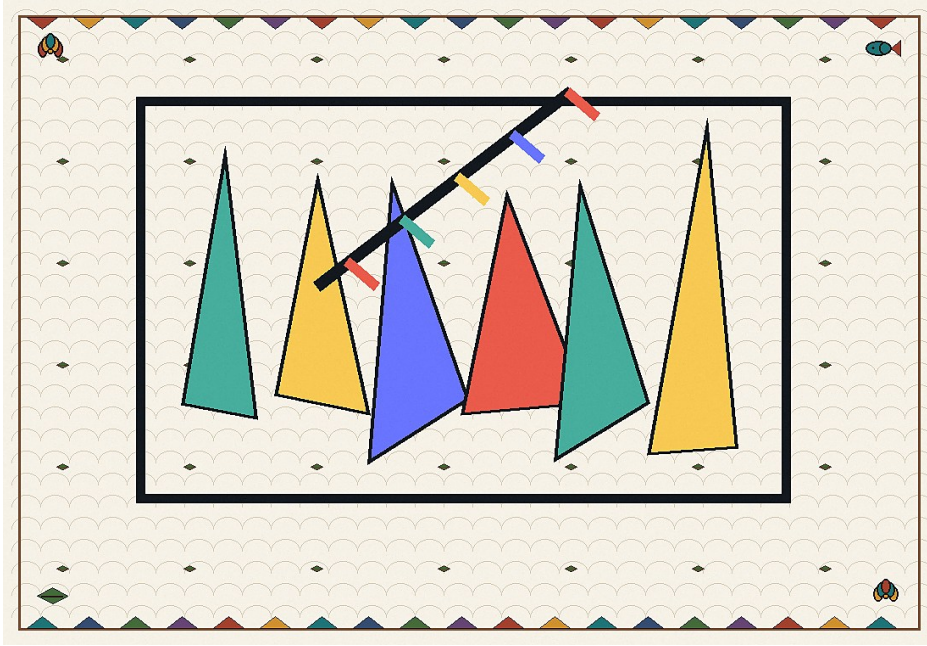

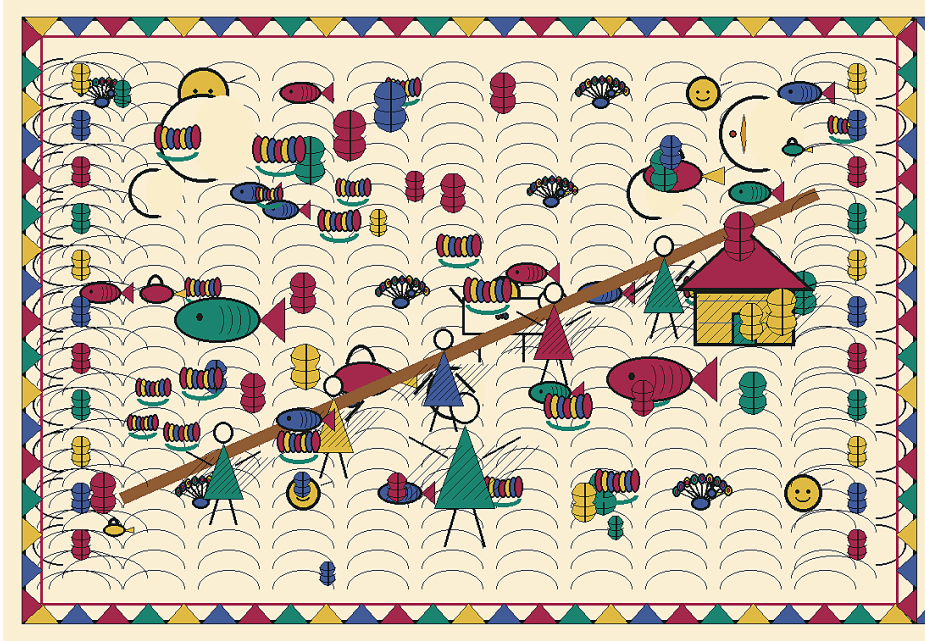

चित्र 9

डर आ चिन्तामे राजा एकटा पैघ खधाइ खूनि, ओहिमे अपन साढ़िनकेँ धऽ देलनि — कारण बाहर रहलासँ ओ ई गप कोनहुना बेटाकेँ सुना दितनि। साढ़िनकेँ एहि तरहेँ बन्दी बनाओल गेल, बिनु कोनो दोषक।

छोट बालक ढोलनकेँ अपन फुलवाड़ीक रेखा-पेखा मालिनक संग दऽ देल गेल — जेना ओकर पहचान आ अस्तित्व दुनू छिपा देल गेल हो। मालिनक दुनू बहिन ओकर बड़ नीक जकाँ सेवा करए लगली, आ ढोलन एहि अनजानपनक बीच बढ़ए लागल।

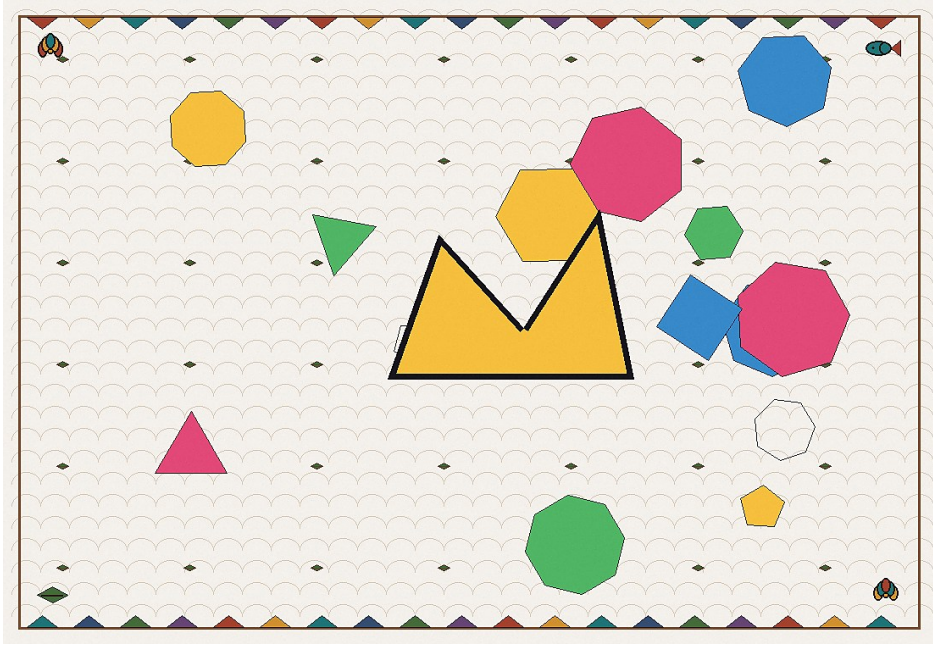

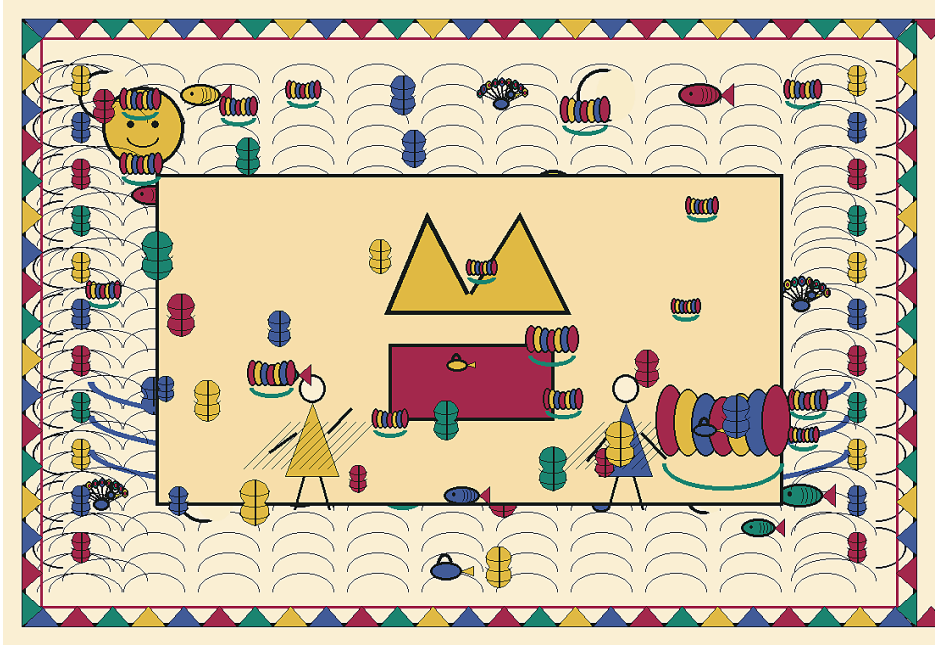

चित्र 10

एहिना दिन बीतैत गेल, आ ढोलन समर्थ (जुआन) भऽ गेल — मुदा तखनो ओकरा अपन असली परिचय, अपन बियाह, कोनो चीजक बूझ नहि भेल। ओम्हर मड़ुवन कन्या सेहो पैघ भऽ गेलि।

मड़ुवन युवा भेलि त' ओकर सखी सभ हुनका ताना मारए लगली — 'बहिन, आब अहाँ समर्थ भऽ गेलहुँ, मुदा अहाँक पिताजी अहाँक बियाहक विषयमे किछु नहि सोचि रहल छथि!' ई ताना सुनि मड़ुवन बड्डु चिन्तामे पड़ि गेलि — कारण ओकरा अपन बियाहक भेद तँ बुझले नहि छलैक।

अध्याय 6 : सदाव्रत आ पत्रक यात्रा

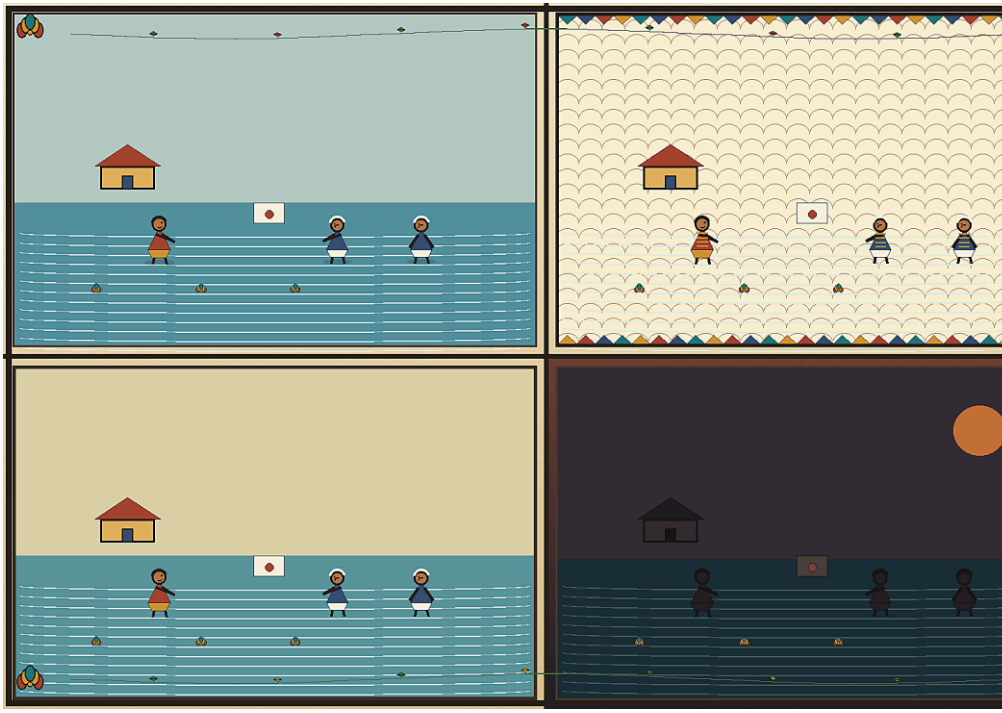

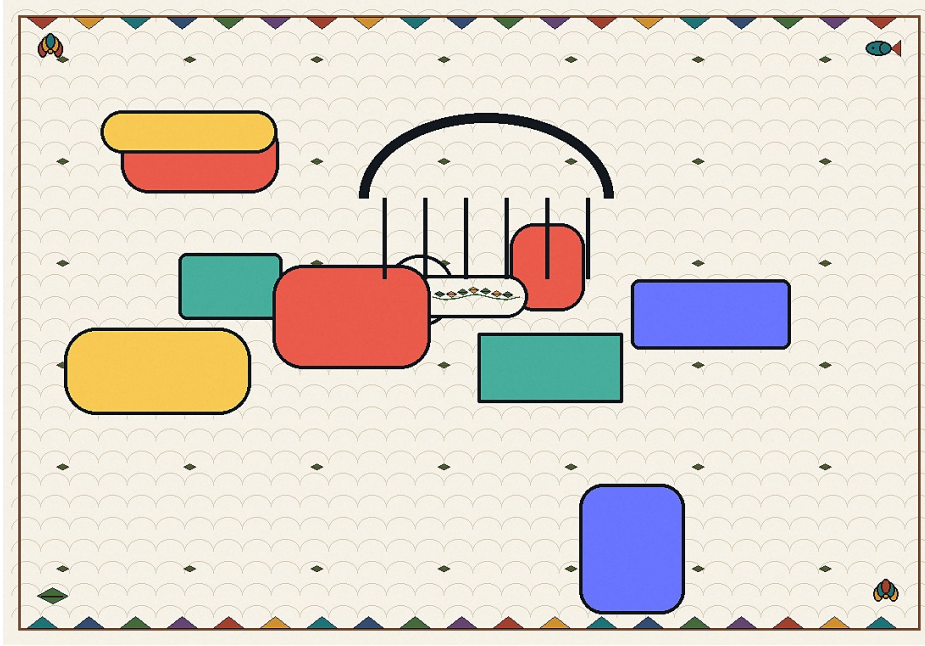

चित्र 11

मड़ुवन खेनाइ त्यागि पलंगपर पड़ि रहलि। माए पुछलनि — 'बेटी अहाँ खेनाइ किएक नहि खाइत छी?' मड़ुवन कहलनि — 'सखी सभ किचकिचबैत अछि — पिताजी हमर बियाह किए नहि करा रहल छथि?' माए स्पष्ट केलनि — 'अहाँक बियाह त' छठीक रातिमे भऽ गेल अछि, सासुर गढ़नारियलमे अछि, नहि जानि ओ किएक नहि अबैत छथि?'

ई सुनि मड़ुवन एकटा उपाय सोचलि — 'हमरा जबुनाक कातमे एकटा मकान बना दिअ, सभ वस्तुक व्यवस्था कऽ दिअ। हम बारह बरिख धरि सदाव्रत बाँटब।' राजा ओहिना कऽ देलनि, आ मड़ुवन जबुना कातमे सदाव्रत बँटनाइ शुरू कऽ देलि — एहि आसमे जे कतहुसँ कोनो खबरि पतिक बारेमे भेटि जाए।

चित्र 12

एक दिन गढ़नारियलसँ गढ़-पिंगल जाइत बनिजारा सभ जबुना धारक कातसँ होइत आगाँ बढ़ि रहल छलाह। मड़ुवन हुनका पुछलनि — 'अहाँ सभ कतय जा रहल छी आ कतएसँ आयल छी?' बनिजारा उत्तर देलनि — 'हम सभ गढ़नारियलसँ आयल छी आ गढ़पिंगलमे हीरा-मोतीक वाणिज्य करैत छी।'

मड़ुवन कहलनि — 'अहाँ वाणिज्य कऽ घुरब त' हमर एकटा पत्र लऽ जाएब?' बनिजारा मानि गेल — 'अहाँ पत्र लिखि राखब, हम जरूर लऽ जाएब।' आशाक ई पहिल किरण मड़ुवनक करेजमे जागल।

अध्याय 7 : जरल पत्र आ सुग्गाक साहस

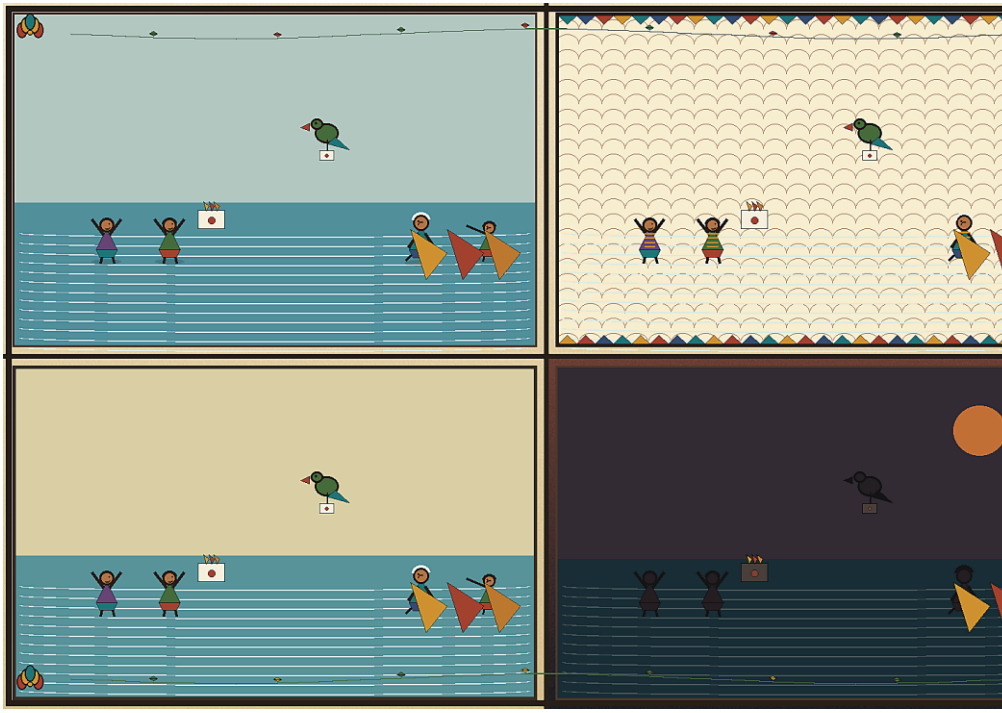

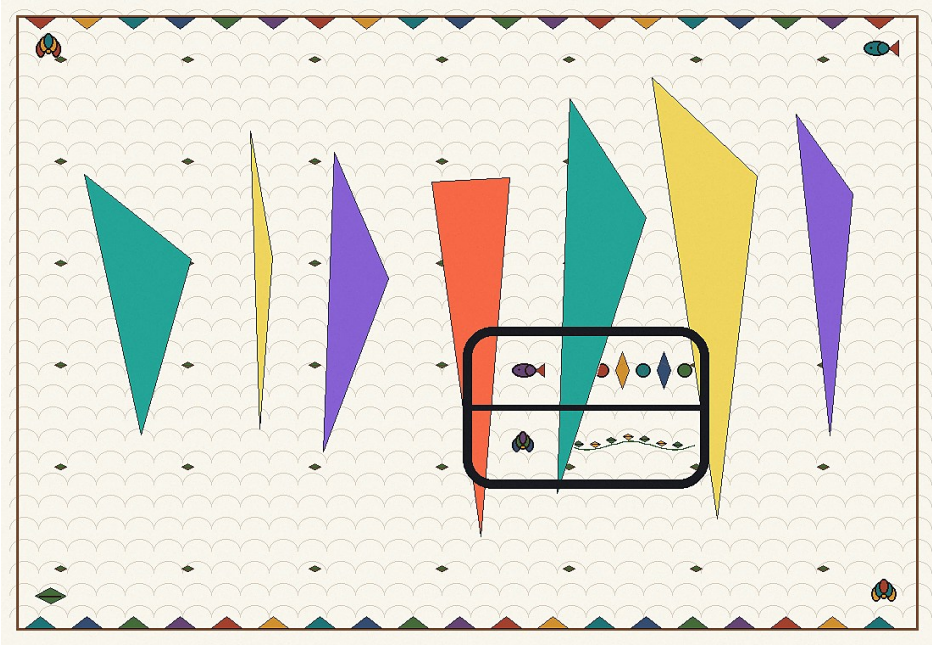

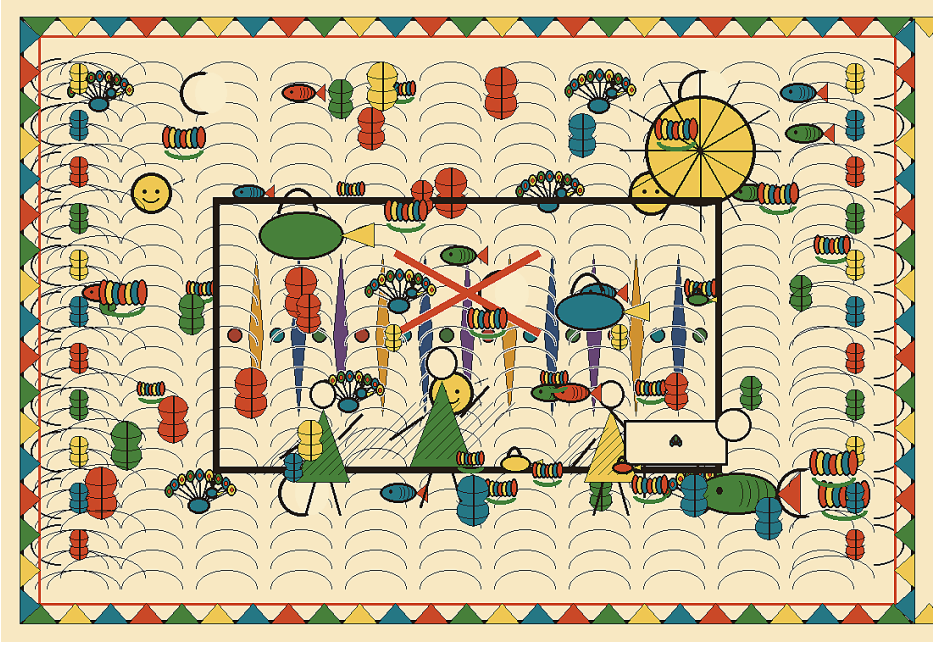

चित्र 13

बनिजारा जखन गढ़नारियल पहुँचल आ पत्र लऽ गेल, त' हरेबा-परेबा नामक दुनू बहिन — जे बड्ड पैघ जादूगरनी छलि — जादूक जोरसँ ई सभ पता लगा लेलनि। ओ सभ राजा (दक्ष)केँ खबरि देलनि आ बनिजारासँ पत्र छीनि आगिमे जरा देलनि — ढोलनकेँ एकर पता नहि चलए देल गेल।

मड़ुवनक पहिल पत्र एहि तरहेँ मारल गेल। ओ बेचारी बाट तकैत रहलि, मुदा कोनो उत्तर नहि आयल। किछु दिन बीतल — मड़ुवनक भीतर आस अखनहुँ मरल नहि छल।

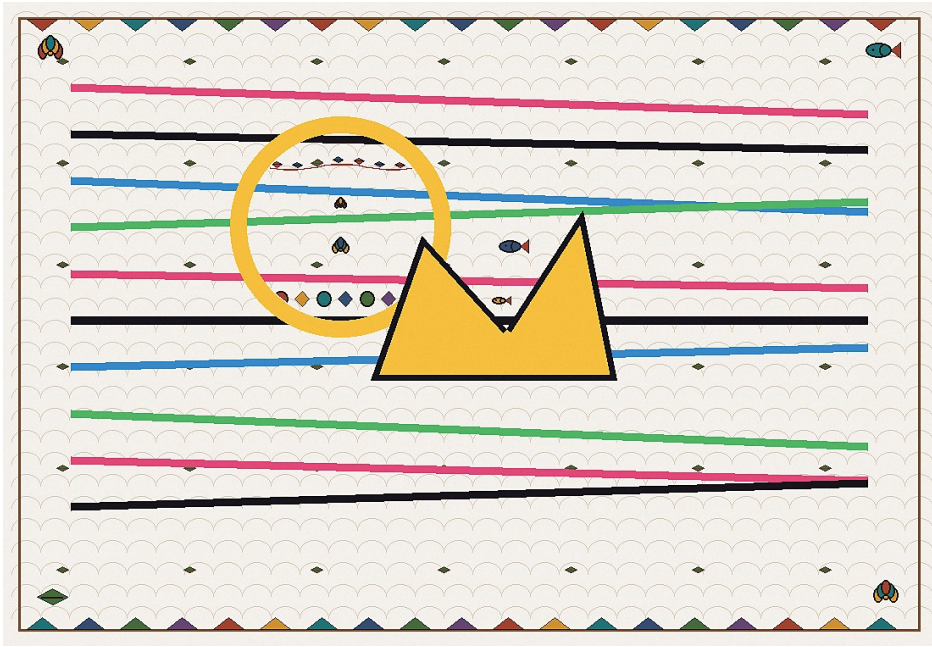

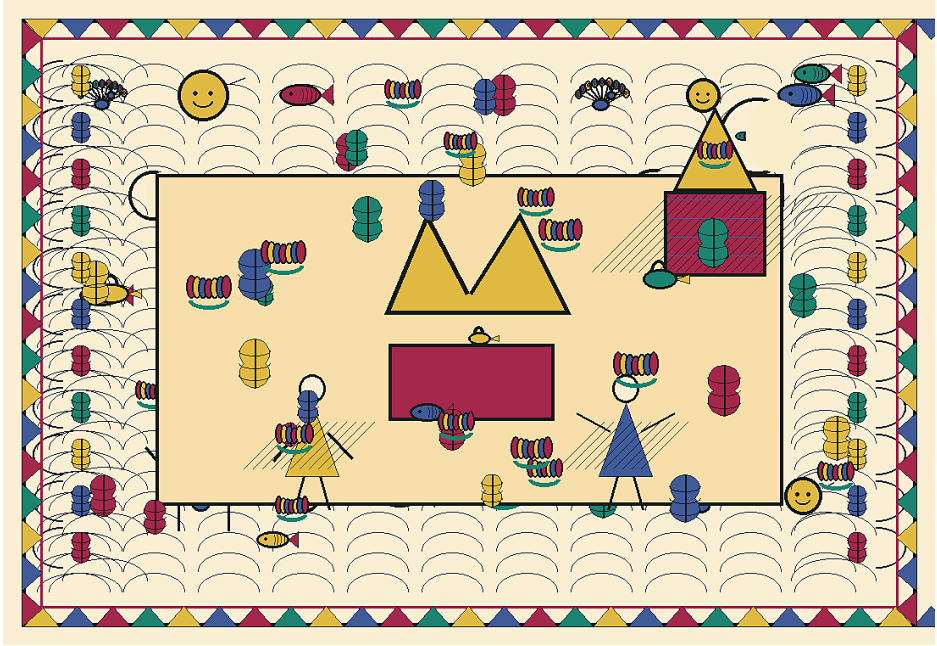

चित्र 14

मड़ुवन एकटा सुग्गा पोसने छलि। ओ सुग्गासँ पुछलनि — 'की तूँ हमर पत्र लऽ जा सकैत छह?' सुग्गा उत्तर देलक — 'हँ, हम पत्र राजाकेँ दऽ देब।' मड़ुवन पत्र लिखि सुग्गाक गरदनिमे लटका देलनि — 'जाऊ।'

सुग्गा आकासमे उड़ि गढ़नारियल राज्य दिस बिदा भेल, जतय हरेबा-परेबा आ राजा ढोलन रहथि। सुग्गा उड़ि कऽ ढोलनक कान्हपर बैसि गेल, ठोंठसँ सूता काटि पत्र खसेलक — मुदा ठण्ढीक मौसममे राजा ढोलन फुलवारीमे आगि पजारि कऽ बैसल छल, आ मालिन ओहि पत्रकेँ आगिमे धऽ देलक!

अध्याय 8 : मालिनक क्रोध

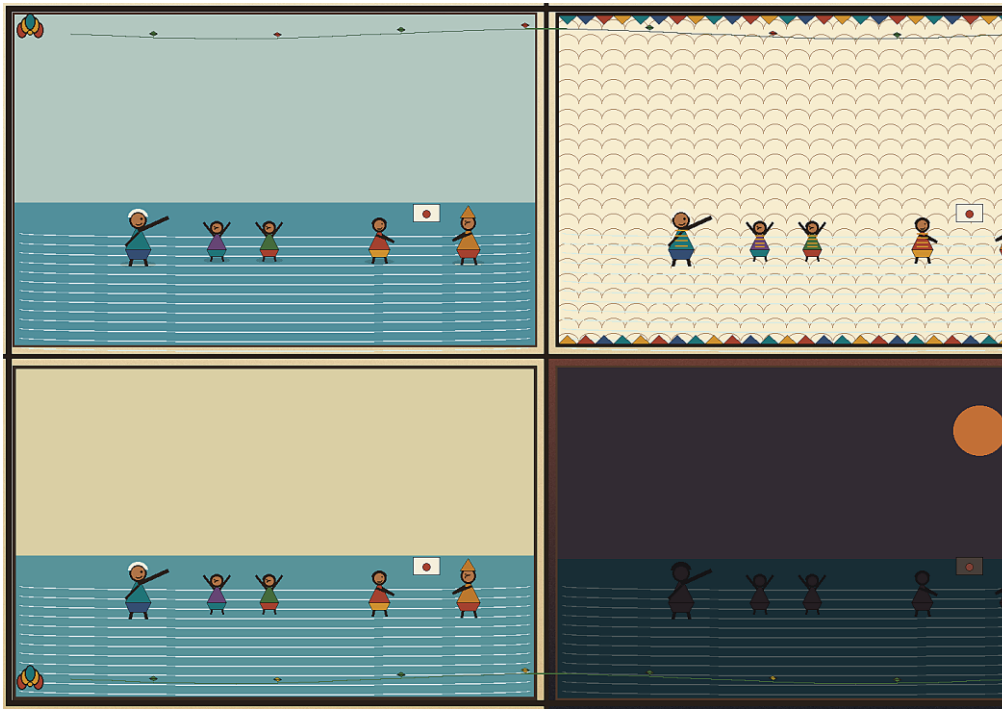

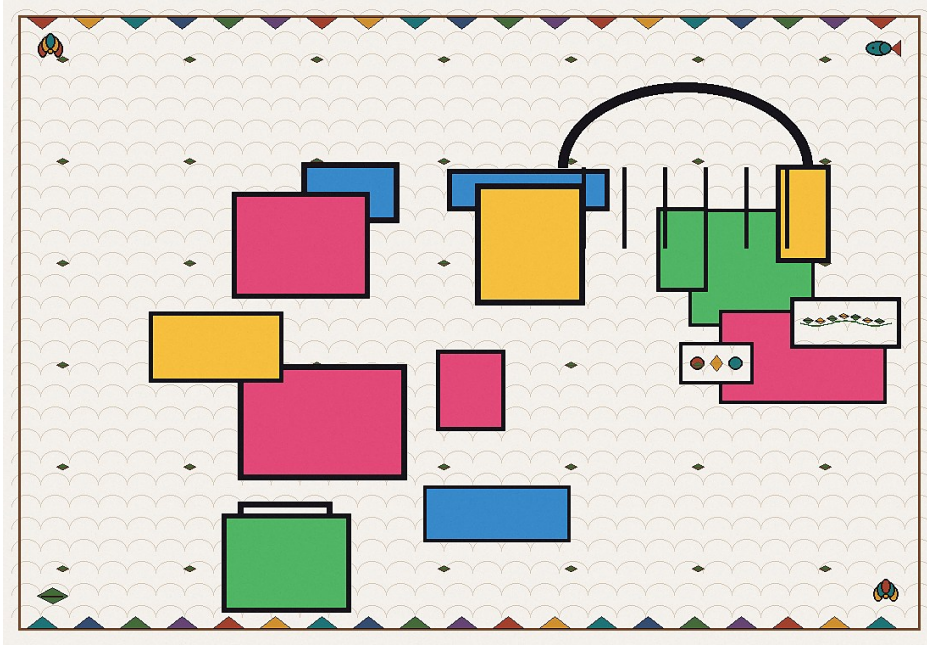

चित्र 15

राजा ढोलनकेँ ई देखि बड्ड तामस उठल। ओ हरेबा-परेबा दुनू बहिनकेँ दू-दू चमेटा मारलनि आ कहलनि — 'तूँ दुनू गोटे एतएसँ चलि जो!' दुनू बहिन गिड़गिड़ा कऽ माफी माँगए लगली, ओकरा मनाबए लगली।

मड़ुवनक ई दोसर पत्र सेहो एहि तरहेँ खतम भऽ गेल। मड़ुवन बड्ड चिन्तामे पड़ि गेलि — दू-दू प्रयास असफल, आ बहुत समय आर बीतल, बिनु कोनो आशाक किरणक।

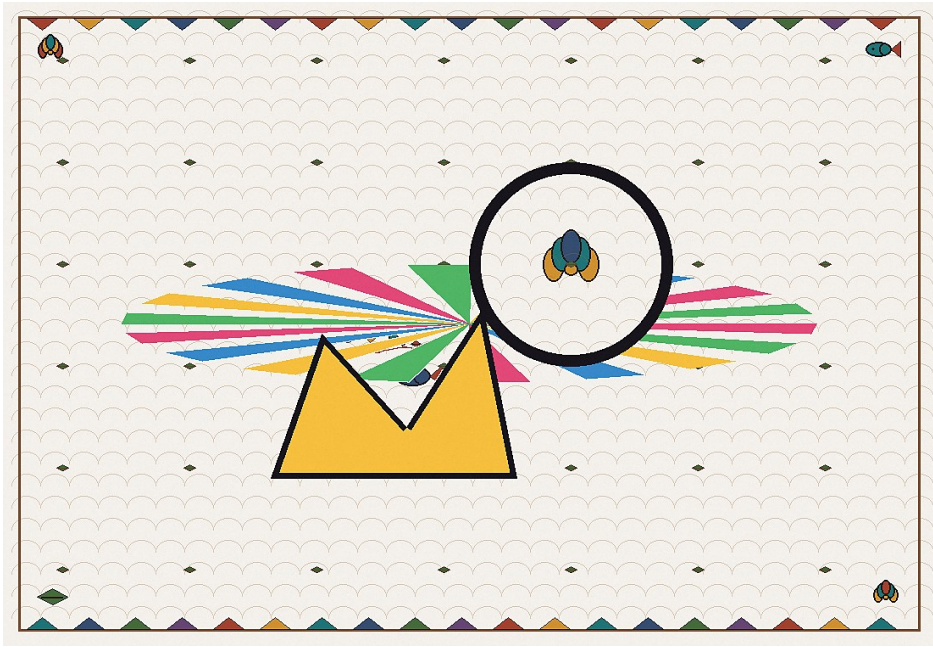

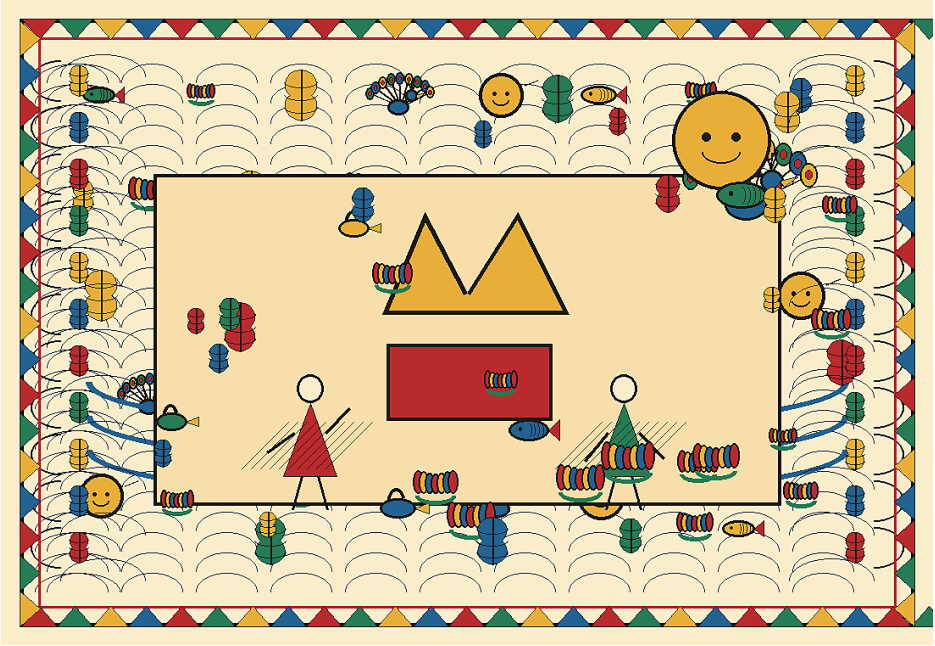

चित्र 16

एक दिन जबुनाक किनारसँ एकटा महात्मा जोगीक रूपमे जा रहल छल। मड़ुवनक नजरि ओहि महात्मापर पड़ल। मड़ुवन बड्ड चिन्तित भऽ कानि रहल छलि, आ ओ साधु महात्मा मड़ुवनक कानब सुनि लग आबि कारण पुछलनि।

मड़ुवन सभटा हाल बतओलनि — बियाह, गौना नहि होएब, दू पत्र, दुनूक विफलता। महात्मा कहलनि — 'तूँ एकटा पत्र लिखि कऽ हमरा दे, हम ओ पत्र ओतय पहुँचाएब।' मड़ुवन पत्र लिखि महात्माकेँ देलनि, आ संगहि गाँजा, भाँग आ अफीम सेहो देलनि — कदाचित् जादूगरनी सभसँ बचबाक लेल कोनो उपाय।

अध्याय 9 : मोहिनी बाँसुरी

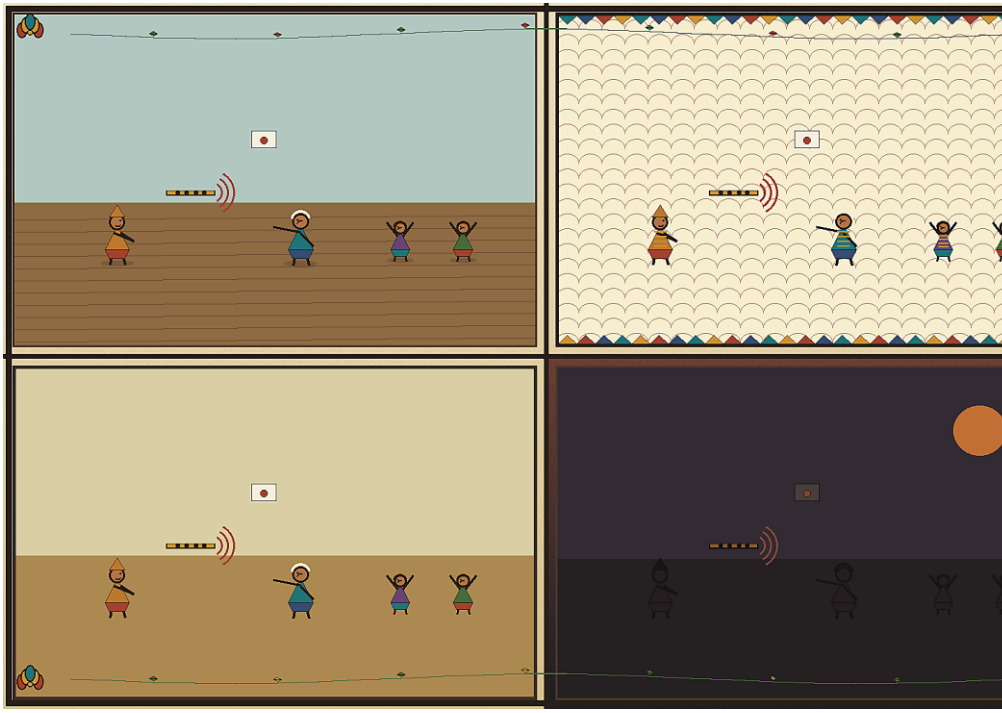

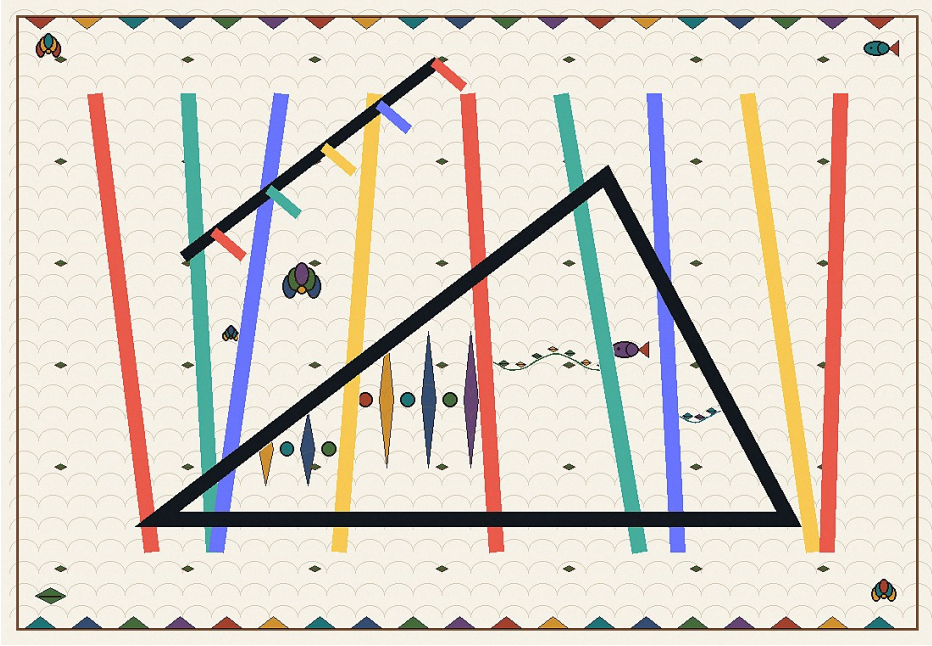

चित्र 17

महात्मा गाँजा-भाँग-अफीम खाइत-पिबैत गढ़नारियल दिस बिदा भेल। किछु दिनुका बाद ओ पहुँचि गेल, जतय हरेबा-परेबा आ राजा ढोलन रहथि। ओ फुलबारीक बीचमे अपन डेरा खसओलक।

राति ढलैत छल, भोर होबए बला छल। महात्मा एकटा मोहिनी बाँसुरी निकाललक आ बजबए लागल। ओहि बाँसुरीक अबाज सुनि राजा ढोलन उठलनि आ चलबा लेल तैयार भेलाह।

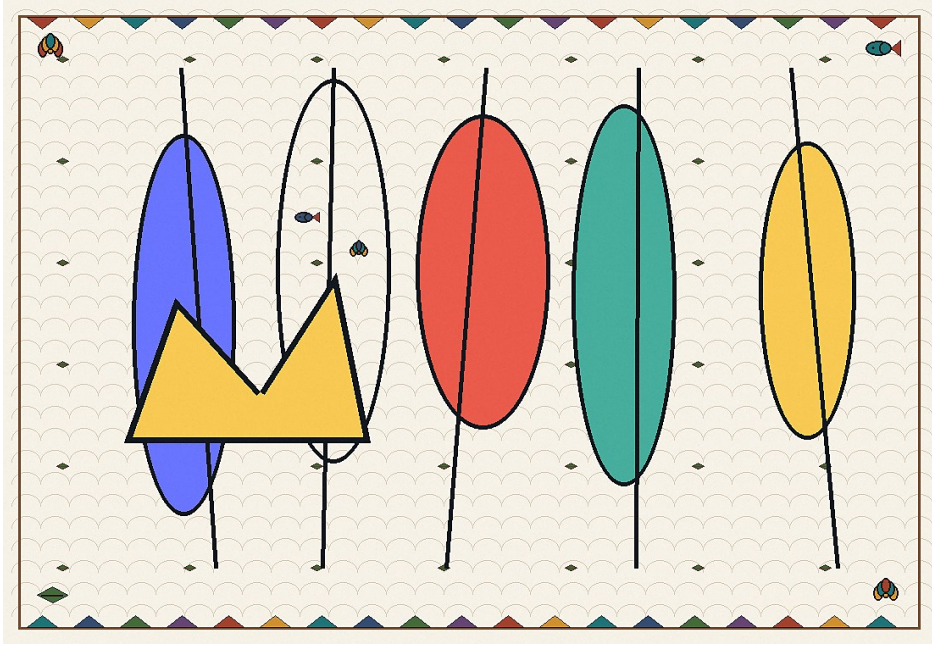

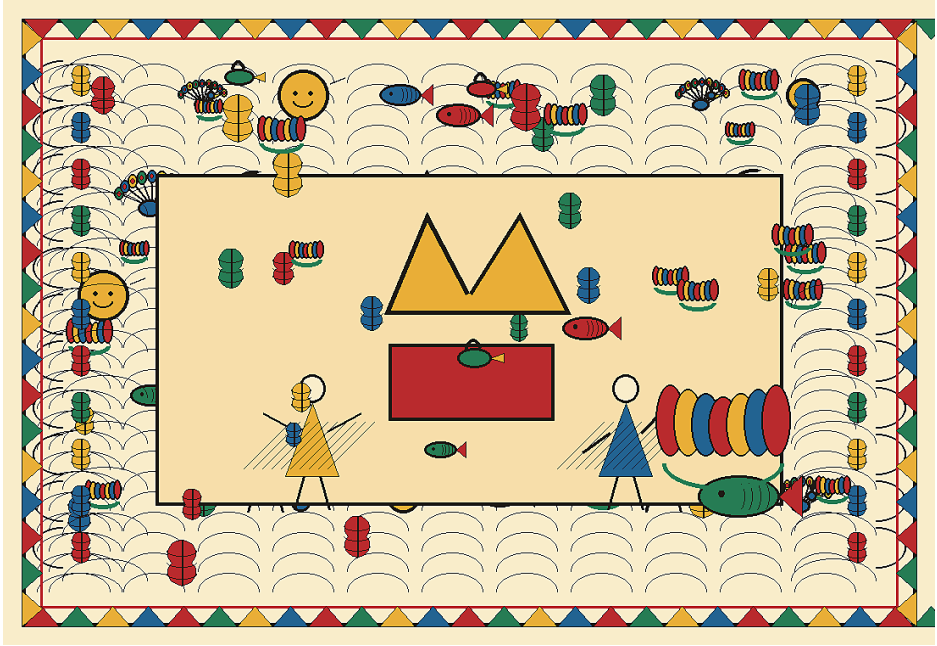

चित्र 18

दुनू बहिन ओहि बाँसुरीपर बहुत रास जादू-गुण चलेलनि — रोकबाक हर प्रयास। मुदा महात्माक किछु नहि बिगड़ल — साधुक तप जादूगरनीक छलसँ पैघ छल। राजा ढोलन उठि दुनू बहिनकेँ दू-दू लात मारि महात्मा लग पहुँचलाह।

साधुजी पत्र निकालि राजा ढोलनकेँ देलनि। पत्र पढ़िते राजा ढोलन तामसे विख-सबिख भऽ गेलाह — सभटा सत्य आब हुनका आगाँ छल: बियाह, गुम कएल पत्नी, आ बरखोसँ छिपाओल भेद।

अध्याय 10 : पिताक स्वीकारोक्ति

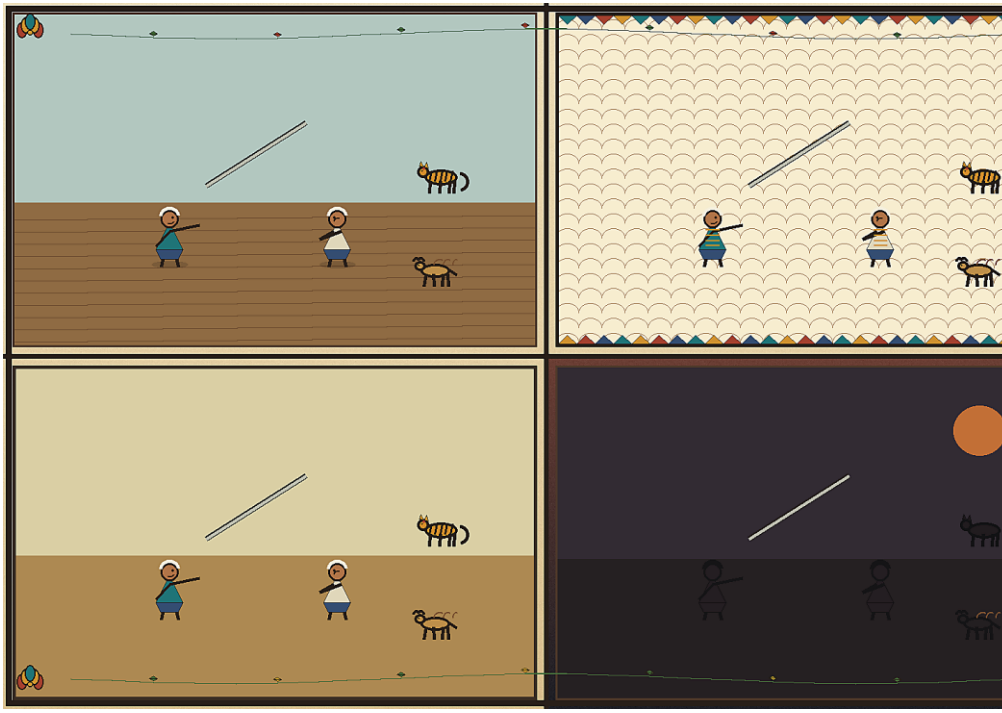

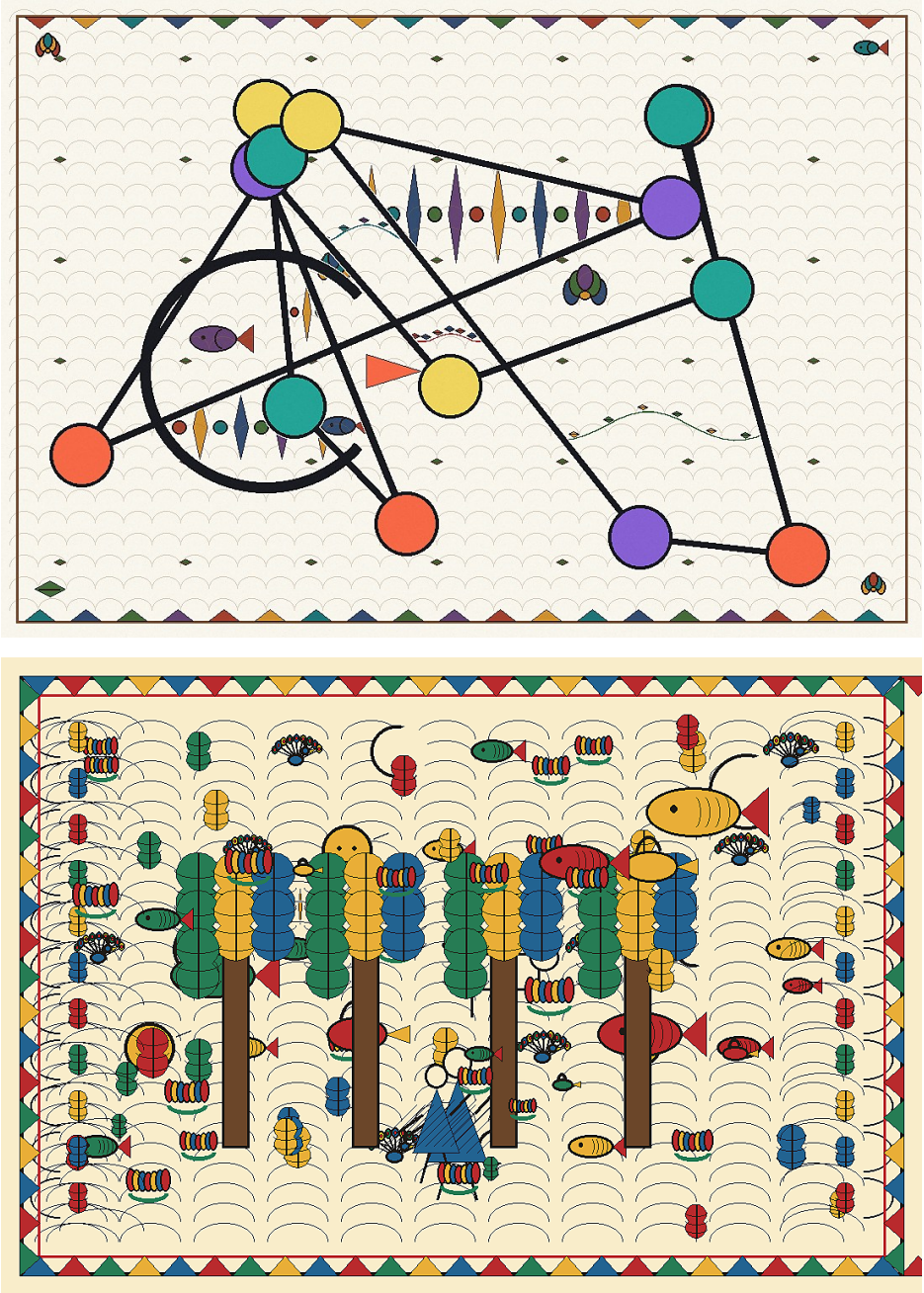

चित्र 19

राजा ढोलन तुरत घर गेलाह, एकटा तरवारि लऽ अपन पिता (जे नोकरीमे छलाह) सँ पुछलनि — 'बताऊ, हमर बियाह कतय भेल अछि?' पिताकेँ बाघिनक शाप मोन पड़ि गेलनि, आ डरे ओ झूठ बजलाह — 'हम तोहर बियाह नहि करबेने छियहु!'

तामसे भरि ढोलन पत्र पिताक सोझाँ राखि देलनि। पिता पढ़ि बड्डु चिन्तामे पड़ि गेलाह — आब झूठ बाजब सम्भव नहि छल।

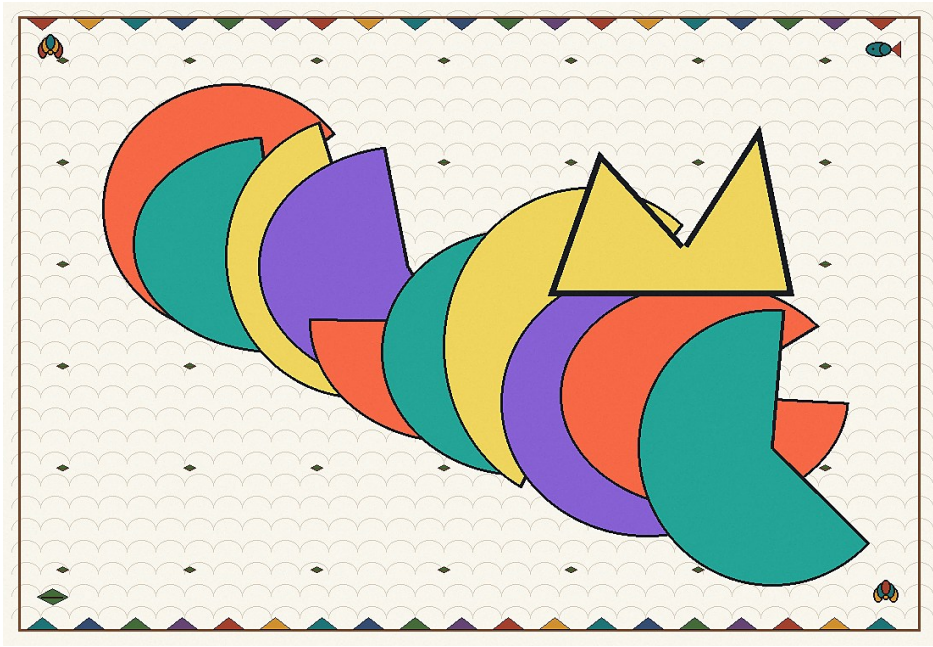

चित्र 20

राजा दक्ष अन्ततः सभटा सत्य कहलनि — 'देखू बेटा, अहाँक बियाह हम छठीक राति कएने छी, आ गौना एहि द्वारे नहि कएलहुँ, कारण अबैत काल हम एकटा बाघकेँ मारि देलहुँ' — आ फेर पूरा खिस्सा कहि सुनओलनि, बाघिनक शाप, साढ़िनक बलिदान, सभटा।

ढोलन सभटा सुनि अपन निर्णय लेलनि — 'हमर सवारी कतय अछि? हमर सवारी दिअ।' राजा कहलनि — 'साढ़नी त' तरहाराक नीचाँ अछि, ओ जीवित अछि वा मरि गेल, से नहि जानि।' — इतेक वर्ष बादक क्रूरताक स्मरण राजाकेँ स्वयं लज्जित करैत छल।

अध्याय 11 : साढ़िनक पुनर्जीवन आ यात्रा

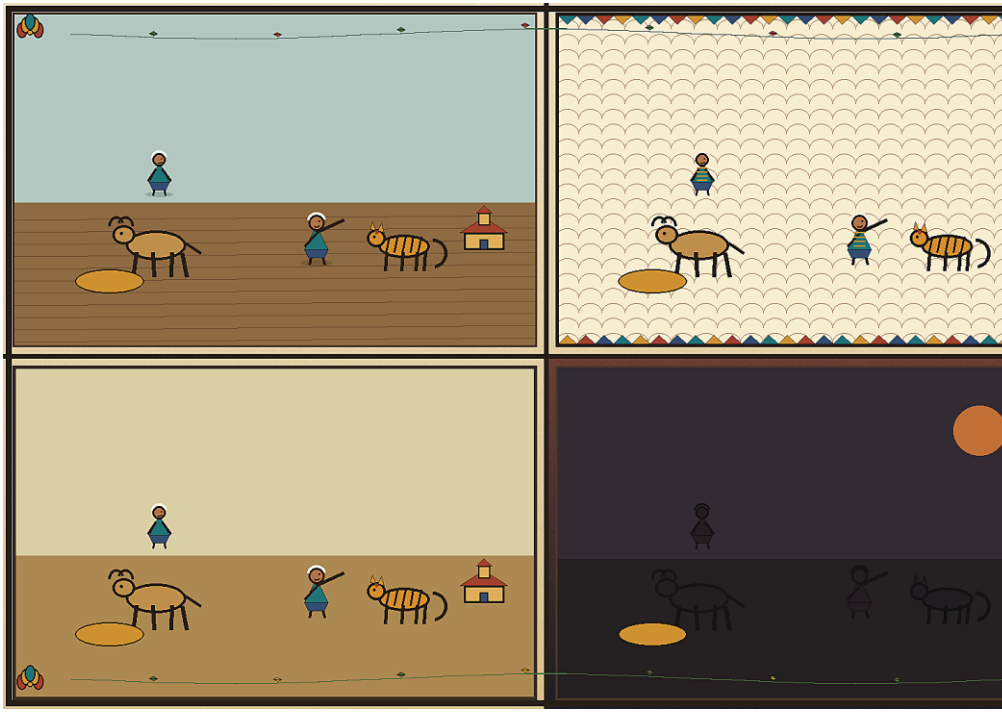

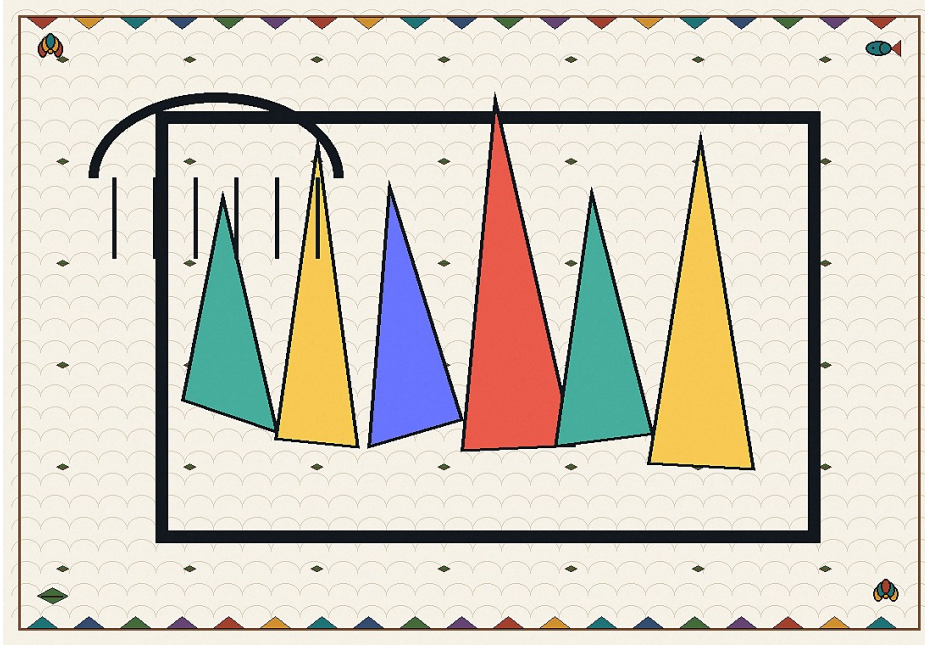

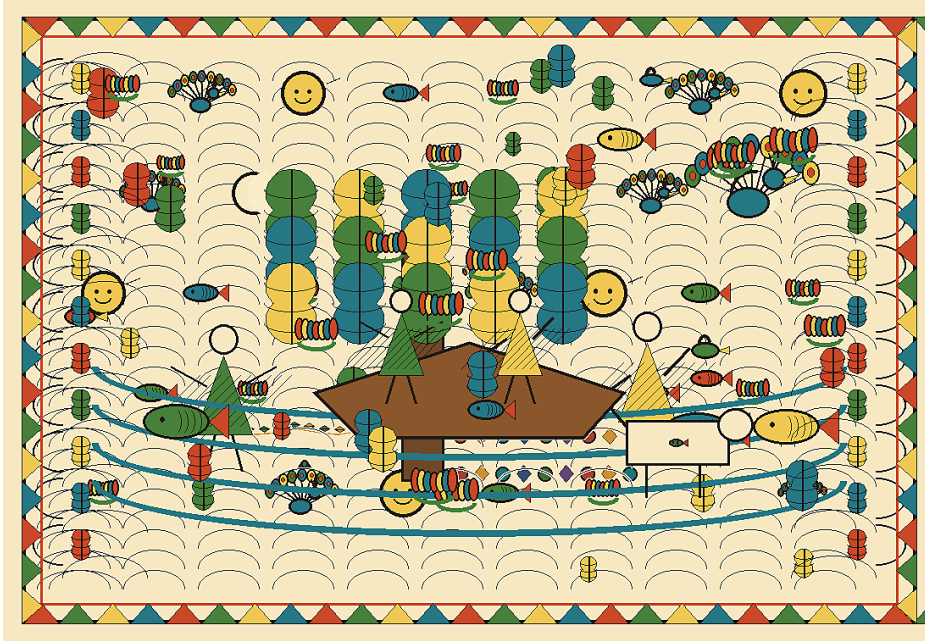

चित्र 21

राजा ढोलन तरहराक नीचाँसँ साढ़िनकेँ बहार केलनि — ओकर देहमे पिल्लू लागल छल, बरखोक उपेक्षाक चिन्ह। ढोलन ओकरा साफ केलनि आ चना-चबेना खुअओलनि। खुआबैत-खुआबैत ओ पहिने जकाँ तन्दरुस्त भऽ गेल।

ढोलन साढ़िनसँ कहलनि — 'साढ़िन, तोहर पएर बहुत दिनसँ बान्हल छह। तूँ चौदह कोसक रस्ताकेँ एक दिनमे चारि चौखड़ लगा दिअ, त' हम बुझब। हम सभ फेरसँ गढ़पिंगल पहुँचब।' साढ़िन अपन चालि एक्के दिनमे बना लेलक — बरखोक बन्धनक बाद प्राप्त स्वतन्त्रताक शक्ति।

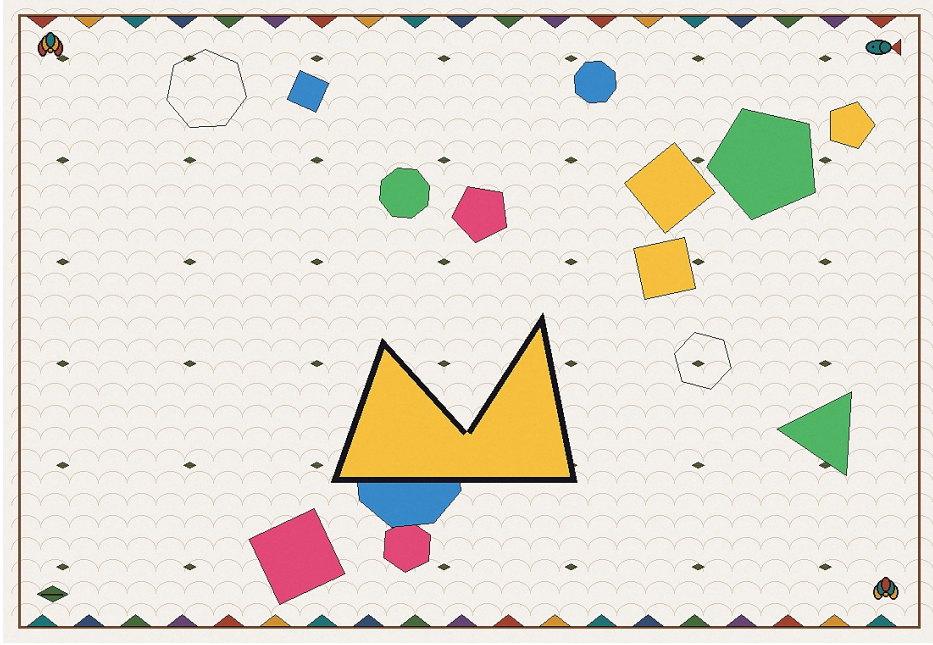

चित्र 22

राजा ढोलन साढ़िनपर सवार भऽ, कान्हपर बन्दूक लऽ, अपन सासुर बिदा भेलाह। चलैत-चलैत ओ ओही बोनमे पहुँचलाह, जतय बाघिन रहैत छलि। बाघिनकेँ देखिते ढोलन ओकरा मारि देलनि — पिताक अधूरा काज बेटा पूरा केलनि, आ शाप हमेशाक लेल समाप्त भेल।

बाघिनक वध पश्चात् ढोलन अपन सासुर गढ़पीपली गेलाह आ फूल बगानमे डेरा खसओलनि — बिनु अपन असली परिचय जनओने।

अध्याय 12 : पहचानक पुनर्स्थापना

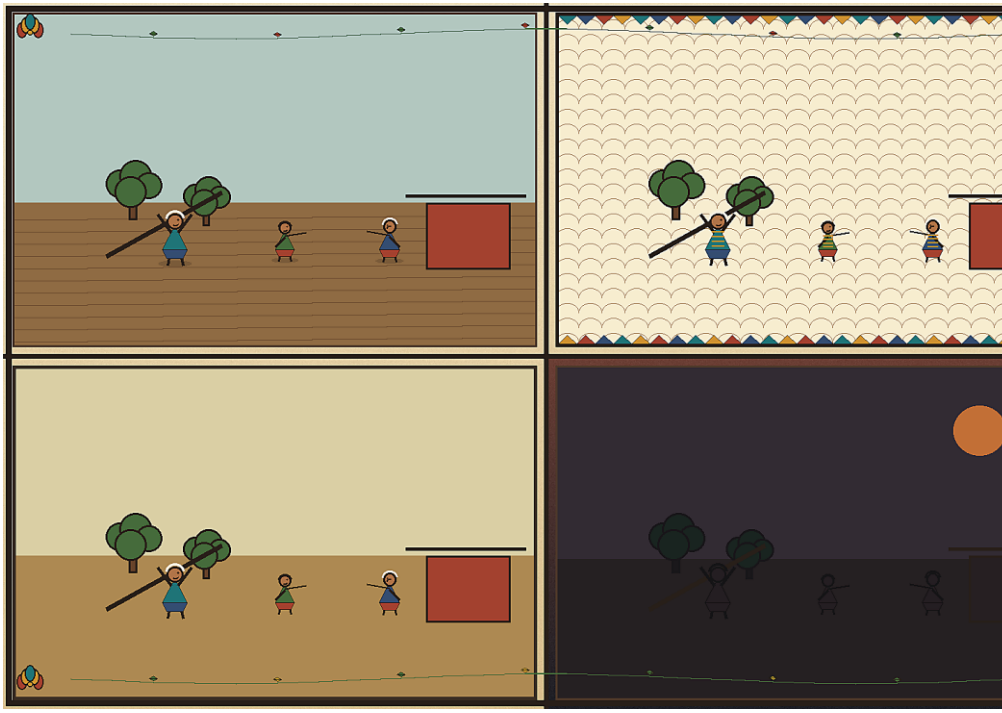

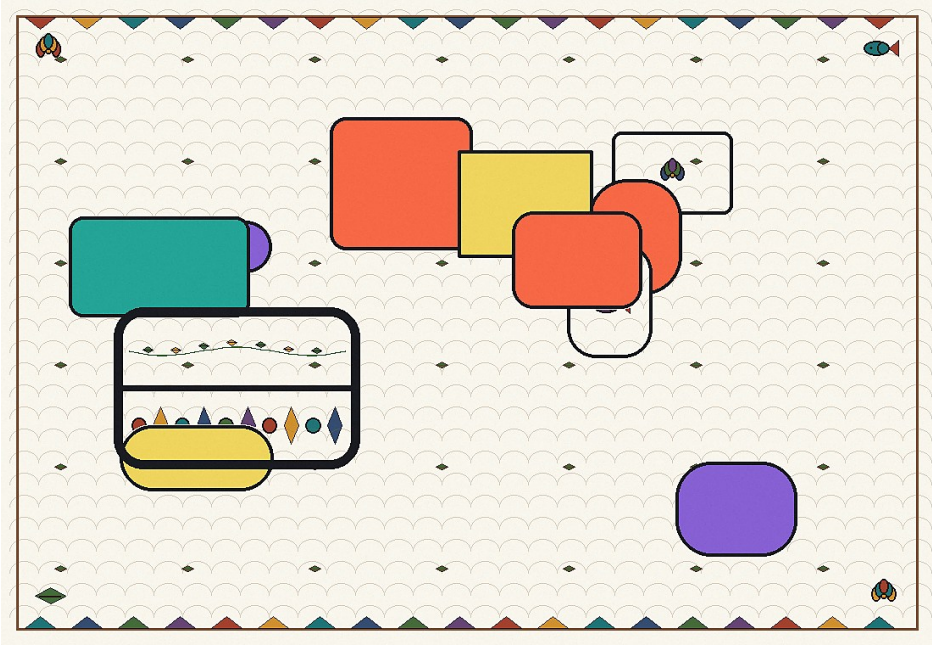

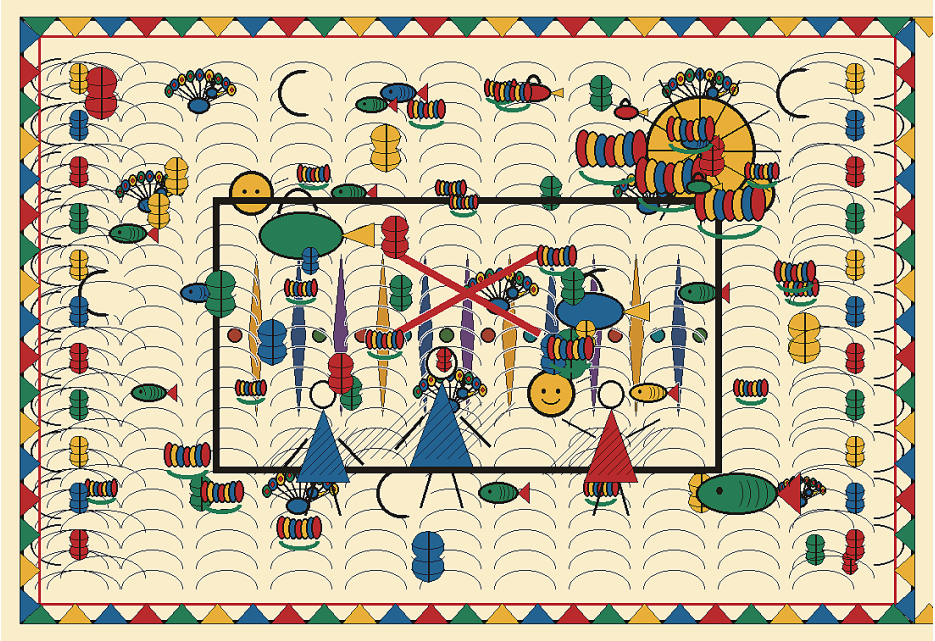

चित्र 23

साढ़नीकेँ ओतहि छोड़ि ढोलन फूल-बगानकेँ तोड़ि-तारि तहस-नहस कऽ देलनि — शायद बरखोक क्रोध, वा अनजान भूमिपर अनजान गुस्सा। मालिन कहलनि — 'तोरा राजासँ पिटान पिटाएब आ जतेक बरबादी केने छँह, तकर हरजाना लेबउ।'

ढोलन निडर उत्तर देलनि — 'जो, तोरा जे करबाक छौक, कर।' मालिन तामसे राजा लग गेलि आ फरियाद केलनि। राजा पुछलनि — 'ओ कतुक्का अछि?' मालिन कहलनि — 'ओ अपन घर गढ़नारियलक बतओने अछि।'

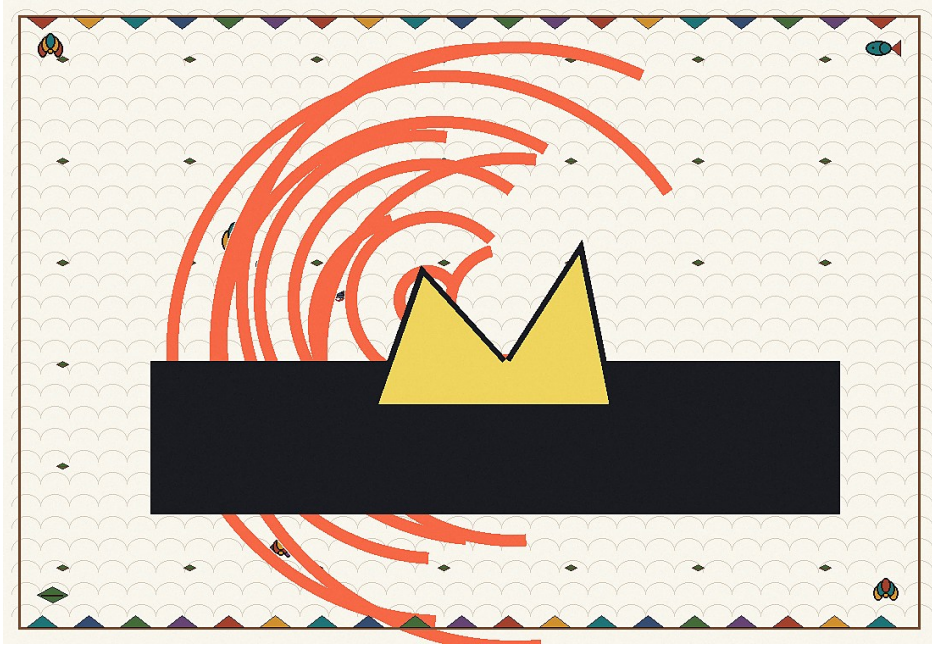

चित्र 24

राजा अपन सिपाही पठओलनि। सिपाही ढोलनकेँ पुछलनि — 'अहाँ कतुक्का छी आ कतएसँ आयल छी?' ढोलन उत्तर देलनि — 'हमर घर गढ़ नारियल अछि, आ हम अपन सासुर गढ़पिंगल — ओतहिसँ आयल छी।'

सिपाही ई गप राजाकेँ जा कहलनि। राजा प्रसन्नतासँ उठि, ढोलनकेँ डोलीमे बैसा अपन घर अनलनि — बरखोक विरहक बाद, अन्ततः असल दामाद अपन सासुरक द्वारपर पहुँचल।

अध्याय 13 : पुनर्मिलन

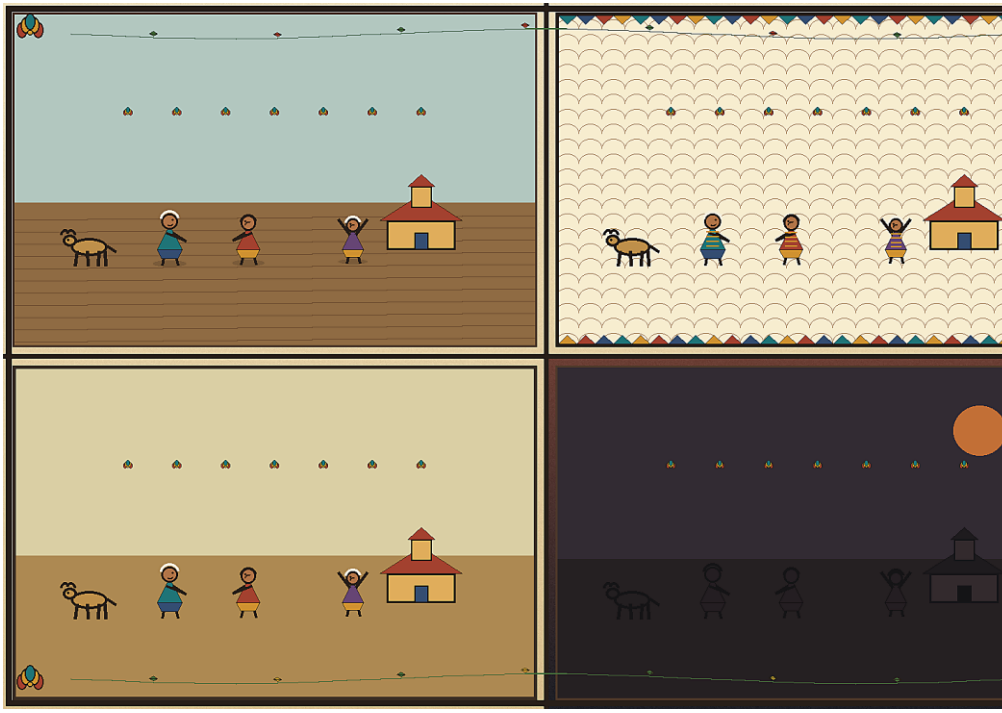

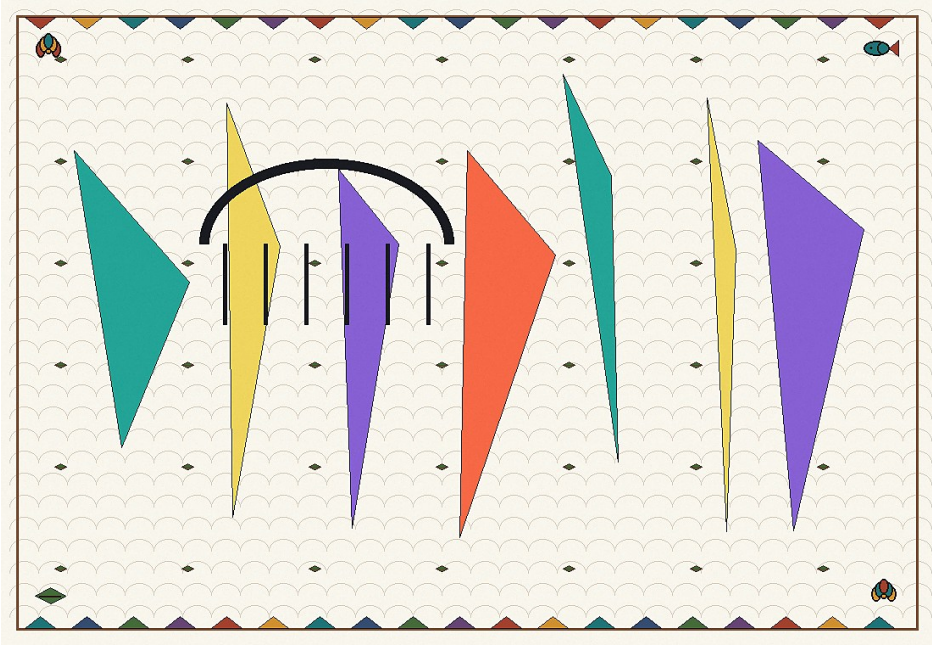

चित्र 25

राजा गढ़पिंगल ढोलनक स्वागत बड़ी धूमधामसँ केलनि। किछु दिनुका बाद राजा अपन बेटी-जमाएकेँ गढ़-पिंगलसँ गढ़ नारियलक लेल विदा केलनि — पूर्ण सम्मानसँ, जे बरखो पहिने नहि भेटल छल।

ओतयसँ राजा ढोलन आ मड़ुवन कन्या अपन घर गढ़ नारियल गेलाह — ओही राज्य, जतयसँ राजा दक्ष एक दिन गरीबीक मारल भागल छलाह, आब ओतय बेटा-पुतोहु प्रतिष्ठासँ घुरलाह।

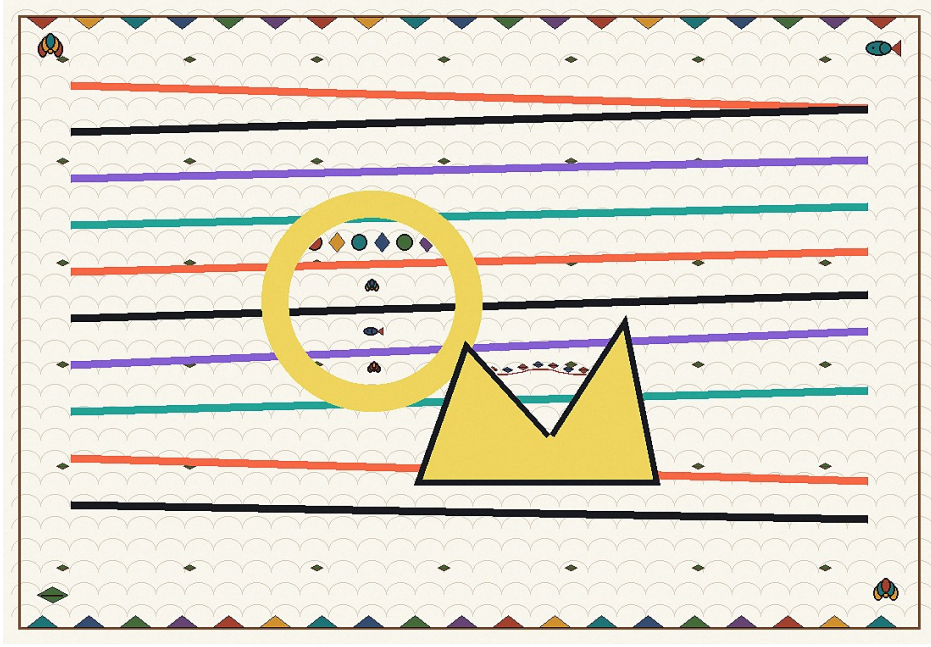

चित्र 26

मड़ुवन, जे बारह बरख जबुना कातमे सदाव्रत बाँटैत, आस लगओने बैसल रहलि, से अन्ततः अपन पतिकेँ पओलि — पत्रक विफलता, जादूगरनीक कुचक्र, बाघिनक शाप — सभटा बाधा पार कऽ।

आ ढोलन आ मड़ुवन अपन राज्य करए लगलाह — एकटा नोकरक बेटा, जकर पहचान बरखो धरि छिपल रहल, अन्ततः राजकुमारीक पति आ राज्यक स्वामी बनि गेल। ई गाथा सिखबैत अछि — सत्य, साहस, आ धैर्य अन्ततः विजयी होइत अछि, चाहे रस्ता कतबो लम्बा आ कष्टकर किए नहि होअए।

समाप्त

VIDEHA

विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका | ISSN 2229-547X | www.videha.co.in

उगना

विद्यापतिक नोकर बनल महादेव — भक्तिक दुखान्त गाथा

गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादक, विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका (since 2000)

ISSN 2229-547X

उपक्रम : नचारी

मिथिलामे एकटा कवि भेलाह — विद्यापति। हुनक गीत एहन, जे सुनि कऽ माटियो गाबए लागए। आ हुनक नचारी — शिव-वन्दनाक ओ गीत — एहन, जे सुनि कऽ साक्षात् कैलासपति नाचए लगैत छलाह।

ई गाथा ओही नचारीक थिक — आ ओहि अद्भुत घटनाक, जखन गीतक भूखमे भगवान् भक्तक नोकर बनि गेलाह। ई भक्ति-कथाक शिखर थिक, आ संगहि एकटा एहन दुखान्त, जाहिमे बिछोहक कारण ने कोनो पाप छल ने शाप — छल खाली एकटा बाढ़नि, आ मुँहसँ निकलल एकटा नाम।

अध्याय 1 : गीतक भूखल देवता

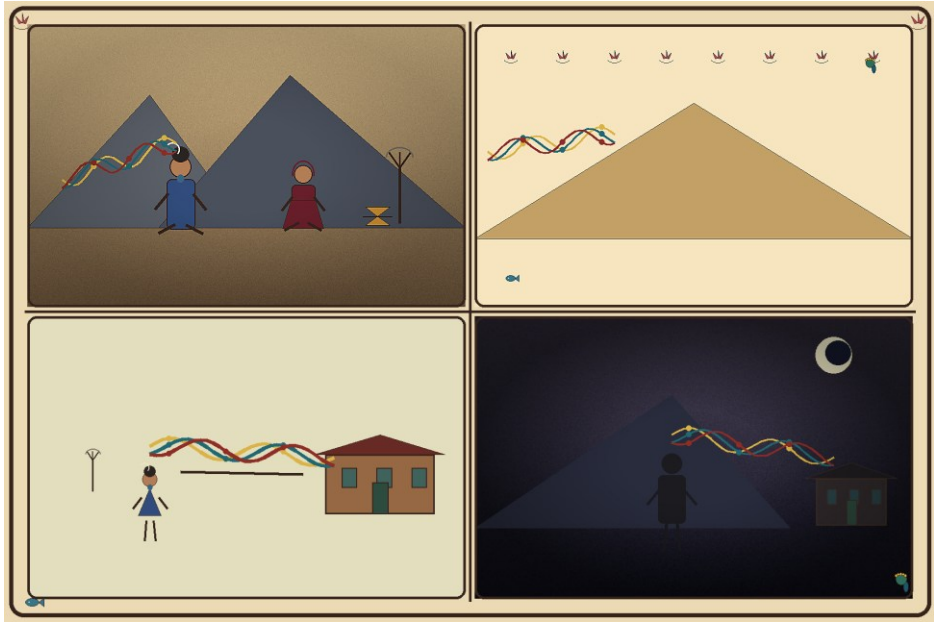

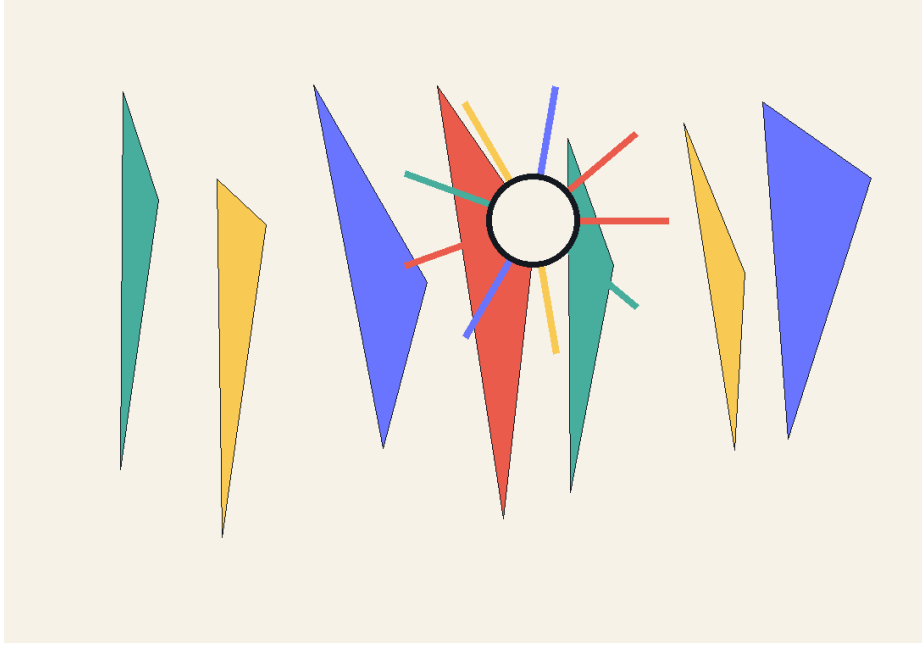

चित्र 1

कैलासपर एक दिन अजीब दृश्य छल — महादेव आँखि मूनने झूमि रहल छलाह। पार्वती पुछलनि, 'की भेल?' शिव कहलनि — 'सुनू... मिथिलामे विद्यापति गाबि रहल छथि।'

विद्यापतिक नचारी — 'भोला बाबा' कैं सम्बोधित ओ गीत, जाहिमे भक्तक ठुनकी सेहो छल आ प्रेमक अधिकार सेहो। शिवकैं संसारक सभ स्तुति भेटल छल — मुदा एहन गीत? ई गीत हुनका पूजैत नहि छल, हुनकासँ गप करैत छल।

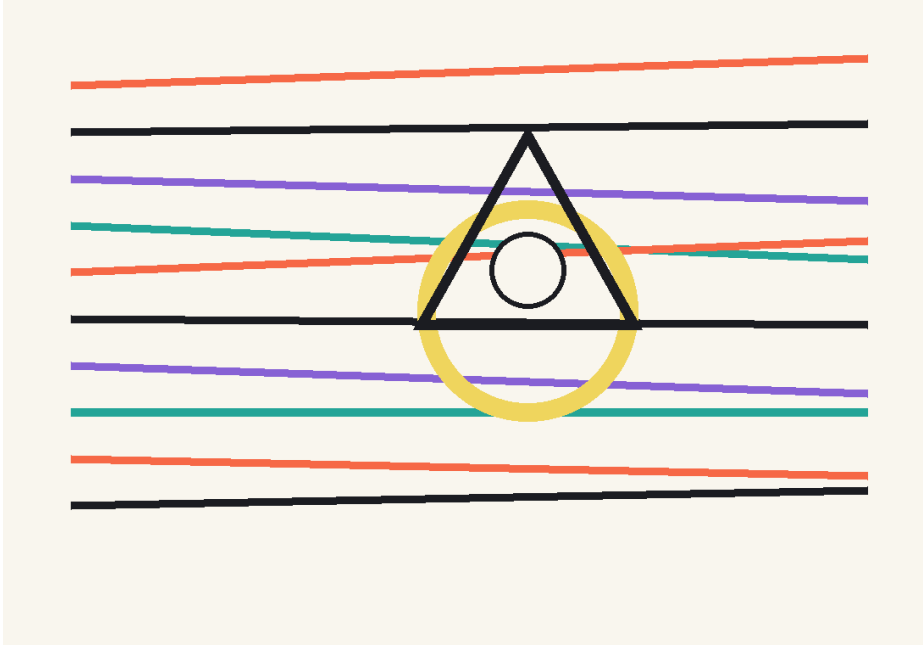

चित्र 2

आ सुनैत-सुनैत महादेवक मोनमे एकटा एहन साध जागल जे देवलोकमे आइ धरि ककरो नहि जागल हएत — 'ई गीत रोज सुनी... लगमे रहि कऽ सुनी... एकर घरमे रहि कऽ सुनी!'

मुदा भगवान् भक्तक घरमे रहताह कोन रूपे? अतिथि बनि? — त' भेद खुजि जाएत। तखन शिव ओ निर्णय लेलनि जे भक्ति-साहित्यक सभसँ मधुर उलटफेर थिक: संसारक स्वामी अपन भक्तक घरमे नोकर बनि रहताह।

अध्याय 2 : उगना आयल

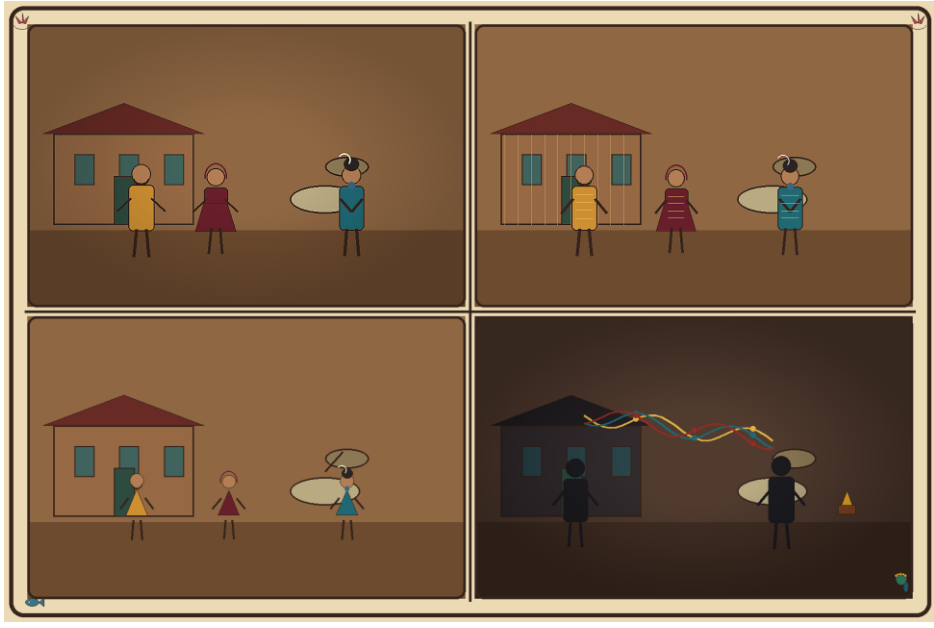

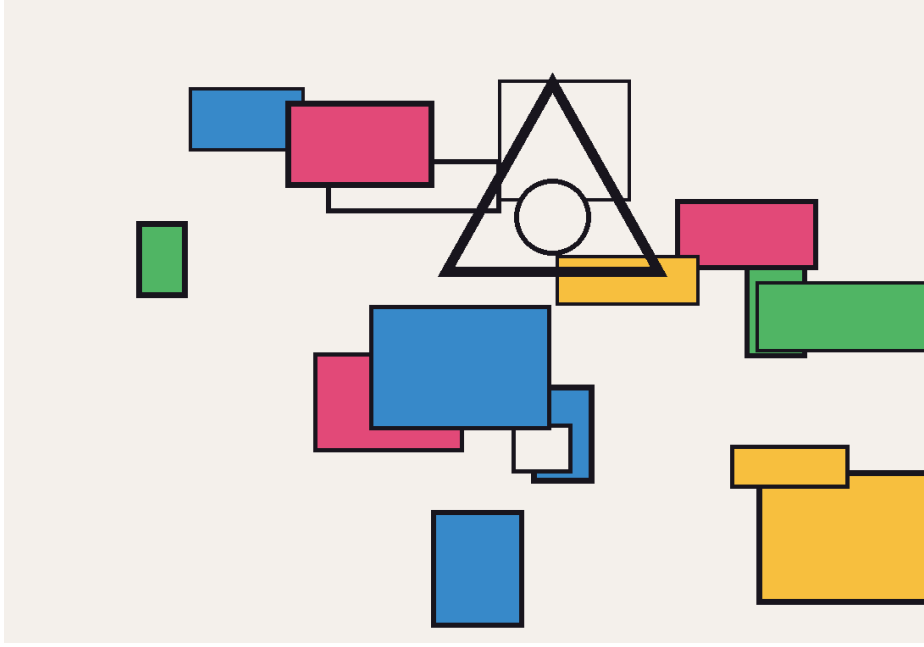

चित्र 3

विद्यापतिक घर। पत्नी चन्दन गृहस्थीक भारसँ दबल — काज बेसी, हाथ कम। ताही बीच एक दिन दरबज्जापर एकटा जुआन आबि ठाढ़ भेल — साधारण वेश, मुदा आँखिमे किछु एहन जे तकितहिं मोन शान्त भऽ जाए।

'नाम?' — 'उगना।' — 'की चाही?' — 'नोकरी। खेनाइ-कपड़ा भेटए, बस।'

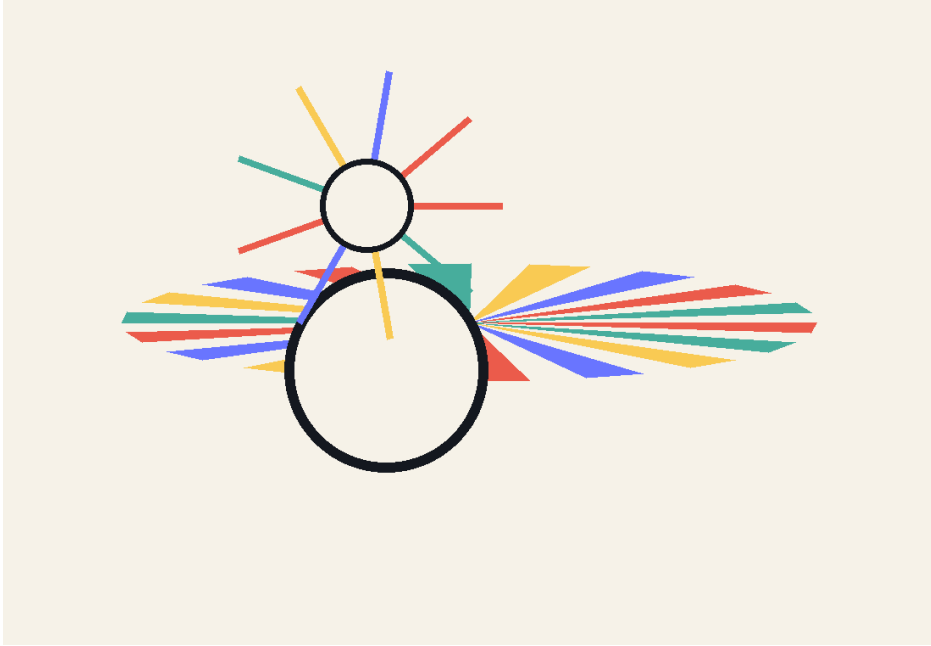

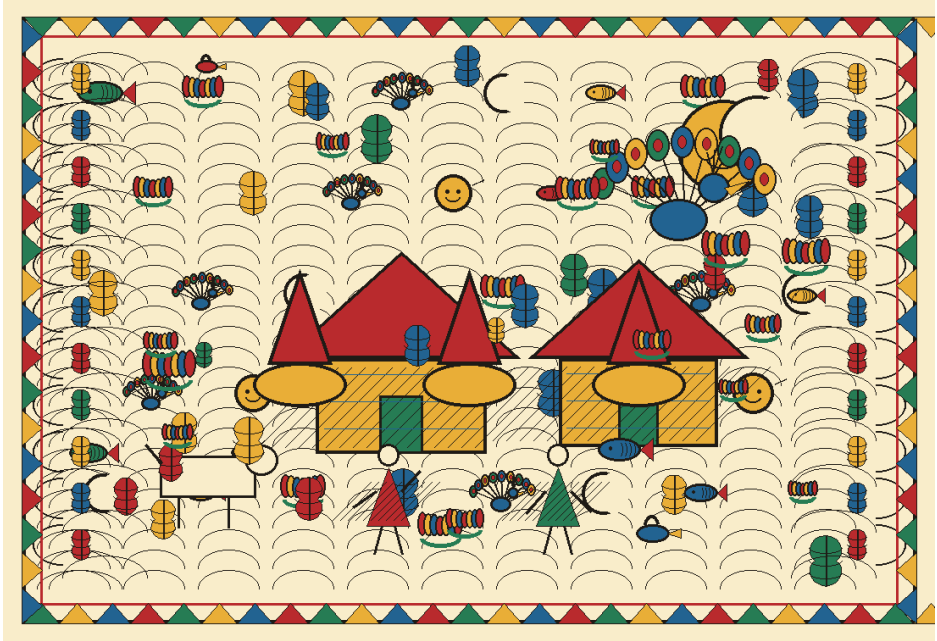

चित्र 4

विद्यापति पत्नीक सहायता लेल नोकरक खोजमे छलाहे। उगनाकेँ राखि लेलनि। आ उगना काजमे लागि गेल — एहन नोकर, जेहन ने कहियो देखल गेल छल: पानि कहू त' पानि हाजिर, काज कहू त' काज सम्पन्न, आ मुँहपर सदिखन एकटा हल्लुक मुस्की।

चन्दन निहाल — एहन नोकर भाग्यसँ भेटैत अछि! ओ की जनितथि जे 'भाग्यसँ' शब्द एतय कतेक छोट पड़ि रहल छल। घरमे झाड़ू लगबैत, बासन माँजैत, बरतन उघैत जे हाथ छल, से वैह हाथ छल जाहिमे डमरू आ त्रिशूल शोभैत अछि। आ ई सभ — एकटा गीत सुनबा लेल।

अध्याय 3 : बाटक पियास

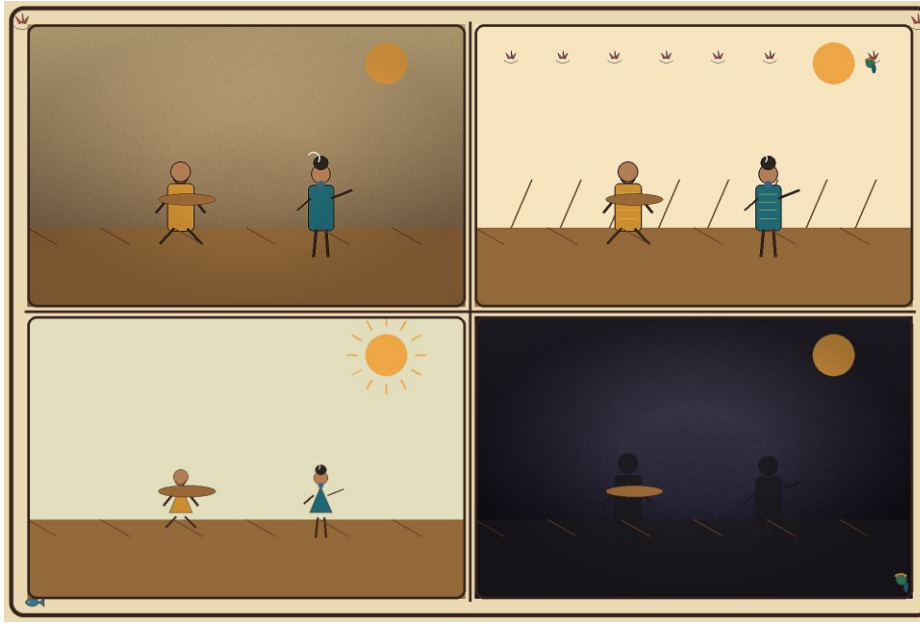

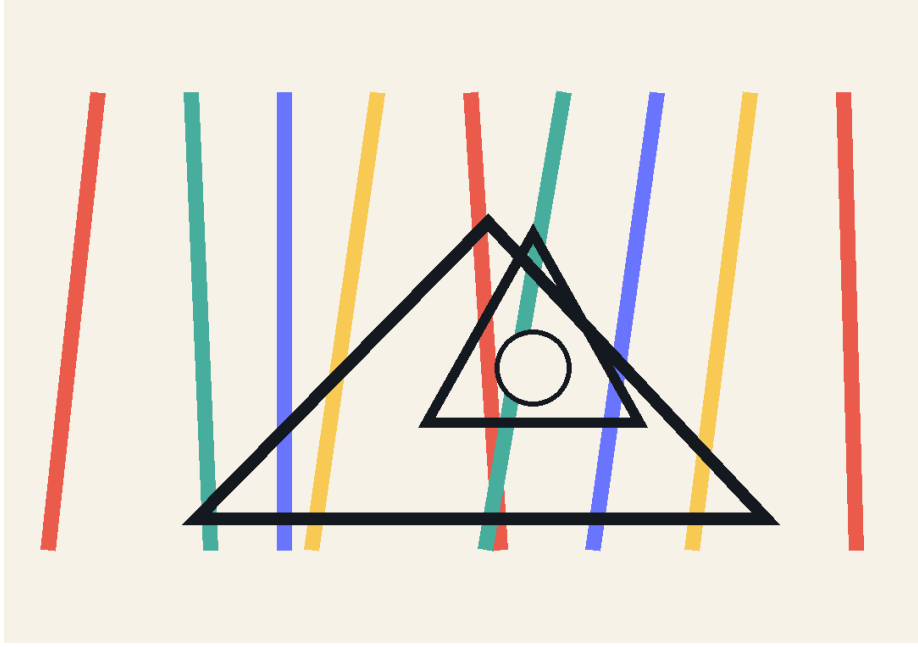

चित्र 5

एक बेर विद्यापति कतहु दूर जाइत छलाह — उगना संगमे। जेठक गुमार, माथपर आगि बरिसबैत सूर्य, आ बाट — सुन्न, छाँह-रहित।

गुमारसँ विद्यापति बेकल भऽ गेलाह। पियास एहन लगलनि जे पएर लटपटाए लागल। 'उगना... पानि...' — मुदा चारू दिस ने पोखरि, ने इनार, ने कोनो बस्ती।

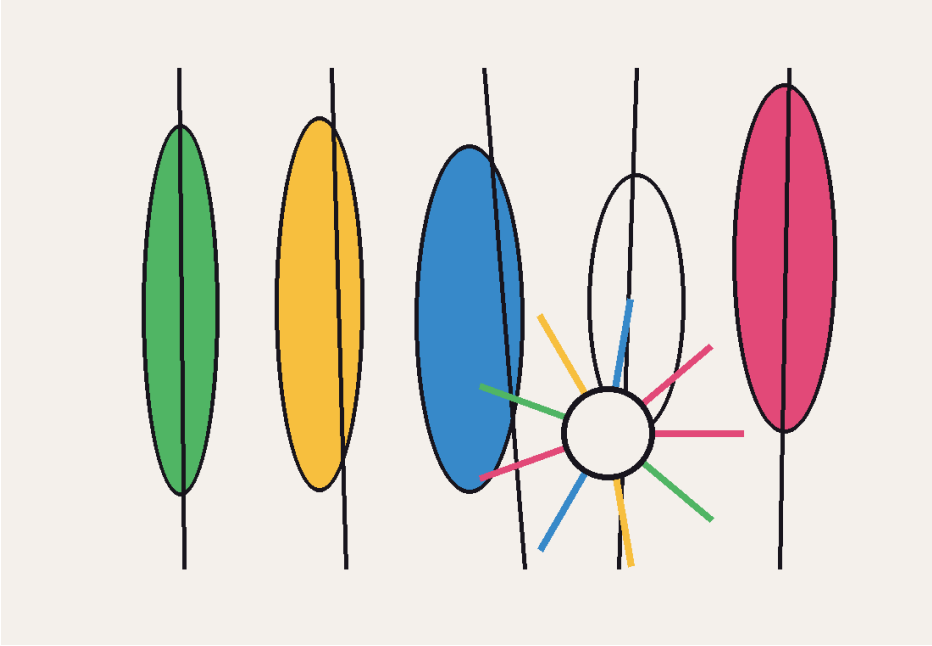

चित्र 6

उगना पानि लेल चारू दिस घूमल — बाट-बाट, टोल-टोल। पानि कतहु नहि। आ जखन घूमि कऽ आयल, त' देखलक — विद्यापति मूर्छित खसल छथि। कविक कण्ठ, जाहिसँ नचारी बहराइत छल, सूखि कऽ काठ भऽ गेल छल।

आब? नोकर उगना लग कोनो उपाय नहि छल। मुदा उगनाक भीतर जे छल, तकरा लग त' तीनू लोकक जल छल। भक्तक प्राणपर बनि आयल — आ भेष आब भारी पड़ए लागल। उगना चारू दिस तकलक — केओ नहि। आ तखन ओ भेल, जे एहि गाथाक हृदय थिक।

अध्याय 4 : जटाक गंगधार

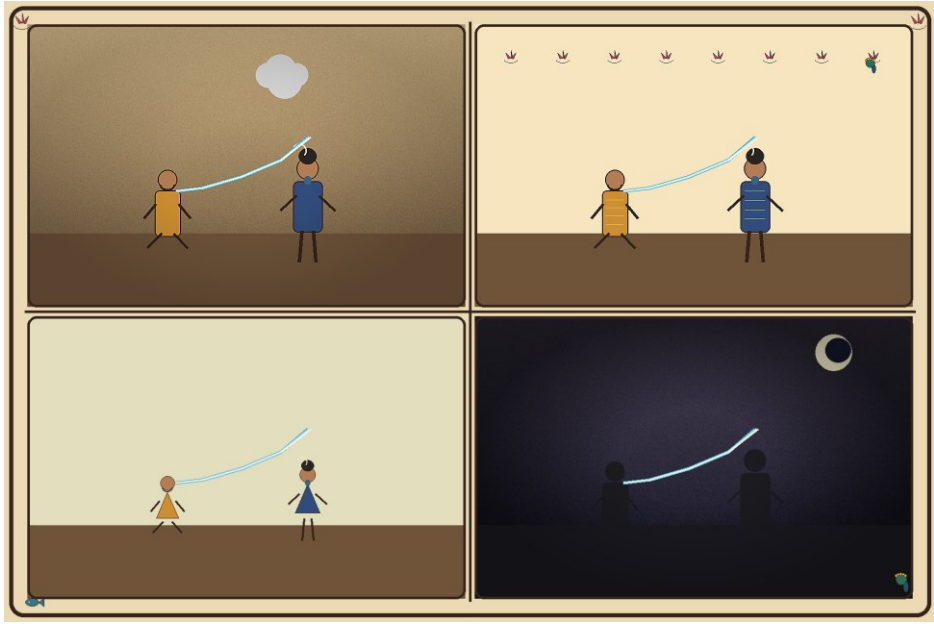

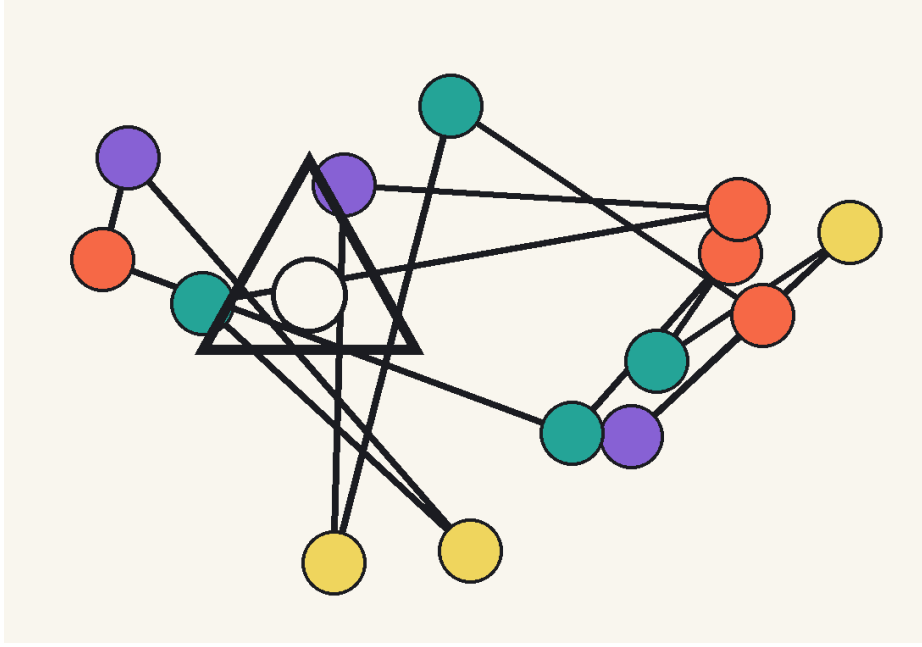

चित्र 7

उगना अपन असली रूपमे आबि गेलाह — साक्षात् शिव! जटा खुजल, आ जटाक भीतरसँ गंगाक धार — शीतल, निर्मल, अमृत सन।

ओही गंगाजलसँ शिव विद्यापतिकेँ पानि पिओलनि। कण्ठमे जल उतरल, प्राण घुरल, आँखि खुजल — आ शिव ताबत फेर उगना बनि चुकल छलाह, जेना किछु भेले नहि हो।

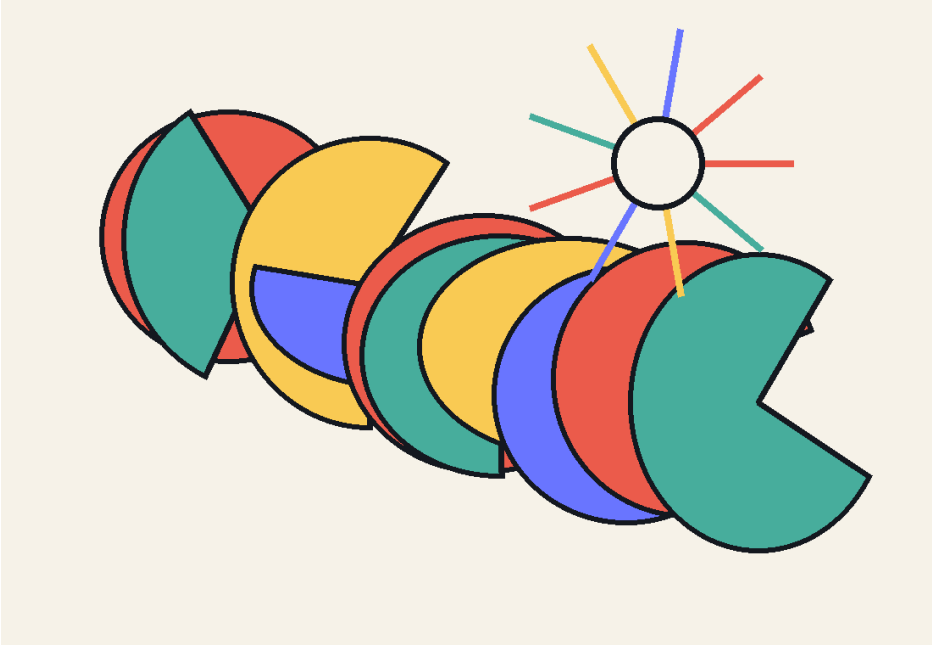

चित्र 8

मुदा विद्यापति कवि छलाह — आ कवि माने ओ, जकर जीह स्वादक स्मृति राखैत अछि। पानि पीबिते हुनक भीतर घण्टी बाजल: ई स्वाद! ई त' गंगाजल थिक! एहि निर्जन बाटमे, जतय बून्न भरि पानि नहि — गंगाजल कतयसँ?

आ तखन हुनक आँखि उगनापर पड़ल — उगनाक केश एखनो भीजल छल। भीजल जटा, गंगाक स्वाद, आ ओ मुस्की... विद्यापतिक हाथ अपने जुड़ि गेल। 'हे... अहाँ... अहाँ त'...' — कविक शब्द, जे कहियो नहि हारल छल, ओहि दिन पहिल बेर हारि गेल।

अध्याय 5 : भेद आ शर्त

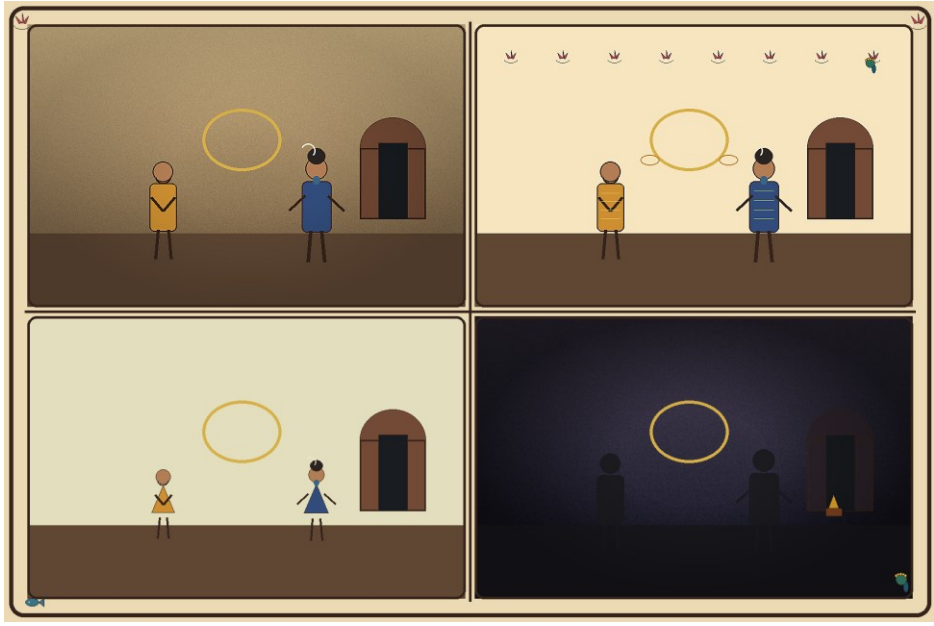

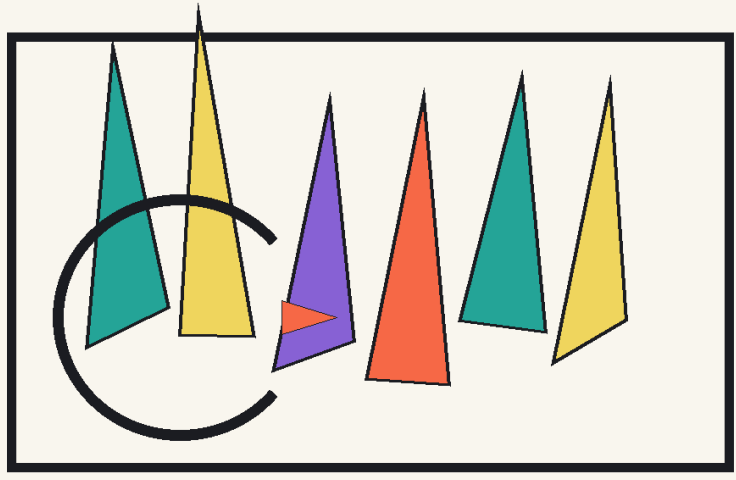

चित्र 9

शिव अपन असली रूपक दर्शन देलखिन्ह — पूर्ण रूप, जकरा लेल ऋषि-मुनि जुग-जुग तप करैत छथि, से एकटा नोकरक धोतीमे ठाढ़ भऽ मुस्कुरा रहल छल।

विद्यापतिकेँ आनन्दसँ बेसी ग्लानि भेलनि — 'हे महादेव! हम अहाँकेँ... नोकर राखलहुँ? अहाँसँ बासन मँजओलहुँ, पानि भरओलहुँ... ई केहन अपराध!'

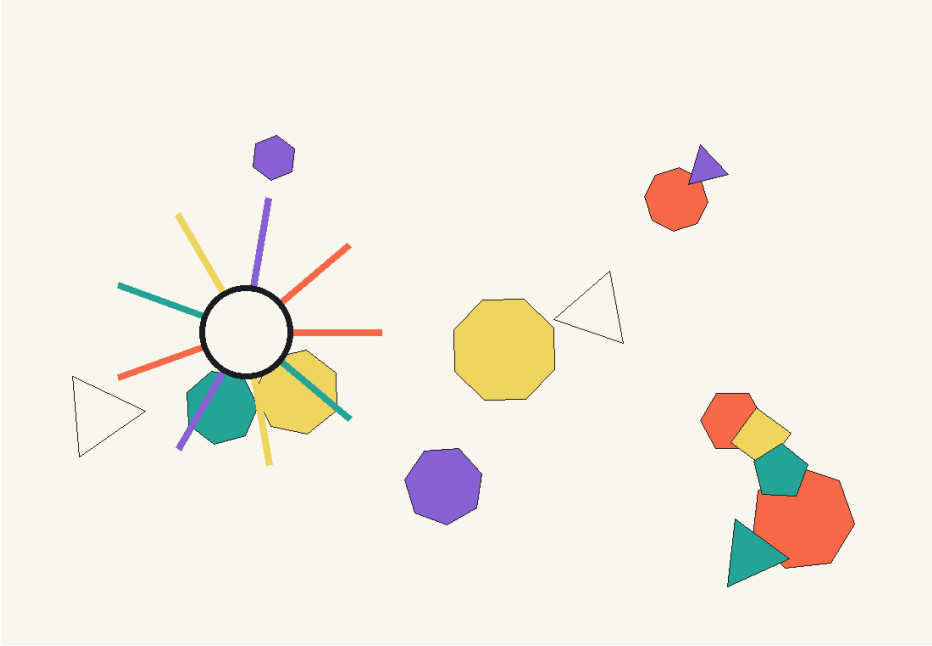

चित्र 10

मुदा शिव हँसलाह — 'अपराध? हम त' अहाँक नचारीक भूखल छी, विद्यापति। अहाँक गीत लगमे बैसि कऽ सुनबाक लेल हम नोकर बनल छी, आ बनल रहब।'

'मुदा एकटा शर्त' — शिवक स्वर गम्भीर भेल — 'जहिया अहाँ ई भेद ककरो लग खोलि देब, जहिया अहाँक मुँहसँ हमर असली नाम निकलि जाएत — तहिये हम अन्तर्धान भऽ जाएब।' विद्यापति वचन देलनि। आ दुनू घर घुरलाह — मालिक आ नोकर — जखन कि साँच ठीक उनटा छल। मुदा शर्त, खिस्सा-लोकक हर शर्त जकाँ, अपन टूटबाक दिन संगहि नेने आयल छल।

अध्याय 6 : पार्वतीक एकाकीपन

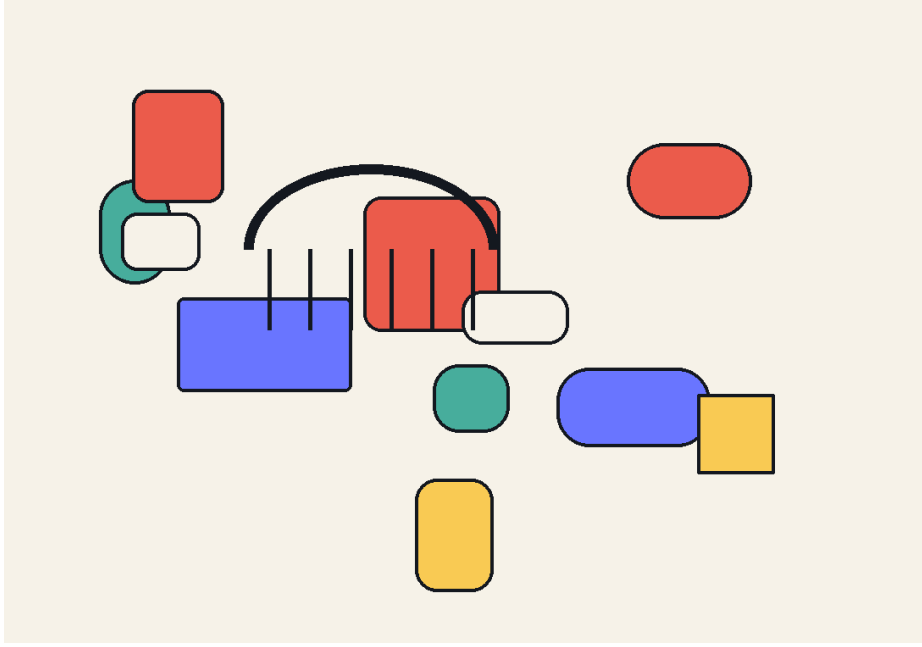

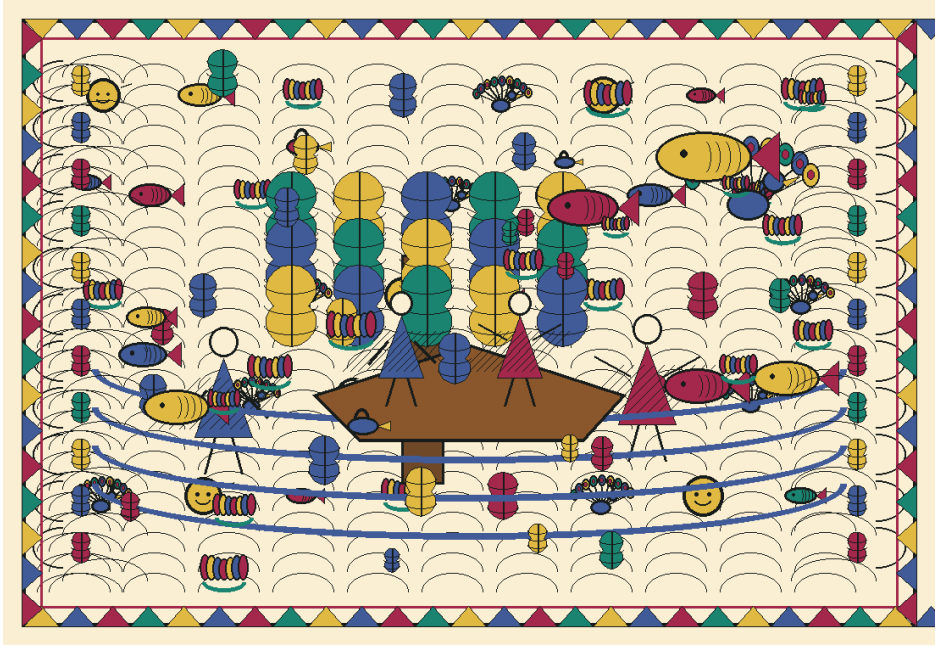

चित्र 11

एम्हर कैलासपर पार्वती दुखी छलीह। स्वामी मृत्युलोकमे नोकर बनल छथि — बासन माँजि रहल छथि, बोझ उघि रहल छथि — आ कैलास सुन्न पड़ल अछि।

पहिने त' ओ प्रतीक्षा केलनि। फेर सन्देश पठओलनि। फेर स्वयं मोन बुझओलनि — 'गीतक भूख छनि, मिटा लेथु।' मुदा भूख छल जे मिटबे नहि करैत छल! मास बीतल, बरख बीतल — उगना घुरबाक नामे नहि लैथ।

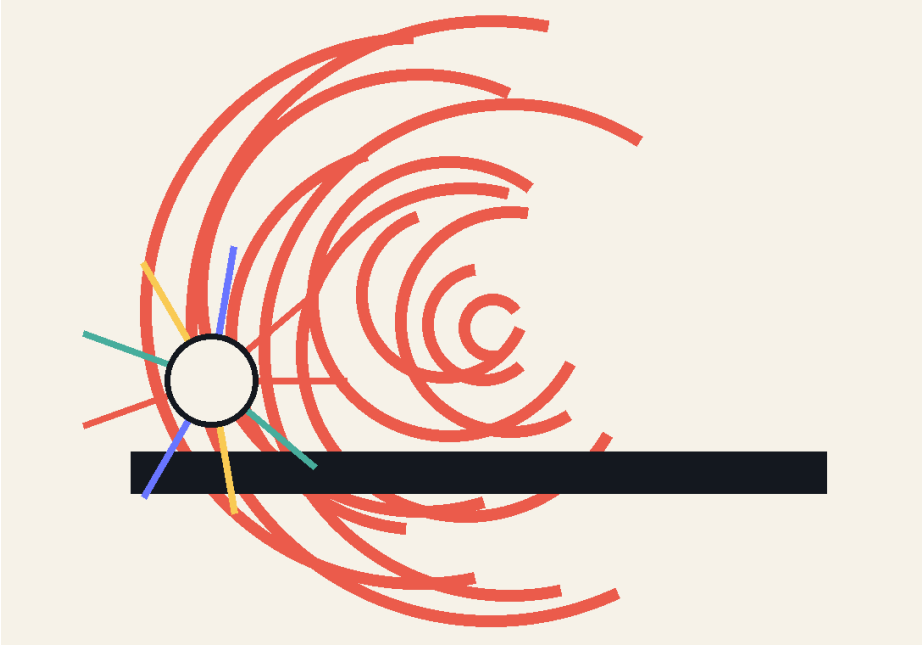

चित्र 12

आ तखन पार्वतीक मोनमे ओ विचार आएल जे प्रेमक अधिकारसँ उपजैत अछि — 'जँ ई अपने नहि घुरताह, त' परिस्थिति घुराओत।' शिवक शर्त हुनको बुझल छल: भेद खुजत, त' उगना घुरताह।

त' भेद खोलाओल कोना जाए? सोझे त' नहि — विद्यापति वचनक पक्का। तखन कोनो एहन घटना चाही जाहिमे विद्यापतिक मुँहसँ अपने 'शिव' निकलि जाए... आ देवीक दृष्टि गेल एकटा छोट, खट्टा वस्तुपर — तेतरि।

अध्याय 7 : तेतरिक चालि

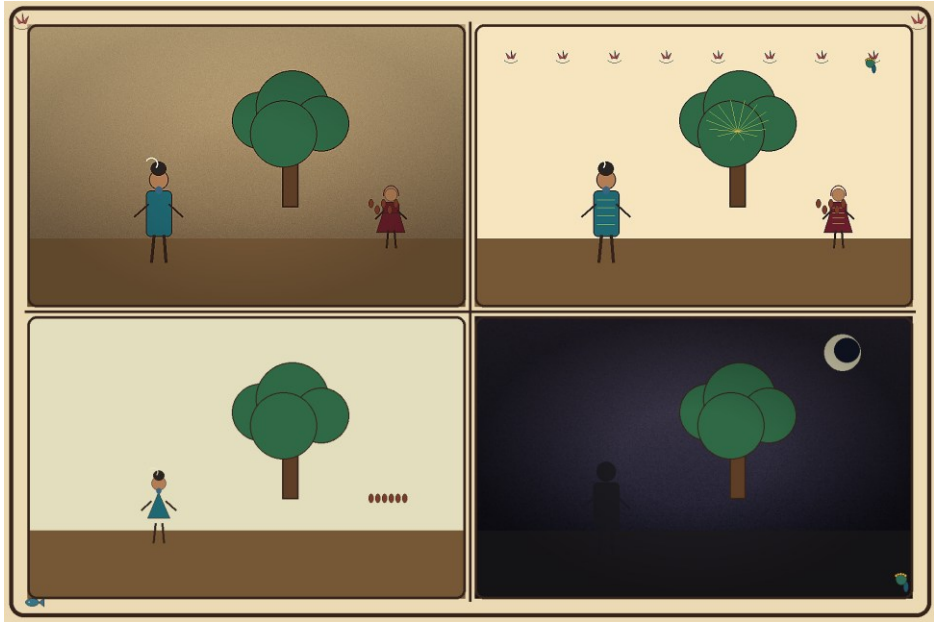

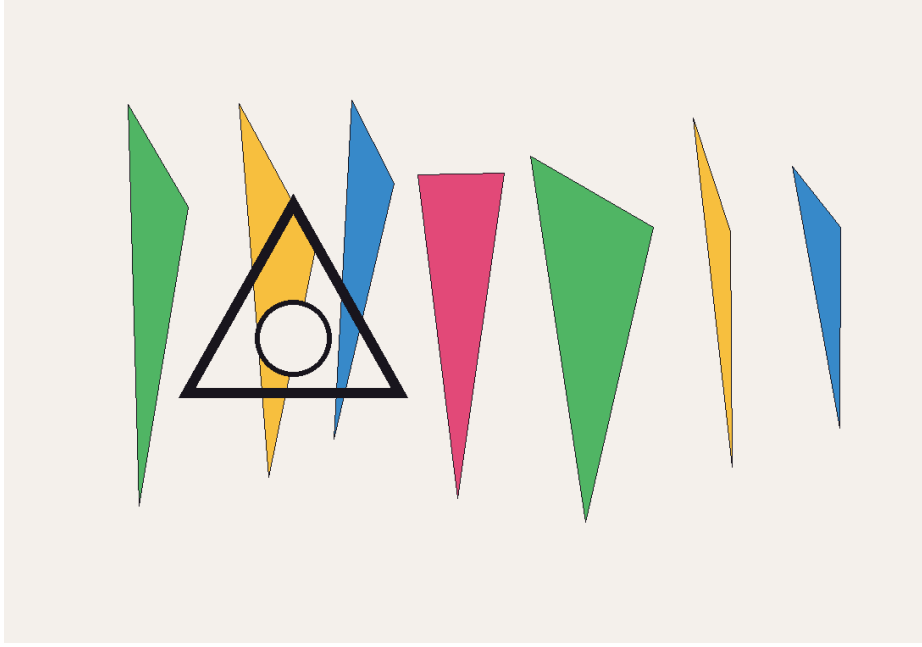

चित्र 13

एक दिन चन्दन उगनाकेँ तेतरि अनबाक लेल पठओलनि — रान्हीमे खटाइ चाही छल, आ गाछ गामक कातेमे छल।

मुदा ओहि दिन गाछ लग पहुँचि उगना देखलनि — गाछ खाली! एक्को टा तेतरि नहि — ने डारिपर, ने पातक ओटमे, ने नीचाँ खसल। कारण? पार्वती सभटा तेतरि पहिनहिये तोड़बा लेने छलीह। देवीक चालि — छोट सन, मुदा अचूक।

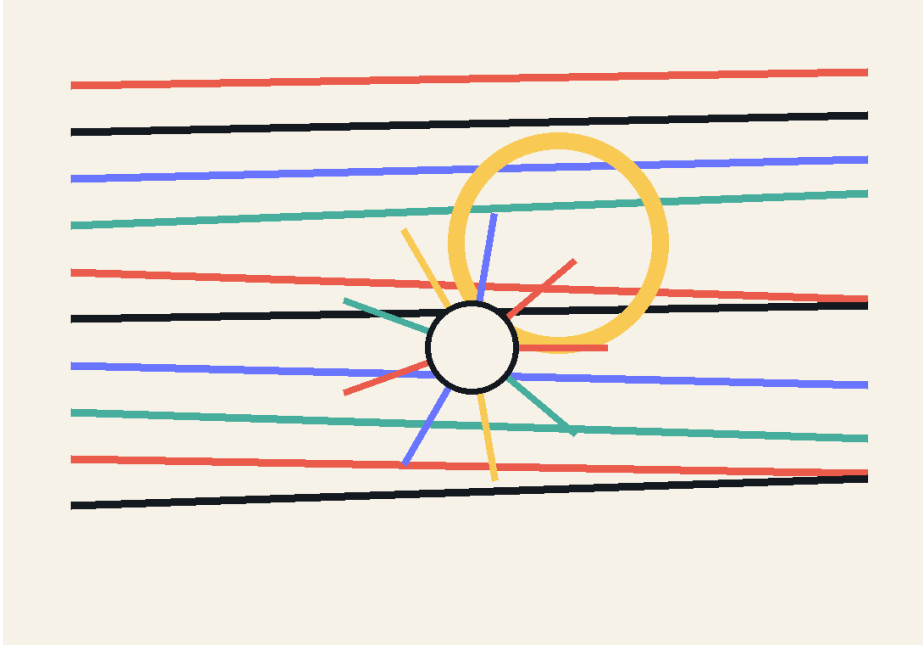

चित्र 14

उगना — जे तीनू लोकक स्वामी छथि, जे चाहितथि त' पलक झपकैत गाछ तेतरिसँ लादि दितथि — खाली हाथ घुरलाह। किएक? कारण नोकर उगना जादू नहि कऽ सकैत छल; जादू करितथि त' भेष टूटि जइतनि। भेष निमाहब सेहो एकटा तपस्या छल।

आ एतय, एही छोट बिन्दुपर, गाथाक सभटा धागा एकठाम गिरह बनि गेल: खाली हाथ नोकर, चूल्हिपर अगुताएल गृहिणी, आ परदाक पाछाँ प्रतीक्षारत देवी। आब खाली एकटा चिनगीक बेगरता छल — आ चिनगी बनलि चन्दनक तामस।

अध्याय 8 : बाढ़नि

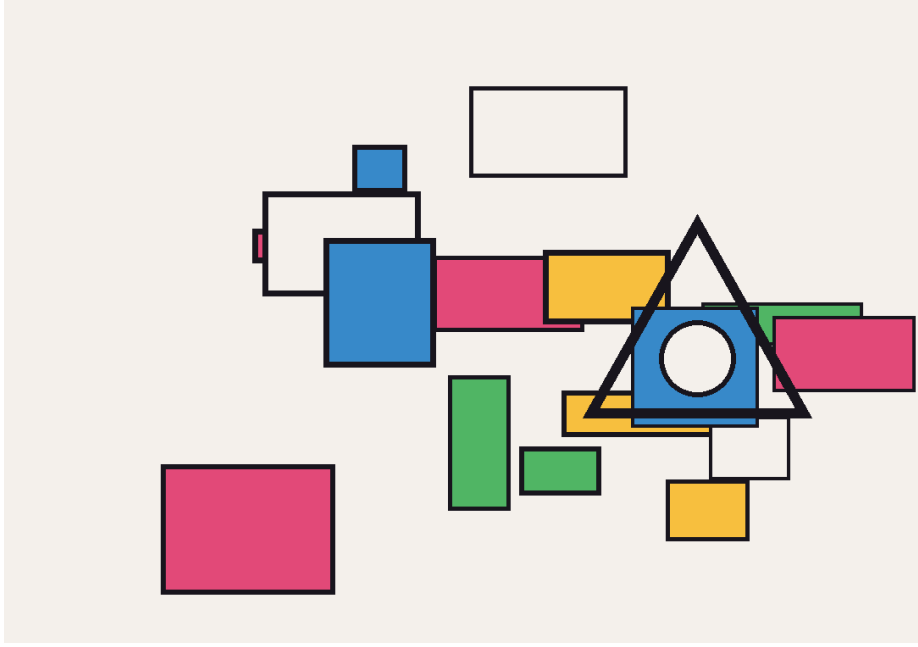

चित्र 15

'तेतरि कतय?' — 'गाछपर एक्को नहि छल, मालकिन।' — 'गाछ भरल-पूरल आ तेतरि नहि? काज नहि करबाक बहन्ना!'

चन्दनक तामस चढ़ल — गृहस्थीक थाकल तामस, जे सदिखन सभसँ कमजोरपर खसैत अछि, आ घरमे सभसँ 'कमजोर' के? नोकर। चन्दन बाढ़नि उठा लेलनि आ उगनापर छुटि पड़लीह।

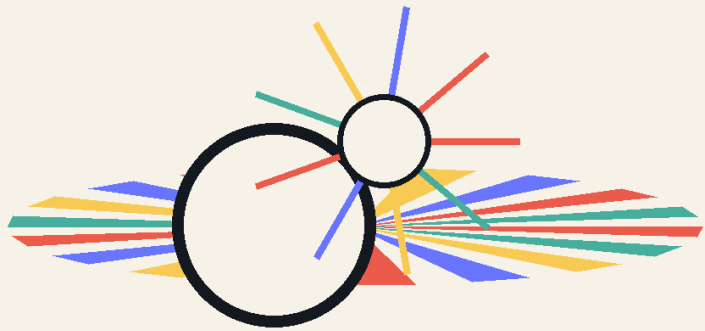

चित्र 16

बाढ़नि! — जाहि देहपर देवता सभ फूल चढ़बैत छथि, ओहि देहपर बाढ़नि उठल। आ उगना? ओ ने हटलाह, ने रूप देखओलनि, ने एक्को शब्द बजलाह। नोकरक धर्म — ओ चुपचाप ठाढ़ रहलाह, माथ झुकओने।

मुदा ई दृश्य एकटा तेसर आँखि देखि रहल छल — विद्यापति ओतहि आबि गेल छलाह। आ जे दृश्य हुनका देखाइ पड़ल — साक्षात् महादेवपर बाढ़नि! — से कोनो भक्तक करेज नहि सहि सकैत। वचन, शर्त, परिणाम — सभ किछु एक्कहि क्षणमे बिला गेल, आ हुनक मुँहसँ चीख बनि कऽ निकलल ओ नाम, जे नहि निकलबाक छल —

अध्याय 9 : हा शिव!

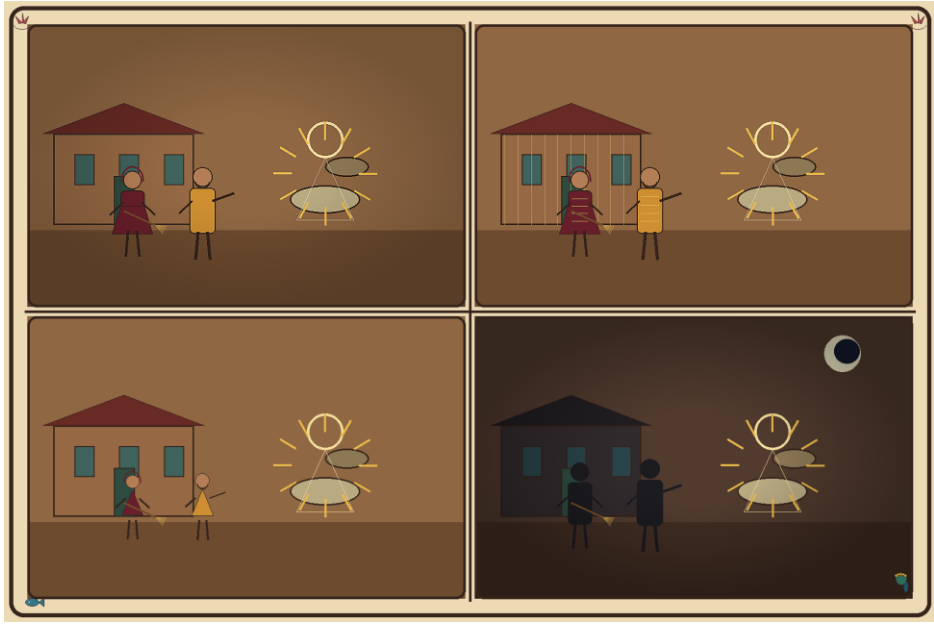

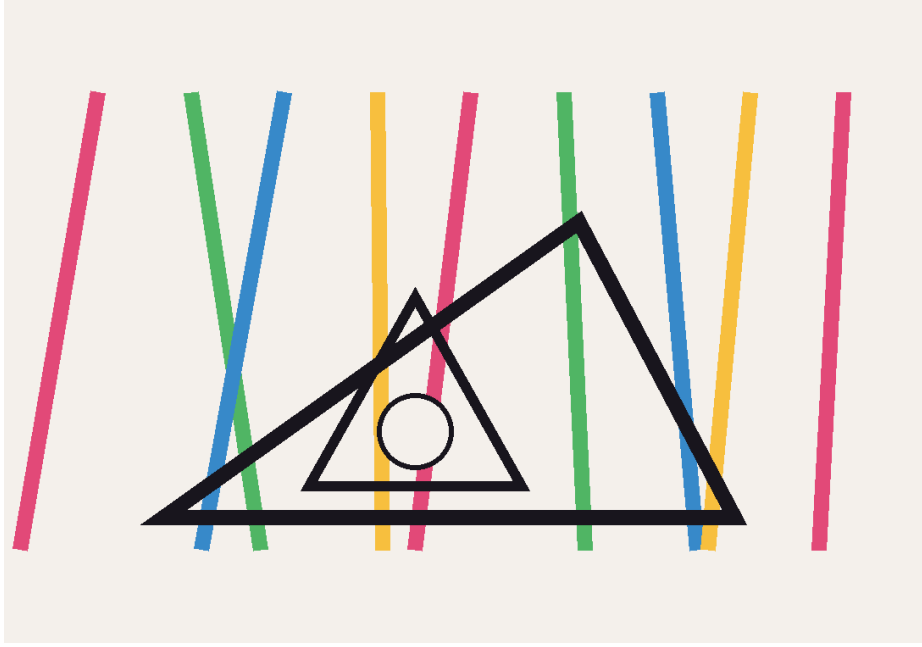

चित्र 17

'हा शिव!'

दू शब्द। आ सभ किछु समाप्त। शर्त टूटल — आ शिव ओतहि, ओही क्षण, अन्तर्धान भऽ गेलाह। ने बिदाई, ने अन्तिम दर्शन, ने कोनो वचन — बाढ़नि उठौने चन्दन, ठाढ़ विद्यापति, आ बीचमे... खाली ठाम। उगना चलि गेल।

चन्दनक हाथसँ बाढ़नि खसि पड़ल। जखन बुझलनि जे ओ के छलाह — जे नोकर बरखोसँ हुनक बासन माँजैत छल, से कैलासपति! — त' हुनक दशाक वर्णन कोन जीह करत? जाहि हाथे बाढ़नि उठाओल गेल छल, से हाथ जिनगी भरि काँपैत रहल।

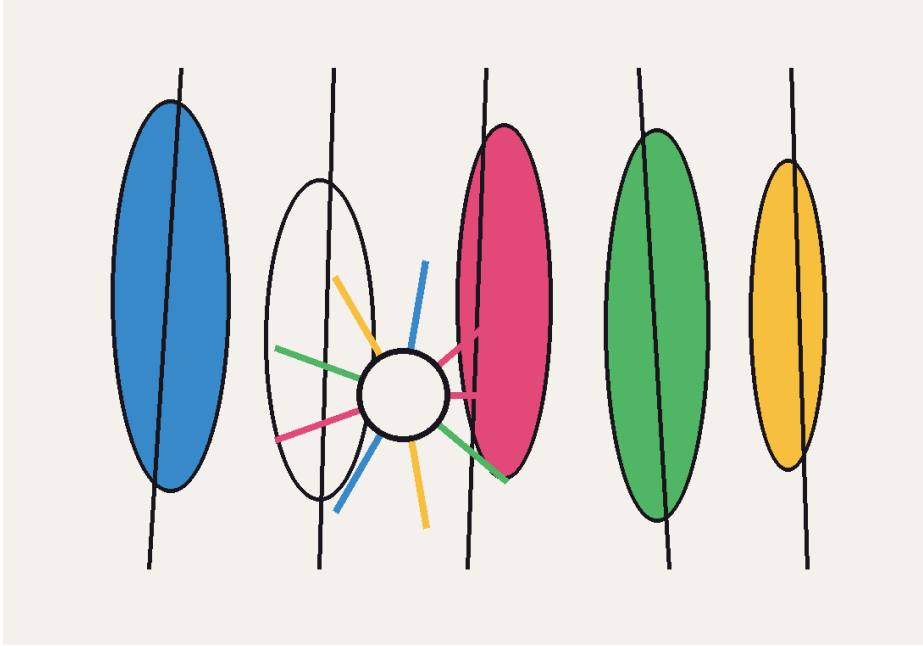

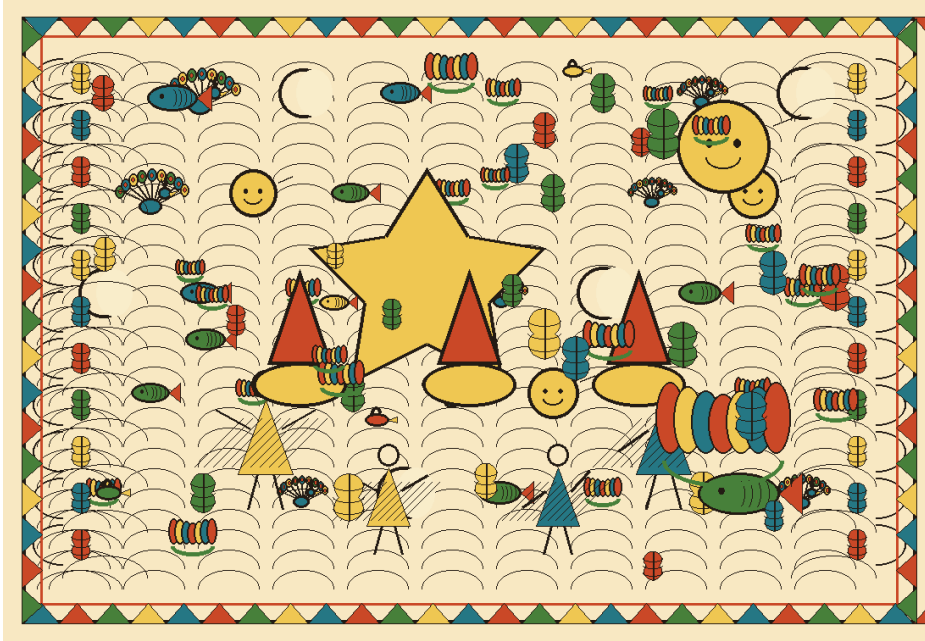

चित्र 18

आ विद्यापति? ओ ओही ठाम बैसि गेलाह — जतयसँ उगना बिलाएल छलाह। बेर-बेर ओही शून्यकेँ ताकथि, जेना आँखिक जोर लगओने शून्यसँ फेर उगना गढ़ि लेताह।

शर्त हुनके टूटल, मुदा तोड़बाक कारण? — भक्तिए। शिवपर बाढ़नि देखि जे चुप रहि जाए, से भक्त केहन? आ जे बाजि दिअए, से उगनाकेँ गमा बैसए। एहन धर्मसंकट — जाहिमे दुनू बाट हारिये दिस जाइत छल — विधाता कम्मे रचैत छथि।

अध्याय 10 : विक्षिप्त कवि

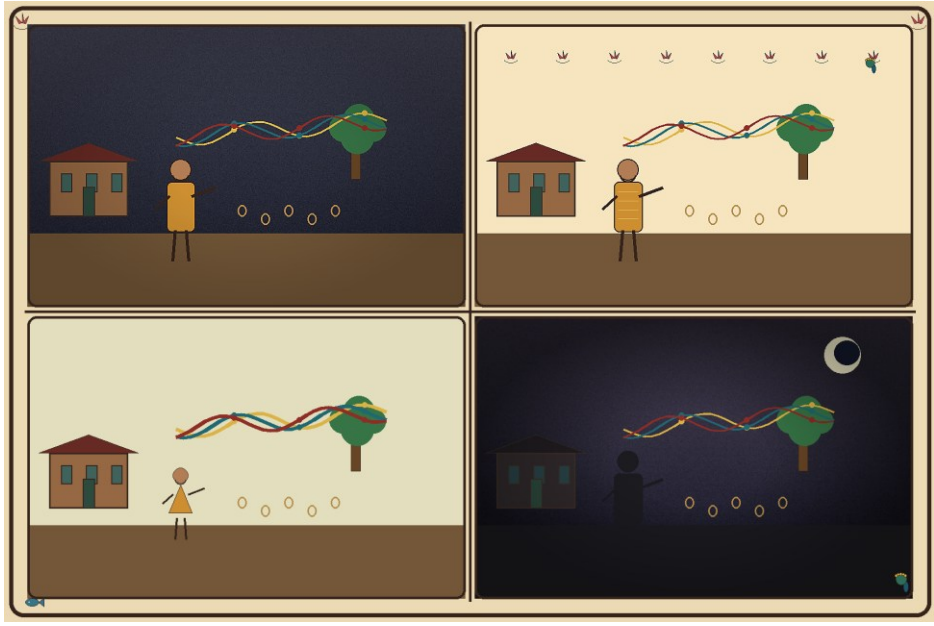

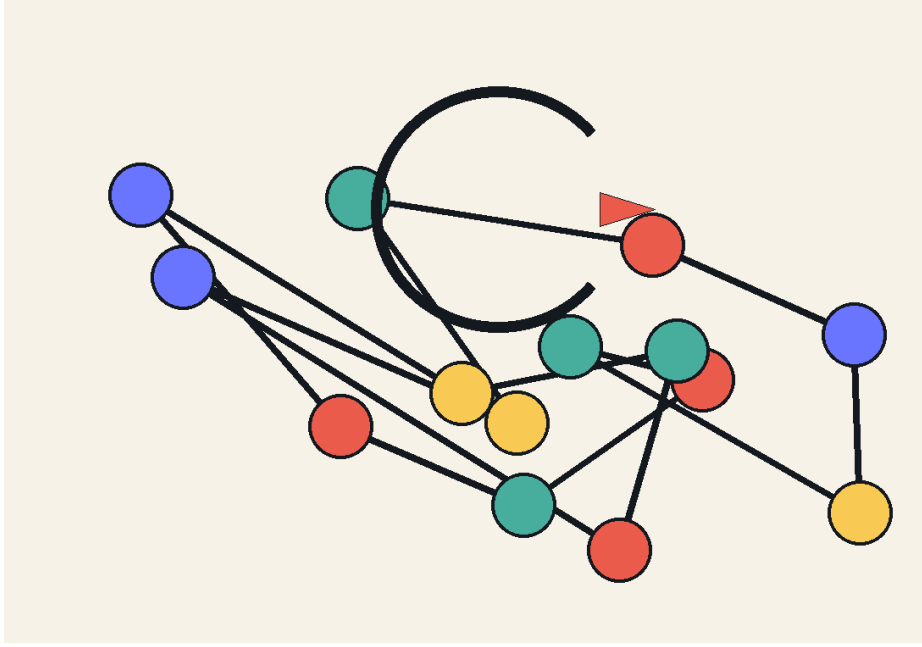

चित्र 19

तकर बाद कतेक दिन धरि विद्यापति विक्षिप्त रहलाह।

बाट-घाट, गाछी-कलम, घाट-बाध — जतय जाथि, 'उगना रे मोर कतय गेलाह' टेरैत रहथि। लोक कहए — कविकेँ की भऽ गेलनि! नोकरे त' छल! — मुदा लोककेँ की बुझल जे के 'नोकरे' छल।

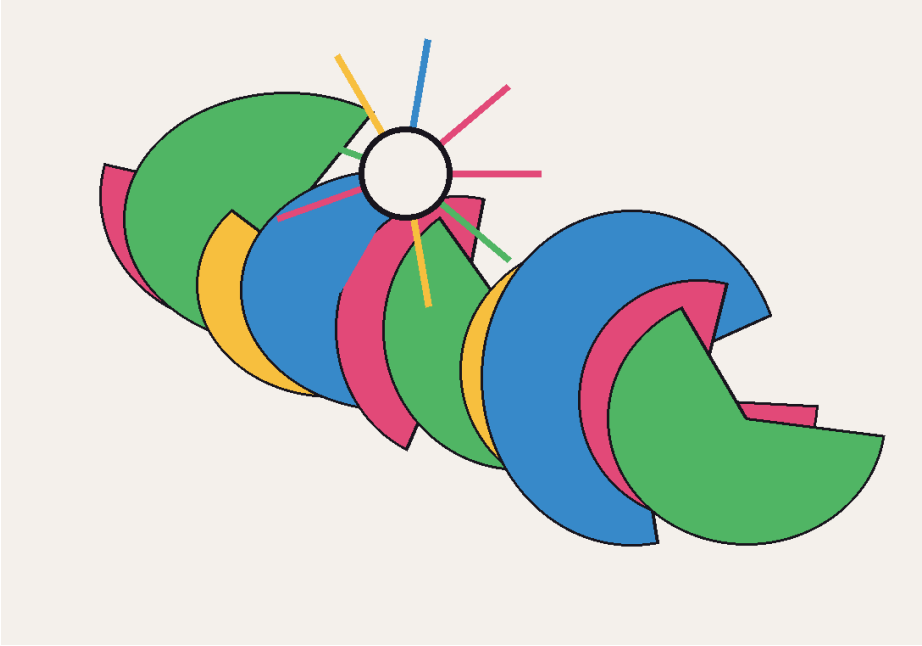

चित्र 20

हुनक गीत आब आरो गहींर भऽ गेल — कारण आब ओहिमे बिछोह छल। जे नचारी पहिने प्रेमसँ भरल छल, से आब पुकार बनि गेल। आ कहैत छथि, वैह पुकार-वला गीत सभ मैथिलीक सभसँ मार्मिक शिव-गीत थिक — 'उगना' गीत, जे आइयो गाओल जाइत अछि।

भक्त आ भगवानक ई खेल देखू — शिव गीतक भूखेँ नोकर बनलाह, आ गेलाक बाद ओहो गीतकेँ आरो पैघ बना गेलाह। बिछोहक आगिमे तपि कऽ विद्यापतिक स्वर कुन्दन भेल। दुख कविक डूबि थिक — आ ओही डूबिसँ मोती निकलैत अछि।

अध्याय 11 : उगनाक थान

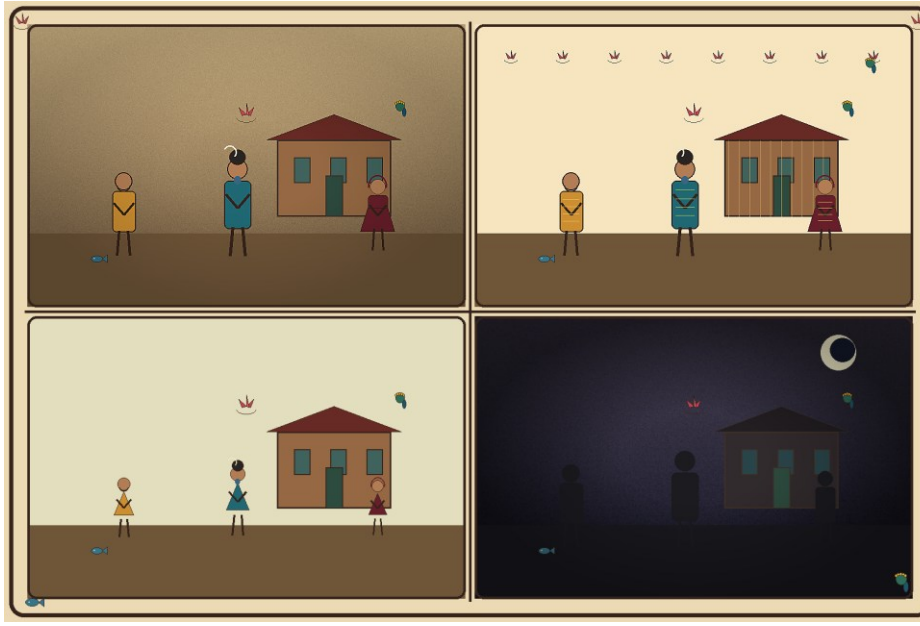

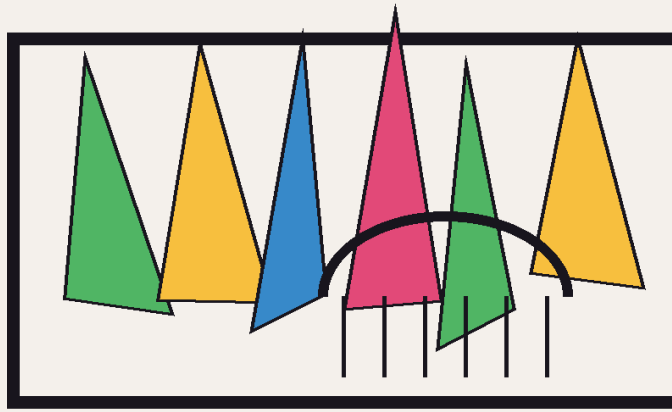

चित्र 21

मिथिला एहि गाथाकेँ बिसरल नहि। भीठ-भगवानपुरमे आइयो उगनाक थान अछि — उगना महादेवक मन्दिर — जतय ओहि नोकर-रूपक पूजा होइत अछि।

सोचू त' — संसार भरिमे शिवक कतेक रूप पूजल जाइत अछि: नटराज, महाकाल, अर्धनारीश्वर... आ मिथिलामे? मिथिलामे शिव 'उगना' छथि — एकटा कविक नोकर, भीजल केशवला, तेतरि खोजनिहार। मिथिला अपन देवताकेँ सेहो घरक लोक बना लैत अछि — यएह एकर सभसँ पैघ सिद्धि थिक।

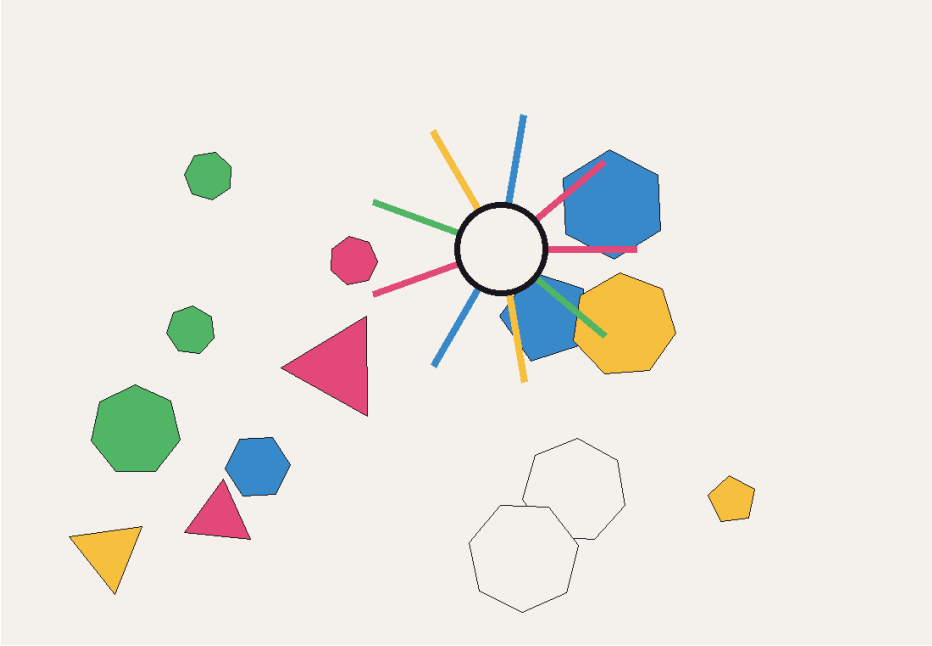

चित्र 22

आ चन्दन? गाथा हुनकापर कोनो दोष नहि राखैत। ओ त' नोकरपर तमसाइल छलीह — देवतापर नहि। दोष त' ओहि भेषक छल जे एतेक निमहल जे बाढ़नि खएबा धरि निमहल। जँ किनको दोष दी, त' ओहि प्रेमकेँ दिअनु जे भगवानकेँ नोकर बना देलक।

ई गाथा दुखान्त थिक — बिछोहपर खतम होइत अछि। मुदा एकर दुखमे एकटा अनुपम मिठास अछि: जे देवता एक बेर गीतक डोरिसँ बान्हल आबि गेलाह, से की सदा लेल जा सकैत छथि? मिथिलाक लोक कहैत अछि — नहि। आइयो जतय शुद्ध मोनसँ नचारी गाओल जाइत अछि, ओतय, कतहु लगेमे, कियो भीजल केशवला ठाढ़ भऽ कऽ सुनैत अछि।

समाप्त

VIDEHA

विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका | ISSN 2229-547X | www.videha.co.in

ऊँटनी

नकली डॉक्टरक हास्य-कथा

गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादक, विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका (since 2000)

ISSN 2229-547X

उपक्रम : बा आ ओमक साँझ

साँझ ढलल छल, आ ओमक जिद्द चरम पर छल — 'बा, आइ हास्यबला खिस्सा चाही, डरौना नहि!' बा मुस्कुरा कऽ अपन झोरीसँ एकटा एहन खिस्सा निकाललनि जे मैथिली लोककथाक भण्डारमे सभसँ बेसी हँसाओत — आ अन्तमे एकटा नीक बात सेहो सिखाओत: नक़ल केनिहार अपन बुद्धिसँ बेसी नहि जा सकैत अछि।

'सुनू ओम' — बा शुरू केलनि — 'हरियाणाक एकटा खेत, एकटा ऊँटनी, आ एकटा एहन 'डॉक्टर' जकर इलाज सुनि कऽ अहाँ हँसैत-हँसैत लोटा जाएब!'

अध्याय 1 : हरियाणाक खेत

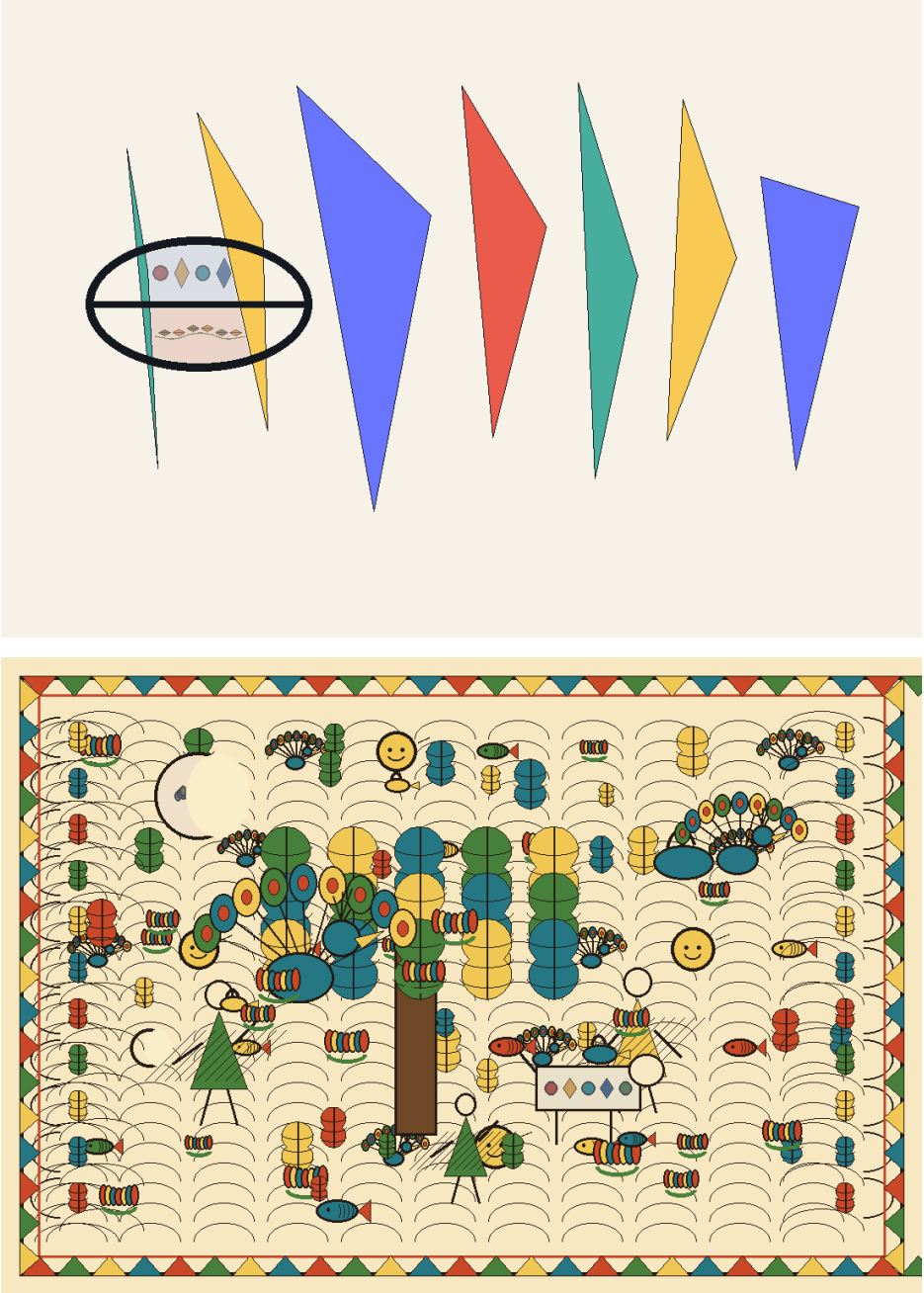

चित्र 1

हरियाणाक धरतीपर खेती-बारीक अपन रीत छल — ओतय ऊँटनीसँ हर जोतल जाइत छल, आ खेतक आरिपर जालक गाछ रोपल जाइत छल, जकर पीअर फर लू बहलापर पाकैत छल।

एहन एकटा खेतमे एक दिन एक किसान अपन ऊँटनीसँ हर जोतैत छल। धूप कड़गर, ऊँटनी काज करैत-करैत बेकल, आ किसान अपन काजमे मगन।

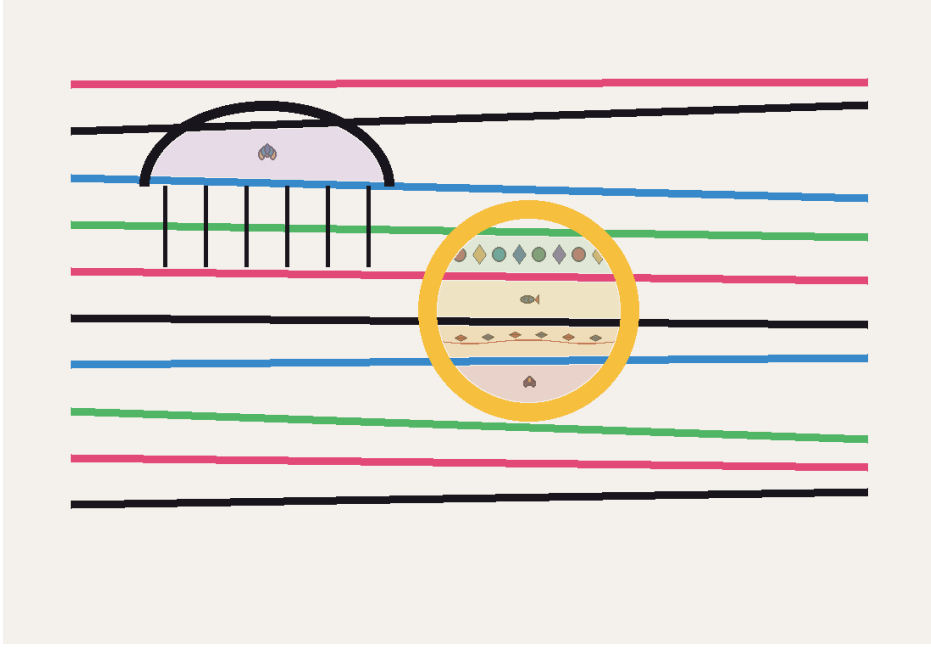

चित्र 2

ऊँटनीक गरदनि नमगर छल, आ काज करैत-करैत ओ अपन गरदनि जालक गाछ दिस मोड़ि लेलक — एकटा हरियर पात मुँहमे लऽ लेलक, बिना बुझने जे ई की केलक।

मुदा संजोग एहन जे ओ पात मुँहमे नहि, गरदनिमे गोलठिया गेल — अँटकि गेल, आ ऊँटनी बेचैन भऽ गेल। किसान हरक रस्सी छोड़ि ऊँटनीक तरफ देखए लागल — 'ई की भऽ गेलौक तोहर?'

अध्याय 2 : बटोहीक आगमन

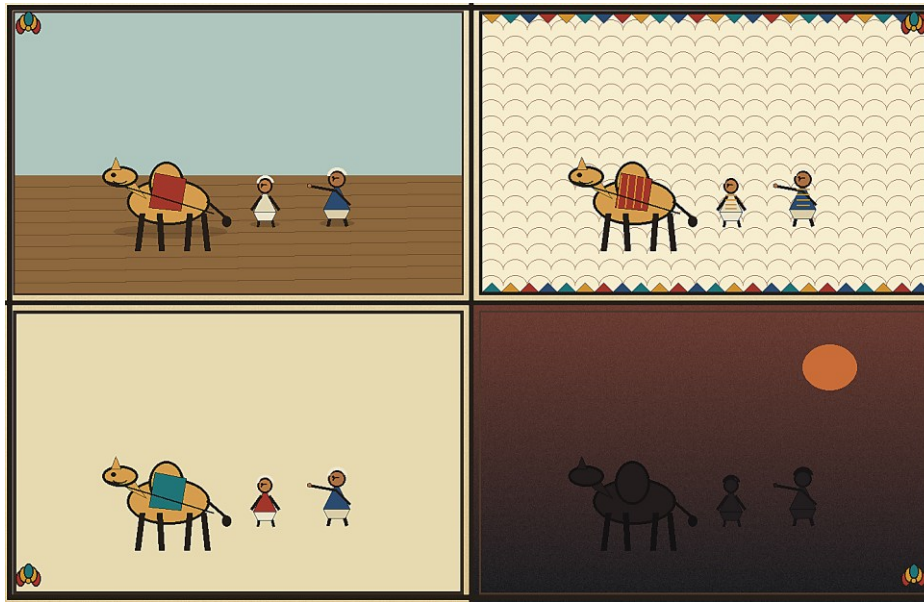

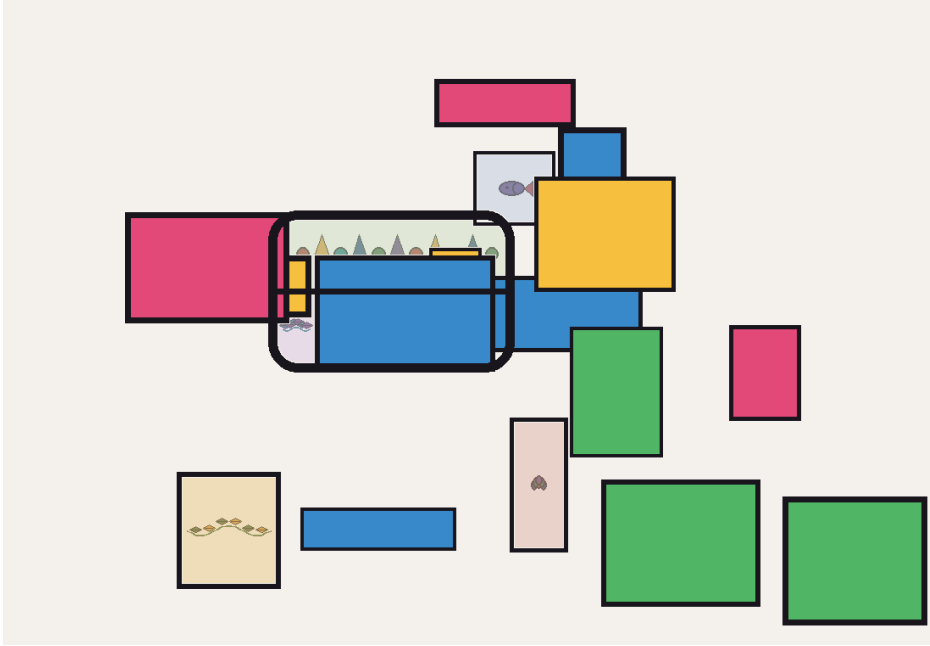

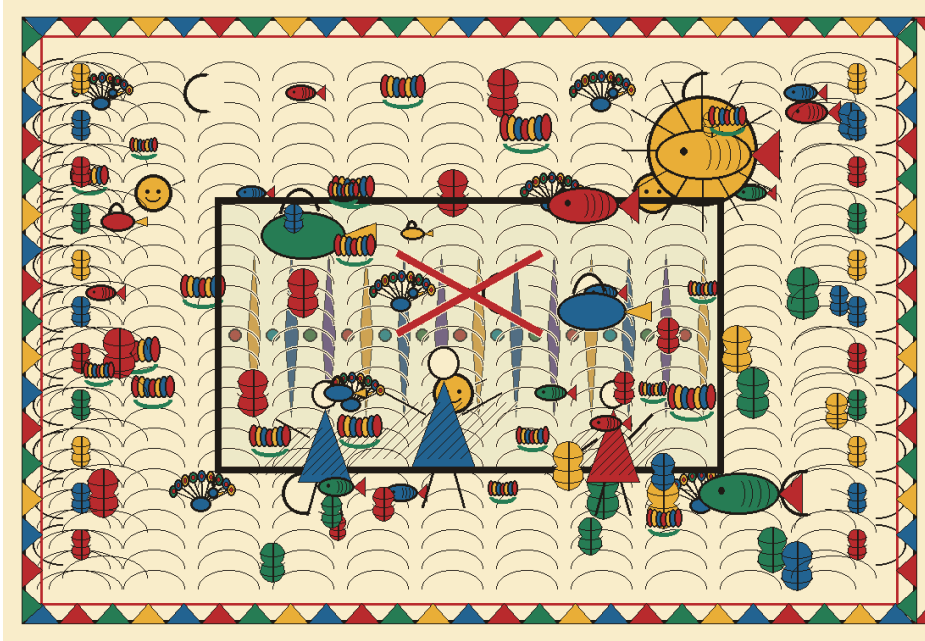

चित्र 3

ठीक ओही समय, ओहि खेतक आरि देने एकटा बटोही जा रहल छल — कतहु अपन काजसँ बिदा। ऊँटनीक बेचैनी आ किसानक परेशान चेहरा देखि ओ रुकि गेल।

'की भेल?' बटोही पुछलक।

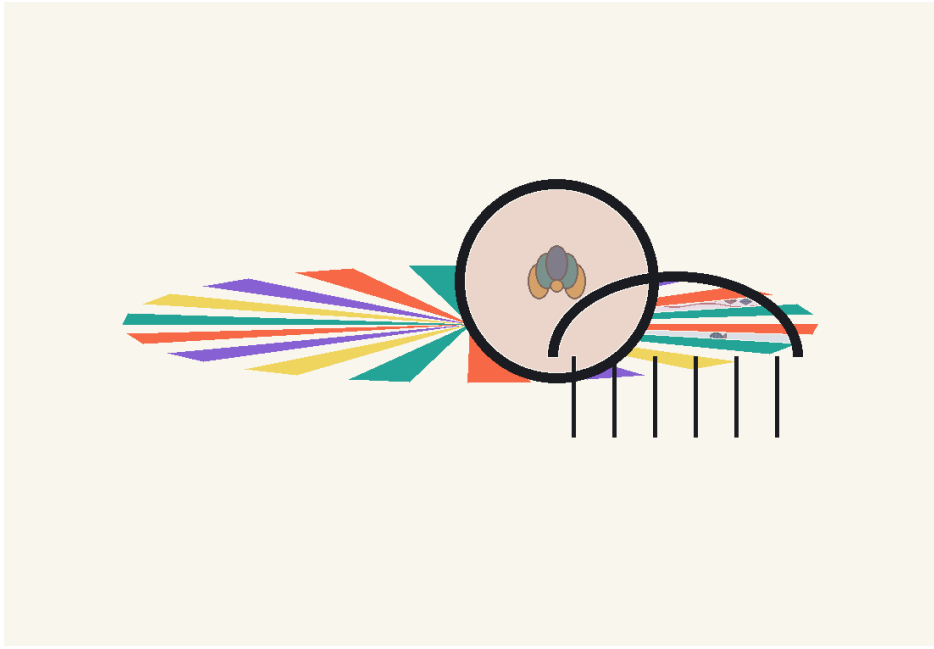

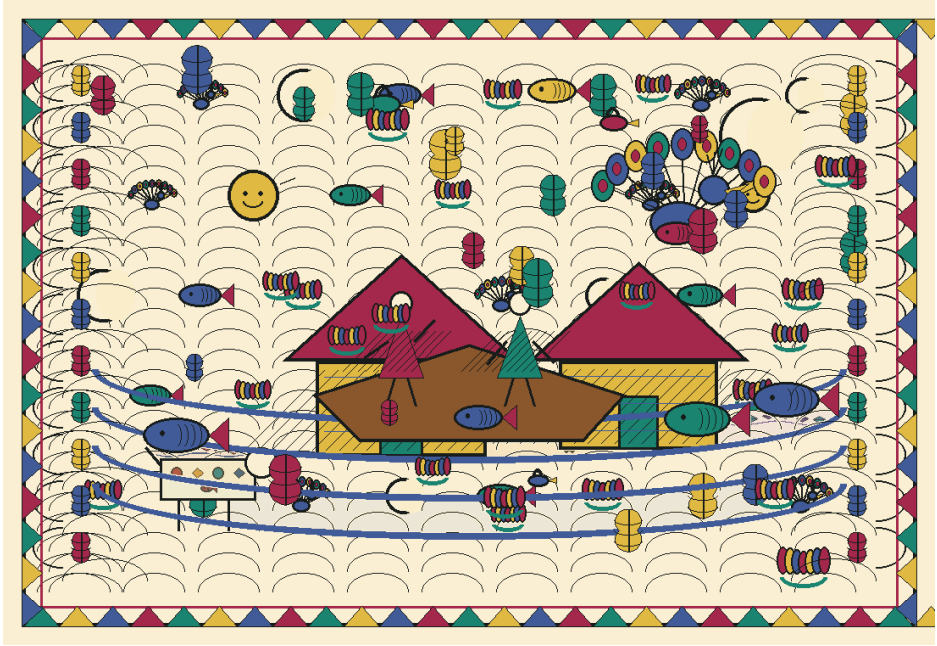

चित्र 4

किसान कहलक, 'हमर ऊँटक गरदनिमे किछु अँटकि गेल छैक। हर जोतब छोड़ि बेचैन अछि, समझ नहि आबि रहल अछि की करी।'

बटोहीक आँखिमे एकटा जिज्ञासा जागल। ओ ऊँटनी लग गेल, ध्यानसँ देखलक, आ फेर एकटा विचित्र किसिमक जाँच शुरू केलक — जेना कोनो वैद्य रोगीक हाल पुछैत हो।

अध्याय 3 : प्रश्नक क्रम

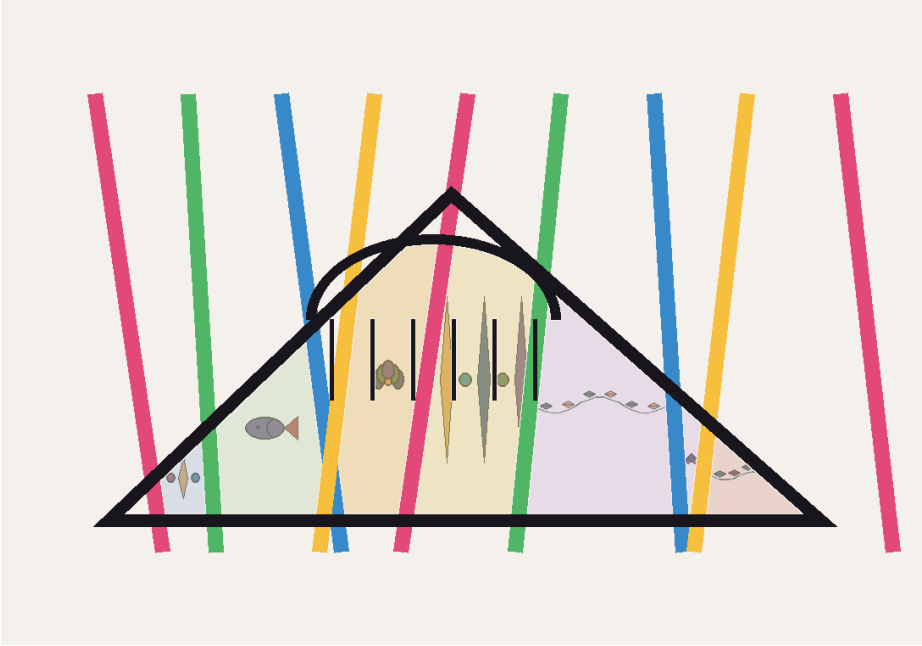

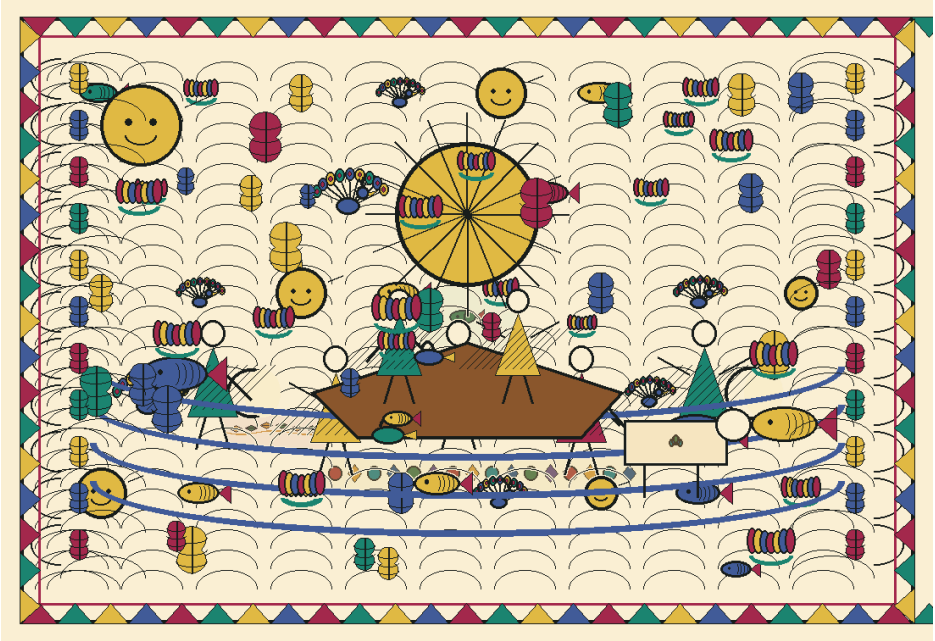

चित्र 5

बटोही पुछलक, 'ई हर जोतैत-जोतैत दहिना कात गेल छल की?' किसान माथ हिलाकऽ कहलक, 'नञि।'

'उत्तर?' — 'नञि।' 'दक्षिण?' — 'नञि।' 'वाम?' — 'हँ!' किसान अन्ततः हामी भरलक।

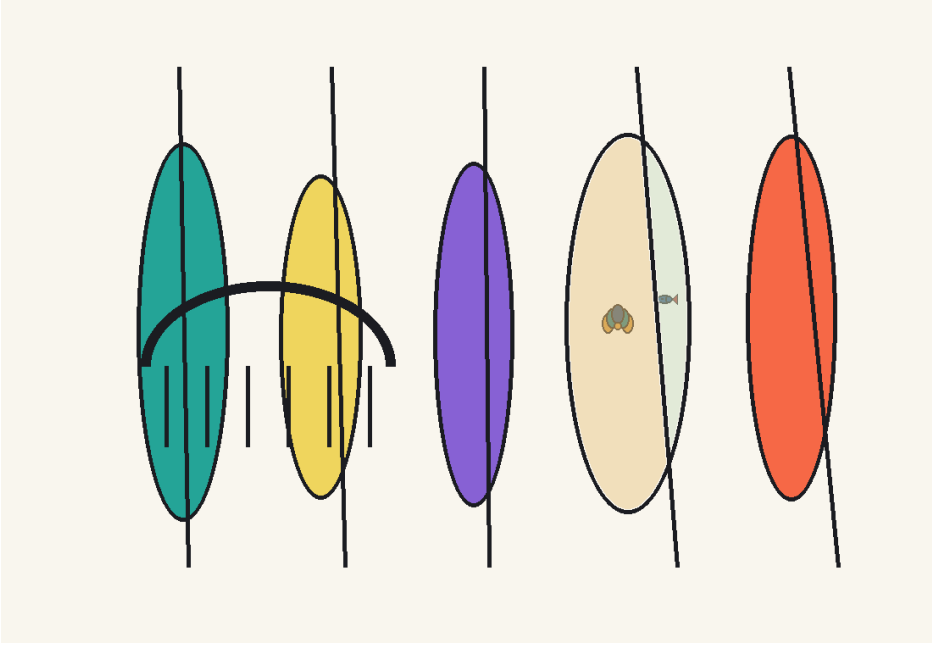

चित्र 6

बटोही फेर पुछलक, 'फेर ओ जालक पातपर मुँह मारने रहए की?' किसान सोचि कऽ जबाब देलक, 'हँ, से त' हएत!'

'कोनो गप नहि' — बटोही ई कहि कऽ आत्मविश्वाससँ आगाँ बढ़ल, जेना ओ पहिनहिये सभटा बूझि चुकल हो, आ आब खाली इलाजक बेर बाँकी हो।

अध्याय 4 : गरदनिपर हाथ

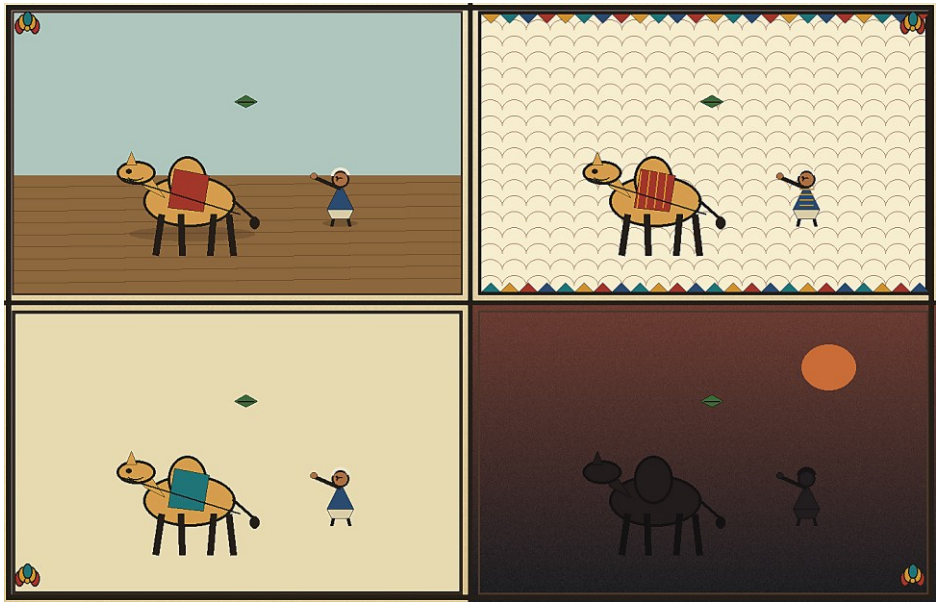

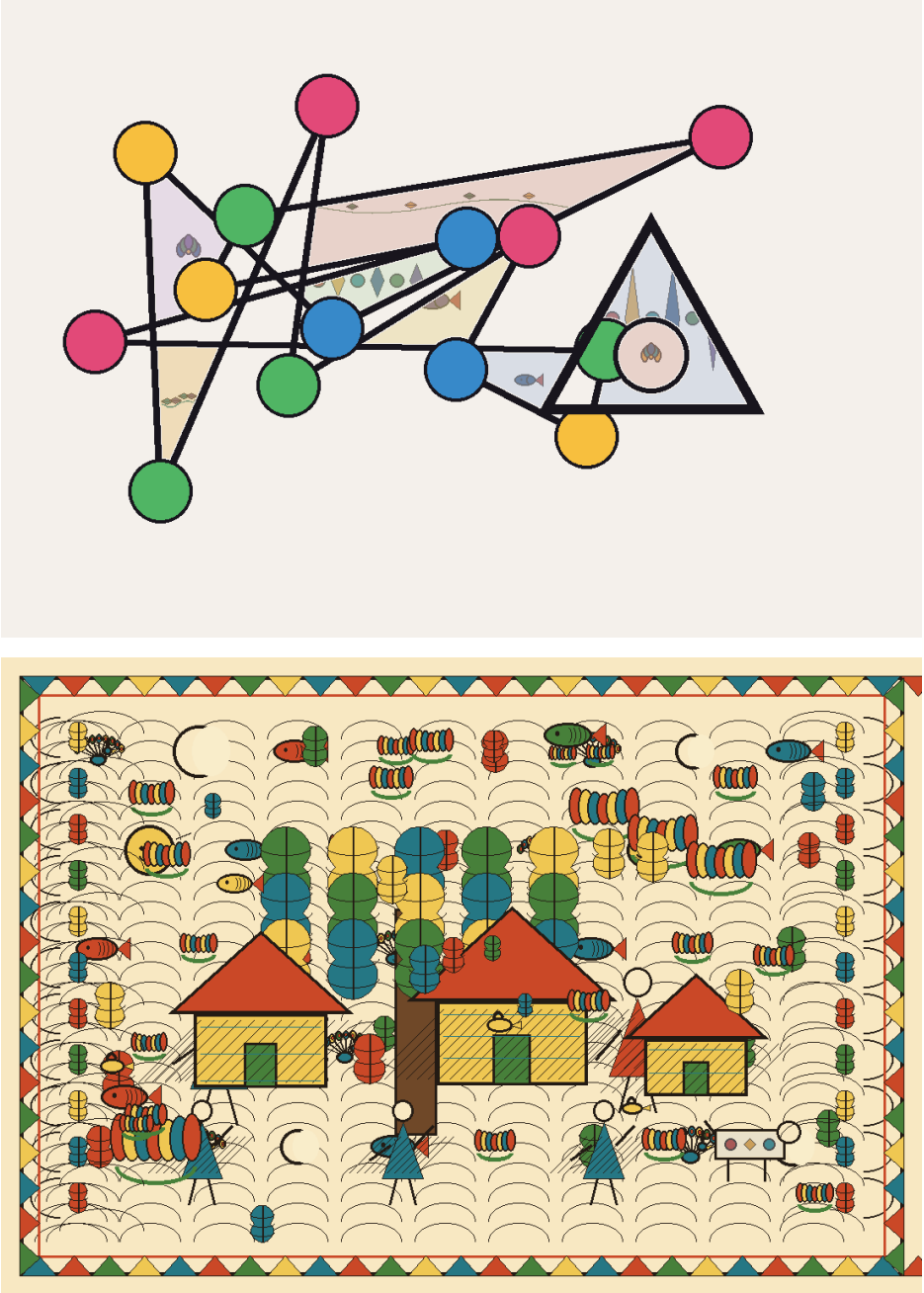

चित्र 7

बटोही ऊँटनीक गरदनिपर एक हाथ जोरसँ मारलक — 'ठक्!'

आ चमत्कार! नुरिआएल जालक पात ऊँटनीक गरदनिसँ बाहर आबि गेल — बुझू जे गोलठिया कऽ अँटकल पात हाथक धक्कासँ खसि पड़ल। ऊँटनी तुरत निचेन भऽ गेल, गरदनि सोझ केलक, आ सामान्य भऽ गेल।

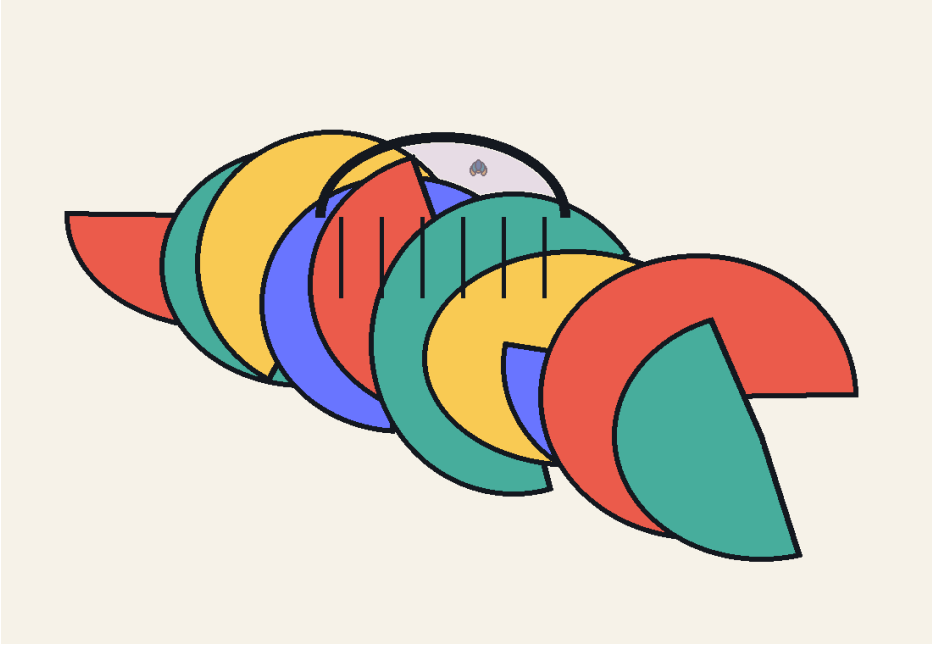

चित्र 8

किसानक आश्चर्यक ठेकान नहि रहल। 'ई त' कमाल भऽ गेल!' ओ बटोहीक ओर आश्चर्यसँ तकलक — एतेक सहजतासँ, एतेक शीघ्र, ई समस्या केना हल भेल?

'अहाँ ई करएमे कोना सक्षम भेलहुँ?' किसान पुछलक, कुतूहलसँ भरल।

अध्याय 5 : डॉक्टरी दावा

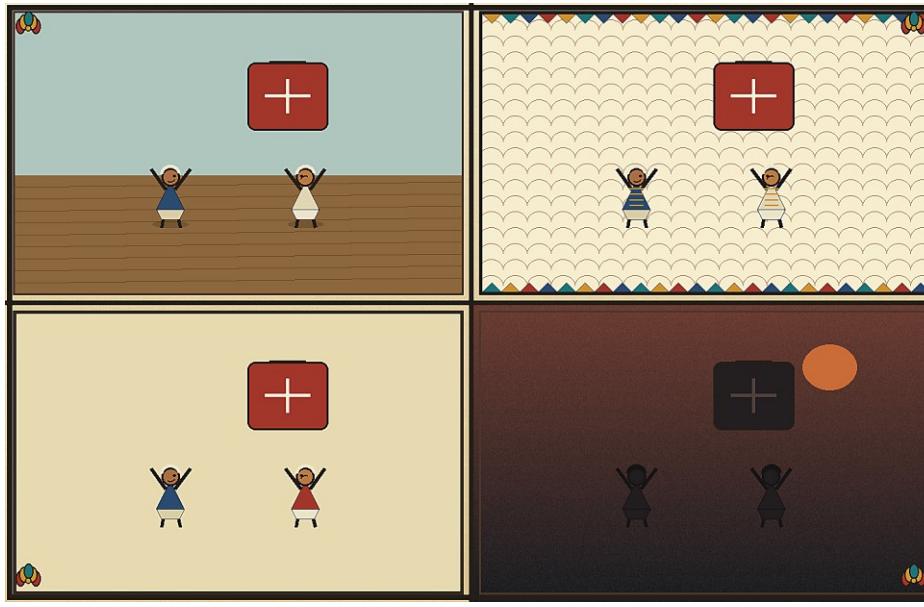

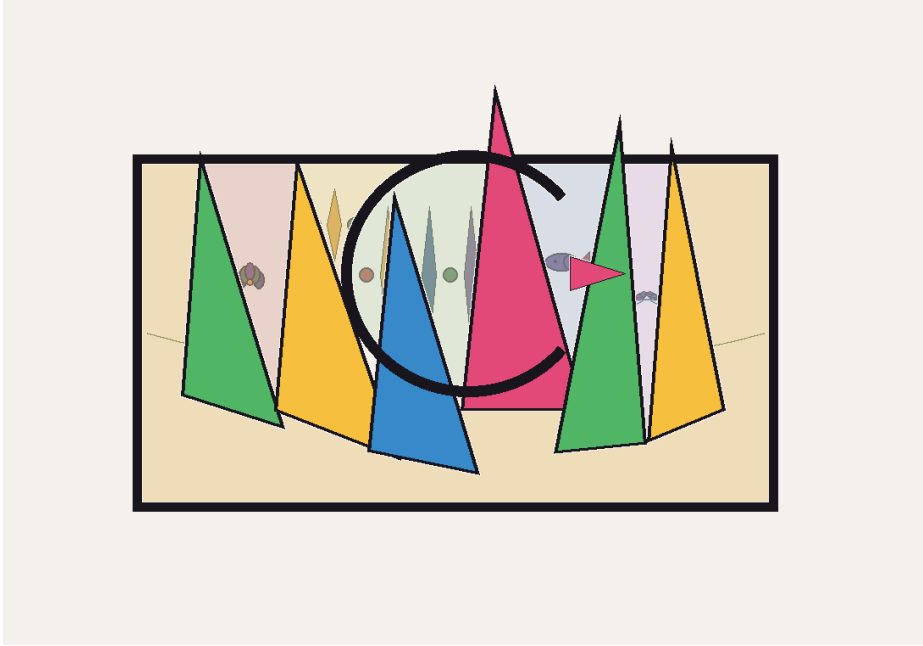

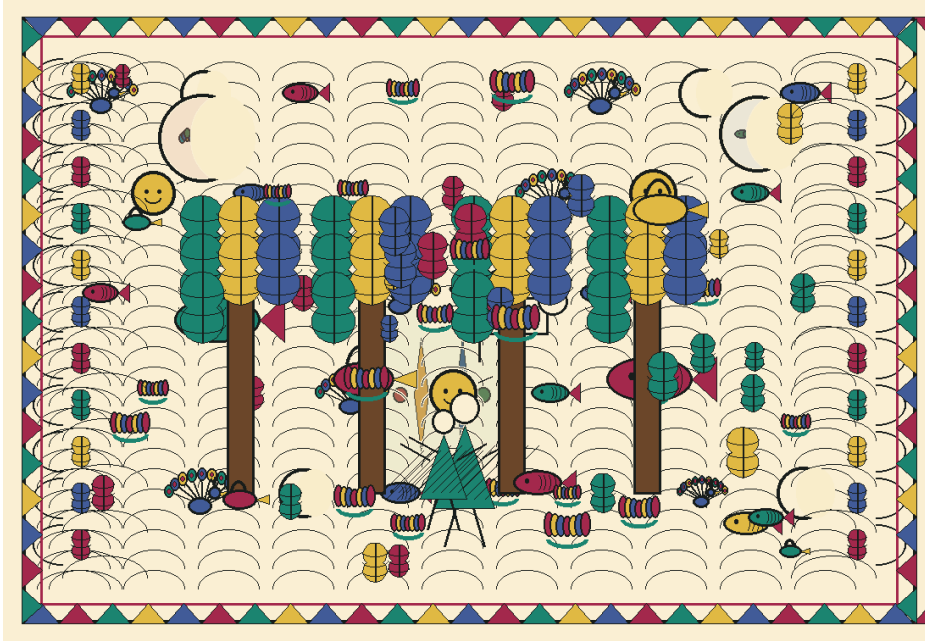

चित्र 9

बटोही गर्वसँ मुस्कुराइत कहलक, 'हम डॉक्टर छी। तेँ!'

बस, एतबे शब्द — मुदा किसानक मोनमे ई शब्द बीजक रूपमे बैसि गेल। ओकरा लागल, अरे, एतेक साधारण त' ई काज छल — बटोही केवल किछु प्रश्न पुछलक, आ फेर हाथ मारलक। एहिमे कोन बड़का बात छल?

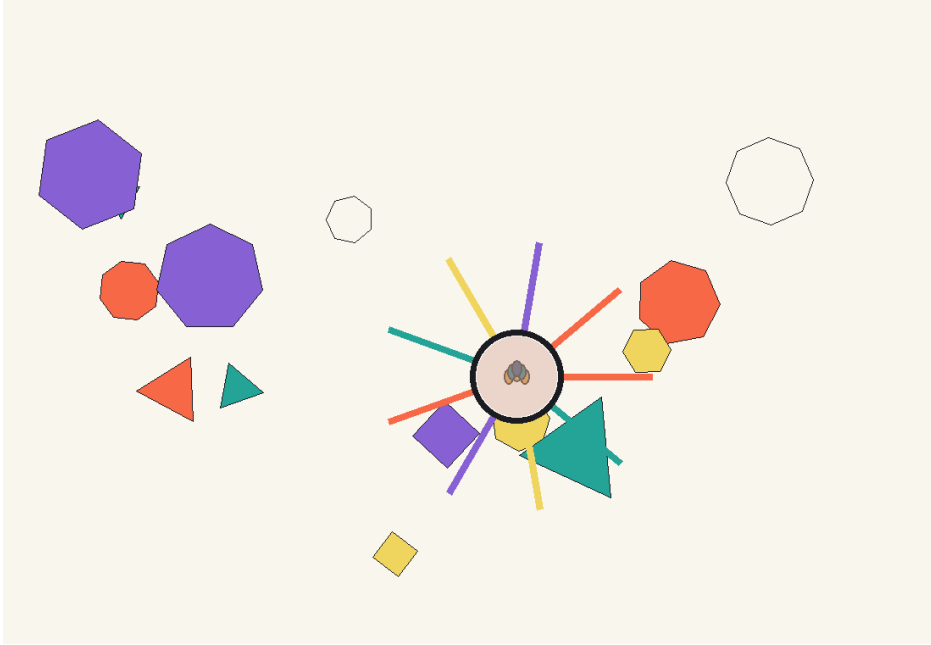

चित्र 10

किसानक मोनमे एकटा विचार कौंधल — 'अच्छा! तखन त' हमहूँ डॉक्टरी कऽ सकैत छी!' — जेना डॉक्टरी कोनो जटिल विद्या नहि, बस देखा-देखी सीखल जा सकैवला काज होअए।

बटोही अपन बाटे बिदा भऽ गेल, ई नहि जनैत जे ओकर एहि साधारण उपायसँ किसानक मोनमे केहन विचित्र विचार जनम लऽ लेलक अछि। किसान ओतहि ठाढ़ भऽ अपन नव 'डॉक्टरी'क सपना देखए लागल।

अध्याय 6 : नव 'डॉक्टर' गामक बाट

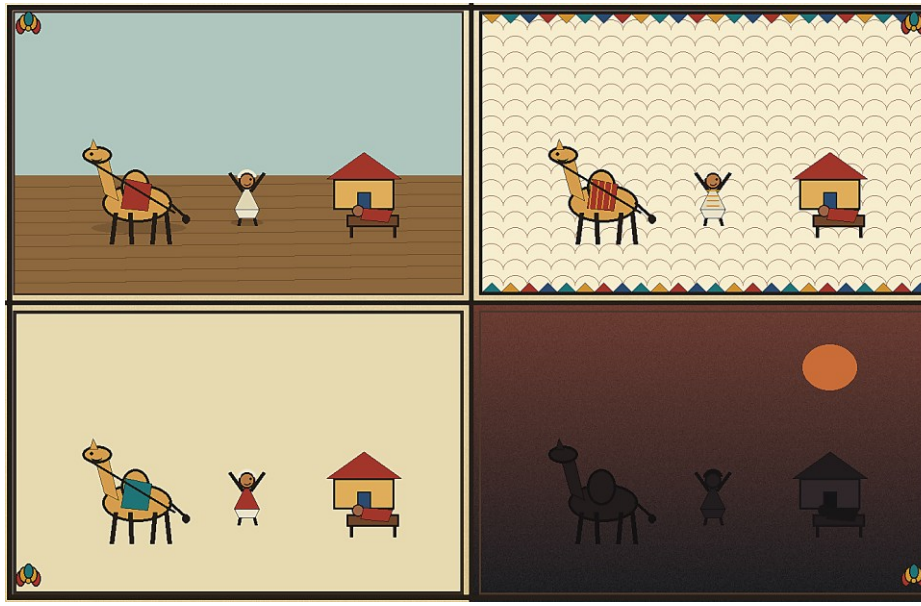

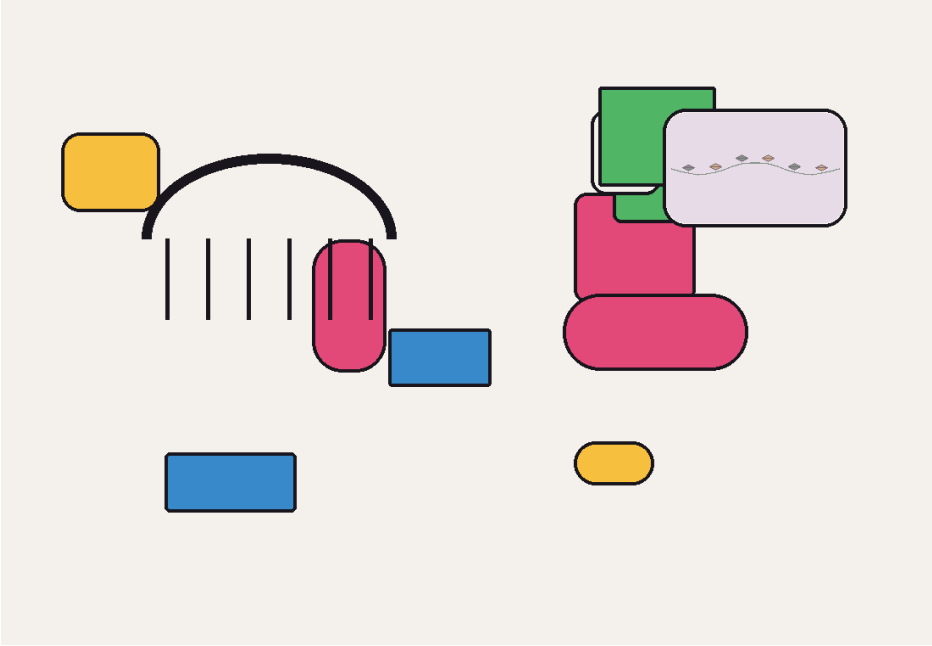

चित्र 11

किसान अपन हर-बरद छोड़ि, ऊँटनी लऽ कऽ सीधा दोसर गाम दिस बिदा भेल — अपन नव विद्याक परीक्षण करबाक उत्साहमे।

गाममे पहुँचि ओ जोर-जोरसँ चिकरए लागल — 'हम डॉक्टर छी! हम डॉक्टर छी! ककरो जे इलाज करेबाक होअए, त' हमरा लग आऊ, इलाज कराऊ!'

चित्र 12

गामक लोक अकचकाइत एक-दोसराकेँ देखए लागल — के अछि ई नव 'डॉक्टर', जे एना चिकरैत अपन डॉक्टरी बेचि रहल अछि?

ठीक ओही गाममे एकटा बुढ़िया सूतल छलि — मोन खराप, बिमार, चारपाइपर लेटल। बुढ़ियाक परिवारजन एहि नव डॉक्टरक चिकरब सुनि तुरत हुनका बजा कऽ अनलक — 'आउ डॉक्टर साहेब, हमर बुढ़ी माएकेँ देखू।'

अध्याय 7 : नकल-प्रश्नावली

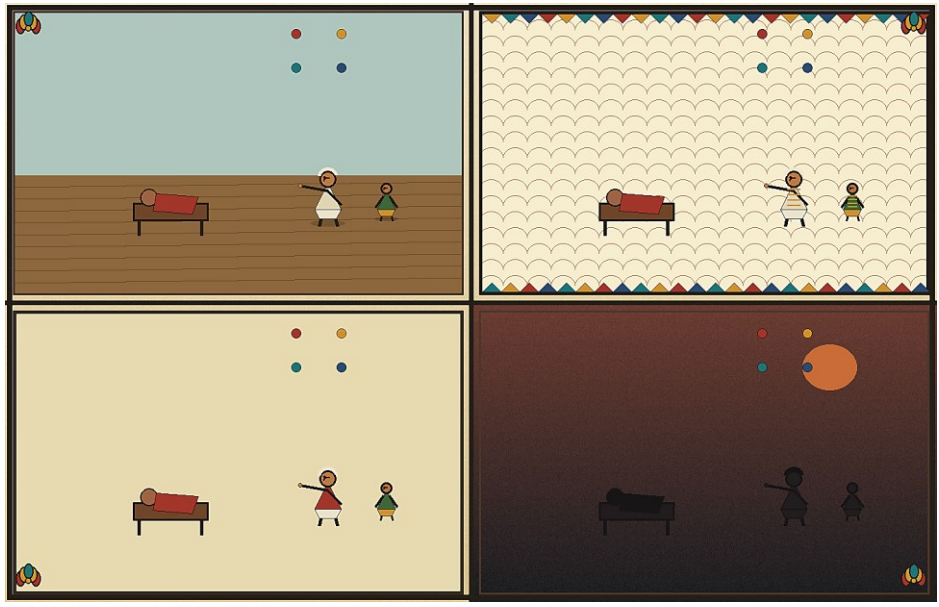

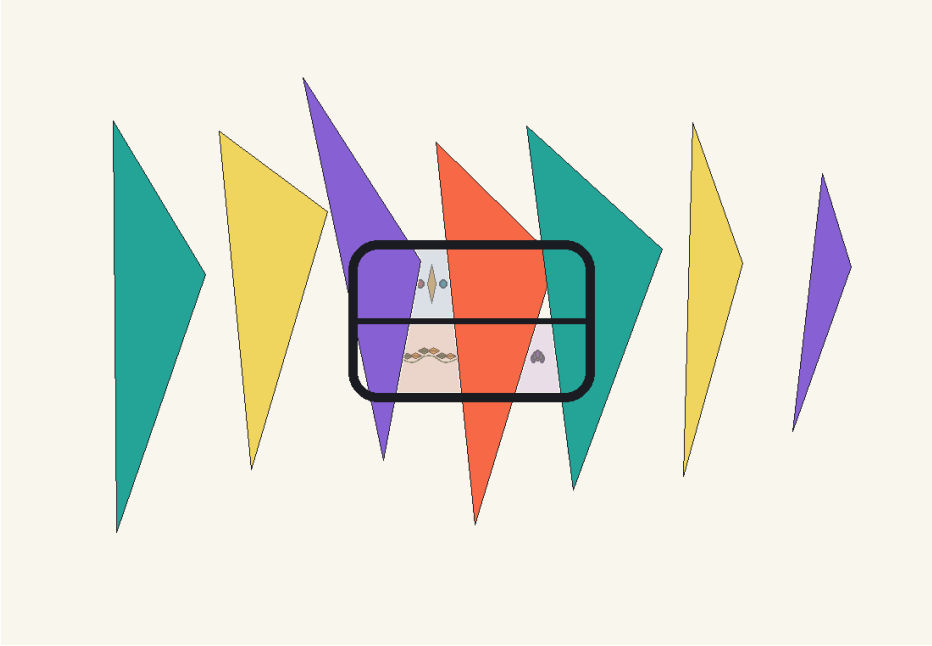

चित्र 13

किसान (आब 'डॉक्टर') बुढ़ी लग पहुँचल आ ठीक वैह प्रश्न-क्रम शुरू केलक, जे बटोहीसँ सीखने छल — बिनु ई बुझने जे प्रश्न मनुक्खक लेल नहि, ऊँटनीक गरदनिक लेल बनल छल।

'बुढ़ी दहिना कात गेल छलीह की?' — परिवारजन अचंभित, फेर कहलक 'नञि।' 'उत्तर?' — 'नञि।' 'दक्षिण?' — 'नञि।' 'वाम?' — 'नञि।'

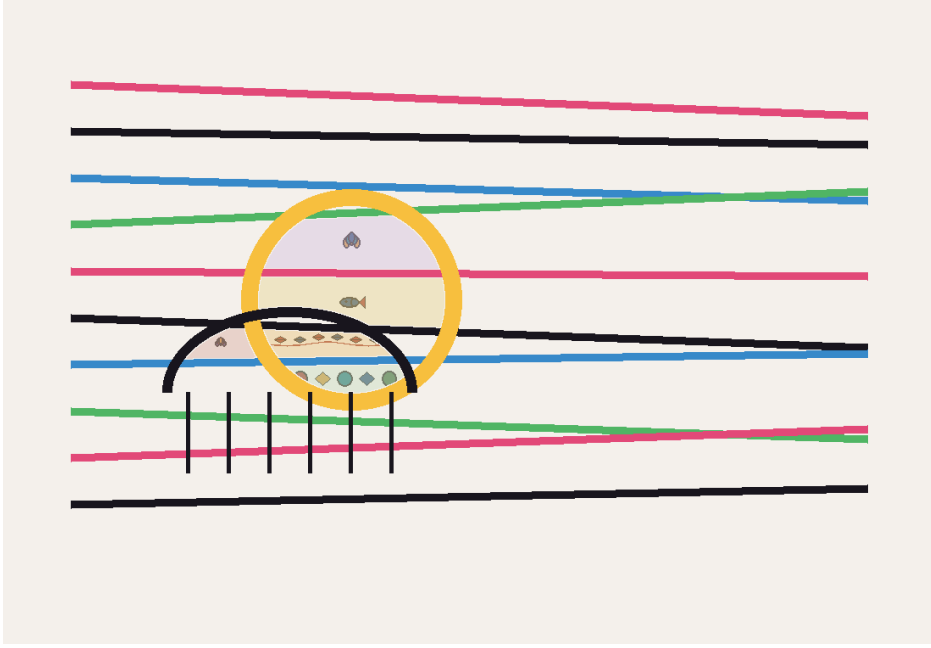

चित्र 14

सभटा जबाब 'नञि' सुनि 'डॉक्टर' किसान थोड़ा असहज भऽ गेल — कारण बटोहीक जादू त' एकटा 'हँ' सुनिते चलल छल। ओ आग्रह केलक, 'एक बेर हँ कहि कऽ त' देखू!'

परिवारजन, डॉक्टरक विश्वासमे आबि, 'हँ' कहि देलक — बिनु ई बुझने जे ओ कोन प्रश्नक हँ भरि रहल छथि।

अध्याय 8 : जालक पातक हास्यास्पद प्रश्न

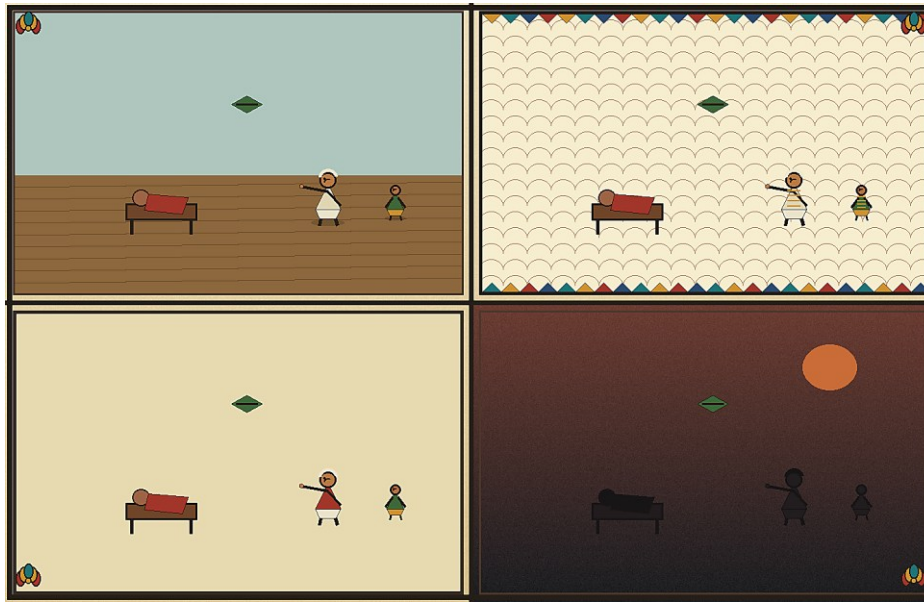

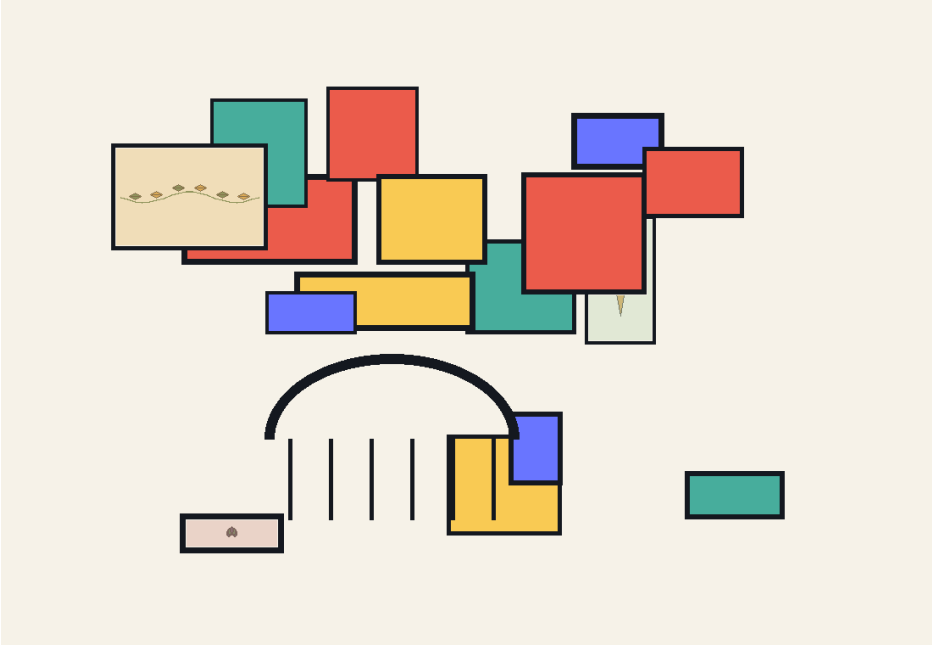

चित्र 15

आब 'डॉक्टर' किसान अपन अन्तिम प्रश्न पुछलक — 'फेर ओ जालक पातपर मुँह मारने रहथिन् की?' — ठीक वैह प्रश्न, जे ऊँटनीक लेल उपयुक्त छल, मुदा एकटा बिमार बुढ़ीक लेल पूर्णतः निरर्थक।

परिवारजन एहि प्रश्नपर आश्चर्यचकित रहि गेल — 'मनुक्ख जालक पात किएक खाएत?' ई प्रश्न सुनिते सभकेँ हँसी आबि सकैत छल, मुदा डॉक्टरक आत्मविश्वास एतेक दृढ़ छल जे केओ हिम्मत नहि केलक विरोध करबाक।

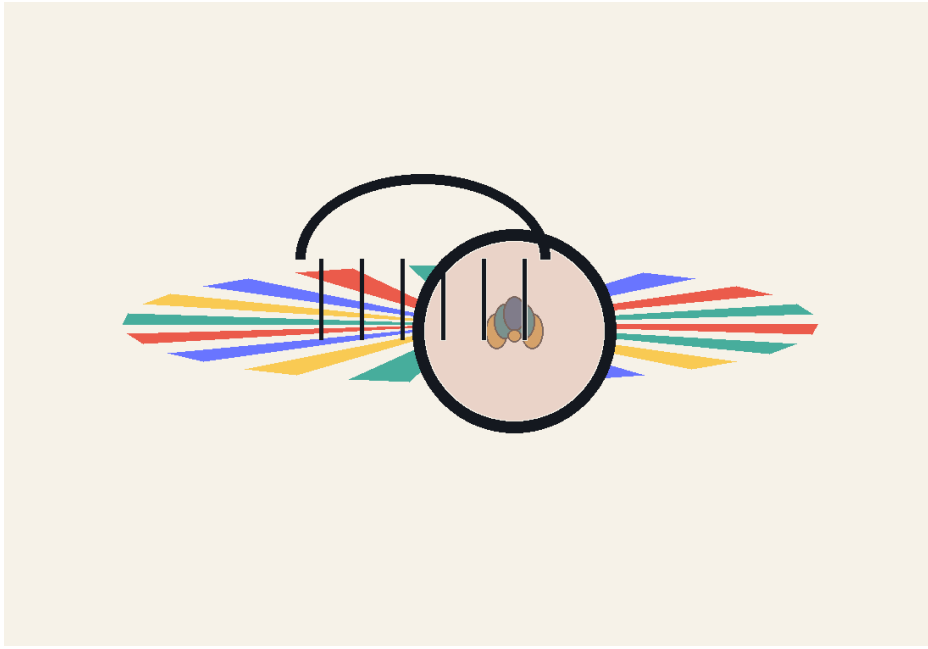

चित्र 16

अन्ततः, डॉक्टरक आग्रहपर, परिवार वाला सेहो 'हँ' कहि देलक — बुढ़ी शायद जालक पात खेने हेती, एहन सोचि, वा खाली डॉक्टरक बात मानबाक विवशतामे।

अब सभटा प्रश्न पूरा भऽ गेल छल, आ 'डॉक्टर'क आत्मविश्वास चरमपर पहुँचि गेल — जेना ओ निदान कऽ चुकल हो, आ आब खाली इलाजक अन्तिम चरण बाँकी हो।

अध्याय 9 : दुखान्त मोड़

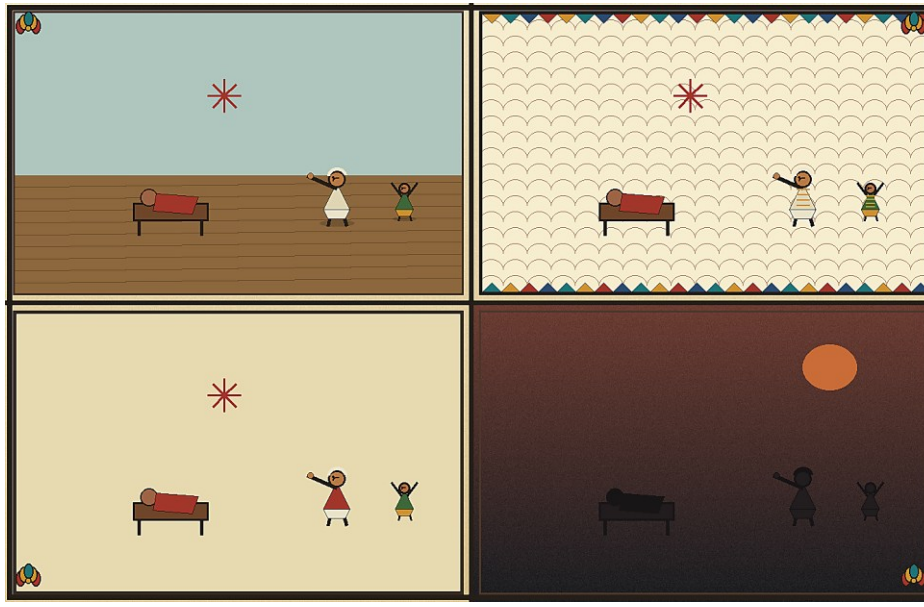

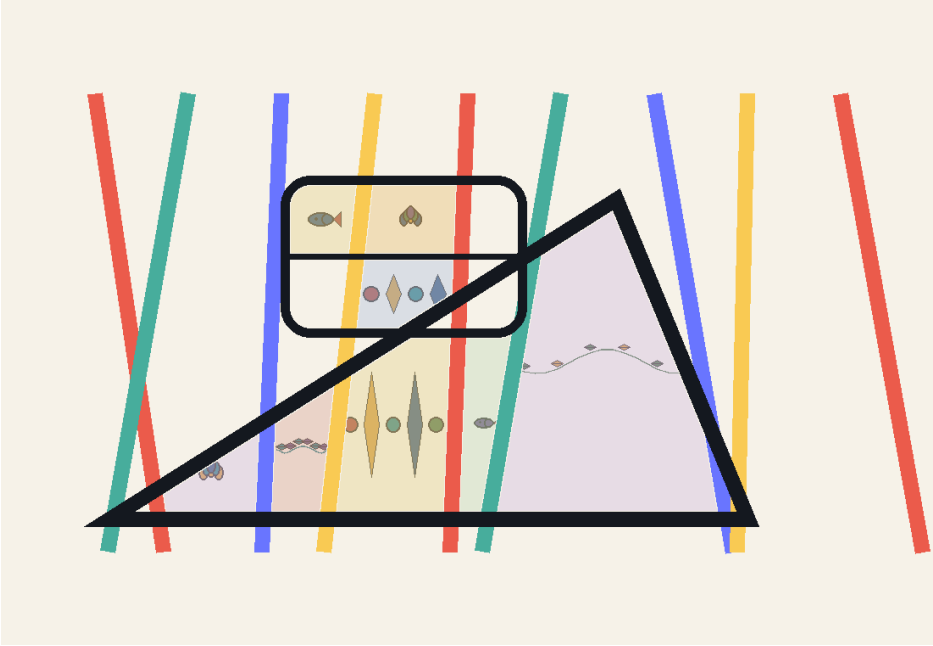

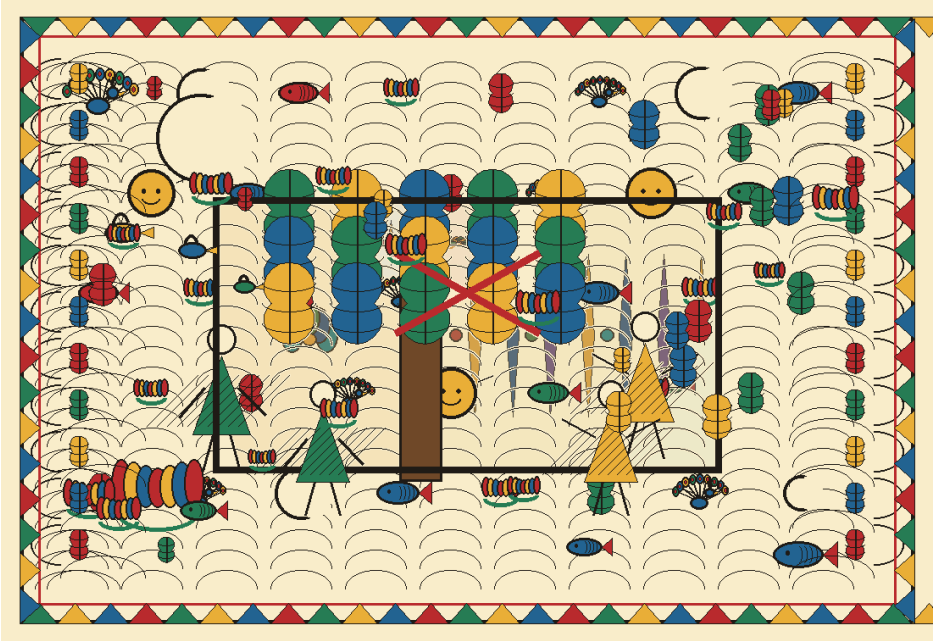

चित्र 17

आब बटोहीक विधिक अनुसरण करैत, 'डॉक्टर' किसान बुढ़ीक गरदनिपर जोरसँ हाथ मारलक — ठीक ओहिना, जेना ऊँटनीक गरदनिपर मारल गेल छल।

मुदा ऊँटनी आ मनुक्खक गरदनिमे अन्तर होइत अछि! बुढ़ी त' पहिनहिये लटकल जकाँ, कमजोर हालतिमे छलि — हाथक ई भरपूर धक्का सहन करबाक क्षमता ओकरामे नहि रहल।

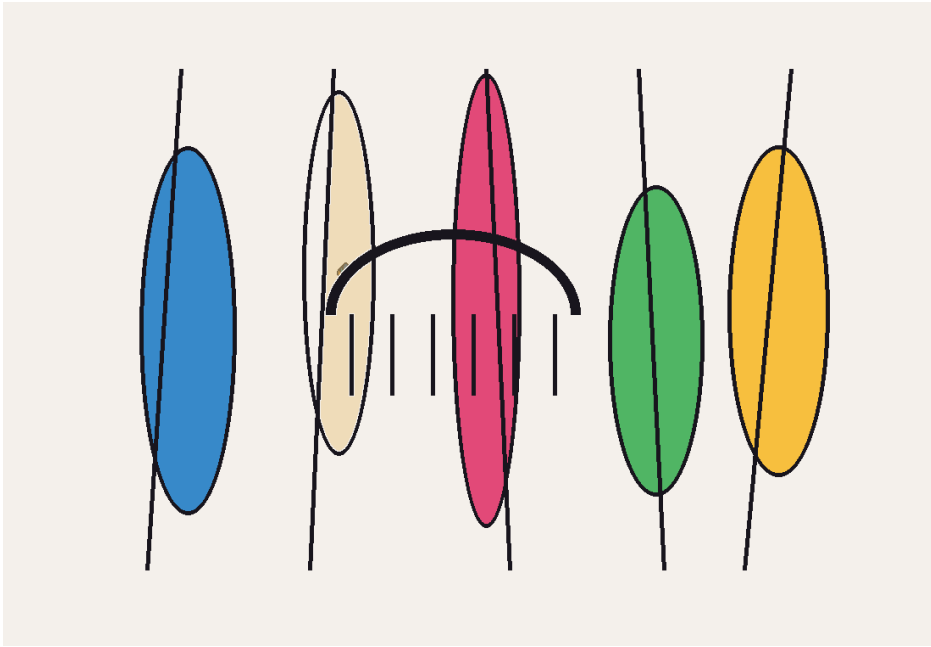

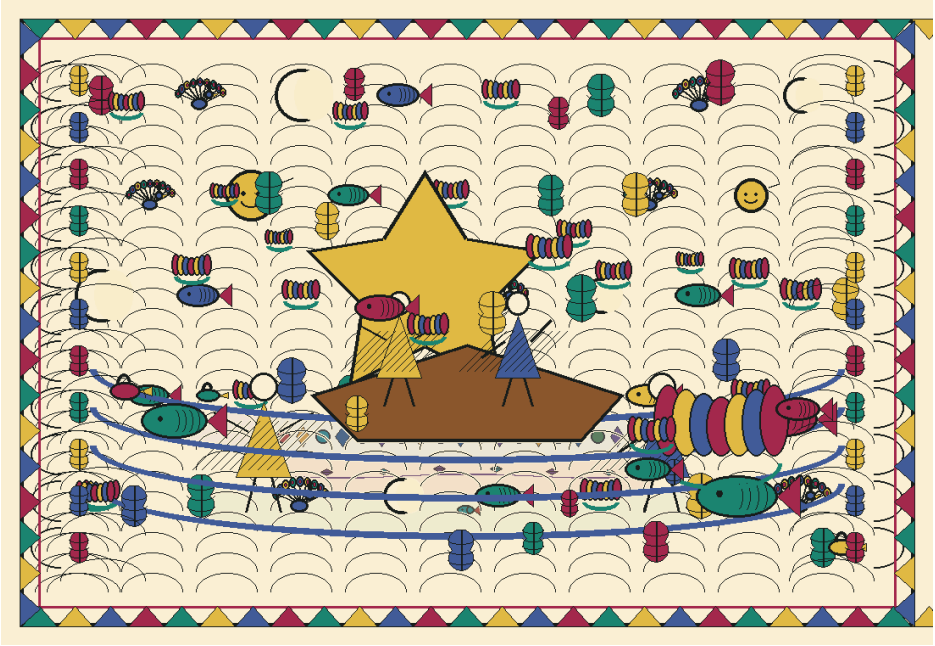

चित्र 18

बुढ़ीक प्राण ओतहि निकलि गेलनि। हास्यक ई खिस्सा एक क्षणमे एकटा भयंकर मोड़ लऽ लेलक — जे इलाज एकटा ऊँटनीक गरदनिक लेल कारगर छल, से मनुष्यक प्राणहरण बनि गेल।

घरमे कोहराम मचि गेल। परिवारजन स्तब्ध, आ 'डॉक्टर' किसान — जे किछु क्षण पहिने गर्वसँ भरल छल — आब अपन कीर्तिमानपर चकित आ भयभीत, दुनू भऽ गेल।

अध्याय 10 : लहासक कान्हा

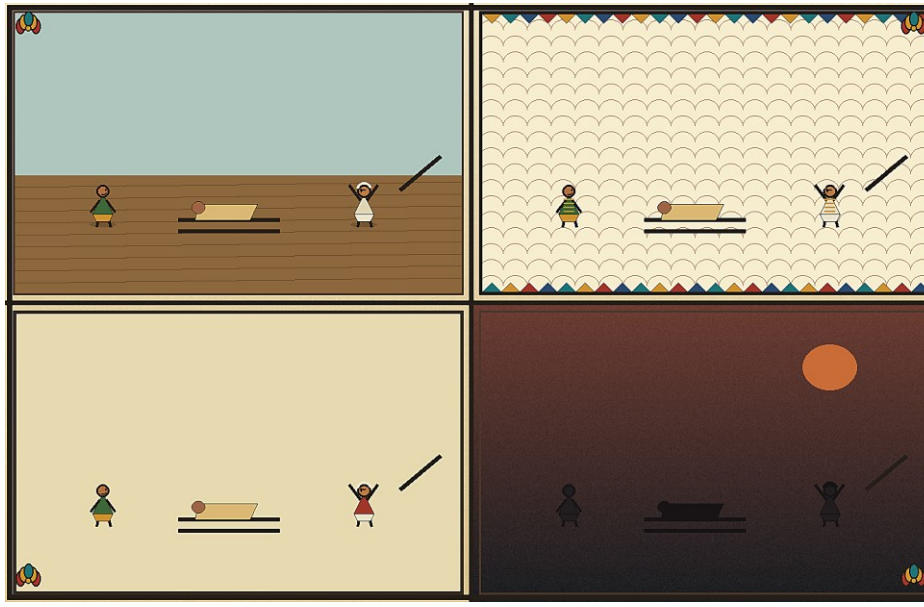

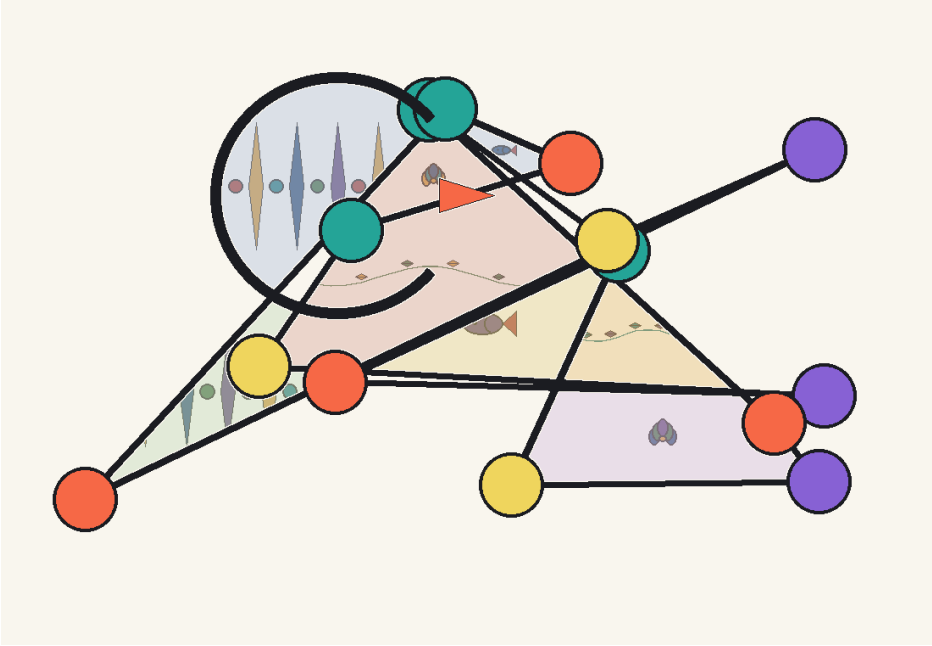

चित्र 19

घरमे मात्र तीन गोटे बाँचल छल शोक मनेबाक — आ लहास उघबाक लेल एतेक हाथ नहि छल। बिवशतामे परिवारजन डॉक्टरोकेँ लहास कान्ह देबाक लेल बजओलक।

'डॉक्टर' किसान — जे इलाज करैत आयल छल, से आब कान्हपर लहास उठौने बेसुध भऽ गेल। ई ओकर पहिल अनुभव छल एहन बोझक — शारीरिक बोझसँ बेसी अपराधबोधक बोझ।

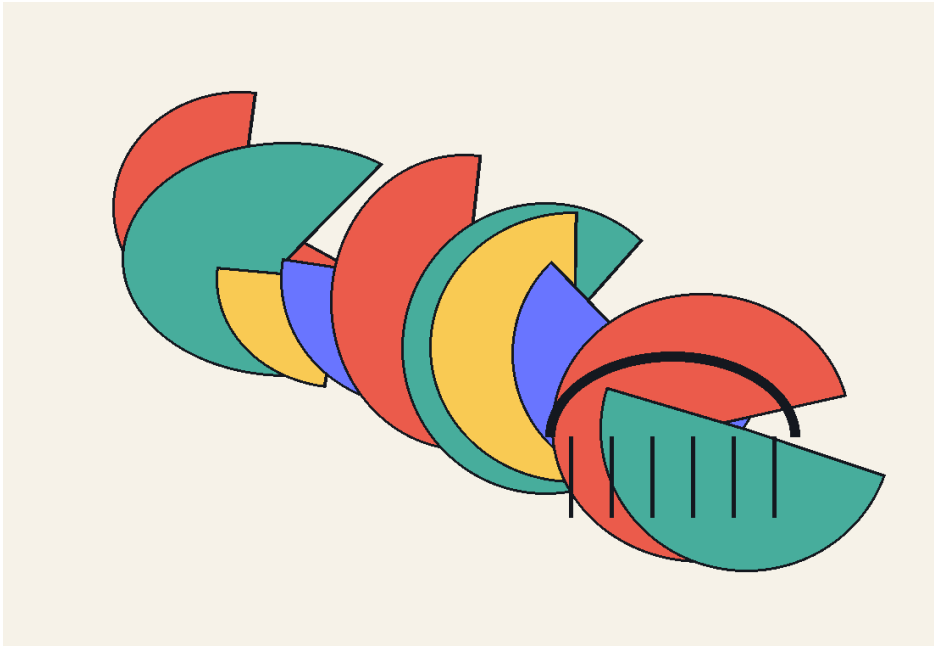

चित्र 20

बूढ़ीक अन्तिम क्रिया भेल — पूरा गामक शोक-सन्नाटामे। मुदा जखन सभटा विधि सम्पन्न भऽ गेल, त' 'डॉक्टर' किसान अपन फीस माँगए पहुँच गेल — जेना किछु भेले नहि हो!

परिवारजनक धैर्य टूटि गेल। ओ सभ मारि-मारि कऽ ओहि 'डॉक्टर'केँ घरसँ खेदड़ि देलक। जे व्यक्ति अपन नकल-विद्यासँ एकटा प्राण लऽ लेने छल, से आब फीसक लोभमे मार खा रहल छल — यएह न्याय एहि खिस्साक सभसँ हास्यास्पद-कटु मोड़ थिक।

अध्याय 11 : दोसर गामक बाट

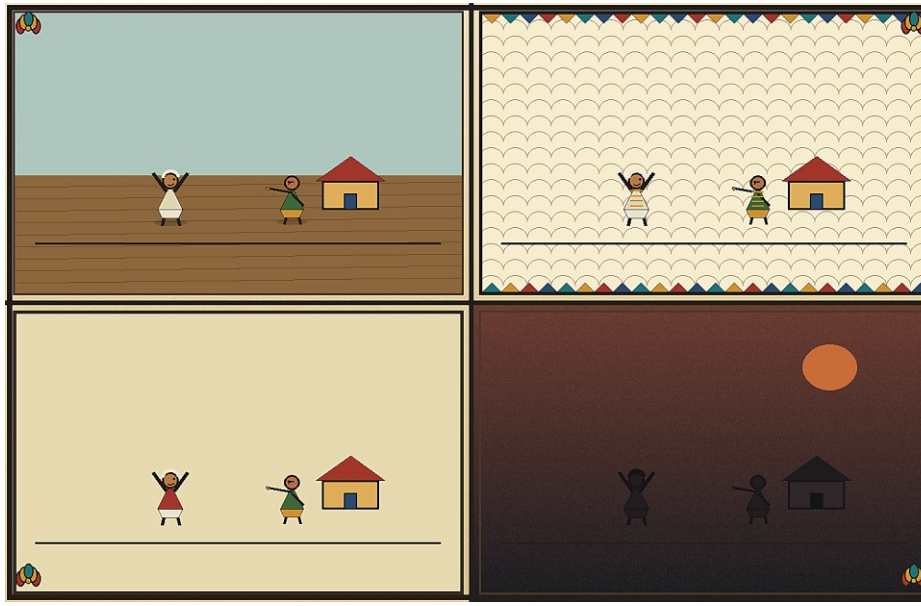

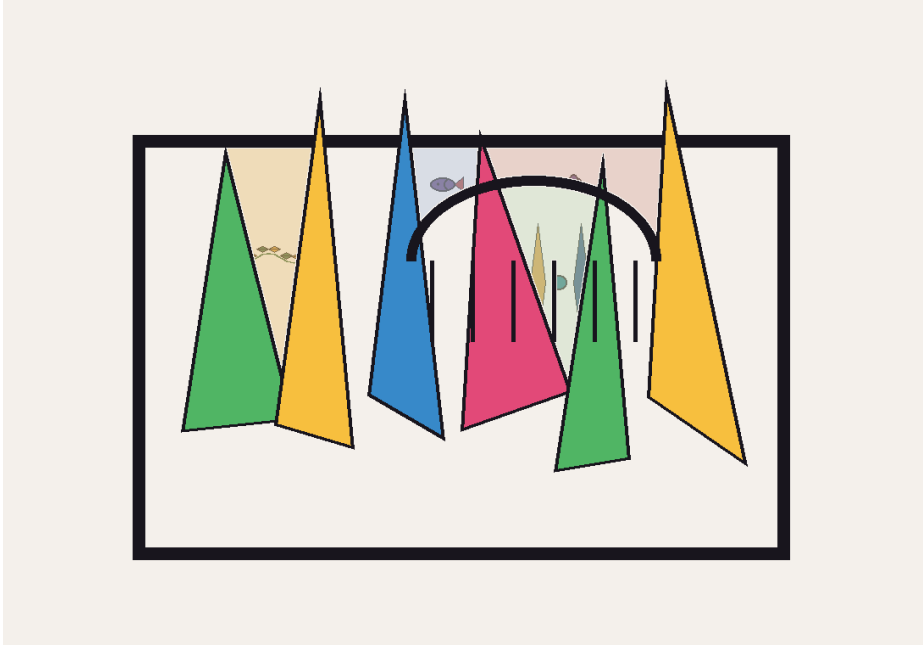

चित्र 21

मार खाइत-खाइत किसान ओतयसँ भागल — सीधा दोसर गाम दिस, अपन पहिल विफलतासँ कोनो सबक नहि सिखने। अजीब बात — ओकर उत्साह मरल नहि छल!

दोसर गाम पहुँचिते ओ फेर वैह पुरान चिकरब शुरू केलक — 'इलाज कराऊ! इलाज कराऊ! हम डॉक्टर छी!'

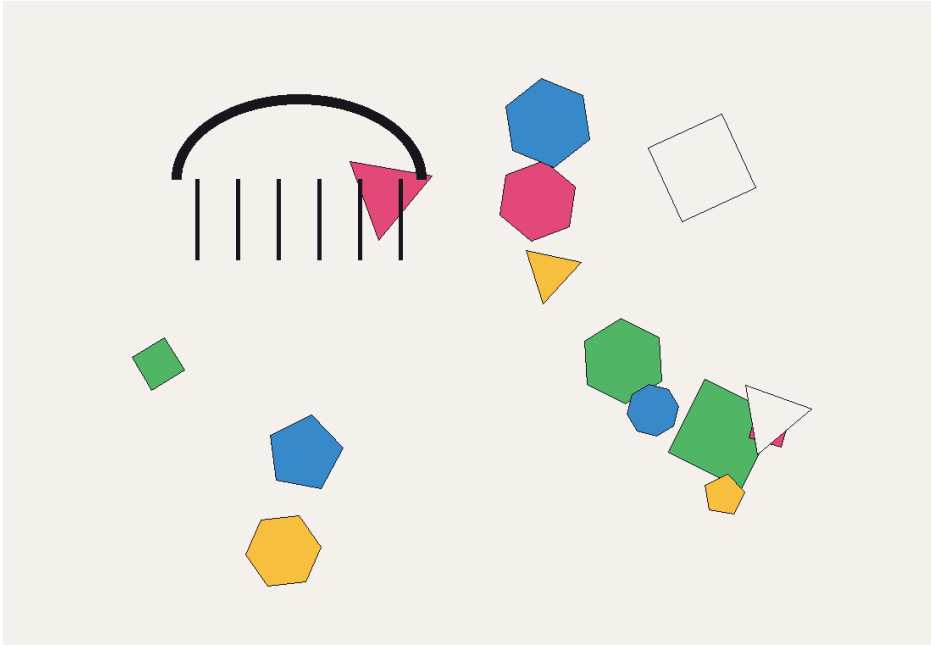

चित्र 22

गामक लोक ओकर हल्ला सुनि जुटए लागल। एक गोटे आगाँ आबि कऽ कहलक, 'चलू डॉक्टर साहेब, हमर बाबूजीक मोन खराप छन्हि, इलाज कऽ दियन्हु।'

ई सुनिते किसानक मोनमे — शायद पहिल बेरक अनुभवसँ किछु त' सीख भेटले छल — एकटा विचित्र सतर्कता जागल। पिछला बेरक दुर्घटना ओकर मोनक कोनमे कतहु बैसल छल।

अध्याय 12 : अन्तिम शर्त

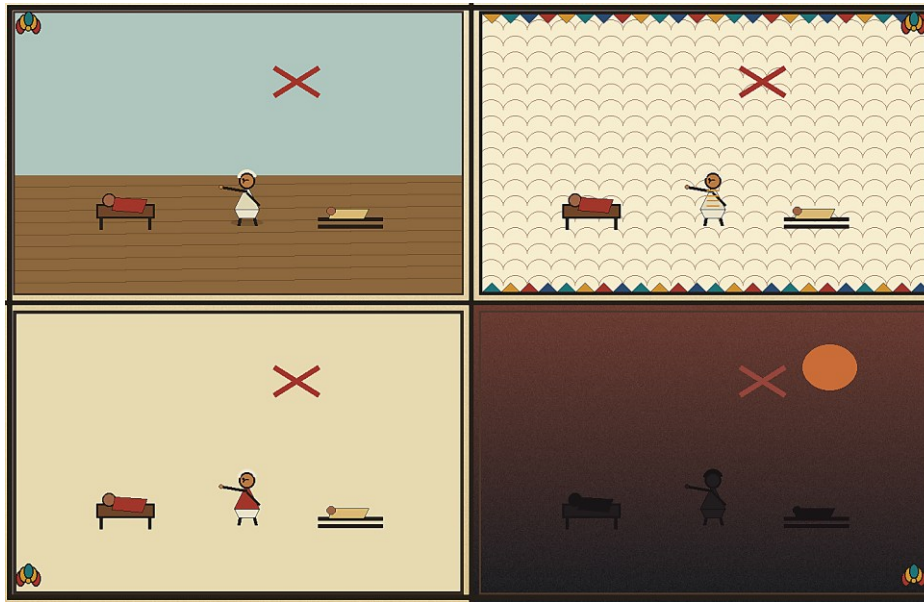

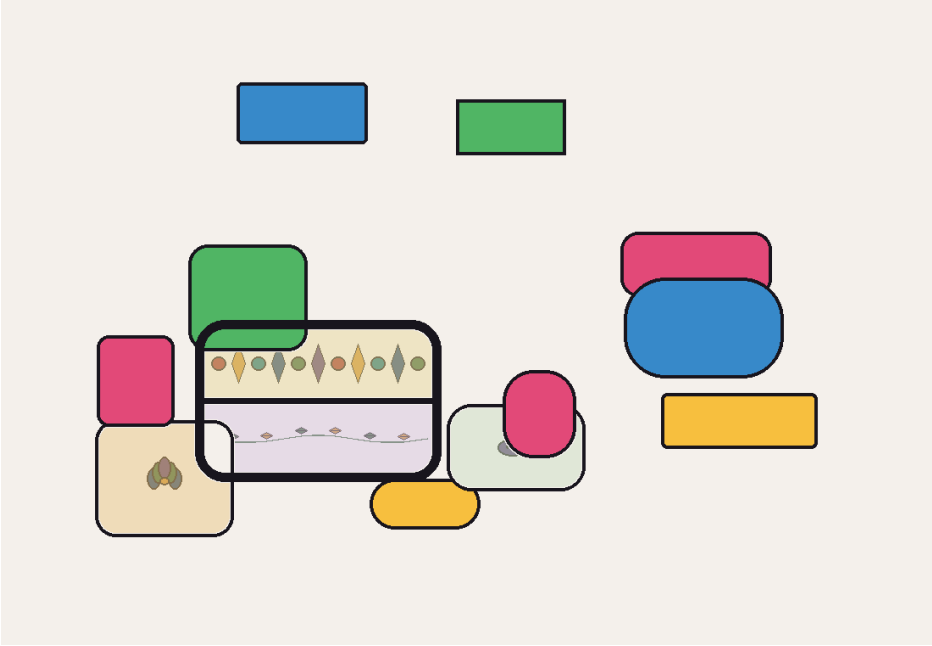

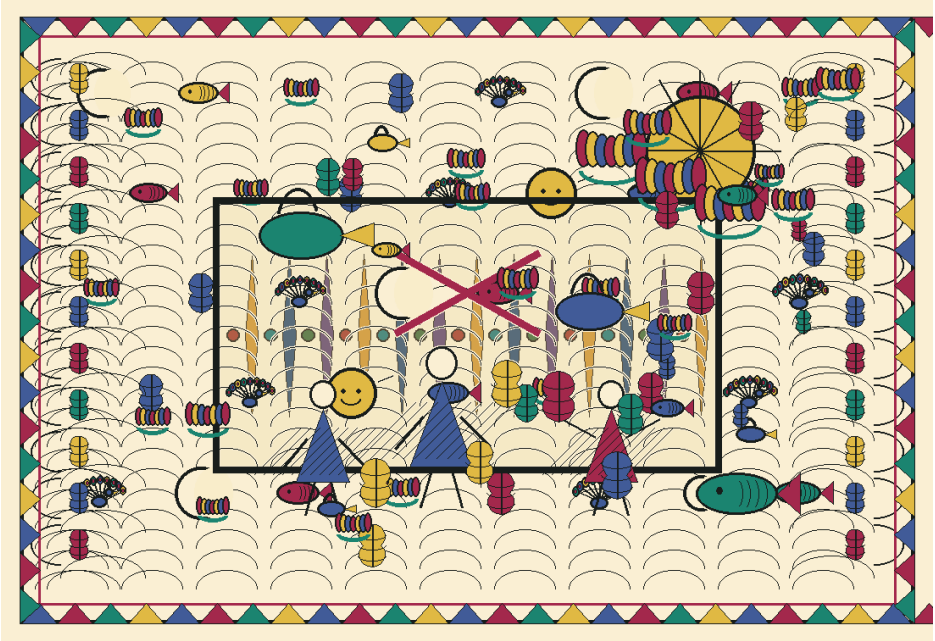

चित्र 23

किसान (अखनहुँ अपनाकेँ डॉक्टर मानैत) ओहि व्यक्तिकेँ उत्तर देलक — एकटा एहन उत्तर, जे एहि पूरा खिस्साक सभसँ हास्यास्पद आ सभसँ चतुर वाक्य थिक: 'इलाज त' हम कऽ देबन्हि, मुदा लहासकेँ कान्ह हम नहि देब!'

ई शर्त सुनि सभ कियो हँसी नहि रोकि सकल। किसान — जे नकल-विद्यासँ एक प्राण लऽ चुकल छल — अखन धरि अपन गलतीसँ ई नहि सीखने छल जे इलाज गलत भऽ सकैत अछि; ओ खाली ई सीखने छल जे लहास उघब कष्टप्रद होइत छै!

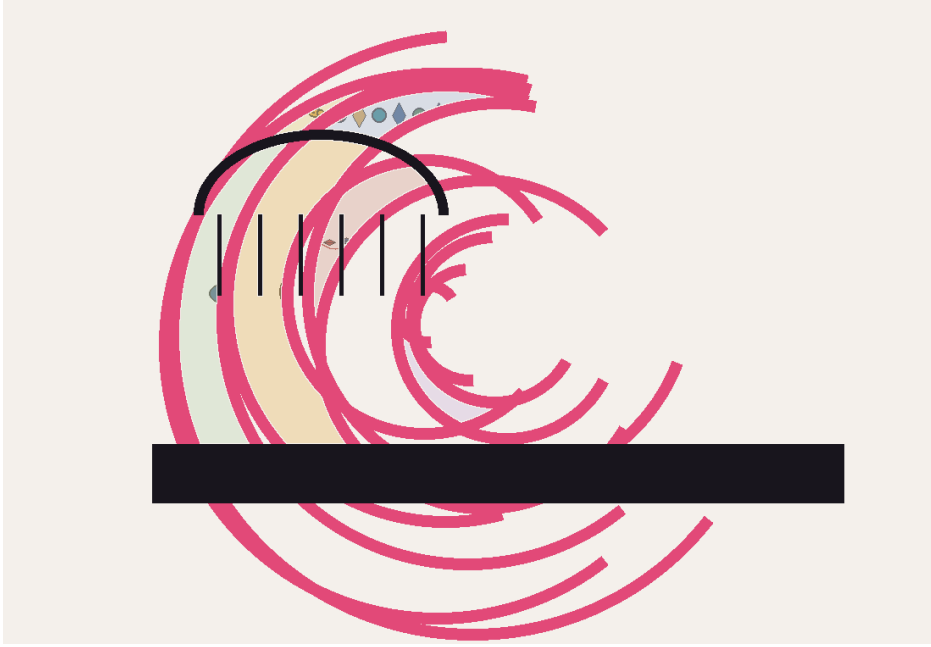

चित्र 24

ई विरोधाभास एहि खिस्साक मर्म थिक — नक़ल केनिहार अपन असली कमीकेँ कहियो नहि पहचानैत, ओ खाली सतही सबक सीखैत अछि। असली विद्या आ ओकर नकलमे यएह अन्तर होइत छै।

बा खिस्सा समाप्त करैत ओमकेँ कहलनि — 'बुझलहक बौआ? जे बटोही ऊँटनीक इलाज केलक, से ओकर अनुभव आ ज्ञानसँ केलक। किसान खाली नकल केलक, आ नकलक परिणाम — प्राणहानि! एहि लेल कोनो काज सीखबासँ पहिने ओकर मर्म बुझब आवश्यक अछि, खाली देखा-देखी नहि।'

अध्याय 13 : बा-ओमक उपसंहार

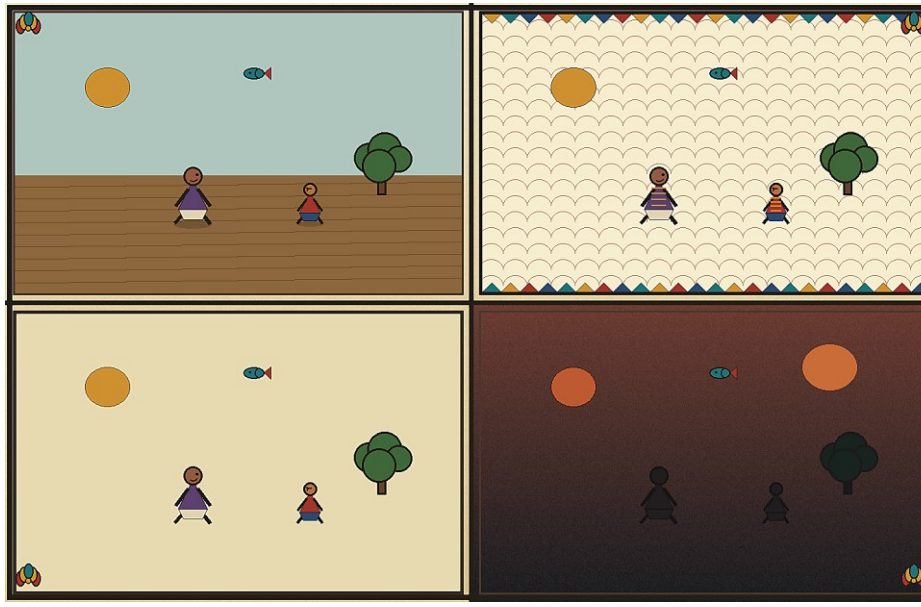

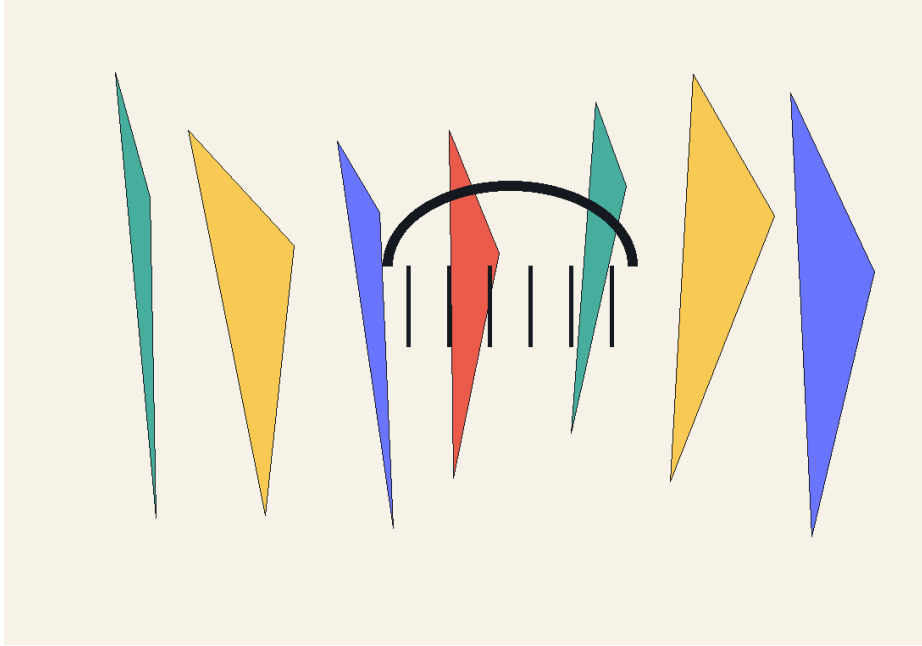

चित्र 25

ओम खिस्सा सुनि खिलखिला कऽ हँसि पड़ल — 'बा, ई त' बड्ड मजाकिया छल! मुदा डॉक्टर केहन बेवकूफ छल!'

बा मुस्कुराइत कहलनि — 'हँ बौआ, मुदा हँसीक पाछाँ एकटा गम्भीर बात सेहो छै। अपना दिसुका खिस्सा सन्ह नै अबैए, से नहि सोचिहह।'

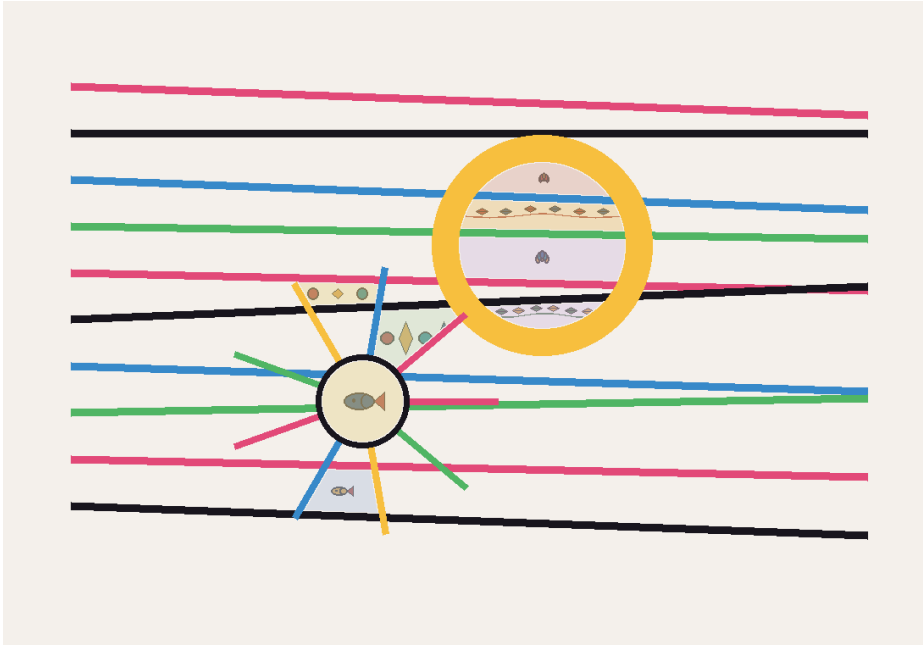

चित्र 26

ओम आश्चर्यसँ पुछलक — 'माने बा? अपना दिसुक खिस्सा माने की?'

बा हँसैत बजलीह — 'खूब अबैए बौआ। मुदा हमरा भेल जे अहाँकेँ त' अबिते हएत, से नहि कहलहुँ!' — आ एहि उत्तरसँ ओम फेर हँसी-हँसी सुतबाक तैयारी करए लागल, बाक कोरामे माथ रखने।

समाप्त

VIDEHA

विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका | ISSN 2229-547X | www.videha.co.in

३७ कथा · एक संग्रह

लोककथा · लोकदेवता · वीरगाथा · हास्य · बाल आख्यान

1. तरहरिमे परीलोक
2. बाल गुरु
3. दीना-भदरी
4. अमर बाबा
5. मोतीदाइ
6. राजा सलहेस
7. बगियाक गाछ
8. बहुरा गोढ़िन नटुआदयाल
9. चौहड़मल आ रेशमा
10. महुआ घटवारिन
11. छेछन
12. गरीबन बाबा
13. वर्णमाला शिक्षा : अंकिता
14. गांगोदेवीक भगता
15. मीरांसाहेब
16. जट-जटिन
17. लालमैन बाबा
18. मूँगा आ जालिम सिंह
19. बड़ सुख सार पाओल तुअ तीरे
20. बत्तू
21. भाट-भाटिन
22. बिहुला
23. ब्राह्मण आ ठाकुरक कथा
24. डाकू रौहिणेय
25. डोकी डोका
26. गोनू झा आ दस ठोप बाबा
27. ज्योति पँजियार
28. कौवा आ फुद्दी
29. माधव सिंह आ अमता गाम
30. मोतीसाएरि
31. मूर्खाधिराज
32. नैका बनिजारा
33. रघुनी मरर
34. राजा अनसारी
35. राजा ढोलन
36. उगना
37. ऊँटनी

गजेन्द्र ठाकुर · GAJENDRA THAKUR
विदेह — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका
VIDEHA — First Maithili Fortnightly eJournal
Since 2000 · ISSN 2229-547X
www.videha.co.in